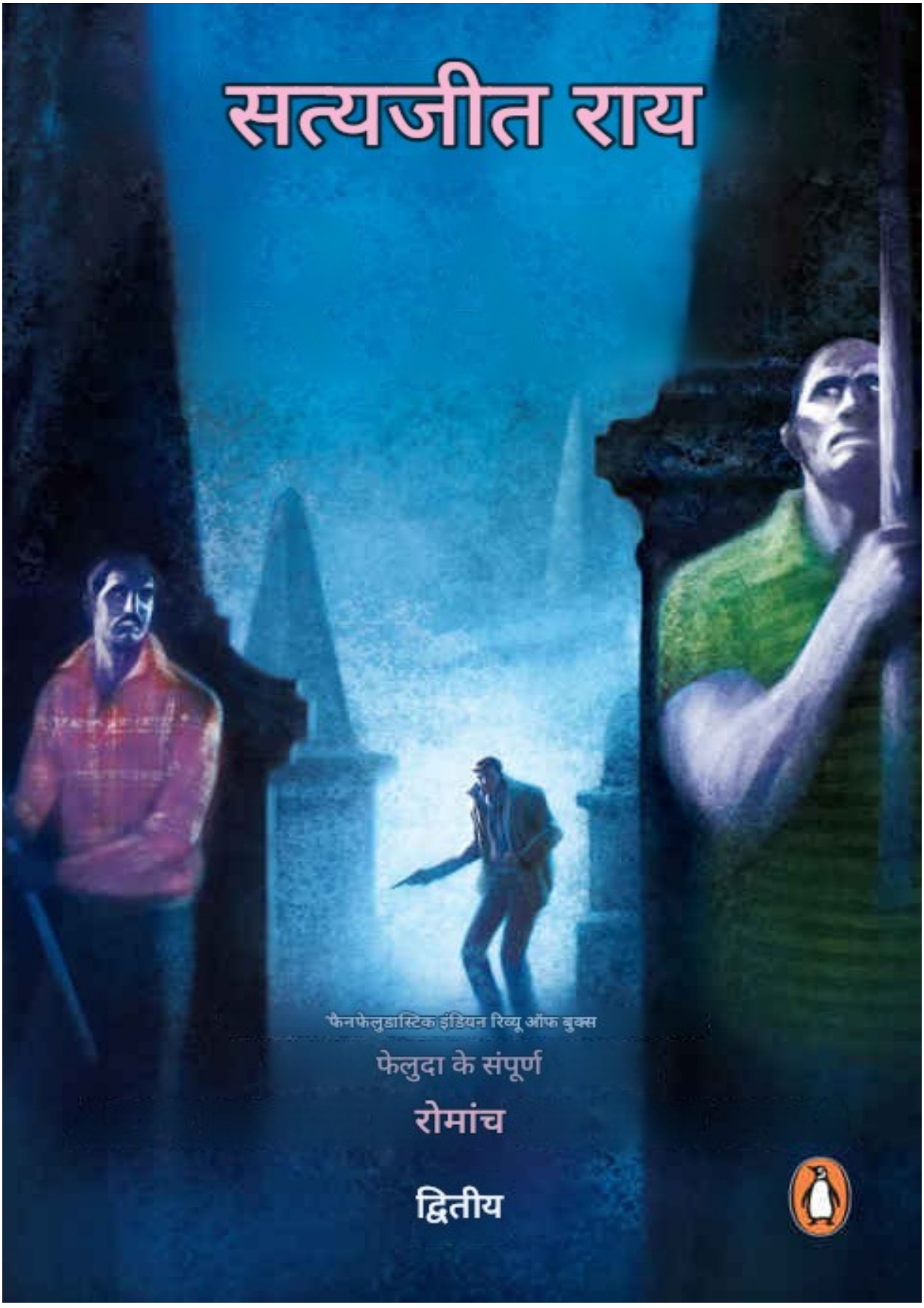
सत्यजीत राय
'फैनफेलुडास्टिक इंडियन रिव्यू ऑफ बुक्स
फेलुदा के संपूर्ण
रोमांच
द्वितीय

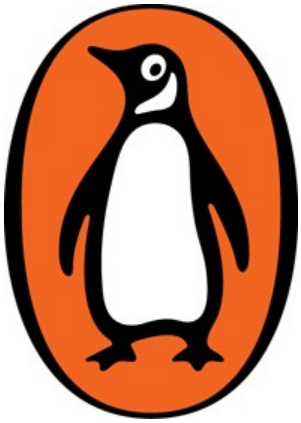

[redacted]

[redacted]

II

□□□□□□□□□□

□□□□ □□ □□□□ □□□

□□□□□□□□□□

□□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□ □□ □□

□□□□□□ □□ □□□□□

□□

□□

□□□

□□□

□□□□

□□

□□□

□□

□□

□□

□□□□□□

□□□□

□□□□□□□ □□□□□□□□□

□□

□□

□□□

□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□□

□□

□□

□□□

□□□

□□□□

□□

□□□

□□

□□

□□

□□□□□□

□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□

□□

□□

□□□

□□□

□□□□

□□

□□□□□□□□□ □□ □□□□

□□

□□

□□□

□□□

□□□□

□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□□□□□ □□□ □□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□□□□□ □□ □□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□□□ □□□ □□□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□
□□
□□
□□□
Four
(Jaichand Boral’s Story)
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□. □□□□□ □□ □□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□

पेंगुइन बुक्स
फेलुदा के संपूर्ण कारनामे II

सत्यजीत रे का जन्म 2 मई 1921 को कलकत्ता में हुआ था। 1940 में कलकत्ता के प्रेसिडेंसी कॉलेज से स्नातक होने के बाद, उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर के विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन में कला का अध्ययन किया। 1943 तक, रे कलकत्ता लौट आए थे और एक विज्ञापन कंपनी में विज़ुअलाइज़र के रूप में काम करने लगे थे। उन्होंने सिग्नेट प्रेस द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के कवर डिज़ाइन करने और चित्र बनाने का काम भी शुरू किया। फिल्मों में उनकी गहरी रुचि ने उन्हें 1947 में कलकत्ता फिल्म सोसाइटी की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया। 1950 में यूरोप की छह महीने की यात्रा के दौरान, रे लंदन फिल्म क्लब के सदस्य बने और केवल साढ़े चार महीनों में निन्यानवे फिल्में देखने में सफल रहे।
सन् 1955 में, अनगिनत कठिनाइयों का सामना करते हुए, सत्यजीत रे ने पश्चिम बंगाल सरकार की वित्तीय सहायता से अपनी पहली फिल्म 'पथेर पांचाली' पूरी की। इस फिल्म को कान फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार मिला और इसने रे को अंतरराष्ट्रीय स्तर के निर्देशक के रूप में स्थापित किया। 'अपराजितो' (1956) और 'अपुर संसार' (1959) के साथ मिलकर यह 'अपू त्रयी' का निर्माण करती है और संभवतः रे की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। रे की अन्य फिल्मों में जलसाघर (1958), चारुलता (1964), अरण्येर दिन रात्रि (1970), शतरंज के खिलाड़ी (1977), घरे बाइरे (1984), गणशत्रु (1989), शाखा प्रोशाखा (1990) और अगंतुक (1991) शामिल हैं। रे ने टैगोर पर बनी एक डॉक्यूमेंट्री सहित कई वृत्तचित्र भी बनाए। 1987 में, उन्होंने अपने पिता, जो संभवतः बंगाल के सबसे प्रसिद्ध व्यंग्य-प्रधान कविता और बच्चों की पुस्तकों के लेखक थे, की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सुकुमार रे नामक वृत्तचित्र बनाया। सत्यजीत रे ने अपनी फिल्मों के लिए अनेक पुरस्कार जीते। ब्रिटिश फेडरेशन ऑफ फिल्म सोसाइटीज और मॉस्को फिल्म फेस्टिवल कमेटी दोनों ने उन्हें बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के महानतम निर्देशकों में से एक माना। 1992 में, उन्हें एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए ऑस्कर से सम्मानित किया गया और उसी वर्ष उन्हें भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया।
सत्यजीत रे एक प्रख्यात फिल्म निर्माता होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध लेखक भी थे। 1961 में उन्होंने बच्चों की पत्रिका 'संदेश' का पुनरुद्धार किया, जिसे उनके दादा उपेंद्रकिशोर रे ने शुरू किया था और जिसमें उनके पिता नियमित रूप से योगदान देते थे। सत्यजीत रे ने 'संदेश' में अनेक कविताएँ, कहानियाँ और निबंध लिखे और बंगाली में कई पुस्तकें भी प्रकाशित कीं, जिनमें से अधिकतर बेस्टसेलर रहीं। 1978 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डीलिट' की उपाधि से सम्मानित किया।
सत्यजीत रे का निधन अप्रैल 1992 में कलकत्ता में हुआ था।
* * *

गोपा मजूमदार ने बंगाली से अंग्रेजी में कई रचनाओं का अनुवाद किया है, जिनमें आशापूर्णा देवी की सुवर्णलता, तस्लीमा नसरीन की माई गर्लहुड और

बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय की अपराजितो प्रमुख हैं, जिसके लिए उन्हें 2001 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। उन्होंने सत्यजीत रे की लघु कथाओं के कई संग्रह, प्रोफेसर शोंकु की कई कहानियाँ और फेलुदा की सभी कहानियाँ पेंगुइन बुक्स इंडिया के लिए अनुवादित की हैं। वर्तमान में वे पेंगुइन के लिए रे की सिनेमाई रचनाओं का अनुवाद कर रही हैं।

प्रस्तावना
मेरे पति को विज्ञान कथा कहानियों में हमेशा से गहरी रुचि रही है। इसलिए, जब उन्होंने अपने बच्चों की पत्रिका 'संदेश' के लिए ऐसी कहानियाँ लिखने का फैसला किया, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।
एक दिन उन्होंने मुझसे कहा कि वह विज्ञान कथाओं के अलावा अन्य कहानियों के साथ प्रयोग करना चाहते हैं।
‘और किस तरह की?’ मैंने पूछा, हालाँकि मुझे सहज ही जवाब पता था, क्योंकि हम दोनों ही जासूसी कहानियों के शौकीन पाठक थे। उन्हें बताने की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए वे मुस्कुराए और उदास स्वर में बोले, ‘लेकिन इसमें एक बड़ी अड़चन है…’ मैंने जिज्ञासा भरी नज़रों से उनकी ओर देखा। ‘यह पत्रिका बच्चों और किशोरों के लिए है, जिसका मतलब है कि मुझे यौन संबंध और हिंसा से बचना होगा — जो अपराध कथाओं का आधार होते हैं… आप इस मुश्किल को समझते हैं, है ना?’ मैंने सचमुच ऐसा किया। फिर भी, मैंने उससे कहा कि वह कोशिश करके देखे— मुझे उस पर इतना भरोसा था!
उन्होंने ऐसा किया। और इस तरह 'फेलुदा' का जन्म हुआ और वह रातोंरात लोकप्रिय हो गया। एक के बाद एक कहानियां प्रकाशित होती गईं और सभी को जबरदस्त सफलता मिली। जब उन्हें पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया, तो वे बेस्टसेलर बन गईं। यह सचमुच अद्भुत था!
हर कहानी खत्म करने के बाद, वह हाथ ऊपर उठाकर कहता, 'मेरे पास अब कोई कथानक नहीं बचा है। बिना किसी यौन संकेत और नाममात्र की हिंसा के कोई जासूसी कहानियां कैसे लिख सकता है?'
मैं उनकी बात से पूरी तरह सहमत थी, लेकिन साथ ही मुझे यह भी पता था कि वे कभी हार नहीं मानेंगे और अपने प्रयास में अवश्य सफल होंगे। और उन्होंने ठीक वैसा ही किया। वे कभी रुके नहीं और अपने जीवन के अंतिम दिनों तक लिखते रहे। यही थे मेरे पति सत्यजीत रे, जिन्होंने तमाम मुश्किलों को पार किया और सफलता हासिल की!
कलकत्ता, अक्टूबर 1995
बिजॉय रे

परिचय
मेरे बचपन की सबसे शुरुआती यादों में से एक यह है कि मैं अपने पिता की किताबों की अलमारी से दो मोटी-मोटी किताबें निकालने के लिए संघर्ष कर रही थी, ताकि उन्हें अपने गुड़ियाघर की दीवारों के रूप में इस्तेमाल कर सकूँ। मुझे पूरी तरह से हैरानी हुई जब मेरे पिता ने मुझे ऐसा करते देखा और तुरंत उन्हें वापस रखने को कहा। क्यों? आखिर वे सिर्फ किताबें ही तो थीं। 'नहीं,' उन्होंने समझाया, और उन दोनों किताबों को उसी कोमलता से संभाला जो वे आमतौर पर मेरे लिए रखते थे, 'ये सिर्फ किताबें नहीं हैं। ये संदेश पत्रिका के जिल्दबंद अंक हैं, जिसे हम बचपन में पढ़ा करते थे। अब यह नहीं मिलती।' हम दोनों को तब पता नहीं था कि संदेश कुछ ही वर्षों बाद फिर से सामने आएगी, जिसे इसके मूल संस्थापक उपेंद्रकिशोर के पोते सत्यजीत रे ने पुनर्जीवित और नया जीवन दिया था।
सत्यजीत रे एक फिल्म निर्माता थे, यह बात मुझे और मेरी पीढ़ी के कई बच्चों को बड़े होने पर ही पता चली। कम से कम हमने इतना तो सुना था कि वे ऐसी फिल्में बनाते थे जो बड़ों को भी मंत्रमुग्ध कर देती थीं, लेकिन हमारे लिए वे बस वही शख्स थे जिन्होंने एक ऐसी पत्रिका के पन्नों में अनंत मनोरंजन और आनंद का द्वार खोल दिया था जो सिर्फ हमारे लिए थी। यह बात 1961 की है। 1965 में, संदेश ने दार्जिलिंग में छुट्टियां मना रहे दो चचेरे भाइयों की एक नई कहानी (दार्जिलिंग में खतरा) प्रकाशित करना शुरू किया। इनमें से बड़ा भाई फेलुदा था, जिसका असली नाम प्रदोष सी. मित्तर था। छोटा भाई, जिसने कहानी सुनाई, तपेश कहलाता था; लेकिन फेलुदा उसे प्यार से टॉपशे कहता था। उनकी मुलाकात राजेन बाबू नाम के एक मिलनसार बुजुर्ग से हुई, जिन्हें रहस्यमय धमकियां मिलनी शुरू हो गई थीं। फेलुदा, जिसने कई अपराध कथाएं पढ़ी थीं और बहुत ही चतुर व्यक्ति था (टॉपशे ने हमें बताया), ने जल्द ही अपराधी का पता लगा लिया।
यह अपेक्षाकृत छोटी और सरल कहानी थी, जो तीन-चार किस्तों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई थी। फिर भी, इसने संदेश के युवा पाठकों के बीच इतनी हलचल मचा दी कि फेलुदा के रचयिता को उन्हीं पात्रों के साथ एक और कहानी लिखने के लिए बाध्य होना पड़ा, जो इस बार लखनऊ में आधारित थी (सम्राट का छल्ला), 1966 में। इस कहानी में फेलुदा का चरित्र अधिक स्पष्ट रूप से सामने आया। हमें पता चला कि वह न केवल तीक्ष्ण अवलोकन क्षमता और तेज बुद्धि वाला व्यक्ति था, बल्कि इतिहास से लेकर सम्मोहन तक, लगभग हर विषय का गहन और व्यापक ज्ञान भी रखता था। वह क्रिकेट में निपुण था, कम से कम सौ इनडोर खेल जानता था, कई ताश के करतब जानता था और दोनों हाथों से लिख सकता था। उसकी निजी नोटबुक में लिखी गई प्रविष्टियाँ ग्रीक भाषा में थीं।

सम्राट की अंगूठी के बाद, फेलूदा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा: उसकी लोकप्रियता लगातार बढ़ती ही गई। अगले तीन वर्षों में, कैलाश चौधरी की ज्वेल और अनुबिस मिस्ट्री, कलकत्ता में रचित फेलूदा की पहली दो कहानियाँ प्रकाशित हुईं, जिसके बाद एक और रोमांचक यात्रा, ट्रबल इन गंगटोक आई। अगले दो दशकों में, रे ने हर साल कम से कम एक फेलूदा कहानी लिखी। 1965 और 1992 के बीच, फेलूदा की चौंतीस कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इस श्रृंखला की अंतिम कहानी, द मैजिकल मिस्ट्री, 1995-96 में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई। 1970 में, फेलुदा पहली बार 'देश' पत्रिका में दिखाई दिया, जो निस्संदेह वयस्कों के लिए एक पत्रिका थी। इससे कई लोग हैरान हुए, लेकिन वास्तव में यह बच्चों और बड़ों, दोनों के बीच फेलुदा की लोकप्रियता का प्रमाण था। 1970 से 1992 के बीच, 'देश' के वार्षिक पूजा अंक में फेलुदा की उन्नीस कहानियाँ प्रकाशित हुईं (बाकी कहानियाँ 'संदेश' में प्रकाशित हुईं, सिवाय एक कहानी के जो बच्चों की एक अन्य पत्रिका 'आनंदमेला' में प्रकाशित हुई थी)। घर में सभी को चतुराई से मना करने के बाद, 'देश' की प्रति आते ही उसे पाने की होड़ लग जाना, पूजा उत्सव का उतना ही अहम हिस्सा बन गया था जितना कि नए कपड़े पहनना या मंदिर जाना।
एक साल बाद, रे ने एक नए किरदार को पेश किया। लालमोहन गांगुली (उर्फ जटायु), सस्ते और लोकप्रिय थ्रिलर लिखने वाला एक लेखक, जिसने 'द गोल्डन फोर्ट्रेस' से अपनी शुरुआत की। सरल, भोला, मिलनसार और जीवन की अधिकांश बातों से अनभिज्ञ या गलतफहमी रखने वाला, वह फेलुदा के लिए एक आदर्श साथी साबित हुआ और रे के शब्दों में, 'हास्य का तड़का' लगाने का एक जरिया बन गया। अगले साल (1972) पाठकों को 'अ मिस्टीरियस केस' से रूबरू कराया गया, जिसमें जटायु ने एक बार फिर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके बाद, वह दोनों चचेरे भाइयों के साथ लगातार बना रहा, बहुत जल्द ही टीम का एक महत्वपूर्ण सदस्य बन गया और लाखों लोगों का स्नेह जीत लिया। वास्तव में, अब फेलुदा के बारे में सोचते समय जटायु का जिक्र किए बिना सोचना असंभव है। दिलचस्प बात यह है कि रे द्वारा फेलुदा की कहानियों पर आधारित बनाई गई दोनों फिल्मों (1974 में द गोल्डन फोर्ट्रेस और 1978 में द एलिफेंट गॉड) में लालमोहन बाबू ने अभिनय किया था, जैसा कि संदीप रे द्वारा कुछ साल बाद बनाई गई टेलीविजन फिल्म किस्सा काठमांडू का (द क्रिमिनल्स ऑफ काठमांडू पर आधारित) में भी हुआ था। रे अक्सर अपराध कथाओं में अपनी रुचि के बारे में बात करते थे। स्कूल छोड़ने से पहले ही उन्होंने शर्लक होम्स की सभी कहानियाँ पढ़ ली थीं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि उन्होंने खुद भी अपराध कथाएँ लिखना शुरू कर दिया। लेकिन फेलुदा के आगमन ने पाठकों पर इतना गहरा प्रभाव क्यों डाला? आखिर बंगाल में बच्चों की कहानियों में जासूसों का होना तो आम बात थी। दरअसल, इसका कारण बहुत सरल था। अपनी तमाम उपलब्धियों के बावजूद, फेलुदा एक ऐसे महापुरुष के रूप में उभरे नहीं, जिनकी दूर से पूजा-अर्चना की जाए, लेकिन कभी उनसे नज़दीकी न हो। इसके विपरीत, टॉपशे के मनमोहक वर्णन में उन्हें इतना सामान्य और मानवीय बताया गया था कि उन्हें अपने परिवार के सदस्य के समान समझना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था। वे बेशक प्रतिभाशाली थे, लेकिन उनका व्यवहार बिल्कुल वैसा ही था जैसा किसी बड़े चचेरे भाई से

उम्मीद की जा सकती है। वे टॉपशे को खूब चिढ़ाते और अक्सर तंग करते थे, लेकिन अपने छोटे वॉटसन के प्रति उनका प्यार और चिंता कभी संदेह से परे नहीं थी। संदेश पढ़ने वाला हर बच्चा टॉपशे में खुद को—या कहें तो, अपनी सहेली को—देख सकता था। रे की सबसे बड़ी खूबी यहीं थी। फेलुदा ने आकर सब कुछ देखा और जीत हासिल की, मुख्यतः इसलिए क्योंकि हर घटना को एक किशोर के नजरिए से देखा और प्रस्तुत किया गया था। रे की भाषा सरल, स्पष्ट, स्नेहपूर्ण और सीधी थी, फिर भी कभी उबाऊ या उपदेशात्मक नहीं हुई, यहाँ तक कि तब भी जब फेलुदा ने टॉपशे की गलती सुधारी या उसे कोई नई जानकारी दी। इसके अतिरिक्त, फेलुदा और टॉपशे द्वारा देखी गई विभिन्न जगहों का उनका वर्णन भी सराहनीय था। कभी-कभी यह बताना मुश्किल हो जाता था कि कोई फिल्म देख रहा है या किताब, क्योंकि प्रासंगिक विवरणों को कुछ ही संक्षिप्त शब्दों में इतनी कुशलता से समेटा गया था, चाहे घटना बंगाल के किसी छोटे गाँव में घटित हो रही हो, सिक्किम के किसी मठ में या हांगकांग की सड़कों पर।
हालांकि, यह सोचना गलत होगा कि सब कुछ हमेशा सुचारू रूप से चलता रहा। फेलुदा और उनकी टीम को, अधिकांश मशहूर हस्तियों की तरह, प्रसिद्धि की कीमत चुकानी पड़ी। वयस्कों के बीच उनकी लोकप्रियता ही समस्या का कारण बनने लगी। स्वाभाविक रूप से, वयस्कों की अपेक्षाएँ अलग थीं। वे कहानियों में रोमांच चाहते थे और शायद अवैध प्रेम या अंतरंग अपराध जैसे विषयों पर आपत्ति नहीं करते। दूसरी ओर, फेलुदा के रचयिता कभी यह नहीं भूल सकते थे कि वे मुख्य रूप से बच्चों के लिए लिखते हैं और इसलिए कहानियों को 'साफ-सुथरा' रखना उनका कर्तव्य था। स्पष्ट रूप से, आलोचनात्मक या निराश पाठकों के पत्र इतने संवेदनशील बन गए कि फेलुदा ने रे के जीवनकाल में प्रकाशित अंतिम उपन्यास, 'द मिस्ट्री ऑफ नयन' में इस बारे में खुलकर बात की। पहले अध्याय में फेलुदा कहते हैं, 'यह मत भूलिए कि टॉपशे मेरी कहानियाँ मुख्य रूप से किशोरों के लिए लिखते हैं। समस्या यह है कि ये कहानियाँ बच्चों के माता- पिता, चाचा-चाची और सभी लोग पढ़ते हैं। हर स्तर पर प्रत्येक पाठक की अपनी विशिष्ट मांग होती है। भला वह उन सभी को कैसे संतुष्ट कर सकते हैं?' पाठकों को उचित सबक मिला। और फेलुदा की लोकप्रियता और भी बढ़ गई। 1990 में, जब वह पच्चीस वर्ष के हुए, तो दिल्ली में उनके एक कट्टर प्रशंसक ने इस अवसर को यादगार बनाने के लिए एक विशेष कार्ड बनवाया। कहा जाता है कि रे इस तरह की गहरी भक्ति को देखकर आश्चर्यचकित और बेहद प्रसन्न हुए थे।
इस समय तक, फेलुदा बंगाल से बाहर निकल चुके थे। 1988 में, फेलुदा की कहानियों का पहला संग्रह अंग्रेजी अनुवाद में प्रकाशित हुआ (चित्रिता बनर्जी द्वारा अनुवादित 'द एडवेंचर्स ऑफ फेलुदा')। इसके बाद, मैंने शेष फेलुदा कहानियों का अनुवाद किया, जो 'द एम्परर्स रिंग: द फर्दर एडवेंचर्स ऑफ फेलुदा' (1993), 'द मिस्ट्री ऑफ द एलिफेंट गॉड: मोर एडवेंचर्स ऑफ फेलुदा' (1994), 'फेलुदाज लास्ट केस एंड अदर स्टोरीज' (1995), 'द हाउस ऑफ डेथ एंड अदर फेलुदा स्टोरीज' (1997), 'द रॉयल बंगाल मिस्ट्री एंड अदर फेलुदा स्टोरीज' (1997) और 'द मिस्ट्री ऑफ द पिंक पर्ल: द फाइनल फेलुदा स्टोरीज' (1998) में

प्रकाशित हुईं। 'द मैजिकल मिस्ट्री' 2000 में रे की लघु कहानियों के संग्रह 'इंडिगो' में प्रकाशित हुई।
शुरुआत में, रे फेलुदा की कहानियों के अनुवाद की अनुमति देने में हिचकिचा रहे थे क्योंकि उन्हें गैर-बंगाली पाठकों की प्रतिक्रिया के बारे में संदेह था। हालांकि, उनके द्वारा बनाई गई दो फिल्मों और उनके बेटे द्वारा बनाई गई टेलीविजन श्रृंखला ने अन्य समुदायों में रुचि जगाई थी। जब उन्होंने अंततः अपनी सहमति दी, तो उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उनकी चिंता व्यर्थ थी। प्रदोष सी. मित्तर, एक निजी जासूस, और उनके दो सहायकों की कहानी 'थ्री मस्केटियर्स' को भारत के अन्य हिस्सों में भी उतना ही उत्साह मिला जितना बंगाल में मिला था।
फेलुदा की कहानियों का अनुवाद करना मेरे लिए एक बेहद संतोषजनक अनुभव रहा है। मूल कहानियों को पढ़ चुके लोग निःसंदेह उन बदलावों को देखेंगे जो मैंने कहानियों को व्यापक पाठक वर्ग के सामने प्रस्तुत करने के लिए किए हैं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि वे इस बात से सहमत होंगे कि इन बदलावों ने कहानी के मूल कथानक पर कोई प्रभाव नहीं डाला है।
इस प्रामाणिक संस्करण में रे द्वारा पूर्ण की गई फेलुदा की सभी कहानियाँ दो खंडों में संकलित हैं। इसमें 'द गोल्डन फोर्ट्रेस', 'द बैंडिट्स ऑफ बॉम्बे', 'द सीक्रेट ऑफ द सिमेट्री' और 'द मिस्टीरियस टेनेंट' के मेरे द्वारा किए गए नए अनुवाद भी शामिल हैं। पहली बार इन्हें कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित किया गया है, और इसमें फेलुदा के एक बिल्कुल अनजान शौकिया जासूस से एक प्रसिद्ध पेशेवर निजी जासूस बनने तक के सफर को देखा जा सकता है। जिन लोगों ने इन्हें पहले पढ़ा है, उन्हें ये सभी कहानियाँ एक ही संग्रह में पाकर प्रसन्नता होगी। जिन्होंने नहीं पढ़ी हैं, उनके लिए यह बंगाल के एक महान नायक से परिचित होने और इसके रचयिता की प्रतिभा की झलक पाने का एक शानदार अवसर होगा।
लंदन, मई 2004
Gopa Majumdar

No	Name of story	Bengali title	Published	Written in
1	Danger in Darjeeling	Feludar Goendagiri	Sandesh	1965-66
2	The Emperor's Ring	Badshahi Aangti	Sandesh	1966-67
3	Kailash Chowdhury's Jewel	Kailash Chowdhury'r Pathar	Sandesh	1967
4	The Anubis Mystery	Sheyal-Debota Rahasya	Sandesh	1970
5	Trouble in Gangtok	Gangtokey Gandogol	Desh	1970
6	The Golden Fortress	Sonar Kella	Desh	1971
7	Incident on the Kalka Mail	Baksho Rahasya	Desh	1972
8	A Killer in Kailash	Kailashey Kelenkari	Desh	1973
9	The Key	Samaddarer Chabi	Sandesh	1973
10	The Royal Bengal Mystery	Royal Bengal Rahasya	Desh	1974
11	The Locked Chest	Ghurghutiyar Ghatona	Sandesh	1975
12	The Mystery of the Elephant God	Joy Baba Felunath	Desh	1975
13	The Bandits of Bombay	Bombaiyer Bombetey	Desh	1976
14	The Mystery of the Walking Dead	Gosaipur Sargaram	Sandesh	1976
15	The Secret of the Cemetery	Gorosthaney Sabdhan	Desh	1977
16	The Curse of the Goddess	Chhinnamastar Abhishaap	Desh	1978
17	The House of Death	Hatyapuri	Sandesh	1979
18	The Mysterious Tenant	Golokdham Rahasya	Sandesh	1980
19	The Criminals of Kathmandu	Joto Kando Kathmandutey	Desh	1980
20	Napoleon's Letter	Napoleoner Chitthi	Sandesh	1981
21	Tintoretto's Jesus	Tintorettor Jishu	Desh	1982
22	The Disappearance of Ambar Sen	Ambar Sen Antardhan Rahasya	Anandamela	1983
23	The Gold Coins of Jehangir	Jahangirer Swarnamudra	Sandesh	1983
24	Crime in Kedarnath	Ebar Kando Kedarnathey	Desh	1984
25	The Acharya Murder Case	Bospukurey Khunkharapi	Sandesh	1985
26	Murder in the Mountains	Darjeeling Jamjamat	Sandesh	1986
27	The Magical Mystery	Indrajal Rahasya	Sandesh, 1995-96	1987
28	The Case of the Apsara Theatre	Apsara Theatre'r Mamla	Sandesh	1987
29	Peril in Paradise	Bhuswargya Bhayankar	Desh	1987
30	Shakuntala's Necklace	Shakuntalar Kontthohar	Desh	1988
31	Feluda in London	Londoney Feluda	Desh	1989
32	The Mystery of the Pink Pearl	Golapi Mukta Rahasya	Sandesh	1989
33	Dr Munshi's Diary	Dr Munshir Diary	Sandesh	1990
34	The Mystery of Nayan	Nayan Rahasya	Desh	1990
35	Robertson's Ruby	Robertsoner Ruby	Desh, 1992	1990

मृत्यु का घर

डुंगरू की कहानी
दुंगरू ने अपना वाद्य यंत्र सुबह की ओस से भीगी घास पर रख दिया और गाना शुरू कर दिया। उसकी आवाज़ अच्छी थी। वह जो गाना गा रहा था, उसे उसने पहले सिर्फ़ एक बार सुना था। फिर भी, उसने उसे लगभग बिना किसी प्रयास के सीख लिया था। यह वही गाना था जो हनुमान फाटक के ठीक बाहर एक भिखारी अक्सर गाया करता था। लेकिन वह एक वाद्य यंत्र भी बजाता था। श्याम गुरुंग, जो स्थानीय सब्ज़ी विक्रेता था, उसके पास भी ऐसा ही एक वाद्य यंत्र था। दुंगरू ने उसे एक दिन के लिए उधार लिया था, लेकिन उसे एहसास हो गया था कि उसे बजाना गाना गाने जितना आसान नहीं था। भला किसने सोचा होगा कि कुछ तारों पर धनुष चलाना इतना मुश्किल हो सकता है?
दुंगरू की आवाज़ तेज़ हो गई। उसके सामने मक्के का खेत था, जिसमें दो भैंसें और तीन बकरियाँ आज़ादी से घूम रही थीं। आस-पास कोई और नज़र नहीं आ रहा था। उसके पीछे एक बहुत ही खड़ी पहाड़ी थी। ठीक उसके नीचे, जिस टीले पर वह बैठा था, उससे थोड़ी दूर पर एक बादाम का पेड़ खड़ा था। दूर टाइलों की छत वाला छोटा सा घर उसका घर था। यह मक्के का खेत उसके पिता का था। सुबह की धुंध में से कुछ और पहाड़ियाँ और कई पर्वत शिखर धुंधले दिखाई दे रहे थे। इनमें से एक, जिसका आकार मछली की पूंछ जैसा होने के कारण 'मछीपुच्छ' कहलाता था, गुलाबी रंग का होने लगा था।
डुंगरू ने गीत की दूसरी पंक्ति शुरू की, लेकिन अचानक रुकना पड़ा। उसके पीछे पहाड़ी में एक अजीब सी गड़गड़ाहट हुई, जिससे वह उछलकर खड़ा हो गया और एक तरफ कूद गया। अगले ही पल, एक बड़ा पत्थर पहाड़ी से लुढ़कता हुआ उसके पास से गुजरा, उसके वाद्य यंत्र को कुचलते हुए और बाल-बाल उसे लगने से बच गया। दुंगरू को अपनी किस्मत पर यकीन ही नहीं हो रहा था। लेकिन इससे पहले कि उसकी धड़कन सामान्य हो पाती, कुछ और ही घट गया: एक लुढ़कते हुए पत्थर से कहीं ज़्यादा अप्रत्याशित और भयानक। लेकिन, उस पत्थर की तरह, वह भी पहाड़ी से नीचे लुढ़का, बादाम के पेड़ से टकराया और कई टूटी हुई शाखाओं के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा। आखिर यह क्या था? वह अवाक रह गया, उसका मुंह खुला का खुला रह गया। हे भगवान! यह तो एक आदमी था! कोई आम आदमी नहीं, बल्कि अच्छे कपड़े पहने एक बाबू, शायद किसी बड़े शहर से। उसके सिर, चेहरे और ठोड़ी पर खून लगा था। उसका एक पैर अजीब से कोण पर मुड़ा हुआ था। क्या वह मर गया था? नहीं। दुंगरू ने उसे अपना सिर हिलाते हुए देखा।
फिर उसे बाकी लोगों की याद आई। मुख्य सड़क के उस पार झरने के पास कुछ लोग डेरा डाले हुए थे। डुंगरू अक्सर उनके बालों और दाढ़ी के रंग को देखकर अचंभित हो जाता था। उसके अपने गाँव में किसी के भी बाल ऐसे नहीं थे। और निश्चित रूप से किसी की भी दाढ़ी नहीं थी। लेकिन अगर कोई इस आदमी की मदद कर

सकता था, तो वे ही लोग थे। वे डुंगरू को जानते थे। वे उससे मक्का खरीदते थे और लगभग हर दिन उसे पैसे देते थे।
डुंगरू दौड़ने लगा।
डुंगरू को देखकर उनमें से एक ने चिल्लाकर कहा, 'हाय, जो, जल्दी इधर आओ!' ‘अरे, क्या बात है?’
दुंगरू हांफते हुए खड़ा था। वह उनकी भाषा नहीं बोल सकता था। वास्तव में, वह इतना हांफ रहा था कि बोल ही नहीं पा रहा था। इसलिए उसने बस अपनी आंखें घुमाईं और जीभ बाहर निकाल दी। फिर उसने पहाड़ी की ओर इशारा किया। वह आदमी तुरंत समझ गया।
‘ठीक है। जीप। चलो... जीप!’
उनकी जीप इंद्रधनुष के सभी रंगों से सजी थी। डुंगरू ने पहले कभी ऐसी गाड़ी नहीं देखी थी। वह उसमें कूद पड़ा। जो, मार्क, डेनिस और ब्रूस भी उसके साथ बैठ गए।
जब डुंगरू उन्हें ठीक उसी जगह ले गया जहाँ घायल व्यक्ति अभी भी ज़मीन पर पड़ा था, तो उनमें से एक ने धीरे से कहा, "हे भगवान!" सभी उसके ऊपर झुक गए।
मार्क, जिसने मिनेसोटा में चिकित्सा की पढ़ाई छोड़ दी थी, ने उसकी नब्ज़ जाँची। फिर उन्होंने उसे उठाया और सावधानीपूर्वक जीप में बिठा दिया।
सबसे नजदीकी अस्पताल काठमांडू में था, जो यहां से तैंतीस किलोमीटर दूर था।

एक
फेलुदा की हथेली में कुछ खास बात थी। 'शीर्ष रेखा' नामक रेखा, जो किसी व्यक्ति की बुद्धिमत्ता का संकेत मानी जाती है, असाधारण रूप से लंबी और स्पष्ट थी। फेलुदा हस्तरेखा शास्त्र में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन उन्होंने इस विषय पर पढ़ा था। लालमोहन बाबू, जो इसमें पूर्ण विश्वास रखते थे, ने एक बार फेलुदा से अपनी हथेली दिखाने को कहा था। फेलुदा मुस्कुराते हुए मान गए, लेकिन लालमोहन बाबू उनकी हंसी नहीं रोक पाए। उन्होंने शीर्ष रेखा को देखा और फिर कहा, 'अद्भुत, अद्भुत!' इसके बाद, उन्होंने अपनी हथेली खोली, उसे देखा और गहरी आह भरी। मुझे अपनी हंसी रोकने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा।
मेरे एक चाचा हस्तरेखा विशेषज्ञ थे। मैंने उन्हें लोगों के अतीत के बारे में काफी सटीक बातें कहते और भविष्यवाणियां करते सुना था, जो अक्सर सच साबित होती थीं। मुझे बताया गया था कि कुछ लोग किसी व्यक्ति का चेहरा देखकर उसका भविष्य बता सकते हैं, लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि किसी व्यक्ति के माथे के बीचोंबीच छोटी उंगली रखकर उसके भविष्य के बारे में बताया जा सकता है। मैंने यह सब अपनी आंखों से तब देखा जब हम पुरी गए थे। लगातार बिजली कटौती और 110 डिग्री फ़ारेनहाइट के तापमान ने हमें कलकत्ता छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। बिजली संकट इतना गंभीर हो गया था कि लालमोहन बाबू का नवीनतम उपन्यास अप्रैल में छप नहीं सका। वे इससे बहुत नाराज़ थे, खासकर इसलिए क्योंकि यह अलौकिक तत्वों से भरपूर उनका पहला क्राइम थ्रिलर था। दरअसल, यह विचार उन्हें फेलुदा ने ही दिया था। 'भूत-प्रेत टिमटिमाती मोमबत्ती की रोशनी में खूब जंचते हैं।' लालमोहन बाबू ने इस बात को गंभीरता से लिया और फ्रैंकफर्ट में फ्रेंकस्टाइन लिखा। जब उन्हें पता चला कि यह तय समय पर प्रकाशित नहीं हो सकता, तो वे सीधे हमारे घर आए और बोले, 'हम इस शहर में और नहीं रह सकते। वैसे भी, आपने स्काईलैब के बारे में तो सुना ही होगा, है ना?'
ऐसा मानने का कोई कारण नहीं था कि स्काईलैब कलकत्ता पर गिर जाएगा, लेकिन लालमोहन बाबू लगातार कहते रहे कि इसका एक बड़ा हिस्सा गिर सकता है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि पूरा कलकत्ता शहर 'बुरी नजर' की चपेट में आ गया है।
फेलुदा आम तौर पर बेहद अनुकूलनशील है। मैंने उसे सबसे कठिन परिस्थितियों में भी बिल्कुल शांत देखा है। अगर उसे पूरी रात रेलवे स्टेशन पर बितानी पड़े और प्रतीक्षालय भरा हो, तो वह बड़ी खुशी से प्लेटफार्म पर लेट जाएगा। लेकिन एक चीज़ थी जिसके बिना वह नहीं रह सकता था: सोने से पहले कुछ घंटे बिस्तर पर पढ़ना। हफ़्तों तक बिजली कटौती ने उसे इस एक विलासिता से वंचित कर दिया था जिसका वह आनंद लेता था। इससे वह काफी चिड़चिड़ा हो गया था। उसने

ताश के करतबों का अभ्यास किया, तुकबंदी वाली कविताएँ लिखीं और खुद को खुश करने के लिए कई अन्य चीजें आजमाईं। मुझे उम्मीद थी कि लंबे समय तक अंधेरा रहने से अपराध बढ़ेंगे। लेकिन अफसोस, उसके हाथ कोई दिलचस्प मामला नहीं आया। संक्षेप में, वह पूरी तरह से ऊब गया था।
शायद यही कारण था कि वे लालमोहन बाबू से सहमत प्रतीत हुए और कहा, 'सचमुच, 'सिटी ऑफ जॉय' ने हमें बहुत दुख दिया है, है ना? मैं शारीरिक असुविधा तो बर्दाश्त कर सकता हूँ, लेकिन काम में लगातार बाधाएँ, रात में पढ़ने का समय छोड़ना, मच्छरों के कारण सोच तक न पाना... इन सब के साथ जीना बहुत मुश्किल है।'
‘मैंने सुना है कि ओडिशा में जरूरत से ज्यादा बिजली है,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
इसके चलते उड़ीसा, पुरी, पुरी के समुद्र तट और वहां हाल ही में खुले नीलचल नामक होटल के बारे में चर्चा शुरू हुई, जिसका स्वामित्व लालमोहन बाबू के मकान मालिक के सहपाठी के पास था।
दुर्भाग्यवश, हमें जून के मध्य से पहले आरक्षण नहीं मिल सका। फेलुदा ने कहा, 'कोई बात नहीं, हम जून में ही चले जाएंगे।' आखिरकार, हम 21 जून को पुरी एक्सप्रेस से रवाना हुए। यह तय हुआ कि लालमोहन बाबू का ड्राइवर अपनी कार लेकर एक दिन बाद सड़क मार्ग से पुरी पहुंचेगा। हम खुद भी कार से जा सकते थे, लेकिन आखिरी समय में लालमोहन बाबू घबरा गए और बोले, 'मान लीजिए रास्ते में तूफान आ जाए या कुछ और हो जाए? मान लीजिए हम फंस जाएं?'
लेकिन उन्होंने इस बात पर सहमति जताई कि अपनी खुद की कार रखना एक अच्छा विचार है, क्योंकि हम कुछ और जगहों पर भी घूमने का इरादा रखते थे। इसीलिए हमने यात्रा के लिए दो अलग-अलग व्यवस्थाएं कीं।
हमारी यात्रा बिना किसी घटना के गुज़री, सिवाय हमारे चार बर्थ वाले डिब्बे में चौथे यात्री के। वही एकमात्र रोमांचक घटना थी। पहले हमने उसे सोने के बने प्रतीत होने वाले सिगरेट होल्डर में सिगरेट लगाते देखा। फिर उसने सोने की परत चढ़ी लाइटर निकाली (फेलुदा ने फुसफुसाते हुए कहा, 'कम से कम तीन हज़ार रुपये का होगा')। उसका सिगरेट केस भी सोने का था, उसके कफ़लिंक, चश्मे के फ्रेम और उसकी तीन अंगूठियाँ भी सोने की थीं। ऊपर वाले बर्थ से उतरते समय उसका एक पैर गलती से लालमोहन बाबू के कंधे से छू गया। इस पर उन्होंने शर्मिंदा होकर मुस्कुराते हुए कहा, 'माफ़ कीजिएगा।' हम सभी ने गौर किया कि जब उन्होंने अपना मुँह खोला तो उनका एक दाँत चमक उठा। जब वह हमारे साथ पुरी में उतरे और एक कुली और अपने सामान के साथ गायब हो गए, तो लालमोहन बाबू ने राहत की साँस ली।
‘हमें तो उस आदमी का नाम तक पता नहीं चला। तपेश, क्या तुमने कभी किसी आदमी के पास इतना सोना देखा है?’ उसने पूछा।
‘लालमोहन बाबू, उनका नाम पता लगाने का बहुत आसान तरीका था,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘क्या आपने हावड़ा की आरक्षण सूची नहीं देखी? उस आदमी का नाम एम.एल. हिंगोरानी है।’

दो
'यह एक सिक्स-स्टार होटल है,' लालमोहन बाबू ने नीलाचल में चेक-इन करने के बाद सहमति में सिर हिलाते हुए घोषणा की।
‘बिना स्विमिंग पूल के कोई भी होटल खुद को फाइव-स्टार नहीं कह सकता; और फाइव-स्टार ही किसी होटल की अधिकतम रेटिंग होती है। लालमोहन बाबू, क्या आपको कहीं स्विमिंग पूल नज़र आ रहा है? या आप समुद्र को ही इस होटल का निजी पूल मान रहे हैं? अगर ऐसा है, तो आपकी रेटिंग बिल्कुल सही है।’
हम दोपहर का भोजन करने अंदर गए, जिसके बाद लालमोहन बाबू ने नए जोश के साथ अपनी बहस जारी रखी। ‘क्या शानदार खाना है, फेलू बाबू! उनका रसोइया तो लाजवाब है। मुझे पता ही नहीं था कि कच्चे केले के कोफ्ते इतने स्वादिष्ट हो सकते हैं। इसके अलावा, देखिए सब कुछ कितना साफ-सुथरा है, कितने सुंदर कालीन और फर्नीचर हैं, और बिजली की आपूर्ति भी निर्बाध है, साथ ही समुद्र की ठंडी हवा भी... इसे छह सितारा होटल क्यों न कहूँ?’
फेलुदा सहमति में हँस पड़ा। कुछ वर्षों में होटल का क्या हाल होगा, यह कहना असंभव था, लेकिन फिलहाल यह निश्चित रूप से बहुत अच्छी स्थिति में था। फेलुदा और मैं एक डबल रूम में ठहरे थे। लालमोहन बाबू बगल वाले कमरे में थे, जिसे वे कलकत्ता के एक व्यापारी के साथ साझा कर रहे थे। हमारी मुलाकात प्रबंधक श्यामलाल बारीक से संक्षिप्त रूप से हुई थी। उन्होंने शाम को हमसे मिलने और बातचीत करने का वादा किया था।
होटल सचमुच समुद्र के बहुत करीब था। रेतीला समुद्र तट मुख्य द्वार से मात्र एक मिनट की पैदल दूरी पर था। पिछली बार जब मैंने पुरी का दौरा किया था, तब मैं केवल पाँच वर्ष का था। फेलुदा यहाँ कई बार आ चुके थे, लेकिन हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि लालमोहन बाबू की यह पहली यात्रा थी।
‘इसमें आश्चर्य की क्या बात है?’ उसने थोड़ी झुंझलाहट के साथ पूछा। ‘कलकत्ता में ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो मैंने अभी तक नहीं देखी हैं। यकीन मानिए, मेरे घर से सिर्फ तीन मील दूर वह प्रसिद्ध जैन मंदिर है, लेकिन मैं कभी वहां नहीं गया!’ अब, समुद्र के सामने खड़े होकर, उसे अचानक अपने पसंदीदा कवि बैकुंठ मल्लिक की एक कविता याद आ गई। ‘जब मैं बारह साल का था,’ उसने मुझे बताया, ‘मैंने एक प्रतियोगिता में यह कविता सुनाई थी और पुरस्कार जीता था। तपेश, इसे ध्यान से सुनो और गौर करो कि आधुनिक मुक्त छंद भी कितना सुंदर हो सकता है।’
इन गर्जना करती लहरों में,
मुझे अनंतता की पुकार सुनाई देती है;
जब इन रेतीले समुद्र तटों पर हों,
मैं बड़ी उत्सुकता से खड़ा हूँ,
एक पैर पर।

‘एक पैर? एक पैर क्यों?’ फेलुदा हैरान लग रहा था। ‘क्या कवि खुद को सारस से जोड़ रहा था? ऐसा ही होना चाहिए, क्योंकि इस तेज़ हवा में घंटों तक रेत पर एक पैर पर खड़े रहना किसी आदमी के लिए बहुत मुश्किल होगा। खैर, कवि की बात छोड़ो। ज़रा उस रेत को देखो। क्या तुम्हें वो निशान दिख रहे हैं? क्या तुम्हें लगता है कि उनका कोई महत्व हो सकता है?’
पैरों के निशान पूरब से आए थे और पश्चिम की ओर चले गए थे। इनके बगल में एक छोटा सा निशान था जो किसी छड़ी की ओर इशारा कर रहा था। लालमोहन बाबू ने कुछ पल तक इन निशानों को देखा और कहा, 'खैर, जूते और शायद एक छड़ी... यह तो स्पष्ट है, लेकिन इसका विशेष महत्व क्या हो सकता है?'
‘टॉपशे, तुम क्या सोचते हो?’
‘आमतौर पर लोग अपने दाहिने हाथ में छड़ी पकड़ते हैं। ये निशान बाएं हाथ पर हैं।’
फेलुदा ने मेरे कंधे पर थपथपाते हुए कहा, 'अच्छा! लगता है यह आदमी बाएं हाथ से लिखता है।'
वहाँ ज़्यादा लोग नहीं थे। नुलिया के तीन छोटे बच्चे केकड़े और सीपियाँ इकट्ठा करने में व्यस्त थे। थोड़ी दूर आगे और भी होटल थे, जहाँ निस्संदेह हमें और भी कई पर्यटक मिलेंगे। जैसे ही हम उस दिशा में चलने लगे, किसी ने पुकारा, 'श्री गांगुली!'
हमने मुड़कर देखा तो पाया कि वह श्रीनिवास सोम थे, जो लालमोहन बाबू के मोटे और हंसमुख रूममेट थे। हम उनसे पहले ही मिल चुके थे। कलकत्ता में उनकी एक साड़ी की दुकान थी।
‘क्या तुम नहीं आ रहे हो?’ उसने लालमोहन बाबू से पूछा। ‘उन्होंने कहा था कि ठीक छह बजे वहाँ पहुँच जाना।’
लालमोहन बाबू ने फेलुदा को तिरछी नज़र से देखा। उन्होंने हिचकिचाते हुए कहा, 'मैंने आपको नहीं बताया, फेलु बाबू, क्योंकि मुझे लगा कि शायद आपको इसमें दिलचस्पी न हो।'
‘मुझे क्या नहीं बताया?’
‘अह... श्री सोम ने मुझे यहाँ रहने वाले एक व्यक्ति के बारे में बताया। उसके पास एक असाधारण शक्ति है। वह माथे पर उंगली रखकर किसी के भविष्य के बारे में बता सकता है।’
‘किसका माथा?’
‘स्वाभाविक रूप से, जो व्यक्ति उसके पास जाता है।’
'क्या आपका मतलब है कि वह सचमुच किसी के भाग्य में लिखी बातें पढ़ सकता है?' 'हां, ऐसा माना जाता है।'
'बहुत अच्छा। मुझे अपना भविष्य जानने की कोई इच्छा नहीं है, लेकिन चलिए सब मिलकर देखते हैं कि वह कहाँ रहता है।'
श्री सोम आगे-आगे चल रहे थे। हम उनके पीछे-पीछे पूर्व दिशा की ओर बढ़ते हुए नुलिया पक्षियों की बस्ती और पर्यटकों के समूहों को पार करते हुए एक रेतीली ढलान पर चढ़े। तभी हमें रेत में आंशिक रूप से धंसा हुआ एक परित्यक्त मकान दिखाई दिया। श्री सोम उसके पास से गुजर गए, लेकिन कुछ ही गज की दूरी पर स्थित एक अन्य मकान के सामने रुक गए। यह मकान तीन मंजिला था और

स्पष्ट रूप से कहीं बेहतर स्थिति में था। पता चला कि ज्योतिषी भूतल पर दो कमरों में रहते थे। वहाँ एक बड़ा द्वार था। एक तरफ 'सागरिका' लिखा था। दूसरी तरफ संगमरमर की एक शिला पर 'डी.जी. सेन' अंकित था। यह एक पुराने जमाने का मकान था, लेकिन जिसने भी इसे बनवाया था, उसकी पसंद अच्छी थी। वहाँ एक बगीचा था, जिसका कुछ हिस्सा द्वार से दिखाई दे रहा था।
श्री सोम ने कहा, ‘मालिक दूसरी मंजिल पर रहते हैं।’ ‘अरे, हम यहाँ हैं... यह लक्ष्मण भट्टाचार्य का कमरा है।’
बाहर बरामदे में करीब एक दर्जन लोग इंतज़ार कर रहे थे। निस्संदेह वे सभी श्री भट्टाचार्य के ग्राहक थे। लालमोहन बाबू ने 'जय गुरु!' कहा और श्री सोम के साथ अंदर चले गए। हम वहां से चले आए।
लगभग एक घंटे बाद, जब लालमोहन बाबू बड़े उत्साह से हमारे कमरे में दाखिल हुए, तो फेलुदा ने पूछा, 'तुम्हारे माथे पर क्या लिखा था?'
‘अविश्वसनीय, असाधारण, बिल्कुल अविश्वसनीय!’ लालमोहन बाबू ने जवाब दिया। ‘उन्होंने मुझे मेरे अतीत के बारे में सब कुछ बताया—सात साल की उम्र में खांसी, अठारह साल की उम्र में एक दुर्घटना जिसमें मेरे घुटने की हड्डी खिसक गई थी, फिर मेरे पहले उपन्यास का प्रकाशन, मेरी जबरदस्त लोकप्रियता, और उन्होंने मुझे यह भी बताया कि मेरी अगली किताब के कितने संस्करण होंगे।’
और स्काईलैब? क्या उसने आपको बताया कि वह आपके सिर पर गिरेगा या नहीं? ‘फेलू बाबू, आप चाहे जितना मजाक कर लें, लेकिन मुझे लगता है कि आपको उनसे मिलना चाहिए। दरअसल, मैं तो यही कहूंगा कि आप उनसे मिलें। ऐसा लगता है कि उन्हें आपके बारे में पता था। उन्होंने कहा कि मुझे एक अच्छा दोस्त पाकर बहुत खुशी है, और उन्होंने आपका हुलिया भी बताया!’
‘मेरे पेशे के बारे में क्या? क्या उन्होंने इसके बारे में कुछ कहा?’ उन्होंने कहा कि मेरा दोस्त बहुत मेहनती और बुद्धिमान था, कई विषयों में उसकी गहरी रुचि थी और उसमें अवलोकन की असाधारण क्षमता थी। क्या यह आपके लिए काफी है?
दरवाजे पर एक आवाज आई, 'क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?'
हमने मुड़कर देखा तो मैनेजर श्यामलाल बारीक हाथ में पान का एक छोटा डिब्बा लिए अंदर आने का इंतज़ार कर रहे थे। फेलुदा ने उन्हें अंदर बुलाया और उन्होंने तुरंत अपना डिब्बा खोला। हमारा कमरा पान-मसाला की मीठी खुशबू से भर गया। 'एक खा लो,' उन्होंने कहा। फिर हमारे चेहरों को देखकर हँसे। 'चिंता मत करो, इनमें तंबाकू नहीं है,' उन्होंने हमें भरोसा दिलाया। हमने भी पान ले लिया। फेलुदा ने एक चारमीनार पान जलाया।
‘श्री बारिक, मुझे बताइए, डी.जी. सेन का पूरा नाम क्या है?’ उन्होंने पूछा। ‘मैं अभी-अभी उनके घर से आया हूँ, और मुझे पूछने का ख्याल ही नहीं आया!’ लालमोहन बाबू ने कहा।
श्यामलाल बारीक मुस्कुराए। ‘सच तो यह है, श्री मित्तर, कि मुझे उनका पूरा नाम नहीं पता। मुझे शक है कि किसी को पता भी होगा। सब उन्हें डी.जी. सेन कहते हैं। कुछ लोग तो उन्हें डी.जी. बाबू भी कहते हैं।’
क्या वह ज्यादा बाहर नहीं जाता?

‘वह पहले जाता था। पिछले साल वह भूटान या सिक्किम या ऐसी ही किसी जगह गया था। वह लगभग छह महीने पहले लौटा। उसके लौटने के बाद से हमने उसे शायद ही कभी देखा हो।’
क्या आप जानते हैं कि वह अचानक एकांतवासी क्यों बन गया?
श्यामलाल बारीक ने सिर हिलाया। 'क्या उसने वह घर बनवाया था?' फेलुदा ने आगे पूछा।
नहीं। इसे उनके पिता ने बनवाया था। आपने शायद उनके बारे में सुना होगा। क्या आप सेन परफ्यूमर्स के बारे में जानते हैं?
'जी हां, जी हां। लेकिन उनका कारोबार तो बंद हो गया है, है ना? एस.एन. सेन के सेंसेशनल एसेंसेज़। क्या आपका मतलब यही है?'
जी हाँ। डीजी, एस.एन. सेन के बेटे हैं। उनका कारोबार बहुत अच्छा चल रहा था। कलकत्ता में उनके तीन घर थे, एक यहाँ पुरी में और एक मधुपुर में। लेकिन, दुख की बात है कि एस.एन. सेन के निधन के बाद किसी ने भी कारोबार में दिलचस्पी नहीं दिखाई। उनके दो बेटे थे। मुझे लगता है कि डीजी उनमें से छोटे हैं। एस.एन. सेन ने वसीयत छोड़ी थी, जिसमें उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपने बेटों में बाँट दी थी। डीजी को यह घर मिला। हो सकता है कि उन्होंने कभी कोई नौकरी की हो—मुझे नहीं लगता कि उन्होंने कभी पारिवारिक कारोबार में दिलचस्पी ली हो—लेकिन अब वे सेवानिवृत्त हो चुके हैं और उनकी एकमात्र रुचि कला में है।
‘कला?’ फेलुदा को अचानक कुछ याद आया। ‘क्या वह वही व्यक्ति है जिसके पास प्राचीन पांडुलिपियों और ग्रंथों का संग्रह है?’
मेरे चाचा सिद्धू के पास कुछ हस्तलिखित ग्रंथ थे। उनमें से कुछ तीन सौ साल से भी अधिक पुराने थे। छपाई मशीन के आविष्कार से पहले लिखे गए हस्तलिखित ग्रंथों को पुथी कहा जाता था। फेलूदा ने एक बार मुझे इसके बारे में बताया था। बहुत समय पहले लोग पेड़ की छाल पर लिखते थे। फिर उन्होंने ताड़ के पत्तों पर लिखना शुरू किया और अंत में कागज पर। चाचा सिद्धू अक्सर इस बात पर अफ़सोस जताते थे कि लोग इन हस्तलिखित ग्रंथों को भूल गए हैं, जो हमारी कला और सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
श्यामलाल बारीक ने सिर हिलाया। 'जी हां, वे प्राचीन पांडुलिपियां ही उनके जीवन का एकमात्र जुनून हैं। कई लोग - यहां तक कि विदेश से भी - उनके संग्रह को देखने आते हैं।'
क्या उसके कोई बच्चे नहीं हैं?
‘उनके बेटे और बहू कभी-कभार उनसे मिलने आते थे, लेकिन मैंने उन्हें सालों से नहीं देखा है। डी.जी. सेन खुद यहाँ तीन साल पहले ही रहने आए थे। वे विधुर हैं। वे सबसे ऊपरी मंजिल पर रहते हैं। भूतल एक ज्योतिषी को किराए पर दिया गया है; और पहली मंजिल के कमरे पर्यटन के मौसम में पर्यटकों को किराए पर दिए जाते हैं। फिलहाल, एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश और उनकी पत्नी वहाँ रह रहे हैं।’
‘मैं समझ गया।’ फेलुदा ने अपनी सिगरेट बुझा दी।

‘क्या आप उनसे मिलना चाहेंगे?’ श्री बारिक ने पूछा। ‘वे एक विचित्र व्यक्ति हैं, आमतौर पर बाहरी लोगों से मिलना पसंद नहीं करते। लेकिन अगर आपको पांडुलिपियों में रुचि है...’
‘हाँ, मुझे रुचि है,’ फेलुदा ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, ‘लेकिन अगर मैं सिर्फ यह कह दूं कि मुझे रुचि है, तो यह काफी नहीं होगा, है ना? मुझे प्राचीन पांडुलिपियों का गहन ज्ञान रखने वाले किसी व्यक्ति से मिलने से पहले अपना होमवर्क करना होगा।’
श्री बारिक ने हमें आश्वस्त करते हुए कहा, 'कोई बात नहीं। मैं आपको सतीश कानूनगो के घर ले चलूँगा। यह यहाँ से मात्र पाँच मिनट की दूरी पर है। वह एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं। शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिसके बारे में उन्हें जानकारी न हो। आप उनसे बातचीत कर सकते हैं और अपना होमवर्क भी कर सकते हैं।'

तीन
अगली सुबह जब मैं उठा, तब तक फेलुदा ने प्रोफ़ेसर कानूनगो को फ़ोन कर दिया था और उनके घर चले गए थे। मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उन्हें प्रोफ़ेसर से मिलने की इतनी जल्दी है। मेरी योजनाएँ अलग थीं। मैं सुबह समुद्र में नहाने का सोच रहा था। फेलुदा भी मेरे साथ आ सकते थे। मैंने लालमोहन बाबू से पूछा, लेकिन उन्होंने कहा, 'देखो तपेश, तुम्हारी उम्र में मैं बहुत तैरता था। मेरे बटरफ्लाई स्ट्रोक पर तो अक्सर लोग तालियाँ बजाते थे। लेकिन कलकत्ता का छोटा सा स्विमिंग पूल बंगाल की खाड़ी जैसा नहीं है, तुम समझ ही सकते हो ना? इसके अलावा, पुरी का समुद्र बेहद खतरनाक है। अगर यह मुंबई का समुद्र होता, तो मैं ज़रा भी नहीं हिचकिचाता।' वह सही था। पिछली रात बारिश हुई थी और आसमान में बादल छाए हुए थे, जिससे उमस बढ़ रही थी। इसलिए हमने फेलुदा के लौटने तक इंतजार करने का फैसला किया। लालमोहन बाबू ने सुझाव दिया, 'चलो समुद्र तट पर टहलते हैं।' मैं मान गया और टोस्ट और अंडे का नाश्ता करने के तुरंत बाद हम निकल पड़े। लालमोहन बाबू बहुत अच्छे मूड में लग रहे थे, शायद लक्ष्मण भट्टाचार्य की बातों का असर उन पर पड़ा था।
समुद्र तट बिल्कुल सुनसान था। समुद्र में कुछ नावें थीं, लेकिन नुलिया के बच्चों का कोई अता-पता नहीं था। कुछ कौवे इधर-उधर उड़ रहे थे, लहरें पीछे हटते ही पानी के पास जाते और फिर लहरें वापस आते ही झट से उड़ जाते।
हम आगे बढ़ते रहे। कुछ मिनट बाद, लालमोहन बाबू अचानक रुक गए। उन्होंने कहा, “मैंने लोगों को समुद्र तट पर धूप सेंकते हुए सुना है, लेकिन क्या वे बादलों में भी नहाते हैं?” मैं उनकी बात समझ गया। लगभग पचास गज दूर, समुद्र तट के अंत और ढलान की शुरुआत वाली जगह पर एक आदमी पीठ के बल लेटा हुआ था। एक तरफ झाड़ी थी। अगर वह आदमी थोड़ा बाईं ओर लेटता, तो वह किसी की नज़र में नहीं आता।
‘कुछ अजीब सा लग रहा है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने धीरे से कहा। मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन करीब से देखने के लिए आगे बढ़ा। वह आदमी यहाँ क्यों लेटा था? यह तो बिल्कुल ठीक नहीं लग रहा था।
दस फीट की दूरी से भी वह ऐसा लग रहा था मानो सो रहा हो। लेकिन जैसे ही हम कुछ कदम आगे बढ़े, हमें यह जानकर गहरा सदमा लगा कि वह मर चुका है। उसकी आँखें खुली थीं, और उसके सिर के चारों ओर खून का एक बड़ा धब्बा था; या कम से कम, कुछ घंटे पहले तक वह खून का धब्बा था, अब वह रेत पर एक काला धब्बा बन गया था।
उस आदमी के घने घुंघराले बाल, घनी भौहें, बड़ी मूंछें और साफ रंग था। उसने धूसर सूती जैकेट, सफेद पतलून और नीली धारीदार कमीज पहनी हुई थी। उसके पैरों में जूते थे, लेकिन मोजे नहीं थे। उसकी एक छोटी उंगली में नीले पत्थर

की अंगूठी थी। उसके नाखून लंबे और गंदे थे। उसकी जैकेट की सामने वाली जेब कागजों से भरी हुई थी। मुझे बहुत लालच हुआ कि मैं उन्हें निकालकर जल्दी से देख लूँ, बस यह पता लगाने के लिए कि वह आदमी कौन था। लेकिन लालमोहन बाबू ने कहा, 'किसी चीज को मत छुओ।' दरअसल, ऐसा कहने की कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि मुझे अनुभव से पता था कि ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।
‘मुझे लगता है, हम ही पहले हैं... जिन्होंने... खोज की है?’ लालमोहन बाबू ने बड़ी कोशिश करते हुए पूछा, मानो वह एकदम शांत और बेपरवाह दिख रहे हों। लेकिन मैं समझ गया कि उनका मुंह सूख गया था। ‘हां, मुझे भी ऐसा ही लगता है,’ मैंने जवाब दिया, खुद को थोड़ा घबराया हुआ महसूस करते हुए। ‘खैर, हमें इसकी खबर जरूर देनी चाहिए।’
'जी हां, बिल्कुल।'
हम जल्दी से होटल वापस लौटे तो देखा कि फेलुदा लौट आया था। लालमोहन बाबू की ओर देखते हुए फेलुदा ने कहा, ‘जिस तरह से तुमने अंदर आने से पहले अपने पैर पोंछे बिना फर्श पर सैकड़ों ग्राम रेत बिखेर दी, उससे लगता है कि तुम किसी बात से बहुत परेशान हो।’ लालमोहन बाबू के कुछ कहने से पहले ही मैंने जल्दी से अपनी बात कह दी। फेलुदा ने चुपचाप मेरी बात सुनी, फिर पुलिस को फोन करके संक्षेप में सारी बात बताई। उसके बाद वह मेरी ओर मुड़ा और मुझसे सिर्फ एक सवाल पूछा: ‘क्या तुमने शव के पास कहीं कोई हथियार देखा? पिस्तौल या कुछ और?’
'नहीं, फेलुदा।'
‘लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि वह व्यक्ति बंगाली नहीं है,’ लालमोहन बाबू ने दृढ़ता से कहा।
'आप क्यों कहते हो कि?'
‘वो भौहें! जुड़ी हुई थीं। बंगालियों की भौहें जुड़ी हुई नहीं होतीं। न ही उनका जबड़ा इस आदमी की तरह इतना मजबूत और दृढ़ होता है। अगर वो बुंदेलखंड से निकले तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा।’
इस बीच, फेलुदा ने डी.जी. सेन से मिलने का समय तय कर लिया था। उनके सचिव ने उनसे सुबह 8:30 बजे आने और श्री सेन से पंद्रह मिनट से अधिक समय न लेने के लिए कहा था। हम लगभग तुरंत ही निकल गए।
श्री सेन के घर जाते समय हमने शव के पास एक छोटी भीड़ देखी। खबर फैलने में देर नहीं लगी थी। यह निस्संदेह एक बहुत ही असामान्य घटना थी। पुलिस पहले से ही वहाँ मौजूद थी। एक अधिकारी ने फेलुदा को देखा और मुस्कुराते हुए और हाथ फैलाकर आगे बढ़ा।
‘इंस्पेक्टर महापात्रा!’ फेलुदा ने गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा। ‘हम राउरकेला में एक मामले के सिलसिले में मिले थे, है ना?’
'जी हां, मैंने आपको देखते ही पहचान लिया। क्या आप यहां छुट्टी मनाने आए हैं?'
'हां, यही सामान्य धारणा है। मृतक कौन है?'
‘इस इलाके का कोई नहीं। उसका नाम रूपचंद सिंह है।’
'तुमने कैसे पता लगाया?'

'वहां ड्राइविंग लाइसेंस था।'
'कहां से?'
‘नेपाल!’
चश्मा पहने एक सज्जन भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े और पुलिस फोटोग्राफर को एक तरफ धकेल दिया। उन्होंने कहा, 'मैंने उस आदमी को कल देखा था। वह स्वर्गद्वार रोड पर एक चाय की दुकान पर था। मैं बगल वाली दुकान से पान खरीद रहा था। उसने मुझसे माचिस मांगी और फिर सिगरेट जला ली।'
‘How did he die?’ Feluda asked Mr Mahapatra.
‘मुझे लगता है गोली मारकर हत्या कर दी गई है। लेकिन हमें अभी तक हथियार नहीं मिला है। यह ड्राइविंग लाइसेंस के अंदर रखा हुआ था। आप चाहें तो इसे देख सकते हैं।’ फेलुदा को एक विजिटिंग कार्ड दिया गया। एक तरफ काठमांडू में एक दर्जी की दुकान का नाम और पता छपा था। दूसरी तरफ, अस्पष्ट लिखावट में, ये शब्द लिखे थे: ए.के. सरकार, 14 मेहर अली रोड, कलकत्ता।
'अगर आपको कोई दिलचस्प खबर मिले तो मुझे जरूर बताना। हम नीलाचल में ठहरे हुए हैं,' फेलुदा ने कहा।
हम चलते रहे और जल्द ही डी.जी. सेन के घर पहुँच गए। कल शाम तक वह घर भव्य और आकर्षक लग रहा था। लेकिन अब, बादलों से घिरे आसमान के नीचे, वह अंधकारमय और डरावना प्रतीत हो रहा था।
द्वार के बाहर एक युवक खड़ा था। वह शायद नौकर था। हमें आते देख वह आगे आया और बोला, 'मित्तर बाबू?'
‘मैं मित्तर बाबू हूँ,’ फेलुदा ने उत्तर दिया।
'कृपया मेरे साथ आइए।'
एक पत्थर का रास्ता बगीचे की ओर जाता था। लेकिन, दूसरी मंजिल पर जाने के लिए घर के पीछे जाना ज़रूरी था जहाँ एक अलग प्रवेश द्वार था। रास्ते में कुछ कदम आगे बढ़ते ही लालमोहन बाबू अचानक एक दबी हुई चीख के साथ पीछे हट गए। दरअसल, उनकी नज़र कागज़ की एक लंबी पट्टी पर पड़ी थी। 'मुझे लगा कि यह एक साँप है!' वे चिल्लाए।
नौकर हमें सीढ़ियों के नीचे छोड़कर चला गया। हमने एक और आदमी को नीचे आते देखा। ‘श्री मिटर?’ उसने मुस्कुराते हुए पूछा, ‘इधर आइए।’ वह लगभग पैंतीस वर्ष का लग रहा था, हालाँकि उसके बाल झड़ने शुरू हो गए थे।
ऊपर जाते हुए उन्होंने कहा, 'मैं निशित बोस हूं, मैं यहां दुर्गा बाबू के सचिव के रूप में काम करता हूं।'
'दुर्गा बाबू?'
‘दुर्गा गति सेन। सब उन्हें डी.जी. सेन कहते हैं।’
सीढ़ियाँ जहाँ खत्म होती थीं, वहाँ दाईं ओर एक कमरा था। शायद वह सचिव का कमरा था, क्योंकि मुझे एक छोटी मेज पर टाइपराइटर दिखाई दिया। बाईं ओर एक छोटा गलियारा और दो और कमरे थे। इसके आगे एक छत थी। डी.जी. सेन छत पर हमारा इंतज़ार कर रहे थे।
छत के एक हिस्से में एक ग्रीनहाउस था जिसमें कुछ ऑर्किड के पौधे लगे थे। श्री सेन छत के बीचोंबीच एक बेंत की कुर्सी पर बैठे थे। उनकी उम्र लगभग साठ वर्ष लग रही थी। लालमोहन बाबू ने बाद में कहा, 'सदृश व्यक्तित्व।' वे

बिल्कुल सही थे। श्री सेन का रंग बहुत गोरा था, उनकी आँखें तेज थीं और उनकी दाढ़ी फ्रेंच स्टाइल की थी। उनके चौड़े कंधे देखकर लगता था कि वे कभी नियमित रूप से व्यायाम करते रहे होंगे। लेकिन हमारे पास आने पर भी वे उठे नहीं। उन्होंने अपनी कुर्सी से ही कहा, 'नमस्कार।' मुझे यह थोड़ा अजीब लगा, लेकिन जब मेरी नज़र उनके पैरों पर पड़ी तो कारण स्पष्ट हो गया। उनका बायाँ पैर उनकी नीली पतलून से बाहर झाँक रहा था। पूरा पैर पट्टी से ढका हुआ था। छत पर तीन कुर्सियाँ रखी थीं। हमने उन पर बैठकर उनका अभिवादन किया। फेलुदा ने उनसे कहा, 'हमें इस तरह अंदर आने की अनुमति देने के लिए हम आपके बहुत आभारी हैं। जब मैंने आपके संग्रह के बारे में सुना, तो मैं इसे देखने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सका।'
श्री सेन ने उत्तर दिया, ‘मुझे इसमें कई वर्षों से रुचि है।’ उनकी आँखों में एक उदास भाव था। उनकी आवाज़ गहरी थी। यह उनके व्यक्तित्व से मेल खाती प्रतीत होती थी।
'मेरे चाचा - सिद्धेश्वर बोस - के पास पुरानी पांडुलिपियों का एक छोटा सा संग्रह है। मुझे लगता है कि आप एक बार उनके घर गए थे, यह देखने के लिए कि उनके पास क्या है।'
'हां, यह संभव है। मैं पांडुलिपियों की तलाश में काफी दूर-दूर तक यात्रा किया करता था।'
क्या आपके संग्रह में सब कुछ बंगाली में लिखा है?
‘नहीं, और भी भाषाएँ हैं। उनमें से सर्वश्रेष्ठ संस्कृत है।’
'यह कब लिखा गया?'
बारहवीं शताब्दी।
इसके बाद कुछ देर का विराम रहा। उनसे कुछ भी दिखाने के लिए कहने का कोई फायदा नहीं था। वे ऐसा तभी करते जब उनका मन करता।
‘लोकेनाथ!’ श्री सेन ने पुकारा। लोकेनाथ शायद नौकर का नाम था, लेकिन वह उसे क्यों पुकार रहे थे?
लोकेनाथ की जगह श्री बोस प्रकट हुए। क्या वे शायद दरवाजे के पीछे खड़े थे? 'लोकेनाथ बाहर गए हैं, महोदय। क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?' उन्होंने पूछा।
श्री सेन ने अपना हाथ बढ़ाया। श्री बोस ने उनका हाथ पकड़ा और उन्हें उठने में मदद की। श्री सेन ने हमसे कहा, 'कृपया मेरे पीछे आइए।' हम सब गलियारे में वापस गए और दो शयनकक्षों में से एक में चले गए। यह एक बड़ा कमरा था, जिसमें एक विशाल चौपाया था। बिस्तर के बगल में एक कश्मीरी मेज थी, जिस पर एक दीपक, दवा की दो बोतलें और एक गिलास रखा था। वहाँ एक डेस्क, एक कुर्सी और दीवार के सहारे दो गोदरेज तिजोरियाँ भी थीं।
श्री सेन ने अपने सचिव की ओर देखते हुए आदेश दिया, 'इसे खोलो।' श्री बोस ने तकिए के नीचे से चाबियों का एक गुच्छा निकाला और तिजोरियों में से एक को खोल दिया।
मुझे चार अलमारियाँ दिखाई दीं, जिनमें से प्रत्येक लाल रेशम से ढके पतले, लंबे पैकेटों से भरी हुई थी। एक सरसरी नज़र में ही मुझे पता चल गया कि ऐसे

कम से कम पचास पैकेट थे। 'दूसरे तिजोरी में कुछ और हैं, लेकिन जो वास्तव में कीमती हैं—'
सबसे कीमती चीज़ पहले वाले दराज से निकली। मैंने देखा कि उसी दराज में एक और पैकेट था। श्री बोस ने रेशम के टुकड़े को बांधने वाले रिबन को खोला, जिससे लकड़ी के दो पतले बेलनाकार टुकड़ों के बीच रखा हुआ आठ सौ साल पुराना एक स्क्रॉल सामने आया।
श्री सेन ने कहा, 'इसे अष्टदशसहस्रिका प्रज्ञा पारमिता कहते हैं। एक और ग्रंथ है, जो उतना ही पुराना है, जिसे कल्पसूत्र कहते हैं।'
लकड़ी के सिलेंडरों पर बेहद खूबसूरत चित्रकारी की गई थी। समय बीतने के साथ न तो पेंट का रंग फीका पड़ा था और न ही उस पर बनी जटिल आकृतियाँ। पांडुलिपि ताड़ के पत्ते पर लिखी गई थी। मुझे कभी विश्वास नहीं हुआ कि किसी की लिखावट इतनी सुंदर हो सकती है।
‘यह तुम्हें कहाँ से मिला?’ फेलुदा ने पूछा।
‘धर्मशाला।’
'क्या इसका मतलब यह है कि यह दलाई लामा के साथ तिब्बत से आया था?'
'हाँ।'
श्री सेन ने फेलुदा से वह पांडुलिपि वापस ली और श्री बोस को सौंप दी। उन्होंने उसे रेशम के टुकड़े से दोबारा बांधा और तिजोरी में रख दिया। क्या तुम्हें तुम्हारे चाचा ने यहाँ भेजा है?
मुझे यह सवाल अचानक पूछे जाने पर हैरानी हुई। फेलुदा बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने शांत भाव से जवाब दिया, 'जी नहीं, महोदय।'
‘मैं कोई व्यापारी नहीं हूं, और मैं निश्चित रूप से इनमें से कुछ भी बेचना नहीं चाहता। मैं बस इतना कर सकता हूं कि अगर कोई इच्छुक हो तो मुझे दिखा सकूं कि मेरे पास क्या है।’
‘मेरे चाचा वो चीज़ नहीं खरीद सकते जो आपने अभी मुझे दिखाई,’ फेलुदा हँसते हुए बोला। ‘लेकिन मुझे भी नहीं पता कि ऐसी चीज़ की कीमत कितनी होगी।’
इसकी कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती। यह अमूल्य है।
लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो इन्हें खुशी-खुशी विदेशियों को सौंप देंगे, है ना? क्या भारत की प्राचीन पांडुलिपियां विदेशियों को नहीं बेची जा रही हैं? 'हां, मुझे इसकी जानकारी है। जो लोग ऐसा करते हैं वे अपराधी हैं—उन पर लानत है!'
क्या आपके बेटे को भी आपकी रुचियों में हिस्सा नहीं आता?
श्री सेन ने तुरंत जवाब नहीं दिया। वे कुछ देर के लिए चिंतित दिखे। फिर उन्होंने मेज की ओर देखते हुए कहा, 'मेरा बेटा? मैं उसे नहीं जानता।'
‘सर, श्री मिटर एक मशहूर जासूस हैं!’ श्री बोस ने कुछ हद तक अनावश्यक ढंग से कहा। डी.जी. सेन ने तुरंत अपनी निगाहें फेलुदा पर टिका दीं। ‘तो क्या हुआ?’ वे गरजते हुए बोले, ‘इससे क्या फर्क पड़ता है? क्या मैंने किसी को मारा है?’ श्री बारिक ने हमें इस बारे में पहले ही चेतावनी दी थी। डी.जी. सेन सचमुच एक बहुत ही विचित्र व्यक्ति थे। लेकिन इसके बाद उन्होंने जो शब्द कहे, उनका कोई मतलब ही नहीं था।

‘खोई हुई चीज़ को कोई जासूस वापस नहीं ला सकता। जो कुछ भी कर सकता है, वह अभी भी कोशिश कर रहा है; बंद दरवाजे अब एक-एक करके खुल रहे हैं। जासूस की कोई ज़रूरत नहीं है।’
हममें से किसी ने भी यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि उनका मतलब क्या था। वैसे भी, हमारा समय समाप्त हो चुका था। इसलिए हम जाने के लिए मुड़े। श्री बोस ने थोड़ी जल्दबाजी में कहा, 'मैं आपको बाहर तक छोड़ देता हूँ।' फेलुदा ने श्री सेन को एक बार फिर धन्यवाद दिया, और हम सबने अलविदा कहा। फिर हम सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे।
‘उनके पैर में क्या दिक्कत है?’ फेलुदा ने श्री बोस से पूछा। ‘गाउट,’ उन्होंने जवाब दिया। ‘कुछ महीने पहले तक तो वे बहुत स्वस्थ और तंदुरुस्त थे। लेकिन पिछले तीन महीनों से उन्हें बहुत दर्द और तकलीफ हो रही है।’ मैंने उसके कमरे में दो बोतलें देखीं। क्या वे उसके गठिया के लिए थीं? 'हां। उनमें से एक उसे सोने में मदद करने के लिए है। लक्ष्मण बाबू ने उसे यह दिया था।'
‘कौन, ज्योतिषी?’ लालमोहन बाबू ने आश्चर्य से पूछा।
'जी हां, वह ज्योतिष के अलावा आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा सहित कई और चीजें जानता है।'
‘अरे वाह!’
'ओह जी हाँ। मैंने तो उन्हें श्री सेन के साथ रहते हुए पुरानी पांडुलिपियों के बारे में बात करते हुए भी सुना है।'
‘क्या असाधारण व्यक्ति थे!’ लालमोहन बाबू ने प्रशंसा करते हुए कहा। फेलुदा चुप रहे।

चार
लालमोहन बाबू चाहते थे कि फेलुदा लक्ष्मण भट्टाचार्य से मिलें। लेकिन ज्योतिषी बाहर थे और उनका कमरा बंद था। हम सागरिका से बाहर निकले और अपने होटल की ओर वापस चलने लगे। इस समय तक समुद्र तट पर काफी भीड़ हो चुकी थी, क्योंकि बादल छंट चुके थे और सूरज निकल आया था। हमारे दाहिनी ओर, समुद्र तट से थोड़ी दूर पर एक होटल था। फेलुदा ने कहा, 'यह रेलवे होटल है। इनमें से ज्यादातर लोग यहीं ठहरे हुए हैं।' हम भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़े। अचानक किसी ने पुकारा: 'श्री मित्तर!'
एक लंबा-चौड़ा सज्जन व्यक्ति अकेले, नहाने वालों के समूहों से दूर खड़ा था और फेलुदा की ओर मुस्कुरा रहा था। ऐसा लगता है कि उसने समुद्र तट पर कई दिन बिताए हैं, क्योंकि जब उसने अपने धूप के चश्मे उतारे, तो मुझे उसकी आँखों से कानों तक एक हल्की सी लकीर दिखाई दी। उसकी बाकी त्वचा गहरे रंग से टैन हो चुकी थी।
वह हमारी ओर चलकर आया। वह लगभग फेलुदा के बराबर लंबा और काफी आकर्षक था। उसकी दाढ़ी और करीने से कटी हुई मूंछें थीं।
उन्होंने कहा, 'मैंने आपके बारे में सुना है। क्या आप पहले से ही किसी मामले पर काम कर रहे हैं?'
'तुम क्यों पूछ रहे हो?'
‘मुझे पता चला है कि कोई हत्या हुई है। इसलिए मैंने सोचा कि आप पूछताछ कर रहे होंगे।’ फेलुदा हँसे। ‘नहीं। मुझे जाँच करने के लिए नहीं कहा गया है, इसलिए मैं चाहकर भी पूछताछ नहीं कर सकता।’
‘आप नीलाचल में ठहरे हुए हैं, है ना?’
'हाँ।'
‘अह...’ वह हिचकिचाता हुआ प्रतीत हुआ।
‘क्या तुम्हें गार्ड नियुक्त किया गया है?’ फेलुदा ने पूछा। मैंने भी यह बात गौर की थी। वह आदमी अपने हाथ में तीन सोने की अंगूठियां पकड़े हुए था। उसने शर्मिंदा होकर मुस्कुरा दिया।
‘यह तो बहुत उबाऊ है... लेकिन आप सही कह रहे हैं। ये मेरे होटल में ठहरे एक मेहमान के हैं। मैं उनसे कल ही मिला था। आज सुबह उन्होंने कहा कि वे समुद्र में तैरना चाहते हैं, लेकिन उन्हें डर था कि ये निकल न जाएँ। इसलिए उन्होंने मुझसे कहा कि जब तक वे पानी से बाहर न आ जाएँ, मैं इन्हें अपने पास रखूँ। काश मैंने उनकी बात न मानी होती।’
इससे पहले कि हममें से कोई कुछ कह पाता, अंगूठियों का मालिक भीगा हुआ, नुलिया के साथ वहाँ पहुँच गया। हमने उसे तुरंत पहचान लिया। वह हमारा 'सुनहरा' सहयात्री, श्री एम.एल. हिंगोरानी थे। उन्होंने फेलुदा को देखा और 'सुप्रभात!' कहकर पुकारा। फिर उन्होंने अपनी अंगूठियाँ वापस लीं और उस

सज्जन को 'धन्यवाद' कहते हुए कहा कि गोवा, मियामी, अकापुल्को और नीस में जितने भी समुद्र तट उन्होंने देखे हैं, उनमें से पुरी के समुद्र तट जैसा कोई नहीं है।
हमने उसे अलविदा कहा और फिर से चलना शुरू कर दिया, इस बार दाढ़ी वाले सज्जन हमारे साथ थे।
‘मुझे नहीं लगता कि मैंने आपका नाम सुना है—?’ फेलुदा ने विनम्रता से पूछना शुरू किया।
नहीं, मैंने आपको अपना नाम नहीं बताया, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि मुझे लगा कि शायद यह आपके लिए कोई मायने नहीं रखता होगा। एक विशेष क्षेत्र है जिसमें मैंने थोड़ा योगदान दिया है, लेकिन इसके बारे में बहुत कम लोग जानते होंगे। मेरा नाम बिलास मजूमदार है।
फेलुदा ने भौंहें चढ़ाकर उस आदमी की ओर देखा। उसने पूछा, 'क्या तुम्हारा पहाड़ों से कोई लेना-देना है?'
‘हे भगवान, आपका ज्ञान...!’
‘नहीं, नहीं,’ फेलुदा ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, ‘इसमें कुछ भी असाधारण नहीं है। बस मुझे याद आया कि मैंने हाल ही में कहीं आपका नाम देखा था, किसी पत्रिका या ऐसी ही किसी चीज़ में। उस रिपोर्ट में पहाड़ों का ज़िक्र था।’
‘आप सही कह रहे हैं। मैंने दार्जिलिंग के संस्थान में पर्वतारोहण सीखने के लिए दाखिला लिया था। मैं असल में एक वन्यजीव फोटोग्राफर हूँ। मुझे एक जापानी टीम के साथ हिम तेंदुए की तस्वीरें लेने जाना था। आपको शायद पता होगा कि हिम तेंदुए हिमालय की ऊँची चोटियों पर पाए जाते हैं। कई लोगों ने इस जानवर को देखा है, लेकिन इसकी लगभग कोई तस्वीर उपलब्ध नहीं है।’
बिना और बातचीत किए हम अपने होटल पहुँच गए। लालमोहन बाबू बिलास मजूमदार को प्रशंसा भरी निगाहों से देखते रहे। कमरे में पहुँचते ही फेलुदा ने चाय मंगाई। श्री मजूमदार बैठ गए और अपनी जेब से एक तस्वीर निकाली।
‘देखो, क्या तुम इस आदमी को पहचान सकते हो,’ उसने फेलुदा से कहा।
यह एक पोस्टकार्ड के आकार की तस्वीर थी। टोपी पहने एक आदमी एक अजीब जानवर को पकड़े हुए था, और कई अन्य लोग उन दोनों को देख रहे थे। श्री मजूमदार जिस आदमी की ओर इशारा कर रहे थे, वह वही व्यक्ति था जिससे हम अभी-अभी मिले थे। ‘हां, हम कुछ ही मिनट पहले उसके घर से निकले हैं,’ फेलुदा ने कहा। ‘उस तस्वीर में उसे पहचानना आसान नहीं है, क्योंकि अब उसने दाढ़ी बढ़ा ली है।’
श्री मजूमदार ने तस्वीर वापस ले ली। उन्होंने कहा, 'मुझे बस इतना ही जानना था। मैंने उनके गेट के बाहर उनकी नेमप्लेट देखी थी, लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि यह वही डी.जी. सेन हैं।'
फेलुदा ने टिप्पणी की, 'वह जानवर पैंगोलिन जैसा दिखता है।'
हाँ! अब मुझे याद आया कि मैंने इसके बारे में पढ़ा था। यह चींटी खाने वाले जानवर की एक प्रजाति थी। यह देखने में ऐसा लग रहा था मानो इसने कवच पहन रखा हो।

‘आप सही कह रहे हैं, यह एक पैंगोलिन है। यह नेपाल में पाया जाता है। वह तस्वीर काठमांडू के एक होटल के बाहर ली गई थी। डी.जी. सेन और मैं दोनों वहीं ठहरे हुए थे।’
'ये कब था?'
‘पिछले अक्टूबर में, मैं उस जापानी टीम से मिलने गया था। मेरी कुछ तस्वीरें जापानी पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं। जब उस टीम ने मुझसे संपर्क किया, तो मैं स्वाभाविक रूप से बहुत उत्साहित था। लेकिन, अंत में, मैं उनके साथ नहीं जा सका।’
‘क्यों? क्यों?’ लालमोहन बाबू ने चिंता भरे स्वर में पूछा। हिम तेंदुओं का जिक्र सुनते ही उनके मन में रोमांच की बू आने लगी थी।
'मेरा एक्सीडेंट हो गया था। मुझे इतनी गंभीर चोटें आईं कि मुझे तीन महीने अस्पताल में बिताने पड़े।'
‘क्या तुम्हारे बाएं पैर में चोट लगी है?’ फेलुदा ने पूछा।
'मेरी बाईं टांग की पिंडली की हड्डी टूट गई है। क्यों? क्या यह मेरे चलने के तरीके से स्पष्ट नहीं है?'
नहीं। लेकिन कल हमने रेत पर कुछ पदचिह्न देखे, और उन पदचिह्नों के बाईं ओर एक छड़ी का निशान भी देखा। इसलिए मुझे लगा कि जो भी चलकर आया था, वह या तो बाएं हाथ से काम करता था, या उसके बाएं पैर में चोट लगी थी। आप, जैसा कि मैं देख सकता हूँ, छड़ी का इस्तेमाल नहीं करते।
'कभी-कभी मैं ऐसा करता हूँ। रेत पर चलना अक्सर मुश्किल हो सकता है। लेकिन मैं अभी सिर्फ उनतालीस साल का हूँ। मुझे हर समय हाथ में छड़ी लेकर बूढ़े आदमी की तरह घूमना अच्छा नहीं लगता।'
‘तो फिर यह कोई और ही रहा होगा।’
‘शायद। लेकिन मैं आपको एक बात बता सकता हूँ। मेरी पिंडली की हड्डी टूटना ही मेरी एकमात्र चोट नहीं थी। मैं एक पहाड़ी से लगभग पाँच सौ फीट नीचे लुढ़क गया था। एक स्थानीय किसान के बेटे ने मुझे एक पेड़ पर गिरते देखा—दरअसल, उसी ने मेरी जान बचाई—और उसने हिप्पियों के एक समूह को सूचना दी। वे मुझे अस्पताल ले गए। मेरी सात पसलियाँ टूट गई थीं। मेरी कॉलरबोन भी टूट गई थी। मेरे चेहरे पर चोटें थीं, मेरी ठोड़ी कुचल गई थी। आखिरकार, मैंने अपनी ठोड़ी के निशानों को छुपाने के लिए दाढ़ी बढ़ा ली। मैं दो दिन तक बेहोश पड़ा रहा। जब मुझे होश आया, तो मुझे कुछ भी याद नहीं था, यहाँ तक कि अपना नाम भी नहीं। किसी ने मेरी डायरी में मेरा नाम और पता ढूँढा और कलकत्ता में मेरे परिवार को सूचित किया। मेरा एक भतीजा मुझसे मिलने आया। मैं उसे पहचान नहीं पाया। फिर, धीरे-धीरे मेरी याददाश्त वापस आ गई। अब, बहुत इलाज के बाद, मुझे ज़्यादातर बातें याद हैं, लेकिन दुर्घटना से ठीक पहले क्या हुआ था, वह याद नहीं है। उदाहरण के लिए, डी.जी. सेन के साथ मेरी मुलाकात मेरी डायरी में दर्ज थी, लेकिन दो दिन पहले ही मुझे आखिरकार याद आया कि वह कैसे दिखते थे।’
‘क्या आपको याद है कि श्री सेन काठमांडू क्यों गए थे? क्या इसका प्राचीन पांडुलिपियों से कोई संबंध था?’
‘पांडुलिपियाँ? खैर, मुझे नहीं पता... ये पांडुलिपियाँ कैसी दिखती हैं?’

‘लंबे, पतले और चपटे। सिगरेट के एक कार्टन के आकार के बराबर। वे आमतौर पर लाल रेशम से ढके होते हैं।’
श्री मजूमदार ने कुछ नहीं कहा। उनकी नज़रें मेज पर रखे लैंप पर टिकी थीं; वे विचारों में खोए हुए लग रहे थे। हम सब चुपचाप उन्हें देखते रहे। काफी देर बाद उन्होंने अपनी नज़रें उठाईं। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि मुझे आपको सब कुछ बता देना चाहिए। काठमांडू में जिस होटल में श्री सेन और मैं ठहरे थे, उसका नाम विक्रम होटल था। वह एक अजीब जगह थी। वहाँ कुछ कमरों में एक जैसे ताले लगे थे। एक कमरे की चाबी से दूसरे कमरे का दरवाजा खोला जा सकता था, जो किसी होटल में बिल्कुल भी उम्मीद नहीं की जा सकती। एक दिन, बिल्कुल संयोग से, मैंने अपने बगल वाले कमरे का ताला खोल दिया, यह सोचकर कि वह मेरा ही कमरा है। दरअसल, वह डी.जी. सेन का कमरा था। पहले तो मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरे समझे हुए कमरे में दूसरे लोग भी थे, लेकिन जल्द ही मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया। इसलिए मैंने जल्दी से 'माफ़ कीजिएगा' कहा और वहाँ से चला गया, लेकिन जाने से पहले मैंने कुछ देख लिया था। डी.जी. सेन बिस्तर पर बैठे थे, और दो अजनबी कुर्सियों पर बैठे थे।' उनमें से एक गत्ते के डिब्बे से एक पतला, लंबा पैकेट निकाल रहा था। जहाँ तक मुझे याद है, वह लाल रंग का था, हालाँकि मैं यह नहीं कह सकता कि वह रेशम का था या नहीं।
‘मैं समझ गया। आगे क्या हुआ?’
'कुछ नहीं। मेरा मतलब है, मुझे कुछ भी याद नहीं है। मेरा दिमाग पूरी तरह से खाली हो गया है। मुझे बस इतना याद है कि मैं अस्पताल में जागा था।'
‘अरे!’ लालमोहन बाबू अचानक बोले, ‘ज्योतिषी के पास क्यों नहीं जाते? वो आपको सब कुछ बता देंगे, हर छोटी-बड़ी बात याद दिला देंगे।’
'आप किसके बारे में बात कर रहे हैं?'
‘महान लक्ष्मण भट्टाचार्य। वे श्री सेन के घर के भूतल में किराएदार हैं। अगर आप चाहें तो मैं आपके लिए उनसे मिलने का समय तय कर सकता हूँ। बस एक बार कोशिश करके देख लीजिए, इससे कोई नुकसान नहीं होगा।’
‘अच्छा… ये तो अच्छा विचार है। धन्यवाद।’ श्री मजूमदार को ये विचार काफी पसंद आया।
लालमोहन बाबू ने उत्साहपूर्वक आगे कहा, 'वह बस इतना करेगा कि आपकी माथे के बीचोंबीच स्थित उस तिल पर अपनी छोटी उंगली रखेगा, और फिर वह सब कुछ देख पाएगा: आपका अतीत, वर्तमान और भविष्य।'
मैंने पहले इस पर ध्यान नहीं दिया था, लेकिन अब मुझे श्री मजूमदार के माथे पर एक छोटा सा तिल दिखाई दिया। ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने बिंदी लगा रखी हो।
‘क्या आपके ज्योतिषी आगंतुकों को आने की अनुमति देते हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
'ज़रूर। आपका मतलब है कि आप और तपेश पर्यवेक्षक के रूप में जाना चाहेंगे? कोई बात नहीं, महोदय। मैं उन्हें बता दूंगा।'
‘बहुत खूब। कृपया पता कर लीजिए कि क्या वह आज शाम छह बजे खाली हैं।’ लालमोहन बाबू ने खुशी से सिर हिलाया और फिर श्री मजूमदार को बताया कि ज्योतिषी की फीस पाँच रुपये पचहत्तर पैसे है। श्री मजूमदार हंसने लगे,

लेकिन जब फेलुदा ने बताया कि यह कोई हंसी की बात नहीं है, तो वे रुक गए। ‘ज़रा सोचिए। अगर उन्हें रोज़ाना दस लोग भी मिल जाएं, तो उनकी मासिक आय लगभग दो हज़ार रुपये हो जाएगी। बुरा नहीं है, है ना?’
मुझे यह स्पष्ट था कि हालांकि फेलुदा की अपने भविष्य के बारे में जानने की कोई इच्छा नहीं थी, लेकिन वह श्री मजूमदार की याददाश्त के वापस आने के बारे में काफी उत्सुक था।

पाँच
हमने श्री भट्टाचार्य से मुलाकात से पहले शाम को जगन्नाथ के प्रसिद्ध मंदिर जाने का फैसला किया। मुझे रथ देखने में ज़्यादा दिलचस्पी थी। मैंने फेलुदा से सीखा था कि हर साल जगन्नाथ के पुराने लकड़ी के रथ को विधिपूर्वक तोड़कर उसकी जगह नया रथ बनाया जाता है। पुराने रथ के टूटे हुए टुकड़ों से खिलौने बनाए जाते हैं और बाज़ार में बेचे जाते हैं।
फेलुदा ज्यादा कुछ नहीं बोल रहा था। शायद वह उन सभी नए लोगों के बारे में सोच रहा था जिनसे हम मिले थे और उन्होंने हमसे क्या कहा था। एक छोटी सी बात थी जो मुझे उससे कहनी ही थी।
‘फेलुदा, क्या तुमने गौर किया है,’ मैंने कहा, ‘कि कैसे हर चीज़ नेपाल से जुड़ी हुई लगती है? जिसकी हत्या हुई वह नेपाल का था, बिलास मजूमदार काठमांडू गए थे, और डी.जी. सेन भी...’
‘तो? आपको लगता है कि इसका कोई विशेष महत्व है?’
‘हाँ, मेरा मतलब है...’
'ऐसा कुछ भी मानने का कोई कारण नहीं है। यह महज एक संयोग ही हो सकता है।' 'ठीक है तुम ऐसा कहते हो तो।'
प्रसिद्ध रथ देखने के बाद, हम मंदिर के सामने विशाल बाज़ार में घूम रहे थे, पत्थर से तराशी जा रही कोणार्क की छोटी-छोटी मूर्तियों और पहियों को देख रहे थे, तभी अचानक हमारी मुलाकात इंस्पेक्टर महापात्रा से हो गई। उन्हें पहचानने में मुझे कुछ सेकंड लगे, क्योंकि उन्होंने बाल कटवा लिए थे। उनके नए, ताज़े कटे बालों को देखकर मुझे अपने एक चाचा की याद आ गई, जो नाई की कुर्सी पर बैठते ही सो जाते थे। जब वे जागते, तो नाई उन्हें अपने बाल दिखाता, जिसके बाद अक्सर तीखी बहस हो जाती थी। इंस्पेक्टर महापात्रा में मेरे चाचा से बहुत कुछ समानताएँ थीं।
‘हेलो इंस्पेक्टर!’ फेलुदा ने उनका अभिवादन किया। ‘कोई प्रगति हुई? क्या आप मेहर अली रोड के श्री सरकार से संपर्क कर पाए?’
इंस्पेक्टर ने जवाब दिया, ‘हमें आज दोपहर कुछ सूचना मिली है। चौदह मेहर अली रोड एक अपार्टमेंट ब्लॉक है। इसमें आठ अपार्टमेंट हैं। श्री सरकार तीसरे नंबर के अपार्टमेंट में रहते हैं। उनका फ्लैट एक हफ्ते से बंद है। जाहिर है, वह अक्सर शहर से बाहर जाते हैं।’
‘क्या आपको पता है कि वह इस बार कहां गया है?’
‘पुरी।’
‘सच में? आपको यह किसने बताया?’
'चौथे फ्लैट में रहने वाला व्यक्ति। वह यहां छुट्टी मनाने आया हुआ है।' ‘क्या आपको विवरण मिला?’

'हां, लेकिन इसका वास्तव में कोई मतलब नहीं है। मध्यम कद, दाढ़ी-मूंछ साफ, उम्र पैंतीस से चालीस के बीच।'
'वह क्या करता है?'
‘वह खुद को घुमंतू विक्रेता कहता है। किसी को नहीं पता कि वह क्या बेचता है। उसने वह फ्लैट एक साल पहले लिया था।’
और रूपचंद सिंह?
“वह कल पुरी पहुंचे और बस स्टैंड के पास एक होटल में ठहरे। उन्होंने बिल का भुगतान तक नहीं किया। कल रात उन्होंने होटल से फोन करने की कोशिश की, लेकिन फोन खराब था। इसलिए वे सड़क के उस पार एक दवा की दुकान पर गए और वहां के फोन का इस्तेमाल किया। दवा की दुकान वाले ने उन्हें देखा, लेकिन फोन पर उनकी बातचीत नहीं सुन पाए क्योंकि वे अपने ग्राहकों की सेवा में व्यस्त थे। रूपचंद रात ग्यारह बजे होटल से निकले, लेकिन वापस नहीं लौटे। हमें उनके कमरे में एक सूटकेस मिला जिसमें कुछ कपड़े थे। वे अच्छे, बढ़िया और महंगे कपड़े थे।”
‘यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आजकल ड्राइवर अच्छी कमाई करते हैं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि रूपचंद को जीवन में कुछ अच्छी चीजें खरीदने में ज्यादा मुश्किल हुई होगी।’
इसके तुरंत बाद इंस्पेक्टर महापात्रा चले गए। हम रेलवे होटल की ओर चल पड़े, जहाँ श्री मजूमदार हमारा इंतज़ार कर रहे थे। हम पौने छह बजे वहाँ पहुँचे। होटल स्पष्ट रूप से ब्रिटिश काल में बना था। इसका जीर्णोद्धार किया गया था, लेकिन आज भी इसमें पुराने ज़माने का आभास था। बड़े से सामने के बगीचे में, मेहमान छतरियों के नीचे चाय पी रहे थे। श्री मजूमदार एक मेज़ से उठे और अपने साथियों को संक्षेप में 'माफ़ कीजिए' कहते हुए हमसे मिलने आगे आए।
“ठीक है, चलिए देखते हैं कि आगे क्या होने वाला है,” उन्होंने कहा। आज हमारे मार्गदर्शक लालमोहन बाबू थे। उनका पूरा व्यवहार बदल गया था। सागरिका पहुँचते ही वे सीधे पत्थर के रास्ते पर चलकर बरामदे पर चढ़ गए और तेज़ी से सामने का दरवाज़ा खटखटाया। जब कोई नहीं आया, तो उन्होंने थोड़ा अनिश्चित होकर इधर-उधर देखा, फिर खुद को संभाला और इतने अधिकारपूर्ण स्वर में ‘कोई है?’ कहा कि हम सब आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। तुरंत ही बगल का दरवाज़ा खुल गया।
‘स्वागत है!’ लक्ष्मण भट्टाचार्य ने कहा। उन्होंने रेशमी लुंगी और बढ़िया सूती कढ़ाई वाला कुर्ता पहना हुआ था। उनके पहनावे में कुछ भी खास नहीं था, सिवाय उनकी पतली मूंछों के जो नीचे की ओर झुकी हुई थीं और लगभग उनकी ठोड़ी को छू रही थीं।
लालमोहन बाबू ने परिचय देना शुरू किया, लेकिन बीच में ही रुक गए। श्री भट्टाचार्य ने अंदर आने का निमंत्रण दिया, 'जब हम आराम से बैठ जाएंगे तो एक-दूसरे को जान लेंगे।'
हम उनके बैठक कक्ष में गए, जिसका अधिकांश भाग एक बड़े सोफे से भरा हुआ था। संभवतः यहीं वे काम करते थे। हमने इधर-उधर बिखरी हुई कुर्सियाँ और स्टूल उठा लिए। इनके अलावा कमरे में कोई फर्नीचर नहीं था। एक अंतर्निर्मित

अलमारी थी, जिसके निचले शेल्फ दिखाई दे रहे थे। उनमें कागज़ और लकड़ी के बक्से ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे। कुछ जार और बोतलें भी दिखाई दे रही थीं। ‘क्या आप कृपया यहाँ बैठ सकते हैं?’ श्री भट्टाचार्य ने बिलास मजूमदार की ओर देखा और दीवान की ओर इशारा किया।
श्री मजूमदार उठे और अपनी जगह पर बैठ गए। लालमोहन बाबू ने जल्दी से हमारा परिचय कराया। उन्होंने फेलुदा की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह वही दोस्त है जिसके बारे में मैंने आपको बताया था,' और 'यहाँ जो सज्जन हैं, वे एक प्रसिद्ध वन्यजीव फोटोग्राफर हैं...' वे होंठ दबाते हुए रुक गए। मैं समझ गया था कि वे 'वन्यजीव फोटोग्राफर' कहने वाले थे, लेकिन उन्होंने समझदारी से खुद को रोक लिया।
फेलुदा ने जल्दी से कहा, 'मुझे उम्मीद है कि कमरे में दो अतिरिक्त लोगों के होने से आपको कोई आपत्ति नहीं होगी?'
‘नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे बस मंच पर प्रदर्शन करने के लिए कहे जाने से आपत्ति है। कई लोगों ने मुझसे ऐसा करने को कहा है, मानो मैं कोई जादूगर हूँ। अरे, बस ये दूसरा वाला—’ लक्ष्मण भट्टाचार्य बोलते-बोलते रुक गए। मैंने जल्दी से उनकी तरफ देखा तो पाया कि वे बिलास मजूमदार को घूर रहे थे। ‘कितना अजीब है! आपके चेहरे पर ठीक उसी जगह तिल है जहाँ देवी-देवताओं की तीसरी आँख होती है। क्या आप जानते हैं कि मानव शरीर में उस जगह के नीचे क्या है?’
‘पीनियल ग्रंथि?’ फेलुदा ने पूछा।
‘बिल्कुल सही। मस्तिष्क का सबसे रहस्यमय हिस्सा; या कम से कम पश्चिमी वैज्ञानिक तो यही कहते हैं। भारत के कुछ विचारकों का मानना है कि हजारों साल पहले, मनुष्य सहित अधिकांश जीवों की तीन आंखें थीं। समय के साथ, तीसरी आंख लुप्त हो गई और उसकी जगह पीनियल ग्रंथि आ गई। न्यू गिनी में तारातुआ नामक एक सरीसृप है जिसकी यह तीसरी आंख आज भी मौजूद है।’
फेलुदा ने पूछा, 'जब आप किसी के माथे के बीचोंबीच उंगली रखते हैं, तो क्या इसका उद्देश्य केवल पीनियल ग्रंथि से संपर्क स्थापित करना होता है?'
‘जी हाँ, आप ऐसा कह सकते हैं,’ श्री भट्टाचार्य ने उत्तर दिया। ‘ध्यान रहे, जब मैंने शुरुआत की थी, तब मैंने इस ग्रंथि के बारे में सुना तक नहीं था। मैं उस समय केवल बारह वर्ष का था। एक रविवार को, मेरे एक चाचा को सिरदर्द हो गया। उन्होंने कहा, “अगर तुम मेरा सिर दबाओगे, तो मैं तुम्हें आइसक्रीम खरीदने के लिए पैसे दूंगा।” तो मैंने उनकी कनपटी दबानी शुरू कर दी, और फिर उन्होंने मुझे अपना माथा रगड़ने को कहा। जैसे ही मैंने अपनी उंगली उनके माथे पर धीरे से फेरना शुरू किया, एक अजीब घटना घटी। दृश्य मेरी आँखों के सामने कौंधने लगे—जैसे मैं कोई फिल्म देख रहा हूँ। मैं अपने चाचा को एक छोटे लड़के के रूप में स्कूल जाते हुए देख सकता था; फिर एक युवक के रूप में, “वंदे मातरम” चिल्लाते हुए और पुलिस द्वारा गिरफ्तार होते हुए; फिर मैंने उन्हें शादी करते देखा, उनकी पत्नी की मृत्यु देखी, और यहाँ तक कि उनकी अपनी मृत्यु भी। वे मेरी आँखों के सामने, आँखें बंद किए हुए, हमारे परिवार के कई अन्य सदस्यों से घिरे हुए लेटे थे। फिर वे दृश्य उतनी ही अचानक गायब हो गए जितनी अचानक वे प्रकट हुए थे। मैंने किसी को कुछ नहीं बताया, क्योंकि

मुझे खुद भी इस पर विश्वास नहीं हो रहा था।’ लेकिन जब वास्तव में उनकी मृत्यु हो गई और मैंने जो कुछ भी देखा था वह सच साबित हुआ—तो फिर मुझे एहसास हुआ कि मैंने किसी तरह एक विशेष शक्ति प्राप्त कर ली है, और...’ उनकी आवाज धीमी पड़ गई।
मैंने बाकी लोगों की तरफ देखा। लालमोहन बाबू लक्ष्मण भट्टाचार्य को हैरानी से आँखें फाड़कर देख रहे थे। बिलास मजूमदार ज्योतिषी को सीधे देख रहे थे, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
‘मैंने सुना है कि आपको चिकित्सा का कुछ ज्ञान है, और इस कमरे में मुझे इसका प्रमाण दिखाई दे रहा है,’ फेलुदा ने टिप्पणी की। ‘आप स्वयं को क्या कहते हैं? डॉक्टर, या ज्योतिषी?’
दरअसल, मैंने ज्योतिष नहीं सीखा है। सच कहूँ तो, ग्रहों और नक्षत्रों के बारे में मेरा ज्ञान बहुत सीमित है। अगर मुझमें किसी व्यक्ति का अतीत और भविष्य देखने की शक्ति है, तो यह ईश्वर प्रदत्त शक्ति है। इसमें मेरा कोई हाथ नहीं है। लेकिन मैंने आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा का अध्ययन किया है। इसलिए अगर आप मुझसे पूछें कि मेरा पेशा क्या है, तो मैं कहूँगा कि मैं डॉक्टर हूँ। खैर, श्री मजूमदार, क्या आप थोड़ा आगे आकर बता सकते हैं?
श्री मजूमदार दीवान पर आगे की ओर खिसक कर पालथी मारकर बैठ गए। ज्योतिषी ने मुड़कर अपने दाहिने हाथ की छोटी उंगली एक छोटे कटोरे में डुबोई और फिर उसे एक बेदाग सफेद रुमाल से पोंछा। मैंने पहले उस कटोरे पर ध्यान नहीं दिया था और न ही मैं बता सकता था कि उसमें क्या था। जो भी था, ऐसा लगा जैसे इससे श्री भट्टाचार्य को अपना काम शुरू करने की पर्याप्त प्रेरणा मिल गई हो। उन्होंने अपनी आँखें बंद कीं, हाथ बढ़ाया और एक ही झटके में अपनी छोटी उंगली श्री मजूमदार के माथे पर स्थित तिल पर रख दी। इसके बाद अगले कुछ मिनट खामोशी में बीत गए। किसी ने कुछ नहीं कहा। मुझे बस घड़ी की टिक-टिक और बाहर लहरों की गर्जना सुनाई दे रही थी।
‘तैंतीस… उन्नीस सौ तैंतीस…’ श्री भट्टाचार्य अचानक बोलने लगे। ‘तुला राशि में जन्मे… प्रथम संतान। आठ वर्ष की आयु में टॉन्सिल का ऑपरेशन हुआ — छात्रवृत्ति मिली—और स्कूल छोड़ते समय स्वर्ण पदक मिला—भौतिकी— उन्नीस वर्ष की आयु में स्नातक—तेईस वर्ष की आयु में कमाना शुरू किया— नौकरी—नहीं, नहीं, फ्रीलांस—फोटोग्राफी—संघर्ष, मैं बहुत संघर्ष देख सकता हूँ—लेकिन महान सहनशक्ति और दृढ़ संकल्प—पशुओं से प्रेम—पहाड़ों से प्रेम—पहाड़ों पर चढ़ने में कुशल—अविवाहित—बहुत यात्रा करते हैं— जोखिम लेने से नहीं डरते…’ वे रुक गए।
फेलुदा एक ऐशट्रे को टकटकी लगाए देख रहा था। लालमोहन बाबू सीधे बैठे थे, उत्तेजना से उनकी मुट्ठियाँ भींची हुई थीं। मेरा दिल भी तेज़ी से धड़क रहा था। बिलास मजूमदार के चेहरे पर अभी भी कोई भाव नहीं था, लेकिन उनकी निगाहें ज्योतिषी के चेहरे पर टिकी हुई थीं। एक पल के लिए भी उन्होंने अपनी निगाहें नहीं हटाई थीं।
‘अठहत्तर… अठहत्तर…’ ज्योतिषी ने बोलना फिर शुरू किया। उसके माथे पर पसीने की बूँदें उभरी हुई थीं। उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं; स्पष्ट रूप से उसे बोलने में कठिनाई हो रही थी।

‘…जंगल—वहाँ जंगल है—हिमालय—अच्ची—अच्ची—नहीं, ऐसा नहीं है।’ वह फिर चुप हो गया, लेकिन कुछ ही सेकंड के लिए। फिर उसने अपनी आँखें खोलीं और अपनी उंगली हटा ली। ‘तुम्हें,’ उसने श्री मजूमदार की ओर सीधे देखते हुए कहा, ‘आज जीवित नहीं होना चाहिए था। जो कुछ हुआ उसके बाद तो बिलकुल नहीं। लेकिन तुम बच गए। भगवान ने तुम्हारी जान बचाई।’
‘सच में, ये कोई हादसा नहीं था?’ श्री मजूमदार की आवाज़ रुंधी हुई सी लग रही थी। लक्ष्मण भट्टाचार्य ने सिर हिलाया और एक पान उठाया। ‘नहीं,’ उन्होंने पान मुंह में ठूंसते हुए कहा, ‘जहां तक मेरी नज़र गई, किसी ने जानबूझकर तुम्हें उस पहाड़ी से नीचे धकेला था। बचने की संभावना लगभग न के बराबर थी। ये किसी चमत्कार से कम नहीं कि तुम मौके पर ही नहीं मरे।’
‘लेकिन उसे धक्का किसने दिया?’ लालमोहन बाबू ने अधीरता से पूछा। ‘माफ़ कीजिए,’ लक्ष्मण भट्टाचार्य ने फिर सिर हिलाते हुए कहा, ‘मैं आपको यह नहीं बता सकता। मैंने नहीं देखा कि उसे किसने धक्का दिया। अगर मैं उस व्यक्ति का वर्णन करूँ या उसका नाम बताऊँ, तो यह सरासर झूठ होगा। और मुझे झूठ बोलने के लिए सज़ा मिलेगी। नहीं, मैं आपको वह नहीं बता सकता जो मैंने नहीं देखा।’ ‘सर, अपना हाथ दीजिए,’ बिलास मजूमदार ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा। एक पल बाद, फोटोग्राफर और ज्योतिषी एक-दूसरे से गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए नजर आए।
हम उसके तुरंत बाद वहां से चले गए।

छह
‘आप इसे क्या कहेंगे? फाइव-स्टार या सिक्स-स्टार?’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू की ओर देखते हुए पूछा।
हम श्री मजूमदार के निमंत्रण पर रेलवे होटल में भोजन कर रहे थे। सागरिका से निकलते ही उन्होंने कहा, 'मैं आपका बहुत आभारी हूं। अगर आप न होते तो मैं लक्ष्मण भट्टाचार्य का नाम तक न सुन पाता। उन्होंने जो बताया उससे मेरे कई संदेह दूर हो गए। वास्तव में, मुझे उस रात के बाद की कुछ बातें भी याद हैं जब मैं श्री सेन के कमरे में गया था। इसलिए मुझे बहुत खुशी होगी अगर आप मेरे होटल में भोजन पर मेरे साथ शामिल हो सकें।'
‘मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि रेलवे होटल में खाना इतना स्वादिष्ट हो सकता है,’ लालमोहन बाबू ने बेझिझक स्वीकार किया। ‘मैंने तो यही सोचा था कि यह ट्रेनों में परोसे जाने वाले खाने की तरह ही बेस्वाद होगा। अब मुझे सच्चाई पता चल गई है, इसके लिए आपका धन्यवाद।’
बिलास मजूमदार मुस्कुराए। 'कृपया सूफ़ले लीजिए।'
‘क्या? सूप की प्लेट? लेकिन मैं तो पहले ही सूप पी चुका हूँ!’
नहीं, नहीं। सूफ़ले, सूप प्लेट नहीं। यह मिठाई है।
‘ओह। ओह, अब समझ में आया।’
जब हम सब मिठाई का आनंद ले रहे थे, उसी दौरान श्री मजूमदार ने हमें अपनी याददाश्त वापस आने के बारे में बताया।
किसी और के कमरे में घुसने पर मुझे स्वाभाविक रूप से शर्मिंदगी महसूस हुई, लेकिन मैंने जो देखा उससे मुझे ज़रा भी शक नहीं हुआ। श्री सेन अगले दिन पोखरा जा रहे थे। उन्होंने मुझे अपने साथ चलने का न्योता दिया। जिस जापानी टीम का मैं इंतज़ार कर रहा था, उसके आने में अभी तीन दिन और लगने थे। मेरे पास काफ़ी समय था, इसलिए मैं मान गया। पोखरा काठमांडू से लगभग दो सौ किलोमीटर दूर है। हमें एक जंगल से होकर जाना था। श्री सेन ने ड्राइवर को वहाँ रुकने के लिए कहा, ताकि जंगली ऑर्किड देखे जा सकें। मैं उनके साथ उतर गया, यह सोचकर कि अगर फूल नहीं भी मिले, तो शायद कुछ पक्षी देखने को मिल जाएँ। मुझे याद है कि मैंने अपना कैमरा साथ लिया था। वे एक दिशा में ऑर्किड देखने चले गए। मैं दूसरी दिशा में पक्षियों को देखने चला गया। हमने एक घंटे में गाड़ी में लौटने का फ़ैसला किया। मैं पेड़ों पर नज़र रखते हुए चलने लगा, हर डाल को ध्यान से देख रहा था कि कहीं कोई पक्षी दिख जाए। अचानक, बिना किसी चेतावनी के, मेरे सिर पर ज़ोर का झटका लगा और सब कुछ अँधेरा हो गया।
वह रुक गया। आगे जो होने वाला था, वह हम पहले ही सुन चुके थे। 'तुम्हें अभी भी यकीन नहीं है कि वह वार किसने किया था?' फेलुदा ने पूछा।

'नहीं, बिलकुल नहीं। लेकिन मुझे इतना जरूर पता है: कार मुख्य सड़क पर, लगभग एक किलोमीटर दूर खड़ी थी, और मैंने उस जंगल में एक भी इंसान नहीं देखा था।' 'अगर दोषी मिस्टर सेन थे, तो आपके पास इसे साबित करने के लिए कोई ठोस सबूत नहीं है, है ना?'
नहीं, मुझे डर है कि ऐसा नहीं है।
लालमोहन बाबू कुछ बेचैन लग रहे थे, मानो उनके मन में कुछ चल रहा हो। अब उन्होंने अपने मन की बात कह देने का फैसला किया।
‘देखो,’ उसने कहा, ‘तुम जाकर दुर्गा गति सेन से क्यों नहीं मिलते? अगर वाकई वही वह आदमी है जिसने तुम्हें मारने की कोशिश की, तो यकीनन उसे लगेगा कि वह कोई भूत देख रहा है? और यकीनन इससे उसका भेद खुल जाएगा?’
‘आप सही कह रहे हैं। मैंने ऐसा करने के बारे में सोचा था। लेकिन एक समस्या है। देखिए, जब वह मुझसे मिले थे, तब मेरी दाढ़ी नहीं थी। इसलिए हो सकता है कि वह मुझे पहचान न पाएं। कम से कम तुरंत तो नहीं।’
कुछ मिनट बातचीत करने के बाद हम विदा हुए। श्री मजूमदार हमें विदा करने मुख्य द्वार तक आए। हम चल पड़े और देखा कि आसमान बिल्कुल साफ था और चांद निकल आया था। फेलुदा की जेब में एक छोटी, शक्तिशाली टॉर्च थी, लेकिन चांदनी इतनी अच्छी थी कि उसे इस्तेमाल करने की कोई जरूरत नहीं पड़ी।
हम दूसरी तरफ चले गए और समुद्र के किनारे बनी पक्की सड़क पर चलने लगे। कुछ मिनट बाद लालमोहन बाबू ने कहा, 'फेलू बाबू, मुझे साफ-साफ बताओ, लक्ष्मण भट्टाचार्य के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? क्या वह अद्भुत नहीं हैं?'
‘लालमोहन बाबू चाहे कितने भी अविश्वसनीय क्यों न हों, लेकिन उनका ज्ञान पर्याप्त नहीं है। अगर बिलास मजूमदार को यह पता लगाना है कि उन्हें किसने जान से मारने की कोशिश की थी, तो उन्हें मेरे पास आना होगा। सच्चाई का पता लगाने के लिए फेलू मित्तर के दिमाग की जरूरत है, किसी की अलौकिक शक्ति की नहीं।’
‘क्या मतलब, तुम जांच करने जा रहे हो?’ लालमोहन बाबू ने उत्साह से चमकती आँखों से पूछा। फेलुदा जवाब देने के लिए मुँह खोलने ही वाला था कि हमारी नज़र एक आदमी पर पड़ी, जो तेज़ी से हमारी ओर आ रहा था, ज़मीन की ओर देखते हुए खुद से कुछ बुदबुदा रहा था। वह श्री हिंगोरानी थे।
हमें देखते ही वह एकदम रुक गया। फिर उसने फेलुदा की ओर उंगली हिलाते हुए कहा, 'तुम बंगाली लोग बड़े जिद्दी हो, बहुत जिद्दी!' उसकी आवाज़ में साफ तौर पर नाराज़गी झलक रही थी।
‘क्यों?’ फेलुदा मुस्कुराया। ‘हमने ऐसा क्या किया है जिससे तुम इतने नाराज हो गए हो?’
‘उस आदमी ने मना कर दिया। मैंने उसे पच्चीस हजार की पेशकश की, फिर भी उसने मना कर दिया।’
‘क्या! आपका मतलब है कि इस दुनिया में सचमुच कोई ऐसा व्यक्ति है जो इतने गहरे प्रलोभन का विरोध कर सकता है?’
‘वो आदमी पागल है। मैंने उसके पांडुलिपियों के संग्रह के बारे में सुना था, इसलिए मैंने उससे मिलने का समय तय किया। मैंने कहा, “मुझे अपनी सबसे कीमती

कृति दिखाओ।” तो उसने एक तिजोरी खोली और बारहवीं शताब्दी की एक कृति निकाली। एक असाधारण वस्तु। पता नहीं कहीं से चोरी हुई थी या नहीं। पिछले साल भाटगांव के महल संग्रहालय से तीन पुरानी पांडुलिपियां चोरी हो गईं थीं। उनमें से दो बरामद हो गईं, लेकिन तीसरी अभी भी लापता है। वह प्रज्ञा परमिता द्वारा लिखी गई थी। तो जो मैंने अभी देखा, वह शायद चोरी हुई पांडुलिपि ही हो सकती है।’
‘भटगाँव कहाँ है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। मैंने भी इसके बारे में नहीं सुना था।
'काठमांडू से दस किलोमीटर दूर। यह एक बहुत पुराना शहर है, जिसे पहले भक्तपुर के नाम से जाना जाता था।'
'लेकिन अगर यह चोरी हो गया होता, तो वह इसे आपको नहीं दिखाता, है ना? और, जहाँ तक मुझे पता है, प्रज्ञा पारमिता द्वारा लिखी गई कई पांडुलिपियाँ अभी भी मौजूद हैं,' फेलुदा ने टिप्पणी की।
‘मुझे पता है, मुझे पता है,’ श्री हिंगोरानी ने अधीरता से कहा। ‘उन्होंने कहा कि उन्होंने इसे धर्मशाला में खरीदा था और यह दलाई लामा के साथ भारत आया था। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने इसके लिए कितने पैसे दिए? पाँच सौ। और मैंने उन्हें पच्चीस हज़ार की पेशकश की थी। ज़रा सोचिए!’
'क्या इसका मतलब यह है कि पुरी की आपकी यात्रा पूरी तरह से समय की बर्बादी होने वाली है?'
नहीं। मैं इतनी आसानी से हार नहीं मानता। श्री सेन इस महेश हिंगोरानी को नहीं जानते। उन्होंने मुझे पंद्रहवीं शताब्दी की एक और पांडुलिपि दिखाई। मैं यहाँ कुछ दिनों के लिए हूँ। देखते हैं क्या होता है। मैं आमतौर पर 'ना' को स्वीकार नहीं करता। अच्छा, आप सभी को शुभ रात्रि।
श्री हिंगोरानी अपने होटल की ओर चल पड़े।
‘यह थोड़ा संदिग्ध लगता है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘क्या संदिग्ध लगता है?’
'यह मामला कि वह किसी चीज को पच्चीस हजार रुपये में भी बेचना नहीं चाहता, जबकि उसने उसे केवल पांच सौ रुपये में खरीदा था।'
‘क्यों? क्या आपको यह मानना असंभव लगता है कि कोई व्यक्ति पूरी तरह से लालच से रहित हो सकता है? क्या आपको पता है कि अंकल सिद्धू ने दुर्गा गति सेन को अपने संग्रह की एक पांडुलिपि बेचने से इनकार कर दिया था?’
‘अरे, श्री सेन ने तो इसका जिक्र ही नहीं किया!’
'यही बात मुझे सबसे ज्यादा संदिग्ध लगती है। उन्होंने अंकल सिद्धू से सिर्फ एक साल पहले मुलाकात की थी।'
मुझे लगा कि श्री सेन न केवल विचित्र थे, बल्कि रहस्यमय भी थे। और अगर बिलास मजूमदार की कही बात सच थी...
‘लेकिन फिर,’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘मेरा शक सिर्फ श्री सेन पर ही नहीं है। उदाहरण के लिए, आपके ज्योतिषी को ही ले लीजिए। उन्होंने जिस तीन आंखों वाले सरीसृप के बारे में बताया, उसका नाम तुआतारा है, तारातुआ नहीं; और वह न्यू गिनी में नहीं, बल्कि न्यूजीलैंड में पाया जाता है। खैर, जटायु से ऐसी गलतियां हो सकती हैं। लेकिन अगर लक्ष्मण भट्टाचार्य का मकसद लोगों को ऐसी

जानकारी से प्रभावित करना है, तो उन्हें वाकई में अधिक सटीक होना सीखना चाहिए। फिर निशीथ बोस हैं। उन्हें छुपकर बातें सुनने की बुरी आदत है। उन्होंने कहा कि श्री सेन को गठिया है। उनके कमरे में रखी वो दवाइयां गठिया की थीं ही नहीं।’
वे किसलिए थे?
‘उनमें से एक तो पिछले साल ही जारी हुई थी। मैंने इसके बारे में टाइम पत्रिका में पढ़ा था। मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा कि यह किस काम आती है, लेकिन यह निश्चित रूप से गठिया के लिए नहीं है।’
मैंने बीच में कहा, ‘एक और बात है, श्री सेन कुछ ज्यादा ही चिंतित लग रहे थे, है ना? मुझे आश्चर्य है कि उनके मन में क्या चल रहा है? इसके अलावा, उन्होंने यह क्यों कहा कि वे अपने बेटे को नहीं जानते?’
'मुझे कोई अंदाजा नहीं है। मुझे भी यह बात समझ नहीं आती।'
‘अगर यह सच है कि उसने बिलास मजूमदार को मारने की कोशिश की थी,’ लालमोहन बाबू ने धीरे से कहा, ‘तो शायद यही उसके इतने परेशान होने का कारण हो सकता है। हो सकता है वह बहुत चिंतित हो। हो सकता है—’
वह रुक गया। हम भी रुक गए। हम सब ज़मीन की ओर टकटकी लगाए खड़े रहे। रेत पर पैरों के निशान थे और बाईं ओर एक छड़ी के निशान थे। ये ताज़े निशान थे, जो पिछले कुछ घंटों में बने थे।
बिलास मजूमदार, जो संभवतः चलने के लिए छड़ी का इस्तेमाल करते थे, लक्ष्मण भट्टाचार्य के घर से सीधे अपने होटल लौट आए थे ताकि हमारा इंतजार कर सकें। वे इस रास्ते से पैदल नहीं आ सकते थे।
तो फिर, ये पदचिह्न किसने छोड़े थे?
पुरी के समुद्र तटों पर बाएं हाथ में छड़ी लेकर और कौन घूमता था?

सात
अगली सुबह जब हम नाश्ते के बाद बाहर जाने की योजना बना रहे थे, तभी लालमोहन बाबू की कार आ गई। उनके ड्राइवर ने बताया कि भारी बारिश के कारण वह बालासोर में लगभग चार घंटे तक फंसा रहा, अन्यथा वह पुरी बहुत जल्दी पहुँच जाता। नीलाचल होटल पूरी तरह से भरा हुआ था, इसलिए हमने ड्राइवर के लिए पास ही स्थित न्यू होटल में एक कमरा बुक कराया था। उसने अपनी कार हमारे होटल की पार्किंग में खड़ी की और अपना कमरा ढूंढने चला गया। हमने उसे बताया कि मौसम ठीक रहा तो हम बाद में भुवनेश्वर जा सकते हैं।
फेलुदा स्टेशन जाकर स्टेट्समैन अखबार खरीदना चाहता था। होटल में मिलने वाले बंगाली अखबार से वह संतुष्ट नहीं था। स्टेशन तक पैदल जाने में हमें करीब आधा घंटा लग गया। जब हम वहाँ पहुँचे तो आठ बजकर पैंतालीस मिनट हो चुके थे। कलकत्ता से आने वाली जगन्नाथ एक्सप्रेस सात बजे पहुँच चुकी थी। पुरी एक्सप्रेस एक घंटा लेट थी, लेकिन किसी भी मिनट उसके आने की उम्मीद थी। मुझे रेलवे स्टेशन जाना बहुत अच्छा लगता है, और यह देखना कि कैसे एक शांत और सुकून भरी जगह ट्रेन के आने पर चहल-पहल से भर जाती है।
लालमोहन बाबू को एक किताबों की दुकान दिखी। उन्होंने पूछा, ‘क्या आपके पास मशहूर लेखक जटायु की किताबें हैं?’ वैसे तो पूछने की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि उनकी कम से कम तीन किताबें वहाँ बड़े करीने से रखी हुई थीं। फेलुदा ने अपना अखबार खरीदा और कुछ किताबों के पन्ने पलटने लगा। तभी हमें एक आवाज़ सुनाई दी। ‘क्या मिस्ट्री मैगज़ीन का नया अंक आ गया है?’ मैंने मुड़कर देखा तो निशीथ बोस खड़े थे। पहले तो उन्होंने हमें देखा नहीं था, लेकिन देखते ही उनके चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान आ गई। उन्होंने कहा, ‘ज़रा सोचिए, मैं मिस्ट्री मैगज़ीन खरीद रहा हूँ और एक जासूस मेरे ठीक बगल में खड़ा है!’
‘तुम्हारा बॉस कैसा है?’ फेलुदा ने पूछा।
'मैं बहुत तनाव में हूँ। लोग बिना अपॉइंटमेंट लिए आ जाते हैं और फिर मुझसे मिलने का समय तय करने की गुहार लगाते हैं। किसने सोचा था कि इतने सारे लोग पुरानी पांडुलिपियों में रुचि रखते हैं?'
‘अरे, और कौन मिलने आया था?’
मुझे उसका नाम नहीं पता। उसकी दाढ़ी थी और उसने काले चश्मे पहने थे। उसने कहा कि नाम बताने का कोई फायदा नहीं, क्योंकि श्रीमान सेन उसे पहचान नहीं पाएंगे, लेकिन वह किसी ऐसे व्यक्ति को जानता है जिसके पास बेचने के लिए कुछ पांडुलिपियाँ हैं। तो मैं गया और श्रीमान सेन को सूचित किया, और उन्होंने कहा ठीक है, उसे छत पर ले आओ। मैंने उसे अंदर आने दिया, फिर कुछ पत्र टाइप करने के लिए अपने कमरे में चला गया। तीन मिनट से भी कम समय में, मैंने श्रीमान सेन को मेरा नाम पुकारते सुना। मैं यह देखने के लिए दौड़ा कि क्या

बात है, और उन्हें पीला और बहुत परेशान पाया, मानो उन्हें दिल का दौरा पड़ने वाला हो। वे मुझसे बस इतना ही कह सके, "इस आदमी को तुरंत यहाँ से ले जाओ!" तो मैं उन्हें तुरंत सीढ़ियों से नीचे ले गया। जाने से पहले उन्होंने यह कहने की हिम्मत की, "मुझे लगता है कि आपके मालिक का दिल इतना मजबूत नहीं है। उन्हें डॉक्टर को दिखाओ।" सोचो तो ज़रा!
'वह अब कैसा है?'
‘बेहतर, बहुत बेहतर।’ श्री बोस ने घड़ी पर नज़र डाली और चौंक गए। ‘हे भगवान, मुझे पता ही नहीं था कि इतनी देर हो चुकी है। मुझे अब जाना होगा। आप यहाँ कुछ दिनों के लिए रुकने वाले हैं, है ना? मैं आपको एक दिन सब कुछ बताऊँगा। मुझे बहुत कुछ बताना है। अलविदा!’
जब हम बातें कर रहे थे, तभी पुरी एक्सप्रेस आ गई। गार्ड ने सीटी बजाई और ट्रेन प्लेटफार्म से निकलने लगी। श्री बोस भीड़ में गायब हो गए।
फेलुदा ने स्टॉल से एक किताब चुनी और उसके पैसे दे दिए। मैंने उसके कंधे के ऊपर से देखा तो पता चला कि उसका नाम 'नेपाल की गाइड' था। होटल लौटते समय उसने कहा, 'मुझे लगता है कि आज आप और लालमोहन बाबू का भुवनेश्वर जाना अच्छा रहेगा। मुझे अंदर से लग रहा है कि मुझे यहीं रुकना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि बहुत जल्द कुछ बड़ा होने वाला है, लेकिन कुछ तो गड़बड़ है... मुझे अच्छा नहीं लग रहा। इसके अलावा, मुझे कुछ चीज़ें सुलझानी हैं। मुझे काठमांडू फोन करना है। इससे पहले कि सब कुछ बहुत उलझ जाए, आइए सारी बातें साफ कर लें।' मैं फेलुदा के इस मिजाज से भली-भांति परिचित था। अब वह पूरी तरह से चुप हो जाता और बात करना बंद कर देता। वह अपने कमरे में जाकर पीठ के बल लेट जाता और छत को घूरता रहता। मैंने पहले भी गौर किया था कि ऐसा करते समय वह कभी- कभी तीन-चार मिनट तक बिना पलक झपकाए खाली जगह को घूरता रहता था। लालमोहन बाबू और मैं आमतौर पर ऐसे समय में उसे अकेला छोड़ देते थे या दबी आवाज़ में बात करते थे। मैंने सोचा कि फेलुदा के चुप रहने का इंतज़ार करने से कहीं बेहतर होगा कि हम भुवनेश्वर चले जाएं। मैंने लालमोहन बाबू को इशारा किया कि हमें जल्द से जल्द निकल जाना चाहिए।
हम अपने होटल पहुंचे तो देखा कि श्री मजूमदार होटल से बाहर आ रहे थे। ‘मुझे बहुत खुशी है कि मैंने तुम्हें पकड़ लिया!’ उसने कहा। ‘अगर तुम एक मिनट भी देर से लौटते, तो मैं तुम्हें खो देता।’
'चलो ऊपर चलते हैं।'
श्री मजूमदार हमारे कमरे में आए और अपना चेहरा पोंछते हुए बैठ गए। लालमोहन बाबू ने बड़ी मुस्कान के साथ पूछा, 'तुमने मेरी सलाह मान ली, है ना?'
जी हाँ। श्री सेन ने ठीक वैसे ही प्रतिक्रिया दी जैसा आपने कहा था। वे ऐसे उछल पड़े जैसे उन्होंने कोई भूत देख लिया हो। कमाल है ना, इतनी घनी दाढ़ी होने के बावजूद भी वे मुझे पहचान गए?
'आपके चेहरे में कुछ बहुत ही खास है, श्री मजूमदार, जिसे आपकी दाढ़ी भी नहीं छिपा सकती,' फेलुदा ने कहा।
'क्या?'
‘तुम्हारी तीसरी आंख। इसे भूलना आसान नहीं है।’

हां, आप सही कह रहे हैं। मैं तो सब कुछ भूल ही गया था। खैर, आज कुछ अजीब सा हुआ। जब मैंने श्री सेन को देखा, तो पाया कि इन कुछ महीनों में उनकी उम्र बहुत बढ़ गई है। अरे, काठमांडू में वे जितने दिखते थे, उससे कम से कम दस साल बड़े लग रहे हैं। मुझे उन पर तरस आया। जी हां, सचमुच आया। अब मैं इस सब को भुला सकता हूं। अगर श्री सेन ने मुझे मारने की कोशिश की थी, तो मुझे लगता है कि उन्हें इसकी सजा मिल चुकी है।
'अच्छा,' फेलुदा ने कहा, 'मुझे यह सुनकर खुशी हुई, क्योंकि ठोस सबूत के बिना आप वैसे भी ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाते।'
श्री मजूमदार उठे। उन्होंने पूछा, 'अब आपकी क्या योजना है?' मजूमदार ने जवाब दिया, 'ये दोनों आज भुवनेश्वर जा रहे हैं। मैं यहीं रुकूंगा।'
मुझे लगता है मैं कल पुरी से निकल जाऊंगा। मैंने अभी तक ओडिशा के जंगल नहीं देखे हैं। जाने से पहले आपसे दोबारा मिलने की कोशिश करूंगा।
जब हम वहां से निकले तब तक साढ़े बारह बज चुके थे। लेकिन मौसम सुहाना था और सड़कें भी अच्छी थीं। लालमोहन बाबू का ड्राइवर 80 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ी चला रहा था, जिसकी वजह से हम ठीक बयालीस मिनट में भुवनेश्वर पहुंच गए। सबसे पहले हम राजा रानी मंदिर गए। कुछ साल पहले इस मंदिर की दीवार पर खुदी हुई यक्षी की मूर्ति चोरी हो गई थी। फेलुदा को उसे वापस लाने के लिए बहुत दिमाग लगाना पड़ा था। उसे वापस उसकी जगह पर देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए।
वहाँ देखने लायक दर्जनों अन्य मंदिर थे—लिंगराज, केदार गौरी, मुक्तेश्वर, ब्रह्मेश्वर और भास्करेश्वर, आदि। लालमोहन बाबू ने हर मंदिर को देखने की ज़िद की क्योंकि उन्होंने बताया कि उनके स्कूल के एक शिक्षक— बैकुंठ मल्लिक नाम के एक बेहद प्रतिभाशाली व्यक्ति—ने भुवनेश्वर पर एक कविता लिखी थी जो आज भी उनके मन में बसी हुई है। कम से कम चालीस अन्य पर्यटकों (जिनमें से कई विदेश से थे) की उपस्थिति की परवाह न करते हुए, उन्होंने मुक्तेश्वर मंदिर में मेरे लिए यह कविता सुनाई:
इसकी दीवारों पर
भुवनेश्वर
प्रत्येक मूर्तिकार की कहानी बताइए।
माइकलएंजेलो और दा विंची की तरह,
हमारे अपने देश के सभी गुमनाम नायक
।
‘यह तुकबंदी ठीक से नहीं हो रही है, है ना?’ मैं खुद को यह कहने से रोक नहीं पाया, ‘मेरा मतलब है, “भुवनेश्वर” का “मूर्तिकार” से कोई मेल नहीं है, और आप “दा विंची” की तुकबंदी “देश” से कैसे कर सकते हैं?’
‘मुक्त छंद है, मेरे बच्चे, यह मुक्त छंद है!’ लालमोहन बाबू ने बेपरवाही से जवाब दिया। ‘इसमें तुकबंदी होना ज़रूरी नहीं है।’
हम शाम करीब सात बजे पुरी लौट आए। भुवनेश्वर एक अच्छी जगह थी, साफ-सुथरी, लेकिन मुझे समुद्र की वजह से पुरी कहीं ज्यादा पसंद आई। जैसे ही हम नीलाचल होटल के सामने वाले बरामदे पर चढ़े, हमारे मैनेजर श्यामलाल बारीक ने हमें आवाज़ दी।

‘श्री गांगुली, आपके लिए एक संदेश है!’
हम जल्दी से उसके कमरे में गए।
'मिस्टर मिटर दस मिनट पहले बाहर गए थे। उन्होंने आपको अपने कमरे में इंतजार करने को कहा था।'
‘क्यों? क्या हुआ है?’
‘पुलिस स्टेशन से फोन आया था। श्री डी.जी. सेन के घर में चोरी हो गई है। एक बहुत ही मूल्यवान पांडुलिपि चोरी हो गई है।’
कितनी अजीब बात है! फेलुदा ने आज सुबह ही कहा था कि उसे लग रहा था कि कुछ घटित हो सकता है। किसने सोचा था कि यह इतनी जल्दी हो जाएगा?

आठ
स्नान और एक कप चाय ने मुझे शारीरिक रूप से तरोताज़ा कर दिया, लेकिन मैं इतना बेचैन था कि एक जगह बैठ नहीं पा रहा था। फेलुदा ने अब आधिकारिक तौर पर अपनी जांच शुरू कर दी थी। पुरी, उन कई जगहों की तरह जहाँ हम छुट्टियों में गए थे, ने हमें सुलझाने के लिए एक रहस्य दे दिया था। फेलुदा की क्षमता और उनके पिछले प्रदर्शन को देखते हुए, मुझे पूरा विश्वास था कि हम निराश होकर नहीं लौटेंगे।
लेकिन, मैंने सोचा, क्या फेलुदा को उसकी मेहनत का भुगतान मिलेगा? आखिर, इस मामले में किसी ने उसे काम पर तो रखा ही नहीं था। वैसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। अगर मामला काफी चुनौतीपूर्ण होता और उसे अपने दिमाग का इस्तेमाल करने का मौका मिलता, तो फेलुदा को पैसे की कोई परवाह नहीं होती। ‘तुम्हें किस पर शक है, तपेश?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। अपने कमरे में रहने में असमर्थ, वह मेरे कमरे में आ गए थे और अपने हाथों को पीछे करके इधर-उधर टहल रहे थे।
मैंने कहा, ‘ठीक है, निशित बोस की पांडुलिपियों तक पूरी पहुँच थी, इसलिए उन्हें ही मुख्य संदिग्ध होना चाहिए। लेकिन सिर्फ़ इसी वजह से मुझे नहीं लगता कि उन्होंने यह किया होगा। फिर श्री हिंगोरानी हैं। क्या उन्होंने यह नहीं कहा था कि वे इतनी आसानी से हार नहीं मानेंगे? और बिलास मजूमदार भी हैं। हो सकता है उन्होंने पुराने हिसाब चुकता करने के लिए इसे चुराया हो। शायद आख़िरकार वे माफ़ करके भूल नहीं पाए हों। लेकिन लक्ष्मण भट—’
‘नहीं, नहीं, नहीं!’ लालमोहन बाबू ने बीच में ही टोकते हुए ज़ोरदार विरोध किया, ‘कृपया लक्ष्मण भट्टाचार्य को इसमें मत घसीटिए। उनका चोरी में शामिल होना नामुमकिन है। वे इसके बारे में सपने में भी क्यों सोचेंगे? ज़रा उनकी विशेष शक्ति के बारे में सोचिए!’
‘तो फिर इस बारे में आपके क्या विचार हैं?’ मैंने उनसे पूछा।
मुझे लगता है कि आपकी सूची में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति का नाम गायब है। 'कौन?'
‘स्वयं श्री सेन।’
‘क्या! वह अपनी ही संपत्ति क्यों चुराएगा?’
नहीं, मैं ये नहीं कह रहा कि उसने कुछ चुराया है। मतलब, इस बार तो नहीं। वो पांडुलिपि तो वैसे भी चोरी हो गई थी, जैसा कि श्री हिंगोरानी ने कहा। तो श्री सेन ने उसे पच्चीस हज़ार में बेच दिया; और वो खुद पर से शक हटाने के लिए कह रहा है कि वो चोरी की है। क्या आपको नहीं लगता, अब अगर कोई उस पांडुलिपि के बारे में पूछेगा, तो उसके पास ये कहने का एक वाजिब बहाना होगा कि उसके पास वो नहीं है?

क्या यह सच हो सकता है? यह कुछ हद तक अविश्वसनीय लग रहा था, लेकिन... मैं और कुछ सोच नहीं पा रहा था, तभी एक रूम बॉय आया और उसने बताया कि हमारे लिए एक फोन आया है। यह फेलुदा का ही फोन होना चाहिए। मैं दौड़कर नीचे गया और फोन उठाया।
'हाँ?'
‘क्या श्री बारिक ने आपको मेरा संदेश दिया?’ फेलुदा की आवाज ने पूछा। ‘हां। लेकिन क्या आप कुछ हल निकाल पाए?’
‘श्री बोस लापता हो गए हैं।’
‘सच में? पुलिस को किसने सूचना दी?’
'मैं आधे घंटे में वापस आकर आपको सब कुछ बता दूँगा। भुवनेश्वर कैसा था?' ‘ठीक है। हम—’ मैं अपनी बात पूरी नहीं कर पाया। फेलुदा ने फोन रख दिया था। मैं अपने कमरे में लौटा और लालमोहन बाबू को बताया कि फेलुदा ने अभी क्या कहा था। उन्होंने अपना सिर खुजाया और कहा, 'मैं अपराध स्थल देखना चाहूंगा, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आपके चचेरे भाई को यह पसंद आएगा।'
हम एक घंटे और इंतज़ार करते रहे, लेकिन फेलुदा वापस नहीं आया। मुझे बेचैनी होने लगी। थोड़ी देर बाद, मैंने समय बिताने के लिए एक और केतली चाय मंगाई। फिर मैंने वो काम किया जो फेलुदा ने मुझे कई बार मना किया था। मेरी उस समय की मानसिक स्थिति में, मैं खुद को रोक नहीं पाया। मैंने उसकी नोटबुक खोली और उसमें लिखी कुछ प्रविष्टियाँ पढ़ीं:
डायबिड—गाउट—सांप?—क्या वापस आएगा?—वह अपने बेटे को क्यों नहीं पहचानता?—ब्लैकमेल?—कौन?—क्यों?—छड़ी लेकर कौन चलता है?—
इनमें से किसी भी बात का कोई मतलब नहीं था। हमने बीस मिनट और इंतज़ार किया, फिर हमारा सब्र टूट गया। लालमोहन बाबू और मैं फेलुदा को ढूंढने के लिए होटल से निकल पड़े। हमने सोचा कि अगर वह सागरिका से लौट रहा होगा, तो शायद वह समुद्र के किनारे वाली सड़क से ही जाएगा। होटल से बाहर निकलते ही हम दाईं ओर मुड़ गए।
जैसे ही हमने चलना शुरू किया, मुझे एक बार फिर एहसास हुआ कि अंधेरे में समुद्र कितना अलग दिखता है। लहरें दिन की तरह ही ज़ोर से गरज रही थीं, लेकिन अब वे कुछ डरावनी लग रही थीं। पानी में मौजूद फॉस्फोरस की वजह से ऐसा था। वरना मैं बादलों से घिरे आसमान के नीचे भी उन्हें किनारे से टकराते हुए कैसे देख पाता? दूर आसमान थोड़ा ज़्यादा चमकीला लग रहा था, शायद शहर की रोशनी की वजह से। समुद्र तट पर टिमटिमाती रोशनी की कतारें बता रही थीं कि वहाँ नुलिया पक्षियों की बस्ती है। लालमोहन बाबू के पास टॉर्च थी, लेकिन उसे इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं थी। मेरे पैर रेत में धंसते जा रहे थे। लालमोहन बाबू ने टेनिस शूज़ पहने थे, लेकिन मैंने चप्पलें पहनी थीं। अचानक, मेरी एक चप्पल किसी चीज़ से टकराई। मैं लड़खड़ाकर मुंह के बल गिर पड़ा। मैं ज़रूर चिल्लाया होगा, क्योंकि लालमोहन बाबू तेज़ी से मुड़े और बोले, 'अरे तपेश, जो भी हो—' एक पल बाद, वे भी मेरे पास आ गिरे और ज़मीन पर मेरे साथ आ गए। 'मदद! मदद!' वे कर्कश आवाज़ में चिल्लाए।

‘लालमोहन बाबू,’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा, ‘मुझे अपने पेट के नीचे कुछ महसूस हो रहा है... मुझे लगता है कि यह एक शरीर है, मैं इसके पैर महसूस कर सकती हूँ!’
‘हे भगवान!’ लालमोहन बाबू किसी तरह लड़खड़ाते हुए खड़े हुए और मुझे भी अपने साथ ऊपर खींच लिया। फिर उन्होंने अपनी टॉर्च चालू की, लेकिन पता चला कि वह काम नहीं कर रही थी।
उसने उसे उल्टा कर दिया और बैटरी चालू करने की उम्मीद में उसके पिछले हिस्से पर मारना शुरू कर दिया। उसी क्षण, एक मानव आकृति धीरे-धीरे रेत पर बैठ गई। मैंने उसे हिलते हुए देखा नहीं, बल्कि महसूस किया।
उसने कहा, 'मुझे अपना हाथ दो!'
फेलुदा! हे भगवान, क्या यह फेलुदा ही था? हाँ, वही था।
मैंने उसे अपना दाहिना हाथ बढ़ाया। फेलुदा ने उसे पकड़ा और लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया। सौभाग्य से, लालमोहन बाबू ने टॉर्च जला ली। उन्होंने कांपते हाथों से टॉर्च को फेलुदा के चेहरे पर थोड़ी देर के लिए चमकाया। फेलुदा ने हाथ उठाकर अपना सिर छुआ और दर्द से कराह उठा। जब उसने हाथ नीचे किया, तो टॉर्च की धुंधली रोशनी में भी हम देख सकते थे कि उसका हाथ खून से सना हुआ था।
‘क्या उन्होंने तुम्हारी खोपड़ी तोड़ दी?’ लालमोहन बाबू हकलाते हुए बोला। फेलुदा ने उसकी बात अनसुनी कर दी। मैंने उसे इतना हैरान-परेशान पहले कभी नहीं देखा था।
‘क्या हुआ? मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि कैसे—’ वह रुक गया और अपनी जेब से एक छोटी टॉर्च निकाली। उसकी बेहतर और स्थिर रोशनी में, हमने पैरों के निशानों की एक श्रृंखला देखी जो उस जगह से शुरू होकर ऊँचे किनारे की ओर जा रही थी जहाँ वह गिरा था, और जहाँ रेतीला किनारा खत्म होता था।
हम पदचिह्नों का पीछा करते हुए किनारे तक पहुँच गए। जो भी था, वह उस पर चढ़कर गायब हो गया था, लेकिन बड़ी मुश्किल से। उखड़ी हुई घास के गुच्छे बिखरे पड़े थे, जो इस बात का प्रमाण थे कि चढ़ाई आसान नहीं थी। दूर-दूर तक कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, यहाँ तक कि नुलिया की कोई छोटी सी झोपड़ी भी नहीं।
फेलुदा होटल लौटने के लिए मुड़ा। हम उसके पीछे-पीछे गए। लालमोहन बाबू ने अजीब सी आवाज़ में पूछा, 'तुम कितनी देर ज़मीन पर लेटे रहे?' फेलुदा ने अपनी घड़ी पर टॉर्च की रोशनी डाली और जवाब दिया, 'लगभग आधा घंटा, मुझे लगता है।' ‘क्या आपको डॉक्टर को नहीं दिखाना चाहिए? आपके सिर पर लगे घाव पर टांके लगाने की जरूरत पड़ सकती है।’
‘नहीं,’ फेलुदा ने धीरे से कहा। ‘यह सच है कि मेरे सिर पर चोट लगी है। लेकिन कोई चोट नहीं है, कोई खुला घाव नहीं है।’
‘नहीं? तो फिर वो सारा खून कहाँ से आया—?’
लालमोहन बाबू के अधूरे शब्द हवा में गूंजते रहे। फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया।

नौ
होटल पहुँचते ही फेलुदा ने अपने सिर पर बर्फ की पट्टी रख ली। आधे घंटे में सूजन कम होने लगी। हममें से किसी को भी अंदाज़ा नहीं था कि उसे किसने चोट पहुँचाई होगी। फेलुदा ने बताया कि वह सागरिका से लौट रहा था, तभी किसी ने उसकी आँखों में तेज़ टॉर्च की रोशनी डाल दी, जिससे वह कुछ पल के लिए अंधा हो गया और फिर उसे बेहोश कर दिया। जब उसने पुलिस स्टेशन में महापात्रा को फोन करके मामले की जानकारी दी, तो महापात्रा ने कहा, 'श्री मित्तर, आपको बहुत सावधान रहना चाहिए। यहाँ बहुत से खतरनाक लोग घूम रहे हैं। आप अपनी जाँच रोककर हमें यह मामला संभालने क्यों नहीं देते? क्या यह ज़्यादा सुरक्षित नहीं होगा?'
'अगर आपने मुझ पर हमले से पहले यह सुझाव दिया होता, तो शायद मैं मान जाता। अब, इंस्पेक्टर, बहुत देर हो चुकी है।'
रात के खाने के बाद जब हम अपने कमरे में लौटे तो लगभग ग्यारह बज रहे थे। अचानक ही हमारे मैनेजर, श्री बारिक, एक अन्य सज्जन के साथ वहाँ आ गए। उन्होंने कहा, 'ये आधे घंटे से आपका इंतज़ार कर रहे थे। मैं आपके खाने में खलल नहीं डालना चाहता था,' और फिर अपने कमरे में लौट गए।
दूसरे व्यक्ति ने फेलुदा से कहा, ‘मैंने आपके बारे में सुना है। दरअसल, आपके कुछ पुराने मामलों के बारे में पढ़कर मैं आपके साथियों को भी जानता हूँ। मेरा नाम माहिम सेन है।’
फेलुदा ने भौंहें चढ़ा लीं। 'इसका मतलब—?'
डी.जी. सेन मेरे पिता हैं।
एक पल के लिए हममें से कोई कुछ बोल नहीं पाया। माहिम सेन ने आगे कहा, 'मैं आज दोपहर कार से आया हूँ। मेरी कंपनी का यहाँ एक गेस्ट हाउस है। मैं यहीं ठहरा हुआ हूँ।'
क्या तुम अपने पिता से नहीं मिले?
‘मैंने यहां पहुंचते ही उन्हें फोन किया। उनके सचिव ने फोन उठाया और मेरे पिता से पुष्टि करने के बाद कहा कि वह मुझसे बात नहीं करना चाहते।’
'क्यों नहीं?'
'मुझे पता नहीं है।'
'जब मैं हाल ही में आपके पिता से मिला, तो मुझे ऐसा लगा कि वे आपसे बहुत खुश नहीं थे। क्या आप मुझे इसका कारण बता सकते हैं?'
माहिम सेन ने तुरंत जवाब नहीं दिया। उन्होंने अपनी जेब से रॉथमन्स सिगरेट का पैकेट निकाला और एक सिगरेट निकाली। फिर उन्होंने उसे जलाया, कश लिया और कहा, 'देखिए, मैं अपने पिता के कभी करीब नहीं रहा। मुझे पांडुलिपियों के प्रति उनके जुनून में कोई दिलचस्पी नहीं थी—कला और पुरातन वस्तुओं की मेरी समझ ही नहीं है। मैं कलकत्ता में रहता हूँ और एक निजी कंपनी में काम

करता हूँ। कभी-कभी मुझे व्यापारिक यात्राओं के लिए विदेश जाना पड़ता है। लेकिन इन सबके बावजूद, मेरे अपने पिता के साथ अच्छे संबंध थे। अगर मैं उन्हें पत्र लिखता, तो वे हमेशा मेरे पत्रों का जवाब देते थे। पुरी जाने के बाद मैं अपने परिवार के साथ दो बार उनसे मिलने गया और उनके घर की पहली मंजिल पर कुछ सप्ताह बिताए। वे मेरे आठ वर्षीय बेटे को बहुत प्यार करते थे — और शायद अभी भी करते हैं। लेकिन इस बार उनका व्यवहार मुझे समझ नहीं आ रहा है। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि उनके जैसा मजबूत आदमी 62 साल की उम्र में इतना कमजोर हो गया है। मुझे यह भी नहीं पता कि इसके पीछे कोई तीसरा व्यक्ति जिम्मेदार है या नहीं।' इसलिए जब मुझे पता चला कि आप शहर में हैं, तो मैंने सोचा कि मैं आकर आपसे मिल लूँ।'
‘आपके पिता के पास यह सचिव कब से है?’
लगभग चार साल। मैंने उसे 1976 में आने पर देखा था।
‘आप उसे किस तरह का आदमी मानते हैं?’
'यह कहना मुश्किल है, मैं उन्हें मुश्किल से ही जानता था। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि वे कागजात और फाइलों को व्यवस्थित रखने और पत्र टाइप करने में अच्छे हो सकते हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि मेरे पिता उनसे वैसे बात नहीं कर सकते थे जैसे वे किसी दोस्त से करते हैं।'
तो फिर, आपको यह जानना चाहिए: आपके पिता के संग्रह में मौजूद एक अत्यंत मूल्यवान पांडुलिपि चोरी हो गई है, और उनका सचिव लापता हो गया है।'
Mahim Sen’s jaw fell open.
‘क्या! क्या तुम सचमुच वहाँ गए थे?’
'हाँ।'
‘आपने मेरे पिता को कैसे ढूंढा?’
स्वाभाविक रूप से, वे सदमे में थे। लगता है कि हाल ही में उन्हें दोपहर में नींद आने लगी है और वे नींद लाने के लिए कुछ दवा लेते हैं। आज शाम साढ़े छह बजे एक अमेरिकी को उनसे मिलना था। यह मुलाकात निशिथ बोस ने करवाई थी। लेकिन वे उस आगंतुक को आपके पिता से मिलवाने के लिए ऊपर नहीं ले गए। एक नौकर उन्हें नीचे मिला और उनके साथ गया। आम तौर पर श्री सेन चार बजे तक उठ जाते हैं, लेकिन आज वे छह बजे तक सोए। खैर, जब वह अमेरिकी आया और उसने कहा कि वह सबसे पुरानी पांडुलिपि देखना चाहता है, तब वे उठ चुके थे। आपके पिता ने तब उस तिजोरी को खोला जिसमें वह पांडुलिपि रखी थी, लेकिन पाया कि लाल रेशम में लिपटी हुई सफेद कागज की पट्टियाँ ढेर सारी थीं। इन्हें दो छोटी लकड़ी की छड़ों के बीच रखा गया था, इसलिए पैकेट खोले बिना यह बताना असंभव था कि असली पांडुलिपि गायब हो गई है। जब उन्हें पता चला कि उनकी सबसे कीमती चीज चोरी हो गई है, तो आपके पिता इतने परेशान हो गए कि आखिरकार अमेरिकी आगंतुक ने पुलिस को सूचना दे दी।
‘क्या इसका मतलब यह है कि यह निशिथ बोस थे जिन्होंने—?’
ऐसा ही लग रहा है। आज सुबह मेरी उससे रेलवे स्टेशन पर मुलाकात हुई थी। अब लगता है कि वह टिकट खरीदने गया था। पुलिस ने स्टेशन पर पूछताछ की, लेकिन तब तक पुरी एक्सप्रेस और कलकत्ता जाने वाली अन्य ट्रेनें जा चुकी थीं। पुलिस अभी भी उसकी तलाश कर रही है।

फेलुदा चुप हो गया। हममें से किसी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें।
पिछले कुछ घंटों में इतनी सारी घटनाएं घट चुकी थीं कि मेरा सिर चकरा गया।
‘क्या आपको पता था कि आपके पिता पिछले साल नेपाल गए थे?’ फेलुदा ने पूछा। ‘अगर वह अगस्त के बाद गए होते, तो मुझे पता नहीं होता, क्योंकि मैं अगस्त से शुरू होकर सात महीने विदेश में थी। पिताजी पांडुलिपियों की खोज में काफी यात्रा करते थे। आखिर नेपाल में क्या हुआ?’
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि इसके बजाय एक और सवाल पूछा। 'क्या आपको पता है कि आपके पिता को गठिया है?'
माहिम सेन पूरी तरह से अचंभित नजर आए।
‘गाउट? मेरे पिताजी को गाउट है? आप क्या कह रहे हैं, श्रीमान मिटर?’
‘क्या इस बात पर विश्वास करना इतना मुश्किल है?’
'जी हां, ऐसा ही है। मैंने पिताजी को पिछले मई में देखा था। वे अक्सर समुद्र तट पर लंबी, तेज सैर किया करते थे। वे हमेशा अपने खान-पान का ध्यान रखते थे, कभी शराब या सिगरेट नहीं पीते थे, न ही ऐसा कुछ करते थे जिससे उनके स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचे। वास्तव में, उन्हें अपने अच्छे स्वास्थ्य पर हमेशा गर्व रहा है। अगर आपकी बात सच है, तो यह जितना आश्चर्यजनक है उतना ही दुखद भी है।'
क्या यही उसकी वर्तमान मानसिक स्थिति का कारण हो सकता है?
'हां, बिल्कुल। मुझे नहीं लगता कि वह कभी खुद को विकलांग के रूप में स्वीकार कर पाएगा।'
‘ठीक है, मैं यहाँ कुछ दिनों के लिए रहूँगा। देखते हैं मैं क्या कर पाता हूँ। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि बहुत सी बातें मुझे स्पष्ट नहीं हैं,’ फेलुदा ने कहा।
माहिम सेन उठे। 'मैं यहां अपने पुराने पारिवारिक व्यवसाय से संबंधित कुछ बातों पर चर्चा करने आया हूं। मुझे तब तक रुकना होगा जब तक पिताजी मुझसे मिलने के लिए सहमत नहीं हो जाते।'
इसके बाद उन्होंने अलविदा कहा और चले गए। हमने थोड़ी देर बातचीत की, फिर सोने का फैसला किया। लगभग आधी रात हो चुकी थी।
लालमोहन बाबू दरवाजे के पास रुक गए और पीछे मुड़े। उन्होंने कहा, 'फेलू बाबू, मुझे अभी-अभी एक बात याद आई। आपको काठमांडू फोन करना था, है ना?' 'हां, मैं था; और मैंने किया। मैंने वीर अस्पताल में डॉ. भार्गव से बात की और उनसे पूछा कि क्या बिलास मजूमदार नाम के किसी व्यक्ति को पिछले अक्टूबर में गंभीर चोटों के साथ इस अस्पताल में लाया गया था।'
‘उसने क्या कहा?’
‘उन्होंने श्री मजूमदार द्वारा बताई गई हर बात की पुष्टि की। उनकी पिंडली की हड्डी टूटी हुई थी, कॉलरबोन में फ्रैक्चर था, पसलियां टूटी हुई थीं और ठोड़ी पर चोट लगी थी।’
‘क्या आपको श्री मजूमदार की कहानी पर विश्वास नहीं हुआ?’
तथ्यों की जांच-पड़ताल करना एक जांचकर्ता के काम का अनिवार्य हिस्सा है। लालमोहन बाबू, आप इस बात से भलीभांति परिचित होंगे, है ना? क्या आपके अपने हीरो, प्रखर रुद्र भी ऐसा ही नहीं करते?

‘जी-जी हाँ, जी हाँ, बिल्कुल…’ लालमोहन बाबू बुदबुदाए और झट से कमरे से बाहर चले गए। मैं लेट गया और बाहर लहरों की आवाज़ सुनने लगा। मुझे पता था कि फेलुदा के मन में भी ऐसी ही उथल-पुथल चल रही होगी। एक विचार दूसरे का पीछा कर रहा होगा, ठीक समुद्र की बेचैन लहरों की तरह, लेकिन वह शांत, संयमित और स्थिर दिखाई दे रहा था। जब नुलिया परिवार अपनी मछली पकड़ने वाली नावों में किनारे के पास की लहरों को पार करते हुए गहरे पानी में जाता था, तो शायद उन्हें यही देखने को मिलता था: एक शांत और निर्मल समुद्र।
‘ये क्या है, फेलुदा?’ मैंने अचानक देखा कि फेलुदा ने अपनी जेब से एक भूरे रंग की चौकोर वस्तु निकाली है। ध्यान से देखने पर पता चला कि वह एक बटुआ था।
फेलुदा ने उसे खोला और उसमें से कुछ दस-दस रुपये के नोट निकाले। फिर उसने उन्हें वापस रख दिया और अनमने ढंग से बोला, 'मुझे यह निशित बोस के कमरे की दराज में मिला। वह अपना सूटकेस और बिस्तर तो ले गए, लेकिन बटुआ वहीं छोड़ गए। अजीब बात है!'

दस
अगली सुबह जब मैंने आंखें खोलीं तो देखा कि फेलुदा योगाभ्यास कर रहे थे।
इसका मतलब था कि सूरज अभी तक नहीं निकला था। पिछली रात जब मैं सोने गया था तब वे जाग रहे थे और काफी देर तक टेबल लैंप की रोशनी में काम करते रहे थे। भोर होते ही वे कैसे उठ गए, यह एक रहस्य था।
बरामदे से हल्की सी आवाज़ सुनकर मैंने उस तरफ देखा। मुझे आश्चर्य हुआ कि लालमोहन बाबू अपने कमरे के ठीक बाहर खड़े होकर, अपने पसंदीदा लाल-सफेद सिग्नल टूथपेस्ट को टूथब्रश पर लगा रहे थे। ज़ाहिर है, हमारी तरह वे भी इतने परेशान थे कि चैन से सो नहीं पा रहे थे।
फेलुदा ने अपना योगाभ्यास समाप्त किया और कहा, 'अब मैं एक कप चाय पी लूंगा, और फिर बाहर जाऊंगा।'
'कहाँ जाना है?'
‘कहीं खास नहीं। बस बाहर। मुझे अपना दिमाग शांत करना है। कभी-कभी किसी विशाल और भव्य चीज़ को देखने से चीज़ों को सही परिप्रेक्ष्य में देखने में मदद मिलती है। मुझे समुद्र के सामने खड़े होकर सूर्योदय देखना चाहिए। शायद यह एक टॉनिक की तरह काम करे।’
जब तक हमने अपनी चाय खत्म की, होटल के कई अन्य मेहमान जाग चुके थे, जिनमें श्री बारिक भी शामिल थे।
बाहर जाने से पहले फेलुदा उससे मिलने गया।
उन्होंने कहा, 'क्या आप नेपाल के लिए एक और कॉल बुक कर देंगे? ये रहा नंबर, और अगर महापात्रा कॉल करें, तो कृपया उन्हें संदेश छोड़ने के लिए कह देना। और—ओह—क्या यहाँ अच्छे डॉक्टर हैं?'
‘आपको कितने चाहिए? बेशक हमारे पास यहाँ अच्छे डॉक्टर हैं, श्रीमान मिटर, आप किसी छोटे गाँव में तो नहीं आए हैं!’
'नहीं, नहीं, मुझे पता है मैंने ऐसा नहीं किया है। लेकिन देखिए, मुझे एक युवा और कुशल डॉक्टर की जरूरत है। उम्र के कारण कमजोर हो चुके किसी डॉक्टर की नहीं।'
‘इसमें कोई दिक्कत नहीं है। रात दस बजे के बाद ग्रैंड रोड स्थित उत्कल केमिस्ट पर जाइए। आपको वहां डॉ. सेनापति अपने चैंबर में मिल जाएंगे।’ लालमोहन बाबू और मैंने फेलुदा के साथ बाहर जाने का फैसला किया। समुद्र तट पर कुछ नुलियाओं के अलावा कोई नहीं था। पूर्वी आकाश लाल रंग से जगमगा रहा था। धूसर बादल तैर रहे थे, जिनके किनारे हल्के गुलाबी रंग के थे। समुद्र नीला-काला था; केवल किनारे पर टकराने वाली लहरों की चोटियाँ ही चमकदार सफेद थीं।
पहले दिन हमने जिन तीन नुलिया बच्चों को देखा था, वे वापस समुद्र तट पर केकड़ों की तलाश कर रहे थे।

'इस खूबसूरत समुद्र तट की एकमात्र कमी ये केकड़े हैं,' लालमोहन बाबू ने घृणा से नाक सिकोड़ते हुए टिप्पणी की।
‘तुम्हारा नाम क्या है?’ फेलुदा ने लड़कों में से एक से पूछा। उसके सिर पर लाल रंग का दुपट्टा लिपटा हुआ था।
‘रमाई,’ उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
हम चलते रहे। लालमोहन बाबू अचानक काव्यात्मक हो गए। 'समुद्र को देखो... कितना विशाल, कितना बड़ा, कितना... कितना मुक्तिदायक... यह कल्पना करना कठिन है कि इस जगह पर कभी रक्तपात हुआ होगा!'
‘हम्म… कुंद हथियार…’ फेलुदा ने अनमने ढंग से कहा। मुझे पता था कि हत्या के हथियार आमतौर पर तीन प्रकार के होते हैं: आग्नेयास्त्र जैसे रिवॉल्वर या पिस्तौल; धारदार हथियार जैसे चाकू और कटार; या कुंद हथियार जैसे भारी छड़ें या डंडे। फेलुदा स्पष्ट रूप से पिछली रात अपने ऊपर हुए हमले के बारे में सोच रहा था। शुक्र है कि यह कुछ गंभीर नहीं था।
‘पैरों के निशान... देखो!’ फेलुदा अचानक चिल्लाया। मैंने उसकी ओर इशारा करते हुए देखा और ताज़े निशान देखे: पैरों के निशान, साथ ही एक छड़ी का जाना-पहचाना निशान भी।
‘बिलास मजूमदार! वह तो सुबह जल्दी उठने वाला होगा,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘क्या तुम्हें सच में ऐसा लगता है? उस आदमी को देखो,’ फेलुदा ने दूर खड़े एक व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘क्या तुम्हें लगता है कि वह बिलास मजूमदार जैसा दिखता है?’
दूर से भी यह बताना मुश्किल नहीं था कि बाएं हाथ में छड़ी लेकर चल रहा व्यक्ति श्री मजूमदार बिल्कुल नहीं था।
‘तुम सही कह रहे हो। कोई और है। अरे, ये तो सनसनीखेज सेन हैं!’ लालमोहन बाबू चिल्लाए।
'सही कहा। यह दुर्गा गति सेन हैं।'
लेकिन वो चल कैसे रहा है? उसके गठिया का क्या हुआ?
‘मैं यही जानना चाहता हूँ। शायद लक्ष्मण भट्टाचार्य की दवाइयाँ चमत्कारिक रूप से ठीक कर सकती हैं, कौन जानता है?’
हम दोनों असमंजस में थे, फिर हमने चलना शुरू किया। आख़िरकार हमें कितने रहस्यों का सामना करना पड़ेगा?
जैसे ही हमने बाएँ मुड़ा, रेलवे होटल दिखाई देने लगा। दाईं ओर मुझे कुछ नुलिया और तीन विदेशी स्विमिंग ट्रंक पहने हुए दिखाई दिए। उनमें से एक ने फेलुदा को देखा और अभिवादन के लिए हाथ उठाया। फेलुदा ने भी हाथ हिलाकर जवाब दिया और जल्दी से बताया कि यह वही अमेरिकी है जिसने श्री सेन के घर से पुलिस को सूचना दी थी।
हम आगे बढ़ते रहे। श्री हिंगोरानी तेज़ी से चल रहे थे, उनके कंधे पर एक तौलिया लटका हुआ था। वे गुस्से से भौंहें चढ़ाए हुए थे, बेहद नाराज़ दिख रहे थे। उन्होंने हमारी तरफ देखा तक नहीं। फेलुदा बीच छोड़कर एक ढलान पर चढ़ने लगे। मुझे लगा कि वे सागरिका के पास जा रहे हैं। क्या उनका दिमाग साफ़ हो गया था? क्या उन्हें उम्मीद की किरण नज़र आने लगी थी? लेकिन इससे पहले कि मैं उनसे कुछ पूछ पाता, कहीं से एक और आवाज़ आई। 'सुप्रभात!'

लक्ष्मण भट्टाचार्य हमारे सामने खड़े थे, उन्होंने कमर में tucked लुंगी पहनी हुई थी, उनके कंधे पर एक तौलिया था और उनके हाथ में नीम की एक टहनी थी। ‘सुप्रभात। कल शाम आप कहाँ थे?’ फेलुदा ने पूछा।
‘कल शाम? ओह, मैं कुछ कीर्तन सुनने गया था। मंगलघाट रोड पर एक समूह है। वे बहुत अच्छा गाते हैं। मैं कभी-कभी वहां जाता हूं।’
जब मैं तुम्हें ढूंढने गया तो तुम घर पर नहीं थे। तुम घर से किस समय निकले थे?
‘मैं छह बजे के बाद ही निकल सकता हूँ। मैं तभी गया था।’
‘मुझे लगा कि आप श्री सेन के घर में हुई इस चोरी के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं, क्योंकि आप खुद उसी घर में रहते हैं। आपके कमरे से बगल वाली गली दिखती है, है ना?’
जी हां। दरअसल, मैंने निशित बोस को उसी गली से अपना सामान लेकर जाते हुए देखा था। उस समय मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वैसे भी उनसे कलकत्ता जाने की उम्मीद थी।
'में क्यों?'
उनकी मां गंभीर रूप से बीमार थीं। उन्हें कुछ दिन पहले एक टेलीग्राम मिला था।
क्या आपने यह टेलीग्राम देखा?
'जी हां, श्री सेन ने भी ऐसा ही किया।'
‘अरे, उसने तो इस बारे में कुछ कहा ही नहीं!’ फेलुदा हैरान होकर बोला। ‘अच्छा... अब मैं क्या कहूँ? तुमने खुद ही उसकी हालत देख ली है। उसे दुख भोगना ही है। जो होना तय है, उसे कौन बदल सकता है?’
‘क्या आपने श्री सेन के भविष्य की भी जांच की है?’ लालमोहन बाबू ने चिंता से पूछा।
इस कस्बे में बहुत कम लोग ऐसे हैं जो मेरे पास नहीं आए हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं समस्या क्या है? मैं हमेशा लोगों को वो सब नहीं बता सकता जो मैं देखता हूँ। मैं तभी बोलता हूँ जब मुझे किसी बीमारी के लक्षण दिखाई देते हैं। लेकिन किसी से ये कहना कैसे संभव है कि: तुम एक दिन हत्या करोगे, या तुम जेल जाओगे, या तुम्हें फाँसी दी जाएगी? अगर मैं उन्हें ऐसी अप्रिय बातें बताऊँगा तो कोई भी मेरे पास आना नहीं चाहेगा। इसलिए मुझे अपने शब्दों का चुनाव बहुत सावधानी से करना पड़ता है क्योंकि लोग केवल अच्छी बातें सुनना चाहते हैं।
श्री भट्टाचार्य समुद्र की ओर चल दिए। हम सागरिका की ओर बढ़े। सुबह की धूप में वह बेहद खूबसूरत लग रही थी।
'मौत का घर,' लालमोहन बाबू ने अचानक कहा।
‘आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?’ फेलुदा ने विरोध किया। ‘आप इसे चोरी का घर कह सकते हैं, लेकिन इस घर में कभी किसी की मौत नहीं हुई है।’
‘नहीं, नहीं। मेरा मतलब सागरिका से नहीं है,’ लालमोहन बाबू ने जल्दी से समझाया। ‘मेरा मतलब उस दूसरे घर से है जो किसी भी क्षण ढह सकता है।’
हमने इस घर को पहले भी देखा था, लेकिन ध्यान से नहीं देखा था। सागरिका इससे लगभग तीस गज दूर थी। अब मैंने इसे गौर से देखा और लालमोहन बाबू की बात से

सहमत हो गया। वैसे भी, सीलन भरी दीवारों वाली एक पुरानी और जर्जर इमारत देखने में अच्छी नहीं लगती। इस इमारत में तो और भी खामियां थीं, यह रेत में धंस गई थी। लगभग छह फीट नीचे तक रेत में दबी हुई थी। इससे यह काफी डरावनी लग रही थी। दिन के उजाले में भी इसे देखकर रोंगटे खड़े हो गए। रात में यह कैसी दिखती होगी?
आज फेलुदा इसके पास से गुजरने के बजाय इसमें दाखिल हो गया। मुख्य द्वार के खंभे अभी भी सीधे खड़े थे। वहाँ एक टूटी-फूटी और गंदी संगमरमर की पटिया थी जिस पर 'भुजंगा निवास' लिखा था। अगर घर इसी तरह धंसता रहा, तो जल्द ही यह पटिया रेत में डूब जाएगी। द्वार के उस पार कभी एक छोटा सा बगीचा रहा होगा। फिर सीढ़ियों की एक श्रृंखला बरामदे तक जाती थी। केवल ऊपर की दो सीढ़ियाँ ही दिखाई दे रही थीं; बाकी रेत में गायब हो गई थीं। बरामदे के चारों ओर की रेलिंग घिस चुकी थी। यह आश्चर्य की बात थी कि छत अभी तक गिरी नहीं थी। बरामदे के पीछे का कमरा शायद एक ड्राइंग रूम रहा होगा।
‘यह पूरी तरह से वीरान नहीं लग रहा है,’ फेलुदा ने टिप्पणी की। मुझे तुरंत समझ आ गया कि उसने ऐसा क्यों कहा था, क्योंकि बरामदे की धूल भरी ज़मीन पर पैरों के निशान थे।
‘और यहाँ माचिस की तीलियाँ हैं, फेलुदा!’ मैंने कहा। एक खंभे के पास तीन माचिस की तीलियाँ पड़ी थीं।
'हां, मुझे लगता है कि अगर आप इस तेज हवा में खड़े होकर सिगरेट जलाने की कोशिश करेंगे, तो कुछ सिगरेट बर्बाद हो ही जाएंगी,' फेलुदा ने जवाब दिया। हम फाटक से अंदर दाखिल हुए। घर के अंदर क्या है, यह जानने की मेरी उत्सुकता चरम पर थी। ड्राइंग रूम का दरवाजा खुला था और हवा से खड़खड़ा रहा था। फेलुदा ने फर्श पर बने पदचिह्नों का निरीक्षण किया। वे बहुत स्पष्ट नहीं थे, क्योंकि उन पर रेत की एक नई परत जम चुकी थी। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि हाल ही में कोई जूते पहने हुए व्यक्ति इस बरामदे पर चला होगा। जब फेलुदा ने अपने पैर से कुछ रेत हटाई तो एक और चीज़ दिखाई दी—एक गहरा धब्बा, जो मुझे पान के रस जैसा लगा। लेकिन लालमोहन बाबू तुरंत पीछे हट गए और बोले कि यह खून ही होगा। फिर उन्होंने कुछ बुदबुदाते हुए कहा कि नाश्ते का समय हो गया है। इसका साफ मतलब था कि उन्हें घर में जाने की कोई इच्छा नहीं थी और वे होटल वापस जाना चाहते थे। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा, कुछ उत्साह से और कुछ डर से। केवल फेलुदा ही बिल्कुल शांत रहे। 'मुझे लगता है हमें तुम्हारे मृत्युघर जाना चाहिए,' उन्होंने धीरे से दरवाजा धकेलते हुए कहा। दरवाजा ज़ोरदार चरमराहट के साथ खुल गया।
अंदर आते ही एक अजीब सी, हल्की सी दुर्गंध फैल गई। शायद अंदर चमगादड़ थे। कमरा पूरी तरह अंधेरा था। अगर खिड़कियाँ थीं भी, तो ज़ाहिर है बंद थीं, और हम खुद खुले दरवाजे से आ रही रोशनी को रोक रहे थे। फेलुदा दहलीज पार करके अंदर चला गया। मैं उसके एक पल बाद उसके पीछे गया। बाहर सिर्फ लालमोहन बाबू हिचकिचा रहे थे। थोड़ी देर बाद उन्होंने असामान्य रूप से तेज़ आवाज़ में पूछा, 'सब ठीक है?'
‘हाँ, बिल्कुल। और चीजें जल्द ही और भी स्पष्ट हो जाएंगी। अंदर आकर देखो क्या है,’ फेलुदा ने आमंत्रित किया। अब तक अंधेरे में मेरी आँखें थोड़ी-

बहुत साफ़ दिखने लगी थीं, और मैंने समझ लिया था कि फेलुदा किस बारे में बात कर रहा था। वहाँ एक छोटा सा संदूक और बिस्तर था, जिसे लापरवाही से दरी में लपेटा गया था। दोनों को एक कोने में फेंक दिया गया था।
फेलुदा ने धीमी आवाज़ में कहा, 'पुलिस अपना समय बर्बाद कर रही है। निशित बोस कलकत्ता नहीं गए हैं।'
‘तो फिर वो कहाँ है?’ लालमोहन बाबू ने आश्चर्य से पूछा। आखिरकार वो कमरे में हमारे साथ आ ही गया था।
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया।
‘हम्म। बहुत दिलचस्प,’ उसने बुदबुदाते हुए किसी और चीज़ को घूरना शुरू कर दिया। मैंने भी उसकी नज़र का पीछा किया। दूसरे कोने में लकड़ी के लंबे, पतले टुकड़ों और ढेर सारे सस्ते पीले कागज़ों का एक छोटा सा ढेर था, जो डोरियों से बंधे हुए थे।
‘क्या आपको कोई अंदाजा है कि इसका क्या मतलब हो सकता है?’ फेलुदा ने पूछा। ‘लकड़ी के वो टुकड़े... अरे वाह, ये तो पांडुलिपियों में इस्तेमाल होने वाली लकड़ी जैसे दिखते हैं!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘और... ओह!’ मानो उनकी वाणी स्तब्ध रह गई।
मैंने धीरे से कहा, ‘ऐसा लगता है कि निशीथ बोस ने नकली पांडुलिपियाँ बनाने का एक पूरा कारखाना ही शुरू कर दिया था। मेरा अनुमान है कि उन्हें बस लकड़ी के टुकड़ों को सही आकार में काटना होता था, फिर उनके बीच कागज के टुकड़े रखने होते थे और पूरी चीज को लाल रेशम में लपेट देना होता था। यह निश्चित रूप से एक प्राचीन पांडुलिपि जैसा दिखता होगा।’
‘बिल्कुल सही,’ फेलुदा ने कहा। ‘मेरा मानना है कि श्री सेन की कई पांडुलिपियाँ नकली हैं। उन्होंने जो खरीदी थी, वह बेशक असली थी, लेकिन उसके बाद किसी ने असली कागज हटाकर उसकी जगह सादा कागज रख दिया। असली सामग्री हिंगोरानी जैसे लोगों को बेच दी गई है।’
‘ओह, हो, हो, हो!’ लालमोहन बाबू अचानक बोल पड़े। ‘याद है वो कागज़ की पट्टी जो मैंने श्री सेन के घर की हमारी पहली यात्रा पर देखी थी? जिसे मैंने साँप समझा था? वो असली पांडुलिपियों की नकली प्रतियां बनाने के लिए इस्तेमाल किया गया कागज़ का टुकड़ा रहा होगा।’
'निस्संदेह,' फेलुदा ने दृढ़ता से कहा।
हम कमरे के बीचोंबीच खड़े थे। वहाँ दो दरवाज़े थे, एक हमारे दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर। संभवतः वे दूसरे कमरों की ओर खुलते थे। खुले हुए सामने के दरवाज़े से—जिससे हम कुछ मिनट पहले ही अंदर आए थे—तेज़ समुद्री हवा ज़ोर से अंदर आ रही थी। हमारे दाहिनी ओर का दरवाज़ा अचानक खुल गया, जिससे एक ज़ोरदार आवाज़ हुई जो लगभग गोली चलने जैसी थी। इसके बाद जो हुआ, उससे मेरा खून जम गया। आज भी, जब मैं इसके बारे में लिख रहा हूँ, तो मेरा दिल काँप रहा है।
लालमोहन बाबू सबसे पहले खुले दरवाजे से अंदर झाँके। उनके गले से एक अजीब सी आवाज़ निकली, उनकी आँखें फटी रह गईं और शायद वे बेहोश हो जाते; लेकिन फेलुदा ने आगे बढ़कर उन्हें ज़मीन पर गिरने से पहले ही पकड़ लिया। मैं अवाक होकर अगले कमरे में ज़मीन पर पड़े उस व्यक्ति को घूरता रहा। वह एक

आदमी था। नहीं, वह एक आदमी का शव था; और मैं भी समझ गया था कि वह काफी समय से वहाँ मृत पड़ा था, हालाँकि उसकी आँखें अभी भी खुली थीं। मुझे उसे पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई।
यह डी.जी. सेन के सचिव, निशिथ बोस थे।

ग्यारह
उस दिन फेलुदा को नाश्ता छोड़ना पड़ा।
लालमोहन बाबू के थोड़ा ठीक होने के बाद, हम नज़दीकी रेलवे होटल गए और वहीं से पुलिस को फोन किया। फिर हम अपने होटल लौट आए।
कुछ ही देर बाद फेलुदा हमें छोड़कर चले गए। उन्होंने कहा, ‘मुझे कुछ काम हैं, खासकर नुलिया कॉलोनी में, इसलिए मुझे जाना होगा।’ उन्होंने शव को छुए बिना ही हमें बता दिया था कि श्री बोस की हत्या किसी कुंद हथियार से की गई थी, हालांकि हथियार का कोई निशान नहीं मिला था। कौन जानता था कि जब लालमोहन बाबू ने जर्जर पुराने भुजंगा निवास को ‘मौत का घर’ कहा था, तो वे सचमुच सच कह रहे थे?
हालांकि, एक अच्छी खबर भी थी। डी.जी. सेन और उनके बेटे के बीच सुलह हो गई थी। भुजंगा निवास से बाहर निकलते समय मेरी नजर सागरिका पर पड़ी और मैंने पिता-पुत्र को छत पर देखा। माहिम सेन ने हमें खुशी से हाथ हिलाकर अभिवादन किया, जिससे लगा कि सब ठीक है। उनके रिश्ते में यह अचानक बदलाव कैसे आया, यह मैं नहीं बता सकता। यह बहुत ही रहस्यमय था।
फेलुदा पौने ग्यारह बजे लौटा। मुझे अचानक याद आया कि उसने नेपाल में कॉल बुक की थी। मैंने पूछा, 'क्या आपकी कॉल लगी?'
'हां, मैंने अभी बोलना समाप्त किया है।'
‘क्या आपने काठमांडू को फोन किया था?’
नहीं, पाटन। यह काठमांडू के पास, बागमती नदी के दूसरी ओर स्थित एक पुराना शहर है।
‘फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने धीमी आवाज़ में कहा, ‘मैं सदमे से उबर नहीं पा रहा हूँ। देखो, मैं अभी भी कांप रहा हूँ।’
‘बस करो, लालमोहन बाबू। कम से कम, आज रात के लिए थोड़ा तो बचा लो।’ ‘क्यों—आज रात क्या हो रहा है?’
फेलुदा ने शांत भाव से उत्तर दिया, 'आज रात हमें खड़ा रहना होगा—ध्यान रहे, एक पैर पर नहीं—बल्कि स्थिर खड़े होकर इंतजार करना होगा।'
'कहाँ?'
'आप देखेंगे।'
‘क्यों? किसलिए?’
तुम धीरे-धीरे सीख जाओगे।
लालमोहन बाबू ने एक बार फिर मुंह खोला, फिर निराश होकर बंद कर दिया। लेकिन मेरी तरह, वे भी फेलुदा की मनोदशा से अनजान नहीं थे। उनसे हज़ार सवाल पूछे जा सकते थे, लेकिन वे सीधा जवाब नहीं देते।
फेलुदा ने विषय बदलते हुए कहा, 'डॉ. सेनापति काफी होशियार युवा डॉक्टर हैं।'

मैंने पूछा, 'क्या आप पहले ही उनके क्लिनिक जा चुके हैं?'
जी हाँ। वे श्री डी.जी. सेन का इलाज कर रहे हैं। वे पिछले अप्रैल में अमेरिका गए थे। वही उस दवा को लेकर आए थे।
‘डायपिड?’ ये नाम न जाने क्यों मेरी याद में अटक गया था। ‘चूंकि तुमने पूछा है, तो मैं तुम्हें बता दूं कि तुम्हें इसे कभी इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी,’ फेलुदा हँसा। पता नहीं इस रहस्यमय टिप्पणी का क्या मतलब था। मैंने पूछने की हिम्मत नहीं की।
इंस्पेक्टर महापात्रा ने एक घंटे बाद फोन किया। पुलिस सर्जन ने अपनी जांच पूरी कर ली थी। उनके अनुसार, निशीथ बोस की हत्या कल शाम 6 से 8 बजे के बीच किसी कुंद हथियार से की गई थी। हथियार का अभी तक कोई सुराग नहीं मिला था। लेकिन पुलिस को बरामदे के नीचे रेत में खून के निशान मिले थे। संभवतः हत्या मुख्य द्वार के पास हुई थी। इसके बाद श्री बोस के शव को घसीटकर अंदर ले जाया गया था।
अचानक मेरे मन में एक विचार कौंधा, लेकिन मैंने फेलुदा से कुछ न कहने का फैसला किया। क्या यह संभव है कि जिसने श्री बोस की हत्या की थी, उसने उसी हथियार से फेलुदा पर भी हमला किया हो? शायद इसीलिए उसके सिर पर खून था, जबकि वहाँ कोई खुला घाव नहीं था?
लगभग साढ़े बारह बजे मुझे भूख लगने लगी। लालमोहन बाबू भी रसोई से आ रही मनमोहक खुशबू की तारीफ करने लगे। लेकिन तभी बिलास मजूमदार आ गए। उन्होंने बिना किसी भूमिका के पूछा, 'क्या आप जाना चाहेंगे?'
‘कहाँ जाना है?’ फेलुदा ने अपनी नोटबुक में कुछ लिखते हुए पूछा। ‘क्योंझरगढ़ नाम की जगह पर, पर्यटन विभाग द्वारा उपलब्ध कराई गई वातानुकूलित लिमोसिन में। इसमें छह लोगों के बैठने की जगह है। लेकिन मुझे अपने साथ जाने के लिए केवल एक ही व्यक्ति मिला, एक अमेरिकी जिसका नाम स्टीडमैन है। वह भी वन्यजीव प्रेमी है। मुझे यकीन है कि अगर आप हमारे साथ आएंगे तो आपको यह दिलचस्प लगेगा।’
'आप कब छोड़ रहे हैं?'
'दोपहर के भोजन के तुरंत बाद।'
नहीं, धन्यवाद। मुझे खेद है कि आज दोपहर मुझे कुछ काम है। दरअसल, अगर आप कुछ घंटों के लिए रुक सकें, तो मैं आपको पुरी के वन्यजीवों का एक नमूना दिखा सकता हूँ!
‘नहीं, श्री मित्तर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।’ श्री मजूमदार मुस्कुराए और चले गए।
एक मिनट बाद, हमने एक भारी-भरकम अमेरिकी कार के स्टार्ट होने की आवाज़ सुनी। फिर वह मुड़ी और उत्तर दिशा की ओर तेज़ी से चली गई।
मुझे आखिरी बार इतना तीव्र उत्साह कब महसूस हुआ था? मुझे याद नहीं था। हमने उस शाम नौ बजे खाना खाया। एक घंटे बाद, फेलुदा ने जाने का समय बताया।
उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम्हें ठीक से कपड़े पहनने होंगे। कुर्ता-पजामा मत पहनना, और सफेद कपड़े भी मत पहनना। मुझे तुम्हें यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि अंधेरे में छिपने के लिए तुम्हें क्या पहनना चाहिए, है ना?'

नहीं, ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं थी, मैंने सोचा, मेरा दिमाग पार्क स्ट्रीट के कब्रिस्तान में हुए हमारे अनुभव की ओर लौट गया।
फेलुदा ने आगे कहा, 'मेरी अंतरात्मा कहती है कि आज रात कुछ होने वाला है, लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है। इसलिए निराशा के लिए तैयार रहें।'
बाहर निकलते समय मैंने आकाश की ओर देखा और पाया कि वहाँ कोई तारे नहीं थे। लालमोहन बाबू, जिन्हें बार-बार आकाश की ओर देखने की आदत थी (तारों या चंद्रमा की तलाश में नहीं, बल्कि आकाश प्रयोगशाला के संकेतों की तलाश में), ने झट से अपना सिर उठाया और कहा, 'अगर हवा दूसरी दिशा में बह रही होती, तो ये टुकड़े समुद्र में गिर सकते थे। अब... कुछ भी हो सकता है।'
भुजंगा निवास चारों ओर से रेत से घिरा हुआ था, लेकिन असली समुद्र तट उससे लगभग पचास गज दूर था। समुद्र तट जहाँ से शुरू होता था, वहाँ कुछ अस्थायी झोपड़ियाँ बनी हुई थीं, शायद रेलवे होटल के उन मेहमानों के लिए जो समुद्र में नहाने आते थे। इन झोपड़ियों को बनाने के लिए बांस के खंभों पर सरकंडे की बड़ी-बड़ी चटाइयाँ लगाई गई थीं। फेलुदा इनमें से एक झोपड़ी के पास रुक गया। हमारे पीछे समुद्र था, जो अभी भी ज़ोर से गरज रहा था, लेकिन अब अंधेरे में मुश्किल से दिखाई दे रहा था। अगर कोई हमारी झोपड़ी के पास से गुज़रता, तो हम उसकी आकृति देख पाते, लेकिन शायद उसे पहचान न पाते। हमारे खुद के देखे जाने का कोई चांस नहीं था। फेलुदा ने छिपने के लिए इससे बेहतर जगह नहीं चुन सकता था। यह अभी भी स्पष्ट नहीं था कि हम क्यों छिपे थे, और मुझे पता था कि पूछने पर भी वह मुझे नहीं बताएगा। अपनी बातें गुप्त रखने की उसकी आदत से नाराज़ होकर, लालमोहन बाबू ने एक बार उससे कहा था, 'फेलु बाबू, तुम्हें सस्पेंस फिल्में बनानी चाहिए। लोग सांस रोककर मर जाएंगे। हॉटचकिक से भी कहीं बेहतर होगी!'
हम जहां खड़े थे, वहां से मुझे श्री सेन का घर दिखाई दे रहा था। दूसरी मंजिल पर उनके कमरे की बत्ती अभी भी जल रही थी। पहली मंजिल की एक बत्ती अभी-अभी बुझी थी। भूतल की केवल एक खिड़की ही चारदीवारी के ऊपर से दिखाई दे रही थी। उसमें बत्ती जल रही थी, इसलिए शायद लक्ष्मण भट्टाचार्य अभी भी जाग रहे थे।
हम सब रेत पर बने शेल्टर के नीचे एकदम खामोशी से बैठे थे। वैसे भी, लहरों के शोर के कारण बोलना मुश्किल था। अब तक मेरी आँखें अंधेरे की आदी हो चुकी थीं और मैं कुछ चीज़ें देख पा रहा था। मेरे बाईं ओर लालमोहन बाबू बैठे थे। उनके गंजे सिर के चारों ओर बचे हुए कुछ बाल तेज़ हवा में उड़ रहे थे, मानो घास के गुच्छे हों। मेरे दाईं ओर फेलुदा बैठे थे। मैंने देखा कि उन्होंने अपना बायाँ हाथ उठाया और अपनी कलाई को देखा। फिर उन्होंने अपना हाथ अपने कंधे के बैग में डाला और एक चीज़ निकाली—उनकी जापानी दूरबीन।
उसने उसे अपनी आँखों से लगाया। मैं समझ गया कि वह क्या देख रहा था। डी.जी. सेन अपनी खुली खिड़की के पास खड़े थे। कुछ क्षण बाद, वह एक तरफ हटे और अपने दाहिने हाथ से कुछ उठाया।
यह क्या था?
अरे, एक कांच का गिलास। वह इसमें क्या पी रहा था?

भूतल की बत्ती बुझ गई थी। अब श्री सेन ने अपनी बत्ती भी बंद कर दी। देखते ही देखते हमारे चारों ओर अंधेरा और भी घना होता चला गया। फिर भी, मैं अपने साथियों को धुंधला-धुंधला देख पा रहा था, खासकर अगर वे हिलते-डुलते। लालमोहन बाबू ने अपनी जेब से टॉर्च निकाली। मैं जल्दी से उनके पास झुकी और उनके कान में फुसफुसाकर बोली, 'इसे चालू मत करो!' जवाब में उन्होंने अपना सिर घुमाया और बुदबुदाए, 'यह एक भद्दा औजार है। हो सकता है यह काम आ जाए, भले ही मैं इसे चालू न करूं।' उन्होंने अपना सिर दूसरी तरफ घुमाया; और ठीक उसी क्षण, मैंने कुछ ऐसा देखा जिससे मेरा दिल मुंह में आ गया। हमारे दाहिनी ओर, लगभग दस गज की दूरी पर, एक और आश्रय था। उसके बगल में एक आदमी खड़ा था। पता नहीं वह कब प्रकट हुआ था। लालमोहन बाबू ने भी उसे देखा था। उन्होंने हैरानी से टॉर्च नीचे गिरा दी।
और फेलुदा?
उसने उसे नहीं देखा था। वह सीधे सागरिका को देख रहा था। मैंने भी उसी दिशा में देखने की कोशिश की और तुरंत वही देखा जो फेलुदा पहले ही देख चुका था। सागरिका से एक आदमी बाहर निकल रहा था। क्या वह हमारी तरफ आ रहा था? नहीं। वह टूटे-फूटे और वीरान भुजंगा निवास की ओर चल पड़ा। इमारत के पास पहुँचते ही उसकी चाल धीमी हो गई, फिर वह एक खंभे के पास रुक गया। वह क्या करने वाला था?
अगले ही पल सब कुछ स्पष्ट हो गया। घर के पीछे से एक दूसरा आदमी प्रकट हुआ और पहले वाले के साथ मिल गया। अब द्वार के सामने दो पुरुष खड़े थे। यह कहना असंभव था कि उन्होंने आपस में बात की या नहीं, लेकिन कुछ ही सेकंड में वे अलग हो गए और अलग-अलग दिशाओं में चलने लगे। सागरिका से आया हुआ व्यक्ति वापस जा रहा था—!
अरे नहीं! लालमोहन बाबू ने लापरवाही से अपनी टॉर्च को धक्का दिया और गलती से उसे चालू कर दिया। फेलुदा ने उसे उनके हाथ से छीनकर रेत पर फेंक दिया। लेकिन, उसी क्षण, किसी ने गोली चला दी। एक गोली आई और हमारे आश्रय के एक बांस के खंभे को जा लगी, जिससे कान फाड़ देने वाली आवाज हुई और लालमोहन बाबू की गर्दन को कुछ इंच से छूकर निकल गई।
‘दूसरे को पकड़ो!’ फेलुदा फुफकारा और रॉकेट की तरह उछलकर दूसरे आदमी का पीछा करने लगा। मुझे खुद आश्चर्य हुआ कि फेलुदा के उन कुछ शब्दों ने ही मेरा डर भुला दिया। मैं बिना कुछ बोले उछल पड़ा और पहले आदमी की ओर दौड़ने लगा।
मुझे उसे पकड़ने में ज़्यादा समय नहीं लगा। मैंने रग्बी खिलाड़ी की तरह 'फ्लाइंग टैकल' करते हुए उसके पैरों पर छलांग लगाई और उसके दोनों पैर पकड़ लिए। वह लड़खड़ाकर मुंह के बल गिर पड़ा। मैंने बिना देर किए उसकी पीठ पर चढ़ गया। फिर मैंने फेलुदा को चारों ओर देखा।
दो आकृतियाँ थोड़ी दूरी पर आमने-सामने खड़ी थीं। मैंने देखा कि उनमें से एक ने हाथ उठाया और दूसरे की ठोड़ी पर निशाना साधा। एक पल बाद, दूसरी आकृति ज़मीन पर गिर पड़ी। उसके गिरने की हल्की सी आवाज़ भी मैंने सुनी।
इसी बीच, लालमोहन बाबू मेरे पास आ गए और अपने कुंद हथियार को हाथ में लिए इधर-उधर नाचने लगे, मानो मेरे नीचे छटपटा रही आकृति पर वार करने के लिए

उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हों। हालांकि, एक और हल्की सी आवाज़ ने मुझे बता दिया कि उत्तेजना में उन्होंने अपना हथियार एक बार फिर रेत पर गिरा दिया था।
‘उसे इधर लाओ!’ फेलुदा चिल्लाया।
इस बार लालमोहन बाबू ने वाकई हमारी मदद की। उन्होंने उसका एक पैर पकड़ा और मैंने दूसरा। हम दोनों मिलकर उस आदमी को घसीटकर फेलुदा के पास ले आए। फेलुदा अपने प्रतिद्वंदी की छाती पर एक पैर और उसके दाहिने हाथ पर दूसरा पैर रखे खड़ा था। कुछ क्षण पहले जिस हाथ में वो रिवॉल्वर थी, वो पास ही पड़ी थी।
'आज तक तुम्हारी ठुड्डी पर कोई चोट नहीं थी। लेकिन इसके बाद, मुझे लगता है कि एक स्थायी निशान रह जाएगा,' फेलुदा ने गंभीरता से कहा और अपनी जेब की टॉर्च उस आदमी पर चमकाई।
अचानक मेरे मन में ‘वन्यजीव’ शब्द कौंध गया। पैरों से जकड़ा हुआ, फेलुदा को घूरता हुआ, क्रोध से भरी आँखों वाला बिलास मजूमदार था। उसका बायाँ हाथ अभी भी लाल रेशम में लिपटी एक वस्तु पर था। एक और पांडुलिपि! फेलुदा झुका और उसे छीन लिया। फिर वह मुड़ा और उसने अपनी टॉर्च हमारे कैदी पर चमकाई। ‘लक्ष्मण बाबू, तुम्हारी तीसरी आँख तुम्हें क्या बता रही है?’ फेलुदा ने पूछा, ‘क्या तुम्हें पता था कि तुम्हारे भाग्य में क्या लिखा है?’
अचानक, अंधेरे से कई परछाइयाँ निकलीं। आखिर ये लोग कौन थे?
‘नमस्कार, श्रीमान महापात्रा,’ फेलुदा ने उनमें से एक का अभिवादन करते हुए कहा, ‘मैं इन दोनों अपराधियों को आपके हवाले करने जा रहा हूँ, लेकिन अभी मेरा काम पूरा नहीं हुआ है। मैं चाहता हूँ कि हम सब भुजंगा निवास के बैठक कक्ष में जाकर बैठें। इन दोनों आदमियों को हमारे साथ आना होगा।’
चार कांस्टेबल आगे बढ़े और बिलास मजूमदार और लक्ष्मण भट्टाचार्य को पकड़ लिया। 'महीम बाबू, क्या तुम वहाँ हो?' फेलुदा ने पुकारा।
‘अरे हाँ। मैं यहाँ हूँ!’ माहिम सेन ने हाथ उठाया। अचानक मुझे एहसास हुआ कि वह वही आदमी था जिसे हमने सबसे पहले एक आश्रय स्थल के पास खड़े देखा था। ‘मुझे लगता है पिताजी हमारे साथ आने वाले हैं। देखो, वह रहे, टॉर्च लिए हुए,’ उन्होंने इशारा करते हुए कहा।
श्री महापात्रा ने भुजंगा निवास की ओर इशारा करते हुए कहा, 'हमने उस इमारत के सामने वाले कमरे में बैठने की व्यवस्था कर दी है। चिंता मत कीजिए, सभी के लिए जगह होगी।'
‘अरे, बाहर तो मौसम बिल्कुल ठीक है, क्यों न—?’ लालमोहन बाबू ने कहना शुरू किया, लेकिन मुझे नहीं लगता कि किसी ने उनकी बात सुनी होगी, क्योंकि सभी लोग पहले ही भुजंगा निवास की ओर चलना शुरू कर चुके थे।

बारह
‘अंदर आइए, श्रीमान सेन, हम सब आपका इंतज़ार कर रहे हैं,’ फेलुदा ने दरवाज़ा खोला। माहिम सेन अपने पिता के साथ अंदर आए। कमरे में तीन लालटेन जल रही थीं, पुलिस ने साफ़-सफाई और धूल झाड़ने में काफ़ी मेहनत की थी। कमरा बिल्कुल अलग लग रहा था।
पिता और पुत्र ने दो कुर्सियाँ ले लीं।
'ये रहा आपका कल्पसूत्र,' फेलुदा ने बिलास मजूमदार से बरामद पांडुलिपि उन्हें देते हुए कहा। श्री सेन ने इसे लेते हुए राहत की सांस ली, लेकिन काफी चिंता के साथ पूछा, 'दूसरे का क्या?'
मैं उसी पर आ रहा हूँ। आपको थोड़ा धैर्य रखना होगा। मुझे उम्मीद है कि आपने आज नींद की गोली नहीं ली होगी?
‘नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। इसी वजह से यह हादसा हुआ। भगवान जाने कल उसने मेरे पानी के गिलास में क्या मिला दिया था!’ श्री सेन ने लक्ष्मण भट्टाचार्य को घूरकर देखा।
मुझे यह समझ नहीं आता कि आप शुरू से ही इस धोखेबाज के पास क्यों गए। क्या आपको नहीं पता था कि शहर में इससे कहीं बेहतर डॉक्टर मौजूद थे?
'जी हां, श्री मिटर। लेकिन वह खुद मेरे पास आया था, और बाकी सबने कहा था कि वह बहुत अच्छा है। इसलिए मैंने सोचा कि मुझे उसे एक मौका देना चाहिए। इसके अलावा, उसने कहा कि उसे पुरानी पांडुलिपियों और ग्रंथों की जानकारी है... वह मुझे कुछ दिलवा सकता है...'
‘यही तो तुम्हारी सबसे बड़ी कमजोरी है, है ना? और उसने इसका पूरा फायदा उठाया। खैर, उम्मीद है डायपिड ने काम किया होगा? आधुनिक दवाओं में खोई हुई याददाश्त वापस लाने के लिए इसे सबसे बेहतरीन माना जाता है।’
श्री सेन ने उत्साहपूर्वक कहा, ‘यह तो कमाल का असर दिखा रहा है! मेरी याददाश्त वापस आ रही है, बिल्कुल वैसे ही जैसे एक के बाद एक दरवाजे खुल रहे हों। भगवान का शुक्र है कि डॉ. सेनापति खुद मेरे पास आए और मुझे वह दवा दी। देखिए, मैं तो यह भी भूल गया था कि पहले वही मेरा इलाज करते थे!’
‘तो फिर बताइए, श्रीमान सेन, क्या आप इस सज्जन को पहचान सकते हैं?’ फेलुदा ने बिलास मजूमदार पर अपनी टॉर्च चमकाई। श्रीमान सेन ने कुछ सेकंड तक उन्हें घूरा, फिर धीरे से बोले, ‘हाँ, मैंने कल उनकी आँखों के भाव और आवाज़ से उन्हें पहचान लिया था। लेकिन फिर भी, मुझे यकीन नहीं था।’
क्या आपको उसका नाम याद है?
'बिल्कुल। लेकिन हो सकता है उसने इसे यहां बदल दिया हो।'
क्या उसका नाम सरकार है?
'जी हां, सही कहा। श्री सरकार। मुझे उनका पहला नाम कभी पता ही नहीं चला।' ‘झूठे!’ श्री मजूमदार चिल्लाए। ‘क्या तुम मेरा पासपोर्ट देखना चाहते हो?’

‘नहीं, हमारे पास नहीं है,’ फेलुदा की आवाज़ एकदम ठंडी थी। ‘तुम्हारे जैसे अपराधी के पास नकली पासपोर्ट हो सकता है। लेकिन उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वैसे उसमें लिखा क्या है? उसमें तुम्हारा नाम बिलास मजूमदार लिखा है, है ना? और यह भी लिखा है कि तुम्हारे माथे पर एक खास निशान है, तिल? ठीक है। अब ये देखो।’
फेलुदा श्री मजूमदार के पास गया और अपनी जेब से रुमाल निकाला। फिर, बिना किसी चेतावनी के, उसने रुमाल से ही अपने माथे पर प्रहार किया। इससे नकली तिल फिसलकर अंधेरे फर्श पर गिर गया।
‘आपने बिलास मजूमदार के बारे में काफी पूछताछ की थी, है ना?’ फेलुदा ने आगे कहा। ‘आपको पता था कि वह हिम तेंदुए की तस्वीरें लेने गए थे और फिर उनका एक्सीडेंट हो गया था। आपको यह भी पता था कि उन्हें किस अस्पताल में ले जाया गया था, उनकी चोटें कैसी थीं और उन्हें पिछले महीने तक उसी अस्पताल में रखा गया था। लेकिन एक छोटी सी खबर आपकी नजर से छूट गई। मैंने उसे पढ़ा था, लेकिन उस समय ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। कल, काठमांडू के वीर अस्पताल के डॉ. भार्गव ने उस बात की पुष्टि की जो मुझे धुंधली सी याद थी। बिलास मजूमदार को सबसे गंभीर चोट मस्तिष्क में लगी थी। उनकी मृत्यु तीन हफ्ते पहले हो गई।’
लालटेन की मंद रोशनी में भी मैं देख सकता था कि वह आदमी चेहरे से पीला पड़ गया था। 'सुनिए, श्रीमान सरकार,' फेलुदा ने कहा, 'आपका पेशा ऐसा है जिसे कोई पासपोर्ट कभी नहीं बताएगा। आप तस्कर हैं। हो सकता है कि आप हमेशा खुद चीजें न चुराते हों, लेकिन तस्करी के सामान को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने में आप ज़रूर मदद करते हैं। काठमांडू में आपको भाटगांव के महल संग्रहालय से चुराया गया वह लेख मिला था। श्रीमान सेन आपको बाकी की कहानी बताएंगे।'
डी.जी. सेन की आँखों में लोहे जैसी ठंडी और कठोर नज़र थी। उन्होंने कहा, “मैं और यह आदमी काठमांडू के एक ही होटल में ठहरे हुए थे। एक दिन, मैंने गलती से उसका दरवाज़ा खोल दिया और उसके कमरे में दो और आदमियों को पाया। उनमें से एक उसे लाल रेशम में लिपटी कोई चीज़ दे रहा था। मैं तुरंत समझ गया कि यह एक पांडुलिपि है। लेकिन उस समय मैं केवल माफ़ी माँगकर वहाँ से चला गया। भगवान जाने उस रात मेरे साथ क्या हुआ। जब मैं जागा, तो मैंने खुद को अस्पताल में पाया। इस घटना से पहले की सारी यादें मेरे दिमाग से गायब हो गई थीं। लेकिन लोग बहुत दयालु थे। उन्होंने होटल से मेरा पता ढूँढ़ा और आखिरकार मेरे परिवार को सूचित करने में कामयाब रहे। निशित गया और मुझे वापस ले आया। मुझे साढ़े तीन महीने अस्पताल में बिताने पड़े।”
‘मुझे लगता है मैं आपकी याददाश्त में छूटी हुई बातें पूरी कर सकता हूँ। अगर मैं कुछ गलत कहूँ, तो शायद श्री सरकार मुझे सुधार देंगे?’ फेलुदा ने शांत भाव से कहा। ‘आपको जाहिर तौर पर कुछ ऐसा दिया गया था जिससे आप बेहोश हो गए थे। फिर आपको कार से शहर के बाहर पहाड़ों में ले जाया गया और पाँच सौ फीट की ऊँचाई से नीचे फेंक दिया गया। श्री सरकार को पूरा यकीन था कि आप मर चुके हैं। हालाँकि, नौ महीने बाद, जब वे चोरी हुए दस्तावेज़ को सौंपने के लिए पुरी आए, तो उन्होंने आपकी नेमप्लेट देखी और उन्हें शक होने लगा। मेरा

मानना है कि आपके भूतल पर रहने वाले श्री लक्ष्मण भट्टाचार्य ने उन्हें आपकी वर्तमान स्थिति के बारे में सारी ज़रूरी जानकारी दी थी। क्या मैं सही हूँ?’
लक्ष्मण भट्टाचार्य, जो अब तक एक शब्द भी नहीं बोले थे, यह सुनकर अचानक बोल पड़े, 'आप क्या कह रहे हैं, महोदय? मैंने ही उसे सारी जानकारी दी थी? अरे, मैंने तो उसे पहली बार तब देखा था जब आप उसे मेरे घर लाए थे!'
‘सचमुच?’ फेलुदा चलकर लक्ष्मण भट्टाचार्य के ठीक सामने खड़ा हो गया। ‘तो फिर, श्रीमान ज्योतिषी, मुझे यह बताइए: जब हम उसे आपके यहाँ लाए, तो आपने उसे तुरंत दीवान पर बैठने को कहा और हमें कुर्सियाँ लेने को कहा। आपको कैसे पता चला कि वह बिलास मजूमदार था, मैं नहीं? आपको यह किसने बताया?’ लक्ष्मण भट्टाचार्य कोई जवाब नहीं दे सके। फेलुदा के उस एक सवाल से वे मानो सिकुड़ गए।
फेलुदा ने आगे कहा, ‘मुझे लगता है कि पांडुलिपियाँ चुराने का विचार सबसे पहले श्री सरकार के मन में तब आया जब उन्होंने श्री सेन की स्मृति हानि के बारे में सुना और लक्ष्मण भट्टाचार्य ने उनकी मदद करने की पेशकश की। उन्हें पता था कि वे एक पुराने और मूल्यवान पांडुलिपि के लिए आसानी से खरीदार ढूंढ सकते हैं, क्योंकि श्री हिंगोरानी उसी होटल में ठहरे हुए थे। लेकिन अचानक तीन बड़ी मुश्किलें खड़ी हो गईं, जिससे मामला और पेचीदा हो गया। पहली बात तो यह कि एक बेहद ही अप्रिय व्यक्ति श्री सरकार का पीछा करते हुए पुरी तक आ गया। वह रूपचंद सिंह था। उसने वाकई बहुत परेशानी खड़ी की, है ना? मेरा मतलब है, किसी बेहोश आदमी को मारने के लिए पहाड़ी की चोटी तक ले जाने वाली गाड़ी के ड्राइवर को रिश्वत देना तो आसान है। लेकिन क्या होगा अगर वह ड्राइवर अपनी दी गई रकम से संतुष्ट न हो? क्या होगा अगर वह लालची हो और और पैसे के लिए ब्लैकमेल करने लगे? ऐसे हालात में कोई क्या कर सकता है, मुझे बताइए, सिवाय ब्लैकमेलर को मारने के?’
‘झूठ, झूठ, झूठ!’ श्री सरकार ने हताशा से चिल्लाते हुए कहा।
'मान लीजिए, श्रीमान सरकार, मैं यह साबित कर सकूँ कि रूपचंद सिंह को मारने वाली गोली आपके ही रिवाल्वर से चली थी? वही रिवाल्वर जिसका इस्तेमाल आपने कुछ देर पहले हम पर करने की कोशिश की थी? तब क्या होगा?'
श्री सरकार तुरंत पीछे की ओर झुक गए। मैं देख सकता था कि उनका पूरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। मुझे भी पसीना आ रहा था, लेकिन वह तो बस बेदम उत्तेजना का था। मेरे बगल में बैठे लालमोहन बाबू ऐसे लग रहे थे मानो तलवारबाजी का मैच देख रहे हों। यह सच था कि फेलुदा के शब्द तलवार की तरह तीखे थे; और खेल अभी खत्म नहीं हुआ था।
‘रूपचंद सिंह पहले शिकार थे,’ फेलुदा ने आगे कहा। ‘अब देखते हैं श्री सरकार को जिस दूसरी समस्या का सामना करना पड़ा। वह थी पुरी में मेरा आगमन। श्री सरकार समझ गए कि मुझे धोखा दिए बिना वे कुछ नहीं कर सकते। इसलिए उन्होंने बिलास मजूमदार बनकर आने का फैसला किया। मुझे कहना होगा कि शुरुआत में वे इसमें काफी हद तक सफल रहे। इतना ही नहीं, उन्होंने अपना दोष एक ऐसे बूढ़े व्यक्ति पर डाल दिया जिसकी याददाश्त चली गई थी। इसी शुरुआती सफलता ने उन्हें थोड़ा लापरवाह बना दिया। उनकी योजना बहुत सरल थी। अगर उन्हें कोई

पांडुलिपि मिल जाती, तो वे उसे हिंगोरानी को बेच देते। असली मालिक से उसे प्राप्त करना असंभव था, क्योंकि श्री सेन को पैसे में जरा भी दिलचस्पी नहीं थी, और उनके लिए पुरानी पांडुलिपियाँ शायद उनकी जान से भी ज्यादा कीमती थीं। इसलिए तिजोरी से सामग्री चुराना ही था। वे यह कैसे करते? बहुत आसान। यह काम लक्ष्मण भट्टाचार्य करवाते, क्योंकि वे काफी समय से यही करते आ रहे थे।’ इससे पहले जब उन्होंने ऐसा किया था, तो जाहिर तौर पर उन्होंने पूरी रकम खुद ही रख ली थी। इस बार, उन्होंने श्री सरकार के साथ हिंगोरानी द्वारा दी गई रकम साझा करने पर सहमति जताई, क्योंकि यह काफी बड़ी रकम थी। लेकिन उन्हें एक और व्यक्ति का भी ध्यान रखना था। वह थे श्री सेन के सचिव, निशीथ बोस।
फेलुदा थोड़ी देर रुका। फिर वह एक बार फिर श्री भट्टाचार्य के पास गया और पूछा, 'क्या आपने कीर्तन जाने के बारे में कुछ कहा था?'
लक्ष्मण भट्टाचार्य ने बेपरवाह दिखने की कोशिश की। उन्होंने कहा, 'मैंने ऐसा किया। आपको क्या लगता है कि मैंने झूठ बोला?'
नहीं। आपने कीर्तन के बारे में झूठ नहीं बोला। यह सच है कि गायकों का एक समूह हर सोमवार को कीर्तन के लिए इकट्ठा होता है। लेकिन आप कभी वहाँ नहीं गए। मैंने जाँच की है। हालाँकि, एक व्यक्ति था जो वहाँ नियमित रूप से जाता था। वह थे निशित बोस। वह हर सोमवार शाम पाँच से साढ़े छह बजे तक अपने काम से अनुपस्थित रहते थे। उस समय आगंतुकों की देखभाल के लिए एक नौकर मौजूद रहता था। पिछले सोमवार को श्री बोस के घर से चले जाने के बाद उसे रिश्वत दी गई थी। श्री भट्टाचार्य, आपने श्री सेन के पानी के गिलास में कुछ मिलाया, उन्हें अपनी नींद की गोलियों की भारी खुराक खिलाई, और फिर साढ़े पाँच बजे उनके कमरे में प्रवेश किया। फिर आपने उनके तकिए के नीचे से चाबी ली, तिजोरी खोली और सबसे कीमती पांडुलिपियों में से एक को श्री सरकार को सौंपने के लिए निकाल लिया। आपने इस घर के बरामदे में उनसे मिलने की व्यवस्था की थी। आप यहाँ पहले पहुँचे, और अपने साथी का इंतज़ार करते रहे। आपके पैरों के निशान, आपकी इस्तेमाल की हुई माचिस की तीलियाँ और फर्श पर थूका हुआ पान का रस, सबने आपकी पोल खोल दी। लेकिन आपके इंतज़ार के दौरान कुछ ऐसा हुआ जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी, है ना, श्री भट्टाचार्य?
लक्ष्मण भट्टाचार्य ने बोलने की कोई कोशिश नहीं की। वे बुरी तरह कांप रहे थे, और श्री सरकार को छोड़कर कमरे में मौजूद हर कोई उन्हें घूर रहा था। मुझे लगा जैसे मेरा शरीर तनाव से अकड़ गया हो।
फेलुदा ने दोबारा बोलना शुरू किया।
उस शाम साढ़े छह बजे एक अमेरिकी को श्री सेन से मिलने आना था। इसलिए निशित बोस छह बजे ही लौट आए, जो कि सामान्य से काफी जल्दी था। शायद जब उन्होंने अपने मालिक को सोते हुए पाया तो उन्हें शक होने लगा। उन्होंने तिजोरी खोली होगी और चोरी का पता लगाया होगा। आप घर पर नहीं थे। इससे उनका शक और बढ़ गया होगा। इसलिए वे घर से बाहर निकले, रेत पर आपके पैरों के निशान देखे और भुजंगा निवास तक आपका पीछा किया। जब आपको एहसास हुआ कि आप रंगे हाथों पकड़े गए हैं, तो श्री बोस को तुरंत खत्म करने के अलावा आपके पास क्या चारा था? आपके हाथ में एक धारहीन हथियार था, है ना? इसलिए आपने उसी से श्री बोस

की हत्या कर दी, फिर उनके शरीर को वहां से हटाया और सागरिका के पास उनका सूटकेस और बिस्तर लेने वापस गए। जब सब कुछ ठीक लग रहा था, तभी आपने देखा कि आपके हथियार पर खून के धब्बे हैं। इसलिए आप उसे समुद्र में फेंकने के लिए फिर से निकल पड़े, लेकिन समुद्र तट की ओर जाते समय आपकी मुलाकात किससे हुई? मुझसे। आपने उसी हथियार से मेरे सिर पर वार किया और फिर उसे पानी में फेंक दिया। बताइए, क्या इसमें कुछ भी गलत है?
फेलुदा रुक गया, हालाँकि वह जानता होगा कि लक्ष्मण भट्टाचार्य उत्तर देने में पूरी तरह असमर्थ थे। लेकिन इस संक्षिप्त विराम ने उसके अगले प्रश्न को और भी प्रभावशाली बना दिया। वह प्रश्न हवा में गोली की तरह तेज़ी से निकला।
‘इन सब के बावजूद, श्री भट्टाचार्य, क्या आपको वह मिल सका जो आप चाहते थे?’ सन्नाटा। फेलुदा ने अपने ही सवाल का जवाब दे दिया। 'नहीं। हिंगोरानी को वह पांडुलिपि नहीं मिली, न ही श्री सरकार को। इसीलिए आपको आज रात दूसरी सबसे कीमती पांडुलिपि चुराना ज़रूरी लगा। अब तक आप सबको श्री बोस की माँ की बीमारी की कहानी सुना चुके थे, जिसकी वजह से वे अनुपस्थित थे। लेकिन क्या आप अब इन लोगों को बता सकते हैं कि आप पहली पांडुलिपि क्यों नहीं पा सके? नहीं? ठीक है, मैं बता देता हूँ, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि आप इतनी असाधारण घटना का ब्यौरा दे पाएँगे। मैं भी पहले तो धोखा खा गया था। मैंने कई मुश्किल मामले सुलझाए हैं, लेकिन यह सचमुच चौंकाने वाला था। मुझे पता था कि इस्तेमाल किया गया औज़ार कुंद था, लेकिन मुझे कैसे पता चलता कि वह पांडुलिपि ही थी? हाँ, चोरी हुई पांडुलिपि, जिसे बारहवीं शताब्दी में प्रज्ञा पारमिता ने लिखा था। मुझे कैसे पता चलता कि लक्ष्मण भट्टाचार्य के हाथ में किसी व्यक्ति पर प्रहार करने के लिए बस वही एक चीज़ थी? उसी लकड़ी की छड़ों से चोट लगने के बावजूद मैं यह समझ नहीं पाया। पांडुलिपि पर खून के धब्बे थे।' उस खून का कुछ हिस्सा मेरे सिर पर भी लग गया। ज़ाहिर है, आप उसे न तो सरकार को दे सकते थे और न ही हिंगोरानी को।'
‘अरे नहीं, अरे नहीं, अरे नहीं!’ डी.जी. सेन ने अपने चेहरे को हाथों से ढकते हुए कहा। ‘मेरी पांडुलिपि! मेरी सबसे कीमती, मेरी सबसे—’
‘सुनिए, श्रीमान सेन,’ फेलुदा ने उनकी ओर मुड़कर कहा। ‘क्या आप जानते हैं कि समुद्र हमेशा दी गई भेंट को स्वीकार नहीं करता? वास्तव में, कभी-कभी तो वह भेंट को लगभग तुरंत लौटा देता है?’
फेलुदा ने अपना हाथ अपने कंधे के थैले में डाला और लगभग एक जादूगर की तरह, लाल रेशम से ढकी एक पांडुलिपि बाहर निकाली।
‘यह रही आपकी अष्टदशसहस्रिका प्रज्ञा पारमिता। रेशमी आवरण बिल्कुल सुरक्षित है। लकड़ी की पट्टियाँ क्षतिग्रस्त हो गई हैं, लेकिन मूल लेखन लगभग अक्षुण्ण है। लकड़ी और कपड़े की परतों से पानी का रिसाव नहीं हो सकता।’
‘लेकिन...लेकिन...फेलू बाबू, ये आपको कहां से मिला?’ लालमोहन बाबू हांफते हुए बोले।
‘आज सुबह तुमने रेशम का वो लाल टुकड़ा देखा था,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘रमाई नाम का वो छोटा नुलिया लड़का उसे अपने सिर पर लपेटे हुए था। उसे देखकर मुझे

कुछ सूझा। इसीलिए मैं नुलिया बस्ती गया और उसे ले आया। रमाई को वो पांडुलिपि पानी के किनारे गीली रेत में फंसी हुई मिली थी। उसने रेशम का आवरण तो ले लिया, लेकिन पांडुलिपि अपने घर में सुरक्षित रखी। उसे लेने के लिए मुझे दस रुपये देने पड़े। श्रीमान महापात्रा, क्या आप कृपया सरकार का बटुआ लाकर मुझे उसमें से दस रुपये दे देंगे?’
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि श्री सेन के घर की छत से समुद्र इतना विशाल दिखाई देगा। मैं रेलिंग के पास खड़ा होकर इस दृश्य को देखकर अचंभित हो रहा था।
कल रात, पुलिस द्वारा दोनों अपराधियों को ले जाने के बाद, श्री सेन ने हमें सुबह की कॉफी के लिए आमंत्रित किया था। निशिथ बोस की मृत्यु हो जाने और नौकर के भाग जाने के कारण माहिम सेन ने रात अपने पिता के साथ बिताई थी। यह सुनकर, फेलुदा ने तुरंत हमारे होटल के श्यामलाल बारीक से बात करने और एक नए नौकर की व्यवस्था करने का प्रस्ताव रखा। रसोइया हमारे लिए छत पर कॉफी लेकर आया।
इस बीच, श्री सेन ने फेलुदा को एक चेक थमा दिया। चेक की रकम इतनी बड़ी थी कि उससे फेलुदा के पुरी आने से पहले घर पर बिताए सभी हफ्तों का खर्च निकल गया। पहले तो फेलुदा ने इसे लेने से इनकार कर दिया, लेकिन जब श्री सेन ने ज़ोर देना शुरू किया, तो उसे लेना ही पड़ा। लालमोहन बाबू ने बाद में उससे कहा, 'अगर तुमने वो चेक नहीं लिया होता, फेलुबा बाबू, तो मैं तुम्हें किसी भारी चीज़ से मार देता। जब तुम्हें पैसे दिए जाते हैं तो तुम इतने विनम्र और शालीन क्यों हो जाते हो? मुझे ये बहुत परेशान करता है!'
'क्या आप जानते हैं, श्रीमान सेन,' फेलुदा ने अपनी कॉफी की चुस्की लेते हुए कहा, 'मुझे सबसे ज्यादा हैरान करने वाली बात क्या थी? वह थी आपकी गठिया की बीमारी।'
श्री सेन ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'क्यों? इसमें इतना हैरान करने वाली क्या बात है? क्या किसी बूढ़े आदमी को गठिया नहीं हो सकता?'
“हाँ, लेकिन आप समुद्र तट पर लंबी सैर पर जाते हैं, है ना? मैंने रेत पर आपके पदचिह्न देखे थे, लेकिन मूर्खतावश मैंने सोचा कि वे मजूमदार के थे— मेरा मतलब है, सरकार के। लेकिन कल मुझे एहसास हुआ कि वे आपके थे।”
तो इससे क्या साबित हुआ? गठिया बेहद दर्दनाक बीमारी है, लेकिन कभी-कभी दर्द कम भी हो जाता है, आप जानते हैं।
‘मुझे यकीन है कि ऐसा ही है। लेकिन आपके पदचिह्न कुछ और ही कहानी बयां करते हैं, श्रीमान सेन। मैंने कल रात इस बारे में बात नहीं की क्योंकि मुझे लगा कि आप इसे गुप्त रखना चाहते हैं। लेकिन दिक्कत यह है कि, आप जानते हैं, किसी जांचकर्ता से राज़ छुपाना हमेशा मुमकिन नहीं होता। आपने जिस छड़ी का इस्तेमाल किया है, वह काफी महत्वपूर्ण है, है ना? इसके अलावा, आपके दोनों जूते एक ही साइज के नहीं हैं। मैंने यह देखा है।’
श्री सेन चुपचाप बैठे रहे और सीधे फेलुदा की ओर देखते रहे। फेलुदा ने बोलना शुरू किया। ‘काठमांडू के वीर अस्पताल ने बिलास मजूमदार की दुर्घटना की खबर की पुष्टि की। लेकिन वहां समान चोटों के साथ किसी और को नहीं लाया गया था। फिर मैंने अपनी गाइड बुक देखी और मुझे पता चला कि पाटन में शांता

भवन नाम का एक और अस्पताल है, जो काठमांडू के पास है। मैंने उन्हें फोन किया और मुझे बताया गया कि पिछले साल अक्टूबर में दुर्गा गति सेन नाम के एक व्यक्ति को गंभीर चोटों के साथ वहां लाया गया था। वह जनवरी की शुरुआत तक वहीं रहे। उन्होंने मुझे उन चोटों का विवरण भी दिया।’
श्री सेन के चेहरे के भाव बदल गए। कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने आह भरी और कहा, 'निशित जानता था कि मैं नहीं चाहता था कि किसी को भी इस घटना के बारे में पता चले। अगर सुबह मेरे घर कोई आता, तो वह हमेशा मेरे पैर पर नई पट्टी बांध देता और उन्हें बताता कि मुझे गठिया है। आज माहिम ने यह काम किया है। श्री मित्तर, मैं बिल्कुल नहीं चाहता था कि यह बात सार्वजनिक हो। मेरे साथ जो हुआ वह किसी प्राचीन और बहुमूल्य पांडुलिपि के खोने से कम दुखद नहीं था। लेकिन चूंकि आप सच्चाई का अंदाजा लगा चुके हैं...'
उसने अपनी पतलून ऊपर उठाकर अपना बायां पैर दिखाया।
मुझे यह देखकर घोर आश्चर्य हुआ कि पट्टी उसके टखने से तीन इंच ऊपर ही खत्म हो रही थी। उसके आगे लकड़ी और प्लास्टिक से बना एक कृत्रिम पैर था!

एक
‘Who was Jayadrath?’
‘Duryodhan’s sister, Duhshala’s husband.’
‘And Jarasandh?’
‘मगध का राजा।’
‘Dhrishtadyumna?’
द्रौपदी का भाई।
‘अर्जुन और युधिष्ठिर दोनों के पास शंख थे। उन्हें क्या कहा जाता था?’ ‘Arjun’s was called Devdatt, and Yudhisthir’s was Anantavijay.’
‘वह कौन सी मिसाइल है जो दुश्मन के खेमे में इतना भ्रम पैदा करती है कि वे अपने ही आदमियों को मारना शुरू कर देते हैं?’
‘Twashtra.’
'बहुत अच्छा।'
भगवान का शुक्र है। मैं उस छोटी सी परीक्षा में पास हो गया था। हाल ही में, रामायण और महाभारत फेलुदा के लिए नियमित पठन सामग्री बन गए थे। मैं भी उनके साथ जुड़ गया था और उन्हें पढ़ने का भरपूर आनंद ले रहा था। एक के बाद एक, एक के बाद एक कहानियां थीं। आजकल एक नया शब्द प्रचलन में आया है - जिसे पढ़ना शुरू करने के बाद छोड़ा न जा सके। अगर आप कोई किताब पढ़ना शुरू करते हैं, तो उसे खत्म किए बिना आप उसे नीचे नहीं रख सकते। रामायण और महाभारत भी कुछ ऐसी ही हैं - जिन्हें पढ़ना शुरू करने के बाद छोड़ा न जा सके।
फेलुदा कालीप्रसन्ना सिन्हा द्वारा लिखित बंगाली महाभारत पढ़ रहे थे। मेरे पास बच्चों के लिए लिखी गई सरलीकृत प्रति थी। लालमोहन बाबू कहते हैं कि उन्हें बंगाली रामायण के बड़े-बड़े अंश कंठस्थ याद हैं। उनकी दादी बचपन में उन्हें रामायण पढ़कर सुनाया करती थीं, इसलिए उन्हें अभी भी काफी कुछ याद है। हमारे घर में बंगाली रामायण नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं एक दिन उसकी एक प्रति लेकर लालमोहन बाबू की याददाश्त की परीक्षा लूंगा। फिलहाल वे एक नया उपन्यास लिखने में व्यस्त हैं, इसलिए वे हमारे घर ज्यादा बार नहीं आ रहे हैं।
फेलुदा को पढ़ना बंद करके सामने के दरवाजे की ओर देखना पड़ा, क्योंकि किसी ने घंटी बजाई थी। फेलुदा पिछले शुक्रवार को ही हिजली में एक हत्या का मामला सुलझाकर लौटे थे। वे काफी आराम में थे, शायद इसीलिए वे उठकर यह देखने के लिए उत्सुक नहीं थे कि दरवाजे पर कौन है। दरअसल, उन्हें हर महीने एक से ज़्यादा मामलों की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। उनकी ज़रूरतें इतनी कम हैं कि हर मामले के लिए मिलने वाली फीस से उनका गुज़ारा हो जाता है। लालमोहन बाबू अपनी जीवनशैली को 'बिल्कुल सादगीपूर्ण' कहते हैं। लेकिन उन्हें यह शब्द बोलने में हमेशा मुश्किल होती है और वे अंत में 'unossenshus' बोल देते

हैं। इसलिए फेलुदा ने उनके लिए एक मुश्किल शब्द ढूंढा और उन्हें कई बार इसका अभ्यास करने को कहा, ताकि उनकी ज़बान लंबे और कठिन शब्दों पर अटकना बंद हो जाए। उन्होंने सुझाव दिया था, 'इन छियासठ कांटेदार पौधों की डंडियों को उठाओ'। लालमोहन बाबू ने एक बार कोशिश की और चार बार अटक गए! मैंने अक्सर फेलुदा को यह कहते सुना है, ‘जब आपकी कहानी में कोई नया पात्र आता है, तो आपको उसके रूप-रंग और पहनावे का विस्तार से वर्णन करना चाहिए। अगर आप ऐसा नहीं करते, तो पाठक अपने मन में कुछ बातें गढ़ सकता है, जो शायद बाद में आपके द्वारा कही गई बातों से मेल न खाएं।’ तो यहाँ उस व्यक्ति का वर्णन है जो हमारे बैठक कक्ष में दाखिल हुआ: उसकी लंबाई शायद 5’9”, उम्र लगभग पचास; उसके कानों के आसपास के बाल सफ़ेद हो चुके थे; उसकी ठोड़ी पर एक तिल था, और उसने एक ग्रे सफारी सूट पहना हुआ था। कमरे में कदम रखते ही जिस तरह से उसने गला साफ़ किया, उससे लग रहा था कि वह थोड़ा असहज महसूस कर रहा है; और जिस तरह से उसने गला साफ़ करते समय अपना हाथ उठाकर अपना मुँह ढका, उससे यह भी लगता है कि उसका व्यवहार कुछ हद तक पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित था।
उन्होंने कहा, 'माफ़ कीजिए, मैं आपको फ़ोन करके अपॉइंटमेंट नहीं ले सका। हमारे इलाके में सभी सड़कें खुदी हुई हैं, इसलिए फ़ोन लाइनें काम नहीं कर रही हैं।'
फेलुदा ने सिर हिलाया। हम सभी कलकत्ता में खुदी हुई सड़कों और शहर पर उनके पड़े प्रभावों के बारे में जानते थे।
‘मेरा नाम सुबीर दत्ता है,’ हमारे आगंतुक ने आगे कहा। उनकी आवाज़ इतनी अच्छी थी कि वे टेलीविजन समाचार वाचक लग सकते थे। ‘अह... आप निजी निवेश विभाग से हैं...?’
'हाँ।'
मैं यहां अपने भाई के बारे में बात करने आया हूं।
फेलुदा चुपचाप देखता रहा। महाभारत उसकी गोद में बंद पड़ी थी, लेकिन उसने अपना पृष्ठ चिह्नित करने के लिए उसमें एक उंगली रखी हुई थी।
लेकिन मुझे अपने बारे में कुछ बताना होगा। मैं कॉर्बेट एंड नॉरिस में सेल्स एग्जीक्यूटिव हूं। आप कैमक स्ट्रीट में दिनेश चौधरी को जानते हैं ना? हम कॉलेज में साथ पढ़ते थे।
दिनेश चौधरी फेलुदा के ग्राहकों में से एक थे।
‘मैं समझ गया,’ फेलुदा ने कहा। श्री दत्ता अपने भाई के बारे में बताने लगे। ‘मेरा भाई एक जैव रसायनज्ञ था। उसने एक समय में काफी नाम कमाया था, यहाँ नहीं बल्कि अमेरिका में। वह मिशिगन विश्वविद्यालय में वायरस का अध्ययन कर रहा था। उसका नाम निहार दत्ता है। एक दिन उसकी प्रयोगशाला में विस्फोट हो गया। वह बुरी तरह घायल हो गया और कुछ समय के लिए ऐसा लगा कि वह बच नहीं पाएगा। लेकिन स्थानीय अस्पताल के एक डॉक्टर ने उसकी जान बचा ली। हालांकि, उसकी आँखें नहीं बचाई जा सकीं।’
‘क्या आपका भाई अंधा हो गया?’
'हां। फिर वह घर लौट आया। दुर्घटना के समय, उसकी शादी एक अमेरिकी महिला से हुई थी। कुछ समय बाद वह उसे छोड़कर चली गई। उसने दोबारा शादी नहीं की।'

तो इसका मतलब है कि उनका शोध अधूरा रह गया?
'हां। उस घटना ने उन्हें इतना निराश कर दिया कि छह महीने तक उन्होंने किसी से बात नहीं की। हमें लगा कि उन्हें मानसिक आघात लगा है। लेकिन धीरे-धीरे वे ठीक हो गए और फिर से सामान्य हो गए।'
'वह अब कैसा है?'
‘विज्ञान में उनकी रुचि अब भी बनी हुई है। यह तो स्पष्ट है। उन्होंने एक युवक को काम पर रखा है—आप उसे सचिव जैसा कह सकते हैं—जो जैव रसायन विज्ञान का छात्र था। उसका एक काम वैज्ञानिक पत्रिकाओं को जोर से पढ़ना है। कुल मिलाकर, मेरा भाई पूरी तरह से असहाय नहीं है। शाम को, वह अकेले ही छत पर टहलने चला जाता है। उसके पास बस उसकी छड़ी होती है। कभी-कभी, वह घर से बाहर निकलकर मुख्य चौराहे तक भी चला जाता है। घर के अंदर, वह काफी आत्मनिर्भर है। उसे एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने के लिए किसी सहायता की आवश्यकता नहीं होती।’
क्या उसकी कोई आमदनी है?
'अमेरिका छोड़ने से पहले उन्होंने जैव रसायन पर एक किताब लिखी थी। उन्हें अभी भी उसकी बिक्री से रॉयल्टी मिलती है, इसलिए उनकी आमदनी का एक जरिया है।'
'क्या गलत हो गया?'
'क्षमा मांगना?'
‘मेरा मतलब है, ऐसा क्या हुआ कि आपको मेरे पास आना पड़ा?’
'हां, मैं उसी पर आ रहा हूं।'
सुबीर दत्ता ने अपनी जेब से एक सिगार निकाला, उसे जलाया और काफी सारा धुआं उड़ाया।
उन्होंने कहा, 'कल रात एक चोर मेरे भाई के कमरे में घुस गया।'
‘तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि यह किसी चोर ने किया था?’ यह सवाल पूछते हुए फेलुदा ने महाभारत को अपनी गोद से उठाया और मेज पर रख दिया।
मेरे भाई को बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि क्या हुआ था। उनके पास एक नौकर है, लेकिन वह उतना समझदार नहीं है। उनका सचिव नौ बजे आया और कमरे की हालत देखकर समझ गया कि क्या हुआ है। मेरे भाई की मेज की दोनों दराजें आधी खुली थीं; कुछ कागज़ फर्श पर बिखरे पड़े थे, मेज पर सब कुछ अस्त-व्यस्त था। और उनकी गोदरेज तिजोरी के ताले के छेद के आसपास खरोंचें थीं। यह स्पष्ट था कि किसी ने उसे खोलने की कोशिश की थी।
'मुझे बताइए, क्या आपके इलाके में हाल ही में किसी और घर में चोरी हुई है?' जी हां। हमारे पड़ोसियों में से एक के घर में चोरी हो गई थी। वह हमसे सिर्फ दो घर दूर रहते हैं। अब कुछ पुलिसकर्मी नियमित गश्त लगाते हैं और पूरे मोहल्ले पर नजर रखते हैं। हम बल्लीगंज पार्क में रहते हैं। हमारा घर लगभग अस्सी साल पुराना है। इसे मेरे दादाजी ने बनवाया था। हम कभी बांग्लादेश में जमींदार थे। मेरे दादाजी 1890 में कलकत्ता चले आए और रासायनिक उपकरण बनाने का काम शुरू किया। कॉलेज स्ट्रीट में हमारी एक बड़ी दुकान थी। मेरे पिताजी ने कुछ वर्षों तक पारिवारिक व्यवसाय चलाया। फिर लगभग तीस साल पहले हमारा व्यवसाय बंद हो गया।

आपके घर में कितने लोग रहते हैं?
‘पहले की तुलना में अब बहुत कम लोग बचे हैं। मेरे माता-पिता अब इस दुनिया में नहीं हैं। मेरी पत्नी का 1975 में निधन हो गया। मेरी दोनों बेटियाँ शादीशुदा हैं और मेरा बड़ा बेटा जर्मनी में है। अब उस घर में हम तीनों ही रहते हैं—मेरा भाई, मेरा छोटा बेटा और मैं। दो नौकर और एक रसोइया हैं। हम पहली मंजिल पर रहते हैं। भूतल को दो फ्लैटों में बाँट दिया गया है। दोनों फ्लैट किराए पर दिए हुए हैं।’
आपके किरायेदार कौन हैं?
पहले फ्लैट में श्री दस्तूर रहते हैं। उनका अपना व्यवसाय है - बिजली के सामान का। दूसरे फ्लैट में, जो घर के पीछे की ओर है, श्री सुखवानी रहते हैं। लिंडसे स्ट्रीट में उनकी एक प्राचीन वस्तुओं की दुकान है।
‘क्या चोर ने उनके फ्लैट में घुसने की कोशिश नहीं की थी? वे तो काफी संपन्न लगते हैं!’
'हां, उन दोनों के पास पैसा है। सुखवानी के कमरे महंगी चीजों से भरे हुए हैं, इसलिए वह रात में उन्हें बंद कर देता है। लेकिन दस्तूर का कहना है कि उसे बंद कमरे में घुटन महसूस होती है, इसलिए वह अपने शयनकक्ष को खुला रखता है।'
‘चोर तुम्हारे भाई के कमरे में क्यों गया? मेरा मतलब है, उसे किस बात में दिलचस्पी रही होगी? क्या तुम्हें कुछ पता है?’
‘देखो, उनके सारे शोध पत्र तिजोरी में रखे हैं। वे निस्संदेह बहुत मूल्यवान हैं, भले ही उनका शोध कभी पूरा नहीं हुआ। लेकिन एक आम चोर उनकी कीमत नहीं समझेगा। मुझे लगता है कि उसका मकसद जितना भी पैसा मिल सके, उसे चुराना था। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, एक अंधा व्यक्ति आसान निशाना होता है।’
'जी हां। चूंकि आपका भाई अंधा है, तो मेरा मानना है कि उसका कोई बैंक खाता नहीं होगा? मेरा मतलब है, चेक पर हस्ताक्षर करना...?'
‘आप सही कह रहे हैं। उसे जो भी रॉयल्टी मिलती है, वह मेरे नाम से बनती है और मेरे खाते में जमा हो जाती है। अगर मेरे भाई को पैसों की जरूरत होती है, तो मैं चेक लिखकर निकाल लेता हूँ। उसका सारा पैसा एक ही तिजोरी में रखा है। अंदाजे से, अभी उसमें करीब तीस हजार रुपये होंगे।’
‘आप चाबी कहाँ रखते हैं?’
जहां तक मुझे पता है, इसे मेरे भाई के तकिए के नीचे रखा गया है। मेरी सबसे बड़ी चिंता यही है कि वह देख नहीं सकता। वह अपने शयनकक्ष का दरवाजा खुला रखकर सोता है। उसका नौकर—जिसका नाम कौमुदी है—दरवाजे के ठीक बाहर फर्श पर सोता है। अगर मेरा भाई रात में उसे बुलाए तो उसे उठ जाना चाहिए। लेकिन अगर कोई चोर बेपरवाह हो और कौमुदी न जागे, तो मेरा भाई बहुत असुरक्षित हो जाएगा। उसके पास खुद का बचाव करने का कोई तरीका नहीं होगा। फिर भी वह पुलिस को सूचना देने से इनकार करता है। उसे पुलिस पर भरोसा नहीं है—उसका कहना है कि वे सब भ्रष्ट हैं, और वे सिर्फ सबको परेशान करते रहेंगे, कभी अपराधी को नहीं पकड़ेंगे। इसलिए मैंने उसे आपके बारे में बताया, और वह सहमत हो गया कि आपसे बात करना बेहतर रहेगा। अगर आप हमारे घर आ सकें, तो शायद आप हमें

बता सकें कि हम ऐसी घटना को रोकने के लिए क्या कर सकते हैं। दरअसल, आप यह भी पता लगा सकते हैं कि यह किसी अंदरूनी व्यक्ति का काम था या नहीं...
‘क्या यह अंदरूनी मिलीभगत है?’ फेलुदा और मैं दोनों चौकन्ने हो गए।
श्री दत्ता ने अपनी सिगार की राख ऐशट्रे में झाड़ दी और जितना हो सके अपनी आवाज़ धीमी करते हुए बोले, 'देखिए, श्री मित्तर, मैं सीधी बात करने में विश्वास रखता हूँ। वैसे भी, मुझे पता है कि अगर मैं पूरी तरह ईमानदार नहीं रहा तो इससे आपको कोई मदद नहीं मिलेगी। सबसे पहले तो, मुझे हमारे दोनों किरायेदार पसंद नहीं हैं। सुखवानी लगभग तीन साल पहले आया था। मैं खुद तो कोई विशेषज्ञ नहीं हूँ, लेकिन कला और प्राचीन वस्तुओं के बारे में जानने वाले अन्य लोगों से मैंने सुना है कि सुखवानी संदिग्ध व्यक्ति है। पुलिस उस पर नज़र रख रही है।'
और दूसरा किरायेदार?
‘दस्तूर ने वह फ्लैट सिर्फ चार महीने पहले लिया था। उससे पहले मेरा बड़ा बेटा उसमें रहता था। अब वह स्थायी रूप से जर्मनी चला गया है। वह डसेलडोर्फ की एक इंजीनियरिंग कंपनी में काम करता है और उसने एक जर्मन महिला से शादी कर ली है। ऐसा नहीं है कि मैंने दस्तूर के बारे में कुछ बुरा सुना हो। बस वह बहुत शांत और अंतर्मुखी है। यही बात थोड़ी संदिग्ध लगती है। और फिर... उह...’
श्री दत्ता रुक गए। जब उन्होंने दोबारा बोलना शुरू किया, तो उन्होंने अपना सिर झुका लिया और अपनी निगाहें ऐशट्रे पर टिकाए रखीं। ‘...ये रहा शंकर, मेरा छोटा बेटा। उसे सुधारा नहीं जा सकता।’ वे फिर चुप हो गए।
‘उसकी उम्र कितनी है?’ फेलुदा ने पूछा।
‘तेईस साल का। उसका जन्मदिन पिछले महीने था, हालांकि मैं उस दिन उससे मिल नहीं पाया।’
'वह क्या करता है?'
'नशीली दवाएं, जुआ, लूटपाट, चोरी... बस नाम ही ले लो। पुलिस ने उसे तीन बार गिरफ्तार किया है। हर बार मुझे जाकर उसे छुड़वाना पड़ा है। हमारा परिवार काफी मशहूर है। इसलिए मेरा अभी भी कुछ प्रभाव है... लेकिन भगवान जाने यह कब तक चलेगा।'
‘क्या जिस रात आपके घर में चोरी हुई थी, उस रात शंकर घर पर था?’
‘वह खाना खाने के लिए अंदर आया था, हालांकि वह ऐसा हर दिन नहीं करता। मैंने उसे खाना खाने के बाद नहीं देखा।’
श्री दत्ता के जाने से पहले यह तय हुआ कि फेलुदा और मैं उस शाम बालीगंज पार्क जाएंगे। इसे कोई 'मामला' तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन मैं समझ गया था कि विस्फोट में अंधे हुए वैज्ञानिक की कहानी ने फेलुदा को उत्सुक कर दिया था। शायद वह महाभारत के अंधे राजा धृतराष्ट्र के बारे में सोच रहा था।
*

अंकल सिद्धू को मिशिगन विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में हुए विस्फोट की खबर ढूंढने में सिर्फ साढ़े तीन मिनट लगे। इस विस्फोट में उभरते हुए जैव रसायनज्ञ निहार रंजन दत्ता की आंखों की रोशनी चली गई थी। उन्होंने वह खबर अंकल सिद्धू की स्क्रैपबुक नंबर 22 में चिपका दी। ध्यान रहे, उन साढ़े तीन

मिनट में से दो मिनट उन्होंने फेलुदा को डांटने में बिताए, क्योंकि वह उनसे काफी समय से मिलने नहीं आया था। अंकल सिद्धू रिश्तेदार तो नहीं हैं, लेकिन फिर भी किसी भी रिश्तेदार से कहीं ज्यादा हमारे करीब हैं। अगर फेलुदा को किसी भी पुरानी घटना के बारे में जानकारी चाहिए होती है, तो वह राष्ट्रीय पुस्तकालय के बजाय अंकल सिद्धू के पास जाता है। उनका काम बहुत जल्दी और खुशी-खुशी हो जाता है।
जैसे ही फेलुदा ने इस विषय को उठाया, अंकल सिद्धू ने भौंहें चढ़ा लीं। 'निहार दत्ता? वही जो वायरस पर काम कर रहा था? एक दुर्घटना के बाद उसकी आंखों की रोशनी चली गई?'
हे भगवान, उनकी याददाश्त कितनी अद्भुत थी! इसीलिए तो फेलुदा उन्हें 'फोटोग्राफिक मेमोरी' कहते थे। अगर वे कुछ भी रोचक पढ़ते या सुनते, तो वह तुरंत और हमेशा के लिए उनके दिमाग में छप जाता था।
‘...लेकिन वह प्रयोगशाला में अकेला तो नहीं था, था ना?’ अंकल सिद्धू ने एक सवाल के साथ अपनी बात समाप्त की।
यह हमारे लिए बिल्कुल नई बात थी।
‘तुम्हारा मतलब क्या है—अकेले नहीं?’ फेलुदा ने पूछा।
‘मेरा मतलब यह है,’ अंकल सिद्धू अपनी किताबों की अलमारी की ओर बढ़े और एक स्क्रैपबुक उठाई, ‘कि उनका एक साथी था। यहाँ देखिए!’
उन्होंने अपनी स्क्रैपबुक से संबंधित समाचार पढ़कर सुनाया। यह घटना 1962 में घटी थी। सुप्रकाश चौधरी नामक एक अन्य भारतीय जैव रसायनज्ञ निहार दत्ता के सहायक के रूप में उनके साथ काम कर रहे थे। दुर्घटना के समय वे कमरे के दूसरे छोर पर थे, इसलिए उन्हें कोई चोट नहीं आई। यदि निहार दत्ता निश्चित मृत्यु से बच गए, तो यह चौधरी के प्रयासों के कारण ही संभव हुआ। उन्होंने ही आग बुझाई और श्री दत्ता को अस्पताल ले जाने की व्यवस्था की। तो चौधरी का क्या हुआ?
मुझे कोई जानकारी नहीं है। मैं आपको यह जानकारी नहीं दे सकता। अगर उनके साथ कोई महत्वपूर्ण घटना घटी होती और उसकी खबर प्रेस में छपी होती, तो मुझे जरूर पता होता। मैं लोगों के बारे में जानकारी जुटाने के लिए ज्यादा प्रयास नहीं करता।
मुझे क्यों पूछना चाहिए? मेरे बारे में कितने लोग पूछते हैं, भला? लेकिन एक बात तो पक्की है। अगर चौधरी ने अपने क्षेत्र में कोई वाकई महत्वपूर्ण काम किया होता, तो मुझे इसके बारे में जरूर पता होता।

दो
7/1 बल्लीगंज पार्क की इमारत उम्र और जीर्णता के स्पष्ट और प्रत्यक्ष संकेतों से भरी हुई थी। स्वाभाविक रूप से, यदि इसके मालिकों के पास इन संकेतों को दूर करने के साधन होते, तो वे ऐसा अवश्य करते। इसका केवल यही अर्थ हो सकता है कि दत्ता परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। अगर कोई बगीचा था, तो वह संभवतः पीछे की तरफ था। घर के सामने एक गोलाकार घास का मैदान था, जिसके बीच में एक बंद पड़ा फव्वारा था। घास के मैदान से बरामदे तक बजरी के रास्ते बने हुए थे। मुख्य द्वार पर लगी संगमरमर की पट्टिका पर 'गोलोक लॉज' लिखा था। यह देखकर फेलुदा को जिज्ञासा हुई। सुबीर दत्ता ने बताया कि उनके दादा का नाम गोलोक बिहारी दत्ता था। उन्होंने ही यह घर बनवाया था।
अंदर से देखने पर गोलोक लॉज की पुरानी शान-शौकत की झलक अभी भी बरकरार थी। बरामदे से तीन सीढ़ियाँ चढ़कर संगमरमर का चबूतरा खुलता था। उसके बाईं ओर संगमरमर की सीढ़ियाँ पहली मंजिल तक जाती थीं। मेरे सामने एक खुला दरवाजा था, जिससे मुझे एक गलियारा दिखाई दे रहा था जो किराए पर दिए गए दो फ्लैटों के समानांतर चलता था। इस गलियारे के बाईं ओर एक विशाल हॉल था, जिसे दत्ता परिवार ने संभाल कर रखा था। एक समय में यहाँ धूमधाम से पार्टियाँ आयोजित की जाती थीं।
हमें ऊपर के लिविंग रूम में ले जाया गया, जो हॉल के ठीक ऊपर था। छत से एक झूमर लटका हुआ था, जो कपड़े में लिपटा हुआ था। उसके मुख्य तने में कई शाखाएँ थीं, लेकिन स्पष्ट था कि उसे फिर कभी जलाया नहीं जाएगा। एक दीवार पर सोने के फ्रेम में जड़ा एक विशाल दर्पण लटका हुआ था। सुबीर दत्ता ने हमें बताया कि यह बेल्जियम से आया था। फर्श पर एक मोटा कालीन बिछा हुआ था, लेकिन कई जगहों से वह इतना घिसा हुआ था कि उन दरारों से संगमरमर का फर्श दिखाई दे रहा था। वह काले और सफेद शतरंज के बोर्ड की तरह चौकोर था।
श्री दत्ता ने एक दीपक जलाया, जिससे कुछ अंधेरा छंट गया। जैसे ही हम बैठने वाले थे, हमें बाहर गलियारे में एक आवाज़ सुनाई दी। टैप, टैप, टैप, टैप!
यह चप्पल और छड़ी का संयोजन था।
दहलीज के ठीक बाहर आवाज रुक गई, फिर छड़ी का मालिक कमरे में दाखिल हुआ। हम वहीं खड़े रहे।
‘मैंने कुछ नई आवाजें सुनीं। तो क्या ये हमारे आगंतुक हैं?’
उस आदमी की आवाज़ गहरी और मधुर थी, जो उसकी लंबाई (लगभग छह फीट) के साथ खूब जंचती थी। उसके सारे बाल सफेद और थोड़े बिखरे हुए थे। उसने बढ़िया सूती कुर्ता और रेशमी पजामा पहना हुआ था। उसकी आँखें काले चश्मे से ढकी हुई थीं। धमाके का असर सिर्फ उसकी आँखों पर ही नहीं, बल्कि उसके चेहरे के अन्य

हिस्सों पर भी पड़ा था। दीपक की हल्की रोशनी में भी यह साफ दिखाई दे रहा था।
सुबीर दत्ता अपने भाई की मदद करने के लिए आगे बढ़ा। 'बैठ जाओ, दादा।'
'जी हां। पहले हमारे मेहमानों को बैठने के लिए कहिए।'
फेलुदा ने कहा, 'नमस्कार। मेरा नाम प्रोदोश मित्तर है। मेरे बाईं ओर मेरा चचेरा भाई तोपेश है।'
‘नमस्कार!’ मैंने धीरे से कहा। हाथ उठाना थोड़ा व्यर्थ होता क्योंकि निहार दत्ता मुझे देख नहीं सकते थे।
'श्री मिटर शायद मेरी ही लंबाई के हैं, और उनके चचेरे भाई की लंबाई पांच फीट सात इंच है, या शायद साढ़े सात इंच?'
मैंने जल्दी से कहा, 'मेरी लंबाई पांच फुट सात इंच है,' और मन ही मन निहार दत्ता के सटीक अनुमानों की सराहना की।
‘आप दोनों बैठ जाइए,’ निहार दत्ता अपने भाई की सहायता लिए बिना स्वयं बैठ गए।
‘क्या आपने चाय मंगवाई है?’
‘हां, मैंने किया है,’ सुबीर दत्ता ने उत्तर दिया।
फेलुदा हमेशा की तरह सीधे मुद्दे पर आ गए। 'जब आप अपना शोध कर रहे थे, तब आपका एक साथी था, है ना?'
सुबीर दत्ता अपनी कुर्सी पर बेचैनी से हिलने-डुलने लगे, जिससे यह संकेत मिलता था कि उन्हें अपने साथी के बारे में पता था, और शायद हमें न बताने के कारण उन्हें थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हो रही थी।
‘नहीं, मैं उन्हें साझेदार नहीं कहूंगा,’ निहार दत्ता ने कहा। ‘वह मेरे सहायक थे, सुप्रकाश चौधरी। वह अमेरिका में छात्र थे, लेकिन मेरी मदद के बिना वह इतनी तरक्की नहीं कर पाते।’
‘क्या आपको पता है कि वह कहाँ है, या वह इस समय क्या कर रहा है?’
'नहीं।'
‘क्या दुर्घटना के बाद उसने आपसे संपर्क नहीं रखा?’
नहीं। उनमें एकाग्रता की कमी थी। जैव रसायन विज्ञान ही उनके जीवन की एकमात्र रुचि नहीं थी—उनके पास अन्य कई तरह की रुचियां भी थीं।
‘विस्फोट का कारण क्या था? लापरवाही?’
‘मैंने कभी लापरवाही या असावधानी नहीं बरती। जानबूझकर तो बिल्कुल नहीं।’ चाय आ गई। कमरे का माहौल गंभीर हो गया था। मैंने तिरछी नज़र से सुबीर दत्ता को देखा। वह भी कुछ तनाव में लग रहे थे। फेलुदा निहार दत्ता के काले चश्मे को सीधे देख रहे थे।
चाय के साथ समोसे और मिठाइयाँ भी थीं। मैंने एक प्लेट उठा ली। फेलुदा को खाने में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने एक चारमीनार जलाई और कहा, 'तो आपका शोध अधूरा रह गया? मेरा मतलब है, इसके बाद किसी और ने कुछ नहीं किया —?'
'अगर उस विषय में किसी ने कोई उपयोगी काम किया होता, तो मुझे निश्चित रूप से इसके बारे में पता चल जाता।'
क्या आपको पक्का पता है कि सुप्रकाश ने इसके बाद कोई और शोध नहीं किया?

देखिए, मुझे बस इतना पता है कि मेरे नोट्स के बिना उनका काम आगे बढ़ना नामुमकिन था। मेरे शोध के अंतिम चरण से संबंधित नोट्स मैंने अपने निजी लॉकर में सुरक्षित रखे थे। बाहर से किसी को भी उन तक पहुँच नहीं मिल सकती थी। वे सभी कागजात मेरे साथ भारत वापस आए थे, और अब वे मेरे पास हैं। अगर मैं अपना शोध पूरा कर पाती, श्री मित्तर, तो मुझे एक बात पक्के तौर पर पता है। नोबेल पुरस्कार जीतना मुश्किल नहीं होता। कैंसर के इलाज में क्रांतिकारी बदलाव आ जाता!
फेलुदा ने अपना प्याला उठाया। तब तक मैं चाय की एक घूंट पी चुका था और मुझे एहसास हो गया था कि यह इतनी बढ़िया थी कि फेलुदा—जो हमेशा चाय के मामले में बहुत नखरे करता था—भी इससे संतुष्ट हो जाएगा। लेकिन मुझे उसके चेहरे के हाव-भाव देखने का मौका नहीं मिला जब उसने पहली घूंट ली।
बिजली अचानक चली गई। लोडशेडिंग हो रही है।
सुबीर दत्ता अपनी कुर्सी से उठते हुए बोले, “पिछले कुछ दिनों से शाम को लगभग इसी समय बिजली गुल हो जाती है। अरे बाप रे!”
बाहर अभी पूरी तरह अंधेरा नहीं हुआ था। सुबीर दत्ता अपने नौकर को ढूंढने के लिए बाहर गए।
‘बिजली गुल?’ निहार दत्ता ने पूछा। फिर उन्होंने आह भरी और कहा, ‘इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता!’
ठीक उसी समय, एक बड़ी घड़ी अचानक बजने लगी, जिससे सब चौंक गए। छह बज चुके थे।
सुबीर दत्ता वापस लौटे, उनके पीछे कौमुदी मोमबत्ती लिए हुए थीं। जैसे ही मोमबत्ती को बीच वाली मेज पर रखा गया, सभी के चेहरे फिर से दिखाई देने लगे। निहार दत्ता के काले चश्मे पर दो पीले बिंदु चमकने लगे: ये मोमबत्ती की लौ थी।
फेलुदा ने अपनी चाय की चुस्की ली और एक बार फिर निहार दत्ता की ओर देखा। 'मान लो कि तुम्हारे नोट्स किसी दूसरे जैव रसायनज्ञ के हाथ लग जाएं, तो क्या उसे बहुत फायदा होगा?'
'अगर आपको लगता है कि नोबेल पुरस्कार एक लाभ है, तो हां, निश्चित रूप से उन्हें बहुत लाभ होगा।'
'क्या आपको लगता है कि चोर आपके कमरे में खास तौर पर आपके नोट्स ढूंढने आया था?'
नहीं, मेरे पास ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है।
‘मेरा एक और सवाल है। आपके नोट्स के बारे में और किसे पता है?’
'वैज्ञानिक जगत में ऐसे कई लोग हैं जो शायद अनुमान लगा सकते हैं—या मान सकते हैं—कि मेरे पास इस तरह के नोट्स हैं। इस घर के लोग इनके अस्तित्व के बारे में जानते हैं। और मेरे सचिव, रणजीत भी।'
जब आप इस घर में रहने वाले लोगों की बात करते हैं... तो क्या आपका मतलब आपके किरायेदारों से भी है?
मुझे नहीं पता कि उन्हें कितना ज्ञान है। दोनों ही व्यापारी हैं। वैज्ञानिक शोध से संबंधित दस्तावेज़ों में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं होनी चाहिए। लेकिन आजकल तो हर चीज़ खरीदी-बेची जा सकती है, है ना? तो फिर एक

वैज्ञानिक के शोध डेटा क्यों नहीं? हर वैज्ञानिक गुणवान तो नहीं होता, है ना?
Nihar Datta rose. So did we.
‘क्या मैं आपका कमरा देख सकता हूँ?’ फेलुदा ने पूछा।
निहार दत्ता दहलीज पर रुक गया। 'जी हां, जरूर। सुबीर आपको ले जाएगा। मुझे अब शाम की सैर के लिए छत पर जाना है।'
हम चारों बाहर गलियारे में चले गए। पहले से कहीं ज़्यादा अंधेरा था। गलियारे के किनारे बने कमरों में मोमबत्तियाँ टिमटिमा रही थीं। निहार दत्ता अपनी छड़ी थपथपाते हुए सीढ़ियों की ओर बढ़े। मैंने उन्हें धीमी आवाज़ में बुदबुदाते सुना, 'मैंने सीढ़ियाँ गिन ली हैं। यहाँ से सत्रह सीढ़ियाँ, बाएँ मुड़ो, और वहाँ सीढ़ियाँ हैं। सात और आठ... पंद्रह सीढ़ियाँ चढ़नी हैं, और फिर छत है। अगर ज़रूरत हो तो मुझे बुला लेना...!'

तीन
निहार दत्ता का कमरा काफी बड़ा निकला। एक पुराने ज़माने का पलंग एक तरफ काफी जगह घेरे हुए था। पलंग के पास एक छोटी गोल मेज़ रखी थी। उस पर ढक्कन से ढका एक गिलास पानी रखा था और एल्युमिनियम फॉयल में लिपटी लगभग दस गोलियां थीं। शायद वे नींद की गोलियां थीं।
मेज के बगल में एक खिड़की थी। उसके सामने एक आरामकुर्सी रखी थी। स्पष्ट था कि कुड़िया काफी समय से इस्तेमाल हो रही थी, क्योंकि उसकी पीठ पर एक काला धब्बा पड़ गया था। हो सकता है कि निहार दत्ता अपना अधिकांश समय इसी कुड़िया पर आराम करते हुए बिताते हों।
इस फर्नीचर के अलावा, एक मेज थी जिस पर एक टिमटिमाती मोमबत्ती रखी थी; मेज के सामने एक स्टील की कुर्सी थी, जिस पर लिखने का सामान, पत्रों को रखने के लिए एक रैक, एक पुराना टाइपराइटर और वैज्ञानिक पत्रिकाओं का ढेर रखा था। दरवाजे के बाईं ओर, डेस्क के पास एक स्टील की गोदरेज तिजोरी रखी थी। फेलुदा ने पूरे कमरे पर सरसरी नज़र डाली और फिर तिजोरी के ताले के छेद को देखने के लिए अपनी जेब से एक छोटी टॉर्च निकाली। ‘हाँ, किसी ने इसे खोलने की बहुत कोशिश की थी। इस पर बहुत सारे खरोंच हैं।’ फिर वह मेज की ओर बढ़ा और गोलियाँ उठाईं। ‘सोनरिल... हाँ, मुझे यही लगा था! अगर श्री दत्ता को हर रात तेज़ नींद की गोली लेने की आदत न होती, तो वह जाग जाते।’
कौमुदी दरवाजे के पास मंडरा रहा था। फेलुदा उसकी ओर मुड़ा। 'तुम भी क्यों नहीं जागे? क्या तुम अपने बाबू की रखवाली ऐसे ही करते हो?'
कोमुदी ने अपना सिर झुका लिया। सुबीर दत्ता ने हमें बताया, 'मुझे लगता है कि वह गहरी नींद में सोता है। जब वह सो रहा होता है, तो मुझे उसे जगाने के लिए कम से कम तीन बार बुलाना पड़ता है।'
बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। करीब तीस साल का एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ। वह दुबला-पतला था, चश्मा पहने हुए था और उसके बाल घुंघराले थे। श्री दत्ता ने हमारा परिचय कराया। पता चला कि वह निहार दत्ता का सचिव, रणजीत बनर्जी था।
‘कौन जीता?’
फेलुदा का यह अप्रत्याशित सवाल श्री बनर्जी के लिए था। वे इससे इतने अचंभित हो गए कि बस देखते ही रह गए। फेलुदा हँसे। “तुम्हारी कमीज़ की जेब में मुझे तुम्हारे टिकट का कवर दिख रहा है। वैसे भी, तुम्हारा चेहरा धूप से झुलसा हुआ लग रहा है, इसलिए यह अंदाज़ा लगाना ज़्यादा मुश्किल नहीं है कि तुम कोई मेजर लीग मैच देखने गए थे!”
श्री बनर्जी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'पूर्वी बंगाल।' श्री दत्ता भी आश्चर्य और प्रशंसा के भाव से मुस्कुरा रहे थे।
‘आप यहां कितने समय से काम कर रहे हैं?’

'[[[[[[[[['
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?
[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[,
[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[‘[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[’
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?
'[[[[[[['
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[…
‘[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?’ [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
‘[[[[[[[[[[[[[[[[’
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[?
‘[[[[[[[[[[[,’ [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[
‘[[[[[-[[[[[-[[[[[!’
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[; [[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
‘[[[[[[[… [[[[[[[[[[[[[[?’ [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[‘[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[… [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[…’
‘[[[[[[[[[? [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?’
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[
[[[[, [[[[, [[[[, [[[[! [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[‘[[[[[[[
[[[[[[[[[… [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[… [[[[[[[[[[[[[[[
[[…!’ [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
‘[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[? [[[[[[[[[[[[[?’

‘जी हां, मैंने खुद देखा है,’ सुबीर दत्ता ने हमें बताया। ‘सभी सौ रुपये के नोटों पर लिखे अंक नोट कर लिए गए हैं। मेरे भाई ने हमेशा इस बात पर जोर दिया है।’
फेलुदा का चेहरा गंभीर दिख रहा था। 'इसका मतलब है कि बिजली कटने के ठीक पंद्रह मिनट बाद, जब हम आपके बैठक कक्ष में बैठे थे, तभी पैसे और कागजात चोरी हो गए।'
निहार दत्ता कमरे में दाखिल हुए। उनके चेहरे से साफ पता चल रहा था कि उन्होंने सब कुछ सुन लिया है। जैसे ही वे अपनी आरामकुर्सी पर बैठे, हम उनके रास्ते से हट गए। उन्होंने आह भरते हुए कहा, 'ज़रा सोचो! चोर जासूस की नाक के नीचे से अपना सारा सामान लेकर भाग गया!'
हम उसे वहीं छोड़कर गलियारे में चले गए। 'क्या हमारे द्वारा इस्तेमाल की गई सीढ़ी के अलावा कहीं और कोई सीढ़ी है?' फेलुदा ने सुबीर दत्ता से पूछा। 'हां। पीछे की तरफ एक सीढ़ी है, जिसका इस्तेमाल सफाईकर्मी करते हैं।'
क्या आपके यहाँ हर दिन एक ही समय पर बिजली कटती है?
'पिछले दस दिनों से, हाँ, हर शाम छह से दस बजे तक बिजली गुल हो रही है। कुछ लोगों ने तो इसके हिसाब से अपनी घड़ी मिलाना शुरू कर दिया है!'
मैंने यह सोचने की कोशिश की कि क्या फेलुदा के जासूस के रूप में करियर में पहले कभी ऐसी कोई घटना घटी थी। मुझे एक भी उदाहरण याद नहीं आया।
सीढ़ियों के ऊपर पहुंचते ही फेलुदा ने पूछा, 'क्या आपके दोनों किरायेदारों में से कोई वापस आया है?'
‘हम पता लगा सकते हैं। वे आम तौर पर इसी समय लौट आते हैं।’ भूतल पर उस लैंडिंग के ठीक सामने श्री दस्तूर के फ्लैट का दरवाजा था। दरवाजा बंद था और यह आसानी से देखा जा सकता था कि उसके पीछे का कमरा पूरी तरह से अंधेरा था।
सुबीर दत्ता ने कहा, 'हमें सुखवानी को ढूंढने के लिए घर के पिछले हिस्से में जाना होगा।'
हम बगीचे के किनारे बने रास्ते से चलकर सुखवानी के फ्लैट तक पहुँचे। उनके सामने वाले कमरे में बैटरी से चलने वाली फ्लोरोसेंट लाइट जल रही थी। उन्होंने हमारे कदमों की आहट सुनी और बरामदे में आ गए। उन्हें फेलुदा की मशाल की रोशनी तो दिखाई दे रही थी, लेकिन स्वाभाविक रूप से उसके पीछे खड़े लोगों को नहीं देख पा रहे थे। श्री दत्ता ने पूछा, 'क्या हम एक मिनट के लिए अंदर आ सकते हैं?'
श्री सुखवानी के चेहरे के भाव तुरंत बदल गए जब उन्होंने अपने मकान मालिक की आवाज पहचानी। 'बिल्कुल, बिल्कुल!'
जब उन्होंने फेलुदा का नाम सुना और हमारे आने का मकसद जाना, तो वे काफी परेशान हो गए। ‘देखिए, श्रीमान मित्तर, मेरा कमरा कीमती चीजों से भरा है। चोरी या सेंधमारी की बात सुनते ही मुझे दिल का दौरा पड़ जाता है! तो आप कल्पना कर सकते हैं कि आज सुबह ऊपर हुई सेंधमारी की कोशिश के बारे में सुनकर मुझे कैसा लगा होगा!’
सच कहूँ तो, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि एक कमरा इतनी सारी कीमती चीज़ों से भरा हो सकता है। वहाँ पत्थर, पीतल और कांसे से बनी कम से कम तीस छोटी

मूर्तियाँ थीं, जिनमें से कई बुद्ध या शिव के विभिन्न रूपों की थीं। इनके अलावा, वहाँ चित्र, किताबें, पुराने नक्शे, बर्तन और फूलदान, ढाल और तलवारें, थूकदान, हुक्का और इत्र रखने के पात्र भी थे। फेलुदा ने बाद में मुझसे कहा, 'काश मेरे पास पैसे होते, टॉपशे! मैं कम से कम किताबें और वो चित्र तो खरीद लेता!'
श्री सुखवानी ने बताया कि बिजली कटने से दस मिनट पहले ही वे वापस लौटे थे। ‘क्या उन दस मिनटों में कोई इस तरफ आया था? मैं देख सकता हूँ कि ऊपर जाने वाली दूसरी सीढ़ी आपके फ्लैट के ठीक पीछे है। क्या आपने उस तरफ से कोई आवाज़ सुनी?’
श्री सुखवानी ने कुछ नहीं सुना था, क्योंकि वे सीधे अपने बाथरूम में चले गए थे। 'वैसे भी, अंधेरे में मैं किसी को कैसे देख सकता था? वैसे, क्या आपको सच में लगता है कि किसी बाहरी व्यक्ति ने यह किया है?'
'तुम क्यों पूछ रहे हो?'
‘क्या आपने श्री दस्तूर से बात की है?’ श्री सुखवानी के लहजे से यह आभास होता था कि अगर हम श्री दस्तूर से बात करते, तो हमें तुरंत पता चल जाता कि अगर किसी पर संदेह होना चाहिए, तो वह दस्तूर ही थे।
फेलुदा के कुछ कहने से पहले ही, श्री सुखवानी ने कहा, 'वह बड़े ही विचित्र व्यक्ति हैं। मुझे पता है कि मुझे अपने पड़ोसी के बारे में इस तरह नहीं बोलना चाहिए, लेकिन मैं उन्हें कुछ समय से देख रहा हूँ। उनसे मिलने से पहले, उनकी खिड़की से मुझे केवल उनके खर्राटों की आवाज़ सुनाई देती थी। मुझे यकीन है कि वह आवाज़ पहली मंज़िल तक पहुँचती होगी!'
सुबीर दत्ता के होठों पर मंडराती मुस्कान को देखकर यह स्पष्ट था कि सुखवानी की टिप्पणी अतिशयोक्ति नहीं थी।
फिर एक सुबह, वह मेरा टाइपराइटर उधार लेने आया। तभी मेरी उससे पहली मुलाकात हुई। सच कहूँ तो, मुझे इस कमरे में हर चीज़ को देखने का उसका लालची नज़रिया बिल्कुल पसंद नहीं आया! बस जिज्ञासावश, मैंने उससे पूछा कि वह क्या काम करता है। उसने कहा कि वह बिजली का सामान बेचता है। अगर ऐसा है, तो वह अपने लिए बैटरी से चलने वाली लाइट और पंखा क्यों नहीं ले लेता, जबकि हमारे यहाँ तो रोज़ बिजली कटती है? उसका पूरा धंधा ही संदिग्ध है।
श्री सुखवानी रुक गए। हमने उठने का मौका लिया। जाने से पहले फेलुदा ने कहा, 'अगर आपको कुछ भी अजीब लगे तो कृपया श्री दत्ता को सूचित कर दीजिएगा। इससे हमें अपने काम में मदद मिलेगी।'
जैसे ही हम घर के सामने वापस जाने के लिए उसी रास्ते पर चलने लगे, हमें बाहर एक टैक्सी का हॉर्न सुनाई दिया। फिर हमने बजरी वाले रास्ते पर एक आदमी को बरामदे की ओर जाते देखा। धुंधली रोशनी में भी मैं देख सकता था कि वह मध्यम कद का और थोड़ा मोटा था। उसने भूरा सूट पहना हुआ था और उसकी दाढ़ी करीने से कटी हुई थी, जिसमें सफ़ेद और काले बाल मिले हुए थे। उसके हाथ में एक ब्रीफ़केस था, जो शायद नया था।
वह हमारी ओर मुड़ा। 'शुभ संध्या!' सुबीर दत्ता ने उनका अभिवादन किया। वह व्यक्ति थोड़ा चौंक गया। शायद उसे इमारत में अन्य लोगों से 'शुभ प्रभात!'

और 'शुभ संध्या!' सुनने की आदत नहीं थी। लेकिन उसने भी अभिवादन का जवाब दिया।
'शुभ संध्या, श्री दत्ता!'
उसकी आवाज़ बेहद कर्कश थी। वह जाने के लिए मुड़ा, लेकिन फेलुदा ने फुसफुसाते हुए कहा, 'उसे रोको!' सुबीर दत्ता ने तुरंत बात मान ली। 'अह... श्री दस्तूर!'
श्री दस्तूर रुक गए। हम उनके पास जाने के लिए आगे बढ़े। जब श्री दत्ता ने सारी घटना बताई, तो वे पूरी तरह से हैरान रह गए। “आपका मतलब है कि यह सब कुछ बस कुछ ही मिनटों में हो गया? आपका भाई बहुत परेशान होगा!” उन्होंने कहा। फेलुदा ने एक बार मुझसे कहा था कि कभी-कभी, जब कोई व्यक्ति बहुत भावुक या विचलित हो जाता है, तो उसकी आवाज़ इतनी बदल जाती है कि उसे पहचानना लगभग नामुमकिन हो जाता है। जब श्री दस्तूर ने आश्चर्य और भय के मिले-जुले भाव से ये शब्द कहे, तो मैंने देखा कि उनकी आवाज़ में जो कर्कशता थी, वह पूरी तरह गायब हो गई। ऐसा लगा जैसे कोई बिलकुल अलग व्यक्ति बोल रहा हो।
'जब आप यहाँ आए, तो क्या आपने किसी को इस इमारत से बाहर जाते देखा?' फेलुदा ने उससे पूछा।
‘अरे नहीं!’ श्री दस्तूर ने उत्तर दिया। ‘लेकिन फिर, अंधेरे में मैं उसे आसानी से देख नहीं पाता। शुक्र है कि मेरे फ्लैट में कोई कीमती सामान नहीं है!’
‘कौन है?’ पहली मंजिल की सीढ़ियों से एक आवाज आई। यह निहार दत्ता थे। हम बरामदे के पास सामने की सीढ़ियों पर खड़े थे। अब हम वापस घर के अंदर गए और ऊपर देखा। अंधेरे में भी निहार दत्ता का चश्मा चमक रहा था।
‘मैं हूँ, श्री दत्ता!’ श्री दस्तूर ने उत्तर दिया। ‘आपके भाई ने अभी-अभी मुझे आपके निधन के बारे में बताया। मेरी संवेदनाएँ आपके साथ हैं!’
काले चश्मे हट गए। कुछ ही सेकंड में, उनकी चप्पलों और छड़ी की आवाज़ भी गायब हो गई।
‘क्या आप अंदर नहीं आएंगे?’ श्री दस्तूर ने हमें आमंत्रित किया। ‘दिनभर की कड़ी मेहनत के बाद, किसी का साथ होना बहुत अच्छा लगता है।’
फेलुदा ने कोई आपत्ति नहीं जताई। मैं समझ सकता था कि क्यों। किसी अपराध स्थल पर जासूस का पहला काम वहां के लोगों को जानना-समझना होता है।
श्री सुखवानी के कमरे के बाद, दस्तूर का कमरा सचमुच बेहद खाली था। वहाँ केवल एक सोफा, दो सोफे, एक लिखने की मेज और एक किताबों की अलमारी थी। सोफे के सामने एक छोटी, नीची मेज रखी थी, जिस पर एक मोमबत्ती रखी थी। फेलुदा ने लाइटर जलाकर मोमबत्ती को रोशन किया। कमरा थोड़ा रोशन हो गया, लेकिन दीवार पर लगे कैलेंडर के अलावा उसमें और कुछ नहीं था।
श्री दस्तूर शायद अपने नौकर को बुलाने के लिए अंदर चले गए थे। जब वे लौटे, तो फेलुदा ने उन्हें सिगरेट की पेशकश की। श्री दस्तूर ने कहा, 'नहीं, धन्यवाद। मैंने कैंसर के डर से तीन साल पहले धूम्रपान छोड़ दिया था।' ‘मुझे लगता है कि आपको अपने घर में दूसरों के सिगरेट पीने से कोई आपत्ति नहीं है? दरअसल, मुझे आपकी ऐशट्रे में आधी जली हुई सिगरेट दिख रही है।’

फेलुदा ने उसे उठाया। ‘मेरी अपनी ब्रांड की!’ उसने आगे कहा। मैं भी दूर से ही चारमीनार सिगरेट पहचानना सीख गया था।
श्री दस्तूर ने कहा, ‘आपको पता है, मैंने सुखवानी की तरह अपने लिए एक आपातकालीन बत्ती और पंखा लेने के बारे में कई बार सोचा है। लेकिन फिर, जब मैं सोचता हूँ कि कलकत्ता की नब्बे प्रतिशत आबादी को अंधेरे और गर्मी में कष्ट सहना पड़ता है, तो मैं बहुत निराश हो जाता हूँ। इसलिए मैंने...’
‘आप बिजली के सामान बेचते हैं, है ना?’ फेलुदा ने पूछा। ‘बिजली के?’
श्री सुखवानी ने हमें बताया।
‘सुखवानी अक्सर बकवास करता है। मेरा व्यवसाय इलेक्ट्रॉनिक्स से संबंधित है, न कि विद्युत से। मैंने इसे लगभग एक साल पहले शुरू किया था।’
'अपने आप से?'
नहीं, मेरा एक पार्टनर है—एक दोस्त। मैं मुंबई का रहने वाला हूँ, हालाँकि मैंने कई साल विदेश में बिताए हैं। मैं जर्मनी में एक कंप्यूटर निर्माण कंपनी में काम करता था। फिर मेरे दोस्त ने मुझे पत्र लिखकर यहाँ आने का अनुरोध किया। उसने पैसा लगाया है, मैं तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान कर रहा हूँ।
आप कलकत्ता कब पहुंचे?
'पिछले नवंबर में, मैं तीन महीने तक अपने दोस्त के साथ रहा। फिर मुझे इस फ्लैट के बारे में पता चला और मैं यहां आ गया।'
एक नौकर ठंडे पेय लेकर कमरे में दाखिल हुआ। वाह! श्री दस्तूर को पहले ही पता चल चुका था कि फेलुदा एक जासूस है। अब उन्होंने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, 'श्री मित्तर, यह सच है कि मेरे फ्लैट में कोई कीमती सामान नहीं है। लेकिन मुझे अपने पड़ोसी के बारे में आपको कुछ बताना ज़रूरी लगता है। वह सीधा-सादा आदमी नहीं है। मैं आपको बता सकता हूँ कि उसका फ्लैट हर तरह की संदिग्ध और नापाक गतिविधियों का अड्डा है!'
'आपको कैसे मालूम?'
'मेरा बाथरूम उसके बाथरूम के बगल में है, आप देख सकते हैं। दोनों के बीच एक दरवाजा है। वह हमेशा बंद रहता है, लेकिन अगर मैं अपना कान उसके पास लगाऊं, तो मुझे उसके बेडरूम से बातचीत सुनाई देती है।'
फेलुदा ने गला साफ किया। 'छुपकर बातें सुनना कोई ईमानदार और सीधा-सादा काम नहीं है, श्री दस्तूर!'
श्री दस्तूर बिल्कुल शांत रहे। ‘मैं छुपकर बातें नहीं सुनता। मतलब, आम तौर पर तो नहीं। लेकिन एक दिन गलती से मेरा एक पत्र उनके फ्लैट पर पहुँच गया। जानते हैं उन्होंने क्या किया? उन्होंने उसे भाप से खोल दिया, फिर गोंद से चिपका दिया। जब मुझे उनकी करतूत का पता चला, तो मैंने भी बदले में कुछ शरारत कर दी। देखिए, मुझे झगड़ा करना पसंद नहीं है। लेकिन अगर सुखवानी मुझे परेशान करेगा, तो मैं भी उसे नहीं छोडूंगा।’
हमने ठंडे पेय के लिए श्री दस्तूर को धन्यवाद दिया और चले गए।
फेलुदा मुख्य द्वार पर रुककर चौकीदार से पूछने लगा कि क्या उसने पिछले आधे घंटे में घर से किसी को अंदर जाते या बाहर आते देखा है। चौकीदार ने कहा कि उसने सुखवानी और दस्तूर के अलावा किसी को नहीं देखा। इससे हमें कोई हैरानी

नहीं हुई। 7/1 बालीगंज पार्क के चारों ओर एक चारदीवारी थी। 7/1 के ठीक पीछे वाला घर खाली था, और पिछले कुछ महीनों से खाली ही था। कोई भी तंदुरुस्त चोर बिना देखे दीवार फांद सकता था; लेकिन हम सब मन ही मन सोचते थे कि यह काम घर के ही किसी सदस्य ने किया होगा। या फिर घर में रहने वाले किसी व्यक्ति ने इस काम के लिए किसी बाहरी व्यक्ति को बुलाया होगा। किसी को भी पक्का पता नहीं था।
चूंकि हमारे पास कार नहीं थी, इसलिए सुबीर दत्ता ने हमें वापस छोड़ने की पेशकश की, लेकिन फेलुदा ने उन्हें आश्वासन दिया कि हम आसानी से मुख्य सड़क तक पैदल चलकर टैक्सी ले सकते हैं।
‘पुलिस को सूचना देना शायद इतना बुरा विचार नहीं होगा,’ फेलुदा ने अचानक कहा। यह एक बिलकुल अप्रत्याशित टिप्पणी थी। श्री दत्ता भी अचंभित रह गए। ‘तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?’ उन्होंने पूछा।
‘आपके भाई की पुलिस के बारे में जो भी राय हो, उनके पास चोरों और सेंधमारों को पकड़ने के साधन हैं। एक निजी जासूस ऐसा नहीं कर सकता। इसके अलावा, चोरी हुई रकम इतनी कम भी नहीं है, है ना? आपने कहा था कि नोटों पर लिखे नंबर कहीं लिखे हुए थे। इसलिए, अगर आप पुलिस को बता दें, तो शायद उनका काम अपेक्षाकृत आसान हो जाएगा।’
सुबीर दत्ता ने कहा, 'चूंकि जे ने आपको यहां बुलाया है और एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित हुई है, इसलिए मैं आपसे इस मामले को छोड़ने के लिए कहने के बारे में सोच भी नहीं सकता। अगर मैं पुलिस को सूचित भी कर दूं, तो मैं चाहूंगा कि आप उनके साथ मिलकर काम करें। अगर आप ऐसा करेंगे, तो मुझे और मेरे भाई दोनों को बहुत राहत मिलेगी। लेकिन... सच कहूं तो... मैं बिना किसी की मदद के भी बता सकता हूं कि चोर कौन है।'
‘क्या आपका मतलब आपके बेटे से है?’
सुबीर दत्ता ने आह भरी और सिर हिलाया। 'यह शंकर के अलावा कोई और हो ही नहीं सकता। उसे पता है कि इस इलाके में शाम छह बजे बत्तियाँ बंद हो जाती हैं। वह एक फुर्तीला नौजवान है। उस दीवार को फांदना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं होती। पीछे की सीढ़ियों से ऊपर जाकर अपने चाचा के कमरे में जाना और उस तिजोरी को खोलना... यह सब तो उसके लिए बच्चों का खेल होता!'
लेकिन वह अपने चाचा के शोध पत्रों का क्या करेगा? क्या वह वैज्ञानिक जगत में बहुत से लोगों को जानता है?
‘उसे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। वह मेरे भाई को ब्लैकमेल कर सकता है। उससे उसके कागजात वापस दिलवा सकता है। शंकर अच्छी तरह जानता है कि उसके चाचा के लिए उन कागजातों का कितना महत्व है।’
इतने कम समय में इतना कुछ हो गया था—मेरा सिर चकरा रहा था। श्री दत्ता के घर से निकलते समय मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आगे और भी बहुत कुछ होने वाला है। लेकिन, उस दिन बाद में जो कुछ हुआ, उसका वर्णन करने से पहले, मुझे घर पहुँचने पर फेलुदा से हुई बातचीत का जिक्र करना चाहिए।
रात के खाने के बाद, मैं उसके कमरे में गया तो देखा कि वह पीठ के बल लेटा हुआ था, पान चबा रहा था और चारमीनार सिगरेट पी रहा था। मैं उसके बिस्तर पर

जाकर बैठ गया और आखिरकार वह सवाल पूछ ही लिया जो दत्ता परिवार के घर से निकलने के बाद से मुझे परेशान कर रहा था।
'फेलुदा, तुम इस मामले को क्यों छोड़ना चाहते थे?'
फेलुदा ने धुएं के दो एकदम सही छल्ले उड़ाए और कहा, 'इसके पीछे एक कारण है, प्रिय टॉपशे, इसके पीछे एक कारण है!'
लेकिन आपने हमें वह कारण बताया था। पुलिस चोर को आसानी से पकड़ सकती है, खासकर अगर उसके पास बहुत पैसा हो।
‘क्या आपको पूरा यकीन है कि सुबीर दत्ता के बेटे ने ही पैसे चुराए थे?’
‘और कौन हो सकता है? यह तो साफ है कि परिवार का ही कोई सदस्य इसके लिए जिम्मेदार है। श्री दस्तूर तो वहां थे ही नहीं। और मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि सुखवानी सामान चुराकर घर पर ऐसे बैठी रही जैसे कुछ हुआ ही न हो। रणजीत बनर्जी चोरी के बाद आए। इन लोगों के अलावा तो सिर्फ नौकर ही हैं...!’ लेकिन मान लीजिए कि मेरा ग्राहक स्वयं जिम्मेदार है?
मैंने फेलुदा को हैरानी से देखा।
'सुबीर दत्ता?'
'यह सोचने की कोशिश करो कि चोरी होने का पता चलने से ठीक पहले क्या-क्या हुआ था।'
मैंने अपनी आँखें बंद कीं और अतीत की यादों में खो गया। हम सब बैठक में बैठे थे। चाय लाई गई। हमने उसे पीना शुरू किया। फेलुदा के हाथ में प्याला था। बत्ती चली गई। और फिर...
अचानक मुझे कुछ याद आया जिससे मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
‘जैसे ही बत्ती बुझी, सुबीर दत्ता अपने नौकर को बुलाने के लिए कमरे से बाहर निकल गए!’
ठीक है। अगर यह पता चले कि मेरे ही ग्राहक ने तिजोरी खोली है, तो मेरी छवि कैसी होगी? यह पूरी तरह असंभव तो नहीं है, आप जानते हैं। आखिर, हम उसके बारे में बहुत कुछ नहीं जानते, है ना? हाँ, उसने नौकर को बुलाया था, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन मान लीजिए कि उसने शेयर बाजार में, या घुड़दौड़ में, या जुए में बहुत सारा पैसा गंवा दिया है और उस पर बहुत बड़ा कर्ज चढ़ गया है, तो क्या आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पैसा उसी ने लिया था?
लेकिन... लेकिन... वह खुद आपके पास आया था! उसने आपसे इस मामले की जांच करने के लिए कहा था!
'हां। अगर वह एक शातिर अपराधी है—बहुत ही चालाक अपराधियों में से एक—तो उसका मेरे पास आना जरा भी आश्चर्यजनक नहीं है। वह बिल्कुल इसी तरह का काम कर सकता है।'
इसके बाद कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं था।
फेलुदा ने महाभारत की अपनी प्रति उठाई और पढ़ने वाला दीपक जलाया। मैं उठा और उसके कमरे से बाहर निकल गया।
जैसे ही मैं अपने लिविंग रूम में पहुँचा, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। स्कूटर की आवाज़। नहीं, सिर्फ़ एक स्कूटर नहीं। एक से ज़्यादा स्कूटर थे।
उन्होंने पूरे इलाके की शांति भंग कर दी और ऐसा लगा जैसे वे हमारे घर के ठीक सामने आकर रुक गए हों।

एक सेकंड बाद, किसी ने हमारे दरवाजे की घंटी बजाई।
*

हालांकि कभी-कभी अजीब समय पर भी मेहमान आते थे, लेकिन कोई भी स्कूटर पर नहीं आता था। शायद एक साथ दरवाजा खोलना सुरक्षित न हो। इसलिए मैं फेलुदा के कमरे में वापस गया और जल्दी से झाँकने के लिए उसका पर्दा उठाया। फेलुदा ने अपनी किताब एक तरफ रख दी थी और पहले से ही खड़ा था। 'रुको,' उसने कहा। इसका मतलब था कि वह खुद दरवाजा खोलना चाहता था।
जैसे ही उसने ऐसा किया, एक युवक कमरे में घुस आया। पल भर में ही मैं समझ गया कि वह साक्षात बुराई का अवतार था। उसे बैठने की भी आवश्यकता नहीं लगी। उसने दरवाजा जोर से बंद किया और उस पर झुककर खड़ा हो गया। सुबीर दत्ता का बेटा शंकर दत्ता, फेलुदा को घूरता हुआ, बेजान आँखों से भाषण देने लगा। उसका हर शब्द कोड़े की मार जैसा लग रहा था।
“देखिए, महोदय, मुझे नहीं पता मेरे पिता ने मेरे बारे में आपको क्या बताया, लेकिन मैं अनुमान लगा सकती हूँ। मैं आपको बस इतना बता सकती हूँ कि कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, चाहे वे किसी जासूस को ही क्यों न लगा दें। मैं आपको चेतावनी देने आई हूँ। मैं अकेली नहीं हूँ, समझे? हमारे पास पूरा गिरोह है। अगर आपने चालाकी दिखाने की कोशिश की, तो आपको पछतावा होगा। जी हाँ, महोदय, आपको अपने जन्म पर ही पछतावा होगा!”
अपना भाषण समाप्त करने के बाद, शंकर दत्ता ने नाटकीय अंदाज़ में विदा ली, जैसे उनका आगमन हुआ था। तभी तीन स्कूटरों की तेज़ आवाज़ सुनाई दी और वे निकल पड़े, जिससे पूरा इलाका शोरगुल से गूंज उठा।
उस क्षण तक, फेलुदा बिल्कुल स्थिर रहा। कोई उसके सामने खड़े होकर उसे अपशब्द कह रहा हो, तब भी वह पूरी तरह शांत रह सकता था। सचमुच, उसका अपनी भावनाओं पर असाधारण नियंत्रण है। मैंने उसे कहते सुना है कि जो व्यक्ति अपने बढ़ते क्रोध को दृढ़ता से नियंत्रित रख सकता है, उसमें उस व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक इच्छाशक्ति होती है जो क्रोध के आवेश में आ जाता है। लेकिन शंकर के जाते ही, स्कूटरों की आवाज़ पूरी तरह से शांत होने से पहले ही फेलुदा तेज़ी से हरकत में आ गया। पलक झपकते ही उसने अपना कुर्ता पहना और बटुआ उठा लिया। 'चलो, टॉपशे। एक टैक्सी...!'
तीन मिनट के भीतर हम सदर्न एवेन्यू में थे और टैक्सी को रोक रहे थे। स्कूटर उत्तर की ओर चले गए थे। इतना तो मुझे पता था।
गाड़ी में बैठते ही फेलुदा ने ड्राइवर से कहा, 'लैंसडाउन रोड से कोशिश करो।' मुख्य सड़क खुदी हुई थी, इसलिए पूरी संभावना थी कि स्कूटर लैंसडाउन रोड से ही जाएंगे।
पौने ग्यारह बज रहे थे। सदर्न एवेन्यू लगभग पूरी तरह खाली था। हमारा ड्राइवर बंगाली था, स्थानीय निवासी। हमने उसे पहले भी देखा था। उसने पूछा, 'क्या आप किसी के पीछे चलना चाहेंगे, महोदय?'
'तीन स्कूटर,' फेलुदा ने धीमी आवाज में कहा।
हमारा अनुमान सही निकला। हमने एल्गिन रोड चौराहे के पास तीन स्कूटर देखे। शंकर एक स्कूटर पर था, और बाकी दो स्कूटरों पर दो-दो सवार थे। हमें यह

बताने की ज़रूरत नहीं थी कि वे सभी शातिर अपराधी थे। हमारी टैक्सी उनके पीछे चलने लगी।
हम लोअर सर्कुलर रोड और कैमक स्ट्रीट से गुज़रे। पार्क स्ट्रीट पहुँचकर वे बाईं ओर मुड़ गए। वे टेढ़े-मेढ़े तरीके से गाड़ी चला रहे थे, शायद इसलिए कि दोनों ही बहुत खुश थे और दुनिया की कोई परवाह नहीं कर रहे थे। फेलुदा टैक्सी के अंधेरे कोने में छिपा हुआ था और खिड़कियों से आती स्ट्रीटलाइट से बचने की कोशिश कर रहा था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या सोच रहा है। स्कूटर मिर्ज़ा ग़ालिब स्ट्रीट से नीचे गए और फिर बाईं ओर मुड़ गए। मार्क्विस स्ट्रीट। यहाँ सड़क संकरी थी, बत्तियाँ मंद थीं और हर घर में अँधेरा छाया हुआ था। फ़ेलुदा ने ड्राइवर को गति धीमी करने और स्कूटरों और हमारी टैक्सी के बीच की दूरी बढ़ाने के लिए कहा, कहीं उन आदमियों को शक न हो जाए।
थोड़ी देर बाद, दो और मोड़ लेने के बाद, स्कूटर एक इमारत के सामने रुक गए। फेलुदा ने कहा, 'चलते रहो, रुको मत।'
जैसे ही हम उस इमारत के पास से गुज़रे, मुझे एहसास हुआ कि यह कोई साधारण घर नहीं, बल्कि एक होटल था। इसका नाम था द न्यू कोरिंथियन लॉज। नया? इमारत तो कम से कम सौ साल पुरानी थी।
फेलुदा का मिशन पूरा हो गया। वह बस यही जानना चाहता था कि गिरोह का ठिकाना कहाँ है।
जब हम घर लौटे, तब तक ग्यारह बजकर चालीस मिनट हो चुके थे। टैक्सी के मीटर में उन्नीस रुपये और पचहत्तर पैसे दिख रहे थे।
अगली सुबह, अंकल सिद्धू अचानक आ गए। मुझे पता था कि वे हर सुबह टहलने जाते हैं, लेकिन हमेशा झील की तरफ। अगर वे हमारे घर आए थे, तो ज़रूर कोई खास वजह रही होगी।
उन्होंने हमें बताया, ‘वह स्क्रैपबुक इतनी भारी थी कि उसे ले जाना मुश्किल था, इसलिए मैंने बस प्रेस की कटिंग की नकल कर ली। देखिए, इसमें एस. चौधरी का जिक्र है, और वह एक जैव रसायनज्ञ हैं। लेकिन मुझे नहीं पता कि यह सुप्रकाश हैं या नहीं।’
इसकी सूचना कब दी गई थी?
1971 में, पुलिस ने मेक्सिको की एक दवा कंपनी पर छापा मारा और एक बंगाली जैव रसायनज्ञ को गिरफ्तार कर लिया। उसे जेल भेज दिया गया। उस पर नकली दवाएँ बेचने का आरोप था, जिनसे भयानक बीमारियाँ हो रही थीं। रिपोर्ट में बस इतना ही लिखा है। चूंकि मैं केवल "सुप्रकाश" नाम के बारे में सोच रहा था, इसलिए मैंने तुरंत उस नाम को इस रिपोर्ट से नहीं जोड़ा। लेकिन क्या यह वही रिपोर्ट है...?
'हां, यह वही व्यक्ति है,' फेलुदा ने गंभीरता से उत्तर दिया।
अंकल सिद्धू विदा लेने के लिए उठे। उनके नाई के घर आने का इंतज़ार था— उनके नियमित बाल कटवाने का समय हो गया था। उन्होंने फेलुदा की पीठ थपथपाई, मेरा कान पकड़ा और प्यार से मरोड़ा, अपनी धोती कमर में कसी और बाहर निकल गए।

फेलुदा अपनी नोटबुक में कुछ लिखने लगा। मैं जाकर उसके पास खड़ा हो गया। एक पन्ने पर तीन प्रश्न लिखे हुए थे:
1. तिजोरी के ताले के छेद के आसपास इतने सारे खरोंच क्यों थे?
2. ‘वहाँ कौन है’? इसका क्या मतलब है?
3. ‘अधूरा काम’ क्या है?
उन सवालों ने मुझे भी सोचने पर मजबूर कर दिया।
कल शाम, जब फेलुदा ने टॉर्च से चाबी के छेद पर रोशनी डाली, तो मैंने उसके आसपास खरोंचें देखीं। हाँ, वे वाकई संदिग्ध थीं। ऐसे निशान तभी बन सकते थे जब किसी ने स्टील की सतह को बहुत ज़ोर से रगड़ा हो। क्या निहार दत्ता इतनी गहरी नींद में सोते थे कि इतनी रगड़ की आवाज़ भी उनकी नींद नहीं खुली? दूसरा सवाल मुझे तुरंत समझ नहीं आया। फिर मुझे याद आया कि श्री दस्तूर की आवाज़ सुनकर निहार दत्ता ने सीढ़ियों से आवाज़ लगाई थी। मुझे यह समझ नहीं आया कि निहार दत्ता के 'वहाँ कौन है?' कहने में फेलुदा को कुछ संदिग्ध क्यों लगा।
यह निहार दत्ता ही थे जिन्होंने एक अधूरे काम की बात की थी। कम से कम, रणजीत बनर्जी ने तो हमें यही बताया था। मैंने मान लिया था कि यह उनके अधूरे शोध का जिक्र था। क्या फेलुदा को भी यही लगता था?
फेलुदा अभी कुछ और लिखने ही वाला था कि टेलीफोन की घंटी बज उठी। उसने हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठा लिया।
'नमस्ते।'
कुछ देर का विराम हुआ। फिर उसने कहा, 'हम्म...हम्म...हाँ, मैं अभी तुरंत आ रहा हूँ।'
उसने रिसीवर वापस रखा और अपनी अलमारी में रखे हैंगर को उठाया, जिस पर एक कमीज और एक पतलून टंगी हुई थी। फेलुदा ने उन्हें झट से उतार दिया और मुझसे कहा, 'तुरंत तैयार हो जाओ। गोलक लॉज में हत्या हो गई है।'
मेरा दिल मुंह में आ गया।
'कौन?'
श्री दस्तूर।
जैसे ही हम बल्लीगंज पार्क में दाखिल हुए, मैंने 7/1 के बाहर एक पुलिस वैन खड़ी देखी और लोगों का एक समूह भी। सौभाग्य से, यह एक शांत और सभ्य इलाका था, वरना और भी बहुत सारे लोग तमाशबीन होते।
कलकत्ता पुलिस में ऐसा कोई नहीं है जो फेलुदा को न जानता हो। गोलक लॉज में घुसते ही हमारी मुलाकात इंस्पेक्टर बख्शी से हुई। वे मुस्कुराते हुए आगे आए और बोले, 'अरे वाह! तो आप यहाँ हैं! क्या आपको अपने घर से भी हत्या की गंध आ रही थी?'
फेलुदा ने अपनी टेढ़ी मुस्कान बिखेरी। 'मैं हाल ही में सुबीर दत्ता से मिला था। उन्होंने मुझे फोन किया था, इसलिए मैं आया। मैं आपके काम में दखल नहीं दूंगा—मैं वादा करता हूँ। उनकी हत्या कैसे हुई?'
‘सिर पर वार किया गया। एक नहीं, बल्कि तीन बार—जब वह सो रहा था। शव को पोस्टमार्टम के लिए ले जाया जा रहा है। डॉ. सरकार इसे पहले ही देख चुके हैं। यह घटना कल रात दो से तीन बजे के बीच हुई।’

‘क्या आपको पीड़ित के बारे में कुछ पता चला?’
‘संदिग्ध व्यक्ति। लगता है वो जाने ही वाला था। उसने अपना सामान पैक करना शुरू कर दिया था!’
क्या कोई पैसा चोरी हुआ था?
मुझे ऐसा नहीं लगता। बेडसाइड टेबल पर एक बटुआ पड़ा है, जिसमें करीब तीन सौ रुपये हैं। शायद वह घर में ज्यादा नकदी नहीं रखता था। लेकिन हमें उसकी बैंक पासबुक, चेक बुक या कुछ भी नहीं मिला। उसके तकिए के पास एक सोने की घड़ी पड़ी थी। ध्यान रहे, हमने अभी तक पूरी तरह से तलाशी नहीं ली है। हम अभी लेंगे। लेकिन, अब तक जो मिला है, उससे हमें उस असली आदमी के बारे में कुछ भी पता नहीं चला है।
तब तक सुबीर दत्ता भी हमारे साथ आ चुके थे। उन्होंने बख्शी की ओर देखकर कहा, 'सुखवानी बहुत हंगामा कर रहा है। वह कहता है कि उसकी डलहौजी स्क्वायर में एक बहुत महत्वपूर्ण मुलाकात है। लेकिन मैंने उसे बता दिया है कि जब तक पुलिस पूछताछ पूरी नहीं कर लेती, तब तक कोई भी घर से बाहर नहीं निकल सकता।' 'हां, आपने सही काम किया। लेकिन फिर, हम हर किसी से पूछताछ करेंगे, यहां तक कि आपसे भी।'
बख्शी बोलते समय मुस्कुराए। सुबीर दत्ता ने स्थिति की जानकारी जताते हुए सिर हिलाया। उन्होंने कहा, 'मेरे भाई, तुम जितने कम सवाल पूछोगे, उतना ही अच्छा होगा।'
बख्शी ने कहा, 'स्वाभाविक रूप से।'
‘क्या मैं कमरा देख सकता हूँ?’ फेलुदा ने पूछा।
'निश्चित रूप से।'
बख्शी फेलुदा के साथ आगे बढ़ा, मैं उसके पीछे-पीछे गया। दस्तूर के बैठक कक्ष में कदम रखने से ठीक पहले, फेलुदा ने श्री दत्ता की ओर मुड़कर कहा, 'वैसे, आपका बेटा कल मेरे घर आया था।'
‘कब?’ श्री दत्ता काफी आश्चर्यचकित लग रहे थे।
फेलुदा ने जल्दी से समझाया। 'क्या वह कल रात घर लौटा था?'
श्री दत्ता ने जवाब दिया, 'अगर वह आया भी होता, तो मैंने उसे अंदर आते हुए नहीं सुना। मैंने उसे आज सुबह नहीं देखा।'
‘कम से कम अब हमें पता चल गया है कि आपका बेटा और उसके दोस्त कहाँ हैं। उस होटल की बदनामी है। उस पर दो बार छापा पड़ चुका है,’ इंस्पेक्टर बख्शी ने हमें बताया।
कमरा बिल्कुल अलग दिख रहा था। पिछली रात पूरी तरह अंधेरा था। आज सुबह खिड़कियों से तेज धूप अंदर आ रही थी और सोफे व फर्श पर पड़ रही थी। मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि ऐशट्रे में चारमीनार सिगरेट का पुराना टुकड़ा अभी भी पड़ा हुआ था। कमरे में दो कांस्टेबल तैनात थे; और फोटोग्राफर अपना काम खत्म करके अपना सामान समेट रहा था।
हत्या शयनकक्ष में हुई थी। फेलुदा और बख्शी अंदर गए। मैं दहलीज तक गया और सफेद चादर से ढके शव की एक झलक देखी। एक कांस्टेबल कमरे की तलाशी ले रहा था। फर्श पर एक खुला हुआ सूटकेस पड़ा था, जिसमें कुछ कपड़े तह करके रखे हुए

थे। सूटकेस के बगल में दस्तूर का नया ब्रीफकेस रखा था, जिसे मैंने उसे पिछले दिन ले जाते हुए देखा था।
मैं लिविंग रूम में वापस आया और अगले तीन मिनट तक बस फर्नीचर को घूरता रहा।
मुझे पता था कि मुझे किसी भी चीज़ को छूना नहीं चाहिए। इसके अलावा, दोनों कांस्टेबल मुझे घूर रहे थे।
‘चलो, टॉपशे!’
फेलुदा शयनकक्ष से बाहर निकला था।
‘क्या आप कुछ समय के लिए यहीं रहने वाले हैं?’ बख्शी ने पूछा।
'जी हां, मैं जाकर बूढ़े श्री दत्ता से मिलूंगा। अगर आपको कुछ दिलचस्प पता चले तो मुझे बता देना।'
सुबीर दत्ता ऊपर इंतजार कर रहे थे। वे हमें अपने भाई के कमरे में ले गए। निहार दत्ता अपनी आरामकुर्सी पर लेटे हुए थे। उन्होंने काले रंग का चश्मा पहना हुआ था और उनकी छड़ी उनके बिस्तर पर पड़ी थी। अब तक मैंने उन्हें छड़ी हाथ में पकड़े हुए ही देखा था, इसलिए मुझे यह एहसास नहीं हुआ था कि उसका हैंडल चांदी का है। उस पर एक डिज़ाइन खुदा हुआ था और उसके बीच में जी बी डी अक्षर लिखे थे। यह छड़ी कभी उनके दादा, गोलक बिहारी दत्ता की रही होगी। हमारे आने की सूचना मिलते ही उन्होंने अपना सिर थोड़ा सा उठाया और कहा, 'हाँ, मैंने उनके कदमों की आहट सुनी। आवाज़ और स्पर्श... केवल इन्हीं दो चीज़ों ने मुझे बीस साल तक ज़िंदा रहने में मदद की है। और मेरे पास यादें हैं... उन विचारों की जो हो सकते थे। कुछ लोग कहते हैं कि यह महज़ मेरा दुर्भाग्य था। मैं जानता हूँ कि इसका भाग्य या किस्मत से कोई लेना-देना नहीं था। आपने उस दिन मुझसे पूछा था, श्री मिटर, कि क्या विस्फोट लापरवाही का नतीजा था। आज मैं आपको साफ़-साफ़ बता सकता हूँ कि यह सब मेरी मेहनत को बर्बाद करने के लिए रचा गया था। ईर्ष्या कुछ लोगों को हद से ज़्यादा नीच बना देती है। एक जासूस होने के नाते, मुझे यकीन है कि आप इसे समझ सकते हैं।' श्री दत्ता रुक गए। फेलुदा ने कहा, 'आपका मतलब है कि आपको लगता है कि विस्फोट के लिए सुप्रकाश चौधरी जिम्मेदार थे?'
‘किसी बंगाली का सबसे बड़ा दुश्मन उसका अपना ही बंगाली हो सकता है। आप इस बात पर यकीन कर सकते हैं, है ना?’
फेलुदा लगातार काले चश्मों को घूर रहा था। निहार दत्ता मानो जवाब का इंतज़ार कर रहा था।
‘क्या आपने कभी किसी और से भी इसी तरह इस बारे में बात की है?’
नहीं, बिलकुल नहीं। जब मैं अस्पताल में होश में आई, तो सबसे पहले यही बात मेरे दिमाग में आई। लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। भला इससे क्या फायदा होता? नुकसान तो हो ही चुका था। अगर दोषी को सज़ा भी मिल जाती, तो भी मेरी आँखों की रोशनी वापस नहीं आती और न ही मेरा शोध पूरा होता।
लेकिन इससे सुप्रकाश चौधरी को क्या फायदा हुआ? क्या उसे लगा कि वह आपके कागजात चुराकर, अकेले ही शोध पूरा कर लेगा और अपना नाम कमा लेगा?
'हां, उसने यही सोचा होगा। लेकिन वह गलत था। मैंने आपको पहले ही बता दिया है, श्रीमान मिटर। मेरी मदद के बिना वह कहीं भी नहीं पहुंच सकता था।'

हम बिस्तर पर बैठे थे। फेलुदा गहरी सोच में डूबा हुआ था। रणजीत बनर्जी कमरे में आए और मेज के पास खड़े थे। सुबीर दत्ता शायद किसी काम से कमरे से बाहर चले गए थे।
फेलुदा ने कहा, ‘मुझे पैसों के बारे में पक्का पता नहीं है। शायद पुलिस के लिए उन्हें बरामद करना आसान होगा। लेकिन मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी मौजूदगी में ही वे सभी कीमती कागजात चोरी हो जाएं! मैं उन्हें वापस पाने के लिए हर संभव कोशिश करूंगा।’
आप अपनी इच्छानुसार कुछ भी कर सकते हैं।
इसके तुरंत बाद हम वहां से निकल गए। पुलिस अभी भी सभी से पूछताछ कर रही थी। बख्शी ने फेलुदा को फोन करके अपनी जांच के नतीजे बताने का वादा किया। ‘मुझे न्यू कोरिंथियन लॉज के बारे में बताना मत भूलना!’ फेलुदा ने उसे याद दिलाया।
*

हम साढ़े दस बजे घर लौटे। फेलूदा ने बाकी की सुबह अपने कमरे में इधर-उधर घूमते हुए बिताई, कभी रुकता, कभी बैठता, कभी लेटता, कभी भौंहें चढ़ाता, कभी सिर हिलाता, कभी खुद से कुछ बुदबुदाता और कभी आहें भरता। ज़ाहिर है, उसके मन में कई सवाल, शंकाएँ और आशंकाएँ उमड़ रही थीं। फिर अचानक, वह मेरी ओर मुड़ा और बोला, 'क्या तुम्हें गोलोक लॉज के भूतल का सामान्य लेआउट याद है?' मैंने एक पल सोचा और फिर कहा, 'हां, मुझे ऐसा ही लगता है।'
‘कोई सुखवानी के फ्लैट से दस्तूर के फ्लैट तक कैसे जाएगा?’
मैंने फिर सोचा। 'जहां तक मुझे याद है, दोनों फ्लैटों के पास से घर के अंदरूनी हिस्से की ओर जाने वाले रास्ते के बीच में एक दरवाजा है। शायद वह बंद ही रहता है। लेकिन अगर वह खुला भी हो, तो कोई भी आसानी से उस दरवाजे से निकलकर एक फ्लैट से दूसरे फ्लैट में जा सकता है।'
'ठीक है। मौजूदा स्थिति में, अगर सुखवानी दस्तूर से मिलने जाना चाहता, तो उसे बगीचे का चक्कर लगाना पड़ता, परिसर की दीवार और घर के बीच के रास्ते से चलकर सीधे सामने के दरवाजे पर आना पड़ता और वहीं से प्रवेश मिलता।'
लेकिन घर के सामने वाले फोल्डेबल गेट का क्या होगा? क्या वह आधी रात को खुला रहेगा?
'नही बिल्कुल नही।'
फिर वह दोबारा इधर-उधर घूमने लगा और धीमी आवाज़ में बुदबुदाने लगा, 'X Y Z... X Y Z... X शोध है, Y पैसा है और Z हत्या है। हमें यह पता लगाना है कि क्या ये तीनों एक ही सूत्र से जुड़े हैं या अलग-अलग हैं।'
जब वह अभी भी कुछ बुदबुदा ही रहा था, तो मैं खुद को रोक नहीं पाई और बोली, 'फेलुदा, क्या तुम जानते हो कि मैं क्या सोचती हूँ? मुझे लगता है कि सुप्रकाश चौधरी दस्तूर का वेश बदलकर निहार दत्ता के घर में रहने आया था।' मुझे आश्चर्य हुआ कि फेलुदा ने इस विचार को खारिज नहीं किया। इसके विपरीत, उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, 'ऐसा विचार तो मेरे मन में पहले ही आ चुका है, लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि तुम भी इस मामले में पीछे नहीं हो। अगर दस्तूर, सुप्रकाश का भेष था, तो शायद वह शोध पत्र चुराने के लिए ही वहाँ गया था। लेकिन सवाल यह है कि अगर उसने लिफाफा चुराया, तो वह कहाँ गया? और

वैसे भी, वह खुद उसे कैसे चुरा सकता था? वह तो कभी पहली मंजिल पर गया ही नहीं था!'
मेरे पास इसका जवाब था। सच में, मैं काफी चालाक हो गया था। 'दस्तूर को कहीं जाने की क्या ज़रूरत थी? मान लो कि वह शंकर के साथ मिला हुआ था? शंकर वह लिफाफा चुराकर दस्तूर को दे सकता था और इसके लिए उसे पैसे मिल सकते थे!' ‘बहुत बढ़िया!’ फेलुदा ने कहा। ‘आखिरकार तुम मेरे एक योग्य सहायक बन गए। लेकिन इससे हत्या का रहस्य अभी तक सुलझा नहीं है।’
‘रणजीत बनर्जी को यह पता चल सकता था कि दस्तूर और सुप्रकाश एक ही व्यक्ति हैं। श्री बनर्जी श्री दत्ता के इतिहास से परिचित हैं और उनका बहुत सम्मान करते हैं। तो क्या यह संभव नहीं है कि वे उस व्यक्ति को मारना चाहें जिसने श्री दत्ता के वैज्ञानिक करियर को बर्बाद कर दिया?’
फेलुदा ने सिर हिलाया। 'नहीं। हत्या इतनी आसान बात नहीं है, टॉपशे। बनर्जी का मकसद इतना मजबूत नहीं हो सकता। यह बड़े अफसोस की बात है कि पुलिस को दस्तूर के कमरे में अभी तक कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला है। वह जाहिर तौर पर बहुत सतर्क व्यक्ति था।'
‘तुम्हें पता है मैं क्या महसूस करता हूँ, फेलुदा?’
फेलुदा टहलना बंद करके मेरी तरफ देखने लगा। मैंने कहा, 'अगर पुलिस की जगह तुमने कमरे की तलाशी ली होती, तो तुम्हें कई सुराग मिल जाते।'
‘अह। आपको ऐसा लगता है?’
मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि फेलुदा का आत्मविश्वास कम हो जाएगा। लेकिन जिस तरह से उसने कहा, 'क्या तुम्हें ऐसा लगता है?', उससे यही आशय निकला। उसके बाद उसने जो कहा, उससे मेरा दिल और भी बैठ गया।
'मुझे संदेह है कि इतनी गर्मी और इतनी बार बिजली कटौती के बावजूद आइंस्टीन का दिमाग भी काम कर पाता।'
इंस्पेक्टर बख्शी ने हमें करीब दो बजे फोन किया। उन्हें दस्तूर के जूते की एड़ी में एक गुप्त डिब्बा मिला था। वह डिब्बा लगभग सत्रह हजार रुपये के अमेरिकी डॉलर और जर्मन मार्क से भरा हुआ था। हालांकि, उन्हें कोई ऐसा कागज़ या दस्तावेज़ नहीं मिला जिससे उस आदमी की पहचान हो सके। दस्तूर को जानने वाला कोई नया इलेक्ट्रॉनिक्स स्टोर भी नहीं मिला; न ही उसके दोस्त का पता चल पाया था। फ्लैट में लगभग कोई चिट्ठी नहीं थी। उन्हें जो एकमात्र निजी चिट्ठी मिली थी, वह अर्जेंटीना से लिखी गई थी। इससे बस इतना पता चलता है कि दस्तूर ने कुछ समय दक्षिण अमेरिका में बिताया था।
बख्शी ने हमें जो दूसरी खबर दी, वह यह थी कि उन्होंने शंकर की तस्वीर न्यू कोरिंथियन लॉज के मैनेजर को दिखाई थी। मैनेजर ने उसे पहचान लिया और पुलिस को बताया कि शंकर और उसके दोस्तों ने उसके होटल में एक कमरा किराए पर लिया था और पिछली रात शराब पीते और ताश खेलते हुए बिताई थी। उन्होंने सुबह बिल चुकाया और चले गए। बख्शी के अनुसार, शंकर की गिरफ्तारी में 'कुछ ही मिनट' लगे।
फेलुदा ने बख्शी की बात सुनी, फोन नीचे रखा और कहा, 'अगर शंकर दत्ता ने चोरी के पैसों में से कुछ अपने होटल का बिल चुकाने में इस्तेमाल किया होता, तो यह वाकई बहुत सुविधाजनक होता। खैर, कम से कम इससे यह साबित होता है कि वह

दस्तूर का हत्यारा नहीं हो सकता था। उसके पास पुख्ता सबूत है कि वह कहीं और था।'
मैंने कुछ समय पहले ‘एलिबी’ शब्द का अर्थ सीखा था। लेकिन पहले तो मुझे समझ नहीं आया कि जो लोग इसे नहीं जानते, उन्हें कैसे समझाऊं। जब मैंने फेलुदा से पूछा, तो उन्होंने बस इतना कहा, ‘शब्दकोश में जो लिखा है, वही लिख दो।’ तो एलिबी का मतलब है ‘यह दलील देना कि अपराध होने के समय आरोपी कहीं और था’। दूसरे शब्दों में, शंकर बहुत आसानी से कह सकता था, ‘जब हत्या हुई, मैं अपने दोस्तों के साथ होटल में ताश खेल रहा था!’
बख्शी के फोन के बाद भी फेलुदा बेचैन रहे। करीब तीन बजे मैंने देखा कि उन्होंने कपड़े बदल लिए थे और बाहर जाने के लिए तैयार थे। उन्होंने कहा कि उन्हें कुछ जानकारी लेनी है। जब वे लौटे तब तक साढ़े चार बज चुके थे। इस दौरान मैंने महाभारत पढ़ी और लगभग पूरी कर ली।
मैं वह हिस्सा पढ़ रहा था जिसमें पांडव अपनी अंतिम यात्रा पर एक-एक करके गिरने लगते हैं—और अर्जुन भी गिरने ही वाले थे—तभी अचानक फोन की घंटी बजी। मैंने फोन उठाया। सुबीर दत्ता का फोन था, जो फेलुदा के बारे में पूछ रहे थे। फेलुदा ने अपने कमरे में एक्सटेंशन उठाया। मैंने बैठक में फोन पर कान लगाया और पूरी बातचीत सुनी।
'नमस्ते।'
‘श्री मिटर?’
'हाँ?'
‘मेरे भाई के शोध पत्रों वाला सीलबंद लिफाफा मिल गया है।’
‘श्री दस्तूर के कमरे में?’
'जी हां, बिल्कुल सही। इसे बिस्तर के नीचे वाले हिस्से पर सेलोटेप से चिपकाया गया था। लेकिन एक तरफ से टेप निकल गया और यह लटकने लगा। हमारे नौकर भागीरथ ने इसे पाया।'
क्या तुम्हारे भाई को इसके बारे में पता है?
'हां। लेकिन वह बहुत उदास लग रहा है—उसे किसी भी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं है। आज वह एक बार भी अपनी कुर्सी से नहीं उठा। मैंने अपने पारिवारिक चिकित्सक से उसे देखने के लिए कहा है।'
‘आपके बेटे के बारे में कोई खबर है?’
जी हां। जीटी रोड के पास पूरे गिरोह को गिरफ्तार कर लिया गया है।
और चोरी का पैसा?
नहीं, वह नहीं मिला। शायद उन्होंने उसे कहीं और सुरक्षित रख दिया हो। लेकिन शंकर पूरी बात से इनकार कर रहा है—कहता है कि चोरी से उसका कोई लेना-देना नहीं था।
पुलिस इस हत्या के बारे में क्या कहती है?
उन्हें सुखवानी पर शक है। इसके अलावा, उन्हें एक नया सुराग मिला है। दस्तूर की खिड़की के बाहर कागज का एक मुड़ा हुआ टुकड़ा पड़ा था।
‘क्या इसमें कुछ लिखा था?’
'यह सिर्फ एक पंक्ति की चेतावनी थी: आप जानते हैं कि अत्यधिक जिज्ञासा क्या कर सकती है।'

‘इस सब के बारे में सुखवानी का क्या कहना है?’
‘वह हर बात से इनकार कर रहा है। यह सच है कि उसके फ्लैट से दस्तूर के फ्लैट तक नहीं पहुंचा जा सकता, लेकिन एक भाड़े का हत्यारा आसानी से पहली मंजिल तक चढ़ सकता था, फिर सीढ़ियों से नीचे उतरकर दस्तूर की हत्या कर सकता था।’ ‘हम्म… ठीक है, मैं तुम्हारे घर आऊंगा।’
फेलुदा ने रिसीवर वापस रख दिया। तभी मैंने उसे खुद से बड़बड़ाते हुए सुना: 'X और Y एक ही हैं। अब हमें Z के बारे में पता लगाना है।' एक पल बाद, उसने मुझे पुकारा, 'गंतव्य है गोलॉक लॉज। तैयार हो जाओ, टॉपशे!'

चार
‘क्या तुम जा रहे हो?’
जब हम गोलक लॉज पहुंचे तो रणजीत बनर्जी मुख्य द्वार की ओर जा रहे थे। बाहर एक कांस्टेबल तैनात था, इसलिए जाहिर था कि पुलिस घर पर नजर रख रही थी।
‘जी हां,’ श्री बनर्जी ने उत्तर दिया। ‘श्री दत्ता ने मुझे बताया था कि आज मेरी आवश्यकता नहीं होगी।’
'वह कैसा है?'
डॉक्टर ने उनकी जांच की है। उन्होंने बताया कि हाल ही में इतनी सारी घटनाएं घटी हैं कि श्री दत्ता सदमे में हैं। उनका रक्तचाप ऊपर-नीचे हो रहा है।
क्या वह लोगों से बात कर रहा है?
‘ओह जी हाँ, जी हाँ!’ श्री बनर्जी ने आश्वस्त करते हुए कहा।
मैं दस्तूर के कमरे में मिले लिफाफे को देखना चाहता हूँ। क्या आप कृपया घर वापस आ सकते हैं, अगर आपको बहुत जल्दी नहीं है? क्या वह लिफाफा अब तिजोरी में वापस रख दिया गया है?
'हाँ।'
‘मैं आपको ज्यादा देर तक नहीं रोकूंगा—वादा! मुझे नहीं लगता कि मैं दोबारा इस घर में आऊंगा।’
‘लेकिन... लिफाफा तो सीलबंद है!’ श्री बनर्जी ने थोड़ी अनिश्चितता से कहा। ‘मैं बस इसे अपने हाथ में पकड़ना चाहता हूँ,’ फेलुदा ने जवाब दिया।
श्री बनर्जी ने आगे कोई आपत्ति नहीं जताई।
घर में पिछले दिनों की तरह ही अंधेरा छाया हुआ था। बिजली रात दस बजे तक नहीं आएगी। अभी केवल सवा छह बजे थे। पहली मंजिल के गलियारे और सीढ़ियों पर मिट्टी के तेल के लैंप जल रहे थे। लेकिन उनसे कोने-कोने में छाए अंधेरे को दूर करने में कोई मदद नहीं मिल रही थी।
श्री बनर्जी हमें बैठक कक्ष में ले गए और सुबीर दत्ता को सूचित करने चले गए। कमरे से निकलने से पहले उन्होंने हमें बताया कि यदि निहार दत्ता लिफाफा बाहर निकालने पर आपत्ति जताते हैं, तो उसे किसी को नहीं दिखाया जा सकता।
'यह तो कहने की जरूरत ही नहीं है,' फेलुदा ने उससे कहा।
सुबीर दत्ता काफी थके हुए लग रहे थे। उन्होंने बताया कि सारा दिन उन्होंने पत्रकारों को दूर रखने में बिताया। “अच्छी बात सिर्फ यह है कि इस पूरे मामले ने सबको मेरे भाई की याद दिला दी है। लोग तो उसका नाम लगभग भूल ही गए थे!”

श्री बनर्जी एक मिनट बाद एक लंबा सफेद लिफाफा लेकर लौटे। 'श्री दत्ता को कोई आपत्ति नहीं थी... क्योंकि मैंने आपका नाम लिया था। वह किसी और को अपने कागजात देखने की अनुमति नहीं देते।'
‘अद्भुत!’ फेलुदा ने केरोसिन लैंप की रोशनी में लिफाफे को ध्यान से देखते हुए कहा। मुझे तो वह एक साधारण लंबा लिफाफा ही लग रहा था। एक तरफ लाल मुहर लगी थी; और दूसरी तरफ, नीचे बाईं ओर, ‘बायोकेमिस्ट्री विभाग, मिशिगन विश्वविद्यालय, मिशिगन, यूएसए’ लिखा था। इसमें ऐसा क्या अद्भुत था? श्री दत्ता और श्री बनर्जी मंद रोशनी वाले कमरे में सोफे पर बैठे थे। शायद वे भी उतने ही असमंजस में थे।
फेलुदा अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गया, अब भी लिफाफे को घूर रहा था। फिर उसने बाकी दोनों आदमियों को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया और सिर्फ मुझसे बात करने लगा। उसकी आवाज़ किसी स्कूल टीचर जैसी थी। दरअसल, उसने पहले भी कई बार मुझे अलग-अलग विषयों पर जानकारी देने के लिए इसी लहजे का इस्तेमाल किया था।
‘देखो, टॉपशे, अंग्रेज़ी फ़ॉन्ट एक असाधारण चीज़ है। बंगाली में दस या बारह अलग-अलग फ़ॉन्ट हैं; अंग्रेज़ी में दो हज़ार। एक बार मुझे एक मामले की जाँच करते समय इस विषय पर काफ़ी अध्ययन करना पड़ा था। हर फ़ॉन्ट एक विशेष समूह से संबंधित होता है, और हर समूह का एक विशेष नाम होता है। उदाहरण के लिए, यहाँ इस फ़ॉन्ट को गैरामंड कहते हैं,’ फेलुदा ने लिफ़ाफ़े पर छपे शब्दों की ओर इशारा करते हुए कहा। फिर उन्होंने आगे बताया, ‘गैरामंड का आविष्कार सोलहवीं शताब्दी में फ़्रांस में हुआ था। फिर इसका इस्तेमाल पूरी दुनिया में होने लगा। इंग्लैंड, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड और अमेरिका जैसे देशों ने न सिर्फ़ इस फ़ॉन्ट का इस्तेमाल किया, बल्कि अपनी फ़ैक्टरियों में इसके लिए ज़रूरी सांचे भी बनाए। अब तो भारत भी ऐसा करने लगा है। मज़े की बात यह है कि अगर आप ध्यान से देखें, तो आपको हमेशा एक देश और दूसरे देश में इस्तेमाल होने वाले गैरामंड में थोड़ा-सा अंतर नज़र आएगा। कुछ अक्षरों की बनावट से ही यह अंतर पता चल जाता है। उदाहरण के लिए, इस लिफ़ाफ़े पर लिखे अक्षर अमेरिकी गैरामंड होने चाहिए थे। लेकिन ये भारतीय गैरामंड बन गए हैं। असल में, आप इसे कलकत्ता गैरामंड भी कह सकते हैं!’
कमरे में सन्नाटा तनाव से भर गया। फेलुदा की निगाहें अब रणजीत बनर्जी के चेहरे पर टिकी थीं। मैंने लंदन के मैडम तुसाद संग्रहालय में मशहूर हस्तियों की मोम की मूर्तियों की तस्वीरें देखी थीं। आँखों को छोड़कर हर एक अंग बिल्कुल सजीव लगता था। केवल कांच की आँखें ही इस बात का संकेत थीं कि वे मूर्तियाँ निर्जीव थीं। रणजीत बनर्जी जीवित थे, लेकिन उनकी आँखें भावहीन थीं। वे मोम की मूर्तियों की आँखों से बहुत मिलती-जुलती थीं। 'कृपया बुरा न मानें, श्रीमान बनर्जी, मुझे यह लिफाफा खोलना अपना कर्तव्य लगता है!'
रणजीत बनर्जी ने अपना दाहिना हाथ ऐसे उठाया मानो वह फेलुदा को रोकना चाहते हों, लेकिन लगभग तुरंत ही उसे नीचे गिरा दिया।

उन्हें लगता था कि आपको प्रथम श्रेणी की डिग्री मिल जाती। आपने अपनी पढ़ाई क्यों छोड़ दी और अचानक यहाँ सचिव की नौकरी क्यों कर ली? क्या नोबेल पुरस्कार पाने का कोई शॉर्टकट था? क्या यही बात आपको लुभा रही थी?
भय, शर्म और पश्चाताप के मिले-जुले भावों ने रणजीत बनर्जी को पूरी तरह से अवाक कर दिया। मैं देख सकता था कि मेरी ही तरह फेलुदा को भी उस आदमी के लिए बहुत दुख हो रहा था।
‘अब आप घर जा सकते हैं, लेकिन आपको तुरंत पैसे और कागजात लेकर वापस आना होगा। हम कल तक इंतजार नहीं कर सकते। अगर आप एक पल भी रुकें, तो मैं आपके साथ एक कांस्टेबल को भेजने का इंतजाम कर दूंगा। इतनी बड़ी रकम लेकर यात्रा करना बुद्धिमानी नहीं होगी।’
Ranajit Banerjee nodded, like an obedient child.
सुबीर दत्ता ने अपने बेटे के बारे में जो कुछ भी बताया था, उसके बावजूद यह खबर कि वह चोर नहीं था, उनके लिए बड़ी राहत की बात रही होगी। कम से कम उनके चेहरे के भाव और उनकी आवाज़ से तो यही लगता था।
‘क्या तुम मेरे भाई से मिलने जाओगे?’ उसने पूछा।
‘बिल्कुल,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘मैं वास्तव में इसीलिए यहाँ आया हूँ।’ हम सुबीर दत्ता के पीछे-पीछे उसके भाई के कमरे में गए।
‘तो आप यहाँ हैं?’ निहार दत्ता ने अपनी कुर्सी पर आराम से बैठे हुए पूछा। ‘जी हाँ, महोदय। मैंने सुना है कि आपके शोध पत्र मिल गए हैं। आपको काफी राहत महसूस हो रही होगी?’
श्री दत्ता की आवाज़ धीमी और हताश थी, “अब उनका मेरे लिए कोई महत्व नहीं है।” मुझे यह बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि कोई व्यक्ति एक ही दिन में इतना पीला पड़ सकता है। एक दिन पहले तक तो वह काफी तंदुरुस्त दिख रहे थे। 'शायद नहीं। लेकिन वे अब भी हमारे लिए, इस दुनिया के कई वैज्ञानिकों के लिए बहुत मूल्यवान हैं,' फेलुदा ने कहा।
'तुम कहते हो तो।'
मैं आपसे बस एक और सवाल पूछना चाहता हूँ। उसके बाद, मैं वादा करता हूँ कि मैं आपको फिर कभी परेशान नहीं करूँगा।
निहार दत्ता के होठों पर एक पतली, मुरझाई हुई मुस्कान आई। 'मुझे परेशान करोगे? नहीं, श्रीमान, अब मुझे कोई परेशान नहीं कर सकता।'
तो फिर, मेरा सवाल यह है। कल मैंने आपकी मेज पर दस नींद की गोलियां देखी थीं। अभी भी दस गोलियां वहीं पड़ी हैं। क्या इसका मतलब यह है कि आपने कल रात कोई गोली नहीं ली?
नहीं, मैंने नहीं किया। लेकिन आज रात मैं करूँगा।
'धन्यवाद। अब हम चलते हैं।'
'इंतज़ार!'
निहार दत्ता ने फेलुदा को अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाया। फेलुदा ने उसे थाम लिया। दोनों ने बड़े स्नेह से हाथ मिलाया। श्री दत्ता ने कहा, 'आप समझ जाएंगे। आपके पास एक विशेष दृष्टि है।'
*

घर लौटने के बाद भी फेलुदा शांत और गुमसुम लग रही थी। लेकिन मैं अब और अंधेरे में रहने को तैयार नहीं थी। मैंने कहा, 'तुम्हें मुझे सब कुछ बताना होगा! बात को घुमा-फिराकर मत कहो।'
मेरे सवाल के जवाब में, फेलुदा ने अचानक रामायण का जिक्र किया। यह उनका कहानी में और अधिक सस्पेंस जोड़ने का तरीका था—मुझे कभी समझ नहीं आया कि उन्होंने ऐसा क्यों किया।
“दशरथ द्वारा राम को वनवास भेजे जाने के छह दिन बाद, उन्हें याद आया कि एक युवा राजकुमार के रूप में उन्होंने एक अपराध किया था। यही कारण था कि वे अपने बुढ़ापे में इतना कष्ट भोग रहे थे। क्या आपको याद है कि वह अपराध क्या था?”
मैंने रामायण को काफी समय पहले पढ़ा था, लेकिन मुझे वह विशेष कहानी याद थी। एक अंधे ऋषि जंगल में रहते थे। एक रात उनका बेटा नदी से अपना घड़ा भर रहा था। दशरथ ने दूर से वह आवाज़ सुनी और सोचा कि कोई हाथी पानी पी रहा है। उन्होंने अपना एक विशेष बाण चलाया जो किसी भी ध्वनि के स्रोत पर लग सकता था। बाण ने अपना निशाना साधा और उस लड़के को मार डाला।
‘अच्छा। दशरथ के पास यह शक्ति थी कि वे केवल ध्वनि सुनकर ही लक्ष्य तक पहुँच सकते थे, चाहे अंधेरा हो और उन्हें कुछ दिखाई न दे रहा हो। निहार दत्ता भी ऐसा ही कर सकते थे।’
‘निहार दत्ता?’ यह सुनकर मैं लगभग अपनी कुर्सी से गिर ही गया।
जी हाँ, महोदय। उन्होंने नींद की गोली नहीं ली क्योंकि उन्हें पता था कि उन्हें रात भर जागते और सतर्क रहना होगा। जब बाकी सब सो गए, तो वे नंगे पैर सीढ़ियों से नीचे उतरे और दस्तूर—या, अगर आप चाहें तो, सुप्रकाश के कमरे— के पास गए। उनका भतीजा कभी उस कमरे का इस्तेमाल करता था। इसलिए उन्हें उसका लेआउट पता था। उनके हाथ में एक हथियार था—एक मजबूत छड़ी जिसका हैंडल ठोस चांदी का था। वे बिस्तर के पास गए और एक बार नहीं बल्कि तीन बार वार किया!
‘लेकिन…लेकिन…’ मैं पूरी तरह से उलझन में पड़ गया। आखिर फेलुदा किस बारे में बात कर रहा था? श्री दत्ता तो अंधे थे, भगवान के लिए!
‘क्या तुम्हें कुछ याद नहीं आ रहा?’ फेलुदा थोड़ा अधीर लग रहा था। ‘सुखवानी ने दस्तूर के बारे में क्या कहा था?’
मुझे अचानक याद आ गया। 'दस्तूर बहुत जोर से खर्राटे लेता था!'
‘बिल्कुल सही। इसका मतलब है कि निहार दत्ता को पता चल जाता था कि दस्तूर का सिर तकिए पर कहाँ रखा है, वह करवट बदल रहा है या नहीं—सब कुछ। दत्ता जैसे तेज़ कानों वाले व्यक्ति के लिए किसी और विवरण की आवश्यकता नहीं थी। अगर एक वार काफी नहीं था, तो तीन वार तो निश्चित रूप से काफी थे।’
कुछ क्षणों की सन्नाटे भरी खामोशी के बाद, मैंने धीरे से कहा, 'क्या यही अधूरा काम था? बदला?'
'हाँ। बदला लेने की इच्छा अपार ऊर्जा उत्पन्न कर सकती है, भले ही व्यक्ति अंधा हो। इसी इच्छा ने उसे अब तक जीवित रखा था। अब वह मृत्यु के बहुत करीब है... और कोई उसे छू नहीं सकता, यहाँ तक कि कानून भी नहीं।'
*

निहार रंजन दत्ता सत्रह दिन और जीवित रहे। मरने से ठीक पहले उन्होंने वसीयत बनाई और अपने सभी शोध पत्र और बचत अपने भरोसेमंद और प्रतिभाशाली सचिव रणजीत बनर्जी को सौंप दिए।

काठमांडू के अपराधी

एक
लालमोहन बाबू उर्फ जटायु ने प्रशंसा भरे लहजे में कहा, 'इस देश में कहीं भी आपको हमारे नए बाजार जैसा बाजार नहीं मिलेगा!'
मैं और फेलुदा पूरी तरह सहमत थे। कुछ समय पहले, इसे गिराकर इसकी जगह एक आधुनिक बहुमंजिला सुपरमार्केट बनाने की बात चल रही थी। इससे फेलुदा बहुत परेशान हो गए थे।
मैंने उसे गुस्से में कहते सुना, ‘क्या उन्हें यह एहसास नहीं है कि अगर न्यू मार्केट को नष्ट कर दिया गया, तो इसका मतलब कलकत्ता की आत्मा का ही विनाश होगा? अगर वे ऐसा करते हैं, तो मुझे उम्मीद है कि नागरिक विरोध प्रदर्शन करने के लिए सड़कों पर उतरने से नहीं हिचकिचाएंगे!’ सौभाग्य से, प्रस्ताव रद्द कर दिया गया।
हम अब न्यू मार्केट के सामने खड़े थे, ग्लोब थिएटर में एप और सुपरएप देखकर। लालमोहन बाबू को अपनी टॉर्च के लिए बैटरी और बॉलपॉइंट पेन के लिए रिफिल चाहिए थी। फेलुदा को कालीमुद्दी की दुकान से दालमुट का एक पैकेट चाहिए था। इसके अलावा, लालमोहन बाबू पूरे बाजार का चक्कर लगाकर उसके कोने-कोने को देखना चाहते थे। उन्होंने मुझसे कहा, 'देखो, कल ही मुझे एक भूतिया कहानी का बहुत ही शानदार विचार आया, जो यहीं बाजार में घटित हो सकती है!'
हम सड़क पार करने के लिए वाहनों के बीच से होते हुए, अनगिनत निजी कारों और टैक्सियों के बीच से सावधानीपूर्वक रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े। लालमोहन बाबू ने मुझे अपनी कहानी का ब्यौरा देना शुरू किया। “देखिए, एक आदमी है, एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश। एक दिन, वह शाम को इस बाजार में आता है और कुछ घंटों बाद पाता है कि वह बाहर नहीं निकल सकता! सभी दुकानें बंद हैं, सभी बत्तियाँ बुझ चुकी हैं, और उसे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं मिल रहा है। हर अंधेरा गलियारा खाली है, सिवाय एक छोटी, संकरी गली में एक पुरानी पुरावशेष की दुकान के। उस दुकान में बस एक टिमटिमाती रोशनी है। वह आदमी मदद की उम्मीद में उस दुकान की ओर दौड़ता है। जैसे ही वह वहाँ पहुँचता है, अंधेरे से एक हाथ निकलता है। यह एक कंकाल का हाथ है, जिसके हाथ में खून से लथपथ खंजर है। यह एक हत्यारे का कंकाल है, जिसे न्यायाधीश ने कभी मौत की सजा सुनाई थी। वह अपना बदला लेने वापस आया है। न्यायाधीश अंधेरे गलियारों में अंधाधुंध दौड़ने लगता है, लेकिन कोई फायदा नहीं होता।” चाहे वह कितनी भी तेज़ी से दौड़े या कहीं भी चला जाए, उसे कंकाल का हाथ लगातार करीब आता हुआ दिखाई देता है... और करीब आता हुआ।
मैंने मन ही मन सोचा, बुरा नहीं है; इस तरह के विचार में निश्चित रूप से संभावनाएं थीं, हालांकि मुझे यकीन था कि सेवानिवृत्त न्यायाधीश के अंदर बंद हो जाने का एक विश्वसनीय स्पष्टीकरण देने के लिए भी उसे फेलुदा से मदद लेनी पड़ेगी।

अब तक हम बाजार में आ चुके थे। हमारे सामने बिजली के सामान बेचने वाली एक दुकान थी। लालमोहन बाबू वहां से अपनी बैटरी खरीद सकते थे और सामने वाली दुकान से अपने पेन के लिए रिफिल ले सकते थे।
डे इलेक्ट्रिकल्स के मालिक फेलुदा को जानते थे। उन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया। हमारे पीछे लगभग तुरंत ही एक और आदमी आया—लगभग चालीस वर्ष का, मध्यम कद का, सिर के बाल कम होते जा रहे थे, उसने सफेद कमीज और काली पतलून पहनी हुई थी। उसके हाथ में एक प्लास्टिक की थैली थी।
‘आप मिस्टर मिटर हैं, है ना?’ उसने पूछा।
'हाँ यह सही है।'
‘उस किताब की दुकान में एक आदमी ने आपकी ओर इशारा किया। उसने कहा, “प्रसिद्ध खोजी, प्रदोष मित्तर।” यह वाकई अजीब था क्योंकि मैं पिछले कुछ दिनों से आपके बारे में सोच रहा था।’
'में क्यों?'
उस आदमी ने गला साफ किया। क्या वह किसी वजह से घबराया हुआ था? उसने कहा, 'अगर आप मुझे आपसे मिलने की इजाजत दें तो मैं बाद में समझा दूंगा। क्या आप कल घर पर होंगे?'
'हां, लेकिन शाम 5 बजे के बाद ही।'
‘बहुत खूब। क्या मैं आपका पता जान सकता हूँ?’ उन्होंने अपनी जेब से एक नोटबुक और एक फाउंटेन पेन निकाला और फेलुदा को दे दिया। फेलुदा ने हमारा पता लिख लिया और नोटबुक व पेन उन्हें लौटा दिया। ‘माफ़ कीजिए,’ उन्होंने फेलुदा की उंगली को देखते हुए अफ़सोस जताया, जिस पर बैंगनी स्याही के हल्के धब्बे लगे थे। उनका पेन शायद लीक हो रहा था। ‘मेरा नाम बत्रा है,’ उन्होंने आगे कहा।
लालमोहन बाबू मटन रिफिल खरीदने गए थे। श्री बत्रा के जाते ही वे वापस लौटे। उन्होंने पूछा, ‘क्या आपको कोई ग्राहक मिल गया?’ फेलुदा मुस्कुराए, लेकिन कुछ नहीं बोले। हम तीनों बाहर आए और दालमुट की दुकान की ओर चलने लगे। लालमोहन बाबू ने एक लाल नोटबुक निकाली और उसमें कुछ लिखने लगे। इसका मतलब यह था कि जब भी वे कुछ लिखने के लिए रुकते, वे पीछे छूट जाते। फिर उन्हें हमारे साथ चलने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ना पड़ता। फेलुदा चुपचाप, सीधे आगे देखते हुए चल रहे थे, लेकिन मुझे पता था कि उनकी नज़रें और कान हर छोटी- बड़ी बात पर ध्यान दे रहे थे।
आज बाजार में बहुत भीड़ थी, शायद पूजा आने ही वाली थी। लालमोहन बाबू ने भीड़ के बारे में कुछ कहा। मुझे सिर्फ 'कॉस्मोपॉलिटन' शब्द ही सुनाई दिया, लेकिन मैं उनसे पूछ नहीं सका कि उन्होंने क्या कहा था, क्योंकि हम कालीमुदी की दुकान पर पहुँच गए थे। 'सलाम, बाबू,' उन्होंने कहा और हमारे लिए एक पैकेट बनाने लगे। उन्हें पता था कि हमें क्या चाहिए। मुझे उनका मसाला मिलाते हुए, पैकेट को धीरे से हिलाते हुए देखना बहुत अच्छा लगा। मुझे पता था कि इसके अंदर का मसाला लाजवाब होगा।
कुछ ही पलों में उसने अपना काम खत्म किया और पैकेट मुझे थमा दिया। फेलुदा ने अपना बटुआ निकालने के लिए जेब में हाथ डाला और एकदम सन्नाटा छा गया। आखिर हुआ क्या था? वो किसे घूर रहा था? क्या उसका बटुआ चोरी हो गया था?

मुझे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि यह क्या है। फेलुदा का बटुआ तो बिल्कुल सुरक्षित था, लेकिन वह अभी भी हमारे पास से गुज़रे उस आदमी को घूर रहा था, हमारी तरफ एक नज़र डाली, लेकिन पहचान का कोई संकेत नहीं दिया। वह बिल्कुल श्री बत्रा जैसा दिख रहा था।
‘जुड़वां बच्चे,’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा।
मुझे उसकी बात से सहमत होने का मन हुआ। केवल एक जैसे दिखने वाले जुड़वां ही इतनी आश्चर्यजनक समानता रख सकते थे। एकमात्र अंतर यह था कि इस व्यक्ति ने गहरे नीले रंग की कमीज पहनी हुई थी। और, ज़ाहिर है, ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि वह फेलुदा को जानता हो।
‘इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, सच में,’ फेलुदा ने टिप्पणी की। ‘अगर श्री बत्रा का जुड़वा भाई है तो क्या हुआ? दर्जनों लोगों के जुड़वा भाई होते हैं!’
‘नहीं महोदय,’ लालमोहन बाबू ने अत्यंत दृढ़ता से कहा, ‘यदि किसी पर्वत की चोटी बर्फ से ढकी न हो, तो मैं उसे पर्वत कहता ही नहीं।’
अगली शाम वह हमारे बैठक कक्ष में बैठे थे और छुट्टी मनाने के लिए किसी पहाड़ी इलाके में जाने के बारे में यूं ही बातें कर रहे थे। कॉफी टेबल पर एक एटलस पड़ा था। लालमोहन बाबू ने संभवतः भारत का नक्शा ढूंढने के लिए अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया, लेकिन घंटी बजते ही उन्होंने अपना हाथ पीछे खींच लिया।
श्रीनाथ ने दरवाजा खोला और एक मिनट बाद श्री बत्रा अंदर आए। श्रीनाथ कुछ ही क्षणों बाद एक कप चाय लेकर उनके पीछे-पीछे आए।
श्री बत्रा के बैठते ही लालमोहन बाबू ने पूछा, 'क्या आपका कोई जुड़वा भाई है?' उनकी भौंहें तुरंत ऊपर उठ गईं और उनका मुंह खुला रह गया।
‘कैसे… आपने कैसे…?’
'मुझे समझाने दीजिए,' फेलुदा ने कहा। 'कल न्यू मार्केट में आपसे मिलने के तुरंत बाद हमने आपके जुड़वां भाई/बहन को देखा।'
‘श्री मिटर!’ श्री बत्रा ने उत्साह में अपनी कुर्सी की भुजा पर मुट्ठी पटकते हुए चिल्लाकर कहा। ‘मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान हूँ। मेरा कोई भाई या बहन नहीं है।’
'तो ठीक है-?'
‘इसीलिए तो मैं आपसे मिलने आया हूँ। यह सब एक हफ़्ते पहले काठमांडू में शुरू हुआ। मैं वहाँ सन ट्रेवल्स नाम की एक ट्रैवल एजेंसी में काम करता हूँ। मैं उनका पीआरओ हूँ। मेरे ऑफिस के पास एक अच्छा रेस्टोरेंट है जहाँ मैं रोज़ दोपहर का खाना खाता हूँ। पिछले सोमवार को जब मैं वहाँ गया, तो वेटर ने कहा कि मुझे देखकर उसे हैरानी हुई, क्योंकि क्या मैंने अपना दोपहर का खाना नहीं खा लिया था? कुछ और लोगों ने भी कहा कि उन्होंने मुझे आधे घंटे पहले खाना खाते देखा था। ज़रा सोचिए, श्री मित्तर! मुझे उन्हें यह समझाने में थोड़ा समय लगा कि जिसे उन्होंने देखा था वह मैं नहीं था। फिर वेटर ने कहा कि उसे थोड़ा शक हुआ था क्योंकि उस दूसरे आदमी ने चावल, करी और सब कुछ के साथ पूरा दोपहर का खाना खाया था, जबकि मैं आमतौर पर कुछ सैंडविच और एक कप कॉफ़ी पीता हूँ।’ श्री बत्रा ने अपनी कप से एक घूंट लेने के लिए

थोड़ी देर रुककर बात जारी रखी। फिर उन्होंने आगे कहा, ‘मैं परसों कलकत्ता पहुँचा, जो रविवार था। मेरा काम ऐसा है कि मुझे अक्सर कलकत्ता, दिल्ली और मुंबई जाना पड़ता है।’ खैर, कल मैं होटल से बाहर निकल रहा था—मैं ग्रैंड होटल में ठहरा हुआ हूँ—एस्पिरिन खरीदने के लिए, तभी मैंने किसी को कहते सुना, “श्री बत्रा, क्या आप एक मिनट के लिए यहाँ आ सकते हैं?” पता चला कि वह होटल के गिफ्ट शॉप का एक सेल्समैन था। मैं अंदर गया, और उसने मुझे सौ रुपये का नोट दिखाया। “यह नकली है,” उसने कहा, “इस पर कोई वॉटरमार्क नहीं है। कृपया इसे बदल दीजिए, महोदय।” पहले तो मैं बस उसे देखता रह गया। दरअसल, मैं उस दुकान पर गया ही नहीं था। लेकिन सेल्समैन ने मुझे यकीन दिलाया कि मैंने — या मेरे जैसे दिखने वाले किसी व्यक्ति ने—उनसे कुकरी खरीदी थी और उन्हें वह नकली नोट दिया था!
‘कुकरी? आपका मतलब नेपाली चाकू से है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘जी हाँ। मुझे कलकत्ता में नेपाली चाकू क्यों खरीदना चाहिए, बताइए? मैं तो नेपाल में रहता हूँ! मैं तो आधी कीमत में कुकरी खरीद सकता हूँ।’
क्या आपको नोट बदलना पड़ा?
'हाँ, बिल्कुल। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि मैं पहले जैसा आदमी नहीं हूँ, लेकिन वे मुझे इतनी अजीब नज़रों से देखने लगे कि मैं...'
‘हम्म।’
‘मुझे क्या करना चाहिए, श्रीमान मिटर?’
फेलुदा ने अपनी चारमीनार की राख को ऐशट्रे में झाड़ते हुए कहा, 'मैं समझ सकता हूँ कि आपको कैसा महसूस हो रहा होगा।'
'मिस्टर मिटर, मुझे घबराहट हो रही है। भगवान ही जाने यह आदमी आगे क्या करेगा।'
‘हाँ, यह एक अजीब स्थिति है,’ फेलुदा ने धीरे से कहा। ‘अगर मैंने खुद आपके हमशक्ल को न देखा होता, तो शायद मुझे आपकी कहानी पर विश्वास करना मुश्किल होता। लेकिन फिर भी, श्रीमान बत्रा, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं आपकी मदद कैसे कर सकता हूँ।’
श्री बत्रा ने सिर हिलाया, उनका चेहरा बेहद दुखी लग रहा था। उन्होंने कहा, 'हाँ, मुझे पता है कि अभी आपके पास करने के लिए कुछ नहीं है। मेरी समस्या यह है कि मैं कल काठमांडू वापस जा रहा हूँ। क्या पता यह आदमी मेरा पीछा करते हुए वहाँ भी आ जाए? साफ है कि वह जानबूझकर मुझे परेशान करने की कोशिश कर रहा है। अभी तक तो मुझे सिर्फ सौ रुपये का नुकसान हुआ है, लेकिन कौन जाने आगे वह क्या करेगा? अगर—?'
‘देखो,’ फेलुदा ने बीच में ही नरमी से कहा, ‘इस समय मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता। अगर काठमांडू में फिर से तुम्हें परेशान किया जाए तो सीधे पुलिस के पास जाना। ऐसे आदमी को तो अच्छी खासी पिटाई की ज़रूरत है, और पुलिस किसी और से कहीं बेहतर तरीके से पिटाई कर सकती है। लेकिन उम्मीद है कि ऐसी नौबत नहीं आएगी।’
‘जी हां, मुझे पूरी उम्मीद है,’ श्री बत्रा उठते हुए बोले। ‘खैर, कम से कम इससे मुझे आपसे मिलने का मौका तो मिला। मैंने सर्वेश्वर सहाय से आपके बारे में बहुत कुछ सुना था।’

सर्वेश्वर सहाय एक पुराने ग्राहक थे।
अलविदा, श्रीमान बत्रा। शुभकामनाएँ!
'धन्यवाद, मुझे इसकी आवश्यकता पड़ सकती है। अलविदा!'
श्री बत्रा के जाने के बाद सबसे पहले लालमोहन बाबू बोले। उन्होंने कहा, 'अजीब बात है! काठमांडू एक हिल स्टेशन है! मैंने पहले इस बारे में क्यों नहीं सोचा? सिर्फ इसलिए कि यह एक विदेशी देश में है?'

दो
अगले दिन जो कुछ हुआ, वही इस कहानी की असली शुरुआत थी। लेकिन इससे पहले कि मैं इसके बारे में बात करूं, मुझे श्री बत्रा के जाने के कुछ घंटों बाद फेलुदा को मिले टेलीफोन कॉल का जिक्र करना जरूरी है।
लालमोहन बाबू शाम 7 बजे रवाना हुए। खिड़की से बाहर देखते हुए उन्होंने कहा, “लगता है बारिश होने वाली है। मुझे आज ही जाना चाहिए। सुनो तपेश, मैं कल वापस आऊंगा। देखो, मैंने उस नए कथानक के बारे में और सोचा है। मैं तुमसे इस पर चर्चा करना चाहता हूं।”
लगभग आठ बजे से बारिश शुरू हो गई। फोन का कॉल 8.45 बजे आया। फेलुदा ने अपने कमरे में एक्सटेंशन से कॉल उठाया। मैंने बैठक में रखे मुख्य टेलीफोन पर बातचीत सुनी।
‘श्री प्रदोष मित्तर?’ एक गहरी, काफी परिष्कृत आवाज ने पूछा। ‘मैं बोल रहा हूँ।’
‘आप ही तो निजी जासूस हैं?’
'हाँ।'
'नमस्कार। मेरा नाम अनिकेंद्र सोम है। मैं सेंट्रल होटल से फोन कर रहा हूं।'
'हाँ?'
मुझे आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलना है। मैं कब मिल सकता हूँ?
क्या यह अत्यावश्यक है?
जी हां, बिल्कुल। इतनी तेज बारिश हो रही है कि आज रात बाहर निकलना मुश्किल हो सकता है, लेकिन अगर आप कल सुबह थोड़ा समय निकाल सकें तो मुझे बहुत खुशी होगी। मैं आपसे मिलने के लिए ही कलकत्ता आया हूं। मुझे लगता है कि आपको इसका कारण जानने में दिलचस्पी होगी।
'क्या आप टेलीफोन पर थोड़ा और विस्तार से समझा सकते हैं?'
'नहीं मुझे माफ कर दो।'
ठीक है। कल नौ बजे कैसा रहेगा?
कोई बात नहीं। धन्यवाद।
श्री सोम ने फोन रख दिया। एक ही शाम में दो ग्राहक, मैंने मन ही मन सोचा। इस रफ्तार से तो जल्द ही फेलुदा के सामने ग्राहकों की लंबी लाइन लग जाएगी! मैंने हाल ही में फेलुदा का अनुसरण करने का निर्णय लिया था और सुबह योग करना शुरू कर दिया था। हम दोनों सुबह 8 बजे तक दिन के लिए तैयार हो जाते थे। साढ़े आठ बजे लालमोहन बाबू की घंटी बजी।
‘मैं तुम्हारे घर आ रहा हूँ,’ उसने कहा। ‘रास्ते में न्यू मार्केट पर रुकूँगा, वहाँ मुझे वो हरी जैकेट देखनी है जो मैंने कुछ दिन पहले देखी थी।

मुझे उसकी कीमत पता करनी है।’ साफ था कि वो हिल स्टेशन जाने की तैयारी कर रहा था।
एक घंटे से भी अधिक समय बीत चुका था, हम अभी भी बैठक कक्ष में इंतजार कर रहे थे, लेकिन श्री सोम का कोई अता-पता नहीं था। 9:45 बजे, फेलुदा ने अपनी घड़ी देखी और चिड़चिड़ाकर सिर हिलाया। मैं समझ गया कि वह श्री सोम की समय की पाबंदी पर तीखी टिप्पणी करने ही वाला था। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, फोन की घंटी बज उठी।
‘मुझे हत्या के शिकार व्यक्ति की डायरी में आपका फोन नंबर क्यों मिला?’ एक जानी-पहचानी आवाज गूंजी। यह जोरासांको पुलिस स्टेशन के प्रभारी इंस्पेक्टर माहिम दत्तागुप्ता की आवाज थी।
फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, 'किसकी हत्या हुई है?'
'सेंट्रल एवेन्यू, सेंट्रल होटल में आइए। कमरा नंबर 23। सब कुछ पता चल जाएगा।'
क्या यह अनिकेंद्र सोम है?
'क्या आप उसे जानते थे?'
नहीं, मुझे उनसे आज सुबह मिलना था। उनकी मृत्यु कैसे हुई?
'छुरा घोंपा।'
'कब?'
‘आज सुबह-सुबह। आपके आने पर मैं आपको सारी जानकारी दे दूंगा। मैं लगभग बीस मिनट पहले पहुंचा हूं।’
फेलुदा ने कहा, 'मैं आधे घंटे में वहां पहुंचने की कोशिश करूंगा।'
लालमोहन बाबू पांच मिनट बाद अंदर आए, लेकिन उन्हें बैठने का मौका नहीं मिला। फेलुदा ने संक्षेप में कहा, 'हत्या,' और उन्हें घर से बाहर धकेल दिया। फिर उन्होंने उन्हें अपनी एम्बेसडर की पिछली सीट पर धकेल दिया, खुद उनके बगल में बैठ गए और लालमोहन बाबू के ड्राइवर हरिपाड़ा से कहा, 'सेंट्रल होटल। जल्दी।'
मैंने लालमोहन बाबू के चेहरे पर एक नज़र डाली और आगे वाली सीट पर बैठ गया। उनके चेहरे पर सदमा और हैरानी साफ झलक रही थी, लेकिन उन्हें पता था कि पूछने पर भी फेलुदा उन्हें कुछ नहीं बताएगा।
हरिपाड़ा जितनी तेज़ गति से गाड़ी चला सकता था, चला रहा था। हमारे पहुँचने पर इंस्पेक्टर दत्तागुप्ता ने हमें सारी जानकारी दी। पता चला कि अनिकेंद्र सोम रविवार शाम को होटल में चेक-इन किया था। होटल रजिस्टर में दर्ज था कि वह कानपुर में रहता है। उसे कल चेक-आउट करना था। आज सुबह 5 बजे एक आदमी आया और उसके बारे में पूछा। कमरा नंबर मिलने पर वह आदमी लिफ्ट के बजाय सीढ़ियों से ऊपर गया। उसे पंद्रह मिनट बाद होटल से निकलते देखा गया। होटल के कर्मचारियों ने, जिन्होंने उसे देखा था, बताया कि वह मध्यम कद का, दाढ़ी-मूंछ साफ किए हुए, नीली कमीज और ग्रे पतलून पहने हुए था। चौकीदार ने बताया कि उसके लिए एक टैक्सी इंतज़ार कर रही है।
श्री सोम ने सुबह 8 बजे नाश्ते का ऑर्डर दिया था। वेटर ठीक समय पर पहुंचा, लेकिन जब उसके जोर से खटखटाने पर भी कोई जवाब नहीं मिला, तो उसने एक नकली

चाबी से दरवाजा खोला। उसने श्री सोम का शव फर्श पर पड़ा पाया, उनकी छाती पर कुकरी से वार किया गया था। चाकू अभी तक निकाला नहीं गया था।
कुछ देर बाद पुलिस आई और कमरे की तलाशी ली। उन्हें वहाँ सिर्फ एक छोटा सा वीआईपी सूटकेस मिला जिसमें कुछ कपड़े और एक जोड़ी जूते थे। बटुआ, पैसा या कोई अन्य कीमती सामान नहीं मिला। संभवतः हत्यारे ने सब कुछ हटा दिया था। फेलुदा शव देखने के लिए अंदर गया। बाद में उसने हमें बताया, 'वह देखने में सुंदर आदमी था, तीस साल से ज़्यादा का नहीं रहा होगा।'
रिसेप्शनिस्ट के अनुसार, श्री सोम ने अपना अधिकांश समय पिछले दिन होटल के बाहर बिताया था। बारिश शुरू होने से एक घंटा पहले वे वापस लौटे थे। कमरों में टेलीफोन न होने के कारण उन्होंने रिसेप्शन डेस्क पर रखी टेलीफोन डायरेक्टरी से एक नंबर ढूंढा। फिर उन्होंने उसे अपनी नोटबुक में लिख लिया और रिसेप्शन काउंटर पर रखे टेलीफोन से कॉल किया।
पुलिस को फेलुदा का नंबर लिखी नोटबुक मिली। यह बिस्तर और बगल की मेज के बीच फर्श पर पड़ी थी। नोटबुक के केवल पहले तीन पन्ने ही लिखे हुए थे। उनमें बिखरे हुए वाक्य थे, जो देखने में बेतरतीब ढंग से लिखे गए प्रतीत होते थे। ‘इसका क्या मतलब है?’ फेलुदा ने मुझसे उन टेढ़े-मेढ़े चित्रों को दिखाते हुए पूछा।
‘खैर, ऐसा लगता है जैसे किसी कांपते हाथ ने ये शब्द लिखे हों। खासकर “मठ” शब्द तो लगभग पढ़ा ही नहीं जा सकता।’
‘शायद वह व्यक्ति भयानक मानसिक तनाव में था,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की। 'शायद। या हो सकता है कि वह बहुत तेज़ गति से यात्रा कर रहा हो। मुझे लगता है कि वे शब्द एक हवाई जहाज में लिखे गए थे, और जब वह "मांद" शब्द लिख रहा था, तभी विमान एक वायु अवरोध में गिर गया।'
‘जी हां, आप बिल्कुल सही कह रहे होंगे!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘हवा के बुलबुले तो बहुत भयानक होते हैं। मुझे याद है, बॉम्बे जाते समय मैंने अभी-अभी कॉफी का एक घूंट ही लिया था कि इतनी ज़ोरदार टक्कर हुई कि मेरा दम घुटने लगा और मैं खांसने लगा... हे भगवान, कितना भयानक था!’
फेलुदा ने उन शब्दों को अपनी नोटबुक में लिख लिया और श्री सोम की नोटबुक निरीक्षक को लौटा दी।
'मैं कानपुर में उसके लोगों को सूचित कर दूंगा,' महिमा बाबू ने कहा, 'शव की पहचान करनी होगी।'
मुझे लगता है कि दिल्ली से कानपुर होते हुए एक शाम की फ्लाइट आती है। आप देख सकते हैं कि पिछले रविवार की यात्री सूची में श्री सोम का नाम था या नहीं। लेकिन मुझे लगता है कि वह हाल ही में किसी पहाड़ी इलाके में गए थे। ‘अरे, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?’
‘क्या आपने उस कोने में रखे उन भारी बूटों पर ध्यान दिया? उनमें से एक की एड़ी पर फर्न का एक टुकड़ा चिपका हुआ है। यह मैदानी इलाकों से तो नहीं आया होगा।’
'हां, शायद आप सही कह रहे हैं। मैं आपको सूचित करता रहूंगा, श्रीमान मिटर, खासकर अगर हमें कुकरी पर कोई उंगलियों के निशान मिलते हैं।'

एक और बात है। कृपया ग्रैंड होटल के गिफ्ट शॉप से पता कर लें कि क्या वे कुकरी बेचते थे।
वापस लौटते समय, फेलुदा ने हमें श्री सोम की नोटबुक में मिले शब्द दिखाए:
1. क्या यह सिर्फ एलएसडी है?
2. सीपी से तरीकों और पिछले मामलों के बारे में पूछें।
3. डेन—क्या यह यहाँ है या वहाँ?
4. एबी के बारे में पता करें।
5. पीसीएम, डीडीसी को फोन करें।
अंतिम वाक्य के बाद फेलुदा का नंबर दिया गया था।
‘क्या इसका विदेशी मुद्रा से कुछ लेना-देना है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। 'आप क्यों कहते हो कि?'
‘अच्छा, एलएसडी... मेरा मतलब है, यह एल जैसा दिखता है, लेकिन क्या यह पाउंड-शिलिंग-पेंस हो सकता है?’
फेलुदा ने बनावटी झुंझलाहट दिखाते हुए जीभ चटकाई। ‘हर समय पैसे के बारे में सोचना बंद करो,’ उसने चेतावनी दी। ‘यह एलएसडी, लाइसर्जिक एसिड डायथाइलमाइड नामक मादक पदार्थ को संदर्भित करता है। पूरी दुनिया इसके बारे में जानती है। मानव मस्तिष्क में सेरोटोनिन नामक एक रसायन होता है, जो मस्तिष्क को सामान्य रूप से कार्य करने में मदद करता है। मेरा मानना है कि एलएसडी इस रसायन के स्तर को कम कर देता है। इसके बाद मस्तिष्क असामान्य रूप से कार्य करता है, जिससे मतिभ्रम होता है। उदाहरण के लिए, यदि आप अभी इस दवा की एक खुराक लें और खिड़की से बाहर देखें, तो आपको यातायात या भीड़ नहीं दिखाई देगी। इसके बजाय हरी-भरी घास के मैदान और बहती नदियाँ आपकी आँखों को सुकून देंगी।’
‘सच में? क्या ये सामान खरीदना संभव है?’
'जी हां, बिल्कुल है; लेकिन जाहिर है, आपकी स्थानीय फार्मेसी में नहीं। यह चोरी-छिपे बेचा जाता है। अगर आप ग्लोब सिनेमा के पीछे वाले होटल में जाएं, जहां बहुत सारे हिप्पी ठहरते हैं, तो शायद आपको एक चीनी का टुकड़ा मिल जाए।'
'चीनी क्यूब?'
'जी हां। चीनी के एक टुकड़े में एलएसडी का एक दाना ही काफी है। आपकी ही भाषा में कहें तो, इसमें पांच हजार हॉर्स पावर जितनी ताकत होगी! लेकिन ध्यान रहे, इस दवा से होने वाले मतिभ्रम हमेशा खूबसूरत नहीं होते। मैंने एक ऐसे मामले के बारे में सुना है जहां एक आदमी बहुमंजिला इमारत की छत पर चढ़ गया और खुद को नीचे फेंक दिया, जबकि वह लगातार सोच रहा था कि वह सीढ़ियों से नीचे उतर रहा है।'
‘हे भगवान! आपका मतलब—?’
'हां। तत्काल मृत्यु।'
'बेहद भयानक!'

तीन
हत्या के दो दिन बाद, इंस्पेक्टर दत्तगुप्ता ने फेलुदा को फोन किया। उसके पास कहने के लिए बहुत कुछ था।
पता चला कि अनिकेंद्र सोम कानपुर आईआईटी में पढ़ाते थे। उनका वहां कोई परिवार नहीं था, लेकिन पुलिस ने कलकत्ता में उनके एक भाई का पता लगाया, जिसने शव की पहचान की। जाहिर तौर पर, श्री सोम एकांतप्रिय व्यक्ति थे। वे अपने रिश्तेदारों से बहुत कम संपर्क में रहते थे, हालांकि उनके भाई ने इस बात की पुष्टि की कि वे हमेशा एक बहादुर और ईमानदार व्यक्ति थे।
दूसरी बात, कुकरी पर उंगलियों के निशान नहीं थे। लेकिन इसके इस्तेमाल के तरीके से यह पता चल सकता था कि हत्यारा बाएं हाथ का था। ग्रैंड होटल की दुकान ने पुष्टि की कि हथियार वास्तव में उन्हीं के द्वारा श्री बत्रा को बेचा गया था। वह होटल में ठहरे हुए थे और श्री सोम की हत्या वाली सुबह नौ बजे की फ्लाइट से काठमांडू के लिए रवाना हो गए थे।
अंत में, कानपुर से आने वाली उड़ान की यात्री सूची में अनिकेंद्र सोम का नाम नहीं मिला। हालांकि, पुलिस ने रविवार को आने वाली अन्य सभी उड़ानों की यात्री सूचियों की जांच की और पाया कि श्री सोम का नाम काठमांडू-कलकत्ता उड़ान में था। यह उड़ान शाम 5:30 बजे दमदम पहुंची थी।
महीम बाबू ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, 'चूंकि अपराधी नेपाल भाग गया है, इसलिए हम यहां से कुछ नहीं कर सकते। यह मामला सीआईडी (हत्या) और गृह विभाग को सौंपना होगा। गृह विभाग से मंजूरी मिलते ही, नेपाल सरकार से जांच में सहयोग का अनुरोध किया जा सकता है। यदि वे सहमत होते हैं, तो सीआईडी का एक अधिकारी काठमांडू जाएगा।'
रिसीवर को वापस रखने से पहले फेलुदा ने सिर्फ एक ही बात कही, 'शुभकामनाएं!' इसके बाद फेलुदा एकदम चुप हो गया और अगले कुछ दिनों तक उसने लगभग कुछ नहीं कहा। लेकिन मैं समझ गया था कि वह गहराई से सोच रहा था और किसी बात का हल निकालने की कोशिश कर रहा था, क्योंकि वह अपने कमरे में इधर-उधर घूमता रहता था, अनजाने में अपनी उंगलियां चटकाता रहता था और कभी-कभी बिस्तर पर लेटकर छत को घूरता रहता था।
दूसरे दिन शाम को लालमोहन बाबू आए और लगभग दो घंटे तक रुके, लेकिन फेलुदा ने एक शब्द भी नहीं बोला। अंत में, लालमोहन बाबू ने मुझे वह बात बताई जो वे कहना चाहते थे।
‘जानते हो क्या, तपेश,’ उन्होंने कहना शुरू किया, ‘मैं अभी-अभी एक हस्तरेखा विशेषज्ञ से मिलकर आया हूँ। उनका नाम मौलिनाथ भट्टाचार्य है। कमाल के इंसान हैं। वो सिर्फ हस्तरेखा ही नहीं पढ़ते, बल्कि खुद भी शोध करते हैं। और उनके सिद्धांत तो लाजवाब हैं। उनके अनुसार, बंदरों की हथेलियों पर भी इंसानों की तरह रेखाएं होती हैं और उन्हें पढ़ा जा सकता है। इसलिए

उन्होंने स्थानीय चिड़ियाघर के क्यूरेटर से बात की और एक चिंपैंजी के पिंजरे में गए। जाहिर है, वह बहुत ही सभ्य और प्रशिक्षित जानवर था। मौलि बाबू ने दस मिनट तक उसकी हथेलियों को ध्यान से देखा, लेकिन उसे जरा भी बुरा नहीं लगा। तभी, जैसे ही मौलि बाबू जाने के लिए मुड़े, चिंपैंजी ने हाथ बढ़ाकर उनकी पैंट नीचे खींच दी। लेकिन शायद यह एक दुर्घटना ही रही होगी, है ना? खैर, मौलि बाबू कहते हैं कि यह जानवर अगस्त 1983 तक जीवित रहेगा। मैंने तारीख अपनी डायरी में लिख ली है। रोमांचक है ना?’
‘हां,’ मैंने कहा, ‘अगर उनकी भविष्यवाणी सच हो जाती है, तो यह वाकई उल्लेखनीय होगा। लेकिन उन्होंने आपके बारे में क्या बताया?’
'अरे वाह, एक बहुत ही दिलचस्प बात। पांच साल पहले, एक अन्य हस्तरेखा विशेषज्ञ ने मुझसे कहा था कि मैं कभी विदेश यात्रा नहीं कर पाऊंगा। मौली बाबू ने कहा कि मैं निश्चित रूप से कर पाऊंगा।'
अंततः, लालमोहन बाबू निराश नहीं हुए। फेलुदा ने अगले दिन नाश्ते के दौरान अपनी चुप्पी तोड़ी और कहा, 'क्या तुम्हें पता है मेरा दिल क्या कह रहा है, टॉपशे? यह बार-बार कह रहा है कि सभी रास्ते नेपाल की ओर जाते हैं। और उनमें से कुछ लंबे और घुमावदार हैं। इसलिए मुझे लगता है कि अब फेलु मित्तर के लिए काठमांडू जाने का समय आ गया है।'
सारी व्यवस्था करने में हमें तीन दिन लग गए। हम तीनों ने इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट बुक कराई थी। हमारे ट्रैवल एजेंट ने काठमांडू में होटल भी बुक करा दिए थे।
मैंने एक दिन फेलुदा से पूछा, 'क्या आपको लगता है कि दूसरा बत्रा काठमांडू लौट आया है?'
‘हो सकता है। आपने माहिम बाबू की बात सुनी ही होगी। अगर कोई अपराधी किसी दूसरे देश में भागने में कामयाब हो जाता है, तो दोनों सरकारों के बीच समझौता होने तक वह काफी हद तक सुरक्षित रह सकता है। और इसमें सालों लग सकते हैं। अमेरिका में अपराधी मैक्सिको की सीमा पार करने की कोशिश करते हैं। भारत और नेपाल के बीच भी यही हाल है।’
हमारे रवाना होने से एक दिन पहले लालमोहन बाबू यह कहने के लिए आए कि उन्होंने लेनिन सरानी के पास 'नकली' श्री बत्रा को लस्सी पीते हुए देखा था। फेलुदा की आंखें सिकुड़ गईं।
‘क्या उसने गिलास अपने बाएं हाथ में पकड़ा हुआ था?’ उसने पूछा।
‘अरे हाँ—मैंने इस पर ध्यान ही नहीं दिया!’
‘ऐसे में तो आपके बयान का कोई महत्व ही नहीं है।’
एयरपोर्ट पर हमारी चेकिंग करने वाले अधिकारी का फेलुदा से परिचय था। उन्होंने कहा, 'मैं आपको दाईं ओर सीटें दूंगा। आपको अच्छा नज़ारा दिखेगा।' लेकिन मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि नज़ारा कितना शानदार हो सकता है। कलकत्ता से निकलने के दस मिनट के भीतर ही, मुझे दाईं ओर कंचनजंगा चमकता हुआ दिखाई दिया—यह नज़ारा जितना दुर्लभ था उतना ही मनमोहक भी। इसके बाद कई अन्य प्रसिद्ध चोटियों की झलकियाँ दिखाई दीं, जिनमें से प्रत्येक, जैसा कि मैं जानता था, साहसी पर्वतारोहियों के लिए एक अनूठा आकर्षण रखती है।

हम खिड़की से बाहर टकटकी लगाए देख रहे थे, तभी एक एयर होस्टेस फेलुदा की सीट के पास आकर बोली, 'पायलट कैप्टन मुखर्जी आपसे कॉकपिट में मिलना चाहते हैं।' फेलुदा ने अपनी सीट बेल्ट खोली और खड़े हो गए। उन्होंने पूछा, 'क्या मेरे दोस्त भी मेरे साथ आ सकते हैं, जब मैं वापस आऊं?'
एयर होस्टेस मुस्कुराई। उसने कहा, 'आप सब मेरे साथ क्यों नहीं चलते?' कॉकपिट हम सबके लिए अंदर जाने के लिए बहुत छोटा था, लेकिन फेलुदा के कंधे के ऊपर से जो मैंने देखा, वह मुझे अनैच्छिक रूप से स्तब्ध करने के लिए काफी था। लालमोहन बाबू दूसरी तरफ से देख रहे थे। बाद में उन्होंने अपनी इस अनुभूति को 'निःशब्द, स्तब्ध, मंत्रमुग्ध कर देने वाला, मनमोहक आश्चर्य' बताया।
दूर तक फैली चोटियों की एक कतार दीवार की तरह लग रही थी। जैसे-जैसे हम करीब आते गए, वे और भी विशाल दिखाई देने लगीं। सह-पायलट ने अपनी किताब एक तरफ रख दी और हमें उन चोटियों के बारे में बताने लगा। कंचनजंगा के बाद मकालू दिखाई दिया, और थोड़ी देर बाद हमें माउंट एवरेस्ट नज़र आया। फिर गौरीशंकर, अन्नपूर्णा और धौलागिरी दिखाई दिए।
हम पाँच मिनट में अपनी सीटों पर लौट आए। आधे घंटे से भी कम समय में, मुझे महसूस होने लगा कि विमान नीचे उतर रहा है। मैंने फिर से खिड़की से बाहर देखा और नीचे एक मोटी हरी चादर बिछी हुई देखी। यह ज़रूर प्रसिद्ध तराई क्षेत्र होगा। इसके पीछे काठमांडू घाटी थी।
इस समय हम घने कोहरे में गायब हो गए और विमान ऊपर-नीचे हिलने लगा। सौभाग्यवश, कुछ ही मिनटों बाद कोहरा छंट गया, विमान स्थिर हो गया और हमें सूर्य की रोशनी में नहायी हुई एक खूबसूरत घाटी की पहली झलक दिखाई दी।
‘यह बताने की जरूरत नहीं है कि यह एक विदेशी देश है!’ लालमोहन बाबू ने मुश्किल से सांस लेते हुए कहा।
सच है। मैंने भारत में ऐसा कुछ पहले कभी नहीं देखा था। पेड़ थे, नदियाँ थीं, धान के खेत थे और घर थे—लेकिन, किसी तरह, सब कुछ अलग लग रहा था। फेलुदा ने कहा, ‘उन छोटे-छोटे घरों को देखो। वे ईंटों से बने हैं, और उनकी छतें भूसे से ढकी हैं। उन्हें चीनियों ने बनवाया था।’
‘और ये क्या हैं? मंदिर?’
'हां, बौद्ध मंदिर।'
अब मुझे ज़मीन पर हमारे विमान की परछाई दिखाई देने लगी। अचानक, वह बड़ी होती चली गई, मानो हवा में ऊपर उठकर गायब हो गई हो। हम त्रिभुवन हवाई अड्डे पर उतर चुके थे।

चार
हमें पहले ही चेतावनी दी गई थी कि नेपाल में सीमा शुल्क अधिकारी बहुत सख्त होते हैं। जाहिर तौर पर, हर यात्री के सामान की पूरी जांच करवाना अनिवार्य था।
मैंने देखा कि लालमोहन बाबू कुछ असहज लग रहे थे। इससे मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे पता था कि हममें से कोई भी संदिग्ध वस्तु नहीं ले जा रहा था। पूछे जाने पर उन्होंने कहा, 'मैं एक टिफिन बॉक्स में थोड़ा सा आम पापड़ लाया हूँ। मान लीजिए अगर उन्हें आपत्ति हो जाए तो?'
उन्होंने ऐसा नहीं किया। लालमोहन बाबू ने राहत की सांस ली, बाहर निकलने की ओर मुड़े और वहीं जम गए। मैंने उनकी नज़र का पीछा किया और देखा कि ऐसा क्यों हुआ। दोनों बत्रा में से एक दरवाजे के पास खड़ा था और दाढ़ी वाले एक लंबे, गोरे आदमी से बात कर रहा था।
यह तो सचमुच श्री बत्रा ही थे। फेलुदा को देखते ही उनके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। उन्होंने अपने साथी से 'माफ़ कीजिए' कहा और हमारा अभिवादन करने के लिए आगे बढ़े।
उन्होंने कहा, 'काठमांडू में आपका स्वागत है!'
'मुझे लगा कि मुझे आना ही होगा,' फेलुदा ने बताया।
‘बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया।’ श्री बत्रा ने हमसे हाथ मिलाया। ‘मुझे नहीं लगता कि वह दूसरा आदमी मेरे पीछे-पीछे यहाँ आया है। पिछले कुछ दिनों में कोई समस्या नहीं हुई है। आप यहाँ कितने दिन रहेंगे?’
'एक सप्ताह के बारे में।'
'आप कहाँ रहते हैं?'
‘होटल लुम्बिनी।’
‘यह एक नया होटल है, और काफी अच्छा है। अगर आप घूमने जाना चाहते हैं, तो मैं आपके लिए सभी व्यवस्थाएं कर सकता हूँ। मेरा कार्यालय आपके होटल से केवल पाँच मिनट की दूरी पर है।’
‘धन्यवाद। वैसे, क्या आपको यहाँ भारतीय अखबार मिलते हैं? क्या आपने यह देखा?’ फेलुदा ने स्टेट्समैन अखबार की एक कतरन निकाली और श्री बत्रा को दे दी। यह श्री सोम की हत्या की खबर थी। श्री बत्रा ने इसे जल्दी से पढ़ा, फिर ऊपर देखा, उनकी आँखों में आशंका झलक रही थी।
फेलुदा ने उससे कहा, 'उस रिपोर्ट में यह नहीं बताया गया है कि बत्रा नाम के एक व्यक्ति ने ग्रैंड होटल की दुकान से वह नेपाली कुकरी खरीदी थी। पुलिस ने इसकी पुष्टि करवाई थी।'
‘हे भगवान!’ श्री बत्रा का चेहरा एकदम पीला पड़ गया।
‘आप अनिकेंद्र सोम को नहीं जानते थे, है ना?’
नहीं, मैंने उसके बारे में कभी नहीं सुना।

उन्होंने आपके साथ उसी विमान में यात्रा की।
‘काठमांडू से? नेपाल एयरलाइंस से?’
'हाँ।'
'तब शायद मैं उसे पहचान लेता अगर मैंने उसे देखा होता, हालांकि - ध्यान रहे
- उस उड़ान में एक सौ तीस यात्री थे।'
‘हाँ। वैसे, फिलहाल कलकत्ता से दूर रहने की कोशिश करो,’ फेलुदा ने हल्के- फुल्के अंदाज में कहा।
‘लेकिन कोई मुझे इस तरह परेशान करने की कोशिश क्यों करेगा, श्री मिटर?’ श्री बत्रा विलाप करते हुए बोले।
‘खैर, मुझे एक अच्छा कारण सूझता है,’ फेलुदा ने धीरे से कहा। ‘अगर किसी अपराधी को पता चलता है कि उसका एक हमशक्ल है, तो क्या यह स्वाभाविक नहीं है कि वह दूसरे आदमी को फंसाने की कोशिश करे, ताकि वह खुद बिना किसी सजा के बच सके?’
‘ठीक है, लेकिन यह कोई साधारण अपराध नहीं है, श्रीमान मिटर। हम हत्या की बात कर रहे हैं!’
श्रीमान बत्रा, मुझे पूरा यकीन है कि हत्यारा काठमांडू वापस लौटेगा। अनिकेंद्र सोम मेरी मदद मांगने कलकत्ता गया था। मुझे नहीं पता कि वह मुझसे क्या करवाना चाहता था, लेकिन जब तक मैं उसके हत्यारे को पकड़ नहीं लेता, मुझे चैन नहीं आएगा। इसलिए, अगर आप या आपका कोई परिचित इस आदमी को देखे जो आपसे मिलता-जुलता हो, तो कृपया मुझे तुरंत सूचित करें।
'हां, बिल्कुल। मुझे कल शहर से बाहर जाना है, लेकिन मैं परसों आपसे संपर्क करूंगा।'
हम हवाई अड्डे से बाहर निकले और एक टैक्सी में बैठ गए। यह एक जापानी डैटसन थी, जो काठमांडू की साफ, चौड़ी और खूबसूरत सड़कों पर दिखने वाली कई कारों में से एक थी। इन सड़कों के किनारे यूकेलिप्टस के पेड़ कतारों में खड़े थे। हम एक बड़े पार्क के पास से गुजरे जिसमें एक स्टेडियम था। चारों ओर विशाल इमारतें थीं, जिनमें से कई कभी राणाओं के महल हुआ करती थीं। इनमें से कुछ हिंदू और बौद्ध मंदिर थे, जिनके शिखर बाकी सभी इमारतों से कहीं ऊंचे थे।
लालमोहन बाबू के हाथों को मलने के अंदाज़ से यह स्पष्ट था कि वे इस विदेशी धरती पर जो कुछ देख चुके थे, उससे काफी प्रभावित थे। जब फेलुदा ने उन्हें बताया कि नेपाल का राजा विश्व का एकमात्र हिंदू राजा है, और भगवान बुद्ध का जन्मस्थान लुम्बिनी नेपाल में ही है, तो उनका मुँह खुला रह गया और मौन 'ओ' की आकृति बन गई।
हमारी टैक्सी कांति पथ पर आगे बढ़ी और एक विशाल, नक्काशीदार द्वार से गुजरी। दाहिने मुड़ने पर हम न्यू रोड पर आ गए। होटल लुम्बिनी, कई अन्य होटलों और विश्राम गृहों के साथ, इस सड़क के एक तरफ स्थित था। हमारी टैक्सी उसके मुख्य द्वार के पास आकर रुकी।
चेक-इन करते समय हमारी मुलाकात सबसे पहले एक बंगाली व्यक्ति से हुई। वह सोफे से उठा और हमारा अभिवादन करने के लिए आगे आया।

‘क्या आप इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट से आए हैं?’ उन्होंने लालमोहन बाबू से पूछा।
'हाँ।'
क्या यह नेपाल की आपकी पहली यात्रा है?
‘हां। हम छुट्टी पर हैं,’ लालमोहन बाबू ने फेलुदा की ओर तिरछी नज़र डालते हुए जवाब दिया।
यदि संभव हो तो पोखरा अवश्य जाएं।
इस बार फेलुदा बोला।
‘क्या आप यहीं रहते हैं?’ उसने पूछा। इसी बीच एक बेल बॉय हमारा सामान ऊपर ले गया। हमें दूसरी मंजिल पर दो सटे हुए कमरे दिए गए, जिनका नंबर 226 और 227 था।
मैं कलकत्ता से हूं। मैं अपने परिवार के साथ छुट्टियां मनाने आया हूं।
मेरा एक दोस्त काठमांडू में रहता है।
मैंने पहली बार देखा कि सोफे पर एक और बुजुर्ग सज्जन बैठे थे। उनकी त्वचा बेहद गोरी थी और बाल बिल्कुल सफेद थे। वे देखने में काफी प्रतिष्ठित लग रहे थे। अब वे उठे और हमारे साथ बैठ गए।
पहले सज्जन ने हमें बताया, 'उनका परिवार यहां तीन सौ वर्षों से रह रहा है।' 'क्या!'
'हां, आपको उससे उसकी कहानी जरूर सुननी चाहिए।'
‘अच्छा, अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो क्यों न आप हमारे कमरे में आकर हमारे साथ एक कप चाय पी लें?’ फेलुदा ने कहा। ‘मुझे नेपाल में रहने वाले बंगालियों में दिलचस्पी है... एक खास वजह से।’
मैं उसकी बात बिल्कुल समझ गया था। मुझे यह भी पता था कि फेलुदा आम तौर पर किसी से परिचय होने के तुरंत बाद उसे अपने कमरे में आमंत्रित नहीं करता था।
मुझे और फेलुदा को एक डबल रूम दिया गया था। हम सब उसमें दाखिल हुए और फेलुदा ने चाय के लिए रूम सर्विस को फोन किया। हमारे मेहमानों ने औपचारिक रूप से अपना परिचय दिया। कलकत्ता से आए सज्जन का नाम श्री भौमिक था। दूसरे सज्जन श्री हरिनाथ चक्रवर्ती थे। चाय पीते हुए उन्होंने अपने परिवार का इतिहास सुनाया।
लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व, नेपाल में भीषण सूखा पड़ा था। उस समय माल्य वंश के शासक थे। राजा जगतजीत माल्य ने बंगाल से एक तांत्रिक को आमंत्रित किया, यह देखने के लिए कि क्या उनकी जादुई शक्तियों से वर्षा हो सकती है। यह तांत्रिक हरिनाथ के पूर्वज जयराम चक्रवर्ती थे। जयराम ने एक विशेष पूजा की, जिसके परिणामस्वरूप काठमांडू घाटी में लगातार ग्यारह दिनों तक वर्षा हुई। इसके बाद जगतजीत माल्य उन्हें वापस नहीं जाने देना चाहते थे। उन्होंने उन्हें रहने के लिए भूमि दी और यह सुनिश्चित किया कि जयराम और उनका परिवार सुख-सुविधाओं से जीवन व्यतीत करें।
जब राणाओं ने माल्या वंश को सत्ता से बेदखल कर दिया, तब भी जयराम की देखरेख जारी रही, क्योंकि राणा रूढ़िवादी हिंदू थे। दो पीढ़ियों पहले तक चक्रवर्ती परिवार के पुरुष शाही परिवार में पुजारी के रूप में रहते थे।

हरिनाथ के एक चाचा अभी भी पशुपतिनाथ मंदिर में पुजारी थे। उनके पिता परिवार में पहले व्यक्ति थे जो उच्च शिक्षा के लिए कलकत्ता गए थे। वे राणाओं के निजी शिक्षक के रूप में काम करने के लिए वापस लौटे। हरिनाथ ने भी ऐसा ही किया। वे अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन करने के लिए कलकत्ता गए। जब वे नेपाल लौटे, तो राणाओं ने उन्हें निजी शिक्षक नियुक्त किया। लेकिन, समय के साथ, राणाओं की शक्ति कम होती गई। अंततः, जब काठमांडू में राजा त्रिभुवन के नाम पर एक कॉलेज खुला, तो हरिनाथ ने उसमें अंग्रेजी के प्रोफेसर के रूप में कार्यभार संभाला।
हरिनाथ बाबू ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा, 'मेरे बेटों को पुरोहित बनने में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। बड़ा बेटा, नीलाद्री, पर्वतारोहण संस्थान में प्रशिक्षक के रूप में काम करता था।'
‘पहले? मतलब—?’
1976 में पर्वतारोहण दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।
मुझे खेद है। आपके अन्य बच्चों का क्या?
‘मेरा एक और बेटा था, हिमाद्री। वह हेलीकॉप्टर पायलट के रूप में काम करता था। पर्यटकों को तराई और प्रसिद्ध हिमालयी चोटियों को दिखाने ले जाता था। मैंने... उसे भी खो दिया। सिर्फ तीन हफ्ते पहले।’
‘हवाई दुर्घटना?’
हरिनाथ बाबू ने उदास होकर सिर हिलाया। 'नहीं। ऐसा होता तो समझ में आता। असल में जो हुआ वो अजीब था। वो अपने एक दोस्त को मठ दिखाने ले गया था। जब वो लौटा तो उसने अपने हाथ पर एक छोटी सी चोट देखी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि चोट कैसे लगी, लेकिन उसके दोस्त को लगा कि शायद कांटेदार तार से लगी हो। हिमाद्री ने इसे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, लेकिन उसके दोस्त ने डॉक्टर को बुलाकर उसे टिटनेस का इंजेक्शन लगवाने पर ज़ोर दिया।'
'फिर क्या हुआ?'
हरिनाथ बाबू ने फिर से अपना सिर हिलाया। 'कुछ नहीं। इंजेक्शन से कोई फायदा नहीं हुआ। उसे टिटनेस हो गया और उसकी मौत हो गई।'
'शायद जब तक उसे इंजेक्शन दिया गया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी?'
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। दोस्त के अनुसार, शाम को उसके हाथ में चोट लग गई थी। अगली सुबह उसे इंजेक्शन लगाया गया। लेकिन उसके तुरंत बाद उसे दौरे पड़ने लगे। उसी दिन हमने उसे खो दिया।
‘जिस डॉक्टर का नाम लिया गया था... क्या वह आपका अपना डॉक्टर था?’
नहीं, लेकिन मैं उन्हें जानता हूँ। वो डॉ. दिवाकर थे। उनका क्लिनिक काफी बड़ा है। ऐसा लगता है कि हमारे पारिवारिक चिकित्सक, डॉ. मुखर्जी के निधन के बाद से उनका क्लिनिक और बढ़ गया है। डॉ. दिवाकर अब काफी धनी व्यक्ति हैं। श्री भौमिक अचानक बोले, ‘डॉक्टर की बात छोड़िए,’ उन्होंने कहा। ‘सवाल दवा पर उठना चाहिए। आजकल किसी मरीज की नकली दवा से मौत होना कोई असामान्य बात नहीं है, है ना? वे एम्प्यूल में पानी, कैप्सूल में टैल्कम पाउडर, या चूने का पाउडर, या फिर सिर्फ सादा चूरा मिला देते हैं। आपने इसके बारे में पहले भी जरूर सुना होगा?’

हरिनाथ बाबू ने फीकी मुस्कान दी। 'हां। लेकिन मैं क्या कर सकता था? मुझे स्थिति को स्वीकार करना ही पड़ा। मेरा बेटा मर चुका था। बस यही बात थी।' दोनों सज्जन जाने के लिए उठे।
हरिनाथ बाबू ने कहा, 'मुझे खेद है कि मैंने आपका काफी समय बर्बाद कर दिया।' फेलुदा ने जवाब दिया, 'बिल्कुल नहीं। मैं बस एक बात पूछना चाहता हूँ।' 'हाँ?'
क्या आपके बेटे के दोस्त से मिलना संभव है?
नहीं, मुझे अफसोस है। वह हमारे घर पर ही रुका हुआ था। हिमाद्री की मौत से उसे गहरा सदमा लगा था। मैंने उसे यह कहकर दिलासा देने की कोशिश की कि यह तो नियति थी, इसमें किसी की कोई गलती नहीं थी। लेकिन इससे वह और भी ज्यादा परेशान हो गया। उसने मुझसे बात करना बंद कर दिया। फिर, मेरे बेटे की मौत के एक हफ्ते बाद, वह बिना कुछ कहे हमारा घर छोड़कर चला गया। मुझे नहीं पता कि वह कहाँ गया। लेकिन वह देर-सवेर जरूर वापस आएगा, क्योंकि उसका ज्यादातर सामान अभी भी हमारे पास है।
'इसका नाम क्या है?'
‘अनिकेंद्र सोम। हम उसे अनिक कहते हैं।’

पाँच
आधे घंटे बाद, हमने नहा लिया था और होटल के रेस्तरां, निर्वाणा में दोपहर का भोजन करने के लिए नीचे आ गए थे। मुझे उम्मीद नहीं थी कि हमारे आने के तुरंत बाद ही चीजें इतनी तेजी से बदल जाएंगी। कलकत्ता में श्री सोम की हत्या, काठमांडू में हिमाद्री चक्रवर्ती की मौत, फर्जी श्री बत्रा—ये सब निस्संदेह आपस में जुड़े हुए थे। क्या श्री सोम चाहते थे कि फेलुदा उनके दोस्त की मौत की जांच करे? क्या उनकी मौत वाकई नकली दवा का इंजेक्शन लगने से हुई थी?
एक वेटर हमारा ऑर्डर लेने आया। लालमोहन बाबू ने मेनू पर नज़र डाली और पूछा, 'मोमो क्या होता है?'
‘सर, ये सॉस में डूबे हुए मीट बॉल्स हैं,’ वेटर ने जवाब दिया।
फेलुदा ने उनसे कहा, 'यह तिब्बती व्यंजन है। इसे चखकर देखिए, लालमोहन बाबू। जब आप कलकत्ता लौटेंगे, तो अपने दोस्तों को बता सकते हैं कि आपने वही खाना खाया जो दलाई लामा ने खाया था।'
'ठीक है, मेरे लिए एक मोमो दे दीजिए, कृपया।'
वेटर ने हमारा ऑर्डर ले लिया और चला गया। अब लालमोहन बाबू ने हल्के हरे रंग का कार्ड निकाला।
उन्होंने कहा, 'काउंटर पर बैठे एक आदमी ने मुझे यह दिया, लेकिन मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या करूं। मैं 'कैसिनो' शब्द तो पहचानता हूं, लेकिन यह सब क्या है? जैकपॉट, पोंटून, रूलेट, ब्लैकजैक... और देखो, इस पर लिखा है कि इसकी कीमत पांच डॉलर है। इसका क्या मतलब है?'
फेलुदा ने समझाया, ‘यहाँ एक बहुत प्रसिद्ध होटल है, जिसमें जुआ खेलने के लिए एक बड़ा कैसीनो है। जो शब्द आप पढ़ रहे हैं, वे विभिन्न प्रकार के जुए के नाम हैं। हमारे देश में सार्वजनिक स्थानों पर जुआ खेलना प्रतिबंधित है, इसलिए आपको किसी भी भारतीय होटल में कैसीनो नहीं मिलेगा। आप उस कार्ड को कैसीनो में दिखाकर किसी भी खेल में अपनी किस्मत आजमा सकते हैं। आप अपनी जेब से कुछ भी खर्च किए बिना पाँच डॉलर तक खर्च कर सकते हैं।’
अरे वाह, यह तो दिलचस्प लग रहा है! क्यों न हम...?
मैंने कहा, 'मुझे कोई आपत्ति नहीं है!'
‘हाँ। अगर गाजर घोड़े की नाक के ठीक सामने लटक रही हो तो वह उसका विरोध कैसे कर सकता है? आपका क्या कहना है, फेलू बाबू?’
'घोड़ा? काम खत्म होने पर आपको शायद मूर्खता का एहसास हो। लेकिन फिर, अगर आप भाग्यशाली रहे, तो कौन जानता है कि क्या हो सकता है?'
हमने कैसिनो में एक शाम बिताने का फैसला किया। हमारे होटल ने बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के परिवहन की व्यवस्था कर दी।

हमारा खाना आ गया। लालमोहन बाबू ने अपने मोमो का स्वाद चखते हुए कहा, 'स्वादिष्ट! मुझे कहीं से इसकी रेसिपी जरूर लेनी होगी। मेरे घर पर एक बेहतरीन रसोइया है, मुझे पूरा यकीन है कि वो मेरे लिए इसे बना देगा। छह महीने तक इसे खाने से तो इंसान वाकई में आकर्षक दिखने लगता है।'
दोपहर के भोजन के बाद हम बाहर निकले। फेलुदा ने कहा, 'चलो दरबार स्क्वायर चलते हैं। मुख्य पुलिस थाना वहीं है। मुझे वहाँ जाना ही होगा। तुम दोनों इधर-उधर घूम लो, फिर कहीं मुझसे मिल लेना।'
दरबार चौक ने हम सबको चौंका दिया। यह मुझे शतरंज के खेल के दौरान शतरंज की बिसात की याद दिला रहा था। जैसे शतरंज की बिसात अलग-अलग स्थितियों में बिछी होती है, वैसे ही दरबार चौक महलों, मंदिरों, मूर्तियों और स्तंभों से भरा हुआ था। इनके बीच सैकड़ों लोग अपने-अपने काम में लगे हुए थे और यातायात लगातार चलता रहता था। दूर से देखने पर यह कुछ-कुछ वाराणसी जैसा लग रहा था। लेकिन वाराणसी में सभी प्रसिद्ध मंदिर संकरी गलियों में छिपे हुए थे। यहाँ सड़कें बहुत चौड़ी थीं। पुराने राजमहल के सामने एक विशाल खुला मैदान था। जब राजा लोगों से मिलने के लिए बालकनी पर खड़े होते थे, तब वहाँ बहुत सारे लोग आते होंगे।
फेलुदा ने नक्शा देखा। ‘सीधे चलते रहिए, आपको जल्द ही काल भैरव की प्रतिमा मिल जाएगी। मैं आधे घंटे में वहीं आपसे मिलूंगा।’ यह कहकर वह चला गया। लालमोहन बाबू और मैं चलने लगे। पुरानी इमारतों के लकड़ी के दरवाजों, खिड़कियों और यहाँ तक कि छतों पर की गई अद्भुत नक्काशी देखकर मैं दंग रह गया। मैंने सुना था कि नेपाल अपनी लकड़ी की कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है। अब मुझे समझ में आ गया कि ऐसा क्यों था। वहाँ कुछ हिंदू मंदिर थे, जो भारत के मंदिरों की शैली में बने थे। और वहाँ कई परतों में बने पैगोडा थे, जिनमें से प्रत्येक परत ऊपर जाने पर संकरी होती जाती थी।
हालांकि, दरबार स्क्वायर सिर्फ धार्मिक स्थल नहीं था। वहां चारों ओर एक विशाल बाजार फैला हुआ था। फुटपाथों, गलियारों और सीढ़ियों पर सब्जियों से लेकर कपड़ों तक हर तरह की चीजें बिक रही थीं। लालमोहन बाबू और मैं एक छोटी सी दुकान पर रुके, जहां आकर्षक नेपाली टोपियां बिक रही थीं। उन्होंने अपनी छोटी लाल नोटबुक फिर से निकाली।
मुझे अपने लिए एक अच्छी सी टोपी पसंद आई और मैंने अभी उसकी कीमत को लेकर मोलभाव शुरू ही किया था कि लालमोहन बाबू ने मुझे कोहनी मारी। ‘तपेश!’ उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा। मैं मुड़ा तो देखा कि वह किसी चीज को टकटकी लगाकर देख रहे थे।
कुछ ही गज की दूरी पर बत्रा परिवार के दो सदस्यों में से एक खड़ा था। वह सिगरेट जला रहा था। फिर वह हमारी तरफ देखे बिना ही चला गया।
क्या आपने कभी अपने चचेरे भाई को बाएं हाथ से लाइटर का इस्तेमाल करते देखा है?
'नहीं।'
‘इस आदमी ने किया।’
'हां, मैंने उसे देखा। फिर उसने उसे अपनी बाईं जेब में रख लिया।'
क्या हमें उसका अनुसरण करना चाहिए?

‘क्या आपको लगता है कि उसने आपको देखा?’
'नहीं।'
'ठीक चलो चलते हैं।'
हमें फेलुदा से मिलने के लिए अभी बीस मिनट और इंतजार करना था। हम दोनों उछलकर आगे बढ़े।
हमारे सामने एक मंदिर था। वह आदमी भीड़ में कहीं गायब सा हो गया। लेकिन मंदिर से आगे निकलने के बाद हमने उसे फिर देखा। वह एक गली में जा रहा था। हम उसके पीछे-पीछे चले, लगभग बीस गज की दूरी बनाए रखते हुए।
गली के दोनों ओर छोटी-छोटी दुकानें और रेस्तरां थे। कई दुकानों के साइनबोर्ड पर 'पाई शॉप' लिखा हुआ था। मुझे हर जगह खाने की खुशबू आ रही थी।
हिप्पियों का एक समूह टहलते हुए आया। जैसे ही वे हमारे पास से गुजरे, खाने की खुशबू पल भर के लिए गांजे, पसीने और बिना धुले कपड़ों की गंध में दब गई। ‘अरे नहीं!’ लालमोहन बाबू ने कहा। वह आदमी हमारे दाहिनी ओर एक दुकान में चला गया था।
अब हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें उसके बाहर आने का इंतजार करना चाहिए? अगर उसे बहुत देर हो गई तो क्या होगा? हमारे पास सिर्फ पंद्रह मिनट बचे हैं।
मैंने कहा, 'चलो दुकान के अंदर चलते हैं। वह हमें नहीं जानता। हम बिल्कुल सुरक्षित हैं।'
'हाँ आप ठीक कह रहे हैं।'
हम अंदर दाखिल हुए। यह तिब्बती हस्तशिल्प की दुकान थी। सामने के दरवाजे के सामने एक काउंटर था। उसके पीछे एक और खुला दरवाजा था, जो एक अंधेरे कमरे में जाता था। दूसरे श्री बत्रा शायद इसी कमरे में चले गए होंगे, क्योंकि उनका कहीं कोई अता-पता नहीं था। 'जी?' एक आवाज आई। तभी मैंने देखा कि काउंटर के पीछे एक तिब्बती महिला खड़ी थी, जो विनम्रता से मुस्कुरा रही थी। उसके बगल में एक बूढ़ा आदमी बैठा था, जिसका चेहरा मुरझाया हुआ और झुर्रियों से भरा था। वह ऊंघता हुआ प्रतीत हो रहा था।
ज़ाहिर सी बात है, हमें ऐसा दिखाना पड़ा कि हम कुछ खरीदने आए हैं। चुनने के लिए वाकई बहुत सारी चीज़ें थीं—मुखौटे, टंका, प्रार्थना चक्र, पीतल के बर्तन, मूर्तियाँ।
‘मुझे मोमो पसंद है,’ लालमोहन बाबू ने बिना किसी स्पष्ट कारण के कहा। ‘माफ़ कीजिए महोदय, लेकिन यह आपको रेस्तरां में मिलेगा, यहाँ नहीं,’ महिला ने जवाब दिया।
‘नहीं, नहीं, नहीं,’ लालमोहन बाबू ने ज़ोर से सिर हिलाया। ‘मैं इसे नहीं खाना चाहता।’
उस महिला ने अपनी हल्की भौंहें ऊपर उठाईं। 'मुझे लगा कि आपने अभी-अभी कहा कि आपको यह पसंद आया!'
नहीं। हाँ, मेरा मतलब है—अभी नहीं। अभी मुझे जो चाहिए—मेरा मतलब है—’ मैंने उसे रोकने के लिए हाथ उठाया। मैंने पूछा, 'क्या आपके पास तिब्बती व्यंजनों की किताब है?' जबकि मुझे अच्छी तरह पता था कि उनके पास ऐसी कोई किताब नहीं है।

महिला ने कहा, 'माफ़ कीजिए।'
हमने जल्दी से 'धन्यवाद' कहा और बाहर आ गए। अब हमारे पास चुपचाप उसी रास्ते से वापस जाने और काल भैरव की मूर्ति ढूंढने के अलावा कोई चारा नहीं था। रास्ते में हमने थोड़ी देर रुककर कुछ नेपाली टोपियाँ खरीदीं।
वह कितनी भयानक मूर्ति थी! दिन दहाड़े भी उसे देखकर मुझे डर लग गया। पता नहीं रात में उसे देखकर लोगों को कैसा लगता होगा।
फेलुदा पांच मिनट बाद पहुंचा। पुलिस स्टेशन का मुख्य द्वार मूर्ति के ठीक सामने था। हम दोनों उसे अपने छोटे से कारनामे के बारे में बताने के लिए बेताब थे, लेकिन मैं यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह आखिर पुलिस स्टेशन गया ही क्यों था। 'मैं अभी-अभी पुलिस अधिकारी श्री राजगुरुंग से मिला। उन्होंने कहा कि अगर नेपाल सरकार आधिकारिक तौर पर मदद करने के लिए सहमत हो जाती है, तो वे हर तरह से सहयोग करेंगे। वह बहुत ही अच्छे इंसान लगे।'
‘वह आदमी यहाँ है, फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने अचानक कहा। मैंने उन्हें पूरी बात समझाई।
'क्या आपको यकीन है कि आपने उसे अपने बाएं हाथ से सिगरेट जलाते हुए देखा?' ‘हां। हम दोनों ने उसे देखा था!’
‘बहुत बढ़िया,’ फेलुदा ने कहा। ‘हमें कल श्री बत्रा को सूचित करना होगा। देखिए, आप क्यों न अपना काम जारी रखें? मुझे अभी होटल वापस जाकर कुछ फोन करने हैं।’
मुझे अंदर से ऐसा लग रहा था कि फेलुदा काठमांडू में ज्यादा घूमने-फिरने नहीं जाएगा।

छह
हमारे होटल के बाहर मुख्य चौराहे से दाईं ओर मुड़ने पर शुक्र पथ आता था, जो सीधे एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में जाकर मिलता था। एक बड़ा ढका हुआ क्षेत्र छोटी-छोटी दुकानों की कतारों से भरा हुआ था। इनमें से प्रत्येक दुकान में आयातित सामान बिकता था, जिनमें कपड़े, घड़ियां, टेप रिकॉर्डर, रेडियो और कैलकुलेटर से लेकर लेखन सामग्री, मिठाइयां और चॉकलेट तक शामिल थे।
‘मेरा मन कर रहा है कि मैं जोर से चिल्लाऊं!’ लालमोहन बाबू ने इन्हीं दुकानों में से एक के बाहर खड़े होकर यह घोषणा की।
'क्यों?'
‘ये सारी दुकानें, मेरे प्यारे बेटे, ज़रा इन सब चीज़ों को देखो! ये हम जैसे लोगों के लिए तो नहीं हैं, है ना? मुझे यकीन है कि इन सभी दुकानों में जॉन डी. रॉकफेलर जैसे लोग या शायद बॉम्बे के सुपरस्टार जैसे लोग आते होंगे?’ लेकिन अंत में, वह लालच में आ गया और उसने दो मीटर हल्के नारंगी रंग का जापानी टेरीवूल कपड़ा खरीद लिया। उसने मुझसे कहा, 'मुझे नई पतलून चाहिए।' दुकान वालों ने अगले दिन शाम 4 बजे तक पतलून सिलवाने का वादा किया।
‘यह रंग लामाओं की भूमि के लिए सबसे उपयुक्त होगा, क्या आप सहमत नहीं हैं?’ दुकान से बाहर निकलते हुए, बेहद प्रसन्न होकर उन्होंने पूछा। मैं उनकी खुशी को कम नहीं करना चाहता था, लेकिन यह बताना मेरा कर्तव्य बन गया कि नेपाल को लामाओं की भूमि कहना मुश्किल है, क्योंकि यहाँ की अस्सी प्रतिशत आबादी हिंदू है।
हम होटल वापस आए तो देखा कि फेलुदा अपनी नोटबुक में कुछ लिख रहा था। उसने कहा, 'बैठ जाओ। मैंने डॉक्टर को बुला लिया है।'
डॉक्टर? क्या वह अस्वस्थ थे?
हम तुरंत सोफे पर बैठ गए और चिंता भरी निगाहों से उसे देखने लगे। फेलुदा को लिखने में कुछ मिनट लगे। फिर उसने नोटबुक एक तरफ रख दी और समझाया, 'मैंने डॉक्टर दिवाकर को फोन किया है, वही डॉक्टर जिन्होंने हिमाद्री चक्रवर्ती को टिटनेस का इंजेक्शन लगाया था। वे आम तौर पर धर्म पथ पर स्थित स्टार डिस्पेंसरी में मरीजों को देखते हैं। मुझे बेशक उनकी फीस देनी होगी, लेकिन इसमें कोई चारा नहीं है। मैं उनसे यहीं बात करना ज्यादा पसंद करूंगा।'
'इस जांच में ड्रग्स और औषधियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती प्रतीत होती हैं,' लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
‘सिर्फ़ महत्वपूर्ण ही नहीं, लालमोहन बाबू,’ फेलुदा ने कहा। ‘मेरा मानना है कि इस पूरे दुखद घटनाक्रम में उनकी अहम भूमिका है।’
‘श्री सोम की नोटबुक में जिस सर्जिकल एसिड का जिक्र था, उसका क्या? क्या वह
— ’

‘लाइसर्जिक एसिड, सर्जिकल नहीं। लेकिन फिर—’

'[[[[[[[[[[['
‘[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?’
'[[[, [[[[[[[[[[[[['
[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[?
‘[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[—’
[[[[, [[[[, [[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

डॉक्टर का चेहरा लाल हो गया। 'यह कैसे संभव है, श्री मिटर? जब किसी मरीज को आपातकालीन स्थिति में तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता होती है, तो मैं अपनी सभी दवाओं की जांच कराने में समय कैसे बर्बाद कर सकता हूँ?'
‘आप अपनी दवाइयां कहां से लेते हैं?’
थोक विक्रेताओं से। प्रत्येक बैच पर एक संख्या और समाप्ति तिथि अंकित होती है—
क्या आपको नहीं पता कि इनकी नकल की जा सकती है? इस रैकेट में शामिल लोगों का उन प्रिंटरों से गुप्त समझौता है जो इन लेबलों को छापते हैं। संख्याएँ, तारीखें, यहाँ तक कि प्रसिद्ध विदेशी दवा कंपनियों के नाम भी स्थानीय स्तर पर छापे जा सकते हैं। यकीनन, आप इससे अनजान नहीं होंगे?
डॉक्टर दिवाकर को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उन्हें कोई उचित जवाब न सूझ रहा हो। 'सुनिए डॉक्टर,' फेलुदा ने नरम स्वर में कहा, 'मैं आपको वचन देता हूँ कि किसी को भी इस बारे में पता नहीं चलेगा। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अपने टिटनेस रोधी इंजेक्शन के एक एम्प्यूल की जाँच करवा लें। फिर मुझे बताइए कि प्रयोगशाला की रिपोर्ट में क्या आता है। जैसा कि आप जानते हैं, हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।'
डॉ. दिवाकर धीरे-धीरे उठे और दरवाजे की ओर चलने लगे। उन्होंने कहा, 'कल मुझे एक अत्यावश्यक मामला देखना है। मैं परसों आपसे संपर्क करूंगा।' 'बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी मदद की बहुत सराहना की जाएगी।'
इसमें कोई शक नहीं था कि हम एक बेहद जटिल मामले में उलझ गए थे। जितना मैंने देखा, उतना ही श्री सोम के प्रति मेरा सम्मान बढ़ता गया। फेलुदा अपने हत्यारे को किसी भी कीमत पर भागने नहीं देगा, चाहे वह कोई भी हो।
रात के खाने के बाद फेलुदा ने कहा, 'चलो टहलने चलते हैं।' जैसे ही वह दरबार स्क्वायर की ओर चलने लगा, मुझे उसके इरादे पर थोड़ा शक होने लगा। मेरा शक तब पक्का हो गया जब वह पुराने शाही महल के सामने रुका और बोला, 'ठीक है, तो कौन सी गली थी?'
रात में दरबार चौक का नज़ारा बिलकुल अलग था। मंदिरों में घंटियाँ बज रही थीं, कहीं से हिंदी गीत की धुन सुनाई दे रही थी, और पर्यटकों और साइकिल रिक्शा की भीड़ के कारण चलना मुश्किल हो रहा था। हमें सही लेन ढूंढने के लिए धक्का-मुक्की करनी पड़ी।
फेलुदा ने कहा, 'हिप्पी लोग इसे सूअरों की गली कहते।' हम पाई की दुकानों के पास से गुज़रे और आखिरकार हस्तशिल्प बेचने वाली दुकान मिल गई।
दुकान अभी भी खुली थी। काउंटर के सामने कुछ ग्राहक खड़े थे। वही महिला काउंटर के पीछे खड़ी थी। बूढ़ा आदमी जा चुका था।
फेलुदा ने बाहर से इमारत का जायजा लिया। इसमें दो मंजिलें थीं। दुकान भूतल पर थी। पहली मंजिल पर गली की ओर दो खिड़कियाँ थीं। दोनों बंद थीं, लेकिन एक दरार से हल्की रोशनी दिखाई दे रही थी।
दुकान के दूसरी ओर एक और संकरी गली थी। इस गली से कुछ ही गज आगे तीन मंजिला इमारत खड़ी थी, जिसके सामने के दरवाजे पर 'हेवन्स गेट लॉज' लिखा हुआ था। देखने में यह किसी दिव्य छवि को नहीं दर्शाती थी, लेकिन यह स्पष्ट रूप से

एक होटल था, जो तिब्बती दुकान के काफी पास स्थित था। हमने दरवाजा खोला और अंदर चले गए।
‘यहाँ कमरों का कितना किराया लगता है?’ फेलुदा ने पूछा।
रिसेप्शन डेस्क के पीछे बैठे व्यक्ति ने कैलकुलेटर पर कुछ हिसाब लगाते हुए जवाब दिया, 'एक के लिए दस। दो के लिए पंद्रह।'
क्या कोई कमरे उपलब्ध हैं?
'आपको कितने की जरूरत है?'
'एक सिंगल और एक डबल रूम, कृपया, अधिमानतः पहली मंजिल पर। लेकिन अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो हम पहले देखना चाहेंगे।'
रिसेप्शनिस्ट ने बिना कुछ कहे घंटी बजा दी। एक नेपाली संदेशवाहक आया। उस सज्जन ने उसे चाबी दी और हमें आगे बढ़ने का इशारा किया। जाहिर है, वह कम बोलने वाले व्यक्ति थे।
हम सामान ढोने वाले के पीछे-पीछे सीढ़ियों से ऊपर चढ़े और एक लंबे गलियारे से नीचे गए। वह दाहिनी ओर के आखिरी दरवाजे के सामने रुका और उसे खोला। हम कमरे में दाखिल हुए। खिड़की पर एक नज़र डालते ही मुझे पता चल गया कि हमारा मिशन सफल रहा। उसके ज़रिए हम तिब्बती दुकान के ऊपर वाले कमरे का एक हिस्सा देख सकते थे।
जब तक लालमोहन बाबू ने कमरे का निरीक्षण किया, लाइट स्विच की जांच की, कंबलों की संख्या की जाँच की और बेयरर को यह समझाने के लिए हर संभव प्रयास किया कि हम वास्तव में कमरा बुक करने आए हैं, तब तक फेलुदा और मैंने वह सब देख लिया था जो देखने लायक था।
दुकान का बूढ़ा आदमी मंद रोशनी वाले कमरे में बैठा था। हमें केवल उसका सिर और कंधे ही दिखाई दे रहे थे। उसके पीछे गत्ते के डिब्बों का ढेर लगा था।
उसके हाथ या तो डिब्बों से कुछ निकाल रहे थे, या उनमें कुछ भर रहे थे।
कमरे में एक और आदमी मौजूद था, हालाँकि हमें उसकी सिर्फ परछाई ही दिखाई दी।
वह बूढ़े तिब्बती व्यक्ति के ऊपर झुका हुआ था और उसे काम करते हुए देख रहा था।
अचानक, मेरी धड़कन रुक गई।
उस परछाई ने अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और एक सिगरेट अपने होठों के बीच रखी। फिर उसने एक और वस्तु निकाली।
वह एक लाइटर था।
अब परछाई ने लाइटर को रोशन कर दिया।
अपने बाएं हाथ से।

सात
अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद फेलुदा ने कहा, ‘आज तुम दोनों कुछ और जगहें घूम सकते हो। स्वयंभू, पशुपतिनाथ और पाटन देखने की कोशिश करो। एक दिन के लिए इतना काफी होगा। चलो सन ट्रेवल्स चलते हैं। वे शायद गाड़ी का इंतजाम कर देंगे।’
होटल से बाहर निकलते ही हमारी मुलाकात श्री बत्रा से हो गई। मैंने सोचा, ये तो टेलीपैथी का कमाल है। उन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया। लेकिन देखते ही देखते उनका चेहरा गंभीर हो गया।
उन्होंने हमें बताया, 'वह आदमी यहीं वापस आ गया है। मेरे एक सहकर्मी ने उसे कल न्यू रोड पर एक ज्वैलरी की दुकान से बाहर आते देखा था।'
क्या आपके सहकर्मी को लगा कि आप पोखरा से अप्रत्याशित रूप से लौट आए हैं? श्री बत्रा फिर मुस्कुराए। “नहीं, और मैं आपको बताता हूँ क्यों। देखिए, मेरा “जुड़वा” चटख रंगों का बहुत शौकीन लगता है। कल उसने चटख गुलाबी रंग का पुलओवर और हरी कमीज पहनी हुई थी। जो लोग मुझे अच्छी तरह जानते हैं, वे उसे मुझसे कभी अलग नहीं समझेंगे। खैर, मैंने पुलिस को इसके बारे में बताया। संयोग से मैं एक सब-इंस्पेक्टर को जानता हूँ।”
‘उसने क्या कहा?’
‘उसकी बातों से मुझे काफी तसल्ली मिली है। जाहिर है, पुलिस को इस आदमी के बारे में पहले से ही पता है। उन्हें लगता है कि वह तस्करी में शामिल है, लेकिन किसी अमीर और प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा उसे संरक्षण दिया जा रहा है। इसलिए जब तक वह कोई गलत कदम नहीं उठाता, पुलिस वास्तव में कुछ नहीं कर सकती।’
‘क्या तुमने उसे अपनी असुविधा के बारे में नहीं बताया? उसने वह कुकरी तुम्हारे नाम पर ही खरीदी थी, तुम्हें पता है।’
जी हां, जी हां। मैंने सब-इंस्पेक्टर से पूछा कि क्या यह आदमी अपराध कर सकता है और फिर मुझे फंसा सकता है। जानते हैं सब-इंस्पेक्टर ने क्या किया? वह जोर से हंस पड़ा। उसने कहा, "श्री बत्रा, कृपया यह न सोचें कि नेपाल पुलिस इतनी बेवकूफ है!"
‘अच्छा, तो बात यहीं खत्म होती है। अब तो आप काफी बेहतर महसूस कर रहे होंगे, है ना?’
“जी हाँ।” मुझे सच में बहुत राहत मिली है। और मुझे लगता है कि आपको भी थोड़ा आराम करना चाहिए। काठमांडू में अपना पूरा समय सिर्फ एक अपराधी का पीछा करने में क्यों बिताना? एक सुझाव है, क्यों न आप तराई के राप्ती घाटी में हमारी कंपनी द्वारा अभी-अभी बनाए गए नए वन बंगले में एक दिन बिताएँ? यह वास्तव में एक शानदार जगह है। आपको लेने के लिए गाड़ी का इंतजाम करने के

लिए मुझे बस कुछ घंटों की सूचना चाहिए। दरअसल, अगर मैं खाली रहा तो मैं खुद आपके साथ आ सकता हूँ। आपका क्या ख्याल है?
तराई का नाम सुनते ही मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। लालमोहन बाबू की आँखें भी चमक रही थीं। फेलुदा ने टालमटोल भरे लहजे में कहा, 'देखते हैं क्या होता है।' शुक्र है कि उन्होंने इस विचार को सिरे से खारिज नहीं किया। श्री बत्रा ने 'अलविदा' कहा और चले गए।
‘तुमने उसे उस सुअर-गली में हमने जो देखा उसके बारे में क्यों नहीं बताया?’ लालमोहन बाबू ने उत्सुकता से पूछा।
‘क्योंकि,’ फेलुदा ने उत्तर दिया, ‘मेरी यह आदत नहीं है कि मैं अपनी जांच का हर विवरण हर किसी को बताऊं। और निश्चित रूप से किसी ऐसे व्यक्ति को तो बिल्कुल नहीं जिससे मैं केवल कुछ समय के लिए ही मिला हूं।’
‘मैं समझ गया। मुझे समझ आ गया। फेलू बाबू, मैंने सीख लिया है,’ जटायु ने पश्चाताप भरे स्वर में कहा।
अपने कमरे में लौटते समय, सीढ़ियों पर हमारी मुलाक़ात श्री भौमिक से हुई। उन्होंने एक दवा की बोतल उठाते हुए पूछा, 'क्या आप इसे पहचान सकते हैं?' बोतल के लेबल पर लिखा था, 'बेनाड्रिल एक्सपेक्टोरेंट'। यह एक जानी-पहचानी सी चीज़ थी—मुझे घर पर हर बार खांसी होने पर यही लाल सिरप दिया जाता था। 'हां, मैं बोतल को तो पहचान सकता हूं, लेकिन सिरप का रंग थोड़ा अलग लग रहा है, है ना?' फेलुदा ने पूछा।
“ओह, क्या आपको रंग में कोई अंतर दिख रहा है? तो आप वाकई बहुत ध्यान देने वाले हैं। मुझे तो गंध में अंतर महसूस हुआ।” उन्होंने बोतल का ढक्कन खोला और फेलुदा को दे दिया, जिसने दो-तीन बार सूंघा और कहा, “हाँ, थोड़ा सा अंतर है। आपकी नाक तो बहुत ही संवेदनशील है!”
‘जी हाँ, मुझे पता है! और जानते हो मैं क्या करने वाली हूँ? मैं ये बोतल सीधे केमिस्ट के पास वापस ले जाऊँगी और अपने पैसे वापस माँगूँगी। मैं सच कह रही हूँ। क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि आजकल लगभग हर दवा में मिलावट होती है? अरे, मैंने तो ये भी सुना है कि वे बच्चों के खाने में चॉक मिला देते हैं! मासूम बच्चे भी नहीं बचेंगे!’
हमने श्री बत्रा को बताया था कि मुझे और लालमोहन बाबू को एक दिन के लिए गाड़ी चाहिए। नौ बजे एक जापानी टोयोटा आई। कुछ मिनट बाद जब हम निकले, तो फेलुदा टेलीफोन डायरेक्टरी देख रहे थे। उन्होंने कहा, 'बस स्थानीय दवा दुकानों के पते लिख रहा हूँ।'
काठमांडू जैसी जगह ही ऐसी हो सकती है जहाँ स्वयंभूनाथ (एक बौद्ध स्तूप) और पशुपतिनाथ (एक हिंदू मंदिर) दोनों मौजूद हों।
लालमोहन बाबू ने पशुपति मंदिर से बस इतना कहा, ‘तपेश, तुम नज़ारा देख लो’ और मंदिर के अंदर चले गए। जब वे बाहर आए, तो उनके माथे पर चंदन का लेप लगा हुआ था। स्पष्ट था कि पुजारी ने उन्हें आशीर्वाद दिया था।
यह मंदिर मुख्य रूप से लकड़ी से बना था। इसके द्वार और शिखर सोने और चांदी से मढ़े हुए थे। मुख्य द्वार से अंदर आते ही सबसे पहले नंदी की एक विशाल प्रतिमा दिखाई देती थी, जो सोने से ढकी हुई थी। एक आंगन से आगे बढ़ने पर बागमती नदी दिखाई देती थी। नदी के दूसरी ओर पहाड़ स्थित थे।

स्वयंभू जाने का रास्ता एक पहाड़ी पर सांप की तरह घुमावदार था। हमारी कार सीढ़ियों के सामने रुक गई। हमें बताया गया कि हमें ये सीढ़ियाँ चढ़कर बाकी का रास्ता पैदल तय करना होगा।
सीढ़ियों के पास छोटी-छोटी दुकानें थीं, जिनमें तिब्बती सामान बिक रहा था।
लालमोहन बाबू अचानक एक प्रार्थना चक्र खरीदने के लिए उत्सुक दिखाई दिए। यह वास्तव में एक चक्र नहीं था - एक छड़ी के एक सिरे पर एक छोटा सा डिब्बा लगा हुआ था। डिब्बे से एक चेन लटक रही थी, जिसके सिरे पर एक छोटी सी गेंद लगी हुई थी। छड़ी को घुमाने पर पूरा यंत्र गोल-गोल घूमने लगता था।
ये प्रार्थना चक्र लकड़ी, तांबा, पीतल और हाथीदांत से बने थे। लालमोहन बाबू लकड़ी का एक प्रार्थना चक्र चाहते थे, लेकिन पता चला कि वह बहुत महंगा था। सभी कीमतें, निस्संदेह, धनी अमेरिकी पर्यटकों को ध्यान में रखकर तय की गई थीं। एक आह भरकर लालमोहन बाबू चले गए।
यह स्तूप दो हजार साल पहले पहाड़ की चोटी पर बनाया गया था। इसकी सबसे खास बात इसके नीचे खड़ा एक स्तंभ था। उस पर कई आँखों के जोड़े चित्रित थे, जिससे ऐसा लगता था मानो उन्होंने वर्षों से काठमांडू घाटी में घटी हर घटना को देखा हो; लेकिन हर रहस्य उनके पास सुरक्षित था। वे कभी किसी को नहीं बताएंगे।
जिस समतल खुले मैदान पर स्तूप बना था, वह लोगों और बंदरों से खचाखच भरा हुआ था। 'धिक्कार है इन जानवरों पर! एक ने मुझे धक्का दिया!' मैंने लालमोहन बाबू को चिल्लाते हुए सुना। उस समय हमें यह नहीं पता था कि वह बंदर नहीं था। लेकिन मैं इस बारे में बाद में बात करूंगा।
असली घटना पाटन में घटी, जो बागमती नदी के दूसरी ओर, काठमांडू से तीन मील दूर स्थित था। शहर में प्रवेश करने के लिए हमारी कार को एक विशाल द्वार से होकर गुजरना पड़ा। हम एक दुकान पर रुके और वहाँ से अमेरिकी कोका-कोला के कुछ कैन खरीदे, फिर स्थानीय दरबार स्क्वायर की ओर चल दिए। मैं वहाँ जो कुछ देखा, उसका लंबा-चौड़ा वर्णन नहीं करूँगा। दरअसल, फेलूदा ने मुझे आगाह किया था कि मैं भावनाओं में बह न जाऊँ। घर लौटने पर उन्होंने मुझसे कहा, 'जब तुम नेपाल में अपने रोमांच के बारे में लिखो, तो ध्यान रखना कि वह किसी पर्यटक गाइड की तरह न लगे।'
इतना कहना ही काफी है कि मंदिर, स्तूप, महल, उत्कृष्ट लकड़ी की नक्काशी और सोने के स्तंभ पर स्थापित राजा की प्रतिमा इतनी भव्य थी कि लालमोहन बाबू हर तीन मिनट में विस्मयबोध से भर उठते थे। वे कहते, 'अविश्वसनीय! अतुलनीय! अविश्वसनीय! अद्वितीय! मनमोहक! अविस्मरणीय!' पता नहीं वे कितनी देर तक बोलते रहते अगर हमारा ध्यान किसी घटना की ओर न भटकता।
दरबार स्क्वायर से निकलकर हम दाईं ओर मुड़े और मंगल बाज़ार नामक एक और बाज़ार में पहुँच गए। यह बाज़ार नेपाल और तिब्बत दोनों देशों की हस्तशिल्प और अन्य छोटी-मोटी चीज़ों से भरा हुआ था। हम दुकानों में घूमते हुए सामान देखने लगे। लालमोहन बाबू ने एक बार फिर प्रार्थना चक्रों का निरीक्षण करना शुरू किया। उन्होंने कुछ चक्र उठाए, लेकिन यह कहते हुए अस्वीकार कर दिए, 'इन पर की गई नक्काशी अच्छी नहीं है।' यहाँ चीज़ें स्वयंभू बाज़ार की तुलना में काफ़ी सस्ती थीं।

लगभग पाँच मिनट बाद, हमने एक पुराना घर देखा जहाँ बाज़ार खत्म होता था। उसके सामने एक टेम्पो खड़ा था, जिसमें सामान लादा जा रहा था। यह इलाका शांत था, क्योंकि यह मुख्य बाज़ार की चहल-पहल से कुछ दूरी पर था।
जैसे-जैसे हम करीब पहुंचे, हमें एहसास हुआ कि टेम्पो पर जो सामान लादा जा रहा था, वह और कुछ नहीं बल्कि वही था जिसे लालमोहन बाबू ने पूरे दिन खरीदने की कोशिश में बिताया था - प्रार्थना चक्रों के ढेर के ढेर।
‘यह ज़रूर कोई कारखाना होगा,’ लालमोहन बाबू ने घर को देखते हुए कहा। ‘मुझे लगता है कि यहीं सामान बनता है और काठमांडू भेजा जाता है। मतलब... शायद यहाँ सस्ता मिलता हो। क्या मैं अंदर जाकर पूछ लूँ?’
'हां, यह एक अच्छा विचार है।'
लेकिन हमें निराशा ही हाथ लगी। माल लादने की देखरेख कर रहे व्यक्ति ने सिर हिलाकर कहा, 'नहीं, ये बिक्री के लिए नहीं हैं। ये विशेष ऑर्डर पर बनाए गए थे। आपको मुख्य बाज़ार वापस जाना होगा।'
‘अरे नहीं! बस मेरा ल—’ लालमोहन बाबू अचानक रुक गए और गली में आती हुई एक आकृति को घूरने लगे।
वह एक तिब्बती आदमी था। हमने उसे तुरंत पहचान लिया। उसने अभी भी वही पीली टोपी और लंबा लाल कोट पहन रखा था। उसकी एक आँख दूसरी से छोटी थी। यह वही सुस्त सा बूढ़ा दोस्त था जो उस तंग गली में तिब्बती दुकान पर मिलता था। वह रुका और बगल के दरवाजे से घर में चला गया। या कम से कम, हम उसे अब देख नहीं पा रहे थे। जिस दरवाजे से वह अंदर गया था, वह हमारी जगह से सीधे दिखाई नहीं दे रहा था। अगर हम बाईं ओर वाली गली में कुछ कदम आगे बढ़ते, तो शायद हमें बेहतर दिखाई देता।
अचानक, यह पता लगाना अत्यावश्यक हो गया कि वह आदमी कहाँ चला गया है।
हम बाईं ओर वाली गली में मुड़े और जितना हो सके आराम से चलने लगे। कुछ ही सेकंड बाद, हमें लकड़ी का बना एक दरवाज़ा दिखाई दिया, जिस पर बहुत ही बारीकी से नक्काशी की गई थी। वह अंदर से बंद था। तिब्बती ज़रूर इसी दरवाज़े से अंदर आया होगा और उसे पीछे से बंद कर लिया होगा। लेकिन हम कैसे यकीन कर सकते थे?
आस-पास कोई नज़र नहीं आ रहा था। लेकिन घर के पीछे कोई वाद्य यंत्र बजा रहा था। हम घर के चारों ओर घूमने के लिए फिर मुड़े। इस बार हमें उसका पिछला दरवाज़ा मिल गया। वह आकार में काफ़ी छोटा था और थोड़ा खुला हुआ था। एक नेपाली भिखारी दरवाज़े के सामने बैठा सारिंदा बजा रहा था। उसके पास एक जंग लगा टिन पड़ा था। हमारे आने से उसे ज़रा भी परेशानी नहीं हुई। वह धीमी और कुछ उदास नेपाली धुन बजाता रहा। उसकी आँखें आधी बंद थीं।
लालमोहन बाबू ने टिन में कुछ सिक्के डाले और धीमी आवाज़ में पूछा, 'क्या हम अंदर चलें?'
‘हां, क्यों नहीं?’
'अगर हमें कोई देख ले तो क्या होगा? अगर कोई हमसे पूछे कि हम अंदर क्या कर रहे हैं तो क्या होगा?'
'खैर, हम बस इतना कह सकते हैं कि हम पर्यटक हैं, और एक पुराने घर के अंदर का हिस्सा देखने के लिए उत्सुक थे!'

'सब ठीक है चलो चलते हैं।'
आस-पास सरसरी नज़र डालने पर पता चला कि गली में अभी भी कोई नहीं था। भिखारी बेफिक्र होकर खेलता रहा। हम पीछे के दरवाजे से अंदर चले गए।
वहाँ एक गलियारा था। गलियारा जहाँ समाप्त होता था, वहाँ एक आँगन का कुछ हिस्सा दिखाई दे रहा था। आँगन के उस पार से एक अजीब, लयबद्ध आवाज़ आ रही थी। क्या दूसरी तरफ कमरे थे? हम दबे पांव उस गलियारे से नीचे की ओर बढ़े। हमारे बाईं ओर एक दरवाजा था। हल्के से छूने पर वह खुल गया। जिस कमरे में वह जाता था, वह अंधेरा था। क्या हमें—?
हे भगवान! कदमों की आहट! कोई सामने से आ रहा था। कदमों की आवाज़ तेज़ होती जा रही थी। बहुत जल्द हम पकड़े जाने वाले थे। अचानक मेरा गला सूख गया। अगर गलियारे से नीचे आने वाला वह व्यक्ति हमसे पूछता कि हम कौन हैं, तो मैं जानती थी कि मैं बोल नहीं पाऊंगी।
बाहर बैठा भिखारी अब अलग ही धुन बजा रहा था। यह तेज़ और कहीं ज़्यादा खुशमिजाज़ धुन थी। लेकिन सोचने का समय नहीं था। मैंने लालमोहन बाबू का हाथ पकड़ा और उन्हें बाईं ओर के अँधेरे कमरे में खींच लिया और चुपचाप दरवाज़ा बंद कर दिया। कदमों की आहट दरवाज़े से गुज़रकर घर से बाहर चली गई।
भिखारी ने खेलना बंद कर दिया था। हमें कुछ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। स्पष्ट था कि जो भी अभी घर से बाहर निकला था, वह उससे बात कर रहा था।
मैंने बेबसी से चारों ओर देखा। रोशनदान से रोशनी की एक किरण अंदर आ रही थी। अब मुझे कमरे में कुछ चीज़ें दिखाई देने लगीं। एक डोरी वाला पलंग, एक बड़ा तांबे का कटोरा और एक रैक पर टंगे कुछ कपड़े थे। मेरे दाहिनी ओर एक और दरवाज़ा था, जो दूसरे कमरे में जाता था। एक अजीब सी सहज प्रवृत्ति ने मुझे लालमोहन बाबू को अपने साथ खींचते हुए उस दूसरे कमरे में जाने के लिए मजबूर कर दिया।
कमरे में लकड़ी के टुकड़े और गत्ते के डिब्बे भरे हुए थे। इनके अलावा कुछ मूर्तियाँ, लकड़ी के फ्रेम और एक कोने में तीन प्रार्थना चक्र रखे थे। इस कमरे के पीछे एक बरामदा था। दूसरी तरफ आंगन था। वह अजीब सी आवाज़ बंद हो गई थी। अब एक अलग सी आवाज़ सुनकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। कदमों की आहट वापस आ रही थी। वह आदमी साफ़ तौर पर हमें ढूंढ रहा था।
मैंने उसे गलियारे से नीचे जाते हुए सुना, फिर वह वापस मुड़ा और उस पहले कमरे के बाहर रुक गया जिसमें हम दाखिल हुए थे। कुछ ही सेकंड में वह उस कमरे में घुस गया और उस कमरे का दरवाजा खोल दिया जिसमें हम छिपे हुए थे। मैंने उसे दहलीज पार करते हुए देखा और एक पल के लिए वह झिझका, फिर उसकी नजर हम पर पड़ी।
कमरा लगभग पूरी तरह अंधेरा था, इसलिए मैं उसका चेहरा बिल्कुल नहीं देख पा रहा था। लेकिन मुझे पता था कि मुझे क्या करना है। बिना सोचे समझे, मैं उछल पड़ा और उस आदमी पर हमला कर दिया, उसे दीवार से चिपकाने की कोशिश की। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाया। वह मुझसे काफी लंबा और भारी था। उसने मुझे झटक दिया, फिर मेरी जैकेट के कॉलर से पकड़कर मुझे ज़मीन से उठा लिया। शायद वह मुझे फेंक ही देता, लेकिन तभी लालमोहन बाबू बीच में आ गए और उसकी बांहें पकड़कर उन्हें छुड़ाने की कोशिश की।

वह आदमी हमारी सोच से कहीं ज़्यादा ताकतवर निकला। उसने अपनी कोहनी के एक ज़ोरदार धक्के से लालमोहन बाबू को घुमाकर गत्ते के डिब्बों के ढेर पर गिरा दिया। मैंने अपने हाथ उसकी ठोड़ी के नीचे रखकर उसका सिर जितना हो सके पीछे की ओर झुकाया। लेकिन मुझे महसूस हुआ कि इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ने वाला था क्योंकि वह आदमी अब भी मुझे ऊपर उठाए हुए था, और किसी भी पल मुझे गिरा सकता था।
क्लैंग!
अचानक, मुझे पकड़े हुए हाथ ढीले पड़ गए। मैं अपने पैरों पर, ठोस ज़मीन पर गिर पड़ा।
हमारा विरोधी सिर पर चोट लगने से बेहोश होकर ज़मीन पर पड़ा था। लालमोहन बाबू मेरे बगल में खड़े थे और अपने हाथ में पकड़े लकड़ी के प्रार्थना चक्र को बेसुध होकर घूर रहे थे।
दस सेकंड बाद, हम सड़क पर थे और जितनी तेज़ी से हमारे पैर हमें ले जा सकते थे, उतनी तेज़ी से चल रहे थे।
प्रार्थना चक्र लालमोहन बाबू के थैले में शांति से रखा हुआ था।

आठ
नेपाल आने से पहले, फेलुदा और मैं अक्सर अपने पुराने कारनामों के बारे में बातें करते थे और सोचते थे कि फेलुदा ने जिन बदमाशों का पर्दाफाश किया था, उनका क्या हुआ होगा। लखनऊ का बोनोबिहारी सरकार, जैसलमेर का मंदार बोस, बंबई का श्री गोरे, बनारस का मगनलाल मेघराज—क्या उन्हें उचित दंड मिला था और क्या उन्होंने सबक सीख लिया था? या वे अभी भी कहीं छिपे हुए थे और अपराध के जाल बुन रहे थे? आखिर, वे सब बहुत ही शातिर थे। अरे, उनमें से कुछ तो बाल-बाल बच निकले थे!
हमें जरा भी अंदाजा नहीं था कि काठमांडू में हमें इस तरह की एक मूर्ति इतनी अप्रत्याशित रूप से मिल जाएगी।
जब हम दोपहर बाद पाटन से लौटे, रास्ते में एक रेस्तरां में दोपहर का भोजन करने के बाद (लालमोहन बाबू के लिए दुर्भाग्य से, उनके मेनू में मोमो नहीं था), फेलुदा अपने बिस्तर पर लेटे हुए 'ब्लैक मार्केट मेडिसिन' नामक पुस्तक पढ़ रहे थे। हमारी ओर देखते ही उन्होंने अपनी भौंहें ऊपर उठा लीं। ‘तुम्हें क्या हुआ है? तुम कहाँ थे?’ उसने पूछा। हमने उसे बताया। फेलुदा ने हमारी बात सुनी, बीच-बीच में कुछ सवाल पूछता रहा, और फिर बोला, ‘शाबाश!’ तारीफ सुनकर अच्छा लगा, लेकिन मुझे पता था कि हमने जो किया था वह हम सबके लिए एक बड़ा कदम था। उस घर में कुछ गड़बड़ चल रही थी। मुझे इसमें कोई शक नहीं था।
‘अगर मैं कर सकता, तो मैं आपको वीरता के लिए विशेष पुरस्कार देता,’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘लेकिन चलिए, पहले आपका हथियार देख लेते हैं, लालमोहन बाबू!’ लालमोहन बाबू ने अपने कंधे के थैले से प्रार्थना चक्र निकाला। 'क्या तुमने जांच की है कि इसमें प्रार्थना लिखी है या नहीं?'
‘प्रार्थना? कैसी प्रार्थना?’
‘ओम मणिपद्मेय हूम। यह एक तिब्बती प्रार्थना है। इन शब्दों को कागज के एक टुकड़े पर हजार बार लिखा या छापा जाता है, जिसे फिर पहिये के अंदर रखा जाता है।’
‘सच में? वे इसे कैसे लगाएंगे?’
‘चेन वाले उस छोटे से डिब्बे का ढक्कन एक कैप की तरह खुल जाना चाहिए। आपको उसमें एक कागज का टुकड़ा मिलेगा।’
लालमोहन बाबू ने डिब्बे का ढक्कन घुमाया। वह बड़ी आसानी से खुल गया। उन्होंने अंदर झाँका और कहा, 'जी नहीं, यहाँ प्रार्थना का कोई निशान नहीं है।'
'कुछ भी नहीं?'
लालमोहन बाबू उस खिड़की के पास गए जहाँ रोशनी बेहतर थी और फिर से देखा। 'नहीं—एक मिनट रुको! कुछ तो है। यह रोशनी में चमक रहा है।'

'चलो देखते हैं।'
फेलुदा ने लालमोहन बाबू से प्रार्थना चक्र लिया और उसे मेज पर रखे दीपक के नीचे रखकर डिब्बे में अच्छी तरह से देखा। फिर उसने उसे पलट दिया। उसमें से कांच के कुछ टुकड़े बाहर गिर गए।
'उस बड़े टुकड़े को देखो, फेलुदा। वह कांच का पाइप या कुछ और ही रहा होगा।' 'नहीं, कांच का पाइप नहीं। यह एक एम्प्यूल था। किसी ने गलती से इसे तोड़ दिया होगा, इसलिए उन्होंने इसे फेंक दिया।'
क्या इसका मतलब यह है कि इन प्रार्थना चक्रों का उपयोग नकली दवाइयां भेजने के लिए किया जाता है?
'हां, ऐसा होना बिल्कुल मुमकिन है। वे शायद इन पहियों में एम्प्यूल या कैप्सूल भरते हैं और उन्हें सूअरखाने वाले उस घर में पैकिंग केस में भरकर रखते हैं। वहां से वे थोक विक्रेताओं के पास जाते हैं, जो उन्हें आगे फार्मेसियों और दवा की दुकानों तक पहुंचाते हैं। बताइए, क्या आज आपने जो पैकिंग केस टेम्पो पर लादे जाते देखे, वे वैसे ही थे जैसे हमने उस दूसरे घर में देखे थे?'
‘बिल्कुल एक जैसे,’ लालमोहन बाबू ने उत्तर दिया।
‘मैं समझ गया,’ फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘दूसरा श्री बत्रा ही आपूर्ति का प्रभारी होगा। और अगर वे बड़े पैमाने पर काम कर रहे हैं, तो शायद वे इनमें से कुछ सामान भारत भेज रहे होंगे। पता नहीं उत्तर प्रदेश और बिहार में कितने लोगों का इलाज इन नकली दवाओं से किया जा रहा है। अगर किसी को शक भी हो जाए, तो वे कुछ नहीं करते। हम तो हर तरह की कुप्रथा को अनदेखा करने के इतने आदी हो गए हैं!’
फेलुदा पलंग से उठा और बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगा। लालमोहन बाबू प्रार्थना चक्र घुमाते बैठे रहे। अब तक वे लगभग हमेशा हमारे कारनामों में सिर्फ एक दर्शक ही रहे थे। आज वे खुद मंच पर थे। मैंने अपनी घड़ी देखी। लगभग शाम के 4 बज रहे थे।
मैंने कहा, 'लालमोहन बाबू, क्या अब आपके पतलून लेने का समय नहीं हो गया है?' ‘अरे हाँ, सही कहा! मैं तो उनके बारे में बिल्कुल भूल ही गया था।’ वह उछलकर खड़ा हो गया और बोला, ‘हम आज रात कैसीनो जा रहे हैं, है ना? मैंने ये पैंट खास उसी के लिए बनवाई हैं।’
फेलुदा टहलना बंद कर दिया। फिर उसने अपना सिर ज़ोर से हिलाया, मानो सभी अप्रिय विचारों को दूर भगा रहा हो, और कहा, 'अच्छा विचार है! आज हमने कैसीनो जाने का हक कमा लिया है। हाँ, हम रात के खाने के बाद वहाँ एक घंटा बिताएंगे।'
हम सुबह 8:30 बजे अपने होटल द्वारा व्यवस्थित बस से रवाना हुए।
जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि कैसीनो मुख्य शहर से दूर था। लगभग पंद्रह मिनट तक गाड़ी चलाने के बाद हमारी बस एक पहाड़ी पर चढ़ी, एक गेट से गुजरी, एक लॉन और स्विमिंग पूल के पास से होते हुए आखिरकार कैसीनो के प्रवेश द्वार पर रुक गई। फेलुदा ने हमें पहले ही बताया था कि कैसीनो एक बड़े होटल का हिस्सा है। जब हम बस से उतरे, तो मुझे एहसास हुआ कि कैसीनो अलग से बना हुआ था; वहाँ जाने के लिए वास्तव में मुख्य होटल में प्रवेश करने की आवश्यकता नहीं थी।

लालमोहन बाबू पश्चिमी फिल्मों में लोगों को जिस तरह व्यवहार करते देखते थे, ठीक उसी तरह व्यवहार करने के लिए दृढ़ संकल्पित लग रहे थे। उनका पहनावा भी उसी के अनुरूप था। काठमांडू में बनी नई पतलून, कलकत्ता के न्यू मार्केट से खरीदी गई हल्के हरे रंग की जैकेट और एक नेपाली टोपी ने उनके रूप को और भी आकर्षक बना दिया था।
वह अंदर दाखिल हुए और प्रवेश द्वार के पास बैठे दो सज्जनों को 'हेलो!' कहा, जो हमारे होटल द्वारा दिए गए पांच डॉलर के कार्ड को देख रहे थे। वे चौंककर ऊपर देखने लगे। लेकिन तब तक लालमोहन बाबू अपना कार्ड ध्यान से देखते हुए आगे बढ़ चुके थे। कुछ ही सेकंड बाद, सीढ़ियों से ऊपर आ रही एक जापानी महिला से उनकी टक्कर होते-होते बची। वह ठीक समय पर एक तरफ हट गए, एक शानदार मुस्कान के साथ और 'हेक्स-हेक्स-एक्सक्यूज मी-ही!' कहते हुए। मुझे हँसी रोकने के लिए जल्दी से नज़रें हटानी पड़ीं। हालाँकि, मुख्य कैसीनो के अंदर उनका आत्मविश्वास गायब हो गया। मैंने उन्हें फेलुदा को लुभावनी निगाहों से देखते हुए पकड़ा।
फेलुदा ने कहा, ‘अपने कार्ड को फिर से देख लो। इसमें पाँच अलग-अलग खेलों के लिए पाँच कूपन हैं। मेरा सुझाव है कि तुम पहले जैकपॉट में हाथ आजमाओ, यह सबसे आसान है। अगर तुम इनमें से एक कूपन फाड़कर काउंटर पर जमा करोगे, तो वे तुम्हें एक डॉलर के बराबर नेपाली रुपये देंगे। मुझे लगता है कि तुम्हें लगभग ग्यारह रुपये मिलेंगे। इसका मतलब है कि तुम्हें जैकपॉट जीतने के ग्यारह मौके मिलेंगे। अगर तुम्हारे पैसे खत्म हो जाते हैं और फिर भी खेलना चाहते हो, तो तुम्हें अपनी जेब से पैसे देने होंगे। मुझे तुम्हें यह याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है कि जो लोग रुकना नहीं जानते उनका क्या हाल होता है। महाभारत में युधिष्ठिर के बारे में सोचो!’
काउंटर से पैसे लेने के बाद, लालमोहन बाबू और मैं पास की जैकपॉट मशीन की ओर चल पड़े। फेलुदा अगले कमरे में चला गया, जो बड़ा था और उसमें जैकपॉट के साथ-साथ रूलेट, पोंटून और ब्लैकजैक भी थे।
मैंने लालमोहन बाबू से कहा, 'यह सब बहुत आसान है। देखिए, यह एक स्लॉट मशीन है। आपको बस इतना करना है कि इस स्लॉट में एक सिक्का डालें, जैसे आप वजन मापने वाली मशीन में डालते हैं, और दाईं ओर लगे इस हैंडल को खींचें। बाकी काम मशीन खुद कर लेगी।'
'इसका क्या मतलब है?'
'अगर आप जीतते हैं, तो मशीन से और सिक्के निकलेंगे। अगर आप हारते हैं, तो जाहिर है कुछ नहीं होगा। मशीन बस आपके पैसे निगल जाएगी।'
‘मैं समझ गया। क्या मैं—?’
'हां जारी रखो!'
‘अच्छा, चलो शुरू करते हैं...!’
एक भिनभिनाहट की आवाज़ से हमें पता चला कि पैसा सही जगह पहुँच गया है। तुरंत एक बत्ती जल उठी और एक बोर्ड पर लिखा था, 'सिक्का स्वीकार किया गया'। ‘ठीक है। अब इस हैंडल को खींचो। इसे जोर से खींचो।’
लालमोहन बाबू ने पूरी ताकत से हैंडल खींचा। मशीन पर बने एक छोटे से चौकोर छेद के पीछे तीन चित्र थे: एक पीला फल, एक लाल फल और एक घंटी। हैंडल घुमाते

ही मशीन फिर से चलने लगी और चित्र बदलने लगे। पाँच सेकंड बाद, एक क्लिक की आवाज़ के साथ वे रुक गए और एक अलग संयोजन दिखाई दिया—दो पीले फल और एक नीला फूल।
अगले ही पल मशीन से दो सिक्के बाहर गिरे। ‘देखो, देखो!’ लालमोहन बाबू चिल्लाए। ‘क्या इसका मतलब है कि मैं जीत गया?’
जी हां, बिल्कुल। अब आपके पास दो रुपये हैं। अगर आपकी किस्मत अच्छी रही, तो आप एक रुपया डालकर बदले में सौ रुपये पा सकते हैं। ये रहा चार्ट जो आपको बताता है कि हर कॉम्बिनेशन से आपको कितना मिलेगा। ठीक है?
'ठीक है!'
मैंने अपने लिए एक और मशीन ढूंढ ली। इस छोटे से कमरे में कम से कम दस और मशीनें थीं। एक आदमी कोने में छोटे प्लास्टिक के कटोरे लेकर बैठा था, जिनमें हम अपने सिक्के रख सकते थे। मैंने उससे दो कटोरे लिए और एक लालमोहन बाबू को दे दिया।
देखते ही देखते हम दोनों अपने खेल में पूरी तरह मग्न हो गए। मुझे समय का बिल्कुल भी पता नहीं चला। बस मशीन का हैंडल खींचना और फिर बेसब्री से इंतज़ार करना ही मायने रखता था। सिक्कों से भरे छोटे कटोरे को देखकर मैंने सोचा, आज मेरा भाग्य है। फेलुदा की चेतावनी के बावजूद, मैं खेलना जारी रखना चाहता था। मेरी नज़र लालमोहन बाबू पर पड़ी जो काउंटर पर जाकर अपने सिक्के नोटों में बदल रहे थे। वो भी जीत रहे थे।
हालांकि, इसी समय फेलुदा एक युवती के साथ वहां आ पहुंचा।
‘हम थोड़ा आराम करेंगे,’ उसने कहा, बिलकुल मजा किरकिरा करने वाले अंदाज में।
‘क्यों, महोदय?’ लालमोहन बाबू ने बीच में टोके जाने से चिढ़कर पूछा। ‘हमें 433 में वांछित हैं।’
'क्या?'
युवती ने जल्दी से समझाया, 'आपका एक दोस्त कमरा नंबर 433 में ठहरा हुआ है। उसने आपसे विशेष अनुरोध किया है कि आप उससे मिलने जाएं।'
‘यह दोस्त कौन है?’ लालमोहन बाबू अब भी गुस्से में दिख रहे थे।
उन्होंने मुझे अपना नाम नहीं बताया, लेकिन कहा कि आप उन्हें बहुत अच्छी तरह जानते हैं।
फेलुदा ने कहा, 'चलो उससे मिलते हैं। मुझे बहुत उत्सुकता हो रही है। वैसे भी, हम दस मिनट में वापस आ सकते हैं।'
कुछ अनिच्छा से ही सही, लालमोहन बाबू और मैं जाने के लिए मुड़े। वह महिला हमारे साथ लिफ्ट तक आई, फिर 'नमस्कार' कहकर चली गई। वह होटल की कर्मचारी रही होगी।
कमरा नंबर 433 एक लंबे गलियारे के आखिर में आखिरी कमरा निकला। फेलुदा ने घंटी बजाई। एक कर्कश आवाज आई, 'अंदर आ जाओ!' दरवाजा खुला हुआ था। फेलुदा ने दरवाजा धक्का देकर खोला और अंदर चला गया। लालमोहन बाबू और मैं भी उसके पीछे-पीछे गए।
विशाल बैठक कक्ष में केवल एक ही दीपक जल रहा था। दूर कोने में सोफे पर कोई बैठा था, लेकिन दीपक ठीक उसके पीछे होने के कारण हम उसका चेहरा स्पष्ट रूप

से नहीं देख पा रहे थे। उसके सामने एक वीडियो चल रहा था जिसमें कोई अमेरिकी फिल्म दिखाई जा रही थी। कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद, उस व्यक्ति ने बोलना शुरू किया। 'अंदर आइए, श्रीमान!' उसने कहा। 'अंदर आ जाइए, अंकल!'
मेरा सिर चकराने लगा और मेरे घुटने अचानक कांपने लगे।
मैं इस आवाज को अच्छी तरह जानता था। हम सब जानते थे। यह उस व्यक्ति की आवाज थी जिससे हम सबसे पवित्र स्थान वाराणसी में मिले थे; और फेलुदा ने खुलकर स्वीकार किया था कि यह व्यक्ति उन सभी अपराधियों में सबसे कठोर था जिनसे उसे कभी निपटना पड़ा था।
Maganlal Meghraj.
यह खतरनाक बदमाश काठमांडू में क्या कर रहा था?

नौ
‘बैठ जाइए,’ मगनलाल ने वीडियो बंद करते हुए कहा। लालमोहन बाबू और मैं सोफे पर बैठ गए, फेलुदा ने कुर्सी ले ली।
‘तो, श्रीमान मिटर?’
फेलुदा ने कुछ नहीं कहा। मेरी तरह, वह भी मगनलाल को सीधे देख रहा था। इन कुछ सालों में उसमें ज़्यादा बदलाव नहीं आया था। वह अब भी धोती और शेरवानी पहने हुए था। शेरवानी तो साफ़ तौर पर किसी माहिर दर्ज़ी ने बनाई थी। बेशक, उसके आस-पास का माहौल बदल गया था। बनारस की एक संकरी गली में स्थित एक अंधेरा और गंदा घर, पाँच सितारा होटल के इस आलीशान सुइट से बिलकुल अलग था। ‘इस बार, मुझे उम्मीद है, आप सचमुच छुट्टी पर हैं, श्री मित्तर?’ मगनलाल ने पूछा।
‘नहीं, मगनलाल जी, ऐसा नहीं है,’ फेलुदा ने प्रसन्नता से कहा। ‘कुछ लोगों की किस्मत में काम और मौज-मस्ती को मिलाए बिना छुट्टी बिताना लिखा ही नहीं है। मैं भी उन्हीं में से एक हूँ।’
‘श्री मित्तर, आपका यहाँ क्या काम है?’ मगनलाल ने टेलीफोन उठाया। ‘चाय या कॉफी? यहाँ आपको बेहतरीन दार्जिलिंग चाय मिल जाएगी।’
‘तो फिर चलिए चाय पीते हैं।’
मगनलाल ने रूम सर्विस को फोन किया, हम सबके लिए चाय मंगवाई और फिर से फेलुदा की ओर मुड़ा। 'आप भारत में बहुत बड़े हीरो हैं, श्री मित्तर। लेकिन नेपाल एक विदेशी देश है। क्या आप यहाँ बहुत से लोगों को जानते हैं?' ‘अच्छा, लगता है मुझे कम से कम एक परिचित व्यक्ति मिल ही गया!’ मगनलाल ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा। उसकी निगाहें फेलुदा के चेहरे से हटी ही नहीं। ‘क्या आपको मुझे यहाँ देखकर आश्चर्य हुआ?’
‘हां, मैं थोड़ा उत्सुक हूं,’ फेलुदा ने एक चारमीनार जलाई। ‘आपको जेल के बाहर ढूंढने के लिए नहीं—मुझे पता है कि आपके पास समय से पहले रिहाई का इंतजाम करने के लिए सभी जरूरी संपर्क हैं—बल्कि आपको बनारस के बाहर देखने के लिए।’
‘क्यों? बनारस एक पवित्र स्थान है, और काठमांडू भी। वहाँ बाबा विश्वनाथ हैं, और यहाँ पशुपतिनाथ हैं। मेरा कर्म, आप जानते हैं, धर्म के स्थानों से जुड़ा है! आपका क्या कहना है, चाचाजी?’
‘हे हे!’ लालमोहन बाबू ने हंसने की कोशिश की। मैं देख सकता था कि उनका चेहरा पीला पड़ गया था। अर्जुन द्वारा चाकू फेंकने की सारी भयावहता उनके दिमाग में ताजा हो गई होगी।
‘आप अपने कर्मों की बात कर रहे हैं, मगनलालजी,’ फेलुदा ने लापरवाही से कहा। ‘क्या उसमें किसी तरह की दवाइयाँ या ड्रग्स शामिल हैं?’

मेरी रीढ़ की हड्डी में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई। फेलुदा इतना लापरवाह कैसे हो सकता है?
‘नशीली दवाएं? औषधियां? आप किस बारे में बात कर रहे हैं?’ मगनलाल पूरी तरह से अचंभित लग रहा था।
'अगर आपका उनसे कोई लेना-देना नहीं है, तो क्या आप मुझे यह बताने में कोई आपत्ति नहीं करेंगे कि आप यहां क्या कर रहे हैं?'
'नहीं, बिलकुल नहीं। लेकिन हमें उचित लेन-देन करना होगा।'
‘ठीक है। तुम पहले जाओ।’
‘यह सब बहुत सरल है, श्रीमान मिटर। मैं एक कला व्यापारी हूँ—आप जानते हैं कि मुझे मूर्तियाँ और चित्रकलाएँ पसंद हैं, है ना? नेपाल में कई घर ऐसी चीजों से भरे पड़े हैं। मेरा काम उन्हें इकट्ठा करना है।’
फेलुदा चुप रहा। मुझे लालमोहन बाबू की भारी साँसें सुनाई दे रही थीं।
अब आप मुझे अपने बारे में बताइए।
'मुझे नहीं लगता कि आपने मेरे साथ पूरी ईमानदारी बरती है,' फेलुदा ने जवाब दिया, 'लेकिन मैं बिल्कुल स्पष्टवादी होने जा रहा हूं। मैं यहां एक हत्या की जांच करने आया हूं।'
‘हत्या?’
'हाँ।'
‘आपका मतलब श्री सोम की हत्या से है?’
मैं अवाक रह गया। लालमोहन बाबू ने गहरी साँस ली। केवल फेलुदा के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। 'जी हाँ, मगनलालजी,' उन्होंने शांत स्वर में कहा। 'श्री अनिकेंद्र सोम।'
एक वेटर चाय लेकर आया। उसने ट्रे को मगनलाल के सामने एक मेज पर रख दिया। वेटर के चले जाने के बाद फेलुदा ने आगे कहा, 'मेरा मानना है कि श्री सोम ने किसी खास व्यक्ति को कुछ चिंता का कारण बनना शुरू कर दिया था। इसलिए उन्हें वहां से हटाना आवश्यक था।'
मगनलाल ने चीनी डालना शुरू किया। चीनी का बर्तन पकड़े हुए उसने मुझसे पूछा, 'एक या दो?' बर्तन चीनी के टुकड़ों से भरा हुआ था।
‘एक, कृपया,’ मैंने जवाब दिया। मगनलाल ने मेरे कप में एक क्यूब डाला और मुझे दे दिया। फिर वह लालमोहन बाबू की ओर मुड़ा, जो खुले संदेह से क्यूब्स को देख रहा था। मैं जानता था कि वह हिप्पियों और एलएसडी के बारे में सोच रहा था।
‘आपका क्या ख्याल है, अंकल?’ दो? तीन?’
‘नहीं, नहीं।’
‘बिल्कुल भी चीनी नहीं?’
नहीं, धन्यवाद।
मैंने हैरानी से उसकी तरफ देखा। हम सब जानते थे कि उसे मीठा बहुत पसंद था। 'आप मुझे आश्चर्यचकित कर देते हैं, चाचा जी,' मगनलाल ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। 'आप मना क्यों कर रहे हैं?'
इस बार लालमोहन बाबू ने मुझे तिरछी नज़र से देखा और कहा, 'ठीक है। एक दे दीजिए।' शायद मेरे द्वारा एक क्यूब स्वीकार करने से उन्हें हिम्मत मिली।

फेलुदा को भी एक क्यूब दिया गया। वह बोलने लगे, 'मुझे लगता है कि श्री सोम ने एक अवैध रैकेट का पर्दाफाश किया था। वह आगे की पूछताछ करने और मुझसे मिलने के लिए कलकत्ता गए थे। ऐसा करने से पहले ही उनकी हत्या कर दी गई। चूंकि आपको हत्या के बारे में जानकारी है, तो स्वाभाविक रूप से कोई यह जानना चाहेगा कि क्या आप इस मामले में किसी भी तरह से शामिल हैं।'
मगनलाल ने कुछ क्षणों तक फेलुदा को घूरा, उसकी आँखें सिकुड़ी हुई थीं और होंठों पर एक विकृत मुस्कान थी। लालमोहन बाबू और मैंने अपनी चाय की चुस्की ली। यह सचमुच सबसे बेहतरीन दार्जिलिंग चाय थी जो किसी को मिल सकती थी। ‘जगदीश!’ मगनलाल अचानक चिल्लाया। मैं चौंक गया। मगनलाल के पीछे का दरवाजा खुला और एक आदमी चुपचाप कमरे में आया। लालमोहन बाबू ने अपना प्याला मेज पर धड़ाम से रख दिया।
मगनलाल के पीछे खड़ा जगदीश नाम का व्यक्ति दूसरा श्री बत्रा था। उसके रूप-रंग में कुछ मामूली अंतर थे, जो हमें पहली बार इतने करीब से देखने पर ही पता चले। उसकी आँखें हमारे श्री बत्रा की आँखों से हल्की थीं, उसके बाल ज़्यादा सफ़ेद थे, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसकी आँखों में ज़रा भी स्नेह नहीं था।
‘क्या आप इस आदमी को जानते हैं?’ मगनलाल ने पूछा।
हम उनसे मिले नहीं हैं, लेकिन हम उन्हें चेहरे से पहचानते हैं।
‘तो ध्यान से सुनिए, श्रीमान निजी जासूस। जगदीश को परेशान मत कीजिए। मुझे पता है कि आप आने के बाद से ही उसका पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। श्रीमान मित्तर, मैं आपका हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करूँगा। जगदीश मेरा दाहिना हाथ है।’
‘भले ही वह बाएं हाथ से लिखता हो?’
फेलुदा अभी भी हल्के स्वर में बात कर रहा था। मगनलाल के कुछ कहने से पहले ही उसने एक और सवाल पूछ लिया। 'क्या आपको पता है कि एक सज्जन हैं जो बिल्कुल आपके जगदीश जैसे दिखते हैं?'
मगनलाल ने गुस्से से भौंहें चढ़ा लीं। ‘जी हाँ, श्री मित्तर। मुझे पता है। अगर यह दूसरा आदमी आपका दोस्त है, तो उसे सावधान रहने को कहिए। उसे कुछ भी करने से पहले सोचना चाहिए। आपने पशुपतिनाथ मंदिर के पास वाला श्मशान घाट देखा है ना, चाचा जी? आप आज वहाँ गए थे ना?’ बिना कुछ कहे, लालमोहन बाबू ने एक ही घूंट में अपनी चाय खत्म कर दी और सावधानी से कप को मेज पर रख दिया। उनका हाथ थोड़ा कांप रहा था।
अगर बत्रा को लगता है कि वह अपराध करके जगदीश पर दोष मढ़वा सकता है, तो दो दिन के भीतर बत्रा के शव को उसी भूमि में जला दिया जाएगा। अपने दोस्त को बता दो, श्री मित्तर!
'बहुत अच्छा, मैं आपका संदेश पहुंचा दूंगा।'
फेलुदा ने भी अपनी चाय खत्म की और उठ खड़ा हुआ। 'अब हमें विदा लेनी चाहिए, मगनलाल जी। चाय के लिए धन्यवाद। यह सचमुच बहुत अच्छी थी।'
मगनलाल ने कोई टिप्पणी नहीं की। न ही वह अपनी सीट से हिले। उन्होंने बस रिमोट कंट्रोल उठाया और वीडियो दोबारा चालू कर दिया।

दस
मगनलाल से मुलाकात के तुरंत बाद हम अपने होटल लौट आए। हममें से किसी को भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि आगे और भी कुछ होने वाला है।
हमें लाउंज में हरिनाथ चक्रवर्ती हमारा इंतजार करते हुए मिले। यह देखकर हम सब हैरान रह गए। इतनी रात को वे यहाँ क्या कर रहे थे? ग्यारह बज चुके थे। ‘चलो अपने कमरे में चलते हैं,’ फेलुदा ने कहा। हरिनाथ बाबू बिना कुछ कहे हमारे साथ आ गए। वे स्पष्ट रूप से किसी बात को लेकर चिंतित थे।
जब हम सब अपने कमरे में बैठ गए, तो फेलुदा ने पूछा, 'क्या बात है, श्री चक्रवर्ती?'
हरिनाथ बाबू ने कुछ क्षणों तक अपने विचारों को समेटने का प्रयास किया। फिर धीरे से बोले, “जब हिमाद्री अचानक हमें छोड़कर चले गए, तो मैं ठीक से सोच भी नहीं पा रहा था। इसके अलावा, जब उन्हें वापस लाने का कोई रास्ता नहीं था, तो ऐसे मामलों पर चर्चा करना भी व्यर्थ लग रहा था।”
'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?
हरिनाथ बाबू ने कुछ देर रुककर जवाब दिया, “लगभग तीन साल पहले, हिमाद्री ने गांजा और चरस जैसी चीजों की तस्करी करने वाले एक गिरोह का पर्दाफाश किया था। मैंने आपको बताया था ना कि वह अक्सर अपने हेलीकॉप्टर से नेपाल के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर जाते थे। उन्होंने उत्तर में इन तस्करों के अड्डे का पता लगाया और पुलिस को सूचना दी। पूरा गिरोह पकड़ा गया।”
'क्या आप हमें यह बता रहे हैं कि अपनी मृत्यु से ठीक पहले, उसे किसी अन्य गिरोह से जुड़ी किसी बात का पता चला था?'
‘उसने मुझे कुछ नहीं बताया। लेकिन उसकी मृत्यु से कुछ दिन पहले, मैंने उसे अपने दोस्त के साथ किसी बात पर बड़े जोश से चर्चा करते देखा। मैंने उससे कहा कि इन मामलों में दखल न दो। ये अपराधी बिल्कुल निर्दयी हो सकते हैं। लेकिन वह केवल हँसा और मुझसे कहा कि चिंता न करो।’
'मेरा मानना है, श्री मिटर, मेरा बेटा वैसे भी मर जाता। अगर टिटनेस के हमले से उसकी मौत नहीं होती, तो ये बदमाश किसी न किसी तरह उसकी जान ले लेते।'
'आप ऐसा क्यों कह रहे हो?'
हरिनाथ बाबू ने कागज का एक टुकड़ा निकाला और उसे फेलुदा को दे दिया। उस पर लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ था।
'उनकी मृत्यु के बाद हमें यह उनकी पतलून की जेब में मिला।'
क्या यह नेपाली में लिखा है?
हां। इसमें लिखा है, "तुम हद से आगे बढ़ गए हो"।
फेलुदा ने कागज का टुकड़ा हरिनाथ बाबू को लौटा दिया और व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ मुस्कुराया।

'सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जो व्यक्ति ड्रग रैकेट का पर्दाफाश करने के कगार पर था, उसे खुद एक नकली दवा के कारण मरना पड़ा।'
'क्या आपको वाकई लगता है कि उसे दिया गया इंजेक्शन असली नहीं था?' हरिनाथ बाबू ने पूछा।
जी हाँ। उम्मीद है कल तक हमें पक्का पता चल जाएगा। देखिए, मैंने डॉ. दिवाकर से एक सैंपल का विश्लेषण करवाने को कहा है।
‘ठीक है। बस यही बात मुझे आपको बतानी थी। आशा है इससे आपको कुछ मदद मिलेगी,’ हरिनाथ बाबू ने कहा और खड़े हो गए।
'बिल्कुल। अब मुझे यह बात पहले से कहीं ज़्यादा स्पष्ट हो गई है कि मैं क्या ढूंढ रहा हूँ। धन्यवाद, श्री चक्रवर्ती।'
हरिनाथ बाबू चले गए। लालमोहन बाबू ने भी 'शुभ रात्रि' कहा और अपने कमरे में चले गए। इसके बाद मैं सीधे बिस्तर पर चला गया। आज का दिन कितना व्यस्त था! मुझे तुरंत नींद आ गई होगी, लेकिन थोड़ी देर बाद दरवाजे की घंटी से मेरी नींद खुल गई। घड़ी पर एक नज़र डाली तो पता चला कि सवा बारह बज रहे थे। भला इस समय कौन हो सकता है? मैं बिस्तर से उठा और दरवाजा खोला। फिर मेरा मुंह खुला रह गया।
ये लालमोहन बाबू थे। उनके बाएं हाथ में कागज का एक टुकड़ा था। दाहिने हाथ में प्रार्थना चक्र था। उनके होंठों पर एक ऐसी मुस्कान थी जिसे केवल दिव्य मुस्कान ही कहा जा सकता था।
‘हूम! हूम! हूम!’ वह कमरे में आते हुए, प्रार्थना चक्र घुमाते हुए बोला। मैंने उसके हाथ से कागज का टुकड़ा लिया और उस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ देखा। उस पर लिखा था, ‘आपको चेतावनी दी गई है।’ यह उसी लाल स्याही से लिखा गया था जिस स्याही से हमने अभी-अभी नेपाली में चेतावनी देखी थी।
फेलुदा अपने बिस्तर पर बैठा था। मैंने वह कागज उसे पकड़ाया और लालमोहन बाबू से पूछा, 'यह आपको कहाँ मिला?'
उसने अपनी जैकेट की दाहिनी जेब पर हाथ फेरा। उसने सुबह से वही जैकेट पहनी हुई थी। मुझे याद आया कि उसने कहा था कि एक बंदर ने उसके कपड़े खींचे थे। ‘ओम-म-म-म!’ लालमोहन बाबू कुर्सी पर बैठते हुए बोले। उनके चेहरे से मुस्कान अभी भी बरकरार थी। मैंने फेलुदा की तरफ देखा। वह लालमोहन बाबू को चिंता से घूर रहे थे। मेरी नज़र पड़ते ही उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, ‘एलएसडी।’ वो चीनी का टुकड़ा!
मगनलाल ने हम सबके लिए चाय बनाई थी। चूंकि फेलुदा और मैं अभी भी होश में थे, इसलिए उसने जाहिर तौर पर लालमोहन बाबू को बेवकूफ बनाने के लिए सिर्फ उनकी चाय में ही मिलावट की होगी। कितना नीच आदमी था वो!
लालमोहन बाबू की मुस्कान गायब हो गई थी। किसी अज्ञात कारण से, वे अब बेहद नाराज़ दिख रहे थे। उन्होंने फेलूदा से सख्ती से कहा, 'अपनी खोपड़ी उतारो!' 'मैंने कहा उतारो, बूढ़े बदमाश!'
‘मगनलाल—तू बदमाश!’ फेलुदा ने धीमी आवाज़ में कहा। लालमोहन बाबू ने अपनी नज़रें बिस्तर के पास रखी मेज़ पर रखे पानी के गिलास पर डालीं और भौंहें सिकोड़ीं। फिर धीरे-धीरे उनकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं और वे फिर से मुस्कुराने लगे।

‘ओह!’ उसने प्रशंसा करते हुए कहा। ‘इन रंगों को देखो! विबग्योर! देखो, तपेश, क्या तुमने कभी ऐसे रंग, ऐसे शेड्स देखे हैं?’
वाइबग्योर? क्या वह सचमुच उस गिलास पानी में इंद्रधनुष देख सकता था? 'यह कंपन कर रहा है! क्या आपने कभी रंगों को कंपन करते देखा है?'
फिर वह चुप हो गया। मुझे दोबारा नींद आने लगी और मैं सो गया। लेकिन जैसे ही मैंने उसे 'चूहे!' चिल्लाते सुना, मैं लगभग तुरंत ही चौंककर जाग गया।
वह बिलकुल सीधा बैठा था और फर्श को घूर रहा था।
‘चूहे!’ उसने फिर कहा। ‘टेरामीस, टेट्रामीस, सबामीस, क्लोरोमीस... समझौता... ये रहे, ज़मीन पर रेंगते हुए... मेरे साथ मूर्खता मत करो, मैं तुम्हें बता रहा हूँ!’
वह उछल पड़ा और कालीन पर पैर पटकने लगा, मानो चूहों को भगाने का यही एकमात्र तरीका हो। फिर वह पूरे कमरे में उछलने-कूदने लगा और लगातार पैर पटकता रहा। मैंने दिल से दुआ की कि हमारे नीचे वाला कमरा खाली हो। ‘समाप्त! आह, आखिरकार! सभी काम पूरे हो गए!’
वह फिर बैठ गया। चूहे कैसे कीड़ों में बदल गए? 'एंटीबायोटिक्स! मैंने उन सबको मार डाला। हा!'
अब उसकी आँखें झुक गईं। शायद अचानक हुई सक्रियता ने उसे थका दिया था। ‘ओम-म-म-म!’ उसने धीरे से कहा, मानो वह खुद से बहुत खुश हो। ‘ओम-म-म-म-मो-मो-मो!’ मैं अब और आँखें खुली नहीं रख सका। जब मैंने आँखें खोलीं, तो खुली खिड़की से सूरज की रोशनी अंदर आ रही थी। फेलुदा नहा चुका था, दाढ़ी बना चुका था और बाहर जाने के लिए तैयार लग रहा था। उसने फोन पर किसी से बात खत्म की और रिसीवर रख दिया, तभी उसने देखा कि मैं जाग गया हूँ।
'उठो, टॉपशे, हमें बहुत काम करना है। श्री बत्रा को बताना होगा कि वह उतने सुरक्षित नहीं हैं जितना हमने सोचा था।'
‘आप किसे फोन कर रहे थे?’
‘पुलिस ने मुझे कुछ अच्छी खबर दी है। दोनों सरकारें संयुक्त जांच करने पर सहमत हो गई हैं।’
‘यह तो शानदार है!’
'हां। लेकिन मैंने एक और कॉल किया, और उससे मुझे चिंता हुई।'
'क्या हुआ?'
मैंने डॉ. दिवाकर को फोन किया। जाहिर है, उन्हें आज सुबह-सुबह कोई जरूरी फोन आया और वे चले गए। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं आया।
'क्यों?'
मुझे ऐसा लग रहा है कि जिस गिरोह की हम तलाश कर रहे हैं, उन्हें पता चल गया है कि मैंने उससे सैंपल की जांच करवाने को कहा था। लेकिन मैं गलत भी हो सकता हूँ। मैं थोड़ी देर बाद उसे फिर से फोन करूँगा। अगर फोन पर उससे बात नहीं हो पाई, तो मैं सीधे उसके औषधालय जाऊँगा।
‘लालमोहन बाबू कहाँ हैं?’
‘वह एक घंटे पहले चले गए, ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें मोक्ष प्राप्त हो गया हो। लेकिन वह बिल्कुल शांत थे, कोई समस्या नहीं थी। दवा का पूरा असर लगभग आठ घंटे में खत्म हो जाएगा।’

‘क्या तुम पूरी रात जागते रहे?’
'हां, किसी को तो उस पर नजर रखनी ही थी।'
क्या अब वह सामान्य है?
'लगभग। जाने से ठीक पहले उसने मुझसे कहा कि मेरे दिमाग का एक तिहाई हिस्सा ठोस पदार्थ से बना है, बाकी पानी है। भगवान ही जाने उसका क्या मतलब था।'

ग्यारह
मुझे तैयार होने में आधा घंटा लग गया। फेलुदा पहले ही नीचे जा चुका था। मैंने उसे रिसेप्शन के पास बेचैनी से इधर-उधर घूमते हुए मेरा इंतजार करते हुए पाया।
उन्होंने मुझे बताया, ‘डॉक्टर दिवाकर अपने घर नहीं लौटे हैं। मैंने उन्हें दोबारा फोन किया। उनके परिवार को नहीं पता कि वे कहां गए हैं।’
और बत्रा?
‘मेरा फोन नहीं लग पाया। मैं एक बार फिर कोशिश करूंगा, फिर मैं उनके ऑफिस जाऊंगा। वैसे भी हमें एक कार की जरूरत है।’
लालमोहन बाबू पांच मिनट से भी कम समय में नीचे आ गए, बिल्कुल सामान्य दिख रहे थे। लेकिन उनकी कुछ बातों से ऐसा लगा कि एलएसडी का असर अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ था। रिसेप्शन के पास दीवार पर एक बड़ा नेपाली मुखौटा टंगा हुआ था। उन्होंने उसे हल्के से सहलाया और पूछा, 'इंग्लैंड में उस महल का नाम क्या है?'
‘बकिंघम पैलेस?’
'हां, लेकिन इसके मुकाबले तो यह कुछ भी नहीं है।'
‘किसकी तुलना में?’
‘यह होटल। होटल लुमुम्बा।’
‘लुम्बिनी।’
‘ठीक है। लुम्बिनी। उनका जन्म यहीं हुआ था, है ना?’
'कौन?'
‘Gautam Buddha.’
‘इस होटल में नहीं!’
‘क्या आपका मतलब यह है कि ईसा से पहले होटल नहीं थे?’ सौभाग्य से, यह अजीबोगरीब बातचीत ज्यादा देर तक नहीं चल सकी, क्योंकि थोड़ी देर बाद फेलुदा आ गया और उसने कहा कि हमें अपना नाश्ता जल्दी खत्म करके सन ट्रेवल्स जाना होगा, क्योंकि वह अभी भी उनसे फोन पर संपर्क नहीं कर पा रहा था।
हमने नाश्ते में सिर्फ एक कप कॉफी पीने का फैसला किया। मुझे अंदर से महसूस हो रहा था कि आज का दिन भी काफी रोमांचक होने वाला है।
सन ट्रेवल्स तक पैदल जाने में हमें केवल पाँच मिनट लगे। उनका कार्यालय स्पष्ट रूप से नया था और बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से सुसज्जित था। बत्रा के सचिव श्री प्रधान हमें बत्रा के कमरे में ले गए; और फिर उन्होंने एक चौंकाने वाली बात बताई।
उन्होंने कहा, ‘मुझे खेद है कि श्री बत्रा बाहर गए हैं। दरअसल, आज सुबह एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति ने उन्हें फोन किया था। वे राप्ती घाटी में

हमारा नया बंगला देखना चाहते थे। इसलिए श्री बत्रा को उनके साथ जाना पड़ा। लेकिन उन्होंने मुझे बताया कि आपको शायद एक कार की आवश्यकता होगी। मैं आसानी से एक कार का इंतजाम कर सकता हूँ।’
'धन्यवाद। लेकिन क्या आप कृपया हमें बता सकते हैं कि यह महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन था?'
'बिल्कुल। वो मेघराज थे। वो ओबेरॉय होटल में ठहरे हुए हैं। एक बहुत ही महत्वपूर्ण कला व्यापारी।'
लालमोहन बाबू ने मेरा हाथ पकड़ लिया। मेघराज का नाम सुनते ही उन्हें होश आ गया था। लेकिन श्री बत्रा? भला कौन जान सकता था कि वो इतनी जल्दी मगनलाल के जाल में फंस जाएंगे?
‘आपके बंगले तक पहुँचने में कितना समय लगेगा?’ फेलुदा ने पूछा। ‘आपको हेताओरा होते हुए जाना होगा—यह 150 किलोमीटर है। आप चाहें तो हेताओरा में दोपहर का भोजन कर सकते हैं। हमारा बंगला नया है, इसलिए रसोई अभी तैयार नहीं है। हेताओरा से निकलते ही दाईं ओर मुड़ें और नदी के किनारे तीन किलोमीटर चलें। आपको हमारा बंगला वहीं जंगल के बीचोंबीच मिल जाएगा। यह बहुत ही सुंदर जगह है।’
‘ठीक है। क्या आप आधे घंटे में होटल से हमें लेने के लिए एक कार भेज सकते हैं?’
‘बहुत खूब, महोदय। कोई समस्या नहीं!’
'तुम दोनों होटल वापस जाओ और मेरा इंतजार करो। मुझे दरबार स्क्वायर जाना है। मुझे ज्यादा देर नहीं लगेगी,' फेलुदा ने सन ट्रेवल्स से बाहर निकलते हुए कहा।
गाड़ी बीस मिनट में आ गई। फेलुदा को पच्चीस मिनट लगे। उसने बताया, 'मुझे फ्रीक स्ट्रीट जाना था।'
'वह कहां है?'
'ज्यादा दूर नहीं है। ज्यादातर हिप्पी वहीं रहते हैं।'
पांच मिनट में हम हेताओरा के लिए निकल पड़े। फेलुदा ने अपनी नोटबुक खोल रखी थी और गहरी भौंहें चढ़ाकर उसमें लिखी बातों को पढ़ रहा था। लालमोहन बाबू पहले जैसे सामान्य हो गए थे, हालांकि मैंने देखा कि उनमें एक अजीब सी शांति थी, जिससे लग रहा था कि वे दुनिया से पूरी तरह संतुष्ट हैं। नज़ारे को देखते हुए उन्होंने बस एक ही बात कही: 'कल मुझे दोहरी दृष्टि हो रही थी। अब मुझे हर चीज़ एक ही दिखाई दे रही है।'
फेलुदा ने ऊपर देखते हुए कुछ चिंतित भाव से कहा, 'यह सच है। लेकिन इसका उल्टा भी सच है।'
मुझे यह टिप्पणी बेहद रहस्यमय लगी।
हम काठमांडू से चार हजार फीट की चढ़ाई कर चुके थे। बर्फ से ढकी चोटियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। जल्द ही, ऊनी मफलर निकालने और थर्मस में लाई गई गर्म कॉफी पीने की आवश्यकता महसूस हुई।
आधे घंटे बाद, हम नीचे उतरने लगे और शिवालिक पहाड़ियों की ओर बढ़ने लगे।
राप्ती घाटी और हेताओरा कस्बा ज़्यादा दूर नहीं थे।

‘टॉपशे, क्या तुम्हें बत्रा का पहला नाम पता है?’ फेलुदा ने अचानक अपनी नोटबुक बंद करते हुए पूछा।
‘नहीं। उसने हमें कभी नहीं बताया, है ना?’
‘उन्होंने ऐसा नहीं किया। लेकिन आपको उनकी मेज पर लगी नेमप्लेट देखनी चाहिए थी। उस पर अनंतलाल बत्रा का नाम लिखा है।’
जब हम हेतौरा पहुँचे, तो दोपहर के लगभग 2 बज रहे थे। हममें से किसी को भी भूख नहीं थी, इसलिए हमने दोपहर का भोजन नहीं किया। लालमोहन बाबू ने पूछा, 'ऐसे समय में भोजन का क्या महत्व है?' उन्होंने जवाब दिया, 'कुछ भी नहीं!' ड्राइवर ने हाईवे से दाईं ओर मुड़कर गाड़ी आगे बढ़ा दी। अब मुझे पेड़ों के बीच से बहती हुई राप्ती नदी साफ दिखाई दे रही थी। जिस सड़क पर हम चल रहे थे, उसके दोनों ओर ऊंचे-ऊंचे पेड़ थे। मुझे इस बात पर यकीन नहीं हो रहा था कि हम वाकई उस मशहूर तराई क्षेत्र से गुजर रहे थे, जो अपने खूंखार जंगली जानवरों के लिए जाना जाता था। मैंने इसके बारे में बहुत कुछ पढ़ा था! 1857 में सिपाही विद्रोह के बाद, कहा जाता है कि नाना साहब ने अपने सभी सैनिकों के साथ इस घने हरे-भरे क्षेत्र में शरण ली थी।
हमने एक और दायाँ मोड़ लिया, जिससे हम एक कच्ची सड़क पर पहुँच गए। कुछ मिनट बाद, हमें बंगला दिखाई दिया। इसे बनाने के लिए एक बड़ा क्षेत्र साफ़ किया गया था। इसका परिसर काफ़ी बड़ा था। हमारी कार गेट से अंदर गई और एक पत्थर की पक्की सड़क पर चढ़ गई। फिर वह मुख्य द्वार के ठीक सामने रुक गई।
जैसे ही हमारे ड्राइवर ने इंजन बंद किया, मुझे एहसास हुआ कि यह जगह कितनी शांत थी। फिर वह गाड़ी से उतरा और गैरेज की ओर बढ़ा। मैंने वहाँ एक और कार खड़ी देखी। हम भी कार से उतरे और घर के अंदर गए। सामने का दरवाजा खुला हुआ था।
‘अंदर आइए, श्रीमान मिटर!’
मगनलाल मेघराज की गहरी आवाज़ को पहचानना मुश्किल नहीं था। हम बैठक कक्ष में दाखिल हुए। वहाँ दो सोफे थे। फर्श पर तिब्बती कालीन बिछा हुआ था। एक तरफ छोटी मेज पर रेडियो रखा था, और एक शेल्फ पर कुछ किताबें और पत्रिकाएँ थीं।
मगनलाल एक सोफे पर बैठा टिफिन में रखी पूरी-सब्जी खा रहा था। एक नौकर तौलिया और पानी का कटोरा लेकर इंतजार कर रहा था। कमरे में और कोई नहीं था। ‘मुझे पता था कि तुम आओगे,’ उसने हाथ पोंछते हुए कहा। तब तक हम सब बैठ चुके थे। ‘मुझे यह भी पता है कि तुम क्यों आए हो,’ मगनलाल ने आगे कहा, ‘लेकिन मैं यह दौर जीतूंगा। हर बार तुम्हारी मनमानी नहीं चल सकती, है ना?’ फेलुदा चुप रहा।
'बनारस में आपने मुझे जो अपमानित किया था, श्री मिटर, मैं उसे भूला नहीं हूँ। मैं आपको इसका बदला जरूर चुकाऊंगा।'
मुझे अपने दाहिनी ओर के एक कमरे से एक अजीब सी धड़धड़ाहट की आवाज सुनाई दे रही थी। पता नहीं किस वजह से आ रही थी।
मगनलाल की धमकी को नजरअंदाज करते हुए फेलुदा ने शांत भाव से पूछा, 'श्री बत्रा कहाँ हैं?'

मगनलाल ने जीभ चटकाते हुए कहा, 'बहुत खेद है, श्री मित्तर। मैंने आपसे कहा था कि जगदीश मेरा दाहिना हाथ है। वैसे, एक ही दाहिने हाथ की जरूरत होती है, है ना? मुझे दो रखने का कोई कारण नहीं दिखा।'
‘आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। वह कहाँ है?’
‘बत्रा अभी भी जीवित है। दिन में वह सुरक्षित रहेगा। लेकिन रात में क्या हो सकता है, कौन जाने? वन्यजीवों को नष्ट करने के खिलाफ कानून है। लेकिन बताइए, क्या आपने कभी किसी ऐसे कानून के बारे में सुना है जो भूखे जंगली जानवरों से किसी इंसान की रक्षा करता हो?’
‘मगनलाल जी, आपने काठमांडू क्यों छोड़ा? क्या आपको पता है कि आजकल वहां क्या हो रहा है?’
'आप मुझे बताएं।'
'पाटन स्थित आपकी फैक्ट्री और काठमांडू स्थित आपके गोदाम, दोनों की पुलिस द्वारा तलाशी ली जा रही है।'
मगनलाल जोर से हंस पड़ा। उसका विशाल शरीर इधर-उधर डगमगा रहा था। ‘आप मुझे किस तरह का मूर्ख समझते हैं, श्री मित्तर? पुलिस को कुछ नहीं मिलेगा, बिलकुल कुछ नहीं! सूअरखाने वाला गोदाम खाली है, और अब पाटन में सिर्फ हस्तशिल्प ही बन रहे हैं। एकदम असली हस्तशिल्प। श्री मित्तर, मैं अपना सारा सामान साथ लाया हूँ। क्या आपने हेतौरा से होकर भारत जाने वाले ट्रक नहीं देखे? वे लकड़ी ले जाते हैं; और उनमें से कुछ, श्री मित्तर, वह सामान ले जाते हैं जिसे मैं लकड़ी में छिपाना चाहता हूँ। हाँ, इसी तरह मैं नकली दवाएँ भारत भेजता हूँ। ध्यान रहे, मेरा अधिकांश काम भारत में भारतीयों द्वारा किया जाता है। लेबल, कैप्सूल, एम्प्यूल, शीशियाँ—ये सब भारत से आते हैं। बाकी का काम यहाँ होता है, क्योंकि नेपाली भारतीयों से ज़्यादा मेहनत करते हैं—और बेहतर काम करते हैं।’
मगनलाल रुक गया। मुझे बाहर झींगुरों की तेज़ आवाज़ सुनाई दे रही थी। लेकिन ये कैसी आवाज़ थी?
जगदीश ने रंगीन कढ़ाई वाला पर्दा उठाया और अंदर आया, उसके बाएं हाथ में एक रिवॉल्वर थी। वह चुपचाप खड़ा रहा और रिवॉल्वर को फेलुदा की ओर ताने रहा। ‘उठो!’ मगनलाल ने आदेश दिया। हम धीरे-धीरे उठे।
‘हाथ उठाएँ।’ हमने उठाया।
‘Ganga! Kesri!’
दो और आदमी अंदर आए और हमारी तलाशी लेने लगे। उनमें से एक को फेलुदा का रिवॉल्वर मिला और उसने उसे मगनलाल को सौंप दिया।
धड़धड़ाहट की आवाज़ तेज़ और लगातार होती जा रही थी। मगनलाल थोड़ा नाराज़ सा लग रहा था और बोला, 'माफ़ कीजिए, श्रीमान मित्तर, लेकिन मुझे आपके एक और दोस्त को पकड़ना पड़ा। वह हमारी दवाओं का विश्लेषण करवाने की कोशिश कर रहा था और हमारे लिए और ज़्यादा मुसीबतें खड़ी करना चाहता था। इसलिए ज़ाहिर है उसे रोकना ज़रूरी था।'
‘क्या तुम उसे भी जानवरों को खिला दोगे?’

‘नहीं, नहीं, श्री मिटर।’ मगनलाल मुस्कुराया। ‘मैं उसका इस्तेमाल अपने फायदे के लिए कर सकता हूँ। किसी डॉक्टर से सलाह लेना बहुत उपयोगी होता है। मेरा दिल—’
उसके बोलने से पहले ही कई घटनाएँ एक साथ घटित हुईं। गंगा और केसरी नाम के दोनों आदमी कमरे से बाहर जा चुके थे। अब वे मोटी रस्सियाँ लेकर वापस आए। ठीक उसी समय, एक कार बाहर आकर रुकी। जगदीश ने तुरंत अपने रिवॉल्वर का सेफ्टी लॉक हटाया; लेकिन फेलुदा उससे कहीं ज़्यादा फुर्तीला था। वह हवा में उछला और जगदीश के हाथ से रिवॉल्वर छीन ली। लेकिन किसी तरह बंदूक चल गई। एक गोली निकली और छत के पंखे को जा लगी, जिससे वह घूमने लगा।
कुछ ही पलों में, मानो जादू से, अचानक कहीं से बड़ी संख्या में लोग प्रकट हो गए। मैं उनमें से किसी को पहचान नहीं पाया, लेकिन इतना ज़रूर समझ गया कि वे सभी सादे कपड़ों में भारत और नेपाल के पुलिसकर्मी थे। उनमें से एक ने जगदीश को पकड़ लिया और दीवार से सटा दिया।
मगनलाल अपने पैरों पर खड़ा था, उसकी आँखों में भयंकर क्रोध था। 'मुझे मत छुओ! हिम्मत मत करना!' वह फुफकारा।
‘मगनलाल जी, हम आपसे एक मिनट में निपटेंगे,’ फेलुदा ने कहा, ‘लेकिन पहले मुझे कुछ काम निपटाने दीजिए।’ वह जगदीश की ओर मुड़ा। ‘बंदूक पकड़े होने के कारण मैं आपकी उंगलियां ठीक से नहीं देख पाया,’ फेलुदा ने कहा, ‘लेकिन अब... हां, मैं देख सकता हूं कि आपकी दो उंगलियों पर स्याही लगी है। क्या आप अभी भी उसी पुरानी स्याही रिसने वाली कलम का इस्तेमाल कर रहे हैं, श्री बत्रा?’ ‘चुप रहो, श्री मित्तर!’ मगनलाल चिल्लाया। ‘बस चुप रहो! जगदीश मेरा—’ ‘जगदीश नहीं। बत्रा—अनंतलाल बत्रा—आपका दाहिना हाथ है। कोई जगदीश नहीं है; न ही कोई दूसरा श्री बत्रा है। यह वही आदमी है। मुझे यकीन है कि पुलिस उससे कॉन्टैक्ट लेंस हटवा सकती है। कुछ ऐसा है जो उसे अभी तक पता नहीं है। आज सुबह उसके जाने के बाद उसके घर की तलाशी ली गई। पुलिस को बड़ी मात्रा में नकली नोट मिले, जो—निस्संदेह—पाटन स्थित आपकी फैक्ट्री में बनते थे।’
नेपाल पुलिस के एक अधिकारी ने सौ-सौ रुपये के नोटों का एक बड़ा बंडल निकाला। बत्रा का चेहरा पीला पड़ गया।
‘आपने कलकत्ता में एक गलत कदम उठाया, श्री बत्रा,’ फेलुदा ने उनसे कहा। ‘दो बत्रा होने का झूठा दावा करने के लिए, आपने अपने होटल के उपहार की दुकान से एक कुकरी खरीदी और उन्हें एक जाली नोट दे दिया। लेकिन आप उसे वापस नहीं ले सके, क्योंकि बाद में आपको पूरी तरह निर्दोष होने का नाटक करना पड़ा। इसलिए दुकान ने वह नोट पुलिस को सौंप दिया। उस पर लिखा नंबर वही था जो आपके घर से मिले सभी नोटों पर था।’
बत्रा का चेहरा ऐसा लग रहा था मानो वह ज़मीन में धंस जाना चाहता हो। लेकिन मगनलाल ने हार नहीं मानी थी।
‘मैं आपको चेतावनी देता हूँ, श्रीमान मिटर—’ उन्होंने कहना शुरू किया। ‘तुम बहुत ज्यादा बोल रहे हो!’ फेलुदा ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा।
‘मुझे तुम्हें चुप कराने के लिए कुछ करना होगा। टॉपशे, उस आदमी को पकड़ो!’

मैं ऐसा करने के लिए पूरी तरह तैयार था, लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि लालमोहन बाबू मगनलाल को पकड़कर सोफे पर धकेलने के लिए कहीं अधिक उत्सुक थे। मगनलाल ने बहुत छटपटाया, लेकिन हम दोनों ने उसे रोक लिया।
इसी बीच, फेलुदा ने अपनी जेब से दो चीज़ें निकालीं। उनमें से एक चीनी का टुकड़ा था। इससे यह स्पष्ट हो गया कि वह फ्रीक स्ट्रीट क्यों गया था। उसने जबरदस्ती वह टुकड़ा मगनलाल के मुंह में डाल दिया और उसे निगलने पर मजबूर कर दिया।
दूसरी वस्तु सेलोटेप का एक रोल था। फेलुदा ने उसका एक टुकड़ा फाड़ा और उससे मगनलाल का मुंह सील कर दिया।
अंत में, उसने अपना हाथ जैकेट की जेब में डाला और सिगरेट के डिब्बे जैसी कोई चीज़ निकाली। उसने उसे एक पुलिस अधिकारी को सौंपते हुए कहा, 'जैसे ही हम इस कमरे में दाखिल हुए, मैंने इस मिनी कैसेट रिकॉर्डर को चालू कर दिया था। इससे आपको मेघराज द्वारा दी गई बहुत सी जानकारी मिलेगी।'

बारह
फेलुदा ने कहा, 'मेरा मानना है कि बत्रा का मगनलाल से संपर्क पीआरओ के रूप में उनकी नौकरी के दौरान हुआ था।'
हम काठमांडू लौटते समय एक रेस्तरां में कॉफी और सैंडविच खा रहे थे। हमारे साथ डॉ. दिवाकर, नेपाल पुलिस के इंस्पेक्टर शर्मा और कलकत्ता से इंस्पेक्टर जोर्डर थे। हमने डॉ. दिवाकर को बंगले के एक कमरे में पाया। उनके हाथ-पैर बंधे हुए थे और मुंह पर पट्टी बंधी हुई थी। लेकिन इससे उन्हें पैर पटकने से नहीं रोका जा सका, जिससे वह धड़धड़ाहट की आवाज आ रही थी जो हमने सुनी थी।
डॉ. दिवाकर ने आज सुबह पुलिस को बताया कि बत्रा उनके घर आया और उन्हें यह कहकर ले गया कि एक आपातकालीन मामला है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके बाद उसने मगनलाल को अपने साथ लिया और दोनों व्यक्तियों ने उसे जबरदस्ती बंगले में ले गए।
मगनलाल और उसके आदमी अब काठमांडू वापस आ चुके थे, सभी गिरफ्तार थे। मैं यह जानने के लिए बेताब था कि एलएसडी लेने पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, लेकिन मुझे पता था कि यह जानने के लिए मुझे कल तक इंतजार करना पड़ेगा। फेलुदा अभी भी बोल रहा था। ‘मगनलाल जानता था कि बत्रा जैसा पढ़ा-लिखा और बुद्धिमान व्यक्ति उसके लिए बहुत उपयोगी साबित होगा। इसलिए उसने उसे अपने गिरोह में शामिल कर लिया। जब उसे पता चला कि अनिकेंद्र सोम पूछताछ कर रहा है, तो उसे समझ आ गया कि सोम को रास्ते से हटाना ज़रूरी है। उसने इस काम के लिए बत्रा को चुना। बत्रा ने काठमांडू से सोम के साथ ही विमान लिया और उससे बात करने में कामयाब रहा, हालाँकि बाद में सोम ने इस बात से इनकार कर दिया। हमें श्री सोम की नोटबुक में एक वाक्य मिला जिसमें लिखा था, “एबी के बारे में पता लगाओ”। पहले तो मुझे लगा कि इसका मतलब एंटीबायोटिक्स है, लेकिन जैसे ही मुझे पता चला कि बत्रा का पहला नाम अनंतलाल है, मुझे समझ आ गया कि सोम उसी का जिक्र कर रहा था। हो सकता है कि बत्रा की किसी बात से सोम को शक हो गया हो।’
फेलुदा ने कप से एक घूंट लिया और फिर बोला, “अब ऐसा लगता है कि श्री सोम ने बत्रा से कहा था कि वह मुझसे मिलने जा रहे हैं। बत्रा मुझे जानता था। इसलिए उसने अंदाज़ा लगाया होगा कि अगर सोम की हत्या हो जाती है, तो मुझे जाँच करने के लिए कहा जाएगा। उसे तब यह नहीं पता था कि हम महज़ इत्तेफ़ाक से एक-दूसरे से मिल जाएँगे। लेकिन जब हम मिले, तो उसे तुरंत एक “हमशक्ल” बनाने का विचार आया। मुझे मानना पड़ेगा कि यह बहुत ही चालाकी भरा विचार था। मुझसे मिलने से ठीक पहले उसने एक नीली कमीज़ खरीदी थी, जो असल में अभी भी उसके पास एक प्लास्टिक बैग में थी। हमारे अलग होने के तुरंत बाद, वह किसी रेडीमेड कपड़ों की दुकान में गया होगा और वहाँ के किसी फिटिंग रूम में

जाकर नीली कमीज़ पहन ली होगी। फिर वह जानबूझकर हमारे पास से ऐसे गुज़रा जैसे उसने मुझे कभी देखा ही न हो। अगले दिन, उसने गिफ्ट शॉप में एक छोटा सा नाटक रचा और शाम को मेरे घर आकर मुझे इस “हमशक्ल” के अस्तित्व के बारे में यकीन दिलाया।” उसके अगले दिन, वह सुबह-सुबह टैक्सी से अपने होटल से निकला, शाम पांच बजे श्री सोम के होटल पहुंचा और उनकी हत्या कर दी। फिर वह हवाई अड्डे गया और नौ बजे काठमांडू के लिए अपनी फ्लाइट पकड़ी। उसने कुकरी वहीं छोड़ दी ताकि मुझे लगे कि हत्यारा वही "नकली" श्री बत्रा था।
इंस्पेक्टर जोर्डर ने पूछा, 'आपको पहली बार कब संदेह होने लगा?'
दरअसल, जब मैं उससे पहली बार मिला, तो उसने मुझे अपनी नोटबुक में मेरा पता लिखने को कहा। यह ज़रूरी था, क्योंकि अगर वह खुद लिखता तो उसे अपना बायां हाथ इस्तेमाल करना पड़ता। अब, इससे मामला बिगड़ जाता, क्योंकि वह यह साबित करने की कोशिश कर रहा था कि दूसरा बत्रा बाएं हाथ से लिखता था। लेकिन मैंने उसके फाउंटेन पेन की निब में कुछ अजीब देखा। अगर कोई बाएं हाथ से लिखने वाला फाउंटेन पेन का इस्तेमाल करता है, तो वह उसे एक खास कोण पर पकड़ता है और निब घिस जाती है। फिर दाएं हाथ से लिखने वाले को उसी पेन से लिखने में दिक्कत होती है। मुझे भी वैसी ही दिक्कत हुई, लेकिन मैंने उस समय ध्यान नहीं दिया। जब मैंने देखा कि श्री सोम का हत्यारा बाएं हाथ से लिखता है, तो मेरा शक बढ़ गया और मैंने सोचा कि मुझे काठमांडू में इस मामले की और गहराई से जांच करनी चाहिए। लेकिन तब मुझे नहीं पता था कि यह एक नहीं, बल्कि दो हत्याओं का मामला था।
‘दो हत्याएं?’ लालमोहन बाबू अपना आश्चर्य छुपा नहीं सके। हम सब उन्हें घूरने लगे। दूसरी हत्या कौन सी थी? फेलुदा किस बारे में बात कर रहा था? लेकिन फेलुदा ने कुछ नहीं कहा। आखिरकार, डॉ. दिवाकर ने चुप्पी तोड़ी। उन्होंने कहा, 'वह सही कह रहे हैं। मैंने अपने औषधालय से एंटी-टेटनस सीरम का एक नमूना लिया और उसकी जांच करवाई। पता चला कि वह सिर्फ सादा पानी था। मैं श्री मिटर से मिलकर उन्हें व्यक्तिगत रूप से बताने वाला था, लेकिन मुझे मौका ही नहीं मिला। नकली दवाओं का धंधा करने वालों को हत्यारा कहना बिल्कुल उचित है। मैं श्री मिटर से सहमत हूं।'
‘लेकिन, डॉक्टर दिवाकर, मैं नकली दवाओं की बात नहीं कर रहा हूँ,’ फेलुदा ने कहा। इस बार तो डॉक्टर भी चौंक गए। ‘तो फिर आप किस बारे में बात कर रहे हैं?’ उन्होंने पूछा।
मैं अभी इस बारे में विस्तार से बताऊंगा। उससे पहले मैं एक और बात कहना चाहता हूं। तीन साल पहले हिमाद्री चक्रवर्ती ने अपराधियों के एक गिरोह का पर्दाफाश किया था। उनके पिता ने हमें बताया कि वह दवाओं और मादक पदार्थों में मिलावट करने वाले एक अन्य गिरोह को पकड़ने पर काम कर रहे थे। अगर वह सफल हो जाते, तो मगनलाल और उसके आदमी बड़ी मुसीबत में पड़ जाते। इसलिए जाहिर है कि मगनलाल के पास उन्हें रास्ते से हटाने का एक मजबूत मकसद था। 'आख़िर कैसे?'
‘यह काफी आसान था। मगनलाल ने एक डॉक्टर से मदद ली।’
‘एक डॉक्टर?’ डॉ. दिवाकर ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
'हाँ।'

‘[[[?
‘[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[…’
‘[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[—?’
“[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[? [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[? [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[? [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?”
[[. [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, '[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[?'
‘[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[? [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[?’
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
'[[[,' [[[[[[[[[[[[, '[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[['
[[. [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[—[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[—[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[—[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[['[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[' [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[['[[[[[[!' [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

एक
‘क्या तुम फेलुदा हो?’
यह सवाल फेलुदा की कमर के पास से कहीं से उठा।
लगभग छह साल का एक छोटा लड़का फेलुदा के बगल में खड़ा था, अपना सिर ऊपर उठाकर उन्हें देख रहा था। कुछ ही दिन पहले, एक स्थानीय अखबार में फेलुदा का एक साक्षात्कार छपा था, जिसमें उनकी एक तस्वीर भी थी जिसमें वे हाथ में चारमीनार लिए बैठे थे। नतीजतन, अब लोग उन्हें लगभग हर जगह पहचानने लगे थे, मानो वे कोई फिल्म स्टार हों। आज हम पार्क स्ट्रीट और रसेल स्ट्रीट के कोने पर स्थित हॉबी सेंटर में थे। यहाँ खिलौनों और सुनहरी मछलियों के अलावा भी कई दिलचस्प चीजें बिकती थीं। हमारे चाचा सिद्धू जल्द ही सत्तर साल के होने वाले थे। फेलुदा ने उनके लिए एक अच्छा शतरंज सेट खरीदने के लिए हॉबी सेंटर आने का फैसला किया था।
फेलुदा ने लड़के के सिर पर धीरे से हाथ रखा। 'हां, यह सही है,' उसने कहा। ‘क्या आप मेरे पक्षी को चुराने वाले चोर को पकड़ सकते हैं?’ लड़के ने चुनौती भरे लहजे में कहा। फेलुदा के जवाब देने से पहले ही, लगभग फेलुदा की ही उम्र का एक सज्जन भूरे कागज में लिपटी एक लंबी सी वस्तु लिए हुए तेज़ी से हमारी ओर बढ़ा। वह प्रसन्न और थोड़ा शर्मिंदा दोनों लग रहा था।
उसने लड़के से कहा, 'फेलुदा को अपना असली नाम बताओ।'
"अनिरुद्ध हलधर," लड़के ने गंभीरता से कहा।
‘आपके कई युवा प्रशंसकों में से एक,’ सज्जन ने हंसते हुए कहा। ‘उसकी माँ ने उसे आपके कारनामों की सारी कहानियाँ पढ़कर सुनाई हैं।’
‘यह पक्षी के बारे में क्या है?’
'अरे, ये तो कुछ भी नहीं है। उसने कहा कि वो एक पक्षी पालना चाहता है, इसलिए मैंने उसके लिए चंदना पक्षी खरीद लिया। जिस दिन वो आया, उसी दिन किसी ने उसे पिंजरे से निकाल लिया।'
अनिरुद्ध ने हमें बताया, 'अब सिर्फ एक ही पंख बचा है।'
'वास्तव में?'
'हां। जब मैं सोने गया था तब वह पिंजरे में था, लेकिन सुबह गायब हो गया था। बड़ा रहस्य?'
'हां, ऐसा ही लगता है, है ना? क्या अनिरुद्ध हलदर इस रहस्य पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं?'
‘अरे, मैं कोई जासूस नहीं हूँ! मैं तो अभी स्कूल में दूसरी कक्षा में ही पढ़ता हूँ।’
बच्चे के पिता ने बीच में दखल दिया। 'चलो अब, अनु, हमें न्यू मार्केट जाना है। तुम फेलुदा को हमारे घर आने के लिए कह सकती हो।'

अनु यह देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और शर्माते हुए अपने पिता का निमंत्रण दोहराया। 'मेरा नाम अमिताभ हलदर है,' उस सज्जन ने अपना कार्ड देते हुए कहा। फेलुदा ने कार्ड लिया और उस पर सरसरी नजर डाली। 'मुझे लगता है आप बारासात में रहते हैं,' उसने कहा।
'जी हां। आपने मेरे पिता पार्वतीचरण हलदर के बारे में सुना होगा।'
'ओह हाँ। मैंने उनके कुछ लेख भी पढ़े हैं। उनके पास प्राचीन वस्तुओं का बड़ा संग्रह है, है ना?'
जी हाँ। वो पहले बैरिस्टर थे, लेकिन अब रिटायर हो चुके हैं। उनकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा शौक प्राचीन कलाकृतियों का संग्रह करना है। उन्होंने अपने संग्रह को बढ़ाने के लिए दुनिया भर की यात्रा की है। मुझे लगता है कि आपको उनमें से कुछ चीज़ें देखकर मज़ा आएगा—उनके पास एक प्राचीन ग्रामोफोन, मुगल काल का शतरंज का बोर्ड, वॉरेन हेस्टिंग्स की नसवार की डिब्बी, नेपोलियन का पत्र... वगैरह-वगैरह। हमारा घर भी काफी दिलचस्प है, ये डेढ़ सौ साल पुराना है। अगर आप किसी दिन खाली हों, मतलब रविवार को...? बस मुझे फ़ोन कर दीजिएगा—नहीं, मैं खुद आपको फ़ोन कर दूँगा। आपका नंबर डायरेक्टरी में होगा ना?
जी हां, ये लीजिए,’ फेलुदा ने उसे अपना एक कार्ड थमा दिया। फिर तय हुआ कि हम महीने के अंत में श्री हलदार से मिलने जाएंगे। बारासात जाना कोई समस्या नहीं थी, क्योंकि लालमोहन बाबू की कार हमेशा हमारे लिए उपलब्ध रहती थी। आज वो हमारे साथ नहीं थे, लेकिन मुझे पता था कि उन्हें हमारे साथ जाना अच्छा लगेगा। हाल ही में उनका मूड कुछ खास अच्छा था, क्योंकि उनके दस बेहतरीन उपन्यासों का एक बड़ा संग्रह प्रकाशित हुआ था। पच्चीस रुपये में भी वो खूब बिक रहा था।
हम घर लौट आए। मुझे बहुत बाद में एहसास हुआ कि फेलुदा थोड़ा उदास लग रहा था। जब मैंने उससे पूछा कि क्या बात है, तो उसने कहा, 'यह मेरे उस युवा प्रशंसक की वजह से है। मैं उसकी कही बात भूल नहीं पा रहा हूँ।'
‘तुम्हारा मतलब उस चंदना से है?’
क्या आपने कभी सुना है कि किसी पक्षी को उसके पिंजरे से चुरा लिया गया हो? नहीं, मैं ऐसा नहीं कह सकता। लेकिन क्या यह वाकई आपको एक बड़ा रहस्य लगता है?
“खैर, ये तो रोज़ होने वाली बात नहीं है। चंदन कोई स्वर्ग का पक्षी नहीं है। कोई भी इसकी सुंदरता के लिए इसे चुराना नहीं चाहेगा। तो फिर ये गायब क्यों हो गया?”
“बेशक, ऐसा हो सकता है कि कोई दरवाजा ठीक से बंद करना भूल गया हो, और यह महज़ लापरवाही ही थी...” उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई।
‘पता लगाने का कोई तरीका नहीं है, है ना?’
'बिल्कुल है। हमें बस वहां जाकर कुछ सवाल पूछने हैं। जहां तक मुझे समझ आया, किसी ने भी इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया। लेकिन जाहिर है कि वह छोटा लड़का परेशान है, वरना वह मुझे सीधे-सीधे नहीं बताता। काश मैं जा पाता।' ‘इसमें क्या समस्या है? श्री हलदर ने हमें आमंत्रित किया था, है ना?’

हां, लेकिन हो सकता है कि उसने महज़ शिष्टाचारवश ही ऐसा किया हो, क्योंकि वह संयोगवश हमसे मिल गया था। हो सकता है कि वह इसके बारे में सब कुछ भूल गया हो। आख़िरकार, हमने कोई तारीख़ तय नहीं की थी। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, और आम तौर पर मुझे परवाह भी नहीं होती, लेकिन... यह एक छोटे बच्चे ने मुझसे करने को कहा था, इसलिए मुझे लगता है कि मुझे इसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।
श्री हलदर ने एक सप्ताह से भी कम समय में, एक शनिवार की सुबह फोन किया। मैंने कॉल फेलुदा के एक्सटेंशन पर ट्रांसफर कर दी और लिविंग रूम में लगे मुख्य फोन से पूरी बातचीत सुनी।
'मिस्टर मित्तर?' मिस्टर हलदर ने कहा।
‘जी हां, आप कैसे हैं?’
ठीक है, लेकिन मेरा बेटा मुझे पागल कर रहा है। आप हमारे घर कब आ रहे हैं? ‘क्या पक्षी वापस आ गया?’
नहीं। मुझे नहीं लगता कि इसे वापस पाने की कोई संभावना है।
‘अगर आपका बेटा यह समझ ले कि मैं सिर्फ उसका चंदना वापस लेने आई हूँ तो क्या होगा? जब उसे पता चलेगा कि मैं उसकी मदद नहीं कर सकती, तो क्या वह बहुत निराश नहीं होगा?’
नहीं, नहीं, इसकी चिंता मत करो। अगर तुम उसके साथ कुछ समय बिताओगे तो वह बहुत खुश होगा। दरअसल, मैं तुम्हें अपने पिता से मिलवाना चाहता हूँ। मैं आज खाली हूँ। क्या तुम कुछ खास कर रहे हो?
नहीं। क्या हम दस बजे तक आपके घर पहुँच जाएँ तो ठीक रहेगा?
'ज़रूर। फिर मिलते हैं। अलविदा।'
हमें लालमोहन बाबू के जल्द आने की उम्मीद थी। वह हर शनिवार और रविवार को ठीक नौ बजे हमारे घर आते थे। स्वाभाविक रूप से, यातायात की वजह से, वह हमेशा समय पर नहीं पहुँच पाते थे, लेकिन वह हमें दस मिनट से ज़्यादा इंतज़ार नहीं करवाते थे। आज वह सवा नौ बजे आए।
‘यह सचमुच बहुत अच्छा है,’ उन्होंने आरामकुर्सी पर बैठते हुए कहा। ‘मुझे सर्दियाँ बहुत पसंद हैं, जब लिखने का कोई दबाव नहीं होता। कुछ महीने पहले, दुर्गा पूजा से ठीक पहले, मुझे लगा था कि प्रकाशक की डेडलाइन पूरी करने के चक्कर में मैं पागल हो जाऊँगा! अब तो मुझे कलम और कागज़ देखने का भी मन नहीं करता।’
वह वाकई अच्छे मूड में था, क्योंकि वह गरमागरम, कुरकुरे कचौरी का एक बड़ा पैकेट लाया था। 'क्या गरमागरम कचौरी अभी भी खूब बिक रही हैं?' फेलुदा ने मुस्कुराते हुए पूछा।
“ओह, पहले से कहीं ज़्यादा। अगर आप बागबाजार में मोहन की मिठाई की दुकान के बाहर लगी कतार को देखें, तो आपको लग सकता है कि यह कोई सिनेमाघर है जहाँ कोई सुपरहिट हिंदी फिल्म दिखाई जा रही है। अब अगर आप इनमें से एक मिठाई चखेंगे, तो आपको पता चल जाएगा कि यह तुलना कितनी सटीक है।”
हम अपने साथ कचौरी और पानी की एक बोतल ले गए। लालमोहन बाबू ने प्रवासचरण हलदर के बारे में नहीं सुना था, लेकिन यह सुनकर बहुत प्रभावित हुए कि उनके संग्रह में नेपोलियन द्वारा लिखा गया एक पत्र है। उन्होंने हमें बताया,

'जब मैं स्कूल में था, नेपोलियन मेरा हीरो हुआ करता था। महान व्यक्ति, बोनापार्ट।' उन्होंने यह आखिरी बात तीन बार दोहराई, बोनापार्ट को 'बोनापार्टी' उच्चारित करते हुए। मैंने फेलुदा को मुस्कुराने की कोशिश करते हुए देखा, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा।
वीआईपी रोड पहुँचने के बाद ही यातायात में सुधार हुआ। जब हम बारासात पहुँचे, तब तक लगभग साढ़े दस बज चुके थे। हलदारों का घर मुख्य सड़क पर था, लेकिन बड़े-बड़े पेड़ों से घिरा होने के कारण उसे देखना आसान नहीं था। मुख्य द्वार से होकर पत्थर की पक्की सड़क पर चढ़ने के बाद ही मुख्य घर दिखाई देता था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि यह ब्रिटिश काल में बना था, लेकिन स्पष्ट रूप से इसका रखरखाव बहुत अच्छी तरह से किया गया था। कम से कम, सामने की दीवारें साफ और नई रंगी हुई लग रही थीं। एक तरफ एक तालाब था, जिसके चारों ओर सुपारी के ऊँचे-ऊँचे पेड़ खड़े थे।
अमिताभ हलदर बैठक में हमारा इंतज़ार कर रहे थे। फेलुदा ने लालमोहन बाबू से हमारा परिचय कराया। उन्होंने जटायु से कहा, ‘मुझे खेद है कि मैंने आपके उपन्यास नहीं पढ़े हैं, लेकिन मेरी पत्नी ने तो सारे उपन्यास पढ़ डाले हैं।’ फिर वे हमें ऊपर ले गए, जहाँ उनके पिता अपना संग्रह रखना पसंद करते थे। मैंने देखा कि सीढ़ियाँ संगमरमर की बनी थीं।
श्री हलदर ने अनुरोध किया, 'मेरे पिता से मिलने से पहले, कृपया मेरे बेटे को नमस्कार कहिएगा। बाबा से अभी एक मेहमान मिलने आया है। उन्हें सुबह के समय मेहमानों से मिलना पसंद है।'
मुझे आश्चर्य होता है कि लोग यहां भी आकर उसे परेशान करते हैं!
‘उनके पास आने वाले अधिकतर लोग दूसरे संग्रहकर्ता हैं। वे अक्सर नोटों का आदान-प्रदान करने और खरीदने-बेचने के प्रस्ताव लेकर आते हैं। हाल ही में बाबा ने एक सचिव के पद के लिए विज्ञापन दिया था। आज वे उम्मीदवारों का साक्षात्कार ले रहे हैं।’
क्या इस समय उनके पास कोई सचिव नहीं है?
“हाँ, वो काम करता है, लेकिन अगले हफ्ते जा रहा है। लगता है उसे दिल्ली में बहुत अच्छा प्रस्ताव मिला है। ये बहुत दुख की बात है, क्योंकि वो अपने काम में काफी अच्छा था। बाबा को सचिवों के मामले में बदकिस्मती का सामना करना पड़ा है। पिछले दस सालों में उनके चार सचिव रहे हैं। उनमें से एक की मेनिन्जाइटिस से मौत हो गई, दूसरे ने अचानक संसार त्याग कर साईं बाबा के आश्रम में शामिल होने का फैसला कर लिया। जो आदमी अभी बाबा से बात कर रहा है, वो असल में उनका तीसरा सचिव था। उसे सात साल पहले नौकरी से निकाल दिया गया था।”
'क्यों?'
‘वह मेहनती तो था, लेकिन हद से ज्यादा अंधविश्वासी था। बाबा कभी-कभी उस पर बहुत गुस्सा हो जाते थे। एक बार वह मिस्र गया और जेड पत्थर से बनी एक मिस्री मूर्ति ले आया। कलकत्ता लौटने पर बाबा बीमार पड़ गए... साधन बाबू ने बड़े ही गंभीर भाव से उनसे कहा कि वह मूर्ति एक देवी की है और उस देवी का श्राप बाबा पर पड़ गया है। इससे मेरे पिता इतने नाराज हो गए कि उन्होंने उसी दिन उसे नौकरी से निकाल दिया।’

“खैर, अगर वही साधन बाबू अपनी पुरानी नौकरी वापस पाने की उम्मीद से लौटे हैं, तो मुझे कहना होगा कि वे बहुत आशावादी हैं; और अगर आपके पिता उन्हें वापस लेने का फैसला करते हैं, तो उनका स्वभाव बहुत क्षमाशील होगा।”
‘असल बात यह है कि साधन बाबू के जाने के बाद बाबा को बहुत बुरा लगा। उनके पास न तो पैसे थे और न ही बाबा ने उनके लिए कोई सिफारिश पत्र लिखा।’
पहली मंजिल पर सीढ़ियाँ जहाँ खत्म होती थीं, वहाँ एक बरामदा था, जिसके पार बैठक कक्ष और पार्वतीचरण का अध्ययन कक्ष था। इनके पीछे घर के विभिन्न सदस्यों के शयनकक्ष थे। फेलुदा का छोटा सा ग्राहक अपने कमरे के सामने खड़ा था। हम उसके पास जाने ही वाले थे कि कदमों की आहट सुनकर हमने बैठक कक्ष की ओर देखा। हमने देखा कि नीली जैकेट पहने और ब्रीफकेस लिए एक आदमी वहाँ से निकला और सीढ़ियों से नीचे उतर गया।
श्री हलदर ने टिप्पणी की, 'वह बाबा के पूर्व सचिव थे। वह बहुत खुश नहीं लग रहे थे, है ना?'
जैसे ही हम अनिरुद्ध के पास पहुँचे, उसने कहा, 'यही वह पिंजरा है जिसमें मेरा पक्षी था।'
'हां, मैं यही देखने आया था,' फेलुदा ने जवाब दिया।
बरामदे की रेलिंग पर लगे हुक से एक खाली पिंजरा लटका हुआ था। वह बिल्कुल नया लग रहा था। शायद उसे पक्षी के साथ ही खरीदा गया था। फेलुदा उसे देखने गया। उसका दरवाजा अभी भी खुला हुआ था।
क्या आपके किसी नौकर को पक्षियों से एलर्जी है?
श्री हलदार फेलुदा के सवाल पर हँस पड़े। 'नहीं, जहाँ तक मुझे पता है, ऐसा नहीं है। हमारे सभी नौकर बूढ़े हैं, वे बीस साल या उससे अधिक समय से हमारे साथ हैं। इसके अलावा, एक समय हमारे पास दो भूरे तोते हुआ करते थे। बाबा ने खुद उन्हें खरीदा था। वे कई वर्षों तक हमारे साथ रहे। फिर वे मर गए।'
‘क्या तुमने इसे देखा है?’ फेलुदा ने पिंजरे को पकड़कर घुमाते हुए भौंहें चढ़ा लीं।
‘क्या देखा?’ श्री हलदर ने फेलुदा से पिंजरा ले लिया। लालमोहन बाबू और मैं करीब से देखने के लिए आगे बढ़े। फेलुदा ने पिंजरे के दरवाजे पर लगे लाल धब्बे की ओर इशारा किया।
‘मैं समझ गया कि आपका क्या मतलब है। क्या यह हो सकता है—?’
'हां। यह खून है।'
‘चंदाना हत्याकांड?’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से पूछा। ‘खैर, रासायनिक विश्लेषण किए बिना यह कहना असंभव है कि खून पक्षी का है या मनुष्य का। लेकिन यह स्पष्ट है कि दरवाजा खुला होने मात्र से पक्षी बाहर नहीं उड़ गया। किसी ने जानबूझकर उसे बाहर निकाला है और इस दौरान हाथापाई भी हुई होगी। आपने इसे कहाँ से खरीदा?’
अनिरुद्ध ने तुरंत कहा, 'नया बाजार।'
'हां, हमने इसे टिंकोरी बाबू की दुकान से लिया है। यह एक बहुत ही मशहूर पालतू जानवरों की दुकान है। मेरे कई दोस्तों ने उनसे पक्षी खरीदे हैं।' ‘आओ और मेरे खिलौने देखो। मेरे पास एक नई मशीनगन है,’ अनिरुद्ध ने फेलुदा की आस्तीन खींचते हुए कहा।

‘बाद में, अनु,’ उसके पिता ने उसे रोकते हुए कहा। ‘मैं तुमसे वादा करता हूँ कि इनके जाने से पहले मैं इन्हें तुम्हारे कमरे में वापस ले आऊँगा। तब तुम इन्हें अपने सारे खिलौने दिखा सकते हो, ये तुम्हारी माँ से मिल सकते हैं और चाय पी सकते हैं। अभी तो मुझे लगता है कि मुझे इन्हें तुम्हारे दादाजी से मिलवाना चाहिए।’
हम मुड़े और पार्वतीचरण के अध्ययन कक्ष की ओर चल पड़े।
लेकिन उनसे मिलना हमारी किस्मत में नहीं था। लालमोहन बाबू ने बाद में मुझे बताया कि किसी बड़े सदमे का क्या असर होता है। उन्होंने कहा, 'कभी-कभी, चाहे आप पूरी जिंदगी कोशिश कर लें, उससे उबरना नामुमकिन हो जाता है!' श्री हलदर के घर में कुछ ही सेकंड बाद जो कुछ हुआ, उसे देखकर मैं उनकी बात से पूरी तरह सहमत हो गया।
अध्ययन कक्ष में जाने के लिए हमें बैठक से होकर गुजरना पड़ा। पूरा कमरा सजावटी सामानों से भरा हुआ था। लेकिन हमने फिलहाल इन पर ध्यान नहीं दिया और अध्ययन कक्ष की ओर जाने वाले दरवाजे की तरफ बढ़े। अमिताभ हलदर ने पर्दा उठाया और कहा, 'अंदर आइए।' हालांकि, इससे पहले कि हममें से कोई एक कदम भी बढ़ा पाता, उन्होंने रुंधे हुए गले से 'बाबा!' की आवाज निकाली और शायद गिर ही जाते, अगर फेलुदा ने आगे बढ़कर उनकी बांहें न पकड़ी होतीं। एक पल बाद, लालमोहन बाबू और मैं कमरे में दाखिल हुए।
पार्वतीचरण एक विशाल महोगनी की मेज के पीछे घूमने वाली कुर्सी पर बैठे थे। उनका सिर पीछे की ओर झुका हुआ था, उनकी निर्जीव आँखें सीधे छत की ओर टकटकी लगाए हुए थीं, और उनकी बाहें बगल में ढीली लटकी हुई थीं।
फेलुदा दौड़कर उसकी नब्ज़ जाँचने गया। फिर उसने मुझसे कहा, 'जल्दी जाओ और पता लगाओ कि क्या तुम्हें साधन नाम का वह आदमी मिल सकता है। चौकीदार से पूछो। ज़रूरत पड़ने पर बाहर जाकर मुख्य सड़क पर भी खोजो।'
लालमोहन बाबू और मैं सीढ़ियों की ओर दौड़ने लगे। मुझे मन ही मन पता था कि उस आदमी को ढूंढने की संभावना लगभग न के बराबर थी। वह कम से कम दस मिनट पहले घर से निकल चुका था।
नीचे उतरते समय हमारी टक्कर एक अन्य सज्जन से होते-होते बची। बाद में पता चला कि वे पार्वतीचरण के वर्तमान सचिव हृषिकेश दत्ता थे। उस समय स्पष्टीकरण मांगने या देने का समय नहीं था।
हमें घर के बाहर या मुख्य सड़क पर कोई नहीं मिला। सबसे हैरानी की बात यह थी कि चौकीदार ने हमें भरोसा दिलाया कि पिछले दस मिनट में कोई भी गेट से बाहर नहीं निकला था। उसने कहा कि उसे पता था कि आज सुबह कुछ लोग आएंगे, इसलिए वह अतिरिक्त सतर्कता बरत रहा था। उससे गलती हो ही नहीं सकती थी।
‘चलो पूरे परिसर की तलाशी लेते हैं। घर के पीछे एक बगीचा है, मुझे लगता है। शायद वो वहीं छिपा हो?’ लालमोहन बाबू ने कहा। यह सुझाव अच्छा लगा, इसलिए हमने पूरे इलाके की छानबीन की। हमने झाड़ियों के पीछे देखा, गुलाब के बगीचे में तलाशी ली, तालाब के पास सुपारी के पेड़ों के पीछे गए, परिसर की दीवार भी जाँची कि कहीं कोई उसे फांदकर अंदर तो नहीं घुसा है—लेकिन फिर भी हमें कुछ नहीं मिला। दीवार लगभग आठ फीट ऊँची थी। वैसे भी, जल्दी में उसे फांदना काफी मुश्किल होता।

□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□
Sadhan Babu had gone—vanished into thin air.

दो
पार्वतीचरण के सिर पर किसी भारी औजार से वार किया गया था। हलदार परिवार के चिकित्सक ने बताया कि उनकी मृत्यु तुरंत हो गई होगी। जाहिर तौर पर उनकी सेहत ठीक नहीं थी। उनका रक्तचाप अक्सर घटता-बढ़ता रहता था और उनका हृदय भी स्वस्थ नहीं था।
कुछ ही देर बाद पुलिस मौके पर पहुंच गई। मामले के प्रभारी इंस्पेक्टर हाजरा निकले, जो फेलुदा को जानते थे। कुछ अन्य पुलिस अधिकारियों के विपरीत, वे निजी जासूसों को नीचा नहीं समझते थे। वे फेलुदा को बहुत पसंद करते थे और उनका बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने कहा, 'हम सभी औपचारिक पूछताछ करेंगे और अगर हमें कुछ उपयोगी जानकारी मिलती है तो आपको सूचित करेंगे।'
'धन्यवाद। क्या आपने हथियार के संबंध में कोई विचार बनाया है?'
'नहीं, कमरे में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका इस्तेमाल किया गया हो, है ना? हत्यारा उसे अपने साथ ले गया होगा।'
‘पेपरवेट।’
‘क्या? तुम्हें लगता है कि यह पेपरवेट था?’
'मेरे साथ आइए।'
हम फेलुदा और इंस्पेक्टर हाजरा के पीछे-पीछे अध्ययन कक्ष में गए। फेलुदा ने पार्वतीचरण की मेज के एक हिस्से की ओर इशारा किया। उसकी सतह पर बिछे हरे रंग के मखमल पर धूल की एक पतली परत जमी हुई थी। एक कोने में एक गोलाकार निशान था, जिस पर धूल नहीं थी। ध्यान से देखने पर ही वह तुरंत नज़र आता था। फेलुदा ने कहा, 'मैंने अमिताभ हलदर से बात की। उन्होंने बताया कि उस कोने में एक बड़ा और भारी विक्टोरियन शैली का कांच का पेपरवेट हुआ करता था। खैर, अब वह गायब है।'
'शाबाश, श्रीमान मिटर।'
‘लेकिन मुख्य संदिग्ध का क्या हुआ? क्या वह सचमुच हवा में गायब हो गया?’ फेलुदा ने अध्ययन कक्ष से बाहर आते हुए पूछा।
‘हमारे पास उसका नाम और हुलिया है। उसे ढूंढने में हमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। वैसे भी, उसने यहाँ नौकरी के लिए आवेदन किया था, है ना? तो हम आसानी से उसका पता पता कर सकते हैं। नहीं, मुझे शक है कि चौकीदार सच नहीं बता रहा है। हो सकता है कि वह कुछ पलों के लिए अपनी सीट से उठा हो, और तभी अपराधी निकल गया हो। लेकिन फिर, असली अपराधी कौन है? क्या साधन बाबू के आने से पहले पीड़ित ने किसी आगंतुक को नहीं देखा था? यह दूसरा व्यक्ति भी उतना ही दोषी हो सकता है।’

‘आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? अगर साधन बाबू के कमरे में आने के समय बूढ़े श्री हलदर की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी, तो उन्होंने निश्चित रूप से शोर मचाया होता?’
‘आपने कमरा देखा है ना? क्या यह किसी पुरानी चीज़ों की दुकान जैसा नहीं दिखता? मान लीजिए कि साधन बाबू बेईमान और धोखेबाज है, तो अगर वह अंदर जाए और मालिक को मरा हुआ पाए तो वह क्या करेगा? क्या वह बस जो कुछ भी हाथ लगे उसे लेकर गायब नहीं हो जाएगा?’
फेलुदा ने पार्वतीचरण के वर्तमान सचिव, हृषिकेश दत्ता की ओर रुख किया। तब तक हमारी जान-पहचान हो चुकी थी। उन्होंने बताया कि वे रात दस बजे से ठीक पहले डाकघर गए थे, कुछ तार विदेश भेजने के लिए। लौटने पर उन्होंने हमें सीढ़ियों से नीचे भागते हुए पाया। फेलुदा ने उनसे पूछा, 'अगर उस कमरे से कोई कीमती चीज गायब हुई है, तो क्या आप हमें बता सकते हैं कि वह क्या है?' 'हां, शायद। मुझे अच्छी तरह पता है कि बाहर क्या-क्या प्रदर्शित है। श्री हलदर ने एक बार मुझे उन चीजों की सूची दी थी जिन्हें उन्होंने कांच के बक्से में बंद करके रखा था। हो सकता है कि उन्होंने उनमें से कुछ चीजें पेस्टनजी को दिखाने के लिए बाहर निकाली हों। पेस्टनजी साढ़े नौ बजे आए थे।'
क्या वे एक दूसरे को जानते थे?
'ओह, हाँ। पेस्टनजी भी एक संग्रहकर्ता हैं। वे एक दूसरे को दस साल से अधिक समय से जानते थे। वह कभी-कभी श्री हलदार के पास मौजूद एक विशेष पत्र को देखने आते थे।'
‘नेपोलियन का पत्र?’
'हाँ।'
‘क्या श्री हलदर इसे बेचने की सोच रहे थे?’
बिलकुल नहीं। पेस्टनजी इसे खरीदने के लिए बहुत उत्सुक थे, लेकिन श्री हलदार को उनका प्रस्ताव ठुकराने में बहुत मज़ा आता था। लेकिन फिर, उन्होंने सिर्फ़ पेस्टनजी को ही नहीं ठुकराया। एक बार एक अमेरिकी ने बीस हज़ार डॉलर की पेशकश की। श्री हलदार ने बस अपना सिर हिला दिया। बहुत समझाने-बुझाने के बाद, अमेरिकी आखिरकार अपना आपा खो बैठा और अपशब्द बोलने लगा, लेकिन फिर भी श्री हलदार टस से मस नहीं हुए। वास्तव में, मुझे लगता है कि उन्हें एक संभावित खरीदार को निराश करने की शक्ति का आनंद मिलता था। आज, पेस्टनजी उससे काफ़ी नाराज़ लग रहे थे। मैंने उन्हें ऊँची आवाज़ में बोलते सुना।
‘यह प्रसिद्ध पत्र कहाँ रखा गया था?’
‘अल्काथीन लिफाफे में।’
‘तो शायद यह अभी भी सुरक्षित है। मैंने उसकी मेज पर एक अल्काथीन का लिफाफा देखा, और उसमें कागज का एक मुड़ा हुआ टुकड़ा था।’
'अच्छा। यह वाकई राहत की बात है।'
यह तुरंत जांचना संभव नहीं था कि पत्र वहां था या नहीं, क्योंकि पुलिस अभी भी कमरे में काम कर रही थी। पुलिस सर्जन अभी-अभी पहुंचे थे और शव की जांच कर रहे थे।

‘मुझे सबसे ज्यादा हैरानी इस बात की है कि मैं लगभग उसी समय लौटा जब साधन बाबू चले गए थे। मैंने उन्हें कहीं क्यों नहीं देखा?’
‘आप घर से कितने बजे निकले थे?’
‘ठीक दस बजने में पांच मिनट का समय लगता है। डाकघर पहुंचने में पांच मिनट लगते हैं। मैं डाकघर खुलते ही उन केबलों को भेजना चाहता था।’
‘इसमें आपको कुछ ही मिनट लगने चाहिए थे। वापस आने में इतनी देर क्यों हो गई?’
मैं अपनी घड़ी के लिए नया पट्टा ढूंढने के लिए आस-पास की दुकानों में देख रहा था। अचानक वह ढीला हो गया। यह बहुत परेशान करने वाला है, मैं बता नहीं सकता। मुझे घड़ी अपने दाहिने हाथ की कलाई पर पहननी पड़ रही है। दरअसल, मेरी बाईं कलाई दाहिनी कलाई से पतली है। इसलिए मुझे यह समस्या अक्सर होती है। लेकिन किसी भी दुकान में मुझे वह नहीं मिला जो मैं ढूंढ रहा था। अब मुझे लगता है कि मुझे न्यू मार्केट में कोशिश करनी पड़ेगी।
मैंने पहले ही देख लिया था कि उसने अपनी घड़ी दाहिनी कलाई पर पहनी हुई थी। 'क्या आप यहीं रहते हैं?' फेलुदा ने पूछा। अमिताभ हलदर अपने परिवार के साथ व्यस्त थे और स्वाभाविक रूप से जो कुछ हुआ था उससे बहुत परेशान थे, इसलिए फेलुदा हृषिकेश दत्ता से यथासंभव जानकारी प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे।
जी हां। मेरे पास भूतल पर एक कमरा है। चूंकि मेरा कोई परिवार नहीं था, इसलिए श्री हलदर ने मुझे बताया कि मैं उसी घर में रह सकता हूं। भगवान जाने उनके पास कितने कमरे हैं। मुझे लगता है साधन बाबू भी यहीं रहते थे।
लेकिन आप तो यह नौकरी छोड़ने ही वाले थे, है ना? क्या आप यहां काम करके खुश नहीं थे?
‘मैं पूरी तरह से ऊब गया था। श्री हलदर एक अच्छे नियोक्ता थे, मुझे व्यक्तिगत रूप से उनसे कोई शिकायत नहीं है। लेकिन यहाँ पदोन्नति या इस तरह के किसी भी अवसर का कोई नामोनिशान नहीं था, इसलिए जाहिर है कि मुझे जो पहला अच्छा प्रस्ताव मिला, मैंने उसे स्वीकार कर लिया।’
इस बीच, हृषिकेश दत्ता के अलावा हमारी मुलाकात एक और सज्जन से हुई। ये अमिताभ हलदर के छोटे भाई अचिंत्य थे। उनसे ठीक से बात करने का समय नहीं मिला। इस समय पुलिस उनसे पूछताछ कर रही थी, क्योंकि हत्या के समय वे घर में ही मौजूद थे। फेलुदा ने श्री दत्ता से बातचीत जारी रखी।
‘What does Achintya Haldar do?’
वह थिएटर में है।
‘थिएटर? आपका मतलब पेशेवर थिएटर से है?’
हम सब काफी हैरान रह गए। हृषिकेश दत्ता ने जवाब देने से पहले कुछ समय लिया। अंत में उन्होंने कहा, ‘यह पारिवारिक मामला है। सच कहूं तो मुझे इस बारे में बात नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन अगर अचिंत्य ने रंगमंच में कदम रखा है, तो मुझे लगता है कि वह अपने परिवार से नाखुश था। श्री हलदर के चार बेटे थे। उनमें से सिर्फ अचिंत्य को ही विदेश पढ़ने नहीं भेजा गया। कभी-कभी बड़े परिवार में सबसे छोटा बच्चा उपेक्षित रह जाता है। शायद इस मामले में भी यही हुआ है। कम से कम, जो कुछ

उसने मुझे बताया है, उससे तो मुझे यही लगता है। उसके पिता ने उसके लिए नौकरी ढूंढी थी, लेकिन उसने उसे जल्द ही छोड़ दिया। मुझे लगता है कि कुछ समय तक वह स्थानीय नाट्य क्लब में काम करके खुश था, लेकिन अब वह कलकत्ता की एक थिएटर कंपनी में काम पाने की कोशिश कर रहा है। मुझे लगता है उसका नाम नोबो रंगमंच है। उसने कुछ नाटकों में मुख्य भूमिका निभाई है। कल भी मैंने उसे अपने संवाद याद करते देखा था।’
इंस्पेक्टर हाजरा एक अंदरूनी कमरे से बाहर निकलीं, उनके पीछे अचिंत्य हलदार भी थे, जो उदास और निराश दिख रहे थे। वे हमारी तरफ देखे बिना ही चले गए।
इंस्पेक्टर ने हमें बताया, ‘हत्या दस से साढ़े दस बजे के बीच हुई। पेस्टनजी साढ़े नौ बजे आए और लगभग दस बजकर पांच मिनट तक रुके। साधन दस्तीदार पंद्रह मिनट पर आए और साढ़े दस बजे चले गए। अचिंत्य के कमरे से सीधे उनके पिता के अध्ययन कक्ष तक एक रास्ता जाता है। वह दस बजकर पांच मिनट से पंद्रह मिनट के बीच अपने पिता के पास जा सकते थे, हालांकि उनका कहना है कि वह पूरी सुबह अपने कमरे में अपनी लाइनें याद कर रहे थे। वह केवल साढ़े दस बजे ही कमरे से बाहर निकले, और वह भी इसलिए क्योंकि छोटे अनु ने उन्हें अपने कमरे में अपना नया खिलौना मशीनगन दिखाने के लिए बुलाया था। उस समय उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनके पिता की मृत्यु हो चुकी है। खैर, तीनों के पास पार्वतीचरण की हत्या करने का एक संभावित मकसद था। पेस्टनजी उनके प्रतिद्वंद्वी थे, साधन दस्तीदार बदला लेना चाहते होंगे, और अचिंत्य के अपने पिता से संबंध अच्छे नहीं थे। फिलहाल स्थिति यही है। श्री दत्ता, क्या आप मेरे साथ वापस आकर हमें बता सकते हैं कि क्या आपको लगता है कि कुछ छूट गया है?’
हम सब वापस अध्ययन कक्ष में चले गए। श्री दत्ता ने पूरे कमरे पर सरसरी नज़र डाली। पार्वतीचरण को यांत्रिक उपकरणों का शौक रहा होगा, क्योंकि नीचे ड्राइंग रूम में मैंने एक बेलनाकार ग्रामोफोन देखा था, और यहाँ उनके अध्ययन कक्ष में एक प्राचीन मैजिक लैंटर्न था। इनके अलावा मूर्तियाँ, प्लेटें, स्याहीदान, कलम, पुराने हथियार, चित्र, नक्शे और किताबें भी थीं। श्री दत्ता ने एक दराज से चाबी निकाली, एक कांच का बक्सा खोला और उसके अंदर रखी चीज़ों को देखा। फिर उन्होंने कुछ और लकड़ी के बक्से खोले और कुछ और दराजें निकालीं, जिनमें से प्रत्येक में इसी तरह की वस्तुएँ भरी हुई थीं। अंत में, उन्होंने राहत की साँस ली और कहा कि उन्हें नहीं लगता कि कुछ भी चोरी हुआ है।
‘नेपोलियन के पत्र वाले उस लिफाफे का क्या हुआ?’ फेलुदा ने इशारा करते हुए पूछा।
लेकिन ऐसा लगता है कि पत्र अभी भी वहीं है, बिल्कुल सही सलामत!
'हां, लेकिन जांच करने में कोई हर्ज नहीं है, है ना?'
श्री हल्दार ने सिर हिलाया और लिफाफा खोला। जैसे ही उन्होंने कागज़ बाहर निकाला, मेरी धड़कन रुक गई। एक पुराना पत्र इतना साफ और सफेद कभी नहीं दिख सकता था।

‘□□ □□□□□!’ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ ‘□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□!’
□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□

तीन
हमने श्री हलदर के घर में आधा घंटा और बिताया। फेलुदा ने परिसर का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया। वह हमारे साथ बगीचे में गया, परिसर की दीवार की जाँच की कि कहीं उसका कोई हिस्सा टूटा तो नहीं है, और अंत में तालाब के पास पहुँच गया। उसकी नज़र ज़मीन पर थी, वह पैरों के निशान ढूँढ़ रहा था। ज़मीन सूखी होने के कारण मुझे नहीं लगता था कि उसे कोई निशान मिलेंगे; फिर भी, किसी चीज़ ने उसका ध्यान खींचा और वह रुक गया। मैंने जल्दी से उसकी ओर देखा, तो पाया कि वह एक छोटे से फूल वाले पौधे को घूर रहा था। किसी भारी चीज़ ने उसे कुचल दिया था, और यह स्पष्ट रूप से पिछले कुछ घंटों में हुआ था। फेलुदा ने पौधे के आसपास की ज़मीन का निरीक्षण किया, फिर तालाब को देखने लगा। हलदर परिवार इसका उपयोग नहीं करता था, इसलिए इसका अधिकांश भाग खरपतवार और जलकुंभी से ढका हुआ था। केवल एक छोटा सा हिस्सा ही ऐसा लग रहा था जैसे उसे छेड़ा गया हो, क्योंकि घनी खरपतवार हट गई थी और नीचे का पानी दिखाई दे रहा था।
क्या ऐसा हो सकता है कि पानी में कुछ फेंका गया हो? फेलुदा ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की, इसलिए मैंने भी कुछ कहने की हिम्मत नहीं की। हम घर वापस जाने के लिए मुड़ गए।
जैसे ही हम चलना शुरू करने लगे, लालमोहन बाबू ने बताया, 'मुझे लगा कि मैंने बगीचे में एक चंदन देखा, वह अमरूद के पेड़ से उड़कर दूसरे पेड़ में गायब हो गया।'
‘आपने हमें तुरंत क्यों नहीं बताया?’ फेलुदा ने नाराज़गी भरे लहजे में कहा। ‘दरअसल... क्योंकि मुझे पक्का पता नहीं था। यह एक साधारण हरा तोता भी हो सकता था। दोनों में फर्क करना आसान नहीं होता, है ना? लेकिन यह पक्षी बोल सकता है।’
‘क्या, तुमने उसे कुछ कहते हुए सुना?’
'हां। आप दोनों दूर छोर पर ज़मीन का मुआयना कर रहे थे। मैंने अभी-अभी एक बिच्छू देखा था और किनारे हट गया था, तभी एक पक्षी मेरे सिर के ऊपर से उड़ा और कुछ बोला। मतलब, मैंने ये शब्द सुने, ऊपर देखा और पाया कि ये शब्द एक पक्षी ने बोले थे।'
‘अरे? और उसमें क्या लिखा था?’
‘उसमें लिखा था, “नकली बाल, बाबू; नकली बाल, बाबू”!’
फेलुदा ने उसे घूरकर देखा। ‘पक्षी ने कहा, “नकली बाल”? कितना असभ्य पक्षी है! तुम्हारे सिर पर बाल न होने पर ताना मार रहा है?’
‘देखो, इसीलिए तो मैंने तुम्हें कुछ नहीं बताया!’ लालमोहन बाबू ने चिढ़ते हुए जवाब दिया। ‘मुझे पता था कि तुम मेरी बात पर विश्वास नहीं करोगे और मेरा मजाक उड़ाओगे।’

हमने इसके अलावा कुछ नहीं कहा, क्योंकि हम दोनों में से कोई भी इसे गंभीरता से नहीं ले सकता था।
लेकिन सच्चाई यही थी कि हत्या और चोरी के बावजूद, फेलुदा चिड़िया के गायब होने से अचंभित था। हत्या के दो दिन बाद, अगले सोमवार को उसने मुझसे कहा, 'एक आदमी की हत्या हो जाती है, और एक पुराना कीमती पत्र चोरी हो जाता है—यह दुर्भाग्यपूर्ण तो है, लेकिन असाधारण नहीं। लेकिन एक छोटी सी चंदना चिड़िया अपने पिंजरे से क्यों गायब हो गई? मेरी समझ से परे है!'
अमिताभ हलदर ने हमें एक दिन पहले फोन किया था। फेलुदा ने उनसे कहा था कि उन्हें उनके घर वापस जाने का कोई कारण नहीं है, खासकर तब जब पुलिस अपनी जांच कर रही है। लालमोहन बाबू ने कुछ मिनट पहले हमें फोन किया था और कहा था कि वे नवीनतम घटनाक्रम जानने के लिए आएंगे, हालांकि वे आम तौर पर सोमवार को हमारे घर नहीं आते।
मैंने कहा, 'फेलुदा, हमें यह पता नहीं चला कि पिंजरे पर किसका खून था, है ना?'
खैर, मुझे नहीं लगता कि रासायनिक विश्लेषण की कोई आवश्यकता है। मुझे पूरा यकीन है कि ये निशान किसी इंसान ने ही छोड़े हैं। जिसने भी पक्षी को जबरदस्ती ले जाने की कोशिश की होगी, उसे चोट जरूर लगी होगी। मेरा मतलब है, पक्षी को स्वाभाविक रूप से लगा होगा कि उस पर हमला हो रहा है, है ना? इसलिए उसने अपने पंजों और चोंच का इस्तेमाल खुद का बचाव करने के लिए किया होगा, और निश्चित रूप से उसने अपने हमलावर के हाथ पर अपने निशान छोड़े होंगे। ‘क्या आपने श्री हलदर के घर में किसी पर ऐसा कोई निशान देखा?’
नहीं। मैंने नौकरों समेत सभी को बहुत बारीकी से देखा, लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला। अगर चोट ताजा होती, तो किसी न किसी पर तो दिखती। सच कहूँ तो, मैं किसी और चीज़ पर ध्यान नहीं दे पा रही हूँ—मैं बस उस पक्षी के बारे में सोचती रहती हूँ!
‘क्या आपने उन लोगों की सूची नहीं बनाई थी जिन्हें हत्या करने का अवसर मिला था?’
'हां, अवसर के साथ-साथ मकसद भी।'
फेलुदा की नोटबुक सोफे पर उसके बगल में पड़ी थी। उसने उसे उठाया और खोला। ‘साधन दस्तीदार। हमारा पहला संदिग्ध। उसके बारे में हमने जो कुछ भी पता लगाया है, वह काफी सीधा-सादा है। रहस्य उसके गायब होने में छिपा है। एकमात्र संभावित स्पष्टीकरण यह है कि उसने चौकीदार को पर्याप्त रिश्वत दी होगी, और चौकीदार झूठ बोल रहा है। अगर ऐसा है, तो मुझे यकीन है कि पुलिस इसे संभाल लेगी। उनके पास झूठ बोलने वालों से निपटने के तरीके हैं।’ पेस्टनजी—दूसरा संदिग्ध। उनकी उम्र सत्तर साल है। यह मानना मुश्किल है कि कोई बूढ़ा व्यक्ति ऐसा अपराध करेगा जिसमें शारीरिक ताकत की जरूरत हो। पार्वतीचरण पर बहुत ज़ोर से प्रहार किया गया था। लेकिन उम्र हमेशा ताकत को प्रभावित नहीं करती। पेस्टनजी को देखे बिना हम उनके बारे में कोई अंतिम फैसला नहीं कर सकते।
‘अचिंत्य हलदर—तीसरा संदिग्ध। वह अपने पिता को पसंद नहीं करता था, लेकिन क्या वह सचमुच उनसे इतनी नफरत करता था कि उन्हें मारना चाहता था? हम

निश्चित रूप से नहीं जानते। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि अगर वह नेपोलियन द्वारा लिखा गया वह पत्र हासिल कर ले और उसे बेच दे, तो वह अमीर हो सकता है। अनुमानतः, पेस्टनजी उसे तुरंत खरीद लेंगे। मुझे यकीन है कि अचिंत्य यह जानता था। चौथा...’
मैंने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, 'आपका मतलब है कि चौथा संदिग्ध भी है?' ‘वह सीधे तौर पर संदिग्ध तो नहीं हैं, लेकिन हमें यह जानना ज़रूरी है कि उस सुबह वह क्या कर रहे थे। मैं अपने मित्र अमिताभ हलदर की बात कर रहा हूँ। पुलिस को दिए अपने बयान में उन्होंने कहा कि वह सुबह नौ बजे मुझे फोन करने के लिए ड्राइंग रूम में आए, फिर सीधे बगीचे में अपने फूलों की देखभाल करने चले गए। वह वहाँ दस बजे तक रहे, फिर बगीचे से निकलकर भूतल पर बने एक बरामदे में चले गए। एक नौकर उनके लिए चाय लेकर आया। अमिताभ हलदर के अनुसार, जब उन्होंने हमारे आने की आवाज़ सुनी, तब वह यहीं बैठे थे। फिर वह हमारे साथ ऊपर चले गए।’
‘आखिरी व्यक्ति जिस पर विचार किया जाना है, वह है हृषिकेश दत्ता। वह रात दस बजने से पांच मिनट पहले घर से निकला था। चौकीदार को उसे जाते हुए देखना याद है, लेकिन उसे वापस आते हुए देखने की याद नहीं है। मुझे नहीं लगता कि चौकीदार एक भरोसेमंद गवाह है। वह वफादार तो है, लेकिन बूढ़ा है। वह चालीस साल से अधिक समय से हलदर परिवार के साथ है। इसलिए शायद उसकी याददाश्त पहले जैसी तेज नहीं रही। हमें नहीं पता कि श्री दत्ता ने वास्तव में अपनी घड़ी के पट्टे की तलाश में इतना समय बिताया था या नहीं। लेकिन अगर उसने इस बारे में झूठ भी बोला है, तो मुझे यकीन नहीं है कि उसे ऐसा करने का उचित अवसर मिला होगा। उसका मकसद भी संदिग्ध है। वह अपने मालिक की हत्या क्यों करना चाहेगा, सिवाय इसके कि वह सिर्फ उस पत्र को चुराकर कहीं और बेचना चाहता हो?’
फेलुदा ने अपनी नोटबुक बंद कर दी।
मैंने पूछा, 'मुझे लगता है कि सभी नौकर संदेह से परे हैं?'
‘ये सभी बुजुर्ग और भरोसेमंद हैं। मुकुंदो नाम के एक वेटर ने दस बजे से ठीक पहले पार्वतीचरण और पेस्टनजी के लिए कॉफी लाई थी। जाहिर है, पार्वतीचरण नौ बजे के बाद एक कप कॉफी पीते थे। घर के अन्य सदस्यों में अमिताभ हलदर की पत्नी अनिरुद्ध, पार्वतीचरण की अस्सी साल से अधिक उम्र की मां, एक माली और उसका बेटा, एक ड्राइवर और चौकीदार शामिल हैं। अचिंत्य हलदर अविवाहित हैं।’ फेलुदा ने बोलना बंद कर दिया और एक चारमीनार जलाई। उसी क्षण फोन की घंटी बजी। इंस्पेक्टर हाजरा का फोन था।
फेलुदा ने कहा, 'सुप्रभात, क्या ताज़ा खबर है?'
'हमें वह पता मिल गया जो साधन दस्तीदार ने दिया था।'
'बहुत अच्छा।'
'बहुत बुरा, क्योंकि उस नाम का कोई भी व्यक्ति कभी वहां नहीं रहा है।' 'वास्तव में?'
'हां। तो हम फिर से वहीं आ गए जहां से शुरू किया था। यह दस्तीदार काफी धूर्त बदमाश लगता है।'
‘हृषिकेश दत्ता के बारे में क्या? क्या आपने उसकी अलबी की जाँच की?’

‘वह डाकघर गया था और उसने वे टेलीग्राम भेजे थे। लेकिन स्थानीय स्टेशनरी की दुकानों में किसी को भी उसे देखने की बात याद नहीं है। इसलिए हम निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते।’
‘और पेस्टोंजी?’
‘बेहद गुस्सैल स्वभाव का आदमी। बेहद धनी। मेरा मानना है कि उसका परिवार डेढ़ सौ साल से कलकत्ता में रह रहा है। अपनी उम्र के हिसाब से वह काफी तंदुरुस्त दिखता है, लेकिन उसे गठिया है। वह अपना दाहिना हाथ कंधे तक भी नहीं उठा पाता। हर सुबह वह लॉर्ड सिन्हा रोड स्थित एक क्लिनिक में फिजियोथेरेपी के लिए जाता है। यह बात सच है, मैंने क्लिनिक से इसकी पुष्टि की है।’
‘ऐसे में, मुझे लगता है कि हम केवल साधन दस्तीदार को ढूंढने की कोशिश ही कर सकते हैं।’
‘ओह, हम उसे ढूंढ लेंगे, चिंता मत करो। मुझे लगता है कि वह बारासात में कहीं छिपा हुआ है। उसके आवेदन वाले लिफाफे पर बारासात डाकघर का निशान था।’
‘मैं समझ गया। यह बहुत दिलचस्प है।’
‘वैसे, एक चोर उस छोटे लड़के के कमरे में घुस गया था।’
'क्या फिर से?'
‘आपका मतलब क्या है, फिर से?’
इंस्पेक्टर हाजरा को चंदना के गायब होने की जानकारी नहीं थी। फेलुदा ने उन्हें इस बारे में न बताने का फैसला किया। 'नहीं, मेरा मतलब है कि पहले ही चोरी हो चुकी है। वह पत्र गायब है। और अब कोई लड़के के कमरे में सेंध लगाता है?' उसने जल्दी से कहा।
'हां, लेकिन कुछ भी नहीं लिया गया।'
‘लड़के को कैसे पता चला कि उसके कमरे में कोई है?’
“उसे एक आवाज़ सुनाई दी। मैं आज सुबह उसके कमरे में गया। वह अपने माता-पिता के बगल वाले कमरे में अकेला सोता है। मुझे कहना पड़ेगा कि वह बहुत बहादुर लड़का है, क्योंकि डरने के बजाय उसने चिल्लाकर पूछा, “कौन है?” और चोर भाग गया। मैंने उससे पूछा कि उसे डर क्यों नहीं लगा, तो उसने कहा कि ऐसा इसलिए था क्योंकि जब से उसने अपने दादा की मृत्यु के बारे में सुना था, तब से वह अपनी मशीनगन तकिए के नीचे रखकर सोता था।”
लालमोहन बाबू दस बजे पहुंचे। उन्होंने चिंता से पूछा, ‘फेलू बाबू, आप इतने उदास क्यों दिख रहे हैं? क्या आपको अभी तक सच्चाई का पता नहीं चला?’
'नहीं, मुझे डर है कि ऐसा नहीं हो सकता। अगर हर दिन कोई नया रहस्य सामने आ जाए तो मैं क्या करूँ?'
‘एक नया रहस्य?’
‘कल रात एक चोर अनिरुद्ध के कमरे में घुस गया।’
‘क्या! यह चोर पागल है। इसके पास पहले से ही नेपोलियन का पत्र है, है ना? एक छोटे लड़के के कमरे में इसे क्या मिलने की उम्मीद थी?’
मुझे नहीं पता। क्या आपके पास कोई सुझाव है?
‘कौन, मैं? हा हा, फेलू बाबू, जब तुम्हारा दिमाग काम करना बंद कर चुका है तो मेरा दिमाग कैसे काम करेगा? लेकिन मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। चोरी हुए

पक्षी का यह मामला मुझे लगातार परेशान कर रहा है। मुझे लगता है कि इसकी गहन जाँच होनी चाहिए। मैं तुम्हारे लिए यह करने को तैयार हूँ। देखो, मैं पहले न्यू मार्केट में टिंकोरी बाबू की दुकान पर अक्सर जाया करता था।’
‘अरे, तुमने तो पहले कभी इसका जिक्र ही नहीं किया!’
नहीं, लेकिन मुझे खुद पक्षियों से बहुत लगाव हुआ करता था। मेरे पास एक मैना थी जो बोल सकती थी। मैंने उसे शेक्सपियर की एक पंक्ति सिखाई थी। ‘शेक्सपियर? हे भगवान! यह तो कुछ ज्यादा ही महत्वाकांक्षी था, है ना? क्या बच्चों की कविताएँ इससे कहीं ज्यादा सरल नहीं होतीं?’
लालमोहन बाबू ने इस ताने को अनसुना कर दिया और मेरी ओर मुड़े। 'तपेश, न्यू मार्केट घूमने का तुम्हारा क्या ख्याल है?'
'अगर आप अभी निकल जाएं तो मैं एक घंटे में आपसे वहीं मिल सकता हूं,' फेलुदा ने कहा।
'कहाँ?'
'बाजार के ठीक बीचोंबीच, जहाँ वो तोप है। आज मुझे बहुत कुछ करना है; और फिर हम बाहर खाना खाने जा रहे हैं, यह मत भूलना।'
मैं भूला नहीं था। हम हर हफ्ते एक बार बाहर खाना खाते थे।
लालमोहन बाबू और मैं लगभग तुरंत ही उनकी कार में निकल गए। टिंकोरी बाबू की दुकान अद्भुत किस्म के पक्षियों से भरी हुई थी। लेकिन वह लालमोहन बाबू को पहचान नहीं पाए। यह आश्चर्य की बात नहीं थी क्योंकि उन्होंने 1968 के बाद से दुकान का दौरा नहीं किया था। हालांकि, इससे उन्हें इतनी परेशानी हुई कि अंत में मुझे ही सारी बात करनी पड़ी।
मैंने पूछा, 'क्या आपने पिछले दस दिनों में बारासात में किसी को चंदना बेचा है?'
‘बारासात के बारे में तो मुझे नहीं पता, लेकिन हां, मैंने पिछले दस दिनों में दो चंदना बेचे हैं। उनमें से एक फिल्म कंपनी को गया। वे उसे सिर्फ एक दिन के लिए किराए पर लेना चाहते थे, लेकिन मैंने उनसे कहा कि शूटिंग के लिए पक्षियों को किराए पर लेने का ज़माना चला गया। अगर उन्हें पिंजरे में पक्षी चाहिए, तो उन्हें उसे खरीदना पड़ेगा। और अगर बाद में उन्हें समझ न आए कि उसका क्या करें, तो वे उसे अपनी हीरोइन को दे सकते हैं!’
‘दूसरे वाले का क्या हुआ? वो आपकी दुकान तक कैसे पहुंचा?’
‘क्यों, इससे तुम्हें क्या लेना-देना है? तुम इतने सवाल क्यों पूछ रहे हो?’ टिंकोरी बाबू के लहजे में स्पष्ट रूप से संदेह झलक रहा था।
‘वह पक्षी रहस्यमय परिस्थितियों में अपने पिंजरे से गायब हो गया है,’ लालमोहन बाबू ने बातचीत में शामिल होते हुए कहा। ‘हमें उसे ढूंढना ही होगा।’
‘तो फिर अखबारों में विज्ञापन दे दो।’
'हां, हम ऐसा कर सकते हैं। लेकिन अगर आप हमें बता सकें कि आपको यह कैसे मिला...'
नहीं, मैं आपको ऐसी कोई बात नहीं बताने वाला। बस एक विज्ञापन लिखिए और भेज दीजिए।
‘क्या वह पक्षी बोलता था?’

हां, लेकिन मुझसे यह मत पूछो कि वह क्या बोल सकता है। मेरी दुकान में सत्रह बोलने वाले पक्षी हैं। कुछ "शुभ प्रभात" कहते हैं, कुछ "मुझे भूख लगी है" कहते हैं, कुछ "जय गुरु" या "हरे कृष्ण" कहते हैं। यह याद रखना असंभव है कि किसी विशेष पक्षी को क्या बोलना सिखाया गया है।
हमने टिंकोरी बाबू को धन्यवाद दिया और दुकान से बाहर आ गए। फेलुदा से मिलने में आधा घंटा बाकी था। लालमोहन बाबू ने उस समय में एक कील काटने की मशीन और कुछ टूथपेस्ट खरीदा और चीनी दुकानों में जूते देखे। फिर हम न्यू मार्केट के ठीक बीच में स्थित तोप की ओर चल पड़े। फेलुदा कुछ मिनट बाद वहाँ पहुँचे।
‘अब हम कहाँ जा रहे हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
क्या आपको पता है कि पारसी लोग कलकत्ता में दो सौ वर्षों से रह रहे हैं? ‘क्या! आपका मतलब सिराज-उद-दौला के समय से ही है? नहीं, मुझे तो बिल्कुल भी पता नहीं था।’
‘आज हम एक प्राचीन पारसी परिवार के घर जा रहे हैं। उनका पता है...’ फेलुदा ने अपनी जेब से एक नोटबुक निकाली और उसमें देखा, ‘...133/2 बोबाजार स्ट्रीट।’

चार
मुझे यकीन नहीं था कि 133/2 बौबाजार सचमुच डेढ़ सौ साल से अधिक पुराना था। लेकिन निस्संदेह यह कलकत्ता का सबसे पुराना घर था जिसमें मैंने कभी कदम रखा था। प्रवेश द्वार मुख्य सड़क पर दो दुकानों के बीच एक मेहराबदार रास्ते से होकर जाता था। मेहराबदार रास्ते के आगे एक संकरा मार्ग था, जो लकड़ी की सीढ़ियों की ओर जाता था। हम इन सीढ़ियों से चढ़कर दूसरी मंजिल पर गए और दाईं ओर मुड़े, तो हमारे सामने एक पीतल की नाम-पट्टिका वाला दरवाजा था। उस पर लिखा था, 'आर.डी. पेस्टनजी'।
फेलुदा ने घंटी बजाई। एक कर्मचारी ने तुरंत दरवाजा खोल दिया। फेलुदा ने उसे अपना एक कार्ड दिया और अपने मालिक को सूचना देने के लिए चला गया। लगभग तीन मिनट में वह वापस आ गया। उसने कहा, 'आप अंदर आ सकते हैं, लेकिन श्री पेस्टनजी आपको पांच मिनट से अधिक का समय नहीं दे सकते।'
फेलुदा मान गया। हम सामान ढोने वाले के पीछे-पीछे ड्राइंग रूम में चले गए। कमरा बड़ा था, पर अँधेरा और घुटन भरा था। मुझे धुंधला सा एक आदमी सोफे पर बैठा दिखाई दिया, उसके सामने एक छोटी मेज पर एक बोतल और एक गिलास रखा था। जैसे-जैसे हम पास पहुँचे, वह मुझे और साफ दिखाई देने लगा। उसकी त्वचा पीली थी और उसकी नाक तोते की तरह नुकीली थी। उसका चौड़ा माथा झाइयों से भरा था। सुनहरे फ्रेम वाले चश्मे से उसकी भूरी आँखें हमें घूर रही थीं। जब वह बोला, तो उसकी आवाज़ कर्कश थी।
‘लेकिन तुम अकेले नहीं, बल्कि भीड़ हो!’ उसने शिकायत की। फेलुदा ने हमारी उपस्थिति के लिए माफी मांगी और जल्दी से समझाया कि बात तो वही करेगा। श्री पेस्टनजी हमें पूरी तरह से नजरअंदाज कर सकते हैं। इससे बूढ़े व्यक्ति को कुछ राहत मिली।
‘अच्छा, तुम क्या चाहते हो?’ उसने पूछा।
मुझे लगता है कि आप पार्वतीचरण हलदर को जानते थे।
‘हे भगवान, फिर से!’ श्री पेस्टनजी ने भय और असंतोष दोनों व्यक्त करते हुए कहा। फेलुदा ने दिलासा देते हुए हाथ उठाया।
‘मैं पुलिस से नहीं हूँ। कृपया इस बारे में चिंता न करें, महोदय। संयोगवश, मैं उस समय वहीं मौजूद था जब श्री हलदर का शव मिला था। इसलिए मैं इस मामले में पूरी तरह संयोगवश शामिल हो गया। मैं आपसे केवल इतना जानना चाहता हूँ कि चोरी हुए पत्र के बारे में आपकी क्या राय है।’
पेस्टनजी कुछ सेकंड के लिए चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'क्या तुमने वह पत्र देखा है?'
'नहीं, महोदय। मैं ऐसा कैसे कर सकता था? जब मैं श्री हलदार के घर पहुँचा तब तक उनकी मृत्यु हो चुकी थी और पत्र भी गायब हो चुका था।'
‘लेकिन आपने नेपोलियन के बारे में तो पढ़ा ही होगा, है ना?’

'हाँ एक छोटी सी।'
मुझे लगने लगा कि काश फेलुदा इतना विनम्र न होता। उसने पिछले दो दिन नेपोलियन के जीवन के साथ-साथ कला और प्राचीन वस्तुओं के बारे में जितना हो सके उतना पढ़ने में बिताए थे। अंकल सिद्धू ने उसे बहुत सारी किताबें उधार दी थीं।
‘तो आपको सेंट हेलेना में उनके निर्वासन के बारे में जरूर पता होगा।’ 'हाँ।'
उन्हें कब निर्वासित किया गया था?
1815 में।
पेस्टनजी ने हल्की सी मुस्कान दी, मानो वह फेलुदा के जवाबों से प्रभावित हुए हों।
पार्वती के संग्रह में मौजूद यह पत्र 1814 में लिखा गया था। नेपोलियन को सेंट हेलेना में अपने छह साल के निर्वासन के दौरान किसी को भी पत्र लिखने की अनुमति नहीं थी। इसका मतलब यह होगा कि यह पत्र नेपोलियन द्वारा मरने से पहले लिखे गए अंतिम पत्रों में से एक था। यह ज्ञात नहीं है कि यह किसे संबोधित था। संबोधन में केवल "मोन चेर अमी" लिखा था - मेरे प्रिय मित्र। लेकिन पत्र की विषयवस्तु और उसकी भाषा से पता चलता है कि सब कुछ खो देने के बाद भी वह अपने विश्वासों पर अडिग रहने के लिए पूरी तरह तैयार था। उसका हौसला अटूट रहा। इसीलिए यह पत्र इतना अनमोल है। पार्वती ने इसे ज्यूरिख के किसी शराबी मूर्ख से कौड़ियों के भाव खरीदा था। यह मेरे पास मात्र बीस हजार रुपये में आने वाला था। ज़रा सोचिए!
‘कैसे?’ फेलुदा की आवाज़ में वही हैरानी झलक रही थी जो हम सब महसूस कर रहे थे। ‘क्या मतलब, श्री हलदर उस पत्र को आपको इतनी मामूली रकम में बेचने के लिए राजी हो गए थे?’
'अरे नहीं, नहीं। पार्वती इसे बेचने के लिए राजी नहीं हुई। वह बहुत दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे। मैं इस बात के लिए उनका सम्मान करता था।'
'तो ठीक है?'
पेस्टोंजी ने अपने लिए एक पेय डाला। फिर उसने कहा, 'क्या मैं आपको कुछ दे सकता हूँ? चाय? कॉफ़ी? बीयर?'
नहीं, धन्यवाद। हमें जल्द ही निकलना चाहिए।
‘ठीक है,’ पेस्टनजी ने अपने गिलास से एक घूंट लिया, ‘मैं आपको बताता हूँ कि क्या हुआ। मैंने पुलिस को नहीं बताया क्योंकि जिस तरह से उन्होंने मुझसे सवालों की बौछार की, मेरा रक्तचाप खतरनाक रूप से बढ़ गया। मैं आपको बताने को तैयार हूँ, क्योंकि आप एक सज्जन व्यक्ति लगते हैं। कल मुझे एक अज्ञात फोन आया। किसी ने मुझसे सीधे पूछा कि क्या मैं वह पत्र बीस हजार में खरीदूंगा। मैंने हाँ कहा और उसे शाम को पत्र लेकर यहाँ आने को कहा। फिर उसने कहा कि वह खुद नहीं आएगा, बल्कि किसी और को भेजेगा। मुझे इस आदमी को पैसे देने ही होंगे, और अगर मैंने पुलिस को सूचित करने की कोशिश की, तो मेरा भी वही हाल होगा जो पार्वती हलदर का हुआ।’
हमने एक साथ पूछा, 'क्या कोई आया था?'
नहीं। कोई नहीं आया।

अब और कुछ पूछने का कोई फायदा नहीं लग रहा था। हम जाने के लिए उठे। अचानक, फेलुदा की नज़र एक ऊँची शेल्फ पर रखे फूलदान पर पड़ी। उसने पूछा, 'क्या यह मिंग काल का फूलदान है?'
पेस्टोन्जी ने खुलकर मुस्कुराते हुए, प्रशंसा भरी नज़र से उसकी ओर देखा। 'लगता है आपको इन चीजों की अच्छी जानकारी है। बहुत बढ़िया, शानदार। जी हाँ, यह मिंग काल का फूलदान है। बिल्कुल अद्भुत।'
'क्या मैं कर सकता था । । ।?'
'बिल्कुल, बिल्कुल। जब तक आप इसे अपने हाथ में नहीं लेंगे, तब तक आपको इसके विवरण दिखाई नहीं देंगे।'
पेस्टोंजी उठा और शेल्फ की ओर एक हाथ बढ़ाया। अगले ही पल, उसने दर्द से कराहते हुए अपना हाथ नीचे गिरा दिया।
आह!
‘अरे, क्या बात है?’ फेलुदा ने घबराकर पूछा।
'बुढ़ापा। यही तो समस्या है। गठिया है। मैं अपना हाथ कंधे तक भी नहीं उठा सकता।'
‘ओह, मुझे बहुत खेद है।’ फेलुदा ने स्वयं फूलदान को नीचे उतारा, उसका संक्षिप्त निरीक्षण किया, फिर उसे वापस रखने से पहले कहा, ‘शानदार!’
जब हम सड़क पर थे, तब उन्होंने हमसे कहा, 'मुझे यह जांचना था कि मैंने उनके गठिया के बारे में जो सुना था वह सच था या नहीं।'
‘अरे! मुझे तो हैरानी हो रही थी कि आप उस फूलदान को देखने में इतने उत्सुक क्यों थे। सच में, फेलू बाबू, आप तो बड़े ही चतुर हैं! खैर, अब हम कहाँ जा रहे हैं?’
कॉर्नवालिस स्ट्रीट। मुझे अफसोस है कि यह यहाँ से काफी दूर है।
‘तो क्या हुआ? हां, हां, पेट्रोल महंगा है, लेकिन बाकी सब चीजें भी तो महंगी हैं। बस इसके बारे में चिंता मत करो।’
बोबाजार स्ट्रीट से हम कॉर्नवालिस स्ट्रीट स्थित नए थिएटर, नोबो रंगमंच की ओर चल पड़े। थिएटर के मालिक का नाम अभिलाष पोद्दार था। फेलुदा द्वारा कार्ड भेजे जाने के तुरंत बाद उन्होंने हमें अपने कार्यालय में बुलाया। ‘अंदर आइए, श्रीमान मिटर। आपके आगमन से मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?’
श्री पोद्दार मोटे और सांवले थे। उनकी बाईं कलाई पर सोने की घड़ी थी, उनके होंठ चमकीले लाल थे। उन्होंने अभी-अभी एक पान मुंह में ठूंसा था। पूरे कमरे में इत्र की महक फैली हुई थी। किसी तरह, उनका रूप-रंग उनके बोलने के थोड़े नाटकीय अंदाज़ से मेल खाता प्रतीत होता था।
फेलुदा ने लालमोहन बाबू का परिचय 'महान थ्रिलर लेखक' के रूप में कराया। 'सचमुच?' श्री पोद्दार ने अपनी निगाहें जटायु की ओर घुमाईं।
'जी हां। मेरी एक कहानी पर हिंदी फिल्म बनी थी। 'द बुकेनियर ऑफ बॉम्बे'।' 'आप अपनी इस विशाल पुस्तक की एक प्रति पोद्दार को क्यों नहीं भेज देते?' फेलुदा ने सुझाव दिया।

“ज़रूर, श्री गांगुली, मुझे आपकी किताब देखना अच्छा लगेगा। वैसे, मैं खुद ज़्यादा पढ़ता नहीं हूँ। मैं लोगों को किताबें पढ़ने के लिए पैसे देता हूँ, और फिर वे मुझे अपनी राय बताते हैं। खैर, आप यहाँ किसलिए आए हैं?” मुझे आपके एक प्रमुख अभिनेता के बारे में कुछ जानकारी चाहिए।
‘हमारे मुख्य अभिनेता? आपका मतलब किससे है? मानस बनर्जी से?’
नहीं। अचिंत्य हलदार।
‘अचिंत्य? मुझे नहीं लगता... नहीं, रुकिए, रुकिए। मुझे अब याद आ गया। इसी नाम का एक नौजवान अच्छी भूमिका पाने की कोशिश कर रहा है। उसका रूप-रंग ठीक है, लेकिन उसकी आवाज़ रंगमंच के लिए उपयुक्त नहीं है। फिल्मों में वह शायद बेहतर कर पाए। मैंने उसे यह बात बताई भी थी, क्योंकि मैं उसे सिर्फ एक छोटी सी भूमिका ही दे पाया था, और वह भी बहुत समय पहले की बात है। लेकिन असल में, उसने मुझे मेरे नवीनतम नाटक में मुख्य भूमिका के लिए पैसे देने की पेशकश की है।’
‘क्या! उसने तुम्हें पैसे की पेशकश की है?’
‘इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। इस क्षेत्र में यह काफी आम बात है।’ लेकिन क्या आप सहमत हुए थे?
नहीं, बिलकुल नहीं। हमारी कंपनी नई है, श्रीमान मिटर, हम किसी भी तरह के संदिग्ध लेन-देन में नहीं पड़ सकते। मैंने उनसे साफ कह दिया कि उनके प्रस्ताव को स्वीकार करने का तो सवाल ही नहीं उठता। अब आप क्या लेना चाहेंगे? एक ठंडा पेय, या...?
नहीं, कुछ नहीं, धन्यवाद। आपके समय के लिए धन्यवाद।
हम उठे और चले गए। लगभग डेढ़ बज रहे थे। मुझे बहुत भूख लग रही थी। खुशकिस्मती से, फेलुदा ने कहीं और जाने का सुझाव नहीं दिया। हम सीधे अपने पसंदीदा रेस्टोरेंट में चले गए। खाना ऑर्डर करने के बाद, फेलुदा ने चंदना के गुम होने के बारे में विज्ञापन का मसौदा तैयार किया। फेलुदा प्रेस में कुछ लोगों को जानता था। विज्ञापन कल या ज़्यादा से ज़्यादा परसों तक छप जाएगा। उसमें लिखा था: 'अगर किसी ने न्यू मार्केट में टिंकोरी बाबू को चंदना बेचा है, तो कृपया पी.सी. मिटर से निम्नलिखित पते पर संपर्क करें...' फेलुदा ने बिरयानी का एक टुकड़ा खाया। फिर उसने हड्डी तोड़कर उसके अंदर का मज्जा निकाला और कहा, 'अगर हमें एक के बाद एक नए रहस्य मिलते रहे, तो भगवान ही जाने यह सब कहाँ जाकर खत्म होगा।'
‘एक और नया रहस्य? रुको, रुको, मुझे अंदाज़ा लगाने दो, फेलू बाबू, तुम उस आदमी की बात कर रहे हो जिसने पेस्टनजी को चोरी हुआ पत्र लाने की पेशकश की थी, है ना, और तुम यह समझ नहीं पा रहे हो कि वह क्यों नहीं आया?’
'ठीक है। इसका मतलब सिर्फ यही हो सकता है कि वह व्यक्ति पत्र प्राप्त करने की उम्मीद कर रहा था, लेकिन उसे प्राप्त नहीं हो सका।'
इसका मतलब यह है कि पेस्टोन्जी को फोन करने वाला व्यक्ति असल चोर नहीं था, बल्कि कोई और था।
'हां, यह बिल्कुल वैसा ही दिखता है।'
‘हे भगवान, अब हमें एक और अपराधी की तलाश करनी पड़ेगी!’ लालमोहन बाबू एक मिनट के लिए चबाना बंद कर दिया।

मैंने कहना शुरू किया, 'फेलुदा, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता था।'
'हाँ?'
'अगर आप किसी के सिर पर भारी पेपरवेट से मारते हैं, तो निश्चित रूप से उसे चोट लगेगी; लेकिन क्या इस बात की कोई गारंटी है कि वह व्यक्ति मर जाएगा?' 'अच्छा सवाल है। इसका जवाब सीधा-सादा है। इसकी कोई गारंटी नहीं है। लेकिन, इस मामले में, जिसने भी पार्वतीचरण पर हमला किया होगा, उसे उसकी मौत के बारे में काफी हद तक यकीन रहा होगा।'
या... शायद... उसने सोचा होगा कि वह उसे सिर्फ बेहोश कर देगा। शायद उसने सोचा ही नहीं होगा कि वह आदमी मर जाएगा।
हां, ऐसा हो सकता है। मुझे नहीं पता था कि यहां का खाना दिमाग के लिए इतना फायदेमंद होगा, टॉपशे! लेकिन फिर भी, हम कोई खास सुराग नहीं ढूंढ पा रहे हैं, है ना? कातिल ने जानबूझकर मारा था या नहीं, यह मुद्दा नहीं है। असली सवाल यह है कि वह कहां गया? वह कैसे गायब हो गया? यह लगभग जादू जैसा लगता है।
उसी शाम हमें इस सवाल का जवाब मिल गया। यह काफी नाटकीय तरीके से सामने आया। लगभग साढ़े चार बजे इंस्पेक्टर हाजरा का फोन आया और उन्होंने बताया कि साधन दस्तीदार अभी तक नहीं मिला है। लालमोहन बाबू हमारे घर पर ही रुके रहे। साढ़े सात बजे हम कॉफी पीते हुए बातें कर रहे थे कि अचानक दरवाजे की घंटी बजी। इससे हम सब चौंक गए, क्योंकि सर्दियों की शाम को इस समय किसी का आना असामान्य था। मैंने दरवाजा खोला तो देखा कि बाहर हृषिकेश दत्ता खड़े थे।
कमरे में कदम रखते हुए उन्होंने कहा, 'मुझे क्षमा करें। मुझे पता है कि यह मिलने का उचित समय नहीं है, और मुझे फोन करना चाहिए था। लेकिन श्री हलदर की मृत्यु के बाद से फोन लगातार व्यस्त रहा है, मुझे एक पल भी खाली समय नहीं मिला...'
‘इन सब बातों को छोड़िए। आप बहुत परेशान लग रहे हैं। कृपया बैठ जाइए, आराम करने की कोशिश कीजिए और हमें बताइए कि क्या हुआ है।’
श्रीनाथ एक ताज़ा कप कॉफ़ी लेकर आया। उसने अब किसी के कहने का इंतज़ार नहीं किया। एक नई आवाज़ ही उसके लिए चेतावनी थी। फेलुदा ने कप श्री दत्ता को थमा दिया।
उसने एक लंबी घूंट ली और बात शुरू की। ‘तुमने उस दिन मेरा कमरा नहीं देखा था, है ना? खैर, मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि उस कमरे में रहने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए। मैं ही अकेला भूतल पर रहता हूँ। बाकी सारे शयनकक्ष ऊपर हैं। नौकरों के अपने कमरे मुख्य घर के पीछे हैं। इतने समय बाद भी, मुझे अकेले रहने में थोड़ी बेचैनी महसूस होती है, खासकर रात में। खैर, कल रात, मैं रात के खाने के बाद लगभग साढ़े दस बजे अपने कमरे में लौटा। मैंने दरवाजा बंद किया, मच्छरदानी नीचे खींची और सोने ही वाला था कि किसी ने मेरे दरवाजे पर दस्तक दी। यह बहुत अजीब था, क्योंकि उस घर में कोई भी दस्तक नहीं देता। अगर कोई मुझसे मिलना चाहता है, तो वे बस दरवाजे के बाहर खड़े होकर मेरा नाम पुकारते हैं। इसलिए मुझे तुरंत शक हुआ। मैंने पूछा, “कौन है?”, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर बाद, फिर दस्तक हुई। पहले तो मैंने सोचा कि

मैं दरवाजा नहीं खोलूंगा; लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि जो भी हो, वह दस्तक देता रह सकता है, और यह और भी बुरा होगा।’ तो मैंने हिम्मत जुटाते हुए जाकर दरवाजा खोला। एक आदमी झट से अंदर आया और दरवाजा बंद कर दिया। मैंने उसका चेहरा तुरंत नहीं देखा, लेकिन एक पल बाद वह मेरी तरफ मुड़ा।
उसकी घनी दाढ़ी थी, इसलिए उसे पहचानने में कोई दिक्कत नहीं हुई। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, उसने बोलना शुरू कर दिया। उसके हाथ में एक बड़ा सा चाकू था। उसने अपनी बात खत्म होने तक उसे मेरी ओर ही ताने रखा।
लालमोहन बाबू हांफने लगे। मुझे भी अपने हाथों पर रोंगटे खड़े होने का एहसास हुआ।
‘साधन दस्तीदार ने तुम्हें क्या बताया?’ फेलुदा ने शांत भाव से पूछा। ‘कुछ भयानक। देखो, जाहिर है उसे श्री हलदार के संग्रह के बारे में काफी कुछ पता है। उसने बताया कि उसमें पन्ना जड़ा हुआ एक सोने का नसवार डिब्बा है। वह बहादुर शाह जफर का था। उसे उसका खरीदार मिल गया है, इसलिए मुझे उसे उसके लिए लाना होगा। उसने कहा कि वह घर से कुछ ही दूर, टूटी हुई नील की फैक्ट्री के पास मेरा इंतजार करेगा। वहाँ मधुमुरली दीघी नाम की एक झील है। मुझे नसवार डिब्बा लेकर आज रात ग्यारह बजे उससे वहीं मिलना चाहिए। उसने मुझे एक खास पेड़ के नीचे खड़े होने को कहा।’
और तुम्हारा इनाम क्या होगा? क्या वह अपना मुनाफा तुम्हारे साथ बांटेगा? ‘छोड़ो इसे। वह एक पैसा भी नहीं देगा। उसका एकमात्र इरादा मुझे डराकर अपनी मर्जी के मुताबिक काम करवाना था। उसने कहा कि पुलिस के पास जाने का मतलब मौत है। वह मुझे मार डालेगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने श्री हलदर को मारा था।’ बोलते समय श्री दत्ता की आवाज थोड़ी कांप रही थी।
फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, 'क्या द्वार पर कोई रात का चौकीदार नहीं है?'
'हाँ, बिल्कुल। मुझे लगता है कि वह अंदर आने के लिए दीवार फांदकर आया था।' ‘उसे कैसे पता चला कि तुम किस कमरे में थे?’
‘यह तो आसान था। साधु दस्तीदार उसी कमरे में रहते थे।’
‘साधु? क्या यही उनका उपनाम है?’
मुझे तो नहीं पता, लेकिन श्री हलदार उन्हें इसी नाम से पुकारते थे।
‘तुमने उसे क्या बताया?’
मैंने कहा कि मैं ऐसा नहीं कर सकती। पुलिस रोज़ घर आती थी और हर चीज़ पर कड़ी नज़र रखती थी। तो मैं भला चोरी कैसे कर सकती थी? उन्होंने कहा कि इसमें कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। चूंकि मैं श्री हलदर की सचिव थी, इसलिए मैं कुछ कागज़ात देखने का बहाना बनाकर आसानी से उनके कमरे में जा सकती थी। उन्होंने कहा कि वे मेरे बहाने नहीं सुनेंगे और फिर चले गए। मुझे पता है कि अब आप मुझसे नाराज़ होंगे और कहेंगे कि मुझे पुलिस के पास जाना चाहिए था या कम से कम अमिताभ हलदर को सूचित करना चाहिए था। लेकिन क्या आप नहीं देख सकते कि मैं कितनी डरी हुई थी? मेरा मतलब है, मेरी जान खतरे में थी! इसलिए मैंने आपके पास आने का फैसला किया, श्री मित्तर। मुझे नहीं लगता कि साधु को इस मामले में आपकी संलिप्तता के बारे में पता है। आप ही मेरी एकमात्र उम्मीद हैं। कृपया मुझे बचा लीजिए!

‘तुम्हें वो तंबाकू की डिब्बी नहीं मिली, है ना?’
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।
‘मैं समझ गया। तो क्या आप यह सुझाव दे रहे हैं कि हम सभी को वहीं जाना चाहिए जहाँ उसने आपको मिलने के लिए कहा है?’
'हाँ। क्या आपको नहीं लगता कि उसे रंगे हाथों पकड़ने का यह सुनहरा मौका है? आप थोड़ा जल्दी जाकर कहीं छिप सकते हैं। मैं ग्यारह बजे जाऊँगा, और फिर... खैर, मुझे लगता है कि अगर आप उसे देख लें तो आपको पता होगा कि क्या करना है।' 'क्या आपको नहीं लगता कि पुलिस के पास जाना एक अच्छा विचार हो सकता है?' नहीं, नहीं, नहीं। कृपया ऐसा मत करो। तुम्हें अकेले जाना होगा, या अपने दोस्त और चचेरे भाई के साथ, अगर चाहो तो, लेकिन कृपया पुलिस का ज़िक्र तक मत करना। वो मुझे मार डालेगा, मैं तुम्हें बता रहा हूँ! दरअसल, तुम्हें खुद भी हथियारबंद होना चाहिए। साधु दस्तीदार एक खतरनाक आदमी है।
‘आगे बढ़ो, फेलू बाबू, हाँ कह दो,’ लालमोहन बाबू ने बिना एक पल भी संकोच किए कहा। ‘अगर राजस्थान के डाकू हमें डरा नहीं सके, तो इस आदमी का क्या चांस है? बिलकुल भी नहीं!’
‘मैं आपको जगह दिखा देता हूँ। यह स्टेशन से लगभग चार मील दूर है।’ फेलुदा मान गया। श्री दत्ता ने अपनी कॉफी खत्म की और खड़े हो गए। ‘धन्यवाद, श्री मित्तर। क्या आप आज रात दस बजे मुझसे मिलेंगे?’
ठीक है। हम आपसे कहाँ मिलें?
‘अगर आप हमारे घर से आगे जाएंगे, तो कुछ फर्लांग बाद आपको एक चौराहा मिलेगा जहाँ तीन सड़कें मिलती हैं। एक तरफ मिठाई की दुकान है। वहीं मैं आपका इंतजार कर रहा हूँगा।’

पाँच
हालांकि रात के उस समय ट्रैफिक ज्यादा होने की संभावना नहीं थी, फिर भी हम नौ बजे से थोड़ा पहले निकल गए, ताकि हमें बारासात पहुँचने के लिए एक घंटे से ज्यादा का समय मिल जाए। निकलने से पहले हमने रात का खाना खा लिया, जो थोड़ा अजीब लगा क्योंकि हममें से किसी को भी इतनी जल्दी खाने की आदत नहीं थी। लालमोहन बाबू ने कहा, 'अगर थोड़ी देर बाद भूख लगने लगे तो हम उस मिठाई की दुकान पर जा सकते हैं जहाँ श्री दत्ता हमसे मिलने वाले हैं। मुझे यकीन है कि वहाँ कचौरी और आलू-सब्जी मिल जाएगी।'
लालमोहन बाबू के ड्राइवर को जब पता चला कि हम बारासात क्यों लौट रहे हैं, तो वह बहुत उत्साहित हो गया। सौभाग्य से, वह फेलुदा का बहुत बड़ा प्रशंसक था और एक्शन से भरपूर हिंदी फिल्में देखना उसे बहुत पसंद था। कोई और ड्राइवर होता तो देर रात शहर से बाहर जाने को कहे जाने पर नाराज़ हो जाता। लेकिन लालमोहन बाबू के ड्राइवर हरिपाड़ा को फेलुदा द्वारा स्थिति समझाने पर मानो नई ऊर्जा मिल गई।
वीआईपी रोड पहुँचते ही लालमोहन बाबू ने गाना शुरू कर दिया। ‘इस चांदनी रात में सब जंगल में चले गए हैं…’ लेकिन फेलुदा की एक नज़र ने उन्हें तुरंत रोक दिया। आसमान पूरी तरह अंधेरा था। चाँद का कोई नामोनिशान नहीं था। लेकिन रात साफ़ थी। शायद तारों की हल्की रोशनी किसी काम आ जाए। फेलुदा के निर्देशानुसार मैंने गहरे रंग की कमीज़ पहनी थी; और लालमोहन बाबू ने अपने हल्के पीले पुलओवर के ऊपर फेलुदा का रेनकोट पहन रखा था। हालाँकि कार में यह दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मुझे पता था कि जब वह बाहर निकलेंगे, तो उनकी एक जेब भारी हो जाएगी। उन्होंने श्रीनाथ के हाथ से चलने वाले चक्की की लोहे की छड़ उधार लेकर अपनी जेब में रख ली थी। फेलुदा भी हथियारबंद थे, लेकिन लोहे की छड़ नहीं। उनकी जैकेट की जेब में उनका कोल्ट रिवॉल्वर था। हम दस बजने से ठीक पहले चौराहे पर पहुँचे। श्री दत्ता मिठाई की दुकान के बगल में पान की दुकान के सामने खड़े थे। हरिपाड़ा ने गाड़ी रोक दी। श्री दत्ता झट से गाड़ी में बैठ गए और बोले, 'कृपया अगला दायाँ मोड़ ले लीजिए।' कुछ ही मिनटों बाद, घरों की संख्या काफी कम हो गई। स्ट्रीटलाइटें गायब हो गईं। मुझे एहसास हुआ कि हम बारासात शहर को पीछे छोड़ चुके हैं और ग्रामीण इलाके में आ गए हैं।
श्री दत्ता ने हमें बताया, ‘नील का पहला कारखाना बारासात में बनाया गया था। अगर आप कभी दिन के उजाले में इस तरफ आएं, तो आपको टूटे-फूटे पुराने मकान दिखाई देंगे जिनमें इन कारखानों के ब्रिटिश मालिक रहते थे।’
हम अगले बीस मिनट तक चुपचाप गाड़ी चलाते रहे। फिर अचानक श्री दत्ता ने कहा, 'हम यहाँ पहुँच गए हैं। गाड़ी रोकिए।'
हमारी कार रुक गई। हम सब बाहर निकल आए।

‘कृपया अपने ड्राइवर से कहिए कि वह गाड़ी लेकर यहीं इंतजार करे। मैं आपको वह जगह दिखा दूँगी जहाँ साधु दस्तीदार ने मुझे मिलने के लिए कहा है। फिर आपकी गाड़ी मुझे घर ले जा सकती है और वापस यहाँ आ सकती है। मैं ग्यारह बजे से ठीक पहले खुद सही जगह पहुँच जाऊँगी।’
लालमोहन बाबू ने अपने ड्राइवर को कुछ पैसे दिए और कहा, 'श्री दत्ता को छोड़ने के बाद अपने लिए कुछ खा लेना। घर वापस आने तक काफी देर हो सकती है।' हम एक खेत से होते हुए चलने लगे। पाँच मिनट बाद, हम एक जंगल जैसे दिखने वाले स्थान पर पहुँच गए।
‘मधुमुराली दीघी इन सभी पेड़ों के पीछे है। लेकिन हमें वहाँ जाना होगा,’ श्री दत्ता ने पेड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा। हम फिर से चलने लगे। अँधेरा होने के कारण कुछ भी साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मुझे टूटी- फूटी इमारतों की रूपरेखा दिखाई दे रही थी। यह जगह सचमुच जंगल नहीं थी। यह शायद किसी अमीर नील कारखाने के मालिक की निजी ज़मीन का हिस्सा रही होगी। वर्षों की उपेक्षा ने इसे जंगल में बदल दिया था। यहाँ कभी कोई बड़ा घर रहा होगा। उसके सामने के बरामदे के कुछ हिस्से अभी भी खड़े थे। शुक्र है कि सर्दी का मौसम था, वरना हमें साँपों का सामना करना पड़ सकता था।
फेलुदा ने टिप्पणी की, 'इस समय टॉर्च का इस्तेमाल करना शायद काफी सुरक्षित है।'
'हां, मुझे नहीं लगता कि अभी इससे कोई फर्क पड़ेगा।'
फेलुदा ने अपनी छोटी सी टॉर्च जला ली। हम खंडहर हो चुकी इमारत के मलबे की ओर बढ़ने लगे, इस बात का ध्यान रखते हुए कि ठोकर न लगे और गड्ढों में न गिरें।
‘देखो, ये रहा!’ श्री दत्ता ने एक पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘ये शेओरा का पेड़ है। साधु दस्तीदार ने मुझे यहीं इंतजार करने को कहा था।’
फेलुदा ने पेड़ पर थोड़ी देर के लिए टॉर्च की रोशनी डाली, फिर उसे बंद कर दिया। श्री दत्ता ने कहा, 'शायद अब मुझे जाना चाहिए।'
'जी हां। हम आपसे... चलिए देखते हैं... लगभग पैंतालीस मिनट में मिलेंगे?' 'ठीक है।'
श्री दत्ता ने अचानक मुड़कर उसी दिशा में गायब हो गए जहाँ से हम आए थे। एक मिनट बाद, हमें उनके कदमों की आहट भी सुनाई नहीं दी।
फेलुदा ने अपनी जेब से एक ट्यूब निकालते हुए कहा, 'ये लो कुछ ओडोमोस, शायद ये तुम्हारे काम आए।'
‘ओह, धन्यवाद, फेलू बाबू। मलेरिया फिर से बढ़ रहा है, है ना?’ हम सबने अपने हाथों, चेहरों और गर्दन पर ओडोमोस लगाया और लंबे इंतजार के लिए तैयार हो गए। हमें खड़े होने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि चारों ओर ईंटों के छोटे- छोटे ढेर बिखरे हुए थे जिन्हें कुर्सी या स्टूल की तरह इस्तेमाल किया जा सकता था। बातचीत फुसफुसाकर करनी पड़ी, लेकिन पहले कुछ मिनटों के बाद हम सब चुप हो गए। अब तक मेरी आँखें अंधेरे की आदी हो चुकी थीं, और मैं देख सकता था कि वहाँ आम, बरगद और पीपल सहित कई तरह के पेड़ थे। बांस के झुरमुट भी थे। दूर से रिक्शा के हॉर्न, ट्रेनों, भौंकते कुत्तों की हल्की आवाज़ें आ रही

थीं—मैं कहीं ट्रांजिस्टर बजने की आवाज़ भी सुन सकता था। फेलूदा की घड़ी में एक चमकदार डायल था, इसलिए वह अंधेरे में भी समय देख सकता था।
ठंड लगातार बढ़ती जा रही थी। लालमोहन बाबू अपनी टोपी लाना भूल गए थे और उनका रुमाल भी सफेद था, इसलिए सिर को ठंड से बचाने के लिए उन्हें बस अपने हाथों से ही सिर ढकना पड़ रहा था। काफी देर की चुप्पी के बाद, हमने उन्हें धीमी आवाज़ में कुछ कहते सुना। 'क्या कहा तुमने?' फेलुदा ने फुसफुसाते हुए पूछा।
‘कुछ नहीं,’ उसने फुसफुसाते हुए जवाब दिया। ‘बस अचानक मुझे पुरानी परियों की कहानियाँ याद आ गईं। क्या भूत-प्रेत शेओरा के पेड़ों में नहीं रहते?’ 'हां, खासकर मादाएं। वे पेड़ से नीचे उतरकर आप पर हमला कर देती हैं। क्या आपने पहले कभी शेओरा का पेड़ देखा है? मैंने तो नहीं देखा।'
आकाश में तारे अपनी स्थिति बदल रहे थे। जो तारा कुछ मिनट पहले नारियल के पेड़ के ठीक ऊपर था, वह अब लगभग उसके पीछे छिप गया था। मैंने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं, यह देखने के लिए कि क्या मुझे कोई परिचित तारामंडल दिखाई देता है। ठीक उसी क्षण, एक आवाज़ सुनाई दी, जो मेरे कानों को सुनाई देने वाली बाकी सभी आवाज़ों से बिल्कुल अलग थी। कदमों की आहट। इसमें कोई शक नहीं था।
अभी ग्यारह बजे भी नहीं थे। कुछ ही मिनट पहले, फेलुदा ने अपनी घड़ी देखी और कहा, 'दस बजकर पैंतालीस मिनट।' हम सब मूर्ति की तरह स्थिर बैठे रहे।
पेड़ की ओर जाने वाले रास्ते से कदमों की आहट आ रही थी—अगर उसे रास्ता कहा जा सकता है तो। हम आधे घंटे पहले इसी रास्ते से गए थे। जब तक मैं कान लगाकर न सुनूँ, आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। बाँस के झुरमुटों में झींगुरों का शोर काफी तेज़ था, लेकिन मुख्य सड़क पर वाहनों का शोर गायब हो चुका था। कुछ ही सेकंड बाद, अंधेरे से एक आकृति निकली। वह शेओरा के पेड़ की ओर बढ़ रही थी, पास आते-आते उसकी गति धीमी होती जा रही थी। हम उससे कुछ ही गज की दूरी पर थे, टूटी हुई दीवार के पीछे आंशिक रूप से छिपे हुए थे। हमारी ओर आ रहा यह आदमी कौन था? क्या वह साधन दस्तीदार था? यह बताना असंभव था।
‘श्री दत्ता!’ उस व्यक्ति ने धीमी आवाज़ में पुकारा। वह चलना बंद कर चुका था। मैं महसूस कर सकता था कि फेलुदा मेरे बगल में खड़ा है, उसका शरीर तनावग्रस्त है, और वह किसी भी क्षण कार्रवाई के लिए तैयार है।
वह आदमी कुछ कदम आगे बढ़ा। ‘श्री दत्ता!’ उसने फिर पुकारा। लालमोहन बाबू थोड़ा सा हिले और अपनी दाहिनी कोहनी ऊपर उठाई। वह अपनी जेब में हथियार निकालने के लिए हाथ डाल रहे थे।
वह आदमी अब बस कुछ ही फीट दूर था। ‘श्रीमान दत—!’ वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया। फेलुदा उछल पड़ा और उस पर कूद गया। मैं भी ऐसा ही करने वाला था, तभी कुछ ऐसा हुआ कि मैं वहीं रुक गया।
दो और आदमी उछलकर आगे बढ़े और फेलुदा पर गिर पड़े। यह इतना अप्रत्याशित था कि कुछ पलों के लिए मैं बस मूर्खतापूर्वक खड़ा देखता रह गया। लेकिन वर्षों के अनुभव ने मुझे सिखाया था कि आसानी से हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। मैंने देखा कि फेलुदा ने उनमें से एक आदमी को मारा था और वह थोड़ा लड़खड़ाते हुए मेरी तरफ बढ़ रहा था। मुझे खुद को संभालने, उसे पकड़ने और उसके जबड़े पर

घूंसा मारने में बस कुछ ही सेकंड लगे। वह बिना एक भी आवाज निकाले घास पर गिर पड़ा। मुझे बहुत खुशी महसूस होने लगी।
लेकिन... लेकिन... ये क्या हो रहा था? कई और आदमी पेड़ों के पीछे और टूटी हुई इमारत के दूसरे हिस्सों से चुपके से बाहर निकल रहे थे। उनमें से एक ने मेरी बांहें पकड़ लीं और उन्हें मेरी पीठ के पीछे जकड़ दिया। दो और लोग गए और फेलुदा पर हमला कर दिया। मैं उसकी छटपटाहट सुन सकता था, लेकिन वह कुछ भी करने में पूरी तरह लाचार था, सिवाय मेरे दुश्मन को लात मारने की कोशिश करने के। लालमोहन बाबू क्या कर रहे थे? वे कहाँ थे?
देखने का समय ही नहीं था, क्योंकि जैसे ही मैंने उसके बारे में सोचा, मुझे ठोड़ी पर एक ज़ोरदार चोट महसूस हुई। उसी क्षण मेरे घुटने लड़खड़ा गए और मैं चुपचाप बेहोश हो गया।
‘क्या तुम ठीक हो?’ एक जानी-पहचानी आवाज ने पूछा।
होश आने पर सबसे पहले मेरी नज़र फेलुदा पर पड़ी। उन्होंने आगे कहा, 'चिंता की कोई बात नहीं है, मैं भी दस मिनट के लिए बेहोश हो गया था।'
अब मुझे कमरे में बाकी लोग दिखाई देने लगे। वहाँ अमिताभ हलदर थे, उनके बगल में एक महिला थीं—संभवतः उनकी पत्नी—और लालमोहन बाबू, श्री दत्ता, और दरवाजे के पास अचिंत्य हलदर खड़े थे। मैंने यह कमरा पहले कभी नहीं देखा था।
मैं धीरे से उठ बैठा। ठुड्डी में दर्द के अलावा और कोई समस्या नहीं दिख रही थी। फेलुदा की दाहिनी आंख पर चोट लगी थी। उसके आसपास का हिस्सा काला पड़ने लगा था। मैंने अब तक काली आंखें सिर्फ फिल्मों में ही देखी थीं।
'केवल जटायु ही पूरी तरह से सुरक्षित बच पाया,' फेलुदा ने मुझे बताया। ‘अरे? कैसे? उसने क्या किया?’
‘वो लोहे की छड़ थी,’ लालमोहन बाबू ने समझाया। ‘मैं तुम्हें बताता हूँ, तपेश, दुनिया में ऐसा कोई हथियार नहीं है जो हाथ से चलने वाली चक्की की उस छड़ का मुकाबला कर सके। मैंने बस उसे अपने सिर के ऊपर उठाया और हेलीकॉप्टर की तरह घुमाया। एक भी गुंडा मेरे पास नहीं आ सका।’
‘वे गुंडे कौन थे?’
किराए के गुंडे।
श्री दत्ता ने गहरे अफसोस के साथ सिर हिलाते हुए कहा, ‘मुझे पता था कि वह आदमी खतरनाक है, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह इतनी हद तक जाएगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि जब मैं घटनास्थल पर लौटा तो मुझे कितना बड़ा झटका लगा? आप में से एक जमीन पर लेटा हुआ था, दूसरा पेट के बल लेटा था और तीसरा बैठा हुआ था, बिल्कुल स्तब्ध लग रहा था! अपराधी और उसके साथी बिना किसी निशान के गायब हो गए थे।’
फेलुदा ने मुझे जल्दी से सारी बात बता दी। जब श्री दत्ता आए, तो वे और लालमोहन बाबू मुझे वापस कार तक ले गए। सौभाग्य से, जब वे मुझे घर लाए, तब अमिताभ हलदर अभी भी जाग रहे थे। उन्होंने और उनकी पत्नी ने मेरे लिए भूतल पर स्थित अपने एक अतिथि कक्ष में आराम करने की व्यवस्था की थी। यह एक बड़ा और आरामदायक कमरा था, जिसमें एक संलग्न बाथरूम भी था। श्री हलदर ने जोर

देकर कहा कि हम रात उनके घर में ही बिताएं। मुझे कोई आपत्ति नहीं थी, हालांकि हममें से कोई भी अतिरिक्त कपड़े नहीं लाया था।
'काश आपने हमें बताया होता, श्री दत्ता! मैं पुलिस को सूचित कर देता, और फिर इनमें से कुछ भी नहीं होता,' श्री हलदर ने कड़े शब्दों में कहा।
‘मुझे पता है, मुझे पता है। मुझे बहुत खेद है, महोदय। काश मैंने खुद को इतना भयभीत न होने दिया होता, लेकिन...’ श्री दत्ता की आवाज़ धीमी पड़ गई। मैं उस आदमी को दोष नहीं दे सकता था। ऐसी धमकी मिलने के बाद पुलिस के पास जाने की हिम्मत कौन करेगा?
श्रीमती हलदर ने हमारे ठहरने की सारी व्यवस्था कर ली। उन्होंने लालमोहन बाबू से कहा, ‘मैंने आपकी सभी पुस्तकें पढ़ी हैं और मुझे वे बहुत पसंद आईं। लेकिन एक के बाद एक विपत्तियों के चलते आपसे ठीक से बात करने का मौका ही नहीं मिला।’
‘मुझे कल जाने से पहले आपके बेटे से बात करनी है,’ फेलुदा ने कहा। ‘अगर कोई चोर उनके कमरे में घुस जाए, तो शायद ही कोई लड़का वह साहस दिखा पाएगा जो उसने दिखाया है।’
लगभग एक घंटे बाद, जब हम सोने की तैयारी कर रहे थे, अचानक फेलुदा ने एक ऐसी बात कही जिससे हम सब हैरान रह गए।
उन्होंने कहा, 'मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि जबड़े पर एक मुक्का मारने से दिमाग को भी फायदा हो सकता है।'
'आपका क्या मतलब है?'
'आखिरकार मुझे समझ आ गया है कि साधु दस्तीदार इस तरह कैसे गायब हो सकते हैं।'
‘तुम ऐसा नहीं कह सकते, फेलू बाबू!’
'मुझे मानना पड़ेगा कि वह बहुत ही धूर्त व्यक्ति है। लेकिन जिसका वह सामना कर रहा है, वह भी कम चतुर या धूर्त नहीं है।'
उन्होंने इससे ज्यादा कुछ भी कहने से इनकार कर दिया।

छह
फेलुदा सुबह जल्दी उठकर अनिरुद्ध से मिलने गया, इससे पहले कि वह स्कूल के लिए रवाना हो। उस छोटे लड़के ने हमें बड़े विस्तार से बताया कि उसने चोर को कैसे भगाया था। उसकी कल्पना शक्ति वाकई बहुत अच्छी थी। मैंने सोचा, कहीं उसने यह सब कल्पना ही तो नहीं की थी।
‘तुमने मुझे वह बंदूक नहीं दिखाई जिससे तुम चोर पर हमला करने वाले थे,’ फेलुदा ने उससे कहा। ‘मेरा मतलब उस बंदूक से है जो तुमने अपने चाचा अचिंत्य को दिखाई थी।’
अनिरुद्ध ने अपनी मशीनगन ढूंढी और उसे फेलुदा को दे दिया। उसने गंभीरता से कहा, “यह तो आग उगलती है।” बंदूक लाल प्लास्टिक की बनी थी। ट्रिगर खींचने पर यह असली मशीनगन जैसी आवाज करती थी और बैरल से चमकदार चिंगारियां निकलती थीं। फेलुदा ने ध्यान से उसकी जांच की और फिर उसे अनु को लौटा दिया। उन्होंने कहा, 'एक खूबसूरत हथियार। अब देखते हैं कि कुछ किया जा सकता है या नहीं, ताकि आपकी नींद में खलल न पड़े।'
‘तुम्हारा मतलब है कि तुम चोर को पकड़ लोगे?’
‘चोरों को पकड़ना तो जासूसों का काम है, है ना?’
मुझे लगता है। मेरे चंदना का क्या हुआ? क्या तुम उसे पकड़ने वाले को पकड़ोगे जिसने इसे चुराया है?
मैं उसे पकड़ने की पूरी कोशिश कर रहा हूं, लेकिन यह आसान नहीं है।
क्या यह वाकई बेहद मुश्किल है?
'हां, बेहद मुश्किल।'
‘एक बहुत बड़ा रहस्य?’
‘आप सही कह रहे हैं। यह एक बहुत बड़ा रहस्य है।’
लेकिन आपको उसके पिंजरे पर खून मिला!
'हां, यही मेरा एकमात्र सुराग है।'
‘सुराग क्या होता है?’
‘यह ऐसी चीज है जो जासूसों को चोरों को पकड़ने में मदद करती है।’ लालमोहन बाबू ने अचानक इस बातचीत को रोकते हुए कहा, ‘अनु, बताओ, क्या तुमने इस पक्षी को बोलते सुना?’
'हां, मैंने सुना। मैं अपने कमरे में था, और पक्षी अपने पिंजरे में था। मैंने उसे कुछ कहते हुए सुना।'
‘उसमें क्या लिखा था?’
‘उसने कहा, “डेक चेयर, दादाजी”, “डेक चेयर, दादाजी”। उसने दो बार कहा। मैं अपने कमरे से बाहर भागा, लेकिन उसके बाद उसने बिल्कुल भी बात नहीं की।’ लालमोहन बाबू मुस्कुराए। मुझे मानना पड़ा कि 'डेक चेयर, दादू' और 'नकली बाल, बाबू' में ज़्यादा फ़र्क नहीं था, खासकर अगर इसे जल्दी से बोला जाए।

'क्या आपके घर में कोई ऐसा है जो पक्षी को पकड़ सके?' फेलुदा ने अमिताभ हलदर से पूछा।
'जी हां, हमारे माली के बेटे शंकर ने अतीत में कुछ पक्षियों का शिकार किया है। वह बहुत फुर्तीला है।'
'उसे कहो कि वह तुम्हारे चंदना का ध्यान रखे। मुझे अब पूरा यकीन है कि वह अभी भी तुम्हारे पीछे वाले बगीचे में कहीं है।'
इसके तुरंत बाद हम घर के लिए रवाना हो गए। मैंने स्थानीय अखबार में पहले ही देख लिया था कि फेलुदा का विज्ञापन छपा है। लेकिन हममें से किसी को भी यह अंदाजा नहीं था कि हमें इतनी जल्दी नतीजा मिल जाएगा।
उसी दिन करीब बारह बजे, लगभग पच्चीस साल का एक युवक हमारे घर आया। उसके बालों के स्टाइल और जींस को देखकर लग रहा था कि वह फैशन के प्रति काफी उत्साही है। फेलुदा ने उसे बैठने के लिए कहा, लेकिन उसने सिर हिलाकर मना कर दिया।
‘नहीं, मेरे पास बैठने का समय नहीं है। मैं एक इंटरव्यू के लिए जा रहा हूँ,’ उन्होंने कहा। ‘मैं यहाँ सिर्फ इसलिए आया हूँ क्योंकि मैंने पक्षी के बारे में आपका विज्ञापन देखा था।’
‘अच्छा, क्या यह तुम्हारा था?’
नहीं। यह मेरे दादाजी का था। उनका पिछले महीने निधन हो गया। उन्हें इस पक्षी से बहुत लगाव था और वे खुद इसकी देखभाल करते थे। चूंकि मेरी मां की तबीयत ठीक नहीं है और मेरे पिताजी बहुत व्यस्त रहते हैं, और मुझे तो बिल्कुल भी परवाह नहीं थी, इसलिए हमने इसे बेचने का फैसला किया।
‘यह आपके परिवार के साथ कितने समय तक रहा?’
लगभग दस साल।
क्या यह बोलता था?
'हां, मेरे दादाजी ने इसे कुछ शब्द सिखाए थे। उनका हास्यबोध कुछ अजीब सा था। पक्षी ने कुछ अजीब शब्द बोलना सीख लिया था।'
‘आपका क्या मतलब है?’
मतलब, वो जो बोलता था वो आम “राधे श्याम” या “हरे कृष्णा” से बहुत अलग था। मेरे दादाजी रोज़ शतरंज खेलते थे। उन्होंने चिड़िया को “चेकमेट” बोलना सिखाया था। वो ब्रिज भी खेलते थे। अगर उन्हें लगता कि उनके विरोधी के पास अच्छे पत्ते हैं, तो वो अपने साथी को चेतावनी देते थे। उनके बोले गए शब्द एक तरह का सांकेतिक शब्द थे जिसे उनका साथी समझ जाता था। चिड़िया ने इसे सीख लिया था, क्योंकि वो इसे अक्सर बोलते थे। फिर चिड़िया भी इसे बोलने लगी।
‘ये शब्द क्या थे?’
अपना ख्याल रखना, साधु।
‘क्या? साधु क्यों?’
मुझे नहीं पता। मैंने आपको बताया था, यह उसके और उसके साथी के बीच एक सांकेतिक भाषा थी।
‘मैं समझ गया। बहुत अच्छा। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने बहुत मदद की है।’ क्या इसके अलावा कुछ और भी हो सकता है?

'नहीं, और कुछ नहीं, धन्यवाद।'
‘ठीक है। उह... मुझे पते से यह एहसास नहीं हुआ कि यह आपका घर है।’
इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है।
‘आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरा मतलब है, हर रोज किसी मशहूर व्यक्ति से मिलना तो होता ही नहीं... हा हा!’
उस युवक के जाने के बाद, फेलुदा ने मुझसे कहा कि उसे परेशान न किया जाए और वह अपने कमरे में चला गया। पाँच घंटे बाद वह चाय पीने के लिए बाहर आया। फिर उसने इंस्पेक्टर हाजरा को फोन किया।
‘कल तुम क्या कर रहे हो?’ उसने पूछा।
‘कुछ खास नहीं। क्यों?’
‘क्या आप कल सुबह नौ बजे तक श्री हलदर के घर पहुँच सकते हैं? मुझे लगता है कि मैंने रहस्य सुलझा लिया है। आपको पूरी तैयारी के साथ आना होगा।’ लालमोहन बाबू को भी लगभग यही संदेश दिया गया था। हम टैक्सी लेकर साढ़े आठ बजे तक उनके घर पहुँच जाएँगे। फिर उनकी कार से बारासात जाएँगे।
‘अरे, क्या बात है? और भी रहस्य?’ उसने पूछा।
नहीं, लालमोहन बाबू। सारे रहस्य सुलझ गए हैं!
अमिताभ हलदर को सबसे आखिर में इस बारे में सूचित किया गया था।
'मैं कल सुबह आपके घर पर एक बैठक आयोजित करने की योजना बना रहा हूं,' फेलुदा ने उससे कहा।
‘एक बैठक?’
जी हाँ। मैं चाहता हूँ कि आपके घर के सभी पुरुष सदस्य इसमें शामिल हों। इंस्पेक्टर हाजरा भी उपस्थित रहेंगी।
‘आप किस समय का विचार कर रहे हैं?’
'नौ। इससे आपके अन्य कामों में देरी हो सकती है, लेकिन मेरा विश्वास कीजिए, यह अत्यंत आवश्यक है।'
‘ठीक है। लेकिन जब आप पुरुष सदस्यों की बात करते हैं, तो क्या आपका मतलब है कि अनु को भी शामिल किया जाना चाहिए?’
'अरे नहीं, नहीं। दरअसल, उन्हें वहां मौजूद नहीं होना चाहिए। मेरा मतलब सिर्फ वयस्कों से था।'
हम श्री हलदर के घर पहुँचे तो देखा कि इंस्पेक्टर और उनके आदमी पहले ही आ चुके थे। लालमोहन बाबू और मैं दोनों बहुत उत्साहित थे। भगवान ही जाने फेलुदा क्या खुलासा करने वाला था और असली गुनहगार कौन निकलेगा। लालमोहन बाबू ने मुझसे फुसफुसाते हुए कहा, 'मैं तो सोच भी नहीं रहा। मैं सोच ही नहीं पा रहा, और मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा कि तुम्हारे चचेरे भाई ने न सिर्फ सब कुछ समझ लिया, बल्कि इतना शांत भी कैसे रहा!'
भूतल पर बने बड़े से ड्राइंग रूम में सभी लोग इकट्ठा थे। जैसे ही हम अंदर आए, श्री दत्ता ने हमारा अभिवादन किया। उन्होंने कहा, ‘मुझे बहुत खुशी है कि मैं जल्द ही दिल्ली के लिए रवाना हो रहा हूँ। कोई काम न होने से मैं पागल हो रहा हूँ!’
हमें अभी तक अचिंत्य हलदर से ठीक से बात करने का मौका नहीं मिला था। वह आए और फेलुदा से पूछा, 'इसमें कितना समय लगेगा? मैं एक नई भूमिका में बहुत

व्यस्त हूँ। यह एक लंबी और कठिन भूमिका है, और नाटक कल से शुरू हो रहा है। मेरे पास किसी और चीज़ पर ज़्यादा समय देने का समय नहीं है।'
‘इसमें आधे घंटे से ज्यादा समय नहीं लगेगा, मैं वादा करता हूँ।’
अचिंत्य बाबू कुछ बुदबुदाते हुए चले गए। एक वेटर ने सबको कॉफी परोस दी थी। फेलुदा ने अपनी कॉफी खत्म की और खड़े हो गए। उन्होंने अपनी काली आँख को छुपाने के लिए काले चश्मे पहने हुए थे। इससे वे पहले से भी ज़्यादा स्मार्ट लग रहे थे। जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, कमरे में मौजूद सभी लोग चुप हो गए।
‘जब मैं अमिताभ हलदर के निमंत्रण पर यहाँ आया था, तब मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं एक हत्या के मामले में उलझ जाऊँगा। पार्वतीचरण की हत्या में सबसे हैरान करने वाली बात साधन दस्तीदार का गायब होना था। वह सुबह दस बजकर पंद्रह मिनट से साढ़े दस बजे तक पार्वतीचरण के अध्ययन कक्ष में था। साढ़े दस बजे हमने उसे ऊपर बैठक कक्ष से बाहर आते और फिर सीढ़ियों से नीचे जाते देखा। पाँच मिनट बाद, जब हम छोटी अनु से बात करने के बाद अध्ययन कक्ष में गए, तो हमने पार्वतीचरण को मृत पाया। हमने श्री दस्तीदार को हर जगह ढूँढा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला। चौकीदार ने ज़ोर देकर कहा कि उसने उसे बाहर जाते नहीं देखा। वह बगीचे में भी नहीं छिपा था। चारदीवारी इतनी ऊँची थी कि उसे कूदकर पार करना नामुमकिन था, खासकर जब एक हाथ में ब्रीफ़केस हो। हम—’
अचिंत्य बाबू ने फेलुदा की बात काटते हुए कहा, 'श्री दस्तीदार के आने से पहले मेरे पिता से मिलने आए व्यक्ति को आप क्यों भूल रहे हैं?' ‘पेस्तोनजी? वो इतनी ताकत से वार नहीं कर सकते थे, जिस ताकत से आपके पिता पर हमला हुआ। श्री हलदर, वो बूढ़े हैं और उन्हें गठिया है। वो अपना दाहिना हाथ भी ठीक से नहीं उठा सकते। हमें उन्हें इस मामले से बाहर करना होगा। लेकिन कोई तीसरा व्यक्ति हो सकता है जो साधन दस्तीदार के आने से पहले आपके पिता के कमरे में गया हो।’
'कौन?'
'आप।'
अचिंत्य हलदार उछलकर खड़ा हो गया। 'तुम्हारा मतलब है कि मैं... मैं मारने की कोशिश करूँगा...?'
नहीं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आपने सचमुच अपने पिता को मारने की कोशिश की। मैं केवल इतना कह रहा हूं कि आपको ऐसा करने का अवसर मिला था।
‘ओह। भगवान का शुक्र है।’
‘खैर,’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘दस्तीदार के गायब होने के दो संभावित कारण थे। पहला, चौकीदार झूठ बोल रहा था। दूसरा, वह परिसर से बिल्कुल भी बाहर नहीं गया था, इस स्थिति में चौकीदार स्पष्ट रूप से सच कह रहा था।’
'आपका मतलब है कि वह घर के अंदर कहीं छिपा हो सकता है? अटारी में, या किसी अप्रयुक्त कमरे में?' हृषिकेश दत्ता ने पूछा।
‘नहीं,’ अमिताभ हलदर ने विरोध करते हुए कहा, ‘मुझे नहीं लगता कि वह बिना देखे अटारी तक जा सकता था; और ड्राइंग रूम, स्टोर रूम और श्री दत्ता के

बेडरूम को छोड़कर, भूतल पर बाकी सभी कमरे बंद हैं। वह उनमें से किसी में कैसे घुस सकता था?’
‘जी हां, वो मेरे कमरे में बिल्कुल नहीं छिपा था, मैं आपको ये बता सकता हूं!’ श्री दत्ता ने जोर देकर कहा। ‘दरअसल, जब वो आया तो मैं घर पर नहीं था।’ ‘अच्छा, श्री दत्ता, हमने डाकघर से पता किया। उन्होंने पुष्टि की कि आप दस बजे वहाँ गए थे और दो टेलीग्राम भेजे थे। फिर आपने—’
फिर मैं अपनी घड़ी के लिए एक पट्टा ढूंढने गया।
'हां, आपने हमें यही बताया था। दुर्भाग्य से, स्थानीय दुकानों में किसी को भी याद नहीं है कि उन्होंने आपको देखा था।'
तो क्या हुआ? आप क्या कह रहे हैं, श्रीमान मिटर? क्या आपकी पूरी जांच इस बात पर निर्भर करती है कि व्यस्त दुकानदार अपने ग्राहकों के बारे में क्या याद रख सकते हैं?
नहीं। मुझे दुकानदारों की बातों पर ज्यादा ध्यान देने का कोई कारण नहीं दिखा। साथ ही, मुझे यह मानने का भी कोई कारण नहीं लगा कि आप हमें सच बता रहे थे।
‘क्यों? मैं झूठ क्यों बोलूंगा?’
क्योंकि हो सकता है कि आप खुद भी दस-पंद्रह साल की उम्र में पार्वतीचरण के अध्ययन कक्ष में गए हों।
‘क्या तुम पागल हो गए हो? क्या तुमने अभी-अभी यह नहीं कहा था कि तुमने साधन दस्तीदार को ऊपर वाले बैठक कक्ष से बाहर आते देखा था? और अब तुम कह रहे हो कि मैं भी उसी समय वहाँ मौजूद था?’
'हां। मान लीजिए कि श्री दस्तीदार बिल्कुल नहीं आए? मान लीजिए कि आप उनकी जगह गए होते?'
इस टिप्पणी के बाद सन्नाटा छा गया। श्री दत्ता जैसे कुछ बोल ही नहीं पा रहे थे। मेरा सिर चकराने लगा। आखिर फेलुदा किस बारे में बात कर रहे थे?
अचानक, श्री दत्ता जोर से हंस पड़े।
‘आप मजाक कर रहे हैं श्रीमान मित्तर, है ना? मेरा मतलब है, क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि पार्वतीचरण या तो पूरी तरह से पागल थे, या पूरी तरह से बुढ़ापे के कारण उनकी सोचने-समझने की क्षमता खत्म हो गई थी? अगर मैं दाढ़ी लगाकर जाता, तो क्या वह मुझे पहचान नहीं लेते?’
नहीं। श्री दत्ता, वह ऐसा कैसे कर सकते थे? आपने अपना चश्मा उतारा, नकली दाढ़ी-मूंछ लगाई और अपने कपड़े बदले। पार्वतीचरण अपने कमरे में बैठे थे, सात साल बाद किसी ऐसे व्यक्ति को देखने की उम्मीद कर रहे थे जिसे उन्होंने नहीं देखा था। उन्हें क्यों नहीं लगता कि आप वही व्यक्ति हैं? क्योंकि आप वही व्यक्ति थे, है ना? साधन दस्तीदार और हृषिकेश दत्ता में क्या अंतर है, बताइए? पार्वतीचरण को कैसे पता चलता कि उनका नया सचिव असल में उनका पुराना सचिव ही है, भेष बदलकर? साधन दस्तीदार के रूप में आपकी असली दाढ़ी थी। आपने उसे मुंडवा लिया। दस्तीदार चश्मा नहीं पहनते थे, लेकिन आपने तय किया कि हृषिकेश दत्ता को चश्मा पहनना चाहिए। और आपने इतने समय तक पुराने हिसाब चुकता करने का इंतज़ार किया। आप नौकरी से निकाले जाने की बेइज्जती को कभी नहीं भूल सकते, है ना?

श्री दत्ता के चेहरे के भाव पूरी तरह बदल गए थे। उनके होंठ कांप रहे थे, लेकिन वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे। दो कांस्टेबल उनके पास आकर खड़े हो गए। लेकिन फेलुदा ने अभी अपनी बात पूरी नहीं की थी।
‘तुमने अपने मालिक को मारने के लिए भारी पेपरवेट का इस्तेमाल किया। फिर तुमने उसे अपनी जैकेट की जेब में डाला और तालाब में फेंक दिया। उसके बाद, तुम्हें अपना भेष बदलने और एक बार फिर हृषिकेश दत्ता बनकर सामने आने में केवल कुछ ही मिनट लगे। क्या मैं सही कह रहा हूँ?’
श्री दत्ता ने कुछ नहीं कहा। मैं देख सकता था कि दिसंबर के महीने में भी उनकी कमीज का कॉलर पसीने से भीगा हुआ था।
एक और बात है। क्या "अपना ख्याल रखना, साधु" शब्दों का आपके लिए कोई अर्थ है? क्या आपने ये शब्द हाल ही में एक पक्षी से नहीं सुने थे, वही चंदन जो खो गया था? आप अंधविश्वासी हैं, क्या आपने नहीं सोचा कि पक्षी को आपकी योजना के बारे में पता था और वह आपको चेतावनी दे रहा था? और क्या इसीलिए आपने उसे पिंजरे से निकालकर बाहर छोड़ दिया था? लेकिन उसने पलटवार किया, है ना, और आपकी बांह पर अपना निशान छोड़ गया?
इस बार हृषिकेश दत्ता को बोलने का मौका मिल गया। ‘बेतुका!’ वह उत्साह से कुर्सी से उछलते हुए बोले। ‘यह तो बिलकुल हास्यास्पद है। मुझे चोट कहाँ लगी? क्या मेरी बाहों पर कहीं कोई निशान दिख रहा है?’
'इंस्पेक्टर हाजरा, क्या आप कृपया अपने किसी आदमी को अपनी दाहिनी कलाई से घड़ी उतारने के लिए कहेंगे?'
श्री दत्ता ने उसे रोकने की पूरी कोशिश की, लेकिन एक कांस्टेबल ने उसकी घड़ी का कुंडा खोल दिया और वह आसानी से फिसल गई। दूर से भी मुझे एक इंच लंबी खरोंच दिखाई दे रही थी, जिसे उसने घड़ी के पट्टे के नीचे बड़ी चतुराई से छिपा रखा था।
‘मेरा उसे मारने का इरादा नहीं था। आपको मुझ पर विश्वास करना होगा, बिल्कुल!’ श्री दत्ता की आवाज मुश्किल से सुनाई दे रही थी। उनका पूरा शरीर कांप रहा था।
‘हाँ, मुझे पता है। तुम्हारा बदला लेने का तरीका हत्या नहीं था। फिर भी, उसकी मृत्यु हो गई। तुम तो बस नेपोलियन का लिखा हुआ वह पत्र चुराना चाहते थे, यह जानते हुए कि पार्वतीचरण के लिए वह कितना अनमोल था। तुम्हें पता था कि पेस्टनजी उसे खरीदने के लिए तैयार थे। इसलिए तुमने—’
‘नहीं, नहीं, यह मैंने नहीं किया। मैंने यह नहीं किया!’ श्री दत्ता ने हताशा में चिल्लाते हुए कहा।
‘कृपया मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि मुझे पूरी कहानी पता है। आप इसमें अकेले नहीं थे, है ना? आपने वह पत्र लिया, अपने कमरे में जाकर मेकअप बदला और फिर उसे अपने साथी को दे दिया। लेकिन यह जानते हुए कि पुलिस घर की तलाशी जरूर लेगी, आपके साथी ने उसे जल्दी से एक ऐसी जगह छिपा दिया जिसे वह पूरी तरह सुरक्षित समझता था। है ना, अचिंत्य बाबू?’ आखिरी सवाल गोली की तरह निकला। लेकिन अचिंत्य हलदर हमारी उम्मीद से कहीं ज्यादा दृढ़ निश्चयी निकले। वे बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए और होठों पर मुस्कान लिए फेलुदा की ओर देखते रहे।

उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'कृपया जारी रखिए, श्रीमान मिटर, हमें और बताइए।'
‘तुम अपने भतीजे के कमरे में साढ़े दस बजे के कुछ देर बाद गए थे, है ना?’ 'हां, मैंने किया। तो क्या हुआ? वह चाहता था कि मैं उसका नया खिलौना देखूं। इसमें गलत क्या था?'
नहीं। लेकिन मुझे यकीन है कि आपको पता होगा कि हत्या के तुरंत बाद एक चोर आपके भतीजे के कमरे में घुस गया था। उसे वह नहीं मिला जिसकी उसे तलाश थी। क्या आप इस बात से इनकार करेंगे कि आप ही वह चोर थे, और आपने नन्ही अनु के कमरे में उस पत्र को ढूंढने की उम्मीद में घुसपैठ की थी क्योंकि आपने उसे वहीं छिपा रखा था? मुझे पता है कि आपने ही पेस्टनजी को फोन किया था और उन्हें चोरी हुआ पत्र लाने की पेशकश की थी। लेकिन आपको वह नहीं मिला, इसलिए पेस्टनजी के घर कोई नहीं आया।
‘अब, यह अजीब नहीं है क्या? अगर मैंने वह पत्र खुद छिपाया था, तो मुझे वह क्यों नहीं मिला?’
'कारण सीधा-सादा है, श्री हलदर। जिस वस्तु में आपने वह पत्र डाला था, वह अनु के तकिए के नीचे पड़ी थी। ये रही।'
फेलुदा ने इंस्पेक्टर हाजरा की ओर हाथ बढ़ाया, जिन्होंने चुपचाप उसे लाल रंग की खिलौना मशीनगन थमा दी, जिसे अनु ने कुछ ही दिन पहले खरीदा था। फेलुदा ने अपनी उंगली उसके नोजल में डाली और एक मुड़ा हुआ कागज़ का टुकड़ा निकाला—नेपोलियन का पत्र।
अचिंत्य हलदर के होठों से मुस्कान धीरे-धीरे गायब हो गई।
‘क्या आपने ही श्री दत्ता के कपड़े और मेकअप का इंतजाम किया था?’ फेलुदा ने सहज भाव से पूछा। ‘पैसे का बंटवारा कैसे करने वाले थे? पचास-पचास?’
मेल के बेटे शंकर ने चंदना को जल्दी ही पकड़ लिया और उसे उसके छोटे मालिक को लौटा दिया। हालांकि, अनु ने चंदना को ढूंढने का पूरा श्रेय फेलुदा को दिया।
अमिताभ हलदर ने कहा कि फेलुदा अपने पिता के संग्रह से इनाम के तौर पर कुछ भी चुन सकता है। लेकिन फेलुदा ने सिर हिलाकर कहा, 'नहीं, श्री हलदर। मुझे इस रहस्य को सुलझाने के लिए नियुक्त नहीं किया गया था, है ना? मेरा इसमें शामिल होना महज़ संयोग था, और मैं यहाँ केवल इसलिए आया हूँ क्योंकि आपके बेटे ने मुझे आमंत्रित किया था। मैं छह साल के बच्चे से फीस की उम्मीद कैसे कर सकता हूँ?'
दो दिन बाद, लालमोहन बाबू हमारे घर आए, और देखने लगे
‘महोदय,’ उसने फेलूदा की ओर सीधे देखते हुए गंभीरता से घोषणा की, ‘आपकी अविश्वसनीय बुद्धिमत्ता और जासूसी की अद्भुत क्षमता को देखते हुए, मैं आपको मानद उपाधि प्रदान करता हूँ—एबीसीडी।’
‘एबीसीडी? ये क्या होता है?’
‘एशिया का सर्वश्रेष्ठ अपराध जासूस।’

एक
मंगलवार, 28 सितंबर 1982 को, बैकुंठपुर में नियोगी परिवार के घर के सामने एक टैक्सी आकर रुकी। नियोगी परिवार कभी इस इलाके के जमींदार हुआ करता था। गेट पर तैनात दरबान आगे आया, तभी एक अधेड़ उम्र का आदमी टैक्सी से बाहर निकला। उसकी लंबाई सामान्य थी। उसके गालों पर घनी दाढ़ी थी और बाल बिखरे हुए लग रहे थे। उसने गहरे नीले रंग का सूट और रंगीन चश्मा पहन रखा था।
ड्राइवर ने कार की डिक्की से एक भूरा सूटकेस निकाला और उसे फुटपाथ पर रख दिया।
'नियोगी साहब?' दुर्वान ने पूछा।
उस आदमी ने सिर हिलाया। दरबान ने सूटकेस उठा लिया।
‘कृपया अंदर आइए,’ उसने कहा। ‘बाबू काफी देर से आपका इंतजार कर रहे हैं।’ घर के वर्तमान मालिक सौम्यशेखर नियोगी बरामदे में आरामकुर्सी पर लेटे हुए थे। जब एक नया व्यक्ति उनके पास आया तो उन्होंने सिर हिलाकर अभिवादन किया और पास ही एक कुर्सी की ओर इशारा किया। सौम्यशेखर लगभग सत्तर वर्ष के थे। अपनी उम्र के हिसाब से वे काफी चुस्त-दुरुस्त थे, सिवाय इसके कि उनकी नज़र कमजोर होने के कारण उन्हें मोटे लेंस वाले चश्मे पहनने पड़ते थे। ‘Rudrasekhar?’ he asked.
नए आए व्यक्ति ने अपनी जेब से पासपोर्ट निकाला और उसे जांच के लिए खोल दिया। सौम्यशेखर ने उस पर सरसरी नजर डाली और मुस्कुरा दिया।
‘यह तो बहुत बुरा है, है ना?’ उसने कहा। ‘तुम मेरे चचेरे भाई हो, फिर भी तुम्हें इसे साबित करने के लिए अपना पासपोर्ट दिखाना पड़ रहा है। लेकिन यह आसानी से देखा जा सकता है कि तुम एक नियोगी हो।’
दूसरे आदमी के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी। सौम्यशेखर ने आगे कहा, 'कोई बात नहीं, मुझे उम्मीद है कि रोम से मुझे पत्र लिखने के बाद मैंने जो पत्र भेजा था, वह आपको मिल गया होगा। हमें आश्चर्य इस बात का हुआ कि आपने इतने सालों तक हमसे संपर्क नहीं किया। चाचाजी 1955 में, सत्ताईस साल पहले घर छोड़कर चले गए थे। जब वे आपके बिना लौटे, तो हमने सोचा कि कोई समस्या है और आप दोनों के बीच संबंध अच्छे नहीं हैं। चाचाजी ने कभी इस बारे में बात नहीं की, और हमने भी उनसे कुछ नहीं पूछा। हमें बस इतना पता था कि रोम में उनका एक बेटा है। खैर, अब आप आए हैं - मुझे लगता है - संपत्ति के बारे में बात करने के लिए?'
'हाँ।'
मैंने आपको लिखा था ना कि आपके पिता से मुझे आखिरी बार दस साल पहले पोस्टकार्ड मिला था? तो, कानून की नजर में, वे अब इस दुनिया में नहीं हैं। क्या आपने इस बारे में किसी वकील से बात की है?
'हाँ।'

बहुत खूब। आप यहाँ जितनी देर चाहें रुक सकते हैं और हमारे पास जो कुछ भी है, सब देख सकते हैं। आपको ऊपर अंकल का स्टूडियो मिल जाएगा। उनकी पेंटिंग, कैनवस और रंग सब वैसे ही रखे हैं जैसे उन्होंने छोड़े थे। हमने किसी चीज को छुआ तक नहीं है। फिर बैंक की पासबुक भी हैं। आपको उन्हें देखना ही होगा। सारी औपचारिकताएं पूरी होने में शायद छह महीने लग जाएं। उम्मीद है आप इतने दिन रुक पाएंगे?
'हाँ।'
आपको समय-समय पर कलकत्ता जाना पड़ सकता है। आपके पास टैक्सी तो होगी ही, है ना?
'हाँ।'
हम आपके ड्राइवर के यहाँ ठहरने का इंतज़ाम कर देंगे। कोई दिक्कत नहीं! ‘ग्रा... धन्यवाद!’
रुद्रशेखर ने इतालवी में 'ग्राज़ी' कहना शुरू किया, फिर अपना इरादा बदल दिया। 'वैसे, आपको हर दिन भारतीय खाना खाने में कोई आपत्ति नहीं होगी, है ना? मैंने सुना है कि लंदन में लगभग हर गली के कोने पर एक भारतीय रेस्तरां है। रोम में कैसा माहौल है?'
'कुछ हैं।'
‘अच्छा, इससे मदद मिलनी चाहिए। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ... अरे, जगदीश, क्या बात है?’
एक बूढ़ा नौकर दरवाजे के पास खड़ा था। उसकी आँखों में आँसू थे। 'ठुमरी...हुजूर, ठुमरी मर गया।'
‘क्या! मर गया?’
'हाँ।'
‘अरे, भिखू तो उसे बस सैर पर ले गया था, है ना?’
हां, लेकिन यह बहुत पहले की बात है। जब वे दोनों तय समय पर नहीं लौटे, तो मैं उन्हें ढूंढने गया। मुझे ठुमरी का शव जंगल में मिला। भीखू भाग गया है, हुजूर।
मुझे इस पर विश्वास नहीं होता!
सौम्यशेखर को संगीत में हमेशा से रुचि थी। उनके दो फॉक्स टेरियर कुत्तों में से एक का नाम काजरी था। दूसरे का नाम ठुमरी था। काजरी की कुछ साल पहले स्वाभाविक मृत्यु हो गई थी। ठुमरी ग्यारह साल की थी। कुछ घंटे पहले तक वह जीवित थी और पूरी तरह स्वस्थ थी।
रुद्रशेखर चुपचाप उठ खड़ा हुआ। वह बुजुर्ग व्यक्ति स्पष्ट रूप से बहुत परेशान था। रुद्रशेखर उसे परेशान नहीं करना चाहता था। अब यह पता लगाने का समय था कि उसका कमरा कहाँ है।

दो
हमारी कार शिबपुर के भारी ट्रैफिक से गुज़रते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग पर मुड़ गई। ऐसा लगा जैसे हम किसी नई दुनिया में आ गए हों।
जब मैं ‘हमारी’ कार कहता हूँ, तो मेरा मतलब वास्तव में जटायु की कार से है। रोंगटे खड़े कर देने वाले थ्रिलर उपन्यासों के बेहद सफल लेखक लालमोहन गांगुली—उर्फ जटायु—के पास यह हरी रंग की एम्बेसडर कार थी। लेकिन जब भी हम चाहते, वे हमें इसे इस्तेमाल करने देने में बिल्कुल सहज थे। उन्होंने एक बार फेलुदा से कहा था, ‘मेरी कार, साहब, आपकी कार के बराबर है। मेरा मतलब है, यह आपका अधिकार है—अर्थात, मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि मैं आपको अपनी कार इस्तेमाल करने की अनुमति दे रहा हूँ, आपने मेरे लिए जो कुछ भी किया है, उसे देखते हुए।’
‘मैंने आपके लिए क्या किया है, लालमोहन बाबू?’
अरे वाह! आपने तो मेरे लिए कितने नए रास्ते खोल दिए! इससे मुझे नई ऊर्जा और बिल्कुल अलग नजरिया मिला है। सोचिए, मैं अब तक कितनी जगहों पर घूम चुका हूँ — दिल्ली, मुंबई, जैसलमेर, बनारस, शिमला, नेपाल। क्या मैं आपकी मदद के बिना यह सब कर पाता? बिलकुल नहीं! मैंने तो बस यह कहावत सुनी थी कि "यात्रा से मन का विस्तार होता है"। अब मुझे इसका असली मतलब समझ आ गया है।
लेकिन इस बार हम ज्यादा दूर नहीं जा रहे थे। मेछेदा कलकत्ता से कुछ ही मील दूर था। लेकिन लालमोहन बाबू के अनुसार, कलकत्ता में रहना किसी ब्लैक होल में रहने से कम नहीं था। इसलिए अगर कोई एक दिन के लिए भी वहां से निकल पाता, तो उसे नई जिंदगी मिल जाती।
आप सोच सकते हैं कि हम मेछेड़ा ही क्यों जा रहे थे? कारण सीधा-सा था। हम वहां अंकशास्त्री भाबेश चंद्र भट्टाचार्य से मिलने जा रहे थे। लालमोहन बाबू ने लगभग तीन महीने पहले उनके बारे में और उनकी शक्तियों के बारे में पढ़ा था। अब वह उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। श्री भट्टाचार्य, जाहिर तौर पर, संख्याओं के अपने ज्ञान का उपयोग करके आश्चर्यजनक और सटीक भविष्यवाणियां कर सकते थे। मेचेदा स्थित उनके घर के बाहर सैकड़ों लोग उनसे सलाह लेने के लिए कतार में खड़े थे। लालमोहन बाबू भी उस कतार में शामिल होना चाहते थे, क्योंकि उनकी पिछली किताब उतनी नहीं बिकी थी जितनी उन्होंने उम्मीद की थी। उन्होंने सोचा, 'उपन्यास के शीर्षक में कुछ गड़बड़ रही होगी।'
‘मुझे ऐसा नहीं लगता, लालमोहन बाबू,’ फेलुदा ने उससे कहा। ‘जो कुछ हुआ वो बस इतना था कि तुम भावनाओं में बह गए। तुम्हारे नायक को सात गोलियां लगती हैं, लेकिन उसके बाद भी वो ज़िंदा और ठीक-ठाक है। अब, ये बात पचाना थोड़ा मुश्किल है, है ना? मेरा मतलब है, तुम्हारी साहसिक कहानियों की श्रृंखला के पाठकों के लिए भी?’

‘फेलू बाबू, तुम क्या कह रहे हो?’ जटायु ने गुस्से में कहा। ‘मेरा हीरो प्रखर रुद्र कोई साधारण आदमी नहीं है, और मेरे पाठक यह जानते हैं। वह असाधारण प्रतिभा का महा-महा...
‘ठीक है, ठीक है, हम आपकी बात मान लेते हैं!’
इस बार फेलुदा ने अपने नवीनतम उपन्यास की कहानी से पूरी तरह संतुष्ट होने की घोषणा की थी। लेकिन लालमोहन बाबू कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। उन्होंने कहा, 'मुझे इस अंकशास्त्री से सलाह लेनी होगी।' इसीलिए हमने मेचेदा की यात्रा की।
हम आज सुबह 7:30 बजे कलकत्ता से निकले थे और 9:30 बजे तक मेचेदा पहुँचने की उम्मीद थी। दोपहर 1:30 बजे तक घर वापस आने की हमारी योजना थी।
हाइवे पर ज़्यादा ट्रैफिक नहीं था, और हम 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ी चला रहे थे। जल्द ही हम कोलाघाट से आगे निकल गए। मेछेड़ा यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं था। कुछ मिनट बाद, हमने सड़क के किनारे एक अजीब सी कार देखी, जिसका मालिक असहाय होकर उसके पास खड़ा था। हमारे आने पर वह चौंक गया और पागलों की तरह हाथ हिलाने लगा। हमारी कार अचानक ब्रेक लगाकर रुक गई।
“यह तो बहुत दुर्भाग्यपूर्ण घटना है,” उस सज्जन ने एक बड़े रुमाल से अपना चेहरा पोंछते हुए कहा। “एक टायर गायब हो गया है, लेकिन मुझे लगता है कि मैंने जैक अपनी दूसरी कार में ही छोड़ दिया था।”
‘चिंता मत करो,’ लालमोहन बाबू ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, ‘मेरा ड्राइवर सब ठीक कर देगा। एक बार देख लो, हरिपाड़ा।’
हरिपाड़ा ने एक जैक निकाला और उसे दूसरे आदमी को दे दिया, जिसने तुरंत पंचर टायर पर काम करना शुरू कर दिया।
‘आपकी कार कितनी पुरानी है?’ फेलुदा ने पूछा।
‘यह 1936 का मॉडल है। आर्मस्ट्रांग सिडले।’
क्या लंबी दौड़ के दौरान यह अक्सर आपको परेशानी देता है?
नहीं, कभी नहीं। मैं हर साल विंटेज कार रैली में हिस्सा लेता हूँ। उह... क्या आप बहुत दूर जा रहे हैं?
‘सिर्फ मेचेडा तक। हमें वहां आधे घंटे से ज्यादा समय बिताने की उम्मीद नहीं है।’
तो फिर, आप वहीं से मेरे घर क्यों नहीं आ जाते? मेचेदा से निकलते ही बाईं ओर मुड़ जाना। मैं यहाँ से सिर्फ आठ किलोमीटर दूर बैकुंठपुर में रहता हूँ। ‘Baikunthapur?’
जी हां, मेरे माता-पिता हमारे पैतृक घर में रहते हैं। मैं कलकत्ता में रहती हूं, लेकिन फिलहाल उनसे मिलने आई हूं। हमारा घर दो सौ साल पुराना है—मुझे यकीन है कि आपको यहां आकर अच्छा लगेगा। आप हमारे साथ दोपहर का भोजन कर सकते हैं और शाम को कलकत्ता लौट सकते हैं। हां जरूर कहिएगा। मैं आपको यह दिखाना चाहती हूं कि मैं आपकी मदद के लिए कितनी आभारी हूं।
फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं। 'बैकुंठपुर... मैंने यह नाम हाल ही में कहीं देखा है।'
'जी हां, आपने शायद इलस्ट्रेटेड वीकली में भुदेव सिंह का लेख पढ़ा होगा।'

'ओह, हाँ। अब मुझे याद आया। यह लगभग छह सप्ताह पहले प्रकाशित हुआ था।'
'जी हां, हालांकि मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने खुद वह लेख नहीं पढ़ा है। किसी ने मुझे इसके बारे में बताया था।'
‘यह बैकुंठपुर के नियोगी परिवार के किसी व्यक्ति के बारे में है। वह एक कलाकार थे, जो रोम गए थे।’
‘मेरे परदादा चंद्रशेखर,’ उस सज्जन ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैं भी एक नियोगी हूँ। मेरा नाम नोबो कुमार है।’
‘ठीक है। मैं प्रदोष मित्र हूं, और ये लालमोहन गांगुली हैं। ये मेरे चचेरे भाई तपेश हैं।’
नोबो कुमार ने अपनी भौंहें उठाईं। 'प्रदोष मित्तर? जांचकर्ता?' उन्होंने पूछा।
'हाँ।'
'ओह, तो आपको हमारे घर आना ही होगा! आप तो एक मशहूर शख्स हैं! और सच कहूं तो, मैंने आपसे संपर्क करने के बारे में पहले ही सोच लिया था।'
'क्यों?'
‘एक हत्या हुई है। आप इस पर हंस सकते हैं, क्योंकि पीड़ित कोई इंसान नहीं बल्कि एक कुत्ता था।’
‘क्या! यह कब हुआ?’
'पिछले मंगलवार को। वह एक फॉक्स टेरियर था। मेरे पिताजी उसे बहुत पसंद करते थे।'
‘आप इसे हत्या क्यों कहते हैं?’
एक नौकर कुत्ते को टहलने के लिए बाहर ले गया। दोनों में से कोई भी वापस नहीं लौटा। कुत्ते का शव जंगल में मिला। ऐसा लग रहा था जैसे उसे जहर दिया गया हो। चारों ओर बिस्कुट के टुकड़े बिखरे हुए थे।
‘कितना अजीब है! क्या आपको कोई अंदाजा है कि कौन—?’
नहीं। कुत्ता ग्यारह साल का था। वैसे भी वह ज़्यादा दिन नहीं जी पाता। इसीलिए यह सारा मामला मुझे बेहद रहस्यमय लगता है। खैर, मैं आपसे कोई जाँच-पड़ताल की उम्मीद नहीं करता। बस आपके आने से मुझे खुशी होगी। मैं आपको वह जगह दिखा सकता हूँ जहाँ चंद्रशेखर चित्रकारी करते थे। उनका स्टूडियो अभी भी वैसा ही है।
‘ठीक है,’ फेलुदा ने कहा। ‘मुझे मानना पड़ेगा कि उस लेख ने मुझे नियोगी परिवार के बारे में जानने के लिए उत्सुक कर दिया है। हम लगभग ग्यारह बजे वहाँ पहुँचेंगे?’
‘ठीक है। मेचेदा से निकलने के तुरंत बाद आपको एक पेट्रोल पंप मिल जाएगा। वे आपको बैकुंठपुर जाने का रास्ता बता देंगे।’
श्री नियोगी ने जैक हरिपाड़ा को लौटा दिया, और हम गाड़ी लेकर चले गए। फेलुदा ने टिप्पणी करते हुए कहा, “हमारे समय में कितने ही रोचक लोग हुए हैं, लेकिन हम अक्सर उनके बारे में जान नहीं पाते। चंद्रशेखर नियोगी चौबीस वर्ष की आयु में देश छोड़कर चले गए। वे रोम की एक अकादमी में कला का अध्ययन करने गए और एक इतालवी लड़की से विवाह किया। पत्नी के निधन के बाद वे कई वर्षों बाद घर लौटे। वे चित्रकार के रूप में काफी प्रसिद्ध हुए। कई धनी

लोगों—जिनमें कुछ रियासतों के महाराजा भी शामिल थे—ने उनसे अपने चित्र बनवाए। इन्हीं महाराजाओं में से एक उन्हें अच्छी तरह से जानते थे। उन्होंने ही वह लेख लिखा था। चंद्रशेखर अंततः वृद्धावस्था में घर छोड़कर चले गए और कहा जाता है कि वे संन्यासी बन गए थे।”
‘जी हां, बहुत दिलचस्प बात है,’ लालमोहन बाबू ने कहा, ‘लेकिन मेरे मन से एक बात निकल ही नहीं रही। क्या आपने कभी किसी कुत्ते की हत्या के बारे में सुना है?’
नहीं, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने ऐसा नहीं किया है।
‘तो फिर, फेलू बाबू, मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप इस काम को शुरू कर दें। अगर आप नोबो कुमार नियोगी के लिए इस रहस्य को सुलझा लेते हैं, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि आप निराश नहीं होंगे। जो व्यक्ति तीन पुरानी कारों का रखरखाव कर सकता है, वह निश्चित रूप से बहुत अमीर होगा। ज़रा सोचिए!’

तीन
हमने भाबेश भट्टाचार्य से मिलने का समय तय किया था, इसलिए उनसे मिलना अपेक्षाकृत आसान रहा। मोटे चश्मे, ढीली कमीज और कंधों पर सूती चादर ओढ़े हुए वे किसी स्कूल शिक्षक जैसे लग रहे थे। वे एक छोटी सी मेज के सामने बिल्कुल सीधे बैठे थे, जिस पर कुछ बारीक नुकीली पेंसिलें और एक मोटी, जिल्दबंद बहीखाता रखी थी।
‘Lalmohan Gangopadhyaya?’ he asked, glancing at the postcard Lalmohan Babu had sent him.
'हाँ।'
‘उम्र?’ लालमोहन बाबू ने उनसे पूछा।
‘जन्म तिथि?’
सोलह अगस्त।
‘हम्म। लियो। ठीक है, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?’
‘अच्छा… मैं एक लेखक हूँ, आप जानते ही हैं। मैंने अपने अगले उपन्यास के लिए तीन नाम सोचे हैं, लेकिन मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ कि कौन सा सबसे अच्छा होगा।’
‘ये नाम क्या हैं?’
'होनोलूलू में हुल्लाबालू, होनोलूलू में नर्क, और होनोलूलू होलोकॉस्ट।' ‘हम्म। कृपया प्रतीक्षा करें।’
श्री भट्टाचार्य ने अपने बहीखाते में नाम लिख लिए और कुछ गणनाएँ करने लगे। फिर उन्होंने कहा, ‘आपका नाम जोड़ने पर इक्कीस आता है। आपकी जन्मतिथि और जन्म का महीना मिलाकर छह आता है। दोनों तीन से विभाजित हो सकते हैं। मेरा सुझाव है कि आप तीसरी उपाधि का प्रयोग करें। आपकी पुस्तक कब प्रकाशित हो रही है?’
‘1 जनवरी।’
नहीं, इसे तीसरा बना दो। किताब से संबंधित कोई भी चीज तीन से विभाज्य होनी चाहिए।
‘मैं समझ गया। और... उह... यह कैसे होगा... मेरा मतलब है...?’
‘चिंता मत करो। यह खूब बिकेगा।’
लालमोहन बाबू मुस्कुराए, सौ रुपये दिए और हमारे साथ बाहर आ गए।
मैंने पूछा, 'थोड़ा महंगा तो था ना?'
'शायद। लेकिन मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि यह किताब हिट होगी। ओह, मैं आपको बता नहीं सकती कि मुझे कितनी राहत महसूस हो रही है!' 'क्या इसका मतलब यह है कि आप हर बार किताब लिखते समय मेचेडा वापस आएंगे?' ‘क्यों नहीं? इसका मतलब तो साल में सिर्फ दो बार आना ही होगा। जब सफलता की गारंटी हो...’ मैंने इसके अलावा कुछ नहीं कहा।

तक अनंत नाथ ने उन्हें देश छोड़ने और एक इतालवी महिला से शादी करने के लिए माफ कर दिया था।’
मैंने पूछा, ‘नीचे “एस. नियोगी” क्यों लिखा है? उनका नाम चंद्रशेखर था, है ना?’
'हां। लेकिन इटली में लोग उन्हें सैंड्रो कहते थे। इसलिए उन्होंने अपने हस्ताक्षर में "एस" का इस्तेमाल किया।'
कमरे में एस. नियोगी की कुछ अन्य छोटी पेंटिंग भी थीं। हर पेंटिंग चित्रकार की कुशलता का प्रमाण थी। निःसंदेह उन्हें एक दुर्लभ प्रतिभा प्राप्त थी।
एक वेटर शरबत के गिलास लेकर आया। फेलुदा ने एक गिलास उठाया और कहा, 'उस लेख में आपके परदादा के चित्रों के निजी संग्रह के बारे में कुछ दिलचस्प बात लिखी थी। बताया जाता है कि उनके पास एक विश्व प्रसिद्ध कलाकार का चित्र था, लेकिन उन्होंने लेखक भुदेव सिंह से कहा था कि वे इसका जिक्र किसी से न करें क्योंकि अगर उन्होंने बताया तो कोई उन पर विश्वास नहीं करेगा। क्या आपको इसके बारे में कुछ पता है?'
जी हां, एक पेंटिंग है। हमारे परिवार में सभी लोग इसके बारे में जानते हैं। यह यीशु मसीह की पेंटिंग है। लेकिन मैं आपको यह नहीं बता सकता कि कलाकार विश्व प्रसिद्ध था या नहीं। आप स्टूडियो जाकर खुद देख सकते हैं। यह हमेशा से वहीं टंगी हुई है।
'भूदेव सिंह को खुद पता होगा कि यह किसका काम है।'
'हां, मुझे पूरा यकीन है कि वह ऐसा करता है। वह और चंद्रशेखर बहुत करीबी दोस्त थे।'
‘क्या तुम्हारे चाचा को इसके बारे में कुछ नहीं पता? आखिर वो चंद्रशेखर के बेटे हैं, है ना?’
नोबो कुमार ने सिर हिलाया। 'मेरी जानकारी के अनुसार, उसके अपने पिता के साथ संबंध अच्छे नहीं थे। इसके अलावा, उसे कला में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं लगती।'
'इसका मतलब यह है कि आपके परिवार में किसी को भी पेंटिंग के वास्तविक मूल्य के बारे में कोई जानकारी नहीं होगी?'
'जी हां, यह सही है। मेरे पिता की रुचि संगीत में है। उन्हें चित्रकला और कलाकारों के बारे में मुझसे ज्यादा कुछ नहीं पता होगा। और यही बात मेरे भाई, नंदो कुमार पर भी लागू होती है।'
‘क्या संगीत से भी उनका बहुत गहरा संबंध है?’
नहीं, उनका जुनून अभिनय था। देखिए, कलकत्ता में हमारी एक ट्रैवल एजेंसी है। हमारे पिता चाहते थे कि मैं और नोन्दो साझेदार बनें। सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि 1975 में नोन्दो अचानक मुंबई नहीं चले गए। जाहिर है, हिंदी फिल्मों में उनकी किसी जान-पहचान थी जिसने उन्हें कुछ भूमिकाएँ दिलवाईं। तब से वे मुंबई में ही रह रहे हैं।
क्या वह सफल है?
मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे याद है कि उनके जाने के तुरंत बाद मैंने फिल्म पत्रिकाओं में उनकी तस्वीरें देखी थीं, लेकिन हाल ही में कुछ नहीं।

क्या आप नियमित रूप से संपर्क में हैं?
नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे बस इतना पता है कि वह नेपियन सी रोड पर एक फ्लैट में रहता है। मुझे लगता है उस इमारत का नाम "सी व्यू" है। मैं कभी-कभी उसकी चिट्ठियाँ आगे भेज देता हूँ, बस इतना ही।
हमने अपना पेय समाप्त किया और नोबो कुमार के पिता से मिलने नीचे गए। वे एक बड़े बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठे थे और एक किताब को अपनी आँखों के बिल्कुल पास पकड़े हुए थे। नोबो कुमार ने हमारा परिचय कराया।
‘क्या आपने उन्हें ठुमरी के बारे में बताया है?’ बूढ़े सज्जन ने पूछा। ‘जी बाबा,’ नोबो कुमार ने थोड़ी शर्मिंदगी के साथ जवाब दिया, ‘लेकिन श्री मिटर और बाकी लोग बस हमसे मिलने आए हैं, वे यहाँ व्यापार के सिलसिले में नहीं आए हैं।’
सौम्यशेखर ने भौंहें चढ़ा लीं। 'मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप इस मामले को गंभीरता से क्यों नहीं ले रहे हैं। क्या सिर्फ इसलिए कि ठुमरी एक कुत्ता था? क्या आपको नहीं लगता कि ऐसे निर्दयी हत्यारे को सजा मिलनी चाहिए? उसने न सिर्फ एक बेचारे, बेसहारा जानवर को मारा, बल्कि मेरे नौकर को भी धमकाया। मुझे पूरा यकीन है, वरना वह भागता नहीं। मुझे तो यह सब कुछ संदिग्ध लग रहा है, और मुझे यकीन है कि कोई भी काबिल जासूस इसे एक चुनौती मानेगा। आपका क्या कहना है, श्रीमान मित्तर?'
'आप बिलकुल सही हैं,' फेलुदा ने जवाब दिया।
“अच्छा। यह सुनकर मुझे खुशी हुई, और अगर तुम अपराधी को पकड़ सको तो और भी ज्यादा खुशी होगी। वैसे,” उन्होंने अपने बेटे की ओर मुड़कर पूछा, “क्या तुम रॉबिन बाबू से मिले हो?”
‘रॉबिन बाबू? ये कौन है?’ नोबो कुमार ने हैरानी से पूछा।
‘वह एक पत्रकार है। काफी युवा है। उसने मुझे पत्र लिखकर बताया कि वह चंद्रशेखर पर शोध करने के लिए यहाँ आ रहा है। उसे चंद्रशेखर की जीवनी लिखने के लिए कोई फैलोशिप या अनुदान मिला है। खैर, वह कुछ दिन पहले आया और उसने पहले ही काफी सामग्री एकत्र कर ली है। वह इटली भी जा सकता है। वह मुझसे हर सुबह लगभग एक घंटे बात करता है और सब कुछ रिकॉर्ड कर लेता है। एक होशियार नौजवान है। मुझे वह पसंद है।’
'जहां वह अब है?'
'मुझे लगता है कि वह अपने कमरे में ही होगा। मैंने उसे भूतल पर एक कमरा दे दिया है। मुझे लगता है कि वह अगले दस दिन तक यहीं रहेगा। वह बहुत मेहनती है।'
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आपको दो मेहमानों की देखभाल करनी है! सच कहूँ तो, दोनों में से किसी की भी खास देखभाल की ज़रूरत नहीं होती। मैं रोम में रहने वाले अपने चचेरे भाई से शायद ही कभी मिल पाता हूँ; और जब मिलता भी हूँ, तो वह बहुत कम बोलता है। मैंने इतना कम बोलने वाला इंसान कभी नहीं देखा।
क्या उसने अपने पिता के बारे में कभी बात की है?
नहीं। जब चंद्रशेखर भारत लौटे, तब उनका बेटा किशोरावस्था के आखिरी दौर में था। पिता-पुत्र के बीच संबंध सुखद नहीं थे, ऐसा लगता है। मुझे लगता है

रुद्र मुझसे बात करने से बचता है क्योंकि उसे लगता है कि मैं अटपटे सवाल पूछ सकती हूँ। अजीब बात है ना, कि मैं अपने चचेरे भाई को ही नहीं जानती? उसे तो अपनी पहचान साबित करने के लिए मुझे अपना पासपोर्ट दिखाना पड़ा!
क्या यह भारतीय पासपोर्ट था?
'हां मुझे ऐसा लगता है।'
‘आपने ठीक से देखा था ना, बाबा?’
'हां, बिल्कुल। लेकिन मुझे इतनी मेहनत करने की जरूरत नहीं थी। उन्हें देखकर ही पारिवारिक समानता साफ नजर आती है।'
'वह तो सिर्फ संपत्ति में अपना हिस्सा मांगने आया है, है ना?' फेलुदा ने टिप्पणी की।
जी हां, और उसे उसका हक मिलने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। उसे तो यह भी नहीं पता था कि उसके पिता दूसरी बार घर छोड़कर चले गए थे। जब उसने रोम से मुझे पत्र लिखा, तो मैंने उसे बताया कि उसके पिता के बारे में दस साल से कोई खबर नहीं मिली है। तभी उसने आने का फैसला किया।
'क्या उसे चंद्रशेखर द्वारा लाई गई उस प्रसिद्ध पेंटिंग के बारे में कुछ भी पता है?' फेलुदा स्पष्ट रूप से अभी भी उत्सुक था।
नहीं। रुद्रशेखर एक इंजीनियर है। उसे कला के बारे में कुछ नहीं पता।
लेकिन... उस पेंटिंग में किसी और की दिलचस्पी है।
‘कौन?’ नोबो कुमार ने ऊपर देखा।
‘सोमानी नाम का एक आदमी था। बंकिम के पास उसकी जानकारी होगी। वह यूरोप के किसी व्यक्ति की ओर से काम कर रहा था—या शायद अमेरिका का?—जिसने पेंटिंग के लिए एक लाख रुपये की पेशकश की थी। सोमानी मुझे तुरंत पच्चीस हजार रुपये देने को तैयार था। उसने कहा कि अगर खरीदार संतुष्ट हो जाता है कि पेंटिंग नकली नहीं है, तो वह मुझे बाकी रकम दे देगा।’
'कब की बात है ये?'
कुछ हफ्ते पहले, रुद्र के आने से पहले, मैंने सोमानी से कहा था कि उसे रुद्र के आने तक इंतजार करना होगा, क्योंकि वही इसका असली मालिक है। मैं इसे बेच नहीं सकता था।
‘Did Somani come back?’ Feluda asked.
‘हाँ, बिल्कुल। वह तो बहुत ही दृढ़ निश्चयी व्यक्ति है। इस बार उसने रुद्र से बात की।’ ‘क्या आपको पता है कि क्या बात हुई?’
नहीं। मैं आपको बस इतना ही बता सकता हूं कि अगर रुद्र अपने पिता की कोई भी संपत्ति बेचना चाहता है, तो उसे ऐसा करने का पूरा अधिकार है।
'हां, लेकिन सभी कानूनी औपचारिकताएं पूरी होने से पहले तो नहीं?'
नहीं, उन्हें तब तक इंतजार करना ही पड़ेगा।
दोपहर के भोजन पर हमारी मुलाकात अन्य मेहमानों से हुई। रॉबिन बाबू कुछ-कुछ जाने-पहचाने से लग रहे थे। शायद मैंने उनकी तस्वीर किसी पत्रिका में देखी थी। उनकी दाढ़ी साफ थी और कद मध्यम था। उनकी आंखें बेहद चमकदार थीं। उन्होंने हमें बताया, 'ओह, मैंने चंद्रशेखर के बारे में बहुत सारी रोचक बातें पता लगाई हैं। उनके स्टूडियो में एक लकड़ी का बक्सा है, जो सबसे दिलचस्प चीजों से भरा हुआ है।'

फेलुदा ने कहा, 'मुझे यकीन है कि रुद्रशेखर की उपस्थिति से अतिरिक्त मदद मिलेगी। वह आपको इटली में चंद्रशेखर के जीवन के बारे में बता सकता है।' ‘मैं अभी तक उनसे बात नहीं कर पाई हूँ क्योंकि वे खुद बहुत व्यस्त हैं। मैं फिलहाल यह पता लगाने की कोशिश कर रही हूँ कि चंद्रशेखर के घर लौटने के बाद क्या हुआ।’
मैंने रुद्रशेखर की ओर देखा। उसने बस 'हम्म' कहा और कुछ नहीं।
शाम को हम नोबो कुमार के साथ स्थानीय प्राचीन, सुंदर टेराकोटा मंदिरों को देखने के लिए सैर पर निकले। लेकिन हम अभी आधे रास्ते ही पहुँचे थे, एक बड़े खेत से गुज़र रहे थे, तभी अचानक तूफान आ गया। हमने घर वापस भागने की कोशिश की, लेकिन मुख्य द्वार तक पहुँचने से पहले ही बारिश शुरू हो गई। बिजली कड़कने लगी और लगातार गरज सुनाई दे रही थी। जब तक हम घर में पहुँचे, हम सब पूरी तरह भीग चुके थे। आसमान से पानी की मोटी-मोटी बौछारें बरस रही थीं। लालमोहन बाबू ने कहा, 'मैंने पहले कभी ऐसी बारिश नहीं देखी। क्या इसमें कुछ नाटकीयता नहीं है?'
वह सही था। मैंने पूरी जिंदगी शहर में बिताई थी, लेकिन खुले में इतनी मूसलाधार बारिश मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि बारिश जल्दी रुकने वाली नहीं थी। और इसका मतलब था कि हम कलकत्ता वापस नहीं लौट सकते थे।
नोबो कुमार जरा भी परेशान नहीं हुए। उन्होंने हमसे कहा, 'ये अचानक आने वाले तूफान और भारी बारिश असामान्य नहीं हैं। इसका मतलब सिर्फ इतना है कि आपको रात यहीं बितानी होगी।'
‘लेकिन…’ फेलुदा ने कहना शुरू किया। नोबो कुमार ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, ‘बिल्कुल भी कोई समस्या नहीं है, मेरा विश्वास करो। इस घर में हमारे पास कम से कम दस अतिरिक्त कमरे हैं, सभी पूरी तरह से सुसज्जित हैं। और मैं तुम्हें कुछ कपड़े भी उधार दे सकता हूँ। बिल्कुल भी चिंता मत करो!’ हमें भूतल पर दो सटे हुए कमरे दिए गए। दोनों कमरे विशाल थे और उनमें एक जैसा फर्नीचर था। लालमोहन बाबू अपने विशाल पलंग पर चढ़े और बोले, 'आह... यह मुझे उस कहानी की याद दिलाता है जिसमें एक आम आदमी एक दिन के लिए सम्राट बन जाता है। अरेबियन नाइट्स की कहानी है ना?'
मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं था, लेकिन मैं समझ गया था कि उसका क्या मतलब था। दोपहर का भोजन जिन सफेद संगमरमर की थालियों में परोसा गया था, वे तो किसी राजा के लायक थीं, मैंने सोचा था। रात में, संगमरमर की थालियाँ गायब हो गईं। हमें रात का खाना शुद्ध चांदी की प्लेटों में परोसा गया।
रात के खाने के दौरान फेलुदा ने कहा, 'हमें चंद्रशेखर का स्टूडियो देखने का मौका नहीं मिला।' नोबो कुमार ने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें कल सुबह वहाँ ले चलूँगा। यह तुम्हारे कमरे के ठीक ऊपर है।'
जैसे ही हम सोने की तैयारी कर रहे थे, बारिश रुक गई। मैंने खिड़की से बाहर देखा। बादलों के टुकड़ों में से कुछ तारे झाँक रहे थे। बाहर सन्नाटे में कुछ अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था। हमारा कमरा बगीचे की ओर था। बाहर कई जुगनू भिनभिना रहे थे, और कहीं से ट्रांजिस्टर रेडियो की हल्की सी आवाज़ आ रही थी।

लालमोहन बाबू सुबह साढ़े दस बजे उठे और अपने कमरे में चले गए। उनके कमरे और हमारे कमरे के बीच एक साझा दरवाजा था, जिसे वे 'सुविधाजनक' मानते थे।
इसी दरवाजे से वह आधी रात को चुपके से अंदर आया और फेलुदा को जगाया। मैं भी कुछ ही सेकंड बाद जाग गया।
जब मैंने आंखें खोलीं तो फेलुदा पूछ रहा था, 'क्या बात है?' 'इतनी देर हो गई
— '

‘श-श-श-श! ध्यान से सुनो!’
हम दोनों ने कान खड़े कर लिए।
टैप, टैप, टैप, टैप, टैप।
आवाज ऊपर से आ रही थी। कोई ऊपर सीढ़ियों पर चल रहा था। एक पल के लिए मुझे लगा जैसे कोई क्लिक की आवाज सुनाई दी। लगभग तीन मिनट में आवाज शांत हो गई और फिर से सन्नाटा छा गया।
नोबो कुमार ने कहा था कि सैंड्रो नियोगी का स्टूडियो हमारे कमरे के ऊपर था। क्या वहां कोई था?
‘तुम दोनों यहीं रुको,’ फेलुदा ने फुसफुसाते हुए कहा, ‘मैं अभी वापस आता हूँ।’ वह नंगे पैर बाहर चला गया। लालमोहन बाबू और मैं बिस्तर पर बैठे रहे, अपनी सांस रोके हुए, जब तक कि वह पाँच मिनट में वापस नहीं आ गया। ऐसा लगा जैसे पाँच घंटे बीत गए हों। कहीं घड़ी में दो बज गए।
‘क्या आपने किसी को देखा?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘हां। मैंने उसे सीढ़ियों से नीचे आते देखा।’
'कौन था?'
‘पत्रकार। रॉबिन बाबू।’

चार
अगली सुबह, फेलुदा ने पिछली रात के अनुभव के बारे में कुछ नहीं कहा। नाश्ते के दौरान उन्होंने नोबो कुमार से बस इतना पूछा, 'क्या स्टूडियो बंद नहीं रहता?'
'हां, आमतौर पर तो ऐसा ही होता है। लेकिन आजकल हमें इसे खुला रखना पड़ता है। रॉबिन बाबू वहां काम करते हैं। रुद्रशेखर भी कभी-कभी स्टूडियो आते हैं। इसलिए अब हम इसे ताला लगाने की जहमत नहीं उठाते। चाबी बाबा के पास है।' नाश्ते के बाद वह हमें स्टूडियो ले गया। यह दूसरी मंजिल पर था। उत्तर की ओर वाली दीवार लगभग पूरी तरह से कांच की बनी थी, क्योंकि माना जाता था कि उस तरफ से आने वाली रोशनी कलाकार के लिए पेंटिंग करने के लिए सबसे अच्छी होती है।
ज़मीन पर चित्रों के ढेर लगे थे। एक कोने में सफ़ेद कैनवास बिखरे पड़े थे, साथ में रंग, ब्रश और पैलेट भी थे। खिड़की के पास एक ईज़ल रखा था। ऐसा लग रहा था मानो कलाकार बस एक मिनट के लिए ही बाहर गया हो।
फेलुदा ने कुछ रंगों और अलसी के तेल की एक बोतल की जाँच करते हुए कहा, “ऐसा लगता है कि उसने जो भी सामान इस्तेमाल किया है, वह विदेश से लाया गया है, और वे अभी भी काफी अच्छी हालत में हैं। रुद्रशेखर इन्हें बेचकर बहुत पैसा कमा सकता है। कोई भी भारतीय कलाकार इतनी अच्छी गुणवत्ता का सामान खरीदने का मौका पाकर बहुत खुश होगा।”
सबसे दूर कोने में कई चित्र टंगे हुए थे। नोबो कुमार ने उनमें से एक की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह चंद्रशेखर का आत्मचित्र है।'
तेज नैन-नक्श वाला एक आकर्षक व्यक्ति पश्चिमी पोशाक पहने कैनवास से घूर रहा था। उसके लंबे, काले बाल कंधों तक लहरा रहे थे। उसकी दाढ़ी और मूंछें बहुत करीने से कटी हुई थीं।
'हां, यही वह तस्वीर है जो लेख के साथ प्रकाशित हुई थी,' फेलुदा ने कहा।
‘हो सकता है आप सही हों,’ नोबो कुमार ने जवाब दिया। ‘बाबा ने मुझे बताया था कि भुदेव सिंह का बेटा अपने पिता के लेख के लिए तस्वीरें लेने एक दिन के लिए आया था।’
‘वह प्रसिद्ध पेंटिंग कहाँ है?’
‘इधर से।’ नोबो कुमार हमें दूर वाले कोने तक ले गए।
यीशु की तस्वीर एक सुनहरे फ्रेम में टंगी थी। उनके सिर पर कांटों का ताज था। उनकी आँखों में एक उदास दृष्टि थी। एक हाथ उनकी छाती पर रखा था। उनके सिर के चारों ओर एक प्रभामंडल था और उसके पार पेड़, पहाड़ियाँ और एक नदी थी। पहाड़ियों के पीछे आकाश की झलक दिखाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था मानो आसमान बादलों से घिरा हो और उसमें हल्की सी बिजली चमक रही हो। यह दृश्य अत्यंत प्रभावशाली था।

हम एक मिनट तक उस पेंटिंग को देखते रहे। हममें से किसी को भी उसके बारे में कुछ नहीं पता था—यहां तक कि कलाकार का नाम भी नहीं—फिर भी, उसमें एक रहस्यमय मोहक शक्ति प्रतीत होती थी।
स्टूडियो से बाहर निकलकर नीचे जाते समय फेलुदा ने पूछा, 'क्या आप हमें अपने वंश वृक्ष की एक प्रति दे सकते हैं?' उन्होंने आगे कहा, 'अनंत नाथ नियोगी से शुरू करते हुए, और हो सके तो चंद्रशेखर से संबंधित सभी महत्वपूर्ण तिथियों के साथ।'
‘ये तो आसान है। मैं बंकिम बाबू को बता देता हूँ। वो बहुत ही कुशल व्यक्ति हैं। दस मिनट में तैयार कर देंगे।’ ये मुझे बहुत अच्छा विचार लगा। मैं ये याद करने की कोशिश में काफी उलझन में पड़ रहा था कि विभिन्न नियोगी आपस में किस प्रकार संबंधित हैं। वंशावली ही सबसे अच्छा उपाय था।
‘और... एक और बात,’ फेलुदा ने कहा। ‘क्या बंकिम बाबू मुझे श्री सोमानी का पता भी दे सकते हैं, अगर उनके पास हो?’
'हाँ बिल्कुल।'
बंकिम बाबू एक अधेड़ उम्र के, हंसमुख और बुद्धिमान व्यक्ति निकले। उन्होंने कहा कि वंशावली बनाना उनके लिए कोई समस्या नहीं है, क्योंकि उन्होंने रॉबिन बाबू के लिए पहले ही एक बनवा ली थी। उन्होंने तुरंत उसकी एक प्रति और श्री सोमानी द्वारा छोड़ा गया बिजनेस कार्ड पेश किया। उस पर लिखा था: 'हीरालाल सोमानी, 23 लोटस टावर्स, अमीर अली एवेन्यू, कलकत्ता'। बंकिम बाबू ने वह चीज़ फेलुदा को सौंप दी और चुपचाप खड़े रहे। मैंने देखा कि उन्होंने बोलने के लिए अपना मुंह खोला, फिर बंद कर लिया।
‘आपके मन में क्या चल रहा है, बंकिम बाबू?’ फेलुदा मुस्कुराया।
मैंने आपके बारे में सुना है। उह... आप एक जांचकर्ता हैं, है ना?
'हाँ।'
क्या आप यहाँ दोबारा आएंगे?
‘ज़रूर, अगर ज़रूरत पड़ी तो। आप क्यों पूछ रहे हैं?’
‘नहीं, कुछ नहीं। मतलब, ठीक है। एक... छोड़ो, बाद में बात करेंगे।’ वह चला गया।
मैंने कुछ हैरानी से कहा, 'पता नहीं यह सब क्या था।' फेलुदा मुस्कुराया। उसने कहा, 'मुझे लगता है बंकिम बाबू मेरा ऑटोग्राफ चाहते थे, लेकिन पूछने में शर्म महसूस कर रहे थे।'
अब जाने का समय हो गया था। गाड़ी में बैठते हुए फेलुदा ने नोबो कुमार से कहा, 'हर चीज़ के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैंने आपके घर में जो कुछ देखा, वह वाकई बहुत रोचक था। अगर मैं कहीं और से कुछ जानकारी ले लूँ, तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?'
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।
मैं भगवानगढ़ के भुदेव सिंह से मिलना चाहूंगा। वे हमें बता पाएंगे कि यीशु का कितना महत्व है।
‘ठीक है, जब चाहें भुदेव सिंह से मिल लीजिए। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।’

'धन्यवाद। और, श्री नियोगी, मुझे लगता है कि आपके पिता बिल्कुल सही हैं। अपने कुत्ते की मौत के मामले को नज़रअंदाज़ न करें। मुझे इस पूरे मामले में सबसे जटिल रहस्य की बू आ रही है।'
‘आप सही कह रहे हैं, मुझे यह बेहद क्रूर लगा।’
नोबो कुमार और फेलुदा ने कार्डों का आदान-प्रदान किया। सामने के दरवाजे से हाथ हिलाते हुए उन्होंने कहा, 'अलविदा, अगर चाहो तो मुझे फोन कर लेना या कभी भी आ जाना। और कृपया मुझे बताना कि भुदेव सिंह तुम्हें क्या बताता है!' कलकत्ता लौटते समय लालमोहन बाबू ने कहा, 'मुझे तो पता ही नहीं था कि भगवानगढ़ नाम की कोई जगह भी है।'
फेलुदा ने जवाब दिया, 'मुझे लगता है यह मध्य प्रदेश में है, लेकिन मुझे पक्का पता नहीं है। मुझे पुष्पक ट्रेवल्स से पता करना होगा।'
‘मैंने मध्य प्रदेश को ज्यादा नहीं देखा है,’ लालमोहन बाबू ने कहा।
‘मुझे नहीं लगता कि इस बार आपको ज्यादा कुछ देखने को मिलेगा। मेरा इरादा सिर्फ भुदेव सिंह से मिलने और कुछ तथ्यों को स्पष्ट करने का है। हमें बैकुंठपुर को लंबे समय तक नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।’
‘क्यों? बैकुंठपुर में ऐसा क्या खास है?’
‘क्या तुमने रुद्रशेखर के पैर देखे?’
‘अरे नहीं!’
‘क्या आपने रॉबिन बाबू के खाने के तरीके पर ध्यान दिया?’
नहीं, बिलकुल नहीं। ऐसा क्यों होना चाहिए?
‘इसके अलावा, मैं यह जानना चाहता हूँ कि वह आदमी रात के 2 बजे स्टूडियो में क्या कर रहा था, बंकिम बाबू वास्तव में क्या कहना चाहते थे, उनके कुत्ते को क्यों मारा गया... ऐसे बहुत से सवाल हैं जिनके जवाब मिलने बाकी हैं, लालमोहन बाबू।’
मैंने कहने की हिम्मत की, 'अगर किसी के पास अच्छा रखवाली करने वाला कुत्ता है, तो चोर घर में सेंध लगाने से पहले उससे छुटकारा पाना चाहेंगे।'
‘अच्छा सवाल है। लेकिन कुत्ते की मौत 28 सितंबर को हुई थी, और आज 5 अक्टूबर है। इस पूरे समय में कोई चोरी नहीं हुई है। इसके अलावा, मुझे नहीं लगता कि ग्यारह साल का फॉक्स टेरियर एक अच्छे चौकीदार के रूप में काम आ सकता है।’ ‘मुझे बस एक ही बात का अफसोस है,’ लालमोहन बाबू ने आह भरी।
'वह क्या है?'
मुझे कला के बारे में बहुत कम जानकारी है।
'इस बात से परेशान मत होइए। फिलहाल आपको बस इतना जानना है कि अगर अतीत के किसी प्रसिद्ध कलाकार की कोई अज्ञात पेंटिंग बिक्री के लिए रखी जाए, तो वह आसानी से कुछ लाख या उससे भी अधिक मूल्य प्राप्त कर सकती है।'
'वास्तव में?'
'हाँ सच।'
'आपका मतलब है कि नियोगियों के पास वर्षों से इतनी मूल्यवान चीज है, और किसी को इसके बारे में पता ही नहीं है?'
'हां, मैं बिल्कुल यही कह रहा हूं; और इसीलिए हमें भगवानगढ़ जाना होगा।'

पाँच
भगवानगढ़ वाकई मध्य प्रदेश में ही निकला। हमारे ट्रैवल एजेंट ने बताया, ‘आपको नागपुर जाना होगा और वहां से मीटर गेज ट्रेन लेकर छिंदवाड़ा जाना होगा। भगवानगढ़ छिंदवाड़ा से 45 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है।’
फेलुदा ने तुरंत राजा भुदेव सिंह को एक टेलीग्राम भेजा, जिसमें उन्होंने उनसे मिलने की अपनी इच्छा का कारण बताया। राजा का जवाब अगले दिन आया। उन्होंने कहा, "हमारा हार्दिक स्वागत है। यदि हम उन्हें अपने आगमन की तिथि और समय बता दें, तो वे छिंदवाड़ा में हमसे मिलने के लिए एक गाड़ी भेज देंगे।"
फेलुदा ने फिर से ट्रैवल एजेंट को फोन किया। पुष्पक ट्रेवल्स के श्री चक्रवर्ती ने कहा, 'अगर आपको जल्दी पहुंचना है, तो कल सुबह नागपुर के लिए एक फ्लाइट है। यह सुबह 6:30 बजे रवाना होती है और 8:15 बजे नागपुर पहुंचती है। आप 10:30 बजे छिंदवाड़ा के लिए ट्रेन पकड़ सकते हैं और शाम 5 बजे तक वहां पहुंच सकते हैं।'
'यह तो ठीक लग रहा है, लेकिन हम वापस कैसे जाएंगे?'
“अच्छा, आप परसों पूरा दिन भगवानगढ़ में बिता सकते हैं और छिंदवाड़ा से रात भर चलने वाली ट्रेन पकड़ सकते हैं। यह आपको अगले दिन सुबह 5 बजे नागपुर पहुंचा देगी। नागपुर-कलकत्ता की फ्लाइट सुबह 8 बजे है। आप साढ़े दस बजे तक कलकत्ता वापस आ सकते हैं।”
फेलुदा ने श्री चक्रवर्ती को बुकिंग के साथ आगे बढ़ने के लिए कहा और भुदेव सिंह को एक और टेलीग्राम भेजा।
उन्होंने कहा, 'चूंकि आज हम पूरे दिन खाली हैं, तो चलिए श्री सोमानी से मिलते हैं।' पता चला कि सोमानी उपलब्ध थे और शाम 5:30 बजे हमसे मिलने के लिए तैयार थे।
हम ठीक समय पर अमीर अली एवेन्यू स्थित लोटस टावर्स में उनके फ्लैट पर पहुँच गए। एक कर्मचारी हमें उनके बैठक कक्ष में ले गया। चारों ओर सरसरी नज़र डालने पर पता चला कि उस व्यक्ति को तरह-तरह की चीज़ें इकट्ठा करने का शौक था, जिनमें से कई ज़ाहिर तौर पर महंगी थीं। लेकिन उन्हें जिस तरह से रखा गया था, उसमें कोई व्यवस्थित क्रम नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो हर वस्तु को यूँ ही इधर-उधर फेंक दिया गया हो।
हमें दस मिनट तक इंतज़ार करना पड़ा। फिर श्री सोमानी कमरे में दाखिल हुए, जो तुरंत इत्र की खुशबू से भर गया। हमारे आने से पहले ही वे नहा चुके थे। उन्होंने सफेद पतलून और सफेद कुर्ता पहना हुआ था। उनके पैरों में हल्के रंग की कोल्हापुरी चप्पलें थीं। उनके करीने से संवारे हुए बालों में कुछ सफ़ेद बाल थे, हालांकि उनकी पतली मूंछें पूरी तरह से काली थीं।

उन्होंने लालमोहन बाबू और फेलुदा को सिगरेट की पेशकश की, फिर खुद एक सिगरेट जलाई और कहा, 'जी हां, सज्जनों, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं?' ‘हमें कुछ जानकारी चाहिए,’ फेलुदा ने बात शुरू की। ‘जी?’
‘आप हाल ही में बैकुंठपुर गए थे, है ना?’
'हाँ मैंने किया।'
‘एक पेंटिंग खरीदने के लिए?’
'हाँ।'
लेकिन मालिक ने बेचने से इनकार कर दिया, क्या यह सही है?
'हाँ।'
‘क्या आप बता सकते हैं कि आपको इस पेंटिंग के बारे में कैसे पता चला?’ इस सवाल पर श्री सोमानी थोड़े सख्त हो गए। उन्होंने फेलुदा को ऐसी नज़र से देखा जैसे कह रहे हों, ‘यह तुम्हारा काम नहीं है।’ लेकिन उन्होंने शालीनता से जवाब दिया।
मुझे इसके बारे में बिल्कुल भी पता नहीं था। किसी और को पता था। मैं उसके कहने पर गया था।
'अच्छा ऐसा है।'
‘क्यों, क्या आप मेरे लिए वह पेंटिंग ला सकते हैं? लेकिन वह असली होनी चाहिए। अगर वह नकली निकली, तो आपको एक पैसा भी नहीं मिलेगा।’
‘आप कैसे पता लगाएंगे कि यह असली है या नकली?’
‘खरीददार को पता होगा। वह पिछले पैंतीस वर्षों से पेंटिंग खरीद रहा है। यकीन मानिए, उसे अपने कारोबार की पूरी जानकारी है।’
क्या वह विदेशी है?
श्री सोमानी धुएं के गुबार के बीच से फेलुदा को टकटकी लगाए देखते रहे। आखिरी सवाल पर उनका जबड़ा कस गया, लेकिन एक पल बाद ही उन्होंने हल्की सी मुस्कान बिखेरी और कहा, 'मैं यह जानकारी क्यों दूं, बताइए? क्या आप सचमुच मुझे मूर्ख समझते हैं?'
'ठीक है।'
फेलुदा उठने ही वाला था, लेकिन श्री सोमानी बोलते रहे। 'अगर आप मुझे वह पेंटिंग लाकर दे दें, तो मैं आपको कमीशन दूंगा।'
'मुझे वह सुनकर बेहद खुशी हुई।'
‘दस हजार नकद।’
और फिर आप इसे दस लाख में बेच देंगे?
इस बार श्री सोमानी ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन उनकी निगाहें नहीं हटीं। 'अगर मुझे वह पेंटिंग मिल जाए तो मैं आपके पास क्यों आऊँगा, श्री सोमानी? मैं तो सीधे खरीदार के पास जाऊँगा!' फेलुदा ने कहा।
'हां, बिल्कुल; लेकिन तभी जब आपको पता हो कि कहां जाना है।'
अगर मुझे रास्ता ढूंढना पड़े तो मैं ढूंढ लूंगा... खैर, श्रीमान सोमानी, आपके समय के लिए धन्यवाद। अब हम आपको शांति से रहने देते हैं।'
हम सब उठ खड़े हुए और सामने के दरवाजे की ओर बढ़ने लगे। 'अलविदा, श्री प्रदोष मित्तर!' श्री सोमानी ने फुसफुसाते हुए कहा, उनके लहजे से स्पष्ट था कि वे फेलुदा के नाम और पेशे दोनों से भलीभांति परिचित थे।

जब हम बाहर थे, तब लालमोहन बाबू ने पूछा, 'क्या कोई ऐसा मांसाहारी पौधा नहीं है जो देखने में काफी हानिरहित और आकर्षक लगता है, लेकिन अपने पास आने वाले सभी कीड़ों को निगल जाता है?'
'जी हां, बिल्कुल है।'
‘यह आदमी कुछ-कुछ वैसा ही था, है ना?’
घर पहुंचते ही फेलुदा ने बैकुंठपुर को फोन किया। लेकिन नोबो कुमार ने कहा कि सब ठीक है, कोई नई घटना नहीं हुई है। फेलुदा इतना चिंतित क्यों था? मुझे पूछने का मौका ही नहीं मिला क्योंकि तब तक लालमोहन बाबू हमारे बैठक कक्ष में सोफे पर आराम से बैठ चुके थे और अपने बैग से एक किताब निकाल लाए। उन्होंने उसे धड़ाम से बीच वाली मेज पर रख दिया। किताब का शीर्षक था, 'पश्चिमी कला का इतिहास'।
‘यह क्या है, लालमोहन बाबू?’ फेलुदा ने मुस्कुराते हुए पूछा।
‘यह वाकई एक बहुत उपयोगी किताब है! मैंने तय किया कि मैं खुद को अलग-थलग महसूस नहीं होने दूंगी। जब आप भुदेव सिंह से कला और कलाकारों के बारे में बात करना शुरू करेंगे, तो अब मैं भी उस बातचीत में हिस्सा ले सकूंगी।’
‘मैं समझ गया। ठीक है, आपको पूरी किताब पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। बस पुनर्जागरण काल वाला अध्याय पढ़ लीजिए।’
‘पुनर्जागरण... हाँ, यह रहा। उह... इसका वास्तव में क्या अर्थ है?’ ‘पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी। इटली में लगभग दो सौ वर्षों का पुनर्जन्म और पुनर्जागरण। इस शब्द का यही अर्थ है।’
‘पुनर्जन्म क्यों?’
क्योंकि इस दौरान प्राचीन ग्रीस और रोम की संस्कृति की विचारधारा की ओर वापसी हुई। मध्य युग में इसे दबा दिया गया था। इसीलिए इसे पुनर्जन्म कहा जाता है। इसकी शुरुआत इटली में हुई, लेकिन जल्द ही यह यूरोप के अन्य हिस्सों में फैल गई; और यह केवल कला और चित्रकला तक ही सीमित नहीं रही। इस काल में कई प्रसिद्ध लेखक, संगीतकार, वैज्ञानिक और राजनीतिज्ञ रहे— कोपरनिकस, गैलीलियो, शेक्सपियर, दा विंची, राफेल, माइकल एंजेलो। कई नई खोजें और नवाचार हुए, जिनमें प्रिंटिंग प्रेस भी शामिल है, जिसने शिक्षा और संचार को बहुत सरल बना दिया।
‘क्या आपको लगता है कि यीशु का वह चित्र किसी पुनर्जागरणकालीन कलाकार द्वारा बनाया गया था?’
'हां, इसकी काफी संभावना है। यह निश्चित रूप से उस काल से पहले चित्रित नहीं किया गया था। यदि आप मध्य युग में बनी पेंटिंग्स को देखें, तो आप पाएंगे कि सभी आकृतियाँ और वस्तुएँ कठोर और निर्जीव प्रतीत होती हैं। बाद में, पुनर्जागरण काल में, वे कहीं अधिक स्वाभाविक और सजीव हो जाती हैं।' ‘इस किताब में. . . हे भगवान, कितने सारे नाम हैं! . . . बॉटिकेली. . . जियोटो. . . मांटेग्ना. . .’
'जी हां, और आपको अकेले इटली में ही कम से कम तीस और नाम मिल जाएंगे!'
और सोचिए, इन्हीं में से किसी एक कलाकार की बनाई पेंटिंग श्री नियोगी के घर की दीवार पर टंगी है! जरा कल्पना कीजिए!

उस रात खाना खाने के बाद, फेलुदा ने नियोगी परिवार का वंश वृक्ष निकाला और उसका ध्यानपूर्वक अध्ययन करने लगा। मैंने उसके कंधे के ऊपर से झाँका। वह कुछ इस तरह दिख रहा था:

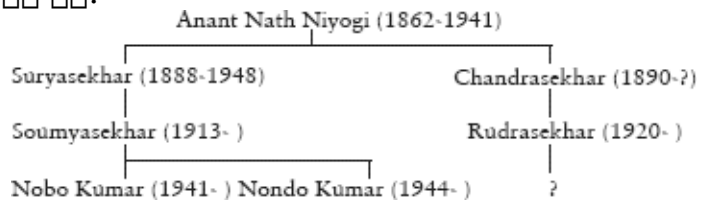

एक और कागज का टुकड़ा था। उस पर लिखा था:
चंद्रशेखर नियोगी
Born in Baikunthapur 1890
प्रेसिडेंसी कॉलेज से स्नातक की उपाधि, 1912
1914 में ललित कला अकादमी में कला का अध्ययन करने के लिए रोम की यात्रा की।
1917 में कार्ला कैसिनी से विवाह किया।
Birth of son, Rudrasekhar 1920
कार्ला की मृत्यु 1937 में हुई।
1938 में भारत लौटे
1955 में घर छोड़ दिया
वर्तमान में पता अज्ञात है।

छह
हम अगले दिन तय समय पर रवाना हुए। छिंदवाड़ा पहुँचते-पहुँचते शाम के लगभग 6 बज चुके थे। स्टेशन पर श्री नागपाल एक पुरानी शेवरले कार में हमारा इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया। हम तुरंत निकल पड़े और पौने सात बजे तक हम भगवानगढ़ पहुँच गए।
श्री नागपाल ने कहा, 'मैं आपको आपके कमरों तक ले चलूंगा। राजा आपसे 7:30 बजे मिलेंगे। मैं आकर आपको ले जाऊंगा।'
हमारे कमरे पाँच सितारा होटल के कमरों जितने ही बड़े और आलीशान निकले। ‘हे भगवान!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘मेरा कमरा यहाँ मेरे घर के बेडरूम से पाँच गुना बड़ा है। अफसोस की बात है कि हमारे पास समय नहीं है, वरना मैं बाथटब में खूब देर तक आराम से नहाता।’
श्री नागपाल ठीक समय पर पहुंचे और हमें हमारे मेज़बान से मिलवाने ले गए। भूदेव सिंह एक ढके हुए बरामदे में बेंत की कुर्सी पर बैठे थे। उनमें एक शांत गरिमा थी और वे अपनी उम्र से छोटे दिख रहे थे।
फेलुदा ने हमारा परिचय कराया। भुदेव सिंह मुस्कुराए और हमें बैठने के लिए आमंत्रित किया। कुर्सी पर बैठते ही मुझे हसनुहाना की खुशबू आई, जिससे यह संकेत मिला कि बरामदे के पीछे एक बगीचा था, लेकिन अंधेरे में मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
इसके बाद हुई बातचीत बेहद रोचक साबित हुई। लालमोहन बाबू ने अपने वादे के मुताबिक अपना योगदान देने की पूरी कोशिश की। बातचीत कुछ इस प्रकार हुई:
Bhudev: आपको मेरा लेख कैसे मिला?
फेलुदा: बहुत जानकारीपूर्ण। आपके बिना चंद्रशेखर हमारे लिए अनजान ही
रह जाते।
Bhudev: असल बात तो यह है कि हम अक्सर अपने कलाकारों को उनका हक नहीं देते। इसलिए मैंने सोचा कि मरने से पहले कुछ सार्थक कर लूँ—
आखिरकार, मैं लगभग अस्सी साल का हो चुका हूँ—और लोगों को बता
दूँ कि चंद्र कितने प्रतिभाशाली कलाकार थे। मैंने अपने बेटे को
बैकुंठपुर भेजा, और वह मुझे उनके बनाए हुए आत्मचित्र की एक
तस्वीर ले आया।
फेलुदा: आप उनसे पहली बार कब मिले थे?
Bhudev: यहां, यह सब इस डायरी में दर्ज है। मुझे देखने दीजिए... हां, वह 5 दिसंबर 1942 को मेरा चित्र बनाने के लिए यहां आए थे। मैंने उनके
बारे में भोपाल के नवाब से सुना था। चंद्र ने पहले ही उनका
चित्र बना दिया था। उनमें वाकई अद्भुत कौशल था।
Lalmohan: वाह, बहुत बढ़िया!
फेलुदा: आपके लेख में लिखा है कि उन्होंने एक इतालवी महिला से शादी की। क्या आप उनके बारे में कुछ जानते हैं?

Lalmohan: कुछ भी?
Bhudev: चंद्र ने रोम की ललित कला अकादमी में दाखिला लिया। वहीं उनकी
मुलाकात कार्ला कैसिनी से हुई। वह एक कुलीन परिवार से थीं।
उनके पिता काउंट अल्बर्टो कैसिनी थे। चंद्र और कार्ला को एक-
दूसरे से प्यार हो गया और कार्ला ने उन्हें अपने पिता से
मिलवाया। बहुत से लोगों को यह नहीं पता था कि चंद्र को आयुर्वेद
का अच्छा ज्ञान था और वह अपने साथ कई विशेष जड़ी-बूटियाँ लाए
थे। पता चला कि कार्ला के पिता गठिया से पीड़ित थे। चंद्र की दवाइयों ने उन पर चमत्कारिक असर दिखाया। इसके बाद उनके लिए
कार्ला से शादी करना आसान हो गया। उनका विवाह 1917 में हुआ।
काउंट ने उन्हें शादी के उपहार के रूप में एक पेंटिंग दी।
फेलुदा: यीशु की वह प्रसिद्ध पेंटिंग?
Lalmohan: पुनर्जागरण?
Bhudev: हां, लेकिन आप इसके बारे में कितना जानते हैं?
फेलुदा: कुछ भी नहीं। हमने इसे देखा है, बस इतना ही। हमें लगता है कि इसे
पुनर्जागरण काल के किसी कलाकार ने चित्रित किया था।
Lalmohan: (धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए) बोटिसी... दाविनसेली...
Bhudev: हाँ, आप सही कह रहे हैं। लेकिन वह कोई साधारण कलाकार नहीं था। वह
शायद पुनर्जागरण के अंतिम चरण का सबसे प्रसिद्ध कलाकार था—
टिन्टोरेटो।
Lalmohan: ओह्ह्ह्ह!!
फेलुदा: टिंटोरेटो? लेकिन क्या यह सच नहीं है कि टिंटोरेटो द्वारा पूरी
तरह से बनाई गई पेंटिंग बहुत कम हैं?
Bhudev: जी हाँ। अधिकांश प्रसिद्ध चित्रों की शुरुआत उन्होंने ही की थी
और उन्हें उनके स्टूडियो या कार्यशाला में काम करने वाले अन्य
कलाकारों ने पूरा किया था। उस दौर के कई कलाकार इसी तरह काम
करते थे। लेकिन इस विशेष चित्र में टिंटोरेटो की शैली के सभी
प्रमाण मिलते हैं। चंद्र ने इसे मुझे दिखाया था। यह सोलहवीं
शताब्दी से कैसिनी परिवार के पास था।
फेलुदा: इससे तो यह पूरी तरह से अमूल्य हो जाएगा, है ना?
Bhudev: जी हाँ। अगर नियोगी इसे बेचने का फैसला करते हैं, तो यह कहना
मुश्किल है कि उन्हें कितना मिलेगा। शायद पच्चीस लाख। हो सकता
है इससे भी ज्यादा।
Lalmohan: (तेजी से सांस लेते हुए) आआआआह!!
Bhudev: इसीलिए मैंने अपने लेख में चित्रकार का नाम नहीं लिया।
फेलुदा: फिर भी, कोई पूछताछ करने के लिए बैकुंठपुर गया।
Bhudev: कौन? क्या वह क्रिकोरियन था?
फेलुदा: नहीं! उस नाम का कोई व्यक्ति नहीं है।
Bhudev: वह एक अर्मेनियाई है। वह मेरे पास आया था। वाल्टर क्रिकोरियन।
बेहद अमीर। हांगकांग में उसका कारोबार है और वह चित्रों का
संग्रहकर्ता है। उसने कहा कि उसके पास एक असली रेम्ब्रांट के
साथ-साथ टर्नर और फ्रैगोनार्ड की भी असली पेंटिंग हैं। उसने एक

[illegible]

[illegible]: Hiralal Somani?

Bhudev: [illegible]

[illegible]: [illegible]

Bhudev: [illegible]

[illegible]: [illegible]

Bhudev: [illegible]

[illegible]: [illegible]

Bhudev: [illegible]

[illegible]: [illegible]

Bhudev: [illegible]

[illegible]: [illegible]

Bhudev: [illegible]

[illegible]: [illegible]

[illegible]

Bhudev: [illegible]

अंत में उसने अपना घर, अपना करियर, सब कुछ छोड़ दिया। हम इस बात
पर अक्सर बहस करते थे। मैं चंद्र को समझाता रहता था कि उसे हार
नहीं माननी चाहिए और जीवन से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए, उसकी
प्रतिभा इतनी महान है कि उसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।
लेकिन उसने मेरी बात नहीं सुनी।
फेलुदा: क्या वह संपर्क में रहा?
Bhudev: हां, वह मुझे कभी-कभार पत्र लिखते थे। लेकिन अब काफी समय से उनकी कोई खबर नहीं मिली है।
फेलुदा: क्या आपको याद है कि उसने आखिरी बार आपको कब पत्र लिखा था? Bhudev: रुको, ये मेरे पास कहीं होना चाहिए... आह, ये रहा। ऋषिकेश से सितंबर 1977 में लिखा गया एक पोस्टकार्ड।
फेलुदा: उन्नीस सौ सतहत्तर? यह तो मात्र पाँच साल पहले की बात है! इसका मतलब है - कानूनी तौर पर - वह अभी भी जीवित है! Bhudev: जी हाँ, बिल्कुल। सच कहूँ तो, मुझे तो यह बात कभी सूझी ही नहीं
थी!
फेलुदा: इसलिए रुद्रशेखर अपने पिता की संपत्ति पर दावा नहीं कर सकता।
कम से कम अभी तो नहीं।

अगले दिन, भूदेव सिंह ने हमें भगवानगढ़ में देखने लायक हर चीज दिखाई - भवानी मंदिर, लक्ष्मी नारायण उद्यान, पुराने शहर के खंडहर और यहां तक कि जंगल में हिरणों का एक झुंड भी।
शाम को उन्होंने हमें सीधे नागपुर ले जाने का इंतजाम किया। जब हम निकलने वाले थे, तभी श्री नागपाल वहाँ आ गए और उन्होंने फेलुदा को एक कागज का टुकड़ा दिया। उस पर अर्मेनियाई व्यक्ति का नाम और पता लिखा था।
भुदेव सिंह ने हमारी शानदार मेहमाननवाजी के लिए धन्यवाद को नजरअंदाज कर दिया। उन्होंने फेलुदा के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'श्री मित्तर, कृपया ध्यान रखें कि टिंटोरेटो की पेंटिंग गलत हाथों में न पड़ जाए।'
हम अगले दिन सुबह करीब 11 बजे घर पहुंचे। घर में कदम रखते ही फोन की घंटी बज उठी। बैकुंठपुर से नोबो कुमार का फोन था।
उन्होंने जल्दबाजी में कहा, 'तुरंत यहाँ आओ, हमें समस्या हो गई है।'

सात
हम आधे घंटे में निकल जाएंगे।
‘क्या आपको लगता है कि वह पेंटिंग चोरी हो गई है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। 'हां, मुझे इसी बात का डर है।'
'पहले मुझे उस पेंटिंग में उतनी दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन अब, उस किताब को पढ़ने और राजा से बात करने के बाद, मुझे टोंटिरेटो से व्यक्तिगत रूप से जुड़ाव महसूस हो रहा है।'
फेलुदा भौंहें चढ़ाए हुए था, वह इतना गहरे विचार में डूबा हुआ था कि उसने लालमोहन बाबू को सुधारने की कोशिश भी नहीं की।
इस बार लालमोहन बाबू के ड्राइवर ने गाड़ी तेज चलाई और हम कुछ ही घंटों में बैकुंठपुर पहुंच गए।
नियोगी परिवार में कुछ नए लोग आए थे - नोबो कुमार की पत्नी और दो बच्चे।
लेकिन दो लोग लापता थे। उनमें से एक रुद्रशेखर थे, जो उस सुबह बहुत जल्दी कलकत्ता के लिए रवाना हो गए थे।
दूसरे व्यक्ति बंकिम बाबू थे।
उनकी हत्या कर दी गई थी।
किसी ने उसके सिर पर किसी भारी वस्तु से वार किया था। उसकी मृत्यु तुरंत हो गई होगी। उसका शव स्टूडियो में एक नौकर को मिला। पुलिस सर्जन ने मृत्यु का समय सुबह 3 से 5 बजे के बीच बताया है।
नोबो कुमार ने कहा, 'मैंने पहले आपको फोन किया था, लेकिन आप घर पर नहीं थे। इसलिए मुझे पुलिस को सूचित करना पड़ा।'
‘तुमने सही किया,’ फेलुदा ने कहा। ‘लेकिन मुझे बताओ, क्या तस्वीर अभी भी यहाँ है?’
‘यही तो सबसे अजीब बात है। वैसे, कातिल कौन हो सकता है, यह आसानी से पता लगाया जा सकता है। मुझे शुरू से ही उसका व्यवहार बेहद संदिग्ध लग रहा था। उसे साफ तौर पर पैसों की जरूरत थी, लेकिन कानूनी प्रक्रिया में कम से कम छह महीने लग जाते, तो मुझे लगता है...’
नहीं। इसमें बहुत अधिक समय लग जाता। मुझे भुदेव सिंह से पता चला कि उन्होंने चंद्रशेखर से केवल पांच साल पहले ही सुना था।
'सच में? तो फिर, उस स्थिति में, उसके बेटे के पास कोई कानूनी अधिकार नहीं है।'
‘इससे वह चोरी करना बंद नहीं करेगा, है ना?’
लेकिन असली बात तो यही है! उसने तस्वीर नहीं चुराई। वह अभी भी उसी जगह पर टंगी हुई है।
‘यह तो बहुत अजीब बात है,’ फेलुदा को मानना पड़ा। ‘पुलिस क्या कहती है?’

‘वे अभी भी सवाल पूछ रहे हैं। अब सबसे ज़रूरी है हमारे दिवंगत अतिथि को ढूंढना। कल रात मैं अपने परिवार, माता-पिता, रॉबिन बाबू और नौकरों के साथ यहाँ था। मैंने रुद्रशेखर को रात के खाने पर नहीं देखा।’
मुझे रॉबिन बाबू के बारे में जानने की उत्सुकता है।
‘वह ठीक लग रहे हैं। वे आम तौर पर सुबह दो बजे तक अपने कमरे में काम करते हैं। हमारा नौकर उन्हें सुबह आठ बजे चाय लाकर देता है। रुद्रशेखर भी उसी समय उठते थे। लेकिन आज, जब रॉबिन बाबू अभी भी अपने कमरे में थे, रुद्रशेखर जा चुके थे। जाहिर तौर पर वे साढ़े छह बजे निकले। उनके साथ उनका कलाकार भी गया।’
‘कौन सा कलाकार?’
'जिस दिन आप स्टूडियो से निकले, उसी दिन रुद्रशेखर के निमंत्रण पर एक कलाकार स्टूडियो में मौजूद हर चीज का मूल्य आंकने आया था। मुझे लगता है कि वह सब कुछ बेचना चाहता था।'
'मुझे लगता है कि जाने से पहले उन्होंने आपसे बात नहीं की?'
नहीं, उसने मुझसे या किसी और से एक शब्द भी नहीं कहा। हमारे चौकीदार ने उसे जाते हुए देखा। पहले तो मुझे लगा कि वह अपने वकीलों से बात करने गया है। लेकिन अब मुझे यकीन है कि वह वापस नहीं आएगा।
क्या मैं उनका कमरा देख सकता हूँ?
'बिल्कुल। यह यहीं से होकर जाता है।'
हम भूतल पर एक कमरे में बैठे थे। हमारे दाहिनी ओर एक दरवाज़ा था जो रुद्रशेखर को दिए गए कमरे में खुलता था। वह कमरा किसी उन्नीसवीं सदी की फिल्म के दृश्य जैसा लग रहा था। पलंग, मच्छरदानी टांगने के स्टैंड, लिखने की मेज और ड्रेसिंग टेबल, सब पुराने थे, आजकल ऐसे कमरे मिलना मुश्किल है। नोबो कुमार ने हमें बताया, 'यह कमरा मूल रूप से मेरे दादाजी, सूर्यशेखर नियोगी का था। बुढ़ापे में वे सीढ़ियाँ चढ़ने में असमर्थ हो गए थे। इसलिए वे स्थायी रूप से भूतल पर ही रहते थे।'
फेलुदा ने कहा, 'बिस्तर अभी तक नहीं लगाया गया है।'
'आज सुबह से ही बहुत अफरा-तफरी मची हुई है! मुझे लगता है कि बिस्तर ठीक करने वाली नौकरानी अपना काम भूल गई है।'
‘मैं उसे दोष नहीं दूंगी। बगल वाला कमरा किसके पास है?’
‘यानी… यह बंकिम बाबू का था।’
दोनों कमरों के बीच एक साझा दरवाज़ा था, लेकिन वह बंद लग रहा था। हम सब बाहर निकले और दूसरे कमरे में दूसरे दरवाज़े से दाखिल हुए। यह कमरा ज़्यादा आबाद लग रहा था। एक रैक पर कपड़े टंगे थे, जिसके नीचे कुछ जूते और चप्पलें रखी थीं। एक कोने में मेज़ रखी थी, जिस पर किताबें, कागज़, लिखने का सामान और एक रेमिंगटन टाइपराइटर का ढेर लगा था। दीवार पर कुछ फ़्रेम वाली तस्वीरें टंगी थीं। इस कमरे में भी किसी ने बिस्तर नहीं लगाया था। फेलुदा अचानक आगे बढ़ा और बिस्तर के पास खड़ा हो गया। फिर उसने मच्छरदानी के नीचे हाथ डालकर तकिया उठाया। उसके नीचे एक छोटी नीली रंग की चलती-फिरती अलार्म घड़ी पड़ी थी।

‘अरे, मैं स्कूल में ऐसा किया करता था,’ लालमोहन बाबू ने सहजता से कहा। ‘मैं सुबह बहुत जल्दी अलार्म लगाता था, खासकर परीक्षा से पहले, और उसे अपने तकिए के नीचे रख देता था, ताकि दूसरों की नींद न टूटे।’
‘हम्म,’ फेलुदा ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा। ‘बंकिम बाबू ने अलार्म सुबह 3:30 बजे का लगाया था।’
‘साढ़े तीन बजे? इतनी जल्दी?’ नोबो कुमार आश्चर्यचकित लग रहे थे।
'हां, और शायद तभी वह स्टूडियो गया था। मुझे लगता है कि उसे किसी बात का शक था। पिछली बार जब मैं यहां आया था तो उसने मुझे इसके बारे में बताने की कोशिश की थी, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया।'
नोबो कुमार ने हमें उस स्टूडियो में ले जाने की पेशकश की जहाँ हत्या हुई थी। लेकिन इससे पहले कि हम कुछ कर पाते, उनके बच्चे कमरे में घुस आए और लालमोहन बाबू का हाथ पकड़ लिया। ‘क्या आप वही मशहूर जटायु हैं? अरे, हमने आपकी सारी किताबें पढ़ी हैं!’ वे चिल्लाए। ‘चलिए, हमें एक कहानी सुनाइए!’ वे उसे घसीटकर सामने वाले कमरे में ले आए। लालमोहन बाबू खुद को खुश होने से नहीं रोक पाए। वे मुस्कुराए और उनका चेहरा खिल उठा, मानो वे पल भर के लिए घर के उदास माहौल को भूल गए हों। लेकिन, जैसा कि बाद में पता चला, वे कहानी सुनाने में उतने माहिर नहीं थे जितने कि लिखने में। हमने उन्हें वहीं छोड़ दिया, वे कुछ वाक्य पूरे करने की कोशिश कर रहे थे कि तभी बच्चे बीच में टोकते हुए बोले, 'नहीं, नहीं, नहीं! ये तो 'द सहारा शिवर्स' से है!' या 'हम इसे जानते हैं। ये तो 'द वैम्पायर ऑफ वैंकूवर' में है!'
नोबो कुमार फेलुदा और मुझे दूसरी मंजिल पर स्थित स्टूडियो में ले गए। फेलुदा अंदर आया, लेकिन अचानक रुक गया और कमरे के बीच में रखी एक छोटी सी मेज को घूरने लगा।
‘क्या इस पर कांस्य की कोई मूर्ति नहीं थी?’ उसने पूछा। ‘घोड़े पर सवार एक आदमी की आकृति?’
'हां, आप सही कह रहे हैं।' इंस्पेक्टर मंडल उंगलियों के निशान की जांच के लिए उसे अपने साथ ले गए। उन्हें लगा कि बंकिम बाबू की हत्या में उन्हीं का इस्तेमाल किया गया था।
'अच्छा ऐसा है।'
हम तीनों धीरे-धीरे यीशु की तस्वीर की ओर बढ़े। आज उसमें एक अलग ही चमक थी। क्या उसकी सफाई हुई थी?
फेलुदा सीधे तस्वीर के पास गया और कुछ क्षणों तक उसे ध्यान से देखता रहा। फिर उसने एक बिलकुल बेतुका सवाल पूछा।
क्या पुनर्जागरण काल के दौरान इटली में हरी मक्खियाँ पाई जाती थीं?
‘इटली में हरी मक्खियाँ? आपका मतलब क्या है?’
“हां, वो छोटी हरी मक्खियां जो लैंप के आसपास भिनभिनाती हैं, खासकर भारी बारिश के बाद। मेरा मतलब वही है, श्री नियोगी। क्या वे सोलहवीं शताब्दी में वेनिस में मौजूद थीं?”
मुझे वेनिस के बारे में तो पता नहीं। लेकिन बैकुंठपुर में तो हमने उन्हें ज़रूर देखा है। अरे, कल भी—’

‘ऐसे में दो सवाल मन में आते हैं। पहला, दो छोटे कीड़े एक प्राचीन चित्र के पूरी तरह सूखे पेंट में कैसे फंस गए, और दूसरा, वे उस कमरे में कैसे घुस गए जो पूरी रात, मतलब हर रात, पूरी तरह अंधेरा होना चाहिए था?’
‘हे भगवान! आप क्या कह रहे हैं, श्रीमान मिटर?’
‘यह मूल चित्र नहीं है। मूल चित्र में यीशु के चेहरे पर दो छोटी मक्खियाँ चिपकी नहीं थीं; न ही रंग इतने चमकीले थे। यह चित्र नकल है; बेशक बहुत चतुराई से बनाया गया है, लेकिन फिर भी नकल ही है। इसे रात में मोमबत्ती की रोशनी में बनाया गया होगा, जिससे यह बात समझ में आती है कि कीड़े अंदर आकर गीले रंग में क्यों चिपक गए।’
नोबो कुमार का चेहरा पीला पड़ गया।
‘असली कहां है?’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
‘इसे हटा दिया गया है। संभवतः आज सुबह ही। और यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है कि इसे किसने लिया होगा, है ना?’

आठ
'शुभ दोपहर, श्री नियोगी।'
'शुभ दोपहर।'
रुद्रशेखर आगे बढ़ा और श्री सोमानी के सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। उनके बीच एक बड़ी, आधुनिक ऑफिस डेस्क रखी थी। कमरा वातानुकूलित था, जिससे बाहर का कोई शोर अंदर नहीं आ रहा था। शेल्फ पर रखी एक इलेक्ट्रॉनिक घड़ी बिना आवाज किए समय दिखा रही थी।
हीरालाल सोमानी ने फिर पूछा, ‘क्या आपको पेंटिंग मिल गई?’ रुद्रशेखर ने सीधा जवाब देने के बजाय एक और सवाल पूछा, ‘आप इसे किसी और के लिए खरीदना चाहते हैं, है ना?’
हीरालाल ने कोई जवाब नहीं दिया। रुद्रशेखर ने आगे कहा, 'मैं असली खरीदार का नाम और पता लेने आया हूं।'
हीरालाल की निगाहें रुद्रशेखर के चेहरे पर टिकी रहीं। उन्होंने ठंडे स्वर में कहा, 'श्री नियोगी, मैं आपसे एक बार फिर पूछता हूँ। क्या आपको पेंटिंग मिल गई?'
मुझे आपको यह बताने की कोई बाध्यता नहीं है।
‘तो फिर मैं भी आपको वह जानकारी देने के लिए बाध्य नहीं हूं जो आप चाहते हैं।’
‘Think again, Mr Somani!’
रुद्रशेखर उछलकर खड़ा हो गया। उसके हाथ में एक रिवाल्वर थी, जो सोमानी पर तनी हुई थी। 'बताइए, श्रीमान सोमानी,' उसकी सांसें तेज़-तेज़ चल रही थीं, 'मुझे जानना ज़रूरी है। मैं खरीदार से संपर्क करना चाहता हूँ। आज ही।' सोमानी झट से आगे झुका और अपने दाहिने घुटने से डेस्क के नीचे लगे एक सफेद बटन को दबाया। रुद्रशेखर के पीछे का दरवाजा तुरंत खुला और दो आदमी अंदर घुस आए।
इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, उनमें से एक ने रुद्रशेखर का दाहिना हाथ पकड़कर उससे रिवॉल्वर छीन ली। दूसरे ने उसका बायां हाथ पकड़कर उसे पीछे की ओर मोड़ दिया।
‘कोई फायदा नहीं, श्रीमान नियोगी। आप जानते हैं कि आप बच नहीं सकते। ये दोनों आदमी आपके साथ जाएंगे और आपके होटल से पेंटिंग ले आएंगे। मुझे उम्मीद है कि आप विरोध करने की मूर्खता नहीं करेंगे।’
बीस मिनट बाद, सदर स्ट्रीट स्थित एक होटल के बाहर एक टैक्सी आकर रुकी।
रुद्रशेखर, अपने दो साथियों के साथ, टैक्सी से बाहर निकला और अंदर चला गया।
ऐसा लग रहा था मानो वह अपने दो दोस्तों को अपने कमरे में ले जा रहा हो।
उनमें से एक ने अपना हाथ जेब में रखा हुआ था, लेकिन किसी को भी यह अंदाजा नहीं था कि उसने रिवाल्वर पकड़ रखी है।

वे कमरा नंबर 19 में गए। बंदूक निकाली गई। रुद्रशेखर को एहसास हुआ कि वह कुछ भी नहीं कर सकता। एक गहरी सांस लेते हुए, उसने बिस्तर पर पड़े सूटकेस को खोला और अखबार में लिपटा हुआ एक पतला, सपाट तख्ता निकाला।
जिस व्यक्ति के हाथ खाली थे, उसने उससे चित्र छीन लिया और जल्दी से उसे खोल दिया। चित्र में यीशु का शांत चेहरा उसकी ओर देख रहा था। उस व्यक्ति ने चित्र को फिर से लपेट दिया। फिर, शांत और सधे हुए अंदाज़ में, उसने अपनी जेब से एक रेशमी रुमाल निकाला और रुद्रशेखर के मुँह पर बाँध दिया। एक पल में ही रुद्रशेखर बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा था। दोनों व्यक्तियों ने उसे नायलॉन की रस्सी से बाँधा और चले गए। यह सब पाँच मिनट से भी कम समय में हुआ।
सोमानी तक पैकेट पहुँचाने में उन्हें पंद्रह मिनट और लग गए। उन्होंने पेंटिंग पर सरसरी नज़र डाली और उसे एक आदमी को वापस सौंप दिया। उन्होंने कहा, 'इसे ठीक से पैक करो।' फिर वे दूसरे आदमी की ओर मुड़े।
‘मुझे एक अत्यावश्यक संदेश भेजना है। तुरंत पार्क स्ट्रीट डाकघर जाओ और इसे अभी भेज दो,’ उसने निर्देश देते हुए कागज के एक पन्ने पर जल्दी से लिखा। उस पर लिखा था:
श्री वाल्टर क्रिकोरियन
क्रिकोरियन एंटरप्राइजेज
14 हेनेसी स्ट्रीट
हांगकांग
शनिवार, 9 अक्टूबर को आगमन। — सोमानी

नौ
इंस्पेक्टर मोंडोल शाम को आए—एक दुबले-पतले, फुर्तीले और कुशल व्यक्ति।
पता चला कि उन्होंने फेलुदा के बारे में सुना था।
‘आपने खड़गपुर में हुए उस दोहरे हत्याकांड का मामला सुलझाया था, है ना? 1978 में?’ उन्होंने पूछा।
मुझे वह मामला अच्छी तरह याद है। एक गुंडे को जुड़वां भाइयों में से एक को मारने के लिए किराए पर लिया गया था। वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था, इसलिए उसने दोनों को मार डाला। इस मामले को सुलझाने के बाद फेलुदा का नाम काफी मशहूर हो गया।
‘जी हां,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘इस मामले के बारे में आपकी क्या राय है?’ 'यह कहना मुश्किल है। जैसा कि आप जानते हैं, मुख्य संदिग्ध फरार हो गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसने ही यह किया है, लेकिन मुझे अभी भी उसके मकसद पर संदेह है।'
क्या आपको पता है कि वह व्यक्ति एक अत्यंत मूल्यवान वस्तु लेकर चला गया? ‘क्या! अरे, इससे पहले किसी ने इसका जिक्र क्यों नहीं किया!’
‘खैर, श्री नियोगी को आपके जाने के बाद इसका एहसास हुआ। उह... इस खोज में मेरा भी कुछ हाथ था।’
मुझे इस बात पर यकीन हो सकता है। वह क्या था?
‘एक पेंटिंग। यह स्टूडियो में थी। शायद बंकिम बाबू ने उस आदमी को रंगे हाथों पकड़ लिया।’
'हां, इससे उसे निश्चित रूप से एक मजबूत मकसद मिल जाएगा।'
‘क्या आपने पत्रकार से पूछताछ की है?’
जी हां, बिल्कुल। सच कहूं तो, मुझे यह बात बेहद अजीब लगी कि दो बिल्कुल अजनबी लोग एक ही घर में मेहमान बनकर रह रहे थे। लेकिन रॉबिन बाबू तो एकदम सीधे-सादे लग रहे थे। इसके अलावा, हमें उस कांस्य प्रतिमा पर कुछ उंगलियों के निशान मिले थे। वे उनके निशानों से मेल नहीं खाते थे।
‘क्या आपने रुद्रशेखर की टैक्सी का पता लगाने की कोशिश की? डब्ल्यूबीटी 4122?’
वाह, कमाल है! आपकी याददाश्त तो वाकई कमाल की है! जी हां, हमें टैक्सी मिल गई। वही टैक्सी रुद्रशेखर को यहां से सदर स्ट्रीट के एक होटल तक ले गई थी। लेकिन वो वहां नहीं मिला। हम दूसरे होटलों में भी पूछताछ कर रहे हैं, लेकिन अभी तक कोई कामयाबी नहीं मिली है। अगर वो चोरी का सामान बेचना चाहता है, तो वो शायद कलकत्ता में ही बेचेगा, है ना?
नहीं, इस बारे में पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता।
‘क्यों नहीं? आपका मतलब है कि वह शहर छोड़कर जा सकता है?’
वह देश छोड़कर भी जा सकता है।

‘तुम ऐसा नहीं कह सकते—’
मुझे लगता है कि आज हांगकांग के लिए एक फ्लाइट है।
'हांगकांग? अगर वह हांगकांग गया तो मामला इंटरपोल के हाथ में चला जाएगा। अगर वह देश छोड़कर चला गया तो मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा!'
मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं है कि वह वहीं गया है। लेकिन अगर आप मदद के लिए कुछ नहीं कर सकते, तो भी मुझे कम से कम उसे पकड़ने की कोशिश तो करनी ही होगी।'
‘आप हांगकांग जाएंगे?’ नोबो कुमार अपनी हैरानी छिपा नहीं पाए।
मुझे पहले कुछ पूछताछ करनी होगी। उसके बाद मैं फैसला करूंगा।
“अच्छा, अगर आप जाने का फैसला करें तो मुझे बता देना। मैं वहाँ एक बंगाली व्यापारी को जानता हूँ। पूर्णेंदु पाल। हम दोनों कॉलेज में साथ पढ़ते थे। वह भारतीय हस्तशिल्प की दुकान चलाते हैं। मुझे लगता है कि उनका कारोबार अच्छा चल रहा है।”
‘ठीक है। मैं आपसे उसका पता ले लूंगा।’
मैं उसे एयरपोर्ट पर आपसे मिलने के लिए बुला लूंगा। जरूरत पड़ने पर आप उसके फ्लैट में भी रुक सकते हैं।
इंस्पेक्टर मोंडोल उठे। उन्होंने कहा, 'शुभकामनाएं! मैं आपको अपडेट देता रहूंगा।'
वह चला गया। हम अपने कमरे में लौट आए।
‘अच्छा हुआ,’ लालमोहन बाबू ने कहा, ‘आखिरकार हमें अपने पासपोर्ट इस्तेमाल करने का मौका मिलेगा!’
दो साल पहले, बंबई में एक अरब नागरिक की हत्या कर दी गई थी। फेलुदा को उसके दोस्त, इंस्पेक्टर पटवर्धन ने बुलाया था। ऐसा लगने लगा था कि हमें जांच के लिए अबू धाबी जाना पड़ेगा। इसलिए हमने अपने पासपोर्ट बनवा लिए और जाने के लिए पूरी तरह तैयार थे, तभी खबर आई कि अपराधी ने आत्मसमर्पण कर दिया है। लालमोहन बाबू बेहद निराश थे। उन्होंने विलाप करते हुए कहा, “हम विदेश जाने के बहुत करीब थे, तपेश भाई! हम काठमांडू जा चुके हैं, मुझे पता है, और बेशक नेपाल एक विदेशी देश है। लेकिन अपने पासपोर्ट से कहीं यात्रा करना... कुछ अलग ही बात है, है ना?”
इस बार शायद कुछ खास हो जाए। उत्साहित दिखते हुए लालमोहन बाबू ने हांगकांग में अपराध दर पर कुछ टिप्पणियां करना शुरू किया, लेकिन दरवाजे के ठीक बाहर हल्की खांसी की आवाज से उनकी बात अधूरी रह गई।
‘क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?’ पत्रकार रॉबिन चौधरी की आवाज सुनाई दी।
'जी हां, कृपया ऐसा करें,' फेलुदा ने कहा।
रॉबिन बाबू अंदर आए। एक बार फिर, उन्हें देखकर मुझे लगा कि मैंने उन्हें पहले कहीं देखा है। लेकिन लाख कोशिश करने पर भी मुझे याद नहीं आ रहा था कि कहाँ।
'बैठ जाइए,' फेलुदा ने उसे एक कुर्सी की पेशकश की।
‘मुझे लगता है कि आप एक जांचकर्ता हैं?’ उसने बैठते हुए पूछा।
'हां, यही मेरा पेशा है।'

‘जीवनीकार का काम कभी-कभी जासूस के काम जैसा हो सकता है। नई जानकारियाँ, नए सुरागों की तरह, अक्सर घटनाओं पर एक अलग रोशनी डालती हैं।’
‘क्या आपको चंद्रशेखर के बारे में कुछ नया पता चला?’
‘देखो, मैंने स्टूडियो से दो बक्से लिए थे। दोनों पत्रों, कानूनी दस्तावेजों, पुराने बिलों और कैटलॉग से भरे हुए थे। लेकिन, इन्हीं के बीच मुझे यह प्रेस कटिंग मिली। देखो!’
उसने एक पुराने और पीले अखबार का टुकड़ा आगे बढ़ाया। उस पर कुछ पंक्तियाँ हाइलाइट की हुई थीं। उसमें यह लिखा था:
उनकी पत्नी विटोरिया और पुत्र राजशेखर ने गहरे शोक के साथ अपने रुद्रशेखर नियोगी के निधन की सूचना दी। रोम, 27 जुलाई, 1955
‘अरे वाह, यह तो इतालवी भाषा में लिखा है!’ फेलुदा ने हैरानी से कहा।
'हां, लेकिन मैंने शब्दकोश देखकर इसका अर्थ समझा। इसका अर्थ यह है, "पत्नी विटोरिया और पुत्र राजशेखर, रुद्रशेखर नियोगी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं।"'
‘क्या मतलब, ये तो उनकी मृत्यु की घोषणा है?’ फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। ‘क्या! रुद्रशेखर मर गया?’ लालमोहन बाबू आश्चर्य से उछल पड़े।
'ऐसा प्रतीत होता है। और उनकी मृत्यु 1955 में हुई थी। इससे यह भी पता चलता है कि उन्होंने शादी की थी और उनका एक बेटा था जिसका नाम राजशेखर था।'
हे भगवान! वह दूसरा आदमी कितना दुष्ट होगा! मुझे शक तो था, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि हमें इतने अकाट्य सबूत मिलेंगे। आपको यह कब मिला?
‘सिर्फ आज दोपहर को।’
‘कितनी अफसोस की बात है! काश आपको यह पहले मिल जाता…’
'हां, मुझे पता है। उसका व्यवहार वाकई अजीब था, है ना? हर बार जब मैंने उससे कोई सवाल पूछा, तो उसने या तो जवाब ही नहीं दिया, या गलत जवाब दिया। इसलिए मैंने उससे बात करवाने की कोशिश करना ही बंद कर दिया था।'
खैर, फिलहाल इसे अपने तक ही रखें। हमें उस आदमी को ढूंढना है। आपने बहुत मदद की है। बहुत-बहुत धन्यवाद।
रॉबिन बाबू मुस्कुराए और बाहर चले गए। हाँ, उन्होंने हमें एक नया सुराग दिया था। लेकिन... मुझे अब भी उनके बारे में अजीब सी बेचैनी क्यों हो रही थी? और उनकी कमीज़ के एक तरफ खून के धब्बे क्यों थे?
मुझे इस बारे में फेलुदा को बताना पड़ा। लालमोहन बाबू ने भी दाग देखे थे। उन्होंने कहा, 'यह बेहद संदिग्ध है!'
फेलुदा गंभीर दिख रहा था। उसने बस इतना कहा, 'हां, मैंने भी इसे देखा था।' हम शाम करीब 7 बजे बैकुंठपुर से रवाना हुए। हमारे जाने से ठीक पहले नोबो कुमार ने कुछ ऐसा किया जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी। उन्होंने फेलुदा के हाथों में एक सफेद लिफाफा थमाते हुए कहा, 'कृपया इसे ले लीजिए, खासकर अगर आप हांगकांग जाते हैं। इसे अग्रिम भुगतान समझिए। आखिर आप यह सब हमारे परिवार के लिए कर रहे हैं। यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिए।'
'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'

‘मैं कल पूर्णेंदु को तार भेज दूंगा। अगर आप जाने का फैसला करते हैं, तो बस इस पते पर एक टेलीग्राम भेज देना। वह सब कुछ संभाल लेंगे।’ नोबो कुमार ने फेलुदा को एक कागज का टुकड़ा थमा दिया।
लिफाफे में पांच हजार रुपये का चेक था। लालमोहन बाबू ने कार में पूछा, 'आप उस धोखेबाज को कैसे पकड़ेंगे?'
'यह बहुत मुश्किल होने वाला है, खासकर अगर वह देश छोड़कर चला गया हो।' ‘हमें कैसे पता चलेगा कि उसने ऐसा किया है या नहीं?’
‘हम ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि वह जाहिर तौर पर किसी दूसरे नाम और दूसरे पासपोर्ट से यात्रा करेगा। उसने नोबो कुमार के पिता को जो पासपोर्ट दिखाया था, वह निस्संदेह फर्जी था। कमजोर नजर वाले किसी बूढ़े आदमी को धोखा देना आसान रहा होगा।’
'तो फिर हम क्या करें?'
“खैर, जहाँ तक मुझे लगता है, मिस्टर फेक को अर्मेनियाई खरीदार का नाम और पता जानने के लिए सोमानी से संपर्क करना होगा। सोमानी के बारे में मैंने जो कुछ देखा और सुना है, उससे यही लगता है कि वह कभी भी ये जानकारी किसी और को नहीं देगा। मुझे लगता है कि वह किसी तरह रुद्रशेखर से पेंटिंग लेने की कोशिश करेगा और खुद हांगकांग जाएगा।”
‘ऐसे में हमें हांगकांग जाने वाली उड़ानों पर सोमानी का नाम ढूंढना होगा!’ 'हां, हमारा जाना इस बात पर निर्भर करेगा कि हमें यात्रियों की सूची में उसका नाम मिलता है या नहीं।'
लालमोहन बाबू ने झट से अपनी निगाहें आसमान की ओर उठाईं। मैं समझ गया कि वह विदेश यात्रा के लिए मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे।
कुछ देर बाद उन्होंने कहा, 'मेरा कहना है, क्या आपको लगता है कि हमें चीनी भाषा सीखनी पड़ सकती है?'
‘चीनी? क्या आपको पता है कि चीनी वर्णमाला में कितने अक्षर होते हैं?’ नहीं। कितने?
'दस हजार। जब तक आप अपनी जीभ की प्लास्टिक सर्जरी नहीं करवा लेते, तब तक आप वह भाषा कभी नहीं बोल पाएंगे।'
'ओह, मैं समझा।'
फेलुदा अगली सुबह काम पर लग गया। कलकत्ता से हांगकांग के लिए केवल एयर इंडिया और थाई एयरवेज की उड़ानें थीं। एयर इंडिया की उड़ान हर मंगलवार को होती थी; थाई एयरवेज की सप्ताह में तीन उड़ानें थीं—बुधवार, शुक्रवार और शनिवार को—लेकिन केवल बैंकॉक तक। हांगकांग जाने के लिए दूसरे विमान में बदलना पड़ता था।
आज शनिवार था, इसलिए फेलुदा ने थाई एयरवेज को फोन किया। उन्होंने पांच मिनट में अपनी यात्री सूची देख ली।
हीरालाल सोमानी उस दिन सुबह हांगकांग के लिए रवाना हुए थे.
हमें जो सबसे पहली उड़ान मिल सकती थी, वह मंगलवार को थी, तब तक सोमानी निस्संदेह वह पेंटिंग अर्मेनियाई व्यक्ति को सौंप चुका होगा।
क्या उसका पीछा करने का कोई फायदा था?

हम चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे। फिर लालमोहन बाबू ने अपनी जेब से एक छोटी नोटबुक और कलम निकाली और उसमें कुछ लिखने लगे। मैं हैरानी से देखता रहा और फेलुदा मुस्कुराते हुए, जब तक कि उन्होंने लिखना खत्म नहीं किया और ऊपर देखा। ‘एक सौ छप्पन,’ उन्होंने अपनी नोटबुक रखते हुए कहा। ‘एक, पाँच और छह जोड़ो। बारह होता है। दो और एक जोड़ो। तीन होता है। अच्छा, बात पक्की हो गई। टिंटोरेटो के नाम का योग तीन होता है। मेरा मतलब है, अगर आप अक्षरों को अंकों से बदल दें।’
‘तुम क्या बात कर रहे हो?’ मैंने और भी हैरान होकर पूछा। ‘संख्याशास्त्र, मेरे प्यारे। ‘T’ वर्णमाला का बीसवाँ अक्षर है, ‘i’ नौवाँ... और इसी तरह आगे। अगर इन सबको जोड़ो तो 156 आता है, जिससे अंत में तीन बनता है। अब, अगर ऐसा है और मैं तुम्हारे साथ हूँ—क्योंकि माना जाता है कि तीन मेरे लिए सौभाग्य लाता है—तो हमारा मिशन ज़रूर सफल होगा!’
‘शाबाश, लालमोहन बाबू!’ फेलुदा ने उसकी पीठ थपथपाई। ‘मैंने हांगकांग की यात्रा को महत्वपूर्ण समझा था, लेकिन जिस तरह से आपने अभी इसके लिए पर्याप्त औचित्य प्रदान किया, वैसा मैं कभी नहीं कर सकता था!’

दस
हमने एयर इंडिया की फ्लाइट नंबर 316 से हांगकांग जाने के लिए टिकट बुक कराया था। हम इससे पहले बोइंग 707 और 737 में सफर कर चुके थे। लेकिन जंबो जेट में यह हमारी पहली यात्रा थी।
जैसे ही हम विमान में चढ़े, यह देखना असंभव लग रहा था कि इतना विशाल विमान वास्तव में जमीन से ऊपर कैसे उठेगा।
‘हे भगवान! इतने सारे लोग!’ लालमोहन बाबू ने चारों ओर देखते हुए कहा। ‘सिर्फ इकोनॉमी क्लास में बैठे ये सारे यात्री ही नेताजी इंडोर स्टेडियम को भर देंगे!’
मुझे यह अतिशयोक्तिपूर्ण लगा, लेकिन निश्चित रूप से एक मध्यम आकार के सिनेमा हॉल की बालकनी को भरने के लिए पर्याप्त लोग मौजूद थे।
फेलुदा ने पूर्णेंदु पाल को पहले ही तार भेज दिया था। हमें अगली सुबह 7.45 बजे हांगकांग पहुंचना था।
फेलुदा की आदत थी कि वह जिस भी नई जगह घूमने जाता, उसके बारे में कुछ पढ़- पढ़ लेता था। कल वह एक किताबों की दुकान पर गया और हांगकांग पर एक किताब खरीदी। मैंने बस सरसरी नज़र डाली, लेकिन चमकदार तस्वीरों में जो देखा, उससे मुझे यकीन हो गया कि हांगकांग जैसा जीवंत और रंगीन शहर शायद ही कहीं और हो। लालमोहन बाबू बेहद उत्साहित थे, लेकिन उन्हें यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि वहां क्या होने वाला है।
‘क्या हमें चीन की दीवार देखने को मिलेगी?’ उसने मासूमियत से पूछा। फेलुदा को समझाना पड़ा, 'चीन की दीवार पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना में, बीजिंग के पास स्थित है। हांगकांग बीजिंग से कम से कम एक हजार मील दूर है।' हमारा विमान समय पर रवाना हुआ। मैंने देखा कि यह कितनी सुगमता से उड़ा, खासकर इसलिए क्योंकि बाहर मौसम सुहाना था। यह आधी रात को बैंकॉक पहुँचा; लेकिन हांगकांग जाने वाले यात्रियों को विमान से उतरने की अनुमति नहीं थी। इसलिए मैं तुरंत वापस सो गया।
जब मैं सुबह उठा, तो मैंने देखा कि हम समुद्र के ऊपर से उड़ रहे थे। धीरे- धीरे पानी में छोटे-छोटे द्वीप दिखाई देने लगे, जो विशाल कछुओं की पीठ की तरह उभरे हुए थे। जैसे-जैसे विमान नीचे उतरने लगा, ये द्वीप बड़े होते गए, और मुझे एहसास हुआ कि उनमें से कई वास्तव में पानी में डूबे हुए पहाड़ों की चोटियाँ थीं।
कुछ ही देर में हम असली पहाड़ों के ऊपर से उड़ रहे थे। पहाड़ों पर हरी-भरी पत्तियों के बीच सफेद बिंदु दिखाई दे रहे थे, जो बाद में विशाल ऊंची इमारतें निकलीं, जो सभी पहाड़ियों के करीब बनी हुई थीं। वे सूरज की रोशनी में चमक रही थीं।

'हे भगवान! यह तो किसी फिल्म की कहानी जैसा लग रहा है! लेकिन यह अर्मेनियाई व्यक्ति कहाँ रहता है?'
मेरे पास उनके कार्यालय का पता है।
‘मैं समझ गया। क्या सोमानी कलकत्ता से हैं?’
'हां। वह पिछले शनिवार को हांगकांग पहुंचे थे। संभावना है कि उन्होंने वह पेंटिंग पहले ही अर्मेनियाई व्यक्ति को बेच दी होगी।'
लेकिन ये तो बहुत बुरा हुआ! अब तुम क्या करोगे?
'हम बस इतना ही कर सकते हैं कि खरीदार से मिलें और उसे स्थिति समझाएं। उसे यह एहसास दिलाना होगा कि चोरी की वस्तु को अपने पास रखना उसके लिए सुरक्षित नहीं है।'
श्री पाल ने चिंतित भाव से कहा, 'हम्म।'
लालमोहन बाबू भी सोच में डूबे हुए लग रहे थे।
मैंने फुसफुसाते हुए पूछा, 'क्या बात है?'
‘क्या... क्या कोई कह सकता है कि हांगकांग इंग्लैंड जैसा है?’
नहीं, आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? इंग्लैंड पश्चिम में है। यह सुदूर पूर्व है।
फेलुदा के तेज़ कानों ने हमारी बातचीत को अनसुना नहीं किया। उन्होंने बिना सिर घुमाए कहा, 'चिंता मत करो, लालमोहन बाबू। अपने घर वालों को बता देना कि हांगकांग को पूरब का लंदन भी कहा जाता है। मुझे यकीन है कि वे काफी प्रभावित होंगे।'
‘पूर्व का लंदन? ओह अच्छा। पूर्व का लंदन... आह, वास्तव में बहुत अच्छा...’ जब वह कुछ बुदबुदा रहा था, तभी अचानक हमारी कार एक बड़ी सुरंग में घुस गई। दोनों ओर रोशनी की कतारें थीं, जिनसे अंदर नारंगी रंग की रोशनी फैल रही थी। श्री पाल ने बताया कि हम एक पानी के नीचे बनी सुरंग से गुजर रहे हैं और हांगकांग शहर में निकलेंगे।
‘इतना खूबसूरत शहर है, लेकिन इसका नाम काली खांसी जैसा क्यों लगता है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘क्या आप जानते हैं कि हांगकांग का क्या मतलब है?’ श्री पाल ने पूछा। ‘सुगंधित बंदरगाह,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। उसने यह बात कल खरीदी गई किताब से ही सीखी होगी।
कुछ मिनट बाद हम सुरंग से बाहर निकले। एक तरफ पूरा बंदरगाह फैला हुआ था, जिसमें हर आकार और प्रकार के जहाजों और नावों का विशाल संग्रह था। उसके पीछे कौलून था, जिसे हम अभी-अभी छोड़कर आए थे।
हमारे बाईं ओर अनगिनत गगनचुंबी इमारतें थीं। कुछ दफ्तर थे, कुछ होटल। हर इमारत के भूतल पर दुकानें थीं, जो फर्श से छत तक सबसे लुभावनी चीज़ों से भरी हुई थीं। मुझे बाद में एहसास हुआ कि पूरा शहर एक विशाल डिपार्टमेंटल स्टोर जैसा था। ऐसा लगता था मानो हांगकांग में ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जो न मिल सके।
थोड़ी देर बाद, हम बाईं ओर मुड़े और एक मुख्य सड़क पर आ गए। मैंने पहले कभी ऐसा नज़ारा नहीं देखा था। फुटपाथ पर लोगों की भीड़ उमड़ रही थी। सड़क बसों, टैक्सियों, निजी कारों और डबल-डेकर ट्रामों से भरी हुई थी। सड़क के दोनों

ओर दुकानें थीं। उनके साइनबोर्ड इतने पास-पास लगे थे कि आसमान दिखना मुश्किल था। चूंकि चीनी भाषा खड़ी लिखी जाती है, इसलिए सभी साइनबोर्ड एक सीधी रेखा में लगे थे।
ट्रैफ़िक में हमारी कार धीरे-धीरे चल रही थी, जिससे हमें चारों ओर का नज़ारा देखने का मौका मिल रहा था। मैंने कलकत्ता की भीड़-भाड़ वाली सड़कें कई बार देखी थीं, लेकिन वहाँ हर कोई धीरे-धीरे चलता था, मानो उनके पास दुनिया का सारा समय हो। यहाँ, हर कोई जल्दी में था, जितनी जल्दी हो सके आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था। उनमें से ज़्यादातर चीनी थे। लेकिन पश्चिमी देशों के भी कुछ लोग थे। जिस तरह से वे अपने कैमरे पकड़े हुए थे और उत्सुकता भरी नज़रें इधर-उधर घुमा रहे थे, उससे आसानी से पता चल रहा था कि वे पर्यटक थे।
आखिरकार, हम मुख्य सड़क से बाहर निकले और पैटरसन स्ट्रीट नामक एक अपेक्षाकृत शांत इलाके में पहुँच गए। यहीं पर श्री पाल एक बत्तीस मंजिला इमारत में एक फ्लैट में रहते थे। उनका फ्लैट सातवीं मंजिल पर था।
जैसे ही हम बाहर निकल रहे थे, एक काली कार तेज़ी से हमारे पास से गुज़री और कोने से मुड़कर गायब हो गई। मैंने देखा कि फेलुदा एकदम सहम गया। वह कार कुछ देर से हमारे पीछे थी, लेकिन क्या वह जानबूझकर हमारा पीछा कर रही थी? वैसे भी हम कुछ कर नहीं सकते थे। इसलिए हम मिस्टर पाल के पीछे-पीछे अंदर चले गए। श्री पाल ने हमें अपने बैठक कक्ष में ले जाते हुए कहा, 'आराम से बैठिए। मेरी पत्नी और बच्चे बाहर गए हुए हैं—मैं उन्हें कुछ ही हफ्ते पहले कलकत्ता वापस ले गया था, अपने भतीजे की शादी में शामिल होने के लिए—इसलिए अगर मेज़बान के तौर पर मेरी ज़िम्मेदारियों में कोई कमी रह जाए तो मुझे माफ़ कर दीजिएगा। आप क्या पीना चाहेंगे?'
मुझे लगता है चाय सबसे अच्छी रहेगी, धन्यवाद।
‘आपको टी बैग्स से कोई आपत्ति तो नहीं होगी?’
'नही बिल्कुल नही।'
श्री पाल चाय बनाने चले गए। लालमोहन बाबू खिड़की के पास जाकर नज़ारा देखने लगे। कमरे में एक टेलीविजन और एक वीडियो प्लेयर था। एक शेल्फ पर वीडियो कैसेटों के ढेर लगे थे, जिनमें से ज़्यादातर हिंदी फिल्मों की थीं। इनके बगल में एक छोटी सी मेज पर फिल्मी पत्रिकाएँ बिखरी पड़ी थीं। फेलुदा ने उनमें से कुछ पत्रिकाएँ उठाईं और उन्हें पलटने लगे। मैंने इसी मौके का फायदा उठाकर उनसे पूछा, 'कार में कौन था, फेलुदा?'
'जिस आदमी की हमें तलाश है।'
‘What! Somani?’
'हाँ।'
उन्हें हमारे आने की जानकारी कैसे मिली?
'बहुत आसान है। उसने बिल्कुल वही किया जो हमने किया था - यात्रियों की सूची देखी। वह हवाई अड्डे पर रहा होगा और वहीं से हमारा पीछा किया होगा।' लालमोहन बाबू खिड़की से वापस आए। उन्होंने पूछा, 'अगर उसने पेंटिंग बेच ही दी है, तो उसे हममें दिलचस्पी क्यों होगी?'
‘मैं भी यही जानना चाहता हूँ!’ फेलुदा ने कहा।

श्री पाल चाय लेकर आए। उन्होंने ट्रे नीचे रखी, देखा कि फेलुदा क्या पढ़ रहा है और हंस पड़े। 'तुम इन पुरानी पत्रिकाओं के साथ क्या कर रहे हो?'
‘ओह, मैं बस इन्हें सरसरी तौर पर देख रही थी। देखिए, क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं स्क्रीन वर्ल्ड का यह अंक अपने पास रख लूँ? यह एक साल पुराना है।’ नहीं, बिलकुल नहीं। मैं खुद कभी उन्हें नहीं देखता। मेरी पत्नी को हिंदी फिल्मों में बेहद दिलचस्पी है।
'धन्यवाद। टॉपशे, जाओ और यह पत्रिका मेरे बैग में रख दो। श्रीमान पाल, यहाँ कार्यालय कब खुलते हैं?'
‘वे लगभग दस मिनट में खुल जाएंगे। आप अपने अर्मेनियाई दोस्त को फोन करना चाहते हैं, है ना? क्या आपके पास उसका नंबर है?’
‘हां,’ फेलुदा ने अपनी नोटबुक निकाली, ‘यह 5311686 है।’
‘हम्म। ये तो हांगकांग का नंबर है। उनका दफ्तर कहाँ है?’
‘हेनेसी स्ट्रीट। नंबर 14।’
‘ठीक है। मुझे लगता है कि आप उसे दस बजे के बाद जल्द ही पा लेंगे।’ 'धन्यवाद। बताइए, हमने किस होटल में बुकिंग कराई है?'
‘पर्ल होटल। कार से जाने पर दस मिनट से भी कम समय लगेगा। लेकिन आपको होटल पहुँचने की इतनी जल्दी क्यों है? मेरे साथ दोपहर का भोजन क्यों नहीं करते? सड़क के ठीक नीचे एक बहुत अच्छा कैंटोनीज़ रेस्टोरेंट है। अगर आज आपका मिशन सफल रहा, तो कल मैं आपको कौलून के एक रेस्टोरेंट में ले जाऊँगा और आपको एक ऐसी चीज़ से परिचित कराऊँगा जो आपने पहले कभी नहीं खाई होगी!’
‘यह क्या है?’ लालमोहन बाबू ने थोड़ी झिझकते हुए पूछा। ‘मैंने सुना है कि चीनी लोग तिलचट्टे खाते हैं।’
‘और भी बहुत सी चीजें, लालमोहन बाबू,’ फेलुदा ने उनसे कहा। ‘शार्क के पंख, बंदर का दिमाग, और कभी-कभी तो कुत्ते का मांस भी।’
'नहीं, आपको जो स्वाद मिलेगा वह बिल्कुल अलग होगा, मेरा मतलब है तला हुआ सांप,' श्री पाल ने मुस्कुराते हुए कहा।
‘सांप?’ लालमोहन बाबू ने हांफते हुए कहा।
'हां। आपको सांप का सूप, सांप का मांस, तला हुआ सांप, सब कुछ मिल जाएगा।' 'इसका स्वाद कैसा है?'
‘स्वादिष्ट। आपको इसे जरूर आजमाना चाहिए।’
‘अह... बहुत अच्छा,’ लालमोहन बाबू ने स्पष्ट रूप से उत्साहहीनता के साथ उत्तर दिया।
फेलुदा उठे। 'अगर आपको कोई आपत्ति न हो, श्रीमान पाल, तो क्या मैं आपका फोन इस्तेमाल कर सकता हूँ?'
'हाँ बिल्कुल।'
फेलुदा ने क्रिकोरियन का नंबर डायल किया।
‘क्या मैं श्री क्रिकोरियन से बात कर सकता हूँ?… क्या वे शहर से बाहर गए थे? कब?… क्या वे पिछले शुक्रवार को वापस आ जाएँगे? और वे आज शाम को लौट आएँगे? धन्यवाद।’
फेलुदा ने रिसीवर वापस रख दिया और हमारी तरफ देखा।

श्री पाल ने धीरे से कहा, 'इसका मतलब केवल यही हो सकता है कि सोमानी के पास अभी भी वह पेंटिंग है।'
'हां, ऐसा ही लगता है। अब मुझे वाकई खुशी है कि हम यहां आए।'

ग्यारह
हमने युंग की रेस्टोरेंट में दोपहर का भोजन किया। खाना बहुत ही स्वादिष्ट था।
श्री पाल ने कहा, 'आपको तीन बजे से पहले होटल में चेक-इन करने की ज़रूरत नहीं है। अगर आप कुछ खरीदारी करना चाहते हैं, तो मेरा सुझाव है कि आप अभी कर लें, हालांकि कल आपके पास थोड़ा समय हो सकता है। आपकी उड़ान तो रात 10 बजे तक नहीं है, है ना?'
'जी हां, मैं कुछ दुकानें देखना चाहूंगा,' फेलुदा ने स्वीकार किया।
‘चलिए मैं आपको ली ब्रदर्स के पास ले चलता हूँ। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। आपको वहाँ अच्छी गुणवत्ता का सामान उचित दाम पर मिलेगा।’
लालमोहन बाबू एक पॉकेट कैलकुलेटर खरीदना चाहते थे। उन्होंने मुझसे कहा, "यह मेरे काम आ सकता है, मेरी सभी किताबों की रॉयल्टी की गणना करने में।" उन्हें वही मिल गया जो वे चाहते थे—एक ऐसा कैलकुलेटर जो इतना छोटा और इतना पतला था कि मैं समझ ही नहीं पाया कि उसमें बैटरी कहाँ लगती है। मैंने फेलुदा के पेंटेक्स कैमरे के लिए कुछ फिल्म रोल खरीदे; और फेलुदा ने एक मिनी सोनी ऑडियो कैसेट रिकॉर्डर खरीदा। उन्होंने मुझसे कहा, "अब से, जब भी कोई नया ग्राहक हमसे मिलने आए, इसे चालू करना याद रखना। अगर हम बातचीत रिकॉर्ड कर सकें तो काम बहुत आसान हो जाएगा।"
हम तीन बजे श्री पाल के फ्लैट पर वापस आ गए। वे हमें खुद होटल तक नहीं ले जा सके क्योंकि उन्हें अपनी दुकान पर जाना था। फेलुदा ने उनसे कहा, 'कोई बात नहीं, श्री पाल। आपने हमारे लिए पहले ही बहुत कुछ किया है। हम टैक्सी ले लेंगे, चिंता मत कीजिए।'
ठीक है। लेकिन मुझे जरूर बताना कि तुम्हारा कैसा चल रहा है। मैं तुम्हारे बारे में सोचता रहूंगा!
हम इमारत से बाहर निकले और सामने के गेट के ठीक बाहर एक टैक्सी खड़ी मिली। हांगकांग में टैक्सियाँ कुछ अलग दिखती थीं। काले और पीले रंग के बजाय, वे लाल और चांदी के रंग की थीं।
'पर्ल होटल,' फेलुदा ने कहा। ड्राइवर ने सिर हिलाया और गाड़ी स्टार्ट कर दी। लालमोहन बाबू कुछ ज़्यादा ही शांत लग रहे थे। जब मैंने उनसे इसका कारण पूछा, तो उन्होंने कहा कि कम समय में ही उनका मानसिक दायरा बहुत बढ़ गया है। 'अगर यह और बढ़ गया, तो मुझे नहीं लगता कि मैं इसे संभाल पाऊँगा!'
'आपका क्या मतलब है?'
‘मैंने कलकत्ता में केवल चीनी कारीगरों और चीनी मोचियों को ही देखा था। अगर मैंने इसे अपनी आँखों से न देखा होता, तो मुझे कभी विश्वास नहीं होता कि वे इस तरह का शहर बना सकते हैं!’

श्री पाल ने हमें बताया था कि होटल उनके फ्लैट से दस मिनट से भी कम दूरी पर है। लेकिन हमारा ड्राइवर उससे कहीं ज़्यादा देर तक गाड़ी चलाता रहा। यह बहुत ही हैरान करने वाला था। फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं, फिर ऊँची आवाज़ में बोला, 'हमने पर्ल होटल कहा था!'
“जी हां,” ड्राइवर ने बिना सिर घुमाए कहा। उसने काले चश्मे पहने हुए थे, इसलिए मैं उसकी आंखें नहीं देख सका। क्या उसने पहली बार में हमारी बात सही सुनी थी? और क्या सच में एक ही नाम के एक से ज़्यादा होटल हो सकते हैं? टैक्सी कई छोटी गलियों से गुज़री और आखिरकार लगभग बीस मिनट बाद एक सड़क के कोने पर रुक गई। इसमें कोई शक नहीं था कि यह इलाका सिर्फ़ चीनी लोगों का था, जो मुख्य सड़कों के महानगरीय माहौल से बिल्कुल अलग था। इमारतें लंबी और संकरी थीं, और बेहद भीड़भाड़ वाली थीं। पता नहीं सूरज की रोशनी उन छोटी खिड़कियों से अंदर आती भी थी या नहीं। वहाँ कुछ ही छोटी दुकानें थीं जो उन लुभावने डिपार्टमेंटल स्टोरों से बिलकुल अलग थीं जिन्हें हमने पहले देखा था। उन सभी दुकानों के साइनबोर्ड चीनी भाषा में लिखे थे, इसलिए यह पता लगाना नामुमकिन था कि उनमें क्या बिकता है।
‘पर्ल होटल कहाँ है?’ फेलुदा ने पूछा। ड्राइवर ने हाथ उठाकर इशारा किया कि हमें दाईं ओर वाली लेन में जाना होगा। मैंने मीटर देखा। हांगकांग डॉलर में उसमें सौ रुपये दिख रहे थे। लेकिन भुगतान करने के अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं था।
यह सब करने के बाद, हमने अपना सामान उठाया और जाने के लिए मुड़ गए। लालमोहन बाबू की ओर देखे बिना भी, मैं समझ गया कि उनका चेहरा पीला पड़ गया था। हांगकांग में अपराध दर के बारे में उन्होंने जो कुछ भी सुना था, वह सब उनके दिमाग में घूम रहा होगा।
हम दाईं ओर मुड़े। गली संकरी और अंधेरी थी। लेकिन इससे पहले कि कुछ समझ में आता, अंधेरे से परछाइयाँ निकलीं और हमें घेर लिया। अगले ही पल, मुझे सिर पर एक जोरदार चोट लगी और मैं बेहोश हो गया।
जब मुझे होश आया, तो मैंने खुद को एक अंधेरे कमरे के फर्श पर लेटा हुआ पाया। फेलुदा एक लकड़ी के बक्से पर बैठा चारमीनार सिगरेट पी रहा था। कमरे में एक अजीब सी गंध थी जिससे मुझे फिर से आंखें बंद करके सोने का मन कर रहा था। बाद में मुझे पता चला कि यह अफीम की गंध थी। कहा जाता है कि अंग्रेज भारत में अफीम का उत्पादन करते थे और उसे चीनियों को बेचते थे। इससे अंग्रेज अमीर हो गए और चीनी इसके आदी हो गए।
लालमोहन बाबू अभी भी बेहोश थे, लेकिन धीरे-धीरे हिलने-डुलने लगे थे। हमारा सामान गायब हो चुका था। कमरे में चार-पाँच पैकिंग के डिब्बे, एक झुकी हुई बेंत की कुर्सी और एक चीनी कैलेंडर पड़ा था। दीवार पर काफी ऊपर बनी एक छोटी सी खिड़की से हल्की रोशनी आ रही थी, जिससे पता चलता था कि बाहर अभी भी कुछ दिन का उजाला बाकी था।
वहाँ दो दरवाजे थे, एक मेरे दाहिनी ओर और दूसरा मेरे सामने। दोनों बंद थे। केवल एक पक्षी की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। मैंने कहीं और देखा था कि चीनी लोग पक्षियों को पिंजरे में पालने के शौकीन होते हैं।
‘जाग जाओ, लालमोहन बाबू!’ फेलुदा ने कहा। ‘कितनी देर सोओगे?’

लालमोहन बाबू ने आंखें खोलीं और दर्द से कराह उठे। ‘हे भगवान! कितना भयानक अनुभव!’ उन्होंने बड़ी मुश्किल से उठते हुए कहा। ‘हम आखिर कहां आ गए हैं?’ ‘नरसंहार कक्ष में,’ फेलुदा ने शांत भाव से उत्तर दिया। ‘यह बिल्कुल तुम्हारी कहानियों जैसा ही है, है ना?’
‘मेरी कहानियां? वाह!’
शायद 'हो!' कहने से उसे फिर से दर्द का एक झटका लगा, क्योंकि उसने मुँह बना लिया। फिर उसने अपनी आवाज़ थोड़ी धीमी करते हुए कहा, 'हमारे साथ जो कुछ हुआ है, वह मेरी लिखी किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा भयानक है। मैं कसम खाता हूँ, मैं लिखना बिल्कुल छोड़ दूँगा। बहुत हो गया।'
‘क्या! आपका मतलब है कि आप फिर कभी नहीं लिखेंगे?’
'नहीं, कभी नहीं।'
‘ठीक है। आपका बयान अभी-अभी रिकॉर्ड किया गया है, याद रखिए। आप अपने वचन से मुकर नहीं सकते।’
फेलुदा का छोटा कैसेट रिकॉर्डर उसके बगल में रखा था। उसने रिप्ले बटन दबाकर लालमोहन बाबू को दिखाया कि उसकी बातें सचमुच रिकॉर्ड हो गई हैं। ‘इसके पीछे सोमानी का हाथ है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘निस्संदेह। बस उम्मीद करते हैं कि हमें हमारे बैग वापस मिल जाएं। वे रिवॉल्वर ले गए। लेकिन मैं इस रिकॉर्डर को बचाने में कामयाब रहा।’
क्या वे दोनों दरवाजे बंद हैं?
'सामने का दरवाजा तो है। बगल वाला दरवाजा बाथरूम में खुलता है।'
'मुझे लगता है, वहां से भागने का कोई मौका नहीं है?'
'कोई नहीं। एक खिड़की है, लेकिन वह बहुत छोटी है।'
‘क्या उस टैक्सी ड्राइवर को सोमानी ने भेजा था?’
'हां, शायद।'
लेकिन उन्हें कैसे यकीन हो सकता था कि हम वही टैक्सी लेंगे? हम दूसरी टैक्सी ले सकते थे, या पैदल ही जा सकते थे!
‘अगर हमने ऐसा किया होता, तो मुझे यकीन है कि सोमानी हमारे लिए कोई और व्यवस्था कर लेता। जो हो सकता था, उसके बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है, लालमोहन बाबू।’
लालमोहन बाबू ने आह भरी और फिर लेट गए। एक मिनट बाद, मैंने उन्हें गुनगुनाते हुए सुना। ऐसे क्षण में वे कैसे गा सकते थे? मैंने ध्यान से सुना और शब्द समझ में आए: 'हे प्रभु, मेरा समय आ गया है/मुझे दूसरे लोक में ले चलो।' क्या उन्हें सच में लग रहा था कि वे मरने वाले हैं?
‘लालमोहन बाबू, आप क्या सोच रहे हैं?’ फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। अजीब... ये सब कितना अजीब है। मुझे पता ही नहीं था कि बेहोश होने के बाद भी कोई सपना देख सकता है। जानते हो मैंने क्या देखा? कई बंदर बेचे जा रहे थे, और एक आदमी ढोल बजाते हुए कह रहा था, "पुनर्जागरण काल के सुगंधित बंदर—दो डॉलर प्रत्येक—सभी पुनर्जागरण काल के—"
बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। कोई सीढ़ियों से ऊपर आ रहा था। कदमों की आवाज़ तेज़ होती गई और आखिरकार सामने के दरवाजे के बाहर आकर रुक गई। ताले में चाबी घूमी और दरवाजा खुल गया।

‘Kanhaiya! Kanhaiya!’ Hiralal called from somewhere.
‘Ji, huzoor,’ said Kanhaiya and went out.

कुछ ही सेकंड बाद ऐसा ही एक मौका आया। बक्से का एक कोना राधेश्याम के सिर पर लगा, जिससे वह दर्द से कराहते हुए मुंह के बल गिर पड़ा। फिर वह वहीं बेसुध पड़ा रहा। मैंने देखा कि उसके सिर से खून बह रहा था। फेलुदा ने मुझसे बंदूक ले ली और तुरंत मुड़कर कन्हैया की ओर देखा, जो कमरे में लौट आया था। कन्हैया ने बिना कुछ कहे अपने हाथ ऊपर उठा लिए, साफ तौर पर उसे समझ आ गया था कि पासा पलट गया है।
‘बैग बाहर ले जाओ,’ फेलुदा ने कहा। लालमोहन बाबू और मैं अपना सामान कमरे से बाहर ले गए।
राधेश्याम अभी भी वहीं पड़ा था जहाँ वह गिरा था। फेलुदा के एक ही वार से कन्हैया भी अपने साथी के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा। जब तक पुलिस की टीम होश में आती, हम पूरी तरह से खतरे से बाहर हो चुके होते।
बाहर सीढ़ियाँ थीं जो इमारत के मुख्य निकास द्वार की ओर जाती थीं। सौभाग्य से, वहाँ कोई नहीं दिख रहा था। हम जितनी जल्दी हो सके वहाँ से निकलकर सड़क पर आ गए।
हर जगह नियॉन साइन लगे हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो चीनी वर्णमाला के दस हजार अक्षर हमें घूर रहे हों। लेकिन यह मुख्य सड़क नहीं थी। इस पर न तो ट्राम चल रही थीं और न ही बसें। यहाँ सिर्फ टैक्सियाँ, निजी कारें और बहुत सारे लोग थे।
हम तीसरी खाली टैक्सी में बैठ गए जो वहां से गुजरी। टैक्सी में बैठते ही मैंने फेलुदा से पूछा, 'जब सोमानी की आवाज ने कन्हैया को पुकारा, तो असल में वो तुम्हारे टेप रिकॉर्डर की ही आवाज थी, है ना?'
'हां, बिल्कुल सही। सोमानी के दरवाजा खोलते ही मैंने उसे चालू कर दिया था। फिर कन्हैया को पुकारते हुए सुनकर मैंने उसे बंद कर दिया। मुझे अंदर से लग रहा था कि यह काम आ सकता है; और सच में यह काम आया!'
‘आप वाकई बहुत प्रतिभाशाली हैं!’ लालमोहन बाबू ने अत्यंत भावुक होकर कहा। 'धन्यवाद, लालमोहन बाबू, आपकी सहायता के लिए हम बहुत आभारी हैं।'
असली पर्ल होटल तक पहुँचने में हमें दस मिनट और सात डॉलर लगे। चेक-इन करते ही फेलुदा ने मिस्टर पाल को फोन किया।
श्री पाल ने कहा, 'मुझे चिंता होने लगी थी। मैंने आपको होटल में कई बार फोन किया, लेकिन उन्होंने कहा कि आप अभी तक नहीं पहुंचे हैं। क्या हुआ?'
मैं आपको बाद में बताऊँगा। क्या आप अभी होटल आ सकते हैं?
‘बिल्कुल। मेरे पास आपके लिए भी एक खबर है।’
श्री पाल कुछ ही मिनटों में आ गए। फेलुदा ने जल्दी से सारी बात बताई। श्री पाल ने कहा, 'ओह, मुझे तुम पर गर्व है! अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मुझे क्या पता चला है। मुझे टेलीफोन बुक में क्रिकोरियन का घर का पता मिल गया है। मुझे यह भी पता चल गया है कि हीरालाल कहाँ रह रहा है।'
'कैसे?'
‘यहाँ पाँच और सोमानी हैं। मैंने एक-एक करके उन्हें फोन करना शुरू किया। पता चला कि हीरालाल, केशव सोमानी का चचेरा भाई है। केशव की कौलून में कपड़ों की दुकान है। वह वहीं रहता है और हीरालाल उसके साथ रह रहा है। क्रिकोरियन आज शाम को वापस आ रहा है, है ना? हीरालाल जाहिर तौर पर आज ही उसे

पेंटिंग सौंपने की कोशिश करेगा। मैंने वोंग सू को हीरालाल के घर के बाहर तैनात कर दिया है। वोंग सू मेरे साथ काम करता है। वह बहुत ही काबिल और भरोसेमंद नौजवान है। उसे कहा गया है कि अगर वह सोमानी के घर से कोई कार निकलते देखे तो मुझे फोन करे।’
‘क्रिकोरियन कहाँ रहता है?’
‘विक्टोरिया हिल। एक काफी पॉश इलाका, यहाँ से कोवलून की तुलना में ज़्यादा नज़दीक। इसलिए अगर हम हीरालाल के तुरंत बाद निकलें, तो हम उससे पहले वहाँ पहुँच जाएँगे। दरअसल, आप उसे रास्ते में रोक भी सकते हैं।’
फेलुदा ने श्री पाल से हाथ मिलाया। 'यह तो बहुत ही शानदार है। लेकिन क्या वोंग सू ने आपको फोन किया था?'
'हां। मैं जब जा ही रहा था, तभी उसने देखा कि एक आदमी घर से बाहर निकला, जिसके हाथ में एक पतला, चपटा पार्सल था। फिर वह आदमी एक कार में बैठा और चला गया।'
हम श्री पाल की कार में तीन मिनट में निकल पड़े और पहाड़ी पर चढ़ने लगे। सड़क घुमावदार थी और जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, नीचे फैले हांगकांग शहर का नज़ारा और भी खूबसूरत होता गया। लालमोहन बाबू शहर की लाखों रोशनी, कारों, ऊंची इमारतों और समुद्र को देखकर दंग रह गए और मन ही मन बुदबुदाते रहे, 'सपनों की दुनिया, सपनों की दुनिया!'
दस मिनट बाद, श्री पाल ने कहा, 'यह सही इलाका है, लेकिन हमें सही घर ढूंढना होगा।' चारों ओर सुंदर पुराने घर थे, जो सुव्यवस्थित लॉन और बगीचों से घिरे हुए थे। स्पष्ट रूप से अंग्रेजों ने ये घर अपने आराम से रहने के लिए बनवाए थे। समय के साथ, इनमें से कुछ घरों के मालिक बदल गए थे।
क्रिकोरियन का घर ढूंढने में हमें ज्यादा समय नहीं लगा। उसके बरामदे में एक काली कार खड़ी थी, जिसे हमने तुरंत पहचान लिया। यह वही कार थी जो हवाई अड्डे से हमारा पीछा कर रही थी। यह हीरालाल सोमानी की थी। जाहिर है, वह हमसे पहले ही वहां पहुंच गया था।
श्री पाल ने अपनी कार थोड़ी दूर आगे एक पेड़ के नीचे खड़ी की और कहा, 'अब हमें एक ऐसी जगह ढूंढनी होगी जहां से हम उस घर पर नजर रख सकें।'
हम कार से उतरे और क्रिकोरियन के घर के सामने खड़े होने के लिए वापस चले गए। वहाँ जगह-जगह झाड़ियाँ और छोटे पेड़-पौधे थे। एक उपयुक्त जगह ढूँढना मुश्किल नहीं था। लेकिन हमें ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा। बस एक मिनट बाद ही क्रिकोरियन के घर का सामने का दरवाज़ा खुला। रोशनी की एक किरण बाहर आई और उसमें हमने सोमानी को बाहर आते देखा। उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा, किसी को 'शुभ रात्रि' कहा और अपनी कार में बैठ गया। हमने उसे धीरे- धीरे आगे बढ़ते और कोने से ओझल होते देखा, उसका इंजन एकदम शांत चल रहा था।
‘अब तुम क्या करोगे?’ श्री पाल ने फुसफुसाते हुए पूछा।
'अंदर जाओ और श्री क्रिकोरियन से बात करो,' फेलुदा ने जवाब दिया।
हम अंधेरे से बाहर निकले और क्रिकोरियन के घर के द्वार से अंदर चले गए।
लेकिन बरामदे तक पहुँचने से पहले ही एक बहुत ही अजीब घटना घटी।
सामने का दरवाज़ा फिर खुला, और एक बूढ़ा आदमी—संभवतः सत्तर वर्ष का—तेजी से बाहर निकला और गेट की ओर दौड़ने लगा। उसके हाथों में टिंटोरेटो की यीशु

की मूर्ति थी, जिसके चारों ओर एक नया, चमकदार सुनहरा फ्रेम लगा हुआ था। उसके घर के सामने चार अजनबी लोगों की मौजूदगी से उसे ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ा। उसने घबराकर चारों ओर देखा, फिर अपना माथा पीटकर चिल्लाने लगा, ‘बदमाश! ठग! हरामखोर!’
फिर वह हमारी ओर मुड़ा, उसकी आँखों में पागलपन भरी चमक थी, और उसने कहा, 'इसने मुझे एक नकली चीज़ बेच दी, और मैंने इसके लिए पचास हज़ार डॉलर दिए!' उसने यह पूछना ज़रूरी नहीं समझा कि हम कौन थे और उसके घर पर क्या कर रहे थे।
‘क्या आप टिंटोरेटो की इस पेंटिंग की बात कर रहे हैं?’ फेलुदा ने नरमी से पूछा। बूढ़ा आदमी भड़क उठा। ‘टिंटोरेटो?’ वह हांफते हुए बोला। ‘टिंटोरेटो बिलकुल नहीं! मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूँ।’
वह बड़ी तेज़ी से बरामदे की ओर वापस चला गया। हम चुपचाप उसके पीछे-पीछे चले। "देखो!" उसने खुले दरवाजे से आती तेज़ रोशनी में पेंटिंग को ऊपर उठाते हुए कहा। "क्या तुम उन्हें देख सकते हो? तीन हरी मक्खियाँ। सभी पेंट से चिपकी हुई हैं। इन मूर्ख जीवों ने कलकत्ता के होटल में मेरे कमरे में मेरी ज़िंदगी नरक बना दी थी। और अब मुझे इस पेंटिंग में एक नहीं, दो नहीं, बल्कि तीन-तीन मक्खियाँ मिली हैं! और उस बेवकूफ ने मुझे यह कहने की हिम्मत की कि यह असली है। उसने मुझे बेवकूफ बनाया क्योंकि यह एक बेहतरीन नकल है। लेकिन मैंने नकली चीज़ के लिए इतने पैसे नहीं दिए!"
फेलुदा ने शांत भाव से कहा, 'आप बिलकुल सही कह रहे हैं। ये मक्खियाँ चार सौ साल पहले इटली में नहीं थीं। जाहिर है, ये वहाँ हाल ही में पहुँची हैं।' श्री क्रिकोरियन का सफेद चेहरा लाल हो गया था। 'वह नीच धोखेबाज सूअर! मुझे तो यह भी नहीं पता कि वह कहाँ रह रहा है!'
श्री पाल ने धीमी आवाज़ में कहा, 'हाँ, मैं करता हूँ।'
‘क्या सच में?’ अर्मेनियाई व्यक्ति उत्सुकता से उसकी ओर मुड़ा, उसकी आँखों में अब आशा थी।
'हां। वह कौलून में रह रहा है। मेरे पास पता है।'
‘अच्छा। मैं उसे पकड़ लूँगा और उसकी खाल उतार दूँगा!’ तभी अचानक उसके मन में एक विचार आया। वह फेलुदा की ओर मुड़ा और पूछा, ‘तुम कौन हो?’
‘हमें पता था कि सोमानी की पेंटिंग असली नहीं है। इसलिए हम आपको चेतावनी देने आए थे। लेकिन वह हमसे पहले यहाँ पहुँच गया,’ फेलुदा ने शांत भाव से झूठ बोलते हुए जवाब दिया।
‘लेकिन…’ श्री पाल ने अचानक कहा, ‘अभी देर नहीं हुई है। हम उसे घर पहुँचने से पहले ही पकड़ सकते हैं। हम मेरी कार से उसका पीछा कर सकते हैं। वह ज्यादा दूर नहीं जा पाया होगा।’
श्री क्रिकोरियन की आँखों में एक नई चमक आ गई। उन्होंने संक्षेप में कहा, 'चलो चलते हैं।' यहाँ आते समय हम तेज़ गाड़ी नहीं चला पा रहे थे क्योंकि हमें एक पहाड़ी पर चढ़ना था। अब, नीचे उतरते समय, श्री पाल ने हमें कसकर पकड़ने को कहा और ऐसे गाड़ी चलाई जैसे शैतान उनका पीछा कर रहा हो। लेकिन यह ज़्यादा देर तक नहीं चला।

हमें सोमानी की कार पाँच मिनट बाद ही दिखाई दी। उनका काम खत्म हो चुका था, पचास हज़ार डॉलर का चेक उनकी जेब में था, इसलिए ज़ाहिर है उन्हें कहीं जाने की कोई जल्दी नहीं थी। श्री पाल उनकी कार के पास पहुँचे और हॉर्न बजाने लगे। सोमानी ने उन्हें रास्ता देने के लिए एक तरफ हट गए। श्री पाल ने उन्हें ओवरटेक किया, आगे निकल गए और फिर सड़क के बीचोंबीच तिरछी गाड़ी खड़ी कर दी, जिससे रास्ता पूरी तरह से अवरुद्ध हो गया। सौभाग्य से, किसी भी दिशा से कोई दूसरी कार नहीं आ रही थी।
मैंने सोमानी को असमंजस भरे भाव से अपनी कार से बाहर निकलते देखा। उसी क्षण, श्री क्रिकोरियन पेंटिंग को पकड़े हुए हमारी कार से कूद पड़े। फेलुदा भी तुरंत उनके पीछे-पीछे आ गए।
‘माफ़ कीजिए,’ उन्होंने श्री क्रिकोरियन से पेंटिंग लेते हुए कहा। बूढ़े व्यक्ति ने पेंटिंग छोड़ दी और कुछ हैरान से दिखे।
फेलुदा पेंटिंग लिए सीधे सोमानी के पास गया। फिर, बिना किसी चेतावनी के, उसने अपने हाथ ऊपर उठाए और ज़ोरदार धमाके के साथ पेंटिंग सोमानी के सिर पर दे मारी। सोमानी का सिर कैनवास को चीरता हुआ अंदर घुस गया और फ्रेम उसके गले में हार की तरह लटक गया। वह बस आँखें फाड़कर देखता रहा, अवाक और कुछ बोल नहीं पाया।
'श्री क्रिकोरियन, अब आपको आपका चेक वापस मिल जाएगा,' फेलुदा ने ठंडे स्वर में कहा, उसके हाथ में रिवाल्वर थी।
हीरालाल सोमानी अब भी स्तब्ध दिख रहे थे, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उन्हें बात समझ आ गई है। कांपते हाथों से उन्होंने अपनी जैकेट की आगे वाली जेब से एक चेक निकाला। श्री क्रिकोरियन झपटे और उनके हाथ से चेक छीन लिया। ‘हीरालालजी,’ फेलूदा ने गाड़ी में वापस जाने से पहले कहा, ‘कृपया मुझे इस अप्रत्याशित विपत्ति के लिए जिम्मेदार न ठहराएं। यह सब तीन हरी मक्खियों के कारण हुआ है।’
सोमानी का मुंह खुला का खुला रह गया। हम गाड़ी लेकर चले गए।

बारह
मुझे सबसे आश्चर्यजनक बात यह लगी कि क्रिकोरियन को बेची गई दूसरी पेंटिंग भी नकली निकली। लेकिन फेलुदा ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की।
लालमोहन बाबू ने एक अलग ही मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा, ‘फेलू बाबू, आप इतने यकीन से कैसे कह सकते हैं कि सोलहवीं शताब्दी में इटली में हरी मक्खियाँ नहीं थीं? मैंने तो सुना है कि जलकुंभी हमारे देश में नहीं उगी थी। इसे यूरोप की एक महिला लेकर आई थी!’
फेलुदा ने अपनी टेढ़ी-मेढ़ी मुस्कान दी, लेकिन कुछ नहीं कहा।
अगले दिन श्री पाल हमें विदा करने हवाई अड्डे आए। फेलुदा ने उन्हें धन्यवाद के प्रतीक के रूप में एक सुंदर रेशमी टाई भेंट की थी। श्री पाल हँसे। उन्होंने हमसे कहा, 'एक दिन में मुझे इतना रोमांच कभी नहीं हुआ! लेकिन अफसोस है कि मैं आपको कौलून ले जाकर तला हुआ साँप नहीं खिला सका। आपको फिर से मुझसे मिलने आना चाहिए और कुछ दिन और रुकना चाहिए।'
सच कहूँ तो, मैं हांगकांग को इतनी जल्दी छोड़ना नहीं चाहता था, लेकिन जानता था कि फेलुदा का जीवन का मूल सिद्धांत 'कर्तव्य सर्वोपरि' था। वह नकली पेंटिंग, बंकिम बाबू की हत्या और बैकुंठपुर में ज़हर दिए गए कुत्ते के रहस्य को सुलझाने से पहले हांगकांग की चकाचौंध से कभी आकर्षित नहीं होगा। हम बुधवार रात को हांगकांग से निकले और अगली सुबह कलकत्ता पहुँच गए। फेलुदा ने लालमोहन बाबू से कहा, 'आज आराम का दिन है। कल, मैं और टॉपशे लगभग आठ बजे आपके घर पहुँचेंगे। फिर हम सब बैकुंठपुर चलेंगे। ठीक है?'
‘ठीक है, महोदय। कोई समस्या नहीं।’
वापस लौटते समय, फेलुदा पार्क स्ट्रीट डाकघर पर रुका और कहा कि उसे एक अत्यावश्यक टेलीग्राम भेजना है। उसने यह नहीं बताया कि वह किसे भेजेगा। इसके बाद वह एकदम शांत हो गया। मैं इस मनोदशा को अच्छी तरह जानता था। यह किसी तूफान से पहले की शांति जैसी थी, हालांकि मुझे यह नहीं पता था कि तूफान कब आएगा। मैंने सब कुछ समझने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी समझ में नहीं आया। वैसे भी, हांगकांग में हमारे अनुभव ने मुझे पूरी तरह से उलझन में डाल दिया था। जब भी मैं अपनी आँखें बंद करता, मुझे बस अपने सिर के ऊपर लटके हुए लंबे चीनी साइनबोर्ड ही दिखाई देते थे। सीधे तरीके से सोचना नामुमकिन था। अगले दिन, जब हम श्री नियोगी के घर पहुँचे, तब तक लगभग सुबह के 11 बज चुके थे। नोबो कुमार हमारा इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने हांगकांग की हमारी यात्रा के बारे में चिंता भरे सवाल पूछने शुरू किए, लेकिन फेलुदा ने सिर हिला दिया।
‘नहीं, मुझे खेद है कि हमारा मिशन पूरी तरह सफल नहीं रहा। हम मूल चित्र प्राप्त नहीं कर सके,’ उन्होंने कहा, और आगे जोड़ा, ‘जो चित्र हमें मिला, वह भी जालसाजी का एक और मामला निकला।’

‘क्या! यह कैसे संभव है, श्री मिटर? एक ही पेंटिंग की दो प्रतियां? तो फिर, मूल पेंटिंग कहाँ गई?’
'चलिए ऊपर आपके लिविंग रूम में चलते हैं। वहां हम ज्यादा आराम से बात कर सकते हैं।'
'ओह जी हाँ, बिल्कुल। मुझे खेद है।'
हम बैठक कक्ष में दाखिल हुए तो देखा कि इंस्पेक्टर मोंडोल सोफे पर बैठे नींबू पानी पी रहे थे।
‘वाह वाह!’ वह मुस्कुराया। ‘क्या हांगकांग में आपको कोई सफलता मिली, श्रीमान मिटर?’
'अगर आप चोरी हुई पेंटिंग की बात कर रहे हैं, तो जवाब है नहीं। हमें वह नहीं मिली। लेकिन अन्य मामलों में, हां, हमने कुछ चीजें सुलझा ली हैं।'
‘मैं समझ गया। हत्यारे का क्या हुआ?’
वह स्वयं को पुलिस के हवाले कर सकता है।
'वास्तव में?'
फेलुदा बैठे नहीं। हमारे लिए नींबू पानी के गिलास आ गए। उन्होंने एक गिलास उठाया और एक घूंट पिया। फिर उन्होंने अपनी नीली नोटबुक निकाली। हम सब सोफे और कुर्सियों पर उनके सामने बैठ गए।
फेलुदा ने कहा, ‘मुझे शुरुआत से शुरू करने दीजिए। मंगलवार, 28 सितंबर को बैकुंठपुर में दो घटनाएँ घटीं। किसी ने श्री नियोगी के फॉक्स टेरियर, ठुमरी को ज़हर दे दिया; और चंद्रशेखर का बेटा रुद्रशेखर यहाँ आया। इससे मुझे लगा कि शायद इन दोनों घटनाओं में कोई संबंध है। मैंने खुद से पूछा, एक बूढ़े कुत्ते को कौन मारेगा और क्यों? जब मैंने इस बारे में सोचा, तो मुझे दो संभावित स्पष्टीकरण मिले। दरअसल, टॉपशे ने पहले स्पष्टीकरण का ज़िक्र किया था। घर में चोरी करने के इरादे से कोई भी व्यक्ति कुत्ते को मारने का कारण तो निकाल ही सकता है। लेकिन तुरंत कुछ भी चोरी नहीं हुआ। ठुमरी की हत्या के काफी समय बाद पेंटिंग की चोरी हुई। इसलिए, मुझे दूसरे विकल्प पर विचार करना पड़ा। अगर परिवार और कुत्ते को जानने वाला कोई व्यक्ति छुपकर, भेष बदलकर, पहचान छिपाकर वापस आना चाहता था, तो वह आने से पहले कुत्ते को ज़रूर हटाना चाहेगा क्योंकि अगर कुत्ते ने पहचान के संकेत दिखाए, तो तुरंत शक पैदा हो जाएगा।’
इससे मुझे शक हुआ कि कहीं नया आया रुद्रशेखर तो आपका कोई परिचित नहीं था। उसका व्यवहार वाकई अजीब था। वह शायद ही कभी बोलता था, रंगीन चश्मे पहनता था और अपना ज़्यादातर समय या तो घर के बाहर या अपने कमरे में बिताता था। आखिर वह कौन था? ऐसा माना जा रहा था कि वह सीधे इटली से आया है, लेकिन उसके पैरों में बाटा के जूते थे। हाँ, उसने आपके पिता को अपना पासपोर्ट दिखाया था, लेकिन वे बूढ़े हैं और उनकी नज़र कमज़ोर है। वैसे भी, उन्हें पासपोर्ट की बारीकी से जाँच करने या किसी और से मदद मांगने में शर्म आ रही थी। इसलिए, जाली पासपोर्ट से काम चलाना ज़्यादा मुश्किल नहीं था।
लेकिन, अगर पासपोर्ट असली नहीं था, तो उसे रुद्रशेखर के हिस्से की संपत्ति मिलने की उम्मीद कैसे थी? मेरा मतलब है, वकील और ऐसे मामलों से निपटने वाले

अन्य लोग मूर्ख नहीं होते, और उन्होंने निश्चित रूप से व्यापक जांच-पड़ताल की होगी। उन्हें धोखा देने की संभावना बहुत कम थी।
तो फिर यह आदमी यहाँ क्यों था? इसका केवल एक ही कारण हो सकता था। वह इस घर की सबसे कीमती पेंटिंग पर कब्ज़ा करना चाहता था। भुदेव सिंह के लेख की बदौलत अब सैकड़ों लोगों को इसके बारे में पता चल गया है।
'इस व्यक्ति को जो बात पता नहीं थी, और जो बात हमें हाल ही में एक पुरानी प्रेस कटिंग से पता चली, वह यह थी कि असली रुद्रशेखर की मृत्यु छब्बीस साल पहले रोम में हुई थी।'
‘क्या!’ नोबो कुमार चीख उठा।
जी हां, श्री नियोगी। रॉबिन बाबू का मैं बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इस बात की ओर ध्यान दिलाया।
‘तो फिर...तो फिर वह आदमी कौन था जो यहाँ आया था?’
फेलुदा ने अपनी जेब से कागज का एक टुकड़ा निकाला। यह एक पत्रिका से फाड़ा गया पन्ना था।
‘मुझे हांगकांग में यह पत्रिका बिल्कुल संयोग से मिली। श्री नियोगी, कृपया इस तस्वीर को देखिए। यह मोम्बासा नामक फिल्म का एक दृश्य है। इसका कुछ हिस्सा अफ्रीका में फिल्माया गया था। इस तस्वीर में दाढ़ी वाले व्यक्ति ने खलनायक की भूमिका निभाई है। कृपया इसे ध्यान से देखिए। क्या आप उसे पहचान सकते हैं?’
नोबो कुमार ने पन्ने पर नजर डाली। 'अरे, ये तो रुद्रशेखर है!' उसने कहा। ‘कैप्शन में अभिनेता का नाम पढ़ें।’
नोबो कुमार ने और करीब से देखा और बुरी तरह चौंक गया।
‘हे भगवान! यह तो नोंडो है!’
जी हां, श्रीमान नियोगी। वह आपका भाई है। जब वह यहां आया था तो उसने लगभग वैसा ही मेकअप किया हुआ था। मुझे लगता है कि दाढ़ी उसकी अपनी थी, लेकिन उसने अपने बालों को ढकने के लिए विग पहनी हुई थी। उसने किसी और से रोम से आपके पिता को पत्र लिखवाया था। वैसे भी, यह ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए था।
नोबो कुमार बेहद परेशान दिख रहे थे। उन्होंने सिर हिलाया और आह भरी। 'नोंडो हमेशा से ही बहुत लापरवाह था,' उन्होंने बुदबुदाया।
फेलुदा बोलते रहे। “अगर असली पेंटिंग अचानक गायब हो जाती, तो बहुत हंगामा मच जाता। इसलिए श्री नन्दो कुमार को एक बड़ा सूझबूझ सूझा। उन्होंने एक कलाकार को यहाँ बुलाया और उसकी एक प्रति बनवाई। इसी प्रति को उन्होंने दीवार पर लगा दिया और पहले से टंगी हुई पेंटिंग को हटा दिया। किसी कारणवश बंकिम बाबू को शक होने लगा था। इसलिए उन्होंने अपनी घड़ी में अलार्म सुबह 3:30 बजे का लगा दिया, जिस सुबह रुद्रशेखर—मेरा मतलब नन्दो कुमार—गायब हुए। शायद बंकिम बाबू ने उन्हें पेंटिंग हटाते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया था। यही कारण था कि उन्हें मरना पड़ा।”
जब फेलुदा ने बोलना बंद किया तो कमरे में सन्नाटा छा गया। उसने एक पल के लिए चारों ओर देखा और फिर बोला, “एक आदमी ऐसा था जो नन्दो कुमार का

पर्दाफाश कर सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, शायद इसलिए कि वह बहुत शर्मिंदा था। क्या यह सही नहीं है?”
हम सभी ने मुड़कर देखा तो पाया कि फेलुदा के भाषण के दौरान कोई चुपचाप कमरे में आया था और एक कोने में चुपचाप बैठा था।
वह पत्रकार रॉबिन चौधरी थे।
‘क्या यह सच है?’ नोबो कुमार ने उससे पूछा। ‘क्या तुम्हें पता था कि रुद्रशेखर एक धोखेबाज था?’
रॉबिन बाबू ने फेलुदा की ओर देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा, 'कहानी की शुरुआत तो तुमने ही की थी; अब इसे तुम ही खत्म करो!'
'शायद। लेकिन मेरे पास अभी भी सभी सवालों के जवाब नहीं हैं। आपको मेरी मदद करनी होगी।'
‘बहुत खूब। आप अपने प्रश्न पूछ सकते हैं।’
‘पहले तो आपने हमें बताया कि उस इतालवी प्रेस कटिंग का अर्थ समझने के लिए आपको एक शब्दकोश का सहारा लेना पड़ा। यह झूठ था, है ना?’
'हां, मैंने झूठ बोला।'
'दूसरा, तुम्हारी कमीज़ पर वह लाल धब्बा, जिसे हम सब खून समझ रहे थे, वह असल में लाल तेल का पेंट था, है ना?'
हाँ।
आपने पेंटिंग करना कहाँ से सीखा?
‘स्विट्जरलैंड में। मेरे पिता के निधन के तुरंत बाद मेरी माँ मुझे ज्यूरिख ले गईं। वह एक योग्य नर्स थीं। इसलिए उन्होंने ज्यूरिख के एक अस्पताल में काम करना शुरू कर दिया। तब मैं तेरह साल का था। मैंने स्कूल के बाद कला की कक्षाएं लेना शुरू कर दिया। फिर, बाद में, मैं पेरिस चला गया। मैंने कुछ साल पहले चंद्रशेखर की जीवनी लिखने का फैसला किया। मैं रोम और वेनिस गया, और कैसिनी परिवार के सदस्यों से मिला। वहीं से मुझे टिंटोरेटो की चित्रकला के बारे में पता चला।’
इसका असल मतलब यह है कि आपने भी इसकी एक कॉपी बना ली है।
'हाँ यह सही है।'
और क्या यही दूसरी प्रति थी जिसे नन्दो कुमार ने मूल समझकर ले लिया था, और अंततः यह हीरालाल सोमानी तक पहुंच गई?
'हाँ।'
नोबो कुमार ने अधीरता से बीच में ही टोकते हुए कहा, 'मैं यह जानना चाहता हूं कि मूल वस्तु कहां है?'
‘मुझे मिल गया,’ रॉबिन चौधरी ने जवाब दिया।
‘क्यों? तुमने इसे क्यों रखा है?’
क्योंकि अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता, तो यह अब हांगकांग में होता। मुझे वहाँ पहुँचने के कुछ ही समय बाद शक होने लगा था कि नकली रुद्रशेखर इसे हटाने की योजना बना रहा है। इसलिए मैंने इसकी एक प्रति बना ली और मूल को सुरक्षित रख दिया।
‘आप मूल प्रति तो लेना ही चाहते थे, है ना?’ फेलुदा ने पूछा।

'हां, लेकिन अपने लिए नहीं। मैं इसे यूरोप के किसी संग्रहालय में ले जाना चाहता था। वहां का कोई भी संग्रहालय इसे अपने संग्रह में शामिल करने का मौका पाकर बहुत खुश होगा।'
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ नोबो कुमार उत्तेजित और क्रोधित होकर खड़े हो गए। ‘तुम कौन होते हो हमारी पेंटिंग ले जाने वाले? यह हमारे परिवार की है!’ ‘जी हां, बिलकुल, श्रीमान नियोगी, आप बिल्कुल सही हैं,’ फेलुदा ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा। ‘लेकिन देखिए, रॉबिन बाबू भी आपके परिवार का ही एक सदस्य है!’
‘क्या? क्या यह कोई मजाक है?’
बिलकुल नहीं। मेरे पास यह मानने का ठोस कारण है कि वह वास्तव में रुद्रशेखर का पुत्र और चंद्रशेखर का पोता है। उसका असली नाम राजशेखर नियोगी है। मुझे पूरा विश्वास है कि उसके पासपोर्ट पर भी यही नाम लिखा होगा।
‘मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे अपना पासपोर्ट दिखाना पड़ेगा,’ रॉबिन बाबू हँसे। ‘मैं नहीं चाहता था कि कोई मुझे जाने और मेरे ऊपर हंगामा करे। मैं तो बस चंद्रशेखर पर शोध सामग्री इकट्ठा करना चाहता था और उस पेंटिंग को लेना चाहता था क्योंकि उस पर मेरा हक था। हाँ, इसमें धोखा देना शामिल था, लेकिन मैंने सोचा कि अगर मैं परिवार के बिछड़े हुए सदस्य के रूप में न आऊँ तो शायद चीजें आसान होंगी। मुझे कैसे पता था कि इतनी सारी अनपेक्षित घटनाएँ घटेंगी, या मेरी मुलाकात श्री मिटर जैसे असाधारण जासूसी क्षमता वाले व्यक्ति से होगी? अब मैं बस माफी मांग सकता हूँ और आशा करता हूँ कि आप मुझे मेरे किए के लिए माफ कर देंगे।’
फेलुदा ने बीच में कहा, ‘मैं बस एक छोटी सी बात बताना चाहता हूँ। देखिए, भुदेव सिंह ने मुझे बताया कि आपके दादाजी से उनकी आखिरी बातचीत पाँच साल पहले हुई थी। इसलिए, देखा जाए तो टिंटोरेटो की 'जीसस' की पेंटिंग पर आपका कोई हक नहीं है। हालांकि, मुझे नहीं लगता कि इसे लेने पर किसी को कोई आपत्ति होगी क्योंकि आप ही इसकी कीमत सबसे अच्छी तरह समझेंगे और इसे ठीक से संरक्षित करने का तरीका भी जानते होंगे।’
‘जी हां, मैं बिल्कुल सहमत हूं,’ नोबो कुमार ने हैरानी भरे लहजे में कहा। ‘लेकिन आपको मुझे बताना होगा, श्रीमान मित्तर, आपने यह कैसे पता लगाया? आपको ऐसा क्यों लगा कि रॉबिन बाबू मेरा चचेरा भाई है? मुझे... मेरे लिए तो यह... जादू जैसा है!’
‘यह अपेक्षाकृत सरल था। उसमें कुछ अजीब सा था। वह किसी न किसी तरह से घुलमिल नहीं पाता था। उदाहरण के लिए, मैंने साथ में पहले भोजन के दौरान देखा कि उसे अलग-अलग व्यंजनों को खाने का सही क्रम नहीं पता था। किसी भी बंगाली को यह बताने की ज़रूरत नहीं होगी कि शुक्तो सबसे पहले खाना चाहिए। लेकिन वह हिचकिचाता हुआ लग रहा था। उसने दाल खाना शुरू किया, फिर मछली खाई, और आखिर में कड़वा शुक्तो खाया। ज़ाहिर है, वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने लंबा समय विदेश में बिताया था। लेकिन यही वह बात नहीं थी जिससे मुझे सच्चाई का पता चला। असली बात यह थी—’

फेलुदा रुक गए और चंद्रशेखर द्वारा बनाए गए अपने पिता अनंत नाथ नियोगी के चित्र के पास चले गए। उन्होंने अनंत नाथ की दाढ़ी और मूंछों पर हाथ रख दिया। तुरंत ही ऐसा लगा मानो कैनवास से रॉबिन बाबू का चेहरा झाँक रहा हो।
लालमोहन बाबू ने ताली बजानी शुरू कर दी, और आखिरकार मुझे समझ में आया कि रॉबिन बाबू मुझे परिचित क्यों लग रहे थे।
लेकिन अभी एक और आश्चर्य बाकी था।
एक संदेशवाहक कुछ देर से दरवाजे पर खड़ा था, उसके हाथ में एक टेलीग्राम था। उसने अब वह टेलीग्राम नोबो कुमार को दे दिया। उसने उसे जल्दी से पढ़ा और उसकी आँखें फिर से चौड़ी हो गईं। ‘अरे वाह, यह तो बॉम्बे से नोंडो का है!’ वह चिल्लाया। ‘उसने कहा है कि वह आज शाम की फ्लाइट से कलकत्ता पहुँच जाएगा! मुझे समझ नहीं आ रहा—’
‘अह...’ फेलुदा ने कहा, पहली बार कुछ असहज महसूस करते हुए, ‘मुझे खेद है कि यह मेरी गलती है, श्री नियोगी। मैंने कल आपकी ओर से उन्हें एक टेलीग्राम भेज दिया था, जिसमें लिखा था कि उन्हें तुरंत आना होगा क्योंकि आपके पिता की तबीयत बहुत गंभीर है। मुझे उम्मीद है कि आप मुझे बिना सलाह लिए ऐसा करने के लिए क्षमा कर देंगे, लेकिन मुझे लगा कि आप और इंस्पेक्टर मोंडोल उनसे मिलना चाहेंगे और कुछ बातें सुलझा लेंगे...?’
‘नहीं, मैं नहीं कर सकता!’ फेलुदा ने कहा।
‘क्यों नहीं?’ नोबो कुमार ने चिढ़ते हुए पूछा।
‘मैं आपसे और पैसे नहीं ले सकता क्योंकि—देखिए, क्या मेरी जांच से यह पता नहीं चला कि आपका अपना भाई ही अपराधी था?’
तो क्या हुआ? मैंने ही तो आपको जांच करने को कहा था, है ना? आपके द्वारा किए गए परिणामों के लिए कोई आपको जिम्मेदार क्यों ठहराएगा? आपने तो बस अपना काम किया! मैं आपसे कह रहा हूँ, श्रीमान मिटर, मैं आपको आपकी पूरी फीस देना अपना कर्तव्य समझता हूँ, और यदि आप इसे स्वीकार नहीं करते हैं, तो मुझे बहुत बुरा लगेगा। आप ऐसा बिल्कुल नहीं चाहेंगे, है ना?
उसका अपना भाई भले ही अपराधी हो, लेकिन नोबो कुमार का चचेरा भाई एक अनमोल रत्न साबित हुआ। किसी को भी इस बात में कोई संदेह नहीं था कि टिंटोरेटो की बनाई यीशु की यह पेंटिंग सही व्यक्ति के पास गई थी। कुछ ही हफ्तों में, यह किसी प्रसिद्ध यूरोपीय संग्रहालय की दीवार की शोभा बढ़ाएगी।
नोबो कुमार ने हमें बैकुंठपुर में एक और दिन बिताने के लिए राजी कर लिया। वापसी में, लालमोहन बाबू के अनुरोध पर हम मेछेदा में रुके, ताकि भाबेश भट्टाचार्य से एक बार फिर परामर्श कर सकें।
लालमोहन बाबू ने कहा कि यह पता लगाना बेहद जरूरी था कि क्या वे अपने अगले उपन्यास का नाम 'हुडविंक्ड इन हांगकांग!' रख सकते हैं।

अंबर सेन का गुमशुदगी

एक
‘अब से, फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने घोषणा की, ‘तुम्हें मेरी किताबों में गलतियाँ सुधारने की ज़रूरत नहीं है।’ फेलूदा अपने पसंदीदा सोफे पर बैठे पिरामिड के आकार के रूबिक क्यूब को घुमाने में व्यस्त थे। ‘सचमुच?’ उन्होंने बिना आँखें उठाए पूछा।
जी हाँ, महोदय। कल हमारे पार्क में मेरी एक सज्जन से मुलाकात हुई। उनका नाम मृत्युंजय सोम है और वे अभी-अभी हमारे पड़ोस में रहने आए हैं। हमने लगभग आधे घंटे तक बात की। वे एक महान विद्वान हैं।
'शोधार्थी?'
'हां। हर्बर्ट विश्वविद्यालय से दोहरी एमए की डिग्री, या कुछ इसी तरह की।' ‘भगवान के लिए, लालमोहन बाबू,’ इस बार फेलुदा को ऊपर देखना पड़ा, ‘यह हर्बर्ट नहीं है। आपका मतलब हार्वर्ड है।’
‘ठीक है। हार्वर्ड।’
‘तुम्हें यह कैसे पता चला? क्या वह अमेरिकी लहजे में बोल रहा था?’
नहीं, लेकिन वो ज़्यादातर समय अंग्रेज़ी में ही बात करते हैं। बेशक, वो बहुत विद्वान व्यक्ति हैं। असल में वो बहरामपुर के रहने वाले हैं, लेकिन अपनी किताब के लिए शोध करने के लिए कलकत्ता आ गए हैं। उनका पहनावा भी बहुत प्रभावशाली है... मतलब, उनका व्यक्तित्व बिल्कुल अलग है। फ्रेंच दाढ़ी, सुनहरे फ्रेम का चश्मा, सलीकेदार कपड़े। मैंने उन्हें अपनी किताब 'द फियरसम फो' की एक प्रति दी। उन्होंने उसमें चौंतीस गलतियाँ बताईं, लेकिन कहा कि पढ़ने में बहुत आनंद आया।
तो फिर, आपकी समस्याएँ खत्म हो गईं। अब आपको हर दिन मेरे घर तक गाड़ी चलाकर आने की ज़रूरत नहीं है। सोचिए, पेट्रोल पर कितने पैसे बचेंगे।
‘हां, लेकिन बात यह है कि...’
हमें पता ही नहीं चला कि मामला क्या था, क्योंकि इसी बीच फेलुदा के ग्राहक अंबर सेन के आने से लालमोहन बाबू की बात बीच में ही रुक गई। हम नौ बजे उनका इंतज़ार कर रहे थे। घड़ी में ठीक नौ बजते ही हमारे दरवाजे की घंटी बजी। श्री सेन की उम्र लगभग चालीस के आसपास थी, दाढ़ी साफ थी और मोटे फ्रेम का चश्मा पहने हुए थे। उनके कंधों पर एक जामवार शॉल लिपटा हुआ था। एक दिन फेलुदा मुझे एक संग्रहालय ले गए थे और उन्होंने मुझे दिखाया था कि कश्मीरी शॉल कितने अलग-अलग प्रकार के हो सकते हैं।
श्री सेन फेलुदा के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गए और सीधे मुद्दे पर आ गए। ‘आप बहुत व्यस्त हैं, श्रीमान मिटर, और मैं भी। तो चलिए समय बर्बाद न करें। लेकिन इससे पहले कि मैं आपको कुछ और बताऊं, इसे देखिए।’ उन्होंने अपनी जेब से एक कागज़ का टुकड़ा निकाला और फेलुदा को दिया। उसे मोड़कर गेंद बना

दिया गया था, फिर सीधा कर दिया गया था। उस पर बड़े लाल अक्षरों में ये शब्द लिखे थे:
तुमने मुझे बर्बाद कर दिया। अब तुम्हें इसका हिसाब चुकाना होगा, सिर्फ सात दिनों में। यह मत सोचो कि इस बार तुम बच निकलोगे।
फेलुदा ने कागज को पलटकर पूछा, 'तुम्हें यह कैसे मिला?'
‘मेरा अध्ययन कक्ष भूतल पर है। कल रात किसी ने इसे खुली खिड़की से कमरे में फेंक दिया। मेरे नौकर लक्ष्मण ने इसे आज सुबह पाया और मुझे दे दिया।’ क्या आपके अध्ययन कक्ष से सड़क का नजारा दिखता है?
नहीं। अध्ययन कक्ष के बाहर एक बगीचा है जो एक चारदीवारी से घिरा हुआ है। लेकिन मुझे लगता है कि कोई भी उस पर चढ़कर अंदर जा सकता था।
‘किसी को बर्बाद करने का ये क्या मतलब है?’
श्री सेन ने सिर हिलाया। ‘देखिए, श्री मित्तर, मैं एक साधारण आदमी हूँ। मैं एक व्यवसाय चलाता हूँ, हालाँकि अधिकांश काम मेरा भाई संभालता है। मेरी कई अन्य रुचियाँ और शौक हैं जो मुझे व्यस्त रखते हैं। मुझे याद नहीं कि मैंने कभी किसी को नुकसान पहुँचाया हो—कम से कम जानबूझकर तो नहीं; और अगर किया भी हो, तो वह इतना बुरा नहीं था कि मुझे इस तरह की धमकी दी जाए। मुझे यह सब समझ में नहीं आ रहा है।’
फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं और एक मिनट सोचा। फिर उसने कहा, 'अच्छा, यह किसी तरह का मज़ाक भी हो सकता है। शायद आपके इलाके में कुछ लड़के हों?'
मैं पाम एवेन्यू में रहता हूँ। मेरे घर से ज़्यादा दूर नहीं एक झुग्गी बस्ती है। हो सकता है वहाँ कुछ नौजवान रहते हों जो मज़ाक में ऐसा काम कर दें। कौन जाने?
‘क्या वे दुर्गा पूजा से पहले आपसे चंदा नहीं मांगते?’
‘हाँ, लेकिन हमने हमेशा बिना किसी झंझट के अपना हिस्सा चुकाया है।’ इसी समय श्रीनाथ चाय लेकर अंदर आए, इसलिए फेलुदा को सवाल पूछना बंद करना पड़ा। मैंने लालमोहन बाबू को धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदाते सुना। ‘बदला, बदला!’ उन्होंने कहा।
फेलुदा ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए हमें श्रीमान सेन से मिलवाया।
‘तो आप ही हैं वो प्रसिद्ध जटायु?’
‘हेह, हेह!’
श्री सेन ने बड़े चाव से अपने प्याले से एक लंबा घूंट लिया। उन्होंने कहा, 'दरअसल, श्री मित्तर, मुझे आपके बारे में तपेश की कुछ कहानियाँ पढ़ने के बाद ही पता चला। इसीलिए मैंने सोचा कि पहले आपसे ही संपर्क करूँ।'
‘क्या आपने पुलिस को बताया है?’
मेरे भाई ने मुझे पुलिस के पास जाने को कहा, लेकिन इन मामलों में मैं थोड़ा अपरंपरागत हूँ, आप जानते हैं। मुझे वो करना पसंद नहीं जो बाकी सब करते हैं। इसके अलावा, मुझे नहीं लगता कि इस समय चिंता करने जैसी कोई बात है। मैं आपसे मिलने के लिए ही आपके पास आया था। हमारे परिवार में हर कोई आपके बारे में जानता है।
‘आपके परिवार में और कौन-कौन है?’

मैं अपने छोटे भाई अंबुज के साथ रहता हूँ। मैं अविवाहित हूँ, लेकिन अंबुज विवाहित है। उसके तीन बच्चे हैं—दो बेटे और एक बेटी। उसके बेटे अब बड़े हो गए हैं, वे यहाँ नहीं रहते। उसकी बेटी लगभग दस साल की है। फिर मेरी माँ हैं—मेरे पिता अब इस दुनिया में नहीं हैं—और एक दूर का चचेरा भाई है जो बचपन से हमारे साथ रहता आया है। इन परिवार के सदस्यों के अलावा, तीन वेटर, एक रसोइया, एक नौकरानी, एक माली, एक चौकीदार और एक ड्राइवर भी हैं। हम 5/1 पाम एवेन्यू में रहते हैं। मेरे पिता जाने-माने हृदय रोग विशेषज्ञ अनाथ सेन थे।
फेलुदा ने सिर हिलाया, लेकिन आगे कुछ कहने में झिझक महसूस की। श्री सेन ने शायद यह भांप लिया, और तुरंत कहा, 'मैं तो बस आपको बताना चाहता था कि क्या हुआ था। आप शायद सही हों, हो सकता है यह सब महज़ एक मज़ाक हो। लेकिन मुझे जो बात अजीब लगती है, वह यह है कि आमतौर पर ऐसे मज़ाकों का निशाना अमीर और मशहूर लोग बनते हैं। मैं इनमें से कोई नहीं हूँ, इसलिए...' उन्होंने कंधे उचका दिए।
‘ठीक है, श्रीमान सेन, आपको यह समझना होगा कि यदि यह केवल एक खोखली धमकी है, तो मैं कुछ नहीं कर सकता। क्या मैं कृपया यह कागज़ अपने पास रख सकता हूँ?’ 'बिल्कुल।'
एक अजीब सा नोट मिलने के कारण फेलुदा से मिलने आना कुछ हद तक अतिरंजित प्रतिक्रिया लग रही थी। हालांकि, अगली सुबह पाम एवेन्यू से आए फोन कॉल ने पूरी बात को ही मोड़ दिया। मैंने अपने लिविंग रूम में फोन उठाया और उसे फेलुदा के एक्सटेंशन पर ट्रांसफर कर दिया। फिर मैंने रिसीवर उठाया और पूरी बातचीत सुनी।
‘हेलो, क्या ये मिस्टर मिटर हैं?’
'हाँ।'
‘मेरा नाम अंबुज सेन है। क्या कल मेरे भाई ने आपसे एक गुमनाम पत्र के संबंध में मुलाकात की थी?’
'हाँ।'
‘खैर, वह लापता है।’
'आपका क्या मतलब है?'
‘मैंने अभी जो कहा। मेरा भाई आज सुबह तड़के हमारी कार लेकर निकला था। यह कोई असामान्य बात नहीं थी, क्योंकि वह हर दिन ऐसा करता है। वह कार लेकर नदी किनारे जाता है, फिर कार से उतरकर कुछ मील पैदल चलकर घर लौट आता है। आज... आज वह वापस नहीं लौटा।’
'क्या!'
ड्राइवर ने पूरे एक घंटे तक इंतजार किया, फिर उसे हर जगह ढूंढा। लेकिन वह कहीं नहीं मिला, इसलिए अंत में ड्राइवर वापस आ गया।
क्या आपने पुलिस को सूचित कर दिया है?
नहीं। देखिए, एक समस्या है। हमारी माँ अस्सी साल की हैं और उनकी सेहत बहुत अच्छी नहीं है। मैंने अभी तक उन्हें अपने भाई के लापता होने के बारे में नहीं बताया है। लेकिन अगर पुलिस को पता चल गया तो वे स्वाभाविक रूप से पूछताछ करने आएंगे, और फिर मैं उनसे कुछ भी छिपा नहीं पाऊँगी। वे बहुत

परेशान हो जाएँगी। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि आप इस मामले को स्वयं संभालें। हमें आप पर पूरा भरोसा है। और हाँ, हम आपको आपकी फीस भी देंगे।
‘ठीक है, मैं अभी आता हूँ। क्या आपको इससे कोई आपत्ति नहीं है?’
‘ज़रूर। आपको हमारा पता तो पता ही होगा, है ना?’
‘पाम एवेन्यू में पाँच में से एक?’
'हाँ यह सही है।'

दो
श्री सेन का घर एक विशाल इमारत निकला, जो कुछ हद तक पुराने ज़माने की शैली का था और सामने एक बरामदा था। घर के सामने एक छोटा सा बगीचा था। उसके पीछे हरियाली का एक छींटा टेनिस कोर्ट का आभास देता था। गेट पर लगे संगमरमर के एक शिलाखंड पर अब भी अंबर सेन के पिता का नाम खुदा हुआ था, जिसके बाद वर्णमाला के कई अक्षर, अल्पविराम और पूर्णविराम लगे हुए थे। आखिरी शब्द (एडिनबर्ग) था, जिससे मैंने अनुमान लगाया कि वे चिकित्सा की पढ़ाई करने स्कॉटलैंड गए थे।
जैसे ही हमारी टैक्सी बरामदे के नीचे आकर रुकी, जो व्यक्ति हमसे मिलने बाहर आया, वह देखने में अंबुज सेन जैसा ही था, लेकिन उनसे अलग वह कद में छोटा, मोटा और सांवला था। उसने हमें मुस्कुराकर देखा, लेकिन उसकी मुस्कान तुरंत गायब हो गई। अंबुज सेन स्पष्ट रूप से चिंतित थे।
उन्होंने कहा, 'कृपया अंदर आइए।'
हम संगमरमर के फर्श वाली एक सीढ़ी पार करके बैठक कक्ष में गए। यहाँ का फर्श भी संगमरमर का था। उस पर एक सुंदर कालीन बिछा हुआ था; साथ ही बहुत सारा महंगा फर्नीचर भी था। जिस सोफे पर मैं बैठा, वह इतना नरम था कि मेरे वजन से लगभग छह इंच नीचे दब गया।
अंबुज बाबू ने पुकारा, ‘रूना, इधर आओ।’ मैंने देखा कि एक छोटी बच्ची फ्रॉक पहने दरवाजे के पास खड़ी थी और हैरानी से हमारी तरफ देख रही थी। वह अंदर आई और अपने पिता के पास खड़ी हो गई।
‘क्या तुम जानती हो कि यह कौन है?’ अंबुज ने उससे पूछा।
'हां, यह फेलुदा है,' उसने धीरे से कहा।
‘और ये कौन है?’
‘टॉपशे।’
'ओह, तो आप उन दोनों को जानते हैं?'
‘जटायु कहाँ है?’ रूना ने कुछ निराश स्वर में पूछा। ‘वह आज हमारे साथ नहीं आ सका, लेकिन मैं उसे किसी और दिन यहाँ ज़रूर लाऊँगा, वादा करता हूँ!’ फेलुदा ने उसे बताया।
अंबुज बाबू ने हमें बताया, 'उसने उनकी लिखी हर कहानी पढ़ी है।'
‘क्या आपको लगता है कि आप मेरे चाचा को ढूंढ सकते हैं?’ रूना ने फेलुदा की ओर सीधे देखते हुए पूछा।
मैं कोशिश करूंगा; और अगर आप मुझे कोई सुराग ढूंढकर दे सकें, तो और भी अच्छा होगा।
‘कोई सुराग?’
'हां। क्या आप जानते हैं इसका क्या मतलब है?'
'हाँ।'

तो फिर, क्या आपके पास कोई ऐसी जानकारी है जिससे हमें आपके चाचा को जल्दी ढूंढने में मदद मिल सके?
‘मैं तुम्हें सुराग क्यों दूं? तुम जासूस हो। सुराग ढूंढना तुम्हारा काम है!’
'सच है। तुम बहुत होशियार लड़की हो। तुम्हारा असली नाम क्या है, रूना?' ‘Jharna.’
फेलुदा ने अंबुज बाबू की ओर मुड़कर कहा, 'मुझे कुछ मामलों में आपकी मदद की जरूरत है, श्रीमान सेन, जिनके बिना मैं आगे नहीं बढ़ सकता।'
मैं वह सब कुछ करूंगा जो आवश्यक होगा।
मुझे आपके परिवार के हर सदस्य से बात करनी है। मैं आपके भाई से बस कुछ मिनटों के लिए मिला था। उन्हें जानने के लिए इतना समय पर्याप्त नहीं था। मुझे उनके अध्ययन कक्ष में भी जाना है और उनके कुछ कागजात देखने हैं। आशा है आपको कोई आपत्ति नहीं होगी?
'नही बिल्कुल नही।'
‘तो फिर मुझे वह जगह देखनी पड़ेगी जहाँ आपका भाई सुबह की सैर के लिए जाया करता था।’
‘कोई बात नहीं। हमारा ड्राइवर बिलाश आपको वहां ले जा सकता है।’
इस समय तक, फेलुदा उठ चुका था और इधर-उधर टहल रहा था, उसकी निगाहें तीन बड़ी किताबों की अलमारियों पर टिकी हुई थीं।
‘ये किसकी किताबें हैं?’
‘दादा का।’
'ऐसा लगता है कि उन्हें कई विषयों में रुचि है, यहां तक कि अपराध विज्ञान में भी!'
'हां, उन्होंने उस विषय का भी अध्ययन किया है।'
‘…विज्ञान, पाक कला, इतिहास, सिक्का संग्रह, नाटक…’
‘नाटक दादाजी का जुनून है। वो हर साल दुर्गा पूजा के दौरान एक मंच बनाते हैं और हमें अपने निर्देशन में नाटकों में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं। हमारे परिवार के लगभग हर सदस्य ने उनके नाटकों में कोई न कोई भूमिका निभाई है, जिसमें रूना भी शामिल है।’
मैंने उस छोटी बच्ची की तरफ देखा। वह अब भी फेलुदा को हैरानी से देख रही थी।
‘ठीक है। क्या मैं उनका अध्ययन कक्ष देख सकता हूँ?’
'जी हां, बिल्कुल। कृपया मेरे साथ आइए।'
बैठक कक्ष के बाहर एक गलियारा था जो घर के पिछले हिस्से में स्थित अध्ययन कक्ष की ओर जाता था। कमरे की खुली खिड़की से सूरज की रोशनी अंदर आ रही थी, जिससे कमरा रोशन और आकर्षक लग रहा था। वहाँ एक मेज, एक घूमने वाली कुर्सी और खिड़की के पास एक आरामकुर्सी थी। दो और कुर्सियाँ एक तरफ रखी थीं, शायद मेहमानों के लिए। मेज के पीछे एक शेल्फ, एक अलमारी और एक गोदरेज तिजोरी थी। तिजोरी के बगल वाली दीवार पर लगे फोल्डिंग ब्रैकेट से एक ग्रे जैकेट टंगी हुई थी।

अंबर सेन को व्यवस्था में बहुत विश्वास था, क्योंकि उनके कागज़, कलम रखने का स्टैंड, पिन कुशन, पेपरवेट, पेपर नाइफ, टेलीफोन और अन्य कई चीज़ें उनकी मेज पर बड़े करीने से रखी हुई थीं। मुझे बस एक चीज़ अजीब लगी, वो थी डेस्क पर रखा कैलेंडर। उस पर तारीख तीन दिन से नहीं बदली गई थी। जब फेलुदा ने इस ओर ध्यान दिलाया, तो अंबुज बाबू ने कहा, 'हाँ, ये अजीब है। आम तौर पर दादाजी तारीख बदलना नहीं भूलते, लेकिन पिछले कुछ दिनों से वो कुछ ज़्यादा ही व्यस्त थे।'
अपनी नखरेबाजी के कारण, फेलुदा ने स्वयं ही तारीख को शनिवार, दूसरी तारीख से बदलकर मंगलवार, पांच तारीख कर दिया।
‘क्या मैं दराज खोल सकता हूँ?’ उसने मेज की ओर इशारा करते हुए पूछा। ‘जी हाँ, खोल लीजिए।’
फेलुदा ने तीनों दराजें खोलीं और उनमें रखी चीजों को खंगाला। सबसे ऊपर वाली दराज में उसे एक कागज का टुकड़ा मिला जिसने उसे उत्सुक कर दिया, इसलिए उसने उसे बाहर निकाला और ध्यान से देखा।
क्या आपका भाई आमतौर पर अपने चश्मे हिमालय ऑप्टिकल्स से बनवाता था? 'हाँ।'
‘यह नया कैश मेमो है। उन्होंने एक हफ्ते पहले ही नए चश्मे बनवाए थे। क्या यह सही है?’
‘नहीं!’ एक मासूम सी आवाज़ आई। हमने मुड़कर देखा तो पाया कि रूना चुपचाप हमारे पीछे आ रही थी।
‘रूना, तुम्हें यह कैसे पता चला?’ फेलुदा ने पूछा।
‘चाचाजी मुझे अपना नया चश्मा दिखाते। उन्होंने नहीं दिखाया।’
अंबुज सेन मुस्कुराए। 'हमें दादा की योजनाओं या उनकी गतिविधियों के बारे में हमेशा पता नहीं चलता था।'
फेलुदा ने दराजें बंद कीं और हम अंबर सेन के अध्ययन कक्ष से बाहर आ गए। "मुझे लगता है कि आपका एक चचेरा भाई इस घर में रहता है। क्या यह सही है?" जब हम बैठक कक्ष में वापस आए तो फेलुदा ने पूछा।
‘समरेश? ओह हाँ। उसका पालन-पोषण यहीं हुआ था।’
क्या मैं उनसे बात कर सकता हूँ?
अंबुज सेन ने समरेश बाबू को बुलवाया। पता चला कि वह लगभग पैंतीस वर्ष का व्यक्ति था, जिसके चेहरे पर चेचक के निशान थे। उसने मोटे फ्रेम का चश्मा पहन रखा था। वह आया और थोड़ी दूरी पर अकड़कर खड़ा हो गया।
'कृपया बैठ जाइए,' फेलुदा ने कहा।
समरेश बाबू एक कुर्सी पर बैठ गए, लेकिन अब भी असहज दिख रहे थे।
'आपका पूरा नाम क्या है?'
समरेश मल्लिक।
‘आप इस घर में कितने समय से रह रहे हैं?’
लगभग पच्चीस साल।
'आप जीविका के लिए क्या करते हैं?'
मैं एक फिल्म वितरक के लिए काम करता हूं।
'आपका कार्यालय कहाँ है?'

‘Dharamtala.’
इस कंपनी का नाम क्या है?
‘कोह-ए-नूर पिक्चर्स’
'आपको यहां काम करते कितना समय हो गया?'
सात साल।
‘उससे पहले आप क्या करते थे?’
‘मैं...कुछ नहीं, बस घर के कुछ छोटे-मोटे काम थे जिन्हें करना जरूरी था।’ समरेश मल्लिक ने अपने हाथ जोड़कर उन्हें अपने घुटनों के बीच दबा लिया था, जो इस बात का स्पष्ट संकेत था कि फेलुदा के सवालों से उन्हें कोई राहत नहीं मिली थी।
'क्या आप श्री सेन के रहस्यमय ढंग से लापता होने के इस मामले पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं?'
समरेश बाबू चुप रहे.
‘क्या आपको पता था कि उसे धमकी मिली थी?’ फेलुदा ने आगे पूछा। ‘हां।’
क्या आपका कमरा भूतल पर है?
'हाँ।'
क्या कभी कोई बाहरी व्यक्ति श्री सेन से मिलने आया था?
'हां, कभी-कभार।'
‘क्या आपने हाल ही में किसी को देखा है? मेरा मतलब है, कोई ऐसा जिसे आपने पहले कभी नहीं देखा हो?’
'नहीं, लेकिन । । ।'
'क्या?'
मैंने इस इलाके में कुछ युवकों को घूमते हुए देखा। मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था।
‘आपने उन्हें ठीक कहाँ देखा?’
‘हमारे घर के पास वाले चौराहे पर।’
'वे क्या कर रहे थे?'
ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे इस घर पर नजर रख रहे थे।
उनकी उम्र कितनी थी?
'मेरे ख्याल से बीस से पच्चीस के बीच।'
‘वहाँ कितने लोग थे?’
‘चार।’
फेलुदा रुका और कुछ देर सोचा। फिर उसने कहा, 'धन्यवाद, श्री मल्लिक, अब आप जा सकते हैं।'
क्या इन सब बातों का कोई फायदा होने वाला था? मैं बता नहीं सकता था। हालांकि, अंबुज सेन की पत्नी से हुई बातचीत बेहद उपयोगी साबित हुई। हम उनसे पहली मंजिल पर बने एक छोटे से बैठक कक्ष में मिले। श्रीमती सेन एक खूबसूरत महिला थीं और जैसा कि हमें जल्द ही पता चला, उतनी ही बुद्धिमान भी।
उनकी उम्र चालीस से अधिक रही होगी, लेकिन वे काफी छोटी दिखती थीं।
फेलुदा ने सबसे पहले असुविधा के लिए उनसे माफी मांगी।

‘बिल्कुल नहीं,’ उसने जवाब दिया। ‘कई जासूसी कहानियां पढ़ने के बाद— जिनमें आपकी लिखी कहानी भी शामिल है—मैं जानती हूं कि आपको किस तरह का काम करना पड़ता है। जब तक आप सबसे नहीं मिलेंगे और सवाल नहीं पूछेंगे, तब तक आप कुछ कैसे सीखेंगे?’
मुझे खुशी है कि आप इसकी सराहना करते हैं। ठीक है, तो चलिए मैं आपको अपनी सबसे बड़ी समस्या बताकर शुरू करता हूँ। आपको अपने जीजा को मिली धमकी के बारे में तो पता ही होगा, है ना?
'हाँ।'
‘क्या तुमने वह नोट देखा?’
'हाँ।'
मैंने अंबर बाबू से पूछा कि क्या उन्हें कोई ऐसी घटना याद है जिसमें उन्होंने किसी को नुकसान पहुंचाया हो। उन्होंने कहा कि उन्हें याद नहीं है। उस समय मैंने यह स्पष्ट नहीं किया था कि मैं केवल हाल की घटनाओं की बात नहीं कर रहा था। हो सकता है कि कुछ बहुत पहले हुआ हो। कई बार लोग बदला लेने के लिए सदियों तक इंतजार करते हैं। अब मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि क्या आपको ऐसी कोई घटना याद है, जो दस या बीस साल पहले की हो?
श्रीमती सेन कुछ पल चुप रहीं, उनके चेहरे पर हल्की चिंता झलक रही थी। फिर उन्होंने धीरे से कहा, 'खैर, मुझे लगता है कि मुझे आपको बताना चाहिए... देखिए, मुझे यह घटना कल रात ही याद आई। दरअसल, मैंने अभी तक अपने पति को इसके बारे में नहीं बताया है।'
'जारी रखें।'
‘यह… एक दुर्घटना थी।’
'दुर्घटना?'
'हां। यह घटना रूना के जन्म से एक साल पहले हुई थी। उन दिनों मेरे जीजाजी अपने पिता की कार चलाया करते थे। वह एक ऑस्टिन कार थी। खैर, एक दिन श्यामबाजार में उन्होंने एक आदमी को टक्कर मार दी। उस आदमी की मौत हो गई।' ‘ठीक है। क्या आप दोनों में से किसी को कुछ और याद है?’ फेलुदा ने पूछा। अंबुज सेन ने कहा, 'परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। वह आदमी कहीं क्लर्क का काम करता था।'
क्या आपको उसका नाम याद है?
नहीं। मुझे खेद है कि ऐसा नहीं है।
श्रीमती सेन ने आगे बताया, ‘उनकी पत्नी और तीन बच्चे थे—एक बेटा और दो बेटियां। लड़का लगभग चौदह साल का था, बेटियां छोटी थीं। मेरे बहनोई ने उनकी विधवा को पांच हजार रुपये दिए।’
‘हां, और उस दिन से उन्होंने गाड़ी चलाना छोड़ दिया। अब मुझे सब कुछ याद आ रहा है,’ अंबुज बाबू ने कहा।
‘हम्म। इसका मतलब है कि वह लड़का अब करीब पच्चीस साल का होगा। इसमें कोई शक नहीं कि उसके पिता की मृत्यु ने उसे कई कठिनाइयों और अभावों का सामना करवाया होगा। पाँच हज़ार रुपये तो ज़्यादा दिन नहीं चल पाते, है ना?’ 'मुझे नहीं लगता। दुर्भाग्य से, मुझे कोई और जानकारी याद नहीं है,' श्रीमती सेन ने सिर हिलाते हुए कहा।

‘मैं भी नहीं कर सकता,’ उसके पति ने बीच में कहा।
क्या आपके भाई कभी डायरी रखते थे?
नहीं, हमें इसकी जानकारी नहीं है।
फेलुदा विदा लेने के लिए उठे।
उन्होंने कहा, 'बहुत-बहुत धन्यवाद, श्रीमती सेन। आपने बहुत मदद की है। मुझे लगता है कि अब मुझे रास्ता समझ में आने लगा है।'
'आपका बहुत-बहुत स्वागत है, श्री मिटर। मुझे उम्मीद है कि आप इस मामले को सुलझाने में सक्षम होंगे,' उन्होंने अपनी आवाज में सच्ची चिंता व्यक्त करते हुए कहा।

तीन
श्री सेन की बूढ़ी और बीमार माँ को परेशान करने का कोई फायदा नहीं था, इसलिए हमने सेन परिवार को अलविदा कहा और उनकी एम्बेसडर कार में बैठ गए। उनके ड्राइवर बिलाश बाबू हमें नदी किनारे ले गए और हैप्पी रेस्टोरेंट के सामने कार पार्क कर दी।
उन्होंने कहा, ‘श्रीमान सेन यहीं से कार से उतरते थे, और फिर उस दिशा में चलना शुरू कर देते थे।’ उन्होंने दक्षिणी तरफ इशारा करते हुए कहा, ‘वे हमेशा ठीक एक घंटे में वापस आ जाते थे।’
‘क्या आप आमतौर पर कार में इंतजार करते थे?’
'जी श्रीमान।'
‘आप श्री सेन के लिए कितने समय से काम कर रहे हैं?’
नौ साल।
'तो फिर आपको दुर्घटना के बारे में पता नहीं होगा, है ना?'
‘कौन सी दुर्घटना?’
'लगभग बारह साल पहले, अंबर सेन ने एक आदमी को गाड़ी से कुचलकर मार डाला था।' ‘अंबर बाबू?’
‘इसमें इतनी हैरानी की क्या बात है?’
मुझे तो पता ही नहीं था कि वह गाड़ी चला सकता है।
उस घटना के बाद उन्होंने गाड़ी चलाना बंद कर दिया।
‘मैं समझ गया। हो सकता है इसमें उसकी कोई गलती न हो। कभी-कभी पैदल चलने वाले भी यातायात नियमों का पालन नहीं करते। हर बार दुर्घटना होने पर ड्राइवर को दोष देना उचित नहीं है। वास्तव में, मुझे आश्चर्य होता है कि हर दिन और अधिक लोग वाहनों के नीचे क्यों नहीं कुचले जाते!’
'क्या आप बता सकते हैं कि आज सुबह जब श्री सेन अपनी सैर से वापस नहीं लौटे तो क्या हुआ? आपने क्या किया?'
जब एक घंटे बाद भी वह नहीं आया, तो मैं उसे ढूंढने के लिए हेस्टिंग्स तक गाड़ी चलाकर गया। मैं बीच-बीच में रुककर लोगों से पूछता रहा कि क्या किसी ने उसे देखा है। एक-दो जगहों पर तो मैं गाड़ी से उतरकर भी उसे ढूंढने लगा। दरअसल, उसका दिल उतना मजबूत नहीं था, इसलिए मुझे डर था कि कहीं उसे स्ट्रोक या कुछ और न हो गया हो।
क्या वहां काफी लोग मौजूद थे?
जी हां, सुबह की सैर के लिए आमतौर पर काफी लोग यहां आते हैं। लेकिन श्री सेन नए हावड़ा पुल की तरफ जाते थे, जहां हमेशा शांति रहती है। अगर दो हट्टे-कट्टे आदमी कार से उतरकर उनका अपहरण कर लें, तो मुझे नहीं लगता कि उन्हें मदद के लिए चिल्लाने का भी मौका मिलेगा। मेरा मतलब है, अगर ऐसा हुआ भी तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि किसी ने कुछ देखा या सुना नहीं।

फिर हम धीरे-धीरे हेस्टिंग्स की ओर बढ़े, लेकिन रास्ते में हमें कुछ भी संदिग्ध नहीं दिखा।
अगले दो दिन पाम एवेन्यू से कोई खबर नहीं मिली। गुरुवार की शाम को जटायु आया और बोला, 'अंबर सेन, फेलू बाबू की क्या खबर है?'
जब उसे पता चला कि वह गायब हो गया है, तो उसकी आँखें फटी रह गईं। 'क्या! गायब हो गया? और आपको लगा कि यह सब एक बड़ा मज़ाक था? यह आश्चर्यजनक है, है ना, कि आपके सभी मामले—यहाँ तक कि जो देखने में मामूली लगते हैं—अंत में हमेशा रोमांचक साबित होते हैं?'
‘लालमोहन बाबू, अभी इस कहानी का अंत नहीं हुआ है। खैर, मुझे अपने नए पड़ोसी, उस महान विद्वान मृत्युंजय सोम के बारे में बताइए। वे कैसे हैं?’
‘महान विद्वान? हा! वह तो बिलकुल भी विद्वान नहीं है।’
'नहीं? कुछ ही दिन पहले तो आप कसम खाकर कह रहे थे कि वह सबसे अच्छा है। आपने अपना मन क्यों बदल लिया?'
'मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता।'
'क्यों नहीं?'
'मुझे बहुत शर्म आ रही है, फेलू बाबू। मैं आपको बता ही नहीं सकती कि क्या हुआ।'
अरे, बिल्कुल बता सकते हो। तुम मुझे सालों से जानते हो, तो मुझे कुछ भी बताने में तुम्हें शर्म क्यों आनी चाहिए?
थोड़ा और समझाने-बुझाने के बाद, लालमोहन बाबू ने सच बता दिया। उन्होंने कहा, ‘ज़रा सोचिए, फेलू बाबू, इस आदमी ने आपके बारे में सुना तक नहीं था! जब मैंने उसे बताया कि मैं आपको जानता हूँ, तो वह एकदम हैरान रह गया और बोला, “प्रदोश मित्तर कौन है?”’
बस इतना ही? कोई बात नहीं, लालमोहन बाबू, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आखिर मैंने भी इस महान विद्वान के बारे में नहीं सुना था, है ना? मतलब हर्बर्ट से दोहरी एमए डिग्री... मुझे यकीन है कि ऐसे लोग बहुत कम होंगे।
इससे लालमोहन बाबू को कुछ तसल्ली मिली। ‘जी हाँ, आप सही कह रहे हैं। इस विशाल संसार में हर एक व्यक्ति को जानना कैसे संभव है? इसके अलावा, इस व्यक्ति ने अपना अधिकांश जीवन विदेश में बिताया है। इसलिए मुझे लगता है कि हमें उसे माफ कर देना चाहिए।’
फेलुदा के कुछ कहने से पहले ही फोन की घंटी बज उठी। पाम एवेन्यू से अंबुज सेन का फोन था। उन्होंने बताया कि उन्हें एक और गुमनाम चिट्ठी मिली है। फेलुदा के अनुरोध पर उन्होंने फोन पर वह चिट्ठी पढ़कर सुनाई:
अगर आप अंबर सेन को सही सलामत वापस पाना चाहते हैं, तो बीस हजार रुपये के सौ-सौ रुपये के नोट इकट्ठा करें, उन्हें एक थैले में रखें और कल (शुक्रवार) शाम 6:30 बजे प्रिंसिप घाट के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में एक खंभे के पास छोड़ दें। अगर आपने पुलिस या किसी जासूस को सूचना देने की कोशिश की, तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। अंबर सेन को वापस पाने का यही आपका एकमात्र मौका है।
‘ठीक है, अभी कोई फैसला लेने की जरूरत नहीं है,’ फेलुदा ने कहा। ‘हमारे पास सब कुछ सुलझाने के लिए लगभग चौबीस घंटे हैं। मुझे कल कुछ काम हैं, लेकिन मैं दोपहर करीब दो बजे आपके घर आऊंगा और आपको आगे क्या करना है, यह

बताऊंगा। लेकिन आपको किसी भी तरह पैसा जुटाना होगा। यह बहुत जरूरी है।’ उसने फोन रख दिया।
‘अह... क्या उस नोट में जासूस को सूचित न करने के बारे में कुछ लिखा था?’ लालमोहन बाबू ने तुरंत पूछा।
'हां, ऐसा ही हुआ,' फेलुदा ने संक्षेप में उत्तर दिया।
हालात अचानक रॉकेट की रफ्तार से बदलने लगे थे। बीस हजार रुपये बहुत बड़ी रकम थी, लेकिन सेंस परिवार के पास भुगतान करने के अलावा और कोई चारा नहीं था।
पांच मिनट की पूरी चुप्पी के बाद, फेलुदा ने फिर बात की। 'लालमोहन बाबू, क्या मैं कल आपकी कार इस्तेमाल कर सकता हूँ?'
'बिल्कुल, कभी भी। आपको कब चाहिए?'
'लगभग सुबह साढ़े नौ बजे? मुझे बाहर जाना है। मुझे नहीं लगता कि काम खत्म करने में मुझे दो घंटे से ज्यादा लगेंगे। फिर मैं आपकी कार वापस भेज दूंगा, लेकिन क्या आप कृपया पांच बजे वापस आ सकते हैं?'
'अचे से।'
इसके बाद फेलुदा चुप हो गया।
लालमोहन बाबू ने अपने वादे के मुताबिक अगली सुबह साढ़े नौ बजे अपनी गाड़ी भेजी। फेलुदा अकेले ही निकले थे, इसलिए मैं यह नहीं बता सका कि वे कहाँ गए या उन्होंने क्या किया। लेकिन मैंने यह जरूर गौर किया कि जब वे बारह बजे लौटे, तो उनके चेहरे का भाव पूरी तरह बदल चुका था।
‘फेलुदा, तुम क्या करने की योजना बना रहे हो?’ मैंने हिचकिचाते हुए पूछा। ‘खैर, मुझे लगता है कि फिरौती देनी ही होगी। लेकिन हमें जासूस के पास जाने की धमकी को नज़रअंदाज़ करना होगा।’
इसका क्या मतलब है? क्या आप तब मौजूद रहेंगे जब वे पैसे लेने आएंगे?
'फेलू मिटर इतनी आसानी से घबराता नहीं है।'
'और हम?'
'आप दोनों को भी वहां रहना होगा, अगर मुझे आपकी मदद की जरूरत पड़े तो।'
मैं घूरता रहा। आखिर उसने क्या करने का फैसला किया था?
दोपहर के भोजन के तुरंत बाद हम पाम एवेन्यू के लिए निकल गए। अंबुज सेन हमारा इंतजार कर रहे थे।
जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, उन्होंने चिंता से कहा, 'कल रात मुझे बिल्कुल नींद नहीं आई, श्रीमान मिटर। किसे पता था कि ऐसा होगा?'
'मुझे खेद है कि आपको पूरी रकम चुकानी होगी,' फेलुदा ने गंभीरता से उत्तर दिया, 'अपने भाई को वापस पाने का कोई और तरीका नहीं है।'
‘क्या तुमने अभी तक सब कुछ सुलझा नहीं लिया?’ रूना ने अचानक दरवाजे से बाहर निकलते हुए पूछा।
'हां, रूना। मैंने इसका अधिकांश हिस्सा सुलझा लिया है, और मुझे उम्मीद है कि आज शाम तक मैं रहस्य के बचे हुए छोटे-मोटे हिस्से को भी सुलझा लूंगा। कम से कम, मैं पूरी कोशिश करूंगा।'
‘ओह, तो कोई बात नहीं।’ रूना ने गहरी राहत महसूस की। अगर उसका हीरो किसी भी तरह से नाकाम हो जाता, तो उसका छोटा सा दिल टूट जाता, ऐसा लग रहा था।

‘तो आप क्या करने का सुझाव देते हैं?’ अंबुज सेन ने पूछा।
‘क्या आपके पास पैसे हैं?’
'हां। स्वाभाविक रूप से हमारे घर में इतनी नकदी नहीं थी, इसलिए मैंने आज सुबह समरेश को बैंक भेजा।'
'क्या मैं कृपया पैसे और वह थैला देख सकता हूँ जिसमें आप इसे रखने वाले हैं?'
अंबुज बाबू ने दोनों को बुलवाया। मैंने इतनी बड़ी रकम पहले कभी नहीं देखी थी। दस छोटे-छोटे पैकेट बनाए गए, हर पैकेट में बीस सौ रुपये के नोट थे, जिन्हें रबर बैंड से बांधा गया था। फिर उन सभी दस पैकेटों को एक थैले में डाल दिया गया, जो देखने में एक भरे-पूरे कछुए जैसा लग रहा था।
‘बहुत बढ़िया,’ फेलुदा ने कहा, ‘तो सब तय हो गया। हमें पौने छह बजे निकलना चाहिए।’
अंबुज बाबू चौंक गए। 'क्या! मतलब तुम खुद जाओगे?'
‘मैं किसी अपराधी को आकर इतनी आसानी से आपका पैसा लेकर जाने नहीं दे सकता। मुझे पता है कि यहाँ सबसे ज़रूरी काम अंबर बाबू को वापस लाना है, लेकिन अगर उनके अपहरणकर्ताओं को पकड़ने के लिए कुछ नहीं किया गया, तो वे किसी और पर हमला कर सकते हैं। श्रीमान सेन, आप चिंता न करें। मैं हमेशा की तरह पर्याप्त सावधानी बरतूँगा।’
'उस मामले में । । ।'
‘मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम्हें अपनी कार में पैसे लेकर जाना है। नए हावड़ा पुल की तरफ जाना, जहाँ अपेक्षाकृत शांति रहती है। अपनी कार प्रिंसिप घाट से कम से कम दो सौ गज दूर खड़ी करना। फिर अपने ड्राइवर से कहना कि वह यह बैग ले और बताए गए खंभे के पास रख दे। मैं आसपास ही रहूँगा, ताकि कोई गड़बड़ न हो। फिर हम हैप्पी रेस्टोरेंट के सामने मिलेंगे। सीधे आगे जाना और वहाँ मेरा इंतज़ार करना। अगर मैं अपराधी को पकड़ने में कामयाब हो गया, तो ज़ाहिर है, वह भी मेरे साथ होगा।’
अंबुज सेन कुछ अनिश्चित से दिखने लगे। मैं उन्हें दोष नहीं दे सकता था। मामला मामूली नहीं था, और कौन कह सकता था कि गुंडों का एक गिरोह क्या कर बैठेगा?
लालमोहन बाबू साढ़े चार बजे पहुंचे।
फेलुदा ने अंदर आते ही कहा, 'मैंने इससे पहले कभी ऐसा मामला नहीं संभाला है। यह बिल्कुल अनोखा मामला है।'
मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा था कि इसमें ऐसी क्या खास बात थी, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा।
‘आज शाम का क्या प्लान है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘ध्यान से सुनो। तुम, टॉपशे, कार लेकर साढ़े पाँच बजे हैप्पी रेस्टोरेंट जाओ। वहाँ कुछ खा लो और सवा छह बजे निकल आना। कार रेस्टोरेंट के सामने खड़ी करके खंभों वाले घाट की तरफ पैदल जाना। घाट पहुँचने से ठीक पहले तुम्हें गुंबददार छत वाला एक छोटा सा मंडप दिखेगा। वहाँ जाकर एक बेंच पर बैठ जाना। ऐसा दिखाना कि तुम्हारा एकमात्र उद्देश्य नदी किनारे टहलना है। घाट पर नज़र रखना, लेकिन

[illegible]

चार
फरवरी का लगभग अंत हो चुका था, लेकिन फिर भी काफी ठंड लग रही थी। हालांकि, दिन अब सर्दियों की तुलना में लंबे थे, और शाम छह बजे तक पर्याप्त रोशनी बनी रही। एक कप कॉफी और चिकन कटलेट की प्लेट लेकर जब हम रेस्टोरेंट से निकले, तब तक सवा छह बज चुके थे।
प्रिंसिप घाट जाते समय, लालमोहन बाबू बीच-बीच में गहरी साँसें लेते हुए 'आह!' की आवाज़ निकाल रहे थे, ताकि राहगीरों को यह जता सकें कि हम शाम की ताज़ी हवा का आनंद लेने के अलावा और कुछ नहीं चाहते। उनका यह अभिनय बिल्कुल भी असरदार नहीं था, लेकिन सौभाग्य से वहाँ बहुत कम लोग थे, और भेलपुरी बेचने वाले भी बहुत पीछे छूट गए थे, इसलिए इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा।
फेलुदा द्वारा बताए गए मंडप तक पहुँचने में हमें दस मिनट लगे। हमने अपने लिए एक बेंच ढूँढी। कुछ क्षण बाद, लालमोहन बाबू ने चारों ओर नज़र घुमाई और कहा, 'क्या तुम्हें तुम्हारा चचेरा भाई कहीं दिखाई दे रहा है?'
नदी पर छोटी-छोटी नावों में बैठे नाविकों के अलावा मुझे कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। घाट के चारों ओर बने ऊँचे-ऊँचे खंभे, जिनमें से प्रत्येक डेढ़ सौ साल पुराना था, पानी के ऊपर खड़े थे। अंधेरा तेज़ी से बढ़ रहा था। अगर कोई भी व्यक्ति अपना थैला रखने या लेने के लिए उन खंभों के पास चुपके से जाता, तो उसके पकड़े जाने की संभावना लगभग न के बराबर थी।
‘देखो, उधर!’ लालमोहन बाबू ने मेरी आस्तीन पकड़ते हुए फुफकारा। मैंने भी उसे देखा था। सफेद पतलून और गहरे रंग की जैकेट पहने एक आदमी, जिसके हाथ में एक थैला था, चुपचाप एक खंभे की ओर बढ़ रहा था। बिलाश, अंबर सेन का ड्राइवर। वह खंभे के पीछे गायब हो गया और कुछ सेकंड बाद फिर से दिखाई दिया। अब उसका हाथ खाली था। वह तब तक चलता रहा जब तक मुख्य सड़क पर नहीं पहुँच गया, फिर वह दाईं ओर मुड़ा और एक पेड़ के पीछे गायब हो गया।
अब साढ़े छह बज चुके थे और लगभग पूरा अंधेरा हो चुका था। मुझे खंभों की पहली पंक्ति के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। एक पल के लिए मुझे लगा कि अंधेरे में कुछ हिल रहा है, लेकिन यह मेरी कल्पना भी हो सकती है।
फिर हमने श्री सेन की कार को गुजरते हुए देखा और वह हैप्पी रेस्टोरेंट की ओर मुड़ गई। उसके पीछे जींस पहने तीन लड़के चलते हुए आए, उनके पीछे एक बुजुर्ग यूरोपीय सज्जन छड़ी लिए हुए थे। वे सभी कार की ही दिशा में चले गए। हम उठे और दस मिनट में अपनी कार तक वापस पहुँच गए। लेकिन फेलुदा कहाँ था? ‘सलाम, बाबू!’ कार के अंदर से एक आवाज़ आई। मैंने जल्दी से झाँका और देखा कि ड्राइवर के बगल में एक बूढ़ा आदमी बैठा है। उसने लुंगी पहनी हुई थी। उसके कंधों पर नसवार के रंग का एक कपड़ा लिपटा हुआ था और उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी थी।

फेलूदा! मुस्लिम नाविक के वेश में। हम दोनों के कुछ कहने से पहले ही अंबुज सेन सड़क के उस पार से आ गए। फेलूदा ने उनका अभिवादन किया और जल्दी से बताया कि वह वेश में क्यों थे। 'मुझे उन नावों में से एक में छिपना पड़ा, क्योंकि घाट केवल नदी से ही स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।'
‘लेकिन क्या हुआ, श्रीमान मिटर? आपने क्या देखा?’
फेलुदा ने धीरे से अपना सिर हिलाया। 'मुझे बहुत खेद है, श्रीमान सेन,' उसने कहा। 'आपका क्या मतलब है?'
'घाट पर पहुंचने से पहले ही वह आदमी पैसे लेकर भाग गया।'
‘क्या! तुम्हारा मतलब है कि वो सारा पैसा और वो आदमी... दोनों चले गए?’
'हां, मुझे डर है कि ऐसा ही है। मैंने आपसे कहा था कि मुझे खेद है।'
अंबुज बाबू फेलुदा को खाली निगाहों से घूर रहे थे। सच कहूँ तो, मेरा सिर चकरा रहा था। मैंने फेलुदा को इस तरह हारते हुए कभी नहीं देखा था। ‘तुम्हें पुलिस को बताना होगा,’ फेलुदा ने कहा। ‘मेरा सुझाव है कि तुम घर वापस जाओ। तुम्हारा भाई अब तक लौट आया होगा, मैं भी वहीं आ जाऊँगा, बस मुझे कपड़े बदलने के लिए थोड़ा समय दे दो। इस हालत में मैं तुम्हारे ड्राइंग रूम में कैसे जा पाऊँगा?’
हम घर इसलिए लौटे ताकि फेलुदा को कुछ अच्छे कपड़े मिल सकें। उसे अपने काले रंग से सने हाथ भी धोने थे। जब मैंने उससे पूछा कि ये क्या है, तो उसने बताया, 'कोल टार।' लेकिन उसने ये नहीं बताया कि ये उसके भेष का हिस्सा था या फिर उसके हाथ गलती से रंग गए थे।
जब हम पाम एवेन्यू के लिए रवाना हुए तब तक लगभग साढ़े सात बज चुके थे। रास्ते में लालमोहन बाबू के अलावा किसी ने कुछ नहीं कहा। लालमोहन बाबू ने कहा, “फेलू बाबू, आपका भेष बहुत बढ़िया था। अफसोस, इससे आपको कोई फायदा नहीं हुआ।” फेलूदा ने कोई जवाब नहीं दिया।
रूना ने दरवाजे पर हमारा स्वागत किया। 'अंकल वापस आ गए हैं!' उसने खुशी से चिल्लाते हुए कहा।
हमें बताया गया कि अंबर बाबू हमारे आने से मात्र दस मिनट पहले ही लौटे थे। जैसे ही हम अंदर गए, वे सोफे से उठे और आगे बढ़कर फेलुदा के हाथों को अपने हाथों में थामकर गर्मजोशी से हाथ मिलाया। अंबुज बाबू, उनकी पत्नी और समरेश मल्लिक सभी कमरे में मौजूद थे।
‘उन्होंने तुम्हें कहाँ छिपाया था? आखिर हुआ क्या था?’ लालमोहन बाबू ने बड़ी मुस्कान के साथ पूछा।
‘हे भगवान, मुझे समझ ही नहीं आ रहा कि शुरुआत कहाँ से करूँ...’
‘नहीं,’ फेलुदा ने हाथ उठाते हुए कहा। ‘बिल्कुल कुछ मत कहो, क्योंकि अगर तुमने अपना मुंह खोला, श्रीमान सेन, तो तुम्हें फिर से अपनी कल्पना का सहारा लेना पड़ेगा। कृपया ध्यान दें कि मैंने “कल्पना” शब्द का प्रयोग किया है, “झूठ” का नहीं।’
‘हुर्रे! हुर्रे!’ रूना खुशी से उछल-कूद करने लगी। ‘फेलुदा ने सही अनुमान लगा लिया है। उसने तुम्हें पकड़ लिया है!’

फेलुदा ने चारमीनार जलाई। 'हाँ,' उसने धीरे से कहा, 'तुम सबने मिलकर एक साजिश रची थी, है ना? मैंने इसका पता लगा लिया है, हालाँकि इसका कारण अभी भी रहस्य बना हुआ है।'
‘कृपया मुझे सब कुछ समझाने दीजिए,’ अंबर सेन हँसे। ‘इस सब की वजह मेरी छोटी भतीजी है। जी हाँ, श्रीमान। देखिए, वह आपकी बहुत बड़ी भक्त है। उसे पूरा यकीन है कि आपको कभी बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता और आप कभी कोई गलती नहीं कर सकते। इसलिए एक दिन मैंने उससे कहा कि मैं आपको एक बिलकुल फर्जी मामले में फंसा सकता हूँ। बस, यहीं से इस पूरे मामले की शुरुआत हुई। हम सबने इसमें अपनी-अपनी भूमिका निभाई है।’
'आपका मतलब है कि यह एक तरह का पारिवारिक ड्रामा था?'
बिल्कुल सही। मैंने सबको सिखाया था कि क्या बोलना है। मुझे अंदाज़ा था कि आप किस तरह के सवाल पूछ सकते हैं, इसलिए मैंने अपने परिवार के सभी सदस्यों — नौकरों समेत—से अपने-अपने डायलॉग याद करवा लिए थे। मुख्य महिला किरदार तो ज़ाहिर है मेरी भाभी ने निभाया था, जिन्होंने आपको मेरे एक्सीडेंट की वो मनगढ़ंत कहानी सुनाई थी। मुझे नहीं लगा था कि आप कभी इसकी तह तक पहुँच पाएँगे। असल में, मेरे भाई और मैंने इस पर शर्त भी लगाई थी। अब मुझे लगता है मुझे उसे सौ रुपये देने पड़ेंगे। कहने की ज़रूरत नहीं है कि आपकी सफलता से सबसे ज़्यादा खुश और राहत महसूस करने वाली छोटी रूना है। अगर उसका हीरो नाकाम हो जाता, तो वो बहुत दुखी होती। खैर छोड़िए। श्रीमान मित्तर, हमें बताइए कि आपको शुरू में शक कैसे हुआ? आपने कैसे अंदाज़ा लगाया?
‘दो सुराग मिले, दोनों ही मुझे आपके अध्ययन कक्ष में मिले। पहला सुराग हिमालय ऑप्टिकल्स का एक कैश मेमो था। उन्होंने मुझे बताया कि आपने एक सप्ताह पहले नए चश्मे बनवाए थे। आपने सोने के फ्रेम भी ऑर्डर किए थे। लेकिन आपके परिवार में किसी को इसके बारे में पता नहीं था; न ही किसी ने आपको उन्हें पहने देखा था। सवाल यह था कि आपने उन्हें इस विशेष समय पर क्यों बनवाया? आपको उनकी ज़रूरत किसलिए थी?’
दूसरी बात जो मुझे अजीब लगी, वह थी आपकी मेज पर रखा कैलेंडर। तीन दिनों से उसकी तारीख नहीं बदली गई थी। आपके अलावा कभी कोई तारीख नहीं बदलता था। आपने अपने कर्तव्य की उपेक्षा क्यों की?
तभी मेरे मन में एक विचार आया। क्या पता अपहरण की ये कहानी सच ही न हो? क्या पता तुम कुछ अज्ञात बदमाशों के गिरोह द्वारा पकड़े जाने का नाटक ही कर रहे हो? अगर ऐसा है, तो तुम्हें स्वाभाविक रूप से कहीं छिपना पड़ेगा, और इसके लिए तुम्हें अपहरण की घटना से कुछ दिन पहले ही अपना घर छोड़ना पड़ सकता है, ताकि तुम नई जगह के आदी हो सको। मैंने सोचा, एहतियात के तौर पर, तुमने शायद कोई भेस भी बना लिया हो, जिससे नए चश्मे का मतलब समझ में आ जाएगा।
‘बिल्कुल सही! तुम एकदम सही हो!’ रूना ने फिर चिल्लाकर कहा।
अचानक मेरी नज़र लालमोहन बाबू पर पड़ी। वो पिंजरे में बंद शेर की तरह इधर-उधर चक्कर लगा रहे थे। उन्हें क्या हुआ था? मैंने पूछने के लिए मुंह खोला, लेकिन वो अचानक रुक गए और अपने हाथ ऊपर उठा लिए।
‘यूरेका!’ उसने खुशी से कहा।

‘अरे, तो आखिरकार तुम्हें समझ आ ही गया? क्या तुम उसे पहचान सकते हो?’ फेलुदा ने पूछा।
‘Of course. Mrityunjay Som.’
अंबर सेन ने हमें खूब हंसाया।
‘पार्क में हमारी पहली मुलाकात पूरी तरह से संयोगवश हुई थी, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ। दरअसल, मैं जहाँ छिपा था, वह आपके घर से कुछ ही दूरी पर स्थित एक मित्र का घर था। मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि आप उस इलाके में रहते हैं। जब आपने अपना परिचय दिया, तो मुझे मुश्किल से ही विश्वास हुआ। कौन सोच सकता था कि मेरी मुलाकात श्री मिटर की टीम के किसी सदस्य से होगी? फिर मैंने सोचा कि मैं आपसे थोड़ी शरारत कर लूँ। आपने मुझे श्री मिटर के घर में फिर से देखा, लेकिन बिना भेस के मुझे पहचान नहीं पाए।’
‘ठीक है, श्रीमान सेन। मुझे लगता है इससे अधिकांश बातें स्पष्ट हो गई हैं, लेकिन सभी नहीं। हम यह नहीं कह सकते कि पूरा रहस्य सुलझ गया है, है ना?’ फेलुदा ने पूछा।
अंबर सेन की हंसी तुरंत रुक गई, क्योंकि फेलुदा ने ये शब्द गंभीर स्वर में कहे थे।
‘पैसा कहाँ गया?’ फेलुदा ने बेहद गंभीर स्वर में पूछा। माहौल अचानक तनावपूर्ण हो गया।
अंबर सेन ने फेलुदा को तीखी नज़र से देखते हुए कहा, 'श्री मित्तर, मैं खुद भी एक शौकिया जासूस हूँ। अगर मैं आपको बता दूँ कि पैसा आपने ही लिया है, ताकि हम कुछ समय के लिए अंदाज़ा लगाते रहें, तो क्या होगा? जब कोई असली अपराधी नहीं है, किसी का अपहरण नहीं हुआ है, तो पैसा कहाँ गया होगा?' फेलुदा ने सिर हिलाया। 'नहीं, श्रीमान सेन, मुझे खेद है कि आपका अनुमान बिल्कुल गलत है। आज शाम प्रिंसेप घाट पर, मेरे अलावा, कोई और भी भेस बदले हुए था।'
‘सच में? क्या तुमने उसे देखा?’
'हां, लेकिन मैंने उसे पहचाना नहीं।'
‘मैं समझ गया, लेकिन आपने इस बात को लेकर परेशान क्यों होना चाहा? अगर आपको पता था कि वह आदमी भेस बदले हुए है, तो आपको उसे वहीं पकड़ लेना चाहिए था!’ नहीं, यह उतना नाटकीय नहीं होता। आपको ड्रामा पसंद है, है ना? मुझे लगता है कि आपके सामने मौजूद व्यक्ति को बेनकाब करना कहीं अधिक नाटकीय होगा। मेरा मानना है कि वह इस कमरे में मौजूद है। लेकिन मुझे पूरी तरह से आश्वस्त होना होगा।
कमरे में सन्नाटा पसरा हुआ था। मैंने रूना की तरफ तिरछी नज़र डाली। उसका चेहरा भी पीला पड़ गया था।
‘बिलाश बाबू, क्या आप अपने जूते देख सकते हैं?’ फेलुदा ने पूछा। बिलाश बाबू दरवाजे के पास खड़े थे। ‘मेरे जूते?’ उन्होंने उदास स्वर में कहा। ‘देखने की क्या बात है? ये तो तारकोल से सने हुए हैं। घाट पर वह थैला छोड़कर वापस आते समय मेरे पैर जमीन से चिपक रहे थे।’
फेलुदा ने हमसे कहा, ‘मैंने उस खंभे के चारों ओर तारकोल इसलिए फैलाया था क्योंकि मुझे किसी पर शक करने का कारण था। आप सबने मेरे लिए मनगढ़ंत

कहानियां बनाई थीं। लेकिन उस व्यक्ति ने मुझसे जो झूठ बोला, वह बाकी सबसे अलग था... अरे, आप कहाँ जा रहे हैं?’
बिलाश बाबू के मजबूत शरीर ने भागने का एकमात्र रास्ता रोक दिया था। उन्होंने हाथ बढ़ाकर उस व्यक्ति को पकड़ लिया जो जल्दी से निकलने की कोशिश कर रहा था। वह समरेश मल्लिक थे। 'श्री मल्लिक, अपनी चप्पलें उतार दीजिए और सबको देखने दीजिए। बिलाश बाबू शायद आपकी मदद कर सकें।' श्री मल्लिक मूर्ति की तरह स्थिर खड़े रहे। बिलाश बाबू झुके और उनकी एक चप्पल उतार दी। उनके जूतों की तरह, वह भी तारकोल से सनी हुई थी। इसमें कोई संदेह नहीं था कि श्री मल्लिक प्रिंसेप घाट गए थे।
‘आपकी कोह-ए-नूर पिक्चर्स दो साल पहले बंद हो गई थी, है ना?’ फेलुदा ने आगे पूछा। ‘आप लोगों को यह कैसे बता सकते थे कि आप अभी भी वहाँ काम कर रहे हैं? आपने इतने समय तक कैसे गुजारा किया? आपको पैसा कहाँ से मिला?’
श्री मल्लिक ने कोई जवाब नहीं दिया। बिलाश बाबू अब भी उन्हें कसकर पकड़े हुए थे, ऐसा लग रहा था मानो पुलिस के आने तक उन्हें छोड़ने का उनका कोई इरादा नहीं था।
मुझे कहना पड़ेगा कि इस आदमी का पर्दाफाश करने के लिए आप सिर्फ मुझे ही धन्यवाद दें। आपको बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था, श्रीमान सेन, है ना? और अगर मैंने जोर न दिया होता और खुद वहां मौजूद रहने की बात न कही होती, तो आप उस खंभे के पास नकदी से भरा बैग तो बिल्कुल नहीं छोड़ते। खैर, श्रीमान मल्लिक को अब बीस हजार रुपये मिल गए हैं। अगर वह खुद आपको पैसे वापस नहीं करते हैं, तो आप पुलिस को बुलाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं। उनके पास ऐसे लोगों से निपटने के कई तरीके हैं। मेरा काम यहां खत्म हो गया है। मुझे लगता है कि अब हमें जाना चाहिए।
ये शब्द सुनकर लालमोहन बाबू और मैं उठ खड़े हुए, लेकिन हमें फिर से बैठना पड़ा।
‘जाना? बिलकुल नहीं!’ श्रीमती सेन ने हैरानी से कहा। ‘तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हें इतने सारे झूठ बोलने की माफी मांगे बिना जाने दूंगी? नहीं, तुम आज रात हमारे साथ खाना खाए बिना नहीं जा सकते।’
‘इसके अलावा,’ अंबर सेन ने कहा, ‘उस बीस हजार में से कुछ तो निश्चित रूप से आपको मिलना चाहिए। आप अपना हक लिए बिना कैसे जा सकते हैं?’
‘और आज आप तीनों एक साथ आए हैं। क्या आप मेरी ऑटोग्राफ बुक पर हस्ताक्षर करने के लिए नहीं रुकेंगे?’ रूना ने कहा।
लालमोहन बाबू ने निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने घोषणा की, 'अंत भला हो, सब ठीक हो!'

एक
'हेलो, क्या मैं मिस्टर मिटर से बात कर सकता हूँ?'
'बोला जा रहा है।'
'नमस्कार। मेरा नाम शंकरप्रसाद चौधरी है। मैं पनिहाटी में रहता हूं। आप मुझे नहीं जानते, लेकिन मैं आपसे एक विशेष निवेदन करने के लिए फोन कर रहा हूं।'
'हाँ?'
‘मैं चाहता हूँ कि आप पनिहाटी में मेरे घर आएँ। यह गंगा नदी के किनारे है। यह लगभग सौ साल पुराना है और इसे अमरावती कहा जाता है। स्थानीय स्तर पर यह काफी प्रसिद्ध है। मुझे आपके काम के बारे में जानकारी है, और यह भी कि आप आमतौर पर अपने चचेरे भाई और दोस्त के साथ आते हैं, इसलिए मैं आप तीनों को आमंत्रित कर रहा हूँ। क्या आप अगले शनिवार को सुबह लगभग दस बजे आ सकते हैं? आप रात रुक सकते हैं और अगली सुबह वापस जा सकते हैं।’
‘क्या आप किसी तरह की मुसीबत में हैं? मेरा मतलब है, आपने कहा था कि आप मेरे पेशे के बारे में जानते हैं, इसलिए मुझे आश्चर्य हो रहा है...?’
“जी हाँ, मुझे आपकी मदद की ज़रूरत क्यों पड़ेगी? लेकिन मैं इस बारे में फ़ोन पर बात नहीं करूँगा। मुझे लगता है कि आपको मेरे घर में रहना अच्छा लगेगा। आपकी अच्छी देखभाल की जाएगी—मैं इसकी गारंटी दे सकता हूँ—और आपको अपने दिमाग को तेज़ करने का मौका मिलेगा।”
'खैर, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं इस सप्ताहांत खाली हूँ।'
'अगर ऐसा है, तो कृपया हां कहिए। लेकिन मुझे एक और बात बतानी होगी।'
'यह क्या है?'
‘यहां कुछ और लोग भी होंगे। मैं नहीं चाहता कि उन्हें पता चले कि आप कौन हैं—कम से कम अभी तो नहीं। इसके पीछे एक खास वजह है।’
‘आपका मतलब है कि हमें भेस बदलकर आना चाहिए?’
नहीं, नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं होगी। आख़िरकार, आप कोई फ़िल्म स्टार तो नहीं हैं, इसलिए मुझे नहीं लगता कि बाकी लोग आपकी शक्ल-सूरत से वाकिफ़ होंगे। आपको बस तीन अलग-अलग भूमिकाएँ चुननी हैं। मैं तो आपको ये सुझाव भी दे सकता हूँ कि आप कौन सी भूमिकाएँ निभा सकते हैं।
'हाँ?'
‘मेरे परदादा बनवारीलाल चौधरी एक विलक्षण व्यक्ति थे। जब हम मिलेंगे तो मैं आपको उनके बारे में बताऊँगा, लेकिन आप ऐसा दिखावा कर सकते हैं कि आप उनकी जीवनी लिखने के लिए उनके बारे में जानकारी इकट्ठा करने आए हैं। वास्तव में, मुझे लगता है कि अब उनकी जीवनी लिखे जाने का समय आ गया है।’ ‘बहुत खूब। मेरे दोस्त श्री गांगुली के बारे में क्या?’
क्या आपके पास दूरबीन है?

'हाँ।'
तो फिर क्यों न आप उसे पक्षी प्रेमी बना दें? मेरे बगीचे में तो बहुत सारे पक्षी आते हैं। इससे उसे कुछ करने को मिल जाएगा।'
‘ठीक है; और मेरा चचेरा भाई पक्षी-प्रेमी का भतीजा हो सकता है।’
'अच्छा विचार है। तो क्या हम शनिवार को लगभग दस बजे मिलेंगे?'
जी हां, मुझे इसका इंतजार रहेगा। धन्यवाद और अलविदा!
फेलुदा ने फोन रख दिया और मुझे पूरी बातचीत दोहराई। उन्होंने यह कहते हुए बात समाप्त की, 'कुछ लोग इतनी सच्ची गर्मजोशी और ईमानदारी से बात करते हैं कि उनके अनुरोध को ठुकराना असंभव हो जाता है। श्री चौधरी ऐसे ही एक व्यक्ति हैं।'
लेकिन आपको उसे मना करने के बारे में सोचना भी क्यों चाहिए? उसने जो बताया है, उससे लगता है कि पनिहाटी में आपके लिए एक केस है। कम से कम कभी-कभार तो आपको कुछ पैसे कमाने के बारे में सोचना ही होगा।
पिछले कुछ महीनों से फेलुदा ने एक भी केस लेने से इनकार कर दिया था। ऐसा अक्सर तब होता था जब वे लगातार कई केसों में व्यस्त रहते थे और उन्हें एक से ज़्यादा केसों पर काम करना पड़ता था। फिर वे कुछ समय का अवकाश लेते और अलग-अलग विषयों का अध्ययन करते। आजकल उनका सबसे बड़ा जुनून आदिम मानव का अध्ययन करना था। उन्हें रिचर्ड लीकी नामक एक अमेरिकी वैज्ञानिक का एक लेख मिला जिसमें यह सुझाव दिया गया था कि विकास की वास्तविक प्रक्रिया आम धारणा से कहीं अधिक समय लेती है। इससे फेलुदा बेहद उत्साहित हो गए। उन्होंने पाँच बार संग्रहालय का दौरा किया, तीन बार राष्ट्रीय पुस्तकालय गए और एक बार चिड़ियाघर गए।
एक बार उन्होंने मुझसे कहा, ‘क्या आप जानते हैं कि नवीनतम सिद्धांत क्या कहता है?’ ‘यह कहता है कि मनुष्य एक विशेष प्रकार के बंदरों से उत्पन्न हुआ है जिन्हें “हत्यारा बंदर” कहा जाता है। इसीलिए मनुष्य में हिंसा की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है।’
पनिहाटी में हिंसा का सामना करने की संभावना बहुत कम लग रही थी, लेकिन मुझे पता था कि फेलुदा को कुछ दिनों के लिए कलकत्ता से बाहर जाने का मौका पाकर खुशी होगी। वास्तव में, हम सभी को पड़ोसी शहरों की छोटी-छोटी यात्राएँ बहुत पसंद आईं।
शनिवार की सुबह हम लालमोहन बाबू की एम्बेसडर कार में पनिहाटी के लिए रवाना हुए। उनका ड्राइवर अनुपस्थित था, इसलिए फेलूदा ने उसकी जगह ले ली। जैसे ही हम रवाना हुए, लालमोहन बाबू ने कहा, 'फेलू बाबू, तुमने मुझ पर कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी लाद दी है! मैं पक्षी प्रेमी? मैं तो जहाँ रहता हूँ वहाँ कौवे और गौरैया के सिवा कुछ नहीं देखा। ये दूरबीनें और ये दो किताबें जो तुमने मुझे पढ़ने को दी हैं, मेरे किस काम की?' ये दो किताबें सलीम अली की 'इंडियन बर्ड्स' और अजय होम की 'द बर्ड्स ऑफ बंगाल' थीं।
‘चिंता मत करो,’ फेलुदा ने उसे दिलासा देते हुए कहा। ‘बस याद रखना कि कौवे का नाम Corvus splendens है और गौरैया का नाम Passer domesticus है। लेकिन तुम्हें उन सभी पक्षियों के लैटिन नाम सीखने की कोशिश करने की ज़रूरत नहीं है जो तुम्हें दिखें—इससे तुम हकलाने लगोगे। बस तुम्हें साधारण

अंग्रेज़ी नाम जैसे ड्रोंगो, टेलर-बर्ड या जंगल बैबलर बोल देने हैं। अगर यह भी मुश्किल लगे, तो बस दूरबीन से देखते रहना। इतना काफी है।’
‘मैं समझ गया। और मेरे लिए एक नए नाम के बारे में क्या?’
‘आप भाबतोष सिन्हा हैं। टॉपशे आपका भतीजा है। उसका नाम प्रबीर है। और मैं सोमेश्वर रॉय हूं।’
हम पानीहाटी में श्री चौधरी के घर दस बजने से पांच मिनट पहले पहुँचे। द्वार पर खड़े गोरखा ने हमारी गाड़ी आते देख द्वार खोल दिया। फेलुदा ने धीरे-धीरे पत्थरों से बने रास्ते पर गाड़ी चलाई। घर बहुत बड़ा था और उसका परिसर भी विशाल था। जिसने भी इसे डिज़ाइन किया होगा, वह अंग्रेजी किलों से ज़रूर प्रभावित रहा होगा, क्योंकि घर का पूरा ढाँचा मुझे तुरंत उन किलों की याद दिला गया जो मैंने तस्वीरों में देखे थे। एक तरफ बगीचा था जिसमें कई तरह के फूल लगे थे। एक कोने में ग्रीनहाउस था, जिसके पीछे फलों का बाग शुरू होता था।
श्री चौधरी दरवाजे पर हमारा इंतजार कर रहे थे। जैसे ही हम बाहर निकले, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'अमरावती में आपका स्वागत है!' वे लगभग पचास वर्ष के लग रहे थे, मध्यम कद के थे और उनका रंग साफ था। उन्होंने पजामा- कुर्ता पहना हुआ था और एक हाथ में सिगार था।
श्री चौधरी ने कहा, 'मेरा चचेरा भाई जयंता कल आया था। मैंने उसे सब कुछ बता दिया है, लेकिन वह दूसरों को यह नहीं बताएगा कि तुम असल में कौन हो। मुझे उस पर पूरा भरोसा है।'
‘बहुत अच्छा। लेकिन क्या बाकी लोग पहले से ही यहाँ हैं?’
नहीं, मुझे शाम को उनके आने की उम्मीद है। कृपया अंदर आ जाइए; आप थोड़ा आराम कर सकते हैं, और हम अंदर आराम से बात कर सकते हैं।
हम अंदर गए और नदी के किनारे बने एक चौड़े बरामदे में बैठ गए। वह बहुत सुंदर था। मैंने देखा कि कुछ सीढ़ियाँ पानी के किनारे तक जा रही थीं। ऐसा लग रहा था कि वह किसी का निजी स्नान घाट था।
‘क्या वह घाट अभी भी उपयोग में है?’ फेलुदा ने पूछा।
'ओह हाँ। मेरी चाची यहीं रहती हैं, आप जानते हैं। वह प्रतिदिन गंगा में स्नान करती हैं।'
क्या वह अकेले रहती है?
नहीं, नहीं। मैं पिछले कुछ सालों से यहीं रह रहा हूँ। मैं टीटागढ़ में काम करता हूँ। यह मेरे कलकत्ता स्थित घर से ज़्यादा पास है।
‘तुम्हारी चाची की उम्र कितनी है?’
‘अठहत्तर साल की। हमारी बूढ़ी नौकरानी अनंता उनकी देखभाल करती है। उनकी सेहत लगभग ठीक है, बस उनके ज़्यादातर दांत गिर गए हैं और दोनों आंखों से मोतियाबिंद का ऑपरेशन करवाना पड़ा है। इसके अलावा, बुढ़ापे के कारण उनकी याददाश्त थोड़ी कमज़ोर हो गई है—उन्हें अब नाम याद नहीं रहते, खाना खिलाने के बाद भी वे शिकायत करती हैं कि उन्होंने कुछ नहीं खाया, कभी-कभी वे आधी रात को उठकर अपने लिए पान के पत्ते मसलती हैं, क्योंकि अब वे पान चबा नहीं सकतीं... आप जानते ही हैं, इस तरह की बातें। उन्हें अनिद्रा भी है। अगर उन्हें हर दिन दो घंटे की नींद मिल जाए, तो वे खुद को भाग्यशाली समझती

हैं। वे कलकत्ता में रह सकती थीं, लेकिन मेरे चाचा की मृत्यु के बाद, उन्होंने यहां आकर रहने का फैसला किया।’
एक वेटर थाली में चाय और मिठाई लेकर आया। श्री चौधरी ने आमंत्रित करते हुए कहा, 'आप स्वयं ले लीजिए। दोपहर का भोजन थोड़ा देर से होगा। मुझे लगता है आपको मिठाई पसंद आएगी। कलकत्ता में ऐसी मिठाई नहीं मिलती।'
‘धन्यवाद,’ फेलुदा ने ट्रे से गर्म प्याला उठाते हुए जवाब दिया। ‘अच्छा, श्रीमान चौधरी, आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ। अगर आप मुझे अपना परिचय और काम बता दें तो अच्छा होगा। आशा है आपको कोई आपत्ति नहीं होगी?’
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। मैंने आपको यहाँ सिर्फ़ कुछ बातें बताने के लिए बुलाया था, है ना? सीधे शब्दों में कहूँ तो, मैं एक व्यवसायी हूँ। एक सफल व्यवसायी, जैसा कि आप देख सकते हैं।
‘क्या आपके परिवार का हमेशा से कोई व्यवसाय रहा है?’
‘नहीं। यह घर मेरे परदादा बनवारीलाल चौधरी ने बनवाया था।’
‘क्या यह वही व्यक्ति है जिसकी जीवनी मुझे लिखनी है?’
“जी हां, सही है। वे एक बैरिस्टर थे। वे रामपुर में वकालत करते थे। समय के साथ, वे काफी धनी हो गए और कलकत्ता आ गए। फिर उन्होंने यहां बसने का फैसला किया और यह घर बनवाया। दरअसल, उनकी मृत्यु इसी घर में हुई थी। मेरे दादाजी भी बैरिस्टर थे, लेकिन जुए और शराब की लत ने उनकी सारी बचत खत्म कर दी। मेरे पिताजी ने एक व्यवसाय शुरू किया और अंततः हमारी आर्थिक स्थिति को फिर से मजबूत किया। मैंने बस वही काम आगे बढ़ाया जो मेरे पिताजी ने शुरू किया था। फिलहाल हालात बहुत बुरे नहीं हैं। मुझे बस इस बात का दुख होता है कि मेरे दादाजी ने जुए के कर्ज चुकाने के लिए बनवारीलाल की कितनी संपत्ति बेच दी थी।”
‘तुम्हारे चचेरे भाई के बारे में क्या?’
‘जयंता ने मेरे कारोबार में मेरा साथ नहीं दिया। वह एक इंजीनियरिंग फर्म में काम करता है। मुझे लगता है कि वह अच्छी कमाई करता है, लेकिन हाल ही में उसने अपने क्लब में पोकर खेलना शुरू कर दिया है। साफ है कि हमारे दादाजी का खून उसकी रगों में दौड़ता है। जयंता मुझसे पांच साल छोटा है।’
मैंने देखा कि फेलुदा ने हांगकांग से लाए गए माइक्रोकैसेट रिकॉर्डर को चालू कर दिया था। अब ग्राहक की बातों को रिकॉर्ड करना बहुत आसान हो गया था। श्री चौधरी ने आगे कहा, 'ठीक है, मेरे रिश्तेदारों के बारे में तो मैंने बता ही दिया। चलिए, मैं आपको कुछ अन्य लोगों के बारे में भी बताता हूं।'
‘इससे पहले कि आप ऐसा करें,’ फेलुदा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘कृपया मुझे एक प्रश्न पूछने की अनुमति दें। हालाँकि यह लगभग मिट चुका है, फिर भी मुझे आपके माथे पर सफेद टीका के निशान दिखाई दे रहे हैं। क्या इसका मतलब यह है कि—?’
'हां, आज मेरा जन्मदिन है। मेरी चाची ने मुझे टीका लगाया है।'
'ओह, मैं समझ गया। क्या इसीलिए आपने आज शाम अपने दोस्तों को आमंत्रित किया है?'
‘सिर्फ तीन लोग होंगे। मैंने उन्हें पिछले साल अपने पचासवें जन्मदिन के जश्न में आमंत्रित किया था। इस साल अपने जन्मदिन पर मैं दोबारा लोगों को

आमंत्रित नहीं करना चाहती थी। लेकिन एक खास वजह है जिसकी वजह से मुझे ऐसा करना पड़ा।’
और वह क्या है?
श्री चौधरी ने एक मिनट सोचा। फिर उन्होंने कहा, 'यदि आप कृपा करके मेरे साथ ऊपर मेरी चाची के कमरे में आएँगे, तो मैं आपको बेहतर ढंग से समझा सकता हूँ।' हमने अपनी चाय और गुलाब का आनंद समाप्त किया। ऊपर जाने वाली सीढ़ियाँ ड्राइंग रूम से होकर गुजरती थीं। विशाल ड्राइंग रूम में सजे खूबसूरत पुराने फर्नीचर, झूमर, कालीन और संगमरमर की मूर्तियों को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ।
'तुम्हारी चाची के अलावा पहली मंजिल पर और कौन रहता है?' फेलुदा ने तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ते हुए पूछा।
‘मेरी चाची का कमरा एक छोर पर है। मेरा कमरा दूसरे छोर पर है। जब जयंता हमसे मिलने आता है, तो वह भी इमारत के मेरे हिस्से वाले कमरे में सोता है।’ हम सीढ़ियों से उतरकर श्री चौधरी की चाची के कमरे में दाखिल हुए। कमरा बड़ा था, पर सादा सा था। एक खुले दरवाजे से ठंडी-ठंडी हवा आ रही थी। लगता है नदी उसी तरफ बहती है। एक बुज़ुर्ग महिला खुले दरवाजे के पास चटाई पर बैठी थी, हाथ में प्रार्थना की माला थी। उसके बगल में चटाई पर एक चक्की, एक डिब्बे में पान के कुछ पत्ते और एक मोटी किताब रखी थी। मैंने सोचा, ये रामायण या महाभारत होगी। बुज़ुर्ग महिला ने ऊपर देखा और मोटे लेंस से हमें गौर से देखा।
श्री चौधरी ने उन्हें बताया, 'मेरे पास कलकत्ता से कुछ मेहमान आए हुए हैं।' ‘तो तुमने इन्हें यह प्राचीन अवशेष दिखाने का फैसला किया?’ उसकी चाची ने पूछा। हम उनके पैर छूने के लिए आगे बढ़े। ‘तुम्हारे आने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद,’ उन्होंने कहा। ‘मुझे तुम्हारे नाम बताने का कोई फायदा नहीं है। मुझे एक भी नाम याद नहीं है। अरे, मैं तो अक्सर अपना नाम ही भूल जाती हूँ! खैर, कोई बात नहीं, मेरे दिन तो गिने-चुने ही हैं। मुझे बस अंत का इंतजार करना है…’
‘कृपया इधर आइए।’
श्री चौधरी के बोलते ही हम मुड़ गए। बुढ़िया अपनी प्रार्थना की माला में वापस लीन हो गई और धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदाने लगी।
श्री चौधरी हमें कमरे के दूसरे छोर पर ले गए जहाँ एक विशाल संदूक रखा था। उन्होंने अपनी जेब से चाबी निकाली और उसे खोलने लगे। उन्होंने कहा, “अब मैं आपको जो दिखाने जा रहा हूँ, वह कभी मेरे परदादा का था। रामपुर में उनके कई ग्राहक नवाब थे, जो अक्सर उन्हें महंगे उपहार देते थे। हालाँकि उनके बेटे ने उनमें से अधिकांश को बेच दिया था, फिर भी जो बचा है वह कम महत्वपूर्ण नहीं है। इन्हें देखिए!”
उन्होंने एक छोटा मखमली थैला उठाया और उसे अपनी हथेली पर पलटा। उसमें से कई सोने के सिक्के गिर पड़े। श्री चौधरी ने कहा, 'कहा जाता है कि इनका इस्तेमाल जहांगीर करता था। हर सिक्के पर राशि चक्र का चिन्ह खुदा हुआ है।' लेकिन आपके पास यहाँ केवल ग्यारह ही हैं। निश्चित रूप से बारह राशि चिन्ह होते हैं?

'हां। एक सिक्का गायब है।'
हमने हैरानी भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा। गायब? यह क्यों गायब था? श्री चौधरी ने आगे कहा, 'लेकिन यहाँ और भी दिलचस्प वस्तुएँ हैं। देखिए, इटली से लाया गया यह सोने का स्नफ़ बॉक्स है। इसमें माणिक जड़े हुए हैं। जेड से बना एक प्याला है, जिसमें भी माणिक और पन्ना जड़े हुए हैं, और कीमती पत्थरों से बनी अंगूठियों और लटकनों का एक बड़ा संग्रह है। मैं आपको ये सब शाम को दिखाऊंगा जब बाकी लोग यहाँ होंगे।'
‘इस संदूक की चाबी तुम्हारे पास है, है ना?’ फेलुदा ने पूछा।
'हां। इसकी एक प्रतिकृति मेरी चाची की अलमारी में रखी है।'
लेकिन आपने इस संदूक को अपने कमरे में क्यों नहीं रखा?
‘मेरे परदादा इस कमरे में रहते थे। उन्होंने ही इस संदूक को इस कोने में रखा था। मुझे इसे हटाने का कोई कारण नहीं दिखा। इसके अलावा, द्वार पर बहुत ही भरोसेमंद पहरेदार हैं और मेरी चाची अपना अधिकांश समय इसी कमरे में बिताती हैं। इसलिए इसे यहीं छोड़ना बिल्कुल सुरक्षित है।’
हम नीचे बरामदे में लौट आए। फेलुदा ने अपना रिकॉर्डर फिर से चालू किया और पूछा, 'एक सिक्का गायब कैसे हो सकता है?'
मैं इसी बारे में आपसे बात करना चाहता हूँ। देखिए, पिछले साल मेरे जन्मदिन पर मैंने तीन लोगों को आमंत्रित किया था। उनमें से एक मेरे व्यापारिक साझेदार नरेश कांजीलाल थे। दूसरे अतिथि डॉ. अर्धेन्दु सरकार थे, जो यहाँ पानीहाटी में रहते हैं। तीसरे अतिथि कालिनाथ रॉय थे, जो स्कूल के मेरे पुराने दोस्त थे। उनसे मेरा संपर्क पूरी तरह टूट गया था। उन्होंने पैंतीस साल बाद मुझसे संपर्क किया। इन सभी अतिथियों ने मेरे परदादा की संपत्ति के बारे में सुना था, लेकिन किसी ने भी उन्हें देखा नहीं था। उस शाम मैंने जयंता से सोने के सिक्कों से भरा छोटा थैला निकालकर ड्राइंग रूम में लाने को कहा। उसने ऐसा किया, और मैंने बारहों सिक्के एक मेज पर फैला दिए। हम उन्हें ध्यान से देखने के लिए झुक रहे थे कि अचानक बिजली चली गई। वैसे, यह कोई असामान्य बात नहीं थी। एक बिजलीकर्मी दो मिनट से भी कम समय में मोमबत्तियाँ ले आया, और मैंने सिक्के वापस संदूक में रख दिए। मूर्खतावश, मैंने उन्हें तब गिना नहीं क्योंकि मुझे कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि कोई सिक्का गायब हो सकता है। अगले दिन जब मुझे यह एहसास हुआ कि सिक्कों को गिनना एक अच्छा विचार हो सकता है, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मेरे मेहमान जा चुके थे, और कैंसर का निशान दिखाने वाला सिक्का गायब हो चुका था।
‘क्या आपको यकीन है कि आपने खुद ही सिक्के रखे थे?’
'जी हां। लेकिन श्री मित्तर, मेरी दुर्दशा के बारे में सोचिए। वे तीनों बाहरी लोग मेरे मेहमान थे। मैं अपने व्यापारिक साझेदार को पच्चीस वर्षों से जानता हूं। डॉ. सरकार यहां के जाने-माने डॉक्टर हैं; और कालिनाथ मेरे पुराने मित्र हैं।'
लेकिन क्या वे पूरी तरह ईमानदार हैं? क्या आपको इस बारे में कोई पुख्ता जानकारी है?
नहीं, और इसीलिए मैं पूरी तरह से उलझन में हूँ। उदाहरण के लिए, कंजीलाल को ही ले लीजिए। कई व्यापारी अपने लेन-देन में बेईमान होते हैं, लेकिन मैंने

कंजीलाल को बिना किसी झिझक के झूठ बोलते और धोखा देते देखा है। यह बात मुझे बहुत परेशान करती है। वह यह जानता है और अक्सर मुझ पर हंसता है। वह कहता है कि मुझे अपना व्यवसाय छोड़ देना चाहिए और उपदेशक बन जाना चाहिए।
और दूसरा?
‘मैं डॉक्टर के बारे में ज्यादा नहीं जानती। वो कभी-कभार मेरी चाची का गठिया का इलाज करते हैं, बस इतना ही। लेकिन कालिनाथ... वो मुझे सोचने पर मजबूर कर देते हैं। एक दिन उन्होंने अचानक मुझे फोन किया और कहा कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ उन्हें अतीत की याद आने लगी है। उन्हें अपने बचपन के दोस्तों की याद आती है, इसलिए वो मुझसे मिलने आना चाहते हैं।’
‘क्या आपने इतने वर्षों बाद भी उन्हें आसानी से पहचान लिया?’
हां। इसके अलावा, उन्होंने हमारे स्कूल के दिनों के बारे में बहुत विस्तार से बात की। इसमें कोई शक नहीं कि वह मेरे पुराने सहपाठी हैं। मुझे चिंता इस बात की है कि वह मुझे कभी नहीं बताते कि वह क्या काम करते हैं। मैंने उनसे कई बार पूछा है, लेकिन उन्होंने हमेशा यही कहा है कि वह भी एक व्यवसायी हैं। मुझे इसके अलावा कोई और जानकारी नहीं है। वह काफी प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं—बहुत हंसमुख और हंसमुख, और अपने हाथों से बहुत हुनरमंद हैं। उन्होंने स्कूल में जादू सीखा था और वास्तव में, अब भी वह हाथ की सफाई दिखाने में काफी माहिर हैं।
'लेकिन आपका चचेरा भाई भी कमरे में था, है ना?'
'हां। हालांकि, वह मेज के आसपास कहीं खड़ा नहीं था। उसने सिक्के पहले भी देखे थे, इसलिए उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। अगर किसी ने इसे चुराया है, तो वह बाकी तीन में से ही कोई एक होगा।'
‘जब आपको पता चला कि एक सिक्का गायब हो गया है, तो आपने क्या किया?’
‘मैं क्या कर सकता था? कोई और होता तो पुलिस को सूचना देता और इन लोगों के घरों की तलाशी करवाता। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता था। मैंने इनके साथ कितनी बार ब्रिज खेला है। भगवान के लिए, मैंने हमेशा इन्हें अपना दोस्त माना है! मैं अचानक पलटकर इनमें से किसी को चोर कैसे कह सकता था?’
'क्या इसका मतलब यह है कि आपने कुछ भी नहीं किया, और इसलिए उनमें से किसी को भी यह एहसास नहीं हुआ कि वह संदेह के घेरे में हो सकता है?'
'बिल्कुल सही। पिछले बारह महीनों में, मैं उनसे कई बार मिला हूँ, लेकिन उन सभी का व्यवहार बिल्कुल सामान्य रहा है। उनमें से कोई भी मेरी उपस्थिति में कभी असहज नहीं दिखा। फिर भी, मुझे पता है कि उनमें से कोई एक ही दोषी होगा।'
हम सब चुप हो गए। यह कितनी अजीब स्थिति थी! लेकिन अब क्या किया जाए?
कुछ ही सेकंड बाद फेलुदा ने वही सवाल पूछा। श्री चौधरी ने जवाब दिया, 'मेरे पास एक योजना है, श्री मित्तर। चूंकि इनमें से किसी को भी नहीं लगता कि मुझे उन पर शक है, इसलिए मैंने उन्हें बनवारीलाल की कुछ अन्य कीमती चीज़ें देखने के लिए फिर से आमंत्रित किया है। पिछले कुछ हफ्तों से, हर शाम ठीक सात बजे बिजली कट जाती है। आज, मैं इन वस्तुओं को सात बजे से कुछ मिनट पहले उसी मेज पर रखूंगा। जब बत्तियां बुझ जाएंगी, तो मुझे उम्मीद है कि चोर कुछ और चुराने के लालच का विरोध नहीं कर पाएगा। इन वस्तुओं का कुल मूल्य लगभग

पांच मिलियन रुपये होगा, श्री मित्तर। अगर इस बार कुछ चोरी हो जाता है, तो आप लेखक होने का नाटक करना बंद कर सकते हैं और तुरंत जांच शुरू कर सकते हैं।'
‘ठीक है। इस सब के बारे में आपके चचेरे भाई का क्या कहना है?’
'उसे मेरी योजना के बारे में कल रात तक कुछ भी पता नहीं था। पहले तो वह काफी नाराज़ हो गया। उसने कहा कि मुझे एक साल पहले ही पुलिस के पास जाना चाहिए था, और अब तुम्हारे लिए कुछ भी करने में बहुत देर हो चुकी है।'
‘क्या मैं कुछ कह सकता हूँ, श्रीमान चौधरी?’
'हां बेशक।'
‘चोर ने बस आपके शांत और सहज स्वभाव का फायदा उठाया। अगर लोगों को तथ्यों पर उतना ही भरोसा होता जितना आपको लगता है, तो शायद ही कोई अपने मेहमान पर चोरी का आरोप लगाने में संकोच करता।’
‘मुझे पता है। इसीलिए तो मैंने आपकी मदद मांगी थी। मुझे पता है कि आप वह कर पाएंगे जो मैं नहीं कर सका।’

दो
हमने थोड़ी देर बाद दोपहर का भोजन किया। श्री चौधरी के रसोइए ने बहुत ही बढ़िया खाना बनाया, जिसमें गंगा नदी से लाई गई हिलसा मछली को सरसों की चटनी में पकाया गया था। खाने की मेज पर हमारी मुलाकात श्री चौधरी के चचेरे भाई जयंता से हुई। वे बहुत ही मिलनसार व्यक्ति लगे, कद में छोटे लेकिन अच्छी कद-काठी के थे।
दोपहर के भोजन के बाद श्री चौधरी ने कहा, 'मैं थोड़ी देर आराम करने जा रहा हूँ। आप जो चाहें कर सकते हैं। मैं आपसे चाय के समय मिलूंगा।'
हमने जयंता बाबू के साथ परिसर का भ्रमण करने का निर्णय लिया।
घर के पश्चिमी हिस्से में खंभों वाली एक दीवार थी जो सीधे नदी तक जाती थी। दीवार जहाँ खत्म होती थी, वहाँ से एक ढलान शुरू होती थी जो नदी के किनारे तक जाती थी। जयंता बाबू हमें बगीचा दिखाने ले गए। उन्हें फूलों से, खासकर गुलाबों से बहुत लगाव था। उन्होंने इस विषय पर काफी देर तक बात की। मुझे पहली बार पता चला कि गुलाबों की तीन सौ किस्में होती हैं।
उत्तर दिशा में एक और द्वार था। जयंता बाबू ने हमें बताया कि घर के अधिकांश लोग मुख्य शहर जाने के लिए इसी द्वार का इस्तेमाल करते थे। इस तरफ भी सीढ़ियों का एक और रास्ता था, जो नदी की ओर नीचे जाता था। जयंता बाबू ने कहा, 'मेरी मां—वह बुढ़िया जिनसे आप आज सुबह मिले थे—नदी में स्नान करने के लिए इन्हीं सीढ़ियों का इस्तेमाल करती हैं।'
कुछ मिनटों बाद हम अपने कमरे में वापस आ गए। जयंता बाबू अपने ऑर्किड देखने के लिए ग्रीनहाउस में गए। हमें भूतल पर दो सटे हुए कमरे दिए गए थे। गलियारे के पार तीन और कमरे थे। संभवतः वे अन्य तीन मेहमानों के लिए थे।
लालमोहन बाबू ने बड़े, आरामदायक बिस्तर पर एक नज़र डाली और कहा, 'अरे, मुझे भी झपकी लेने का मन कर रहा है। लेकिन नहीं, मुझे वो किताबें पढ़नी होंगी जो आपने मुझे दी हैं।'
जब वह चला गया, तो मैंने कहा, 'फेलुदा, क्या तुमने आज शाम की योजना के बारे में सोचा है? अगर सात बजे बिजली चली भी जाए, तो क्या होगा अगर चोर इस बार कुछ भी न चुराए? तुम उसे कैसे पकड़ोगे?'
‘मैं नहीं कर सकता। कम से कम, तीनों लोगों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किए बिना तो नहीं। चोरी करने की प्रवृत्ति रखने वाले किसी भी व्यक्ति के व्यवहार में सूक्ष्म अंतर होता है। अगर मैं उसे गौर से देखूं तो इसे पहचानना असंभव नहीं होना चाहिए। यह मत भूलिए कि चोर एक अपराधी होता है, चाहे उसका रूप-रंग कितना भी सुसंस्कृत और परिष्कृत क्यों न हो।’
कुछ ही देर में, सामने के दरवाजे के बाहर दो कारों के रुकने की आवाज़ से हमें पता चला कि मेहमान आ गए हैं। जब बरामदे में चाय परोसी जा चुकी थी, तब श्री चौधरी स्वयं हमें लेने आए और उन्होंने हमें बाकी लोगों से मिलवाया।

डॉक्टर सरकार एक मील के दायरे में ही रहते थे, इसलिए वे पैदल ही आए थे।
लगभग पचास वर्ष के, उनके बाल झड़ रहे थे और उनमें सफ़ेद बाल आ गए थे। लेकिन उनकी मूंछें एकदम काली थीं।
नरेश कांजीलाल लंबा और हट्टा-कट्टा था। उसने औपचारिक सूट पहना हुआ था। उसने फेलुदा से कहा, 'मुझे बहुत खुशी है कि आपने बनवारीलाल की जीवनी लिखने का फैसला किया है। मैंने शंकर से कई बार ऐसा करने को कहा है। बनवारीलाल एक असाधारण व्यक्ति थे।'
कालीनाथ रॉय एक हंसमुख इंसान निकले। उनके कंधे पर एक थैला था, जिसमें शायद जादू के उपकरण थे। लालमोहन बाबू से मिलते ही वे मुस्कुराए और बोले, 'किसने सोचा था कि एक पक्षी प्रेमी अपनी जेब में अंडा लेकर घूमेगा?' फिर उन्होंने झट से लालमोहन बाबू की जेब में हाथ डाला और एक चिकना सफेद पत्थर जैसा अंडा निकाला। 'कितना अफ़सोस!' उन्होंने अफसोस जताते हुए सिर हिलाया। 'मैं तो इसे तलने की सोच रहा था!'
यह तय किया गया कि रात के खाने के बाद, श्री रॉय हमारे लिए एक छोटा सा जादू का शो करेंगे।
अंधेरा होने लगा था। सूरज की आखिरी किरणें पानी पर पड़ रही थीं। नदी से ठंडी हवा चल रही थी। श्री कांजीलाल और श्री रॉय टहलने चले गए। लालमोहन बाबू कुछ देर से बेचैन थे। अब वे दूरबीन हाथ में लिए खड़े हो गए और बोले, 'मुझे लगा मैंने पैराडाइज फ्लाईकैचर की आवाज सुनी। चलो देखते हैं कि पक्षी कहीं आस-पास है या नहीं।' लालमोहन बाबू के बाहर जाते ही मैंने फेलुदा की तरफ देखा; लेकिन फेलुदा के चेहरे पर कोई भाव नहीं था, इसलिए मैं अपनी हंसी रोक नहीं पाई।
डॉक्टर सरकार ने अपने कप से एक घूंट लिया और श्री चौधरी की ओर मुड़े। 'आपका चचेरा भाई कहाँ है? क्या वह अभी भी अपने बगीचे में घूम रहा है?'
'तुम्हें पता है कि उसे अपने फूलों से कितना लगाव है।'
'सच है। लेकिन मैंने उससे कहा था कि अगर उसे लंबे समय तक धूप में रहना हो तो टोपी पहन ले। क्या उसने मेरी सलाह मानी?'
‘क्या आपको लगता है कि जयंता कभी डॉक्टर की सलाह मानेगा? आप उसे इससे बेहतर जानते हैं, है ना?’
फेलुदा अपने हाथ में चारमीनार लिए डॉक्टर को छुपकर देख रहा था।
‘आपकी चाची कैसी हैं?’ डॉ. सरकार ने पूछा।
'बुरा नहीं है। लेकिन वह भूख न लगने की शिकायत कर रही थी। आप उससे मिलने क्यों नहीं जाते?'
'हां, मुझे लगता है मैं ऐसा ही करूंगा। क्षमा कीजिए।'
डॉक्टर सरकार उठे और ऊपर चले गए। उनके जाते ही जयंता बाबू बगीचे से मुस्कुराते हुए वापस आ गए।
‘अरे, इसमें इतनी मजेदार बात क्या है?’ श्री चौधरी ने पूछा।
जयंता बाबू ने अपने लिए एक कप चाय डाली और मुस्कुराते हुए फेलुदा की ओर मुड़े। 'तुम्हारा दोस्त खुद को पक्षी-प्रेमी साबित करने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा है। मैंने उसे बगीचे में दूरबीन से देखते हुए, एकदम गंभीर मुद्रा में पाया।'

फेलुदा हँसा। 'अच्छा, आज यहाँ मौजूद लगभग हर किसी को थोड़ा-बहुत अभिनय करना ही पड़ेगा, है ना? तुम्हारे चचेरे भाई की योजना में नाटकीयता का भरपूर तड़का है, तुम्हें ऐसा नहीं लगता?'
जयंता बाबू ने मुस्कुराना बंद कर दिया।
‘क्या आप मेरे चचेरे भाई की योजना से सहमत हैं?’ उसने पूछा।
‘क्यों नहीं?’
नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे पूरा यकीन है कि चोर इतना चालाक है कि इतनी साफ़ बात पर नहीं फँसेगा। आपको क्या लगता है कि उसे नहीं पता कि हमें पता चल गया है कि एक सोने का सिक्का गायब है?
‘जी हां, जयंता, तुम बिल्कुल सही कह रही हो,’ श्री चौधरी ने उत्तर दिया, ‘लेकिन मैं फिर भी इसे आजमाना चाहता हूं। इसे महज एक सनक कह लो, या फिर बहुत सारे जासूसी उपन्यास पढ़ने का नतीजा।’
क्या आप संदूक से हर एक वस्तु बाहर निकालना चाहते हैं?
नहीं, नहीं, बस तंबाकू की डिब्बी और प्याला। दोनों एक हाथीदांत के डिब्बे में हैं। डॉक्टर सरकार इस समय आपकी माँ के साथ हैं। उनके लौटते ही आपको तुरंत उनके कमरे में जाकर मुझे ये दोनों चीजें लाकर देनी हैं। ये रही चाबी।
जयन्त बाबू ने बड़ी अनिच्छा से चाबी ले ली।
डॉक्टर सरकार पांच मिनट में लौट आए। उन्होंने खुशी से कहा, 'आपकी चाची बिल्कुल ठीक हैं। मैंने उन्हें बरामदे में चावल और दूध खाते हुए छोड़ा था। श्री चौधरी, वह अभी कुछ समय और जीवित रहेंगी। उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।'
जयंता बाबू बिना कुछ कहे चले गए। डॉ. सरकार ने फेलुदा से पूछा, 'तुम अभी तक यहाँ क्यों बैठे हो? चलो बाहर चलते हैं और ताज़ी हवा लेते हैं। कलकत्ता में तुम्हें ऐसी साफ हवा कभी नहीं मिलेगी।'
हम सब उठे और सीढ़ियों से नीचे उतर गए। मैंने बगीचे में संगमरमर की एक मूर्ति के पीछे लालमोहन बाबू को देखा, जो अभी भी दूरबीन से देख रहे थे। ‘क्या तुम्हें पैराडाइज फ्लाईकैचर मिला?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
नहीं। लेकिन मुझे लगता है मैंने एक जंगली चिड़िया देखी।
‘लालमोहन बाबू, अब पक्षियों के अपने घोंसलों में लौटने का समय हो गया है। कुछ ही मिनटों में आपको उल्लू के अलावा कुछ भी नहीं मिलेगा।’
नरेश कंजीलाल और कालीनाथ रॉय दोनों का कोई अता-पता नहीं था। वे कहाँ चले गए थे? क्या वे ग्रीनहाउस के पीछे वाले बगीचे में हो सकते हैं?
‘अरे, नरेश, तुम कहाँ छिपे हो?’ श्री चौधरी ने पुकारा। ‘और कालिनाथ, तुम कहाँ चले गए हो?’
‘मैंने उनमें से एक को घर में जाते देखा,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘कौन सा?’ मुझे लगता है कि यह जादूगर था।
लेकिन लालमोहन बाबू गलत थे। घर से बाहर निकले तो वह नरेश कांजीलाल थे, न कि कालिनाथ रॉय। हमें देखकर उन्होंने कहा, “सूरज डूबते ही तापमान बहुत तेजी से गिर जाता है, इसलिए मैं शॉल लेने अंदर गया था।”
‘कालीनाथ कहाँ है?’

‘अरे, बगीचे में पहुँचते ही वह मुझे छोड़कर चला गया। उसने कहा कि उसने पुराने, मुरझाए फूलों को नए ताज़े फूलों में बदलने की एक नई तरकीब सीख ली है, इसलिए...’
श्री कंजीलाल अपनी बात पूरी नहीं कर पाए थे कि श्री चौधरी के पुराने नौकर अनंत ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। अनंत चिल्लाता और हाथ हिलाता हुआ घर से बाहर भागा आया। श्री चौधरी ने चिंता से पूछा, 'अरे अनंत, क्या बात है?' ‘जल्दी आइए, महोदय। मैं जयंता बाबू हूँ। वो ऊपर गिर गए हैं... वो सीढ़ियों पर बेहोश पड़े हैं।’

तीन
हम सब चुपचाप ऊपर की ओर भागे। हमने जयंता बाबू को उसकी माँ के कमरे के ठीक बाहर, दहलीज से लगभग तीन फीट की दूरी पर, सीढ़ियों पर लेटा हुआ पाया। उसके सिर के पिछले हिस्से में चोट लगी थी। फर्श पर खून रिसकर एक छोटा सा लाल धब्बा बन गया था।
डॉक्टर सरकार सबसे पहले उनके पास पहुंचे। वे जयंता बाबू के पास बैठ गए और जल्दी से उनकी नब्ज़ देखी। फेलुदा भी कुछ देर बाद उनके पास आ गए। वे गंभीर दिख रहे थे और उनके माथे पर गहरी शिकन थी।
श्री चौधरी ने धीमी आवाज में पूछा, 'आप क्या सोचते हैं?'
उनकी नाड़ी सामान्य से अधिक तेज चल रही है।
और उसके सिर पर वह घाव?
'उसे गिरने पर चोट लगी होगी। धूप में काम करते समय उसे टोपी पहनने के लिए कहते-कहते मैं थक गया था।'
‘सिर में चोट—?’
'बिना ठीक से जांच किए कुछ भी कहना नामुमकिन है। दिक्कत ये है कि मैं आज अपना मेडिकल किट लाना भूल गया। मुझे लगता है कि उसे तुरंत अस्पताल ले जाना चाहिए।'
‘यह कोई समस्या नहीं है। मेरे पास कार है।’
फेलुदा ने जयंता बाबू को कार तक ले जाने में दूसरों की मदद की। वह बेहोश थे। कलिनाथ रॉय सीढ़ियों पर हमसे मिले।
‘मैं बस एक पल के लिए दवा लेने अपने कमरे में गया था—और ये सब हो गया!’ उसने हैरानी से कहा।
जब डॉ. सरकार कार में बैठे तो श्री चौधरी ने पूछा, 'क्या मैं आपके साथ चलूँ?' नहीं, ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं आपको अस्पताल से फोन कर दूंगा।
गाड़ी चली गई। मुझे श्री चौधरी के लिए बहुत दुख हुआ। जन्मदिन पर ऐसा होना कितना बुरा है! और अब तो उनकी योजना भी नाकाम हो गई।
हम ड्राइंग रूम में गए और बैठ गए। लेकिन फेलुदा लगभग तुरंत ही उठ खड़ा हुआ और संक्षेप में 'मैं एक मिनट में वापस आता हूँ' कहकर कमरे से बाहर चला गया। वह जल्दी ही लौट आया, लेकिन मुझे पता नहीं चला कि वह कहाँ गया था। श्री चौधरी सामान्य रूप से बात करते रहे, यहाँ तक कि उन्होंने अपने मेहमानों को अपने परदादा के बारे में कुछ कहानियाँ भी सुनाईं। लेकिन स्पष्ट रूप से उनके लिए शांत और प्रसन्न रहना आसान नहीं था, क्योंकि वे अपने चचेरे भाई के बारे में चिंतित जरूर रहे होंगे।
एक घंटे बाद डॉक्टर सरकार का फोन आया। जयंता बाबू को होश आ गया था और उनकी तबीयत में सुधार हो रहा था। वे शायद अगले दिन घर लौट आएंगे।

इस खबर से सबको थोड़ी राहत मिली, लेकिन हमारी यात्रा का मुख्य उद्देश्य ही विफल होता दिख रहा था। श्री चौधरी ने संदूक से कोई वस्तु निकालने का प्रयास नहीं किया और वास्तव में, वीडियो पर फिल्में दिखाने के उनके प्रस्ताव को ठुकराने के बाद, हम रात के खाने के तुरंत बाद अपने कमरे में लौट गए। जादू का शो भी रद्द हो गया।
जैसे ही हम अपने कमरे में वापस आए, लालमोहन बाबू ने वह सवाल पूछा जो मैं लंबे समय से पूछना चाहता था।
'जब हम सब ड्राइंग रूम में थे, तब तुम कहाँ गायब हो गए थे?'
मैं श्री चौधरी की चाची के कमरे में गया था।
‘क्यों? सिर्फ यह देखने के लिए कि वह कैसी है?’ लालमोहन बाबू ने संशय भरे लहजे में पूछा।
'हां, लेकिन मैंने उस संदूक का हैंडल भी खींचा था।'
‘ओह? और क्या यह खुला था?’
नहीं। मुझे नहीं लगता कि जयंता बाबू को इसे खोलने का मौका मिला। ऐसा लगता है कि कमरे तक पहुंचने से पहले ही वह फर्श पर गिर गए थे।
‘लेकिन चाबी कहाँ है?’ मैंने पूछा।
मुझे नहीं लगता कि श्री चौधरी ने इसे खोजने के बारे में सोचा होगा। सब कुछ इतनी जल्दी हुआ।
मैंने बोलने के लिए मुंह खोला ही था कि तभी श्री चौधरी स्वयं कमरे में आ गए। उन्होंने कहा, ‘मुझे सब कुछ के लिए बहुत खेद है, लेकिन शुक्र है कि जयंता की तबीयत में सुधार है। ऐसा पहले भी एक बार हो चुका है। कभी-कभी उनका रक्तचाप खतरनाक रूप से गिर जाता है।’
‘डॉ. सरकार ने और क्या कहा?’
‘मैं यही बात आपको बताने आया था। मैं दूसरों के सामने कुछ नहीं कहना चाहता था। दरअसल, मैं चाबी के बारे में पूरी तरह भूल गया था। अब डॉक्टर ने बताया है कि जयंता के पास चाबी नहीं है। शायद गिरते समय वह उसकी जेब से फिसल गई हो।’
‘क्या आपने इसे ढूंढा?’
'हां, मैंने हर जगह देखा, सीढ़ियों पर, यहां तक कि सामने के दरवाजे के बाहर भी। वह चाबी गायब हो गई है।'
‘कोई बात नहीं। आपके पास इसकी एक डुप्लीकेट कॉपी तो है ही, है ना?’
'हां, लेकिन बात वो नहीं है। रहस्य सुलझा नहीं है, है ना? यही बात मुझे परेशान कर रही है। मैं तुम्हें अपना दिमाग लगाने का मौका भी नहीं दे पाया!' ‘तो क्या हुआ? मैं इस यात्रा को पूरी तरह व्यर्थ नहीं मानूंगा। मैंने यह खूबसूरत घर देखा और आपके शानदार आतिथ्य का आनंद लिया। मेरे लिए इतना ही काफी है, श्री चौधरी।’
श्री चौधरी मुस्कुराए। “आपका ऐसा कहना बहुत ही दयालुतापूर्ण है, श्री मिटर। खैर, अब मैं आपको शुभ रात्रि कहता हूँ। आपकी चाय साढ़े छह बजे आ जाएगी और नाश्ता आठ बजे परोसा जाएगा।”

श्री चौधरी के चले जाने के बाद लालमोहन बाबू ने दबी आवाज़ में पूछा, “क्या यह हत्या के प्रयास का मामला हो सकता है? आखिर श्री कांजीलाल और श्री रॉय दोनों ही घर के अंदर गए थे।”
‘क्या अपनी मनचाही चीज पाने के लिए हत्या करना जरूरी नहीं था? उन्हें बस इतना करना था कि जयंता बाबू को बेहोश कर देना था।’
'आपका क्या मतलब है?'
बस इतना ही। आपके विचार से, एक बेहोश आदमी की जेब से चाबी निकालने, संदूक खोलने, आवश्यक सामान निकालने और फिर चाबी को वापस उसी जगह पर रख देने में कितना समय लगेगा?
मैंने इस बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचा था।
मैंने कहा, 'अगर ऐसा है, तो हमारे पास तीन के बजाय दो ही संदिग्ध हैं - कंजीलाल और रॉय।'
‘नहीं,’ फेलुदा ने सिर हिलाते हुए कहा, ‘बात इतनी आसान नहीं है। अगर किसी और ने उन्हें बेहोश किया होता, तो जयंता बाबू ने अस्पताल में आंखें खोलते ही बता दिया होता। उन्होंने नहीं बताया। इसके अलावा, उनकी मां पूरे समय कमरे में मौजूद थीं। अगर परिवार के सदस्य के अलावा कोई और संदूक खोलने की कोशिश करता, तो वह ज़रूर कुछ कहतीं? मैं हैंडल सिर्फ इसलिए खींच पाया क्योंकि उनकी पीठ एक पल के लिए मुड़ी हुई थी।’
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। इसलिए मैं बिस्तर पर चला गया, हालाँकि मुझे नींद नहीं आ रही थी। फेलुदा अभी भी कमरे में इधर-उधर घूम रहा था। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसे क्या जगाए हुए है। कुछ मिनट बाद, लालमोहन बाबू अपने कमरे से वापस आ गए।
‘क्या तुमने खिड़की से बाहर देखा है?’ उसने पूछा। ‘मैंने पहले कभी किसी चीज को चांदनी में इस तरह नहाया हुआ नहीं देखा। ऐसी रात में घर के अंदर रहना गुनाह है!’
'हां, तुम सही कह रहे हो,' फेलुदा दरवाजे की ओर बढ़ने लगा। 'चलो बाहर चलते हैं। अगर आधी रात को कवि बनना ही है, तो गवाह तो होने ही चाहिए।'
बाहर, अमरावती और उसके आसपास का इलाका दिन के मुकाबले कहीं अधिक सुंदर लग रहा था। नदी के उस पार हल्की धुंध छाई हुई थी। अंधेरे, लहरदार पानी में चंद्रमा का प्रतिबिंब चमक रहा था। दूर से आती झींगुरों की आवाज, हसनुहन की खुशबू और ताज़ी हवा मिलकर वातावरण को एक जादुई रूप दे रहे थे। फेलुदा ने लगभग पूरे चांद को देखकर कहा, 'मनुष्य भले ही वहां उतरा हो, लेकिन चांदनी में बैठने का आनंद कौन छीन सकता है?'
‘चाँद के बारे में एक शानदार कविता है,’ लालमोहन बाबू ने घोषणा की। ‘निस्संदेह, इसे उसी व्यक्ति ने लिखा है जो आपके एथेनियम संस्थान में शिक्षक था?’
‘जी हां। बैकुंठ मल्लिक। हमारे इस मूर्ख, दयनीय देश में किसी ने भी उन्हें उनका हक नहीं दिया, लेकिन वे एक महान कवि हैं। इसे सुनो। तपेश, ध्यान से सुनो।’
हम धीमी आवाज़ में बात कर रहे थे। लेकिन अब, जैसे ही लालमोहन बाबू ने कविता सुनाना शुरू किया, उनकी आवाज़ अपने आप ऊंची हो गई।

हे चंद्रमा, मैं तुम्हारी कितनी प्रशंसा करता हूँ! एक दिन चांदी की एक डिस्क,
या फिर दिन बीतने के साथ-साथ आधी डिस्क,
या एक चौथाई, या यहाँ तक कि
बस एक टुकड़ा, ओह माय गॉड!
जैसे कोई नया कटा हुआ नाखून,
आकाश में पड़ा हुआ।
उसके बाद आती है अमावस्या की रात।
तुम्हारा कोई अता-पता नहीं है।
हे मेरे प्रिय, तुम मेरी नजरों से ओझल हो।
चांदनी से भी अछूता!
लालमोहन बाबू रुक गए और, इस बात से अनभिज्ञ कि मैं अपनी हंसी रोकने की पूरी कोशिश कर रहा था, गंभीरता से बोले, 'जैसा कि तुम देख सकते हो, तपेश, यह कविता वास्तव में एक महिला को संबोधित है।'
‘अच्छा, लगता है तुम्हारी कविता पाठ सुनकर एक महिला अपने कमरे से बाहर आ गई है,’ फेलुदा ने पहली मंजिल की बालकनी की ओर देखते हुए कहा। यह बालकनी श्री चौधरी की चाची के कमरे से लगी हुई थी। सफेद साड़ी पहने वह बुज़ुर्ग महिला अपने कमरे से बाहर निकली और बालकनी पर खड़ी होकर चारों ओर देखने लगी। वह लगभग एक मिनट तक वहीं खड़ी रही। फिर वह अंदर चली गई।
हम नदी की ओर मुड़े और घाट की सीढ़ियों पर आधे घंटे से अधिक समय तक बैठे रहे। अंत में, फेलुदा ने अपनी घड़ी देखी और कहा, 'लगभग एक बज गया है। चलो चलते हैं।' हम उठे और तभी एक अजीब सी आवाज़ हमारे कानों में पड़ी और हम वहीं रुक गए।
धड़, धड़, खनखनाहट! धड़, धड़, खनखनाहट!
धीरे-धीरे हम घाट की सीढ़ियाँ चढ़े और वापस घर की ओर चल पड़े।
‘क्या कोई गुप्त मार्ग खोद रहा है?’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा। मेरी नजर बूढ़ी औरत के कमरे की ओर गई। ऐसा लग रहा था कि शोर वहीं से आ रहा है। कमरे में हल्की रोशनी टिमटिमा रही थी।
धड़, धड़, धड़, धड़, खनखना, खनखना!
लेकिन कमरे के आखिरी छोर पर एक और बत्ती जल रही थी। खुली खिड़की से मुझे कोई दिखाई दिया। वह एक आदमी था, जो बेचैनी से बातें कर रहा था। कुछ ही सेकंड बाद वह कमरे से बाहर चला गया।
‘श्रीमान कंजीलाल,’ फेलुदा ने बुदबुदाते हुए कहा, ‘श्रीमान चौधरी के कमरे में हैं।’
‘वे इतनी रात को किस बारे में बात कर रहे होंगे?’
मुझे नहीं पता। शायद इसका संबंध उनके व्यवसाय से था।
‘अरे, क्या तुम्हें भी नींद नहीं आ रही थी?’
अचानक एक नई आवाज सुनाई दी तो हम सब चौंक गए। फिर मैंने देखा कि जादूगर कलिनाथ रॉय अंधेरे से बाहर आ रहे हैं।

वह अजीब सी आवाज बंद नहीं हुई थी। श्री रॉय ने अपना सिर उठाया और बूढ़ी औरत के कमरे की खुली खिड़की की ओर देखा। उन्होंने पूछा, 'क्या आपको पता चला कि यह आवाज किस वजह से आ रही है?'
‘हाथ से चलने वाली चक्की?’ फेलुदा ने कहा।
‘बिल्कुल सही। श्री चौधरी की चाची अक्सर आधी रात को जाग जाती हैं और अपनी चक्की में पान के पत्ते पीसने लगती हैं। मैंने वह आवाज पहले भी सुनी है।’ मिस्टर रॉय ने अपनी जेब से एक सिगरेट निकाली और उसे जलाया। फिर उन्होंने माचिस को धीरे-धीरे हिलाया जब तक कि वह बुझ नहीं गई, और फेलुदा को एक तीखी, समझदार नज़र से देखा।
‘आपको क्या लगता है कि बनवारीलाल के जीवनीकार के रूप में एक निजी जासूस को क्यों आमंत्रित किया गया?’ उन्होंने सहज भाव से पूछा। मैं आश्चर्य से चौंक गया। लालमोहन बाबू भी चौंक गए।
फेलुदा हल्के से हँसा। उसने कहा, 'ओह, मुझे खुशी है कि किसी ने मुझे पहचान लिया!'
'मुझे बहुत कुछ पता है, श्रीमान मिटर। मैंने इतना कुछ झेला है कि मेरी आंखें और कान हर समय खुले रहने के आदी हो गए हैं।'
फेलुदा ने उसे टकटकी लगाकर देखा। 'क्या आप मुद्दे पर आएंगे, श्री रॉय? या आप पहेलियों में ही बोलते रहेंगे?'
‘आपने कितने लोगों से मुलाकात की है जो खुलकर अपनी बात कह सकते हैं? ज्यादातर लोग मुंह खोलना नहीं चाहते। दुर्भाग्य से, मैं भी उनमें से एक हूं। आप जांचकर्ता हैं, खुलकर बोलना और सब कुछ उजागर करना आपका काम है। लेकिन मैं आपको एक बात बता दूं। शंकर के घर में आप अपने पेशेवर कौशल का इस्तेमाल करना भूल जाइए। अगर आप चाहें तो यहां कुछ दिन बिताइए, मौज-मस्ती कीजिए और आनंद लीजिए। लेकिन अगर आप उन मामलों में दखल देंगे जिनका आपसे कोई लेना-देना नहीं है, तो आप मुसीबत में पड़ जाएंगे।’
‘मैं समझ गया। आपकी सलाह के लिए धन्यवाद।’
कालीनाथ रॉय वापस घर के अंदर चले गए।
‘ऐसा लगता है कि उन्हें कोई महत्वपूर्ण जानकारी है,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘हाँ, लेकिन इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, है ना? आखिर, वह पिछले साल यहाँ आए थे। हो सकता है उन्होंने कुछ देखा हो।’
‘या शायद मिस्टर रॉय खुद ही चोर हैं?’ मैंने कहा। ‘क्या आपको याद नहीं कि मिस्टर चौधरी ने उनकी हाथ की सफाई के बारे में क्या कहा था?’
'बिल्कुल सही,' फेलुदा ने सिर हिलाया।

चार
अगली सुबह साढ़े छह बजे मेरी नींद खुली जब मेरी चाय आ गई। लेकिन ऐसा लग रहा था कि फेलुदा मुझसे बहुत पहले ही उठ चुका था।
‘मैं टहलने गया था। शहर देखने गया था,’ उसने मुझे बताया।
'आपने क्या देखा?'
'ओह, बहुत सी बातें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अब मुझे पूरा यकीन हो गया है कि हमारी यह यात्रा समय की बर्बादी नहीं होगी।'
इसी समय लालमोहन बाबू कमरे में दाखिल हुए और कहा कि उन्हें लंबे समय से इतनी गहरी नींद नहीं आई थी।
'मुझे लगता है कि ऊपर वाले कमरे में रहने वाली बुढ़िया भी कल रात अच्छी तरह सोई। वह आज सुबह सामान्य से बहुत देर से उठी,' फेलुदा ने टिप्पणी की। ‘तुम्हें यह कैसे पता चला?’
‘अनंता ने मुझे बताया। उसने कहा कि वह नदी पर जाने के लिए देर से आई थी। आम तौर पर वह हर सुबह छह बजे घाट पर जाती है।’
हम तीनों बरामदे में बैठे थे। श्री चौधरी दस मिनट बाद हमारे साथ आ गए। उन्होंने स्नान कर लिया था और वे काफी तरोताजा दिख रहे थे।
‘मुझे डर है कि मुझे पहचान लिया गया है,’ फेलुदा ने उससे कहा। ‘तुम्हारा पुराना सहपाठी जानता है कि मैं कौन हूँ।’
'क्या!'
'हां। आपने उसके बारे में सही कहा था। वह जितना दिखाता है उससे कहीं ज्यादा जानता है।'
‘तो क्या मुझे सबको सच बता देना चाहिए, आपको क्या लगता है?’
'हां, लेकिन अगर आप ऐसा करते हैं, तो आपको उन्हें यह भी बताना होगा कि मैं यहां क्यों हूं। मेरा मतलब है, आपका रहस्य अब रहस्य नहीं रह सकता, है ना?' श्री चौधरी चिंतित और दुखी दिखने लगे। लेकिन इससे पहले कि वे कुछ कह पाते, श्री कंजीलाल और श्री रॉय एक साथ आ गए। लगभग उसी क्षण, सामने के दरवाजे के बाहर एक कार का हॉर्न बजा। फेलुदा, लालमोहन बाबू और मैं श्री चौधरी के साथ यह देखने गए कि कौन आया है। बाकी दोनों बरामदे में ही रहे।
बाहर एक काली एम्बेसडर कार खड़ी थी, जिसके एक तरफ लाल क्रॉस बना हुआ था। डॉ. सरकार और जयंता बाबू कार से उतरे और हमारी तरफ चलने लगे। जयंता बाबू के सिर पर लगी चोट पर पट्टी बंधी हुई थी। इसके लिए उनके कुछ बाल मुंडवाने पड़े थे। उन्होंने अपने चचेरे भाई से कहा, 'मुझे बहुत अफ़सोस है। मैंने तुम्हारा जन्मदिन खराब कर दिया, है ना? दरअसल, मेरा ब्लड प्रेशर...'
‘जी हां, श्री चौधरी को सारी जानकारी है,’ डॉ. सरकार ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘अब आप ठीक हैं, चिंता की कोई बात नहीं है। लेकिन अब आपको धूप में घूमने की ज़रूरत नहीं है।’

‘आप चाय के लिए रुकेंगे ना?’ श्री चौधरी ने आमंत्रित किया। ‘जी हां, चाय पीना अच्छा रहेगा, धन्यवाद।’
‘बाकी लोग कहाँ हैं?’ जयंता बाबू ने पूछा।
वे बरामदे में हैं।
डॉक्टर सरकार और जयंता बाबू बाकी लोगों के साथ चले गए। श्री चौधरी भी उनके पीछे जाने ही वाले थे कि फेलूदा की बातों ने उन्हें रोक दिया। फेलूदा ने कहा, 'रुको, श्री चौधरी, बरामदे में वापस जाने से पहले हमें कुछ काम करना है।' उनकी आवाज़ में कुछ ऐसा था जिससे श्री चौधरी आश्चर्य से ऊपर देखने लगे।
'यह क्या है?'
‘आपने कहा था कि आपकी चाची के कमरे में रखी संदूक की डुप्लीकेट चाबी उनके पास है। क्या वह अब हमें वह चाबी दे देंगी?’
'हां, अगर मैं उससे मांगूं तो ज़रूर। लेकिन—'
मुझे इसे खोलकर देखना होगा कि इसके अंदर क्या है। हाँ, अभी।
श्री चौधरी बिना कुछ और कहे हमें ऊपर ले गए। हमने देखा कि उनकी चाची नहाने की तैयारी कर रही थीं।
‘क्या!’ श्री चौधरी ने हैरानी से कहा। ‘आज आपको इतनी देर कैसे हो गई?’ ‘भगवान जाने। मैं बस ज्यादा सो गया। ऐसा अक्सर नहीं होता, लेकिन कभी-कभी... मुझे नहीं पता...’
मुझे संदूक की डुप्लीकेट चाबी चाहिए।
‘क्यों? तुमने अपने वाले का क्या किया?’
श्री चौधरी ने थोड़ी बेबसी से कहा, 'मुझे यह नहीं मिल रहा है।' उनकी चाची ने अपनी अलमारी खोली और चाबियों का एक बड़ा गुच्छा निकाला, जो उन्होंने चुपचाप उन्हें सौंप दिया। फिर वह कमरे से चली गईं।
श्री चौधरी संदूक खोलने के लिए आगे बढ़े। पता नहीं क्यों, फेलुदा एक पल के लिए रुका और फर्श से हाथ से चलने वाली चक्की उठाकर उसका संक्षिप्त निरीक्षण किया।
‘हे भगवान, मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा!’
श्री चौधरी की चीख सुनकर लालमोहन बाबू चौंक गए और उन्होंने सलीम अली की वह किताब गिरा दी जिसे वे अपनी बगल में दबाकर रखे हुए थे।
‘सोने के सिक्कों से भरी वो छोटी थैली और हाथीदांत का डिब्बा, दोनों गायब हो गए हैं, है ना?’ फेलुदा ने शांत स्वर में पूछा। श्री चौधरी कुछ बोल नहीं पाए और घबराकर निगल गए।
‘श्री चौधरी, अपनी छाती फिर से बंद कर लीजिए, और चलिए नीचे चलते हैं। सच बताने का समय आ गया है। कृपया दूसरों को बता दीजिए कि मैं वास्तव में कौन हूँ, और उन्हें यह भी बता दीजिए कि मैं उनसे कुछ सवाल पूछूंगा।’
श्री चौधरी ने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला और हम सब बरामदे में अन्य मेहमानों के साथ शामिल होने के लिए नीचे चले गए।
श्री चौधरी ने कहना शुरू किया, 'मैं आपको कुछ बताना चाहता हूं,' और उन्होंने संक्षेप में बताया कि उनके पिछले जन्मदिन पर क्या हुआ था और उन्होंने कुछ ही मिनट पहले क्या पता लगाया था।

उन्होंने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, “मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मेरे करीबी साथियों में से कोई मेरे ही घर में ऐसा काम करेगा, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि पिछले साल एक सोने का सिक्का चोरी हो गया था, और अब अन्य चीजें भी गायब हैं। इसलिए मैं श्री मिटर से, जो एक जाने-माने जांचकर्ता हैं, इस मामले की ठीक से जांच करने का अनुरोध कर रहा हूं। अब वे आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं। मुझे आशा है कि आप उनका ईमानदारी से उत्तर देंगे।”
किसी ने कुछ नहीं कहा। यह जानना नामुमकिन था कि उनमें से हर कोई क्या सोच रहा था। फेलुदा ने अपना पहला सवाल डॉ. सरकार से पूछा। यह मेरे लिए पूरी तरह से आश्चर्यजनक था।
‘डॉक्टर सरकार, पनिहाटी में कितने अस्पताल हैं?’
'केवल एक।'
'क्या इसका मतलब यह है कि कल रात आप जयंता बाबू को वहीं ले गए थे और वहीं से आपने फोन किया था?'
'तुम क्यों पूछ रहे हो?'
मैं यह सवाल इसलिए पूछ रहा हूं क्योंकि मैं आज सुबह उस अस्पताल गया था। जयंता बाबू को वहां नहीं ले जाया गया था।
डॉ. सरकार हँसे। 'लेकिन मैंने कभी नहीं कहा कि मैं अस्पताल से फोन कर रहा हूँ, है ना, श्री चौधरी?'
तो फिर आप कहां से फोन कर रहे थे?
‘मेरे घर से। जयंता बाबू को कार में होश आ गया, जिसका मतलब था कि उनकी चोट उतनी गंभीर नहीं थी जितनी मैंने सोची थी और उन्हें कोई सिर में चोट नहीं आई थी। इसलिए मैंने उन्हें रात भर निगरानी में रखने के लिए अपने घर ले जाने का फैसला किया।’
‘पूरी रात। अब मुझे जयंता बाबू से कुछ पूछना है। तुमने कल अपने चचेरे भाई से एक चाबी ली थी। क्या गिरने के समय वह चाबी तुम्हारे हाथ में ही थी?’ 'हां, लेकिन मुझे नहीं पता कि उसके बाद उसका क्या हुआ।'
'यह सीढ़ियों पर या आपके पड़े होने की जगह के आसपास कहीं गिर जाना चाहिए था। लेकिन इसे कोई ढूंढ नहीं पाया।'
तो फिर? इसके लिए मैं कैसे जिम्मेदार हूँ? श्रीमान मिटर, आप घुमा-फिराकर बात करना बंद क्यों नहीं करते और हमें सीधे-सीधे बताइए कि आपका असली मतलब क्या है?
‘एक और सवाल, और फिर मैं अपने मन की बात कहूँगा, मैं आपसे वादा करता हूँ। डॉ. सरकार, क्या आप अल्टा नामक पदार्थ के बारे में जानते हैं?’
'हां, क्या यह कोई लाल रंग का तरल पदार्थ नहीं है जिसे महिलाएं अपने पैरों पर लगाती हैं? मुझे पता है कि मेरी पत्नी कभी-कभी ऐसा करती है।'
और आप यह भी जानते हैं, है ना, कि एक नज़र में अल्टा और रक्त के बीच अंतर बताना मुश्किल होगा, खासकर अगर रोशनी कम हो?
डॉक्टर सरकार ने गला साफ किया और सिर हिलाया।
'बहुत अच्छा। अब मैं आप सबको बताऊँगा कि मैं वास्तव में क्या सोचता हूँ।' फेलुदा रुक गया। सबकी निगाहें उस पर टिकी हुई थीं।

उन्होंने आगे कहा, ‘मेरा मानना है कि जयंता बाबू बेहोश नहीं हुए थे। उन्होंने सिर्फ बेहोश होने का नाटक किया था। वह डॉ. सरकार के साथ मिले हुए थे, क्योंकि उन दोनों के लिए घर छोड़ना जरूरी था।’
‘बकवास!’ जयंता बाबू चिल्लाया। ‘हमें ऐसा क्यों करना चाहिए?’
ताकि तुम आधी रात को लौट सको।
'वापस करना?'
'हां। तुम उत्तरी तरफ के छोटे गेट से अंदर आए और चुपके से अपनी मां के कमरे तक गए।'
‘ये तो हद है! अगर मैंने ऐसा किया तो क्या मेरी माँ को पता नहीं चल जाएगा? क्या आपको पता है कि उन्हें हर रात दो घंटे से ज़्यादा नींद नहीं मिलती?’ 'हां, मुझे पता है कि उसे नींद नहीं आती। लेकिन अगर उसे नींद लाने के लिए कुछ दिया गया होता तो क्या होता? अगर डॉ. सरकार ने उसके दूध और चावल के कटोरे में कुछ मिला दिया होता? शायद कोई तेज़ नींद की गोली?'
न तो डॉ. सरकार और न ही जयंता बाबू ने कुछ कहा। दोनों का चेहरा पीला पड़ने लगा था और वे असहज दिख रहे थे।
फेलुदा ने आगे कहा, ‘तुम्हें वापस आना ही था, क्योंकि इस बार गलती करने का कोई चांस नहीं था। तुम्हें श्री चौधरी की शाम की योजना बिगाड़नी थी और चोरी करने के लिए घर में देर से आना था। चोरी का पता शायद काफी देर तक नहीं चलता। लेकिन तुम अपनी चाबी खो बैठी थी, इसलिए तुम्हें अपनी माँ की अलमारी में रखी नकली चाबी इस्तेमाल करनी पड़ी। जब तुम ऐसा कर रही थी, अचानक तुमने मेरे दोस्त को कविता पढ़ते सुना और थोड़ी घबरा गई। तुम्हें शायद पता नहीं था कि घर के बाकी लोग जाग रहे थे और बाहर टहल रहे थे। इसलिए तुमने अपनी माँ की सफेद साड़ी में लिपटकर बालकनी में आने का फैसला किया, ताकि हम एक आकृति देख सकें और मान लें कि वह तुम्हारी माँ है। फिर तुम अंदर वापस गई और हाथ से चलने वाली चक्की चलाने लगी, इस उम्मीद में कि इससे तुम्हारा नाटक और भी विश्वसनीय लगेगा। मुझे तभी शक हो गया था, क्योंकि तुम खाली चक्की को पीट रही थी। अगर उसमें पान के पत्ते होते, तो आवाज़ अलग होती।’
‘तो आप मुझ पर क्या आरोप लगा रहे हैं?’ जयंता बाबू ने बेपरवाही से अपनी बात कहने की कोशिश करते हुए पूछा। ‘क्या मैंने बेहोश होने का नाटक किया? या मैंने अपनी माँ के खाने में मिलावट की? या मैं चुपके से उनके कमरे में गया और संदूक खोला?’
‘अरे, आप ये सब काम करने की बात स्वीकार करते हैं, है ना?’
‘इसका कोई मतलब नहीं है, है ना? इनमें से कोई भी दंडनीय अपराध नहीं है। आप असली घटना के बारे में क्यों नहीं बात करते?’
‘जयंता बाबू, यहाँ सिर्फ एक घटना नहीं है, बल्कि दो घटनाएँ हैं। चलिए मैं एक-एक करके उन पर बात करता हूँ। पहली घटना एक साल पहले हुई चोरी है।’
‘और तुम्हें इसके बारे में क्या पता? भगवान के लिए, तुम तो वहाँ थे ही नहीं!’
नहीं। लेकिन और भी लोग थे। कोई चोर के ठीक बगल में खड़ा था। उसने सब कुछ देख लिया होगा।

इस बार श्री चौधरी बोले। उनकी आवाज़ में अत्यधिक व्यथा थी। 'आप क्या कह रहे हैं, श्री मिटर? अगर किसी ने यह सब होते देखा होता... तो वह मुझे ज़रूर बताता?'
फेलुदा ने उसे जवाब देने के बजाय अचानक कालिनाथ रॉय की ओर मुड़कर कहा, 'श्रीमान रॉय, जब आपने मुझे इस मामले से दूर रहने के लिए कहा था, तब आप किस मुसीबत की बात कर रहे थे?'
कालीनाथ रॉय मुस्कुराए। “किसी अप्रिय सत्य को प्रकट करने से हमेशा मुसीबत ही आती है, है ना, श्री मित्तर? बेचारे शंकर के बारे में सोचिए। मैं तो बस उसकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाना चाहता था।”
श्री चौधरी ने चिढ़कर कहा, 'तुम्हें इतनी मेहनत करने की ज़रूरत नहीं थी। अगर तुम्हें इस मामले के बारे में कुछ भी पता है, कालीनाथ, तो सच बता दो। मेरी भावनाओं की परवाह मत करो। हमने पहले ही बहुत समय बर्बाद कर दिया है।' ‘श्री चौधरी, वह आपको बता नहीं सकते कि उन्होंने क्या देखा था,’ श्री रॉय के कुछ और कहने से पहले ही फेलुदा ने कहा, ‘क्योंकि इससे उन्हें बहुत बड़ा आर्थिक नुकसान हो जाता। और इसीलिए वह नहीं चाहते थे कि मैं चोर को पकड़ूँ। देखिए, वह पिछले बारह महीनों से चोर से जमकर पैसे वसूल रहे हैं।’
‘क्या! ब्लैकमेल?’
जी हां, श्री चौधरी, ब्लैकमेल। लेकिन श्री रॉय को यह नहीं पता था कि चोर का एक साथी भी था। उन्होंने केवल एक ही व्यक्ति को सोने का वह टुकड़ा निकालते हुए देखा था। लेकिन मुझे लगता है कि पैसों की उनकी लगातार मांग ने ही चोर को दूसरी बार चोरी करने के बारे में सोचने पर मजबूर किया। और इसलिए—’ ‘नहीं!’ जयंता बाबू ने निराशा भरे स्वर में कहा। ‘आप गलत हैं। चोरी करने के लिए कुछ बचा ही नहीं था। बनवारीलाल की बाकी कीमती चीजें तो पहले ही जा चुकी थीं! वह संदूक खाली है।’
‘क्या इसका मतलब यह है कि मेरे कोई भी आरोप झूठे या निराधार नहीं हैं? आप स्वीकार करते हैं—?’
‘जी हाँ! लेकिन किसने... कल रात बाकी सामान किसने चुराया? आप हमें क्यों नहीं बताते?’
‘मैं बताऊंगा। लेकिन उससे पहले मुझे आपसे पूरा कबूलनामा चाहिए। बताइए, जयंता बाबू, क्या आप और डॉ. सरकार ने पिछले साल मिलकर जहांगीर के बारह सोने के सिक्कों में से एक सिक्का चुराया था?’
'हां। मैं सब कुछ स्वीकार करता हूं। श्री मिटर बिल्कुल सही हैं।'
फेलुदा ने चुपचाप अपना माइक्रोकैसेट रिकॉर्डर निकाला और मुझे दे दिया। ‘मैं… मैं केवल क्षमा मांग सकता हूँ,’ जयंता बाबू ने अपने चचेरे भाई की ओर विनती भरी नज़र डालते हुए कहा। डॉ. सरकार सिर हाथों में लिए बैठे रहे। ‘डॉक्टर सरकार के पास अभी भी वह सोने का सिक्का है,’ जयंता बाबू ने आगे कहा। ‘हम उसे आपको लौटा देंगे। हम... हम दोनों को पैसों की सख्त जरूरत थी। लेकिन जब हमने पहला सिक्का बेचने की कोशिश की, तो हमें एहसास हुआ कि पूरे सेट की कीमत सौ गुना ज्यादा होगी, इसलिए...’
तो आपने शेष ग्यारह टुकड़ों को हटाने का फैसला किया?

'हां। लेकिन चोरी करने में सक्षम हम अकेले नहीं थे। कोई भी जो ब्लैकमेल कर सकता है...'
‘…क्या वह चोर हो सकता है? सच है। लेकिन मिस्टर रॉय ने उस संदूक से कुछ भी नहीं चुराया।’
‘आपका क्या मतलब है?’
‘बचे हुए सिक्के और अन्य वस्तुएं प्रदोष मित्तर द्वारा हटा दी गईं।’
जब सब लोग खामोशी से देखते रह गए, तो फेलुदा बरामदे से निकलकर अपने कमरे में चला गया। जब वह लौटा, तो उसके हाथों में सिक्कों से भरा छोटा थैला और हाथीदांत का डिब्बा था। उसने कहा, 'लीजिए, श्री चौधरी, आपके परदादा का सारा सामान सुरक्षित और सही सलामत है। आपको उस डिब्बे में अंगूठियां और लटकन भी मिल जाएंगे।'
'आख़िर कैसे । । ।?'
मुझे कुछ गड़बड़ तब समझ में आई जब मुझे फर्श पर खून की जगह आलता (एक प्रकार का पत्ता) मिला और चाबी का कोई निशान नहीं था। इसलिए, जयंता बाबू, जब मैंने डॉक्टर को आपको गाड़ी तक ले जाने में मदद की, तो मुझे आपकी जेब काटनी पड़ी। शुक्र है कि आपने चाबी अपनी दाहिनी जेब में रखी थी। अगर वह दूसरी जेब में होती तो मैं उसे नहीं ले पाता। आपके जाने के बाद बाकी लोग आकर ड्राइंग रूम में बैठ गए। मैंने इस मौके का फायदा उठाकर ऊपर जाकर संदूक खोला और सारा सामान निकाल लिया। मुझे पता चल गया था कि अब वे सामान आपकी मां के कमरे में सुरक्षित नहीं हैं। सौभाग्य से, वह पहले ही सो चुकी थीं, इसलिए उन्होंने मुझे संदूक खोलते हुए नहीं देखा... खैर, ये रही आपकी चाबी, श्री चौधरी। अब आपको तय करना है कि आप दोषियों के साथ क्या करना चाहते हैं। मैंने अपना काम पूरा कर लिया है।
कलकत्ता लौटते समय, लालमोहन बाबू ने हमें बैकुंठ मल्लिक की एक और कविता सुनाई। हमने चुपचाप उनकी बात सुनी, उसकी काव्य खूबियों पर कोई टिप्पणी नहीं की। कविता का नाम 'जीनियस' था और वह इस प्रकार थी:
दुनिया ने कुछ अद्भुत पुरुषों को देखा है,
कौन जाने कि यह किन-किन चीजों से बना है।
उनका दिमाग?
शेक्सपियर, दा विंची,
एंजेलो, आइंस्टीन,
मैं आप सभी को सलाम करता हूँ।
मेरे सभी हीरो!

केदारनाथ में अपराध

एक
‘फेलू बाबू, आप क्या सोच रहे हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
रविवार की सुबह थी। हम तीनों हमेशा की तरह अपने लिविंग रूम में बैठे बातें कर रहे थे। लालमोहन बाबू गोरपार स्थित अपने घर से हमारे साथ शामिल होने के लिए आए थे। थोड़ी देर पहले हल्की बारिश हुई थी, लेकिन अब धूप बहुत तेज़ थी। हमारा सीलिंग फैन पूरी रफ्तार से चल रहा था, क्योंकि रविवार को बिजली कटौती बहुत कम होती थी।
‘मैं आपके नवीनतम उपन्यास के बारे में सोच रहा था,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। बैसाख के पहले दिन जटायु का नया उपन्यास, 'द एस्टाउंडिंग अटलांटिक', विमोचित हुआ। पाँचवें दिन तक इसकी चार हज़ार पाँच सौ प्रतियाँ बिक चुकी थीं। 'मेरे नवीनतम उपन्यास का क्या? भला उससे आपको सोचने-समझने का मौका कैसे मिल सकता है?'
मैं बस यही सोच रहा था: चाहे आपकी कहानियाँ कितनी भी अतिरंजित या अवास्तविक क्यों न हों, आप अपनी अच्छी कहानी कहने की कला के दम पर सफल हो जाते हैं। अपनी तमाम कमियों के बावजूद, आपकी किताबें बेहद मनोरंजक हैं। लालमोहन बाबू बेहद संतुष्ट दिखने लगे और कुछ उपयुक्त कहने ही वाले थे कि फेलुदा ने बात जारी रखते हुए कहा, 'इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या आपके पूर्वजों में से कोई लेखक भी थे।'
सच्चाई यह थी कि हम लालमोहन गांगुली के परिवार के बारे में बहुत कम जानते थे। उन्होंने हमें बस इतना बताया था कि उनके माता-पिता अब इस दुनिया में नहीं हैं और वे अविवाहित हैं।
'मेरे पूर्वज? मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है कि वे कौन थे, या उन्होंने चार पीढ़ियों से पहले क्या किया था। मैं आपको बता सकता हूँ कि पिछली तीन पीढ़ियों में कोई भी लेखक नहीं था।'
‘क्या तुम्हारे पिता के भाई नहीं थे?’
जी हां, उनके दो भाई थे, एक उनसे बड़ा और दूसरा छोटा। बड़े भाई का नाम मोहिनीमोहन गांगुली था। वे होम्योपैथी का अभ्यास करते थे। जब मैं बच्चा था, तो बीमार होने का मतलब होता था अपने चाचा के पास जाना और उनसे अर्निका, या रहस टॉक्स, या बेलाडोना लेना। मेरे परदादा का नाम ललित मोहन गांगुली था। वे कागज के व्यापारी थे। उनकी एक दुकान थी जिसका नाम एल.एम. गांगुली एंड संस था। मेरे दादा और पिता दोनों ही हमारे पारिवारिक व्यवसाय की देखभाल करते थे, लेकिन मेरे पिता की मृत्यु के बाद, चीजें थोड़ी मुश्किल हो गईं। दुकान का मालिकाना हक बदल गया, हालांकि एल.एम. गांगुली एंड संस नाम कुछ समय तक बना रहा।
‘आपके पिता के छोटे भाई के बारे में क्या? आपके चाचा के बारे में क्या? क्या उन्हें कारोबार चलाने में दिलचस्पी नहीं थी?’

नहीं, महोदय। मैंने अपने चाचा दुर्गामोहन गांगुली को अपने जीवन में केवल एक बार देखा था। मेरा जन्म 1936 में हुआ था। उससे सात साल पहले, 1929 में, वे स्वतंत्रता सेनानी बन गए थे और आतंकवादियों से जुड़ गए थे। खुलना (जो अब बांग्लादेश में है) में सहायक आयुक्त श्री टर्नबुल हुआ करते थे। दुर्गामोहन ने उन्हें गोली मारने की कोशिश की थी। वे उन्हें मारने में सफल नहीं हुए, लेकिन गोली टर्नबुल की ठोड़ी पर लगी, जिससे उन्हें काफी चोट आई। 'और तब?'
‘फिर कुछ नहीं हुआ। दुर्गामोहन गायब हो गया। पुलिस उसे कभी नहीं ढूंढ पाई। शायद रोमांच का जुनून मुझे मेरे चाचा से मिला है।’
आपने उसे कब देखा था?
‘स्वतंत्रता के बाद, 1949 में, वह एक बार घर लौटे। उनसे मेरी पहली और आखिरी मुलाकात वही थी। मैंने उन्हें जिस रूप में देखा, वह उस दिलेर शख्स से बिलकुल अलग थे, जिसके बारे में मैंने बहुत कुछ सुना था। आतंकवाद और पिस्तौलें अतीत की बातें हो चुकी थीं। दुर्गामोहन शांत और अंतर्मुखी हो गए थे—वास्तव में, वे आध्यात्मिक स्वभाव के कहीं अधिक हो गए थे। वे एक महीने तक घर पर रहे, फिर गायब हो गए।’
‘क्या आपको पता है कि वह कहाँ गया?’
'जहां तक मुझे याद है, वह जंगल में काम करने के लिए चला गया था - लकड़ी की आपूर्ति से संबंधित कुछ काम के लिए।'
‘क्या उसने शादी नहीं की?’
नहीं, उसने ऐसा नहीं किया।
लेकिन आपके और भी भाई-बहन और चचेरे भाई-बहन जरूर होंगे?
मेरी एक बड़ी बहन है। उसके पति रेलवे में काम करते हैं और उनकी पोस्टिंग धनबाद में है। मेरे चाचा की तीन बेटियाँ हैं, कोई बेटा नहीं। तीनों की शादी हो चुकी है और वे देश के अलग-अलग कोनों में रहती हैं। दुर्गा पूजा के बाद हम पोस्टकार्ड का आदान-प्रदान करते हैं, लेकिन इसके अलावा मेरा उनसे कोई संपर्क नहीं है। सच कहूँ तो, मुझे पारिवारिक रिश्ते इतने महत्वपूर्ण नहीं लगते। मेरा मतलब है, मैं दोस्ती को कहीं ज्यादा महत्व देती हूँ। मैं आप और तपेश के बहुत करीब हूँ, आप खुद देख सकते हैं। अब, क्या इसका खून के रिश्ते से कोई लेना-देना है? मुझे तो नहीं लगता...
उसे रुकना पड़ा, क्योंकि दरवाजे पर दस्तक हुई। यह अप्रत्याशित नहीं था, क्योंकि उमाशंकर पुरी नाम के एक व्यक्ति ने फेलुदा से साढ़े नौ बजे मिलने का समय तय किया था। अब 9:33 बज रहे थे।
मैंने श्री पुरी को अंदर आने देने के लिए दरवाजा खोला। वे मध्यम कद के, दाढ़ी-मूंछ साफ किए हुए, सफ़ेद-काले बालों वाले व्यक्ति निकले, जिनके बाल दाहिनी ओर से बँटे हुए थे। किसी अजीब कारण से, उनके बालों की उस बँधी हुई बनावट ने मुझे असहज कर दिया। शायद यह इसलिए था क्योंकि बहुत कम पुरुष अपने बालों को दाहिनी ओर से बँटाते हैं—शायद सौ में से एक—इसलिए यह मुझे कुछ अजीब सा लगा।
अभिवादन का आदान-प्रदान होने और श्री पुरी को बैठने के लिए जगह दिए जाने के तुरंत बाद फेलुदा ने टिप्पणी की, 'ऐसा लगता है कि आप जल्दी में चले गए हैं।'

'हां, लेकिन आपने अनुमान कैसे लगाया?' उसने आश्चर्य से पूछा।
‘आपके बाएं हाथ के सभी नाखून करीने से कटे हुए हैं। मुझे दिख रहा है कि एक नाखून अभी भी आपकी जैकेट से चिपका हुआ है। लेकिन दो नाखूनों को छोड़कर, आपके दाहिने हाथ के नाखून...’
‘ओह हाँ, हाँ। मैं यहाँ आने से ठीक पहले इन्हें काट रहा था। काम खत्म करने से पहले ही मुझे एक ज़रूरी कॉल आ गया, और फिर जाने का समय हो गया, इसलिए...’ वह हँस पड़ा।
खैर, अब मुझे यह बताएं कि मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ।
श्री पुरी की हंसी रुक गई। वे कुछ पल चुप रहे, अपने विचारों को समेटने की कोशिश करते रहे। फिर उन्होंने कहा, 'भगवानगढ़ के महाराजा ने मुझे आपका नाम सुझाया था। उन्होंने आपकी बहुत प्रशंसा की थी। इसीलिए मैं आपकी सहायता लेने आया हूँ।'
'मैं सम्मानित हूँ।'
‘समस्या ये है कि—’ वो रुका, फिर गहरी सांस ली और दोबारा बोलने लगा। ‘मुझे डर है कि कहीं कोई अप्रिय घटना न हो जाए। क्या आप इसे टालने में मेरी मदद कर सकते हैं?’
‘श्री पुरी, कुछ और जानकारी के बिना मैं कोई वादा नहीं कर सकता। आपको क्या लगता है कि वास्तव में क्या हो सकता है?’
श्री पुरी तुरंत जवाब नहीं दे सके, क्योंकि इसी समय श्रीनाथ चाय और बिस्कुट लेकर आ गए। श्री पुरी ने एक बिस्कुट उठाया और कहा, 'क्या आपने रूपनारायणगढ़ के बारे में सुना है? यह कभी एक रियासत हुआ करती थी।'
‘यह नाम जाना-पहचाना सा लग रहा है। क्या यह उत्तर प्रदेश में कहीं है?’
जी हां, बिल्कुल सही। यह अलीगढ़ से 90 किलोमीटर पश्चिम में है। तीस साल पहले, इसके मुखिया राजा चंद्रदेव सिंह थे। मैं उस समय जागीर का प्रबंधक था। हालांकि देश स्वतंत्र हो चुका था, फिर भी हमारे जैसे छोटे राज्य सरकार के ज्यादा दखल के बिना निजी तौर पर चलाए जा सकते थे। चंद्रदेव सिंह तब चौवन वर्ष के थे, लेकिन मजबूत और बहुत सक्रिय थे। वे शिकार पर जाते थे, टेनिस और पोलो खेलते थे और फिट रहने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करते थे। उन्हें कभी-कभार अस्थमा का दौरा पड़ता था, बस यही एक चीज उन्हें परेशान करती थी। किसने सोचा था कि एक दिन अचानक यह इतना बढ़ जाएगा कि राजा पूरी तरह से लाचार हो जाएंगे? लेकिन ऐसा ही हुआ। मैं उनके भयानक दौरों का वर्णन भी नहीं कर सकता। छह महीनों में, जो व्यक्ति एक जगह बैठ भी नहीं सकता था, वह पूरी तरह से बिस्तर पर आ गया। कोई डॉक्टर उनकी मदद नहीं कर सका, कोई दवा काम नहीं आई। वे सांस नहीं ले सकते थे, खा नहीं सकते थे, सो नहीं सकते थे, बोल नहीं सकते थे, हिल-डुल नहीं सकते थे।
जब हम लगभग पूरी तरह से उम्मीद छोड़ चुके थे, तभी हमें भवानी उपाध्याय के बारे में पता चला। वे हरिद्वार में रहते थे और जाहिर तौर पर उन्हें एक आयुर्वेदिक दवा का ज्ञान था जिससे अस्थमा ठीक हो सकता था। दर्जनों लोग पहले ही उनके पास जा चुके थे और पूरी तरह से ठीक हो चुके थे।
यह सुनकर मैं स्वयं हरिद्वार गया और उनका पता लगाया। वे उस क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध थे। वे एक बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति निकले, जो एक छोटी

कि रिपोर्टर और पत्रकार कैसे होते हैं। अगर यह बात लीक हो जाती, तो क्या आपको लगता है कि वे इसे गुप्त रहने देते?
'यह सच है। जो लोग जानते थे, उन्होंने निश्चित रूप से अपने होंठ बंद रखे।' श्री पुरी ने आगे कहा, 'चंद्रदेव सिंह बारह वर्ष और जीवित रहे। उनके बाद सूरजदेव उत्तराधिकारी बने, हालांकि, तब तक उन्हें कोई राजा नहीं कहता था। फिर भी, वे जागीर और अपने पिता की अन्य सभी संपत्तियों के प्रमुख स्वामी थे।'
‘क्या आप मैनेजर बने रहे?’ फेलुदा ने पूछा।
जी हां। मैंने नए प्रोजेक्ट विकसित करके, कारोबार में उतरकर और संपत्ति के भविष्य को सुरक्षित करके उसे चलाने की पूरी कोशिश की; लेकिन दुर्भाग्य से, सूरज को इन सब चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसकी जिंदगी का एकमात्र जुनून किताबें थीं। वह लगभग सोलह घंटे हर दिन अपनी लाइब्रेरी में बिताता था और मुझसे व्यापारिक मामलों पर चर्चा करने से इनकार करता था। मैं अकेले कितना कुछ कर सकता था? जल्द ही, संपत्ति की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी। ‘आपका अपना बेटा अब तक बड़ा हो गया होगा।’
'हां, बिल्कुल। मैंने उसे अलीगढ़ के एक स्कूल में भेजा था। वहां से वह दिल्ली के कॉलेज गया और फिर वहीं अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया। वह रूपनारायणगढ़ वापस नहीं लौटा।'
क्या वह आपका इकलौता बेटा है?
जी हाँ। खैर, मैं जागीर के कामकाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए संघर्ष कर रहा था। कभी-कभी तो मैं सब कुछ छोड़कर मुरादाबाद चले जाने के बारे में सोचता था, जहाँ से मैं आया हूँ। लेकिन मुझे रूपनारायणगढ़ से बहुत लगाव हो गया था, मैं इसे यूँ ही नहीं छोड़ सकता था।
श्री पुरी सिगार जलाने के लिए थोड़ी देर रुके। फिर उन्होंने कहा, “अब मैं अपनी कहानी के सबसे महत्वपूर्ण हिस्से पर आ रहा हूँ, जिससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि मैं यहाँ क्यों हूँ। कृपया धैर्य रखें। बात यह थी: लगभग एक सप्ताह पहले, चंद्रदेव के छोटे बेटे, पवन, अचानक मेरे पास आए। उन्होंने सबसे पहले कहा, “मुझे उस व्यक्ति का नाम और पता बता दीजिए जिसने मेरे पिता का इलाज किया।” स्वाभाविक रूप से, मैंने उनसे पूछा कि उन्हें यह क्यों चाहिए, क्या कोई बीमार था? इस पर उन्होंने कहा कि नहीं, कोई बीमार नहीं था। उन्हें उपाध्याय से केवल एक टेलीविजन फिल्म के सिलसिले में संपर्क करना था, जिसे वे बना रहे थे।”
मुझे पता था कि पवन को फोटोग्राफी में रुचि थी, लेकिन मुझे यह बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि अब वह फिल्म निर्माण में भी रुचि लेने लगे हैं। मैंने उनसे कहा, "क्या मतलब, तुम इस आदमी को अपनी फिल्म में दिखाने वाले हो?" उन्होंने कहा, "बेशक। मैं सबको उस पेंडेंट के बारे में भी बताऊंगा जो उन्हें दिया गया था। मुझे शक है कि किसी बीमारी को ठीक करने के लिए किसी को इतना बड़ा इनाम कभी मिला होगा।" इस पर मुझे उन्हें बताना पड़ा कि उपाध्याय स्वयं तो किसी भी तरह की पब्लिसिटी नहीं चाहते थे। लेकिन उन्होंने मुझे यह समझाते हुए लंबा-चौड़ा भाषण दिया कि हमारे टेलीविजन के लिए काम करने वालों का यह कर्तव्य है कि वे जनता को सभी महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी दें,

चाहे वे कभी भी घटित हुई हों। इसके अलावा, हो सकता है कि पवन से बात करने के बाद उपाध्याय अपना मन बदल लें। तो क्या मैं उन्हें उनका पता दे दूं?
इसके बाद मेरे पास पवन को उपाध्याय के निवास स्थान के बारे में बताने के अलावा कोई चारा नहीं था। उसने मुझे धन्यवाद दिया और चला गया।
‘उपाध्या की उम्र अब कितनी होगी?’
‘उनकी उम्र सत्तर के आसपास होगी। जब वे रूपनारायणगढ़ आए थे, तब वे जवान नहीं थे।’
फेलुदा कुछ क्षणों तक चुप रहा, लेकिन श्री पुरी को लगातार देखता रहा। फिर उसने पूछा, 'क्या आप यहाँ सिर्फ इसलिए आए हैं ताकि उपाध्याय के रहस्य के बारे में किसी को पता न चले?'
श्री पुरी ने सिर हिलाया। 'नहीं, श्री मित्तर। बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। मुझे चंद्रदेव के पेंडेंट की बहुत चिंता है। अगर पवन फिल्म बना रहे हैं, तो उन्हें बहुत पैसों की जरूरत होगी। शायद उन्होंने इंतजाम कर लिया हो, मुझे नहीं पता। लेकिन मुझे इतना जरूर पता है कि ऐसा लॉकेट उनकी सारी आर्थिक चिंताओं को दूर करने के लिए काफी होगा।'
लेकिन इसका मतलब तो अनुचित साधनों को अपनाना होगा, है ना?
'हां बेशक।'
‘पावन्देओ किस तरह का आदमी है?’
‘उसे अपने पिता की खूबियाँ और कमियाँ दोनों विरासत में मिली हैं। वह एक अच्छा खिलाड़ी है और बहुत अच्छा फोटोग्राफर भी। लेकिन वह बहुत जुआ खेलता है। उसने पोकर में काफी पैसा गंवाया है। वह कभी-कभी पूरी तरह से लापरवाह हो सकता है, लेकिन मैंने उसे आश्चर्यजनक रूप से विचारशील और उदार भी पाया है। अपने पिता की तरह, उसका चरित्र जटिल है, और उसे अच्छी तरह से जानना आसान नहीं है।’
तो आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?
मैं बस इतना चाहता हूं कि आप यह सुनिश्चित करें कि किसी को भी अनुचित साधनों का सहारा लेने का मौका न मिले।
‘क्या पावन्देव हरिद्वार जा रहे हैं?’
'हां, लेकिन तुरंत नहीं। उसे रवाना होने में कम से कम एक सप्ताह का समय लगेगा, क्योंकि वह इस समय महल की तस्वीरें लेने में व्यस्त है।'
‘अगर मैं यह केस लेने के लिए सहमत हो जाता, तो मैं तुरंत नहीं जा सकता था। ट्रेन में सीट आरक्षित करने में मुझे कुछ समय लग जाता। लेकिन मान लीजिए कि मैं सहमत हो भी जाता, तो मैं पावन्देओ को कैसे पहचानता?’
मैंने इस बारे में सोचा था। ये रही उसकी तस्वीर। पिछले महीने एक पत्रिका में छपी थी, जब उसने बिलियर्ड चैंपियनशिप जीती थी। आप इसे रख सकते हैं। और... उह... क्या आप चाहेंगे कि मैं आपको अग्रिम भुगतान कर दूं?
‘अभी नहीं। अगर मैं कोई केस लेने का फैसला करता हूं, तो मुझे एक हजार रुपये का अग्रिम भुगतान चाहिए। यह अप्रतिदेय है। अगर केस सफल होता है, तो मैं एक हजार रुपये और लेता हूं।’

‘बहुत अच्छा। श्रीमान मिटर, कृपया इस पर विचार करें। मैं पार्क होटल में ठहर रहा हूँ। कृपया मुझे आज दोपहर चार बजे तक अपना निर्णय बता दें। यदि आपका उत्तर हाँ होगा, तो मैं आपकी अग्रिम राशि लेकर वापस आ जाऊँगा।’

दो
मुझे पता था कि फेलुदा केस लेने के लिए तैयार हो जाएगा। उसने हाल ही में हांगकांग से खरीदे एक माइक्रोकैसेट रिकॉर्डर पर अपने मुवक्किलों के साथ बातचीत रिकॉर्ड करना शुरू किया था। श्री पुरी की अनुमति से, फेलुदा के साथ उनकी बातचीत भी रिकॉर्ड की गई थी। दोपहर में, फेलुदा ने पूरी रिकॉर्डिंग सुनी और एक-एक शब्द ध्यान से सुना। फिर उसने मशीन बंद कर दी और कहा, 'यह केस मेरे पास आने वाले आम केसों से बिल्कुल अलग है। यही पहला कारण है कि मुझे लगता है कि मुझे इसे लेना चाहिए। दूसरा कारण है हरिद्वार और ऋषिकेश फिर से घूमने का मौका। आखिर, मैंने अपने जासूस के शुरुआती दिन यहीं तो बिताए थे?' जी हाँ, बिल्कुल। मैं भला कैसे भूल सकता हूँ कि हरिद्वार में ही सम्राट की चोरी हुई अंगूठी के मामले ने एक नया मोड़ लिया था?
उन्होंने श्री पुरी को फोन किया और उन्हें अपने फैसले के बारे में बताया। श्री पुरी महज आधे घंटे में वापस आए और उन्हें अग्रिम राशि दे दी। उनके जाने के बाद, फेलुदा ने हमारे ट्रैवल एजेंट से बात की और उन्हें जल्द से जल्द दून एक्सप्रेस में तीन सीटें बुक करने के लिए कहा।
दो दिन बाद, कुछ ऐसा हुआ जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी। श्री पुरी ने हमें रूपनारायणगढ़ से एक टेलीग्राम भेजा। उसमें लिखा था: ड्रॉप का अनुरोध। मामला। पत्र आगे है।
मामला रद्द? क्यों? ऐसा पहले कभी किसी मुवक्किल ने हमारे साथ नहीं किया था। कुछ दिनों बाद श्री पुरी का पत्र आया। उसमें संक्षेप में लिखा था कि पावन्देओ सिंह ने अपना इरादा बदल लिया है। वे भवानी उपाध्याय को ढूँढ़कर उनसे साक्षात्कार करेंगे, लेकिन केवल यह बताएँगे कि वे अपना समय बीमारों की देखभाल में कैसे व्यतीत करते थे। वे यह उल्लेख करेंगे कि उपाध्याय ने एक बार रूपनारायणगढ़ के राजा का इलाज किया था और उन्हें ठीक किया था, लेकिन वे पेंडेंट के बारे में कुछ नहीं कहेंगे। इसलिए फेलुदा को हरिद्वार तक जाने की कोई आवश्यकता नहीं थी।
फेलुदा ने श्री पुरी को एक और टेलीग्राम भेजकर उत्तर दिया: ड्रॉपिंग मामला तो वही था, लेकिन तीर्थयात्रियों की तरह जाना था। उनकी जिज्ञासा जागृत हो गई थी। वे एक पर्यटक के रूप में ही जाएंगे, लेकिन पूरी सावधानी बरतेंगे। सच कहूँ तो, मुझे इससे बहुत खुशी हुई, क्योंकि मैं भवानी उपाध्याय और पावन्देओ दोनों से मिलना चाहता था।
यह सब कुछ दिन पहले हुआ था। उस समय हम दून एक्सप्रेस के चार बर्थ वाले डिब्बे में बैठे थे। ट्रेन फैजाबाद में रुकी थी और हम मिट्टी के बर्तनों में गर्म चाय पी रहे थे।
‘आपने कहा था कि आप एक बार हरिद्वार गए थे,’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू से कहा।
‘यह कब की बात है?’

'ओह, जब मैं सिर्फ एक बच्ची थी, लगभग दो साल की। मुझे उस जगह की बिल्कुल भी याद नहीं है।'
‘क्या आप सिर्फ हरिद्वार जा रहे हैं, या आप अन्य स्थानों को भी देखने का इरादा रखते हैं?’
यह सवाल हमारे सहयात्री, लालमोहन बाबू के बगल में बैठे एक बुजुर्ग सज्जन ने पूछा। उनके पतले बाल लगभग सफेद थे, लेकिन उनकी त्वचा पर झुर्रियाँ नहीं थीं और उनके मजबूत सफेद दांत उनके अपने ही लग रहे थे। उनकी आँखों के आसपास कुछ हँसी की लकीरें थीं और उनकी आँखों की चमक से ऐसा लग रहा था मानो वे किसी भी समय हँसने के लिए तैयार हों।
फेलुदा ने जवाब दिया, 'हरिद्वार में हमारा कुछ काम है। जब वह पूरा हो जाएगा, तब हम शायद दूसरी जगहों पर जाने की कोशिश करेंगे। हमने अभी तक इस बारे में ठीक से सोचा नहीं है।'
उस सज्जन ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। ‘क्या! आपका मतलब यह तो नहीं है कि आपने केदार और बद्रीनाथ जाने के बारे में सोचा ही नहीं? अगर आप इतनी दूर का सफर कर ही रहे हैं, तो आपको ये जगहें ज़रूर देखनी चाहिए। आप बद्रीनाथ बस से जा सकते हैं। केदार तक बसें नहीं जातीं, और आपको आखिरी कुछ मील पैदल चलना पड़ेगा, लेकिन आपकी उम्र में यह कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। और आपके दोस्त के लिए, वहाँ डंडी और टट्टू भी होंगे। क्या आपने कभी टट्टू की सवारी की है?’ उन्होंने लालमोहन बाबू की ओर देखते हुए पूछा।
लालमोहन बाबू ने अपनी चाय खत्म की, चायदानी खिड़की से बाहर फेंक दी और गंभीरता से कहा, 'नहीं, लेकिन मैंने थार रेगिस्तान में ऊंट की सवारी की है। क्या आपको ऐसा अनुभव हुआ है?'
‘नहीं, मुझे खेद है कि ऐसा नहीं है,’ सज्जन ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया, ‘मैं कभी रेगिस्तान के आसपास भी नहीं गया। मेरा घूमने का क्षेत्र पहाड़ों तक ही सीमित है। मैं केदार और बद्री तेईस बार जा चुका हूँ। इसका धार्मिक आस्था से कोई लेना-देना नहीं है। मैं बस उनकी प्राकृतिक सुंदरता देखने के लिए वापस जाता हूँ। यह अपने आप में एक आध्यात्मिक अनुभव है, मैं आपको बता सकता हूँ। अगर मेरा परिवार न होता, तो मैं खुशी-खुशी वहीं रहता। मैं जमुनोत्री, गंगोत्री, गोमुख, पंचकेदार और वासुकीताल भी जा चुका हूँ। मुझे अपना परिचय देने दीजिए। मैं माखनलाल मजूमदार हूँ।’
फेलुदा ने 'नमस्कार' कहा और हमारा परिचय कराया।
श्री मजूमदार ने कहा, 'आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। सड़क परिवहन की बदौलत आजकल बहुत से लोग इन जगहों पर जा रहे हैं। ये तीर्थयात्री नहीं, बल्कि पिकनिक मनाने वाले लोग हैं। लेकिन, बेशक, बसें और टैक्सियाँ हिमालय की भव्यता को कम नहीं कर सकतीं। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता सचमुच अविश्वसनीय है।'
हम सुबह 6 बजे हरिद्वार पहुंचे।
इस बार पिछली बार की तुलना में उतने पांडा नहीं दिखे। हम चाय और नाश्ते के लिए रेलवे रेस्तरां में रुके। फेलुदा ने वहां के प्रबंधक से उपाध्याय के बारे में पूछा। उन्होंने जो बताया, वह हमारे लिए एक बड़ा झटका था।

Bhavani Upadhyaya had left Haridwar more than three months ago, and gone to Rudraprayag.
‘उनके बारे में हमें कौन बता सकता है? क्या यहाँ कोई ऐसा है जो उन्हें अच्छी तरह जानता हो?’
‘आप कांतिभाई पंडित से बात करने की कोशिश कर सकते हैं। वे उपाध्याय के जमींदार हुआ करते थे।’
क्या वह लक्ष्मण मोहल्ला में रहता है?
'जी हां, जी हां। वह और उपाध्याय पड़ोसी थे। वहां जाओ और किसी से भी पूछ लो। वे तुम्हें कांतिभाई के घर ले जाएंगे।'
फेलुदा ने उन्हें धन्यवाद दिया और बिल का भुगतान कर दिया। हमने तुरंत लक्ष्मण मोहल्ला जाने का फैसला किया।
कांतिभाई पंडित लगभग साठ वर्ष के थे, उनका रंग साफ था और चेहरे की बनावट तीक्ष्ण थी। उनके चेहरे पर घनी दाढ़ी थी और वे चश्मे से हमारी ओर देख रहे थे। उपाध्याय के बारे में पूछे जाने पर वे काफी आश्चर्यचकित दिखे।
‘क्या चल रहा है?’ उसने पूछा। ‘मुझे आश्चर्य है कि उपाध्याय में अचानक इतनी दिलचस्पी क्यों? लगभग तीन दिन पहले ही कोई और उनके बारे में पूछने आया था।’ ‘क्या आपको याद है कि वह कैसा दिखता था?’
'हां बेशक।'
‘देखो, क्या यह वही आदमी था?’ फेलुदा ने पावन्देओ सिंह की तस्वीर निकाली और उसे पंडित जी को दिखाया।
'जी हां, यही वो व्यक्ति है जो मुझसे मिलने आया था। मैंने उसे रुद्रप्रयाग में उपाध्याय का पता दिया था।'
‘अगर आप मुझे भी यह दे दें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।’ फेलुदा ने उन्हें अपना एक कार्ड दिया। उसे देखते ही पंडित जी के व्यवहार में उल्लेखनीय बदलाव आ गया।
‘ओह, कृपया बैठ जाइए,’ उन्होंने व्यस्तता से कहा। ‘मुझे खेद है कि मैंने आपको इतनी देर तक खड़ा रखा।’ जब हम सब बैठ गए, तो उन्होंने आगे कहा, ‘क्या कुछ गड़बड़ है, श्रीमान मिटर? क्या हुआ है?’
‘अभी तक कुछ नहीं हुआ है,’ फेलुदा मुस्कुराया, ‘लेकिन कुछ होने की संभावना है। मैं आपसे एक सीधा सवाल पूछने जा रहा हूँ, श्री पंडित जी। मुझे सीधा जवाब चाहिए।’
'हाँ?'
‘क्या श्री उपाध्याय के निजी सामान में कोई बहुत कीमती चीज थी?’ श्री पंडित ने फेलुदा की ओर मुस्कुराते हुए पूछा। ‘मुझे इस सवाल का जवाब पहले ही देना पड़ चुका है। मैं आपको वही बात बताऊंगा जो मैंने श्री सिंह को बताई थी। श्री उपाध्याय ने मुझे एक छोटा सा थैला दिया था और उसे तिजोरी में रखने को कहा था। मैंने उसे ताला लगाकर रख दिया, लेकिन मुझे नहीं पता कि उसमें क्या था। उन्होंने मुझे बताया भी नहीं और मैंने पूछा भी नहीं।’
क्या वह इसे अपने साथ रुद्रप्रयाग ले गया था?
जी हाँ, महोदय। लेकिन एक और बात है जो मुझे लगता है कि आपको जाननी चाहिए। लगभग छह महीने पहले, उपाध्याय के जाने से पहले, एक दिन दो आदमी उनसे मिलने

आए। उनमें से एक शायद मारवाड़ी था, वह अमीर आदमी जैसा दिखता था। उन्होंने उनके साथ लगभग एक घंटा बिताया, बातें कीं और बहस की। मुझे ठीक से नहीं पता कि क्या कहा गया, लेकिन उनके जाने के बाद, उपाध्याय मेरे पास आए। उन्होंने कहा, “पंडितजी, आज मैंने एक घातक पाप पर विजय प्राप्त कर ली है। श्री सिंघानिया ने मुझे लुभाने की कोशिश की—ओह, उन्होंने बहुत कोशिश की— लेकिन मैं उनके बहकावे में नहीं आया।” ये उनके शब्द थे।
‘क्या आपने उपाध्याय के प्रेतबाधा के बारे में किसी और को बताया था?’ ‘देखिए, श्री मित्तर, बहुत से लोग जानते थे कि वह कुछ छुपा रहे हैं। कुछ लोग तो उनके पीठ पीछे इस बड़े रहस्य का मज़ाक भी उड़ाते थे। मैं... मैं कभी-कभी शाम को अपने दोस्तों के साथ बैठकर शराब पीता हूँ, तो शायद जब मैं पूरी तरह होश में नहीं था, तब कुछ बात मुंह से निकल गई हो—मुझे सच में नहीं पता। लेकिन यहाँ के अधिकांश लोग उपाध्याय का इतना सम्मान करते थे कि किसी ने भी यह जानने की कोशिश नहीं की होगी कि उन्होंने तिजोरी में क्या छुपा रखा था।’ ‘क्या रुद्रप्रयाग जाने का कोई विशेष कारण था?’
उन्होंने मुझे बताया कि उनकी मुलाकात एक घाट पर एक साधु से हुई थी। उनसे बात करने के बाद उपाध्याय के व्यक्तित्व में गहरा बदलाव आया। वे पहले से अधिक एकांतप्रिय हो गए। मैं अक्सर उन्हें अपने कमरे में चुपचाप बैठे, विचारों में डूबे हुए पाता था।
क्या वह अपनी सारी दवाइयां अपने साथ ले गया था?
‘उसके पास ले जाने के लिए ज्यादा कुछ नहीं था। उसके पास बस कुछ जड़ी- बूटियों और जड़ों के जार, कुछ गोलियां और मलहम थे, बस इतना ही। हां, वह उन्हें अपने साथ ले गया। लेकिन मुझे लगता है कि आखिरकार वह आयुर्वेद को पूरी तरह से त्याग देगा और पूर्ण रूप से संन्यासी बन जाएगा।’
‘क्या वह शादीशुदा नहीं था?’
नहीं। उनका किसी भी चीज़ से कोई लगाव नहीं था। उन्होंने मुझे जाते हुए दिन कहा, “मेरे सामने दो रास्ते थे। एक का मतलब था भोग-विलास और सुख-सुविधाओं के पीछे भागना। दूसरे का मतलब था त्याग और सादगी। मैंने दूसरा रास्ता चुना।”
‘क्या उसने जाने से पहले आपको अपना नया पता दिया था?’
'अरे नहीं। मुझे तो यह जानकारी रुद्रप्रयाग से भेजे गए पोस्टकार्ड से मिली।'
‘क्या यह अभी आपके पास है?’
‘जी हां।’ श्री पंडित अंदर गए और एक पोस्टकार्ड लेकर लौटे, जो उन्होंने फेलुदा को दे दिया। मैं उस पर लिखा हुआ पढ़ तो नहीं सका, लेकिन देख सकता था कि वह हिंदी में लिखा था। फेलुदा ने उसे जल्दी से पढ़ा, कहा, ‘बहुत दिलचस्प,’ और उसे श्री पंडित को लौटा दिया। पता नहीं उस कार्ड में ऐसा क्या दिलचस्प था।
आखिरकार, पंडित जी ने खुद हमारे लिए टैक्सी का इंतजाम किया। यह हमें पहले रुद्रप्रयाग ले जाएगी, और फिर हम जहाँ चाहें वहाँ जा सकते थे। गढ़वाली ड्राइवर का नाम जोगिंदर राम था। वह बहुत ही मिलनसार और खुशमिजाज लग रहा था। हम सभी को वह तुरंत पसंद आ गया। फेलुदा ने उसे बताया कि हम ऋषिकेश में

जल्दी दोपहर का भोजन करेंगे और बारह बजे रुद्रप्रयाग के लिए निकलेंगे। ऋषिकेश हरिद्वार से पंद्रह मील दूर था। हरिद्वार में देखने लायक कुछ खास नहीं था। नदी पिछली बार देखने से भी ज्यादा गंदी लग रही थी। शहर का हर शांत कोना नई इमारतों से भर गया था; सभी दीवारें हाथ से लिखे विज्ञापनों से ढकी हुई थीं। हमारे लिए ऋषिकेश जाना जरूरी था, क्योंकि हमें रुद्रप्रयाग में अपने रहने का इंतजाम करना था। हम किसी धर्मशाला में ठहर सकते थे। आस-पास के हर कस्बे में पुरानी और मशहूर कालीकामली धर्मशालाएँ थीं, लेकिन हमें यकीन था कि पावन्देओ उनमें से किसी में नहीं ठहरेगा।
सौभाग्य से, ऋषिकेश से निकलने से पहले, हम रुद्रप्रयाग में गढ़वाल मंडल विकास निगम द्वारा संचालित विश्राम गृह में एक डबल रूम बुक करने में सफल रहे। उन्होंने लालमोहन बाबू के लिए उसी कमरे में एक अतिरिक्त बिस्तर लगाने की व्यवस्था कर दी। हमने जल्दी से दोपहर का भोजन किया और योजना के अनुसार रुद्रप्रयाग के लिए रवाना हो गए। कुछ मील आगे बढ़ने पर, मुझे दाईं ओर लक्ष्मणझूला दिखाई दिया। हरिद्वार की तरह, यह भी भद्दी नई इमारतों से जर्जर हो चुका था, लेकिन फिर भी, सम्राट के वलय से संबंधित हमारे रोमांच की यादें मुझे रोमांचित कर गईं।
रुद्रप्रयाग दो कारणों से प्रसिद्ध था। पहला कारण था जिम कॉर्बेट। जिसने भी 'द मैन-ईटिंग लेपर्ड ऑफ रुद्रप्रयाग' पढ़ी है, उसे कॉर्बेट का धैर्य, दृढ़ता और साहस हमेशा याद रहेगा, जिसके साथ उन्होंने पचपन साल पहले आदमखोर तेंदुए का शिकार किया था। हमारे ड्राइवर जोगिंदर ने बताया कि उन्होंने अपने दादाजी को कॉर्बेट के बारे में बात करते सुना था। वे स्थानीय गढ़वालियों की बहुत परवाह करते थे और गढ़वाल भी उन्हें उतना ही प्यार करते थे।
रुद्रप्रयाग के महत्व का दूसरा कारण यह था कि यहाँ से केदारनाथ और बद्रीनाथ दोनों के लिए यात्रा संभव थी। रुद्रप्रयाग में दो नदियाँ - मंदाकिनी और अलकनंदा - मिलती थीं। अलकनंदा नदी के किनारे चलने पर बद्रीनाथ पहुँचा जा सकता था; मंदाकिनी नदी के किनारे चलने पर केदारनाथ पहुँचा जा सकता था। बद्रीनाथ के लिए बसें चलती थीं। लेकिन केदारनाथ जाने के लिए पैदल चलना पड़ता था, या फिर डंडी या घोड़े पर सवार होकर जाना पड़ता था; बस मार्ग गौरीकुंड में समाप्त हो जाता था, जो केदारनाथ से 14 किलोमीटर पहले था। रुद्रप्रयाग ऋषिकेश से 140 किलोमीटर दूर था। अगर हम 30 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से भी चलें, तो भी अंधेरा होने से पहले वहाँ नहीं पहुँच सकते थे। रास्ते में हमें तीन कस्बे - देवप्रयाग, कीर्तिनगर और श्रीनगर - से होकर गुजरना था। श्रीनगर गढ़वाल जिले की राजधानी थी, इसका कश्मीर की राजधानी से कोई संबंध नहीं था।
जंगलों और पहाड़ियों से होकर गुजरने वाली सड़क ऊपर-नीचे जा रही थी। कभी- कभी पेड़ हटते ही दूर हरे-भरे पठार दिखाई देते थे, जिन पर सुंदर छोटे-छोटे गाँव बसे हुए थे, मानो किसी तस्वीर में छपे हों।
लेकिन मैं नज़ारे पर ध्यान नहीं दे पा रहा था। मेरा मन बार-बार भवानी उपाध्याय और उनके पास मौजूद उस कीमती लटकन की तरफ जा रहा था। अगर कोई संन्यासी, जिसके पास कोई और सांसारिक संपत्ति न हो, सिर्फ एक चीज से चिपके

रहने का फैसला करे, तो मुसीबत तो आएगी ही। कोई न कोई कहीं न कहीं उससे वह चीज छीनना चाहेगा। इसके अलावा, मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा था कि श्री पुरी ने फेलुदा को यह सब भूल जाने के लिए क्यों कहा। उन्होंने अपने पत्र में इसका स्पष्टीकरण तो दिया था, लेकिन क्या वह सचमुच सच था? या मैं शायद कुछ ज्यादा ही सोच रहा था, सिर्फ इसलिए कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था?
लालमोहन बाबू ने चुप्पी तोड़ी। उन्होंने स्वीकार किया, ‘मैं भूगोल या इतिहास में कभी अच्छा नहीं था।’ ‘आपने अक्सर इस बात का जिक्र किया है, है ना, फेलू बाबू? तो अब कृपया समझाएं कि हम कहां हैं? मेरा मतलब है, देश का कौन सा हिस्सा है?’
फेलुदा ने बार्थोलोम्यू कंपनी द्वारा निर्मित अपना विशाल नक्शा निकाला। ‘देखो, ये हरिद्वार है, और हम रुद्रप्रयाग जा रहे हैं। ये रहा, क्या तुम इसे देख सकते हो? इसका मतलब है, पूर्व में नेपाल है और पश्चिम में कश्मीर। हम बीच में हैं। अब समझ में आया?’
'जी हां। अब मुझे सब कुछ बिल्कुल स्पष्ट हो गया है, एकदम साफ-साफ।'

तीन
श्रीनगर में चाय पीने के लिए थोड़ी देर रुकने के बाद जब हम रुद्रप्रयाग पहुँचे, तब तक लगभग पाँच बज चुके थे। रुद्रप्रयाग एक अपेक्षाकृत बड़ा कस्बा था, जिसमें अपना स्कूल, कॉलेज, अस्पताल और डाकघर था। उस जगह पर एक बोर्ड लगा हुआ करता था जहाँ कॉर्बेट ने उस मशहूर तेंदुए को मारा था। 'लेकिन वह कुछ साल पहले टूट गया और किसी ने उसे दोबारा नहीं लगाया,' जोगिंदर ने हमें बताया।
हम सीधे गेस्ट हाउस गए। यह मुख्य कस्बे से थोड़ी दूर, एक शांत और निर्मल स्थान पर स्थित था। वहाँ पहुँचते ही हमें सबसे पहले यह खबर मिली कि केदार जाने वाली सड़क खुल गई है और बसें फिर से चलने लगी हैं। दरअसल, भूस्खलन के कारण यह सड़क कई दिनों से बंद थी। बाद में पता चला कि यह हमारे लिए सौभाग्य की बात थी, लेकिन हमें इसका एहसास काफी बाद में हुआ।
विश्राम गृह के प्रबंधक श्री गिरिधारी ने फेलुदा के बारे में नहीं सुना था, लेकिन फिर भी वे अत्यंत दयालु और आतिथ्यपरस्त थे। उन्होंने बताया कि उन्होंने कई बंगाली लेखकों की रचनाएँ अनुवादित रूप में पढ़ी हैं, जिनमें बिमल मित्रा और शंकर भी शामिल हैं। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'वे मेरे पसंदीदा लेखक हैं।'
कुछ मिनट बाद, हमारी मुलाकात एक और अतिथि से हुई, जो भूस्खलन के कारण रुद्रप्रयाग में फंस गए थे। श्री गिरिधारी के विपरीत, उन्होंने फेलुदा को तुरंत पहचान लिया। उन्होंने कहा, 'मैं एक पत्रकार हूं, मैंने आपके कई मामलों के बारे में सुना है। इलाहाबाद में सुखनटंकर हत्याकांड के बाद उत्तर भारत के अखबारों में आपकी तस्वीर छपी थी। इसी वजह से मैं आपको पहचान पाया। मेरा नाम कृष्णकांत भार्गव है। आपसे मिलकर मुझे बहुत गर्व हो रहा है, महोदय।'
वह व्यक्ति लगभग चालीस वर्ष का था, मध्यम कद का था और उसकी घनी दाढ़ी थी। श्री गिरिधारी को यह जानकर स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा हुई कि फेलुदा एक अन्वेषक है।
‘मुझे उम्मीद है कि यहाँ कोई परेशानी नहीं है?’ उसने चिंता से पूछा।
‘श्री गिरिधारी, मुसीबत कहीं भी हो सकती है, लेकिन हम यहाँ मुसीबत ढूंढने नहीं आए हैं। दरअसल, हम तो सिर्फ भवानी उपाध्याय नाम के एक व्यक्ति को ढूंढ रहे हैं।’
‘उपाध्याय? लेकिन वो तो अब यहाँ नहीं हैं!’ श्री भार्गव ने हैरानी से कहा। ‘मैं तो बस उन पर एक कहानी लिखने आया था। हरिद्वार पहुँचकर मैंने सुना कि वो यहाँ आए थे। इसलिए मैं यहाँ आया और पता चला कि वो केदारनाथ चले गए हैं। इसीलिए मैंने उनका पीछा करने का फैसला किया। अब जब रास्ता खुल गया है, तो मैं कल सुबह निकलने का इरादा रखता हूँ। वो बहुत ही दिलचस्प शख्सियत थे।’

‘क्या वो हैं? मैं उन्हें ढूंढ रहा हूँ क्योंकि मुझे विश्वास है कि वो बीमारों का इलाज करते हैं और चमत्कार कर सकते हैं। देखिए,’ फेलुदा ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए लालमोहन बाबू की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘मेरा एक दोस्त मानसिक रूप से विक्षिप्त है। वह ज़्यादातर समय तो सामान्य व्यवहार करता है, लेकिन कभी-कभी उसकी समस्या बढ़ जाती है। वो बेतुकी बातें करने लगता है और कभी-कभी हिंसक भी हो जाता है। कलकत्ता में कई डॉक्टरों ने उसे देखा है, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इसलिए जब मैंने उपाध्याय के बारे में सुना, तो मुझे लगा कि शायद वो मदद कर सकें। कम से कम एक बार कोशिश तो करनी चाहिए, है ना?’
पहले कुछ क्षणों के विस्मित अविश्वास के बाद, लालमोहन बाबू जल्दी ही बात समझ गए। फेलुदा को सही साबित करने के लिए, उन्होंने अपने चेहरे पर पागलपन का भाव लाने की कोशिश की, लेकिन वे केवल हमारे ड्राइंग रूम में टंगे नेपाली मुखौटे की तरह दिखने में ही सफल हुए।
श्री भार्गव ने सहानुभूतिपूर्वक सिर हिलाया। “तो आपको भी केदारनाथ में उसकी तलाश करनी चाहिए। वह बद्री नहीं गया, क्योंकि वह मुझे वहाँ नहीं मिला। लेकिन मैंने सुना है कि वह संन्यासी बन गया है, इसलिए हो सकता है उसने अपना नाम बदल लिया हो।”
इसी समय, एक अमेरिकी कार गेट के बाहर आकर रुकी। उसमें से तीन आदमी उतरे और हमारी ओर चलने लगे। इस दल के नेता को पहचानना आसान था, क्योंकि हम सभी ने श्री पुरी द्वारा फेलुदा को दी गई तस्वीर देखी थी। वह रूपनारायणगढ़ के पावन्देओ सिंह थे। बाकी दो स्पष्ट रूप से उनके चमचे थे। पावन्देओ ने एक बेंत की कुर्सी ली और बरामदे में बैठ गए। हम उनसे कुछ ही दूरी पर चाय पी रहे थे। पावन्देओ ने सिर हिलाते हुए कहा, 'कोई फायदा नहीं हुआ। हम अभी बद्री से आए हैं। उपाध्याय वहां नहीं हैं।'
श्री गिरिधारी ने टिप्पणी करते हुए कहा, 'मुझे आश्चर्य इस बात का है कि इस विश्राम गृह में हर कोई उपाध्याय को अलग-अलग कारणों से ढूंढ रहा है। आप उन्हें अपनी फिल्म में शामिल करना चाहते हैं, श्री भार्गव उन पर एक कहानी लिखना चाहते हैं, और श्री मित्तर अपने मित्र का इलाज करवाना चाहते हैं।' पावांडो के आदमी टेलीविजन उपकरण ले जा रहे थे। वह एक विशाल लेंस वाला कैमरा पकड़े हुए था।
‘क्या सर्दी का मौसम है?’ फेलुदा ने पूछा।
जी हां। मैं इसे बद्रीनाथ की चोटियों पर पिघलती बर्फ का वीडियो बनाने के लिए अपने साथ ले गया था। दरअसल, मैं जो मुख्य उपकरण इस्तेमाल कर रहा हूं, वह इतना छोटा है कि एक व्यक्ति उसे संभाल सकता है। इसमें साउंड भी शामिल है। मेरे दोस्त गौरीकुंड तक मेरे साथ जाएंगे। बाकी का वीडियो मैं खुद बना लूंगा।
‘क्या इसका मतलब यह है कि आप कल केदारनाथ के लिए रवाना होने वाले हैं?’ 'हां, सुबह सबसे पहले।'
'अगर आपको उपाध्याय मिल जाएं तो क्या आप उनका साक्षात्कार लेंगे?'
जी हां, बिल्कुल। यह फिल्म एक ऑस्ट्रेलियाई टेलीविजन कंपनी के लिए बन रही है। मैं पहाड़ों, बर्फ और बाकी सब कुछ तो दिखाऊंगा ही, लेकिन उपाध्याय के

साथ साक्षात्कार को काफी फुटेज मिलेगी। वह एक अद्भुत व्यक्तित्व हैं।
उन्होंने मेरे पिता के साथ जो किया वह किसी चमत्कार से कम नहीं था।
मैंने पावन्देओ सिंह को ध्यान से देखा। यह व्यक्ति उमाशंकर पुरी द्वारा बताई गई छवि से बिलकुल मेल नहीं खाता था। मैंने गौर किया कि फेलुदा ने श्री पुरी का ज़िक्र तक नहीं किया।
कुछ देर बाद हम भोजनालय से निकलकर शहर में खाना खाने चले गए। जब वेटर हमारा ऑर्डर लेने आया, तो लालमोहन बाबू ने अचानक मेज पर मुट्ठी पटकी और आमलेट की मांग की। ‘एक आर्माडिलो का अंडा! मुझे वही चाहिए!’ उसने जोर से कहा। फेलुदा को उसे समझाना पड़ा कि उसे अपनी इस पागलपन को हर समय साबित करने की जरूरत नहीं है, खासकर तब जब भोजनालय का कोई भी व्यक्ति आस-पास न हो। अगर वह बिना किसी कारण के इस तरह अजीब व्यवहार करता रहा, तो पिटाई होने की पूरी संभावना थी।
‘हाँ, आप सही कह रहे हैं,’ लालमोहन बाबू ने स्वीकार किया, ‘लेकिन अगर मुझे कोई उपयुक्त अवसर मिलता है, तो मैं उसे गंवाने वाला नहीं हूँ।’
हम जल्दी सोना चाहते थे इसलिए सीधे विश्राम गृह लौट आए। पावन्देओ का कमरा हमारे कमरे से ज़्यादा दूर नहीं था। बर्तनों की खनक और ज़ोरदार हंसी की आवाज़ से पता चला कि वह अपने दो दोस्तों और श्री गिरिधारी के साथ अच्छा समय बिता रहा था।
‘मुझे एक बात माननी ही पड़ेगी, फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने अपने बिस्तर पर लेटते हुए कहा। ‘श्री पुरी ने राजा चंद्रदेव के छोटे बेटे के बारे में जो कुछ भी बताया हो, उसके बावजूद वह मुझे एक अत्यंत मिलनसार व्यक्ति लगे।’ आप जानते ही होंगे कि दिखावट धोखा दे सकती है? इसके अलावा, प्रकृति अक्सर एक ही प्राणी में क्रूरता और सुंदरता दोनों का संगम दिखाती है। क्या आप रॉयल बंगाल टाइगर से भी अधिक सुंदर किसी जानवर के बारे में सोच सकते हैं? फिर मोर के बारे में सोचिए। कितना अद्भुत सुंदर प्राणी है, है ना? ज़रा सोचिए कि उसकी चोंच की एक चोट कितना नुकसान पहुंचा सकती है। आपने खुद देखा होगा, है ना?
‘जी हाँ। जी हाँ, मुझे लगता है यह सच है।’ लालमोहन बाबू उठे, अपनी अलार्म घड़ी पकड़ी और गुस्से से उसका स्विच घुमाने लगे, उनकी आँखों में धीरे-धीरे एक जंगलीपन झलकने लगा।
स्पष्ट रूप से, उन्हें लगा कि उन्हें अपनी भूमिका के साथ पूरा न्याय करना होगा।

चार
हम विश्राम गृह से निकले और अगली सुबह साढ़े पाँच बजे हमें हमारी टैक्सी मिल गई। जोगिंदर तैयार खड़ा हमारा इंतज़ार कर रहा था। पावन्देओ की अमेरिकी कार हमारी कार के पास खड़ी थी, जिसमें फिल्म का सामान लोड किया जा रहा था। वह अगले आधे घंटे तक नहीं निकल सकता था। लेकिन पूरी संभावना थी कि वह बिना किसी परेशानी के हमारे पास पहुँच जाएगा और फिर हमें पीछे छोड़ देगा।
जैसे ही हम अपनी कार में बैठने वाले थे, वह आदमी खुद हमारी ओर तेजी से बढ़ा, मानो उसे कुछ महत्वपूर्ण कहना हो।
‘कल रात,’ उसने फेलुदा से कहा, ‘श्री गिरिधारी ने ज़रूरत से ज़्यादा शराब पी ली और आपकी पहचान उजागर कर दी। मैं आपसे एक सीधा सवाल पूछना चाहता हूँ।’ 'हाँ?'
‘क्या उमाशंकर ने तुम्हें मुझ पर नजर रखने के लिए यहां भेजा है?’
“अगर उन्होंने ऐसा किया भी हो, श्री सिंह, तो मैं आपको इसके बारे में बिल्कुल नहीं बताऊंगी, क्योंकि यह गोपनीयता का उल्लंघन होगा। यह मूर्खतापूर्ण भी होगा। हालांकि, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि श्री पुरी का मेरी यहां उपस्थिति से कोई लेना-देना नहीं है। हम केदारनाथ केवल पर्यटक के रूप में जा रहे हैं। अगर कुछ अप्रिय घटना होती है, तो मैं स्वाभाविक रूप से मूक दर्शक बनकर नहीं खड़ी रहूंगी। मैं स्वयं भवानी उपाध्याय से मिलना चाहूंगी, क्योंकि किसी विशेष बात ने मुझे उनके बारे में बहुत उत्सुक कर दिया है, हालांकि मैं आपको यह बताने के लिए स्वतंत्र नहीं हूं कि वह क्या है।”
'अच्छा ऐसा है।'
‘क्या अब मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?’
'ज़रूर।'
क्या आप अपनी फिल्म में वह मशहूर पेंडेंट दिखाने वाले हैं?
'बेशक, यह मानते हुए कि उपाध्याय में अभी भी वह क्षमता बाकी है।'
लेकिन क्या आपको इस बात का एहसास नहीं है कि इससे उसकी जान को खतरा हो सकता है? फिलहाल तो किसी को नहीं पता कि उसके पास इतनी कीमती चीज है; लेकिन आपकी फिल्म हजारों लोग देखेंगे। क्या आपको लगता है कि इस तरह उसका रहस्य उजागर करना उचित है?
‘श्री मित्तर, अगर वे सचमुच संन्यासी बन गए हैं, तो उस लॉकेट का उनके लिए कोई महत्व नहीं होना चाहिए। मैं उनसे इसे किसी संग्रहालय को देने का अनुरोध करूंगा। यह मूल रूप से त्रावणकोर के महाराजा का था। इसकी कारीगरी अत्यंत उत्कृष्ट है। अगर वे इसे किसी संग्रहालय को दान कर देते हैं, तो उपाध्याय का नाम हमेशा याद रहेगा। आप निश्चिंत रहिए, मैं इसे अपनी फिल्म

में जरूर दिखाऊंगा, और मुझे उम्मीद है कि आप मुझे रोकने की कोशिश नहीं करेंगे।’
पावन्देओ ने आखिरी कुछ शब्द बहुत जोर से बोलते हुए गुस्से में वहां से चले गए। उनके जाते ही श्री भार्गव हमारे साथ आ गए। उन्होंने कहा, 'काश मुझे पता होता कि आप भी केदार जा रहे हैं। मैं आपके साथ जा सकता था और उपाध्याय के बारे में जो जानकारी मेरे पास है, वह आपसे साझा कर सकता था।'
'सच में? आपकी जानकारी का स्रोत कौन है—या क्या है?'
मैंने रूपनारायणगढ़ में श्री सिंह के भाई सूरजदेव से बात की। लेकिन सबसे रोचक जानकारी उनके अस्सी वर्षीय सहायक से मिली। उन्होंने बताया कि उपाध्याय ने पूर्व राजा चंद्रदेव सिंह का इलाज किया था और उन्हें अस्थमा से ठीक किया था।
'अच्छा ऐसा है।'
“अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए, राजा ने उन्हें अपने सबसे कीमती आभूषणों में से एक भेंट किया। परिवार के बाहर किसी को भी अब तक इसकी जानकारी नहीं थी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि प्रेस के लिए इसका क्या मतलब होगा? ओह, क्या कहानी है! क्या सनसनीखेज खबर है!”
'बहुत बढ़िया, श्री भार्गव। आप इससे खूब पैसा कमा पाएंगे, है ना?'
‘शायद। लेकिन मैं आपको एक बात बता सकता हूँ, श्री मित्तर। वह लॉकेट उपाध्याय के पास ज्यादा दिन नहीं रहने वाला। क्या आपको सच में लगता है कि पावन्देओ यहाँ सिर्फ एक टेलीफिल्म बनाने आया है? अगर जल्द ही आपकी पेशेवर प्रतिभा की जरूरत पड़े तो आश्चर्यचकित मत होना।’
'मुझे इसमें कोई हैरानी नहीं होगी, श्री भार्गव। मैं हमेशा किसी भी अप्र unforeseen स्थिति के लिए खुद को तैयार रखता हूं।'
श्री भार्गव ने अलविदा कहा और चले गए।
‘एक चतुर व्यक्ति!’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
‘सभी अच्छे रिपोर्टर और पत्रकार चतुर होते हैं। उन्हें होना ही पड़ता है, क्योंकि अपने काम में उन्हें अक्सर जासूसी करनी पड़ती है। उन्होंने एक पुराने नौकर का साक्षात्कार लेकर बहुत ही सूझबूझ दिखाई है। कभी-कभी नौकरों को ऐसी बातें पता चल जाती हैं जिनके बारे में उनके मालिक बिल्कुल अनजान होते हैं। लेकिन फिर भी...’ फेलुदा ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
‘फिर भी, क्या?’ मैंने पूछा। मुझे समझ आ रहा था कि कोई बात उसे परेशान कर रही है।
मुझे नहीं पता। उस आदमी में कुछ ऐसा है जो मुझे बेचैन कर देता है। मैं बस यह नहीं बता पा रही कि क्या बात है।
आखिरकार हम अपनी कार में बैठे और अपनी यात्रा शुरू की। सड़क अलकनंदा नदी के किनारे से होकर गुज़र रही थी। कुछ ही मिनटों बाद हम एक सुरंग में प्रवेश कर गए। जब हम उससे बाहर निकले, तो नदी का रूप बदल चुका था। अब हमारे बगल में मंदाकिनी नदी बह रही थी, और यह केदारनाथ तक हमारे साथ-साथ चलती रही, जहाँ माना जाता है कि इसका उद्गम स्थल है।
फेलुदा अब भी गुस्से में था। उसके अगले शब्दों से स्पष्ट हो गया कि वह इतना नाराज़ क्यों था।

‘मैं उस गिरिधारी से बहुत नाराज़ हूँ। मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह इतना गैरजिम्मेदार है। पावन्देओ ने अभी जो बताया, वह शायद उससे उम्मीद के मुताबिक ही था। लेकिन इससे पता चलता है कि श्री पुरी के कलकत्ता से लौटने के बाद उन्होंने और उमाशंकर पुरी ने उपाध्याय के पेंडेंट के बारे में बात नहीं की। अब, अगर ऐसा है, तो उन्होंने मुझे वह टेलीग्राम और पत्र क्यों भेजा? अब तो पूरा मामला और भी रहस्यमय लग रहा है। भगवान ही जाने कौन सच बोल रहा है और किस पर भरोसा किया जा सकता है। मुझे बस इस बात की खुशी है कि हमने यहाँ आने का अपना फैसला नहीं बदला, भले ही हमने श्री पुरी का केस छोड़ने पर सहमति जताई हो।’
गौरीकुंड रुद्रप्रयाग से मात्र 80 किलोमीटर दूर था; लेकिन सड़क पहाड़ियों पर इतनी बार ऊपर-नीचे जाती थी कि वहाँ पहुँचने में उम्मीद से कहीं अधिक समय लग जाता था। रुद्रप्रयाग से 30 किलोमीटर दूर 900 मीटर की ऊँचाई पर अगस्त्यमुनि स्थित था। वहाँ से 9 किलोमीटर दूर 1800 मीटर की ऊँचाई पर गुप्तकाशी स्थित थी। वहाँ से सोन प्रयाग जाना पड़ता था, जहाँ सोन गंगा मंदाकिनी से मिलती है। गौरीकुंड सोन प्रयाग से 8 किलोमीटर दूर था। इसकी ऊँचाई 2250 मीटर थी।
हमारे ऊनी कपड़े एक छोटे से थैले में पैक थे जो हम अपने साथ लाए थे। हमारा भारी सामान विश्राम गृह में था, वापसी में लेने के लिए तैयार। लालमोहन बाबू अपने गंजे सिर को ठंड से बचाने के लिए अपनी राजस्थानी टोपी लाना नहीं भूले थे। हमने अगस्त्यमुनि में थोड़ी देर रुककर गर्म कपड़े पहने। इसी दौरान एक अमेरिकी पर्यटक हमारे पास से गुजरा। पावंदेओ ने हाथ हिलाकर अभिवादन किया, तो हमें भी हाथ हिलाकर अभिवादन करना पड़ा। हम एक बार फिर अपने रास्ते पर चल पड़े, ठंड से लड़ने के लिए तैयार। मंदाकिनी नदी कभी-कभी हमारे बाईं ओर दिखाई देती थी; लेकिन अगले ही पल वह एक गहरी खाई में गायब हो जाती थी। उसकी लहरों की आवाज़ कभी-कभी लालमोहन बाबू की आवाज़ में दब जाती थी। वह एक कविता की एक पंक्ति बार-बार दोहरा रहे थे; 'क्या तुम जानते हो क्यों/लहरें इतनी ऊंची उठती हैं?' जिस तरह से वह इसे बार-बार दोहरा रहे थे, उससे स्पष्ट था कि उन्हें बस यही एक पंक्ति याद थी। अंत में, फेलुदा की एक तीखी नज़र ने उन्हें रोक दिया।
जब हम गुप्तकाशी पहुँचे तब तक दस बज चुके थे। हम सभी को काफी भूख लग चुकी थी, इसलिए हमने एक चाय की दुकान पर रुकने का फैसला किया। दुकान के मालिक ने गरमा गरम जलेबी, कचौरी और गर्म चाय परोसी, जिसका हमने भरपूर आनंद लिया। जोगिंदर ने बताया कि उसका एक भाई पास में ही रहता है, इसलिए वह उससे मिलने के लिए पाँच मिनट में चला जाएगा।
‘अरे वाह, इससे मुझे उन मंदिरों को देखने का मौका मिलेगा,’ लालमोहन बाबू ने कहा और चंद्रशेखर महादेव और अर्धनारीश्वर के मंदिरों की दिशा में चल पड़े।
गुप्तकाशी से पहाड़ियों में स्थित उखीमठ दिखाई देता था। उखीमठ में ही हर साल नवंबर से अप्रैल के बीच केदारेश्वर की दैनिक पूजा आयोजित की जाती थी, जब भारी बर्फबारी के कारण केदार जाने वाली सड़क अवरुद्ध हो जाती थी।

से रोकने का, या कम से कम हमारी यात्रा में देरी करने का, सबसे अच्छा तरीका जाहिर तौर पर हमारे ड्राइवर को चोट पहुंचाना था।
‘देखो, फेलुदा,’ मैंने कहा, जब हम फिर से अपने रास्ते पर चल पड़े, ‘मैं सोच रहा था। क्या ऐसा हो सकता है कि पावन्देओ को पता चल गया हो कि श्री पुरी तुमसे मिलने आए थे? और फिर शायद उसने उससे वह टेलीग्राम और पत्र इसलिए भेजा हो, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि तुम उसके लिए कोई खतरा न बनो?’ ‘अच्छा विचार है, टॉपशे। मैंने भी यही सोचा था। अगर ऐसा है, तो इससे पता चलता है कि पावंडेओ का उमाशंकर पुरी पर पूरा नियंत्रण है।’
‘वह ऐसा क्यों नहीं करेगा?’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘पावंदेव आखिर इस जागीर के मालिकों में से एक है। एक राजकुमार! उमाशंकर क्या है? बस उसका एक कर्मचारी, है ना?’
ठीक है। अगर युवा “राजकुमार” ने अपनी धौंस जमाने का फैसला किया, तो मुझे नहीं लगता कि वह उमाशंकर और अपने बीच उम्र के अंतर पर ध्यान देगा। लेकिन मुझे यकीन है कि उसने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि टेलीग्राम और पत्र के बावजूद मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा!
‘क्या इसका मतलब यह है कि बेचारे जोगिंदर पर हुए हमले के लिए पावन्देओ जिम्मेदार है?’
'और कौन हो सकता है, खासकर तब जब जोगिंदर का दावा है कि ऐसा कोई नहीं है जो उसे नुकसान पहुंचाना चाहता हो?'
‘माफ़ कीजिए महोदय,’ लालमोहन बाबू ने कहा, ‘लेकिन मुझे वह पत्रकार पसंद नहीं है।’
'क्यों नहीं? मुझे मानना पड़ेगा कि मुझे भी उसके बारे में कुछ शंकाएं हैं, लेकिन आपको वह क्यों पसंद नहीं है?'
‘अगर वह पत्रकार है, तो वह कलम क्यों नहीं रखता? मैंने देखा कि उसकी जैकेट की आगे वाली जेब में कलम नहीं थी। कल मैंने उसे जैकेट पहनते हुए देखा। उसकी जैकेट की अंदर वाली जेब में भी कलम नहीं थी, न ही उसकी कमीज की जेब में।’ 'क्या होगा अगर उसके पास भी मेरी तरह कैसेट रिकॉर्डर हो?'
यह एक ऐसी संभावना थी जिसके बारे में लालमोहन बाबू ने स्पष्ट रूप से सोचा भी नहीं था। वह कुछ सेकंड के लिए चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'अच्छा, तो यह एक अलग बात है। सच तो यह है कि मुझे घनी दाढ़ी वाले पुरुष पसंद नहीं हैं।' ‘ठीक है। क्या अब हम कुछ व्यावहारिक व्यवस्थाओं पर चर्चा कर सकते हैं?’ 'जैसे कि?'
‘आप किसे पसंद करेंगे—घोड़ा या डंडी?’
'फेलू बाबू, आप जो भी फैसला करें, मुझे कोई आपत्ति नहीं है।'
मुझे उम्मीद है कि आपको केदार जाने वाली सड़क का कुछ अंदाजा होगा?
‘हा हा हा हा हा!’
‘अरे, इसमें इतनी हंसी वाली बात क्या है?’
‘फेलू बाबू, मेरा विचार आपके विचार से कहीं अधिक स्पष्ट है। देखिए, मेरे प्रिय कवि बैकुंठ मल्लिक ने वर्षों पहले केदार की यात्रा की थी और अपनी यात्रा के बारे में एक कविता लिखी थी। मैंने इसे कई बार पढ़ा है और मुझे पूरी तरह से पता है कि इसमें क्या लिखा है।’

अच्छा। तो फिर, मुझे लगता है कि घोड़े की तुलना में दांडी को संभालना आपके लिए आसान होगा। घोड़े अक्सर चट्टान के किनारे के पास चलने की प्रवृत्ति रखते हैं। आपको उस तनाव से निपटना बहुत मुश्किल लगेगा। तपेश और मैं पैदल चलेंगे।
लालमोहन बाबू ने फेलुदा को तीखी निगाहों से देखा। फिर उन्होंने कहा, 'तुम मुझे हमेशा कम क्यों आंकते हो? क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं दांडी पर बैठूंगा, जबकि तुम दोनों टहलने जाओगे? मैं तुमसे कह रहा हूं, फेलु बाबू, या तो मैं तुम्हारे साथ चलूंगा, या फिर बिल्कुल नहीं जाऊंगा।'
'बहुत अच्छा, तो बात पक्की हो गई। हम सब पैदल चलेंगे।'
‘अब क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?’
'निश्चित रूप से।'
'अगर हमें सभी ने पहचान लिया है, तो हमारी यात्रा का उद्देश्य क्या है?' 'यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उपाध्याय को सबसे पहले कौन ढूंढता है।'
‘मान लीजिए हम ऐसा करते हैं?’
तो फिर हमें उसे सब कुछ बता देना चाहिए। अगर वह सचमुच संन्यासी बन गया है, तो हो सकता है कि वह लॉकेट दान करना चाहे। हमें पता लगाना चाहिए कि वह किसे देना चाहता है। पावन्देओ हमसे पहले वहाँ पहुँच सकता है। अपने पिता के प्रति आदर के कारण, उपाध्याय साक्षात्कार देने के लिए सहमत हो सकते हैं और युवा राजकुमार को पेंडेंट की तस्वीरें लेने की अनुमति दे सकते हैं। लेकिन कोई भी—यहाँ तक कि पावन्देओ भी—उसकी अनुमति के बिना उससे लॉकेट नहीं ले सकता। लेकिन फिर, हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि पावन्देओ इसे अपने लिए लेना चाहता है। हम केवल यह मान रहे हैं कि उसी ने श्री पुरी को मुझे इस मामले से हटाने के लिए मजबूर किया था। हो सकता है कि उसका एकमात्र उद्देश्य फिल्म बनाना हो, और कुछ नहीं। हमें नहीं पता। वास्तव में, हमें कुछ भी निश्चित रूप से नहीं पता, है ना?
मैंने कहा, 'लेकिन श्री भार्गव का क्या? वह भी उपाध्याय को ही तो ढूंढ रहे हैं, है ना?'
‘खैर, मुझे लगता है कि भार्गव खुश होगा अगर उसे दो तस्वीरें मिल जाएं, एक उपाध्याय की और दूसरी पेंडेंट की। अगर उसे ये मिल जाएं, तो कम से कम कुछ दिनों के लिए वह काफी आराम से रह पाएगा।’
जब हम बातें कर रहे थे, हमारी कार 3,000 मीटर की ऊंचाई पर चढ़ चुकी थी। कम से कम जोगिंदर ने तो यही कहा था। तापमान में अचानक आई गिरावट को देखते हुए, शायद वह सही कह रहा था। यहाँ से कई ऊँची चोटियाँ दिखाई दे रही थीं, लेकिन मुझे उनके नाम नहीं पता थे। हमें पंद्रह मिनट में गौरीकुंड पहुँच जाना चाहिए था। मेरी घड़ी में सवा पाँच बज रहे थे। हालाँकि पर्वत चोटियाँ अभी भी चमक रही थीं, लेकिन चीड़ और रोडोडेंड्रोन के पेड़ों के बीच परछाइयाँ लंबी होती जा रही थीं।
कुछ ही देर में हमारी कार फिर नीचे उतरी और एक मोड़ पर मुड़ गई। सड़क पर कई घर और गाड़ियाँ देखकर मुझे पता चल गया कि हम गौरीकुंड पहुँच गए हैं। यह स्पष्ट था कि हमें रात यहीं बितानी होगी और अगली सुबह केदार के लिए निकलना

पाँच
उस रात हम सब चैन से सोए। हमारी अलार्म घड़ी ने हमें सुबह पाँच बजे जगा दिया। हम कुछ ही मिनटों में निकलने के लिए तैयार थे।
बाहर निकले लोगों की संख्या वाकई आश्चर्यजनक थी। देश के लगभग हर कोने से लोग मौजूद थे, जिनमें बड़ी संख्या में बंगाली भी शामिल थे। उनमें से अधिकतर लोग समूहों में यात्रा कर रहे थे। कई परिवारों में कई पीढ़ियां एक साथ यात्रा कर रही थीं, जिनमें सत्तर वर्ष के दादा से लेकर लगभग पांच वर्ष के पोते-पोतियां तक शामिल थे।
पावन्देओ सिंह को ढूंढने में मुझे कुछ ही सेकंड लगे। वह दो घोड़े किराए पर ले रहे थे। वह अभी भी यहाँ क्या कर रहे थे? मैंने तो मान लिया था कि वह केदारनाथ जा चुके होंगे।
‘सुप्रभात!’ उन्होंने हमारा अभिवादन किया। ‘कल सोन प्रयाग में मुझे देर हो गई। वहाँ का नज़ारा इतना खूबसूरत था कि मुझे तस्वीरें लेने के लिए रुकना पड़ा। अब मैं अकेले केदारनाथ जा रहा हूँ। मैं अपना कैमरा और साउंड उपकरण एक घोड़े पर ले जाऊँगा। दूसरा घोड़ा सारी नई और बिना इस्तेमाल की हुई फिल्म रिकॉर्ड करेगा।’
फेलुदा ने अभिवादन का जवाब दिया और आगे बढ़ गया। उसने कहा, “रहस्यों का कोई अंत नहीं है। क्या ऐसा हो सकता है कि उसने उपाध्याय को ढूंढने के लिए केदार में किसी को नियुक्त किया हो?” इस पर विचार करने का समय नहीं था, क्योंकि अब जाने का समय हो गया था।
‘क्या आप अब भी हमारे साथ चलने के लिए दृढ़ हैं?’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू से पूछा।
जी हाँ, महोदय। मैं हर समय आपके साथ कदम मिलाकर नहीं चल सकता, लेकिन—’ ‘अरे, इसकी चिंता मत करो। तुम अपनी सुविधानुसार गति से चलो। क्योंकि यहाँ एक ही रास्ता है और एक ही मंज़िल, हम सब कभी न कभी वहाँ पहुँच ही जाएँगे, घबराओ मत। लो, इसे ले लो।’
फेलुदा ने लालमोहन बाबू को हमारे लिए खरीदी गई छड़ियों में से एक छड़ी दी। केदारनाथ जाने वाला लगभग हर यात्री ऐसी ही छड़ी लिए घूम रहा था। यह लकड़ी की थी, लेकिन इसका नुकीला सिरा लोहे से ढका हुआ था।
हम ठीक छह बजे रवाना हुए। लालमोहन बाबू ने गहरी सांस ली और इतनी जोश से 'जय केदार!' चिल्लाया कि मुझे डर लगने लगा कि कहीं उन्होंने अपनी आधी ऊर्जा एक ही बार में न खर्च कर दी हो।
केदारनाथ जाने का रास्ता संकरा और पथरीला था। कई बार तो दो लोगों के एक साथ खड़े होने की भी जगह नहीं होती थी। एक तरफ खड़ी पहाड़ियाँ थीं, तो दूसरी तरफ गहरी खाइयाँ। इनके नीचे मंदाकिनी नदी उफान मारती बह रही थी। रास्ते में वनस्पति न के बराबर थी, सिवाय कुछ जगहों के जहाँ बड़े-बड़े पत्तों वाले

पेड़ों ने हमारे सिर के ऊपर हरी-भरी छतरी बना रखी थी; लेकिन ऐसी जगहें भी बहुत कम थीं। पैदल चलने वालों को अक्सर घोड़ों और डंडियों के लिए रास्ता देना पड़ता था। पहाड़ के जितना हो सके उतना करीब रहना पड़ता था, क्योंकि सड़क के किनारे जाना बेहद खतरनाक था। एक भी लापरवाही भरा कदम जानलेवा दुर्घटना का कारण बन सकता था।
फेलुदा और मुझे पहाड़ी पर चढ़ने में ज़्यादा कठिनाई नहीं हुई, शायद इसलिए कि हम दोनों नियमित रूप से योग करते थे। लालमोहन बाबू ने अपनी परेशानी छिपाने की पूरी कोशिश की। वे बिल्कुल चुपचाप चलते रहे और समतल जगह पर पहुँचकर हमारे साथ आ गए। 'अब मुझे समझ आया कि तेनजिंग इतने प्रसिद्ध क्यों हुए!' उन्होंने थोड़ी हाँफते हुए कहा।
बीस मिनट बाद, कुछ ऐसा घटित हुआ जिससे केदारनाथ पहुंचने में हमें और आधा घंटा की देरी हो गई।
अचानक एक बड़ा पत्थर तेज़ी से ढलान से लुढ़कता हुआ नीचे आया। यह इतना अप्रत्याशित था कि हमें यह समझने में कुछ सेकंड लग गए कि क्या हो रहा है। हालाँकि किसी को गंभीर चोट नहीं आई, लेकिन कुछ नुकसान होना तय था। पत्थर फेलुदा की बांह से टकराया और उसकी एचएमटी घड़ी टूट गई। फिर उसने एक बुजुर्ग व्यक्ति के हाथ से छड़ी गिरा दी, जो चट्टान के किनारे की ओर उड़कर नीचे खाई में जा गिरी, शायद सीधे तेज़ बहती मंदाकिनी नदी में।
तब तक फेलुदा ने खुद को संभाल लिया था और कार्रवाई करने का फैसला कर लिया था। वह पहाड़ी बकरी की फुर्ती से ढलान पर चढ़ने लगा, और मैं उसे देखता रह गया, उसकी ताकत और सहनशक्ति पर अचंभित था। कई मील की चढ़ाई के बाद इतनी जल्दी वह यह कैसे कर सकता था? लेकिन एक पल भी गंवाने का समय नहीं था। मैं जितनी जल्दी हो सके उसके पीछे चल पड़ा। जब तक मैं उसके पास पहुँचा, फेलुदा अपराधी को पकड़ चुका था। वह एक युवक का कॉलर पकड़े हुए उसे एक पेड़ से धक्का दे रहा था। वह आदमी पच्चीस साल से अधिक का नहीं रहा होगा। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, और वह जानबूझकर उस पत्थर को धक्का देने की बात कबूल कर रहा था। जाहिर तौर पर उसे किसी ने इसके लिए पैसे दिए थे। उस आदमी ने हमें यह दिखाने के लिए एक नया, कुरकुरा दस रुपये का नोट निकाला कि वह सच कह रहा है।
‘तुम्हें किसने पैसे दिए?’ फेलुदा ने पूछा।
‘मैं उसे नहीं जानता। वह मेरे गांव का आदमी है, लेकिन मैं उसे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता। मैंने यह सिर्फ पैसों के लिए किया।’
उसके शब्दों पर शक करने का कोई कारण नहीं था। उससे हमें कभी पता नहीं चलता कि वास्तव में कौन ज़िम्मेदार था। वह आदमी महज़ एक मज़दूर था।
फेलुदा ने उस आदमी के शरीर पर लिपटी ऊनी चादर छीन ली और उसी से उसे पेड़ से बांध दिया। उसने उससे कहा, 'मुझे कहीं न कहीं एक पुलिस कांस्टेबल जरूर मिल जाएगा। जब मिल जाएगा, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।'
जब हम लालमोहन बाबू के पास पहुँचे तो उन्होंने राहत की साँस ली। ‘कितनी चिंता की बात है, फेलू बाबू! अगर वो पत्थर आपको लग जाता तो कुछ भी हो सकता था। आखिर कौन है जो आपको केदारनाथ पहुँचने से इतनी बेसब्री से रोकना चाहता है?’

हमें जवाब नहीं पता था, इसलिए हम फिर से चलने लगे। थोड़ी देर बाद हम रामवारा नामक स्थान पर पहुँचे। लगभग सभी लोग यहाँ थोड़ी देर आराम करने के लिए रुक गए। यहाँ धर्मशालाएँ और चाय की दुकानें थीं। लालमोहन बाबू को भी थोड़े आराम की ज़रूरत थी, इसलिए हमने आधे घंटे रुकने का फैसला किया। रामवारा 2500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित था। हमारे चारों ओर का नज़ारा बेहद खूबसूरत था। लालमोहन बाबू महाभारत के दृश्यों को याद करके भावुक हो गए। उन्होंने अंत में कहा कि अगर रास्ते में उनकी मृत्यु हो जाए तो उन्हें कोई अफ़सोस नहीं होगा, क्योंकि इससे अधिक गौरवशाली मृत्यु किसी की नहीं हो सकती।
‘सचमुच?’ फेलुदा ने उसे चिढ़ाते हुए कहा। ‘महोदय, आपको याद रखना चाहिए कि आपने अपने पाठकों को हमेशा जितनी बकवास परोसी है, उसे देखते हुए आप नरक में कई साल बिताने के लिए उत्तरदायी हैं। तो फिर एक शानदार मौत से क्या लाभ होगा?’
‘हेह! नरक में कुछ साल बिताने से कौन डरता है? अरे, युधिष्ठिर को भी नहीं बख्शा गया था, है ना?’ लालमोहन बाबू ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया।
बचे हुए साढ़े तीन मील के रास्ते में, केवल एक ही घटना ऐसी घटी जिसका ज़िक्र करना ज़रूरी है। रामवारा से निकलते ही अचानक केदारनाथ मंदिर का ऊँचा शिखर दिखाई दिया। ज़्यादातर यात्री रुक गए और 'जय केदार!' का नारा लगाने लगे। कुछ ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, तो कुछ ज़मीन पर लेट गए। लेकिन जैसे ही हमने दोबारा चलना शुरू किया, वह शिखर एक पहाड़ के पीछे ओझल हो गया। केदारनाथ पहुँचने के बाद ही हम उसे दोबारा देख पाए। बाद में मुझे पता चला कि जो एक झलक हमें पहले मिली थी, उसे विशेष दर्शन माना जाता था। उसे देव-देखनी कहते हैं।

छह
जब हम केदारनाथ पहुँचे तब शाम के साढ़े पाँच बज रहे थे। अभी अंधेरा होना शुरू नहीं हुआ था और पहाड़ों की चोटियाँ खूब चमक रही थीं।
कई घंटों तक खड़ी और संकरी सड़क पर चढ़ाई करने के बाद समतल पठार पर पहुँचने पर जो अनुभूति होती है, उसे शब्दों में बयान करना असंभव है। मेरे मन में सबसे प्रबल भावना अविश्वास, आश्वासन और आनंद का मिश्रण थी। इसके साथ ही मन में शांति, सुकून और विनम्रता का भाव भी आया। शायद वे चोटियाँ, जो हर चीज़ से ऊपर थीं, उन्होंने ही मुझे इतना विनम्र महसूस कराया। शायद इसी भावना ने मेरे मन में धार्मिक उत्साह और सृष्टिकर्ता के प्रति श्रद्धा का भाव जगाया।
बहुत से लोग पथरीली ज़मीन पर बैठे, खड़े या लेटे हुए थे, भावनाओं से अभिभूत होकर वे 'जय केदार!' के नारे लगाने के अलावा कुछ भी कहने या करने में असमर्थ थे। प्रसिद्ध मंदिर तीन तरफ से भारी बर्फ से घिरा हुआ था। हम भीड़ के बीच से होते हुए रहने की जगह ढूंढने लगे। यहाँ हिमलोक होटल नाम का एक होटल था, लेकिन वह पहले से ही भरा हुआ था, बिरला गेस्ट हाउस भी भरा हुआ था। अंत में, हम काली कमलीवाली की एक धर्मशाला में गए। उन्होंने हमें बहुत ही मामूली शुल्क पर गद्दे, कंबल और रजाईयाँ दीं।
जब तक हमने कमरा बुक किया, तब तक छह बज चुके थे और मंदिर बंद हो चुका था। हमें बताया गया कि यह अगली सुबह आठ बजे ही खुलेगा। इसलिए हम अपनी सबसे ज़रूरी चीज़, यानी एक गर्म कप चाय, की तलाश में निकल पड़े। हमारी धर्मशाला से थोड़ी ही दूर पर एक चाय की दुकान थी। केदार की गलियाँ मुझे बनारस की गलियों की याद दिलाती थीं। सड़क किनारे की ज़्यादातर दुकानों में अगरबत्ती, फूल और सिंदूर बिक रहे थे। ये दुकानें नवंबर में बंद हो जाती थीं और अप्रैल तक पूरा शहर सुनसान रहता था।
मुझे उम्मीद थी कि हमारी कठिन यात्रा के बाद लालमोहन बाबू आराम करना चाहेंगे। लेकिन उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने जीवन में कभी इतना स्फूर्तिदायक महसूस नहीं किया। उन्होंने कहा, 'मेरे शरीर की हर नस में नई जान आ गई है। तपेश, केदार का जादू ही ऐसा है।'
हमारे सामने चाय के तीन गरमागरम प्याले रखे गए। चाय में दालचीनी डाली गई थी। जैसे ही मैंने प्याला होठों तक उठाया, मुझे उसकी खुशबू महसूस हुई। ‘क्या तुम्हें उपाध्याय मिले?’ एक आवाज ने पूछा। यह पावनदेव सिंह की आवाज थी, जो कुछ ही दूरी पर खड़े थे। उनके हाथ में अभी भी कैमरा था। ध्वनि रिकॉर्ड करने का उपकरण उनकी कमर पर बंधा हुआ था।
'नहीं, हम तो अभी करीब आधे घंटे पहले ही आए हैं,' फेलुदा ने उससे कहा।
मैं यहाँ ढाई बजे पहुँचा और कुछ पूछताछ की। जहाँ तक मुझे समझ आया है, वह पूर्णतः संन्यासी बन चुके हैं। मुझे लगता है कि उनका पहनावा भी

संन्यासियों जैसा ही है। तो आप कल्पना कर सकते हैं कि इतने सारे संन्यासियों में से किसी एक को पहचानना कितना मुश्किल होगा। इसके अलावा, उन्होंने अपना नाम भी बदल लिया होगा। कम से कम, मैंने जिनसे भी पूछा, उनमें से कोई भी उपाध्याय नाम के व्यक्ति को नहीं जानता था।
‘खैर, हमें कोशिश करते रहना चाहिए, है ना?’ फेलुदा ने कहा। पावन्देओ ने सिर हिलाया और चला गया। वह मेरे लिए अब भी एक रहस्य ही था।
हमने चाय खत्म की और जाने के लिए उठे। तभी अचानक एक जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी।
‘अरे, आखिरकार आप आ ही गए। क्या आपकी मेहनत सार्थक नहीं हुई?’ पता चला कि वह मक्खनलाल मजूमदार थे, जिनसे हमारी मुलाकात ट्रेन में हुई थी।
‘ओह जी हाँ, बिलकुल,’ फेलुदा मुस्कुराया। ‘मुझे लगता है कि हम अभी भी स्तब्ध हैं। यह अविश्वसनीय है।’
मुझे बहुत खुशी है कि आप आए। क्या आपने हरिद्वार में अपना काम पूरा कर लिया?
नहीं, इसीलिए तो हम यहाँ आए हैं। दरअसल, हम हरिद्वार में रहने वाले एक व्यक्ति की तलाश कर रहे हैं। जब हम वहाँ गए, तो हमें बताया गया कि वह रुद्रप्रयाग गया है। इसलिए हम उसके पीछे-पीछे वहाँ गए, लेकिन तब तक वह केदारनाथ के लिए निकल चुका था।
आप किसे ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं?
‘A man called Bhavani Upadhyaya.’
श्री मजूमदार की आंखें फटी रह गईं। 'भवानी? आप भवानी को ढूंढते हुए आए थे, और आपने मुझे बताया भी नहीं!'
‘क्या आप उसे जानते हैं?’
‘क्या आप उसे जानते हैं? मेरे प्यारे नौजवान, मैं उसे सात साल से जानता हूँ, तब से जब उसने सिर्फ एक गोली से मेरा अल्सर ठीक कर दिया था। हरिद्वार छोड़ने से कुछ समय पहले ही मेरी उससे मुलाकात हुई थी। मैंने उसमें बदलाव देखा। वह बहुत ही उदासीन लग रहा था। उसने कहा कि वह रुद्रप्रयाग जाना चाहता है। मैंने उससे कहा कि रुद्रप्रयाग अब पहले जैसा नहीं रहा, बसों, पर्यटकों और बाकी सब चीजों की वजह से। अगर उसे शांति और सुकून चाहिए तो उसे केदारनाथ जाना चाहिए। फिर भी, वह पहले रुद्रप्रयाग गया, शायद एक बार कोशिश करने के लिए। लेकिन अब वह यहाँ है।’
‘हम उसे कहाँ ढूंढ सकते हैं?’
‘मुख्य शहर में नहीं। वह अब एक गुफा में रहता है। क्या आपने चोराबलिताल के बारे में सुना है? मुझे लगता है कि अब इसे गांधी सरोवर कहा जाता है।’
'हां हां।'
‘मंदाकिनी नदी चोराबलिताल से अपनी यात्रा शुरू करती है। आपको इस जगह के पीछे जाना होगा और लगभग तीन मील तक चट्टानों और बर्फ से होकर गुजरना होगा। वहाँ कोई पक्की सड़क नहीं है। फिर आपको एक झील दिखाई देगी। वही सरोवर है। भवानी उस झील के पास एक गुफा में रहते हैं। उनका उपनाम पूरी तरह से लुप्त हो गया है। लोग अब उन्हें भवानी बाबा के नाम से जानते हैं। वे पूरी तरह से

एकांत में रहते हैं। उनके आसपास कोई नहीं रहता। अगर आप वाकई उत्सुक हैं, तो आप कल सुबह उनकी गुफा खोजने की कोशिश कर सकते हैं।’
क्या आप उनसे मिले हैं?
नहीं, इस बार नहीं। लेकिन कुछ स्थानीय लोगों ने मुझे उसके बारे में बताया। वह कभी-कभार यहाँ खाने के लिए आता है। दरअसल, फल और सब्जियां ही उसके लिए कई दिनों तक जीवित रहने के लिए पर्याप्त हैं।
'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, श्री मजूमदार। आपने हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। लेकिन क्या आपको लगता है कि यहां किसी को उनके अतीत के बारे में पता हो सकता है?'
'हां, इसकी पूरी संभावना है। आखिरकार, उन्होंने पूरी तरह से चिकित्सा करना नहीं छोड़ा है। मैंने सुना है कि उन्होंने एक स्थानीय बच्चे को पोलियो से ठीक किया है। लेकिन, मुझे लगता है कि बहुत जल्द वे मरीजों को देखना बंद कर देंगे और पूरी तरह से एकांतवासी बन जाएंगे।'
'एक आखिरी सवाल। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि वह देश के किस हिस्से से आता है?'
सच कहूँ तो, मैंने उनसे कभी पूछा ही नहीं। वे हमेशा मुझसे बहुत अच्छी हिंदी में बात करते थे, जिसमें क्षेत्रीय लहजे का कोई नामोनिशान नहीं होता था। खैर, आपको शुभकामनाएँ!’ श्री मजूमदार चले गए।
लालमोहन बाबू कुछ देर पहले हमसे विदा हो गए थे और किसी से बात कर रहे थे। अब वे फिर से हमारे साथ आ गए और बोले, 'बिरला गेस्ट हाउस में हमारी तलाश है।' ‘हमें कौन चाहता है?’ फेलुदा ने पूछा।
लालमोहन बाबू से बात कर रहे व्यक्ति ने आगे बढ़कर कहा, 'श्री सिंघानिया।' फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं। फिर मेरी ओर मुड़कर फुसफुसाते हुए कहा, 'यह वही सिंघानिया हो सकता है जो हरिद्वार में उपाध्याय से मिलने गया था। उससे मिलने जाने में हमें कोई नुकसान नहीं है।' सिंघानिया के दूत से उसने कहा, 'चलिए।'
गेस्ट हाउस मंदिर के बहुत पास था। वहाँ पहुँचने में हमें मुश्किल से तीन मिनट लगे। रास्ते में मैंने देखा कि अंधेरा होने लगा था, हालाँकि कुछ चोटियों पर सूरज की रोशनी अभी भी पड़ रही थी, जिससे वे लाल, गुलाबी और सुनहरी दिख रही थीं।
गेस्ट हाउस की सफ़ाई देखकर मैं हैरान रह गया। शायद सफ़ाई के लिहाज़ से यह शहर का सबसे अच्छा गेस्ट हाउस था। पता नहीं खाना कैसा होगा। वैसे भी, मैंने सुना था कि केदार में सिर्फ़ आलू ही मिलते हैं।
हमारे गाइड हमें इमारत की पहली मंजिल पर ले गए और एक काफी बड़े कमरे में प्रवेश कराया। फर्श पर चार गद्दे बिछे थे। छत से तीन बल्ब मंद रोशनी दे रहे थे। केदारनाथ में बिजली तो थी, लेकिन वोल्टेज स्पष्ट रूप से बहुत कम था।
एक मिनट बाद, हमें बुलाने वाला व्यक्ति कमरे में आया।

सात
श्री सिंघानिया को देखते ही मुझे अचानक निराशा का गहरा झटका लगा। शायद उनके नाम ने ही मुझे शेरों की याद दिला दी थी और अवचेतन रूप से मैं उनसे एक ऐसे व्यक्तित्व की अपेक्षा कर रहा था जो उस जानवर की शान और उग्रता से मेल खाता हो। अंदर आने वाला व्यक्ति मध्यम कद का था और बाकी सब कुछ इतना साधारण था कि मुझे यह मानने में थोड़ा समय लगा कि यह वही धनी और शक्तिशाली व्यक्ति है जो श्री उपाध्याय को लुभाने आया था। केवल उनकी घनी मूंछें ही उन्हें कुछ हद तक महत्वपूर्ण दिखा रही थीं।
उन्होंने कहा, 'मेरा नाम सिंघानिया है। कृपया बैठ जाइए।'
हम दो गद्दों पर बैठ गए। उसने तीसरा गद्दा लिया और हमारी ओर मुंह करके बैठ गया।
'मुझे पता है कि आप कितने प्रसिद्ध हैं, श्री मिटर, लेकिन अभी तक मुझे आपसे मिलने का मौका नहीं मिला है,' उन्होंने कहना शुरू किया।
'मुसीबत में फंसे लोगों को छोड़कर कोई मुझसे मिलना नहीं चाहता,' फेलुदा ने हल्के-फुल्के अंदाज में जवाब दिया।
'हो सकता है, लेकिन मैं किसी मुसीबत में नहीं हूँ।'
‘मुझे पता है। दरअसल, मैंने आपके बारे में सुना था। लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि आप वही सिंघानिया हैं।’
मुझे यह जानने में बहुत दिलचस्पी होगी कि आपको मेरा नाम कैसे पता चला। क्या आप कभी हरिद्वार गए हैं?
'ओह हां।'
‘क्या वहां आपकी मुलाकात भवानी उपाध्याय नाम के किसी व्यक्ति से हुई?’ मैंने किया, लेकिन आपको इसके बारे में कैसे पता चला?
‘श्री उपाध्याय के मकान मालिक ने मुझे बताया कि सिंघानिया नाम का एक व्यक्ति, एक अन्य व्यक्ति के साथ, उनके किरायेदार से मिलने आया था।’
‘उसने तुम्हें और क्या बताया?’
‘आपने जाहिर तौर पर एक ऐसा प्रस्ताव रखा था जो उपाध्याय को बेहद लुभावना लगा, लेकिन उन्होंने उस प्रलोभन पर काबू पा लिया।’
‘यह उपाध्याय कितने विचित्र व्यक्ति थे! मैंने उनके जैसा कोई नहीं देखा। श्री मित्तर, क्या आप कल्पना कर सकते हैं? उनकी मासिक आय कभी पाँच सौ रुपये से अधिक नहीं थी, क्योंकि वे गरीबों का निःशुल्क इलाज करते थे। मैंने उन्हें पाँच लाख रुपये देने की पेशकश की। आप उस लटकन के बारे में जानते ही होंगे जो उन्हें भेंट की गई थी, है ना? मेरा मानना है कि यह मूल रूप से त्रावणकोर के महाराजा की थी।’

'हां, मैंने यह सुना है, लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि आपको यह किसने बताया। मुझे बताया गया है कि चंद्रदेव सिंह के करीबी मुट्ठी भर लोगों को ही इसके बारे में पता था।'
‘आप सही कह रहे हैं, श्री मित्तर। इन्हीं कुछ लोगों में से एक ने मुझे बताया था। दिल्ली में मेरा एक व्यवसाय है। मैं कीमती पत्थर और आभूषण खरीदता-बेचता हूँ। उमाशंकर पुरी के पुत्र देवीशंकर मेरे पास आए और उन्होंने मुझे इस पेंडेंट के बारे में बताया। वे चाहते थे कि मैं इसे खरीद लूँ, और स्वाभाविक रूप से कमीशन की उम्मीद कर रहे थे। इसलिए मैं हरिद्वार गया, लेकिन उपाध्याय ने मेरे द्वारा प्रस्तावित कीमत पर भी इसे बेचने से इनकार कर दिया। पुरी की रुचि पूरी तरह खत्म हो गई, लेकिन मेरी नहीं। मैं इसे खरीदने का विचार छोड़ ही नहीं सकता। मैं यहाँ एक आखिरी कोशिश करने आया हूँ। अगर उपाध्याय ने संसार त्यागकर संन्यासी बन गए हैं, तो वे ऐसी सांसारिक वस्तु को क्यों अपने पास रखना चाहेंगे? क्या यह अजीब नहीं लगता? शायद अगर मैं एक और प्रस्ताव दूँ, तो वे इस बार इसे बेचने के लिए राजी हो जाएँ?’
तो आप उससे संपर्क क्यों नहीं करते?
'यह असंभव है।'
'क्यों?'
‘वह अब इतने दूरदराज के इलाके में रहता है कि मैं उससे मिलने वहां नहीं जा सकता। क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?’
'हाँ?'
'आप यहां पर क्या कर रहे हैं?'
‘श्री सिंघानिया, मैं मुख्य रूप से एक यात्री के रूप में आया हूँ। लेकिन उपाध्याय के प्रति मेरे मन में बहुत आदर है। यदि मैं किसी को उन्हें नुकसान पहुँचाने का प्रयास करते हुए देखूंगा, तो मैं निश्चित रूप से उस व्यक्ति को रोकने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगा।’
'क्या इसका मतलब यह है कि आप एक स्वतंत्र एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं? मेरा मतलब है, किसी ने भी आपको अपनी ओर से यहां काम करने के लिए नियुक्त नहीं किया है?'
'क्यों नहीं?'
क्या आप मेरे लिए काम करने को तैयार होंगे?
'आप मुझसे क्या चाहते हैं?'
‘जाओ उपाध्याय से मिलो और उन्हें वह लटकन मुझे बेचने के लिए मनाओ। मैं तुम्हें पाँच लाख का दस प्रतिशत दूँगा। यदि उपाध्याय अपने लिए कुछ नहीं लेना चाहते, तो मैं वह पैसा उनके परिवार के किसी सदस्य को या जिसे भी वे भुगतान के योग्य समझते हैं, उसे देने के लिए तैयार हूँ।’
लेकिन क्या आपको पता है कि इस पेंडेंट में किसी और की भी दिलचस्पी है?
जी हाँ। आपका मतलब पावन्देओ सिंह से है, है ना? सच कहूँ तो, मुझे आज शाम तक पता ही नहीं था। भार्गव नाम का एक रिपोर्टर मुझसे मिलने यहाँ आया था। किसने सोचा था कि रिपोर्टर केदारनाथ में भी मेरा पीछा करेंगे? खैर, उसने

ही मुझे बताया। लेकिन मुझे लगता है कि सिंह यहाँ सिर्फ एक फिल्म बनाने आए हैं।
'ज़रूर। लेकिन उपाध्याय और उनका पेंडेंट उनकी फिल्म में अहम भूमिका निभाएंगे।'
श्री सिंघानिया पूरी तरह से असहाय दिखने लगे।
‘कृपया, श्रीमान मिटर,’ उसने विनती की, ‘कृपया मेरी मदद करें।’
‘क्या तुमने भार्गव को कुछ बताया?’
'नहीं, बिलकुल नहीं। मैंने उनसे कहा कि मैं यहाँ केवल एक तीर्थयात्री हूँ।' 'भार्गव को उपाध्याय में दिलचस्पी तो है, लेकिन केवल एक सनसनीखेज खबर के लिए सामग्री के रूप में।'
आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।
‘देखिए, मैं बस इतना ही वादा कर सकता हूँ: अगर मुझे उपाध्याय मिल गए, तो मैं उन्हें वो बात बता दूँगा जो आपने अभी मुझे बताई है। मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि अगर वो अब इस पेंडेंट को अपने पास नहीं रखना चाहते, तो वो इसे किसी को देना चाहेंगे। मुझे नहीं लगता कि वो इसे बेचने के लिए राज़ी होंगे। इसलिए अभी कोई पक्की व्यवस्था न करें। अगर मुझे उनसे मिलने का मौका मिला, तो मैं आपको बता दूँगा।’
'बहुत खूब। धन्यवाद, श्रीमान मिटर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'
बाहर अंधेरा छा चुका था। केदारनाथ शहर धीरे-धीरे सो रहा था। घरों, दुकानों और सड़कों की बत्तियाँ इतनी धीमी थीं कि उनसे कोई खास फर्क नहीं पड़ रहा था। इन सबके बीच एक बत्ती बहुत तेज चमक रही थी। उत्सुकतावश हम उसकी ओर बढ़े और देखा कि पावन्देओ सिंह बैटरी से चलने वाली बत्ती की मदद से केदारनाथ की सड़कों की वीडियो बना रहे थे। हमें देखकर वे रुक गए और पूछा, 'उपाध्याय के बारे में कोई जानकारी मिली?'
उसे जवाब देने के बजाय, फेलुदा ने उससे एक सवाल पूछा। 'तुम यहाँ कहाँ ठहरे हो?'
‘मैंने एक निजी घर में एक कमरा लिया है। वह घर एक पांडा का है। यह यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। बाईं ओर वह गली दिख रही है? मैं दाईं ओर तीसरे घर में हूँ।’
‘ठीक है। मैं आपको बाद में बताता हूँ,’ फेलुदा ने कहा। हम अपने धर्मशाला की ओर वापस चलने लगे।
कुछ सेकंड बाद, लालमोहन बाबू ने अचानक टिप्पणी की, 'मुझे नहीं पता कि पावंडेओ सिंह वास्तव में किस तरह का व्यक्ति है, लेकिन वह सिंघानिया नाम का आदमी एक बदमाश है।'
'क्या सोच कर तुम यह कह रहे हो?'
'हो सकता है कि आप जहां बैठे थे वहां से आपको यह दिखाई न दिया हो, लेकिन मुझे दिखाई दिया। उसकी जेब में एक छोटा सा टेप रिकॉर्डर था। जैसे ही आपने बोलना शुरू किया, मैंने उसे चालू करते हुए देखा। उसने पूरी बातचीत टेप पर रिकॉर्ड कर ली है।'
‘तो फिर, श्रीमान गांगुली, मैं कहीं बेहतर बदमाश हूँ, क्या आप सहमत नहीं हैं?’ फेलुदा ने अपना माइक्रोकैसेट रिकॉर्डर निकाला। ‘क्या आपको लगता है

कि मैं—’ वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया। तभी अंधेरे से एक आदमी निकला और बोलते-बोलते उसके कंधे पर वार कर दिया। मैंने फेलुदा को लड़खड़ाते और फिर ज़मीन पर गिरते देखा, वह खुद को बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर पाया। जिस गली से हम गुज़र रहे थे, वह पूरी तरह सुनसान थी। निस्संदेह हमलावर ने इसका पूरा फायदा उठाया होगा।
उस एक वार के बाद उसने भागने की कोशिश की। मैं स्तब्ध खड़ा रहा, लेकिन बस एक पल के लिए। किसी अजीब सी सहज प्रवृत्ति ने मुझे फेलुदा को छोड़कर तुरंत उस दूसरे आदमी का पीछा करने के लिए मजबूर कर दिया। दस सेकंड बाद, मैंने उसे कंधों से पकड़ लिया और दीवार से सटा दिया। उसने मुझे लात मारी और मुझे धक्का देने लगा; लेकिन लालमोहन बाबू का हथियार उस पर चला और वह दर्द से कराहते हुए गिर पड़ा। मैंने कुछ हैरानी से उस हथियार को देखा, जो उसकी नुकीली छड़ी के अलावा कुछ नहीं था। जानबूझकर या अनजाने में, लालमोहन बाबू ने उस आदमी के सिर पर वार कर दिया था। मैं अर्ध-अंधेरे में भी देख सकता था कि खुले घाव से खून बह रहा था। लेकिन वह आदमी स्पष्ट रूप से काफी मजबूत था। चोट के बावजूद वह उठ खड़ा हुआ और फिर भागा, इस बार तेजी से अंधेरे में गायब हो गया।
हमने फेलुदा की ओर रुख किया और उसे उठने में मदद की। उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन यह स्पष्ट था कि वह घायल था और दर्द में था। सौभाग्य से, हमारी धर्मशाला ज़्यादा दूर नहीं थी। रास्ते में उसने बस एक ही बात कही: 'तो गुंडे केदारनाथ पहुँच ही गए!'
बड़े ही सौभाग्य से, पता चला कि धर्मशाला में एक डॉक्टर ठहरे हुए थे। वे बंगाली थे और संयोग से फेलुदा को पहचानते थे। इसलिए उन्हें विशेष देखभाल मिली। उनके कंधे पर गहरा घाव था। डॉक्टर ने उसे एंटीसेप्टिक लोशन से धोया और फिर उस पर पट्टी लगा दी। उन्होंने कहा, 'एक्स-रे के बिना यह बताना असंभव है कि आपका कंधा टूटा है या नहीं।'
‘उसकी चिंता मत करो। फ्रैक्चर हो या न हो, तुम मुझे बिस्तर पर नहीं रोक सकते, मैं तुमसे वादा करता हूँ,’ फेलुदा मुस्कुराया।
जब हमने उनसे उनकी फीस के बारे में पूछा, तो डॉक्टर ने जोर से अपना सिर हिलाया।
‘नहीं, नहीं, मैं इतना कम काम करने के लिए कोई शुल्क नहीं ले सकता,’ उन्होंने कहा। ‘आप जानते हैं, श्री मित्तर, यह केदार की मेरी तीसरी यात्रा है। हर बार जब मैं वापस आता हूँ, तो मुझे इस जगह की प्राकृतिक सुंदरता बिल्कुल वैसी ही मिलती है, लेकिन असामाजिक तत्वों की संख्या बढ़ती हुई प्रतीत होती है। मुझे लगता है कि सड़क परिवहन में सुधार इसके लिए जिम्मेदार है। इसने केदार को हजारों तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के लिए सुलभ तो बना दिया है, लेकिन साथ ही इन तत्वों को उन जगहों पर अपराध और बुराई फैलाने में आसानी भी दे दी है जहाँ पहले यह बिल्कुल भी मौजूद नहीं था।’
धर्मशाला के प्रबंधक ने बिना बताए स्थानीय पुलिस को सूचना दे दी थी। जब इंस्पेक्टर वहाँ पहुँचा, तो फेलुदा ने उससे काफी देर तक बात की। मैं ठीक से

सुन तो नहीं पाया कि उसने इंस्पेक्टर को क्या बताया, लेकिन मैंने देखा कि इंस्पेक्टर ध्यान से सुन रहा था और सहमति में सिर हिला रहा था। इंस्पेक्टर के जाते ही श्री भार्गव आ गए। उन्होंने आश्चर्य और चिंता भरे स्वर में पूछा, 'मैंने आपके साथ हुए हमले के बारे में क्या सुना है?'
‘कुछ नहीं था, श्री भार्गव। एक जासूस ऐसी बातों को सहजता से लेना सीख जाता है। शायद कोई स्थानीय गुंडा ही होगा, जिसे मेरी जान से ज्यादा मेरे बटुए में दिलचस्पी थी। लेकिन वह कुछ भी लेने में कामयाब नहीं हुआ।’
'आपका मतलब है कि इसका आपकी जांच से किसी भी तरह से कोई संबंध नहीं है?' ‘कैसी जाँच? मैं तो यहाँ केवल उपाध्याय से मिलने आया हूँ।’
‘ठीक है। क्या आपको पता चला कि वह कहाँ रहता है?’
'आपके पास?'
यहां कोई भी उपाध्याय नाम के किसी व्यक्ति को नहीं जानता।
‘तो शायद उसने अपना नाम बदल लिया है।’
'हाँ शायद।'
फेलुदा ने हमें जो कुछ भी पता था, उसमें से कुछ भी नहीं बताया। भार्गव थोड़ा निराश होकर चला गया।
अगली सुबह हमें जल्दी उठना था, इसलिए हमने साढ़े आठ बजे खाना खाया और सोने की तैयारी करने लगे। लेकिन फेलुदा की योजना कुछ और ही थी। मुझे आश्चर्य और बहुत गुस्सा आया जब उसने कहा, 'तुम दोनों सो जाओ। मैं अभी बाहर जा रहा हूँ, लेकिन जल्दी वापस आ जाऊँगा।'
‘बाहर जा रहे हो? कहाँ? फेलुदा, तुम नहीं जा सकते! मुझे पता है तुम्हारे कंधे में अभी भी दर्द है, और तुम्हें आराम करने की ज़रूरत है।’
मुझे पावंडेओ से मिलना है। यह बहुत जरूरी है।
‘क्या! तुम सीधे दुश्मन के खेमे में नहीं जा सकते।’
‘देखो, टॉपशे, मेरे साथ पहले भी ऐसा हो चुका है। शारीरिक हमले के सदमे से मेरा दिमाग बेहतर तरीके से काम करने लगता है। अब मुझे एहसास हो गया है कि पावन्देओ हमारा दुश्मन नहीं है।’
‘नहीं? तो फिर कौन है?’
आप खुद ही देख लेंगे, बहुत जल्द।
‘अगर तुम बाहर जाओ और उसे अपना इंतजार करते हुए पाओ तो तुम क्या करोगे?’ ‘मेरे पास मेरा हथियार है। चिंता करना छोड़ो और सो जाओ। मैं चाहे जिस समय लौटूं, कोई फर्क नहीं पड़ता। कल का कार्यक्रम वही रहेगा। हम साढ़े चार बजे गांधी सरोवर के लिए रवाना होंगे।’
फेलुदा अपनी जेब में रिवॉल्वर और हाथ में एक बड़ी टॉर्च लिए बाहर निकला। ‘कितना प्रशंसनीय साहस!’ लालमोहन बाबू ने कहा।

आठ
मुझे पता नहीं चला कि फेलूदा रात को कब लौटा। जब मैं सुबह साढ़े चार बजे से कुछ ही पहले उठा, तो वह पहले से ही तैयार था। लालमोहन बाबू और मैंने दस मिनट लिए और फिर हम चल पड़े। भोर अभी शुरू ही हुई थी। स्ट्रीटलाइट्स अभी भी जल रही थीं, मानो पहले से भी ज़्यादा दबी हुई हों।
हम मंदिर के पास से गुजरे और उसके पीछे खुले मैदान में पहुँच गए। फेलूदा अचानक मेरी ओर मुड़ा और बोला, 'तुम पहले बहुत जोर से सीटी बजा सकते थे। क्या अब भी बजा सकते हो?'
थोड़ा आश्चर्यचकित होकर मैंने कहा, 'जी हां, बिल्कुल। क्यों?'
जब मैं कहूँ तभी सीटी बजाना।
मैंने उत्सुकता से उसकी ओर देखा, लेकिन स्पष्टीकरण मांगने का कोई फायदा नहीं था। हम अपनी छड़ियों का सहारा लेते हुए चलते रहे। उनके बिना फिसलन भरी, पथरीली सतह पर चलना बेहद मुश्किल होता, जिसका अधिकांश भाग अभी भी बर्फ से ढका हुआ था। कुछ देर पहले ही हमें नदी पार करनी पड़ी थी, लकड़ी के तख्तों से बने एक अस्थायी पुल पर बड़ी सावधानी से कदम रखते हुए। मंदाकिनी नदी यहाँ एक छोटी सी धारा मात्र थी। जिधर भी मेरी नज़र जाती, मुझे ऊँची पर्वत चोटियाँ दिखाई देतीं, लेकिन मुझे नहीं पता था कि उन्हें क्या कहते हैं। भोर की पहली किरण में इनमें से सबसे ऊँची चोटी गुलाबी रंग की चमक बिखेरने लगी थी।
मेरे हाथ और चेहरा एकदम जम गए थे। लालमोहन बाबू कांपते दांतों के बीच बोले, 'उ-उ-उ-उ-वह सीटी तो बजाएगी, लेकिन मैं क्या करूँ?'
‘तुम? तुम्हें बस अपनी उस छड़ी को अपने सिर के ऊपर पकड़ना है और उसे हवा में घुमाना है। इससे तुम्हारी बहादुरी और तुम्हारा पागलपन दोनों साबित हो जाएंगे।’
‘बहुत अच्छा।’
आधे घंटे बाद, एक सपाट, धूसर क्षेत्र दिखाई दिया। यह अंतहीन चट्टानों और पत्थरों से घिरा हुआ था। यह सरोवर ही होना चाहिए। फिर भी, मैंने फेलुदा की ओर देखा और पूछा, 'क्या यह वही है—?' फेलुदा ने चुपचाप सिर हिलाया। झील के पश्चिम में एक बड़ा चट्टानी टीला था। इसमें एक छोटी गुफा हो सकती थी। यह सब कुछ कम से कम ढाई सौ गज दूर था।
कुछ देर से फेलुदा इधर-उधर देख रहा था, मानो किसी खास चीज की तलाश कर रहा हो। अब उसकी नजर किसी वस्तु पर टिक गई। मैंने भी उसकी नजर का पीछा किया और एक बड़े पत्थर के पीछे से तिपाई का एक पैर झांकता हुआ देखा। चुपचाप फेलुदा उसकी ओर बढ़ा, और हम भी उसके पीछे-पीछे चल दिए।
कुछ ही सेकंड बाद, हमने पवनदेव सिंह को अपने कैमरे से झांकते हुए पाया। वह अपने टेलीफोटो लेंस का इस्तेमाल दूरबीन की तरह कर रहे थे।

फिर मुझे फेलुदा का निर्देश याद आया और मैंने पूरी ताकत से सीटी बजाई। अचानक कई पुलिस वर्दीधारी लोग अलग-अलग चट्टानों और पत्थरों के पीछे से निकल आए।
‘टॉपशे! लालमोहन बाबू! अब आप बाहर आ सकते हैं,’ फेलुदा ने पुकारा। हम जितनी तेज़ी से दौड़ सकते थे दौड़े और संन्यासी की गुफा के सामने उसके पास पहुँच गए।
संन्यासी शायद अभी तक इस घटना के पूरे परिणामों को समझ नहीं पाए थे, लेकिन उनकी शांत गरिमा में कोई बदलाव नहीं आया। उन्होंने बस आश्चर्य से हमारी ओर देखा।
और रिवाल्वर लिए हुए वह आदमी? वह एक इंच भी नहीं हिला था, लेकिन अब हम उसका चेहरा देख सकते थे।
जी हां, ये रहे पत्रकार कृष्णकांत भार्गव!
वह पुलिसकर्मियों से घिरा हुआ था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वे फेलुदा के निर्देशों का इंतजार कर रहे थे। 'इसकी दाढ़ी उतारो!' फेलुदा ने कहा। एक कांस्टेबल ने तुरंत उसकी दाढ़ी उतार दी। जो चेहरा सामने आया वह कुछ जाना- पहचाना सा लगा, लेकिन एक पल बाद जब फेलुदा ने खुद अपने बालों को ढकने वाली ऊनी टोपी हटाई तो सब कुछ स्पष्ट हो गया।
‘वंशानुक्रम एक अजीब चीज़ है,’ फेलुदा ने कहा। ‘न केवल उसके कानों के निचले हिस्से बिल्कुल उसके पिता जैसे हैं, बल्कि इस आदमी ने अपने बालों को दाहिनी ओर से अलग करना भी सीख लिया है। इसीलिए तो उसे देखकर मुझे हर बार बेचैनी महसूस होती है।’
लेकिन इसका क्या मतलब होगा? क्या यह आदमी सचमुच—? मुझे पूछने की भी जरूरत नहीं पड़ी।
'जी हां,' फेलुदा ने मेरे अनकहे सवाल का जवाब देते हुए कहा, 'आप उमाशंकर के इकलौते बेटे देवीशंकर पुरी को देख रहे हैं।'

नौ
अब हमने संन्यासी की ओर देखा। वह अब भी असमंजस में दिख रहा था।
उन्होंने कहा, 'गोली चलने की आवाज ने मुझे विचलित कर दिया। मुझे माफ कर दीजिए कि मुझे खुद को संभालने में इतना समय लग गया। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए।'
‘जो कुछ हुआ, उसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं थी। लेकिन अब तुम्हें वह थैला निकालना ही होगा जिसकी तुम तीस साल से अधिक समय से रखवाली कर रहे हो। तुम्हें अब तक तो समझ आ ही गया होगा कि हम तुम्हारे दोस्त हैं? क्या वह तुम्हारी गुफा में है?’
‘जी हाँ, और कहाँ हो सकता है? यही तो मेरी इकलौती संपत्ति है!’ एक कांस्टेबल गुफा में चला गया और हाथ में एक छोटा लाल थैला लेकर लौटा। संन्यासी ने उसे खोला। सबसे पहले एक मुड़ा हुआ कागज़ का पन्ना निकला। यह राजा चंद्रदेव सिंह का बयान था, जिसमें पुष्टि की गई थी कि यह पेंडेंट भवानी उपाध्याय को इनाम के तौर पर दिया गया था। इस पर उनकी राजसी मुहर लगी हुई थी।
इसके बाद एक छोटा थैला निकला, जिसमें से वह प्रसिद्ध पेंडेंट बाहर आया। उसमें जड़ा हर छोटा पत्थर सूरज की रोशनी में चमक रहा था। यह स्पष्ट था कि इसे किसी असाधारण रूप से कुशल कारीगर ने बनाया था। इसकी सुंदरता ने हमें कुछ क्षणों के लिए अवाक कर दिया।
फेलुदा सबसे पहले संभला। उसने नरमी से कहा, 'अब, अगर आप हमें बता सकें कि आप वास्तव में कौन हैं, तो इससे हमें बहुत मदद मिलेगी।'
‘मैं असल में कौन हूँ? तुम किस बारे में बात कर रहे हो?’
‘क्या आप हमें अपना असली नाम नहीं बता सकते? वह नाम जो आपके बंगाली माता- पिता ने आपको दिया था?’
संन्यासी ने अपना आश्चर्य छिपाने की कोशिश भी नहीं की। 'आप मेरे अतीत के बारे में इतना कुछ जानते हैं? आपको किसने बताया कि मैं बंगाली हूँ?'
‘कोई नहीं। लेकिन मैंने आपका हिंदी में लिखा एक पत्र देखा था। देवनागरी लिपि में लिखे कुछ अक्षर बंगाली अक्षरों से मिलते-जुलते लग रहे थे। इसके अलावा, हरिद्वार स्थित आपके घर में एक अलमारी पर मुझे एक बंगाली किताब का फटा हुआ पन्ना मिला।’
'सच में? आपका दिमाग तो असाधारण रूप से प्रतिभाशाली है।'
‘क्या मैं एक और प्रश्न पूछ सकता हूँ?’
'हाँ?'
‘क्या उपाध्याय सचमुच आपका उपनाम है, और क्या आपका नाम सचमुच भवानी है?’ ‘आपका क्या मतलब है? क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि मैं...’

क्या उपाध्याय, गंगोपाध्याय का ही एक अंश नहीं है, और क्या भवानी दुर्गा का ही एक नाम नहीं है? अगर मैं कहूँ कि आपका असली नाम दुर्गामोहन गंगोपाध्याय है, तो क्या यह गलत होगा?
'अरे बाप रे! क-क-क-का-का-का-का।. .'
‘लालमोहन बाबू, तुम इतनी जोर से क्यों कांव-कांव कर रहे हो? क्या तुम अचानक कौआ बन गए हो?’
‘नहीं-नहीं। ये काका हैं! मेरे चाचा, दुर्गामोहन, है ना? हे भगवान, क्या ये सच हो सकता है?’ दुर्गामोहन ने गहरे आश्चर्य से लालमोहन बाबू की ओर देखा। ‘काका, मैं लालू हूँ!’ लालमोहन बाबू उनके पैर छूने के लिए आगे बढ़े। संन्यासी ने उन्हें गले लगा लिया और कहा, ‘भगवान के काम वाकई अनोखे होते हैं, है ना? किसने सोचा था कि मैं अपने इकलौते भतीजे से इस तरह मिल पाऊँगा? लेकिन अब जब मिल चुका हूँ, तो मुझे किसी बात की चिंता नहीं है। वह झुमका सही मायने में तुम्हारा है। मुझे अब उसकी कोई ज़रूरत नहीं है।’
'हां, मैं देख सकता हूं। अगर आप मुझे दे दें, काका, तो मैं इसे बैंक के लॉकर में रख सकता हूं। शायद आपको पता न हो, लेकिन आजकल मैं बच्चों के लिए अपराध कथाएं लिखकर खूब पैसे कमा रहा हूं। लेकिन कौन जाने, लोगों की पसंद इतनी जल्दी बदल जाती है कि एक दिन शायद वे मेरी लिखी हुई चीजें पढ़ना ही न चाहें। अगर मुझे पता होता कि मैंने कहीं छिपाकर रखा है, तो मुझे बहुत... मतलब... तसल्ली मिलती!'

आचार्य हत्याकांड

एक
लालमोहन बाबू के आग्रह पर ही हम आखिरकार एक जात्रा देखने गए। इसका नाम सूर्य तोरण था और इसे प्रसिद्ध भारत ओपेरा समूह ने प्रस्तुत किया था। अंत में हमें मानना पड़ा कि यह एक अच्छा शो था। कहानी और अभिनय में थोड़ी भावुकता थी, लेकिन इसके बावजूद कलाकारों ने दर्शकों का ध्यान अंत तक बांधे रखा। जाहिर है, वे सभी अनुभवी अभिनेता थे और लेखक को पता था कि जनता को क्या पसंद आएगा।
‘ये कुछ-कुछ मेरी कहानियों जैसी ही थी, है ना?’ बाहर आते ही लालमोहन बाबू ने कहा। अगर आप पूरी कहानी का बारीकी से विश्लेषण करें, तो शायद इसमें हज़ार कमियाँ निकाल लें। फिर भी, इसने घंटों तक आपका मनोरंजन किया। क्या आप सहमत नहीं हैं, फेलू बाबू?’
हम दोनों ने ऐसा किया। लालमोहन बाबू की रचनाओं में स्वाभाविक रूप से गहराई और गंभीर चिंतन का अभाव था। फिर भी वे अपने पाठकों के बीच बेहद लोकप्रिय थे। उनकी हर नई किताब कम से कम तीन महीने तक बेस्टसेलर सूची में बनी रहती थी। वे हर साल केवल दो किताबें प्रकाशित करते थे, एक अप्रैल में और दूसरी अक्टूबर में। हाल ही में, उनकी किताबों में तथ्यात्मक त्रुटियाँ काफी कम हो गई थीं, क्योंकि फेलुदा से पांडुलिपियों की जाँच करवाने के अलावा, उन्होंने विभिन्न विश्वकोशों से भी परामर्श लेना शुरू कर दिया था।
मैंने सूर्य तोरण का ज़िक्र इसलिए किया क्योंकि जिस मामले के बारे में मैं लिखने जा रहा हूँ, वह भारत ओपेरा में काम करने वाले एक व्यक्ति से जुड़ा था। उनका नाम इंद्रनारायण आचार्य था। नाटक और गीत दोनों उन्होंने ही लिखे थे। हमें बताया गया कि वे ऑर्केस्ट्रा में भी शामिल हुए थे और वायलिन बजाते थे। निस्संदेह, वे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उनसे जुड़ी समस्याएँ अंततः इतनी जटिल निकलीं कि फेलुदा को इस उलझे हुए जाल को सुलझाने के लिए अपनी पूरी बुद्धि का इस्तेमाल करना पड़ा।
सूर्य तोरण के दर्शन के दस दिन बाद, श्री आचार्य ने स्वयं हमें फोन किया और फेलुदा से मिलने का समय तय किया। फेलुदा ने उन्हें अगले रविवार को सुबह दस बजे आने के लिए कहा। जब वे पहुँचे, तब तक जटायु भी हमारे साथ आ चुका था। श्री आचार्य आम पुरुषों से थोड़े लंबे थे और उनकी दाढ़ी मुंडवाई हुई थी। चालीस वर्ष की आयु के आसपास के इस व्यक्ति के बाल अभी-अभी सफेद होने शुरू हुए थे।
फेलुदा ने उन्हें बताया कि हमें उनका नाटक देखकर कितना आनंद आया, और कहा, 'आप तो वाकई एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। आपने इतनी अलग-अलग चीजें कैसे सीख लीं?'
श्री आचार्य हल्के से हँसे, “श्री मित्तर, मेरे जीवन की कहानी कुछ विचित्र है। जब मैं आपको अपने परिवार के बारे में बताऊँगा, तब आपको एहसास होगा कि

जात्राओं की दुनिया से मेरा संबंध कितना अजीब है। क्या आपने कभी बोसेपुकुर के आचार्यों के बारे में सुना है?”
जी हाँ। यह एक प्रसिद्ध परिवार है। क्या कंदर्पनारायण आचार्य आपके पूर्वजों में से एक नहीं थे? वही जिन्होंने इंग्लैंड जाकर राजकुमार द्वारकानाथ टैगोर जैसी विलासितापूर्ण जीवनशैली अपनाई थी?
जी हां, बिल्कुल सही। कंदर्पनारायण मेरे परदादा थे। वे 1875 में इंग्लैंड गए थे। उनकी कई रुचियां थीं, जिनमें संगीत भी शामिल था। मैं जो वायलिन बजाता हूं, वह उन्होंने ही खरीदा था। मेरे दो भाई हैं, देवनारायण और हरिनारायण। दोनों मुझसे बड़े हैं।
हरिनारायण को मेरी तरह संगीत में रुचि है, लेकिन वे कोई वाद्य यंत्र नहीं बजाते। उन्हें पश्चिमी शास्त्रीय संगीत में अधिक रुचि है। वे हमेशा रिकॉर्ड और कैसेट ही सुनते हैं। पेशे से वे चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं। देवनारायण व्यवसायी हैं। हमारे पिता, कीर्तिनारायण, अभी जीवित हैं। उनकी उम्र उनहत्तर वर्ष है। वे एक बैरिस्टर थे, हालांकि अब वे सेवानिवृत्त हो चुके हैं। तो, आप देख सकते हैं, ऐसे माहौल से आने वाला कोई व्यक्ति आमतौर पर जात्राओं में शामिल नहीं होता। लेकिन बचपन से ही मुझमें लिखने की प्रतिभा और संगीत के प्रति जुनून रहा है। मैंने कॉलेज की पढ़ाई की, लेकिन स्नातक की पढ़ाई पूरी होने का इंतजार नहीं किया। एक विशेष शिक्षक ने मुझे वायलिन बजाना सिखाया। और मैंने गीत लिखना भी शुरू कर दिया था। इसलिए मैं सीधे अपने पिता के पास गया और उनसे कहा कि मैं कलाकारों के एक समूह में शामिल होना चाहता हूं जो मिलकर जात्राओं का मंचन करते हैं। पिता को मुझसे कुछ लगाव है, शायद इसलिए कि मैं उनका सबसे छोटा बेटा हूं। वे मान गए। इस तरह मेरी शुरुआत हुई। अब मैं अपने अन्य भाइयों के बराबर कमाता हूं। मुझे पूरा यकीन है कि आप जानते होंगे कि जात्रा कार्यकर्ताओं को कितना अच्छा वेतन मिलता है।'
‘अरे हाँ!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘मुख्य अभिनेताओं को हर महीने लगभग बीस हजार रुपये मिलते हैं।’
श्री आचार्य ने आगे कहा, ‘मैं अहंकारी नहीं दिखना चाहता, लेकिन अगर भरत ओपेरा आज इतना प्रसिद्ध है, तो इसका मुख्य कारण मेरा योगदान है। मेरे नाटक, मेरे गीत और मेरा वायलिन वादन सबसे बड़े आकर्षण हैं... और यहीं समस्या है।’ श्रीनाथ के चाय लेकर आने पर वे रुक गए।
'क्या आप प्रतिद्वंद्वी गुटों के दबाव की बात कर रहे हैं?' फेलुदा ने अपना प्याला उठाते हुए पूछा।
जी हां, आप सही कह रहे हैं। कई अन्य समूह काफी समय से आकर्षक प्रस्ताव दे रहे हैं। मैं दुविधा में था—आखिरकार, अच्छे प्रस्ताव को कोई हमेशा नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता, है ना? लेकिन दूसरी ओर, मैं सत्रह वर्षों से भारत ओपेरा के साथ हूं। उन्होंने इस पूरे समय मेरा ख्याल रखा है और मुझे अत्यंत सम्मान दिया है। मैं उन्हें निराश नहीं कर सकता। इसलिए मुझे एक समूह को दूसरे के खिलाफ खड़ा करना पड़ा, ताकि मुझे चीजों पर विचार करने के लिए और समय मिल सके। लेकिन... अब मामला गंभीर हो गया है, इसीलिए मैं आज आपके पास

आया हूं। तीन दिन पहले मुझे हटाकर भारत ओपेरा को हमेशा के लिए पंगु बनाने का प्रयास किया गया था।
'आपका क्या मतलब है?'
सरल शब्दों में कहें तो, मेरी हत्या करके।
'क्या सोच कर तुम यह कह रहे हो?'
'मुझ पर शारीरिक हमला हुआ था। मेरे कंधे में अभी भी दर्द है।'
जब आप पर हमला हुआ तब आप कहाँ थे?
हमारा दफ्तर मुहम्मद शफी लेन में है, जो बीडन स्ट्रीट से थोड़ी ही दूर है। वहीं पर रिहर्सल होती हैं। वह गली लगभग हमेशा अंधेरी और सुनसान रहती है। उस शाम जब मैं गली में दाखिल हुआ, तो बिजली चली गई, जिससे स्थिति और बिगड़ गई। जैसे ही मैं दफ्तर की ओर बढ़ा, कोई अचानक उठा और उसने मुझे एक भारी छड़ से मारा। मुझे लगता है कि उसका इरादा मेरे सिर पर मारने का था, लेकिन वह चूक गया और मेरे कंधे पर लग गया। सौभाग्य से, हमारे दो कलाकार कुछ ही मिनटों में वहाँ पहुँच गए और मुझे दर्द से कराहते हुए ज़मीन पर पड़ा पाया। वे भी दफ्तर जा रहे थे। वे ही मुझे उठाकर दफ्तर ले गए और सब कुछ संभाला। मेरे पास मेरी वायलिन थी, जो ज़मीन पर गिर गई थी।
'मेरी सबसे बड़ी चिंता यह थी कि कहीं इसे नुकसान न पहुंच गया हो, लेकिन बाद में मुझे पता चला कि ऐसा नहीं था। अब, श्रीमान मिटर, आपको मुझे बताना होगा कि मुझे क्या करना चाहिए।'
फेलुदा ने चारमीनार जलाई। ‘इस समय मैं आपको यही सलाह दे सकता हूँ कि आप पुलिस के पास जाएँ। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि आप पर हमला करने वाला व्यक्ति किसी प्रतिद्वंद्वी समूह द्वारा भेजा गया था। वह एक साधारण चोर भी हो सकता है; शायद उसे सिर्फ आपका बटुआ चाहिए था। इसलिए पुलिस को बताएँ और अगर कुछ और होता है तो मुझे बताएँ। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ। लेकिन आपने अपने परिवार के बारे में जो बताया वह बहुत दिलचस्प था। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसे परिवार का कोई सदस्य जात्रा में शामिल होगा।’ श्री आचार्य ने कहा, 'मुझे आचार्य परिवार की काली भेड़ के रूप में जाना जाता था। कम से कम मेरे भाई तो मुझे यही कहते थे।'
इसके तुरंत बाद वह चला गया। उसके जाने के बाद, फेलुदा कुछ मिनटों तक चुपचाप बैठा रहा और सान्निध्य में सिगरेट पीता रहा। फिर उसने धुएं के कुछ छल्ले उड़ाए और कहा, 'ज़रा सोचो, सौ साल पहले कंदर्पनारायण आचार्य इंग्लैंड गए थे और राजकुमार की तरह जीवन व्यतीत करते थे। आज उनका परपोता कलकत्ता की एक छोटी सी गली में हमले का शिकार होने के बाद मदद की गुहार लगा रहा है। उनकी परिस्थितियों में कितना अंतर है, जबकि उनकी पीढ़ी में केवल तीन पीढ़ियों का ही अंतर है!'
‘लेकिन,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की, ‘यह बदलाव केवल इंद्रनारायण के मामले में हुआ है। अभी जो हमने सुना है, उससे तो यही लगता है कि उनके दोनों भाई अपने पारिवारिक रिवाज के अनुसार अभी भी काफी शान-शौकत से रह रहे हैं।’ फेलुदा ने कहा, 'जो भी हो, मैं इन लोगों के बारे में और अधिक जानना चाहूंगा। शायद एक दिन हमें बोसेपुकुर जाना चाहिए।'

[illegible] [illegible] [illegible] [

दो
(इंद्रनारायण की कहानी)
सम्राट अशोक दो दिनों में तैयार हो जाएगा। कम से कम इस लिहाज से तो इंद्रनारायण को चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। सच तो यह था कि उन्होंने चार और नाटक लिखे थे और सभी तैयार थे। लेकिन उन्होंने भारत ओपेरा के मालिक को इस बारे में कुछ नहीं बताया था। वे अच्छी तरह जानते थे कि हर नाटक की सफलता की गारंटी नहीं होती। दर्शकों का मिजाज अक्सर बदलता रहता है, और एक समझदार नाटककार को बहुत सावधानी से यह आंकलन करना पड़ता है कि किस तरह की कहानियाँ या विषय लोकप्रिय होंगे। इस लिहाज से, सम्राट अशोक मौजूदा रुचियों के लिए बिल्कुल उपयुक्त साबित होगा।
नहीं, इंद्रनारायण को अपने नाटक की चिंता नहीं थी। उनकी चिंता का कारण कुछ और ही था। रात के दस बज चुके थे। बिनापानी ओपेरा के प्रबंधक, अश्विनी भौर, कुछ ही मिनटों में आने वाले थे। यह उनकी पाँचवीं मुलाकात होती। नोबो नाट्य नामक एक अन्य समूह ने भी अपने प्रबंधक को उनसे बात करने के लिए भेजा था, लेकिन वे बिनापानी ओपेरा जितने बड़े और प्रभावशाली नहीं थे। दोनों समूह चाहते थे कि वे भारत ओपेरा छोड़कर उनके समूह में शामिल हो जाएँ। भारत ओपेरा के साथ सत्रह साल बिताने के बाद, इंद्रनारायण के लिए निर्णय लेना स्वाभाविक रूप से कठिन था। ईश्वर ने उन्हें एक विशेष प्रतिभा दी थी जिसने उन्हें प्रसिद्धि दिलाई थी। लेकिन उनमें वफादारी की भावना भी प्रबल थी। उसका मन उस रात की यादों में खो गया जब उस पर हमला हुआ था। शायद प्रदोष मित्र की बात सही थी। शायद इसका दूसरे प्रतिद्वंद्वी समूहों से कोई संबंध नहीं था। इंद्रनारायण अब तक इस बात से पूरी तरह अनजान था कि विभिन्न थिएटर समूहों के बीच प्रतिद्वंद्विता कितनी प्रबल होती है। अब उसे पता चल गया था। हालांकि, उस खास रात को, ज़रूर कोई साधारण चोर ही रहा होगा जिसने उसे बेहोश करके उसका बटुआ चुराने के इरादे से उस पर हमला किया होगा। अगर वह सच में उसका सिर फोड़ना चाहता, तो ज़रूर फोड़ सकता था। शुक्र है कि वे दोनों लड़के सही समय पर आ गए। उनके समय पर आने की वजह से ही उसका बटुआ भी सुरक्षित बच गया। उस दिन उसमें करीब डेढ़ सौ रुपये थे।
संतोष, जो सामान ढोने वाला था, एक पर्ची लेकर आया। उस पर लिखा था, ‘अश्विनी भौर’। इंद्रनारायण ने संतोष से कहा, ‘उन्हें अंदर आने के लिए कहो।’ अश्विनी भौर अंदर आए और एक कुर्सी पर बैठ गए।
‘क्या हो रहा है?’ उसने पूछा।
‘आप ही बताइए,’ इंद्रनारायण ने उत्तर दिया।
'श्री आचार्य, मेरे पास आपको बताने के लिए कुछ भी नया नहीं है। यह मेरी पांचवीं यात्रा है। आपको अब किसी न किसी तरह से निर्णय लेना ही होगा।'

'हां, मुझे पता है। लेकिन आप समझते ही होंगे कि मुझे सब कुछ सोच-समझकर करना होगा? इतने सालों बाद भरत ओपेरा को बिना पर्याप्त सूचना दिए मैं यूं ही नहीं छोड़ सकता।'
“हाँ, लेकिन आप एक समूह से दूसरे समूह में जाने वाले पहले व्यक्ति नहीं होंगे। आप संजय कुमार के बारे में तो जानते ही होंगे, है ना? क्या उन्होंने दस साल बाद न्यू ओपेरा छोड़कर भारत में काम नहीं किया था? ऐसा अक्सर होता रहता है। इसके अलावा, आप हमारे द्वारा दी जा रही राशि को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकते हैं? हम जानते हैं कि आपको भारत से कितना वेतन मिलता है। पंद्रह हज़ार, है ना? हम आपको बीस हज़ार देंगे। आपकी वार्षिक आय लगभग ढाई लाख होगी। आपका बहुत अच्छे से ख्याल रखा जाएगा और आपको उतना ही स्नेह और सम्मान दिया जाएगा जितना भारत में दिया जाता है। फिल्म के क्रेडिट में आपका नाम प्रमुखता से दिखाया जाएगा। हम आपकी सभी शर्तें यथासंभव मान लेंगे।”
‘देखिए, अश्विनी बाबू, मुझे अपना नाटक पूरा करने में एक-दो दिन और लग जाएंगे। कृपया तब तक प्रतीक्षा कीजिए जब तक यह लिखा न जाए और मेरे दिमाग से निकल न जाए। अभी तो मैं और कुछ सोच ही नहीं पा रहा हूँ। क्या आप तीन दिन बाद आ सकते हैं?’
‘ठीक है। लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि—?’
अगर मेरा इरादा आपको निराश करने का होता तो मैं आपको वापस आने के लिए नहीं कहता। लेकिन आपको मेरी स्थिति का भी ध्यान रखना चाहिए। पैसा ही सब कुछ नहीं होता, है ना? अगर भारत ओपेरा को आपके प्रस्ताव के बारे में पता चल गया, तो वे मेरी सैलरी भी बढ़ा सकते हैं। अगर ऐसा हुआ तो आप मुझसे क्या उम्मीद करेंगे? और बात यहीं खत्म नहीं होती। इस तरह का लंबे समय से चला आ रहा रिश्ता एक दिन में खत्म नहीं हो सकता।
ठीक है, अब मैं आपको शांति से रहने देता हूँ, इंद्र बाबू, और एक सप्ताह बाद वापस आता हूँ। तब तक आप अंतिम निर्णय ले सकेंगे। लोगों को अनिश्चितता में रखना अच्छा नहीं होता, है ना? अच्छा, अलविदा, इंद्र बाबू। शुभ रात्रि। 'शुभ रात्रि।'
इंद्रनारायण अपनी कुर्सी से उठे और श्री भौर के साथ उन्हें दरवाजे तक छोड़ने गए। फिर वे वापस लौटे और लेखन कार्य में लग गए। अंतिम दृश्य जिस तरह से आगे बढ़ रहा था, उससे वे बहुत प्रसन्न थे। यदि वे इसे अंतिम पंक्ति तक जारी रख पाते, तो सम्राट अशोक उनके द्वारा लिखित अब तक का सबसे सफल नाटक साबित हो सकता था।
इंद्रनारायण लिखते रहे। खुली खिड़की से कुछ हरी मक्खियाँ अंदर आ गईं और भिनभिनाने लगीं। ऐसा हर रात होता था। यह बहुत परेशान करने वाला था, साथ ही नियमित बिजली कटौती भी। हालाँकि, हाल ही में बिजली की आपूर्ति में सुधार हुआ था। इंद्रनारायण ने मक्खियों को भगाया और अपना ध्यान अपने नाटक पर केंद्रित किया। उन्हें अपना काम करना था।
लेकिन वह ज्यादा देर तक ऐसा नहीं कर सका। उसे बिल्कुल भी पता नहीं था कि एक रहस्यमयी आकृति उसके कमरे में घुस आई और दबे पांव उसकी कुर्सी के पास आकर उसके ठीक पीछे खड़ी हो गई।

फिर उसने एक हाथ उठाया और लोहे की छड़ से प्रहार किया। पल भर में इंद्रनारायण के सामने अंधकार का पर्दा छा गया। उनकी आंखें हमेशा के लिए बंद हो गईं।

तीन
अखबार खोलते ही मैं बुरी तरह चौंक गया।
इंद्रनारायण आचार्य की उनके ही घर में परसों हत्या कर दी गई। कितनी अजीब बात है! वे तो दस दिन पहले ही हमसे मिलने आए थे।
फेलुदा ने खबर पढ़ ली थी। उसने गहरे अफसोस के साथ अपना सिर हिलाया।
‘जब वह मदद के लिए मेरे पास आया तब भी मैं उसे बचा नहीं सका। लेकिन उस समय मेरे पास करने के लिए कुछ था ही नहीं। मैं उसकी मदद कैसे कर सकता था?’
एक छोटी सी बात मुझे परेशान कर रही थी। मैंने कहा, 'पहले उस पर एक गली में हमला हुआ, फिर कोई उसके घर में घुसकर उसकी हत्या कर दी। मुझे कहना पड़ेगा कि हत्यारे में बहुत हिम्मत है।'
‘पीड़ित के घर को देखे बिना और खुद यह देखे बिना कि वह किस कमरे में रुका था, आप ऐसा नहीं कह सकते। इसके अलावा, अगर कोई उसे जान से मारने के लिए बेताब होता, तो वह उसके घर में घुसने में जरा भी संकोच नहीं करता, है ना?’ 'मुझे नहीं लगता। लेकिन उन्होंने आपसे जांच करने के लिए तो नहीं कहा था, है ना?'
नहीं, जाहिर है उन्होंने पुलिस के पास जाने का फैसला किया। लेकिन मैं स्थानीय इंस्पेक्टर मोनिलाल पोद्दार को जानता हूं। हो सकता है वे हमें कुछ जानकारी दे सकें।
मैं मोनिलाल पोद्दार से पहले भी मिल चुका था। मोटे और घनी मूंछों वाले, वह एक हंसमुख व्यक्ति थे जो अक्सर फेलुदा को चिढ़ाते थे, लेकिन साथ ही साथ उनका बहुत सम्मान भी करते थे।
हुआ यूं कि हमें पुलिस के आने का इंतज़ार नहीं करना पड़ा। इंद्रनारायण के पिता, कीर्तिनारायण ने खुद फेलुदा को संदेश भेजा। हत्या के तीन दिन बाद, सुबह नौ बजे हमारे घर की घंटी बजी। आने वाला व्यक्ति लगभग चालीस वर्ष का था, दिखने में चुस्त-दुरुस्त और सलीकेदार। जब मैंने दरवाज़ा खोला तो मैंने उसे अपना चेहरा पोंछते हुए पाया। हालांकि अक्टूबर का महीना था, फिर भी काफी गर्मी थी। उसने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आप मुझे इस तरह अचानक अंदर आने के लिए माफ़ कर देंगे, लेकिन फ़ोन पर बात नहीं हो पा रही थी। मुझे श्री आचार्य—कीर्तिनारायण ने भेजा है। आपने शायद उनके घर में हुई हत्या के बारे में सुना होगा। उन्हें इस मामले में आपकी मदद चाहिए।'
‘मैं समझ गया। और आप कौन हैं—?’
ओह, क्षमा कीजिए। मुझे पहले अपना परिचय देना चाहिए था। मेरा नाम प्रद्युम्न मल्लिक है। मैं वर्तमान में इंग्लैंड गए कंदर्पनारायण आचार्य की जीवनी लिख रहा हूँ। मैं पहले एक अखबार के लिए काम करता था, लेकिन मैंने वह काम छोड़कर एक पूर्ण लेखक बनने का फैसला किया। इस समय मैं कीर्तिनारायण के सचिव के रूप में काम कर रहा हूँ और अपनी पुस्तक के लिए सामग्री एकत्र कर

रहा हूँ। जैसा कि आप जानते होंगे, कीर्तिनारायण एक बैरिस्टर थे। वे चार साल पहले सेवानिवृत्त हुए थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है।
‘उसे मेरी मदद क्यों चाहिए? क्या उन्होंने पुलिस को नहीं बताया?’
'हां, उनके बेटों ने पुलिस को सूचना दे दी। लेकिन खुद उस बूढ़े आदमी के विचार अलग हैं। उन्हें अपराध कथाएँ बहुत पसंद हैं। उनका मानना है कि यह काम किसी निजी जासूस का है। वो आपकी फीस तो देंगे ही, स्वाभाविक रूप से।' क्या आपको हत्या के बारे में कुछ और जानकारी मिली है?
नहीं, ऐसा नहीं है। कोई इंद्रनारायण के पीछे खड़ा था और उसने किसी कुंद हथियार से उनके सिर पर वार किया। उस समय वे अपनी डेस्क पर बैठे थे। पुलिस सर्जन के अनुसार, उनकी हत्या रात बारह से साढ़े बारह बजे के बीच हुई। उनका कमरा भूतल पर था। उसमें एक शयनकक्ष और एक अध्ययन कक्ष था। वे हर रात काफी देर तक काम करते थे। आप उनके जात्रा से संबंध के बारे में जानते ही होंगे, है ना?
'जी हां। दरअसल, इंद्रनारायण ने मरने से पहले मुझसे मुलाकात की थी और मुझे अपने और अपने परिवार के बारे में काफी कुछ बताया था।'
अच्छा, तो इससे बात आसान हो जाती है। उस रात इंद्रनारायण से एक ही व्यक्ति मिलने आया था। वह बिनपानी ओपेरा के मैनेजर थे। मुझे लगता है उनका नाम अश्विनी भौर है। वह रात दस बजे आए थे, और उनके सहायक संतोष ने बताया कि उसने इंद्रनारायण के साथ उनकी बहस सुनी थी। लेकिन वह ग्यारह बजे चले गए। पुलिस उनसे बात कर चुकी है। किसी को नहीं पता कि वह बाद में वापस आए थे या नहीं। पीछे एक दरवाजा है जो अक्सर रात एक बजे तक खुला रहता है। नौकर रात के खाने के बाद अपने दोस्तों से मिलने घर से बाहर जाते हैं और आमतौर पर आधी रात के बाद ही लौटते हैं। इसलिए अगर श्री भौर एक घंटे बाद वापस आए और पीछे के दरवाजे से अंदर घुस गए, तो उन्हें कोई नहीं देख पाया होगा। खैर, अगर आप यह काम करने के लिए तैयार हैं, तो आप खुद ही पता लगा लेंगे। अगर आप तैयार हैं, तो आप आज ग्यारह बजे कीर्तिनारायण से मिल सकते हैं। वह उस समय खाली रहेंगे।
मुझे पता था कि फेलुदा मान जाएगा, क्योंकि उसके मन में आचार्यों के बारे में जानने की उत्सुकता थी और इंद्रनारायण से उसकी मुलाकात उसे अच्छी लगी थी। तय हुआ कि हम ग्यारह बजे तक बोसेपुकुर पहुँच जाएँगे। श्री मल्लिक ने एक बार फिर अपना चेहरा पोंछा और चले गए।
‘यह कागज़ का टुकड़ा यहाँ क्या कर रहा है?’ फेलूदा ने उसके जाने के कुछ क्षण बाद पूछा। मैंने श्री मल्लिक द्वारा इस्तेमाल किए गए सोफे के एक कोने में एक मुड़ा हुआ कागज़ का टुकड़ा पड़ा देखा। मैंने उसे उठाया और फेलूदा को दे दिया, जिसने उसे खोलकर फैला दिया। उस पर लिखा था:
जन्मदिन की शुभकामनाएँ
HUKUM CHAND
ये शब्द बॉलपॉइंट पेन से लिखे गए थे।
फेलुदा ने कुछ पल तक भौंहें चढ़ाकर इन शब्दों को घूरा। फिर उसने कहा, ‘हुकुम चंद... ये नाम जाना-पहचाना सा लगता है। शायद ये संदेश जन्मदिन के केक पर लिखा जाएगा। हुकुम चंद कीर्तिनारायण का दोस्त हो सकता है। या शायद श्री

मल्लिक को ये संदेश टेलीग्राम के ज़रिए भेजने को कहा गया हो।’ फेलुदा ने कागज़ को फिर मोड़कर अपनी जेब में रख लिया। ‘अब हमें तीसरे मस्क eteer को सूचित करना होगा। हमें उसकी गाड़ी का इस्तेमाल करना है और वैसे भी, अगर हम उसे छोड़ देंगे तो वो बहुत नाराज़ होगा।’
खबर मिलते ही लालमोहन बाबू अपनी हरी एम्बेसडर कार में एक घंटे के भीतर ही पहुँच गए। उन्होंने बस जल्दी से नहाकर कपड़े बदले थे। जब फेलुदा ने उन्हें सारी बात बता दी, तो उन्होंने कहा, “लगता है ये पूजा की छुट्टियाँ हम सिर्फ इस रहस्य को सुलझाने में ही बिताएँगे। एक तरह से ये अच्छा ही है। उपन्यास लिखने के बाद मुझे हमेशा समय बिताना मुश्किल लगता है। इससे मुझे कुछ करने को मिल जाएगा। वैसे, मेरे पड़ोसी रोहिणी बाबू आचार्य परिवार को जानते हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने ऐसा अजीब परिवार पहले कभी नहीं देखा। लगता है बेटों की अपने पिता से नहीं बनती; भाइयों के बीच भी कोई प्यार नहीं है। ऐसे में इस परिवार में किसी की हत्या होना कोई हैरानी की बात नहीं है।”
हम बोसेपुकुर के लिए रवाना हुए। जब हमारी कार आचार्य निवास के बरामदे पर रुकी, तब ग्यारह बजकर पाँच मिनट हो चुके थे। घंटी बजाते ही एक नौकर ने दरवाजा खोला। श्री मल्लिक उनके पीछे खड़े थे। उन्होंने कहा, 'मैंने आपकी कार के आने की आवाज सुनी। मेरा कमरा भी भूतल पर ही है। कृपया मेरे साथ आइए, मैं आपको श्री आचार्य के पास ले चलता हूँ।'
घर बहुत बड़ा था, इतना विशाल कि उसे हवेली कहा जा सकता था। शायद कंदर्पनारायण ने खुद इसे बनवाया था, या हो सकता है कि यह उससे भी पहले, लगभग डेढ़ सौ साल पहले बना हो। हम चौड़ी लकड़ी की सीढ़ियों से ऊपर चढ़े, हमारे पैरों से काफी शोर हो रहा था। सीढ़ियों के किनारे प्राचीन आचार्यों के बड़े-बड़े चित्र टंगे हुए थे। सीढ़ियों के अंत में एक संगमरमर की मूर्ति खड़ी थी। इधर-उधर कई फूलदान रखे थे, जिनमें से अधिकतर चीनी प्रतीत होते थे। एक तरफ एक बड़ी घड़ी रखी थी। एक बरामदा था, जहाँ से नीचे एक हॉल दिखाई देता था। बाद में मुझे पता चला कि वह एक संगीत हॉल था। बरामदे के दूसरी तरफ कमरों की एक कतार थी। श्री मल्लिक हमें उनमें से एक कमरे में ले गए। यह एक बैठक कक्ष था, जो सोफे, कालीन और दो छोटे झूमरों से सुसज्जित था। लालमोहन बाबू और मैं एक सोफे पर बैठ गए। श्री मल्लिक श्री आचार्य को बुलाने चले गए। फेलुदा थोड़ी देर तक बेचैनी से इधर-उधर घूमता रहा, फिर एक छोटे सोफे पर बैठ गया।
कीर्तिनारायण आचार्य दो मिनट में आ गए। उनकी दाढ़ी साफ थी और रंग बेहद गोरा था। उनके बाल लगभग सफेद थे, लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस उम्र में भी उनके कुछ बाल काले थे। उनकी लंबाई बहुत अधिक नहीं थी, लेकिन उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा था जो उन्हें लोगों से भरे कमरे में भी अलग पहचान दिलाता था। एक वकील के रूप में वे अवश्य सफल रहे होंगे। उन्होंने रेशमी कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था, जिसके ऊपर उन्होंने बैंगनी रंग का ड्रेसिंग गाउन ओढ़ा हुआ था। उनके चश्मे को 'हाफ-ग्लास' कहा जाता है। उन्होंने पूछा, 'आपमें से जांचकर्ता कौन है?'
फेलुदा ने अपना और हम दोनों का परिचय दिया। जटायु का नाम सुनते ही आचार्य जी ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं।

‘आप अपराध कथाएँ लिखते हैं? अरे, मैंने तो आपकी कोई रचना कभी पढ़ी ही नहीं!’ लालमोहन बाबू ने यथासंभव विनम्रता से कहा, 'मैं जो लिखता हूं, वह आप जैसे पारखी पाठक के लिए पर्याप्त अच्छा नहीं है।'
फिर भी, अगर आप अपराध कथाएँ लिख सकते हैं, तो आपमें एक खोजी प्रवृत्ति ज़रूर होगी। देखिए, क्या आप आपस में मिलकर इस रहस्य का हल निकाल सकते हैं। इंद्र मेरा सबसे छोटा बेटा था। बचपन में उसकी उपेक्षा हुई थी। लेकिन उसने कभी शिकायत नहीं की, न ही ऐसा कुछ किया जिससे मुझे चिंता हो। उसे हमेशा संगीत का शौक था। जब यह स्पष्ट हो गया कि उसे पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं है, तो मैंने उसे अपनी अन्य रुचियों को अपनी इच्छानुसार विकसित करने देने का फैसला किया। बचपन से ही वह गीत और नाटक लिखा करता था। वह वायलिन भी बजाता था। मेरे दादाजी यूरोप से एक वायलिन लाए थे - 'स्ट्रिंग्स ऑफ एमिटी' (दोस्ती का तार)।
‘क्या? किस चीज की डोरियां?’
‘मैत्री। मेरे दादाजी का हास्यबोध कुछ अनोखा था। पता नहीं क्यों, वायलिन को ‘मैत्री के तार’ कहते थे। अपनी पहली लगोंडा कार को वो ‘पुष्पक रथ’ कहते थे; ग्रामोफोन रिकॉर्ड को ‘सुदर्शन चक्र’ कहते थे… और भी बहुत कुछ। मैं घंटों अपने दादाजी के बारे में बता सकता हूँ। सच तो ये है, श्री मित्तर, कि इंद्र की मृत्यु ने मुझे बहुत गहरा आघात पहुँचाया है। यही कारण है कि मैंने आपसे जाँच करने को कहा है। मैं समझता हूँ कि जात्राओं से जुड़ना किसी आचार्य के लिए गर्व की बात नहीं हो सकती, लेकिन हाल ही में इंद्र को पंद्रह हजार रुपये प्रति माह मिल रहे थे। भला कितने लोग ऐसा कर पाते हैं? और इंद्र इस मुकाम तक कैसे पहुँचे होंगे, जब तक कि उनमें वाकई प्रतिभा न हो? मुझे खुद रंगमंच और संगीत से लगाव था, इसलिए मुझे उन्हें रोकने का कोई कारण नहीं दिखा। वो बुरी संगत में पड़ सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उन्हें हमेशा सिर्फ अपने काम की ही परवाह रहती थी। उन्होंने किसी भी तरह से अपने परिवार को शर्मिंदा या अपमानित नहीं किया। इसके विपरीत, मुझे लगता है कि उन्होंने तो ठीक इसका उल्टा किया।’
‘क्या आपको पता था कि उस पर हाल ही में हमला हुआ था? अगर वार उसके कंधे की जगह उसके सिर पर लगा होता, तो शायद उसकी मौत हो जाती।’
'जी हां, मुझे इसके बारे में पता चल गया था। दरअसल, मैंने ही उसे आपसे सलाह लेने के लिए कहा था।'
'आपके विचार से उनकी हत्या के पीछे क्या मकसद हो सकता है? एक जात्रा कंपनी और दूसरी जात्रा कंपनी के बीच प्रतिद्वंद्विता?'
‘मैं कुछ नहीं कह सकता। ये तो आपको ही पता लगाना है, है ना? मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि अगर इंद्र के कोई दुश्मन थे भी, तो वे निश्चित रूप से किसी न किसी जात्रा दल के ही रहे होंगे। उस दुनिया से बाहर वे ज़्यादा लोगों को नहीं जानते थे। जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया, उनका एकमात्र जुनून उनका काम था।’
पुलिस ने पहले ही सभी से मिलकर पूछताछ कर ली होगी।
“तो उन्होंने ऐसा ही किया। लेकिन ऐसा कोई कारण नहीं है कि आप ऐसा न कर सकें, हालांकि मेरे दोनों बेटे आपको घर पर नहीं मिलेंगे। वे शाम तक लौट आएंगे।

अगर आप प्रद्युम्न से कुछ पूछना चाहें तो पूछ सकते हैं। इसके अलावा, सभी नौकर और मेरी बहू भी हैं। वह मेरे दूसरे बेटे हरि की पत्नी हैं। मेरे सबसे बड़े बेटे देवनारायण विधुर हैं। हरि की एक बेटी है जिसका नाम लीना है। वह इंद्र से बहुत लगाव रखती थी। वैसे, आपकी फीस कितनी है?”
मैं एक हजार डॉलर अग्रिम लेता हूं। फिर, अगर सब कुछ ठीक रहा, तो मामला खत्म होने पर मैं एक हजार डॉलर और लेता हूं।
‘ठीक है। बहुत अच्छा। मैं आपको तुरंत एक हजार रुपये का चेक दे दूंगा। देखिए, श्रीमान मित्तर, मेरी उम्र लगभग अस्सी साल है, मैं मधुमेह रोगी हूं और मुझे स्ट्रोक भी हो चुका है। मेरे साथ कभी भी कुछ भी हो सकता है। मैं मरने से पहले अपने बेटे के हत्यारे को पकड़ा और सजा होते देखना चाहता हूं।’ मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं। क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूं?
'हाँ?'
क्या आप हुकुम चंद नाम के किसी व्यक्ति को जानते हैं?
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। मैं हुकुम सिंह नाम के एक व्यक्ति को जानता था, लेकिन यह कई साल पहले की बात है।
'धन्यवाद।'
फेलुदा ने प्रद्युम्न मल्लिक से पूछताछ शुरू करने का फैसला किया। श्री आचार्य के जाते ही वह अंदर आया। उसने कहा, 'इंस्पेक्टर आपसे मिलना चाहते हैं।'
‘Who, Mr Poddar?’
'हां, वह नीचे इंतजार कर रहा है।'
हम तीनों वापस भूतल पर आ गए। लालमोहन बाबू ने एक शब्द भी नहीं कहा था, लेकिन मैं जानता था कि उन्होंने सारी बातचीत ध्यान से सुनी थी। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि लोगों के बोलने के तरीके और उनकी बातों को ध्यान से देखना और समझना एक लेखक का कर्तव्य होता है। उन्होंने आगे कहा था, 'इसके अलावा, तपेश, मुझे नहीं लगता कि हम तुम्हारे चचेरे भाई के काम में उतनी मदद करते हैं जितनी करनी चाहिए। हमें अपनी आँखें और कान खुले रखने चाहिए। सिर्फ एक मूक दर्शक बनकर रहना किसी के काम का नहीं है, है ना?'
हमें देखकर मोनिलाल पोद्दार के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान आ गई।
‘जैसे चुंबक के लिए धातु का टुकड़ा होता है, वैसे ही?’ उसने फेलुदा से पूछा। 'आप ऐसा कह सकते हैं। लेकिन मुझे उम्मीद थी कि मेरे यहां पहुंचने तक आप इस रहस्य को सुलझा चुके होंगे।'
खैर, मुझे लगता है कि यह अपेक्षाकृत सरल मामला है। बस गुटों के बीच प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या का मामला है। पीड़ित भारत ओपेरा के लिए एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। इसलिए अन्य गुट उसे रिश्वत देकर अपने साथ मिलाने की कोशिश कर रहे थे। जब यह मुश्किल साबित हुआ, तो उन्होंने भारत ओपेरा को किसी भी तरह से नुकसान पहुंचाने के लिए उसकी हत्या करवा दी। चोरी भी एक मकसद हो सकता है। किसी ने उसकी मेज पर रखे कागजात खंगाले थे। शायद वह किसी नए नाटक की तलाश में था।
‘क्या आपने भारत ओपेरा के मैनेजर से बात की है?’

“हाँ, लेकिन क्या आपने सुना है कि बिनापानी ओपेरा ने क्या किया? उनके प्रबंधक, अश्विनी भौर, उसी रात इंद्रनारायण से मिलने आए। उन्होंने उन्हें लुभाने की बहुत कोशिश की, यहाँ तक कि उन्हें बीस हज़ार रुपये प्रति माह देने का प्रस्ताव भी दिया। लेकिन इंद्रनारायण ने कोई प्रतिबद्धता नहीं जताई। उनकी निष्ठा अभी भी भारत ओपेरा के प्रति थी। श्री भौर पौने ग्यारह बजे चले गए। हत्या बारह और साढ़े बारह बजे के बीच हुई। पिछला दरवाज़ा खुला था। चौकीदार के अनुसार, इंद्रनारायण अभी भी अपने कमरे में काम कर रहे थे, कभी-कभी वायलिन बजा रहे थे। शायद वह कोई नया गीत लिख रहे थे या उसकी रचना कर रहे थे। उसी समय उनकी हत्या कर दी गई। जब वह अपनी मेज पर झुककर लिख रहे थे, तब किसी भारी, कुंद हथियार से उनके सिर पर वार किया गया। हत्यारे को इससे बेहतर मौका नहीं मिल सकता था।”
‘क्या आपको हथियार मिल गया?’
नहीं। भूतल पर इंद्रनारायण का कमरा एक कोने में था। सभी नौकर रात के खाने के बाद बाहर चले गए थे। मुख्य भारवाहक संतोष, जाहिरा तौर पर हर शाम अपने दोस्तों के साथ एक-दो ड्रिंक के लिए बाहर जाता है। जब तक वह लौटकर पीछे का दरवाजा बंद करता है, तब तक आमतौर पर एक बज चुका होता है। सामने का दरवाजा तो बंद था ही, और एक चौकीदार भी था। लेकिन कोई भी पीछे के दरवाजे से अंदर घुस सकता था, क्योंकि वहां कोई देखने या सुनने वाला नहीं था। घर के पीछे जोडू नस्कर लेन नाम की एक छोटी सी गली है। हत्यारे के लिए इससे काम बहुत आसान हो गया होगा।
क्या मैं पीड़ित का शयनकक्ष और अध्ययन कक्ष देख सकता हूँ?
“बेशक, आपका हार्दिक स्वागत है। लेकिन अगर आप मुझे कोई नई जानकारी दें, तो मुझे बहुत खुशी होगी, ठीक वैसे ही जैसे मैंने आपको अपनी सारी जानकारी दे दी है। इससे हम दोनों को फायदा होगा, समझे ना... हा हा हा!”

चार
हमने इंस्पेक्टर पोद्दार को वहीं छोड़कर इंद्रनारायण का शयनकक्ष देखने गए। वह एक लंबे बरामदे के अंत में था। उनका अध्ययन कक्ष उससे कुछ ही फीट की दूरी पर था। पिछला दरवाजा बरामदे के ठीक सामने था, इसलिए यदि कोई उस दरवाजे से आता भी, तो उसे अध्ययन कक्ष तक पहुँचने में केवल कुछ सेकंड ही लगते। बेडरूम में बहुत कम सामान था। हमें वहाँ एक बिस्तर, एक अलमारी और कुछ सूटकेस के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर हम उनके स्टडी रूम में गए। एक तरफ दो बड़ी अलमारियाँ थीं, जो अनगिनत कागज़ों, फाइलों और फोल्डरों से भरी हुई थीं। शायद पिछले सत्रह वर्षों में इंद्रनारायण ने जो कुछ भी लिखा था, वह सब उन्हीं अलमारियों में रखा हुआ था। एक दरवाज़ा बाहर बरामदे की ओर खुलता था। उसके दाहिनी ओर एक मेज और एक कुर्सी थी। ज़ाहिर है, हत्या वहीं हुई थी। मेज पर एक फाउंटेन पेन, दो बॉलपॉइंट पेन, पेंसिल, स्याही, एक पेपरवेट और एक टेबल लैंप बिखरे पड़े थे। इनके अलावा एक वायलिन का डिब्बा भी था।
‘चलिए, मैत्री की डोरियों को देखते हैं,’ फेलुदा ने डिब्बा खोलते हुए कहा। अंदर रखा वायलिन लगभग नया लग रहा था। स्पष्ट था कि इंद्रनारायण ने इस वाद्य यंत्र की बहुत अच्छी देखभाल की थी। मैंने सोचा, यह सौ साल पुराना होगा। फेलुदा ने डिब्बा फिर से बंद कर दिया।
डेस्क के अलावा, कमरे में एक सोफा, एक कुर्सी और एक छोटी संगमरमर की साइड टेबल थी। दीवार पर इंद्रनारायण को दिए गए दो प्रशस्ति पत्र फ्रेम में टंगे थे, जिनमें एक अंग्रेजी परिदृश्य का चित्र और रामकृष्ण परमहंस की एक तस्वीर थी।
हम सोफे पर बैठ गए। श्री मल्लिक कुर्सी पर बैठ गए। एक नौकर चार गिलास लस्सी लेकर आया और उन्हें साइड टेबल पर रख दिया। फेलुदा ने गिलास से एक घूंट लिया और अपने सवाल पूछने शुरू कर दिए।
'श्री मल्लिक, आपका अपना कमरा कहाँ है?'
'इसके ठीक सामने वाला कमरा। बरामदे के आखिरी छोर पर स्थित वह कमरा पुस्तकालय है। मेरा कमरा उसके बगल में है।'
आप आमतौर पर कब सोते हैं?
'काफी देर रात तक, कभी-कभी एक बजे के बाद भी। मैं अपना मुख्य काम—यानी कंदर्पनारायण के बारे में जानकारी इकट्ठा करना—केवल रात में ही करता हूँ। मैंने कीर्तिनारायण का साक्षात्कार लेकर शुरुआत की। जब उनके दादाजी का निधन हुआ तब वे बाईस वर्ष के थे, इसलिए उन्हें अपने दादाजी को थोड़ा- बहुत जानने का मौका मिला था। उनसे बात खत्म करने के बाद, मैंने पुराने पत्रों, डायरियों और अन्य दस्तावेजों का अध्ययन करना शुरू किया।'

'क्या इसका मतलब यह है कि जब इंद्रनारायण की हत्या हुई थी, उस रात आप जाग रहे थे?'
'हां, मैं जरूर रहा होगा। लेकिन देखिए, मेरे कमरे और इस कमरे के बीच में वह संगीत हॉल है। इतनी दूरी से कुछ भी देखना या सुनना असंभव है।'
‘यह बात कैसे पता चली कि उस रात बिनापानी ओपेरा के अश्विनी भौर मिलने आए थे?’
'संतोष को इसके बारे में पता था। पुलिस को वह कागज का टुकड़ा मिला जो उसने संतोष के माध्यम से भेजा था और जिस पर उसका नाम लिखा था। संतोष ने ही यह नोट किया था कि श्री भौर किस समय निकले थे।'
क्या आप इंद्रनारायण को वायलिन बजाते हुए नहीं सुन सके?
'हो सकता है मैंने सुना हो। लेकिन वह लगभग हर रात बजाता था, इसलिए मेरे लिए उस पर विशेष ध्यान देने का कोई कारण नहीं था। मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि मैंने उस रात उसे बजाते हुए सुना था या नहीं।'
‘क्या कंदर्पनारायण नियमित रूप से डायरी रखते थे?’
'हां, लेकिन केवल पंद्रह साल के लिए। उन्होंने पच्चीस साल की उम्र में शुरुआत की और चालीस साल की उम्र में छोड़ दिया।'
‘इसका मतलब है कि उनके इंग्लैंड दौरे का रिकॉर्ड मौजूद है?’
“हाँ, बिल्कुल। यह एक अद्भुत वृत्तांत है। उन्होंने वहाँ बहुत सारे दोस्त बनाए और कुलीन वर्ग के बीच खुलकर घुलमिल गए। फिर वे लंदन से फ्रांस चले गए। पेरिस में कुछ समय बिताने के बाद, वे फ्रेंच रिवेरा चले गए। जैसा कि आप जानते हैं, इस क्षेत्र में प्रसिद्ध कैसिनो हैं और यह जुआरियों के लिए एक तरह का मक्का है। कंदर्पनारायण ने रूलेट में कुछ लाख रुपये जीते। एक बंगाली के लिए, खासकर उस समय में, यह एक दुर्लभ उपलब्धि थी।”
‘आचार्यों के पास ज़मींदारी कहाँ थी?’
‘पूर्वी बंगाल के कांतिपुर में। उनके पास बहुत सारी जमीन थी।’
फेलुदा ने चारमीनार जलाई और गहरी सांस ली। कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने पूछा, 'लाश किसने खोजी?'
‘संतोष। वह पौने एक बजे लौटा और देखा कि इस कमरे की बत्ती अभी भी जल रही है। इसलिए वह यह देखने आया कि क्या इंद्रनारायण अभी भी यहाँ काम कर रहा है, और उसे पता चला कि क्या हुआ था। फिर वह दौड़कर मुझे बताने आया, और मैं ऊपर जाकर बाकी लोगों को जगाने चला गया।’
‘पुलिस के पास जाने का फैसला किसने किया?’
'देव नारायण। बूढ़े श्री आचार्य इस विचार के खिलाफ थे, लेकिन उनके बेटे ने उनकी बात नहीं मानी।'
‘इंद्रनारायण के साथ आपका कैसा अनुभव रहा?’
'बहुत बढ़िया, मुझे लगता है। मैंने उनका इंटरव्यू भी लिया था, खासकर उनके वायलिन के बारे में। उन्होंने मुझे बताया कि इसकी गुणवत्ता असाधारण रूप से अच्छी है, और इसकी ध्वनि अब तक सुनी गई किसी भी वायलिन से कहीं अधिक मधुर है। लगभग सत्तर वर्षों से इसे किसी ने छुआ तक नहीं था। लेकिन जब इंद्रनारायण ने इसे बजाना शुरू किया, तो उन्हें एहसास हुआ कि यह कितना शानदार वाद्य यंत्र है।'

‘आप उनके व्यक्तित्व के बारे में क्या सोचते थे?’
‘वह अपने काम से बेहद प्यार करते थे। वे अक्सर इतिहास की किताबें देखने के लिए पुस्तकालय आते थे, खासकर तब जब वे कोई ऐतिहासिक नाटक लिख रहे थे। कंदर्पनारायण के पुत्र—यानी कीर्तिनारायण के पिता—दर्पनारायण ने इतिहास में एमए किया था। इसलिए पुस्तकालय में इतिहास की किताबों का अच्छा संग्रह है।’
‘ठीक है। क्या अब आप मुझे बाकी भाइयों के बारे में थोड़ा बता सकते हैं? मुझे लगता है कि सबसे बड़े भाई का नाम देवनारायण है। दूसरे भाई का नाम हरिनारायण है, और सबसे छोटे भाई का नाम इंद्रनारायण था। क्या यह सही है?’ 'हाँ।'
‘इंद्रनारायण अविवाहित थे। और मुझे लगता है कि देवनारायण विधुर हैं?’
'जी हां, यह सही है। उनकी पत्नी की मृत्यु सात साल पहले हो गई थी।'
क्या उसके बच्चे नहीं हैं?
'हां, लेकिन वे बड़े हो चुके हैं। उनका बेटा अमेरिका में पढ़ाई कर रहा है। उनकी बेटी शादीशुदा है। वह पुणे में रहती है।'
देव नारायण किस तरह के व्यक्ति हैं?
‘बहुत ही संयमित और गंभीर।’
'वह क्या करता है?'
‘वह स्टॉकवेल टी कंपनी में काम करता है। मेरा मानना है कि वह वहां एक बहुत वरिष्ठ अधिकारी है।’
वह आम तौर पर काम से कब लौटता है?
साढ़े नौ बजे से पहले नहीं। वह काम के बाद अपने क्लब जाता है। वह ज्यादातर शामें वहीं बिताता है।
क्या वह अपने भाई की मृत्यु से बहुत परेशान प्रतीत हुआ?
'सच कहूँ तो, श्री मित्तर, तीनों भाई एक-दूसरे को खास पसंद नहीं करते थे। दोनों बड़े भाई इंद्रनारायण को जात्राओं से जुड़े होने के कारण नीचा समझते थे।'
लेकिन कीर्तिनारायण अपने सबसे छोटे बेटे को बहुत प्यार करते थे, है ना? 'बिल्कुल। वे इंद्रनारायण को सबसे अधिक प्रेम करते थे। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है क्योंकि मैंने कीर्तिनारायण को कई ऐसी बातें कहते सुना है जिनसे यह स्पष्ट होता है कि वे कई मायनों में इंद्रनारायण के प्रति पक्षपाती थे।'
क्या कीर्तिनारायण ने वसीयत बनाई है?
'हां मुझे ऐसा लगता है।'
‘ऐसे में, उनकी वसीयत में भी इंद्रनारायण के प्रति उनका स्नेह झलक सकता है।’
'हाँ बिल्कुल।'
फेलुदा ने एक और सिगरेट जलाने के लिए एक बार फिर रुक गया। लालमोहन बाबू ने अपनी छोटी लाल नोटबुक निकाली और उसमें कुछ लिखने लगे। शायद उन्हें अचानक किसी नई कहानी का कथानक सूझ गया था।

‘अब मुझे दूसरे भाई के बारे में जानना है,’ फेलुदा ने बात फिर से शुरू की। ‘वह क्या करता है?’
‘वह एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं। वह स्किनर एंड हार्डविक के लिए काम करते हैं।’
वह कैसा है?
‘खैर, वह शादीशुदा है और उसका परिवार है, इसलिए देवनारायण से उसमें स्पष्ट अंतर है। कुल मिलाकर, वह एक हंसमुख व्यक्ति है और पश्चिमी संगीत का बहुत शौकीन है।’
‘रिकॉर्ड और कैसेट?’
'हां, लेकिन केवल रविवार को। बाकी दिनों में वह अपने क्लब जाता है और रात करीब दस बजे लौटता है।'
वह किस क्लब में जाता है?
‘शनिवार क्लब।’
क्या उसका भाई भी उसी क्लब में जाता है?
नहीं, वह बंगाल क्लब जाता है।
'मुझे लगता है हरिनारायण की एक बेटी है।'
'जी हां, लीना। वह लगभग चौदह साल की है, बहुत ही बुद्धिमान लड़की है। वह कलकत्ता गर्ल्स स्कूल में पढ़ती है और पियानो बजाना सीख रही है। वह अपने चाचा से बहुत प्यार करती थी। उनकी मृत्यु ने उसे बहुत दुखी कर दिया है।' और उसके पिता? क्या वह परेशान नहीं हैं?
'अगर वह ऐसा है भी, तो वह इसे दिखाता नहीं है। वह हमेशा खुद को अपने छोटे भाई से श्रेष्ठ समझता हुआ प्रतीत होता था।'
'शायद दोनों भाइयों को यह बात पसंद नहीं थी कि इंद्रनारायण जात्राओं से बहुत पैसा कमा रहे थे?'
'शायद।'
मुझे दोनों भाइयों से खुद बात करनी होगी। आपको क्या लगता है मुझे कब फोन करना चाहिए?
'अगर आप शनिवार की सुबह आएंगे, तो आपको दोनों घर पर ही मिलेंगे।'
‘ठीक है। मुझे बताइए, आपने इस जीवनी पर काम करना कब शुरू किया और आपको ऐसा करने की प्रेरणा कहाँ से मिली?’
मैंने छह महीने पहले शुरुआत की थी। हुआ यूं कि मैंने उन्नीसवीं सदी पर आधारित एक उपन्यास लिखने का फैसला किया। इसलिए मैं कुछ पढ़ने के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय गया और वहां मुझे कंदर्पनारायण आचार्य के बारे में जानकारी मिली। इससे मेरी जिज्ञासा जागी और मैंने कुछ पूछताछ की। तब मुझे पता चला कि उनका परिवार यहीं रहता है। तो एक दिन मेरी मुलाकात कीर्तिनारायण से हुई और मैंने उन्हें अपने उद्देश्य के बारे में बताया। वे मुझे यहां रहकर शोध करने देने के लिए एक शर्त पर राजी हो गए: कि मैं उनके सचिव के रूप में काम करूं, जिसके लिए वे मुझे अलग से भुगतान करेंगे। मुझे यह ठीक लगा, इसलिए मैंने अपनी पुरानी नौकरी छोड़ दी और यहीं रहने लगा। मैं पूरी तरह से कीर्तिनारायण के लिए काम करता हूं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि

परिवार में किसी और को मेरे शोध से कभी कोई आपत्ति हुई है। ऐसा लगता है कि मैं सबके साथ अच्छे से घुलमिल गया हूं।
‘ठीक है। वैसे, एक बात बता दूं—’ फेलुदा ने अपना बटुआ निकाला और उसमें से एक कागज़ का टुकड़ा निकाला। यह वही कागज़ था जिस पर ‘हुकुम चंद को जन्मदिन की शुभकामनाएं’ लिखा हुआ था।
'जब आप हमसे मिलने आए थे, तब यह आपकी जेब से गिर गया होगा। यह क्या है? जन्मदिन के केक पर कोई संदेश है, या कोई टेलीग्राम?'
श्री मल्लिक पूरी तरह से अचंभित दिखे। फेलुदा द्वारा आगे बढ़ाए गए कागज के टुकड़े को देखते हुए उन्होंने कहा, 'अरे! मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा! यह मेरी जेब में कैसे हो सकता था? यह हुकुम चंद कौन है? मुझे कुछ पता नहीं!' ‘आप हमारे घर कैसे पहुंचे?’
मैंने बस ली।
‘क्या वहां भीड़ थी? क्या किसी ने इसे आपकी जेब में गिरा दिया होगा?’
'हां, ऐसा संभव है। लेकिन कोई ऐसा क्यों करेगा? इसका कोई मतलब ही नहीं बनता!'
‘कोई बात नहीं। अगर यह तुम्हारा नहीं है, तो मुझे लगता है मैं इसे अपने पास ही रख लूंगा,’ फेलुदा ने संदेश को वापस अपने बटुए में रखते हुए कहा।
इसमें कोई संदेह नहीं था कि कागज का यह टुकड़ा एक बड़े रहस्य का हिस्सा था।

पाँच
हम गुरुवार को बोसेपुकुर गए थे और शनिवार को वापस आने वाले थे। इसलिए शुक्रवार को हम खाली थे। लालमोहन बाबू सुबह आ गए, हालांकि वे आम तौर पर केवल रविवार को ही आते थे। एक नए मामले की शुरुआत से वे स्पष्ट रूप से बहुत उत्साहित थे।
वह एक कुर्सी पर बैठ गया और बोला, 'करने के लिए बहुत कुछ है, है ना? हमें निश्चित रूप से इनमें से कुछ जात्रा कंपनियों का दौरा करना चाहिए?' ‘ज़रूर। चूंकि आप पहले से ही यहां हैं, चलिए आपकी कार लेते हैं और भरत ओपेरा चलते हैं।’
और फिर मुझे लगता है कि हमें बिनापानी के मैनेजर, ईशान को ढूंढना होगा—’ नहीं, ईशान नहीं। अश्विनी। अश्विनी भौर। हाँ, हमें उनसे भी बात करनी होगी। टॉपशे, जाओ और उनका पता ढूंढो।
मैंने टेलीफोन डायरेक्टरी में इसका पता लगाया और पाया कि यह सुरेश मल्लिक स्ट्रीट में है।
‘मुझे पता है वो कहाँ है,’ लालमोहन बाबू ने हमें बताया। ‘मैं एक समय वहाँ नियमित रूप से जाया करता था। वहाँ एक जिम हुआ करता था।’
‘क्या आप जिम जाते थे?’ फेलुदा भी अपनी हैरानी नहीं छिपा पाए। ‘जी हाँ, यकीन मानिए। मैं पुश-अप्स करता था, बारबेल और चेस्ट एक्सपेंडर का इस्तेमाल करता था। जब मैंने जिम जाना बंद किया, तब मेरी छाती का माप बयालीस इंच था। मेरी लंबाई के हिसाब से बुरा नहीं है, है ना?’
तो उस छाती और उन मांसपेशियों का क्या हुआ?
‘वे... गायब हो गए। वैसे भी एक लेखक मांसपेशियों का क्या करेगा? मेरे पास जो भी मांसपेशियां बची हैं, वे मेरे दिमाग में हैं। लेकिन मैं अब भी बहुत चलता हूँ, रोज़ाना कई मील। इसीलिए मैं अब भी आपके साथ चल सकता हूँ।’
चाय पीने के बाद हम निकल पड़े। लालमोहन बाबू के ड्राइवर को जब पता चला कि हम कहाँ जा रहे हैं, तो वह बहुत उत्साहित हो गया। उसने भरत ओपेरा के कई शो देखे थे और हत्या के बारे में जानता था। उसने फेलुदा से कहा, 'भारत ओपेरा को आज जिस मुकाम पर पहुँचाया है, वह इंद्र आचार्य की ही देन है। अगर आप उनके हत्यारे को पकड़ लें, महोदय, तो आप हम सब पर बहुत बड़ा उपकार करेंगे।'
आज भारी यातायात के कारण हमें मोहम्मद शफी लेन स्थित भारत ओपेरा तक पहुंचने में पैंतालीस मिनट लग गए। अंदर प्रवेश करते ही एक सांवले, अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने हमारा अभिवादन किया।
‘आप किसे देखना चाहेंगे?’ उसने आलस भरे लहजे में पूछा।
फेलुदा ने अपना कार्ड निकाला। उस व्यक्ति के हावभाव में तुरंत बदलाव आया।
उसकी भावहीन आँखों में रुचि की चमक आ गई।
‘क्या आप हमारे मालिक शरत बाबू को ढूंढ रहे हैं?’

'हाँ यह सही है।'
'कृपया बस एक मिनट।'
वह आदमी एक दरवाजे के पीछे गायब हो गया। हमने अपने लिए एक बेंच और एक कुर्सी ढूंढी और बैठ गए। लालमोहन बाबू ने चारों ओर नज़र घुमाई और कहा, 'इस कमरे को देखकर तो आप यह नहीं कहेंगे कि यह कंपनी इतनी अच्छी तरह से काम कर रही है, है ना?'
वही आदमी कुछ मिनटों बाद वापस आया और बोला, 'कृपया मेरे साथ आइए। शरत बाबू का दफ्तर ऊपर है।'
हम एक संकरी सीढ़ी से ऊपर गए। मुझे हारमोनियम की हल्की धुन सुनाई दी। क्या इमारत में कहीं लोग अभ्यास कर रहे थे? भले ही उन्होंने अपनी टीम का एक महत्वपूर्ण सदस्य खो दिया हो, शो तो जारी रहना ही था।
मालिक शरत भट्टाचार्य का दफ्तर नीचे वाले कमरे से बिलकुल अलग था। यह एक बड़ा और हवादार कमरा था, जिसके एक कोने में एक बड़ी मेज थी, जिसके चारों ओर कई मजबूत कुर्सियाँ रखी थीं, दीवारों पर कलाकारों की तस्वीरें लगी थीं और मेज के सामने एक विशाल गोदरेज अलमारी रखी थी। ऊपर एक पंखा शोर मचा रहा था। मेज के पीछे बैठा व्यक्ति स्पष्ट रूप से दुकान का मालिक था। वह गंजा था, कानों के आसपास कुछ भूरे बाल बचे थे, उसकी भौहें घनी और झाड़ीदार थीं, और उसकी उम्र संभवतः पचास से पैंसठ के बीच थी।
‘आप प्रदोष मित्तर हैं?’ उसने फेलुदा की ओर देखते हुए पूछा।
‘जी हां, और ये मेरे दोस्त लालमोहन गांगुली हैं, जो क्राइम थ्रिलर लिखते हैं,’ फेलुदा ने जवाब दिया।
“ओह, आप ही तो प्रसिद्ध जटायु हैं? आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई, महोदय।” मेरे परिवार में हर कोई उनका कट्टर प्रशंसक है।
लालमोहन बाबू ने विनम्रतापूर्वक खांसा, फिर हम बैठ गए। फेलुदा ने बोलना शुरू किया।
‘इंद्रनारायण के पिता ने मुझसे अपने बेटे की हत्या की जांच करने को कहा था। इसीलिए मैं यहां हूं।’
सरत बाबू ने सिर हिलाया। ‘मैं आपको क्या बताऊं, सिवाय इसके कि उनकी मृत्यु ने मेरी कंपनी को लगभग बर्बाद कर दिया है? मैं शायद किसी से अच्छे नाटक लिखवा सकता हूं, लेकिन इंद्र बाबू जैसे गीत कोई नहीं लिख सकता। वे शानदार, बेहद खूबसूरत थे। लोग सिर्फ उनके गीत सुनने के लिए हमारे शो में आते थे।’ हमें पता चला है कि वह आपके समूह को छोड़कर किसी दूसरे समूह में शामिल होने के बारे में सोच रहा था।
‘ऐसा हो सकता है। लेकिन इसका इंद्र बाबू पर कोई असर नहीं पड़ा। वह मेरे बहुत करीब थे, वह मेरा समूह कभी नहीं छोड़ते। जब वह पहली बार मेरे पास आए थे तब उनकी उम्र सिर्फ पच्चीस साल थी। मैंने ही उन्हें पहला मौका दिया था। वह अक्सर मुझे बताते थे कि वह इसके लिए कितने आभारी हैं। लेकिन अब... मैं पंगु हो गया हूँ, मेरा समूह पंगु हो गया है।’ शरत बाबू ने अपनी आँखें पोंछने के लिए रुक गए। फिर उन्होंने आगे कहा, ‘हत्या से कुछ दिन पहले किसी ने उन पर हमला किया था। आपको पता था ना? खैर, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि इसका वास्तविक हत्या से कोई संबंध है या नहीं। आखिर इस इलाके में

छोटे-मोटे चोरों की कमी नहीं है। लेकिन अगर वे लड़के नहीं आते तो कुछ भी हो सकता था। मैं आपको इससे ज्यादा कुछ नहीं बता सकता। अगर आपको पूछताछ करनी ही है तो बिनापानी जाइए। जिसने भी यह किया है, उसने न सिर्फ इंद्र बाबू को मारा है बल्कि भरत ओपेरा को भी मार डाला है।’
हम उठे और विदाई ली। अब बिनपानी जाने का समय था। उनका दफ्तर ढूंढना ज़्यादा मुश्किल नहीं था। रिहर्सल ज़ोरों से चल रही थी। हमें कई आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जो ऊँची और भावनाओं से कांप रही थीं—हर जात्रा की यही खासियत होती है। मैनेजर को ढूंढने में हमें ज़्यादा समय नहीं लगा। फेलुदा का कार्ड देखते ही वो भड़क उठे।
‘क्या इसका संबंध बोसेपुकुर में हुई हत्या से है?’ उसने गरजते हुए पूछा। ‘हाँ,’ फेलुदा ने उत्तर दिया, ‘मुझे जाँच करने के लिए कहा गया है। मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ क्योंकि आप हत्या से ठीक पहले पीड़ित से मिले थे।’
‘पुलिस पहले ही यहाँ आ चुकी है और हज़ार सवाल पूछ चुकी है। आपको भी वही क्यों करना है? वैसे, मुझे हत्या के बारे में कुछ नहीं पता। मैं तो बस उसे एक प्रस्ताव देने गया था, जिसे उसने लगभग स्वीकार कर लिया था। मैंने उससे कहा था कि बिनपानी इतना ताकतवर और बड़ा है कि वह उसे भरत से कहीं ज़्यादा पैसे दे सकता है। मैं चाहता था कि वह हमारी कंपनी में शामिल हो जाए, श्री मित्तर। इसलिए, मैं चाहता था कि वह ज़िंदा रहे। न तो मुझे और न ही हमारी कंपनी को उसकी मौत से कोई फ़ायदा होने वाला था।’
'नहीं? क्या आप तब भी नहीं करेंगे जब इसका मतलब आपके मुख्य प्रतिद्वंद्वी को नुकसान पहुंचाना, उन्हें लगभग नष्ट कर देना हो?'
नहीं, महोदय। हम कभी भी इतनी नीच हरकत नहीं करेंगे। हाँ, हम दूसरे समूहों के कलाकारों को उन्हें छोड़कर हमारे समूह में शामिल होने के लिए मनाने की कोशिश ज़रूर करते हैं। लेकिन हम किसी प्रतिद्वंद्वी कंपनी को नुकसान पहुँचाने के लिए किसी की जान लेने के बारे में सपने में भी नहीं सोचेंगे। बिलकुल नहीं!
‘ठीक है। आपने अभी कहा कि इंद्रनारायण ने आपका प्रस्ताव लगभग स्वीकार कर लिया है। क्या आप इसे साबित कर सकते हैं?’
मैंने अपना प्रस्ताव मूल रूप से लिखित में दिया था। मैं आपको उसका भेजा हुआ जवाब दिखा सकता हूँ।
एक फाइल से एक पोस्टकार्ड निकाला गया और फेलुदा को सौंप दिया गया। इंद्रनारायण ने लिखा था, 'मैं आपके प्रस्ताव पर विचार कर रहा हूं, कृपया एक महीने में मुझसे संपर्क करें।' इसका मतलब यह था कि उन्होंने बिनापानी के प्रस्ताव को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं किया था। वे प्रस्ताव से प्रभावित हुए थे।
‘क्या उस रात आप दोनों के बीच कोई झगड़ा हुआ था?’ फेलुदा ने पूछा।
देखिए, मैंने उन्हें समझाने में कुछ समय बिताया, उन्हें यह बताने की कोशिश की कि अगर वे हमारा प्रस्ताव स्वीकार कर लें तो उनकी स्थिति कितनी बेहतर हो जाएगी। हो सकता है बोलते समय मेरी आवाज़ थोड़ी ऊंची हो गई हो, मुझे नहीं पता। मैं इसे बहस तो नहीं कहूंगा। खैर, इंद्र बाबू बहुत ही शांत स्वभाव के

व्यक्ति थे। इसीलिए उनका काम हमेशा इतना अच्छा होता था। उन्होंने मुझे बताया कि भारत ओपेरा से अपना संबंध तोड़ना उनके लिए मुश्किल था। वे उनके लिए एक नया नाटक लिख रहे थे और उसके पूरा होने तक अंतिम निर्णय नहीं ले सकते थे। उसके बाद वे मुझसे दोबारा संपर्क करेंगे। बस इतना ही। ये उनके आखिरी शब्द थे। उसके बाद मैं पौने ग्यारह बजे वहां से चला गया।
हमने श्री भौर को धन्यवाद दिया और चले गए।
चौरंगी के एक रेस्तरां में कॉफी पीते हुए थोड़ी देर बाद फेलुदा ने टिप्पणी की, 'यह मेरी सोच से कहीं ज्यादा जटिल है।'
‘आपका मतलब यह है कि अब आपको नहीं लगता कि बिनापानी ने किसी पेशेवर हत्यारे को काम पर रखा था?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
नहीं, मुझे नहीं लगता कि बिनपानी का इससे कोई लेना-देना था। लेकिन सवाल यह है कि किसने किया? कौन उसे रास्ते से हटाना चाहता था, और क्यों? ऐसा लगता है कि वह बहुत कम लोगों को जानता था, और जो लोग उसे जानते थे, वे सभी कहते हैं कि वे उसे बहुत पसंद करते थे। बेशक, श्री भौर ने जो बताया वह सच होना जरूरी नहीं है। कौन जानता है, इंद्रनारायण ने शायद उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया हो। हमारे पास केवल श्री भौर का ही बयान है कि उसने ऐसा नहीं किया। आखिर, कोई गवाह तो था ही नहीं।
'घर में मौजूद लोगों का क्या?'
जी हां, इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। कीर्तिनारायण अपने सबसे छोटे बेटे को बहुत प्यार करते थे। वास्तव में, वे उसे सबसे ज्यादा पसंद करते थे। अगर यह बात पता चल जाती कि कीर्तिनारायण ने वसीयत में अपने बाकी दो बेटों से ज्यादा इंद्रनारायण को दिया है, तो उनमें से कोई भी इंद्रनारायण को रास्ते से हटाना चाहता।
‘वाह, यह तो शानदार है!’ लालमोहन बाबू ने प्रशंसा करते हुए कहा।
नहीं, इसमें एक समस्या है। देखिए, हत्या करना इतना आसान नहीं है। कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे इंसान को तब तक नहीं मार सकता जब तक कि ऐसा करना बेहद जरूरी न हो। इस मामले में, कम से कम अभी तो हमें ऐसी किसी जरूरत का पता नहीं है जो इन दोनों भाइयों को महसूस हुई हो। इसलिए दोनों भाइयों से पूछताछ किए बिना किसी नतीजे पर न पहुंचें।’ फेलुदा ने बोलना बंद कर दिया, लेकिन उनके चेहरे पर अभी भी शिकन थी।
मैंने पूछा, ‘अब तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है?’
‘दूसरा भाई, हरिनारायण।’
'उसकी क्या खबर है?'
उन्हें संगीत, खासकर पश्चिमी शास्त्रीय संगीत बहुत पसंद है। मुझे इसके बारे में बहुत कम जानकारी है, इसलिए मैं नुकसान में रह जाऊंगी, है ना? मैं उनसे उस विषय के बारे में कैसे पूछ सकती हूं जिसके बारे में मुझे खुद लगभग कुछ भी नहीं पता?
बस इतना ही? फेलू बाबू, मैं आपकी मदद कर सकता हूँ। मेरे पास पश्चिमी संगीत का एक विश्वकोश है; सिर्फ एक खंड, सात सौ पचास पृष्ठ। आपको इससे सारी जानकारी मिल जाएगी।
'सच में? आप इस तरह के विश्वकोश से क्या कर रहे हैं?'

‘यह एक सेट का हिस्सा है। इसमें विज्ञान, चिकित्सा, इतिहास और कला सहित कई अन्य खंड भी शामिल हैं।’
'अच्छा। क्या आप मुझे आज किसी समय वह वॉल्यूम दे सकते हैं?'
'बिल्कुल, कोई समस्या नहीं। आपके लिए, महोदय, किसी भी समय।'
'धन्यवाद।'
हम रेस्टोरेंट से निकले और सीधे लालमोहन बाबू के घर गए। फेलुदा ने अपनी किताब ली और हम टैक्सी से वापस आ गए।
इसके बाद, दिन भर फेलुदा से बात करना नामुमकिन हो गया। वह विश्वकोश को कसकर पकड़े हुए अपने कमरे में चला गया और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर लिया।

छह
हम शनिवार की सुबह दस बजे बोसेपुकुर लौटे। सबसे पहले हमारी मुलाकात हरिनारायण की बेटी लीना से हुई। उसने सुना था कि एक निजी जासूस को नियुक्त किया गया है और वह हमसे बात करने के लिए उत्सुक थी। पता चला कि वह भी फेलुदा की प्रशंसक थी, इसलिए उससे बात करना आसान हो गया।
‘तुम्हारे चाचा तुम्हें बहुत पसंद करते थे, है ना?’ फेलुदा ने पूछा। ‘हाँ, लेकिन बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी। हम दोस्तों जैसे थे। वो मुझे अपनी लिखी हर बात पढ़कर सुनाते थे और मेरी राय पूछते थे। अगर मुझे कुछ बदलना होता, या कुछ ठीक नहीं लगता, तो मैं कह देता; और चाचा उसे बदल देते थे।’
‘गानों के बारे में क्या?’
‘वो भी। मैं हमेशा नया गाना सुनने वाला पहला व्यक्ति होता था।’
क्या आपको संगीत पसंद है?
मैं पियानो बजाना सीख रहा हूँ।
‘पश्चिमी संगीत?’
'हां, लेकिन मुझे भारतीय संगीत भी पसंद है। मुझे अपने चाचा का संगीत बहुत पसंद था। मैं थोड़ा-बहुत गा भी सकती हूं।'
‘क्या आपके चाचा ने कभी आपको बताया था कि वह भारत ओपेरा छोड़ने के बारे में सोच रहे हैं?’
‘मुझे पता था कि बिनापानी ने उन्हें बहुत सारा पैसा देने की पेशकश की थी। लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह भारत छोड़ देते। वह अक्सर मुझसे कहते थे कि उनकी जड़ें भारत से जुड़ी हैं। अगर वह उन्हें उखाड़ देते, तो वह कहीं और नहीं रह सकते थे।’
‘वह एक नया नाटक लिख रहे थे। क्या आपको इसके बारे में पता था?’
“हां, उन्होंने और भी कई नाटक लिखे थे। मुझे नहीं लगता कि उनके बारे में किसी को पता है। सम्राट अशोक अभी पूरा नहीं हुआ था। ये सभी नाटक पूरे हो चुके हैं, लेकिन इनमें से किसी का भी मंचन नहीं हुआ है। इसके अलावा, कम से कम बीस नए गाने होंगे जिनका इस्तेमाल नहीं हुआ है। और भी नाटकों के कच्चे मसौदे... आप जानते हैं, बस विचार लिखे हुए, रूपरेखा तैयार की हुई। ऐसे दस या बारह हो सकते हैं।”
हम श्री मल्लिक के कमरे में लीना से बात कर रहे थे, जो पुस्तकालय के बगल में था। हमारे आने पर उन्होंने हमें बताया था कि उनका शोध कार्य अब पूरा हो चुका है और वे अपनी पुस्तक लिखने के लिए सेरामपुर स्थित अपने घर लौट रहे हैं।
'लेकिन आपको पता है ना, कि जब तक यह सारा मामला सुलझ नहीं जाता, आप इस घर से बाहर नहीं जा सकते?' फेलुदा ने उससे पूछा।
'हां, पुलिस ने यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी थी।'

‘अगर आप चले गए तो कीर्तिनारायण के सचिव के रूप में कौन काम करेगा?’
मैं अपनी जगह किसी और को रख लूंगा, इसमें कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। एक बार जब मैं उस जीवनी को लिखने में व्यस्त हो जाऊंगा, तो मेरे पास किसी और चीज के लिए समय नहीं बचेगा।'
फेलुदा उठकर इधर-उधर घूमने लगा, कमरे का जायज़ा लेता हुआ और बीच-बीच में बाहर झाँककर देखता कि वहाँ से और क्या-क्या दिखाई देता है। मैंने भी उसकी नज़र का पीछा किया और पाया कि वहाँ से इंद्रनारायण के अध्ययन कक्ष का दरवाज़ा दिखाई दे रहा था। लेकिन पुस्तकालय से न तो उसका अध्ययन कक्ष और न ही उसका शयनकक्ष दिखाई दे रहा था। श्री मल्लिक के कमरे की एक और खिड़की से घर के पीछे वाली गली दिखाई दे रही थी। मुझे याद आया, उसका नाम जोडू नस्कर लेन था।
फेलुदा ने अपने सवाल खत्म कर लिए थे। लीना ने पहले ही अपने पिता को हमारे बारे में बता दिया था। अब वह हमें उनसे पहली मंजिल पर बने बैठक कक्ष में मिलवाने ले गई। कमरा काफी बड़ा था, सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ था और उसमें प्राचीन वस्तुएं और अनोखी सजावट की चीजें थीं। एक शेल्फ पर रिकॉर्ड और कैसेट बजाने के लिए हाई-फाई उपकरण रखे थे, जिनके दोनों ओर दो स्टीरियो स्पीकर थे।
पिता और पुत्री में काफी समानता थी। हरिनारायण दिखने में सुंदर थे और परिवार के अन्य पुरुषों की तरह उनका रंग भी बहुत गोरा था। लेकिन वे बाकी लोगों की तुलना में अधिक लंबे और मोटे प्रतीत होते थे।
‘मैंने आप दोनों के बारे में सुना है,’ उसने फेलुदा और लालमोहन बाबू की ओर देखते हुए कहा। ‘मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?’
फेलुदा सीधे मुद्दे पर नहीं आए। उन्होंने एक तरफ रखे रिकॉर्ड और कैसेटों को देखते हुए कहा, 'आपके पास काफी अच्छा संग्रह है।'
'हां, मुझे पश्चिमी शास्त्रीय संगीत पसंद है। भारतीय संगीत मुझे आकर्षित नहीं करता।'
आपका पसंदीदा संगीतकार कौन है?
मुझे त्चाइकोवस्की बहुत पसंद है; और शुमान, ब्रह्म्स और चोपिन भी।
‘इसका मतलब है कि आप अन्य सभी युगों की तुलना में रोमांटिक युग को अधिक पसंद करते हैं।’
'हां, आप ऐसा कह सकते हैं।'
‘तुम्हारा छोटा भाई वायलिन बजाता था। लेकिन उसे पश्चिमी संगीत में कोई दिलचस्पी नहीं थी, है ना?’
नहीं। वह बहुत अलग थे। मैंने सुना है कि उनमें बहुत प्रतिभा थी, लेकिन मुझे कभी जात्रा में जाने का मन नहीं हुआ। मेरी पत्नी और मेरी बेटी कुछ बार गई थीं।
क्या आपके भाई की हत्या के संबंध में आपका अपना कोई सिद्धांत है? ‘सिद्धांत? खैर, मुझे लगता है कि उसकी मौत उसकी संगत की वजह से हुई। जात्रा कंपनियों में काम करने वाले लोग अक्सर... खैर, वे हमेशा पढ़े-लिखे और अच्छे परिवार से नहीं होते, है ना? कौन जाने इंद्र किसके साथ शामिल था? हो सकता है उसका अपने किसी साथी से झगड़ा हो गया हो। यह कहना असंभव है कि क्या हुआ

होगा। चूंकि उसके कमरे से कोई कीमती चीज चोरी नहीं हुई, इसलिए केवल यही अनुमान लगाया जा सकता है कि मकसद बदला था। अगर आपको पूछताछ करनी ही है, तो जाकर उन लोगों से बात कीजिए जिनके साथ वह मेलजोल रखता था। मुझे नहीं लगता कि आप हममें से किसी से कुछ खास जानकारी हासिल कर पाएंगे।’
क्या आपके बड़े भाई ने पुलिस को सूचना दी थी?
हां, लेकिन मैं उनसे पूरी तरह सहमत थी। हत्या होने पर यही करना स्वाभाविक है, है ना? कितने लोग पुलिस के पास जाए बिना किसी निजी जासूस को बुलाएंगे? मुझे पता है मेरे पिता भी यही चाहते थे, लेकिन वो हमेशा से थोड़े सनकी रहे हैं। भगवान ही जाने उन्होंने वकील के तौर पर काम कैसे संभाला होगा।
‘वह इंद्रनारायण को बहुत पसंद करते थे, है ना?’
‘यह उनके विलक्षण व्यवहार का एक और उदाहरण है। उन्हें कोई भी पारंपरिक चीज़ पसंद नहीं है, न ही कोई ऐसा व्यक्ति जो स्वीकृत मानदंडों का पालन करता हो। इस मामले में वे हमारे पूर्वज कंदर्पनारायण से काफी मिलते-जुलते हैं।’ फेलुदा ने उनसे और कुछ नहीं पूछा। उन्होंने धन्यवाद कहा और हम उठ खड़े हुए। यह स्पष्ट था कि हरिनारायण आचार्य हमें कोई उपयोगी बात नहीं बताने वाले थे।
आचार्य भाइयों में सबसे बड़े देव नारायण पश्चिम की ओर मुख वाले बरामदे में बेंत की कुर्सी पर बैठे थे। उनके सामने एक मेज थी जिस पर ठंडी बीयर रखी थी। अभिवादन के बाद उन्होंने हमें बीयर की पेशकश की, लेकिन हमने मना कर दिया। ‘क्या निजी जासूस नियुक्त करने का विचार मेरे पिता का था?’ उसने पूछा। ‘हाँ,’ फेलुदा हँसते हुए बोला, ‘मेरी क्षमताओं पर किसी और को भरोसा नहीं है।’
‘एक निजी जासूस उपन्यास या फिल्म में तो ठीक है। लेकिन यह वास्तविक जीवन है।’
ये शब्द रूखे स्वर में बोले गए थे। मैंने शायद ही कभी किसी आदमी को इतना गंभीर देखा हो।
‘आप मुझसे इंद्र के बारे में पूछने आए हैं, है ना?’ उन्होंने आगे कहा। ‘अच्छा, मैं क्या कहूँ? मेरी नज़र में, वह हमारे परिवार का बिगड़ा हुआ बच्चा था। उसने हमें बहुत बदनाम किया। हम अपने दोस्तों के बीच हंसी का पात्र बन गए थे। मेरे क्लब के लोग मेरे पास आकर पूछते थे कि इंद्र अपनी जात्रा कंपनी में कैसा कर रहा है, उसने कितने गाने लिखे हैं, क्या वे लोकप्रिय हैं, क्या वह अभी भी वायलिन बजाता है... और मुझे समझ नहीं आता था कि मैं क्या कहूँ। यह बहुत शर्मनाक था। और फिर यह भयानक घटना घट गई। किसने सपने में भी सोचा होगा कि मेरे अपने भाई के साथ ऐसा कुछ होगा? लेकिन मैं कहूँगा कि उसने खुद ही यह सब किया। सच कहूँ तो, मुझे उसके लिए ज़रा भी सहानुभूति नहीं है। और मैं आपको बता दूँ, श्री मित्तर, मैं आपसे भी कुछ खास प्रभावित नहीं हूँ। यह स्पष्ट है कि किसी जात्रा कंपनी ने एक हत्यारे को किराए पर लिया और उसे हमारे घर में घुसकर मेरे भाई की हत्या करने के लिए भेजा। उसे पकड़ने की कोशिश कीजिए। आप यहाँ अपना समय क्यों बर्बाद कर रहे हैं? ध्यान रहे, जात्रा से जुड़ा कोई भी व्यक्ति संभावित अपराधी हो सकता है।’ आपको शायद भूसे के ढेर में सुई ढूंढने जैसा अनुभव हो सकता है।

आगे कुछ भी पूछने का कोई फायदा नहीं था। हमने देव नारायण को अलविदा कहा और नीचे आ गए। फेलुदा ने श्री मल्लिक की ओर रुख किया।
उन्होंने कहा, 'एक चीज़ है जिसे देखने का मेरा बहुत मन कर रहा है। मेरा मतलब है, कंदरपनारायण ने इंग्लैंड में रहते हुए जो डायरियाँ लिखी थीं। कितनी डायरियाँ हैं?'
‘दो। उन्होंने वहां एक साल बिताया।’
क्या मैं इन दोनों को कुछ दिनों के लिए उधार ले सकता हूँ?
'निश्चित रूप से।'
श्री मल्लिक ने डायरियाँ लीं और उन्हें फेलुदा को दे दिया। फेलुदा ने उन्हें अपने कंधे के थैले में रखते हुए कहा, 'बहुत-बहुत धन्यवाद।' फिर हम घर वापस आ गए।

सात
‘फेलू बाबू, आपको चीज़ें कैसे पता चलती हैं? आपने क्या निष्कर्ष निकाले हैं?’ लालमोहन बाबू ने दालमुट का एक बड़ा हिस्सा उठाते हुए पूछा। हम लगभग पंद्रह मिनट पहले बोसपुकुर से लौटे थे, और श्रीनाथ अभी-अभी हम सबके लिए चाय और दालमुट लेकर आए थे।
फेलुदा ने चारमीनार जलाई। ‘यह बात स्पष्ट हो गई है कि यह सिर्फ एक जात्रा कंपनी द्वारा दूसरी जात्रा कंपनी को नुकसान पहुंचाने का मामला नहीं है। इसमें और भी बहुत कुछ है। हम दोनों भाइयों को दोषमुक्त नहीं कर सकते, हालांकि हमें उनके बारे में सिर्फ इतना पता चला है कि दोनों में से किसी को भी इंद्रनारायण की परवाह नहीं थी। अगर उनमें से किसी एक को पैसों की जरूरत थी, तो उसके पास हत्या करने का मकसद हो सकता था। अगर उनके पिता ने वसीयत बनाई है, तो अब उन्हें उसे बदलना होगा। स्वाभाविक रूप से, बचे हुए दोनों भाइयों को अब पहले से कहीं ज्यादा मिलेगा।’
मुझे देव नारायण पसंद नहीं आया। क्या आपने कभी किसी को इतना ठंडा और अमित्र देखा है?
‘हमें किसी के घर में एक मुलाकात के आधार पर ही उसका आकलन नहीं कर लेना चाहिए। मैं दोनों भाइयों को उनके क्लबों में देखना चाहूंगा। कम से कम, मैं यह जानना चाहता हूं कि वे वहां क्या करते हैं।’
‘आप इसे कैसे संभालेंगे?’
‘आसान है। मेरे दो पुराने सहपाठी इसके सदस्य हैं। वे मुझे बता पाएंगे। शनिवार क्लब में जाने वाले का नाम भास्कर देब है। दूसरा बंगाल क्लब का सदस्य है। उसका नाम अनिमेष सोम है।’
मैंने इन क्लबों के बारे में सिर्फ सुना है। मैं कभी इनमें से किसी के अंदर नहीं गया।
‘लालमोहन बाबू, आपको वहां कुछ भी ऐसा नहीं मिलेगा जो आपका मनोरंजन करे या आपको रुचिकर लगे। आप शराब नहीं पीते, ताश या बिलियर्ड्स नहीं खेलते, है ना? आप किसी क्लब में क्या करेंगे?’
'जी हां, यह बिल्कुल सच है।'
फेलुदा उठ खड़ा हुआ और काम पर लग गया, हालाँकि अनिमेष सोम से बात करने में सात बार कोशिश करनी पड़ी। कुछ मिनट की बातचीत के बाद उसने फोन रख दिया और हमें बताया कि उसके दोस्त ने क्या कहा था। पता चला कि देवनारायण नियमित रूप से अपने क्लब जाता था और अपना ज़्यादातर समय शराब पीने में बिताता था। उसे न तो खेल खेलने में और न ही लोगों से मिलने में कोई दिलचस्पी थी। लेकिन वह लंदन से आने वाले सभी अखबार पढ़ता था। और अफवाह थी कि उसके दफ्तर में मज़दूरों का असंतोष फैला हुआ है। मज़दूर किसी भी दिन हड़ताल पर जा सकते हैं।

फेलुदा ने दोबारा फोन उठाया और भास्कर देब को फोन किया। इस बार फोन तुरंत लग गया। उनकी बातचीत कुछ इस प्रकार रही:
‘It that Bhaskar? This is Felu, Pradosh Mitter.’
आप सैटरडे क्लब के सदस्य हैं, है ना?
'क्या आप मुझे अपने एक सदस्य, हरिनारायण आचार्य के बारे में कुछ बता सकते हैं?'
'जी हां, वही है जिसके भाई की हत्या हुई थी। हरिनारायण किस तरह का आदमी है? आप उसे जरूर जानते होंगे।'
‘क्या? एक जुआरी? पोकर खेलता है, वो भी बड़ी रकम लगाकर? क्या तुमने कभी उसके साथ खेला है? उसे ये आदत अपने परदादा से मिली होगी।’
‘कर्ज में डूबे हैं? और वो कर्ज हर दिन बढ़ता जा रहा है? वो इसे क्यों नहीं रोकते? हे भगवान, अगर... खैर, बहुत-बहुत धन्यवाद, आपने बहुत मदद की। मुझे जांच करने के लिए कहा गया है, इसलिए मैंने सोचा कि कुछ जानकारी जुटा लूं। फिर से धन्यवाद और अलविदा।’ फेलुदा ने रिसीवर रख दिया। ‘ज़रा सोचिए!’ उन्होंने हमसे कहा, ‘हरिनारायण आचार्य कर्ज में पूरी तरह डूबे हुए हैं, लेकिन किसी को पता नहीं चलता। सच में बड़े ही शातिर आदमी हैं। लेकिन क्या वो इसके लिए अपने ही भाई को मार डालेंगे? क्या वो कहीं से धन चुराने या गबन करने की कोशिश नहीं करेंगे?’
‘फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने उत्तेजित होकर कहा, मानो उन्हें अचानक कोई नया विचार आ गया हो, ‘यह मामला और भी पेचीदा होता जा रहा है। अगर उसने अपने पिता की वसीयत में बड़ा हिस्सा पाने के लिए हत्या की है, तो जाहिर है उसे अपने पिता की मृत्यु तक इंतजार करना पड़ेगा। तो... इसका मतलब है कि अब कीर्तिनारायण की जान खतरे में है!’
‘लालमोहन बाबू, आप इसमें काफी माहिर होते जा रहे हैं। हां, आपने अभी जो कहा वह सच हो सकता है।’
‘ऐसे में, क्या हमें कीर्तिनारायण को चेतावनी नहीं देनी चाहिए?’
‘देखो, लालमोहन बाबू,’ फेलुदा ने अपनी कुर्सी पास खींचते हुए कहा, ‘मैंने यह पहले भी कहा है, और फिर कह रहा हूँ। हत्या आसान नहीं होती। एक पुलिस कांस्टेबल रोज़ उस घर की रखवाली कर रहा है। सबको पता है कि पीड़ित कीर्तिनारायण का लाडला था। अब अगर कीर्तिनारायण की हत्या हो जाती है, तो शक तुरंत दोनों भाइयों पर जाएगा। कोई भी बच नहीं पाएगा। पुलिस तो अपना काम करेगी ही, लेकिन मैं भी करूँगा। दोनों भाई बड़ी मुसीबत में पड़ जाएँगे, और वे यह जानते हैं। इसके अलावा, कीर्तिनारायण बूढ़े और बीमार हैं। वैसे भी उनकी उम्र ज़्यादा नहीं है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि उन्हें जान से मारने का कोई तत्काल खतरा है। हमें वह बात याद रखनी है जो भास्कर ने अभी हरिनारायण के बारे में बताई। घर पर उनका व्यवहार इतना सामान्य था कि मुझे नहीं लगता कि कोई कभी अंदाज़ा लगा सकता था कि वे असल में क्या कर रहे थे। मैं सोचता था कि संगीत प्रेमी लोग हमेशा शांत और सीधे-सादे होते हैं। लेकिन यह आदमी... खैर, ज़ाहिर है मैं गलत था। यह अजीब है!’
‘अगर मुझसे पूछो तो वो पूरा परिवार ही अजीब है,’ लालमोहन बाबू ने कुछ चिड़चिड़ाते हुए कहा और बीच वाली मेज से स्टेट्समैन अखबार उठा लिया।

फेलुदा उन्हें देखता रहा, फिर अचानक अखबार के पिछले पन्ने पर कुछ नज़र पड़ी। उसने लालमोहन बाबू से अखबार छीन लिया और पूरा पन्ना ध्यान से पढ़ा। फिर उसने अखबार नीचे रख दिया और बोला, ‘समझ में आ गया।’ एक मिनट बाद उसने कहा, ‘अब समझ में आया।’ तीस सेकंड बाद उसने फिर कहा, ‘अब सब साफ़ हो गया।’ लालमोहन बाबू का धैर्य टूट गया। उन्होंने पूछा, 'क्या स्पष्ट है?' लालमोहन बाबू ने जवाब दिया, 'मेरे मित्र, यह तो मुझे बिल्कुल स्पष्ट है कि मेरा ज्ञान दुर्भाग्यवश सीमित है। मुझे अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है।'
मुझे समझ आ गया था कि फेलुदा जानबूझकर रहस्य पैदा करने और हमें गुमराह करने की कोशिश कर रहा था। कुछ क्षण बाद जब उसने अचानक कहा, 'आज हम एक नया अनुभव करने वाले हैं,' तब मैं जान गया कि यह एक सोची-समझी योजना का हिस्सा था।
‘आपका क्या मतलब है?’ लालमोहन बाबू ने मासूमियत से पूछा।
हम रेस देखने जा रहे हैं।
‘क्या! दौड़? क्यों?’
‘मैं कई सालों से ऐसा करना चाहता था। आज शाम हम खाली हैं, तो चलिए चलते हैं। ज़रा सोचिए, यह असाधारण आयोजन हर शनिवार हमारे ही शहर में होता है, फिर भी हमने कभी इसे होते हुए नहीं देखा। अब समय आ गया है कि हम इसे देखें। जीवन में हर चीज़ का अनुभव कम से कम एक बार तो ज़रूर करना चाहिए।’
‘वाह, फेलू बाबू!’ लालमोहन बाबू की आवाज़ में दबी हुई उत्तेजना थी। ‘मैंने भी कई बार रेस देखने जाने का सोचा है। लेकिन मैं इसलिए नहीं गया क्योंकि मुझे डर था कि कोई परिचित मुझे देख लेगा और फिर मुझे जुआरी के रूप में बदनामी मिलेगी।’
ऐसा नहीं होगा।
'आप इतने निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं?'
हम सभी भेस बदल लेंगे।
लालमोहन बाबू उछल पड़े। 'वाह, क्या बढ़िया विचार है! क्या आप मुझे फ्रेंच दाढ़ी दे सकते हैं?'
'हां, यह आपके लिए उपयुक्त रहेगा।'
'महान।'
फेलुदा भेस बदलने में हमेशा माहिर था, लेकिन अब तक हमने उसे मेकअप करते हुए सिर्फ खुद पर ही देखा था। आज जब उसने हम पर मेकअप पूरा किया, तो आईने में अपनी परछाई देखकर हम चौंक गए। लालमोहन बाबू की दाढ़ी और लंबे लहराते बाल थे; मेरी मूंछें और बिखरी हुई दाढ़ी थी। मेरे बाल बढ़े हुए और बेतरतीब लग रहे थे। फेलुदा की खुद की घनी, फौजी स्टाइल की मूंछें थीं और उसने विग पहन रखी थी जिससे उसके बाल बहुत छोटे कटे हुए लग रहे थे। यहां तक कि किसी करीबी दोस्त के लिए भी हममें से किसी को पहचानना मुश्किल होता।
जल्द ही हम रेस कोर्स पहुँच गए। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं वहाँ होऊँगा। अगर कहीं करोड़पति और सड़क के भिखारियों के बीच कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते थे, तो वो यही जगह थी। कलकत्ता में कहीं और कोई इस तरह का नज़ारा देखने की उम्मीद भी नहीं कर सकता था।

रेस अभी शुरू नहीं हुई थी। हमने भीड़ में घूमने का मौका उठाया। एक बड़ा इलाका बाड़ से घेर दिया गया था और सभी घोड़ों को उसमें घुमाया जा रहा था। फेलुदा ने मुझे बताया कि इस जगह को 'पैडॉक' कहते हैं। दूर एक इमारत थी जिसमें खिड़कियों की कतारें ही कतारें थीं। सारी शर्तें इन्हीं खिड़कियों से लगाई जा रही थीं। बाकी सब लोगों की तरह हमने भी छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ खरीदी थीं। लालमोहन बाबू अपनी एक्टिंग को और भी असली दिखाने के लिए बड़ी एकाग्रता से उसके पन्ने पलट रहे थे।
हमने रेस कोर्स पर लगभग आधा घंटा बिताया। पहली रेस जल्दी ही शुरू हो गई। हमने घोड़ों को दौड़ते देखा और भीड़ को उन घोड़ों के लिए बेताब होकर पुकारते सुना जिन पर उन्होंने पैसे लगाए थे; और फिर अचानक फेलुदा ने कहा, 'हमारा मकसद पूरा हो गया है, तो अब और क्यों परेशान हों? चलो वापस चलते हैं।'
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि इससे क्या मकसद पूरा हुआ, लेकिन मुझे पता था कि अगर मैं पूछूंगा भी तो फेलुदा मुझे नहीं बताएगा। इसलिए बिना कुछ और कहे, हम बाहर आए, लालमोहन बाबू की कार ढूंढी और उसमें वापस बैठ गए।

आठ
इंस्पेक्टर मोनिलाल पोद्दार ने रविवार को हमें फोन किया। उन्होंने फेलुदा से पूछा, 'क्या आपने कोई प्रगति की है?'
नहीं। मैं उस घर में रहने वाले लोगों को जानने की कोशिश कर रहा हूँ, जिसके बिना मैं ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाऊँगा। यह काफी जटिल मामला है। इंस्पेक्टर पोद्दार ने हमें जो बताया, उससे ऐसा प्रतीत हुआ कि आचार्य के घर में चोरी होने का खतरा अभी भी बहुत अधिक था। चूंकि यह ज्ञात था कि उनके पास अभी भी बड़ी संख्या में नए और मौलिक नाटक और गीत मौजूद थे, इसलिए यह पूरी संभावना थी कि जिसने भी इंद्रनारायण की हत्या करवाई थी, वह उनकी रचनाएँ भी चुराने का प्रयास करेगा। बोसपुकुर में एक ऐसा इलाका था जहाँ कुख्यात बदमाश रहते थे। इंस्पेक्टर का मानना था कि सामान ले जाने वाला संतोष इन लोगों के साथ मिला हुआ था और शायद घर में सेंध लगाने में उनकी मदद कर सकता था।
‘क्या घर के पीछे वाली उस छोटी सी गली पर नज़र रखी जा रही है?’ फेलुदा ने पूछा। ‘तुम्हारा मतलब जोडू नस्कर लेन से है? ओह हाँ।’
‘क्या आपको लगता है कि आप अपने आदमियों से सिर्फ एक रात के लिए वापस जाने के लिए कह सकते हैं?’
ताकि संभावित चोर को चोरी करने का लालच हो?
'बिल्कुल।'
'बहुत अच्छा। बस मुझे बता दीजिए कि आप कब चाहते हैं कि मैं अपने आदमियों को हटा दूं, और मैं ऐसा कर दूंगा।'
श्री पोद्दार ने फोन रख दिया। सुबह के साढ़े सात बज रहे थे। कुछ ही मिनटों बाद फोन फिर बजा। इस बार प्रद्युम्न मल्लिक का फोन था। उन्होंने हांफते हुए कहा, 'मैं आधे घंटे से आपका नंबर डायल कर रहा था! कुछ भयानक घटना घटी है। कल रात, लगभग आधी रात को, एक चोर इंद्रनारायण के अध्ययन कक्ष में घुस गया। किसी नौकर ने उसे अंदर घुसने में मदद की होगी क्योंकि पीछे के द्वार पर पहरा दे रहे कांस्टेबल ने उसे देखा तक नहीं। मैंने शोर सुना और देखने के लिए अपने कमरे से बाहर आया। इस पर वह आदमी भागने लगा। मैं उसके पीछे भागा और उसे पकड़ने में कामयाब भी हो गया, लेकिन उसने मुझे इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि मैं गिर गया और मेरे घुटने में चोट लग गई। वह भाग गया, और अब मैं लंगड़ाकर चल रहा हूँ!'
फेलुदा ने फोन नीचे रख दिया।
उन्होंने मुझसे कहा, ‘ऐसा लगता है कि हत्या के पीछे मुख्य मकसद इंद्रनारायण की रचनाएँ चुराना था। अगर किसी लेखक के गीत इतने लोकप्रिय हों और यह बात पता चल जाए कि उन्होंने पाँच नए नाटक और लगभग बीस अप्रकाशित गीत छोड़े हैं, तो ज़ाहिर है कि सभी जात्रा कंपनियाँ इन्हें हासिल करना

चाहेंगी। सच तो यह है कि सब कुछ भरत ओपेरा को मिलना चाहिए। लेकिन, ज़ाहिर है, उनके प्रतिद्वंद्वी यह सुनिश्चित करना चाहेंगे कि उन्हें कुछ भी न मिले।’
लेकिन,’ मैंने कहने की हिम्मत की, ‘इंद्रनारायण ने खुद इन गीतों और नाटकों के बारे में न बताया होता तो किसी को इनके बारे में कैसे पता चलता? शायद वो भरत ओपेरा के प्रति उतने वफादार नहीं थे जितना लोग सोचते हैं। शायद उन्होंने किसी दूसरे समूह में शामिल होने का मन बना लिया था।’
‘तो फिर, उसकी हत्या किसने की? और क्यों?’
'शायद उसने बिनापानी को वचन दिया था, और इसलिए एक तीसरे समूह ने हस्तक्षेप करने और उसे पूरी तरह से हटाने का फैसला किया।'
फेलुदा ने चुपचाप सिर हिलाया। ज़ाहिर है, उसने इस संभावना के बारे में पहले ही सोच लिया था, लेकिन समाधान खोजने के करीब भी नहीं था। उसने अपनी मशहूर नीली नोटबुक निकाली और उसमें कुछ लिखने लगा। अब वह क्या सोच रहा था? वह इतना गंभीर क्यों दिख रहा था? मैं बस समझ नहीं पा रहा था।
लालमोहन बाबू हमेशा की तरह नौ बजे पहुंचे।
‘क्या मैं आपका विश्वकोश कुछ और दिनों के लिए अपने पास रख सकता हूँ?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
'बिल्कुल। आप इसे दो महीने तक रख सकते हैं, मुझे कोई आपत्ति नहीं है।' ‘धन्यवाद। मैंने इससे धुन, सामंजस्य, बहुस्वरता और प्रतिध्वनि के बारे में बहुत कुछ सीखा है। संगीत के इतिहास में भी रहस्य और अनसुलझे अपराध रहे हैं। मोजार्ट को कथित तौर पर सैलियरी नामक एक अन्य संगीतकार ने जहर देकर मार डाला था। लेकिन कोई भी कभी भी इस मामले की तह तक नहीं पहुंच पाया।’ ‘ठीक है। आज के लिए आपकी क्या योजना है?’
‘आपको ताज़ा खबर नहीं मिली है। कल रात कोई इंद्रनारायण के अध्ययन कक्ष में घुस गया था, लेकिन श्री मल्लिक की कृपा से वह कुछ भी नहीं चुरा सका। मुझे लगता है कि आज रात उस घर पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए।’
'आज रात?'
'हां, लगभग साढ़े ग्यारह बजे के आसपास।'
'कैसे?'
‘वह पीछे वाली गली याद है? घर का पिछला दरवाजा उसी में खुलता है। हम फुटपाथ पर बैठकर उस दरवाजे पर नजर रख सकते थे।’
'फुटपाथ पर बैठें? अगर लोग आधी रात को तीन सज्जनों को फुटपाथ पर बैठे हुए देखेंगे तो क्या सोचेंगे? यह निश्चित रूप से संदिग्ध लगेगा।'
‘नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्योंकि वे तीनों आदमी बिल्कुल भी सज्जन नहीं दिखेंगे।’ मेरा दिल अचानक उछल पड़ा। क्या फेलुदा फिर से भेस बदलने की बात कर रहा था? किस तरह का भेस? फेलुदा ने मेरे पूछने से पहले ही जवाब दे दिया। ‘क्या आपने कभी ताश खेला है?’ उन्होंने लालमोहन बाबू से पूछा। ‘ताश? हाँ, बिल्कुल। मैंने बचपन में खेला है, साधारण खेल...’
ठीक है, बस इतना ही जानना काफी है। आप क्लब और स्पेड, डायमंड और हार्ट्स में फर्क नहीं करेंगे, है ना?
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।

ठीक है। हम उड़िया रसोइयों का वेश धारण करेंगे और “ट्वेंटी-नाइन” खेलेंगे। हमें आपके ड्राइवर हरिपाड़ा को भी शामिल करना होगा। मैं हमारे परिधान और मेकअप का इंतजाम कर दूँगा। जब तक बहुत ज़रूरी न हो, अपना मुँह मत खोलना। और अगर खोलना भी पड़े, तो उड़िया लहजे में बोलना याद रखना।
'ठीक है।'
लालमोहन बाबू की आँखों में एक नई चमक आ गई। मैं भी बहुत उत्साहित हो गया। मामला वाकई पेचीदा होने लगा था। लालमोहन बाबू बारह बजे चले गए, और सात बजे वापस आकर हमारे साथ खाना खाने का वादा किया। फिर हम तैयार होकर ग्यारह बजे जोडू नस्कर लेन चले जाते। वह जगह हम सबको शांत और सुकून भरी लगी थी। हम एक लैंपपोस्ट के नीचे बैठकर खेलना शुरू करते। हरिपाड़ा ने शाम को ताश के पत्तों का एक पैकेट और एक पुरानी सूती चादर लाने की पेशकश की। जाने से पहले लालमोहन बाबू को 'ट्वेंटी-नाइन' के बुनियादी नियम सिखाने होंगे।
एकमात्र व्यक्ति जो जरा भी उत्साहित नहीं दिख रहा था, वह था फेलुदा। उसने पूरा दिन संगीत विश्वकोश पढ़ने में बिताया, जबकि मैंने खुद को चुपचाप बैठने और पत्रिका के पन्ने पलटने के लिए मजबूर किया।
लालमोहन बाबू अपने ड्राइवर के साथ ठीक सात बजे आ गए। इस बार हमें सादे कपड़े पहनने थे, इसलिए भेस बदलने में बहुत कम समय लगा और हम साढ़े दस बजे तक तैयार हो गए। फेलुदा ने पानी की बाल्टी में चाय की पत्तियों का एक पैकेट डाला और फिर उसमें चार सफेद धोती भिगो दीं। सूखने पर वे सिकुड़ी हुई और गंदी लग रही थीं। हमने उन्हें पहना और अपने कंधों पर सूती शॉल लपेट लीं। हरिपाड़ा ताश और शीट लाना नहीं भूले थे। लालमोहन बाबू को खेल खेलना सिखाया गया और उन्हें दो-तीन बार अभ्यास करने की अनुमति दी गई। जब हम रवाना हुए, तो मैंने उन्हें धीरे से बुदबुदाते हुए सुना, 'जैक-ऐस-दस-किंग-क्वीन-आठ-सात।'
हमने अपनी कार मुख्य सड़क के एक अंधेरे कोने में खड़ी की और जोडू नस्कर लेन की ओर चल दिए। वहाँ कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। फेलुदा के कहने पर श्री पोद्दार ने ड्यूटी पर तैनात कांस्टेबल को हटा दिया था। आचार्यों का घर फैला हुआ था। जिस कमरे से यह गली दिखाई देती थी, उसी में पुस्तकालय और श्री मल्लिक का कमरा था। पिछला दरवाज़ा बिल्कुल आखिरी छोर पर था, जहाँ कमरे खत्म होते थे। वह बंद था। पुस्तकालय और श्री मल्लिक के कमरे दोनों में बत्तियाँ जल रही थीं, लेकिन यह बताना नामुमकिन था कि वे किस कमरे में होंगे।
हमने एक लैंपपोस्ट के नीचे चादर बिछाई और खेलना शुरू कर दिया। फेलुदा ने अपनी शॉल के नीचे से पान का एक पैकेट निकाला और सबको बाँट दिया।
'अपना पान मुंह के अंदर ही रखो, और थूकना मत,' उसने लालमोहन बाबू की ओर देखते हुए फुसफुसाकर कहा।
एक घड़ी—संभवतः बड़े घर में लगी पुरानी घड़ी—में ग्यारह बज गए। लालमोहन बाबू ने 'उन्नीस' कहकर पुकारा। वह फेलुदा का साथी था। फेलुदा ने बीड़ियों का एक पैकेट निकाला, एक बीड़ी हरिपाड़ा को दी और एक खुद जलाई। गली के अंत में एक रिक्शावाले के अलावा अभी भी कोई दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन

वह गहरी नींद में सो रहा था। शायद यह अमावस्या की रात थी क्योंकि आसमान सामान्य से अधिक गहरा लग रहा था, हालांकि बादल नहीं थे।
‘तुरुपो मारुची कैन?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। मैं हैरानी से उनकी तरफ देखने लगा। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वो उड़िया में बात भी कर सकते हैं। फेलुदा को शायद लगा कि बात कुछ ज़्यादा ही बढ़ रही है, इसलिए उन्होंने लालमोहन बाबू को चेतावनी भरी नज़र से देखते हुए कहा, ‘श-श!’ हालाँकि हम सिर्फ़ समय बिताने के लिए खेल रहे थे, लेकिन ‘ट्वेंटी-नाइन’ इतना दिलचस्प खेल था कि मुझे समय का पता ही नहीं चला, जब तक कि घड़ी में आधा घंटा नहीं बज गया। हे भगवान, क्या साढ़े ग्यारह बज गए थे? बाकी लोग भी खेल में उतने ही मग्न लग रहे थे। लालमोहन बाबू ने अनजाने में एक बीड़ी उठाई, उसे जलाने की कोशिश की, नाकाम रहे और उसे फेंक दिया। कुछ मिनट बाद, कहीं से एक कुत्ता भौंका। दूसरे कुत्ते ने पहले वाले पर भौंका और ठीक उसी समय फेलुदा ने मेरे घुटने पर हाथ रख दिया। मैंने झट से ऊपर देखा।
एक आदमी गली में मुड़ा और हमारी तरफ आ रहा था। उसने धोती और कुर्ता पहना हुआ था और हमारी तरह ही उसने भी भूरे रंग की सूती शॉल ओढ़ी हुई थी। बाहर काफी ठंड थी। वह हमारे पास से गुजरा और दूसरी तरफ चला गया। अब वह आचार्यों के घर के बगल से, इस गली की ओर खुलने वाली सभी खिड़कियों के पास से गुजर रहा था। फिर वह दरवाजे के सामने रुक गया।
टैप, टैप, टैप!
उसने तीन बार खटखटाया। मैं उसकी खटखटाहट केवल इसलिए सुन पाया क्योंकि मैं ध्यान से सुन रहा था। दरवाजा खुला, बस इतनी सी दरार बनी कि वह आदमी मुश्किल से अंदर जा सका। तब तक हम सब उसे पहचान चुके थे।
यह बिनपानी ओपेरा के मैनेजर अश्विनी भौर थे।
कुछ देर बाद घड़ी में बारह बज गए। श्री भौर के आने के बाद से पंद्रह मिनट बीत चुके थे। वे कुछ ही मिनटों बाद बाहर आए। क्या उनके हाथों में कुछ था? मैं देख नहीं सका, क्योंकि उनके दोनों हाथ शॉल के नीचे छिपे हुए थे। वे तेज़ी से चलने लगे और जल्द ही नज़रों से ओझल हो गए।
हमारी प्रतीक्षा समाप्त हुई और बहुत सफल भी रही। मैंने फेलुदा की ओर देखा। उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'चलो यह खेल खत्म करते हैं। फिर हम जा सकते हैं।'

नौ
अगली सुबह फेलुदा ने अपने कमरे से श्री मल्लिक को फोन किया। मैंने अपने बैठक कक्ष में लगे एक्सटेंशन का इस्तेमाल किया और पूरी बातचीत सुन ली। ‘Hello, Mr Mallik?’
‘जी हां, आप कैसे हैं?’
'ठीक है, धन्यवाद। सब ठीक है?'
'जी हां! मुझे ऐसा ही लगता है।'
‘क्या आप मेरे लिए कुछ कर सकते हैं? जाइए और देखिए कि इंद्रनारायण के अध्ययन कक्ष में सब ठीक है या नहीं। जी हाँ, मैं इंतजार करूँगा।’
श्री मल्लिक गायब हो गए, लेकिन तीस सेकंड में वापस आ गए।
‘हे भगवान, श्रीमान मिटर, यहाँ तो एक भयानक आपदा आ गई है!’
‘आपदा? क्या हुआ है?’
'सभी नए नाटक और सभी नए गाने बिक चुके हैं।'
मुझे पहले से ही इसका अंदाजा था। इसीलिए मैंने फोन किया था।
इसका क्या मतलब हो सकता है?
'सभी रहस्यों में एक और रहस्य जुड़ गया है, बस इतना ही।'
क्या तुम अभी यहाँ आओगे?
‘जरूरत पड़ी तो मैं जाऊँगा। लेकिन उससे पहले मुझे पुलिस से बात करनी होगी।’ फेलुदा ने रिसीवर वापस रखा, फिर इंस्पेक्टर पोद्दार का नंबर डायल करने के लिए उसे दोबारा उठाया।
'हेलो, श्रीमान पोद्दार? कल रात अपने आदमी को ड्यूटी से हटाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। यह वाकई कारगर रहा। मुझे उम्मीद है कि आप अश्विनी भौर पर नज़र रख रहे होंगे। उसने कल रात इंद्रनारायण आचार्य के कमरे से कुछ महत्वपूर्ण कागजात चुरा लिए थे।'
श्री पोद्दार ने कहा, 'यह आदमी धोखेबाज है। यह हमें कोई पुख्ता सबूत भी नहीं दे सकता। वह कहता है कि उसने मृतक को जिंदा और सही सलामत छोड़ दिया था, लेकिन जाहिर तौर पर भौर तुरंत घर नहीं लौटा। उसकी कहानी यह है कि उसने टैक्सी ली और वह रास्ते में खराब हो गई। मुझे नहीं लगता कि यह सच है। आपने अब तक क्या प्रगति की है?'
'मुझे कहना चाहिए कि मैंने अच्छी प्रगति की है, लेकिन हो सकता है कि आप मेरे कुछ विचारों से सहमत न हों या मेरे निष्कर्ष को स्वीकार न करें क्योंकि हमने इस मामले को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा है।'
‘आपकी राय या नजरिए से कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं बस इतना चाहता हूं कि अपराधी पकड़ा जाए।’
मुझे पता था कि फेलुदा मुझे यह नहीं बताने वाला कि अलग-अलग कोणों से उसका क्या मतलब था, इसलिए मैंने पूछने की ज़हमत भी नहीं उठाई। फेलुदा ने

इंस्पेक्टर पोद्दार को अलविदा कहा और मुझे बताया कि वह बाहर जा रहा है। 'मुझे स्टेट्समैन के व्यक्तिगत कॉलम में एक विज्ञापन देना है। मुझे एक अच्छे वायलिन की ज़रूरत है।'
अगले दिन एक छोटा सा विज्ञापन छपा। अगर कोई वायलिन बेचना चाहता है, खासकर विदेश में बना हुआ और अच्छी हालत में, तो उसे एक बॉक्स नंबर पर लिखकर भेजने के लिए कहा गया था।
दो दिन बाद, फेलुदा को इस विज्ञापन का जवाब मिला। उन्होंने पत्र पढ़ा और कहा, 'लोवडन स्ट्रीट। मुझे वहीं जाना है।' एक घंटे बाद, वह वापस आ गए।
‘वे बहुत ज़्यादा माँग रहे थे,’ उसने उदास चेहरे से कहा। ‘क्या वायलिन में यह अचानक दिलचस्पी महज़ उस विश्वकोश को पढ़ने का नतीजा है? मतलब, तुम सच में इस उम्र में इसे बजाना सीखना चाहते हो?’
फेलुदा ने गंभीरतापूर्वक कहा, 'सीखने के लिए कभी देर नहीं होती।'
इससे मैं और भी हैरान हो गया, लेकिन फेलुदा ने एक शब्द भी बोलने से इनकार कर दिया। उसी दिन बाद में लालमोहन बाबू आए और मुझे एक तरफ ले जाकर शिकायत की। ‘मुझे तुम्हारे चचेरे भाई तपेश की हर बात पसंद है, सिवाय उसकी बीच-बीच में चुप हो जाने की आदत के। वह हमें अपने मन की बात क्यों नहीं बता सकता?’ अगले दिन, जो शनिवार था, फेलुदा अचानक खुश नज़र आने लगे। मैंने उन्हें गुनगुनाते हुए भी सुना। उन्होंने कहा, 'हमें आज कीर्तिनारायण आचार्य से मिलना चाहिए। मैं अभी उन्हें फोन करता हूँ।'
'क्या आपने अपनी जांच पूरी कर ली है?' फेलूदा के फोन करने पर श्री आचार्य ने पूछा।
'हां, मुझे ऐसा लगता है। लेकिन मुझे सब कुछ समझाने के लिए आपके घर पर एक बैठक करनी होगी। आपके दोनों बेटों और श्री मल्लिक को उपस्थित रहना होगा।' ‘कोई बात नहीं। वे सब घर पर हैं। हम आपसे किस समय मिलने की उम्मीद कर सकते हैं?’
दस बजे।
इसके बाद फेलुदा ने इंस्पेक्टर पोद्दार को फोन किया और उन्हें दस बजे तक बोसेपुकुर पहुंचने के लिए कहा। उन्होंने कहा, 'हमें आपकी वहां मौजूदगी की जरूरत है, क्योंकि आज यह कहानी अपने चरम पर पहुंचने वाली है।'
लालमोहन बाबू नौ बजे पहुंचे। हमने एक कप चाय पी और साढ़े नौ बजे निकल गए। हमें पहली मंजिल पर उसी बैठक कक्ष में ले जाया गया जहाँ हमारी पहली मुलाकात कीर्तिनारायण से हुई थी। वह हमारा इंतजार कर रहे थे। उन्होंने कहा, 'प्रद्युम्न, जाओ और बाकियों को बुला लाओ।' श्री मल्लिक अपने दोनों बेटों को बुलाने चले गए। देवनारायण सबसे पहले पहुँचे।
उन्होंने चिड़चिड़ाते हुए कहा, 'मैंने सुना है कि पुलिस ने काफी प्रगति की है। तो फिर हमें इस आदमी का उपदेश क्यों सुनना पड़ रहा है?'
'श्री आचार्य, मैंने भी काफी प्रगति की है, लेकिन एक अलग तरीके से। इसके अलावा, इस मामले में हत्या ही एकमात्र अपराध नहीं है। मुझे लगता है कि आपको यह जानना चाहिए। मैं सब कुछ बहुत स्पष्ट रूप से समझाने की कोशिश करूंगा।'

frown

सत्रहवीं शताब्दी में इटली में कई वायलिन निर्माता थे जिन्होंने वायलिन के स्वरूप और ध्वनि दोनों में सुधार और विकास किया था। इन वायलिन निर्माताओं में से तीन नाम आज भी पूजनीय हैं: एंटोनियो स्ट्राडिवरी, एंड्रिया गुआरनेरी और निकोलो अमाती। ये सभी सत्रहवीं शताब्दी में रहते थे।’ इन सभी व्यक्तियों में अमाती पहले व्यक्ति थे जिन्होंने क्रेमोना में वायलिन बनाने की कला में क्रांति ला दी।
‘कंदर्पनारायण की डायरी पढ़ने तक मुझे “अमति” और “सम्मोहन” के बीच का संबंध समझ नहीं आया था।’ फेलुदा ने अपनी जेब से एक कागज़ निकाला और उसे पढ़ा। ‘उन्होंने यह लिखा था: “आज मैंने एक कर्ज में डूबे संगीतकार से दो हज़ार पाउंड में एक अमति खरीदी। इसकी ध्वनि बहुत मधुर है।”
उन दिनों में दो हजार पाउंड बीस हजार रुपये के बराबर होते थे। आज उस तरह की वायलिन कम से कम एक लाख रुपये में बिकेगी।
“इस घर में एक बहुत पुराना और असाधारण वायलिन पड़ा हुआ था, जिसे इंद्रनारायण कभी-कभार बजाते थे। कितने लोगों को इसकी असली कीमत का पता था? मुझे नहीं लगता कि कीर्तिनारायण या देवनारायण को भी इसका कोई अंदाजा था। लेकिन दो लोग इसके बारे में जानते थे। उनमें से एक प्रद्युम्न मल्लिक थे, जिन्होंने कंदर्पनारायण की डायरी पढ़ी थी; और दूसरे हरिनारायण थे, जो पश्चिमी शास्त्रीय संगीत के जानकार थे। उन्हें वायलिन और उनके निर्माताओं के बारे में जरूर जानकारी होगी। खैर, मुझे पूरा यकीन है कि उन्हें पता था कि वायलिन के अंदर निर्माता का नाम हमेशा खुदा होता है। वायलिन के किनारे बने छेदों में से झाँककर आप इसे देख सकते हैं। ये छेद 'S' अक्षर के आकार के होते हैं।”
जैसे ही मुझे एहसास हुआ कि "अमाती" का मतलब "अमाती" है, मेरा शक हरिनारायण पर जागा। यह स्पष्ट था कि इंद्रनारायण की मृत्यु के बाद असली अमाती को हटा दिया गया था और उसकी जगह एक नया और सस्ता वायलिन रख दिया गया था। असली वायलिन बिक चुका था। मैंने एक अखबार में विज्ञापन दिया, जिसमें मैंने विदेश में बना एक अच्छी गुणवत्ता का वायलिन खरीदने की पेशकश की। मेरे विज्ञापन के जवाब में श्री रेबेलो ने लिखा। पता चला कि वे प्राचीन वस्तुओं के व्यापारी थे। उन्होंने मुझे बताया कि उनके पास एक पुराना वायलिन है जिसे वे मुझे डेढ़ लाख रुपये में बेच सकते हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने इसे हरिनारायण आचार्य से खरीदा था। उन्होंने बताया कि हाँ, और कहा कि यह भारत में एकमात्र अमाती वायलिन है।
‘मुझे लगता है कि इससे दूसरे अपराध के बारे में सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। और श्री आचार्य, यहीं मेरा व्याख्यान समाप्त होता है।’
कोई नहीं बोला। विरोध में एक शब्द भी नहीं बोला गया। दोनों अपराधियों में से किसी ने भी इनकार नहीं किया। इंस्पेक्टर पोद्दार ने श्री मल्लिक को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें ले गए। हरिनारायण सिर हाथों में थामे मूर्ति की तरह स्थिर बैठे रहे। देवनारायण मौन घृणा से कमरे से बाहर चले गए।
काफी देर बाद कीर्तिनारायण ने आह भरी। ‘काश हरि ने मुझे अपने कर्ज के बारे में बता दिया होता, तो मैं उसकी मदद कर देता और हम इतनी कीमती चीज कभी नहीं खोते। लेकिन मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा कि प्रद्युम्न मल्लिक ने क्या

किया। वह इतना बेईमान कैसे हो सकता है, वह इतना नीच कैसे गिर सकता है? अब तो उसे मेरे पूर्वज की जीवनी लिखने की इजाजत देने का सवाल ही नहीं उठता। मैं बस यही उम्मीद कर सकता हूं कि उसे उसके कर्मों का फल मिले।’
श्री आचार्य ने ये सब बातें कही थीं, लेकिन उनके लिए अब भी कंदर्पनारायण की जीवनी का लिखा जाना महत्वपूर्ण था। कुछ समय बाद, उन्होंने लालमोहन बाबू से संपर्क किया।
‘आप थ्रिलर लेखक हैं, है ना?’ उन्होंने पूछा। ‘कंदरापनारायण के जीवन पर क्यों नहीं लिखते? आपको उनका जीवन किसी भी अन्य व्यक्ति के जीवन से कहीं अधिक रहस्य और रोमांच से भरा मिलेगा जिसके बारे में आपने कभी सुना हो।’ लालमोहन बाबू ने यथासंभव विनम्रता से सिर झुकाया। 'कृपया ऐसा न करें, महोदय... मैं अत्यंत सम्मानित महसूस कर रहा हूँ, लेकिन मैं एक बहुत ही छोटा और साधारण लेखक हूँ। मैं तो आपके सम्मान के योग्य भी नहीं हूँ।'
बहुत बाद में, लौटते समय, उसने फेलुदा से कबूलनामा किया। ‘मैं? एक ऐसे घर में किसी की जीवनी लिखूँ जहाँ हत्या हुई हो? क्या तुम पागल हो? मेरे मसाला उपन्यास ज़िंदाबाद, मेरा नायक प्रखर रुद्र ज़िंदाबाद, और सबसे बढ़कर, द थ्री मस्केटियर्स ज़िंदाबाद!’

पहाड़ों में हत्या

एक
‘अच्छी खबर?’ लालमोहन बाबू के कमरे में आते ही फेलुदा ने उनसे पूछा। मुझे कुछ खास नजर नहीं आया, लेकिन फेलुदा ने आगे कहा, ‘आपने दो बार घंटी बजाई, उससे मुझे समझ आ गया था कि आप हमसे कोई महत्वपूर्ण खबर साझा करने के लिए उत्सुक हैं, हालांकि मैं यह नहीं बता सका कि खबर अच्छी है या बुरी। अब तो साफ है कि यह अच्छी खबर है।’
‘आपने कैसे अनुमान लगाया?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘मैंने मुस्कुराया तक नहीं।’
नहीं, लेकिन कुछ चीज़ें थीं जिनसे तुम्हारी पहचान हो गई। पहली बात, तुम्हारा पहनावा। आज तुमने कुछ ज़्यादा ही सजगता दिखाई है। तुमने जो पीला कुर्ता पहना है, वो नया है, तुमने दाढ़ी बनाने के लिए नया ब्लेड इस्तेमाल किया है और पूरे कमरे में तुम्हारी आफ्टरशेव की महक फैली हुई है। इसके अलावा, तुम आमतौर पर नौ बजे से पहले यहाँ नहीं आते। अभी नौ बजने में सत्रह मिनट बाकी हैं।
लालमोहन बाबू हँसे। ‘जी हाँ, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। जब तक मैंने आकर आपको सब कुछ नहीं बताया, मुझे चैन नहीं आया। क्या आपको पुलक घोषाल याद हैं?’
‘फिल्म निर्देशक? वही जिसने आपकी कहानी, द बुकेनियर ऑफ बॉम्बे पर आधारित हिंदी फिल्म बनाई?’
‘फेलू बाबू, यह सिर्फ एक फिल्म नहीं थी, बल्कि एक सुपरहिट फिल्म थी। उन्होंने मुझसे कहा था कि वह मेरी कहानियों में से एक पर एक और फिल्म बनाना चाहते हैं। अब वह ऐसा करने जा रहे हैं।’
‘यह कौन सी कहानी है?’
‘वह फिल्म जिसमें सारा एक्शन काराकोरम में था। लेकिन काराकोरम को हटा दिया गया है। अब सारा एक्शन दार्जिलिंग में है।’
‘दार्जिलिंग? दार्जिलिंग की तुलना कराकोरम से भला कैसे हो सकती है?’
मुझे पता है, मुझे पता है। लेकिन कुछ न होने से कुछ होना बेहतर है, है ना? इसके अलावा, वे मुझे पिछली बार से कहीं ज्यादा पैसे देने वाले हैं। चालीस हजार, कम नहीं।
‘क्या! मुझे इतना कमाने में दो साल लग जाते हैं!’
‘अच्छा, उनका कुल बजट 56 लाख रुपये है। लेखक के लिए चालीस हजार रुपये कुछ भी नहीं हैं। क्या आपको पता है कि उनके शीर्ष कलाकारों को कितना भुगतान मिलता है?’
'हां, मुझे कुछ अंदाजा है।'
तो फिर आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है? इस फिल्म में राजेन रैना हीरो का रोल निभाएंगे। उन्हें दस लाख से ज़्यादा मिलेंगे। और विलेन का रोल महादेव

वर्मा को मिला है। उनकी फीस तो और भी ज़्यादा है। उन्होंने अब तक सिर्फ पांच फिल्में की हैं, लेकिन सभी पांचों फिल्मों को सिल्वर जुबली मिल चुकी है।
'सच में? तो फिर, अगर पुलक घोषाल आपके दोस्त हैं, तो उन्होंने आपको दार्जिलिंग क्यों नहीं बुलाया?'
लेकिन उन्होंने बुलाया है! मैं आपको यही बताने आया था। उन्होंने सिर्फ मुझे ही नहीं, बल्कि हम तीनों को बुलाया है। मैंने उनसे कहा था कि औपचारिक निमंत्रण की कोई ज़रूरत नहीं है, हम खुद ही चले जाएंगे। आपका क्या कहना है, फेलू बाबू?
मुझे याद नहीं आ रहा था कि हम आखिरी बार दार्जिलिंग कब गए थे। मुझे बस इतना याद था कि फेलूदा ने वहीं से एक जासूस के तौर पर अपने करियर की शुरुआत की थी। तब मैं छोटा बच्चा था और मेरी नासमझी और अज्ञानता के लिए उन्हें मुझे अक्सर डांटना पड़ता था। अब उन्होंने मुझे अपना सहायक बताकर लोगों से मिलवाना शुरू कर दिया था। अगर उन्होंने पहले ऐसा किया होता, तो लोग उन पर हंसते। पिछले कुछ सालों में मैंने कई बार दार्जिलिंग में छुट्टियां बिताने जाने का सोचा था, लेकिन फेलूदा इतने व्यस्त हो गए थे कि समय ही नहीं मिल पाता था। उनकी कमाई भी काफी बढ़ गई थी। पिछले छह महीनों में उन्होंने पांच मामले सुलझाए थे, चंदननगर में हुए दोहरे हत्याकांड को छोड़कर बाकी सभी। उनके काम की हर जगह खूब सराहना हुई थी और उन्हें अच्छा वेतन भी मिल रहा था। सिर्फ तीन महीने पहले ही उन्होंने एक रंगीन टीवी और ढेर सारी पुरानी किताबें खरीदी थीं, जिनमें उनकी काफी दिलचस्पी थी। अब तक मुझे समझ आ गया था कि फेलूदा को पैसे बचाने की कोई परवाह नहीं थी। उन्हें अपनी कमाई खर्च करना अच्छा लगता था, लेकिन जरूरी नहीं कि हमेशा खुद पर ही खर्च करें। वह अक्सर लालमोहन बाबू के लिए छोटे-छोटे उपहार लाते थे, ताकि उन्हें यह दिखा सकें कि जब भी हमें ज़रूरत पड़ी, उन्होंने हमारी जो भी मदद की, उसके लिए वे उनके कितने आभारी थे। जो आफ्टरशेव उन्होंने अभी लगाया हुआ था, वह फेलुदा ने उन्हें दिया था। लालमोहन बाबू ने कहा था कि वे इसे केवल विशेष अवसरों पर ही इस्तेमाल करेंगे। आज जाहिर तौर पर उनके लिए ऐसा ही एक अवसर था।
हमारी पूजा की छुट्टियां शुरू होने वाली थीं। फेलुदा ने पहले ही तय कर लिया था कि वह कुछ महीनों के लिए और कोई केस नहीं लेंगे। इसलिए मुझे नहीं लगा कि उन्हें दार्जिलिंग जाने में कोई आपत्ति होगी। वैसे भी, उन्हें वह जगह बहुत पसंद थी। मैंने अक्सर उन्हें बंगाल की विविधता की तारीफ करते सुना था। एक बार उन्होंने मुझसे कहा था, 'यह शायद भूगोल का संयोग ही हो, लेकिन क्या आप किसी और राज्य के बारे में सोच सकते हैं जहाँ हरे-भरे खेत हों, सूखे और बंजर इलाके हों, सुंदरबन जैसा जंगल हो, गंगा, पद्मा और मेघना जैसी विशाल नदियाँ हों, तल में महासागर हो और शिखर पर हिमालय हो?'
‘तो?’ लालमोहन बाबू ने थोड़ी अधीरता से पूछा, श्रीनाथ द्वारा अभी लाई गई चाय की चुस्की लेते हुए। ‘तुम जाना चाहते हो या नहीं?’
'रुको, फैसला लेने से पहले मुझे एक और जानकारी चाहिए।'
'हाँ?'

‘आप हमें कब जाने के लिए कहेंगे?’
फिल्म यूनिट का एक हिस्सा पहले ही दार्जिलिंग पहुंच चुका है। लेकिन वे अगले शुक्रवार से पहले शूटिंग शुरू नहीं करेंगे। आज रविवार है।
मुझे असल में शूटिंग देखने में कोई दिलचस्पी नहीं है। क्या वे बाहर शूटिंग करने वाले हैं, या फिर उन्होंने—?’
क्या आपने बिरुपाक्षा मजूमदार के बारे में सुना है?
‘बंगाल बैंक के प्रबंध निदेशक?’
‘वह निदेशक थे, लेकिन अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं। मस्तिष्क में हल्का आघात लगने के कारण उन्हें बावन वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होना पड़ा।’ ‘मैं समझ गया। लेकिन क्या वह काफी प्रतिभाशाली व्यक्ति नहीं है? मुझे लगता है कि वह पहले एक खिलाड़ी हुआ करता था?’
'हां। वह एक समय राष्ट्रीय बिलियर्ड्स चैंपियन थे। और मुझे लगता है कि वह एक शिकारी भी थे।'
'हां, मैंने शिकार और शिकार पर उनका एक लेख पढ़ा है।'
‘वह एक बहुत ही प्रतिष्ठित परिवार से आते हैं। उनके पूर्वज पूर्वी बंगाल के नयनपुर नामक स्थान पर जमींदार हुआ करते थे। दार्जिलिंग में उनका एक विशाल घर है। यह बंगले की तरह बना है और इसमें सोलह कमरे हैं। श्री मजूमदार वहीं रहते हैं। पुलक ने कुछ दृश्यों की शूटिंग के लिए दो कमरों का उपयोग करने की अनुमति ले ली है। बाकी की शूटिंग दार्जिलिंग में होगी। फिल्म यूनिट माउंट एवरेस्ट होटल में ठहरेगी। हम कहीं और कमरा बुक कर सकते हैं।’ 'हां, यह बेहतर रहेगा। मुझे फिल्म यूनिट के लोगों को ज्यादा देखना पसंद नहीं है। हम दार्जिलिंग के नए होटलों में से किसी एक में रुक सकते हैं।' मैंने लिखा, 'मैंने होटल कंचनजंगा का एक विज्ञापन देखा।'
'हां, मैंने भी ऐसा ही किया।'
‘बहुत खूब, फेलू बाबू। मैं इंतज़ाम कर दूंगा।’
सभी व्यवस्थाएं पूरी करने में हमें तीन दिन लग गए।
हम गुरुवार, 30 सितंबर को हवाई अड्डे पहुंचे तो पता चला कि पुलक घोषाल भी उसी फ्लाइट में थे। उनके साथ फिल्म के हीरो, हीरोइन और विलेन भी थे। लालमोहन बाबू की कहानी में तो कोई हीरोइन थी ही नहीं, लेकिन निर्देशक ने फिल्म में उसे शामिल करना जरूरी समझा था। पुलक बाबू फेलुदा को देखकर मुस्कुराए। 'मुझे खुशी है कि मैंने लालुदा की कहानियों में से एक को चुना। वरना शायद आपसे दोबारा मुलाकात न हो पाती, है ना? लेकिन मुझे उम्मीद है कि इस बार आपको किसी जांच में नहीं पड़ना पड़ेगा!'
फिर उन्होंने हमें अपने नायक राजेन रैना, नायिका सुचंद्रा और खलनायक महादेव वर्मा से मिलवाया। सुचंद्रा सुंदर थीं, लेकिन उन्होंने काफी मेकअप किया हुआ था। राजेन रैना—जिन्हें मैंने आसानी से पहचान लिया—खुशमिजाज और स्मार्ट लग रहे थे। उनकी छोटी, करीने से कटी हुई दाढ़ी थी। वे फेलुदा जितने लंबे थे और काफी चुस्त-दुरुस्त दिख रहे थे। हालांकि वे नए थे, फिर भी मुझे वे कम से कम चालीस साल के लगे। लेकिन शायद मेकअप की कुशलता से उनकी उम्र छिप गई थी। मुझे नहीं लगता कि पूरे देश में कोई ऐसा पुरुष होगा जो लालमोहन बाबू की किताब में वर्णित नायक के वर्णन से मेल खाता हो। प्रखर

रुद्र की लंबाई साढ़े छह फीट थी, सीना पचास इंच चौड़ा था, नाक तलवार की तरह नुकीली थी और आंखें हर समय जलते हुए कोयले की तरह चमकती रहती थीं।
महादेव वर्मा मुझे सबसे दिलचस्प लगे। उनकी आंखें झुकी हुई थीं, होठों पर हल्की सी मुस्कान थी, नाक के नीचे पतली सी मूंछें थीं जो ऊपर की ओर मुड़ी हुई थीं, और ऐसा लग रहा था मानो वे किसी दूसरे इंसान को मारने से पहले दो बार न सोचें। वर्मा और रैना दोनों ने इत्र लगाया हुआ था। फेलुदा ने बाद में मुझे बताया कि वर्मा के इत्र का नाम डेनिम था और रैना के इत्र का नाम यार्डली लैवेंडर था।
हमें एयरपोर्ट पर बताया गया कि बागडोगरा जाने वाली हमारी फ्लाइट एक घंटे लेट हो गई है। इसलिए हम सब एयरपोर्ट के रेस्टोरेंट में कॉफी पीने चले गए। दरअसल, यह पुलक बाबू का ही आइडिया था, हम तीनों उनके मेहमान बनकर गए थे।
महादेव वर्मा और फेलुदा रेस्तरां में बातचीत करने लगे। चूंकि मैं फेलुदा के बगल में बैठा था, इसलिए मैंने पूरी बातचीत सुन ली।
‘आप कुछ सालों से फिल्मों में काम कर रहे हैं, है ना?’ फेलुदा ने बात शुरू की।
'हां, तीन साल। फिल्मों में आने से पहले मैं बहुत यात्रा करता था। मैंने देश के लगभग सभी हिस्से देखे हैं, जिनमें लेह और लद्दाख भी शामिल हैं। कश्मीर में रहते हुए मेरी मुलाकात श्रीनगर में बन रही एक फिल्म के निर्देशक से हुई। उन्होंने ही मुझे पहला मौका दिया। अब, ज़ाहिर है, मैं फिल्मों को छोड़ने के बारे में सोच भी नहीं सकता।'
लालमोहन बाबू अपनी सीट पर बेचैनी से हिल रहे थे। अब उन्होंने तुरंत वह सवाल पूछ लिया जो उनके होठों पर साफ झलक रहा था।
'इस फिल्म में आप जो किरदार निभाने जा रहे हैं, वह आपको कैसा लग रहा है?' ‘यह एक बेहद दमदार किरदार है। ओह, मुझे यह पसंद है। खासकर वह दृश्य, जिसमें मैं नायिका को अपने सामने पकड़कर नायक को ढेरों क्रूर गालियां देता हूं, और नायक हाथ में रिवॉल्वर होने के बावजूद कुछ भी करने में असमर्थ होता है — आह, वह दृश्य सचमुच नाटकीय है!’
लालमोहन बाबू की किताब में कहीं भी ऐसा दृश्य नहीं था। जिस उत्सुक मुस्कान के साथ उन्होंने अपना प्रश्न पूछा था, वह श्री वर्मा के उत्तर पर तुरंत गायब हो गई। लेकिन श्री वर्मा ने अभी अपनी बात पूरी नहीं की थी। उन्होंने फिर से फेलुदा की ओर रुख किया।
श्री घोषाल ने कहा कि आप एक जासूस हैं। मेरा मानना है कि जासूस किसी व्यक्ति से मिलने के कुछ ही मिनटों में उसके बारे में बहुत कुछ बता सकते हैं। क्या आप मेरे बारे में कुछ बता सकते हैं?
फेलुदा हँसा। 'एक जासूस जादूगर नहीं होता। वह जो कुछ देख पाता है, वह आमतौर पर उसकी अवलोकन शक्ति और मानव मनोविज्ञान के ज्ञान पर आधारित होता है। मुझे लगता है कि आप कुछ निराश हैं।'
'क्या सोच कर तुम यह कह रहे हो?'
‘बोलते समय आप बार-बार इधर-उधर देख रहे हैं, और मुझे लगता है कि आपको एहसास हो गया है कि इस रेस्टोरेंट में किसी ने भी आपको पहचाना नहीं है। मैंने आपको इधर-उधर देखते हुए और एक गहरी आह भरते हुए देखा। लेकिन राजेन रैना को

पहचान लिया गया है, और बहुत से लोग उनके ऑटोग्राफ के लिए उनके पास आ चुके हैं। आपने तो लोगों को पहचानने की उम्मीद में अपने काले चश्मे भी उतार दिए थे। लेकिन जब ऐसा नहीं हुआ, तो आपने उन्हें वापस पहन लिया।’
महादेव वर्मा ने फिर आह भरी। 'आप बिलकुल सही हैं, सौ प्रतिशत। अगर मुझे मुंबई में किसी सार्वजनिक स्थान पर देखा जाए, तो मैं तुरंत भीड़ से घिर जाता हूँ। लेकिन यहाँ... शायद बंगाली लोग अक्सर हिंदी फिल्में नहीं देखते?' ‘जी हां, बिल्कुल,’ लालमोहन बाबू ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा। ‘बात सिर्फ इतनी है कि आपकी तीन फिल्में अभी तक यहां रिलीज नहीं हुई हैं। मैं आमतौर पर हिंदी फिल्म अभिनेताओं के बारे में जानकारी नहीं रखता, लेकिन मैंने अपनी फिल्म में खलनायक की भूमिका निभाने वाले अभिनेता के बारे में कुछ पूछताछ जरूर की थी।’
‘मैं समझ गया,’ श्री वर्मा ने राहत भरी आवाज में कहा। ‘खैर, श्री मिटर की अवलोकन क्षमता अद्भुत है, इसमें कोई संदेह नहीं है।’
इसके तुरंत बाद हमारी फ्लाइट की घोषणा हो गई, इसलिए हम सब जल्दी से सुरक्षा जांच के लिए निकल पड़े। फेलुदा ने अपना कोल्ट रिवॉल्वर अपने सूटकेस में रख लिया था, जिसे पहले ही विमान में ले जाया जा चुका था। पहले, छुट्टियों के दौरान भी हम कई बार आपराधिक मामलों में फंस चुके थे, इसलिए आजकल फेलुदा कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था। वह रिवॉल्वर के बिना कभी बाहर नहीं निकलता था। हम सुरक्षा जांच से गुज़रे और प्रस्थान लाउंज में पहुँच गए। दस मिनट के भीतर घोषणा हुई कि हमारी उड़ान प्रस्थान के लिए तैयार है। हम तीनों और फिल्म यूनिट के सभी सदस्य विमान में सवार हो गए। दार्जिलिंग को फिर से देखने और 6,000 फीट की ऊंचाई पर होने के विचार से मेरा दिल उत्साह से झूम उठा। चूंकि लगभग अक्टूबर का महीना था, इसलिए वहाँ काफी ठंड होने वाली थी। फिर भी मुझे एक अजीब सा रोमांच महसूस हो रहा था। किसी तरह, मुझे लगा कि एक और रोमांच हमारा इंतजार कर रहा है। लेकिन जब मैंने यह बात फेलुदा को बताई, तो उन्होंने झल्लाकर कहा, 'तुम्हें यह ख्याल कहाँ से आया? क्या अभी तक कोई ऐसी घटना हुई है जिससे किसी रोमांच का संकेत मिले? अगर तुम बिना किसी कारण के उम्मीदें पाल लोगी, तो वे सिर्फ टूटेंगी। बस यह याद रखना।' इसके बाद, मैंने भविष्य के बारे में कोई टिप्पणी करने की हिम्मत नहीं की।

दो
होटल कंचनजंगा काफी साफ-सुथरा निकला। हर कमरे में टेलीफोन और हीटर था, बाथरूम में गर्म पानी की सुविधा थी, चादरें एकदम साफ और चमकदार थीं— संक्षेप में, यह एक ऐसी जगह थी जिसने तुरंत मन को प्रसन्न कर दिया। हम दार्जिलिंग में दस दिन रुकने वाले थे। अगर रहने की जगह संतोषजनक नहीं होती, तो यह हमारे लिए काफी परेशानी का कारण बन सकती थी।
हमारी यात्रा बिना किसी घटना के गुज़री। सोनाडा पहुँचते ही लालमोहन बाबू ने अपनी राजस्थानी चमड़े और ऊन की टोपी निकाली और पहन ली। उन्होंने समझाया, 'सिर और कान बचाने के लिए।' फिर वे आसपास के नज़ारों पर ध्यान देने लगे और कम से कम दस लाख बार 'सुंदर!' कहा। अंत में, केर्सियोंग रेलवे रेस्तरां में चाय पीते हुए उन्होंने एक सच्चाई बताई। उन्होंने हमें बताया कि दार्जिलिंग की यह उनकी पहली यात्रा थी।
‘क्या!’ फेलुदा ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। ‘तुम्हारा मतलब है कि तुमने कभी कंचनजंगा नहीं देखा?’
‘जी नहीं, महोदय,’ लालमोहन बाबू ने शर्मिंदगी से जीभ बाहर निकालते हुए स्वीकार किया।
‘हे भगवान, मुझे आपसे कितनी ईर्ष्या होती है!’
'क्यों?'
‘क्योंकि आपको अंदाजा भी नहीं है कि आपके लिए कितना बड़ा सरप्राइज इंतजार कर रहा है। हम तीनों में से सिर्फ आपको ही कंचनजंगा को पहली बार देखने का अद्भुत अनुभव मिलेगा। आप बहुत भाग्यशाली हैं, श्री गांगुली।’
अगर आसमान साफ होता तो केर्सेओंग से भी कंचनजंगा दिखाई दे सकती थी। लेकिन आज आसमान में काफी बादल थे। जब हम घूम पहुंचे, तब तक दिन ढलने लगा था और बादल छटे नहीं थे। इसलिए लालमोहन बाबू को अभी तक कंचनजंगा देखने का मौका नहीं मिला था। यह तो दार्जिलिंग घूमने की एक खास बात है। छुट्टी के अंत में भी कंचनजंगा दिखाई न देना मुमकिन होता है। अगर ऐसा हुआ तो मुझे बहुत निराशा होगी। मैंने इसे पहले भी देखा था, लेकिन इसे दोबारा देखने की बहुत इच्छा थी। यह एक ऐसा अनुभव है जिससे कभी मन नहीं भरता।
हमने अपना सामान होटल में रखा और टहलने निकल गए। मॉल तक पहुँचने से पहले हमें लगभग पाँच मिनट तक चढ़ाई चढ़नी पड़ी। तब तक अंधेरा हो चुका था और स्ट्रीटलाइटें जल चुकी थीं। मॉल की दुकानें भी रोशन थीं। लालमोहन बाबू ने हैरानी से पूछा, 'फेलू बाबू, यहाँ कहीं भी कोई कार क्यों नहीं दिख रही?' दार्जिलिंग के कई हिस्सों में कारों और अन्य वाहनों का चलना प्रतिबंधित है। मॉल भी ऐसी ही एक जगह है। आप यहां पैदल चल सकते हैं या घोड़े की सवारी कर सकते हैं। क्या आपने पहले कभी घुड़सवारी की है?

‘नहीं-नहीं। लेकिन मैंने ऊंट की सवारी तो की ही है, है ना? उसकी तुलना में घोड़े की सवारी तो बच्चों का खेल होगी, है ना?’
कुछ देर बाद हमारी मुलाकात श्री बिरुपाक्षा मजूमदार से हुई। फिल्म की टीम भी हमारी तरह टहलने निकली थी। पुलक घोषाल हमसे मिलने के लिए आगे बढ़े। उनके साथ एक सज्जन थे जिन्होंने सूट और फेल्ट हैट पहन रखी थी। उन्होंने कहा, ‘ये श्री मजूमदार हैं, हम फिल्म का एक हिस्सा उनके घर में शूट करने जा रहे हैं। उन्होंने बड़ी कृपा करके हमें इसकी अनुमति दे दी है। और ये हैं—’ पुलक बाबू ने परिचय पूरा किया।
‘गोलीबारी से तुम्हारा क्या लेना-देना है?’ श्री मजूमदार ने फेलुदा की ओर देखते हुए पूछा।
सच कहूं तो, कुछ भी नहीं। लेकिन मेरा एक दोस्त क्राइम थ्रिलर लिखता है। जिस कहानी पर यह फिल्म आधारित है, वह उसी ने लिखी है।
बहुत बढ़िया। वो अपराध कथाएँ लिखते हैं, और आप एक जासूस हैं। ये तो कमाल का मेल है। लगता है मैंने आपका नाम पहले भी सुना है। क्या अखबारों में आपका नाम कुछ बार आया है?
'जी हां... मैंने पिछले साल बोसेपुकुर में एक मामले को सुलझाने में मदद की थी। इसकी खबर प्रेस में छपी थी।'
'हाँ, बिल्कुल सही। इसीलिए आपका नाम इतना जाना-पहचाना लगा। देखिए, मैं अखबारों की कतरनें इकट्ठा करता हूँ; रोज़मर्रा की आम खबरें नहीं, बल्कि अगर खबरों में थोड़ा सा भी नाटकीय पहलू हो, तो वो मेरे संग्रह में शामिल हो जाती हैं।'
‘यह मेरा सत्रह साल की उम्र से ही शौक रहा है। मेरे पास इकत्तीस स्क्रैपबुक हैं। अब जब मैं सेवानिवृत्त हो चुकी हूँ, तो मैं अपना कुछ समय इन स्क्रैपबुकों के पन्ने पलटने में बिताती हूँ, ठीक वैसे ही जैसे कुछ लोग पुरानी किताबें पढ़ते हैं। लेकिन अब मेरे पास एक सहायक है। रजत—मेरा सचिव—मेरे मनचाहे टुकड़े काटता है और उन्हें मेरे लिए चिपका देता है। इसी तरह मुझे वे कतरनें मिलीं जिनका मैंने आपसे जिक्र किया था।’
तब तक हम मेल रोड के एक छोर पर बने फव्वारे को पार कर चुके थे और मुख्य सड़क की ओर चलने लगे थे। श्री मजूमदार ने कहा, 'मेरी दवा खत्म हो गई है। आप मेरे साथ केमिस्ट की दुकान क्यों नहीं चलते?' हम उनके साथ सड़क के उस पार दुकान तक गए। उन्होंने जो खरीदा, वह ट्रोफनिल नाम की गोलियां निकलीं। केमिस्ट ने उन्हें एल्युमिनियम फॉयल में लिपटी इकत्तीस गोलियां दीं। श्री मजूमदार ने हमें बताया, 'यह अवसादरोधी दवा है। मैं इसे खाए बिना सो नहीं पाता। मेरे पास जो गोलियां हैं, वे एक महीने तक चलेंगी।'
हम दुकान से बाहर आ गए। फेलुदा ने कहा, 'मैं एक दिन आपसे मिलने आना चाहूंगी और आपकी कुछ स्क्रैपबुक देखना चाहूंगी।'
'ओह, जरूर। आपका हार्दिक स्वागत है। मैं आपको उन मामलों की रिपोर्ट भी दिखा सकता हूँ जो अभी तक सुलझे नहीं हैं। ये रिपोर्ट बीस साल पुरानी हैं।' 'बहुत दिलचस्प!'
लेकिन फिर भी, मेरा जीवन कम दिलचस्प नहीं है। कभी-कभी मैं आत्मकथा लिखने के बारे में सोचता हूँ, लेकिन फिर खुद से कहता हूँ कि इसका कोई फायदा नहीं

होगा, क्योंकि जाहिर है मैं अपनी सारी कहानियाँ हूबहू वैसे नहीं बता सकता जैसे वे घटी थीं। आत्मकथा पूरी तरह ईमानदार होनी चाहिए, रहस्यों और झूठ से रहित। कम से कम, यही मेरा मानना है। खैर, आपको एक दिन मुझसे मिलने जरूर आना चाहिए।
हमें बहुत खुशी होगी। आपके लिए सबसे अच्छा समय कब रहेगा?
‘मैं सुबह के समय टहलने जाता हूँ। आमतौर पर मैं शाम को टहलने जाता हूँ। माउंट एवरेस्ट होटल से आगे जाने पर आपको पहाड़ी पर जाने वाली एक सड़क मिलेगी। आपको यही सड़क लेनी है। मुझे लगता है कि आपको मेरा घर आसानी से मिल जाएगा—यह नयनपुर विला नाम का एक बंगला है। इसके चारों ओर एक बड़ा बगीचा है।’
श्री मजूमदार ने विदाई में हाथ उठाया और चले गए। हमने उन्हें घोड़े पर सवार होते देखा। उनकी मदद के लिए एक आदमी भी था।
‘शायद उनके डॉक्टर उन्हें पहाड़ी पर चढ़ने की इजाजत नहीं देते, जिससे घोड़े की बात समझ में आती है,’ फेलुदा ने कहा। ‘सच कहूं तो, वे बहुत ही भले इंसान हैं।’
फिल्म यूनिट के सभी सदस्य दुकानों को देखने में व्यस्त थे। पुलक बाबू आगे आए और पूछा, 'आपको श्री मजूमदार कैसे लगे?'
उनसे मिलकर बहुत खुशी हुई। उनकी उम्र भले ही बढ़ रही हो, लेकिन दिल से वे अब भी जवान हैं।
'जी हां, और वह हर चीज में बड़ी दिलचस्पी लेता है। वह मुझसे गोलीबारी के बारे में बहुत कुछ पूछ रहा था।'
उसके घर में और कौन है?
उनके पास रजत बोस नाम का एक सचिव है। उनके अलावा तीन नौकर, एक माली और उनके घोड़े की देखभाल के लिए एक आदमी है। श्री मजूमदार विधुर हैं। उनका एक बेटा और दो बेटियां हैं। उनका बेटा कलकत्ता में रहता है। वह जल्द ही यहां आने वाला है। दोनों बेटियां शादीशुदा हैं। मुझे नहीं पता कि वे कहां रहती हैं। 'श्री मजूमदार का शौक काफी दिलचस्प लगता है।'
‘आपका मतलब प्रेस की कटौतियों को इकट्ठा करने से है?’
'हां। उन्होंने मुझे हमारे एक चाचा की याद दिला दी। अंकल सिद्धू।'
मैं भी अंकल सिद्धू के बारे में सोच रहा था। लेकिन वह हत्या और अपराध की खबरों के अलावा भी, जो कुछ भी उन्हें दिलचस्प लगता था, उसे काट कर रख देते थे।
पुलक बाबू ने विदा ली। उन्होंने कहा कि बहुत काम है। कल कुछ आउटडोर शूट होंगे, लेकिन कलाकारों के साथ असली काम परसों से श्री मजूमदार के घर में शुरू होगा।
पुलक बाबू और उनकी टीम के जाने के बाद हम केवेंटर के खुले रेस्तरां में गए और तीन हॉट चॉकलेट ऑर्डर किए। लालमोहन बाबू ने बड़े चाव से एक लंबा घूंट लिया और कहा, 'फेलू बाबू, मेरा दिल कहता है कि यह यात्रा व्यर्थ नहीं जाएगी।'

“खैर, ऐसा क्यों होना चाहिए? हम दार्जिलिंग छुट्टियां मनाने आए हैं, मौसम सुहाना है और हवा प्रदूषण रहित है। आपको जल्द ही अपनी सेहत में सुधार महसूस होगा। हमारी यह यात्रा व्यर्थ तो नहीं जाएगी!”
‘नहीं, नहीं, मेरा मतलब वो नहीं था,’ लालमोहन बाबू ने एक समझदारी भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया।
‘श्री गांगुली, आपका क्या मतलब था?’
मैं आपके पेशे के बारे में सोच रहा हूँ।
‘मेरा पेशा? उसमें क्या है?’
‘मुझे ऐसा लग रहा है कि आपकी सेवाओं की ज़रूरत पड़ने वाली है।’ फेलुदा ने एक चारमीनार जलाई। ‘समस्या मेरे पेशे से नहीं, लालमोहन बाबू, बल्कि आपके पेशे से जुड़ी है। आप हर कोने में रहस्य खोजना नहीं छोड़ सकते। मुझे नहीं पता कि आपको ऐसा क्यों लग रहा है, लेकिन मैं आपको इतना बता सकता हूँ कि अगर कुछ अप्रिय हुआ, तो फेलु मित्तर चुपचाप खड़े होकर कुछ नहीं करेंगे।’
‘वाह, एबीसीडी से यही तो सुनना अच्छा लगता है! यही तो सही रवैया है, महोदय।’ एबीसीडी वह उपाधि थी जो लालमोहन बाबू ने फेलुदा को दी थी। इसका मतलब था एशिया का सर्वश्रेष्ठ अपराध जासूस।
मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन बिरुपाक्षा मजूमदार मुझे किसी रहस्यमय व्यक्ति के रूप में नज़र आए। आखिर वो साल दर साल दार्जिलिंग में अपराध से जुड़ी जानकारी इकट्ठा करने में अपना सारा समय क्यों बिताते थे? बेशक, इसका मतलब ये नहीं था कि वो खुद किसी संदिग्ध गतिविधि में शामिल होते। शायद ये हमारे पिछले अनुभवों की वजह से ही था। हम कितनी बार छुट्टियां मनाने गए और हर बार किसी न किसी रहस्य में फंस गए, इसकी गिनती तो मैं भूल ही गई थी। शायद यही वजह थी कि मैं भी सोच रही थी कि क्या फेलुदा को एक बार फिर अपनी काबिलियत का इम्तिहान देना पड़ेगा।
मैंने खुद से कहा, चलो देखते हैं क्या होता है।

तीन
‘अति सुंदर!’ लालमोहन बाबू ने कहा। मैंने उन्हें इससे पहले कभी इस शब्द का प्रयोग करते नहीं सुना था। लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, उन्होंने आगे कहा, ‘स्वर्गीय, अद्वितीय, गौरवशाली, भव्य, अवर्णनीय—ओह, बस इस दुनिया से परे!’
इस उत्साह के अचानक उमड़ने का कारण सीधा-सादा था। वे सुबह उठे और अपनी खिड़की से कंचनजंगा को देखा। सुबह की पहली किरण में वह गुलाबी रंग में चमकने लगा था। लालमोहन बाबू खुद को रोक नहीं पाए और मुझे अपने कमरे में ले आए। उन्होंने समझाया, 'ऐसी चीज़ का असली आनंद तभी आता है जब उसे दूसरों के साथ साझा किया जाए।' इसके बाद उन्होंने प्रशंसाओं की झड़ी लगा दी।
फेलुदा ने भी इसे देखा था, लेकिन हमारे कमरे से नहीं। योगाभ्यास समाप्त करके वह मेरे जागने से बहुत पहले ही होटल से निकल चुके थे। मॉल से ऑब्जर्वेटरी हिल तक टहलकर वह ठीक समय पर लौटे, जब हमने पहली चाय पी। उन्होंने कहा, 'जब भी मैं कंचनजंगा देखता हूँ, मुझे जवानी का एहसास होता है। शुक्र है कि ज्यादातर जगहों पर बनी नई इमारतों से ऑब्जर्वेटरी हिल तक जाने और आने वाली सड़क पर कोई फर्क नहीं पड़ा है।'
'मुझे भी बिलकुल ऐसा ही महसूस होता है, फेलू बाबू। कंचनजंगा देखने के बाद अब जीवन जीने लायक लगता है।'
'अच्छा। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई, क्योंकि इससे पता चलता है कि आपके द्वारा लिखी गई तमाम बेतुकी बातों के बावजूद, आपमें अभी भी कुछ अच्छी भावनाएं बची हुई हैं।'
लालमोहन बाबू ने इस बात को नजरअंदाज कर दिया। उन्होंने पूछा, 'आज हम क्या करने वाले हैं?'
हम भोजन कक्ष में नाश्ता कर रहे थे। फेलुदा ने आमलेट का एक टुकड़ा तोड़कर अपने मुंह में डाला। ‘मैं आज श्री मजूमदार से मिलना चाहता हूँ। कल से उनके घर में बहुत भीड़ होने वाली है। शायद आज ही एकमात्र दिन है जब हम उनके घर में शांतिपूर्वक मिल सकते हैं। मैं उनके जैसे व्यक्ति का सम्मान करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।’
'बहुत अच्छा, जैसा आपने कहा।'
हम साढ़े आठ बजे निकले। हमें मॉल से होते हुए दास स्टूडियो और केवेंटर के पास से गुजरना था और माउंट एवरेस्ट होटल तक पहुँचने के लिए पौने मील चलना था। उसके बाद श्री मजूमदार के घर का रास्ता शुरू होता था। संयोग से, हमें उसे ढूंढने में कोई कठिनाई नहीं हुई। वह लकड़ी का बना एक विशाल पुराना बंगला था, जिसकी छत लाल टाइलों की थी। उसके चारों ओर एक सुव्यवस्थित बगीचा था। उसके पीछे चीड़ का जंगल था और उसके आगे एक खड़ी पहाड़ी थी। बगीचे में काम कर रहा माली हमें देखकर आगे आ गया।

‘क्या श्री मजूमदार घर पर हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
‘हाँ। मैं किसे बताऊँ—?’
‘बस उसे बता देना कि जिन लोगों से वह कल मिला था, वे उससे मिलने आए हैं।’ माली घर के अंदर चला गया। जब हम बाहर इंतज़ार कर रहे थे, मैं घर को देखता रहा और उसके आसपास के नज़ारे की तारीफ़ करता रहा। उत्तर दिशा में कंचनजंगा साफ़ दिखाई दे रहा था, जो अब चाँदी की तरह चमक रहा था। जिसने भी इस जगह को घर बनाने के लिए चुना था, उसमें समझदारी और पसंद दोनों ही खूब थीं।
श्री मजूमदार और माली एक साथ बाहर आए।
‘शुभ प्रभात! अंदर आइए,’ श्री मजूमदार ने आमंत्रित किया। हम ‘नयनपुर विला’ लिखे हुए सफेद लकड़ी के गेट से अंदर गए और अपने मेज़बान के पास पहुँचे। मैंने सोचा, कभी तो वे बहुत आकर्षक रहे होंगे। अभी भी वे बीमार तो बिल्कुल नहीं लग रहे थे। उनके साथ एक और सज्जन बाहर आए थे। उनका परिचय रजत बोस के रूप में कराया गया, जो उनके सचिव थे। मध्यम कद और साफ रंगत वाले श्री बोस ने भूरे रंग की पतलून के ऊपर गहरे नीले रंग का पोलो नेक स्वेटर पहना हुआ था।
हमें ड्राइंग रूम में ले जाया गया। एक कोने में कांच का एक बक्सा था, जो विभिन्न आकारों और आकृतियों की चांदी की ट्रॉफियों से भरा हुआ था। जाहिर है, ये ट्रॉफियां श्री मजूमदार ने खेल प्रतियोगिताओं में जीती थीं। फर्श पर तेंदुए की खाल बिछी हुई थी, और दीवार पर दो हिरणों और एक बाइसन के सिर लटके हुए थे। हम दो सोफों पर बैठ गए।
श्री मजूमदार ने हमें बताया, 'मेरा बेटा, समीरन, आज शाम आ रहा है। मुझे नहीं लगता कि आपको उसमें और मुझमें कोई समानता मिलेगी। वह एक व्यवसायी है और शेयर बाजार में काफी सक्रिय है।'
'क्या वह छुट्टी मनाने आ रहा है, या यह पूरी तरह से व्यावसायिक मामला है?' उन्होंने कहा कि उन्होंने एक हफ्ते की छुट्टी ली है। लेकिन वे बहुत बेचैन हैं, घर पर बैठकर आराम करने वाले तो हैं ही नहीं, कुछ दिनों के लिए भी नहीं। उनकी उम्र लगभग तीस साल है, लेकिन शादी करने का कोई संकेत नहीं दिख रहा। पता नहीं कब शादी करेंगे। खैर, मेरे बेटे की बात छोड़िए। आप लोग अपने बारे में बताइए।
फेलुदा ने कहा, 'हम आपके बारे में सुनने आए हैं।'
‘तो मुझे उम्मीद है कि आपके पास पूरा दिन है,’ श्री मजूमदार हँसे। ‘मैंने बहुत रंगीन जीवन जिया है। लगभग चालीस साल की उम्र तक, ऐसा कुछ भी नहीं था जो मैंने न किया हो—खेलकूद, चाहे वो इनडोर हो या आउटडोर, शिकार, बस नाम लीजिए। लेकिन उसके बाद, मुझे एक बैंक का प्रभार सौंपा गया, जिसका मतलब था बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ संभालना। इसलिए मुझे बाकी गतिविधियों में कटौती करनी पड़ी और अपने काम पर ध्यान केंद्रित करना पड़ा।’
लेकिन फिर भी आपका पसंदीदा शौक तो था ही?
‘आपका मतलब अखबार की कटिंग इकट्ठा करने से है? जी हाँ। मैंने यह शौक कभी नहीं छोड़ा। रजत आपको एक नमूना दिखा सकता है।’ उन्होंने श्री बोस को सिर हिलाकर इशारा किया, जो उठकर अगले कमरे में चले गए। वे एक मोटी स्क्रैपबुक

लेकर लौटे और उसे फेलुदा को सौंप दिया। लालमोहन बाबू और मैं जहाँ बैठे थे, वहाँ से उठकर उसे करीब से देखने लगे।
यह निस्संदेह एक उल्लेखनीय वस्तु थी।
'मैं देख सकता हूं कि आपके पास लंदन के एक अखबार की कटिंग भी हैं,' फेलुदा ने टिप्पणी की।
'हां। मेरा एक दोस्त लंदन में डॉक्टर है। मैंने उसे हिदायत दी है कि वह मुझे कोई भी सनसनीखेज खबर भेजे जो उसे पढ़ने को मिले।'
‘हत्या, डकैती, दुर्घटनाएं, आगजनी, आत्महत्या... ये सब तो आपके पास हैं ही, है ना?’
'हाँ यह सही है।'
लेकिन आप मुझे उस आपराधिक मामले के बारे में क्या बता रहे थे जिसका अभी तक समाधान नहीं हुआ है?
'जी हां, ऐसा एक मामला है। मैं आपको संबंधित रिपोर्ट दिखा सकता हूं। ऐसा ही एक और मामला है, हालांकि आपको उसकी कोई कटिंग देखने को नहीं मिलेगी, क्योंकि प्रेस को इसके बारे में पता नहीं चला।'
'क्या हुआ?'
नहीं, कृपया मुझसे स्पष्टीकरण न मांगें। मुझे खेद है कि मैं आपको इससे अधिक कुछ नहीं बता सकता। जाओ, रजत, कृपया 1969 वाला अंक ले आओ।
श्री बोस एक और स्क्रैपबुक लेकर वापस आए।
‘यह विशेष रिपोर्ट जून के आसपास स्टेट्समैन में प्रकाशित हुई थी। जहाँ तक मुझे याद है, इसका शीर्षक था, “गबनकर्ता का पता नहीं चला”।’
‘लो, मुझे मिल गया,’ फेलुदा ने पन्ने पलटते हुए कहा। उसने पहली कुछ पंक्तियाँ पढ़ीं, फिर ऊपर देखा और हैरानी से बोला, ‘अरे, ये तो तुम्हारे अपने बैंक के बारे में है!’
‘इसीलिए मैं इसे कभी नहीं भूल सकता। वी. बालापोरिया नाम का एक युवक हमारे लेखा विभाग में काम करता था। एक दिन वह 150,000 रुपये लेकर गायब हो गया। पुलिस ने पूरी कोशिश की, लेकिन उसे पकड़ नहीं पाई। उस समय मैं बैंक का उप महाप्रबंधक था।’
फेलुदा ने धीरे से कहा, 'मुझे मामला धुंधला-सा याद है। दरअसल, पूर्णकालिक जांचकर्ता बनने से पहले मैं वास्तविक अपराधों के बारे में बहुत पढ़ता था। यह घटना इतने लंबे समय पहले हुई थी कि अब मुझे सारी बातें याद नहीं हैं।' इस समय तक लालमोहन बाबू और मैं रिपोर्ट पढ़ चुके थे।
‘उस समय भी मेरी यही इच्छा थी कि काश हमें शर्लक होम्स या हरक्यूल पोइरोट जैसा कोई मिल जाता,’ श्री मजूमदार ने उदास होकर सिर हिलाया। ‘एक निजी जासूस शायद कुछ कर पाता। सच कहूँ तो, मुझे पुलिस पर ज्यादा भरोसा नहीं है।’ फेलुदा ने कुछ और पन्ने पलटे, अन्य कुछ लेखों पर सरसरी नजर डाली, फिर विनम्रतापूर्वक 'धन्यवाद' कहते हुए उसे श्री बोस को लौटा दिया।
एक वेटर ट्रे में कॉफी लेकर आया। उसे देखकर मुझे हल्की सी हैरानी हुई। उसका व्यवहार इतना सलीकेदार और शालीन था कि यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल था कि वह नौकर है। हमने ट्रे से अपने कप उठा लिए।

फेलुदा ने कहा, 'हमने तुम्हारा घोड़ा बाहर देखा, क्या तुम आमतौर पर उसी से आते-जाते हो?'
मैं दिन भर घर पर ही रहती हूँ, शाम को बस एक बार बाहर जाती हूँ। मेरी आदतें दूसरों से बिल्कुल अलग हैं। दरअसल, सेवानिवृत्ति के बाद से मेरी दिनचर्या काफी अजीब हो गई है। मैंने आपको बताया था ना कि मुझे अनिद्रा की समस्या है? आपको पता है मैं क्या करती हूँ? मैं दोपहर में सोती हूँ—लेकिन वो भी एक गिलास दूध के साथ एक गोली लेने के बाद। मैं शाम 5 बजे का अलार्म लगाती हूँ, उसके बाद एक कप चाय पीती हूँ और फिर बाहर जाती हूँ। मैं अपनी रातें पढ़ने में बिताती हूँ।
‘क्या तुम रात को बिल्कुल नहीं सोते?’ फेलुदा ने आश्चर्य से पूछा।
नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे लगता है मेरे दादाजी की भी ऐसी ही आदत थी। वो एक ताकतवर जमींदार थे। रात में वो अपने कागजात देखते, हिसाब-किताब करते और अपनी जमीन-जायदाद की देखभाल के लिए जो भी जरूरी होता, वो सब करते थे। दिन में वो अफीम लेते और पूरी दोपहर सोते रहते थे। वैसे, अगर आप धूम्रपान करना चाहें तो कर सकते हैं। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।
‘धन्यवाद,’ फेलुदा ने चारमीनार सिगरेट जलाते हुए कहा। मैंने श्री मजूमदार की ओर दोबारा देखा। उनकी उम्र लगभग साठ वर्ष थी, लेकिन वे न तो दिखते थे और न ही उनका व्यवहार ऐसा था।
‘कल से यहाँ गोलीबारी शुरू हो रही है, है ना? इससे आपको काफी तनाव और परेशानी हो सकती है।’
'नहीं, मुझे ज़रा भी आपत्ति नहीं है। मैं घर के एक कोने में, उत्तरी तरफ रहूँगा। शूटिंग दूसरे कोने में होगी। वह निर्देशक मुझे बहुत अच्छा इंसान लगा, इसलिए मैं मना नहीं कर सका।'
किसी के कुछ कहने से पहले ही एक जीप आकर बाहर रुक गई। फिल्म यूनिट के कुछ सदस्य उससे बाहर निकले। पुलक घोषाल बगीचे को पार करके दरवाजे पर दस्तक देने गए।
‘अंदर आइए, महोदय!’ श्री मजूमदार ने पुकारा। पुलक बाबू अंदर आए, उनके पीछे रैना और महादेव वर्मा भी आए।
‘हम आउटडोर शूटिंग के लिए जा रहे हैं,’ पुलक बाबू ने कहा। ‘हमने सोचा कि बस थोड़ी देर के लिए रुककर आप लोगों से मिल लें। आप इन अभिनेताओं से नहीं मिले हैं, है ना? ये राजेन रैना हैं और वो महादेव वर्मा हैं। एक हीरो हैं और दूसरे विलेन।’
आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। क्यों न आप कॉफी के लिए रुकें?
नहीं, धन्यवाद श्रीमान मजूमदार। आज हमारे पास समय नहीं है। इसके अलावा, कल से हम लगभग पूरा दिन आपके घर में ही बिताएंगे। वैसे, आपके सचिव ने बताया कि आप आमतौर पर दोपहर में सोते हैं। हमें इस घर के पास एक जनरेटर चलाना पड़ेगा। आशा है इससे आपको कोई परेशानी नहीं होगी?
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। मैं हमेशा अपना दरवाजा और सारी खिड़कियाँ बंद कर लेता हूँ और पर्दे खींच देता हूँ। बाहर से कोई आवाज़ मुझ तक नहीं पहुँच सकती।

मैंने देखा कि श्री मजूमदार रैना और वर्मा की ओर तीखी निगाहों से देख रहे थे। कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने कहा, 'अब मैं लोगों को बता सकता हूँ कि मैं दो फिल्म सितारों से मिला हूँ। इससे पहले मुझे यह सौभाग्य प्राप्त नहीं था।'
पुलक बाबू ने लालमोहन बाबू की ओर मुड़कर कहा, 'लालूदा, मेरी आपसे एक विनती है।'
'हाँ?'
‘लालूदा, मेरी याददाश्त काफी तेज है। मुझे अच्छी तरह याद है कि 1970 में गोरपार फ्रेंड्स क्लब में हमने जो नाटक आयोजित किया था, उसमें आपने एक भूमिका निभाई थी।’
‘हे भगवान, पुलक, मैं भी इसे भूली नहीं हूँ। यह कोई आसान भूमिका नहीं थी, है ना? एक अभिनेता के रूप में मेरा पहला और आखिरी प्रदर्शन!’
नहीं, नहीं, यह आपका आखिरी प्रदर्शन नहीं है।
'आपका क्या मतलब है?'
जी हां, मैं उसी पर आ रहा हूं। देखिए, स्थानीय बंगाली क्लब ने छोटी भूमिकाओं के लिए कुछ लोगों को देने का वादा किया था। लेकिन अब वे कह रहे हैं कि उनके ज्यादातर लोग कलकत्ता में छुट्टियां मनाने चले गए हैं। मुझे बहुत निराशा हुई है। एक खास भूमिका है, आपको पता ही है, खलनायक के दाहिने हाथ के आदमी की—’
'कौन? अघोरचंद बटलीवाला?'
'हाँ।'
लेकिन वह केवल दो दृश्यों में ही दिखाई देता है।
मुझे पता है। इसीलिए मुझे आपकी मदद चाहिए। मैं आज शाम किसी को भेजकर आपको आपके डायलॉग्स दिलवा दूँगा। कृपया मना मत करना। मुझे पता है आप कर सकते हैं। आपको मेरे साथ सिर्फ तीन दिन काम करना होगा।
लेकिन... लेकिन... मैं किसी खलनायक का दाहिना हाथ तो नहीं दिखता, है ना? वैसे भी, हम दार्जिलिंग सिर्फ दस दिनों के लिए आए हैं!
‘काफी समय है, मुझे कुछ दिनों से ज्यादा की जरूरत नहीं है, मैंने तुमसे कहा था। पूरे मेकअप, छोटी दाढ़ी और विग के साथ, तुम बिल्कुल उस किरदार में ढल जाओगे। बताओ महादेव, क्या मैंने सही चुनाव नहीं किया?’
‘ज़रूर। बिलकुल!’ महादेव वर्मा मुस्कुराए।
‘क्या तुमने कभी सिगार पी है, लालुदा?’
‘मैं पहले सिगरेट पीता था, लेकिन मैंने दस साल पहले सिगरेट पीना छोड़ दिया,’ लालमोहन बाबू ने जवाब दिया।
'कोई बात नहीं। आपके हाथ में सिगार होना चाहिए। और काले चश्मे पहनें।' लालमोहन बाबू की आँखों में चमक आ गई। मैं समझ गया कि उन्हें ज्यादा समझाने- बुझाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
‘ठीक है, पुलक, चूंकि तुम मुश्किल में हो, मुझे तुम्हारी मदद करनी ही चाहिए, है ना? वैसे भी, अगर सोचें तो, मेरी अपनी कहानी में एक अतिथि भूमिका निभाना भी अच्छा विचार हो सकता है। लेकिन मुझे एक बात पर जोर देना होगा।’
'यह क्या है?'

'क्रेडिट्स में मेरे नाम के आगे "हूँ" लिखा होना चाहिए। मैं पेशेवर अभिनेता के रूप में पहचाना जाना नहीं चाहता। लोगों को पता होना चाहिए कि मैं सिर्फ एक शौकिया कलाकार हूँ। ठीक है?'
'अछा जी।'
मैंने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपना अनुरोध रखा। मैंने पूछा, ‘क्या मैं आकर शूटिंग देख सकता हूँ?’ पुलक घोषाल ने कहा, ‘बिल्कुल, प्यारे बच्चे, बिल्कुल!’

चार
पुलक घोषाल और उनकी टीम चली गई। हमारी कॉफी खत्म हो चुकी थी, इसलिए फेलुदा उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है अब हमें चलना चाहिए। आशा है हम जल्द ही फिर मिलेंगे।'
श्री मजूमदार ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा, 'माफ़ कीजिए?' लेकिन फिर उन्होंने खुद को संभाला और सहजता से कहा, 'ओह, ठीक है। हाँ, मुझे भी यही उम्मीद है।' हम नयनपुर विला से बाहर निकले और अपने होटल की ओर वापस चलने लगे।
वापसी के रास्ते में फेलुदा ने एक शब्द भी नहीं कहा। किसी कारणवश, वह कुछ खोया-खोया सा लग रहा था। लेकिन दोपहर के भोजन के दौरान, उसने लालमोहन बाबू की ओर मुड़कर कहा, 'अरे श्रीमान गांगुली, आप तो अप्रत्याशित प्रतिभा के धनी हैं! हम आपको वर्षों से जानते हैं, और फिर भी आपने हमें अपने अभिनय करियर के बारे में नहीं बताया! आपने किसी नाटक में एक कठिन भूमिका निभाई थी, है ना?'
लालमोहन बाबू ने मछली के एक टुकड़े को अपने मुंह में डाला और कहा, "सच कहूँ तो, फेलू बाबू, मेरे बारे में ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मैंने कभी नहीं बताईं। क्या आपको पता है, मैं 1959 में उत्तर कोलकाता का कैरम चैंपियन था? मेरे नाम साइकिलिंग में कई रिकॉर्ड हैं। फिर मैंने कविता पाठ प्रतियोगिता में पदक जीता - एक बार नहीं, बल्कि तीन बार। यह पहली बार नहीं है जब मुझे किसी फिल्म में अभिनय करने का प्रस्ताव मिला है। बीस साल पहले भी मुझे ऐसा प्रस्ताव मिला था। तब मेरा यह गंजा सिर घने, घुंघराले बालों से ढका हुआ था। कल्पना कीजिए? लेकिन मैंने वह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। नहीं, महोदय। मैंने मन बना लिया था। मैं एक पेशेवर लेखक बनना चाहता था, सिर्फ यह देखने के लिए कि क्या सिर्फ लिखकर पर्याप्त कमाई करना संभव है। एक ज्योतिषी ने मुझसे कहा था कि यह संभव है। उन्होंने कहा था, "तुम्हारी कलम में जादू है, तुम्हें लिखना चाहिए।" वे सही थे। लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे इतनी सफलता मिलेगी।"
‘मैं समझ गया। मुझे एक छोटी सी बात बतानी है, लालमोहन बाबू।’
'क्या?'
आपने कहा था कि आपने दस साल पहले धूम्रपान छोड़ दिया था। अब अगर आपको सिगार पीने के लिए मजबूर किया जाए, तो परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।
‘अरे, तुम बिल्कुल सही कह रहे हो। तुम्हें क्या लगता है मुझे क्या करना चाहिए?’
'मेरा सुझाव है कि आप कुछ सिगार खरीदें और अभ्यास करना शुरू करें। धुएं को अंदर न लें। अगर आप ऐसा करेंगे, तो आपको खांसी आने लगेगी और इसका मतलब होगा कि आपका हर शॉट बेकार हो जाएगा।'

जी हाँ, सलाह के लिए धन्यवाद, महोदय।
हमने दोपहर में थोड़ा आराम किया, फिर चार बजे सैर के लिए निकल पड़े। हम वेधशाला पहाड़ी तक जाना चाहते थे। पहाड़ी के उत्तरी भाग से कंचनजंगा का अद्भुत दृश्य दिखाई देता था।
लालमोहन बाबू ने सामने दिखी पहली तंबाकू की दुकान से सिगार का एक पैकेट खरीदा। पहला कश लेते ही लगभग हादसा हो गया, लेकिन किसी तरह उन्होंने खुद को बचा लिया। मैंने देखा कि उनके हाथ में सिगार ने उनके पूरे व्यक्तित्व में बदलाव ला दिया था। वे पहले से कहीं अधिक आत्मविश्वास से भरे हुए लग रहे थे, बड़े आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहे थे और होठों पर हल्की सी मुस्कान लिए इधर-उधर देख रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे अघोरचंद बटलीवाला की भूमिका निभाने लगे हों।
अगले बाएं मोड़ पर कंचनजंगा दिखाई देने लगी। सूर्य की अंतिम किरणें सीधे उस पर पड़ रही थीं, जिससे वह सोने के स्तंभ की तरह चमक रही थी। लालमोहन बाबू ने मुंह खोला, लेकिन प्रशंसा के शब्दों की बौछार करने से खुद को रोक लिया। जब हम पहाड़ी का चक्कर लगाकर मॉल लौटे, तब तक पांच बज चुके थे और सूरज पहाड़ी के पीछे छिप चुका था। घोड़े के स्टैंड के पास एक छोटी सी भीड़ जमा हो गई थी। ध्यान से देखने पर पता चला कि फिल्म क्रू के लोग दिन भर की शूटिंग के बाद लौट रहे थे, उनके पीछे बड़ी संख्या में दर्शक थे। लेकिन लोग काफी सभ्य लग रहे थे, इसलिए मुझे नहीं लगा कि वे कोई गड़बड़ी करेंगे। रैना और वर्मा दोनों को ऑटोग्राफ देने के लिए कई बार रुकना पड़ा। फिर पूरा समूह नेहरू रोड पर बाएं मुड़ा और अपने होटल की दिशा में चल पड़ा। 'शुभ संध्या!' एक आवाज आई।
वह बिरुपाक्षा मजूमदार थे, जो अपने घोड़े पर सवार थे। जैसे ही हम उनके करीब पहुंचे, वे घोड़े से उतर गए।
‘आज सुबह मैं आपको एक बात बताना भूल गया था,’ उसने अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा। ‘यह बात मैंने अपने माली से सुनी है, इसलिए मैं आपको यह नहीं बता सकता कि उसकी जानकारी कितनी विश्वसनीय है।’
'उसने आपको क्या बताया?'
'ऐसा लगता है कि पिछले कुछ दिनों से एक आदमी हमारे गेट के बाहर मंडराता हुआ, घर पर नजर रखता हुआ देखा गया है।'
‘अरे वाह!’
'मेरा माली कई सालों से मेरे साथ है; मेरे पास उस पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है।'
क्या वह इस आदमी का वर्णन कर पाया है?
'हां, लेकिन ठीक से नहीं। उसने मुझे बस इतना बताया है कि वह आदमी मध्यम कद का है और दाढ़ी नहीं बनाता। जब भी माली उसे करीब से देखने की कोशिश करता है, वह पेड़ के पीछे गायब हो जाता है। लेकिन वह सिगरेट पीता है, क्योंकि माली ने पेड़ के पीछे से धुआं उठता देखा है।'
क्या आप कोई ऐसा कारण बता सकते हैं जिसकी वजह से कोई आपके घर पर नजर रखना चाहेगा?

जी हाँ। मेरे घर में एक अनमोल वस्तु है। यह अष्टधातु से बनी कृष्ण की मूर्ति है। यह पहले नयनपुर के एक मंदिर में थी। यहाँ कई लोगों ने इसे देखा है, और कई अन्य लोग शायद जानते होंगे कि यह मेरे पास है।
'आप इसको कहाँ रखते हैं?'
‘मेरे बेडरूम में एक शेल्फ पर।’
क्या आप इसे ताला लगाकर नहीं रखते?
मैं रात भर जागता रहता हूँ, और मेरी रिवॉल्वर हमेशा मेरे पास रहती है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि कोई चोर मेरे घर में घुस भी पाएगा।
'क्या आपके घर पर हमला करने की कोई और वजह हो सकती है?'
मैं आपको बस इतना ही बता सकती हूँ कि पूरी संभावना है कि कोई मुझे नुकसान पहुँचाना चाहेगा। कृपया मुझसे स्पष्टीकरण न माँगें—मुझे खेद है कि मैं आपको इससे अधिक कुछ नहीं बता सकती। अगर कुछ अप्रिय घटित होता है, श्रीमान मिटर, तो क्या मैं आपके समर्थन पर भरोसा कर सकती हूँ?
‘बिल्कुल। यह तो कहने की जरूरत ही नहीं है।’
'धन्यवाद। अब मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।'
इसी समय, लगभग तीस वर्ष का एक व्यक्ति हमारी ओर आता हुआ दिखाई दिया।
श्री मजूमदार ने कहा, ‘इधर आओ, समीरन, मैं तुम्हें अपने दोस्तों से मिलवाता हूँ। ये मेरा बेटा समीरन है, और ये श्री प्रदोष मित्तर हैं, और श्री लालचंद — नहीं, माफ़ कीजिए, लालमोहन... गांगुली, है ना?’
'जी श्रीमान।'
‘और ये तपेश हैं, प्रदोष मित्तर के चचेरे भाई।’
हमने एक-दूसरे का अभिवादन किया। समीरन मजूमदार दिखने में बहुत ही आकर्षक व्यक्ति थे और उन्होंने लाल रंग की जैकेट पहन रखी थी। उन्होंने फेलुदा से कहा, 'आप एक मशहूर जासूस हैं, है ना?'
'मुझे नहीं पता कि मैं मशहूर होऊंगा या नहीं, लेकिन जासूसी करना निश्चित रूप से मेरा पेशा है।'
मुझे उपन्यास पढ़ना बहुत पसंद है। मैं एक दिन आपसे लंबी बातचीत करना चाहूंगी।
'ज़रूर। मुझे इसका इंतज़ार रहेगा।'
लेकिन आज मुझे माफ़ करना। मैं खरीदारी करने जा रहा हूँ।’ समीरन मजूमदार चला गया। उसके पिता अपने घोड़े पर सवार हो गए। ‘मुझे भी अब चलना चाहिए। जल्द ही मिलते हैं।’
जी हाँ। जरूरत पड़ने पर मुझे फोन करने में संकोच न करें। हम होटल कंचनजंगा में ठहरे हुए हैं।
जब हम बातें कर रहे थे, तभी एक आदमी आया और उसने लालमोहन बाबू के हाथ में एक कागज़ थमा दिया। पता चला कि उसे पुलक घोषाल ने भेजा था, और उस कागज़ पर कल के लिए उनके संवाद लिखे थे। उन्होंने कहा, “उन्होंने मेरे हिंदी संवाद बंगाली लिपि में लिख दिए हैं। वाकई बहुत अच्छा किया उन्होंने। मुझे हिंदी अच्छी तरह से पढ़ना नहीं आता।”
‘तुम्हारे पास कितनी लाइनें हैं?’
‘अह... साढ़े तीन।’

‘बहुत अच्छा, इन्हें बाद में मेरे कमरे में ले आना। हमें रिहर्सल करनी है और यह सुनिश्चित करना है कि तुम हिंदी पढ़ने से बेहतर बोल सको।’
हम गरमा गरम चॉकलेट पीने के लिए केवेंटर के यहाँ वापस गए। बाहर काफी ठंड थी, खासकर इसलिए क्योंकि आज शाम आसमान साफ था। कई तारे पहले ही निकल चुके थे, और आकाशगंगा भी हल्की-हल्की दिखाई दे रही थी।
'क्या मैं आपसे जुड़ सकता हूं?'
हम सब उस समय चौंक गए जब हमने देखा कि हमारी मेज पर एक खाली कुर्सी के पीछे एक बुजुर्ग सज्जन खड़े थे और हल्की सी मुस्कान लिए हुए थे। उनकी उम्र लगभग साठ वर्ष रही होगी, उन्होंने चश्मा पहना हुआ था और उनके बाल सफ़ेद-काले रंग के थे।
‘जी हां, बिल्कुल,’ फेलुदा ने आमंत्रित किया।
‘मैं आपको जानता हूँ,’ उस सज्जन ने फेलुदा की ओर देखते हुए कहा। ‘मैंने लगभग एक साल पहले एक पत्रिका में आपका साक्षात्कार पढ़ा था। उसमें आपकी तस्वीर भी थी।’
'हां, मुझे याद है।'
‘मुझे इस तरह अचानक अंदर आने के लिए क्षमा करें। देखिए, मैं श्री मजूमदार के घर के बगल में रहता हूँ। मैंने आज सुबह आपको वहाँ जाते देखा था। मेरे घर का नाम 'द रिट्रीट' है, और मैं हरिनारायण मुखर्जी हूँ।’
'नमस्कार। ये मेरे मित्र लालमोहन गांगुली हैं; और ये मेरे चचेरे भाई तपेश हैं।'
'नमस्कार। क्या आप यहां किसी केस पर काम करने आए हैं?'
नहीं, मैं यहाँ सिर्फ छुट्टी मनाने आया हूँ।
‘मैं समझ गया। मैं बस सोच रहा था... मेरा मतलब है, अगर आप किसी जासूस को श्री मजूमदार के घर में जाते हुए देखें...’
‘क्या वह किसी मुसीबत में है?’
'खैर, उनके बारे में बहुत सारी अफवाहें सुनने को मिलती हैं।'
'अरे नहीं, मुझे नहीं लगता कि वह किसी भी तरह की मुसीबत में है; न ही मुझे लगता है कि अफवाहों पर ध्यान देना चाहिए।'
'जी हां, आप बिल्कुल सही हैं।'
मुझे ऐसा लगा कि फेलुदा ने श्री मजूमदार के साथ हमारी आखिरी बातचीत का जानबूझकर जिक्र नहीं किया। आखिर हम उस आदमी को जानते ही नहीं थे। इसके अलावा, वह बिना बुलाए ही जबरदस्ती आ गया था।
तब तक काफी अंधेरा हो चुका था और रेस्टोरेंट में रोशनी भी बहुत कम थी। लेकिन उस मंद रोशनी में भी मैं लालमोहन बाबू को अपने संवाद याद करते और धीरे-धीरे बोलते हुए देख सकता था।
‘अब मैं चलता हूँ, श्रीमान मित्तर। आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई,’ श्री मुखर्जी ने उठते हुए कहा। एक पल बाद ही वे चले गए।
'मुझे लगता है कि वह यहां काफी समय से रह रहा है,' फेलुदा ने टिप्पणी की।
'क्या सोच कर तुम यह कह रहे हो?'

‘उसे ठंड की आदत है। क्या तुमने नहीं देखा कि उसने सूती कमीज के ऊपर सिर्फ ऊनी शॉल ओढ़ी हुई थी? उसने मोजे भी नहीं पहने थे। मैं उसे थोड़ा और बेहतर तरीके से जानना चाहता हूँ।’
'क्यों?'
'आज उसने जो संकेत दिए हैं, उनकी वजह से। हो सकता है उसके पास कुछ जानकारी हो। कौन जाने?'
मैंने चॉकलेट की चुस्की ली और अपने आगमन के बाद मिले लोगों और उनकी कही बातों के बारे में सोचने लगी। अगर यही सिलसिला चलता रहा तो धमाका हो सकता है।
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि यह इतनी जल्दी हो जाएगा।

पाँच
फिल्म यूनिट के एक सदस्य, श्री नीतीश सोम, अगली सुबह नाश्ते के तुरंत बाद लालमोहन बाबू को लेने पहुंचे। फेलुदा और लालमोहन बाबू ने पिछली शाम को यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत मेहनत की थी कि उन्हें अपने संवाद सही ढंग से याद हो जाएं।
श्री सोम ने पूछा, ‘श्री घोषाल ने कहा कि वे चाहते हैं कि आप अपने कपड़े पहनें, लेकिन हमें अभी तक यह नहीं पता कि कौन सा रंग उपयुक्त रहेगा। तो क्या आप यहां मौजूद सभी कपड़े पैक कर सकते हैं?’
‘क्या मैं आपके साथ चल सकता हूँ?’ मैंने कहा। श्री सोम ने एक मिनट सोचा और जवाब दिया, ‘आप लगभग ग्यारह बजे क्यों नहीं आते? हम आज दोपहर बारह बजे से पहले शूटिंग शुरू नहीं करेंगे। मैं श्री गांगुली को इसलिए ले जा रहा हूँ क्योंकि हमें उनके मेकअप के लिए पर्याप्त समय चाहिए। लेकिन अगर आप ग्यारह बजे आते हैं, तो आप मुहूर्त के उपलक्ष्य में हमारी छोटी सी रस्म देख पाएंगे — यानी शूटिंग की शुरुआत। उसके बाद, अगर आप चाहें तो रुककर हमारे साथ दोपहर का भोजन कर सकते हैं।’
लालमोहन बाबू साढ़े आठ बजे अपना सूटकेस लेकर निकल गए। फेलुदा और मैं आधे घंटे बाद जलपहाड़ रोड पर टहलने के लिए निकले। फेलुदा ने कहा, 'पूरी सुबह होटल में बिताने का कोई मतलब नहीं है!'
आज की सुबह भी कल की तरह ही खूबसूरत थी। सूरज खूब चमक रहा था और कंचनजंगा अपनी पूरी शान से चमक रहा था। आज मॉल में काफी भीड़ थी। बहुत सारे लोग अपनी पूजा की छुट्टियां बिताने आए थे। हम घोड़े के ठेके से आगे बढ़े और चलते रहे। फेलुदा ने सिगरेट जलाई। वह सिगरेट छोड़ने की बहुत कोशिश कर रहा था, लेकिन नाश्ते के बाद वह सिगरेट के बिना नहीं रह सका।
‘टॉपशे, तुम इसके बारे में क्या सोचते हो?’ उसने आसपास के नजारे को देखते हुए पूछा।
'मुझे केवल बिरुपाक्षा मजूमदार ही दिलचस्प लगे।'
'हां, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि आपने उनके बारे में कई दिलचस्प बातें जान ली हैं। एक ऐसा व्यक्ति जो रात को सोता नहीं है, अपना समय सनसनीखेज खबरें इकट्ठा करने में बिताता है, आपको बताता है कि उसके जीवन में एक रहस्य है लेकिन उसके विवरण बताने से इनकार करता है, और अपने बेडरूम में एक खुली शेल्फ पर एक कीमती मूर्ति रखता है, उसे निश्चित रूप से साधारण नहीं कहा जा सकता।'
उनके बेटे ने मुश्किल से ही अपना मुंह खोला।
'सच है। दरअसल, मुझे यह बात अजीब लगी। ऐसा लग रहा था मानो वह ज्यादा कुछ कहने से डर रहा हो, कहीं वह कुछ ऐसा न कह दे जो उसे नहीं कहना चाहिए।'
और रजत बोस?

‘आप उनके बारे में क्या सोचते हैं?’
मुझे लगता है उसकी नज़र कमज़ोर है, लेकिन उसने चश्मा न पहनने का फैसला किया है। क्या आपने उसे कुर्सी से टकराते हुए नहीं देखा?
'बहुत बढ़िया। शायद उनके पास चश्मा है, लेकिन या तो टूट गया है या खो गया है। मुझे लगता है कि दूर की चीजें उन्हें दिखाई नहीं दे रही हैं। मुझे यकीन है कि उनकी नज़दीकी दृष्टि ठीक है, वरना वे उन स्क्रैपबुक को बाहर नहीं लाते।'
‘बॉम्बे के हीरो और विलेन के बारे में क्या?’
‘तुम बताओ। देखते हैं तुमने कितना ध्यान दिया है।’
मैंने कल कुछ अजीब चीज देखी।
'क्या?'
'श्री मजूमदार परेशान लग रहे थे—नहीं, बिल्कुल परेशान तो नहीं—लेकिन क्या वे रैना और वर्मा से मिलने के बाद अचानक कुछ ज्यादा ही चिंतित नहीं हो गए थे?'
'हाँ। लेकिन उसका मन तो भटकता ही रहता है, है ना? मानो उसके मन में हर समय कुछ न कुछ चलता रहता है। अगर हमें उसके बारे में स्थानीय अफवाहें सुनने का मौका मिले तो शायद हमें पता चल जाए कि वह क्या है।'
हम डेढ़ घंटे बाद होटल लौट आए। मैं ग्यारह बजकर साढ़े ग्यारह बजे फिर निकल गया। फेलुदा ने कहा, 'मेरी चिंता मत करो, मैं ऑब्जर्वेटरी हिल के ऊपर बने गुम्फे तक पहुँचने की कोशिश करूँगा। तुम बस जाओ और मज़े करो।' मैं लगभग बीस मिनट में नयनपुर विला पहुँच गया। सबसे पहले मुझे जनरेटर की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन मैं उसे देख नहीं सका। यूनिट के एक सदस्य ने मुझे देखा और मुझे अंदर ले जाने के लिए आगे आया। शूटिंग घर के दक्षिणी हिस्से में होनी थी। हमने कल घर का यह हिस्सा नहीं देखा था। एक कमरा बहुत रोशन था। प्राकृतिक रोशनी को रोकने के लिए सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ सील कर दी गई थीं। शायद फिल्माए जाने वाले दृश्य में रात के समय कुछ घटित होता हुआ दिखाया जाना था।
लेकिन हमारा जटायु कहाँ था?
ओह, वो रहा! उसे पहचानने में मुझे कुछ सेकंड लगे। दाढ़ी और विग ने उसका रूप पूरी तरह बदल दिया था। वो सचमुच किसी खलनायक जैसा लग रहा था। मेरी नज़र पड़ते ही वो मेरे पास आया और गंभीरता से बोला, 'तुम्हें क्या लगता है? क्या मैं ठीक रहूंगा?'
'ओह, ज़रूर। मुझे उम्मीद है कि आपको अपने डायलॉग याद होंगे?'
'बिल्कुल।'
इसी समय, पुलक बाबू ने सेट से आवाज़ दी। 'लालूदा!' लालमोहन बाबू दौड़कर महादेव वर्मा के सामने वाली कुर्सी पर जा बैठे, जो एक छोटे सोफे पर बैठे अपनी मूंछों को सहला रहे थे।
‘देखो, लालुदा,’ पुलक बाबू ने कहा, ‘मैं तुम्हें समझाता हूँ कि तुम्हें क्या करना है। जब मैं कहूँ “एक्शन!”, तो तुम्हें अपनी जेब से एक सिगार निकालकर अपने मुँह में रखना है।’

‘महादेव सिगरेट निकालेंगे। फिर आपको माचिस की डिब्बी लानी है, महादेव की सिगरेट जलानी है, और फिर अपनी सिगार जलानी है, कुर्सी पर पीछे झुकते हुए। मैं फिर “हाँ” कहूँगा। फिर आपको कश लेना है, और अपनी पहली पंक्ति बोलनी है। इससे शॉट समाप्त हो जाएगा। याद रखें, यह मुख्य रूप से आपका शॉट है, क्योंकि कैमरा आपका चेहरा और महादेव की पीठ दिखाएगा। ठीक है? ये लीजिए सिगार और माचिस की डिब्बी।’
'ठीक है।'
एक मिनट बाद कैमरा चालू हो गया। 'साउंड!' पुलक बाबू ने कहा, 'एक्शन!' लालमोहन बाबू ने सिगार मुंह में डाला, लेकिन माचिस जलाने में नाकाम रहे। मैंने देखा कि वह माचिस की तीली को उल्टा पकड़े हुए थे और बेबसी से उसके सादे सिरे को डिब्बे पर रगड़ रहे थे। 'कट, कट! लालुदा, प्लीज़—!'
'माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए। अगली बार मैं ज़्यादा सावधान रहूँगा।'
दूसरे शॉट में, उसने सफलतापूर्वक सिगार जला लिया, लेकिन काफी धुआं अंदर खींच लिया और खांसने-हंसाने लगा। पुलक बाबू को एक बार फिर 'कट!' चिल्लाना पड़ा। लेकिन तीसरा शॉट बिना किसी रुकावट के पूरा हुआ और खलनायक के सहायक के लिए तालियों की गड़गड़ाहट के साथ समाप्त हुआ।
पुलक बाबू को शूटिंग खत्म करने में पांच घंटे और लग गए। मैंने आश्चर्य से देखा कि लालमोहन बाबू ने पहले दो शॉट्स के बाद एक भी गलती नहीं की। उन्हें दो बार बाथरूम जाना पड़ा, लेकिन शायद ठंड के कारण, न कि घबराहट के कारण। पुलक घोषाल ने खुद को पूरी तरह संतुष्ट बताया।
उन्होंने कहा, 'मेरा आदमी कल सुबह ठीक इसी समय आपको फोन करेगा।'
‘किसी को भेजने की जरूरत नहीं है। मैं खुद ही यहां आ सकता हूं।’
नहीं, नहीं, मैं आपको ऐसा करने नहीं दे सकता। हमारे सभी कलाकारों के साथ हमेशा यूनिट का कोई न कोई सदस्य रहता है। यह हमारी सामान्य प्रक्रिया है। दस मिनट बाद, लालमोहन बाबू का मेकअप हटा दिया गया था और हम प्रोडक्शन टीम की एक जीप में बैठकर होटल वापस जा रहे थे।
होटल पहुँचते ही लालमोहन बाबू अपने कमरे में वापस जाने के बजाय सीधे हमारे डबल रूम में आ गए। बिना कुछ कहे वे मेरे बिस्तर पर लेट गए। फेलूदा के कुछ कहने से पहले ही मैंने उन्हें बताया कि उन्होंने कितना अच्छा प्रदर्शन किया है और यूनिट में सभी ने इसकी कितनी सराहना की है।
‘वाह, बढ़िया। इससे आपके करियर में एक नया आयाम खुल जाता है, है ना? एक मशहूर लेखक और एक शानदार फिल्म अभिनेता!’
लालमोहन बाबू आंखें बंद करके लेटे हुए थे। अब अचानक उन्होंने आंखें खोलीं और सीधे फेलुदा की ओर देखा। 'हे भगवान, मैं लगभग भूल ही गया था। फेलु बाबू, मुझे आपको कुछ बहुत ज़रूरी बात बतानी है।'
'यह क्या है?'
‘ध्यान से सुनो। आज हमारा लंच ब्रेक डेढ़ बजे था। काम खत्म होते ही मैं बाथरूम गया। शूटिंग वाले दक्षिणी विंग में एक बाथरूम है, लेकिन मैंने देखा कि वह पुलक के सेट तैयार करने के सामान से भरा हुआ था। इसलिए मुझे दूसरे विंग में, जहाँ श्री मजूमदार रहते हैं, दूसरे बाथरूम में जाना पड़ा। दरअसल, एक प्रोडक्शन असिस्टेंट ने मुझे दिखाया कि वह कहाँ है। वह बिल्कुल अलग था,

किसी बेडरूम से जुड़ा हुआ नहीं था। मैंने हाथ धोए और बाहर आ रहा था, तभी मुझे श्री मजूमदार की आवाज़ सुनाई दी। मैं आपको यह नहीं बता सकता कि वह किस कमरे में थे, लेकिन वह बाथरूम से ज़्यादा दूर नहीं था। मैंने उन्हें कहते सुना, “तुम झूठे हो। मैं तुम्हारी एक भी बात पर विश्वास नहीं करता।” वह ज़ोर से नहीं बोल रहे थे, लेकिन उनकी आवाज़ में साफ तौर पर नाराज़गी झलक रही थी।’
‘ओह? इसका मतलब तो यही है कि वह अभी भी जागा हुआ था।’
'हां। मैंने सुना है कि वह अपनी गोली डेढ़ बजे लेता है। जब मैं बाथरूम से बाहर आया, तब कम से कम एक बजकर पैंतीस मिनट हो चुके होंगे, शायद दो-तीन मिनट और।'
दूसरे व्यक्ति ने क्या कहा?
‘मैं उन्हें सुन नहीं सका। तब तक दोपहर का भोजन तैयार हो चुका था, और बाकी लोग मेरा इंतजार कर रहे थे, इसलिए मुझे जल्दी से आना पड़ा। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो शब्द मैंने सुने वे श्री बिरुपाक्षा मजूमदार के ही थे।’
इसका मतलब है कि वह या तो रजत बोस से या उनके बेटे समीरन से बात कर रहे थे। 'हां, शायद।' लालमोहन बाबू ने जम्हाई ली और अचानक विषय बदल दिया।
‘फेलू बाबू, मैंने एक और बात नोटिस की। मुंबई के ये मशहूर फिल्म स्टार उतने अच्छे नहीं हैं जितना उन्हें माना जाता है।’
'आप क्यों कहते हो कि?'
'दोपहर के भोजन के बाद मेरा रैना के साथ एक शॉट था। यह एक सरल शॉट था, और उसके पास बोलने के लिए बहुत कम डायलॉग थे। फिर भी, वह उन्हें बार-बार गलत बोल रहा था, और अंत में हमें पांच बार तक टेक लेने पड़े।'
‘ये सब होता रहता है, लालमोहन बाबू। कभी-कभी एक अनुभवी और स्थापित अभिनेता को भी घबराहट हो सकती है।’
‘जहाँ तक मेरी बात है,’ लालमोहन बाबू ने घोषणा की, ‘मेरी सारी घबराहट दूर हो गई है। अब मुझे किसी बात की चिंता नहीं है।’

छह
अगले दिन धमाका हुआ। लेकिन, इससे पहले कि मैं बताऊं कि यह कैसे हुआ, मुझे यह बताना होगा कि वह दिन कैसा था।
आसमान में बादल छाए हुए थे, इसलिए कंचनजंगा दिखाई नहीं दे रही थी। मैं और फेलुदा सुबह थोड़ी खरीदारी के लिए निकले। फिर हम होटल लौटने से पहले बिर्च हिल रोड पर थोड़ी देर टहले। मैं ग्यारह बजे नयनपुर विला के लिए रवाना हुआ। लालमोहन बाबू पहले से ही वहाँ मौजूद थे, उन्होंने अपने नए संवादों का पूरी तरह से अभ्यास कर लिया था। आज उनके पाँच संवाद थे, और उन्हें किसी भी शॉट में सिगार जलाने की ज़रूरत नहीं थी। इससे उनके कदमों में एक अलग ही जोश आ गया था।
पुलक घोषाल ने लालमोहन बाबू के साथ सात शॉट खेले। साढ़े चार बजे तक वह फ्री हो गए। पुलक बाबू ने कहा, 'एक जीप इंतजार कर रही है, लालुदा, तुम कभी भी वापस जा सकते हो।'
'चूंकि आज मेरा काम जल्दी खत्म हो गया है, पुलक, मुझे लगता है कि मैं पैदल ही वापस जाऊँगा।'
'बहुत अच्छा, जैसा आप चाहें।'
पुलक घोषाल के चले जाने के बाद लालमोहन बाबू ने कहा, 'मुझे उनकी चाय पसंद है, तो क्यों न हम चाय परोसे जाने तक इंतजार करें?'
चाय पीते-पीते पाँच बज चुके थे। होटल पहुँचने में हमें आधा घंटा और लग गया। हमने देखा कि फेलुदा जल्दी-जल्दी जैकेट पहन रहा था।
‘बाहर जा रहे हो?’ मैंने पूछा। फेलुदा ने मुझे हैरानी भरी नजरों से देखा। लेकिन आप तो वहाँ थे! क्या आपने कुछ नहीं सुना?
‘हम आधे घंटे से भी ज्यादा पहले निकल चुके हैं। नहीं, हमने कुछ नहीं सुना।
क्या हुआ है?’
‘बुजुर्ग श्री मजूमदार की हत्या कर दी गई है।’
‘क्या-आ-आ-आ!’ लालमोहन बाबू और मैं एक साथ चिल्लाए।
फेलुदा ने हमें बताया, 'उसने मुझे लगभग साढ़े बारह बजे फोन किया। उसने कहा कि उसे मुझसे कुछ ज़रूरी बात करनी है, इसलिए वह शाम को मुझसे यहीं मिलेगा। और फिर यह सब हो गया।'
'तुमसे किसने कहा?'
उनके बेटे, समीरन मजूमदार ने मुझे पांच मिनट पहले फोन किया था। उन्होंने बताया कि उन्होंने पुलिस को सूचना दे दी है, लेकिन वे चाहते हैं कि मैं भी वहां मौजूद रहूं। शव उन्होंने ही देखा था, जब वे यह देखने गए थे कि उनके पिता पांच बजे के बाद भी क्यों नहीं उठे। दरवाजा बंद था, लेकिन ताला या कुंडी नहीं लगी थी। जाहिर है, श्री मजूमदार हमेशा अपना दरवाजा खुला ही छोड़ते थे। किसी ने उनकी छाती में चाकू मारा था। उनके पारिवारिक डॉक्टर ने

पुष्टि कर दी है कि चाकू से वार ही मौत का कारण था। जो भी गोलीबारी बाकी थी, उसे स्वाभाविक रूप से रद्द कर दिया गया है, और जब तक पुलिस अपनी जांच पूरी नहीं कर लेती, तब तक उसे रद्द ही रखना होगा। खैर, मैं वहां जा रहा हूं। क्या आप मेरे साथ आना चाहेंगे, या यहीं रहना पसंद करेंगे?
‘यहाँ रुकें? फेलू बाबू, ऐसी खबर के बाद हम यहाँ कैसे रुक सकते हैं? चलो चलते हैं!’
हम सवा छह बजे नयनपुर विला पहुँचे। तब तक अंधेरा हो चुका था और बारिश शुरू हो गई थी। फिल्म यूनिट के सभी लोग अभी भी वहीं मौजूद थे। पुलक घोषाल हमसे मिलने आगे आए। उन्होंने कहा, 'कितनी भयानक घटना है! हममें से किसी को भी इस पर यकीन नहीं हो रहा। वह कितने अच्छे इंसान थे, कितने मददगार।' मैंने पहले ही बाहर एक पुलिस जीप खड़ी देखी थी। एक इंस्पेक्टर सामने के बरामदे में इंतज़ार कर रहा था। उसने फेलुदा की ओर हाथ बढ़ाया। 'मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है, श्री मित्तर। मैं जतीश साहा हूँ।'
'आपसे मिलकर खुशी हुई, श्रीमान साहा,' फेलुदा ने हाथ मिलाते हुए पूछा, 'आखिर हुआ क्या?'
'जहां तक पता चल सकता है, उसकी हत्या सोते समय हुई थी।'
‘हथियार?’
‘एक खंजर। वह अभी भी वहीं है, उसकी छाती में फंसा हुआ है। मेरा मानना है कि वह पीड़ित का था। वह उसके कमरे में था।’
क्या आपके अपने सर्जन ने शव की जांच की है?
नहीं, वह अभी तक नहीं आया है, लेकिन हमें किसी भी पल उसके आने की उम्मीद है। आप अंदर क्यों नहीं आ जाते?
श्री मजूमदार का शयनकक्ष काफी बड़ा था। लालमोहन बाबू और मैं दरवाजे के पास खड़े रहे। फेलुदा इंस्पेक्टर के साथ अंदर गया। शव सफेद चादर से ढका हुआ था।
इंस्पेक्टर साहा ने फेलुदा को एक तरफ ले जाते हुए कहा, 'मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ। हम हमेशा की तरह अपनी जाँच करेंगे। लेकिन अगर आप स्वतंत्र जाँच करना चाहते हैं, तो बेझिझक करें। मैं आपसे बस इतना ही अनुरोध करूँगा कि आप अपने निष्कर्ष हमारे साथ साझा करें। अगर हमें कोई उपयोगी जानकारी मिलती है, तो मैं सुनिश्चित करूँगा कि आपको इसकी सूचना मिले।'
'धन्यवाद। आपको चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, श्रीमान साहा। आपको मेरा पूरा सहयोग अवश्य मिलेगा; और मुझे नहीं लगता कि आपके सहयोग के बिना मैं बहुत आगे बढ़ पाऊंगा।'
समीरन मजूमदार पीले और बिखरे बालों के साथ कमरे में दाखिल हुए।
‘मेरी संवेदनाएं आपके साथ हैं, श्री मजूमदार। शव को सबसे पहले आपने ही देखा था, है ना?’ फेलुदा ने पूछा।
हां। मेरे पिताजी हमेशा सुबह पांच बजे अलार्म लगाते थे। फिर वे बरामदे में जाकर बैठ जाते थे, जहां लोकेनाथ उनके लिए चाय लाते थे। आज जब वे सवा पांच बजे तक नहीं आए, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या बात है। इसलिए मैं यहां देखने आया, और... मुझे यह मिला!

‘यह आपके लिए मुश्किल होगा, लेकिन क्या आपको कोई अंदाजा है कि यह किसने किया होगा और क्यों?’ फेलुदा कमरे में इधर-उधर घूमते हुए अपने सवाल जारी रखे हुए थे, उनकी पैनी नजरें हर छोटी से छोटी बात पर टिकी हुई थीं।
नहीं। लेकिन मैंने गौर किया है कि इस कमरे में कुछ कमी सी महसूस हो रही है। 'क्या?'
‘अष्टधातु से बनी कृष्ण की एक छोटी सी मूर्ति। यह एक बहुत पुरानी पारिवारिक धरोहर थी और अत्यंत मूल्यवान थी।’
‘इसे कहाँ रखा गया था?’
‘उस शेल्फ पर, उस खंजर के बगल में जिसका इस्तेमाल किया गया था।’
‘आपने इतनी कीमती वस्तु को खुले में क्यों रखा था? इसे संदूक में बंद करके क्यों नहीं रखा था?’ इंस्पेक्टर साहा यह जानना चाहते थे।
‘बाबा रात को कभी नहीं सोते थे। इसके अलावा, उनके पास हमेशा उनका रिवॉल्वर रहता था। इसलिए हममें से किसी ने भी कभी चोरी के खतरे के बारे में नहीं सोचा।’
अब तो ऐसा लग रहा है कि मकसद लूटपाट था। आपके हिसाब से इसकी कीमत कितनी थी? 'कम से कम पैंसठ हजार। हालांकि इसमें आठ धातुएँ थीं, लेकिन यह मुख्य रूप से सोने से बना था।'
फेलुदा ने बिस्तर के पास रखी मेज से एक पेंसिल उठाई और कहा, “इसकी नोक टूट गई है, और टूटा हुआ हिस्सा यहीं पड़ा है।” मेज पर एक छोटी सी नोटबुक रखी थी। फेलुदा उस पर झुके और धीरे से बोले, “मुझे लगता है इसका ऊपरी पन्ना फट गया है।” फिर वे मेज के आसपास फर्श का मुआयना करने लगे, और करीब से देखने के लिए घुटनों के बल बैठ गए। कुछ ही सेकंड बाद, उन्होंने कहा, “मिल गया!” वे फिर से खड़े हो गए, उनके हाथ में कागज का एक छोटा सा टुकड़ा था। उन्होंने उस पर जो लिखा था उसे जल्दी से पढ़ा और निरीक्षक को दे दिया। श्री साहा ने उस पर सरसरी नजर डाली और अनजाने में ही चौंक गए। “विश? आपका मतलब है कि उसे जहर दिया गया था?” उन्होंने गहरी हैरानी से पूछा।
'ऐसा ही लगता है, है ना? आखिरी दो अक्षर इतने टेढ़े-मेढ़े हैं कि ऐसा लगता है जैसे लिखने के तुरंत बाद ही उनकी मृत्यु हो गई हो, जिससे टूटी हुई पेंसिल और मेज के नीचे गिरे इस कागज के टुकड़े की वजह समझ में आती है।' लेकिन उसने “जहर देकर मारा गया” क्यों लिखा? यह तो स्पष्ट है कि उसकी चाकू मारकर हत्या की गई थी।
‘हम्म, मुझे भी समझ नहीं आ रहा।’ फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं और फिर समीरन बाबू की ओर मुड़ा। ‘क्या तुम्हें पता है तुम्हारे पिता की नींद की गोलियां कहां रखी थीं?’
‘एक बोतल में, भोजन कक्ष में। बाबा जैसे ही नई खेप लाते थे, लोकेनाथ उन्हें एल्युमिनियम की पन्नी से निकालकर बोतल में डाल देते थे।’
‘क्या आप वह बोतल यहाँ ला सकते हैं, कृपया?’
समीरन बाबू चले गए और काफी देर बाद लौटे। जब वे आखिरकार कमरे में वापस आए, तो उनका चेहरा पहले से भी पीला और अधिक परेशान लग रहा था।
‘वो बोतल गायब हो गई!’ उसने अपने सफेद होंठों से फुसफुसाते हुए कहा।

लेकिन फेलुदा को इस पर कोई हैरानी नहीं हुई। उन्होंने शांत भाव से कहा, “परसों आपके पिता ने ऐसी इकत्तीस गोलियां खरीदीं। हमने उन्हें देखा था। श्रीमान साहा, बताइए, अगर किसी के पेय में इकत्तीस गोलियां मिला दी जाएं, तो क्या वह उसे मारने के लिए काफी नहीं होगा?”
आप किन गोलियों की बात कर रहे हैं?
‘ट्रोफनिल। अवसादरोधी गोलियां।’
'ओह। हाँ, ऐसा संभव हो सकता है।'
और अगर ऐसा होता, तो उन गोलियों को "ज़हर" कहना बिल्कुल सही होता, है ना? 'निश्चित रूप से।'
“खैर, इससे कम से कम यह तो समझ में आ जाता है कि उसने वह शब्द क्यों लिखा। लेकिन...” फेलुदा अभी भी भौंहें चढ़ाए हुए था, “अगर कोई मरता हुआ आदमी मरने से पहले कुछ लिखना चाहे, तो वह निश्चित रूप से अपने हत्यारे का नाम लिखना चाहेगा, न कि यह कि उसकी हत्या कैसे हुई?”
'जी हां, आप सही कह रहे हैं। लेकिन जाहिर है श्री मजूमदार ने ऐसा नहीं किया। क्यों न हम वाहक, लोकेनाथ से बात करें?'
फेलुदा ने सिर हिलाया और समीरन बाबू की ओर देखा, जो लोकेनाथ को ढूंढने के लिए चले गए। मैंने देखा कि फेलुदा का चेहरा अभी भी गंभीर था।
लालमोहन बाबू ने कहा, 'श्री मजूमदार आज गोलीबारी देखने आए थे। लोकेनाथ करीब डेढ़ बजे उन्हें ढूंढने आया था। लेकिन श्री मजूमदार तुरंत वापस नहीं गए।'
इसका मतलब है कि आज उनकी दिनचर्या थोड़ी गड़बड़ हो गई थी।
'ऐसा ही लगता है। मुझे लगता है कि उन्हें हमें शूटिंग करते देखना काफी दिलचस्प लग रहा था। मैंने उन्हें रैना और वर्मा दोनों से बात करते देखा। ऐसा लग रहा था कि वह बहुत सारे सवाल पूछ रहे थे।'
समीरन बाबू एक बार फिर लौट आए। उनके चेहरे के भाव से लग रहा था कि वे कोई अच्छी खबर लेकर नहीं आए हैं। लेकिन उन्होंने जो कहा, उसके लिए हममें से कोई भी तैयार नहीं था। उन्होंने कहा, 'लोकेनाथ लापता है!'
‘लापता?’ फेलुदा भी अपना आश्चर्य नहीं छिपा सका।
'हां। वह डेढ़ बजे से लापता है। हमारे सभी नौकर रोज़ाना दो बजे एक साथ दोपहर का भोजन करते हैं। लोकेनाथ ने उनके साथ खाना भी नहीं खाया। किसी को नहीं पता कि वह कहां गया है, या किस समय निकला।'
‘क्या आपने मिस्टर बोस से बात की है? शायद उन्होंने उसे कहीं भेज दिया हो?’ नहीं। उन्हें इसके बारे में कुछ पता नहीं था। उनका कहना है कि उन्होंने दोपहर के भोजन के तुरंत बाद अपने कमरे में आधा घंटा आराम किया और फिर चीड़ के जंगल में टहलने चले गए। वे लगभग हर दिन ऐसा करते हैं। उन्हें दोपहर की नींद में विश्वास नहीं है।
मुझे पता था कि यह सच है, क्योंकि मैं खुद दोपहर के भोजन के ब्रेक के दौरान जंगल में थोड़ी देर टहलने गया था। मैंने रजत बोस को वहां से लौटते हुए देखा था।
इंस्पेक्टर साहा ने पूछा, 'लोकेनाथ आपके साथ कब से हैं?' लोकेनाथ ने जवाब दिया, 'लगभग चार साल से। हमारे पुराने सेवक की हेपेटाइटिस से मृत्यु हो गई

थी। तभी लोकेनाथ आए, उनके पास बहुत अच्छे प्रमाण पत्र थे। इसके अलावा, वे शिक्षित और काफी बुद्धिमान प्रतीत होते थे। वास्तव में, वे बाबा और श्री बोस को स्क्रैपबुक को अद्यतन रखने में मदद करते थे।'
‘अच्छा, तो शायद अगर हम इस आदमी का पता लगा लें, तो हम इस मामले को सुलझा सकते हैं! क्या मैं आपका टेलीफोन इस्तेमाल कर सकता हूँ?’ इंस्पेक्टर साहा ने कहा।
‘जी हां, बिल्कुल,’ समीरन बाबू ने जवाब दिया और इंस्पेक्टर के साथ बाहर चले गए।
‘मुझे यह बिल्कुल समझ नहीं आ रहा, फेलू बाबू। अगर वह पहले से ही मर चुका था तो कोई उसे चाकू क्यों मारेगा?’
कहना मुश्किल है। हो सकता है कि कातिल ने बस यह सुनिश्चित करना चाहा हो। हो सकता है कि उसने मूर्ति चुराने के लिए उसे ज़हर मिला पेय पिलाने के बाद कमरे में वापसी की हो और उसे नींद में हिलते हुए देखा हो। आखिर, गोलियों को असर करने में कुछ मिनट लगते हैं, है ना? इसलिए कातिल ने कोई जोखिम न लेने का फैसला किया और उसे खंजर से मार डाला। फिर वह मूर्ति लेकर चुपके से भाग गया। तो आपको क्या लगता है कि उन्होंने 'विश' शब्द कब लिखा था?
‘चाकू लगने से पहले, शायद उन्हें एहसास हो गया था कि उनके पेय में कुछ मिलाया गया है, और उन्होंने कुछ संदेश लिखना शुरू किया होगा। लेकिन वह एक शब्द लिखने के बाद बेहोश हो गए। इस समय मुझे इसके अलावा कोई और स्पष्टीकरण समझ नहीं आ रहा है।’ फेलुदा की आवाज़ में स्पष्ट रूप से असंतोष झलक रहा था। इंस्पेक्टर साहा लौट आए। फेलुदा की बात सुनकर उन्होंने कहा, ‘मुझे तो सब कुछ समझ आ गया है। खैर, मैंने अपने आदमियों को लोकेनाथ को ढूंढने का काम सौंप दिया है। इस बीच मुझे पूरी फिल्म यूनिट के साथ-साथ इस घर के हर सदस्य से पूछताछ करनी है।’
‘मुझे लगता है कि मुझे आपको कुछ बताना चाहिए,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘उत्तरी विंग में स्थित बाथरूम का उपयोग करने की अनुमति सभी को नहीं थी। केवल पुलक घोषाल, कैमरामैन सुदेव घोष, रैना, वर्मा और मुझे ही इसकी अनुमति थी।’
इसका मतलब है कि हर किसी के पास वहां जाने का कारण नहीं था। ठीक है, मैं केवल उन्हीं लोगों का साक्षात्कार लूंगा जिनका आपने अभी जिक्र किया है। ‘क्यों-क्या, मैं भी?’ लालमोहन बाबू थोड़ा अनिश्चित दिखने लगे।
'बिल्कुल,' फेलुदा ने गंभीरता से कहा, 'आप निश्चित रूप से उन लोगों में से हैं जिन्हें यह अवसर मिला।'
‘इस घर में असल में कौन लोग रहते हैं?’ इंस्पेक्टर साहा ने समीरन बाबू की ओर देखते हुए पूछा।
'मेरे अलावा, रजत बोस, हमारा नौकर बहादुर और रसोइया जगदीश भी हैं।'
‘बहुत अच्छा। हमें कहां से शुरू करना चाहिए?’

सात
पुलक घोषाल अगली सुबह साढ़े नौ बजे हमारे होटल में आए।
‘क्या पुलिस ने पूछताछ पूरी कर ली है?’ फेलुदा ने उससे पूछा। ‘हाँ। कल रात साढ़े नौ बजे से पहले हममें से कोई भी घर नहीं जा सका। भला किसने सोचा होगा कि ऐसा कुछ हो जाएगा? पुलिस से हरी झंडी मिलने तक हम शूटिंग शुरू नहीं कर सकते। समीरन बाबू ने कहा है कि पुलिस की जांच पूरी होने के बाद हम आगे बढ़ सकते हैं, लेकिन कौन जाने इसमें कितना समय लगेगा? मैं इस वजह से होने वाले आर्थिक नुकसान के बारे में सोचना भी नहीं चाहता।’
लालमोहन बाबू ने सहानुभूति जताते हुए अपनी जीभ चटकाई।
‘हालांकि,’ पुलक बाबू ने थोड़ा और खुश होकर कहा, ‘मैंने अतीत में ऐसा देखा है। अगर किसी फिल्म का निर्माण किसी कारणवश अस्थायी रूप से रुक जाता है, तो वह फिल्म जबरदस्त हिट हो जाती है। इसके अलावा, लालुदा, आपकी कहानी तो बिल्कुल बेजोड़ है।’
पुलक बाबू के जाने के आधे घंटे बाद इंस्पेक्टर साहा वहाँ पहुँचे। उन्होंने कहा, “लोकेनाथ का कोई पता नहीं चला, लेकिन हम अभी भी उनकी तलाश कर रहे हैं। मेरे आदमी सिलीगुड़ी में भी काम कर रहे हैं। मुझे लगता है कि उन्हें ढूंढने में बस कुछ ही समय लगेगा। हो सकता है कि वह इस समय किसी आदिवासी बस्ती में छिपे हों, लेकिन देर-सवेर पकड़े तो जाएंगे ही। मुझे पूरा यकीन है कि वह कलकत्ता जाकर मूर्ति बेचने की कोशिश करेंगे। अजीब बात है ना, लालच एक सीधे-सादे इंसान को क्या बना सकता है?”
मुझे लगता है कि आपने घर में लोगों का साक्षात्कार पूरा कर लिया है।
जी हाँ। इससे एक बात साबित हुई: हर कोई, बिना किसी अपवाद के, यह देखने के लिए बेहद उत्सुक था कि फिल्म की शूटिंग कैसे होती है। उन सभी ने शूटिंग देखने में काफी समय बिताने की बात स्वीकार की। यहाँ तक कि श्री मजूमदार ने भी अपनी दिनचर्या बदल दी। यह सबसे उल्लेखनीय है, क्योंकि उनका जीवन घड़ी की तरह सुचारू रूप से चलता था।
‘आपके विचार से कितने लोगों को यह अवसर मिला होगा? अभी मकसद के बारे में चिंता न करें।’
खैर, यहाँ दो बातों पर विचार करना होगा। एक, पीड़ित के दूध के गिलास में जहर डालना; और फिर मूर्ति चुराने के लिए उसे चाकू मारना। लोकेनाथ ने लगभग डेढ़ बजे दूध का गिलास तैयार किया और श्री मजूमदार को बुलाने चला गया। हो सकता है उसने बची हुई तीस गोलियाँ गिलास में डाल दी हों; या, उसकी अनुपस्थिति में, कोई और चुपके से अंदर आकर ऐसा कर गया हो। रजत बोस कहते हैं कि वह उस समय अपने कमरे में पढ़ रहे थे। समीरन मजूमदार भी कहते हैं कि वह अपने कमरे में थे। दोनों में से कोई भी इसे साबित नहीं कर सकता। बहादुर और जगदीश गोलीबारी देख रहे थे। यह सच है।

‘हत्या के समय के बारे में आपके सर्जन ने क्या कहा?’
उनके अनुसार, पीड़ित को दोपहर 2:30 से 4 बजे के बीच चाकू मारा गया था।
इसमें कोई संदेह नहीं है कि मौत का कारण चाकू से वार था, अन्यथा इतना खून नहीं बहता।
‘क्या कोई लोकेनाथ के बारे में कुछ बता सकता है?’
नहीं। सभी लोग गोलीबारी में मग्न थे।
लालमोहन बाबू ने गला साफ किया। 'अगर मुझसे पूछताछ करनी ही है, तो अभी क्यों नहीं पूछ लेते? चलिए इसे खत्म करते हैं।'
बहुत खूब। तकनीकी तौर पर, मुझे कल रात बाकी लोगों के साथ आपका भी इंटरव्यू लेना चाहिए था, लेकिन मैंने ज़िद नहीं की क्योंकि आप श्री मिटर के दोस्त हैं। खैर, चलिए आपसे ही सुनते हैं कि कल क्या हुआ।
‘मैं नौ बजे वहाँ पहुँचा,’ लालमोहन बाबू ने बात शुरू की। ‘मुझे मेकअप पूरा करने में एक घंटा लग गया। जिस कमरे में शूटिंग हो रही थी, उसके ठीक बगल में एक बरामदा था। सभी कलाकार आम तौर पर सेट पर बुलाए जाने का इंतज़ार उसी बरामदे में करते थे। जब हम वहाँ इंतज़ार कर रहे थे, तभी लगभग साढ़े दस बजे कुछ हुआ। श्री मजूमदार आए और रैना और वर्मा को अपने साथ चलने को कहा। वे पाँच मिनट में वापस आ गए। रैना ने मुझे बताया कि श्री मजूमदार ने उन्हें एक पुरानी पारिवारिक धरोहर दिखाई थी। अब मुझे पता चला कि वह कृष्ण की मूर्ति थी।’
‘मैं समझ गया। आगे क्या हुआ?’
ग्यारह बजे मुझे और वर्मा को बुलाया गया। पुलक ने महज दस मिनट में शॉट लेना शुरू कर दिया। लंच से पहले चार शॉट लिए गए। दूसरे शॉट के बाद मुझे बाथरूम जाना पड़ा। लगभग साढ़े बारह बज रहे होंगे।
‘क्या आपको रास्ते में कोई दिखा?’
नहीं। लौटने के कुछ ही मिनटों के भीतर मुझे सेट पर वापस बुला लिया गया। रिहर्सल के बाद आधे घंटे बाद तीसरा शॉट लिया गया। उसके बाद मुझे कुछ मिनट आराम करने का मौका मिला। मैंने वह समय बरामदे में बैठकर बिताया।
'अकेला?'
नहीं। रैना और वर्मा दोनों मेरे साथ थे। श्री मजूमदार थोड़ी देर के लिए वापस आए। इसी दौरान मैंने लोकेनाथ को आते और उन्हें यह बताते हुए देखा कि उनका दूध तैयार है। श्री मजूमदार पाँच मिनट बाद चले गए। पौने दो बजे, पुलक ने चौथा शॉट लिया, जिसमें सिर्फ मैं ही था। हमने ढाई बजे दोपहर के भोजन के लिए ब्रेक लिया, और मैं हाथ धोने के लिए बाथरूम में वापस चला गया। रैना और वर्मा मेरे पीछे आए।
‘सबसे पहले बाथरूम कौन गया?’
‘मैंने किया। फिर मैं सीधे दक्षिणी तरफ लौट आया। खाना खत्म करने में हमें करीब बीस मिनट लगे। उसके बाद मैं बरामदे में बैठ गया। तपेश मेरे साथ था।’ मैंने सहमति में सिर हिलाया।
लालमोहन बाबू ने आगे बताया, 'मैं आपको यह नहीं बता सकता कि उस समय रैना और वर्मा कहाँ थे। हमने लगभग तीन बजे काम फिर से शुरू किया। मेरा पाँचवाँ शॉट

साढ़े तीन बजे पूरा हुआ, जिसके बाद लाइटें तैयार करने के लिए पैंतीस मिनट का ब्रेक लिया गया।'
‘उस दौरान आपने क्या किया?’
‘मैंने बरामदे में रैना और वर्मा से बातचीत की। तपेश हमारे साथ बैठा था।’ मैंने फिर सिर हिलाया।
'वर्मा ने पूरे देश में बहुत यात्रा की है। वह हमें अपने अनुभवों के बारे में बता रहे थे।'
'आपका मतलब है कि लाइटें तैयार होने तक आप तीनों साथ-साथ थे?'
लालमोहन बाबू ने माथे पर शिकन डाली। फिर उन्होंने कहा, 'मुझे पक्का नहीं पता। मुझे लगता है वर्मा उठकर करीब पांच मिनट के लिए चले गए थे। रैना हमें फिल्म जगत की गपशप सुना रहे थे, और फिर—'
‘बस इतना ही काफी है, धन्यवाद,’ इंस्पेक्टर साहा ने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा। ‘मुझे लगता है कि मुझे जो कुछ जानना था, वह सब मिल गया है। लेकिन क्या आपको याद है कि आपने लोकेनाथ को डेढ़ बजे के बाद कभी देखा था?’ लालमोहन बाबू ने सिर हिलाया। 'नहीं, मुझे नहीं लगता कि मैंने ऐसा किया।' ‘बहुत अच्छा। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।’ फिर उन्होंने मेरी तरफ देखा। ‘तपेश, तुम भी तो वहाँ थे ना? क्या तुम्हें कुछ कहना है?’
‘लालमोहन बाबू ने अभी जो कुछ भी कहा है, मैं उससे पूरी तरह सहमत हूँ। ढाई बजे मैं घर के पीछे चीड़ के जंगल में टहलने गया था। मैंने रजत बोस को वहाँ से लौटते देखा। वह थोड़ा हाँफते हुए लग रहे थे।’
उन्होंने मुझे भी यही बात बताई। लगता है, वो अक्सर दोपहर के खाने के तुरंत बाद चीड़ के जंगल में टहलने जाते हैं। वैसे, जब आपने दोपहर का खाना खाया था, तो क्या मजूमदार परिवार का कोई सदस्य आपके साथ शामिल हुआ था?
नहीं। पुलक ने समीरन मजूमदार और रजत बोस को हमारे साथ दोपहर का भोजन करने के लिए कहा था, लेकिन दोनों ने मना कर दिया।
'मैं समझ गया। इससे मुझे याद आया, हमें उस खंजर के हैंडल पर कोई उंगलियों के निशान नहीं मिले थे।'
‘नहीं, मुझे नहीं लगा था कि आप ऐसा कहेंगे,’ फेलुदा ने कहा। ‘मुझे आपसे कुछ पूछना है, श्रीमान साहा। यह हत्या के समय के बारे में है। क्या यह साढ़े दो बजे होने की संभावना साढ़े चार बजे की तुलना में कहीं अधिक नहीं है?’
'आप क्यों कहते हो कि?'
‘अगर लोकेनाथ ही दोषी है, तो उसने सारी गोलियां—उनकी संख्या तीस नहीं बल्कि उनतीस होनी चाहिए थी—श्री मजूमदार के दूध के गिलास में जितनी जल्दी हो सके मिला दी होतीं? मेरा मतलब है, अगर उसने ऐसा डेढ़ बजे किया, तो मूर्ति चुराने और फिर अपने शिकार को चाकू मारने से पहले तीन घंटे और इंतज़ार क्यों किया? वह तुरंत वहाँ से निकलना चाहता होगा, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?’
'हां, यह एक अच्छा मुद्दा है। लेकिन अगर उसने ढाई बजे हत्या की भी तो यह सर्जन की रिपोर्ट से मेल खाता है।'
इंस्पेक्टर साहा उठे। उन्होंने कहा, ‘आपकी मदद के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मुझे जाना होगा। मुझे नयनपुर विला में और काम है। अलविदा।’ लेकिन वे

‘Namaskar,’ he said, looking at Feluda.

आठ
'नमस्कार,' फेलूदा ने उसके अभिवादन का उत्तर देते हुए उत्तर दिया।
'कल, अगर आपको याद हो तो हम केवेंटर के यहाँ थोड़ी देर के लिए मिले थे।'
'जी हां, बिल्कुल। आप हरिनारायण मुखर्जी हैं, है ना?'
'जी हां। मुझे कहना पड़ेगा कि आपकी याददाश्त बहुत तेज है। क्या मैं कुछ मिनटों के लिए आपके साथ यहां बैठ सकता हूं?'
'निश्चित रूप से।'
फेलुदा ने बेंच पर उसके लिए जगह बनाने के लिए एक तरफ हट गए। वह फेलुदा और लालमोहन बाबू के बीच में बैठ गया।
‘आप नयनपुर विला के पास रहते हैं, है ना?’
'हां। मैं यहां ग्यारह साल से रह रहा हूं।'
'मैं समझ गया। आपने उस त्रासदी के बारे में जरूर सुना होगा, जो आपके घर के इतने करीब हुई थी।'
'जी हां, मैंने ऐसा ही किया है। यह सब बहुत दुखद है, लेकिन पूरी तरह से अप्रत्याशित भी नहीं है, है ना?'
'तुम यह सोचते हो क्या?'
मैं यह इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मैं बिरुपाक्षा मजूमदार को लंबे समय से जानता था। मैं यह नहीं कह सकता कि हम घनिष्ठ मित्र थे, क्योंकि वह स्वभाव से कुछ आरक्षित थे; लेकिन मैंने उनके बारे में बहुत कुछ सुना था।
'कैसे?'
‘मैंने मध्य प्रदेश के नीलकंठपुर नामक स्थान पर लगभग दस वर्ष बिताए। मैं एक भूविज्ञानी था और स्थानीय चट्टानों पर काम करता था। एक बार श्री मजूमदार राजा पृथ्वी सिंह के निमंत्रण पर उनके जागीर में बाघ का शिकार करने के लिए नीलकंठपुर आए थे। वे एक-दूसरे को कुछ समय से जानते थे। मुझे लगता है कि उस समय श्री मजूमदार लगभग पैंतीस वर्ष के थे। दोनों में एक बात समान थी। दोनों को ही ऊंचे मचान या हाथी से तीर चलाना पसंद नहीं था। वे बिना किसी साथी की मदद लिए पैदल ही जाना चाहते थे और जमीन से ही बाघ को करीब से गोली मारना चाहते थे। इसी वजह से वह भयानक दुर्घटना हुई।’
‘अरे, क्या हुआ?’
'श्री मजूमदार ने बाघ की बजाय एक आदमी को मारा।'
'क्या!'
'हां। यह सच है।'
‘आपका मतलब किसी स्थानीय ग्रामीण से है, या उसी तरह के किसी व्यक्ति से?’ नहीं। इससे मामला शायद आसान हो जाता। मरने वाला व्यक्ति एक कॉलेज में इतिहास का प्रोफेसर था और बंगाली था। उसका नाम सुधीर ब्रह्मा था। हालांकि वह इतिहास पढ़ाता था, लेकिन उसकी मुख्य रुचि आयुर्वेद में थी। जब राजा और

श्री मजूमदार बाघ की तलाश कर रहे थे, तब वह जंगल में जड़ी-बूटियों की खोज में घूम रहा था। दुर्भाग्य से, उसने पीले रंग का लबादा ओढ़ा हुआ था। श्री मजूमदार ने घनी झाड़ियों के बीच से पीले रंग की एक झलक देखी और उसे बाघ समझकर गोली चला दी। गोली सीधे ब्रह्मा के पेट में जा लगी। उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई।
‘पृथ्वी सिंह को इस मामले को दबाने के लिए बहुत पैसा खर्च करना पड़ा और कई तरह के प्रभाव डालने पड़े। मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूँ, क्योंकि मैं सुधीर ब्रह्मा का मित्र था। श्री मजूमदार उस समय तो बच निकले, लेकिन अपने दिल में वे जानते थे कि वे एक अपराधी हैं। उन्होंने एक आदमी को मार डाला था, भले ही वह गलती से ही क्यों न हुआ हो। उन्होंने इसकी कीमत तो नहीं चुकाई थी, है ना? तो आपको क्या लगता है कि वे इस भयानक अपराधबोध के बोझ तले कब तक जी पाएंगे?’
क्या आपको लगता है कि वर्तमान त्रासदी और इतने साल पहले हुई घटना के बीच कोई संबंध है?
‘आप एक जासूस हैं, श्री मिटर, आप हत्या और उसके मकसद के बारे में जानते हैं। शायद मुझे आपको कुछ बताना चाहिए। सुधीर ब्रह्मा का एक बेटा था जिसका नाम रमेश था। जब उसके पिता की मृत्यु हुई तब वह सोलह वर्ष का था। स्वाभाविक रूप से, उसे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी कि इस पूरे मामले को दबा दिया जाए और उसके पिता का हत्यारा बिना किसी सजा के बच जाए। उसने मुझसे कहा था कि बड़ा होकर वह किसी न किसी तरह हत्यारे से बदला लेगा। अब उसकी उम्र अड़तीस वर्ष होनी चाहिए।’
‘क्या आप इतने सालों से उनके संपर्क में रहे हैं?’
नहीं। मैंने बीस साल पहले नीलकंठपुर छोड़ दिया था। फिर मैंने कुछ साल छोटा नागपुर में बिताए। आखिरकार, मैं सेवानिवृत्त होकर दार्जिलिंग आ गया। मुझे नहीं पता कि आपने मेरा घर देखा है या नहीं। यह बस एक छोटी सी कुटिया है। मैं वहां अपनी पत्नी के साथ रहता हूं। मेरा बेटा कलकत्ता में काम करता है, और मेरी बेटी की शादी हो चुकी है।
‘ठीक है। क्या आपके पास यह मानने का कोई कारण है कि रमेश ब्रह्मा इस समय दार्जिलिंग में हैं?’
नहीं। लेकिन सच कहूँ तो, अगर वह आज मेरे सामने आकर खड़ा हो जाए, तो मुझे संदेह है कि बाईस साल बाद मैं उसे पहचान पाऊँगा। मैं आपको बस इतना ही बता सकता हूँ कि वह अपने पिता की मौत का बदला लेने के लिए पूरी तरह से दृढ़ संकल्पित लग रहा था।
श्री मुखर्जी ने अपनी कहानी समाप्त की। यह निस्संदेह एक विचित्र कहानी थी, और मुझे पता था कि यह फेलुदा को सोचने के लिए नई सामग्री प्रदान करेगी। उन्होंने श्री मुखर्जी से कहा, “यह सब बताने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। सुधीर ब्रह्मा का पुत्र भले ही यहाँ न हो, लेकिन श्री मजूमदार के जीवन में ऐसी घटना का घटित होना ही आश्चर्यजनक है। ध्यान रहे, उन्होंने संकेत दिया था कि उनके जीवन में कुछ ऐसा है जिसके बारे में वे बात नहीं कर सकते, और आपने भी कुछ इसी तरह की बात कही थी, लेकिन मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यह ऐसा होगा! यदि आप कहते हैं कि घटना के समय आप वास्तव में

नीलकंठपुर में मौजूद थे, तो मुझे आपकी बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं दिखता।”
एक ही जगह पर बैठे रहने का कोई फायदा नहीं लग रहा था। हम सब उठ खड़े हुए और श्री मुखर्जी ने अलविदा कहा। हम ऑब्जर्वेटरी हिल की ओर चलने लगे। फेलुदा के चेहरे पर वही जानी-पहचानी शिकन फिर से आ गई थी। उन्होंने साफ तौर पर तय कर लिया था कि अब यह मामला आसान और सरल नहीं रह गया है। कोहरे में चलते हुए उन्होंने कहा, 'भगवान जाने श्री मुखर्जी की कहानी मेरी सोच को मदद करेगी या बाधा डालेगी। इस समय मेरे विचार भी कुछ इसी जगह की तरह हैं—धुंध से ढके हुए, उलझे हुए और अस्पष्ट। काश मुझे सूरज की एक किरण दिख जाती!'
कोहरे से एक नेपाली व्यक्ति घोड़े के साथ निकला। उसने पूछा, 'बाबू, क्या आपको घोड़ा चाहिए?' लेकिन हमने उसकी बात अनसुनी कर दी और आगे बढ़ गए। सड़क बाईं ओर मुड़ गई; दाईं ओर एक गहरी खाई थी। हम बाईं ओर मुड़ गए, दाईं ओर के किनारे से बचने की कोशिश करते हुए। सड़क के किनारे लगी रेलिंग लगभग दिखाई नहीं दे रही थी। साफ मौसम में यहाँ से कंचनजंगा आसानी से दिख जाता था, लेकिन आज ऐसा लग रहा था जैसे हम एक अभेद्य सफेद दीवार से घिरे हुए हों। थोड़ी देर में रेलिंग खत्म हो गई। अब हमें और भी ज़्यादा सावधान रहना था, क्योंकि अगर हम अपने दाहिनी ओर किनारे के ज़रा भी करीब चले गए, तो खाई में गिरने का पूरा खतरा था। मैंने देखा कि फेलुदा इतना मग्न लग रहा था कि वह बार-बार दाहिनी ओर जा रहा था। फिर वह खुद को संभालता और पहाड़ी के करीब बाईं ओर लौट आता। लालमोहन बाबू लगातार बुदबुदा रहे थे, 'रहस्यमय, रहस्यमय!' एक बार मैंने उन्हें कहते सुना, 'अरे, क्या तुम्हें लगता है कि 'रहस्यमय' शब्द का 'धुंध' से कोई संबंध है?'
हम दोनों में से कोई भी जवाब नहीं दे सका, क्योंकि हम सबने एक आवाज़ सुनी और रुक गए। यह हमारे पीछे से आती हुई तेज़ कदमों की आवाज़ थी। जो भी था, वह साफ़ तौर पर जल्दी में था और हमें उसे जाने देना पड़ा। लेकिन आवाज़ तेज़ होती जा रही थी, फिर भी हमें कोई दिखाई नहीं दिया, तभी अचानक कहीं से एक धुंधली सी आकृति प्रकट हुई और फेलूदा को खाई की ओर ज़ोर से धक्का दे दिया। अपना संतुलन बनाए रखने में असमर्थ, और अपने हमलावर से निपटने के लिए कुछ भी न कर पाने के कारण, फेलूदा खाई में गिर गया। वह आकृति जितनी तेज़ी से प्रकट हुई थी, उतनी ही तेज़ी से गायब भी हो गई, इससे पहले कि हममें से कोई उसका चेहरा देख पाता। लालमोहन बाबू चीख पड़े। मैं एक मूर्ति की तरह स्थिर खड़ा रहा, जो कुछ हुआ था, वह जानता था, लेकिन हिलने में असमर्थ था।
इसी समय, विपरीत दिशा से दो नेपाली आते हुए दिखाई दिए। वे तुरंत रुक गए और पूछा, 'क्या हुआ, बाबू?'
आखिरकार मुझे होश आया और मैंने उन्हें बताया। उनमें से एक ने कहा, 'एक मिनट ठहरिए, हम देखते हैं।' एक पल बाद, दोनों आदमी बड़ी आसानी से पहाड़ी से नीचे उतरते हुए नज़रों से ओझल हो गए। हम मूर्खता से वहीं खड़े रहे, यह सोचते हुए कि उन्हें क्या मिलेगा। लेकिन तीस सेकंड से भी कम समय में, कोहरा तेज़ी से और चमत्कारिक रूप से छंटने लगा। पेड़ों और अन्य वस्तुओं की धुंधली आकृतियाँ दिखाई देने लगीं, मानो किसी अदृश्य हाथ ने पर्दा हटा दिया हो। मैंने घबराहट से चारों ओर देखा।

नीचे वह क्या था?
एक पेड़। एक रोडोडेंड्रोन। ऐसा लग रहा था मानो कोई आदमी उसके तने से लिपटा हुआ हो। फेलुदा! हाँ, गलती हो ही नहीं सकती। मैं उसकी भूरी जैकेट और लाल-काली दुपट्टा देख सकता था। उन दोनों नेपाली लोगों ने भी उसे देखा था। कुछ मिनट बाद वे उसके पास पहुँचे और उसे उठने में मदद की। फेलुदा थोड़ा लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ।
‘फेलुदा!’ मैंने पुकारा।
‘फेलू बाबू!’ जटायु ने पुकारा। फेलुदा ने ऊपर देखा, फिर धीरे से हाथ उठाकर इशारा किया कि उसे ज़्यादा चोट नहीं लगी है। हमारे दो नेपाली दोस्त—जो संकट की इस घड़ी में किसी वरदान से कम नहीं थे—ने उसका हाथ पकड़ा और उसे वापस पहाड़ी पर चढ़ाया। यह आसान नहीं था, लेकिन लगभग पाँच मिनट में फेलुदा हमारे पास वापस आ गया। वह हाँफ रहा था, उसके माथे से खून बह रहा था, और उसकी हथेलियों पर खरोंचें थीं जिन पर खून के निशान थे।
‘बहुत-बहुत शुक्रिया!’ उसने अपने बचावकर्ताओं से कहा। वे मुस्कुराए, उसके कपड़े झाड़े और कहा कि उसे प्राथमिक उपचार के लिए सीधे मॉल स्थित क्लिनिक जाना चाहिए।
हमने उन्हें एक बार फिर धन्यवाद दिया और मॉल की ओर वापस चलने लगे। 'तपेश, क्या तुम्हें कुछ अंदाज़ा है कि वह आदमी कौन हो सकता है?' लालमोहन बाबू ने मुझसे पूछा। मैंने सिर हिला दिया। मैंने उसकी दाढ़ी के अलावा उसका चेहरा बिल्कुल नहीं देखा था। वह भी किसी तरह बनावटी लग रही थी। 'अब कैसा लग रहा है?' लालमोहन बाबू ने फेलुदा की ओर मुड़कर पूछा।
‘मैं बुरी तरह टूट चुका हूँ,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘अगर वह पेड़ न होता, तो मेरी सारी हड्डियाँ टूट जातीं। लेकिन मुझे इसी की ज़रूरत थी। इस ज़बरदस्त झटके ने मेरे दिमाग को फिर से खोल दिया है। मुझे एक बहुत ही मददगार सुराग मिल गया है। मुझे लगता है कि मैं आखिरकार सही दिशा में आगे बढ़ रहा हूँ, लालमोहन बाबू, हालाँकि अब यह स्पष्ट है कि मामला न तो सरल है और न ही आसान।’

नौ
क्लिनिक में ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर का नाम डॉ. बर्धन था। उन्होंने फेलुदा की अच्छी तरह जांच की और पुष्टि की कि उसकी चोटें गंभीर नहीं थीं। लेकिन स्वाभाविक रूप से उन्हें यह जानने की उत्सुकता थी कि क्या हुआ था, और हमें उन्हें बताना पड़ा।
‘लेकिन भला कौन तुम पर इस तरह हमला करना चाहेगा?’ उसने हैरानी से पूछा। इसका जवाब देने के लिए फेलुदा को बताना पड़ा कि वह कौन है। डॉ. बर्धन की आँखें फटी रह गईं।
‘आप सबसे प्रसिद्ध जांचकर्ता हैं, प्रदोष मित्र? मैंने आपके मामलों के बारे में बहुत कुछ पढ़ा है, लेकिन कभी सोचा नहीं था कि आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलने का मौका मिलेगा। क्या आप श्री मजूमदार की मृत्यु की जांच करने आए हैं?’
'हां, मैं अब इसमें शामिल हूं।'
वह मेरे मरीजों में से एक था।
'वास्तव में?'
'हां। एक ऐसा व्यक्ति जिसमें असाधारण इच्छाशक्ति थी। कोई यह नहीं बता सकता था कि उसने कितना कष्ट सहा था और वास्तव में अभी भी सह रहा था। वह अपने शौक में व्यस्त रहता था और हर जगह घूमने जाता था।'
‘पीड़ा से आपका क्या तात्पर्य है? क्या आप मुझे बता सकते हैं?’
‘खैर, सबसे पहले तो उनकी सेहत ठीक नहीं थी। फिर सात साल पहले उनकी पत्नी का निधन हो गया। उनकी मृत्यु कैंसर से हुई थी। इन सबके अलावा, उनके बेटे के साथ भी समस्याएं थीं।’
‘आपका मतलब समिरन बाबू से है?’
हां। वह काफी प्रतिभाशाली नौजवान था, लेकिन शेयर बाजार में सट्टेबाजी ने उसे पूरी तरह बर्बाद कर दिया। अब वह कर्ज में डूबा हुआ है। मुझे श्री मजूमदार के लिए बहुत दुख हुआ। आखिर समीरन उनका इकलौता बेटा था। चूंकि मैं उसका डॉक्टर था, इसलिए वह मुझसे बहुत सी बातें करता था, अपनी परेशानियां मुझसे साझा करता था जो वह किसी और से नहीं करता था। मुझे यकीन है कि समीरन इस बार सिर्फ अपने पिता से और पैसे मांगने के लिए आया था। लेकिन मुझे पता है कि श्री मजूमदार अपने बेटे से इतने नाराज और निराश थे कि वे उसकी मदद नहीं करते। हो सकता है कि उन्होंने उसे अल्टीमेटम भी दिया हो। यह सब इतना अप्रिय, इतना शर्मनाक है, इसके बारे में सोचकर मुझे बहुत दुख होता है। खासकर हत्या के बाद से। मुझे डर है कि यह अभी खत्म नहीं हुआ है, कुछ और हो सकता है। मैं आपको बता नहीं सकता कि क्या होगा, लेकिन मैं इस भावना को दूर नहीं कर पा रहा हूं।
क्या आपको पता है कि उन्होंने वसीयत बनाई थी?

नहीं। लेकिन अगर उन्होंने ऐसा किया भी है, तो मुझे यकीन है कि उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपने बेटे के नाम कर दी होगी, जब तक कि उन्होंने हाल ही में इसमें कोई बदलाव न किया हो।
फेलुदा ने कहा, 'धन्यवाद, डॉक्टर। आपको अंदाजा भी नहीं है कि आपने मेरी कितनी मदद की है। मैं यहां प्राथमिक उपचार कराने आया था। लेकिन आपने मुझे एक बिल्कुल अलग तरह की मदद दी है। यह मेरे लिए एक अतिरिक्त लाभ है। मैं आपका जितना भी धन्यवाद करूं कम है।'
डॉक्टर बर्धन ने धन्यवाद को एक तरफ रख दिया और फीस लेने से इनकार कर दिया। जब हम क्लिनिक से बाहर आए, तो फेलुदा ने कहा, 'अगर आप दोनों थोड़ा आराम करना चाहते हैं, तो होटल वापस जा सकते हैं। मुझे नयनपुर विला जाना है। मुझे आज जो कुछ भी नया पता चला है, उसे ध्यान में रखते हुए अपनी जांच फिर से शुरू करनी है। मेरी नजर में, अब पूरा मामला बिल्कुल अलग लग रहा है।'
लालमोहन बाबू और मैंने दोनों ने कहा कि हमारा होटल लौटने का कोई इरादा नहीं है। अगर फेलुदा मौत के मुंह से बचकर भी काम करता रह सकता है, तो हमारे चुपचाप रिटायर होने का कोई कारण नहीं था। मैं उसकी सहनशक्ति देखकर दंग रह गया। वह पहाड़ी से कम से कम सौ फीट नीचे लुढ़का था।
जब तक हम नयनपुर विला पहुँचे, तब तक कोहरा लगभग पूरी तरह छंट चुका था। घर में कुछ उदासी छाई हुई थी, लेकिन उसके चारों ओर की सुंदरता हमेशा की तरह मनमोहक थी। जैसे ही हम सामने के बरामदे के करीब पहुँचे, रजत बोस बाहर आ गए। शायद उन्होंने पत्थर की पक्की सड़क पर हमारे कदमों की आहट सुन ली थी। ‘नमस्कार,’ फेलुदा ने उनका अभिवादन किया। ‘मैं देख सकता हूँ कि आप कुछ खाली बैठे हैं। मुझे आपकी मदद चाहिए, श्री बोस।’
'हाँ?'
'क्या आपको लगता है कि मैं श्री मजूमदार का अध्ययन कक्ष देख सकता हूँ? अगर अनुमति हो तो मैं आपका कमरा भी देखना चाहूँगा और कुछ प्रश्न पूछना चाहूँगा।'
‘बहुत अच्छा। कृपया अंदर आइए।’
‘समिरन बाबू कहाँ हैं?’
वह शायद नहा रहा है।
‘ठीक है, चलिए अध्ययन कक्ष में बैठते हैं।’
हम श्री बोस के पीछे-पीछे उत्तरी भाग के पिछले हिस्से में गए। श्री मजूमदार का अध्ययन कक्ष बड़ा, सुव्यवस्थित और आरामदायक था। घर के पीछे की चीड़ की लकड़ी खिड़की से थोड़ी-थोड़ी दिखाई दे रही थी। खिड़की के सामने एक भारी महोगनी की मेज और दो कुर्सियाँ रखी थीं। दूसरे छोर पर आगंतुकों के लिए अन्य कुर्सियाँ और सोफे थे। हम उस तरफ चले गए। फेलुदा हमारे साथ नहीं आया। उसने आराम से कमरे का निरीक्षण किया और बीच-बीच में मेज से वस्तुएँ उठाता रहा। मैंने उसे एक कागज काटने वाला चाकू उठाते और उसे ध्यान से देखते हुए देखा।
उन्होंने टिप्पणी करते हुए कहा, 'इसकी धार काफी तेज है, इस तरह के छोटे चाकू से तो किसी की जान भी ली जा सकती है!'

‘मुझे लगता है ये एक जोड़ी में से एक है, फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने कहा।
‘पुलक ने दूसरे का इस्तेमाल अपने सेट पर किया है। एक सीन में विलेन इससे अपनी पीठ खुजाता है।’
दूर से भी चाकू तेज और जानलेवा प्रतीत हो रहा था।
फेलुदा ने उसे वापस मेज पर रख दिया।
एक तरफ अलमारियों की कतारें लगी थीं, जो श्री मजूमदार की स्क्रैपबुक्स से भरी लंबी, मोटी बहीखातों से लदी थीं। हम इनमें से दो पहले ही देख चुके थे। फेलुदा ने कुछ और स्क्रैपबुक्स निकालीं और उन्हें सरसरी नजर से देखा। उन्होंने श्री बोस से पूछा, 'आपके आने से पहले इन्हें कौन काटता और चिपकाता था?'
'श्री मजूमदार यह काम स्वयं किया करते थे।'
'क्या आपके आने के बाद उन्होंने यह काम पूरी तरह से आपको सौंप दिया था?' ‘लगभग। लोकेनाथ ने कभी-कभी मेरी मदद की।’
‘आपका मतलब वाहक से है?’
'हां। उसने स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली थी। वह बहुत अच्छी तरह से पढ़ और लिख सकता था।'
‘एक भारवाहक के रूप में काम करने वाले व्यक्ति के लिए यह असामान्य है। क्या आप हमें बता सकते हैं कि उसने ऐसा काम क्यों चुना?’
‘श्री मजूमदार ने उन्हें अच्छा वेतन दिया।’
‘मैं समझ गया। उन्होंने अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का एक बढ़िया तरीका चुना, है ना?’
श्री बोस ने कुछ नहीं कहा। फेलुदा कमरे में इधर-उधर घूमते रहे, वस्तुओं को देखते और छूते रहे और साथ ही अपने प्रश्न पूछते रहे।
‘यहाँ आने से पहले आप क्या करते थे?’
किसी निजी कंपनी में काम करें।
'कहाँ?'
‘कलकत्ता में।’
‘आपने वह नौकरी कितने समय तक की?’
सात साल।
‘क्या श्री मजूमदार ने सचिव पद के लिए विज्ञापन दिया था?’
'हाँ।'
'आपकी योग्यताएं क्या हैं?'
मेरे पास वाणिज्य में डिग्री है। मैंने 1957 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।
‘आपके परिवार का क्या हुआ? वे कहाँ हैं?’
‘मेरी शादी नहीं हुई है। मेरे माता-पिता दोनों का निधन हो चुका है।’ 'भाइयों और बहनों?'
मेरे पास कोई नहीं है।
‘क्या आपका मतलब है कि आप इस दुनिया में बिल्कुल अकेले हैं?’ 'हाँ।'
‘यह तस्वीर क्या है?’

फेलुदा ने शेल्फ से एक फ्रेम वाली तस्वीर उठाई। यह एक ग्रुप फोटो थी, संभवतः किसी ऑफिस के कर्मचारियों की। इसमें लगभग पैंतीस लोग थे, जिनमें से अधिकतर पंक्तियों में खड़े थे। केवल कुछ ही लोग सामने की पंक्ति में कुर्सियों पर बैठे थे।
‘यह तस्वीर कई साल पहले ली गई थी, जब श्री मजूमदार बंगाल बैंक में काम करते थे। उनके एक प्रबंध निदेशक पद छोड़ रहे थे। यह तस्वीर उनके विदाई समारोह के दिन ली गई थी। उस समय श्री मजूमदार उप निदेशक थे।’
फेलुदा ने तस्वीर को गौर से देखा। 'इसमें इन सभी लोगों के नाम नहीं दिख रहे हैं। हालांकि, मैं श्री मजूमदार को पहचान सकता हूं।'
'शायद तस्वीर के नीचे एक सूची थी। हो सकता है वह फ्रेम के नीचे छिपी हो।' ‘क्या मैं इसे कुछ दिनों के लिए अपने पास रख सकता हूँ?’
'बिल्कुल।'
फेलुदा ने मुझे तस्वीर दिखाई। लालमोहन बाबू और मैंने उसे देखा। यह दफ्तरों में ली जाने वाली आम समूह तस्वीरों से अलग नहीं थी। श्री मजूमदार कुर्सी पर बैठे थे। उनके बगल में बैठे व्यक्ति संभवतः पद छोड़ने वाले प्रबंध निदेशक थे।
‘अब मुझे यह जानना है कि हत्या वाले दिन तुमने अपना समय कैसे बिताया,’ फेलुदा ने अपनी जैकेट की जेब से नोटबुक निकालते हुए कहा। उसने नोटबुक खोली और एक खास पन्ने पर लिखे नोट्स पर नज़र डाली। ‘श्री मजूमदार हर सुबह साढ़े ग्यारह बजे अपने अध्ययन कक्ष में आते थे। तुम्हें उस समय यहाँ होना पड़ता था और तुम उनके साथ साढ़े बारह बजे तक काम करते थे। क्या यह सही है?’
'हाँ।'
‘आपने उस सुबह किस चीज पर काम किया?’
मुख्य रूप से उनका पत्राचार। श्री मजूमदार भारत और विदेश दोनों जगह कई लोगों को जानते थे। वे उन्हें नियमित रूप से पत्र लिखते थे। उन पत्रों का जवाब देने में काफी समय लगता था।
'साढ़े ग्यारह बजे श्री मजूमदार के आपके साथ आने से पहले आप क्या कर रहे थे?'
'नाश्ते के तुरंत बाद फिल्म यूनिट आ गई। मैं दूसरी तरफ बरामदे में खड़ा था और उन्हें पहले शॉट के लिए तैयार होते हुए देख रहा था।'
‘वह कौन सा था?’
इसमें वर्मा और श्री गांगुली थे।
लालमोहन बाबू ने इस कथन की सत्यता की पुष्टि करने के लिए हल्का सा सिर हिलाया।
‘उस समय क्या समय रहा होगा?’
'शायद ग्यारह बजे होंगे। मुझे पक्का नहीं पता, मैंने अपनी घड़ी नहीं देखी। मैं कुछ ही मिनटों में निकलकर यहाँ आ गया।'
‘ठीक है। सुबह का काम खत्म करने के बाद आपने क्या किया? क्या आपने श्री मजूमदार और उनके बेटे के साथ दोपहर का भोजन किया?’
'हाँ।'
'तुम उस के बाद क्या करते हो?'

'जब हमने खाना खत्म किया तब तक लगभग एक बज चुका था। उसके बाद मैं सीधे अपने कमरे में चला गया और आधा घंटा पढ़ने में बिताया।'
‘तुम क्या पढ़ रहे थे?’
‘एक पत्रिका—रीडर्स डाइजेस्ट।’
'और तब?'
'लगभग दो बजे, मैं चीड़ के जंगल में टहलने गया। यह एक खूबसूरत जगह है। मैं जब भी मौका मिलता है, वहां जाता हूं।'
‘तो मुझे यही समझ आया। उसके बाद आपने क्या किया?’
मैं लगभग ढाई बजे लौटा और आराम करने के लिए अपने कमरे में चला गया। मैं चार बजे अपने कमरे से बाहर आया और फिर से गोलीबारी देखने लगा। श्री गांगुली उस गोलीबारी में थे जो चल रही थी।
लालमोहन बाबू ने एक बार फिर सिर हिलाया।
'जब श्री मजूमदार पांच बजे के बाद नहीं आए, तो क्या आपको यह अजीब नहीं लगा?' फेलुदा ने आगे पूछा।
'सच कहूं तो, मुझे समय का पता ही नहीं चला। वहां लगातार एक शोर मचाने वाला जनरेटर चल रहा था, और दर्जनों लोग आ-जा रहे थे और चिल्ला रहे थे; यह इतना विचलित करने वाला था कि मैं अपनी घड़ी देखना ही भूल गया।'
‘श्री मजूमदार बॉस के तौर पर कैसे थे?’
'बहुत अच्छा।'
‘क्या वह आप पर गुस्सा या अधीर नहीं हुआ?’
नहीं। वह अत्यंत मिलनसार थे।
‘क्या आप अपने वेतन से खुश थे?’
'हाँ।'
‘लालमोहन बाबू ने हमें हत्या से एक दिन पहले बाथरूम जाते समय सुनी गई एक घटना के बारे में बताया। उन्होंने श्री मजूमदार की आवाज़ सुनी, जिसमें वह कह रहे थे, “तुम झूठे हो। मैं तुम्हारी एक भी बात पर विश्वास नहीं करता।” आपको क्या लगता है कि वह किससे बात कर रहे होंगे?’
मुझे उनके बेटे के अलावा किसी और का ख्याल नहीं आता।
‘क्या पिता और पुत्र के बीच अच्छे संबंध नहीं थे?’
'वह कुछ मायनों में अपने बेटे से निराश थे।'
'आप यह कैसे जानते हैं?'
‘उन्होंने मेरी मौजूदगी में ऐसी बातें कहीं जिनसे ऐसा प्रतीत होता था कि वे यही कह रहे थे। जैसे, “समीरन कुछ ज्यादा ही लापरवाह हो गया है”, या इसी तरह के शब्द। वह अपने बेटे से बेशक बेहद प्यार करते थे, लेकिन इसके बावजूद वे उसे कभी-कभार डांटने से खुद को रोक नहीं पाते थे।’
‘क्या आपको पता है कि उन्होंने वसीयत छोड़ी थी?’
मुझे पक्का पता नहीं है, लेकिन जहां तक मुझे पता है, उसने ऐसा नहीं किया। 'क्या सोच कर तुम यह कह रहे हो?'
उन्होंने एक बार मुझसे कहा था, “मैं इस समय बिल्कुल ठीक महसूस कर रहा हूँ। मैं वसीयत तभी बनाऊँगा जब मेरा स्वास्थ्य और खराब हो जाएगा।”
इसका मतलब यह होगा कि उनकी सारी संपत्ति उनके बेटे को मिल जाएगी।

'हां, बिल्कुल।'
‘क्या अब मैं आपका कमरा देख सकता हूँ?’
'ज़रूर। कृपया मेरे साथ आइए।'
रजत बोस का कमरा काफी सादा था। उसमें एक पलंग, एक छोटी अलमारी, एक मेज और एक कुर्सी थी। दीवार पर एक ब्रैकेट लगा था, जिस पर एक कमीज, एक भूरा स्वेटर और एक तौलिया टंगा हुआ था। एक कोने में एक सूटकेस रखा था, जिस पर 'आर.बी.' लिखा हुआ था। मेज पर कुछ किताबें और पत्रिकाएँ बिखरी पड़ी थीं।
'एक हिंदी पत्रिका!' फेलूदा ने कहा।
जी हां। मैंने अपना बचपन कानपुर में बिताया, वहीं मैंने हिंदी सीखी। मेरे पिता वहां डॉक्टर थे। उनके निधन के बाद मैं अपनी मां के साथ कलकत्ता चली गई।
हम उनके कमरे से बाहर आए। ‘क्या आपको पता था कि श्री मजूमदार नींद की गोलियां लेते थे?’
'हां, बिल्कुल। मैं कभी-कभी उसके लिए इन्हें खरीदा करता था। उसे पूरे महीने की आपूर्ति लेना पसंद था।'
‘हम्म। ठीक है, बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मैं समीरन बाबू से बात करना चाहूंगा।’
समीरन बाबू नहा चुके थे और अपने कमरे में अखबार पढ़ रहे थे। शोक के कारण उन्होंने दाढ़ी नहीं बनाई थी। फेलुदा ने उनसे बात करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने ज्यादा कुछ नहीं कहा। हालांकि, उन्होंने अपने पिता के साथ अक्सर होने वाली बहसों को स्वीकार किया। उन्होंने कहा, 'बाबा पहले ऐसे नहीं थे। बीमारी के बाद उनमें बहुत बदलाव आ गया।'
'क्या यह कहना गलत होगा कि आपमें भी बदलाव आया, जिससे शायद उन्हें दुख हुआ हो?'
'मेरी कुछ अटकलें गलत साबित हुईं, लेकिन ऐसा किसी के साथ भी, किसी भी व्यवसाय में हो सकता है।'
'क्या आपके पिता की हत्या से एक दिन पहले, दोपहर लगभग डेढ़ बजे, आपकी किसी से बहस हुई थी?'
‘अरे नहीं!’
क्या आपने कभी अपने पिता से आर्थिक सहायता मांगी है?
'हां, मुझे क्यों नहीं करना चाहिए? उसने बहुत पैसा कमाया था।'
क्या आपको पता था कि आपके पिता ने वसीयत नहीं बनाई थी?
'हां। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि अगर उन्होंने वसीयत बनाने का फैसला किया तो वह मुझे एक पैसा भी नहीं देंगे।'
लेकिन अब तुम्हें सब कुछ विरासत में मिलने वाला है।
'हां, ऐसा ही प्रतीत होता है।'
‘अब आपकी अधिकतर समस्याएं हल हो जाएंगी, है ना?’
‘ठीक है। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कहना चाह रहे हैं। आप निश्चित रूप से यह नहीं सोचते कि मैंने अपने पिता की हत्या की है?’
'मान लीजिए मैं ऐसा करता हूँ? आपके पास निश्चित रूप से मकसद और अवसर दोनों थे, है ना?'

‘मैं उसके पेय में जहर कैसे मिला सकता था? लोकेनाथ ने उसका दूध तैयार रखा था, है ना?’
'हां, लेकिन यह मत भूलो कि वह उसे कमरे में छोड़कर तुम्हारे पिता को बुलाने चला गया था। तब तुम उससे छेड़छाड़ कर सकते थे। इसके अलावा, तुम्हारे पास अपने पिता को चाकू मारने का पूरा मौका था। तुम्हें पता होना चाहिए था कि उसी कमरे में एक बेहतरीन हथियार मौजूद था।'
समिरन बाबू ने एक विकृत मुस्कान दी। 'क्या आप पूरी तरह से पागल हो गए हैं, श्रीमान मित्तर? आप लापता मूर्ति के बारे में क्यों नहीं सोच रहे हैं? अगर मुझे पता होता कि मुझे मेरे पिता की सारी संपत्ति मिल जाएगी, तो क्या मैं एक छोटी सी मूर्ति के बारे में सोचता?'
‘कौन जानता है, श्री मजूमदार, शायद आपको तुरंत नकदी की जरूरत रही हो? आखिर, अगर आपको सब कुछ विरासत में मिल भी जाता, तो भी आपको एक दिन में सब कुछ नहीं मिल जाता, है ना? पूरी कानूनी प्रक्रिया में समय लगता, और आप यह जानते थे।’ तो फिर लोकेनाथ कहाँ गया? वह क्यों भाग गया? यहाँ समय बर्बाद करने के बजाय असली अपराधी को पकड़ने की कोशिश क्यों नहीं करते?
'मेरे यहां वापस आने का एक कारण है, श्री मजूमदार। एक बहुत अच्छा कारण।' ठीक है। मैं यह सुनना भी नहीं चाहता कि मामला क्या है। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि इस भयानक मामले में महज़ संयोग से मैं फँस गया हूँ। मैं निश्चित रूप से आपका आदमी नहीं हूँ। हत्यारे को खोजने के लिए आपको कहीं और देखना होगा।

दस
हम होटल लौट आए। दोपहर के भोजन के बाद फेलुदा ने कहा कि वह फ्रेम की हुई तस्वीर को मॉल स्थित एक स्टूडियो में ले जाना चाहता है। उसने आगे कहा, ‘फिर मुझे पुलिस स्टेशन में इंस्पेक्टर साहा से मिलना होगा। मुझे कुछ जानकारी की तत्काल आवश्यकता है, जो मुझे लगता है कि पुलिस कहीं अधिक आसानी से प्राप्त कर सकती है। अगर आप दोनों कहीं जाना चाहते हैं, तो जाइए। मैं लौटने के बाद बाहर नहीं जाऊंगा। मैं बस सोचना चाहता हूं। इस मामले ने अभी तक कोई निश्चित रूप नहीं लिया है। कुछ बातें अभी भी अस्पष्ट हैं... अभी भी धुंधली हैं।’
फेलुदा चला गया। लालमोहन बाबू और मैंने फिर से टहलने जाने का फैसला किया। बाहर ठंडी हवा चल रही थी, जिससे चलना बहुत सुखद लग रहा था।
मैंने जटायु से कहा, ‘ऐसी एक चीज़ है जो तुमने अभी तक नहीं देखी है। यह श्री मजूमदार के घर के पीछे का चीड़ का जंगल है। मैं वहाँ बस कुछ मिनटों के लिए गया था, लेकिन मुझे वह जगह बहुत सुंदर लगी। क्या तुम वहाँ जाना चाहोगे?’ क्या हमें वहां पहुंचने के लिए उसके घर से होकर जाना पड़ेगा?
'अरे नहीं। मुख्य सड़क बाईं ओर मुड़ती है, जो सीधे जंगल की ओर जाती है। क्या आपने इस पर ध्यान नहीं दिया?'
नहीं, मैं ऐसा नहीं कह सकता। लेकिन अगर ऐसा है, तो चलिए चलते हैं।
हम चले गए। फेलुदा के शब्द मेरे दिमाग में गूंजते रहे। उसने निश्चित रूप से कोई महत्वपूर्ण सुराग ढूंढ लिया था, लेकिन जाहिर है कि वह तब तक इसके बारे में बात नहीं करेगा जब तक वह पूरी तरह से सोच-विचार न कर ले। उसके लौटने पर हमें लंबे समय तक चुप्पी का सामना करना पड़ेगा।
‘तपेश,’ लालमोहन बाबू ने जंगल की ओर जाते हुए कहा, ‘मुझे एक बात बताओ। इस मामले में रहस्य क्या है? लोकेनाथ ने अपने मालिक की हत्या की और मूर्ति लेकर गायब हो गया। क्या बस इतना ही है? तुम्हारा चचेरा भाई इसे पुलिस के भरोसे क्यों नहीं छोड़ देता? वे लोकेनाथ को ढूंढ लेंगे और उससे निपट लेंगे। बात खत्म।’
‘आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? आप फेलुदा को सालों से जानते हैं। क्या आपने कभी उसे किसी बात पर इतना गुस्सा होते देखा है, जब तक कि कोई ठोस वजह न हो? आपने खुद देखा कि उस पर हमला कैसे हुआ। यकीनन लोकेनाथ इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं था? इसके अलावा, श्री मजूमदार ने खुद किसी की हत्या की थी, भले ही वह एक दुर्घटना ही क्यों न हो। फिर उनके बैंक में किसी ने बहुत सारा पैसा चुराया था। वह कभी पकड़ा नहीं गया। सबसे बड़ी बात, आपने खुद हमें बताया कि आपने श्री मजूमदार को किसी पर चिल्लाते हुए सुना था। हमें नहीं पता कि वह किस पर चिल्ला रहे थे। इतने सारे सवालों के जवाब मिलने बाकी हैं। आप इसे एक साधारण मामला कैसे कह सकते हैं?’

इंस्पेक्टर ने हैरानी से कहा, 'चाकू से हमला किया गया! हम आस-पास के गांवों में उसकी तलाश कर रहे थे। ज़ाहिर है, हमने मान लिया था कि वह अभी भी ज़िंदा है। श्री मिटर, इस खोज का पूरा श्रेय आपके मित्र और आपके चचेरे भाई को जाता है। हम आप दोनों के बहुत आभारी हैं।'
पुलिस शव को ले गई। हम एक बार फिर होटल लौट आए।
‘अब तो पूरी बात ने बिलकुल अप्रत्याशित मोड़ ले लिया है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने कुर्सी पर बैठते हुए पूछा।
'हां, आप सही कह रहे हैं। लेकिन यह अंधकार की ओर नहीं, लालमोहन बाबू, बल्कि प्रकाश की ओर मुड़ गया है। मुझे बस कुछ जानकारी चाहिए। फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा।'
इंस्पेक्टर साहा ने शाम को फेलुदा को फोन किया। फेलुदा की टेढ़ी मुस्कान और 'मैं समझ गया' और 'बहुत बढ़िया' कहने के तरीके से मैं समझ गया कि उसे वह जानकारी मिल गई थी जिसका वह इंतजार कर रहा था।
‘अगर ऐसा है, तो मुझे लगता है कि आपको कल सुबह दस बजे श्री मजूमदार के ड्राइंग रूम में सबको इकट्ठा होने के लिए कहना चाहिए,’ फेलुदा ने श्री साहा से कहा। ‘हमें नयनपुर विला से सभी लोगों की और फिल्म यूनिट से कुछ लोगों की — पुलक घोषाल, राजेन रैना, महादेव वर्मा और सुदेव घोष—की उपस्थिति अनिवार्य है। आपको बता दूं, आपकी उपस्थिति भी अत्यंत आवश्यक है।’

ग्यारह
अगले दिन सुबह सात बजे हमारे कमरे का टेलीफोन बजने लगा। हम पहले ही उठ चुके थे और आराम से चाय पी रहे थे। फेलुदा ने हाथ बढ़ाकर फोन उठाया। फोन रखने से पहले मैंने उसे सिर्फ दो बातें कहते सुना। 'क्या!' उसने कहा, और 'मैं पाँच मिनट में तैयार हो जाता हूँ।' फिर वह मेरी तरफ मुड़ा और बोला, 'जाओ और लालमोहन बाबू को तैयार होने के लिए कहो। हमें तुरंत निकलना है।'
मैंने बिना सवाल पूछे वही किया जो मुझे कहा गया था। हम कहाँ जा रहे थे? किसी ने मुझे नहीं बताया, जब तक कि पुलिस की दो जीपें दोबारा नहीं आ गईं और हमें इंस्पेक्टर साहा के साथ पहली जीप में बैठने को कहा गया। पता चला कि जो कांस्टेबल आज सुबह नयनपुर विला में बैठक के बारे में बताने गया था, उसे पता चला था कि कांस्टेबल के आने से सिर्फ पंद्रह मिनट पहले समीरन मजूमदार को एक फोन आया था। वह किसी जरूरी काम से सिलीगुड़ी के लिए निकल गए थे। चूंकि फेलुदा को लगा कि उनके बिना बैठक करने का कोई फायदा नहीं होगा, इसलिए हम यह देखने के लिए निकल पड़े कि क्या हमारी जीप उनकी गाड़ी से मिल सकती है। मैंने पहले कभी घुमावदार, पहाड़ी सड़क पर इतनी तेज़ गति से गाड़ी नहीं चलाई थी। सौभाग्य से, चालक बेहद कुशल लग रहा था और आज कोहरा भी नहीं था। हम आधे घंटे में घूम, सोनाडा और तुंग पार कर गए। सामान्य तौर पर, इसमें कम से कम पैंतालीस मिनट लगते। इंस्पेक्टर साहा ने केर्सियोंग और सिलीगुड़ी को सूचना भेजी थी, लेकिन समीरन बाबू जिस टैक्सी में यात्रा कर रहे थे, उसका नंबर देना संभव नहीं हो पाया था। इंस्पेक्टर साहा ने कहा कि उसका नंबर ढूंढने में बहुत समय लग जाता।
हम जल्दी ही केर्सियोंग पहुँच गए, लेकिन वहाँ समीरन मजूमदार की टैक्सी का कोई अता-पता नहीं था। इंस्पेक्टर साहा ने ड्राइवर से कहा, 'पंखबारी होते हुए शॉर्टकट लो।' हमारी जीप मुख्य सड़क से हट गई। दूसरी जीप नियमित मार्ग पर आगे बढ़ गई।
पंखाबारी जाने वाली सड़क कितनी घुमावदार थी, इसका वर्णन करना असंभव है। लालमोहन बाबू ने अपनी आँखें बंद कर लीं और कहा, 'अगर आपको टैक्सी दिखे तो मुझे बता देना। मैं आँखें नहीं खोलूंगा। अगर मैंने खोलीं तो मुझे उल्टी आने लगेगी।'
पंद्रह मिनट बाद, पहाड़ी के चारों ओर सांप की तरह लिपटी हुई सड़क पर चलते हुए, हम एक तीखे मोड़ पर पहुँचे। हमारे ड्राइवर ने ब्रेक पर ज़ोर से पैर दबाया, क्योंकि सड़क के लगभग बीचोंबीच एक टैक्सी खड़ी थी। उसका ड्राइवर पंक्चर टायर बदलने की कोशिश कर रहा था, और कुछ दूरी पर समीरन मजूमदार बेचैनी से सिगरेट पी रहे थे। हमारी जीप के अचानक सामने आने से वे चौंक और सहमे हुए लग रहे थे।

हम सब बाहर निकल गए। फेलुदा और इंस्पेक्टर साहा आगे बढ़ गए। ‘क्या... क्या बात है?’ समीरन बाबू ने पूछा, उनका चेहरा पीला पड़ गया था। ‘कुछ नहीं,’ फेलुदा ने जवाब दिया, ‘बस आज सुबह दस बजे आपके घर पर एक मीटिंग है। हमें लगता है कि आपको वहाँ उपस्थित होना चाहिए, और वास्तव में यह उस मीटिंग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जिसमें आप शामिल होने के लिए निकले हैं। तो क्या आप कृपया अपने टैक्सी ड्राइवर को किराया देकर हमारे साथ आ सकते हैं? अपना सूटकेस मत भूलना।’
तीन मिनट में हम दार्जिलिंग वापस जाने के लिए निकल पड़े। रास्ते में किसी ने बात नहीं की।
जब हम नयनपुर विला पहुंचे, तब तक पौने दस बज चुके थे। 'चूंकि लोकेनाथ अभी तक लापता हैं, क्या आप अपने दूसरे नौकर बहादुर से कम से कम एक दर्जन लोगों के लिए कॉफी बनाने के लिए कह सकते हैं?' फेलुदा ने पूछा।
हम ड्राइंग रूम में गए। बगल वाले कमरे से और कुर्सियाँ लाई गई थीं। बहादुर के कॉफी लेकर आते ही माउंट एवरेस्ट होटल से टीम आ गई। पुलक घोषाल खुले तौर पर आश्चर्यचकित दिखे। उन्होंने पूछा, 'आखिर बात क्या है, लालुदा?' मुझे कुछ भी पता नहीं है। आपका अनुमान भी उतना ही सही है जितना मेरा। लेकिन इस बैठक का उद्देश्य हत्या के बाद से हमें परेशान कर रही हर बात पर प्रकाश डालना है। प्रकाश व्यवस्था की जिम्मेदारी श्री प्रदोष मित्तर के पास है। 'अच्छा। क्या हम फिर से शूटिंग शुरू कर सकते हैं?'
मैं आपको नहीं बता सकता। बस धैर्य रखें, जल्द ही सब कुछ पता चल जाएगा।
मैं दुआ करूंगा कि सब ठीक हो जाए। मैं बारह साल से फिल्में निर्देशित कर रहा हूं और इस दौरान सत्रह फिल्में बना चुका हूं; लेकिन इससे पहले मैं कभी भी इतने उलझे हुए मामले में नहीं फंसा।'
मुझे पुलक बाबू के लिए बहुत दुख हुआ। उनकी फिल्म का कुल बजट शुरू में 56 लाख रुपये था। पता नहीं शूटिंग में इतनी देरी होने पर आखिर में उन्हें कितना खर्च करना पड़ता।
सभी ने कुर्सियाँ ढूँढ़ीं और बैठ गए, सबके चेहरे पर साफ़ बेचैनी झलक रही थी। मैंने पूरे समूह पर सरसरी नज़र डाली। फेलुदा मेरे बाईं ओर और लालमोहन बाबू दाईं ओर बैठे थे। श्री साहा और समीरन मजूमदार समेत बाकी लोग कमरे में इधर-उधर बिखरे हुए थे। बहादुर और रसोइया जगदीश भी मौजूद थे। चार कांस्टेबल दरवाज़े के पास खड़े थे।
हमने अपनी कॉफ़ी खत्म कर ली। शेल्फ पर रखी एक आकर्षक घड़ी ने दस बार आवाज़ की। आखिरी आवाज़ बंद होते ही फेलुदा उठ खड़ा हुआ। कमरे में वही अकेला ऐसा व्यक्ति था जो बिल्कुल शांत दिख रहा था। यहाँ तक कि इंस्पेक्टर साहा भी बीच-बीच में अपनी उंगलियाँ चटका रहा था।
फेलुदा ने अपना गला साफ किया और बोलना शुरू किया।
'पिछले कुछ दिनों में इस घर में कुछ अप्रिय घटनाएं घटी हैं। शायद ये घटनाएं न होतीं अगर फिल्म यूनिट के आने से घर की सामान्य दिनचर्या पूरी तरह से अस्त-व्यस्त न हुई होती। ज्यादातर लोगों का ध्यान शूटिंग में लगा हुआ था, इसलिए अपराधी के लिए अपनी मनमानी करना आसान हो गया।'

‘इन त्रासदियों में सबसे पहली घटना इस घर के मालिक श्री बिरुपाक्षा मजूमदार की मृत्यु थी। उनकी मृत्यु मुझे बेहद रहस्यमय लगी। सभी को यही लग रहा था कि उनके सेवक लोकेनाथ ने एक कीमती मूर्ति चुराने के लिए उनकी हत्या कर दी और उसी दोपहर गायब हो गया। लेकिन मैं इसे स्वीकार नहीं कर सका। मैं कुछ ही मिनटों में इसका कारण बताऊंगा। इससे पहले, मैं आपको मृतक से जुड़ी दो बातें बताना चाहता हूं।’
पहला मामला धन के गबन से संबंधित है। जब श्री मजूमदार कलकत्ता में बंगाल बैंक के प्रबंध निदेशक के रूप में कार्यरत थे, तब वी. बालापोरिया नामक एक युवा कर्मचारी 150,000 रुपये लेकर गायब हो गया। उसका अभी तक पता नहीं चल पाया है।
दूसरी घटना मध्य प्रदेश के नीलकंठपुर में घटी। स्थानीय राजा पृथ्वी सिंह ने श्री मजूमदार को शिकार पर जाने का निमंत्रण दिया। वे एक बाघ का शिकार करना चाहते थे। श्री मजूमदार राजा के साथ जंगल गए और उन्होंने एक झाड़ी के पीछे कुछ हिलता हुआ देखा।
उसे बाघ समझकर उसने गोली चला दी और उसे एहसास हुआ कि गोली बाघ को नहीं, बल्कि एक आदमी को लगी है। उस आदमी का नाम सुधीर ब्रह्मा था। वह इतिहास के प्रोफेसर थे, लेकिन आयुर्वेद में रुचि होने के कारण वे जड़ी-बूटियों की तलाश में जंगल में आए थे। उनकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। राजा पृथ्वी सिंह ने अपने मित्र की प्रतिष्ठा बचाने के लिए इस घटना को गुप्त रखने के लिए बहुत प्रयास किए।
सुधीर ब्रह्मा का रमेश नाम का एक सोलह वर्षीय बेटा था। अपने पिता की मृत्यु और हत्यारे को मिली छूट से बेहद दुखी रमेश ने बदला लेने की कसम खाई। किसी भी तरह, बड़ा होकर वह हत्यारे को ढूंढ निकालेगा और उससे बदला लेगा। यह बात मैंने श्री मजूमदार के पड़ोसी हरिनारायण मुखर्जी से सुनी, जो उस समय नीलकंठपुर में मौजूद थे और ब्रह्मा परिवार को जानते थे। इस कहानी को साबित करने का कोई तरीका नहीं है; लेकिन श्री मजूमदार ने खुद मुझे संकेत दिया था कि उनके अतीत में एक ऐसा घोटाला हुआ था जिसे किसी तरह प्रेस से छिपाया गया था। इसी वजह से मैंने श्री मुखर्जी की बात पर विश्वास किया।
अब मुझे बिरुपाक्षा मजूमदार की मृत्यु पर वापस आने दीजिए। उन्हें मारने का सबसे अच्छा मकसद और मौका उनके अपने बेटे समीरन के पास था। उन्होंने शेयर बाजार में भारी नुकसान उठाया था और कर्ज में डूबे हुए थे। क्या आप इससे इनकार करते हैं, श्री मजूमदार?
समीरन मजूमदार ने चुपचाप सिर हिलाया और फर्श की ओर देखने लगा। 'क्या आप इस बात से भी इनकार करते हैं कि अगर आपके पिता की मृत्यु हो जाती तो उनकी सारी संपत्ति आपको मिल जाती?'
एक बार फिर, समिरन बाबू ने ऊपर देखे बिना अपना सिर हिलाया।
ठीक है। अब मैं उनकी हत्या के तरीके की जाँच करता हूँ। श्री मजूमदार दोपहर के भोजन के बाद प्रतिदिन एक गिलास दूध के साथ नींद की गोली लेते थे। उनका सहायक लोकेनाथ उनके लिए दूध तैयार करता था। उनकी मृत्यु से दो दिन पहले उन्होंने पूरे महीने की दवाइयाँ खरीदी थीं। जब उनकी मृत्यु हुई, तब तक उनके पास अट्ठाईस गोलियाँ बची होनी चाहिए थीं। लेकिन गोलियों वाली बोतल

नहीं मिली। इसलिए स्वाभाविक रूप से हम सभी ने मान लिया कि उन्हें जहर दिया गया था। इसके अलावा, हमें एक कागज का टुकड़ा मिला जिस पर "विश" लिखा हुआ था, जिससे सारा संदेह दूर हो गया। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। उन्हें चाकू भी मारा गया था। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि श्री मजूमदार के दूध पीने के कुछ मिनट बाद उनका हत्यारा लौटा और गोलियों के असर न होने की आशंका में चाकू से अपना काम पूरा कर दिया।
अब सवाल यह उठता था कि इस जघन्य हत्या का मकसद क्या हो सकता है? जवाब सीधा- सादा था: अष्टधातु से बनी कृष्ण की मूर्ति गायब थी। हत्यारा स्पष्ट रूप से उसे लेकर भाग गया था।
जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, मुझे इस सिद्धांत पर संदेह था। फिर भी, पुलिस को पूरा यकीन था कि लोकेनाथ ही हत्यारा और चोर दोनों था। कल हमें एहसास हुआ कि लोकेनाथ को दोषी ठहराना कितना गलत था। मेरे दोस्त और चचेरे भाई ने संयोग से इस घर के पीछे चीड़ के जंगल में लोकेनाथ का शव पाया। उसकी भी चाकू से वार करके हत्या कर दी गई थी। उसके शव के पास एक टूटी हुई बोतल पड़ी थी और बची हुई गोलियां इधर-उधर बिखरी हुई थीं। इसका मतलब सिर्फ यही हो सकता है कि लोकेनाथ न केवल निर्दोष था, बल्कि उसने वास्तव में अपने मालिक को जहर से बचाने के लिए गोलियों की पूरी बोतल लेकर भागने की कोशिश की थी। रास्ते में किसी ने उसकी हत्या कर दी। इसका सिर्फ एक ही मतलब हो सकता है: श्री मजूमदार की मौत जहर से नहीं, बल्कि चाकू के घावों से हुई थी।
अब मैं आपको अपने कुछ अनुभवों के बारे में बताता हूँ।
'मैं नयनपुर विला के एक निवासी के बारे में उत्सुक था, हालांकि शुरू में मुझे उस पर संदेह करने का कोई कारण नहीं था। वह श्री रजत बोस थे। मेरे सवालों के जवाब में उन्होंने मुझे बताया कि उनके पास वाणिज्य में डिग्री है और उन्होंने 1957 में अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की थी।'
मेरी जांच से पता चला कि रजत बोस नाम के किसी भी व्यक्ति ने उस वर्ष वाणिज्य में डिग्री प्राप्त नहीं की थी।
मैंने श्री बोस की ओर सरसरी नजर डाली। वे परेशान और तनावग्रस्त लग रहे थे। ‘क्या आप इसकी व्याख्या कर सकते हैं, श्री बोस? क्या आपने मुझसे झूठ बोला है, या मेरी जानकारी गलत है?’ फेलुदा सीधे उनकी ओर देख रहे थे।
रजत बोस ने दो-तीन बार गला साफ किया। फिर उन्होंने गहरी सांस ली और बहुत तेजी से बोले, ‘मैंने बिरुपाक्षा मजूमदार का कत्ल नहीं किया, लेकिन भगवान जानता है कि मैं करना चाहता था। जी हां, मैं चाहता था, हजार बार। उसने मेरे पिता की हत्या की और फिर उसने लोगों को रिश्वत देकर मामले को दबाने की कोशिश की। वह एक अपराधी था!’
'मान लीजिए, श्री बोस, इस मामले में मुझे आपसे पूरी सहानुभूति है। लेकिन अब मैं आपसे कुछ और सवालों के जवाब चाहता हूं, और मुझे सच जानना है।'
‘आप क्या जानना चाहते हैं?’ श्री बोस अभी भी हांफ रहे थे। ‘हत्या वाले दिन, लोकेनाथ ने रोज़ की तरह एक गोली दूध के गिलास में मिलाई और श्री मजूमदार को बुलाने गया, जो गोलीबारी देख रहे थे। दूध का गिलास और गोलियों की बोतल दोनों खाली भोजन कक्ष में पड़े थे। आपने इस मौके का फायदा उठाकर बची हुई गोलियां दूध में डालने की कोशिश की, है ना?’

‘देखो, मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया था कि मैं अपने पिता की मौत का बदला लेना चाहता हूं।’
'हां, लेकिन लोकेनाथ आपके प्लान को अमल में लाने से पहले ही वापस आ गया। है ना? उसने देख लिया कि आप क्या करने वाले थे, और आपने तय किया कि उसे कभी मुंह खोलने का मौका ही नहीं मिलना चाहिए।'
‘वह मूर्ख था! मैं चाहता था कि वह मेरी मदद करे। मैंने उसे सब कुछ बताया— लेकिन उसने इनकार कर दिया।’
तो तुमने उस पर हमला किया, है ना? वह किसी तरह खुद को छुड़ाकर गोलियों की बोतल लेकर चीड़ के जंगल की ओर भागा। तुम भी हथियार लेकर उसके पीछे गए— श्री मजूमदार के अध्ययन कक्ष में रखा वह धारदार पेपर-चाकू। तुमने उसे पकड़ तो लिया, लेकिन इससे पहले कि तुम उस पर वार करते, उसने बोतल को एक पत्थर पर फेंक दिया और वह टुकड़े-टुकड़े हो गई। बताइए, क्या ठीक ऐसा ही नहीं हुआ था? श्री बोस ने कोई जवाब नहीं दिया। उनका अचानक आया साहस पूरी तरह से खत्म हो गया था। अब वे टूट गए और अपने चेहरे को हाथों से ढक लिया। दो कांस्टेबल उनके पास आए और उनकी कुर्सी के पीछे खड़े हो गए।
‘मेरा एक और छोटा सा सवाल है। आपके सूटकेस पर लिखे अक्षर “आर.बी.” रमेश ब्रह्मा के लिए हैं, है ना? आपने सिर्फ उन्हीं शुरुआती अक्षरों को बनाए रखने के लिए अपना नाम रजत बोस रखना शुरू कर दिया?’
श्री बोस ने चुपचाप सिर हिलाया।
कुछ देर रुकने के बाद फेलुदा ने फिर बोलना शुरू किया।
'कल कुछ और ही हुआ। मेरी जान लेने की कोशिश की गई। किसी ने घने कोहरे का फायदा उठाया और मुझे खाई में धकेलने की कोशिश की।'
इस जानकारी पर श्रोताओं ने पूरी तरह से चुप्पी साध ली।
सभी लोग फेलुदा को टकटकी लगाए देख रहे थे, बस उसकी बातों पर ध्यान दे रहे थे। 'मैं उसका चेहरा तो नहीं देख पा रहा था, लेकिन इतना समझ गया था कि उसने नकली दाढ़ी लगा रखी है। जब उसने मुझे चट्टान के किनारे की ओर धकेला, तो मुझे एक हल्की सी खुशबू महसूस हुई। यह यार्डली लैवेंडर की खुशबू थी। यह कोई अनजानी खुशबू नहीं थी। मैंने इसे पहले भी सूंघा था, दमदम हवाई अड्डे के रेस्तरां में बैठे हुए।'
राजेन रैना ने अप्रत्याशित रूप से कहा, 'मिस्टर मिटर, मैं खुद भी उस परफ्यूम का इस्तेमाल करता हूं। लेकिन अगर आपको लगता है कि मेरे अलावा कोई और इसका इस्तेमाल नहीं करता, तो आप इससे बड़ी गलती नहीं कर सकते।'
फेलुदा मुस्कुराया। 'मुझे पता था कि आप यही कहेंगे। श्रीमान रैना, मैंने अभी बोलना समाप्त नहीं किया है।'
‘बहुत खूब। आपको और क्या कहना है?’
उसे जवाब देने के बजाय, फेलुदा ने इंस्पेक्टर साहा की ओर देखा, जिन्होंने चुपचाप उसे एक ब्रीफकेस थमा दिया। फेलुदा ने उसमें से एक लिफाफा और बंगाल बैंक के सभी कर्मचारियों की फ्रेम की हुई ग्रुप फोटो निकाली।
‘क्या आप इस तस्वीर को पहचानते हैं, श्रीमान रैना?’ फेलुदा ने पूछा।
मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा।
‘नहीं? लेकिन आप खुद तो समूह में मौजूद हैं!’

'आपका क्या मतलब है?'
फेलुदा ने लिफाफा खोला और उसमें से एक और तस्वीर निकाली। यह एक ही चेहरे की ज़ूम की हुई तस्वीर थी।
फेलुदा ने कहा, 'मुझे मानना पड़ेगा कि इस तस्वीर को बनाने में मुझे काफी मेहनत करनी पड़ी। मैंने दाढ़ी बनाई, क्योंकि जब यह तस्वीर खींची गई थी तब आपकी दाढ़ी नहीं थी। अब क्या आप इस व्यक्ति को पहचान सकते हैं? यह श्री वी. बालापोरिया की तस्वीर है, जो बंगाल बैंक के लेखा विभाग में काम करते थे।' श्री रैना ने तस्वीर को करीब से देखने के लिए मांगने की जहमत भी नहीं उठाई। वे घबराकर अपना चेहरा पोंछने लगे। मैंने गौर से देखा तो पाया कि कैमरे की ओर देख रहा चेहरा रैना का ही था।
आपको कैसे पता चलता कि जिस व्यक्ति के घर में आप शूटिंग करने जा रहे थे, वह आपका पूर्व बॉस निकलेगा? आपने यह तो सोचा भी नहीं था कि वह आपको तुरंत पहचान लेगा। लेकिन आपको यह समझने में देर नहीं लगी कि अगर आपके अतीत का कोई घोटाला सामने आ गया तो आपके फिल्मी करियर पर कितना बुरा असर पड़ेगा। श्री मजूमदार ने आपको बताया था कि आपको पहचान लिया गया है, है ना? आपने इससे इनकार किया, जिस पर उन्होंने कहा, “तुम झूठे हो। मुझे तुम्हारी एक भी बात पर यकीन नहीं है।”
“अच्छा, इससे मकसद का पता चल गया। अगर अब हम हत्या करने का मौका ढूंढें, तो याद रखना कि दोपहर के भोजन के दौरान पैंतालीस मिनट का ब्रेक था। उस दौरान तुम आसानी से श्री मजूमदार के कमरे में घुस सकते थे। जब वह तुम्हें और श्री वर्मा को कृष्ण की मूर्ति दिखाने ले गए थे, तो तुमने शेल्फ पर उसके बगल में पड़ा खंजर जरूर देखा होगा।”
इंस्पेक्टर साहा उठे और रैना के पास गए। पुलक घोषाल उनके बगल में सिर पकड़े बैठे थे। मैं उनकी गहरी पीड़ा को अच्छी तरह समझ सकता था। लालमोहन बाबू मेरी ओर झुके और फुसफुसाते हुए बोले, 'मुझे एक बात समझ नहीं आ रही। श्री मजूमदार ने 'विश' शब्द क्यों लिखा?'
फेलुदा ने उसकी बात सुनी। उसने कहा, ‘मैं उसी पर आ रहा हूँ। जब श्री रैना श्री मजूमदार के कमरे में गए, तो वे अचानक जाग गए और उन्हें देखा। चाकू लगने के बाद भी वे कुछ सेकंड तक जीवित रहे और उस दौरान उन्होंने हत्यारे का नाम लिखने की कोशिश की। दुर्भाग्य से, वे पूरा नहीं कर सके। श्री रैना, क्या आप हमें वह पूरा नाम बता सकते हैं जो श्री मजूमदार ने लिखने की कोशिश की थी?’
Rajen Raina remained silent.
तो क्या मैं सबको बता दूं?
राइना कुछ नहीं बोली।
‘बहुत खूब। मैंने अपनी पूछताछ से पता लगाया कि बालापोरिया के नाम में “V” का अर्थ “विष्णुदास” था। श्री मजूमदार अपनी मृत्यु से कुछ क्षण पहले यही नाम लिखने की कोशिश कर रहे थे। वे “विश” से आगे नहीं बढ़ पाए।’
‘माफ़ कीजिए! हे भगवान, मुझे बहुत अफ़सोस है!’ विष्णुदास बालापोरिया उर्फ़ राजेन रैना विलाप करते हुए बोला। फेलुदा ने अब अपनी निगाहें समीरन मजूमदार पर टिका दीं।

‘मैं तो उसके सामने एक बच्चा मात्र हूँ!’ समीरन बाबू ने फेलुदा की निगाहों में देखते हुए कहा।
'सच है। कृपया अब अपना सूटकेस खोलें और कृष्ण की मूर्ति निकाल लें,' फेलुदा ने रूखेपन से कहा।
पुलक घोषाल शाम को केवेंटर में हमारे साथ शामिल हुए।
उन्होंने उदास स्वर में कहा, 'दार्जिलिंग मेरे लिए काफी दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ। मुझे लगता है कि मैं शिमला में दोबारा शूटिंग करूंगा। राजेन रैना की जगह अर्जुन मेहरोत्रा को लिया जा सकता है। इस बारे में आपका क्या विचार है?'
‘शानदार!’ लालमोहन बाबू ने कहा, ‘मुझे लगता है कि वह इस भूमिका के लिए एकदम सही रहेगा। लेकिन... आप मेरे दृश्यों को तो रखेंगे ही ना?’
'बिल्कुल। मैं नवंबर में वापस जाकर शूटिंग शुरू कर दूंगा, जिसका मतलब है कि मैं फरवरी तक इसे पूरा कर सकता हूं। मुझे अभी चार और फिल्मों पर काम करना है। उनमें से हर एक को अगले साल के अंत तक पूरा करना होगा।'
‘क्या! वे चारों, एक के बाद एक?’
‘हां। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि भगवान की कृपा से मेरी हालत कुछ ज्यादा खराब नहीं है!’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू की ओर रुख किया।
उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि हम उन्हें वही उपाधि दे सकते हैं जो आपने मुझे दी थी।'
‘कैसे?’ लालमोहन बाबू ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। ‘एबीसीडी कैसे मिलेगा?’ ‘एशिया के सबसे व्यस्त सिनेमा निर्देशक।’

जादुई रहस्य

एक
जादू उन कई चीजों में से एक था जिनके बारे में फेलुदा को बहुत कुछ पता था। आज भी, कभी-कभी मैं उसे ताश के पत्तों के साथ शीशे के सामने खड़े होकर हाथ की सफाई का अभ्यास करते हुए देख लेता था। इसी वजह से जब हमें पता चला कि सूर्य कुमार नाम का एक जादूगर कलकत्ता आया है, तो हम तीनों ने एक दिन उसका शो देखने जाने का फैसला किया। तीसरा व्यक्ति, स्वाभाविक रूप से, हमारा दोस्त लालमोहन गांगुली (उर्फ जटायु) था, जो लोकप्रिय क्राइम थ्रिलर का लेखक है। शो के आयोजक फेलुदा के परिचित थे, इसलिए हमें बस पूछना पड़ा और हमें पहली पंक्ति में तीन सीटों के टिकट मिल गए।
जब हम पहुँचे, तो सभागार का लगभग तीस प्रतिशत हिस्सा खाली था। शो शुरू हुआ। प्रस्तुतियाँ बुरी नहीं थीं, लेकिन जादूगर के व्यक्तित्व में कुछ कमी सी महसूस हुई। उसकी दाढ़ी थी और उसने सीक्वेंस से जड़ी रेशमी पगड़ी पहन रखी थी। लेकिन उसकी आवाज़ पतली थी, और यही समस्या थी क्योंकि एक जादूगर का काम लगातार बोलना होता है। उसकी आवाज़ अच्छी होनी चाहिए।
आगे की पंक्ति में बैठने के परिणामस्वरूप जो कुछ हुआ, उनमें से एक यह था कि जादूगर ने जटायु को सम्मोहित करने के लिए मंच पर बुलाया। पता चला कि सम्मोहन में वह माहिर था। उसने जटायु को एक पेंसिल देते हुए कहा, 'यह चॉकलेट की एक टिकिया है। एक टुकड़ा खाओ। कैसा लगा?' लालमोहन बाबू ने सम्मोहित अवस्था में पेंसिल को दांतों से दबाया और उत्तर दिया, 'बहुत बढ़िया। स्वादिष्ट चॉकलेट!'
वह पांच मिनट तक मंच पर रहा। इस दौरान जादूगर ने उसे पूरी तरह से मूर्ख बना दिया, जिसका दर्शकों ने खूब आनंद लिया। होश में आने के बाद भी ऐसा लग रहा था मानो तालियों की गड़गड़ाहट कभी थमने वाली नहीं थी।
अगला दिन रविवार था। लालमोहन बाबू हमेशा की तरह ठीक नौ बजे गोरपार स्थित अपने घर से अपनी हरी एम्बेसडर कार में पहुंचे। हमने जादू के शो के बारे में बातचीत जारी रखी। फेलुदा ने कहा, 'वह आदमी अभी तक पूरी तरह सफल नहीं हुआ है, है ना? कल तो कितनी सीटें खाली थीं। क्या आपने ध्यान दिया?'
‘हाँ, लेकिन वो सम्मोहन में माहिर तो हैं ही,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘मुझे उन सभी अजीबोगरीब चीजों को करवाने का पूरा श्रेय उन्हें ही जाता है। हे भगवान! मैंने पेंसिल चबा ली और उसे चॉकलेट समझ लिया। फिर उन्होंने मुझे पत्थर चबाने को कहा और मैंने कहा कि वो संदेश है। ज़रा सोचिए!’
श्रीनाथ चाय लेकर अंदर आए, और उनके आते ही हमारे घर के बाहर एक कार रुकने की आवाज़ आई। इसके तुरंत बाद सामने के दरवाजे पर दस्तक हुई। हमें किसी के आने की उम्मीद नहीं थी। मैंने दरवाजा खोला तो सामने करीब तीस साल का एक आदमी खड़ा था।
क्या यह प्रदोष मित्र का घर है?

‘जी हां,’ फेलुदा ने कहा। ‘कृपया अंदर आइए।’
वह सज्जन अंदर आए। वे दुबले-पतले, गोरे और चश्मा पहने हुए थे। वे काफी स्मार्ट दिख रहे थे।
हमारे सोफे के एक कोने में बैठे हुए उन्होंने कहा, 'मैंने आपसे फोन पर बात करने की काफी कोशिश की, लेकिन बात नहीं हो पाई। इसलिए मैंने खुद आपसे मिलने का फैसला किया।'
कोई बात नहीं। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?
'मेरा नाम निखिल बर्मन है। आपने मेरे पिता सोमेश्वर बर्मन के बारे में सुना होगा।'
‘वह आदमी जो भारतीय जादू का प्रदर्शन करता था?’
'हाँ।'
‘उनका नाम अब सुनने को नहीं मिलता। क्या वे सेवानिवृत्त हो गए हैं?’
'हां, लगभग सात साल पहले। उन्होंने उस दौरान कोई परफॉर्मेंस नहीं दी है।' लेकिन उन्होंने कभी मंच पर प्रस्तुति तो नहीं दी, है ना?
नहीं। वह ज़मीन पर गद्दे पर बैठकर, लोगों से घिरे हुए, करतब दिखाते थे। कुछ रियासतों में वे काफी मशहूर थे। कई राजा उनके शो देखने आते थे। उन्होंने भारतीय जादू के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए काफी यात्राएं भी कीं। उनकी सारी खोजें एक बड़ी नोटबुक में लिखी हुई हैं। वे इसे अपनी पांडुलिपि कहते हैं। दरअसल, कोई इसे उनसे खरीदना चाहता है। उन्हें बीस हज़ार रुपये की पेशकश की गई है। मेरे पिताजी यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि इसे बेचें या नहीं। इसलिए वे चाहते हैं कि आप उनकी पांडुलिपि पढ़ें और उन्हें अपनी राय दें।
‘क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह प्रस्ताव किसने दिया है?’
एक और जादूगर। सूर्य कुमार नंदी।
कितना अद्भुत! कल ही तो हम सूर्य कुमार के शो में थे। ये तो मानो टेलीपैथी थी! कम से कम फेलुदा तो इसे यही कहता।
‘बहुत अच्छा,’ फेलुदा ने उत्तर दिया, ‘मैं आपके पिता की नोटबुक देख लूँगा। इससे मुझे उनसे मिलने का मौका मिलेगा, जो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।’
बाबा भी आपके प्रशंसक हैं। उनका कहना है कि आप जैसे बुद्धिमान व्यक्ति मिलना बहुत दुर्लभ है। क्या आप एक-दो दिन में हमसे मिलने आ सकते हैं? बाबा हर शाम घर पर रहते हैं।
‘ठीक है। अगर आप चाहें तो हम आज शाम को आ सकते हैं।’
'शानदार। मान लीजिए, लगभग साढ़े छह बजे?'
'अच्छा।'

दो
सोमेश्वर बर्मन का विशाल घर राममोहन रॉय सरानी में था। वे पूर्वी बंगाल के एक जमींदार परिवार से थे, लेकिन लंबे समय से कलकत्ता में रह रहे थे। उनके घर के अधिकांश कमरे अब खाली पड़े थे। नौकरों के अलावा, घर में केवल पाँच लोग थे: सोमेश्वर बर्मन, उनके बेटे निखिल, श्री बर्मन के सचिव प्रणवेश रॉय, उनके मित्र अनिमेष सेन और एक कलाकार राणेन तरफदार। कहा जाता है कि वे सोमेश्वर बर्मन का चित्र बना रहे थे। ये सभी बातें हमें श्री बर्मन से ही पता चलीं। उनकी उम्र का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था, क्योंकि उनके बाल लगभग पूरी तरह से सफ़ेद नहीं हुए थे। उनकी आँखें किसी जादूगर की आँखों की तरह चमकीली थीं। हम सभी भूतल पर बने बैठक कक्ष में बैठे थे। निखिल बाबू ने हमारे लिए चाय मंगाई।
सोमेश्वर बर्मन ने हमें बताया, ‘मेरे पिता होम्योपैथ थे। उनका काम खूब चलता था। मैंने कानून की पढ़ाई की, लेकिन कभी वकील नहीं बना। मेरे दादाजी तांत्रिक थे। शायद उन्हीं का मुझ पर प्रभाव रहा होगा। मुझे बचपन से ही जादू में रुचि थी। मुझे याद है इलाहाबाद के एक पार्क में एक बूढ़े जादूगर को देखना। उनके हाथ की सफाई वाकई अद्भुत थी। उसी से मेरी रुचि पारंपरिक भारतीय जादू में और बढ़ गई। मंच पर जो कुछ दिखाया जाता है, वह हमेशा उपकरणों और गैजेट्स की मदद से होता है। मेरे लिए इसका कोई मतलब नहीं है। भारतीय जादू पूरी तरह से जादूगर की निपुणता पर निर्भर करता है। मैं उसी को असली जादू कहता हूँ। इसलिए कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैं इस तरह का जादू सीखने और जितना हो सके जानकारी इकट्ठा करने के लिए घर से निकल गया। मैं भाग्यशाली था कि मेरे पिता समझदार और उदार दोनों थे। मुझे किसी नई चीज में रुचि लेते देखकर वे खुश होते थे। हमारे परिवार में, आप जानते हैं, लोग हमेशा से अलग-अलग क्षेत्रों में काम करते आए हैं। डॉक्टर, वकील, गायक, अभिनेता, सब रहे हैं।’ और उनमें से कई अपने चुने हुए पेशे में बहुत सफल रहे, ठीक वैसे ही जैसे मैं एक जादूगर के रूप में सफल हुआ। राजा मुझे अपने राज्यों में आमंत्रित करते थे। मैं उनके महलों में ज़मीन पर बैठकर, एक विस्मयकारी दर्शक समूह के सामने एक के बाद एक करतब दिखाता था। मैंने बहुत पैसा भी कमाया, हालाँकि मेरी कोई निश्चित फीस नहीं थी। मुझे जो कुछ भी मिलता था, वह हमेशा मेरी उम्मीदों से कहीं अधिक होता था।
तब तक चाय आ चुकी थी। फेलुदा ने एक कप उठाया और कहा, 'हमें अपनी पांडुलिपि के बारे में कुछ बताइए। मैंने सुना है कि आपने भारतीय जादू के बारे में लिखा है?'
‘जी हां,’ सोमेश्वर बर्मन ने उत्तर दिया। ‘मुझे इस क्षेत्र में काम करने वाले किसी और के बारे में जानकारी नहीं है। मैंने अक्सर अपने शोध और निष्कर्षों पर लेख लिखे हैं, इसी वजह से कुछ लोगों को मेरी पांडुलिपि के

अस्तित्व के बारे में पता चला है। यही कारण है कि सूर्य कुमार मेरे पास आए, वरना उन्हें कभी पता ही नहीं चलता कि ऐसी कोई पांडुलिपि मौजूद है। वैसे, उन्होंने बहुत पहले एक जादूगर के रूप में मेरा नाम सुना था।’
क्या वह आपकी पांडुलिपि खरीदना चाहता है?
“उसने यही कहा। वह सीधे मेरे घर आया। मुझे वह नौजवान पसंद आया; सच कहूँ तो, मुझे उसके लिए कुछ हद तक स्नेह भी महसूस हुआ। लेकिन मैं उसका प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकता। मेरा मानना है कि मैंने उस पांडुलिपि को लिखने में जो मेहनत की है, वह बहुत महत्वपूर्ण है, और निश्चित रूप से बीस हज़ार से अधिक की है। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि आप इसे पढ़ें। आप कई विषयों के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, है ना? मैंने आपके मामलों के बारे में पढ़ा है। मुझे यही आभास हुआ।”
‘बहुत खूब। मुझे आपकी पांडुलिपि पढ़कर खुशी होगी।’
सोमेश्वर बर्मन ने अपने सचिव की ओर मुड़कर कहा, ‘प्रणवेश, जाओ और वह नोटबुक ले आओ।’ उनका सचिव चला गया।
फेलुदा ने उससे कहा, 'हम कल सूर्य कुमार का परफॉर्मेंस देखने गए थे।'
'आपको यह कैसा लगा?'
'खैर, यह ठीक-ठाक था। वह सिर्फ सम्मोहन में ही माहिर है। बाकी सब कुछ उपकरणों की मदद से किया गया था।'
सोमेश्वर बर्मन ने अचानक प्लेट से एक बिस्किट उठाया और उसे अपने हाथ में बंद कर लिया। अगले ही पल उन्होंने अपना हाथ खोला, लेकिन बिस्किट गायब हो चुका था। एक सेकंड बाद वह लालमोहन बाबू की जेब से निकला।
‘वाह, यह तो बहुत बढ़िया है!’ फेलुदा ने उत्साह से कहा। ‘आपने प्रदर्शन करना क्यों बंद कर दिया? आप वाकई बहुत प्रतिभाशाली हैं।’
श्री बर्मन ने सिर हिलाया। 'नहीं, मैं अब और कोई शो नहीं करना चाहता। अब मुझे अपना सारा समय अपनी पांडुलिपि पर लगाना होगा। अगर यह किताब कभी प्रकाशित होती है, तो मुझे लगता है कि लोगों को यह उपयोगी लगेगी। इस विषय पर कोई और किताब नहीं लिखी गई है।'
‘तो फिर, मैं निश्चित रूप से आपकी लिखी हुई बातें पढ़ लूंगा और परसों शाम को आपकी नोटबुक लौटा दूंगा। क्या यह ठीक रहेगा?’
जी हाँ, बिल्कुल। बहुत-बहुत धन्यवाद।
फेलुदा ने अगले दिन मुझे बताया कि उसने पूरी पांडुलिपि पढ़ ली है। ऐसा लग रहा था कि उसने पूरी रात इसे पढ़ने में बिताई है। ‘उस आदमी की लिखावट बहुत सुंदर है, और यह एक अनमोल खजाना है। जब यह प्रकाशित होगी, तो मुझे पूरा यकीन है कि किताब बहुत बड़ी सफलता हासिल करेगी। श्री बर्मन को अपनी पांडुलिपि पचास हजार रुपये में भी नहीं बेचनी चाहिए, बीस हजार रुपये तो दूर की बात है!’
शाम को हम श्री बर्मन के घर लौटे और फेलुदा ने उन्हें अपने विचार बताए। फेलुदा की बातों से श्री बर्मन काफी आश्वस्त दिखे। उन्होंने कहा, 'इससे तो मुझे बहुत राहत मिली! मैं दुविधा में था, लेकिन अगर आपको किताब इतनी पसंद आई, तो मुझे लगता है कि अब मुझे पता है क्या करना है। प्रणवेश इसे टाइप कर रहा है। उसने मुझे बताया है कि मैंने जिन तथ्यों का वर्णन किया है, उनसे वह

कितना प्रभावित हुआ है। मेरे मित्र अनिमेष ने भी यही बात कही है। अब मैं सूर्य कुमार के प्रस्ताव को बिना किसी झिझक के ठुकरा सकता हूँ। वैसे, कल रात मेरे कमरे में कोई घुस आया था।'
'क्या!'
'हां। उसके कुछ लेने से पहले ही मैं जाग गई थी। दरअसल, जैसे ही मैंने पूछा, 'कौन है?', वह भाग गया।'
क्या आपके घर से पहले कभी कुछ चोरी हुआ है?
'नहीं, कभी नहीं।'
‘क्या आपके कमरे में कोई कीमती सामान है?’
'हां, लेकिन मैं इसे तिजोरी में रखता हूं। तिजोरी की चाबी हमेशा मेरे तकिए के नीचे रहती है।'
क्या आप मुझे बता सकते हैं कि यह क्या है? मुझे इसके बारे में जानने की बहुत उत्सुकता है।
नहीं, मुझे बिल्कुल भी कोई आपत्ति नहीं है।
श्री बर्मन उठे और ऊपर चले गए। लगभग तीन मिनट बाद वे वापस आए और मेज पर कुछ रखा। वह हाथ में बांसुरी लिए कृष्ण की छह इंच ऊंची मूर्ति थी।
श्री बर्मन ने हमें बताया, 'इसमें पांच अलग-अलग रत्न जड़े हुए हैं: हीरे, माणिक, नीलम, मूंगा और मोती। मुझे इसकी कीमत के बारे में कोई जानकारी नहीं है।'
मुझे लगता है यह अनमोल और बेहद खूबसूरत है। यह आपके पास कब से है? ‘रघुनाथपुर के राजा दयाल सिंह ने इसे मुझे 1956 में दिया था। वे मेरे प्रदर्शन से बहुत प्रभावित हुए थे।’
क्या आपके पास चौकीदार नहीं है?
'हां, और चार नौकर भी थे। शायद चोर नौकरों में से किसी एक को जानता था।'
या फिर वह इस घर के निवासियों में से एक हो सकता है।
‘क्या! यह कितना भयानक विचार है!’
‘जासूस अक्सर ऐसी बातें कहते हैं। मुझे गंभीरता से लेने की कोई जरूरत नहीं है।’
'भगवान का शुक्र है।'
‘आप विधवा हैं, है ना?’
'हाँ।'
क्या निखिल आपका इकलौता बेटा है?
नहीं। निखिल मेरा छोटा बेटा है। बड़ा बेटा अखिल उन्नीस साल की उम्र में कॉलेज की पढ़ाई पूरी करके विदेश चला गया।
'कहाँ?'
‘उसने मुझे नहीं बताया। मेरे परिवार में कुछ अजीबोगरीब बेचैन स्वभाव के लोग रहे हैं। अखिल भी उनमें से एक था। उसने कहा कि वह जर्मनी में काम करना चाहता है, और 1970 में चला गया। उसके बाद उसने मुझसे कभी संपर्क नहीं किया। शायद वह अभी भी यूरोप में हो, लेकिन मुझे इसका पता लगाने का कोई तरीका नहीं है।’
क्या आपके सचिव प्रणवेश को इस मूर्ति के बारे में पता है?

'हां। वह मेरे लिए बेटे जैसा है। वैसे भी, उसे मेरे सभी निजी कागजात देखने ही हैं।'
'मैं समझ गया। शायद आपको इसे वापस तिजोरी में रख देना चाहिए। मैंने इससे खूबसूरत चीज बहुत कम देखी है।'
‘क्या मैं सूर्य कुमार को बता दूं कि मेरा जवाब ना है?’
'बिल्कुल।'
फेलुदा उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, 'अगर अनुमति हो तो मैं आपका परिसर देखना चाहूंगा। मैं देखना चाहता हूं कि घुसपैठिया घर में कैसे घुसा होगा।' सोमेश्वर बर्मन ने जवाब दिया, 'सबसे आसान रास्ता बरामदे से होकर जाएगा। मुझे लगता है कि मेरा चौकीदार अपने कर्तव्यों में थोड़ी लापरवाही कर रहा है।'
बरामदे से एक बगीचा दिखाई देता था। ऐसा लगता ही नहीं था कि कोई उसकी देखभाल करता हो। घर के चारों ओर एक काफी ऊंची चारदीवारी थी। उसे पार करना आसान नहीं था। दीवार के पास कोई पेड़ भी नहीं थे।
फेलुदा ने करीब पंद्रह मिनट तक परिसर का मुआयना किया। अंत में उन्होंने कहा, 'नहीं, इसका कोई फायदा नहीं है। मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि चोर बाहर से आया था या घर का ही कोई सदस्य था।'

तीन
अगले दिन सोमेश्वर बर्मन ने हमें फोन करके बताया कि उन्होंने सूर्य कुमार से बात की थी और उनसे कहा था कि वे उनकी पांडुलिपि नहीं बेचेंगे।
श्री बर्मन के फोन रखने के बाद लालमोहन बाबू ने कहा, 'मुझे अभी एक विचार आया है।'
देखिए, मेरा अगला उपन्यास एक जादूगर के बारे में होगा। इसलिए मैं सोच रहा था कि क्या मैं सूर्य कुमार से मिल सकता हूँ और उनसे बात कर सकता हूँ। आपको क्या लगता है, मुझे इसके लिए क्या करना चाहिए?
फेलुदा ने कहा, 'उसके होटल में पता करो। उसके शो के आयोजक तुम्हें बता पाएंगे कि वह कहाँ ठहरा है। बस उन्हें फोन कर दो।'
'ठीक है।'
लालमोहन बाबू को सूर्य कुमार से संपर्क करने और उनसे मिलने का समय तय करने में पंद्रह मिनट लगे। सूर्य कुमार अगले दिन सुबह साढ़े नौ बजे हमारे घर आने के लिए सहमत हो गए।
‘आपको मुझे पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होगी,’ लालमोहन बाबू ने उनसे कहा। ‘पिछले दिन आप मुझे सम्मोहित कर बैठे थे।’
अगले दिन, सूर्य कुमार ठीक साढ़े नौ बजे मारुति कार से पहुंचे। लालमोहन बाबू उनसे लगभग बीस मिनट पहले ही आ चुके थे। फेलुदा को देखकर सूर्य कुमार थोड़े अचंभित दिखे। उन्होंने कहा, 'आप कुछ जाने-पहचाने से लग रहे हैं। मैंने आपका नाम ठीक से नहीं सुना।'
‘मैं प्रदोश मित्तर हूं। आपने मेरी तस्वीर शायद किसी अखबार में देखी होगी।’
‘प्रदोश मित्तर? आपका मतलब प्रदोश मित्तर से है, जो जांचकर्ता हैं?’
'हां,' फेलुदा ने हंसते हुए स्वीकार किया।
'आपसे मिलकर सौभाग्य प्राप्त हुआ, महोदय!'
'आपसे मिलकर मुझे कोई कम सौभाग्य नहीं मिला। हमारे घर में इससे पहले कभी कोई प्रसिद्ध जादूगर नहीं आया था।'
जब हम सब चाय पी चुके थे, तब लालमोहन बाबू ने अपने सवाल शुरू किए। 'आप लोग कब से शो कर रहे हैं?'
लगभग बारह वर्षों से।
‘क्या तुमने किसी से जादू सीखा है?’
‘मैंने पांच साल तक एक जादूगर के सहायक के रूप में काम किया। उनका नाम नक्षत्र सेन था। वे काफी उम्रदराज थे। शो के बीच में ही मंच पर उन्हें स्ट्रोक आया और कुछ ही देर बाद उनकी मृत्यु हो गई। उनके उपकरण और अन्य सभी सामान पर दावा करने वाला कोई नहीं था, इसलिए मैंने उन्हें ले लिया और अपना करियर शुरू किया।’

क्या आपको पूरे देश में यात्रा करनी पड़ती है?
'हां। मैं जापान और हांगकांग भी जा चुका हूं।'
'वास्तव में?'
'जी हां। मुझे अगले साल सिंगापुर से निमंत्रण मिला है।'
क्या आपका कोई परिवार नहीं है?
नहीं। मैं अविवाहित हूँ।
‘क्या आपको अभी भी हर चीज का अभ्यास और पूर्वाभ्यास करना पड़ता है, या अब इसकी आवश्यकता नहीं है?’
'पूरा तो नहीं। लेकिन हर दिन, मैं कुछ घंटे हाथ की सफाई का अभ्यास करने में बिताता हूँ। नियमित अभ्यास करना बिल्कुल आवश्यक है।'
इसी समय फेलुदा ने हस्तक्षेप किया।
‘आप सोमेश्वर बर्मन से मिल चुके हैं, है ना?’
'हां, मुझे लगता है कि आप उनकी पांडुलिपि खरीदना चाहते थे?'
'हाँ।'
मैंने सोचा कि मैं अपने नियमित प्रदर्शनों में भारतीय जादू की कुछ चीज़ें भी शामिल कर लूँ तो अच्छा रहेगा। मेरे अपने प्रदर्शन पश्चिमी शैली के जादू पर आधारित हैं। लेकिन श्री बर्मन ने बेचने से इनकार कर दिया। मैंने उन्हें बीस हज़ार की पेशकश की थी। लेकिन मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं उन्हें अच्छी तरह से जान चुका हूँ और हमारे अच्छे संबंध हैं। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूँ। उन्होंने मुझे अपने शो समाप्त होने के बाद कुछ दिनों के लिए अपने घर पर रहने का निमंत्रण दिया है।
‘आखिरी वाला कब है?’
इस रविवार को।
‘अब आप आगे कहाँ जाएँगे?’
‘मैं एक हफ्ते की छुट्टी लेना चाहता हूँ। मुझे आराम की ज़रूरत है। फिर मैं पटना जाऊँगा।’ लालमोहन बाबू के पास उनसे कुछ और सवाल थे। सूर्य कुमार कुछ ही मिनटों में चले गए। मुझे वे काफी मिलनसार व्यक्ति लगे।
फेलुदा ने टिप्पणी करते हुए कहा, 'उसके सारे कपड़े और जूते विदेशी थे, संभवतः हांगकांग या जापान से खरीदे गए थे। वह स्पष्ट रूप से जीवन की अच्छी चीजों का शौकीन है, जैसा कि अधिकांश जादूगर होते हैं।'
‘खैर, ऐसा लगता है कि वह बर्मावासियों के काफी करीब हो गए हैं,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की। ‘वरना उन्हें उनके साथ रहने के लिए आमंत्रित क्यों किया जाना चाहिए?’

चार
सप्ताह के बाकी दिन बिना किसी घटना के बीत गए। उसके बाद जो हुआ वह अप्रत्याशित था। अगले मंगलवार को सोमेश्वर बर्मन ने हमें फोन करके बताया कि उनके सबसे पुराने नौकरों में से एक, अविनाश की हत्या कर दी गई है, और कृष्ण की छोटी सी मूर्ति गायब हो गई है! यह एक दोहरा दुख था।
फेलुदा ने तुरंत लालमोहन बाबू को फोन किया और उन्हें सीधे श्री बर्मन के घर जाने को कहा। हम टैक्सी से निकल गए।
जब तक हम वहाँ पहुँचे, पुलिस आ चुकी थी। इंस्पेक्टर घोष फेलुदा को जानते थे। उन्होंने कहा, 'यह चोरी का मामला है, और कुछ नहीं। हत्या सुनियोजित नहीं थी। मुझे लगता है अविनाश ने चोर को देख लिया था और चोर को इसका एहसास हो गया। इसलिए अविनाश को जाना पड़ा। अपराधी का मुख्य उद्देश्य तिजोरी से वह मूर्ति चुराना था। हाल ही में चोरी का एक और मामला सामने आया है।' लेकिन इस घर में रहने वाले लोगों के अलावा किसी को भी उस मूर्ति के बारे में पता नहीं था।
‘अगर ऐसा है, तो मुझे लगता है कि इस घर में कोई न कोई ज़रूर शामिल है। श्री बर्मन का बेटा, उनका सचिव, उनका दोस्त, कलाकार—रानेन तरफदार, है ना?—और जादूगर, सूर्य कुमार। वो तो कल ही आए हैं। इनमें से कोई भी इस अपराध का दोषी हो सकता है। अगर ऐसा है, तो हमारा काम बहुत आसान हो जाएगा।’
‘हत्या कब हुई?’
सुबह एक से तीन बजे के बीच।
क्या वाहक ने घुसपैठिए को रोकने की कोशिश की?
‘ऐसा ही दिखता है, है ना?’
हम घर के अंदर गए। सोमेश्वर बर्मन भूतल पर बने बैठक कक्ष में सिर पकड़े बैठे थे। कमरे में घर के बाकी सभी लोग भी मौजूद थे। कुछ बैठे थे, कुछ खड़े थे।
‘क्या आप मुझे बता सकते हैं कि वास्तव में क्या हुआ था?’ फेलुदा ने श्री बर्मन से पूछा। ‘यह भारवाहक आपके लिए कितने समय से काम कर रहा था?’
तीस साल। वह पूरी तरह से मेरे प्रति समर्पित थे। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वह अब हमारे बीच नहीं हैं।
‘उसकी हत्या कहाँ हुई थी?’
भूतल पर। शायद अविनाश उस समय जाग गया जब चोर कृष्ण की मूर्ति लेकर भाग रहा था। फिर उसने चोर को पकड़ने की कोशिश की, तो चोर ने उसे चाकू से मार दिया। ‘क्या आप मुझे बता सकते हैं कि इस घर में सोने की क्या व्यवस्था है?’
‘आपने मेरा बेडरूम देखा है। अनिमेष और मेरे कमरे ऊपर की मंजिल पर हैं। बाकी सभी बेडरूम भूतल पर हैं। कल जब सूर्य कुमार आए, तो मैंने उन्हें भी भूतल पर ही एक अतिथि कक्ष दे दिया।’

‘मैं समझ गया। इस घर के बाहर किसी को भी उस मूर्ति के बारे में पता नहीं था, क्या यह सही है?’
'हां। फिर भी, मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि इस घर का कोई सदस्य ऐसी किसी चीज में शामिल होगा।'
जिस किसी ने भी ऐसा किया होगा, उसे चाबी आपके तकिए के नीचे से ही निकालनी पड़ी होगी। फिर भी आप क्यों नहीं जागे?
मैं हर रात नींद की गोली लेता हूं और बहुत गहरी नींद सोता हूं।
तिजोरी की चाबी कहाँ गई?
‘यह अभी भी वहीं है। इसे ताले से लटका हुआ छोड़ दिया गया था।’
क्या हत्या का हथियार मिल गया है?
'नहीं।'
इसी समय इंस्पेक्टर घोष कमरे में दाखिल हुए। उन्होंने कहा, 'मुझे आप सभी से कुछ सवाल पूछने हैं।'
'क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं आपके समाप्त होने के बाद कुछ और प्रश्न पूछूं?' फेलुदा जानना चाहता था।
'नहीं, बिलकुल नहीं। मैं आपके काम और आपके तरीकों के बारे में बहुत कुछ जानता हूँ, श्रीमान मिटर। वरना मैं आपको अंदर आने ही नहीं देता। हम आम तौर पर निजी जासूसों को प्रोत्साहित नहीं करते।'
इंस्पेक्टर घोष को अपना काम पूरा करने में एक घंटे से अधिक समय लगा। हम इंतजार करते रहे और खूब चाय पीते रहे। हालांकि श्री बर्मन अभी भी सदमे में थे, लेकिन मेजबान के रूप में उन्होंने अपने कर्तव्य में कोई कमी नहीं छोड़ी।
हम बाहर निकलकर बगीचे में आ गए थे कि इंस्पेक्टर घोष हमारे पास आ गए। उन्होंने फेलुदा से कहा, 'मेरा काम हो गया है। अब तुम संभाल लो।'
फेलुदा ने श्री बर्मन के बेटे निखिल से शुरुआत करने का फैसला किया। हमें उसके कमरे में ले जाया गया। फेलुदा ने पूछा, 'आप क्या काम करते हैं?' ‘मिर्ज़ा ग़ालिब स्ट्रीट में मेरा एक नीलामी घर है।’
'इसे क्या कहते हैं?'
‘द मॉडर्न सेल्स ब्यूरो।’
मैंने आपकी दुकान देखी है।
‘मैं समझ गया। मैं आमतौर पर सुबह दस बजे से शाम छह बजे तक वहीं रहता हूँ।’ आपका कारोबार कैसा चल रहा है?
'काफी अच्छा, मुझे लगता है।'
'तुम्हारी आर्ट में दिलचस्पी है?'
'मेरा काम ऐसा है कि मुझे अक्सर कलाकृतियों का सामना करना पड़ता है। मैंने अपने काम के माध्यम से बहुत कुछ सीखा है।'
‘आप यह काम कब से कर रहे हैं?’
सात साल।
'आपकी आयु कितनी है?'
'तैंतीस।'
‘आपके बड़े भाई की उम्र कितनी है?’

'उनकी उम्र छत्तीस वर्ष होगी। वह मुझसे तीन साल बड़े हैं।'
‘क्या तुम दोनों करीब थे?’
'मेरा भाई किसी के करीब नहीं था। वह ज्यादा बोलता नहीं था, न ही उसके ज्यादा दोस्त थे। सच कहूं तो, ऐसा लगता था कि उसे किसी की परवाह नहीं थी, यहां तक कि मेरी भी नहीं।'
निखिल बर्मन की आवाज और बोलने के तरीके में कुछ अजीब सा था। लेकिन मैं ठीक से बता नहीं पा रहा था कि वह क्या था।
‘क्या आपके भाई ने विदेश से आपको पत्र नहीं लिखा था?’ फेलुदा ने आगे पूछा। नहीं। उन्होंने किसी को पत्र नहीं लिखा।
क्या तुमने अपने पिता के जादू के शो में कभी दिलचस्पी नहीं ली?
'बिल्कुल मैंने देखा है। लेकिन बाबा अपने ज्यादातर शो शहर से बाहर करते थे। मुझे उन्हें देखने का मौका नहीं मिला।'
क्या आपने कभी खुद जादू सीखने के बारे में सोचा है?
नहीं। मुझे तो बस देखना ही अच्छा लग रहा था।
‘क्या आपको इस बात का कोई अंदाजा है कि कल की त्रासदी के लिए कौन जिम्मेदार हो सकता है?’
'नहीं, बिलकुल नहीं। मैंने बाबा से कहा था कि उस मूर्ति को बैंक में रख दें। लेकिन उन्होंने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।'
निखिल बर्मन से अब और कोई सवाल नहीं पूछा जा सकता था। हमने उन्हें धन्यवाद दिया और सोमेश्वर बाबू के दोस्त अनिमेष को ढूंढने चले गए। वह अपने कमरे में थे।
‘आप जीविका के लिए क्या काम करते हैं?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
‘कुछ नहीं। मेरे पिता वकील थे। उन्होंने एक बहुमंजिला इमारत बनवाई थी, जिसे किराए पर दे दिया गया था। मैं हर महीने मिलने वाले किराए से अपना गुजारा करता हूँ।’
‘आप सोमेश्वर बर्मन को कब से जानते हैं?’
लगभग बीस साल।
‘आप उनसे संयोगवश कैसे मिले?’
एक समय था जब मैं ज्योतिष में रुचि रखता था। सोमेश्वर मुझसे सलाह लेने आए थे। उन्होंने अभी-अभी जादूगर के रूप में अपना करियर शुरू किया था। मैंने उन्हें उनके उज्ज्वल भविष्य के बारे में बताया। पांच साल बाद, वे मुझे धन्यवाद देने वापस आए। यहीं से हमारी दोस्ती की शुरुआत हुई। जब उनकी पत्नी का निधन हुआ, तो सोमेश्वर ने मुझे अपने साथ रहने के लिए कहा, शायद अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए। मैं मान गया, और तब से उनके घर में रह रहा हूँ। मुझे यहाँ आए लगभग पंद्रह साल हो गए हैं।
आपने कृष्ण की प्रतिमा पहली बार कब देखी थी?
'मुझे इसके बारे में सोमेश्वर से पहले ही पता था। दरअसल, मैंने पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि एक दिन उसे ऐसी वस्तु प्राप्त होगी। जैसे ही उसे वह वस्तु मिली, उसने मुझे दिखा दी।'
'क्या आपके पास इस बारे में कोई सिद्धांत है कि घर में चोरी किसने की और हत्या किसने की?'

मुझे लगता है कि चोर घर के किसी नौकर को जानता था। मेरा मानना है कि उसने तिजोरी सिर्फ पैसे चुराने के लिए खोली थी। फिर उसने वह चमकती हुई मूर्ति देखी, इसलिए वह उसे ले गया। मुझे विश्वास नहीं होता कि इस घर के किसी अन्य निवासी का इससे किसी भी तरह का कोई संबंध हो सकता है।

पाँच
सोमेश्वर बर्मन के सचिव प्रणवेश बाबू ने हमें बताया कि वह पिछले पांच वर्षों से श्री बर्मन के लिए काम कर रहे थे। भवानीपुर में उनका अपना घर था, लेकिन यहाँ कई कमरे खाली पड़े देखकर श्री बर्मन ने उन्हें उसी घर में रहने का सुझाव दिया था। प्रणवेश बाबू को इस पर आपत्ति करने का कोई कारण नहीं दिखा।
‘श्री बर्मन एक नियोक्ता के रूप में कैसे हैं?’
'शानदार। मुझे कोई शिकायत नहीं है।'
आपको अपना काम कैसा लगता है?
'श्री बर्मन द्वारा एकत्रित किए गए कुछ तथ्यों को देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैं आपको बता नहीं सकता कि उनके नोट्स को टाइप करते हुए मैंने कितनी नई चीजें सीखी हैं।'
आप प्रतिदिन कितने घंटे काम करते हैं?
शाम आठ या नौ बजे तक।
आप भूतल पर सोते हैं, है ना?
'हाँ।'
क्या आप आमतौर पर अच्छी नींद ले पाते हैं?
'हां, अधिकतर समय।'
'क्या कल रात किसी शोर या किसी और चीज से आपकी नींद में खलल नहीं पड़ा?' नहीं। मुझे तो आज सुबह ही पता चला कि क्या हुआ था।
'क्या आपको इस घर में किसी पर शक है? अगर इस मूर्ति के बारे में इस घर के निवासियों के अलावा किसी को नहीं पता था, तो अपराधी अभी भी यहीं हो सकता है!'
'ऐसा हो सकता है। क्या मैं खुद भी संदिग्धों में से एक नहीं हूँ?'
'हां आप ही।'
'मुझे लगता है कि पुलिस अधिकारी पूरे घर की तलाशी लेंगे। लेकिन इतनी छोटी सी चीज को छिपाने के लिए जगह ढूंढना मुश्किल नहीं होना चाहिए। बस खतरा टलने पर उसे निकाल लेना है।'
श्री बर्मन का चित्र बना रहा कलाकार भी उसी घर में रह रहा था। उसे अपना काम पूरा होने तक यहीं रहना था। मुझे वह आदमी कुछ अजीब लगा, शायद उसकी शक्ल-सूरत की वजह से—उसकी घनी दाढ़ी थी और बाल कंधों तक लंबे थे। वह बहुत कम बोलता था। लेकिन अधूरे चित्र को देखकर मुझे लगा कि वह एक अच्छा कलाकार था। उनका कमरा भी भूतल पर ही था। फेलुदा ने उनके दरवाजे पर दस्तक दी। उन्होंने दरवाजा खोला और जिज्ञासा भरी नजरों से हमारी ओर देखा।
फेलुदा ने कहा, 'मुझे कुछ सवाल पूछने हैं।'
‘बहुत अच्छा। कृपया अंदर आइए।’

जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, उनका कमरा काफी अस्त-व्यस्त था। फेलुदा ने एक कुर्सी ली, मैंने एक स्टूल लिया और लालमोहन बाबू बिस्तर पर बैठ गए। ‘क्या आप राणेन तरफदार हैं?’
'हाँ।'
‘आप इस घर में कितने समय से रह रहे हैं?’
'मैंने छह सप्ताह पहले जिस दिन से यह चित्र बनाना शुरू किया था, तब से मैं यहीं हूं।'
‘एक पोर्ट्रेट को पूरा करने में आपको आमतौर पर कितना समय लगता है?’
'अगर यह पूरी आकृति है, और अगर मुझे हर दिन कुछ घंटे बैठने का समय मिल जाए, तो आमतौर पर मुझे छह सप्ताह लगते हैं।'
‘तो फिर इस बार आपको ज्यादा समय क्यों लग रहा है?’
क्योंकि श्री बर्मन को हर दिन एक घंटे से ज़्यादा मेरे लिए बैठना पसंद नहीं है। इसके अलावा, उन्हें मुझसे काफ़ी लगाव हो गया है, इसलिए वे चाहते हैं कि मैं यहीं स्थायी रूप से रहूँ। उन्हें अपने आस-पास बहुत से लोग पसंद हैं। उनका एक बेटा विदेश में रहता है। उनकी बेटी की शादी हो चुकी है, और उनकी पत्नी का निधन हो चुका है। पत्नी के निधन के बाद श्री बर्मन को बहुत अकेलापन महसूस होने लगा। इसलिए उन्होंने अपने खाली घर को लोगों से भरने का फैसला किया। कम से कम, मुझे तो यही लगता है।
आपने कलाकार के रूप में प्रशिक्षण कहाँ से प्राप्त किया?
मैंने पेरिस में तीन साल बिताए। उससे पहले, मैं कलकत्ता के सरकारी कला महाविद्यालय में था।
क्या आप पोर्ट्रेट बनाकर ठीक-ठाक कमाई कर पाते हैं?
नहीं, अब ऐसा नहीं है। फोटोग्राफी ने चित्रकारों की उस लोकप्रियता को मिटा दिया है जो कभी चित्र बनाने वालों के रूप में उन्हें प्राप्त थी। मैंने खुद अमूर्त चित्रकला अपना ली है। अगर श्री बर्मन ने मुझे प्रायोजित करने के लिए आगे कदम नहीं बढ़ाया होता, तो मैं बहुत मुश्किल में पड़ गया होता। क्या आपको चोरी हुई मूर्ति के बारे में पता था?
'हां। श्री बर्मन ने मुझे यह दिखाया था। उन्होंने कहा था, "आप एक कलाकार हैं, आप इसकी वास्तविक कीमत समझ पाएंगे।"'
'चोरी और हत्या के बारे में आपकी क्या राय है?'
मुझे नहीं लगता कि इस घर में किसी का हाथ था। शायद चोर ने तिजोरी खोलकर उसमें से कुछ पैसे निकालने की कोशिश की होगी, तभी संयोग से उसकी नज़र मूर्ति पर पड़ी। लालच में आकर उसने मूर्ति उठा ली और भागने से पहले ही अविनाश से उसका सामना हो गया। इसलिए उसे अविनाश को खत्म करना पड़ा। हत्या के पीछे सिर्फ आत्मरक्षा का ही मकसद हो सकता है। इसके अलावा मुझे कोई और कारण समझ नहीं आता।
'धन्यवाद।'
फेलुदा उठ खड़ा हुआ। अब दो लोगों का साक्षात्कार लेना बाकी था: सूर्य कुमार और सोमेश्वर बर्मन। हम सबसे पहले सूर्य कुमार के पास गए। वह शांत और कुछ उदास लग रहा था, शायद इसलिए क्योंकि आपदा उसी दिन घटी थी जिस दिन वह यहाँ पहुँचा था।

‘तुम एक बदनसीब आदमी हो!’ फेलुदा ने टिप्पणी की।
आप यह बात दोबारा कह सकते हैं! श्री बर्मन ने मुझे इतने गर्मजोशी से आमंत्रित किया था, और मुझे स्वीकार करके बहुत खुशी हुई... और देखिए मेरी पहली रात को क्या हुआ। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा।
क्या आपको कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी?
‘बिल्कुल कुछ नहीं। मैं आमतौर पर बहुत गहरी नींद सोता हूँ, रात में एक बार भी नहीं जागता। इसलिए मैंने कुछ नहीं सुना।’
क्या आप इस घर में सभी को जान चुके हैं?
नहीं। मैं उनसे मिला तो हूँ, लेकिन बस इतना ही। सोमेश्वर बाबू ही एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्हें मैं जानता हूँ।
‘क्या आपने वह मूर्ति नहीं देखी जो चोरी हो गई थी?’
‘नहीं, मैं कैसे जान सकता हूँ? मुझे तो यह भी नहीं पता कि वह कैसी दिखती थी। मैंने बस इतना सुना है कि वह कृष्ण की मूर्ति थी।’
'जी हां, लेकिन यह पांच अलग-अलग रत्नों से बना था। जितना सुंदर था उतना ही कीमती भी। इसकी कीमत एक लाख रुपये से अधिक होगी। क्या आप यहीं रहना जारी रखेंगे?'
सोमेश्वर बाबू चाहते हैं कि मैं जाऊं। उन्होंने मुझसे कहा, “आपको जाने के लिए कहने का तो सवाल ही नहीं उठता। मुझे बस इस बात का अफसोस है कि आपका प्रवास और अधिक सुखद नहीं हो सका।”
'अगर आप यहीं आसपास हों, तो क्या मैं जरूरत पड़ने पर आपसे और सवाल पूछने के लिए वापस आ सकता हूँ?'
‘बिल्कुल। कभी भी।’
हमने उन्हें धन्यवाद दिया और सोमेश्वर बर्मन की ओर चल दिए। वह अब भी स्तब्ध दिख रहे थे।
फेलुदा ने कहा, 'मैं समझ सकता हूँ कि आप कितना दुखी महसूस कर रहे होंगे, लेकिन चूंकि मैं यहाँ हूँ, इसलिए मुझे आपसे कुछ प्रश्न पूछने ही होंगे, कम से कम अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए ही सही।'
‘आगे बढ़ो। आखिरकार, यह तुम्हारा काम है।’
‘आपको पता ही नहीं चला कि क्या हुआ था, है ना? मेरा मतलब है, आपने कुछ भी देखा या सुना ही नहीं?’
नहीं। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि इस पूरी घटना से मैं बहुत बुरी तरह हिल गया हूँ। अविनाश बहुत अच्छा आदमी था, एक मेहनती कार्यकर्ता था। और अब मैंने न सिर्फ उसे खोया है, बल्कि अपनी अनमोल मूर्ति भी खो दी है। राजा दयाल सिंह ने स्वयं इसे मुझे दिया था। उन्होंने इसे अपने हाथों से उठाया था और मुझे सौंप दिया था। उन्होंने कहा था, “तुम सभी कलाकारों के कलाकार हो, तुम इससे कम के हकदार नहीं हो।” इसके अलावा…’ श्री बर्मन अचानक रुक गए और सोच में डूबे हुए से प्रतीत हुए।
कुछ क्षण बाद, उन्होंने अनमने ढंग से कहा: 'क्या मैंने कोई गलती की है? मुझे उम्मीद है कि ऐसा ही हो, क्योंकि अगर यह सच साबित हुआ, तो यह मेरे लिए दुगना कष्टदायक होगा।'
'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'

'मुझसे मत पूछो, कृपया। मैं तुम्हें नहीं बता सकता।'
क्या आपको कुछ भी एहसास नहीं हुआ... या समझ नहीं आया...?
'हां, मैंने किया। लेकिन फिर भी, मैं कुछ नहीं कर सका।'
'यह तो काफी रहस्यमय लग रहा है, श्री बर्मन। क्या आप कृपया स्पष्ट कर सकते हैं कि आपका क्या मतलब है? इससे चीजें काफी सरल हो जाएंगी।'
नहीं, श्रीमान मिटर। कृपया मुझसे और कुछ कहने को न कहें। कृपया... क्या अब मुझे अकेला छोड़ दिया जाए? मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।
'बिल्कुल, श्री बर्मन।'
हम उठ खड़े हुए। फेलुदा ने टिप्पणी की, 'मैं बस एक बात कहना चाहता हूँ। अगर मैं यहाँ हुई त्रासदी के संबंध में अपनी खुद की जाँच करूँ, तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी?'
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। अपराधी को पकड़ा जाना चाहिए, चाहे वह कोई भी हो।

छह
जब हम घर लौटे, तो लालमोहन बाबू ने कहा, 'सोमेश्वर बर्मन के शब्द वाकई बेहद रहस्यमय थे, है ना?'
'हां, आप सही कह रहे हैं,' फेलुदा ने उत्तर दिया।
मुझे लगता है कि उसने कई तथ्यों को छिपाया है।
'हां, मुझे भी यही आभास हुआ।'
‘इस पूरे मामले के बारे में आपकी क्या राय है?’
‘मैं पूरी तरह से अनजान नहीं हूँ, इतना तो मैं आपको बता सकता हूँ। लेकिन मुझे जादू की दुनिया के बारे में और अधिक जानकारी हासिल करनी होगी। नीलामी घर का भी ध्यान रखना होगा। मुझे वहाँ जाकर देखना होगा। आप दोनों यहाँ बैठिए और बातें कीजिए।’
फेलुदा के गायब होने से पहले मुझे उससे कुछ कहना था। मैंने कहा, 'फेलुदा, निखिल बर्मन के शब्द... या यूँ कहें कि उनकी आवाज़... क्या तुम्हें कुछ अजीब लगी?'
'अगर ऐसा हुआ है, तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। लेकिन आपको यह पता लगाना होगा कि ऐसा क्यों है।'
फेलुदा बिना कुछ और कहे चला गया। लालमोहन बाबू अपने ही विचारों में खोए हुए थे। उन्होंने कहा, 'मुझे वो कलाकार पसंद नहीं है। वैसे, मुझे घनी दाढ़ी वाले सभी पुरुषों से नफरत है।'
‘क्या आपको सूर्य कुमार पसंद आया?’
‘वह भी थोड़ा अजीब है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह अपनी पहली ही रात में तिजोरियां तोड़ता फिरता। आखिर, वह घर या उसमें रहने वालों से परिचित नहीं था, था क्या? उसे कैसे पता चलता कि कौन कहाँ सोता है, तिजोरी किस कमरे में है और उसकी चाबी कहाँ रखी है? लेकिन मुझे इस बात का पूरा यकीन है कि चोर हत्या करने के लिए तैयार था। मेरा मतलब है, जब उसका सामना तिजोरी के रखवाले से हुआ, तो वह उसे आसानी से बेहोश कर सकता था, है ना? यकीनन, इतना ही करके वह अपना लूटा हुआ सामान लेकर भाग सकता था? नहीं, मुझे लगता है कि वह चाकू पकड़े हुए, जान से मारने के लिए पूरी तरह तैयार होकर आया था।’
'हां, आप सही हो सकते हैं।'
काश हमें पता होता कि श्री बर्मन के मन में क्या चल रहा था। उन्होंने क्या कहना शुरू किया था, और फिर उन्होंने अपना विचार क्यों बदल दिया? वे अचानक चुप क्यों हो गए? मुझे लगता है कि उनकी बातों में कोई महत्वपूर्ण सुराग छिपा है।
इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, फोन बज उठा। मैंने फोन उठाया और कहा, 'हेलो।' ‘क्या श्री मिटर वहां हैं?’ एक आवाज ने पूछा। इंस्पेक्टर घोष।
नहीं, उसे कुछ समय के लिए बाहर जाना पड़ा है।

जब वो वापस आए तो उसे बता देना कि अपराधी पकड़ा गया है। गोपचंद नाम का एक चोर, जो हाल ही में जेल से छूटा है। उसने अपना जुर्म कबूल नहीं किया है, लेकिन हमें पक्का पता है कि वो कल रात घर पर नहीं था। कृपया अपने चचेरे भाई को बता देना। इस आदमी का जुर्म कबूल होते ही मैं उसे फिर से फोन करूँगी।
तुम्हारा चचेरा भाई निश्चिंत हो सकता है।
मैंने रिसीवर बदल दिया, थोड़ा निराश महसूस करते हुए। यह बहुत आसान था। मुझे यह नहीं चाहिए था।
फेलुदा डेढ़ घंटे में लौट आया। मैंने उसे तुरंत इंस्पेक्टर के फोन के बारे में बताया। वह बिल्कुल शांत दिखाई दिया। उसने कहा, "मुझे कुछ बातें पता चलीं," और मेरी बातों पर उसने शायद ही ध्यान दिया। "सूर्य कुमार के शो उतने अच्छे नहीं चल रहे हैं। निखिल बर्मन के कारोबार और उनके नीलामी घर का भी यही हाल है। और राणेन तरफदार कभी सरकारी कला महाविद्यालय नहीं गए। वह पेरिस गए थे या नहीं, मुझे नहीं पता।"
‘तो अब हम क्या करें?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘मेरी जांच लगभग पूरी हो चुकी है। अब बस सच्चाई का खुलासा करना बाकी है। मुझे इंस्पेक्टर घोष को बुलाने दीजिए।’
जब उनका फोन आया, तो फेलुदा ने इंस्पेक्टर से सबसे पहले कहा, 'श्री घोष, मैं आपका सुझाव स्वीकार नहीं कर सकता।' कुछ देर रुकने के बाद, मैंने उन्हें कहते सुना, 'मुझे लगता है कि हत्यारा उसी घर में रहने वालों में से एक है। चलिए एक काम करते हैं। मुझे पता है कि असली अपराधी कौन है। मैं सोमेश्वर बर्मन के घर में सबको यह बताना चाहता हूँ। आप भी वहाँ क्यों नहीं आते? मेरी बात सुनिए, फिर जो कहना हो कहिए। कृपया मेरे लिए यह कीजिए। और हत्यारे को गिरफ्तार करने की तैयारी के साथ आइए। धन्यवाद।'
उसने फोन रख दिया। ‘इंस्पेक्टर मान गया। गोपचंद—हा! वो ऐसा सोच भी कैसे सकता है—? सच कहूँ तो, जब पुलिस ऐसा कुछ करती है, तो मेरा उन पर से भरोसा उठने लगता है।’
फेलुदा ने दोबारा फोन उठाया और सोमेश्वर बर्मन को फोन करके बताया कि हम शाम को उनसे मिलने आएंगे और हम चाहेंगे कि घर में सभी लोग मौजूद रहें।
हम शाम पांच बजे श्री बर्मन के घर पहुंचे तो पता चला कि इंस्पेक्टर घोष दो कांस्टेबलों के साथ पहले ही वहां पहुंच चुके थे।
जब सभी लोग बैठ गए, तब फेलुदा ने बोलना शुरू किया।
इस मामले में सबसे पहला सवाल यही उठा कि क्या चोर घर के बाहर से आया था या नहीं। अंतिम त्रासदी से कुछ दिन पहले किसी ने श्री बर्मन के शयनकक्ष में सेंध लगाई थी। संयोगवश मैं अगले दिन उस घर में गया। मैंने घर का चक्कर लगाया और आसपास का मुआयना किया। मुझे लगा कि घर में सेंध लगाना वाकई काफी मुश्किल था। कोई बरामदे के खंभे पर चढ़कर पहली मंजिल तक तो पहुँच सकता था, लेकिन उस रास्ते से नीचे उतरना, खासकर अगर कोई सामान ले जा रहा हो, तो बेहद मुश्किल होता। इसलिए मेरा शक घर में रहने वालों पर गया और मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि चोर की नज़र किस चीज़ पर थी।
कल जो कुछ हुआ, उसके बाद मैं सबसे मिला और कई सवाल पूछे। सोमेश्वर बाबू ने जो बताया, उससे मुझे यह समझ आया कि उन्होंने चोर को देखा तो था, लेकिन उसे

चोरी करने से रोकने के लिए कुछ नहीं किया। शायद चोर को देखकर वे पूरी तरह स्तब्ध रह गए थे। लेकिन उन्हें यह पता नहीं था कि चोरी के बाद हत्या हो जाएगी। चोरी के पीछे केवल एक ही मकसद हो सकता है—जिस किसी ने भी मूर्ति चुराई, उसे अचानक बहुत पैसों की जरूरत पड़ गई थी।
अब आइए इस घर में रहने वाले लोगों पर नज़र डालते हैं। राणेन तरफदार को एक कमीशन मिला था और वह उस पर काम कर रहे थे। उनकी आर्थिक स्थिति, कम से कम अस्थायी रूप से, अच्छी थी। उनके चोरी करने का कोई कारण नहीं था। अनिमेष बाबू कई सालों से यहाँ रह रहे थे और उनके दोस्त उनकी अच्छी देखभाल करते थे। उन्हें भी इस मामले से बाहर किया जा सकता है।
चलिए अब निखिल बर्मन की बात करते हैं। वह एक नीलामी घर चलाते हैं, लेकिन मुझे पता चला है कि उनका कारोबार अच्छा नहीं चल रहा है। अगर उन्हें कृष्ण की वह मूर्ति मिल जाए और वे उसे बेच दें, तो वे आसानी से अपने कर्ज चुकाने के लिए पर्याप्त धन जुटा सकते हैं। मेरा मानना है कि मूर्ति को हटाने का पहला प्रयास निखिल बर्मन ने ही किया था। लेकिन वे असफल रहे।
‘आप बिना किसी सबूत के आरोप लगा रहे हैं!’ निखिल बाबू चिल्लाया।
फेलुदा ने कहा, ‘मैंने अभी अपनी बात पूरी नहीं की है। तुमने कोशिश की, फिर भी सफल नहीं हुए। तो फिर इतना परेशान क्यों हो रहे हो? मैं यह दावा नहीं कर रहा कि मेरा तर्क पूरी तरह से त्रुटिहीन है। अभी तो मैं सिर्फ अनुमान लगा रहा हूँ। आप आपत्ति उठा सकते हैं, लेकिन कृपया याद रखें कि पहली बार क्या हुआ, यह महत्वपूर्ण नहीं है। हमें असली चोरी और हत्या पर ध्यान देना चाहिए।’
‘चोरी की पहली नाकाम कोशिश और दूसरी कामयाब कोशिश के बीच इस घर में एक नया शख्स आया। वो जादूगर सूर्य कुमार था। मुझे पता है कि उसके शो को उतनी लोकप्रियता नहीं मिल रही जितनी वो चाहता है। जिस दिन हम शो देखने गए थे, उस दिन भी कई सीटें खाली पड़ी थीं। क्या सूर्य कुमार ही चोर हो सकता है? उसे साफ तौर पर पैसों की जरूरत थी।’
सूर्य कुमार ने बीच में टोकते हुए कहा, 'आप भूल रहे हैं, श्री मित्तर, कि मुझे श्री बर्मन की तिजोरी या उसमें रखी कृष्ण की मूर्ति के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी!'
‘सूर्य कुमार, मुझे आपसे एक सवाल पूछने दीजिए,’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘सोमेश्वर बर्मन आपको बहुत पसंद करते थे, है ना?’
'हां, बिल्कुल। अगर वह मुझे पसंद नहीं करते तो शायद ही मुझे यहां रहने के लिए आमंत्रित करते।'
क्या आपको कुछ अंदाजा है कि वह आपसे इतना लगाव क्यों करने लगा था?
'नहीं।'
‘अगर मैं कहूँ कि आप उन्हें उनके पहले बेटे की याद दिलाते हैं तो क्या होगा? दरअसल, मुझे लगता है कि वे आपको अपना बड़ा बेटा ही मानते थे। क्या मैं गलत हूँ, श्री बर्मन?’
‘लेकिन...लेकिन...मेरा अपना बेटा मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकता है?’ सोमेश्वर बर्मन ने क्षोभ में कहा।

फेलुदा लगातार बोलते रहे। ‘सूर्य कुमार की आवाज काफी पतली है, जिससे उनके पूरे व्यक्तित्व पर असर पड़ता है। निखिल बर्मन की आवाज भी कुछ इसी तरह पतली है। कोई व्यक्ति विग और दाढ़ी लगाकर अपना रूप बदल सकता है, लेकिन आवाज बदलना ज्यादा मुश्किल है। आपकी आवाज ने ही आपकी पोल खोल दी।’
‘आप सही कह रहे हैं, श्री मित्तर। मैंने अखिल को उसकी आवाज से पहचान लिया,’ सोमेश्वर बाबू ने स्वीकार किया।
‘ठीक है। क्या इसका मतलब यह है कि सूर्य कुमार को मूर्ति के बारे में पता था?’
सूर्य कुमार उर्फ अखिल बर्मन ने कहा, 'मुझे इसके बारे में पता हो सकता था, लेकिन तिजोरी में मूर्ति नहीं थी। मैंने कुछ भी नहीं चुराया।'
ये शब्द सुनते ही कमरे में अफरा-तफरी मच गई। सब लोग एक साथ बोलने लगे। मैं खुद भी पूरी तरह से हैरान रह गया। अगर सूर्य कुमार के तिजोरी खोलने पर उसमें मूर्ति नहीं थी, तो वो कहाँ चली गई?
‘मूर्ति गायब तो थी ही,’ फेलुदा ने कहा। ‘तुम उसे चुरा नहीं सकते थे। इसलिए तुम चोर नहीं हो, श्री अखिल बर्मन। लेकिन तुम हत्यारे हो।’
‘मुझे समझ नहीं आ रहा। मेरा कृष्ण कहाँ चला गया?’ सोमेश्वर बर्मन ने पूछा। 'यह रहा।'
फेलुदा ने मूर्ति अपनी जेब से निकाली और मेज पर रख दी। ‘एक चोर आपके घर में दो बार नहीं, तीन बार घुस चुका है। जैसे ही मुझे पता चला कि सूर्य कुमार इस घर में रहने वाला है, मैंने एहतियात बरतने का फैसला किया। जब मैंने उसकी आवाज और निखिल बर्मन की आवाज में समानता देखी, तो मैं समझ गया कि सूर्य कुमार कोई और नहीं बल्कि उसका भाई अखिल है। लेकिन उसने अपने बारे में सच बताने की कोई कोशिश नहीं की। इसका मतलब सिर्फ यही हो सकता है कि उसके कुछ बुरे इरादे थे। फिर मुझे पता चला कि उसकी आमदनी संतोषजनक नहीं थी। वह कर्ज में डूबा हुआ था और उसके शो घाटे में चल रहे थे। इसलिए मुझे लगा कि कृष्ण की मूर्ति को तिजोरी में नहीं रहने देना चाहिए। आपके घर में घुसने के लिए मुझे आपके चौकीदार को काफी रिश्वत देनी पड़ी। फिर मैं पहली मंजिल पर जाने के लिए एक खंभे पर चढ़ गया, इससे पहले कि मुझे सोमेश्वर बाबू का शयनकक्ष मिला। उसके तकिए के नीचे से चाबी निकालना मुश्किल रहा होगा, लेकिन मैंने ताश के खेल का भी अभ्यास किया है। इसलिए मुझे चुपचाप, बिना किसी और को परेशान किए, चीजें निकालने का कुछ न कुछ तरीका तो आता ही है। श्री बर्मन नहीं जागे।’ इसलिए मैं अपना काम करके उसी तरह जा सकता था। अफसोस की बात है कि मैं हत्या को रोक नहीं सका।'
इस बीच इंस्पेक्टर घोष सूर्य कुमार के पास पहुँच चुके थे और उनके बगल में खड़े थे। फेलुदा ने उनसे कहा, 'इस मामले में, अखिल बर्मन, तुम्हारा जादू या सम्मोहन काम नहीं आएगा।'
सोमेश्वर बर्मन उठे और फेलुदा का हाथ थाम लिया। 'आज अगर मेरा कृष्ण सुरक्षित है, तो यह केवल आपकी वजह से है। श्री मित्तर, मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ, यह मुझे नहीं पता!'

घर लौटने पर लालमोहन बाबू ने अपनी बात खत्म की। उन्होंने कहा, 'फेलू बाबू, आज तक मैं आपकी बहुत प्रशंसा करता था। अब मुझे कहना पड़ेगा कि मेरी प्रशंसा के साथ-साथ डर भी है। किसने सोचा था कि आप इतने माहिर चोर हैं?'

एक
हम टेलीविजन पर शर्लक होम्स देख रहे थे। फेलुदा काफी प्रभावित लग रहा था। 'क्या होम्स और वाटसन दोनों किसी किताब के पन्नों से सीधे बाहर निकले हुए नहीं लगते? अगर होम्स ने हमें रास्ता न दिखाया होता, हमें विधि और अवलोकन के बारे में न सिखाया होता, तो आधुनिक जासूस क्या करते? हम उनके रचयिता, कॉनन डॉयल के बहुत ऋणी हैं।'
जटायु ने पूरी तरह से सहमति जताई। ‘मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य इस बात पर होता है कि उस आदमी ने कितनी कहानियां लिखीं। उसने इतने अलग-अलग कथानक कैसे सोचे होंगे? मुझे तो कहानी की एक मोटी-मोटी रूपरेखा तैयार करने के लिए भी इतनी मशक्कत करनी पड़ी है कि मैं सचमुच गंजा हो गया हूँ!’
मुझे लगा कि लालमोहन बाबू कुछ ज़्यादा ही विनम्रता दिखा रहे हैं। उन्होंने अब तक इकतालीस उपन्यास लिखे थे। भले ही उनकी कहानियों में मौलिकता या विविधता न हो, फिर भी बंगाल के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक होना कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि फेलुदा से मिलने के बाद उनकी कहानियों में काफ़ी सुधार आया था।
बाहर बारिश हो रही थी और हमने अभी-अभी चाय और दालमुट खत्म की थी। लालमोहन बाबू ने कहा, 'प्रिय तपेश, क्या आप श्रीनाथ से हमारे लिए एक और कप चाय बनाने के लिए कह सकते हैं?'
मैं उठी और श्रीनाथ को बताने के लिए अंदर गई। जब मैं लौटी, तो हमारे घर के बाहर एक कार रुकने की आवाज़ आई, उसके बाद दरवाज़े की घंटी बजी। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वहाँ एक मध्यम कद का, दाढ़ी-मूंछ साफ़ किए हुए, लगभग चालीस वर्ष का व्यक्ति खड़ा था।
उन्होंने मुझसे पूछा, 'क्या प्रदोष मित्र यहीं रहते हैं?'
'अंदर आ जाइए,' फेलुदा ने आमंत्रित किया, 'और आप इसे दरवाजे के पास रख सकते हैं,' उसने हमारे आगंतुक द्वारा ले जाए जा रहे छाते की ओर इशारा करते हुए कहा।
उस आदमी ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था, फिर वह सोफे पर बैठ गया।
'मैं प्रदोश मित्तर हूं, और यह मेरे मित्र लालमोहन गांगुली हैं,' फेलुदा ने कहा।
'नमस्कार। शुक्र है कि मैं तुम्हें घर पर पा गया। मैंने तुम्हें फोन करने की कोशिश की थी, लेकिन बात नहीं हो पाई।'
‘मैं समझ गया। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?’
मैं उसी पर आ रहा हूँ। पहले मैं अपना परिचय दे दूं। मेरा नाम महितोष रॉय है। मुझे उम्मीद नहीं है कि आप मेरा नाम पहचानते होंगे, लेकिन मैं एक अभिनेता हूँ—फिल्मों में नहीं, थिएटर में—और कुछ ही लोग मुझे जानते हैं। ‘आप अप्सरा थिएटर में हैं, है ना?’

'जी हां, बिल्कुल सही। मैं फिलहाल 'प्रफुल्ला' नाम के एक नाटक में अभिनय कर रहा हूं।'
'हां, मैंने यह सुना था।'
'मैं आपके पास आया हूँ, श्री मिटर, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं खतरे में हो सकता हूँ।'
‘अरे? आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?’
मुझे धमकियां मिल रही हैं। मुझे नहीं पता कि ये धमकियां कौन भेज रहा है, लेकिन ये सभी लिखित में हैं। मैं इन्हें अपने साथ लेकर आया हूं।
महितोष रॉय ने अपनी जेब से कागज के चार टुकड़े निकाले और उन्हें मेज पर रख दिया। उनमें से एक पर लिखा था, 'सावधान!' दूसरे पर लिखा था, 'तुम्हारे दिन गिने-चुने हैं।' तीसरे और चौथे पर लिखा था, 'अपने पापों का प्रायश्चित करो' और 'यह अंत है। अपनी आखिरी बात कहो।'
प्रार्थनाएँ। सभी संदेश बड़े अक्षरों में लिखे गए थे। यह बताना असंभव था कि क्या प्रत्येक संदेश एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया था।
‘क्या ये डाक से आए हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
'हां, पिछले सात दिनों में।'
क्या आप यह भी अनुमान नहीं लगा सकते कि इन्हें किसने भेजा होगा?
नहीं, सच कहूं तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि कोई ऐसा काम करने की जहमत क्यों उठाएगा।
‘क्या आपको कोई ऐसा व्यक्ति याद नहीं आता जिसे आपसे कोई शिकायत हो सकती है?’
‘देखिए, मैं थिएटर में काम करता हूँ। अभिनेताओं के बीच छोटी-मोटी ईर्ष्याएँ तो हमेशा होती ही रहती हैं। मैं दो साल से अप्सरा के साथ हूँ। उससे पहले मैं रूपमंच के साथ था। जब मैंने अप्सरा ज्वाइन किया, तो मुझे एक दूसरे अभिनेता की जगह लेने के लिए कहा गया था। स्वाभाविक रूप से, उन्हें यह पसंद नहीं आया और शायद वे अभी भी नाराज़ हैं।’
‘इस आदमी का नाम क्या है?’
‘जगनमोय भट्टाचार्य। उन्होंने बहुत ज्यादा शराब पीना शुरू कर दिया था। इसीलिए उन्हें जाना पड़ा। मैं आपको यह नहीं बता सकता कि वह अब कहां हैं।’ क्या आप किसी और के बारे में सोच सकते हैं?
मेरा एक छोटा भाई है, जिससे मेरी बनती नहीं है। वह बुरी संगत में पड़ गया और भटक गया... कुछ समय बाद हमारे पिता उससे तंग आ गए और आखिरकार अपनी सारी संपत्ति मुझे दे दी। इससे मेरा भाई स्वाभाविक रूप से दुखी हुआ। वह अलग रहता है, हम मुश्किल से ही एक-दूसरे से मिलते हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि कोई और मेरे खिलाफ कुछ सोच सकता है।
ठीक है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि समस्या क्या है? ऐसी स्थिति में, मैं वास्तव में कुछ नहीं कर सकता सिवाय इसके कि आप सावधान रहें कि आप कहाँ जाते हैं और किससे मिलते हैं। आप कहाँ रहते हैं?
‘बल्लीगंज। मेरा पता फाइव पंडितिया प्लेस है।’
'क्या आप अकेले रहते हैं?'
'हां। मेरे पास एक रसोइया और एक नौकर है। मैं अविवाहित हूं।'

‘मैं समझ गया। मुझे खेद है, श्रीमान रॉय, लेकिन इस समय मैं कुछ नहीं कर सकता। ये सभी नोट अलग-अलग जगहों पर भेजे गए हैं, इसलिए मैं किसी विशेष स्थान पर जांच शुरू नहीं कर सकता। आमतौर पर, धमकी भरे नोट भेजने वाले लोग वास्तव में उन्हें अंजाम नहीं देते। उनका मकसद सिर्फ डर और चिंता पैदा करना होता है, और यही वह काम है जो यह व्यक्ति—या ये व्यक्ति—आपके साथ कर रहे हैं। मुझे लगता है कि आपके लिए पुलिस के पास जाना बेहतर होगा।’ ‘पुलिस?’ श्री रॉय थोड़े निराश लग रहे थे।
‘क्यों, क्या आपको उनसे कोई शिकायत है?’
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।
'तो फिर, मेरा सुझाव है कि आप सीधे अपने स्थानीय थाने जाएं और शिकायत दर्ज कराएं। उन्हें ठीक वही बताएं जो आपने मुझे बताया है।'
श्री रॉय उठे। फेलुदा उन्हें बाहर तक छोड़ने के लिए सामने के दरवाजे तक गए। फिर वे अपनी सीट पर लौट आए और बोले, 'उनकी एक उंगली पर सफेद निशान था। वे कुछ समय पहले तक अंगूठी पहनते थे। पता नहीं वो कहाँ चली गई?'
‘आपका मतलब है कि उसने इसे बेच दिया होगा?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
'हां, इसकी काफी संभावना है। उनके जूते भी काफी खराब हालत में थे। प्रफुल्ला में उनकी भूमिका छोटी सी है। मुख्य भूमिका अप्सरा थिएटर की स्टार नेपाल लाहिड़ी निभा रही हैं।'
लेकिन आखिर कौन उसे इस तरह परेशान कर रहा होगा?
'कहना नामुमकिन है। हो सकता है वो उन दो लोगों में से कोई एक हो जिनका उसने ज़िक्र किया था, कौन जाने? मुझे सच में नहीं लगता था कि मैं ये केस ले पाऊँगी। गुमनाम धमकियाँ—चाहे लिखित हों या मौखिक—शायद ही कभी कुछ साबित होती हैं। अरे, जब से मैंने काम शुरू किया है, मुझे अनगिनत धमकियाँ मिल चुकी हैं। अगर मैं उन्हें गंभीरता से लूँ, तो मैं कभी घर से बाहर कदम ही नहीं रख पाऊँगी!'
लेकिन महितोष रॉय को मिली धमकियाँ निराधार नहीं थीं। यह बात हमें तीन दिन बाद पता चली।

दो
एक अखबार में एक छोटी सी खबर छपी थी। अप्सरा थिएटर के अभिनेता महितोष रॉय लापता हो गए थे। बताया जाता है कि वे शाम को, जब भी कोई शो न होता था, झील के किनारे टहलने जाया करते थे। परसों यानी सोमवार को वे खाली थे, इसलिए टहलने गए, लेकिन वापस नहीं लौटे। उनके सहायक ने पुलिस को सूचना दी, लेकिन अभी तक उनका पता नहीं चल पाया है।
रिपोर्ट पढ़ते ही फेलुदा नाराज़ हो गया। उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, ‘मैंने उसे सावधान रहने को कहा था। मैंने कहा था कि उसे कोई भी अनावश्यक जोखिम नहीं उठाना चाहिए। उसे घर छोड़कर बेवजह बाहर जाने के लिए किसने कहा था? फिर भी, मुझे लगता है कि मुझे उसके घर जाना चाहिए क्योंकि वह मदद के लिए मेरे पास आया था। क्या आपको उसका पता याद है?’
‘फाइव पंडितिया प्लेस, बल्लीगंज।’
'अच्छा। मैं तो बस तुम्हारी याददाश्त परख रहा था।'
फाइव पंडिआ प्लेस एक छोटा सा दो मंजिला मकान निकला। श्री रॉय भूतल पर रहते थे। उनके नौकर ने दरवाजा खोला। हमने उन्हें अपना परिचय दिया। वे एक तरफ हट गए और हमें अंदर आने के लिए कहा।
‘तुम्हारा मालिक मुझसे मदद मांगने आया था। उसे धमकी भरे पत्र मिल रहे थे। क्या तुम्हें इसके बारे में पता था?’ फेलुदा ने पूछा।
जी हाँ, महोदय। मैं उनके साथ बाईस साल से थी। वे मुझे सब कुछ बताते थे। मैंने उनसे कहा था कि जब तक ज़रूरी न हो, घर से बाहर न निकलें, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। उस शाम, जब वे नौ बजे के बाद भी नहीं लौटे, तो मैं खुद उन्हें ढूंढने गई। मुझे वह जगह ठीक से पता थी जहाँ उन्हें टहलना पसंद था और वह बेंच जहाँ वे अक्सर बैठते थे। लेकिन वे कहीं नहीं मिले। फिर पूरा दिन बीत गया, वे फिर भी नहीं लौटे। मैं पुलिस के पास भी गई, लेकिन वे भी उन्हें नहीं ढूंढ पाए।
'क्या आप अभी हमारे साथ आ सकते हैं और हमें वह जगह दिखा सकते हैं जहां आपको लगता है कि मिस्टर रॉय को आखिरी बार देखा गया होगा?'
'बहुत खूब, महोदय।'
'आपका क्या नाम है?'
‘Dinabandhu.’
हमने टैक्सी ली और झील तक पहुँच गए। दीनबंधु ने झील के किनारे एक पेड़ के नीचे बनी बेंच की ओर इशारा किया, जहाँ श्री रॉय टहलने के बाद बैठते थे। जाहिर है, उनके डॉक्टर ने ही उन्हें यह रोज़ाना की कसरत करने की सलाह दी थी। इस समय वहाँ कोई नज़र नहीं आ रहा था। फेलुदा ने इस मौके का फायदा उठाकर बेंच और उसके आसपास के इलाके का बारीकी से मुआयना किया। पाँच मिनट बाद, उन्हें बेंच के पीछे घनी घास में एक छोटा पीतल का डिब्बा मिला।

‘अरे वाह, यह तो मेरे मालिक का था!’ दीनबंधु ने हैरानी से कहा। फेलुदा ने डिब्बा खोला। उसमें सुपारी के कुछ टुकड़े थे। फेलुदा ने उसे अपनी जेब में रख लिया।
‘क्या आप भवानीपुर पुलिस स्टेशन गए थे?’ फेलुदा ने पूछा। ‘जी हाँ।’
'बहुत अच्छा। अब हम आपको आपके घर छोड़ देंगे, और फिर पुलिस से बात करेंगे।' कलकत्ता के अधिकांश स्थानीय लोग फेलुदा को जानते थे। भवानीपुर में रहने वाले फेलुदा का नाम सुबोध अधिकारी था। एक गंभीर, लेकिन हंसमुख व्यक्ति, उन्होंने आश्चर्य से हमारा अभिवादन किया। उन्होंने पूछा, 'आप इतनी सुबह यहाँ क्यों आए हैं?'
हमने दो कुर्सियाँ लीं। फेलुदा ने समझाया, 'यह महितोष रॉय के लापता होने के बारे में है।'
‘ठीक है। इंस्पेक्टर घोष उस मामले को देख रहे थे। मैं उन्हें बुला लेता हूँ। क्या आप चाय पीना चाहेंगे?’
'हां बहुत धन्यवाद।'
हमारी चाय और इंस्पेक्टर एक साथ आए। उन्होंने और फेलुदा ने हाथ मिलाया। ‘मैं महितोष रॉय के बारे में पूछताछ करने आया हूँ। मुझे लगता है कि वह लापता है?’ फेलुदा ने कहा।
'हां। मुझे लगता है उसकी हत्या कर दी गई है। हमें उसके घर से कुछ धमकी भरे पत्र मिले हैं। ज़ाहिर है, सभी गुमनाम थे। अगर उसकी हत्या कर दी गई है और उसके शरीर को झील में फेंक दिया गया है, तो उसे ढूंढना नामुमकिन होगा, खासकर अगर उसके साथ कोई भारी चीज़ बंधी हो। लेकिन इस मामले में आपकी दिलचस्पी क्यों है?'
"खैर, श्री रॉय गायब होने से पहले मुझसे मिलने आए थे, उन नोट्स के बारे में। क्या आपने तय कर लिया है कि आप आगे कैसे बढ़ेंगे?"
हम अभी भी जांच कर रहे हैं। वह अप्सरा थिएटर में काम करता था। हमने वहां कुछ लोगों से बात की है, लेकिन ज्यादा जानकारी नहीं मिली। अभिनेताओं के बीच प्रतिद्वंद्विता थी, लेकिन इतनी गंभीर नहीं थी कि हत्या को जायज ठहराया जा सके।
‘श्री रॉय की आर्थिक स्थिति कैसी थी?’
‘वह महीने में बारह सौ रुपये कमाता था। उसका कोई परिवार नहीं था, इसलिए उसका गुजारा चल जाता था। ध्यान रहे, हमें पक्का पता नहीं है कि उसकी हत्या हुई है। हो सकता है कि वह कहीं छिप गया हो।’
मैं उस जगह गया जहाँ वह टहलने के बाद झील के किनारे बैठा करता था। मुझे वहाँ घास में छिपा हुआ उसका एक सामान मिला। यह पीतल का एक छोटा सा डिब्बा है। वह इसमें सुपारी रखता था।
'सच में? तो शायद यह हत्या है। शायद हत्यारे के साथ हाथापाई के दौरान यह डिब्बा उसकी जेब से गिर गया हो।'
'हां, यह संभव है।'
'बहुत अच्छा, हम अपनी जांच जारी रखेंगे और आपको सूचित करते रहेंगे, श्रीमान मिटर।'
'धन्यवाद, मैं आपसे संपर्क करूंगा।'

हमने अपनी चाय खत्म की और पुलिस स्टेशन से निकल गए।
जब हम बाहर निकले तो फेलुदा ने कहा, 'मुझे लगता है हमें अप्सरा थिएटर जाना चाहिए। जाओ और उस दवा की दुकान वाले लालमोहन बाबू को फोन करो और उनसे कहो कि वे हमारे साथ चलें।'
मैंने फोन किया और फिर हमने टैक्सी ली। अप्सरा थिएटर श्यामबाजार में था।

तीन
हमें अप्सरा थिएटर के बाहर लालमोहन बाबू हमारा इंतजार करते हुए मिले। ‘क्या चल रहा है?’ उसने पूछा।
क्या आपने आज के अखबार नहीं देखे?
'जी हां, बिल्कुल। महितोष रॉय गायब हो गए हैं, है ना?'
‘लालमोहन बाबू सिर्फ अपने घर से ही गायब नहीं हुए हैं; वे शायद इस धरती से ही गायब हो गए हैं।’
'क्या!'
फेलुदा ने उसे तुरंत सारी बात बता दी।
‘तो अब हम क्या करें?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘चलिए, पहले यहाँ के मैनेजर से बात करते हैं।’
हम बाहर फुटपाथ पर खड़े थे। अब हम इमारत के अंदर चले गए। गेट पर मौजूद चौकीदार ने हमें बताया कि मैनेजर कैलाश बनर्जी अपने दफ्तर में हैं।
श्री बनर्जी के कमरे तक पहुँचने से पहले एक प्रतीक्षा कक्ष था। हमें वहाँ इंतज़ार करने के लिए कहा गया, जबकि एक कर्मचारी ने फ़ेलुदा का कार्ड लेकर प्रबंधक को सूचित किया। वह एक मिनट बाद लौटा और बोला, 'अब आप अंदर जा सकते हैं।'
हम मैनेजर के कमरे में दाखिल हुए। कैलाश बनर्जी कद में छोटे, सांवले और मोटे थे। उनके ऊपरी होंठ पर पतली सी मूंछें थीं। वे लगभग पचास वर्ष के प्रतीत हो रहे थे।
जब हम सब बैठ गए, तो उन्होंने कहा, 'मैंने आपके बारे में सुना है, श्री मिटर, लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि आप मुझसे क्यों मिलना चाहते हैं।' 'मुझे आपके एक अभिनेता के बारे में कुछ जानकारी चाहिए। जो लापता है,' फेलुदा ने उससे कहा।
‘कौन, महितोष? लेकिन पुलिस तो पहले ही यहाँ आ चुकी है। उन्होंने बहुत सारे सवाल पूछे।’
'हां, मुझे पता है। मुझे इसमें दिलचस्पी है क्योंकि महितोष रॉय गायब होने से कुछ समय पहले मेरे पास आया था। वह उसे मिली धमकियों को लेकर चिंतित था।' ‘लिखित धमकियाँ? हे भगवान, क्या इसका मतलब है कि उसकी हत्या कर दी गई है? मुझे लगा कि वह बस अपने लेनदारों से छिप रहा था।’
नहीं, यह इतना आसान नहीं है।
‘मैं समझ गया। वैसे, उनकी अनुपस्थिति से हमें ज़्यादा परेशानी नहीं हुई है। मैंने पहले ही एक अस्थायी विकल्प ढूंढ लिया है। पुलिस कल आई थी, लेकिन हम कुछ खास मदद नहीं कर पाए। महितोष का यहाँ कोई करीबी दोस्त नहीं था। वह काफी अलग-थलग और अंतर्मुखी स्वभाव का था। मैं कहूंगा कि वह एक ठीक-ठाक अभिनेता था, लेकिन मुख्य भूमिका निभाने के लिए उतना अच्छा नहीं था। उसकी

ख्वाहिश थी कि वह उसी नाटक में नायक की भूमिका निभाए जिसका मंचन हम अभी कर रहे हैं।’
क्या आप मुझे बता रहे हैं कि उसके कोई दुश्मन नहीं थे?
‘मैंने अभी आपको बताया, महोदय, कि उसके न तो मित्र थे और न ही शत्रु।’
‘क्या आपके यहाँ कभी जगनमोय भट्टाचार्य नाम का कोई अभिनेता नहीं था?’ 'हां, लेकिन उसे बहुत पहले ही जाने के लिए कहा गया था।'
‘महितोष रॉय ने भट्टाचार्य की जगह ली थी, है ना?’
'जी हां, बिल्कुल सही। मैं तो इसके बारे में पूरी तरह से भूल ही गया था।' क्या आपके पास भट्टाचार्य का पता है?
'मुझे पता है, लेकिन यह उसका पुराना पता है। हो सकता है कि वह वहां से कहीं और चला गया हो।'
'कोई बात नहीं। यह एक ऐसा जोखिम है जिसे हमें उठाना ही होगा।'
'अचे से।'
श्री बनर्जी ने घंटी बजाई। लगभग पच्चीस वर्ष का एक युवक प्रकट हुआ।
श्री बनर्जी ने उनसे कहा, 'जगनमोय भट्टाचार्य का पता प्राप्त करें और उसे श्री मित्तर को दे दें।'
कुछ ही मिनटों में वह युवक पता लेकर लौटा: 27 निर्मल बोस स्ट्रीट। लालमोहन बाबू ने कहा कि उन्हें पता है कि यह कहाँ है। जाहिर है, यह अप्सरा से ज्यादा दूर नहीं था। हमने श्री बनर्जी को धन्यवाद दिया और चले गए। सौभाग्यवश, पता चला कि जगनमोय भट्टाचार्य अपने पुराने पते से कहीं नहीं गए थे। उनके नौकर ने फेलुदा का कार्ड अंदर ले जाकर हमें अपने मालिक के पास पहुँचा दिया।
हमने जगनमोय भट्टाचार्य को एक दीवान पर बैठे हुए पाया। वे बीमार लग रहे थे। हमें अंदर आते देख भी उन्होंने उठने की कोशिश नहीं की। उनका पहला सवाल था, 'एक जासूस मुझसे क्या चाहता है?' उन्होंने जवाब दिया, 'जानकारी। क्या आप महितोष रॉय नाम के किसी अभिनेता को जानते थे?'
'क्या मैं उसे जानता हूँ? सच में नहीं। मुझे बस इतना पता है कि वह आया और मेरा करियर बर्बाद हो गया। लेकिन मैंने सुना है कि वह गायब हो गया है।' ‘सिर्फ गायब नहीं हुआ। शायद उसकी हत्या कर दी गई है।’
‘मार डाला? ओह। खैर, सच कहूँ तो, यह सुनकर मुझे कोई खास दुख नहीं हुआ। उसने मेरी रोजी-रोटी छीन ली। मुझे उसके बारे में बस यही याद है।’
श्री रॉय को गुमनाम धमकी भरे पत्र मिले थे। क्या आप बता सकते हैं कि वे कौन थे?
'आपका मतलब यह है कि आप जानना चाहते हैं कि क्या मैंने उन्हें उसके पास भेजा था?'
'खैर, ऐसा लगता है कि अब भी आप उससे द्वेष रखते हैं।'
नहीं, महोदय। आपने महितोष रॉय का ज़िक्र किया, और इसलिए मुझे याद आ गया कि उसके आने से मुझ पर क्या असर हुआ था। अब वह सब अतीत की बात है, श्रीमान मित्र। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपना दिन बदला लेने की योजना बनाने में नहीं बिताता। मैं अब कहीं और काम कर रहा हूँ, और मैंने शराब पीना छोड़ दिया है। मेरी कमाई ज़्यादा नहीं है, लेकिन गुज़ारा हो जाता है। अब

[illegible]
‘[illegible]?’
'[illegible]'

चार
तब से तीन महीने बीत चुके थे। महितोष रॉय का कोई पता नहीं चला, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं था कि उनकी हत्या कर दी गई थी। एक दिन हम अप्सरा थिएटर वापस गए यह जानने के लिए कि क्या उन्हें कोई खबर मिली है, लेकिन हमें कुछ भी पता नहीं चला। हमें बस इतना पता चला कि महितोष रॉय की जगह एक नए अभिनेता को काम पर रखा गया है। उनका नाम सुधेंदु चक्रवर्ती था। कहा जाता था कि वह एक अच्छे अभिनेता हैं।
फेलुदा ने महितोष के भाई शिवतोष से संपर्क करने में कामयाबी हासिल कर ली थी। पता चला कि दोनों भाई कई सालों से एक-दूसरे से बातचीत नहीं कर रहे थे। ‘ऐसा क्यों?’ फेलुदा ने पूछा था। ‘क्या आपके परिवार की संपत्ति ही एकमात्र कारण थी?’
‘और क्या वजह ढूंढनी है? मेरा भाई पिताजी को खुश करने की बहुत कोशिश करता था। मैं बिल्कुल भी वैसी नहीं हूँ। मैंने अपनी राह खुद चुनी, अपनी मर्जी से काम किया। पिताजी को यह पसंद नहीं आया। उन्हें और मेरे भाई दोनों को लगता था कि मैं छोटी होने के कारण किसी काम की नहीं हूँ। इसलिए पिताजी ने मुझे अपनी वसीयत से निकाल दिया। स्वाभाविक रूप से मुझे यह बात बुरी लगी और महितोष से मेरा रिश्ता टूट गया। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, है ना?’ शिवतोष रॉय ने काफी कड़वाहट के साथ बात की। मुझे ऐसा लगा कि उनके मन में अपने भाई के प्रति अभी भी बहुत गहरी नाराजगी है।
'क्या आप उसके लापता होने के बारे में कुछ कहना चाहेंगे? अगर उसकी वाकई हत्या कर दी गई है, तो निश्चित रूप से आपको यह एहसास होगा कि आप एक प्रमुख संदिग्ध हो सकते हैं?'
‘देखिए, मैंने पिछले पांच सालों में अपने भाई को बिल्कुल नहीं देखा। मेरा उससे कोई वास्ता नहीं था। मैं थिएटर भी नहीं गया।’
'क्या आपको याद है कि जिस दिन महितोष रॉय गायब हुए थे, उस दिन आप क्या कर रहे थे, मान लीजिए शाम 6 से 8 बजे के बीच?'
मैं वही कर रहा था जो मैं हर शाम करता हूँ—अपने दोस्तों के साथ ताश खेल रहा था।
'कहाँ?'
‘सरदार शंकर रोड। नंबर ग्यारह। यह अनुप सेनगुप्ता का घर है। अगर आप चाहें तो जाकर उनसे बात कर सकते हैं।’
फेलुदा ने ऐसा किया, और श्री सेनगुप्ता ने पुष्टि की कि शिवतोष रॉय उस समय निश्चित रूप से उनके घर पर थे। वह वहां नियमित रूप से आते-जाते थे। इसलिए फेलुदा को उन्हें संदिग्धों की सूची से हटाना पड़ा।
अगले दिन लालमोहन बाबू आए और बोले, 'देखो, फेलू बाबू, यह मामला तो मामला है ही नहीं। मुझे समझ नहीं आता कि तुम इस पर इतना परेशान क्यों हो रहे हो।

क्यों न तुम थोड़ी देर आराम कर लो? मेरे दिमाग में एक नई योजना बन रही है, और तुम्हें भी दिमाग को तरोताजा करने के लिए ताज़ी हवा की ज़रूरत है, तो चलो बाहर चलते हैं।'
'कहाँ जाना है?'
‘दीघा। हम कभी दीघा नहीं गए, है ना?’
'बहुत खूब। सच कहूं तो, मुझे नहीं लगता कि इस मामले का कोई सफल निष्कर्ष निकलेगा। महितोष रॉय के हत्यारे को कभी पकड़ा नहीं जा सकेगा।'
अगले दिन हम दीघा के लिए रवाना हो गए, हमने एक पर्यटक लॉज में कमरा बुक कर लिया था। वह बहुत ही आरामदायक जगह थी और समुद्र भी ज़्यादा दूर नहीं था। मैंने देखा कि लालमोहन बाबू अपने साथ लाल रंग का नया स्विमिंग ट्रंक लाए थे।
पहले दो दिन शांति से बीत गए। तीसरे दिन, कलकत्ता से दीघा पहुँचने में पूरा दिन लग गया, इसलिए शाम को फेलुदा ने अखबार उठाया। उसने उस पर एक नज़र डाली और तीखी आवाज़ में कहा।
मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा!
‘क्या बात है?’ लालमोहन बाबू और मैं एक साथ चिल्लाए। ‘अप्सरा थिएटर से एक और व्यक्ति की हत्या कर दी गई है। नेपाल लाहिड़ी... वो उनके हीरो थे, हमेशा मुख्य भूमिका निभाते थे। आखिर क्या हो रहा है?’
मैंने फेलुदा से अखबार लिया और रिपोर्ट को जल्दी से पढ़ा। रिपोर्ट में लिखा था कि नेपाल लाहिड़ी हत्या वाली शाम को टैक्सी से घर लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक दोस्त से मिलने के लिए टैक्सी रोकी। संयोग से उस दोस्त का घर एक छोटी सी गली में था। गली में कदम रखते ही किसी ने श्री लाहिड़ी पर चाकू से हमला कर दिया। पुलिस ने अपनी जांच शुरू कर दी थी। श्री लाहिड़ी की पत्नी और बारह वर्षीय बेटा इस मामले में कोई जानकारी नहीं दे पाए थे।
‘अब हम क्या करें?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
'हम कलकत्ता लौटते हैं, और आप अप्सरा के पास जाकर कुछ सवाल पूछिए।'
‘मैं? मैं ही क्यों?’
'क्योंकि आज सुबह समुद्र में नहाते समय मेरे टखने में मोच आ गई। मुझे पता है कि कल तक मुझे काफी दर्द होगा।'
'तो फिर, मेरा सुझाव है कि हम आज रात ही कलकत्ता वापस चले जाएं। घर पर रहकर आप अपने टखने को बेहतर आराम दे सकते हैं।'
‘क्या आपको लगता है कि आप मेरी जगह ले सकते हैं?’
‘हेह, फेलू बाबू, आपके साथ इतने साल बिताने के बाद मुझे आपकी शैली के बारे में कुछ तो सीख लेना चाहिए था!’
हम उसी शाम कलकत्ता लौट आए। लालमोहन बाबू अगली सुबह हमारे घर आने के लिए राज़ी हो गए, ताकि फेलुदा उन्हें ठीक से जानकारी दे सकें। फिर हम दोनों अप्सरा थिएटर जाएंगे।
लालमोहन बाबू समय पर आ गए और हम दस बजे तक निकल पाए। फेलुदा ने हमें स्पष्ट निर्देश दिए थे कि क्या करना है। लालमोहन बाबू इस बात से बहुत खुश लग रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा, ‘मुझे अक्सर इस बात का अफसोस रहता था कि मैं

तुम्हारे चचेरे भाई की और अधिक सक्रिय रूप से मदद नहीं कर पाया, लेकिन अब मुझे लगता है कि मुझे अपनी गलती सुधारने का मौका मिल गया है। देखो!’ उन्होंने अपनी जेब से एक कार्ड निकाला। ‘मैंने इसे कल रात छपवाया था। तुम्हें यह कैसा लगा?’
मैंने कार्ड देखा। उस पर लिखा था: लालमोहन गांगुली, लेखक।
‘यह तो बढ़िया है। बहुत ही शानदार!’ मैंने उससे कहा। उसने खुशी से सिर हिलाया।
तब तक हम अप्सरा थिएटर पहुँच चुके थे। हमने चौकीदार को ये नया कार्ड दिया और उसे मैनेजर को देने के लिए कहा। तीन मिनट बाद हमें अंदर जाने की अनुमति मिल गई।
कैलाश बनर्जी हमें पहचान नहीं पाए। उन्होंने थोड़ी अधीरता से कहा, 'देखिए, आज हमारे पास बहुत काम है। अगर आप किसी नए नाटक के सिलसिले में आए हैं, तो मुझे खेद है कि मैं अभी इस पर चर्चा नहीं कर सकता। क्या आप कुछ दिनों बाद आ सकते हैं?'
लालमोहन बाबू ने विरोध में हाथ उठाया। 'नहीं, नहीं। मैं आपके लिए कोई नया नाटक नहीं लाया हूँ। मैं यहाँ जांचकर्ता प्रदोष मित्र का प्रतिनिधित्व करने आया हूँ। उनकी तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए वे स्वयं नहीं आ सके। जब वे महितोष रॉय के लापता होने की जांच करने यहाँ आए थे, तब हम उनके साथ थे।'
'जी हां, अब मुझे याद आ गया। आप क्या जानना चाहते हैं? यह सब तो अखबारों में छप चुका है। मुझे और कुछ नहीं कहना है।'
'मेरा बस एक ही सवाल है, महोदय—क्या नेपाल लाहिड़ी को भी महितोष रॉय की तरह गुमनाम पत्र मिल रहे थे?'
'हां, लेकिन उसने पहले कुछ को नजरअंदाज कर दिया और किसी को नहीं बताया। फिर, लगभग तीन दिन पहले, उसने मुझे उनमें से एक दिखाया। उसने कहा कि उसे पहला वाला दस दिन पहले मिला था।'
‘उसमें क्या लिखा था?’
“वही पुरानी बातें, अस्पष्ट धमकियाँ। बड़े अक्षरों में लिखी हुई। मैंने नेपाल को सावधान रहने को कहा, लेकिन वह खुद को असल जिंदगी का हीरो समझता था, सिर्फ इसलिए कि वह मंच पर हीरो का किरदार निभाता था। इसलिए उसने कहा, “छी, इस तरह की बेवकूफी भरी बातों से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता!” और अब देखो उसका क्या हाल हो गया।”
'वह कहां रहा?'
‘Twenty-seven, Nakuleshwar Bhattacharya Lane.’
वह शादीशुदा था, है ना?
'हाँ।'
‘वह दोस्त कौन था जिससे मिलने के लिए वह रुका था? क्या आपको कुछ पता है?’ “अच्छा, अगर वह किसी गली में जाने के लिए रुका होता, तो शायद वह ससाधर चटर्जी ही होते। वह एक छोटी सी गली में रहते हैं। वह एक अभिनेता भी हैं। रूपम थिएटर के लिए काम करते हैं।”
‘क्या अप्सरा में नेपाल लाहिड़ी के कोई दुश्मन थे?’

‘मुझे कैसे पता चलेगा? हर सफल अभिनेता के दुश्मन और उससे ईर्ष्या करने वाले लोग तो होते ही हैं। नेपाल से हमारी प्रतिद्वंद्वी कंपनियों के लोग भी ईर्ष्या करते थे। वे जानते थे कि अगर नेपाल हमें छोड़ देता है तो अप्सरा पर कितना बुरा असर पड़ेगा।’
‘क्या इसका मतलब यह है कि आपका निर्माण कार्य ठप्प हो गया है?’
‘हमें प्रफुल्ला का आखिरी शो रद्द करना पड़ा, जो आज रात के लिए निर्धारित था। इसके बाद हम आलमगीर नामक एक नए नाटक पर काम करने वाले थे। नेपाल को मुख्य भूमिका निभानी थी। अब हम एक नए अभिनेता का ऑडिशन ले रहे हैं। वह नया है, लेकिन उसकी घनी दाढ़ी है और वह इस भूमिका के लिए बिल्कुल उपयुक्त लगता है। उसे मेकअप की बिल्कुल भी जरूरत नहीं पड़ेगी। उसका अभिनय भी बुरा नहीं है। हमें किसी न किसी तरह से काम चलाना ही होगा, है ना?’
अब मुझे अचानक याद आया कि फेलुदा ने हमें क्या लाने के लिए कहा था।
मैंने कहा, 'क्या आपको लगता है कि हमें आपके सभी मुख्य अभिनेताओं के नाम और पते मिल सकते हैं? श्री मिटर शायद उनमें से कुछ से बात करना चाहेंगे।' श्री बनर्जी ने अपने सचिव को फोन किया, जिन्होंने हमें आवश्यक नामों और पतों की एक सूची दी।
‘यह दोस्त कहाँ रहता है? मेरा मतलब है, जिससे वह मिलने जा रहा था? सासाधर चटर्जी, क्या आपने यही कहा था?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘प्रेस रिपोर्ट में इसका जिक्र था। मोती मिस्त्री लेन। वहीं उनकी हत्या हुई थी।’
'धन्यवाद।'
अब और रुकने का कोई फायदा नहीं लग रहा था। हमने नमस्कार किया और विदा ले ली।

पाँच
मोती मिस्त्री गली इतनी संकरी निकली कि हमें अपनी कार मुख्य सड़क पर बाहर खड़ी करनी पड़ी। एक पान की दुकान के मालिक ने हमें बताया कि ससाधर चटर्जी कहाँ रहते हैं। हमने घर ढूँढा और दरवाजा खटखटाया। एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने दरवाजा खोला।
‘जी?’ उसने जिज्ञासा भरी निगाहों से हमारी ओर देखा।
हम ससाधर चटर्जी से मिलना चाहते हैं। क्या वे घर पर हैं?
‘मैं चटर्जी हूँ। मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ?’
लालमोहन बाबू ने एक और कार्ड निकाला और उसे श्री चटर्जी को दे दिया।
‘आप ही तो प्रसिद्ध लेखक लालमोहन गांगुली हैं?’ श्री चटर्जी ने चमकती आंखों से पूछा।
'मुझे नहीं पता कि मैं मशहूर हूं या नहीं, लेकिन हां, मैं लेखक हूं,' लालमोहन बाबू ने असाधारण विनम्रता के साथ जवाब दिया।
‘अरे, मैंने तो आपकी लिखी हर किताब पढ़ी है! लेकिन आप यहाँ क्यों आए हैं?’ मुझे मेरे मित्र प्रदोष मित्र ने यहां भेजा है।
मैं भी उन्हें जानता हूँ। कृपया अंदर आइए।
अंततः हम उनके कमरे में दाखिल हुए। कमरे का अधिकांश हिस्सा एक बड़े पलंग से घिरा हुआ था, लेकिन वहाँ दो कुर्सियाँ भी थीं। लालमोहन बाबू ने उनमें से एक कुर्सी उठाई और कहा, 'हम नेपाल लाहिड़ी की हत्या के संबंध में पूछताछ कर रहे हैं। क्या आप हमें इसके बारे में कुछ बता सकते हैं?'
‘मैं क्या कहूँ? मेरे घर पहुँचने से पहले ही उसकी हत्या कर दी गई। हमारे इलाके के एक लड़के ने आकर मुझे सब कुछ बताया। नेपाल और मैं बाईस साल से दोस्त थे, हालाँकि हम अलग-अलग कंपनियों में काम करते थे।’
क्या उसके कोई दुश्मन थे?
'बेशक, उसने ऐसा किया। वह महत्वपूर्ण और सुस्थापित व्यक्ति था, अप्सरा का सितारा। कई अन्य अभिनेता उससे ईर्ष्या करते थे।'
क्या आप किसी खास व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं?
नहीं, मुझे लगता है ऐसा नहीं है। उन्होंने कभी किसी का नाम नहीं लिया। नेपाल थोड़ा लापरवाह था, उसे दूसरों की बातों या भावनाओं की परवाह नहीं थी। वह जानता था कि वह कितना अच्छा है और उसकी कितनी मांग है। कई प्रतिद्वंद्वी कंपनियों ने उसे लुभावने प्रस्ताव दिए थे, लेकिन उसकी वफादारी अप्सरा के साथ थी। आप जानते हैं, उसने अपने करियर की शुरुआत वहीं से की थी।
‘क्या उसने आपको उन धमकी भरे पत्रों के बारे में बताया जो उसे भेजे गए थे?’ 'हां, लेकिन वह बिल्कुल भी विचलित नहीं दिखे। दरअसल, एक ज्योतिषी ने उन्हें बताया था कि वे बयासी वर्ष की आयु तक जीवित रहेंगे। नेपाल ने उनकी बात पर

विश्वास किया। उन्हें यह भी विश्वास था कि वे उस उम्र तक काम करते रहेंगे और वास्तव में मंच पर ही उनकी मृत्यु होगी।'
श्री चटर्जी ने आह भरी। उन्होंने आगे कहा, 'सच कहूं तो मेरे पास कहने के लिए और कुछ नहीं है। मैं काफी उदास महसूस कर रहा हूं।'
हमें इशारा समझ आ गया और हम उठ खड़े हुए। फिर हमने उन्हें धन्यवाद दिया और चले गए।
इसके बाद हम रिपोर्ट बनाने के लिए सीधे घर लौट आए। फेलुदा लालमोहन बाबू से बहुत खुश लग रहे थे। उन्होंने कहा, 'शाबाश, श्री गांगुली! आपने एक पेशेवर जांचकर्ता की तरह ही कुशलता से काम किया। अब बस अप्सरा के अन्य प्रमुख कलाकारों से पूछताछ करनी बाकी है—वे लोग जो नेपाल लाहिड़ी को अच्छी तरह जानते थे। कुछ लोग शायद ईर्ष्या करते होंगे, लेकिन कुछ उनके करीबी भी रहे होंगे।'
मैंने उससे पूछा, 'तुम्हारा टखना कैसा है?'
'लगभग वैसा ही। मुझे नहीं लगता कि मैं अगले कुछ दिनों तक बाहर जा पाऊँगी। वैसे, जब आप दूसरे अभिनेताओं से बात करें, तो नए अभिनेता को मत भूलना।' नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।
फेलुदा की प्रशंसा सुनकर लालमोहन बाबू बेहद प्रसन्न हुए। उन्होंने खुशी से कहा, 'यह मेरे लिए एक नया अनुभव था। अब मुझे नहीं लगता कि आपका काम उतना कठिन है जितना लगता है।'
नहीं। असली मुश्किल तो सच्चाई तक पहुंचना है।
'हां, यह सच है; और मैं यह दावा बिल्कुल नहीं कर सकता कि कुछ सवाल पूछकर मैं सच्चाई का पता लगा सकता हूं। लेकिन, फेलू बाबू, मैं आपको इतना बता सकता हूं: अगर आप मुझे आज देखते, तो आप भी मुझे पहचान नहीं पाते।'
'वास्तव में?'
'सचमुच। मैं एक अलग ही इंसान था।'
फेलुदा हँसा और विषय बदल दिया। उसने पूछा, 'क्या वे आज सुबह रिहर्सल कर रहे थे?'
‘हां, मुझे ऐसा लगता है। वे जल्द ही आलमगीर का मंचन करने की योजना बना रहे हैं,’ मैंने जवाब दिया।
'ऐसी स्थिति में, जाने से पहले मैनेजर को फोन करके पूछ लें कि सभी से बात करने के लिए कौन सा समय सुविधाजनक रहेगा।'
'अचे से।'
‘क्या आपने वहां पुलिस को देखा?’
नहीं। वहां कोई पुलिसकर्मी नहीं थे।
'शायद वे सादे कपड़ों में थे। मैं इंस्पेक्टर भौमिक को फोन करके पूछूंगा कि वे कितनी दूर तक गए हैं। इस मामले की जिम्मेदारी उन्हीं की होगी।'

छह
इंस्पेक्टर भौमिक से बातचीत में पता चला कि पुलिस को अपराधियों के एक गिरोह पर शक था। बताया जाता है कि नेपाल लाहिड़ी ने एक महंगी घड़ी पहनी हुई थी, जो पुलिस को उसका शव मिलने पर गायब मिली। उसकी हत्या के पीछे साधारण लूटपाट का मकसद हो सकता है।
'क्या आपका मतलब है कि थिएटर और इस हत्या के बीच कोई संबंध नहीं है?' फेलुदा ने पूछा।
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। एक खास गिरोह—जिनमें से ज़्यादातर पूर्व अपराधी हैं—काफ़ी समय से उस इलाके में सक्रिय है। हमें वह चाकू मिल गया है जिससे लाहिड़ी पर हमला किया गया था, लेकिन उस पर कोई उंगलियों के निशान नहीं मिले। हालांकि, हमें पूरा यकीन है कि हम अपराधियों को जल्द ही, शायद दो-तीन दिनों में ही पकड़ लेंगे। श्री मिटर, इस बार हमें आपकी सेवाओं की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।
फेलुदा ने फोन नीचे रख दिया और कहा, 'अभी मैनेजर को फोन करो। हमें उन अभिनेताओं से बात करनी है।'
मुझे कैलाश बनर्जी से तीसरी कोशिश में बात करने का मौका मिला।
श्री बनर्जी ने कहा, ‘पुलिस पहले ही यहां आकर सभी से बात कर चुकी है। लेकिन अगर आपको पूरी प्रक्रिया दोबारा करनी ही है, तो गुरुवार को सुबह साढ़े दस बजे यहां आ जाइए। रिहर्सल ग्यारह बजे शुरू होगी। आपको अपना काम आधे घंटे में खत्म करना होगा।’
रिसीवर वापस रखने के बाद फेलुदा ने मुझसे कहा, 'आपको सिर्फ चार लोगों से बात करनी है। अप्सरा के शीर्ष तीन लोग और नया भर्ती हुआ व्यक्ति।' लालमोहन बाबू और मैं साढ़े दस बजे से कुछ पहले अप्सरा पहुँच गए। आज लालमोहन बाबू पहले से भी ज़्यादा समझदार और आत्मविश्वासी लग रहे थे। उनका पूरा व्यवहार बदल गया था।
जब हमने मैनेजर को बताया कि हम केवल शीर्ष तीन अभिनेताओं और सबसे नए कलाकार से बात करना चाहते हैं, तो उन्होंने कहा, 'ऐसे में, बेहतर होगा कि आप धरानी से शुरुआत करें। धरानी सान्याल। वह हमारे सबसे वरिष्ठ कलाकार हैं। वह छब्बीस वर्षों से हमारे साथ हैं।'
हम प्रबंधक के कमरे से सटे प्रतीक्षालय में बैठे थे। कुछ मिनट बाद धरानी सान्याल अंदर आए। लगभग पचास वर्ष के, उनके बाल शेर की गर्दन के बालों की तरह घने और लंबे थे, और उनकी आँखें कुछ झुकी हुई थीं।
‘मैं धरानी सान्याल हूं,’ उसने कहा। ‘मुझे लगता है आप दोनों जासूस हैं?’
‘जी हां,’ लालमोहन बाबू ने बिना कोई स्पष्टीकरण दिए तुरंत कहा। ‘हम नेपाल लाहिड़ी की मौत की जांच कर रहे हैं।’

धरानी सान्याल ने कहा, ‘नेपाल को अजीबोगरीब गुमनाम चिट्ठियाँ मिल रही थीं। मैंने उसे सावधान रहने को कहा, लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया। पता नहीं उसे मोती मिस्त्री लेन क्यों जाना पड़ा। वह बिल्कुल भी सुरक्षित इलाका नहीं है। अगर वह कुछ दिनों तक अपने दोस्त से नहीं मिलता, तो क्या फर्क पड़ता? मैंने उसे पुलिस को सूचना देने के लिए भी कहा, लेकिन वह बस हँसता रहा। हमारे एक और अभिनेता, महितोष रॉय के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। लेकिन महितोष कोई स्टार नहीं था। उसके गायब होने से कंपनी को कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ।’
‘क्या नेपाल लाहिड़ी के कोई शत्रु थे?’
'बिल्कुल। ईर्ष्या काफी आम है, खासकर अभिनेताओं के बीच। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि मैं नाम बताऊं, या आपको बताऊं कि कौन संदिग्ध हो सकता है, तो मुझे खेद है कि मैं आपकी मदद नहीं कर सकता।'
क्या वह कभी आपके घर आया था?
नहीं। हम यहाँ सप्ताह में तीन बार मिलते थे। मैं उसे इतना अच्छी तरह से नहीं जानता था कि मैं उससे अन्य दिनों में भी मिलना चाहूँ।
‘जब नेपाल लाहिड़ी की हत्या हुई, उस समय आप क्या कर रहे थे?’
मैं अपने मित्र कालीकिंकर घोषाल के घर कीर्तन सत्र में भाग लेने गया था। आप चाहें तो इसकी पुष्टि करवा सकते हैं।
ठीक है। धन्यवाद, अब और कोई प्रश्न नहीं।
धरानी सान्याल चले गए, और उनकी जगह दिपेन बोस ने ले ली: जो सान्याल से थोड़े छोटे थे, क्लीन शेव्ड थे, छोटे घुंघराले बाल थे और होठों से एक सिगरेट लटक रही थी।
उन्होंने कहा, ‘नेपाल और मैं एक साथ इस थिएटर से जुड़े थे। मैं भी उनकी तरह महत्वाकांक्षी था, लेकिन उतना प्रतिभाशाली नहीं था। नेपाल में वाकई प्रतिभा थी।’
क्या तुम्हें उससे ईर्ष्या थी?
'हां, अक्सर। मैं अक्सर सोचता था कि कितना अच्छा होता अगर नेपाल मेरे रास्ते से हट जाता। वही मेरी स्टारडम की राह में एकमात्र बाधा था।'
‘आप बहुत ईमानदार हैं, श्री बोस। क्या आपने कभी अपने विचारों पर अमल करने के बारे में नहीं सोचा?’
'अरे नहीं। मैं एक बहुत ही साधारण आदमी हूँ, और मुझे अपने परिवार की चिंता है। हत्या की योजना बनाना और उसे अंजाम देना ऐसा काम है जो मैं कभी नहीं करूँगा, सिवाय शायद मंच पर। नाटकों में अभिनय करने के कारण मुझे नाटकीय विचार आ सकते हैं, लेकिन उन्हें वास्तविक जीवन में अंजाम देना? नहीं, जनाब, मैं नहीं!'
‘जिस शाम श्री लाहिड़ी की हत्या हुई, उस शाम आप कहाँ थे?’
‘सिनेमाघर में। लेकिन मैं इसे साबित नहीं कर सकता। मैं पुराने टिकट कभी नहीं रखता।’
आपने कौन सी फिल्म देखी?
‘दिलकश’।
'यह कैसा था?'

'भयंकर।'
‘ठीक है, अब आप जा सकते हैं।’
तीसरे अभिनेता का नाम भुजंगा राय था। वे पचास से कुछ अधिक उम्र के प्रतीत होते थे, उनकी आंखें धंसी हुई थीं, गाल पिचके हुए थे, नाक टेढ़ी थी और बाल पतले थे।
‘नेपाल लाहिड़ी के साथ आपका कैसा अनुभव रहा?’ लालमोहन बाबू ने उनसे पूछा। ‘अप्सरा में नेपाल मेरा सबसे अच्छा और करीबी दोस्त था।’
‘क्या आप उनकी मृत्यु के बारे में कुछ कहना चाहेंगे?’
‘यह कई वर्षों में हुई सबसे बड़ी त्रासदी है जिसने न केवल अप्सरा को बल्कि पूरे रंगमंच को झकझोर दिया है। नेपाल एक असाधारण अभिनेता थे। हमारा कभी टकराव नहीं हुआ, क्योंकि वह हमेशा मुख्य भूमिका निभाते थे और मैं छोटी भूमिकाएँ करती थी।’
क्या आपको पता था कि उसे धमकियां मिल रही थीं?
हां, उसने मुझे पहली बार पकड़े जाने पर बताया था। मैंने उसे तुरंत चेतावनी दी थी कि इसे हल्के में न ले और मोती मिस्त्री लेन जाना बंद कर दे। वह इलाका अपराधियों से भरा पड़ा है। लेकिन नेपाल ने पूरी बात को नजरअंदाज करने का फैसला किया। उसे पूरा यकीन था कि वह बयासी साल तक जिएगा।
'क्या इसका मतलब यह है कि आपको लगता है कि उसकी हत्या एक साधारण हथियारबंद लुटेरे ने की थी?'
‘और भला कोई क्या सोचेगा? उसकी घड़ी गायब थी, है ना? वह ओमेगा कंपनी की थी, जिसकी कीमत कम से कम सात हजार थी।’
हमें उनसे और कोई सवाल नहीं पूछना था। भुजंगा राय ने हमें धन्यवाद दिया और चले गए।
इसके बाद नए अभिनेता सुधेंदु चक्रवर्ती आए। उन्हें देखकर मैं थोड़ा चौंक गया, क्योंकि घनी दाढ़ी और मूंछों के साथ वे ऐसे लग रहे थे मानो किसी किरदार के लिए तैयार होकर मंच पर जाने वाले हों। उन्होंने बताया कि जैसे ही उन्हें पता चला कि अप्सरा 'अलमगीर' का निर्माण करने जा रही है, उन्होंने दाढ़ी बढ़ाना शुरू कर दिया था। इससे पहले उनकी सिर्फ मूंछें थीं।
‘अप्सरा में शामिल होने से पहले आप कहाँ थे?’ लालमोहन बाबू ने उनसे पूछा। ‘कहीं नहीं। मेरा मतलब है, मैं पेशेवर अभिनेता नहीं था। मैं कभी-कभार निजी क्लबों के नाटकों में छोटी-मोटी भूमिकाएँ कर लेता था, बस इतना ही। लेकिन हालाँकि मैं प्लाईवुड बेचने का एक छोटा-मोटा व्यवसाय चलाता हूँ, अभिनय हमेशा से मेरा जुनून रहा है। सालों तक, मैं शीशे के सामने खड़ा होकर अलग-अलग नाटकों के विभिन्न किरदारों को निभाता था, संवादों को तब तक याद करता था जब तक कि मुझे शब्द-दर-शब्द याद न हो जाए। अब मुझे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन जुनून अभी भी बरकरार है।’
‘क्या आपको आलमगीर में कोई भूमिका मिली है?’
'मुझे एक भूमिका का वादा किया गया है, हाँ। यह मुख्य भूमिका भी हो सकती है। अभी कुछ भी तय नहीं हुआ है।'
'आप कहाँ रहते हैं?'
‘एमहर्स्ट रो।’

‘आपके व्यवसाय का क्या होगा?’
मैं इसे छोड़ दूंगा। मैं इसे सिर्फ इसलिए कर रहा था क्योंकि मुझे कोई अच्छा मौका नहीं मिला था। अब मैं पूर्णकालिक अभिनेता बन सकता हूं।'
अब सिर्फ एक ही सवाल पूछना बाकी था। 'क्या आप नेपाल लाहिड़ी को जान पाए?' 'थोड़ा-बहुत ही। लेकिन मैंने उनकी एक्टिंग पहले भी कई बार देखी थी। मैं उनकी बहुत प्रशंसा करता था।'

सात
फेलुदा ने हमारी रिपोर्ट ध्यान से सुनी। फिर उन्होंने कहा, 'मैं देख सकता हूँ कि आपने मेरे बिना भी काफी अच्छा काम संभाला है।'
‘सवाल पूछना तो आसान है,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि जवाबों का मतलब क्या निकलता है। सच कहूँ तो, मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा। अगर लाहिड़ी की हत्या किसी हथियारबंद लुटेरे ने की है, तो पुलिस उसे ज़रूर पकड़ लेगी। इसमें रहस्य क्या है?’
'कोई भी आम लुटेरा किसी गली में किसी व्यक्ति की हत्या करने से पहले गुमनाम नोट नहीं भेजेगा।'
'जी हां, मुझे लगता है यह सच है। क्या आपको लगता है कि महितोष रॉय और लाहिड़ी दोनों की हत्या एक ही व्यक्ति ने की थी?'
'हां, या तो वही व्यक्ति, या एक ही गिरोह के दो अलग-अलग लोग।'
‘हां, लेकिन मकसद—?’
‘हो सकता है कि किसी अन्य थिएटर कंपनी ने इन दोनों व्यक्तियों की हत्या करवाई हो। अप्सरा को अपने दो मुख्य अभिनेताओं की जगह नए अभिनेता लाने और खुद को फिर से स्थापित करने में काफी समय लगेगा। प्रतिद्वंद्वी कंपनी को उनके इस नुकसान से आसानी से फायदा हो सकता है।’
फेलुदा के पैर में अभी भी दर्द था। शायद उसे एक्स-रे करवाना पड़ेगा। उसने अपना घायल पैर एक कॉफी टेबल पर रखा, सोफे पर पीछे की ओर झुक गया और बोला, 'आज आपने बहुत काम किया है। अब मुझे भी अपना काम करने दीजिए।'
'आप क्या करने जा रहे हैं?'
'सोचो। एक हल्की सी उम्मीद की किरण है, लेकिन उसे और तेज करने की जरूरत है... इसलिए मुझे सोचना होगा।'
‘बहुत खूब, फेलू बाबू। आप जितना चाहें सोच लीजिए। मैं यहाँ चुपचाप बैठकर एक कप चाय पीता हूँ। तपेश, क्या आप जाकर श्रीनाथ को बता सकते हैं?’
श्रीनाथ को हमारे लिए एक नई चाय बनाने के लिए कहकर जब मैं वापस लौटा, तो मैंने देखा कि फेलुदा frowning कर रहे थे और उनकी आँखें बंद थीं। क्या वे घर से बाहर निकले बिना ही रहस्य सुलझाने वाले थे?
कुछ देर बाद, उन्होंने अचानक पूछा, 'क्या इनमें से किसी अभिनेता को किसी भी प्रकार की लत थी? उदाहरण के लिए, क्या उनमें से कोई धूम्रपान करता था?' 'हाँ, दीपेन बोस ने किया। मुझे लगता है, भुजंगा रे नसवार लेते हैं; और सुधेन्दु चक्रवर्ती सुपारी चबा रहे थे।'
'अच्छा ऐसा है।'
फिर सन्नाटा छा गया। जब श्रीनाथ चाय लेकर आया, तो लालमोहन बाबू ने अपने लिए एक कप चाय डाली और बड़े चाव से उसे पीने लगे। मैंने एक पत्रिका उठाई और

उसके पन्ने पलटने लगा। फेलुदा को हर महीने ढेरों पत्रिकाएँ मिलती थीं, जिनमें से कुछ सीधे कूड़ेदान में चली जाती थीं।
पांच मिनट तक सन्नाटा छाया रहा। फिर फेलुदा ने अपनी आँखें खोलीं। वे उत्साह से चमक रही थीं।
‘लालमोहन बाबू!’ उसने धीमी आवाज में पुकारा।
'जी श्रीमान?'
‘यह सुधेंदु चक्रवर्ती, जो नवागंतुक है... क्या वह मध्यम कद का था?’
'हाँ।'
और उनका रंग साफ था?
'हाँ।'
‘क्या आपकी उम्र चालीस से पैंतालीस के बीच है?’
‘अरे हाँ! ये क्या है, फेलू बाबू? क्या आप इस आदमी को जानते हैं?’
‘सिर्फ मैं ही नहीं, आप भी उसे जानते हैं।’
'आपका क्या मतलब है?'
मुझे लगता है मुझे मिल गया है... लेकिन पहले मुझे इंस्पेक्टर भौमिक को फोन करने दीजिए।'
मैंने नंबर डायल किया और रिसीवर उसे थमा दिया।
‘इंस्पेक्टर भौमिक?’ मैंने उन्हें कहते सुना। ‘मैं प्रदोष मित्र हूँ। देखिए, बात अप्सरा थिएटर के उन अभिनेताओं की है। मैंने अभी-अभी पता लगाया है कि नेपाल लाहिड़ी का हत्यारा कौन है। नहीं, वह आपके पूर्व कैदियों में से कोई नहीं है। मैं आपको सब कुछ बता दूँगा, लेकिन मुझे खेद है कि आपको मेरे पास आना पड़ेगा। मैं अभी भी चलने-फिरने में असमर्थ हूँ। जी हाँ, आप एक घंटे में आ सकते हैं, ठीक रहेगा। फिर मिलते हैं।’
उसने रिसीवर नीचे रख दिया और पाया कि लालमोहन बाबू और मैं उसे हैरानी से देख रहे थे।
‘ठीक है, मैं अब आपको और सस्पेंस में नहीं रखूंगा,’ उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। ‘आप यह जानने के लिए बेताब हैं कि यह किसने किया, है ना? यह सारा मामला एक तरफ तो हास्यास्पद रूप से सरल था, दूसरी तरफ बेहद जटिल। हत्यारे को सलाम... उसने तो फेलू मित्तर को भी कुछ देर के लिए पूरी तरह से हैरान कर दिया था। उसका मकसद ईर्ष्या था, शुद्ध ईर्ष्या... और कुछ नहीं। नेपाल लाहिड़ी को हटाना जरूरी था, ताकि कोई और उसकी जगह ले सके।’
'महितोष रॉय के बारे में क्या? वह कोई महान स्टार तो थे ही नहीं।'
‘इसीलिए उसे मारा नहीं गया।’
'क्या!'
'जी हां, महितोष रॉय की मौत नहीं हुई। वह बस गायब हो गया, ताकि वह पर्दे के पीछे से पूरी साजिश रच सके। उसने मुझे यहां जो कुछ बताया—धमकियां मिलने और फिर अचानक गायब हो जाने के बारे में—वह सब एक योजना का हिस्सा था। यह सब सिर्फ यह दिखाने के लिए किया गया था कि उसकी हत्या कर दी गई है। असल में वह अभी भी जीवित है, एक नए पते पर रह रहा है और उसने अपना नाम भी बदल लिया है। उस पीतल के डिब्बे को घास में इसलिए गिराया गया ताकि वह मिल जाए, और

हमने मान लिया कि उस पर हमला किया गया, उसकी हत्या कर दी गई और उसके शरीर को झील में फेंक दिया गया।'
‘उस आदमी का दिमाग कितना तेज है!’
दाढ़ी बढ़ाने में उसे तीन महीने लग गए। फिर वह अप्सरा के पास लौटा, और बोलते समय अपनी आवाज़ बदलने का खास ध्यान रखता था। दरअसल, दाढ़ी किसी के रूप-रंग को पूरी तरह बदल देती है। वह जानता था कि महितोष रॉय की जगह भरने में उसे कोई कठिनाई नहीं होगी। अप्सरा एक नए चेहरे की तलाश में थी। ‘Sudhendu Chakravarty!’
‘बिल्कुल सही। एक ही चीज़ जो वो नहीं छोड़ पाया, और थी सुपारी चबाने की उसकी आदत, लेकिन उसे पता होना चाहिए था कि तुम्हारे सामने सुपारी चबाना ठीक नहीं है। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि अगर तुम दोनों ने मेरी मदद न की होती, तो उसकी बुरी योजनाएँ कामयाब हो जातीं। उस आदमी की महत्वाकांक्षा ने उसे बेरहम हत्यारा बना दिया है। उसने नेपाल लाहिड़ी की घड़ी सिर्फ़ हमें धोखा देने के लिए चुराई थी। लेकिन उसे पता नहीं था कि उसका सामना फेलू मित्तर और उसकी टीम से होगा, है ना? अब उसे मेरे पास आने का पछतावा होगा!’ फेलुदा बिल्कुल सही था। इंस्पेक्टर भौमिक ने अगली सुबह हमें फोन करके फेलुदा द्वारा बताई गई हर बात की पुष्टि की।
लालमोहन बाबू मुझे एक तरफ ले गए और मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा: 'अब मुझे पता चल गया है कि तुम्हारे चचेरे भाई और मुझमें क्या अंतर है।' 'कहाँ?'
उसने उंगली से अपने सिर पर थपथपाया और उदास होकर कहा, 'अंदर!'

स्वर्ग में खतरा

एक
लालमोहन बाबू ने मुट्ठी भर स्वादिष्ट चना लेते हुए और गरमा गरम चाय पीते हुए पूछा, 'इस साल हम कहाँ जा रहे हैं? यहाँ कोलकाता में इतनी भीषण गर्मी पड़ रही है कि मुझे लगता है हमें कहीं भाग जाना चाहिए!'
‘आप कहां भागकर जाना चाहेंगे?’ फेलुदा ने पूछा। ‘आप ही तो यात्रा के इतने शौकीन हैं। मैं तो पूरे साल कोलकाता में ही खुशी-खुशी रह सकता हूँ।’
‘आप इस समय किसी मामले पर काम तो नहीं कर रहे हैं?’
'नहीं।'
तो चलिए, यहाँ से चलते हैं।
'हां, लेकिन कहां?'
‘स्वाभाविक रूप से, पहाड़ियों की ओर। मेरा मतलब है पर्वत... और इसका मतलब है हिमालय। मैं विंध्याचल या पश्चिमी घाट को पर्वत नहीं मानता। मैं, फेलू बाबू, जहाँ जाना चाहता हूँ, वहाँ हर कोई जाना चाहता है। कुछ लोग कहते हैं कि अगर आपने यह जगह नहीं देखी तो आपका पूरा जीवन व्यर्थ है।’
'कहाँ है?'
‘इतने सारे संकेतों के बाद भी क्या तुम अनुमान नहीं लगा पाए?’
‘धरती पर स्वर्ग?’
‘बिल्कुल। कश्मीर। क्यों न हम वहाँ चलें, फेलू बाबू? हम दोनों ने काफी पैसा कमा लिया है, है ना? आपका कोई परिवार नहीं है, मेरा भी नहीं। तो क्यों न हम जब भी मौका मिले, घूमने चलें और मज़े करें? हाँ कह दीजिए। हम यहाँ से दिल्ली जा सकते हैं, फिर वहाँ से श्रीनगर के लिए विमान ले सकते हैं।’ ‘श्रीनगर ही एकमात्र दर्शनीय स्थल नहीं है। पहलगाम, गुलमर्ग, खिलनमर्ग भी हैं—’
ठीक है, ठीक है, हम देखने लायक सब कुछ देखेंगे। चलिए कश्मीर में कुछ सप्ताह बिताते हैं, क्या कहते हैं? यात्रा किए बिना मुझे कहानी सूझती नहीं। मुझे दुर्गा पूजा से पहले एक नया उपन्यास लिखना है, यह मत भूलना।
‘इस बात की आपको चिंता नहीं करनी चाहिए। वही करो जो बाकी सब कर रहे हैं— विदेशी थ्रिलर फिल्मों से विचार और घटनाएं चुरा लो।’
'कभी नहीं। अगर मैंने ऐसा किया तो तुम सबसे पहले मेरा मजाक उड़ाओगे। इनकार मत करो, फेलू बाबू, तुम जानते हो कि तुम ऐसा ही करोगे। तुम्हारे ताने चाकू से भी तेज हैं।'
'ठीक है, तो क्या हम हाउस बोट में रुकें?'
‘श्रीनगर में?’
‘आप कहीं और हाउसबोट में नहीं रह सकते। हम डल झील पर एक ले सकते हैं। लेकिन यह महंगा होगा, मैं आपको पहले ही बता दूं।’
‘किसे परवाह है? चलो बस थोड़ा मज़ा करते हैं।’

‘ठीक है, हम श्रीनगर में हाउसबोट में, पहलगाम में टेंट में और गुलमर्ग में लकड़ी के केबिन में रुकेंगे।’
'उत्कृष्ट!'
कश्मीर जाने का विचार फेलुदा को स्पष्ट रूप से पसंद आया था। लालमोहन बाबू के जाने के बाद वह पर्यटन कार्यालय गया और कई पर्चे लेकर वापस आया। उन्होंने कहा, 'चूंकि हमने वहां जाने का फैसला कर लिया है, तो समय बर्बाद न करें। आज सोमवार है, है ना? हम शनिवार को निकल सकते हैं।'
कश्मीर में ठंड होगी, है ना?
'हां, इसलिए हमें इसके लिए पर्याप्त तैयारी करनी चाहिए। लालमोहन बाबू को चेतावनी देनी चाहिए—उन्हें हम दोनों से कहीं ज्यादा ठंड लगेगी!'
हमारे गर्म कपड़े ड्राई क्लीनर से मंगवा लिए गए। हमने पहला हफ्ता श्रीनगर में बिताने का फैसला किया। पर्यटन विभाग ने हमारे लिए एक हाउसबोट बुक कर दी थी। यह पूरे परिवार के लिए काफी बड़ी थी, इसलिए हमारे लिए एकदम सही थी। मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि एक आलीशान नाव में रहना कैसा लगेगा। शायद यह वैसी ही होगी जैसी बंगाल में जमींदार कई साल पहले 'बौजरा' या मनोरंजन नौकाएँ इस्तेमाल करते थे। मैंने पर्चों में देखा कि वे छोटी-छोटी झोपड़ियों जैसी दिखती थीं। झील के एक छोर से दूसरे छोर तक लोगों को ले जाने वाली छोटी नावों की तस्वीरें भी थीं। हाउसबोट एक ही जगह खड़ी रहीं। श्रीनगर में देखने लायक बहुत कुछ है! मैंने सारी किताबें पढ़कर फेलुदा से कहा। “देखो, वहाँ मुगल उद्यान हैं, झेलम नदी है, झीलें हैं, चिनार के पेड़ हैं, यूकेलिप्टस हैं और चिनार के पेड़ों की कतारें हैं... क्या तुमने ये तस्वीरें देखी हैं, फेलुदा? ये सचमुच बहुत सुंदर है, और पहलगाम और गुलमर्ग भी। अगर हम ग्यारह हजार फीट ऊँचे खिलनमर्ग तक चढ़ जाएँ, तो मुझे लगता है कि वहाँ से नंगा पर्वत का अद्भुत नज़ारा दिखेगा। क्या हम दो हफ्तों में सब कुछ देख सकते हैं?”
‘ओह हाँ!’ फेलुदा हँस पड़ा।
अगले शनिवार को, योजना के अनुसार, हम हवाई जहाज से रवाना हुए। इस बार हमें अलग-अलग पंक्तियों में सीटें दी गईं। मैंने लालमोहन बाबू को अपने बगल में बैठे सज्जन से उत्साहपूर्वक बातें करते देखा।
दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुँचते ही मैंने उत्सुकता से उससे पूछा, 'वह आदमी कौन था?'
‘उनका नाम सुशांत सोम है। वे एक सचिव के रूप में काम करते हैं। उनके बॉस एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश हैं। वे दोनों कुछ अन्य लोगों के साथ श्रीनगर जा रहे हैं और एक हाउसबोट में ठहरेंगे। उन्होंने आपके चचेरे भाई को पहचान लिया और मुझसे पूछा कि क्या हम किसी मामले पर काम कर रहे हैं। मेरा मन हुआ कि मैं कह दूं कि हम कर रहे हैं, लेकिन फिर मैंने अपना इरादा बदल दिया और उन्हें सच बता दिया।’
श्रीनगर जाने वाली हमारी फ्लाइट में अभी तीन घंटे बाकी थे। इसलिए हम चाय पीने के लिए रेस्टोरेंट चले गए। वहीं हमारी मुलाकात श्री सोम से हुई। हमें देखकर वे मुस्कुराए और हमारी मेज की ओर बढ़े। उन्होंने फेलुदा से हाथ मिलाते हुए कहा, 'मेरा नाम सुशांत सोम है। आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई।

आप जानते ही हैं, मैं आपका एक बड़ा प्रशंसक हूं। मुझे यकीन है कि मेरे बॉस भी आपसे मिलना चाहेंगे।'
चार और लोग अभी-अभी रेस्तरां में दाखिल हुए थे। श्री सोम इस समूह के पास गए और उनमें से सबसे बुजुर्ग व्यक्ति से कुछ फुसफुसाए। उस बुजुर्ग सज्जन ने हमारी ओर एक नज़र डाली और फिर आगे बढ़ गए। फेलुदा खड़े हो गए।
‘कृपया, कृपया, उठने की कोई आवश्यकता नहीं है,’ उस सज्जन ने कहा। ‘मैं सिद्धेश्वर मल्लिक हूँ। मैंने अपना लगभग पूरा जीवन अपराध से निपटने में बिताया है, लेकिन यह पहली बार है जब मेरा सामना किसी वास्तविक निजी जासूस से हुआ है!’
‘अपराध से निपटना? आपका मतलब—?’
‘मैं पहले जज हुआ करता था। मैंने कई लोगों को फांसी पर चढ़ाया है। अब मैं रिटायर हो चुका हूं। मेरी सेहत पहले जैसी नहीं रही और मुझे अपने साथ डॉक्टर लेकर चलना पड़ता है। लेकिन इस बार मेरे साथ मेरा बेटा, एक वेटर और मेरा सेक्रेटरी भी हैं। सुशांत बहुत ही कुशल व्यक्ति है। मुझे सच में नहीं पता कि उसके बिना मैं क्या करूंगा।’
क्या आप श्रीनगर में ही रुकेंगे?
'हां, लेकिन हम कुछ और जगहों पर भी घूमना चाहेंगे।'
‘हमारी भी ऐसी ही योजना है। क्या आप हाउस बोट से जाने वाले हैं?’
जी हाँ। मैं 1964 में ऐसे ही एक होटल में रुका था; यह एक अनोखा अनुभव है। उह... मैंने आपका नाम ठीक से नहीं सुना?...' श्री मल्लिक ने लालमोहन बाबू की ओर जिज्ञासा भरी नज़रों से देखा।
उन्होंने जवाब दिया, 'लालमोहन गांगुली। एक तरह से मैं भी अपराध से जुड़ा हुआ हूं। मैं थ्रिलर लिखता हूं।'
‘सच में? तो फिर यहाँ सिर्फ एक अपराधी की कमी है! बहुत अच्छा, हम श्रीनगर में फिर मिलेंगे।’

दो
हवाई जहाज से उतरते ही श्रीनगर का जो नज़ारा मेरी आँखों के सामने आया, वह उससे बिल्कुल अलग था। दोनों ही खूबसूरत थे, लेकिन अलग-अलग मायनों में। यह बात भी तुरंत स्पष्ट हो गई कि श्रीनगर दार्जिलिंग, शिमला या काठमांडू जैसा नहीं था, जिन्हें मैंने पहले देखा था। शहर की ओर जाते समय जब मैंने झील और झेलम नदी देखी, तब मुझे एहसास हुआ कि श्रीनगर अपनी भौगोलिक स्थिति और सुंदरता दोनों में कितना अनूठा है।
हमारा गंतव्य बुलेवार्ड था, जो डल झील के दक्षिणी किनारे से होकर गुजरता था। पानी तक जाने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियाँ थीं, जहाँ शिकारा नामक छोटी नावें यात्रियों को ले जाने के लिए इंतज़ार कर रही थीं। जिस प्रकार वेनिस अपनी गोंडोला नावों के लिए प्रसिद्ध है, उसी प्रकार श्रीनगर अपने शिकारा के लिए प्रसिद्ध है। हमारी हाउसबोट का नाम 'द वॉटर लिली' था। हमें वहाँ तक ले जाने के लिए एक विशेष शिकारा इंतज़ार कर रही थी। हम अपना सामान लेकर उसमें चढ़ गए। पचास गज की दूरी पर कई हाउसबोट एक कतार में खड़ी थीं। फिर झील काफी चौड़ी हो गई और मुझे कोई और हाउसबोट दिखाई नहीं दी। वे सभी झील के पश्चिमी किनारे पर खड़ी थीं।
शिकारा से नाव तक चढ़ना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था। कमरों के सामने एक खुला क्षेत्र था। वहाँ बैठकर या ऊपर वाले डेक पर जाकर आसपास के नज़ारों का बेहतर दृश्य देखा जा सकता था। नाव में प्रवेश करते ही सबसे पहला कमरा बैठक कक्ष था। यह फूलों के गुलदस्ते, दीवारों पर लगी पेंटिंग्स और एक छोटी लाइब्रेरी से सुसज्जित था। इसके पीछे भोजन कक्ष, दो शयनकक्ष और एक स्नानघर था। रसोई एक छोटी नाव में थी, जो नाव के पिछले हिस्से से जुड़ी हुई थी। संक्षेप में, झील पर यह हर वह सुविधा प्रदान करती थी जो शहर के किसी निजी बंगले में मिल सकती है।
‘इसके लिए आपको मुझे धन्यवाद देना चाहिए!’ लालमोहन बाबू ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा। ‘यहाँ आने का विचार वास्तव में मेरा ही था, है ना?’
“ज़रूर। आप लेखक हैं, लालमोहन बाबू। सभी अच्छे विचार तो आप ही से आने चाहिए। चलिए, एक कप चाय पीते हैं और फिर अपने शिकारा में सैर करने चलते हैं।”
हाउस बोट में हमारी देखभाल के लिए दो भारवाहक थे। उनके नाम महमूदिया और अब्दुल्ला थे।
जब तक हमने चाय खत्म की और शिकारा में बैठे, सूरज डूबने ही वाला था। मई का महीना होने के बावजूद काफी ठंड थी। बाहर जाते समय हमें गर्म कपड़े पहनने पड़े। फेलुदा ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि झील के भ्रमण के अलावा हमारे पास किसी और चीज़ के लिए समय होगा। हम कल से ही दर्शनीय स्थलों की सैर शुरू करेंगे। बुलेवार्ड के पीछे वह पहाड़ी देखी? उसकी ऊंचाई 1000 फीट है। उसके

शिखर पर एक मंदिर है - शंकराचार्य का मंदिर। कहा जाता है कि इसे सम्राट अशोक के पुत्र ने बनवाया था। झील के पूर्व में मुगल उद्यान हैं। हमें निषाद बाग, शालीमार और चश्मा शाही जरूर देखना चाहिए। मेरा मानना है कि चश्मा शाही में एक झरना है। कहा जाता है कि उसका पानी अमृत के समान है, स्वाद में भी और भूख बढ़ाने में भी।'
मैंने पूछा, 'झील के बीचोंबीच वह छोटा सा द्वीप क्या है?'
इसे चार चिनार कहते हैं। इस पर चार चिनार के पेड़ हैं, हर कोने में एक। महमूदिया और अब्दुल्ला ने नाव चलाना शुरू किया। हम बाईं ओर लगभग दस हाउसबोटों को पार करते हुए जल्द ही उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ झील चौड़ी हो जाती थी। सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री मल्लिक और उनकी टीम ने दो हाउसबोट ले रखी थीं। श्री सुशांत सोम ने इनमें से एक हाउसबोट के निचले डेक से हाथ हिलाया और चिल्लाकर कहा: 'वापस आते समय चाय पीने के लिए ज़रूर रुकिएगा!' जब मैंने झील को ध्यान से देखा, तो मैं दंग रह गया। उसकी सुंदरता का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। उसका पानी क्रिस्टल की तरह साफ था। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी, इसलिए दर्पण की तरह उसकी सतह पर पहाड़ों का प्रतिबिंब दिख रहा था। चारों ओर कमल खिले हुए थे। हमारी शिकारा उनके बीच से गुजरी। लालमोहन बाबू भावुक होकर पहले कविता सुनाने लगे, फिर अचानक रुक गए और गुनगुनाने लगे। जब मैंने उनसे पूछा कि वे क्या गा रहे हैं, तो उन्होंने जवाब दिया, 'एक उर्दू ग़ज़ल।' मुझे अपनी मुस्कान छिपाने के लिए अपना चेहरा दूसरी तरफ करना पड़ा।
सूरज डूब चुका था, लेकिन साल के इस समय में काफी देर तक उजाला रहता है। जब हमने वापसी की यात्रा शुरू की, तब लगभग साढ़े सात बज रहे थे; लेकिन अभी पूरी तरह अंधेरा नहीं हुआ था।
सुशांत सोम अभी भी अपनी हाउस बोट, जिसका नाम रोज़मेरी था, के डेक पर खड़े थे। उन्होंने फिर से हाथ हिलाया। हमने अपनी शिकारा रोकी और ऊपर चढ़ गए। श्री सोम ने कहा, 'स्वागत है! चलिए चाय पीते हैं।'
श्री सोम इस नाव में श्री मल्लिक के पुत्र विजय के साथ सवार थे। वृद्ध श्री मल्लिक, उनके चिकित्सक हरिनाथ मजूमदार और उनके सहायक प्रयाग अगली नाव में थे, जिसका नाम मिरांडा था।
चाय का ऑर्डर देने के बाद हम सबसे ऊपरी डेक पर चढ़ गए।
‘क्या आप ताश खेलने में अच्छे हैं? पोकर या रमी?’ श्री सोम ने फेलुदा से पूछा।
मैंने काफी समय से खेला नहीं है। लेकिन हां, मैं ज्यादातर खेल खेल सकता हूं। आप क्यों पूछ रहे हैं?
'लोग नीचे, बैठक कक्ष में जमकर काम कर रहे हैं।'
'लोग?'
'दिल्ली से आ रहे विमान में विजय की मुलाकात दो अन्य व्यक्तियों से हुई। उनमें से एक का नाम सरकार है। मुझे दूसरे व्यक्ति का नाम नहीं पता। तीनों जुआरी हैं।'
हमें आरामदायक कुर्सियाँ दी गईं। फिर भी मुझे सब कुछ समझना मुश्किल लग रहा था। कलकत्ता मानो दूर कहीं गायब हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी

दूसरे ग्रह पर हूँ। हमारे दाहिनी ओर वाली नाव में कुछ विदेशी पर्यटक आ गए थे। खुली खिड़की से मैं पुरुषों और महिलाओं को पश्चिमी संगीत पर नाचते हुए देख सकता था।
फेलुदा ने श्री सोम की ओर मुड़कर पूछा, 'श्री मल्लिक कितने समय पहले सेवानिवृत्त हुए थे?'
'पांच साल पहले, जब वह साठ वर्ष के हुए थे।'
लेकिन जजों को साठ साल की उम्र में रिटायर होना जरूरी नहीं है, है ना? नहीं, लेकिन उनकी सेहत कुछ ठीक नहीं थी। उन्हें एंजाइना की बीमारी है। वे वास्तव में रिटायर नहीं होना चाहते थे, लेकिन उनके डॉक्टर ने बहुत ज़ोर दिया। दरअसल, उनकी यह बीमारी किसी मनोवैज्ञानिक दुविधा का परिणाम हो सकती है।
‘आपका क्या मतलब है?’
उन्होंने कई लोगों को मौत की सजा सुनाई है। कभी-कभी वे मुझसे कहते हैं, "बुढ़ापे में मुझे इसका हिसाब चुकाना पड़ेगा।" मेरा मानना है कि अगर किसी को पता हो कि उसने किसी की जान ली है—भले ही वह कानून और न्याय के हित में ही क्यों न हो—तो उसके मन पर असर पड़ना लाज़मी है। वे डायरी लिखते थे। अब मेरे पास उनकी सारी डायरियाँ हैं, क्योंकि मैं उनके जीवन की कहानी लिख रहा हूँ, हालाँकि यह आत्मकथा के रूप में प्रकाशित होगी। हर बार जब वे किसी को मौत की सजा सुनाते थे, तो अपनी डायरी में उस तारीख के आगे एक लाल क्रॉस का निशान लगा देते थे। कभी-कभी इन क्रॉस के साथ एक प्रश्नचिह्न भी होता था। इससे पता चलता है कि उन्हें हमेशा यह यकीन नहीं होता था कि उन्होंने सही काम किया है। क्या आप जानते हैं कि वे आजकल क्या कर रहे हैं? उनके डॉक्टर— डॉ. मजूमदार—एक अच्छे माध्यम हैं। श्री मल्लिक उनका इस्तेमाल उन लोगों की आत्माओं से बात करने के लिए करते हैं जिन्हें उन्होंने मौत की सजा सुनाई थी, और उनसे पूछते हैं कि क्या उन्होंने सचमुच हत्या की थी। अगर वे हाँ कहते हैं, तो श्री मल्लिक को तसल्ली मिलती है। अब तक किसी ने भी उनके फैसले पर सवाल नहीं उठाया है।
'सच में? क्या आप श्रीनगर में आत्माओं को बुलाने का अनुष्ठान करने जा रहे हैं?'
नहीं, शायद अभी तुरंत नहीं। लेकिन वे एक-दो दिन में शुरू कर देंगे। क्या आप इच्छुक हैं?
'मैं बिल्कुल हूँ,' फेलुदा ने उत्तर दिया, 'लेकिन मेरी उपस्थिति का स्वागत होगा या नहीं, यह एक अलग बात है।'
मैं उनसे पूछ सकता हूँ। मुझे नहीं लगता कि वे मना करेंगे, क्योंकि वे आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए थे। इसके अलावा, उनके प्रेतात्माओं से संपर्क करने के सत्र कोई रहस्य नहीं हैं। जो कुछ भी पता चलेगा, वह किताब में दर्ज किया जाएगा। मैं हर छोटी से छोटी बात का रिकॉर्ड रख रहा हूँ।
‘ऐसी स्थिति में, अगर आप उनसे मेरे बारे में पूछ लें तो मुझे खुशी होगी।’ 'निश्चित रूप से।'

हमने अपनी चाय खत्म की, कुछ और मिनट बातें कीं, फिर वाटर लिली लौट आए। लालमोहन बाबू सोफे पर बैठ गए और बोले, 'ये जज साहब तो बड़े ही दिलचस्प आदमी हैं।'
'सच है,' फेलुदा ने सहमति जताते हुए कहा, 'लेकिन वह इस तरह की प्रतिक्रिया देने वाले पहले न्यायाधीश नहीं हैं। मैंने यहां और विदेश में भी ऐसे कई मामले पढ़े हैं, जहां पूर्व न्यायाधीशों ने अपने ही फैसलों पर सवाल उठाए हैं।'
‘ठीक है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि जब आप फेलू बाबू से अनुमति लेंगे, तो आप मुझे भी शामिल करना याद रखेंगे। मैंने कभी भी आत्माओं को बुलाने का अनुष्ठान नहीं देखा है। मैं इस अवसर को गंवाना नहीं चाहता!’

तीन
अगले चार दिन जल्दी बीत गए। हमने श्रीनगर के कई दर्शनीय स्थल देखे। लालमोहन बाबू, जो अपने साथ हॉटशॉट कैमरा लाए थे, लगभग हर चीज़ की तस्वीरें खींचने लगे। फिर उन्होंने अपनी खाली रील को महाट्टा एंड कंपनी की स्थानीय शाखा में ले जाकर उसे डेवलप करवाया। मुझे मानना पड़ेगा कि तस्वीरें काफी अच्छी आई थीं, लेकिन जब लालमोहन बाबू ने अपने प्रयास को 'बेहद पेशेवर' बताया, तो मैं उनसे सहमत नहीं हो सका।
एक दिन श्री मल्लिक और उनके साथी हमारे साथ निषाद बाग, शालीमार और चश्मा शाही देखने गए। इससे हमें उन्हें बेहतर तरीके से जानने का मौका मिला। उन्होंने फेलुदा से कहा, 'सुशांत ने मुझे बताया कि आपको आत्माओं से संपर्क करने में रुचि है। क्या यह सच है? क्या आप ऐसी बातों में विश्वास करते हैं?'
‘इस विषय पर मेरा दृष्टिकोण खुला है,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘मैंने अध्यात्मवाद पर बहुत कुछ पढ़ा है। कई जाने-माने और विद्वान लोगों ने कहा है कि मृतकों से संपर्क करना संभव है। इसलिए बिना पूरी तरह से जांच-परखे इस पूरे विचार का उपहास करने का मुझे कोई कारण नहीं दिखता। हालांकि, मैं इस क्षेत्र में होने वाली धोखाधड़ी और छल से पूरी तरह अवगत हूं। आखिर सब कुछ माध्यम की प्रामाणिकता पर ही निर्भर करता है, है ना?’
‘डॉ. मजूमदार एक बेहतरीन माध्यम हैं। आप एक दिन आकर हमें क्यों नहीं देखते?’
'हाँ, मुझे अच्छा लगेगा, धन्यवाद। क्या मैं अपने चचेरे भाई और दोस्त को भी ला सकता हूँ?'
“ज़रूर। मुझे किसी से कोई आपत्ति नहीं है, बशर्ते उनमें पर्याप्त आस्था हो। आप आज शाम हमारी नाव पर क्यों नहीं आते? क्या आप जानते हैं कि मैं किस तरह के लोगों से संपर्क करने की कोशिश कर रहा हूँ?”
‘जिन लोगों को आपने मौत की सजा सुनाई?’
'हां। मैं यह पता लगाना चाहता हूं कि क्या मेरा निर्णय कभी गलत था। अभी तक ऐसा कोई संकेत नहीं मिला है।'
‘क्या आप एक सत्र में केवल एक ही मृत व्यक्ति से बात करते हैं?’
'हां। डॉक्टर को एक से अधिक मामलों को संभालना काफी कठिन लगता है।'
हमें आपसे किस समय मिलने आना चाहिए?
रात के दस बजे। हम सब खाना खाने के बाद एक साथ बैठ सकते हैं। उस समय कोई शोर नहीं होना चाहिए।
हम रात के खाने के तुरंत बाद श्री मल्लिक की नाव पर चले गए। बैठक में एक मेज के चारों ओर पाँच कुर्सियाँ लगी हुई थीं। हम अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए और एक मिनट भी बर्बाद किए बिना काम में जुट गए। श्री मल्लिक ने हमसे कहा,

'आज रात हम रामस्वरूप राउत नाम के एक बिहारी लड़के से बात करने की कोशिश करेंगे। उसे दस साल पहले हत्या के आरोप में फाँसी दी गई थी। कुछ आशंकाओं और शंकाओं के बावजूद, मैंने उसे सज़ा सुनाई क्योंकि जूरी ने उसे दोषी पाया था, और हत्या बहुत ही क्रूर थी। लेकिन इन दस सालों में, मैं अक्सर सोचता रहा हूँ कि क्या मैंने कोई गलती की थी। क्या मैंने एक निर्दोष व्यक्ति को मौत के घाट उतार दिया? उसके खिलाफ मामला बहुत ही चालाकी से तैयार किया गया था और ऐसा लग रहा था कि वह वाकई अपराधी था, फिर भी... खैर, क्या आप तैयार हैं, डॉक्टर?'
'हाँ।'
सभी पर्दे खींचे हुए थे। कमरा पूरी तरह अंधेरा था। मेरे दाहिनी ओर फेलुदा बैठे थे, और बाईं ओर लालमोहन बाबू। फेलुदा के दाहिनी ओर श्री मल्लिक बैठे थे और उनके बगल में डॉ. मजूमदार थे, इस प्रकार यह क्रम पूरा होता था।
श्री मल्लिक ने आगे कहा, ‘रामस्वरूप राउत मात्र उन्नीस वर्ष का था। उसके चेहरे की बनावट तीक्ष्ण थी, रंग गोरा था। उसकी पतली-पतली मूंछें थीं। मृतक की कलकत्ता की एक छोटी सी गली में चाकू मारकर हत्या कर दी गई थी। राउत किसी क्रूर हत्यारे जैसा नहीं दिखता था। आपको उसकी छवि अपने मन में बनानी होगी और उस छवि पर ध्यान केंद्रित करना होगा। मैं प्रश्न पूछूंगा; उत्तर राउत की आवाज़ में, डॉ. मजूमदार के माध्यम से मिलेंगे।’
हम पंद्रह मिनट तक चुपचाप बैठे रहे। फिर अचानक मुझे मेज हिलती हुई महसूस हुई। हलचल बढ़ती गई, यहाँ तक कि वह ज़ोर से डगमगाने लगी। हम सब सांस रोककर देखते रहे।
एक मिनट बाद, श्री मल्लिक ने अपना पहला सवाल पूछा: 'आप कौन हैं?'
मेरा नाम रामस्वरूप राउत है।
डॉ. मजूमदार बोले। लेकिन उनकी आवाज़ बिल्कुल अलग लग रही थी। मुझे अनजाने में कंपकंपी छूट गई। श्री मल्लिक ने आगे पूछा, 'क्या आपको 1977 में फांसी दी गई थी?'
'हाँ।'
क्या आपको पता है कि आपके खिलाफ जो सजा सुनाई गई है, उसके लिए मैं जिम्मेदार था?
'हाँ।'
‘क्या तुमने उस आदमी को मारा?’
'नहीं।'
‘किसने किया?’
‘छेडीलाल। वह बहुत ही धूर्त आदमी था। उसने मुझे फंसाया। पुलिस ने मुझे गिरफ्तार किया, उसे नहीं।’
'जब मैंने आपको अदालत में देखा, तभी मुझे पता चल गया था कि आप इस तरह की हत्या की योजना नहीं बना सकते थे। फिर भी, मुझे आपको मौत की सजा सुनानी पड़ी।'
अब इसके बारे में चिंता करने का कोई फायदा नहीं है।
‘क्या तुम मुझे माफ कर सकते हो?’

'हाँ, बिल्कुल। मैं तुम्हें आसानी से माफ कर सकता हूँ। लेकिन मेरे कई रिश्तेदार और दोस्त अभी भी जीवित हैं। वे मेरी मौत के लिए तुम्हें जिम्मेदार ठहराते रह सकते हैं।'
मुझे उनसे कोई लेना-देना नहीं है। मायने तो आपकी क्षमा रखती है।
‘तो फिर बात यहीं खत्म होती है। मृत्यु क्रोध, ईर्ष्या, प्रतिशोध की भावना — सब कुछ मिटा देती है।’
'तुम्हारा बहुत बहुत शुक्रिया।'
श्री मल्लिक उठे और बत्ती जला दी। डॉक्टर मजूमदार बेहोश लग रहे थे। उन्हें होश में लाने में हमें कुछ मिनट लगे।
कितना अजीब अनुभव था! मैंने फेलुदा की ओर देखा, लेकिन उसके चेहरे ने मुझे कुछ नहीं बताया।
श्री मल्लिक ने कहा, 'अब मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मुझे पता था कि राउत के मामले में मेरा फैसला गलत था। अब जब मुझे पता चल गया है कि मुझे माफ कर दिया गया है, तो मेरा दिल हल्का महसूस कर रहा है।'
‘क्या आप केवल खुद को तसल्ली देने के लिए ही आत्माओं को बुलाने का अनुष्ठान करते हैं?’ फेलुदा ने पूछा। ‘कुछ हद तक। क्या आप जानते हैं कि मैं वास्तव में क्या सोचता हूँ? कभी-कभी मैं गंभीरता से सोचता हूँ कि क्या किसी एक व्यक्ति को दूसरे को मौत के घाट उतारने का कोई अधिकार है भी या नहीं।’ ‘हत्यारों का क्या? मेरा मतलब है असली अपराधी, राउत जैसे लोग नहीं। क्या उन्हें दंडित नहीं किया जाना चाहिए?’
'बिल्कुल। उन्हें लंबी और कठोर कारावास की सजा दी जा सकती है, लेकिन मौत? नहीं, मुझे अब यह उचित नहीं लगता। हर किसी को—यहां तक कि अपराधियों को भी — अपने तौर-तरीकों को सुधारने का मौका दिया जाना चाहिए।'
लगभग ग्यारह बज रहे थे। हम अपनी नाव पर वापस जाने के लिए उठे। रवाना होने से पहले श्री मल्लिक ने कहा, 'हम परसों गुलमर्ग जा रहे हैं। आप सब हमारे साथ क्यों नहीं चलते?'
हमें यह बहुत अच्छा लगेगा, धन्यवाद। क्या आप वहीं रुकने वाले हैं?
‘सिर्फ एक रात के लिए। हम गुलमर्ग से खिलनमर्ग जा सकते हैं। यह सिर्फ तीन मील दूर है—आप पैदल जा सकते हैं या घोड़े पर सवार होकर। फिर आप हमारे साथ वापस आ सकते हैं और गुलमर्ग में रात बिता सकते हैं। हमारा ट्रैवल एजेंट आपके लिए सभी व्यवस्थाएं कर देगा। क्या मैं सुशांत से कहूँ कि वह उससे बात करे?’
'जी कहिये।'
हमने शुभ रात्रि कहा और अपनी नाव पर लौट आए। सोने से पहले फेलुदा ने सिर्फ एक बात कही: 'मैं श्री मल्लिक के विचारों से पूरी तरह सहमत नहीं हो सकता। अगर हत्या हुई है, तो हत्यारे को—असली हत्यारे को—बख्शा नहीं जाना चाहिए। अगर उसने किसी की जान ली है, तो उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है। मुझे लगता है कि उम्र और बीमारी दोनों ने श्री मल्लिक के दिमाग पर असर डाला है। लेकिन ऐसा दूसरे न्यायाधीशों के साथ भी होता रहा है। मुझे लगता है कि यह स्वाभाविक ही है।'

‘ज़रा सोचो, फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने कहा, ‘एक न्यायाधीश को कितनी शक्ति दी जाती है। उनकी कलम की एक ही चोट किसी की जान ले सकती है या बचा सकती है। निश्चित रूप से विवेक और जिम्मेदारी की भावना रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस शक्ति का प्रयोग अत्यंत सावधानी से ही करना चाहेगा?’
'जी हां आप बिल्कुल सही हैं।'

चार
गुलमर्ग श्रीनगर से बिलकुल अलग था। यहाँ न झीलें थीं, न नदियाँ, न बगीचे। यहाँ बस मैदानों और ढलानों पर फैली मुलायम, चिकनी, मखमली घास थी, जो पहाड़ों की श्रृंखला पर लहरदार हरी घास की तरह फैली हुई थी। फिर चीड़ के जंगल थे और घाटी में बिखरे हुए कुछ लकड़ी के घर थे। यह किसी चित्र की तरह सुंदर दिखता था। गर्मियों में गोल्फर गोल्फ खेलने गुलमर्ग आते थे। सर्दियों में, बर्फ से ढकी वही ढलानें स्कीइंग के लिए उपयुक्त होती थीं। हम श्रीनगर से अट्ठाईस मील दूर तंगमर्ग तक टैक्सी से गए थे। गुलमर्ग तक के आखिरी चार मील घोड़े पर तय करने थे। कलकत्ता से निकलने से पहले लालमोहन बाबू को घोड़े की सवारी की संभावना के बारे में पहले ही बता दिया गया था। फेलुदा ने उनसे कहा था, 'चिंता मत करो, ऊंट की सवारी से तो आसान है।' हममें से कोई भी राजस्थान में उनकी उस दुर्दशा को नहीं भूल सकता, जब कई साल पहले उन्हें ऊंट की सवारी करनी पड़ी थी। इस आश्वासन से आश्वस्त होकर लालमोहन बाबू घुड़सवारी के लिए उचित पैंट तक साथ लाए थे। अब, घोड़े से उतरते ही उन्होंने कहा कि घोड़े की सवारी करना कोई मुश्किल काम नहीं है, यह तो बच्चों का खेल है।
योजना के अनुसार, श्री मल्लिक और अन्य लोग हमारे साथ यात्रा कर रहे थे। हम सभी आज रात यहीं रुकने वाले थे, फिर सुबह खिलनमर्ग के लिए रवाना होने वाले थे। खिलनमर्ग यहाँ से तीन मील दूर था और गुलमर्ग से दो हजार फीट ऊपर था। फिर हम श्रीनगर लौट आते।
हमें रात बिताने के लिए दो सटे हुए केबिन दिए गए थे। हमारा केबिन श्री मल्लिक के केबिन से छोटा था। शाम को जब हम अपनी बालकनी में बैठकर चाय पी रहे थे, तभी उनकी टीम के तीन सदस्य हमसे मिलने आए। हमने उनमें से दो को पहचान लिया - वे सुशांत सोम और श्री मल्लिक के बेटे विजय थे। लेकिन तीसरा व्यक्ति बिलकुल अजनबी था। देखने में सुंदर, उसकी उम्र तीस के आसपास रही होगी। तीनों लगभग एक ही उम्र के लग रहे थे।
श्री सोम ने कहा, ‘मैं आपको इनसे मिलवाता हूँ। ये अरुण सरकार हैं। ये कलकत्ता के एक व्यापारी हैं, लेकिन हमारी मुलाकात इनसे श्रीनगर में हुई। ये जुआरियों में से एक हैं। इससे इन्हें पहचानना आसान हो जाएगा!’
सब हंस पड़े। श्री सोम ने आगे कहा, 'शायद आप समझ गए होंगे कि हम यहां क्यों हैं। ये दोनों आदमी एक असली जासूस से मिलने के लिए बेताब थे। श्री गांगुली एक मशहूर लेखक भी हैं, है ना?'
लालमोहन बाबू ने विनम्रता से मुस्कुराने की कोशिश की।
विजय मल्लिक ने फेलुदा से कहा, 'हमें अपने कुछ मामलों के बारे में बताएं। हमें उनमें बहुत दिलचस्पी है।'

फेलुदा को यह बात माननी पड़ी। जब उन्होंने अपने कुछ सबसे प्रसिद्ध मामलों का वर्णन समाप्त कर लिया, तो अरुण सरकार ने पूछा, 'क्या यह कश्मीर की आपकी पहली यात्रा है?'
जी हाँ। श्रीमान सरकार, जब मैंने आपको देखा तो मुझे लगा कि आप स्वयं कश्मीरी हैं। क्या आप कई बार कश्मीर जा चुके हैं?
जी हां। दरअसल, मैंने अपने बचपन के कुछ साल श्रीनगर में बिताए। मेरे पिता एक होटल के मैनेजर थे। फिर हम श्रीनगर छोड़कर बीस साल से भी पहले कलकत्ता चले गए।
क्या आप स्थानीय भाषा बोल सकते हैं?
'थोड़ा।'
अब फेलुदा ने विजय मल्लिक की ओर रुख किया। 'क्या आपको अपने पिता के काम में कोई दिलचस्पी नहीं है? मेरा मतलब है, उन प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठानों में?'
विजय ने ज़ोर से सिर हिलाया। उसने कहा, 'मेरे पिता बूढ़े हो गए हैं और उनकी सोचने-समझने की क्षमता कम हो गई है। वे लगातार मृत्युदंड को वापस लेने की बात करते रहते हैं। ज़रा सोचिए, किसी हत्यारे को उसके अपराध से बचने देना कितना अन्यायपूर्ण हो सकता है? इससे ज़्यादा अन्यायपूर्ण और क्या हो सकता है?'
क्या आपके पिता आपके विचारों से अवगत हैं?
‘मुझे नहीं पता। देखिए, मैं अपने पिता के बहुत करीब नहीं हूं। हम आमतौर पर एक-दूसरे को अकेला छोड़ देते हैं।’
'अच्छा ऐसा है।'
लेकिन अगर वह जो कर रहा है उससे उसे मानसिक शांति मिल रही है, तो मुझे आपत्ति करने का कोई कारण नहीं दिखता।
‘तुम्हारी माँ के बारे में क्या?’
मेरी मां अब इस दुनिया में नहीं हैं। उनका निधन चार साल पहले हो गया था। 'क्या आपके सगे भाई बहन हैं?'
‘मेरा एक भाई था। वह मुझसे काफी बड़ा था। वह अमेरिका चला गया और वहां इंजीनियर के रूप में काम कर रहा था, लेकिन पिछले साल उसका निधन हो गया। उसकी अमेरिकी पत्नी कभी भारत नहीं आई। मेरी एक बहन भी है। उसकी शादी हो चुकी है और वह भोपाल में रहती है।’
'आपको कश्मीर और उसकी प्राकृतिक सुंदरता में ज्यादा दिलचस्पी नहीं है, है ना?'
नहीं, मैं नहीं हूँ। लेकिन आपने कैसे अनुमान लगाया?
'जिस तरह से आप अपना अधिकांश समय घर के अंदर ताश खेलते हुए बिताते हैं, उससे यह काफी स्पष्ट है।'
‘आप सही कह रहे हैं। मैं काफी साधारण किस्म का इंसान हूं। पहाड़ और नदियां मेरे लिए कोई मायने नहीं रखतीं। कुछ दोस्त और ताश के पत्तों का एक पैकेट ही मुझे खुश रखने के लिए काफी है।’

यह सुनकर अरुण सरकार मुस्कुरा उठे। उन्होंने कहा, 'मैं अलग हूं। मुझे ताश खेलना पसंद है और मुझे प्राकृतिक दृश्य अच्छे लगते हैं। शायद इसका कारण कश्मीर में बिताए मेरे शुरुआती साल हैं।'
‘खैर,’ विजय मल्लिक उठ खड़े हुए। ‘अब हमें जाना चाहिए। मैंने आज सुशांत को अपने साथ शामिल कर लिया है। क्या आप दोनों में से किसी को ताश खेलने में दिलचस्पी है?’
‘हम अभी टहलने जाने की योजना बना रहे थे,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘तुम लोग पूरी शाम खेलते रहोगे, है ना?’
'हां, निश्चित रूप से ग्यारह बजे तक।'
'बहुत अच्छा, वापस आने पर मैं आपसे मिलने आऊंगा।'
'ठीक है फ़िर मिलते हैं।'
तीनों ने हाथ हिलाकर अभिवादन किया। लालमोहन बाबू ने सुझाव दिया, 'क्यों न हम रात के खाने के बाद टहलने जाएं?'
‘ऐसा ही हो!’ फेलुदा ने कहा।
हमने रसोइए को रात के खाने में चावल और चिकन करी बनाने को कहा था। उसने सुबह साढ़े आठ बजे जो खाना परोसा, वह सचमुच बहुत स्वादिष्ट था। हमने उसे जल्दी से खा लिया और फिर रात में गुलमर्ग शहर को देखने की उत्सुकता में सैर के लिए निकल पड़े।
यह एक शांत जगह थी, हालाँकि इसकी सड़कें पूरी तरह से सुनसान नहीं थीं। हमने जिन लोगों को देखा, वे मुख्य रूप से पर्यटक थे, जिनमें भारतीय आगंतुकों की तुलना में विदेशी अधिक थे। लालमोहन बाबू अभी भी ग़ज़ल गाने की कोशिश कर रहे थे, ठंड के कारण उनकी आवाज़ कभी-कभी कांप रही थी।
कुछ देर बाद फेलुदा ने उससे पूछा, 'तुम्हें ठंड लग रही है और बेचैनी हो रही है, है ना?'
जी हां, लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं है, फेलू बाबू। ठंड तो है, लेकिन हवा इतनी साफ और शुद्ध है। बहुत ताजगी भरी है, है ना?
“हाँ, ऐसा ही है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमें देर तक बाहर रहना चाहिए। चलो टॉपशे, वापस चलते हैं।”
हमने यू-टर्न लिया, मुख्य सड़क पार की और एक ऐसे इलाके से गुज़रे जहाँ न तो कोई घर था और न ही किसी तरह की आबादी का कोई निशान। हमारी झोपड़ियाँ इस खुले मैदान के दूसरी तरफ थीं। यहीं पर कुछ ऐसा हुआ जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।
एक अज्ञात वस्तु हवा में उड़ती हुई आई और फेलुदा के कान के पास से सरसराहट की आवाज़ के साथ गुज़री, बाल-बाल बची। फिर वह एक पेड़ से टकराई और ज़मीन पर गिर गई। फेलुदा के पास एक टॉर्च थी। उसने तुरंत उस वस्तु पर रोशनी डाली। वह एक बड़ा पत्थर था। अगर वह अपने लक्ष्य से न चूका होता, तो फेलुदा बुरी तरह घायल हो सकता था।
सबसे बड़ा सवाल यह था: ऐसा किसने किया होगा? हम तो अभी-अभी यहाँ पहुँचे थे। अभी तक ऐसी कोई घटना नहीं हुई थी जिसकी जाँच ज़रूरी हो। कभी-कभी, जाँच शुरू होने पर हमें धमकियाँ मिलती थीं या हम पर हमले होते थे। इस समय तो ऐसा होना नामुमकिन था। तो फिर इसके पीछे क्या वजह हो सकती है?

जब हम अपने केबिन में वापस आए, तो फेलुदा ने गंभीर भाव से कहा, 'मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है। यह स्पष्ट है कि मेरी उपस्थिति यहाँ अवांछित है, कोई मुझे अपने रास्ते से हटाना चाहता है। इसका मतलब केवल यही हो सकता है कि कोई आपराधिक गतिविधि की योजना बनाई जा रही है। यह क्या हो सकता है, इसका कोई अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।'
‘फेलू बाबू, उम्मीद है आप अपना रिवॉल्वर लाए होंगे?’ लालमोहन बाबू ने चिंता से पूछा।
'हां, मैं इसे हमेशा अपने साथ ले जाता हूं, चाहे मैं कहीं भी जाऊं। लेकिन मैं इसका उपयोग कैसे कर सकता हूं, जब वास्तव में कुछ हुआ ही नहीं है?' ‘फेलू बाबू, हमें हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। रात में सभी दरवाजे और खिड़कियां बंद और कुंडी लगी होनी चाहिए। हमें कोई जोखिम नहीं लेना चाहिए। लेकिन क्या यह वाकई आश्चर्यजनक नहीं है? मेरा मतलब है, छुट्टियां मनाने निकलते ही मुसीबतें क्यों शुरू हो जाती हैं?’
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर रुकने के बाद उसने बस इतना कहा, 'तुम दोनों सो जाओ। मैं अभी पड़ोस के लड़कों के साथ पोकर खेलने जा रहा हूँ। एक घंटे में वापस आ जाऊँगा।'

पाँच
अगली सुबह, जल्दी नाश्ता करने के बाद हम नौ बजे खिलनमर्ग के लिए रवाना हुए। हमें तीन मील की चढ़ाई करनी थी, जिसमें दो हज़ार फीट की अतिरिक्त ऊँचाई चढ़नी थी। केवल बूढ़े श्री मल्लिक ने घोड़े से जाने का विकल्प चुना। बाकी हम सब पैदल ही गए। हमारे समूह में नौ लोग थे, जिनमें अरुण सरकार और प्रयाग (श्री मल्लिक के भारवाहक) भी शामिल थे। खिलनमर्ग का रास्ता बेहद खूबसूरत था। रास्ते के दोनों ओर रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे।
लालमोहन बाबू ने कहा, 'इन सात दिनों में मुझे नई ऊर्जा मिली है। दो हजार फीट की दूरी तय करना मुझे बिल्कुल भी मुश्किल नहीं लगता।'
हमने अपनी यात्रा शुरू की। बाकी लोग छोटे-छोटे समूहों में बंट गए, लेकिन हम तीनों साथ रहे। खिलनमर्ग पहुँचने में हमें दो घंटे लगे। शिखर पर पहुँचते ही जो नज़ारा हमारी आँखों के सामने आया, उसे देखकर हम स्तब्ध रह गए। ज़मीन पर और आस-पास दिखाई देने वाली सभी चोटियों पर बर्फ़ जमी हुई थी। हमारे नीचे क्षितिज तक फैली एक हरी-भरी घाटी थी, जिसमें चमकती झीलें और कलकल करती नदियाँ थीं। उसके पीछे नंगा पर्वत आकाश में तराशा हुआ, ऊँचा और राजसी लग रहा था।
‘मुझे नहीं लगता कि कश्मीर में इससे खूबसूरत नजारा कहीं और हो सकता है!’ फेलुदा ने धीरे से कहा।
लालमोहन बाबू ने अपना कैमरा निकाला। उन्होंने पुकारा, ‘चलो सब लोग, एक ग्रुप फोटो लेते हैं!’ ‘कृपया यहाँ बर्फ पर खड़े हो जाइए। एक शानदार तस्वीर बनेगी।’
दूसरे समूह से अचानक हुई हलचल ने मुझे पहाड़ों से अपनी नज़र हटाने पर मजबूर कर दिया। तभी मुझे श्री मल्लिक की आवाज़ सुनाई दी: 'विजय? विजय कहाँ है?'
सरसरी नज़र डालने पर मुझे पता चला कि विजय मल्लिक ही अकेले गायब थे। क्या वो बस पीछे छूट गए होंगे? ऐसा लग नहीं रहा था। ये सच था कि वे साथ नहीं चल रहे थे; लेकिन बिना किसी ठोस कारण के कोई एक सदस्य बाकी सबसे पूरी तरह अलग नहीं हो सकता था। इसके बाद सुशांत सोम बोले: 'आप यहीं रुकिए, श्री मल्लिक? मुझे जाकर देखने दीजिए।'
श्री सरकार और डॉक्टर ने कहा, 'हम आपके साथ चलेंगे।'
हम भी खोज दल में शामिल हो गए और धीरे-धीरे उसी रास्ते पर वापस लौटने लगे जिस पर हम अभी-अभी चढ़े थे। मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था। वह आदमी कहाँ चला गया?
‘विजय!’ श्री सोम ने जोर से पुकारा। कोई जवाब नहीं आया।
हम नीचे उतरते रहे। लगभग पंद्रह मिनट बाद, लालमोहन बाबू अचानक रुक गए और एक झाड़ी को घूरने लगे। फेलुदा ने भी उनकी नज़र का पीछा किया और तुरंत उस

झाड़ी की ओर दौड़ पड़ा। उसकी पत्तियों के बीच से एक आदमी का पैर बाहर निकला हुआ था। या यूँ कहें कि वह एक पहाड़ी जूता था।
‘श्री सोम! इधर आइए!’ फेलुदा चिल्लाया। श्री सोम दौड़कर उस पार गए, उनके पीछे-पीछे बाकी लोग भी गए।
विजय मल्लिक पेट के बल बेहोश पड़ा था। फेलुदा ने उसकी नब्ज़ जाँची और कहा, 'वह ज़िंदा है। मुझे लगता है उसके सिर पर चोट लगी है, जिससे वह बेहोश हो गया।'
सौभाग्यवश, पास में ही एक छोटी नदी थी। एक आदमी पानी लाने के लिए दौड़ा।
विजय मल्लिक ने अपनी आँखें तब खोलीं जब उसके चेहरे पर कई बार पानी के छींटे पड़े।
‘कहाँ?…’ उसने असमंजस भरे अंदाज़ में चारों ओर देखते हुए पूछा।
‘यह सब कैसे हुआ?’ फेलुदा ने तीखे स्वर में पूछा।
किसी ने धक्का दिया...
ऐसा लगता है जैसे आप काफी ऊंचाई से गिरे हों और पहाड़ी से लुढ़कते हुए नीचे आए हों।
‘हां... मुझे याद है मैं एक फूल पर झुकी हुई थी...’
'आपका सिर इस पेड़ के तने से टकरा गया। मुझे लगता है कि इसी वजह से आप गिरने से बच गए, लेकिन टक्कर के कारण आप बेहोश हो गए।'
हां... शायद...
‘क्या आपको लगता है कि आप उठ सकते हैं?’
फेलुदा ने विजय के कंधों पर हाथ रखकर उसे उठने में मदद की। विजय कुछ पल लड़खड़ाया, फिर सीधा खड़ा हो गया। फेलुदा ने उसके सिर की ओर देखकर कहा, “सूजन तो है, लेकिन खून नहीं बह रहा है। कुछ दिनों तक दर्द हो सकता है। मेरा सुझाव है कि हम तुरंत वापस चलें। हम तुम्हारे लिए घोड़ा लाने की कोशिश करेंगे; तब तक धीरे-धीरे चलो। जब हम गुलमर्ग वापस पहुँचेंगे और तुम ठीक हो जाओगे, तो मैं तुमसे बात करना चाहूँगा।”
विजय थोड़ा ठीक होता हुआ प्रतीत हुआ। उसने धीरे से हाथ उठाकर अपने सिर पर आई सूजन को महसूस किया और फिर चलने लगा। मैं असमंजस में पड़ गया कि उसके साथ ऐसा किसने किया होगा। उस पर हमला क्यों किया गया था?
जब हम गुलमर्ग पहुँचे तब तक शाम हो चुकी थी। हम सीधे अपने केबिन में चले गए।
‘कुछ भी करने से पहले हमें एक कप चाय पी लेनी चाहिए,’ फेलुदा ने घोषणा की और एक पल बाद चाय लाने वाले को बुलाया। फिर वह चुप हो गया। मैंने देखा कि उसकी भौंहें गहरी शिकन से सिकुड़ी हुई थीं।
हमें बेहद आश्चर्य हुआ, जैसे ही हमने चाय खत्म की, विजय स्वयं श्री सरकार और श्री सोम के साथ हमारे केबिन में आ पहुंचे। उन्होंने कहा, 'श्री मित्तर, मुझे आपसे मिलने आना ही था। मैंने अपने जीवन में कभी इतना असमंजस महसूस नहीं किया।'
'क्या आप यहां किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं जिसे आपसे कोई शिकायत हो सकती है?'

नहीं। भला कौन हो सकता है, सिवाय इन दोनों आदमियों में से किसी एक के, या डॉ. मजूमदार के? यह तो बिलकुल बेतुका विचार है!
'श्रीनगर में आपकी मुलाकात किसी पुराने परिचित से नहीं हुई?'
'नहीं।'
‘क्या कलकत्ता में कोई ऐसा व्यक्ति है जो आपसे द्वेष रखता हो?’
'ऐसा नहीं है कि मैं इससे अवगत हूं।'
क्या आपने कलकत्ता में कॉलेज की पढ़ाई की?
'हां, स्कॉटिश चर्च।'
और क्या आपका छात्र जीवन कमोबेश परेशानी मुक्त था?
‘अह...नहीं, बिलकुल नहीं।’
'ओह क्यों नहीं?'
'जब मैं कॉलेज के दूसरे साल में था, तब मैं बुरी संगत में पड़ गया। मैंने ड्रग्स लेना शुरू कर दिया।'
'नशीली दवाओं का सेवन?'
'हां। मैंने कोकीन और मॉर्फिन का सेवन किया था।'
‘आगे क्या हुआ?’
'मेरे पिता को पता चल गया। वह तब भी न्यायाधीश के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने मुझे नशा छोड़ने के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सके।' ‘फिर भी आपने कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ली?’
'हां। संयोग से, मैं एक प्रतिभाशाली छात्र था।'
‘क्या आप पूरे समय घर पर ही थे?’
“शुरू में तो हां। लेकिन विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद, मुझे लगा कि मुझे इससे बाहर निकलना होगा। इसलिए मैंने घर छोड़ दिया और उत्तर प्रदेश चला गया। कानपुर में मेरी मुलाकात एक असाधारण व्यक्ति से हुई। उनका नाम आनंदस्वामी था। वे एक साधु थे, और उन्होंने मुझे मेरी गलतियों का एहसास कराया। यह सचमुच किसी चमत्कार से कम नहीं था। आखिरकार मुझे अक्ल आई और मैं घर लौट आया। तब से मैंने नशे को हाथ नहीं लगाया है। मेरे पिता मुझे वापस पाकर बहुत खुश हुए। उन्होंने मुझे पूरी तरह से माफ कर दिया।”
उस समय आपकी उम्र कितनी थी?
‘सत्ताईस या अट्ठाईस।’
'आपने फिर क्या किया?'
मेरे पिता ने मुझे एक निजी कंपनी में नौकरी दिलवाई। मैं अभी भी वहीं काम कर रहा हूं।
‘तुम्हें ताश खेलने और जुआ खेलने की विशेष कमजोरी है, है ना?’
'हाँ यह सच है।'
‘क्या इससे कभी कोई समस्या उत्पन्न हुई है?’
'नहीं।'
अगर मैं आपसे पूछूं कि क्या आपके कोई दुश्मन हैं, तो आप क्या कहेंगे? जहां तक मुझे पता है, ऐसा कोई नहीं है जो मुझे मारना चाहता हो। हो सकता है कुछ लोग छोटी-छोटी बातों पर मुझसे ईर्ष्या करते हों; लेकिन वैसे भी, लगभग

हर किसी के ऐसे दुश्मन होते हैं। यहां तक कि आपको भी ऐसे लोग जरूर मिलेंगे जो आपको नापसंद करते हैं या आपकी सफलता से ईर्ष्या करते हैं।
‘यह सच है। अब मैं आपसे कुछ अन्य लोगों के बारे में पूछना चाहता हूँ। आप डॉ. मजूमदार को कितने समय से जानते हैं?’
‘वह पिछले पंद्रह वर्षों से हमारे पारिवारिक चिकित्सक हैं।’
‘ठीक है। अब मेरे पास श्री सोम के लिए एक प्रश्न है।’
'हाँ?'
‘आप श्री मल्लिक की सचिव के रूप में कितने समय से काम कर रही हैं?’
'पांच साल हो गए हैं, जब से वह सेवानिवृत्त हुए हैं।'
‘वाहक प्रयाग अपने घर में कितने समय से काम कर रहा है?’
'लगभग उतना ही समय, मुझे लगता है। श्री मल्लिक के पुराने सहायक, मकबूल का अचानक निधन हो गया। उनकी जगह प्रयाग को नियुक्त किया गया।'
'बहुत अच्छा। मुझे लगता है कि अब हम इसे यहीं रोक देंगे। लेकिन अगर ज़रूरत पड़ी तो क्या मैं आपसे बाद में और सवाल पूछ सकता हूँ?'
‘बिल्कुल,’ विजय मल्लिक ने उत्तर दिया।

छह
‘फिर से शुरुआत करनी पड़ेगी, फेलू बाबू?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। हम श्रीनगर में अपनी हाउसबोट में वापस आ चुके थे और ऊपरी डेक पर बैठकर चाय पी रहे थे। ‘हां, ऐसा ही लगता है,’ फेलुदा ने गंभीरता से जवाब दिया। ‘जब भी मैं छुट्टी पर जाता हूं और कुछ समय आराम करने की योजना बनाता हूं, अपराध और रहस्य मेरा पीछा करते रहते हैं। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने अपने जीवन में कभी इतना असमंजस महसूस नहीं किया। मेरे पास काम करने के लिए कुछ भी नहीं है, कोई सुराग नहीं है।’
उन्होंने अपनी चाय खत्म की और एक चारमीनार जलाई। फिर, कुछ देर रुकने के बाद, उन्होंने कहा, 'मुझे श्री सोम से श्री मल्लिक की डायरियाँ उधार माँगनी चाहिए।'
‘क्यों? इससे क्या फायदा होगा?’
‘यह बताना मुश्किल है। लेकिन निश्चित रूप से मुझे श्री मल्लिक की अनुमति लेनी होगी। इसीलिए मुझे श्री सोम से पूछना होगा।’
‘आप यह अभी कर सकते हैं। देखिए, वह रहा!’
श्री सोम बुलेवार्ड से लौटते हुए एक शिकारा में थे। नाव में रखे पार्सल देखकर लग रहा था कि वे खरीदारी करने गए थे। फेलुदा ने रेलिंग पर झुककर पुकारा, 'हेलो श्री सोम! क्या आप थोड़ी देर के लिए यहाँ रुक सकते हैं?' श्री सोम की शिकारा धीरे-धीरे हमारी नाव की ओर बढ़ने लगी।
‘क्या आप श्री मल्लिक की डायरियाँ अपने साथ लाए हैं?’ फेलुदा ने पूछा। ‘हाँ, वे सभी चौबीस डायरियाँ।’
‘क्या आप सोच रहे हैं कि मैं इन्हें उधार ले सकता हूँ? मतलब, एक बार में दो या तीन? मैं श्री मल्लिक और उनके परिवार के बारे में कुछ और जाने बिना इस मामले पर काम नहीं कर सकता। डायरी शायद मददगार साबित हों।’
‘ठीक है, मैं उससे पूछ लेता हूँ।’
'धन्यवाद।'
मुझे नहीं लगता कि वह आपत्ति करेगा। वह आपको अपने जीवन के बारे में पहले ही बहुत कुछ बता चुका है।
श्री सोम चले गए, लेकिन आधे घंटे बाद चार पुरानी डायरियाँ लेकर लौट आए। उन्होंने हमें बताया, ‘श्री मल्लिक तुरंत सहमत हो गए। उन्होंने कहा कि एक बार उनकी किताब प्रकाशित हो जाए, तो वैसे भी सबको सब कुछ पता चल जाएगा। वैसे भी, जिन आपराधिक मामलों की वह बात कर रहे हैं, वे सभी प्रेस में प्रकाशित हो चुके हैं, इसलिए वे कोई रहस्य नहीं हैं।’
‘धन्यवाद। मैं आपको बता दूँगा जब मैं इन्हें पूरा कर लूँगा और कुछ और ले आऊँगा... टॉपशे, तुम और लालमोहन बाबू मानसबल झील देखने क्यों नहीं जाते? मुझे काम करने के लिए घर के अंदर ही रहना होगा।’

‘अरे हाँ,’ श्री सोम ने कहा। ‘क्या आप पहलगाम जाने की योजना नहीं बना रहे हैं?’
'जी हां, हम निश्चित रूप से हैं।'
‘आप कब जाना चाहते हैं? अगर आप हमारे साथ आएं तो बेहतर होगा। हम परसों वहां जा रहे हैं।’
'अचे से।'
मैं मानसबल झील को आश्चर्य से देखता रहा। इसका पानी इतना साफ था कि मुझे पानी के नीचे की सारी वनस्पति दिखाई दे रही थी। मैंने पहले कभी इतनी साफ पानी वाली झील नहीं देखी थी।
लालमोहन बाबू भी प्रभावित हुए, लेकिन मैं समझ गया कि वे फेलुदा और उसकी जांच के बारे में सोच रहे थे। कुछ देर बाद उन्होंने कहा, 'मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हारा चचेरा भाई ये सारी डायरियाँ क्यों पढ़ रहा है। जो लोग फांसी पर चढ़ चुके हैं, वे दोबारा अपराध करने के लिए वापस तो नहीं लौटेंगे?' 'नहीं, लेकिन फेलुदा के अपने कारण जरूर होंगे।'
मानसबल श्रीनगर से अठारह मील दूर था। जब हम वापस लौटे, तब तक साढ़े छह बज चुके थे। फेलुदा अभी भी बैठक में डायरी पढ़ रहा था। उसने हमें बताया, 'मैंने ग्यारह डायरी पढ़ ली हैं। हर एक दिलचस्प थी।'
'सच में? लेकिन क्या इससे आपको कोई फायदा हुआ? मेरा मतलब है, क्या अब आपको आगे का रास्ता दिख रहा है?'
किसी गतिविधि से क्या लाभ होगा, यह पहले से बताना हमेशा संभव नहीं होता। फिलहाल मेरी दिलचस्पी सिर्फ जानकारी जुटाने में है; और आज मैंने डायरियों के अलावा भी कई नई बातें सीखी हैं। उदाहरण के लिए, विजय मल्लिक ने आकर मुझे बताया कि जब उसे धक्का दिया गया, तो उसे अपनी गर्दन पर किसी ठंडी और धातु जैसी चीज का स्पर्श महसूस हुआ। मुझे लगता है कि वह एक अंगूठी थी, लेकिन इससे कोई खास मदद नहीं मिलती क्योंकि कल तीन लोगों ने अंगूठी पहनी हुई थी — श्री सोम, श्री सरकार और प्रयाग। अगर अपराधी इस समूह से बाहर का कोई व्यक्ति है, तो उसे पकड़ना नामुमकिन है। दर्जनों लोगों ने अंगूठी पहनी होगी।
'हां, लेकिन कल खिलनमर्ग कितने लोग गए थे?'
मुझे पंजाबियों का एक समूह याद है। वे पांच लोग थे। उनमें से तीन घोड़े पर सवार थे।
'मुझे नहीं लगता कि अब कुछ अप्रिय होने वाला है, फेलू बाबू।'
'मुझे उम्मीद है कि आप सही हैं। स्वर्ग में कौन समस्याएँ चाहता है, खासकर तब जब मैं अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं कर सकता?'
फेलुदा ने अगले दिन शेष डायरियाँ पढ़ना समाप्त किया। लालमोहन बाबू ने पूछा, 'उन्होंने तुम्हें क्या बताया?'
‘छह ऐसे मामले थे, जिनमें श्री मल्लिक को पूरा यकीन था कि आरोपियों को फांसी नहीं, बल्कि जेल भेजा जाना चाहिए था। वे खुद द्वारा सुनाए गए फैसलों से बेहद दुखी थे। एक मामला विशेष रूप से सप्रू नामक एक कश्मीरी से संबंधित था। श्री मल्लिक को उसे मौत की सजा सुनाने के बाद इतना पछतावा हुआ कि कुछ ही समय बाद उन्हें एंजाइना हो गया और उन्हें सेवानिवृत्त होना पड़ा।’

पहलगाम श्रीनगर से साठ मील दूर था। यह लिदार घाटी का एक छोटा सा कस्बा था। इसके किनारे से लिदार नदी बहती थी। यह कोई बड़ी नदी नहीं थी, लेकिन काफी तेज़ बहाव वाली थी। कई विदेशी इसमें ट्राउट मछली पकड़ने आते थे। पहलगाम से बर्फ से ढके पहाड़ दिखाई देते थे। हाल ही में कुछ होटल बने थे, लेकिन नदी किनारे तंबू लगाकर रहना अभी भी संभव था। हमने यही करने का फैसला किया।
हम चार टैक्सियों में निकले और बारह बजे तक पहलगाम पहुँच गए। नदी के पश्चिम में पहाड़ियाँ थीं, जहाँ आबादी का कोई नामोनिशान नहीं था। पूर्व में शहर बसा हुआ था, जिसमें होटल, रेस्तरां और दुकानें थीं। कश्मीर में अब तक हमने जो कुछ भी देखा था, उसकी तरह यह भी बेहद मनमोहक लग रहा था।
जब हम पहुँचे, तो हमारे तंबू लगाए जा रहे थे। ये खास तंबू थे, लगभग अपार्टमेंट जैसे, जिनमें शयनकक्ष, भोजन कक्ष और यहाँ तक कि संलग्न बाथरूम भी थे। हमें एक तंबू मिला था; श्री मल्लिक को दो तंबू दिए गए थे। नदी महज़ बीस गज दूर थी। उसके बहते पानी की आवाज़ एक पल के लिए भी नहीं रुक रही थी। ‘मैंने लोगों को इस तरह रहते हुए सिर्फ हॉलीवुड की वेस्टर्न फिल्मों में ही देखा था,’ लालमोहन बाबू ने उत्साह से कहा। ‘कौन जानता था कि एक दिन मैं भी खुले में रहूंगा?’
दोपहर के भोजन के बाद, हमने श्री सोम को हमारे तम्बू की ओर आते देखा। ‘क्या आपने दोपहर का भोजन कर लिया है?’ उसने पूछा।
'हां, हमने अभी-अभी काम खत्म किया है।'
‘यहाँ से आठ मील दूर चंदनवाड़ी नाम की एक जगह है। क्या आपको पता था?’
क्या वहां कोई ऐसा पुल नहीं है जो साल भर बर्फ से ढका रहता है?
'हाँ।'
क्या आप इसे देखने का इरादा रखते हैं?
'जी हां। क्या आप हमारे साथ आना चाहेंगे?'
“ज़रूर, लेकिन हम अभी-अभी पहुँचे हैं। क्यों न आज हम पहलगाम घूम लें और कल चंदनवाड़ी चलें?”
‘मैं भी यही सुझाव देने वाला था। मैं तो आज आपको आमंत्रित करने ही आया था।’ 'धन्यवाद। शायद हमें सचमुच साथ यात्रा करनी चाहिए। मैं स्थिति पर नज़र रख सकता हूँ। जो कुछ हो चुका है वह काफी बुरा है। मैं इसे हत्या का प्रयास कहने में संकोच नहीं करूँगा। विजय मल्लिक सौभाग्यशाली हैं कि आज जीवित हैं।'
'हम कल दोपहर के भोजन के बाद, लगभग दो बजे निकल सकते हैं। हमें घोड़े लेने होंगे और आठ मील की दूरी तय करनी होगी।'
श्री मल्लिक अपने तम्बू से बाहर आए और अपने भारवाहक को पुकारते हुए बोले: 'प्रयाग! प्रयाग!'
प्रयाग नदी में हाथ धो रहा था। उसने कोई जवाब नहीं दिया। फेलुदा ने कहा, 'शायद नदी के शोर के कारण वह तुम्हारी बात नहीं सुन पा रहा है।'
‘नहीं, वो थोड़ा बहरा है। मुझे आमतौर पर उसे कम से कम तीन बार बुलाना पड़ता है, तब जाकर वो जवाब देता है।’ श्री मल्लिक ने फिर से चिल्लाकर कहा। इस बार प्रयाग ने उनकी बात सुनी और दौड़ता हुआ आया।
श्री मल्लिक ने आदेश दिया, 'मेरी छड़ी लाओ।'

‘जी हुजूर,’ प्रयाग ने कहा और अंदर चला गया। मैंने देखा कि फेलुदा ने प्रयाग को तीखी नजरों से देखा, लेकिन मुझे समझ नहीं आया कि क्यों।
इसी बीच विजय और श्री सरकार अपने तंबू से बाहर आ गए। श्री सरकार संभवतः मल्लिक परिवार के साथ उनके पूरे दौरे में रहने की योजना बना रहे थे।
श्री सोम ने कहा, 'हम कल चंदनवाड़ी जा रहे हैं।' बाकी सबने सहमति में सिर हिलाया। फेलुदा हमारी ओर मुड़ा। उसने कहा, 'क्यों न तुम तंबू से दो कुर्सियाँ ले आओ और यहाँ नदी किनारे बैठ जाओ? मैं टहलना चाहता हूँ। इससे मेरा दिमाग तरोताज़ा हो जाएगा।'
'कब तक लौटेगी?'
मुझे लगता है, एक घंटे में।
'मुझे उम्मीद है कि आपके पास आपका भरोसेमंद हथियार होगा?'
'ओह हां।'
फेलुदा चला गया। लालमोहन बाबू और मैं बाहर बैठकर कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले रहे थे। बाकी लोग अपने-अपने तंबुओं में लौट गए। लालमोहन बाबू ने बताया कि उन्होंने अपने अगले उपन्यास की कहानी सोच ली है और मुझे सुनाई। मैंने ध्यान से उनकी बात सुनी, फिर कुछ बदलाव सुझाए। इस सब में लगभग डेढ़ घंटा लग गया। नदी किनारे बैठना इतना सुखद था कि हमें समय का पता ही नहीं चला, लेकिन लालमोहन बाबू ने अचानक अपनी घड़ी देखी और कहा, 'तुम्हारे चचेरे भाई को गए दो घंटे हो गए हैं! उसे अब तक वापस आ जाना चाहिए था!'
मैं चौंक गया। मैं फेलुदा के बारे में पूरी तरह भूल गया था।
‘हमें क्या करना चाहिए?’ लालमोहन बाबू ने आगे पूछा। फेलुदा के साथ बिताए सालों ने मुझे तुरंत फैसले लेना सिखाया था। मैं खड़ा हो गया। ‘चलो, उसे ढूंढते हैं,’ मैंने कहा।
'ठीक है।'
हमने फेलुदा को एक संकरे रास्ते से ऊपर जाते देखा था। हम भी उसी रास्ते से धीरे-धीरे पहाड़ी पर चढ़ने लगे। रास्ता चीड़ के जंगल से होकर गुजरता था, लेकिन अब हम उसकी सुंदरता का आनंद लेने के मूड में नहीं थे। ज़रूर कोई भयानक घटना घटी होगी, वरना फेलुदा अब तक वापस आ गया होता।
आधे घंटे में ही मेरी आशंका सच साबित हो गई। हमने फेलुदा को एक झाड़ी के पीछे ज़मीन पर पड़ा हुआ पाया। मेरा गला तुरंत सूख गया। मैं मुश्किल से हिल पा रहा था। तभी लालमोहन बाबू आगे बढ़े और उनकी नब्ज़ जाँची।
‘सब ठीक है, वो ज़िंदा है!’ वो चिल्लाया। कुछ ही सेकंड बाद, फेलुदा कराहते हुए धीरे-धीरे उठ बैठा। फिर उसने अपने सिर के पिछले हिस्से को छुआ और मुँह बनाया। ‘इस बार उसका निशाना नहीं चूका,’ उसने मुझसे कहा। ‘जो भी था, टॉपशे, उसने अपने निशाने पर एकदम सटीक वार किया।’
‘क्या तुम उठ सकते हो?’
‘जी हां, मेरा सिर दुख रहा है; मेरे पैरों में कोई दिक्कत नहीं है।’ वह सहारा लेकर हमारे ऊपर झुकते हुए खड़े हुए। फिर उन्होंने कुछ सावधानी भरे कदम बढ़ाए और कहा, ‘ठीक है, मुझे लगता है अब मैं चल सकता हूं।’ लालमोहन बाबू ने उनका हाथ छुड़ाकर कहा, ‘देखा किसने किया?’

नहीं। इससे तो सारा रहस्य सुलझ जाता, लालमोहन बाबू। हमारा अपराधी मूर्ख नहीं है। मुझे बहुत सोच-विचार करना होगा, हर चीज़ को अलग नज़रिए से देखना होगा। मुझे और समय चाहिए...
हम अपने तम्बू में लौट आए। उसी रात, श्री मल्लिक ने हमें एक और प्रेतात्माओं से संपर्क करने के लिए बुलाया। श्रीनगर छोड़ने से पहले हमने एक प्रेतात्माओं से संपर्क किया था, जिसमें शस्मल नाम के एक व्यक्ति की आत्मा प्रकट हुई थी और उसने स्वीकार किया था कि वह वास्तव में एक हत्यारा था, इसलिए उसे दी गई सज़ा पूरी तरह से उचित थी।
यह हमारा तीसरा सेन्स था। आज रात, श्री मल्लिक सप्रू से बात करना चाहते थे, वही कश्मीरी व्यक्ति जिसके बारे में फेलुदा ने हमें बताया था। डॉ. मजूमदार वाकई एक बहुत अच्छे माध्यम थे। सप्रू कुछ ही मिनटों में आ गए।
‘आपने मुझे यहां क्यों बुलाया है?’ उसने पूछा।
'मैं तुम्हारे हत्या के मुकदमे में न्यायाधीश था। तुम्हारी मौत के लिए मैं जिम्मेदार था।'
‘आपने सजा सुनाई... हां, मुझे इसकी जानकारी है।’
मुझे नहीं लगता कि तुमने हत्या की है।
‘आप सही कह रहे हैं, मैंने नहीं किया। यह अपराध हरिदास भगत नाम के एक व्यक्ति ने किया था। पुलिस गलत दिशा में चली गई और मुझे गिरफ्तार कर लिया। लेकिन अब इन सब बातों का कोई महत्व नहीं है।’
‘मैं 1978 से ही चिंतित हूं। मुझे कभी शांति नहीं मिली।’
क्या आप चाहते हैं कि मैं कहूँ कि मैं आपको माफ कर देता हूँ?
'हाँ!'
'ठीक है, तो मैं करता हूँ। लेकिन मैं अपने परिवार के बारे में कुछ नहीं कह सकता। वे शायद आपको कभी माफ न कर पाएं।'
'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे सिर्फ आपकी माफी चाहिए।'
आप निश्चिंत हो सकते हैं। मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं है। अलविदा! प्रेतात्माओं से संपर्क करने का अनुष्ठान समाप्त हो गया था। श्री मल्लिक स्पष्ट रूप से राहत महसूस कर रहे थे।
हम अपने तम्बू में लौट आए। मैं इतना थका हुआ था कि तकिए पर सिर रखते ही लगभग तुरंत सो गया।

सात
अगली सुबह, फेलुदा ने मुझे जगाया। उसके चेहरे को देखकर ही मुझे पता चल गया कि कोई भयानक घटना घटित हुई है।
उन्होंने संक्षेप में कहा, 'श्री मल्लिक की हत्या कर दी गई है!'
‘क्या!’
मेरी चीख से लालमोहन बाबू जाग गए।
फेलुदा ने आगे कहा, 'कल रात, आधी रात के बाद किसी ने उसकी छाती में चाकू घोंप दिया। फिर उसने उसका सिर भी फोड़ दिया, शायद यह सुनिश्चित करने के लिए कि सब ठीक हो जाए। यह एक भयानक दृश्य है।'
लालमोहन बाबू और मैं झट से उठ खड़े हुए, जल्दी से गर्म कपड़े पहने और अपने तम्बू से बाहर आ गए। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि मैंने अभी-अभी क्या सुना है।
श्री मल्लिक के तंबू के बाहर सभी लोग जमा थे, जो हैरान और परेशान दिख रहे थे। विजय मल्लिक पुलिस को सूचना देने के लिए चले गए थे। मुख्य शहर ज़्यादा दूर नहीं था, इसलिए पुलिस के आने में ज़्यादा समय नहीं लगना चाहिए था।
शव को सबसे पहले डॉ. मजूमदार ने ही देखा था। हथियार अभी तक नहीं मिला था। मैंने मन ही मन सोचा, ‘शायद यह कभी नहीं मिलेगा। इसमें कोई शक नहीं कि इसे नदी में फेंक दिया गया होगा। पता नहीं तेज बहते पानी के साथ यह कितनी दूर तक बह चुका होगा!’
लेकिन यह सिर्फ हत्या का मामला नहीं था। श्री मल्लिक के दाहिने हाथ की तीसरी उंगली में पहनी जाने वाली एक कीमती हीरे की अंगूठी (जो उन्हें एक गुजराती ग्राहक ने दी थी) गायब थी।
फेलुदा डॉ. मजूमदार से बात कर रहे थे। उन्होंने पूछा, 'श्री मल्लिक कल रात कब सोए थे?'
'हममें से किसी के भी ऐसा करने से बहुत पहले। आम तौर पर, वह रात नौ बजे तक सो जाता था, सिवाय इसके कि अगर वह किसी प्रेतात्मा से संपर्क करने के लिए देर रात तक जागना चाहता हो।'
‘आप डॉक्टर हैं। क्या आप हमें यह नहीं बता सकते कि उसकी हत्या कब हुई होगी?’ 'अनुमान के अनुसार, उसकी हत्या सुबह दो से ढाई बजे के बीच हुई होगी। लेकिन पुलिस सर्जन मृत्यु का समय कहीं अधिक सटीक रूप से बता पाएगा।'
‘क्या आपको कल रात कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी? ऐसी कोई आवाज़ नहीं जिससे आपकी नींद में खलल पड़ा हो?’
नहीं। मैं बहुत गहरी नींद सोता हूँ, श्रीमान मित्तर। मैं रात में शायद ही कभी जागता हूँ। लेकिन मैं जल्दी उठने वाला हूँ। आज सुबह मैं हमेशा की तरह साढ़े छह बजे उठा और पता चला कि क्या हुआ था। प्रयाग मुझसे पहले उठ गया था,

लेकिन अपने स्वामी को देखे बिना ही तम्बू से बाहर चला गया था। इसलिए उसने कुछ नहीं देखा।
‘क्या आपको कोई अंदाजा है कि यह किसने किया होगा?’
नहीं, बिलकुल भी नहीं।
इसी समय, एक पुलिस जीप आकर कुछ ही दूरी पर रुक गई। विजय उससे बाहर निकला, उसके पीछे वर्दीधारी एक पुलिस अधिकारी भी था। उसने हमसे कहा, 'मैं इंस्पेक्टर सिंह हूं। मैं इस मामले की जिम्मेदारी ले रहा हूं। शव कहां है?'
विजय उसे अंदर ले गया। हम वहीं खड़े रहे। कुछ कांस्टेबल और एक फोटोग्राफर उनके पीछे अंदर गए और अपना काम शुरू कर दिया। मैंने यह सब पहले भी कई बार देखा था, इसलिए इस बार मुझे कोई जिज्ञासा नहीं हुई। वैसे भी, मुझे श्री मल्लिक का शव देखने की कोई इच्छा नहीं थी। मैं बस यही सोच रहा था कि वे निर्दोष लोगों को मौत की सजा सुनाए जाने को लेकर कितने चिंतित रहते थे, और अब वे खुद मर चुके थे। क्या उनके हत्यारे को कभी पकड़ा जाएगा और न्याय के कटघरे में लाया जाएगा?
फेलुदा एक तरफ हटकर अकेला खड़ा था। लालमोहन बाबू उससे बात करने के लिए उसके पास गए। 'क्या बात है, फेलु बाबू?'
‘मैं एक उलझन सुलझाने की कोशिश कर रहा था—अब मैं पहले से कहीं ज्यादा उलझन में हूँ। यही बात है, लालमोहन बाबू। अब देखते हैं कि पुलिस कुछ कर पाती है या नहीं।’
‘कहीं तुमने हार तो नहीं मान ली?’
‘नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं। मुझे बहुत सी ऐसी बातें पता हैं जो पुलिस को नहीं पता। लेकिन जो बात मुझे समझ नहीं आ रही, वो ये है कि क्या ये सब आपस में जुड़ी हुई हैं या ये अलग-अलग घटनाएं हैं। किसी ने मुझ पर पत्थर फेंका, और किसी ने विजय मल्लिक को धक्का दिया। क्या ये एक ही व्यक्ति था? और क्या उसी ने हत्या भी की? लेकिन अगर मुख्य मकसद चोरी था, तो कोई भी हीरे की अंगूठी चुराने के लिए अंदर आ सकता था और उसके मालिक को मारने के लिए मजबूर हो सकता था। लेकिन—’ फेलुदा रुक गए। कुछ सेकंड बाद उन्होंने कहा, ‘मैं किसी चोर द्वारा हत्या की संभावना से इनकार नहीं कर सकता, लेकिन मुझे सच में लगता है कि श्री मल्लिक के किसी परिचित ने उनकी मौत के लिए ज़िम्मेदार है।’
‘क्या वह उसे जानता है? कौन?’
‘उनके साथ यात्रा करने वाले सभी लोग, जिनमें श्री सरकार भी शामिल हैं। उनकी सोने की अंगूठी को मत भूलिएगा। उस पर “S” अक्षर खुदा हुआ है।’
मुझे समझ नहीं आया कि यह महत्वपूर्ण कैसे था, लेकिन मैं पूछ भी नहीं सका क्योंकि इसी क्षण इंस्पेक्टर सिंह और विजय मल्लिक तम्बू से बाहर निकले। इंस्पेक्टर ने पूछा, 'क्या ये तीनों तंबू एक ही व्यक्ति के हैं?' 'नहीं। पहले दो हमारे हैं। तीसरा श्री मिटर का है।'
‘श्री मिटर?’
‘प्रदोष मित्तर। वह कलकत्ता के एक जाने-माने निजी जासूस हैं।’

इंस्पेक्टर सिंह ने थोड़ा भौंहें चढ़ाईं, फिर हमारी ओर बढ़े। उन्होंने पूछा, 'श्री मिटर? क्या आप वही हैं जिन्होंने राजगढ़ हत्याकांड को सुलझाने में मदद की थी?'
'हाँ यह सही है।'
इंस्पेक्टर ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और फेलुदा से हाथ मिलाया। उन्होंने कहा, 'आपसे मिलकर खुशी हुई, महोदय। उस मामले में आपके साथ काम करने वाले अधिकारी - इंस्पेक्टर वाजपेयी - मेरे अच्छे मित्र हैं। मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। वास्तव में, उन्होंने आपकी बहुत प्रशंसा की।'
‘यह उनकी बहुत बड़ी मेहरबानी है। लेकिन मैं इस समय यहाँ महज़ संयोग से हूँ। मुझे किसी अपराध को सुलझाने के लिए नहीं बुलाया गया था। आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं आपके काम में दखल देने वाला हूँ।’
नहीं, मैं ऐसा बिल्कुल नहीं सोच रहा था। लेकिन चूंकि आप परिवार को पहले से जानते हैं, तो आप अपनी खुद की जांच क्यों नहीं करते? मुझे लगता है कि यह किसी बाहरी व्यक्ति का काम था। श्री मल्लिक को चाकू मारने वाला व्यक्ति बाएं हाथ का था। यहां मौजूद सभी लोग, जैसा कि मैं देख सकता हूं, दाएं हाथ के हैं। खैर, अगर आप चाहें तो अपनी खुद की जांच करने के लिए स्वतंत्र हैं। 'धन्यवाद। इंस्पेक्टर सिंह, मैं चुपचाप खड़ा नहीं रह सकता। देखिए, मुझ पर भी हमला हुआ था। एक बार नहीं, बल्कि दो बार।'
‘हे भगवान! मुझे तो पता ही नहीं था! वैसे,’ इंस्पेक्टर ने विजय की ओर मुड़कर पूछा, ‘आप शव का क्या करना चाहते हैं? क्या आप इसे कलकत्ता वापस ले जाना चाहेंगे?’
नहीं, ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है। मेरे परिवार में अब कोई नहीं बचा है। मेरी मां और भाई दोनों मर चुके हैं।
ठीक है, मैं यहीं अंतिम संस्कार की व्यवस्था कर दूंगा। लेकिन आपको एक बात समझनी होगी। जब तक कुछ बातें स्पष्ट नहीं हो जातीं, आपकी पार्टी का कोई भी व्यक्ति पहलगाम से बाहर नहीं जा सकता। आप सभी संदेह के घेरे में हैं, और मैं उचित समय आने पर आप सभी से प्रश्न पूछना चाहूंगा... जी हां, आप में से प्रत्येक से।

आठ
इंस्पेक्टर सिंह अगले तीन घंटे तक सभी से पूछताछ करने के लिए वहीं रुके रहे। उन्होंने सबसे पहले फेलुदा से बात की।
‘क्या आपने कल रात कुछ संदिग्ध सुना?’
नहीं। नदी का शोर लगभग हर दूसरी आवाज को दबा देता है।
'हां, यह सच है। यह तो एक अपराधी के लिए फ़ायदा है, है ना? वैसे, मैं आपके साथियों से नहीं मिला हूँ।'
'माफ़ कीजिए, मैं इनका परिचय करा देता हूँ। ये लालमोहन गांगुली हैं, ये एक लेखक हैं; और ये मेरे चचेरे भाई तपेश हैं।'
इंस्पेक्टर सिंह ने हमसे वही सवाल पूछे, फिर हमें शहर जाने की इजाज़त दे दी। हम तीनों ने एक रेस्टोरेंट ढूंढा और चाय और ऑमलेट का ऑर्डर दिया। किसी को भी नाश्ता करने का मौका नहीं मिला था।
लालमोहन बाबू ने सोचते हुए खाना चबाते हुए कहा, 'मुझे आश्चर्य इस बात का है कि जब अपराधी बेटे को नहीं मार सका, तो उसने पिता को मारने का फैसला किया।' 'यह जरूरी नहीं कि वही व्यक्ति हो। हो सकता है किसी को विजय मल्लिक से कोई दुश्मनी रही हो, लेकिन हो सकता है कि किसी बिल्कुल अलग व्यक्ति ने उसके पिता पर हमला किया हो।'
मुझे किसी पर शक है।
'कौन?'
‘डॉक्टर मजूमदार। उन्हें डॉक्टर, वैज्ञानिक माना जाता है; और साथ ही, वे मृतकों से बात कर रहे हैं। यह अजीब है, है ना?’
‘शायद। यह सच है कि उसके पास सबसे अच्छा मौका था, क्योंकि वह मृतक से कुछ ही फीट की दूरी पर सोया था। लेकिन उसका मकसद क्या हो सकता था? हीरे की अंगूठी चुराना? अगर ऐसा है, तो उसे पैसों की सख्त जरूरत होगी। लेकिन ऐसा कोई संकेत नहीं है।’
‘विजय मल्लिक के बारे में क्या?’
‘इसमें उसे बहुत फायदा होगा, इसमें कोई शक नहीं है। श्री मल्लिक काफी धनी थे, और विजय को उनकी सारी संपत्ति मिल जाएगी—जब तक कि श्री मल्लिक ने वसीयत बनाकर अपना पैसा किसी और को न दे दिया हो।’
लेकिन विजय अपने पिता को क्यों मारना चाहेगा? उसके पास अच्छी नौकरी है, वह ठीक-ठाक कमाता है। उसे इतनी बड़ी रकम की ज़रूरत क्यों होगी? मेरा मतलब है, किसी दूसरे इंसान को मारना कोई बच्चों का खेल तो नहीं है, है ना?
'नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है, और आपकी तरह, मुझे भी समझ नहीं आ रहा कि विजय के पास ऐसा कोई ठोस मकसद क्या हो सकता था।'
‘सुशांत सोम? उनका क्या हुआ?’

'योग्य और कुशल, एक ऐसा व्यक्ति जिस पर श्री मल्लिक काफी हद तक निर्भर रहते थे। इसमें भी कोई स्पष्ट मकसद नजर नहीं आता।'
तो फिर... मान लीजिए कि यह बदला लेने का मामला था? श्री मल्लिक के तो निश्चित रूप से बहुत सारे दुश्मन होंगे?
'सच है। मैं भी यही सोच रहा था। जरा सोचिए कि उसने कितने लोगों को फांसी पर चढ़ाया था।'
लेकिन... खैर, कम से कम उसके बेटे के मामले में तो बदला लेने की संभावना को खारिज किया जा सकता है, मुझे लगता है।
'बिल्कुल, जिससे हम फिर से वहीं पहुँच जाते हैं जहाँ से शुरू किया था।'
उस दोपहर के भोजन के बाद, फेलुदा ने कहा कि वह एक और सैर पर जाना चाहता है, इस बार मुख्य शहर में। केवल लंबी सैर ही उसके दिमाग को तरोताज़ा कर सकती थी।
‘फेलू बाबू, अपना हथियार अपने पास रखना, भले ही तुम सिर्फ शहर जा रहे हो,’ लालमोहन बाबू ने उसे सलाह दी।
हम फिर से नदी किनारे जाकर बैठ गए। श्री सोम भी आकर हमारे साथ बैठ गए।
उन्होंने परेशान लहजे में कहा, 'अचानक आई मुसीबत, है ना?'
‘जी हाँ, कृपया बैठ जाइए,’ मैंने उन्हें कुर्सी देते हुए कहा। उन्होंने जो कहा था वह बिलकुल सही था। हम सब अभी भी सदमे में थे।
‘इंस्पेक्टर क्या कहता है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
उन्हें लगता है कि शायद किसी चोर ने ही ये चोरी की है। आप जानते हैं, वो अंगूठी बहुत महंगी थी। उसमें एक बड़ा हीरा था, जिसके चारों ओर पन्ना जड़े थे। हालांकि पहलगाम एक छोटा शहर है, फिर भी यहाँ चोरियाँ होती रहती हैं। जब से यहाँ पर्यटकों की संख्या बढ़ने लगी है, तब से ये घटनाएँ बढ़ रही हैं। तीस साल पहले तक तो ये बिल्कुल शांत और सुरक्षित इलाका था।
क्या आप अपने तंबुओं तक ही सीमित हैं?
'नहीं, हमें शहर में जाने की अनुमति है, लेकिन हम पहलगाम नहीं छोड़ सकते।' ‘अंतिम संस्कार कब है?’
'यह शाम।'
फेलुदा शाम पांच बजे लौटा। उसके जाने के दौरान मुझे चिंता सता रही थी, लेकिन उसने कहा कि अब जब पुलिस इस मामले में शामिल हो गई है, तो उसके लिए बाहर निकलना ज़्यादा सुरक्षित है। जिसने भी उस पर हमला किया था, वह पुलिस के हाथों पकड़े जाने का जोखिम नहीं उठाएगा।
‘यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई, फेलू बाबू, लेकिन क्या आपकी लंबी पैदल यात्रा से आपको फायदा हुआ?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
'हां, बिल्कुल। लेकिन मुझे श्रीनगर वापस जाना होगा, वरना मैं इस मामले को खत्म नहीं कर पाऊंगा।'
'आप कब जाना चाहते हैं?'
'कल।'
'हमारे बारे में क्या है?'

‘आप दोनों यहीं रुकिए। मुझे उम्मीद है कि मैं कुछ दिनों में वापस आ जाऊँगा। किसी बात की चिंता मत कीजिए। आप इससे ज़्यादा खूबसूरत जगह पर हो ही नहीं सकते, है ना?’
नहीं, लेकिन आपको श्रीनगर जाने की इतनी जल्दी क्यों है? क्या आपको ज्ञान प्राप्त हो गया है?
'हां। मैं सचमुच अंधा हो गया था, मुझे इसे पहले ही देख लेना चाहिए था।' लेकिन फिर भी आंशिक अंधेरा तो है ही, है ना?
'जी हां, और इसीलिए मुझे श्रीनगर वापस जाना होगा। लेकिन जाने से पहले मुझे कुछ सवाल पूछने हैं। चलिए प्रयाग से शुरू करते हैं।'
श्री सोम अपने तम्बू में गए और प्रयाग को लेकर वापस आए। फिर हम अपने तम्बू में चले गए।
‘Have a seat, Prayag,’ Feluda said. Prayag sat down.
मैं आपसे कुछ सवाल पूछने जा रहा हूँ। मुझे ईमानदार और सही जवाब चाहिए। ठीक है?
'जी श्रीमान।'
‘आप मल्लिक परिवार के लिए कितने समय से काम कर रहे हैं?’
‘पांच साल।’
'पहले तुम्हारी जगह क्या थी?'
‘श्री जैकब के साथ। मैं उनका सामान ढोने वाला था। वे पार्क स्ट्रीट में रहते थे।’
‘श्री मल्लिक ने आपको कैसे प्राप्त किया?’
'श्री जैकब इंग्लैंड जा रहे थे। उन्हें अब मेरी जरूरत नहीं थी। इसलिए उन्होंने श्री मलिक को एक पत्र लिखा और मैंने वह पत्र उन्हें पहुंचा दिया।'
‘याकूब और मल्लिक एक दूसरे को कैसे जानते थे?’
वे दोनों एक ही क्लब में जाते थे।
'आपका पूरा नाम क्या है?'
‘Prayag Mishir.’
‘आपके परिवार में और कौन-कौन है?’
‘कोई नहीं। मेरी पत्नी मर चुकी है। मेरी दो बेटियां हैं, लेकिन उनकी शादी हो चुकी है। मैं अकेला रहता हूं।’
‘ठीक है। क्या आपको कल रात कोई शोर नहीं सुनाई दिया?’
'नहीं, महोदय।'
‘तुम्हारे मालिक की हत्या किसने की होगी?’
'मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है, महोदय। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा हो सकता है।'
‘बहुत अच्छा, अब आप जा सकते हैं।’
Prayag left. Feluda got Mr Som to call Dr Majumdar.
क्या आपको कुछ प्रश्न पूछने में कोई आपत्ति होगी?
'नहीं, आगे बढ़ो।'

‘आप डॉक्टर हैं। क्या आपने वाकई श्री मल्लिक के मृतकों से संपर्क करने के तरीके को सही ठहराया था?’ डॉ. मजूमदार ने सिर हिलाया। ‘नहीं, मैंने बिल्कुल भी नहीं। मैंने उन्हें कई बार कहा था कि इन मामलों में दखल न दें। मैंने उन्हें यह भी समझाया था कि न्यायाधीश भी एक इंसान ही होते हैं। अगर उन्होंने फैसला सुनाने में कोई गलती की है, तो उन्हें इस बात को लेकर परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। जो हो गया सो हो गया।’
'यह सच है। लेकिन आपको कब एहसास हुआ कि आपके पास एक माध्यम के रूप में कार्य करने की यह विशेष शक्ति है?'
'कई साल पहले, कम से कम पच्चीस साल पहले।'
‘क्या आपको कोई अंदाजा है कि उसकी हत्या किसने की होगी?’
नहीं, बिलकुल भी नहीं।
आप उनके बेटे के बारे में क्या सोचते हैं?
‘विजय? जब वह छोटा था तो बहुत सारी मुसीबतों में फंस गया था—नशीली दवाओं वगैरह के चक्कर में। लेकिन बाद में—चाहे किसी साधु के प्रभाव में या किसी और वजह से, मुझे नहीं पता—वह सुधर गया और अब एकदम सामान्य जीवन जी रहा है।’ क्या जुआ खेलना उसकी कमजोरियों में से एक नहीं है?
‘मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता, श्रीमान मिटर। मैंने अपने जीवन में कभी जुआ नहीं खेला। मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं पता।’
‘बहुत खूब। विजय कहाँ काम करता है?’
‘चटर्जी एंड कंपनी, आयात और निर्यात।’
‘ठीक है। धन्यवाद, डॉ. मजूमदार। अभी के लिए बस इतना ही।’
डॉक्टर मजूमदार अपने तम्बू में लौट गए। श्री सोम ने फेलुदा की ओर जिज्ञासा भरी नजरों से देखा।
‘मैं अब श्री सरकार से बात करना चाहता हूँ,’ फेलुदा ने कहा। श्री सोम बेहद चौंक गए।
‘Mr Sarkar?’
‘आपको इसमें आश्चर्य क्यों हो रहा है?’
‘खैर, वह तो बाहरी व्यक्ति है, है ना? मेरा मतलब है, वह बस संयोगवश हमारे साथ था। वह पहले श्री मल्लिक या हममें से किसी को नहीं जानता था।’
'ऐसा हो सकता है। लेकिन आपको कैसे पता कि उसे पैसों की ज़रूरत नहीं है? अगर किसी को पैसों की सख्त और बेताब ज़रूरत हो तो कोई भी कहीं भी हत्या कर सकता है।'
‘ठीक है, मैं जाकर उसे ले आता हूँ।’
श्री सरकार कुछ ही मिनटों में आ गए।
'कृपया बैठ जाइए,' फेलुदा ने उससे कहा।
श्री सरकार ने उन्हें दी गई कुर्सी पर बैठते हुए कहा, 'मैं यहां छुट्टी मनाने आया था, बस मौज-मस्ती करने। किसे पता था कि ऐसी भयानक त्रासदी मेरा इंतजार कर रही है?'
'सच है। लेकिन जो हो चुका है उसे स्वीकार करने के अलावा और कुछ किया नहीं जा सकता, है ना?'
‘आप सही कह रहे हैं। आप मुझसे क्या जानना चाहते हैं?’

‘जब आपने कश्मीर छोड़ा तब आपकी उम्र कितनी थी?’
'बारह।'
‘आप सीधे कलकत्ता चले गए?’
'हाँ।'
क्या आपके पिता ने कलकत्ता में भी होटल मैनेजर के रूप में काम किया था? 'हाँ।'
'कौंन सा होटल?'
‘द कलकत्ता होटल।’
‘क्या आप स्नातक हैं?’
‘बी कॉम।’
'आप जीविका के लिए क्या करते हैं?'
मैं एक बीमा कंपनी में काम करता हूँ—यूनिवर्सल इंश्योरेंस। इसका कार्यालय कलकत्ता में 5 पोलॉक स्ट्रीट पर स्थित है।’
‘क्या आप श्री मल्लिक को पहले से जानते थे?’
'अरे नहीं। मुझे उनसे कश्मीर पहुंचने के बाद ही पता चला। मेरी मुलाकात विजय से दिल्ली से आने वाले विमान में हुई और मुझे पता चला कि हम दोनों में कई बातें समान हैं। इसलिए हम जल्दी ही दोस्त बन गए।'
क्या आपको जुआ खेलना पसंद है?
'हां, आप ऐसा कह सकते हैं, लेकिन यह मेरे लिए कोई जुनून नहीं है। विजय की तरह नहीं।'
आपने कश्मीर आने का फैसला क्यों किया?
'यह देखने के लिए कि इसमें कितना बदलाव आया है। इसकी तुलना अपने बचपन की यादों से करने के लिए।'
आप यहां कितने दिन बिताने का इरादा रखते हैं?
'शुरू में दस दिन का प्लान था। लेकिन अब भगवान ही जाने हमें यहां कितने दिन रुकना पड़ेगा।'
‘क्या मैं आपकी पहनी हुई अंगूठी देख सकता हूँ?’
'निश्चित रूप से।'
श्री सरकार ने अपनी अंगूठी उतारकर फेलुदा को दे दी। वह सोने की बनी थी। उस पर नीले रंग का एक षट्भुज बना हुआ था और उसके बीच में सफेद रंग से 'S' अक्षर खुदा हुआ था। फेलुदा ने उन्हें धन्यवाद दिया और अंगूठी लौटा दी।
'श्रीमान सरकार, मेरे पास आपसे पूछने के लिए और कोई प्रश्न नहीं है।' 'धन्यवाद।'

नौ
अगले दिन नाश्ते के तुरंत बाद फेलुदा ने टैक्सी लेकर श्रीनगर के लिए प्रस्थान किया। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं परसों वापस आ जाऊंगा, लेकिन इसमें दो दिन की देरी हो सकती है। इसलिए चिंता मत करो।'
इंस्पेक्टर सिंह सुबह नौ बजे अपनी जीप में पहुंचे और बाकी लोगों से कुछ देर बात करने गए। फिर वे हमारे तंबू में आ गए।
‘मिस्टर होम्स कहाँ हैं?’ उसने मुस्कुराते हुए पूछा।
मैंने उसे बताया, 'वह अभी श्रीनगर के लिए रवाना हुए हैं।'
‘इस मामले पर काम करने के लिए?’
'हाँ।'
लेकिन क्यों? यह मामला तो आसान है, बिलकुल स्पष्ट है।
'कैसे?'
‘यह सब उस भारवाहक ने किया। उसे मौका मिला था। वह उसी तंबू में सो रहा था, है ना? उस हीरे की अंगूठी ने उसे ज़रूर ललचाया होगा। आख़िरकार, एक भारवाहक कितना कमाता है?’
‘क्या आप उसे गिरफ्तार करने जा रहे हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
अभी मैं उसे आगे की पूछताछ के लिए पुलिस स्टेशन ले जा रहा हूँ। मुझे पता चल गया है कि वह बाएं हाथ से लिखता है। मैंने उससे अपना नाम लिखने को कहा। उसने बाएं हाथ का इस्तेमाल किया। फिर भी, वह अपने मालिक की हत्या करने से इनकार कर रहा है। इसलिए मैं उसे ले जा रहा हूँ।
‘वह अंगूठी भी बरामद करनी होगी,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
'हां, मुझे पूरा यकीन है कि जब हमें उससे ठीक से बात करने का मौका मिलेगा, तो वह हमें बता देगा कि उसने इसे कहां छिपाया है।'
क्या फेलुदा का श्रीनगर जाना पूरी तरह से अनावश्यक था? समय की सरासर बर्बादी? मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मामला उतना ही सरल था जितना इंस्पेक्टर सिंह ने बताया था। अगर ऐसा होता, तो फेलुदा इतनी परेशानी क्यों उठाता? मुझे पता था कि वह श्रीनगर सिर्फ इसलिए गया था ताकि वहां से कलकत्ता फोन कर सके। कलकत्ता में उसके कई जान-पहचान वाले थे जो उसे मनचाही जानकारी दे सकते थे।
साथ ही, क्या इंस्पेक्टर ने यह नहीं कहा था कि प्रयाग बाएं हाथ से लिखता है? लेकिन क्या वह वाकई इतना मूर्ख हो सकता था कि उसे लगा कि वह बच जाएगा? क्या उसे यह नहीं पता था कि वह तुरंत संदेह के घेरे में आ जाएगा? इंस्पेक्टर सिंह कुछ ही मिनटों में प्रयाग को लेकर चले गए। मुझे उस आदमी पर बहुत दया आई क्योंकि वह डरा हुआ लग रहा था और उसकी आँखों में आँसू थे। मैं अच्छी तरह जानता था कि पुलिस किसी संदिग्ध से कबूलनामा निकलवाने के लिए क्या-क्या कर सकती है। मैंने फेलुदा को इस मामले पर कई बार खेद व्यक्त

करते सुना था। उन्होंने मुझसे कहा था, 'पुलिस अक्सर अपने काम में बहुत अच्छी और समर्पित होती है, लेकिन उनमें दया नहीं होती।' लेकिन कभी-कभी उनके पास कोई विकल्प नहीं होता। अगर कोई महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करने के लिए सख्त कार्रवाई ज़रूरी हो, तो उन्हें निर्दयी होने के लिए कोई कैसे दोषी ठहरा सकता है? निश्चित रूप से, कुछ खास परिस्थितियों में, पुलिस एक निजी जासूस से कहीं अधिक प्रभावी ढंग से काम कर सकती है।
श्री सोम ने हमसे दोबारा मुलाकात की। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि श्री मित्तर श्रीनगर गए हैं।'
‘हां,’ मैंने उत्तर दिया।
मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह बिना पूछे भी हमारे लिए कितना कुछ करने को तैयार है।
‘वह पूछे जाने का इंतजार नहीं करेगा। उसने इस पूरे मामले को एक चुनौती के रूप में लिया है। वह किसी अनसुलझे रहस्य का सामना करने को बर्दाश्त नहीं कर सकता और इसकी तह तक पहुंचने के लिए कुछ भी करेगा।’
श्री सोम ने सिर हिलाया। थोड़ी देर बाद, लालमोहन बाबू ने पूछा, 'क्या आपने श्री मल्लिक की जीवनी लिखना शुरू कर दिया था?'
'जी हां। श्री मल्लिक मेरे लेखन की जांच और सुधार कर रहे थे, और हम काफी अच्छी प्रगति कर रहे थे। यह एक बहुत ही रोचक पुस्तक होती।'
‘क्या अब पूरी परियोजना को ही रद्द कर दिया जाएगा?’
'हां, मुझे नहीं लगता कि इसके अलावा और कुछ किया जा सकता है।'
‘मुझे बताओ, क्या तुम्हें लगता है कि प्रयाग ने यह किया?’
नहीं, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि उसमें इतनी हिम्मत होगी। लेकिन पुलिस...
क्या आपको श्री मिटर पर हुए हमले के बारे में पता था?
‘क्या! नहीं, मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था। क्या हुआ?’
'किसी ने उसे किसी भारी वस्तु से मारा, शायद पत्थर से। सौभाग्य से, उसे ज्यादा चोट नहीं आई। लेकिन यह स्पष्ट है कि किसी को उसकी यहाँ मौजूदगी से आपत्ति है, और वे उसे रास्ते से हटाना चाहते हैं।'
वह पुलिस सुरक्षा क्यों नहीं मांगता?
'नहीं, वह ऐसा करने के बजाय मरना पसंद करेगा, हालांकि वह पुलिस की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहेगा।'
‘क्या तुम अब भी पोकर खेल रहे हो?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
'अरे नहीं। हममें से कोई भी श्री मल्लिक की मृत्यु के अलावा कुछ और नहीं सोच पा रहा है। कार्ड की बात तो हम भूल ही गए।'
फेलुदा अगले दिन नहीं लौटा। लालमोहन बाबू और मैं शिकारगाह झील और एक पुराने शिव मंदिर को देखने निकल पड़े। हम दोनों को लगा कि अपने तम्बू से दूर रहना ही बेहतर है। श्री मल्लिक की मृत्यु का दुख अभी भी सबके मन पर छाया हुआ था। ऐसे गमगीन वातावरण में हमें घुटन महसूस हो रही थी।
तीसरे दिन, जब मैं सोच ही रहा था कि हम अपना समय कैसे व्यतीत करें, तभी लगभग दस बजे फेलूदा टैक्सी से आ गए। लालमोहन बाबू और मैं उत्सुकता से उनका स्वागत करने बाहर गए और उनसे सवाल पूछने लगे। उन्होंने हाथ उठाकर कहा,

'धैर्य रखिए, धैर्य रखिए। आपको इसका फल अवश्य मिलेगा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ।'
लालमोहन बाबू ने विनती करते हुए कहा, 'बस बता दीजिए कि आपका दिमाग अब शांत है या नहीं।' 'हाँ, लेकिन इस उलझी हुई गुत्थी को सुलझाना आसान नहीं था। यह बहुत ही जटिल मामला है।'
‘आप हमें सब कुछ कब बताएंगे?’
मुझे पहले इंस्पेक्टर से बात करनी होगी।
‘उसने हत्यारे को पकड़ लिया है।’
‘क्या! किसे गिरफ्तार किया गया है?’
'प्रयाग.
हे भगवान! मुझे एक पल भी बर्बाद नहीं करना चाहिए। मैं अभी पुलिस स्टेशन जा रहा हूँ।
फेलुदा तुरंत निकल गया। जब तक वह लौटा, दोपहर के भोजन का समय लगभग हो चुका था।
‘हमारी बैठक तीन बजे दूसरे तंबू में है,’ उसने घोषणा की। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। किसी मामले के अंत में फेलुदा के खुलासे हमेशा बेहद नाटकीय होते थे। केवल वही लोग समझ सकते थे जिन्होंने उसे पहले ऐसा करते देखा था कि मैंने ऐसी प्रतिक्रिया क्यों दी।
तीन बजने के कुछ ही देर बाद एक पुलिस जीप मौके पर पहुंची। इंस्पेक्टर सिंह जीप से उतरे और उन्हें फेलुदा मिला।
‘क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि एक पुलिस इंस्पेक्टर को अपराध की कहानियों में दिलचस्पी हो सकती है?’
‘तुम्हारा मतलब है कि तुमने उन्हें पढ़ा है?’ फेलुदा हँस पड़ा।
'जी हां, मुझे जासूसी उपन्यास बेहद पसंद हैं। मुझे अब कई मशहूर कहानियाँ याद आ रही हैं, श्री मिटर, हालांकि मुझे इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि आप कुछ ही मिनटों में क्या खुलासा करने वाले हैं।'
तुम जल्द ही सीख जाओगे।
हम दूसरे बड़े तंबू में गए। वहाँ पहले से ही सभी लोग मौजूद थे। विजय मल्लिक, श्री सोम, श्री सरकार और डॉ. मजूमदार कुर्सियों पर बैठे थे। प्रयाग एक कोने में खड़ा था। वह थका हुआ लग रहा था। पुलिस ने उससे पूछताछ में स्पष्ट रूप से गहन छानबीन की थी।

दस
फेलुदा अपनी कुर्सी से उठे और उपस्थित लोगों पर एक नज़र डाली। फिर उन्होंने एक जग से अपने लिए एक गिलास पानी डाला, थोड़ा पानी पिया और बोलना शुरू किया।
श्री मल्लिक अब हमारे बीच नहीं हैं। मैं उन्हीं के बारे में बात करके शुरुआत करने जा रहा हूँ। सिद्धेश्वर मल्लिक ने तीस वर्षों तक न्यायाधीश के रूप में कार्य किया, लेकिन खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें सेवानिवृत्त होना पड़ा। लेकिन यह भी संभव है कि उन्होंने कानून और न्याय की पूरी व्यवस्था में अपना विश्वास खो दिया था। उन्होंने मृत्युदंड की वैधता पर सवाल उठाना शुरू कर दिया था। मैं इस बात पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ कि उन्होंने जो सोचा वह सही था या नहीं। मैं केवल घटित घटनाओं का वर्णन करने जा रहा हूँ।
श्री मल्लिक डायरी रखा करते थे। उनमें कुछ खास बात थी। वे जिस दिन मौत की सजा सुनाते थे, उस दिन को सजा पाए व्यक्ति के नाम के आगे लाल क्रॉस का निशान लगाकर चिह्नित करते थे। अगर उन्हें अपने फैसले पर पूरी तरह से संदेह होता था, तो वे उस क्रॉस के आगे प्रश्नचिह्न लगा देते थे। मैंने श्री मल्लिक की डायरी देखी हैं। उनमें छह प्रश्नचिह्न थे, जिसका मतलब था कि उन्हें छह लोगों पर संदेह था। वे निर्दोष हो सकते थे, लेकिन श्री मल्लिक को उन्हें मौत के घाट उतारना पड़ा।
अब मैं आपका ध्यान किसी और बात की ओर दिलाना चाहता हूँ। श्री मल्लिक ने आरोपियों के बारे में संदेह व्यक्त किया था, लेकिन उनकी डायरियों में मुझे कहीं भी इन व्यक्तियों के परिवार या मित्रों का कोई ज़िक्र नहीं मिला। मुझे नहीं लगता कि उन्होंने कभी माता-पिता, पत्नियों, बच्चों या उन लोगों की भावनाओं के बारे में सोचा होगा जो इन व्यक्तियों को करीब से जानते थे। लेकिन यह कल्पना करना मुश्किल नहीं है कि इन लोगों को कितना दर्द सहना पड़ा होगा।
जैसे ही मुझे इस बात का एहसास हुआ, मेरे मन में यह सवाल उठने लगा कि कहीं श्री मल्लिक की हत्या इन्हीं लोगों में से किसी ने तो नहीं की होगी, जिन्हें शायद लगा हो कि एक निर्दोष व्यक्ति की मौत के लिए वे जिम्मेदार हैं। बदले की भावना कई सालों तक जीवित रह सकती है। जितना ज्यादा मैंने इस बारे में सोचा, उतना ही यह बात सच लगने लगी।
अब सवाल यह था: क्या यहां मौजूद लोगों में से कोई भी उस व्यक्ति का रिश्तेदार या दोस्त हो सकता है जिसे हत्या के आरोप में फांसी दी गई हो, भले ही वह असली अपराधी न रहा हो?
डॉ. मजूमदार को तुरंत ही इस सूची से बाहर किया जा सकता था, क्योंकि वे पंद्रह वर्षों से श्री मल्लिक के चिकित्सक थे। इससे मेरे पास चार लोग बचे:

श्री सोम, विजय मल्लिक, श्री सरकार और प्रयाग। विजय को सूची से हटाया जा सकता था क्योंकि उनके किसी भी मित्र को मृत्युदंड नहीं दिया गया था। यही नियम श्री सोम पर भी लागू होता था। इसलिए, अंत में मेरे पास केवल श्री सरकार और प्रयाग ही बचे। अब मैं प्रयाग से एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। प्रयाग चुपचाप खड़ा रहा। फेलुदा ने सीधे उसकी ओर देखा। ‘प्रयाग,’ उसने कहा, ‘पिछले दिन जब तुम नदी में हाथ धो रहे थे, तो मैंने देखा कि तुम्हारी दाहिनी बांह पर अंग्रेजी वर्णमाला के दो अक्षर गुदे हुए थे: “एचआर”। इन अक्षरों का क्या अर्थ है?’
प्रयाग ने घबराकर धीरे से कहा, 'इनका कोई मतलब नहीं है, महोदय। मैं अपनी बांह पर टैटू बनवाना चाहता था। जिसने टैटू बनाया, उसने बस ये अक्षर बना दिए, बस इतना ही।'
'क्या आप मुझे बता रहे हैं कि ये आपके नाम के शुरुआती अक्षर नहीं हैं? इनका आपके नाम से कोई लेना-देना नहीं है?'
'नहीं, महोदय। मेरा नाम प्रयाग मिशिर है।'
‘सच में? मान लो मैं कहूँ कि ऐसा नहीं है? अगर कोई तुम्हें प्रयाग कहकर बुलाता है तो तुम अक्सर जवाब नहीं देते। लेकिन तुम सच में बहरे तो नहीं हो, है ना? बाकी समय तो तुम बिल्कुल ठीक से सुन सकते हो। ऐसा क्यों है?’
'मेरा नाम प्रयाग मिश्र है, महोदय। यही मेरा नाम है।'
‘नहीं!’ फेलुदा चिल्लाया, ‘मुझे बताओ कि “R” का मतलब क्या है। तुम्हारा उपनाम क्या है?’
‘मैं क्या कहूँ?’
'सच बोलो। यह जीवन और मृत्यु का मामला है, क्या तुम नहीं देख सकते? झूठ बोलना बंद करो।'
'तो फिर, महोदय, आप सबको वह सब बता दीजिए जो आप जानते हैं।'
‘बहुत खूब। “आर” का मतलब राउत है। अब अपना पूरा नाम बताइए।’ अचानक प्रयाग फूट-फूट कर रोने लगे। ‘वह... वह मेरा इकलौता बेटा था, श्रीमान,’ वे सिसकते हुए बोले, ‘और उसने किसी की हत्या नहीं की थी। लेकिन उसके खिलाफ मामला इतना पुख्ता था, उसे इतनी चालाकी से फंसाया गया था कि उसे मरना ही पड़ा। मेरा इकलौता बेटा... फांसी पर लटका दिया गया!’
आपने अभी तक हमें अपना नाम नहीं बताया है।
‘हनुमान राउत। यही मेरा असली नाम है। लेकिन... लेकिन मैंने अपने मालिक की हत्या नहीं की, न ही मैंने वह अंगूठी चुराई। मैं कसम खाता हूँ कि मैंने ऐसा नहीं किया!’
‘क्या मैंने कहा था कि तुम पर हत्या और चोरी का आरोप है? मैं तो बस तुम्हारा नाम जानना चाहता था।’
‘तो…तो कृपया, महोदय, कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए।’
‘नहीं, हनुमान राउत, तुम्हें पूरी तरह से क्षमा नहीं किया जा सकता। हमें पूरी सच्चाई बताओ।’ हनुमान राउत ने फेलुदा को खाली निगाहों से देखा।
‘यह सच है कि तुमने अपने स्वामी की हत्या नहीं की,’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘लेकिन तुमने किसी और को मारने की कोशिश की, है ना?’
'नहीं - नहीं।'

‘हाँ!’ फेलुदा ने ठंडे स्वर में कहा। ‘तुम अपने मालिक को सबक सिखाना चाहते थे, है ना? तुमने उसे अपने बेटे की मौत के लिए ज़िम्मेदार ठहराया। इसलिए तुम चाहते थे कि उसे भी वही दुख और वही दर्द महसूस हो। क्या विजय मल्लिक को मारने की कोशिश तुमने ही नहीं की थी? क्या तुमने ही उसे खिलनमर्ग की पहाड़ी से नीचे नहीं धकेला था? तुमने अपने बाएँ हाथ का इस्तेमाल किया था, है ना, जिस पर तुमने अंगूठी पहनी हुई है?’
लेकिन... लेकिन वह मरा नहीं। वह अभी भी जीवित है!
'हनुमान राउत, हत्या का प्रयास एक गंभीर अपराध है। आपको हत्या के लिए फांसी नहीं होगी, लेकिन आपने जो किया वह पूरी तरह से गलत था। आप इसके परिणामों से बच नहीं सकते।'
इसके बाद हनुमान राउत ने बोलने की कोशिश नहीं की। दो कांस्टेबल उन्हें अपने साथ ले गए। फेलुदा ने थोड़ा और पानी पिया, फिर बोलने लगे।
अब मैं किसी और मुद्दे पर आता हूँ। हनुमान राउत ने जो किया उससे कहीं अधिक गंभीर मुद्दा। जी हाँ, मैं हत्या की बात कर रहा हूँ, जानबूझकर किसी इंसान की जान लेने की। जिसने भी श्री मल्लिक की जान ली है, उसे अपनी जान देकर इसकी कीमत चुकानी होगी। इस मामले में मृत्युदंड पूरी तरह से उचित होगा। फेलुदा रुक गया। सबकी निगाहें उस पर टिकी थीं। नदी की आवाज़ के अलावा और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।
‘इस कमरे में एक व्यक्ति है जिससे मैं पहले ही बात कर चुका हूँ। लेकिन मैं उनसे कुछ और सवाल पूछना चाहता हूँ,’ फेलुदा ने आगे कहा। ‘श्रीमान सरकार!’ श्री सरकार अपनी कुर्सी पर थोड़ा हिले-डुले।
‘जी?’ उसने कहा।
आप श्रीनगर कब पहुंचे?
मैं भी आपके साथ उसी फ्लाइट से आया था।
आपकी अंगूठी पर एक "S" खुदा हुआ है। इसका क्या अर्थ है?
‘मेरा उपनाम, बेशक—सरकार।’
लेकिन श्रीमान सरकार, मैंने इंडियन एयरलाइंस से पता किया है। दिल्ली से आने वाली उस उड़ान में यात्रियों की सूची में सरकार का नाम नहीं था। उसमें एक सेन, दो सेनगुप्ता, एक सिंह और एक सप्रू थे।
लेकिन...लेकिन...
‘लेकिन क्या, श्रीमान सरकार? आपको अपना नाम बदलने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई? हमें बताइए।’ श्रीमान सरकार चुप रहे।
‘क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि मुझे क्या लगता है?’ फेलुदा ने पूछा। ‘मुझे लगता है कि तुम मनोहर सप्रू के बेटे हो। वही सप्रू जिसे श्री मल्लिक ने मौत की सजा सुनाई थी। तुम बिल्कुल कश्मीरी लगते हो। श्री मल्लिक से मिलना एक संयोग था, लेकिन जैसे ही तुमने उन्हें पहचाना, तुमने अपना नाम बदलने का फैसला किया और श्री मल्लिक के बेटे से दोस्ती कर ली। इससे तुम्हें उनके समूह के साथ आगे बढ़ने और हमला करने के लिए उपयुक्त अवसर तलाशने का मौका मिला। वह अवसर पहलगाम में आया।’
लेकिन आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? यह अपराध तो एक बाएं हाथ के आदमी ने किया था!

'श्री सप्रू, यह मत भूलिए कि मैंने आपको ताश बांटते हुए देखा है। हो सकता है कि किसी ने इस पर ध्यान न दिया हो, लेकिन मैंने आपको अपने बाएं हाथ का इस्तेमाल करते हुए देखा था।'
श्री सरकार—मेरा मतलब है सप्रू—अचानक अपना आपा खो बैठे।
‘ठीक है, मैंने उसे चाकू मारा!’ वह चिल्लाया। ‘मुझे इस बात का ज़रा भी अफ़सोस नहीं है। मेरे पिता की मौत के लिए वही ज़िम्मेदार था। मेरे पिता निर्दोष थे, लेकिन मल्लिक के कहने पर उन्हें फाँसी दी गई। उस समय मैं सिर्फ़ पंद्रह साल का था। लेकिन... एक मिनट रुको!’ सप्रू को कुछ याद आया। ‘मैंने उसकी अंगूठी नहीं चुराई। मैंने तो बस उसे मार डाला!’ उसने आगे कहा। ‘जी हां,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘अंगूठी तुमने नहीं उतारी। किसी और ने उतारी।’
कमरे में एक बार फिर सन्नाटा छा गया। फेलुदा की नज़र सप्रू से हटकर दूसरी ओर चली गई। 'विजय मल्लिक! तुम ताश में बुरी तरह हार रहे हो, है ना? मैंने कलकत्ता में पूछताछ की है। मेरे पास कई सूचना स्रोत हैं, पुलिस में मेरे दोस्त भी हैं। तुम कर्ज़ में बुरी तरह डूबे हुए हो, है ना?'
विजय ने कोई जवाब नहीं दिया।
'शायद आपको इस बात का यकीन नहीं था कि आपके पिता ने अपनी वसीयत में आपके लिए कुछ छोड़ा है या नहीं। इसलिए आपने उनकी उंगली से अंगूठी छीनने के लिए उन पर हमला किया।'
‘उसे मारा? तुम्हारा क्या मतलब है?’
‘मेरा मतलब है कि आपके पिता पर दो अलग-अलग लोगों ने हमला किया था। एक था सप्रू, दूसरा आप। उनकी मौत चाकू के घावों से हुई—इस बात के चिकित्सीय प्रमाण मौजूद हैं। इसलिए सप्रू ही उनका असली हत्यारा है। लेकिन आप कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे, इसलिए आपने किसी भारी वस्तु से उनका सिर कुचल दिया। यह अदालत को तय करना है कि आप पर चोरी या हत्या का मुकदमा चलाया जाए, लेकिन निश्चित रूप से आप दोनों को गिरफ्तार किया जाएगा।’
अब और कुछ कहने को नहीं था। इंस्पेक्टर सिंह और उनके आदमी अपराधियों को ले गए, और हम अपने तम्बू में लौट आए।
लौटकर आने पर लालमोहन बाबू ने कहा, ‘फेलू बाबू, एक बात मुझे अब भी परेशान कर रही है, और आपने इस मामले पर कोई प्रकाश नहीं डाला। आप पर एक बार नहीं, बल्कि दो बार किसने हमला किया?’
श्री गांगुली, मैंने कोई जानकारी नहीं दी क्योंकि मुझे जवाब का पक्का पता नहीं था। यह निस्संदेह तीनों दोषियों में से एक था—संभवतः प्रयाग ही था। उसे हर बार मौका मिला। वह चुपके से निकल सकता था। ऐसा लगता नहीं कि विजय मल्लिक या सप्रू अपने समूह को छोड़कर मेरा पीछा करते। खैर, अब यह बात मायने नहीं रखती। इससे मुख्य जांच पर कोई असर नहीं पड़ा। इसे मेरी गलती समझिए। ‘अरे? लेकिन ये तो अच्छी खबर है, फेलू बाबू। ये जानकर बहुत तसल्ली मिली कि आप जैसे माहिर जासूस भी कभी-कभी गलती कर सकते हैं या नाकाम हो सकते हैं।’ 'क्या आप विनम्रता दिखाने की कोशिश कर रहे हैं, लालमोहन बाबू? इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं भले ही एक बेहतरीन जासूस हूँ, लेकिन मैं कभी भी आपकी तरह नहीं लिख सकता, लाखों साल में भी नहीं।'

‘□□□□ □□ □□□ □□□□□□□!’

शकुंतला का हार

एक
‘देखो,’ लालमोहन बाबू ने कहा, ‘जैसलमेर और वहाँ के स्वर्ण किले की तुम्हारी यात्रा से मैं तुम्हारे साथ ही हूँ, लेकिन उससे पहले तुम लखनऊ और गंगटोक गए थे, है ना? मैं तुम्हें तब नहीं जानता था, इसलिए मुझे इन दोनों जगहों को देखने का मौका नहीं मिला। मुझे लखनऊ में खास दिलचस्पी है। वहाँ का इतिहास बहुत समृद्ध है। क्यों न हम इस साल पूजा की छुट्टियों में वहाँ वापस चलें?’ यह विचार हम दोनों को अच्छा लगा। फेलुदा को लखनऊ से बहुत प्यार था। पिछली बार जब हम लखनऊ गए थे, तब मैं काफी छोटा था। उस समय फेलुदा ने औरंगजेब की चोरी हुई हीरे की अंगूठी का रहस्य सुलझाया था। अगर हम दोबारा लखनऊ जाते, तो मुझे पता था कि पिछली बार से भी ज्यादा आनंद आएगा।
फेलुदा को फैसला करने में देर नहीं लगी। 'हाँ,' उसने सहमति जताई। 'मुझे मानना पड़ेगा कि लखनऊ का नाम सुनते ही मैं बहुत उत्साहित हो जाता हूँ। यह एक खूबसूरत जगह है। बताइए, देश में कितने शहरों के बीच से नदी बहती है? इसके अलावा, इसने अभी भी पुराने मुगल युग का माहौल बरकरार रखा है। नवाबों के समय के जीवन के निशान और 1857 के विद्रोह के प्रमाण भी मिलते हैं। आप सही कह रहे हैं, लालमोहन बाबू। मैं सोच रहा था कि इस साल हम कहाँ जाएँ। चलिए लखनऊ वापस चलते हैं।'
इन दिनों फेलुदा की अच्छी कमाई हो रही थी। कलकत्ता के सभी निजी जासूसों में वो सबसे प्रसिद्ध थे। उन्हें आमतौर पर हर महीने सात-आठ मामले मिलते थे और हर मामले के लिए वो दो हजार रुपये लेते थे। फिर भी, लालमोहन बाबू के आस-पास भी पहुंचना नामुमकिन था। उन्होंने एक बार हमें बताया था कि उनकी वार्षिक आय तीन लाख से अधिक थी। वो हर साल दो नई किताबें प्रकाशित करते थे और हर किताब के कई संस्करण निकलते थे।
हमने बिना देर किए सभी व्यवस्थाएँ पूरी कर लीं। फेलुदा ने दून एक्सप्रेस के तीन प्रथम श्रेणी के टिकट खरीदे। यह हावड़ा से रात 9 बजे रवाना होगी और सुबह साढ़े छह बजे लखनऊ पहुँचेगी। उन्होंने क्लार्क्स अवध होटल में हमारी बुकिंग भी करवा दी।
उन्होंने कहा, 'अगर हम किसी आरामदायक जगह पर नहीं रुकते तो हम वास्तव में आनंद नहीं ले पाते।'
‘अवध क्या है?’ लालमोहन बाबू जानना चाहते थे।
‘Avadh is the Urdu name for Ayodhya.’
‘आपका मतलब है कि लखनऊ अयोध्या में है?’
जी हाँ, महोदय। क्या आपको यह नहीं पता था? “लखनऊ” नाम “लक्ष्मण” से आया है। ‘लक्ष्मण? आपका मतलब रामायण वाले लक्ष्मण से है?’
‘जी हां। क्लार्क्स अवध लखनऊ का सबसे अच्छा होटल है। इसके पास से गोमती नदी बहती है।’

'बहुत सुंदर। इसे गोमती नदी पर बसा अवध कहा जा सकता है। क्या यहाँ ठंड होगी?'
‘एक ऊनी पुलओवर ले लें। शामें ठंडी हो सकती हैं। या फिर एक गर्म जैकेट भी चलेगी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप पश्चिमी कपड़े पहनना चाहते हैं या पारंपरिक भारतीय पोशाक पहनना चाहते हैं।’
मुझे लगता है मैं दोनों ले लूंगा।
'अच्छा।'
‘लखनऊ में बहुत सारे बंगाली रहते हैं, है ना?’
'हाँ, बिल्कुल। कुछ परिवार तो कई पीढ़ियों से वहाँ रह रहे हैं। वहाँ एक बंगाली क्लब है जहाँ हर साल दुर्गा पूजा होती है। कौन जाने, शायद आपको वहाँ ऐसे लोग भी मिल जाएँ जिन्होंने आपकी किताबें पढ़ी हों!'
'क्या आपको ऐसा लगता है? क्या मुझे अपनी नवीनतम कृति, 'शेकेन इन शंघाई' की कुछ प्रतियां ले जानी चाहिए?'
'एक दर्जन ले लो। कुछ ही पर क्यों रुकना?'
हम 5 अक्टूबर को रवाना हुए, जो शनिवार का दिन था। स्टेशन पूरी तरह से खचाखच भरा हुआ था। रेलवे अधिकारी ने हमें हमारे डिब्बे तक पहुंचाया, जो संयोगवश फेलुदा को पहचानता था। हमें चार बर्थ वाले सेक्शन में एक निचली और दो ऊपरी बर्थ दी गई थीं। हमने अधिकारी को धन्यवाद दिया और अपनी-अपनी बर्थ पर बैठ गए। चौथी बर्थ पर पहले से ही एक अधेड़ उम्र का आदमी बैठा था, जिसकी पतली मूंछें थीं। उसने हमारे लिए जगह बनाने के लिए एक तरफ हट गया। हमारे पास ज्यादा सामान नहीं था। फेलुदा और मैंने अपने कपड़े एक सूटकेस में पैक किए थे, और लालमोहन बाबू अपना मशहूर लाल चमड़े का सूटकेस लाए थे। उनके एक दोस्त ने इसे खास तौर पर उनके लिए जापान से मंगवाया था।
जब हम सब बैठ गए, तो हमारे सहयात्री ने पूछा, 'आप कितनी दूर जा रहे हैं?' ‘लखनऊ,’ लालमोहन बाबू ने उत्तर दिया। ‘आपका क्या हाल है?’
‘मैं भी लखनऊ जा रहा हूँ। मैं वहीं रहता हूँ। मेरा परिवार कई सालों से लखनऊ में बसा हुआ है—हमारी तीन पीढ़ियाँ यहीं रहती हैं। क्या आप भी छुट्टी पर हैं?’
'हाँ।'
इस बार फेलुदा बोला: ‘आपके सूटकेस पर मुझे तीन अक्षर दिख रहे हैं: एच जे बी। ये कुछ असामान्य शुरुआती अक्षर हैं। क्या आप अपना नाम पूछ सकते हैं?’ 'बिल्कुल नहीं। मेरा नाम जयंत बिस्वास है। 'एच' का मतलब हेक्टर है। मैं ईसाई हूँ। मेरे परिवार में सभी का नाम ईसाई है।'
'धन्यवाद। कृपया हमें अपना परिचय देने की अनुमति दें। मैं प्रदोष मित्तर हूं, यह मेरा चचेरा भाई तपेश है और वह मेरा दोस्त लालमोहन गांगुली है।' 'आपसे मिलकर खुशी हुई। आपने शायद मेरी सास के बारे में सुना होगा। वह मूक फिल्मों में अभिनेत्री थीं और काफी मशहूर थीं।'
'उसका क्या नाम था?'
'शकुन्तला देवी।'
‘हे भगवान!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘वह अपने ज़माने की एक बड़ी स्टार थीं। मेरे पड़ोसियों में से एक के पास बायोस्कोप पत्रिका के पुराने

अंक हैं। वह जवानी में फिल्मों के बहुत शौकीन थे। मैंने उन पुरानी पत्रिकाओं में शकुंतला देवी की तस्वीरें देखी हैं और उनके बारे में लेख भी पढ़े हैं। वह बंगाली तो नहीं थीं, है ना?’
नहीं, वह एंग्लो-इंडियन थीं। उनका असली नाम वर्जीनिया रेनॉल्ड्स था। उनके पिता, थॉमस रेनॉल्ड्स, सेना में थे। वह धाराप्रवाह उर्दू बोल सकते थे। उन्होंने एक मुस्लिम गायिका से शादी की थी। वर्जीनिया उनकी बेटी थीं। ‘बेहद दिलचस्प,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की, ‘लेकिन उन्होंने एक भी टॉकी फिल्म में काम नहीं किया, है ना?’
नहीं। भारत में बोलती फिल्में बनने से पहले ही उन्होंने एक बंगाली ईसाई से शादी कर ली थी। फिर, जब वह अपने पहले बच्चे की उम्मीद कर रही थीं, तो उन्होंने फिल्मों से संन्यास ले लिया। उनकी पहली दो बेटियां थीं, तीसरा बेटा था। मैंने 1960 में उनकी दूसरी बेटी से शादी की। मेरी पत्नी की बहन ने एक गोवावासी से शादी की। उनका भाई अविवाहित ही रहा।
फेलुदा ने फिर कहा, 'क्या एक समय महाराजा ने शकुंतला देवी को एक कीमती हार नहीं दिया था?'
जी हां, बिल्कुल सही। वो मैसूर के महाराजा थे। शकुंतला के अभिनय से वो इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने ही उन्हें वो हार भेंट किया था। उन दिनों भी उसकी कीमत एक लाख रुपये थी। लेकिन आपको इसके बारे में कैसे पता चला? शकुंतला ने तो आपके जन्म से पहले ही अभिनय करना छोड़ दिया था।
'सच है। लेकिन मैंने इसके बारे में पंद्रह साल पहले एक रिपोर्ट पढ़ी थी। यह हार चोरी हो गया था और फिर पुलिस ने इसे बरामद कर लिया था, है ना?'
‘जी हां। शकुंतला उस समय जीवित थीं। उनका निधन मात्र तीन साल पहले, अठहत्तर वर्ष की आयु में हुआ था। उनकी मृत्यु के बाद भी हार के बारे में कहानियां प्रचलित थीं। लेकिन आपको पंद्रह साल पहले पढ़ी हुई बात कैसे याद रही? आपकी याददाश्त तो बहुत तेज होगी।’
‘मुझे हमेशा से अपराध से जुड़ी खबरों में दिलचस्पी रही है। और हां, मैं आमतौर पर पढ़ी हुई बातें याद रख लेता हूं। शायद मुझे आपको पूरी सच्चाई बता देनी चाहिए। दरअसल, मेरा पेशा अपराध और अपराधियों से जुड़ा है।’
फेलुदा ने अपना एक कार्ड निकाला और जयंत बिस्वास को दिया। उसने कार्ड लेते हुए अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'एक निजी जासूस! ओह, मैं समझ गया। इसीलिए आपका नाम जाना-पहचाना लग रहा था। आपका कोई उपनाम भी होगा, है ना?'
‘हां। मेरा नाम फेलू है।’
जी हां, फेलुदा। मेरी बेटी आपकी बहुत बड़ी प्रशंसक है। उसने आपकी सारी कहानियां पढ़ ली हैं। आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई।
अब फेलुदा ने लालमोहन बाबू की ओर रुख किया। उन्होंने कहा, ‘मुझे नहीं पता कि उनका नाम लखनऊ तक पहुंचा है या नहीं, लेकिन वे बंगाल में बहुत प्रसिद्ध लेखक हैं। वे जटायु के छद्म नाम से लिखते हैं।’
‘सच में? किसने सोचा था कि आज रात मुझे एक ही डिब्बे में दो मशहूर हस्तियों से मिलने का मौका मिलेगा? आप लखनऊ में कहाँ ठहरेंगे?’
‘The Clarks Avadh.’

‘ठीक है। मैं नदी के उस पार, बादशाह बाग में रहता हूँ। मैं लखनऊ में आपसे संपर्क करूँगा। आप सभी को हमारे साथ भोजन करने आना चाहिए। मेरी पत्नी बहुत अच्छी खाना बनाती है, और मुगलई खाना उसकी खासियत है। और हाँ, मेरी बेटी अपने हीरो से मिलकर बहुत खुश होगी।’
‘धन्यवाद,’ फेलुदा ने कहा। ‘हमें आने में बहुत खुशी होगी। शायद हम वह प्रसिद्ध हार देख सकें?’
'ओह, बिल्कुल। इसमें कोई दिक्कत नहीं है, क्योंकि यह मेरे पास है। मतलब, मेरी पत्नी के पास है।'
‘यह कुछ अजीब है, है ना? यह तो शकुंतला की बड़ी बेटी को दिया जाना चाहिए था? क्या आपने यह नहीं कहा था कि आपने छोटी बेटी से शादी की है?’
जी हाँ। कारण बहुत सरल है। वर्जीनिया—मेरा मतलब शकुंतला—मेरी पत्नी सुनीला को बहुत पसंद करती थी। सुनीला बेहद प्रतिभाशाली है। एक प्रतिभावान अभिनेत्री, वह फिल्मों में जाकर अपनी माँ की तरह एक मशहूर स्टार बन सकती थी। लेकिन उसने इसके बजाय एक साधारण गृहिणी बनना चुना।
‘सुनीला? क्या उसका कोई ईसाई नाम नहीं है?’
'जी हां। उनका पूरा नाम पामेला सुनेला है।'

दो
मैं रात दस बजे सो गया और सुबह साढ़े छह बजे उठा। बक्सर पहुँचने पर नाश्ता परोसा गया। हमें पौने नौ बजे मुगलसराय पहुँचना था। हमारे सहायक ने बताया कि दोपहर का भोजन साढ़े बारह बजे परोसा जाएगा। तब तक हम प्रतापगढ़ पहुँच चुके होंगे।
श्री बिस्वास सुबह जल्दी उठने वाले निकले। नाश्ते के बाद उन्होंने कहा, 'मेरे एक परिचित बगल वाले डिब्बे में यात्रा कर रहे हैं। चलिए, जाकर उनसे मिल लेता हूँ।'
मैंने देखा कि लालमोहन बाबू ने दाढ़ी बनवा ली थी और काफी तरोताजा दिख रहे थे। वे आजकल आयातित रेज़र इस्तेमाल कर रहे थे। उनके एक दोस्त ने काठमांडू से उनके लिए बीस रेज़र मंगवाए थे। हर रेज़र तीन-चार बार दाढ़ी बनाने के बाद फेंकना पड़ता था।
‘जब ये खत्म हो जाएँगे तो तुम क्या करोगे?’ फेलुदा ने उससे पूछा। ‘क्या तुम वापस साधारण भारतीय तलवारों का इस्तेमाल करोगे?’
‘जी नहीं, साहब,’ लालमोहन बाबू मुस्कुराए। ‘मुझे दाढ़ी बनाने में काफी मजा आता है। मैं न्यू मार्केट से विल्किंसन ब्लेड खरीदता हूँ।’
लेकिन यह तो बहुत महंगा है।
'हां, लेकिन मुझे और कोई खर्चा तो नहीं उठाना पड़ता, है ना? मैं अकेला रहता हूं, इसलिए मैं अपना पैसा खुद पर खर्च करना पसंद करता हूं।'
‘लालमोहन बाबू, हम आपके खर्चों में काफी योगदान देते हैं। सोचिए हम आपकी कार का कितनी बार इस्तेमाल करते हैं?’
अरे, ये तो कोई बड़ी समस्या नहीं है। हम तीन मस्क eteers हैं, याद है ना? उनमें से एक अपनी कार में कैसे सफर कर सकता है, बाकी लोग टैक्सी ढूंढते रह जाएं? मैंने इससे ज्यादा हास्यास्पद बात कभी नहीं सुनी।
फेलुदा ने एक चारमीनार जलाई और टहलने के लिए गलियारे में चले गए। पाँच मिनट में लौटकर उन्होंने कहा, 'मैंने श्री बिस्वास और एक अन्य व्यक्ति को पहले कमरे में गहरी बातचीत करते हुए पाया। वह व्यक्ति एंग्लो-इंडियन प्रतीत हो रहा था, हालाँकि उसका रंग उतना गोरा नहीं था।'
‘क्या तुमने सुना कि वे क्या कह रहे थे?’ लालमोहन बाबू ने उत्सुकता से पूछा।
मैंने सिर्फ वही सुना जो दूसरा आदमी कह रहा था। उसने कहा, "मैं तुम्हें सिर्फ तीन दिन दे सकता हूँ।" बस इतना ही।
क्या यह धमकी जैसा लग रहा था?
'कहना मुश्किल है। चलती ट्रेन में अक्सर आवाज ऊंची करनी पड़ती है। बिल्कुल हानिरहित शब्द भी धमकी जैसे लग सकते हैं।'

कुछ देर बाद, श्री बिस्वास उस व्यक्ति के साथ वापस आए जिससे वे बात कर रहे थे। उन्होंने फेलुदा से कहा, 'मुझे लगा कि आप श्री सुकियस से मिलना चाहेंगे। वे लखनऊ के एक जाने-माने व्यापारी और कला के पारखी हैं।'
‘मुझे उम्मीद है कि हम लखनऊ में फिर मिलेंगे। श्री बिस्वास और मैं पुराने दोस्त हैं,’ श्री सुकियस ने फेलुदा से हाथ मिलाते हुए कहा। हमारा परिचय होने के तुरंत बाद ही वे चले गए।
अपनी सीट पर लौटते हुए फेलुदा ने श्री बिस्वास की ओर मुड़कर कहा, ‘आपने हमें बताया था कि आपकी सास का असली नाम वर्जीनिया रेनॉल्ड्स था। क्या आपको उनके परिवार के इतिहास के बारे में कुछ पता है? वे भारत में कितने समय से रह रहे हैं?’
वर्जिनिया के दादा, जॉन रेनॉल्ड्स, 1827 में भारत आए थे। उस समय उनकी उम्र उन्नीस वर्ष थी। वे बंगाल रेजिमेंट में भर्ती हुए। 1857 के विद्रोह के दौरान, उनकी तैनाती लखनऊ में हुई। उन्होंने लंबे समय तक बहादुरी से लड़ाई लड़ी, लेकिन अंततः शहीद हो गए। उनके बेटे थॉमस भी बंगाल रेजिमेंट में थे और अपने पिता की तरह, कुछ समय बाद उनकी तैनाती भी लखनऊ में हुई। उन्होंने वहीं बसने का फैसला किया। उन्होंने उर्दू बोलना सीखा, हुक्का पीना, पान खाना और इत्र लगाना शुरू किया। संगीत और नृत्य के शौकीन होने के कारण, वे अपने घर में नियमित रूप से पेशेवर गायकों और नर्तकों को बुलाते थे। कभी-कभी वे भारतीय वस्त्र भी पहनते थे। दूसरे शब्दों में, उनकी जीवनशैली लखनऊ के नवाबों से कम नहीं थी। लोग उन्हें "थॉमस बहादुर" कहते थे। अंत में, उन्हें फरीदा बेगम नाम की एक कथक नर्तकी से प्रेम हो गया और उन्होंने उनसे विवाह कर लिया। उनके दो बेटे हुए, एडवर्ड और चार्ल्स। दोनों में से कोई भी सेना में नहीं गया। एडवर्ड वकील बन गए और चार्ल्स असम में एक चाय बागान का प्रबंधन करने चले गए। वे फिर कभी लखनऊ नहीं लौटे। थॉमस और फरीदा की तीसरी संतान वर्जीनिया थी। उसका रंग अपने पिता की तरह गोरा था, लेकिन उसके बाल और आंखें अपनी मां की तरह गहरे रंग की थीं। जब उसने फिल्मों में अभिनय करना शुरू किया, तो वह बेहद खूबसूरत थी और एक भारतीय महिला की भूमिका के लिए बिल्कुल उपयुक्त थी। वह उर्दू और अंग्रेजी दोनों भाषाएं बोलती थी।
जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, उसने एक बंगाली ईसाई से शादी की थी। उनका नाम पर्सीवल मोतीलाल बनर्जी था। दरअसल, वे शकुंतला की फिल्मों के निर्माता थे। उन्हीं ने वर्जीनिया को फिल्मों में आने और अपना नाम बदलकर शकुंतला रखने के लिए राजी किया था। उन्होंने फिल्मों से खूब पैसा कमाया। वर्जीनिया के पिता, थॉमस रेनॉल्ड्स के पास लगभग कोई बचत नहीं थी। उनकी मृत्यु गरीबी में हो सकती थी, लेकिन वर्जीनिया ने आगे बढ़कर अपने बूढ़े पिता की देखभाल की।
'पर्सीवल और वर्जीनिया की दो बेटियाँ और एक बेटा था। सबसे बड़ी बेटी का नाम मार्गरेट सुशीला है। जैसा कि मैंने आपको बताया, उसकी शादी साल्डाना नाम के एक गोवावासी से हुई है। वह संगीत वाद्ययंत्रों की दुकान का मालिक है।' मैंने उनकी दूसरी बेटी पामेला सुनीला से 1960 में शादी की। मैं आयात-निर्यात का कारोबार करता हूँ। मैंने आपको अपनी बेटी के बारे में बताया है। मेरा एक बेटा भी है, विक्टर प्रसेनजीत। मेरी बेटी का नाम मैरी शीला है।

मैंने अपने बेटे को अपने साथ कारोबार में शामिल करने की कोशिश की, लेकिन उसे कारोबार चलाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह आमतौर पर वही करता है जो उसे पसंद होता है। शीला ने दो साल पहले कॉलेज की पढ़ाई पूरी की। वह एक प्रतिभाशाली अभिनेत्री है, लेकिन उसकी मुख्य रुचि पत्रकारिता में है। उसने कई प्रकाशनों के लिए लिखना शुरू कर दिया है। मैंने उसके लेख पढ़े हैं। वे वाकई बहुत अच्छे हैं।
श्री बिस्वास रुके और उन्होंने फेलुदा को एक सिगरेट देने के बाद खुद भी एक सिगरेट जलाई।
'दिलचस्प,' फेलुदा ने संक्षेप में कहा।
‘बेहद रोमांटिक!’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘बताइए, क्या आपकी पत्नी ने कभी यह हार पहना है?’
'हां, उसने इसे कुछ पार्टियों में पहना है। लेकिन आमतौर पर यह एक संदूक में बंद रहता है। जब मैं इसे आपको दिखाऊंगी तो आपको इसकी कीमत का पता चल जाएगा।'
‘मैं और इंतजार नहीं कर सकता!’ लालमोहन बाबू चिल्लाए।
श्री बिस्वास ने उनसे कहा, 'श्री गांगुली, आपको बस चार दिन और धैर्य रखना होगा।'

तीन
हम पिछले तीन दिनों से लखनऊ में थे। मेरा मन बार-बार हमारी पहली यात्रा की ओर लौट रहा था—सम्राट औरंगजेब की हीरे की अंगूठी, डॉ. श्रीवास्तव, बोनोबिहारी बाबू का अद्भुत चिड़ियाघर, हरिद्वार और अंत में, लक्ष्मणझूला जाते समय का हमारा रोंगटे खड़े कर देने वाला साहसिक अनुभव।
उस समय हम होटल में नहीं, बल्कि एक दोस्त के यहाँ रुके थे। क्लार्क्स अवध होटल शायद तब बना भी नहीं था। वह वाकई एक बहुत अच्छा होटल था। हमें एक डबल और एक सिंगल कमरा दिया गया था। दोनों कमरों से नदी का नज़ारा दिखता था। हर शाम जब गोमती नदी के उस पार सूरज डूबता था, तो वह दृश्य देखने लायक होता था। खाना भी बहुत बढ़िया था। हमने देश के अलग-अलग हिस्सों में कई होटलों में ठहर चुके थे, लेकिन मुझे एक भी ऐसी जगह याद नहीं जहाँ का खाना इतना स्वादिष्ट रहा हो।
लालमोहन बाबू ने इन तीन दिनों में लगभग सभी महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल देख लिए थे। हमने बारा इमामबाड़ा से शुरुआत की। इसके विशाल हॉल को देखकर मेरा सिर एक बार फिर चकरा गया। लालमोहन बाबू अवाक रह गए। जब हम वहां से निकले तो उन्होंने बस इतना ही कहा: 'वाह, लखनऊ के नवाबों!'
भुलभुलैया की कहानी सुनकर वह लगभग बेहोश हो गया। जब फेलुदा ने उसे बताया कि नवाब इस भूलभुलैया में अपनी बेगमों के साथ लुका-छिपी खेला करते थे, तो उसकी आंखें फटी रह गईं।
रेसिडेंसी एक और आश्चर्य था। ‘यह... यह तो मानो समय में पीछे चले गए हों, फेलू बाबू! मुझे तोपों की आवाज और बारूद की गंध लगभग सुनाई दे रही है। हे भगवान, क्या सिपाहियों ने सचमुच इस मजबूत और टिकाऊ इमारत को इतना नुकसान पहुंचाया?’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा।
चौथे दिन हम स्थानीय बाज़ार गए भूना पेड़ा खरीदने के लिए, जो लखनऊ की एक मशहूर मिठाई है। होटल लौटने पर हमें रात के खाने का निमंत्रण मिला। यह हेक्टर जयंत बिस्वास ने भेजा था, जिसमें उन्होंने हमें दो दिन बाद अपनी रजत जयंती पर आमंत्रित किया था। निमंत्रण के साथ एक नक्शा भी था, जिसमें उनके घर का पता स्पष्ट रूप से दिखाया गया था। हमें पहले से ही पता था कि उनका घर नदी के दूसरी ओर है। ऐसे नक्शे के साथ, हमें उसे ढूंढने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए थी।
श्री बिस्वास ने शाम को हमें फोन किया। उन्होंने कहा, 'आप सभी को अवश्य आना चाहिए। आपको कुछ अन्य लोगों से मिलने का मौका मिलेगा, और निश्चित रूप से मैं आपको शकुंतला का हार दिखाऊंगा।'
अगले दो दिन हमने छोटा इमामबाड़ा, छत्तर मंजिल और चिड़ियाघर देखने में बिताए। लालमोहन बाबू जानवरों को खुले में देखकर सबसे ज्यादा प्रभावित

हुए, क्योंकि जानवर पिंजरों में बंद नहीं थे। उन्होंने कहा, 'कलकत्ता चिड़ियाघर भी ऐसा ही होना चाहिए!'
शाम को हम टैक्सी से श्री बिस्वास के घर गए। हमें जो नक्शा भेजा गया था, वह बहुत अच्छा था। हमारे ड्राइवर ने उनका घर आसानी से ढूंढ लिया। वह एक बड़ा और फैला हुआ बंगला था। सामने के बड़े बगीचे में फूल खिले हुए थे। एक पक्की सड़क सामने के दरवाजे तक जाती थी। जब हमने घंटी बजाई, तो वर्दी पहने एक कर्मचारी ने दरवाजा खोला। हमें बैठक से कुछ आवाजें सुनाई दे रही थीं। श्री बिस्वास जल्दी से बाहर आए। उन्होंने गर्मजोशी से कहा, 'मुझे बहुत खुशी है कि आप आ सके! अंदर आइए और बाकी लोगों से मिलिए।'
हम उनके पीछे-पीछे उस कमरे में गए जहाँ कुछ और लोग मौजूद थे। शायद और भी बहुत से लोगों के आने की उम्मीद थी। सबसे पहले हमें श्री बिस्वास की पत्नी पामेला सुनीला से मिलवाया गया। वह कभी बेहद खूबसूरत रही होंगी। उनकी बेटी मैरी शीला आकर्षक और बुद्धिमान थीं। लेकिन उनका बेटा बिलकुल विपरीत था: उसके लंबे, घने, बेतरतीब बाल थे जिन पर कभी कंघी नहीं की गई थी, साथ ही दाढ़ी और मूंछें भी बढ़ी हुई थीं। उसका नाम विक्टर प्रसेनजीत था। श्रीमती बिस्वास की बहन और बहनोई—श्रीमती सल्दान्हा भी उपस्थित थे। श्रीमती सल्दान्हा कभी सुंदर रही होंगी, लेकिन अब उनका वजन काफी बढ़ गया था। उनके पति, इसके विपरीत, बहुत दुबले-पतले थे। उनकी उम्र लगभग साठ वर्ष लग रही थी। मुझे याद है कि मुझे बताया गया था कि वे वाद्य यंत्र बेचते हैं। इन पारिवारिक सदस्यों के अलावा कमरे में और कोई नहीं था।
कमरा काफी बड़ा था। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक कोने में स्क्रीन लगी हुई थी। उसके सामने एक प्रोजेक्टर रखा था। मैंने अपने मेज़बान से जिज्ञासा भरी नज़रों से पूछा। उन्होंने बताया, ‘हमारे पास शकुंतला देवी की आखिरी फिल्म की एक रील है। हम रात के खाने से पहले उसकी एक रील दिखाना चाहेंगे। आप उन्हें उस मशहूर हार में देखेंगे।’
मैंने सोचा, यह काफी दिलचस्प होगा। मैरी शीला फेलुदा से बात करने के लिए आगे आई।
‘मैं आपकी प्रशंसक हूं। मुझे आपका ऑटोग्राफ लेना बहुत अच्छा लगेगा, लेकिन फिलहाल मेरे पास ऑटोग्राफ बुक नहीं है। मैं एक खरीद लूंगी और आपके जाने से पहले आपके होटल में आपसे मिलने आऊंगी,’ उसने कहा।
एक वेटर पेय पदार्थों की ट्रे लेकर आया। हमने संतरे के रस के तीन गिलास लिए। सैमुअल सल्दान्हा हमारे पास आए। उन्होंने कहा, 'मेरी दुकान हजरतगंज में है। आप एक दिन आकर उसे क्यों नहीं देखते? मुझे बहुत खुशी होगी।' 'धन्यवाद। क्या आप भारतीय वाद्य यंत्र बेचते हैं?'
जी हां, हम सितार के साथ-साथ पश्चिमी वाद्य यंत्र भी बेचते हैं।
इसी क्षण, एक और सज्जन हमारे साथ आकर बैठ गए। श्रीमती बिस्वास से उनकी शक्ल-सूरत में काफी समानता थी, जिससे लग रहा था कि वे उनके भाई हैं। लेकिन उनकी त्वचा और आँखें कुछ हल्की थीं, जिसके कारण वे भारतीय से अधिक यूरोपीय प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने व्हिस्की का गिलास उठाया और हमारी ओर मुड़े। उन्होंने कहा, ‘मैं अल्बर्ट रतनलाल बनर्जी हूं, जयंत का बहनोई।’ ‘आप कौन हैं—?’

श्री बिस्वास आगे बढ़े और जल्दी से हमारा परिचय कराया। ‘निजी जासूस?’ रतनलाल ने अपनी भौंहें उठाईं। ‘क्या आप यहाँ किसी मामले पर काम कर रहे हैं?’
‘नहीं, नहीं,’ फेलुदा मुस्कुराया। ‘मैं यहाँ सिर्फ छुट्टी मनाने आया हूँ।’ घर से एक और आदमी निकला। वह श्री सल्दान्हा की ही उम्र का लग रहा था। शायद वह यहीं रहता था। मैंने उसे हैरानी से देखा। उसके कपड़े गंदे थे, उसने दो- चार दिन से दाढ़ी नहीं बनाई थी और उसके बाल कंधों तक लटके हुए थे। वह बाकी लोगों के बीच बिलकुल बेमेल लग रहा था।
श्री बिस्वास ने उनके कंधे पर हाथ रखा और उन्हें हमारे पास ले आए। उन्होंने कहा, 'मिलिए श्री सुदर्शन सोम से। ये एक कलाकार हैं, पोर्ट्रेट बनाने वाले एक जाने-माने चित्रकार हैं। इन्होंने शकुंतला के कई चित्र बनाए हैं। सेवानिवृत्ति के बाद से ये हमारे साथ रह रहे हैं।'
मैंने कभी किसी कलाकार को इतनी जल्दी रिटायर होते नहीं सुना था। तभी मेरी नज़र कमरे के एक कोने में लगी एक महिला की तस्वीर पर पड़ी। क्या वो शकुंतला देवी थीं? जब ये तस्वीर बनी थी तब उनकी उम्र लगभग चालीस रही होगी, यानी उन्होंने फिल्मों से नाता तोड़ लिया था। सुदर्शन सोम ने ट्रे से व्हिस्की की बोतल उठाई। पता नहीं क्यों, मुझे उन पर थोड़ी दया आ गई। सैमुअल सल्दान्हा और रतनलाल ने मौजूदा राजनीति पर ज़ोरदार बहस शुरू कर दी थी। श्री सोम भी उनके साथ जाकर बहस में शामिल हो गए।
मैं सोचती रही कि हमें हार कब देखने को मिलेगा। श्रीमती बिस्वास और उनकी बहन मेहमानों के बीच घूम रही थीं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सबका ध्यान रखा जा रहा है। श्रीमती बिस्वास फेलूदा को देखकर रुक गईं और बोलीं, 'यह क्या है? बस संतरे का रस? कहीं तुम पीते तो नहीं!'
‘नहीं, श्रीमती बिस्वास,’ फेलुदा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। ‘मेरे पेशे में, हर समय शांत दिमाग रखना ही सबसे अच्छा होता है।’
लेकिन मुझे हमेशा लगता था कि निजी जासूस बहुत शराब पीते हैं।
'शायद आपको यह विचार अमेरिकी क्राइम थ्रिलर फिल्मों से आया होगा।'
'हां, शायद। मुझे थ्रिलर पढ़ना बहुत पसंद है।'
‘ओह, वैसे,’ फेलुदा ने बिना कहे कहा, ‘आपके पति ने हमें आपकी मां का हार दिखाने की पेशकश की थी।’
जी हाँ, बिल्कुल! मुझे बहुत खेद है, श्रीमान मित्तर, मैं पूरी तरह भूल गई थी। शीला!
शीला अपनी मां के पास आई।
'हां मां?'
'प्यारी बच्ची, अपनी दादी का हार मेरे पास ले आओ। श्री मिटर उसे देखना चाहेंगे। तुम्हें पता है चाबी कहाँ रखी है।'
‘हां,’ उसने कहा और तुरंत चली गई।
‘क्या तुम चाबी अपने पास नहीं रखते?’ फेलुदा ने पूछा।
नहीं, यह मेरी ड्रेसिंग टेबल की दराज में रखा है। हम संदूक को शायद ही कभी खोलते हैं। यह पूरी तरह से सुरक्षित है। हमारे पास जो कुछ नौकर हैं, वे सभी

बूढ़े और भरोसेमंद हैं। सुलेमान, जिसने आपके लिए दरवाजा खोला, तीस साल से हमारे साथ काम कर रहा है।
शीला तीन मिनट में गहरे नीले मखमली डिब्बे के साथ लौटी। उसकी माँ ने उससे डिब्बा लिया और उसे खोला। "यह रहा," उसने खुला डिब्बा हमारी ओर घुमाते हुए कहा।
हम सबने अनैच्छिक रूप से सांस रोक ली। मैंने इससे पहले कभी इतनी उत्कृष्ट कारीगरी वाला कोई आभूषण नहीं देखा था। यह एक सोने का हार था, जिस पर हीरे, मोती और कई अन्य कीमती पत्थरों की सुंदर नक्काशी थी।
फेलुदा ने कहा, 'यह एक अद्भुत वस्तु है। सचमुच एक अनूठी कृति। क्या आपको अंदाजा है कि आज इसकी कीमत कितनी होगी?'
मुझे नहीं पता... मेरा अनुमान है कि ढाई लाख से अधिक होंगे।
‘ठीक है। जाओ और इसे वापस रख दो, शीला। इस तरह की कीमती चीज को लंबे समय तक बाहर रखना ठीक नहीं है।’
शीला हार लेकर चली गई।
मैंने गौर किया कि शीला का भाई हमसे बात करने की कोई कोशिश नहीं कर रहा था। वास्तव में, वह काफी असहज लग रहा था और स्पष्ट रूप से उसे अच्छा नहीं लग रहा था। शायद वह उन युवकों में से एक था जो अपने दोस्तों के समूह के बिना सहज महसूस नहीं कर पाते।
पेय पदार्थों का दौर समाप्त होने वाला था। मैंने देखा कि एक आदमी अंदर आया और प्रोजेक्टर से छेड़छाड़ करने लगा। थोड़ी देर बाद, उसने श्री बिस्वास को पुकारा, 'मैं तैयार हूँ।'
ठीक है। देवियों और सज्जनों, अब हम शकुंतला देवी की आखिरी फिल्म का एक हिस्सा देखने जा रहे हैं। सुलेमान, कृपया लाइट बंद कर दें।
कमरा अंधेरे में डूब गया। प्रोजेक्टर शोर मचाते हुए चलने लगा। एक सेकंड बाद, पहला दृश्य स्क्रीन पर दिखाई दिया। 'यह फिल्म 1930 में बनी थी,' जयंत बिस्वास ने हमें बताया। 'भारत में टॉकी फिल्मों के बनने से ठीक पहले।' मैंने शकुंतला देवी को कुछ रुचि से देखा। वह निःसंदेह बेहद खूबसूरत थीं— आज भी फिल्मों में इतनी खूबसूरत महिला देखने को नहीं मिलती। उनकी सफलता का कारण स्पष्ट था। उन्होंने महाराजाओं से लेकर पानवालों तक, सभी के दिलों को छुआ था—सिर्फ अपनी खूबसूरती से ही नहीं, बल्कि अपने अभिनय से भी। मूक फिल्मों की कमियों और नाटकीय अभिनय शैली के बावजूद, शकुंतला देवी एक प्रतिभाशाली कलाकार के रूप में उभरीं।
फिल्म दस मिनट तक चली। सारी बत्तियाँ फिर से जला दी गईं और लोग बातें करने लगे। अचानक मुझे एहसास हुआ कि कमरे में अँधेरे में कोई चुपके से अंदर आ गया था। वह श्री सुकिअस थे। शायद उन्हें बुलाया नहीं गया था, क्योंकि मैंने उन्हें अंदर आने के लिए माफ़ी माँगते सुना। श्री बिस्वास ने उनकी माफ़ी को नज़रअंदाज़ कर दिया और उन्हें रात के खाने के लिए रुकने को कहा। कुछ ही मिनटों बाद, एक वेटर दरवाजे पर आया और बताया कि खाना परोसा जा चुका है। शानदार भोजन के बाद जब हम अपने होटल लौटे तो सवा ग्यारह बज रहे थे। हमारे जाने के बाद भी पार्टी काफी देर तक चलती रही होगी।

चार
अगली सुबह फेलुदा ने मुझे जगाया। मैं झट से उठ बैठा।
‘क्या बात है, फेलुदा?’
वह गंभीर दिख रहा था। 'श्री बिस्वास ने अभी मुझे फोन किया था। शकुंतला का हार चोरी हो गया है।'
'अरे बाप रे!'
‘जल्दी से तैयार हो जाओ। मैं जाकर लालमोहन बाबू को बता देता हूँ। नाश्ते के बाद हमें वहाँ वापस जाना होगा। मुझे लगता है कि श्री सुकिअस को छोड़कर बाकी सभी लोग खबर सुनकर वहाँ पहुँच चुके होंगे।’
क्या पुलिस को सूचित नहीं किया गया है?
'हां, लेकिन वे मुझे भी चाहते हैं।'
हम साढ़े आठ बजे श्री बिस्वास के घर पहुँच गए। पिछली रात का खुशनुमा माहौल आज एक गंभीर सन्नाटे में बदल गया था।
फेलुदा ने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं ही इसके लिए ज़िम्मेदार हूँ। कल वो हार सिर्फ इसलिए निकाला गया क्योंकि मैंने उसे देखने के लिए कहा था। हो सकता है कि उसका चोरी से कोई लेना-देना न हो, लेकिन मैंने सोचा कि मुझे आपको बताना चाहिए कि मुझे कितना बुरा लग रहा है।'
पुलिस पहले ही आ चुकी थी। प्रभारी इंस्पेक्टर ने फेलुदा का हाथ बढ़ाकर अभिवादन किया। उन्होंने हाथ मिलाते हुए कहा, 'श्रीमान प्रदोष मित्तर? मैंने आपके बारे में सुना है। मैं इंस्पेक्टर पांडे हूं।'
'आपसे मिलकर खुशी हुई, महोदय।'
'मुझे लगता है कि आप स्वयं पूछताछ करना चाहेंगे?'
'हां, लेकिन आपके काम पूरा होने के बाद ही।'
'धन्यवाद।'
इंस्पेक्टर पांडे ने सवाल पूछना शुरू किया। धीरे-धीरे पता चला कि आधी रात के बाद जब आखिरी मेहमान चला गया, तो श्रीमती बिस्वास अपने बेडरूम में गईं और अचानक उन्हें हार को एक बार फिर देखने की इच्छा हुई। उन्होंने खुद बताया, 'शायद सिर्फ मेरी आत्मसंतुष्टि ही थी जिसने मुझे संदूक खोलकर हार देखने के लिए मजबूर किया। मैंने अभी-अभी अपनी माँ को इसे स्क्रीन पर पहने देखा था और यह उन पर बहुत सुंदर लग रहा था। इसलिए मैंने सोचा कि मैं भी इसे अपने गले में पहनकर देखूँ कि यह कैसा लगता है। लेकिन... लेकिन जब मैंने ड्रेसिंग टेबल के दराज से चाबी निकाली और संदूक खोला, तो मुझे वह कहीं नहीं मिला। मैंने तुरंत अपनी बेटी को बुलाया और उससे पूछा कि क्या उसने उसे वापस रख दिया है। उसे पूरा यकीन था कि उसने रख दिया था। वह हमेशा उसी संदूक में रखा रहता था। आखिर वह उसे और कहाँ रख सकती थी?'
इंस्पेक्टर ने पूछा, 'कल रात आपके यहाँ डिनर पार्टी थी, है ना?'

'जी हां,' श्रीमती बिस्वास ने उत्तर दिया।
‘यह कब शुरू हुआ और कितने समय तक चला?’
'यह पौने आठ बजे से आधी रात तक चला।'
'श्रीमती बिस्वास, पार्टी खत्म होने के बाद क्या आप सीधे अपने कमरे में चली गईं?'
'हाँ।'
और आपको यह पता चलने में कितना समय लगा कि हार गायब है?
लगभग पंद्रह मिनट।
‘क्या आप उस दौरान अपने कमरे से बाहर नहीं निकले?’
'नहीं।'
इसका मतलब है कि यह पार्टी के दौरान चोरी हो गया था।
श्री बिस्वास ने टिप्पणी की, 'ऐसा लगता है। जब मेरी बेटी श्री मिटर को हार दिखाने के लिए बाहर लाई, तब पार्टी पूरे जोश में चल रही थी।'
‘उसके बाद, मिस बिस्वास, क्या आपने हार को वापस वहीं रख दिया जहाँ से आपने उसे उठाया था? क्या आप सीधे अपनी माँ के कमरे में वापस चली गईं?’ ‘बिल्कुल!’ मैरी शीला ने दृढ़ता से कहा। ‘मैंने एक पल भी बर्बाद नहीं किया।’ 'शायद मुझे यह बताना चाहिए, इंस्पेक्टर, कि हार ले जाने के तुरंत बाद, फिल्म दिखाने के लिए बैठक कक्ष की सभी बत्तियाँ बंद कर दी गईं। कमरा दस मिनट तक अंधेरा रहा।'
आपके पास कितने नौकर हैं?
तीन। एक रसोइया और दो भारवाहक।
‘ये आपके पास कब से हैं?’
'पंद्रह साल या उससे भी अधिक। सुलेमान, जो बुजुर्ग भारवाहक है, मेरे ससुर के समय से हमारे साथ है,' श्रीमती बिस्वास ने कहा।
‘तो फिर एक ही निष्कर्ष निकलता है,’ इंस्पेक्टर पांडे ने कहा। ‘अगर आपको लगता है कि आपके सभी नौकर संदेह से परे हैं, तो हार पार्टी में मौजूद लोगों में से किसी एक ने चुराया होगा। मुझे खेद है, श्री बिस्वास, लेकिन हर कारण इसी ओर इशारा करता है।’
मैं—और शायद फेलुदा और लालमोहन बाबू भी—उनकी बात से सहमत थे। इंस्पेक्टर पांडे ने अब फेलुदा की ओर रुख किया।
‘श्री मिटर, आपके साथी कौन हैं?’
'माफ़ कीजिए, मुझे पहले ही इनका परिचय करा देना चाहिए था। ये मेरे चचेरे भाई तपेश हैं; और ये मेरे दोस्त लालमोहन गांगुली हैं। ये एक जाने-माने लेखक हैं।'
‘आप उसे कब से जानते हैं?’
‘पांच साल से अधिक।’
मैंने लालमोहन बाबू की ओर देखा। उनका चेहरा पीला पड़ गया था। एक पल के लिए मैंने उन्हें चोर के रूप में कल्पना करने की कोशिश की। इस नाजुक क्षण में भी, मुझे ज़ोर से हंसी आ गई।
सौभाग्यवश, निरीक्षक ने विषय बदल दिया। उसने पूछा, 'इस घर में कितने लोग रहते हैं?'

'मेरी पत्नी और मेरे अलावा, मेरे दो बच्चे और कलाकार श्री सोम।'
श्री सोम भी कमरे में बाकी सभी लोगों के साथ मौजूद थे। आज उनकी दाढ़ी पहले से ज्यादा घनी थी, जिससे वे और भी थके हुए लग रहे थे।
‘बाकी लोगों का क्या?’ इंस्पेक्टर पांडे ने आगे पूछा।
श्री सल्दान्हा और उनकी पत्नी क्लाइव रोड में रहते हैं। श्रीमती सल्दान्हा और मेरी पत्नी बहनें हैं।
मुझे एक और सज्जन दिखाई दे रहे हैं।
जी हां, वह मेरी पत्नी के भाई रतनलाल बनर्जी हैं।
क्या पार्टी में कोई और भी था?
‘वहाँ सिर्फ एक और व्यक्ति था। दरअसल, उन्हें आमंत्रित नहीं किया गया था, लेकिन वे संयोगवश आ गए थे। वे श्री सुकिअस थे। वे फिल्म दिखाए जाने के दौरान आए थे। मैंने उन्हें तभी देखा जब लाइटें जलीं।’
‘श्री सुकियुस क्या करते हैं?’
वह प्राचीन वस्तुओं और कला वस्तुओं का संग्रहकर्ता है। वह एक पेशेवर साहूकार भी है।
क्या उसने कभी उस हार में दिलचस्पी दिखाई थी?
'हां। वह इसे खरीदना चाहता था, लेकिन मैंने बेचने से इनकार कर दिया।' 'अच्छा ऐसा है।'
इंस्पेक्टर पांडे कुछ क्षण चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि हम इस बात पर सहमत हैं कि भोजन के समय आए मेहमानों में से किसी एक ने हार उतार लिया। सवाल यह है कि वह कहाँ गया?'
श्री बिस्वास ने अपना गला साफ किया। 'यदि आप हमारी और घर की तलाशी लेना चाहते हैं, तो कृपया ऐसा करने के लिए स्वतंत्र महसूस करें।'
जी हां, मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा। मैंने कुछ महिला पुलिस अधिकारियों को महिलाओं की तलाशी के लिए तैनात किया है। घर की पूरी तरह से तलाशी लेनी होगी।
किसी ने कोई आपत्ति नहीं जताई। केवल श्री सल्दान्हा ने कहा, 'मुझे दस बजे अपनी दुकान खोलनी है। यदि आप पहले मेरी तलाशी ले लें और मुझे दस बजे से पहले जाने की अनुमति दे दें तो मैं आपका आभारी रहूंगा।'
फेलुदा तब तक चुप रहा। अब उसने कहा, 'मैं होटल वापस जा रहा हूँ। श्री बिस्वास, अगर आपको हार मिल जाए तो कृपया मुझे बता देना। अगर नहीं मिला तो मैं आज शाम वापस आ जाऊँगा।'
हम अपने होटल लौट आए। लालमोहन बाबू हमारे कमरे में आकर हमसे मिले। उन्होंने कहा, ‘क्या आपको याद है कि ऐसा पहले कितनी बार हो चुका है? मेरा मतलब है, छुट्टी पर जाना और किसी रहस्य में उलझ जाना? लगता है ये टेलीपैथी का कमाल है!’
‘ठीक है, लालमोहन बाबू, चलिए आपकी याददाश्त परख लेते हैं,’ फेलुदा हँसते हुए बोले। ‘मैंने तो टॉपशे की याददाश्त पर कई बार परख ली है, लेकिन आपकी नहीं।’
'बहुत खूब महोदय, मैं तैयार हूँ।'
मुझे शकुंतला देवी के परिवार के बारे में आपसे कुछ पूछना है।

'ठीक है।'
उसके तीनों बच्चों के नाम क्या हैं?
बड़ी बेटी का नाम सुशीला है।
'हां, लेकिन उससे पहले एक ईसाई नाम है।'
‘ओह हाँ। ईसाई नाम... आह...’
‘टॉपशे, क्या तुम्हें याद है?’
सौभाग्य से, मैंने ऐसा किया। मैंने कहा, 'मार्गरेट।'
‘अच्छा। श्रीमती बिस्वास को क्या कहते हैं, लालमोहन बाबू?’
‘पामेला सुनेला।’
‘ठीक है। उसका भाई?’
‘रतनलाल. अल्बर्ट रतनलाल बनर्जी।’
ठीक है। अब मुझे बिस्वास के बच्चों के नाम बताओ।
‘मैरी शीला और प्रसेनजीत। मुझे उसका पहला नाम याद नहीं आ रहा।’ ‘विक्टर। मार्गरेट सुशीला अपने पति के साथ आई हैं। उनका नाम क्या है?’ 'सैमुअल सल्दान्हा।'
‘बहुत बढ़िया। और कौन-कौन वहाँ था?’
‘वो कलाकार। उसका नाम क्या है?…’
टॉपशे?
‘मैं हूं। मैं सुदर्शन हूं।’
'बहुत अच्छा।'
'फेलू बाबू, मेरी बात का बुरा मत मानना, लेकिन मुझे वो आदमी पसंद नहीं था।' 'क्यों नहीं?'
‘वह अजीब लग रहा था, मानो सचमुच पागल हो। उसने कई दिनों से दाढ़ी नहीं बनाई थी, उसके कपड़े शायद हफ्तों से धुले नहीं थे! . . .’
'कलाकार हमेशा खुद को संवार कर नहीं रखते। वे अक्सर सामाजिक मानदंडों के अनुसार जीवन नहीं जीते।'
'शायद, लेकिन मेरी राय में वह और एक अन्य व्यक्ति मुख्य संदिग्ध हैं।'
‘यह दूसरा व्यक्ति कौन है?’
'विक्टर प्रसेनजीत बिस्वास। देखने में हिप्पी जैसा लगता है, निकम्मा। लेकिन मैंने गौर किया कि वह शराब नहीं पी रहा था।'
'शायद इसका कारण यह था कि उनके पिता वहां मौजूद थे।'
'हो सकता है। वैसे भी, पार्टी में कोई और भी मौजूद था।'
‘आपका मतलब श्री सुकिअस से है?’
'सही कहा। वह हार खरीदना चाहता था, है ना?'
‘वह एक कला संग्राहक हैं। कोई भी कला संग्राहक इतनी खूबसूरत चीज खरीदना चाहेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर उनके पास पर्याप्त संसाधन होते, तो वे इसे जरूर खरीदते। अगर उनके पास संसाधन नहीं होते, तो वे शायद गलत तरीकों से इसे हासिल करने की कोशिश करते। हमें सुकिउज़ या उनकी आर्थिक स्थिति के बारे में कुछ नहीं पता। चलिए अब और समय व्यर्थ की अटकलों में बर्बाद न करें। श्री बिस्वास के शाम को फोन करने तक हम खाली हैं। क्या हम काइज़र बाग घूमने चलें?’

'□□□□□□□ □□□□□□ □□, □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□, □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□'

पाँच
जैसा वादा किया था, जयंत बिस्वास ने बाद में हमें फोन किया। पुलिस ने पूरी सावधानी से तलाशी ली थी, लेकिन हार नहीं मिला था। उन्होंने नौकरों से भी पूछताछ की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।
‘मैं आ रहा हूँ, श्रीमान बिस्वास,’ फेलुदा ने उनसे कहा। ‘अब मैं अपनी खुद की जांच शुरू करूँगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह पुलिस की जांच से टकराएगी नहीं।’
हमने होटल से टैक्सी ली, गोमती पुल पार किया और श्री बिस्वास के घर पहुंचे। वहां अब भी उदासी का माहौल था।
सुलेमान ने एक बार फिर दरवाजा खोला और हमें बैठक कक्ष में ले गया। श्री बिस्वास सोफे पर बैठे थे। जैसे ही हम कमरे में दाखिल हुए, वे उठ खड़े हुए। उन्होंने सिर हिलाते हुए दुख से कहा, 'वे उसे ढूंढ नहीं पाए।'
‘इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है। ऐसा चालाक चोर इसे यूं ही पड़ा हुआ नहीं छोड़ेगा, है ना?’
क्या आप खुद घर की तलाशी लेना चाहेंगे?
नहीं, नहीं। मैं सिर्फ आपके परिवार के सभी सदस्यों से बात करना चाहता हूँ। इस समय घर पर कौन-कौन है?
‘मेरी पत्नी, मेरी बेटी और श्री सोम। मुझे नहीं लगता कि मेरा बेटा अभी तक वापस आया है।’
‘ठीक है। मुझे श्री सल्दान्हा और श्री सुकियुस से भी बात करनी होगी।’ ‘इसमें कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। मैं आपको उनके पते दे दूंगा।’
‘बहुत अच्छा। चलिए, शुरुआत आपसे करते हैं।’
'ठीक है, आपको एक कप चाय पीने में कोई आपत्ति नहीं होगी, है ना?'
‘नहीं, यह बहुत अच्छा होगा, धन्यवाद।’ सुलेमान को चार कप चाय लाने को कहा गया। फेलुदा ने चारमीनार जलाई और अपने प्रश्न पूछने शुरू किए।
‘आपने पुलिस को बताया था कि श्री सुकिअस वह हार खरीदना चाहते थे। यह बात कितने समय पहले की है?’
लगभग एक साल पहले।
उन्हें हार के बारे में कैसे पता चला?
‘इसके बारे में बहुत से लोग जानते हैं। इस पर एक से अधिक बार लिखा जा चुका है। जब मेरी सास का निधन हुआ, तो पायनियर अखबार ने उनकी एक संक्षिप्त जीवनी प्रकाशित की जिसमें उस हार का जिक्र था। सुकिअस असल में साहूकार है। मेरा मतलब है, इसी तरह उसने पैसा कमाया है। आम तौर पर, कोई साहूकार को कला और सौंदर्यशास्त्र जैसी परिष्कृत चीजों से नहीं जोड़ता। लेकिन सुकिअस अलग है। मैं उसके घर गया हूँ। उसकी रुचि उत्कृष्ट है।’
'जब आपने हार बेचने से इनकार कर दिया तो उसकी क्या प्रतिक्रिया थी?'

‘स्वाभाविक रूप से वह बहुत निराश थे। उन्होंने दो लाख की पेशकश की थी। मैं मान जाता, लेकिन मेरी पत्नी इतनी रकम देने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। और अब, वही...’ उन्होंने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया और आह भरी।
क्या आपको किसी पर शक है?
नहीं। मैं अब भी पूरी तरह से हैरान हूँ। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मेरे पुराने और भरोसेमंद नौकरों में से किसी एक ने ऐसा किया। फिर भी, इसे और कौन चुरा सकता था? वे ऐसा क्यों करेंगे?
‘आप एक व्यवसायी हैं, है ना?’
जी हां, मेरी एक छोटी सी कंपनी है। हम निर्यात और आयात का काम करते हैं। आप कैसे हैं?
'बुरा नहीं है, श्रीमान मिटर। मेरा एक साझेदार है। हम मिलकर फर्म चलाते हैं।'
उसका नाम क्या है?
‘त्रिभुवन नगर। हमने अपने करियर की शुरुआत एक व्यापारी फर्म में क्लर्क के रूप में की थी। तीस साल पहले, हमने वह नौकरी छोड़ दी और अपनी खुद की कंपनी बनाई।’
आपकी कंपनी का नाम क्या है?
‘आधुनिक आयात और निर्यात।’
'आपका कार्यालय कहाँ है?'
'महामहिम।'
सुलेमान चाय लेकर वापस आया। हमने चाय पी ली।
'मेरा एक और सवाल है,' फेलुदा ने कहा।
'हाँ?'
'कल जब फिल्म दिखाई जा रही थी, क्या आपने किसी को हिलते-डुलते या कमरे से बाहर जाते देखा?'
'नहीं।'
क्या आपका बेटा कहीं काम करता है?
नहीं। मैंने उसे अपने साथ आने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन उसने इनकार कर दिया।
'उसकी क्या उम्र है?'
‘पच्चीस।’
उसे किस चीज़ में दिलचस्पी है?
'ईश्वर जानता है।'
'धन्यवाद, श्री बिस्वास। क्या अब मैं आपकी पत्नी से बात कर सकता हूँ?' 'बिल्कुल। लेकिन वह बहुत परेशान है, आप समझ रहे हैं ना?'
मैं वादा करता हूँ कि मुझे ज्यादा समय नहीं लगेगा।
श्री बिस्वास अपनी पत्नी को बुलाने अंदर गए। तब तक हमारी चाय खत्म हो चुकी थी। जब सुनीला बिस्वास आईं, तो ऐसा लग रहा था जैसे वह काफी देर तक रोई हों। इसके बावजूद, आज उनमें अपनी माँ से मिलती-जुलती शक्लें और भी स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा:
'मुझे लगता है कि आप कुछ प्रश्न पूछना चाहते थे?'

'जी हां, बस कुछ ही। मैं आपको ज्यादा देर तक नहीं रोकूंगा।'
'अचे से।'
जब आपकी मां ने आपकी बड़ी बहन के बजाय आपको अपना मशहूर हार दिया, तो आपकी बहन ने कैसी प्रतिक्रिया दी?
उसे अंदाजा हो गया था कि मेरी मां क्या करने वाली है।
'कैसे?'
‘वह मेरे पिता की लाडली थी, मैं माँ की। उसने मुझे मरने से तीन साल पहले वह हार दिया था। मेरी बहन और मैंने कभी इस बारे में बात नहीं की, इसलिए मैं आपको यह नहीं बता सकती कि उसने कैसी प्रतिक्रिया दी।’
क्या आप और आपकी बहन एक-दूसरे के करीब हैं?
'हां। उम्र बढ़ने के साथ-साथ हम एक-दूसरे के करीब आ रहे हैं। जब हम जवान थे, तब हमारे बीच प्रतिस्पर्धा की भावना थी।'
आपको अभिनय का शौक था, है ना?
'हां। इसीलिए मेरी मां को मुझ पर बहुत गर्व था। सुशीला—मेरी बहन—को अभिनय में कभी दिलचस्पी नहीं थी।'
‘आपकी बेटी के बारे में क्या?’
‘उसने स्कूल और कॉलेज में नाटकों में भाग लिया है। फिर उसे फिल्म निर्माताओं से कुछ प्रस्ताव मिले, लेकिन उसने उन्हें स्वीकार नहीं किया।’ वह क्या करना चाहती है?
‘पत्रकारिता में जाओ। उसने पहले ही लिखना शुरू कर दिया है। वह स्वतंत्र होना चाहती है और अपना खुद का करियर बनाना चाहती है।’
क्या आपको किसी पर शक है कि उसने आपका हार चुराया है?
'नहीं। मुझे खेद है कि मैं आपकी बिल्कुल भी मदद नहीं कर सकता।'
‘क्या आपने कल रात फिल्म शो के दौरान किसी को अपनी सीट से उठते हुए देखा?’ नहीं। मुझे लगा कि सभी लोग फिल्म में पूरी तरह से मग्न थे।
'धन्यवाद श्रीमती बिस्वास, अब आपसे कोई प्रश्न नहीं है।'
सुनीला बिस्वास ने अलविदा कहा और अंदर चली गईं।
फेलुदा ने एक बार फिर श्री बिस्वास की ओर रुख किया।
'अगर अनुमति हो तो मैं श्री सोम से मिलना चाहूंगा।'
'ज़रूर।'
श्री बिस्वास अंदर चले गए और श्री सोम को भेज दिया। श्री सोम ने आज सुबह दाढ़ी बनाई थी, जिससे उनका रूप थोड़ा कम संदिग्ध लग रहा था। वे फेलुदा के सामने छोटे सोफे पर बैठ गए और एक सिगार जलाया। मैंने उन्हें कल रात भी सिगार पीते देखा था। कमरे में तीखी गंध फैल गई।
‘आप इस घर में कब से रह रहे हैं?’ फेलुदा ने पूछना शुरू किया।
'लगभग पंद्रह साल। शकुंतला देवी स्वयं मुझे यहाँ लाई थीं।'
‘क्या आपको किसी की दान-पुण्य पर निर्भर रहने में कोई आपत्ति नहीं थी?’ 'श्री मित्तर, मेरे पास इस मामले में बहुत कम विकल्प थे। मेरी उम्र पचास से ज़्यादा हो चुकी थी। गठिया ने मेरे दाहिने अंगूठे को इतना बुरी तरह प्रभावित कर दिया था कि मैं अब पेंटिंग नहीं कर सकता था। मेरे पास पैसे नहीं थे। अगर शकुंतला देवी ने मुझे घर न दिया होता, तो मैं सड़कों पर भूखा

मर जाता। ज़ाहिर है, मुझे किसी पर निर्भर रहना पसंद नहीं था। लेकिन शकुंतला और उनका परिवार बहुत दयालु थे, और फिर युवा प्रसेनजीत और शीला भी मुझे बहुत पसंद करते हैं। इसलिए अब मुझे ज़्यादा बुरा नहीं लगता। मुझे इसकी आदत हो गई है।'
क्या आपकी कोई आमदनी नहीं है?
'सच में नहीं। मेरी कुछ पुरानी पेंटिंग्स कभी-कभार बहुत कम दामों पर बिक जाती हैं। उससे मुझे लगभग कुछ नहीं मिलता। मैं श्री बिस्वास द्वारा हर महीने दिए जाने वाले भत्ते से अपना गुजारा करती हूँ। मेरे पास एक कमरा है और मैं परिवार के साथ खाना खाती हूँ। सिरूट ही एकमात्र ऐसी विलासिता है जिसकी मैं कभी-कभार अनुमति देती हूँ, हालाँकि मैंने उन्हें खाना कम कर दिया है।'
क्या आपको लापता हार के संबंध में किसी पर संदेह है?
श्री सोम कुछ सेकंड तक चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'मुझे किसी भी नौकर पर शक नहीं है।'
क्या यहाँ कोई और है?
श्री सोम फिर चुप हो गए। 'देखिए,' फेलुदा ने आग्रह किया, 'अगर आप मुझे ठीक-ठीक नहीं बताएंगे कि आप क्या सोचते हैं, तो मेरा काम और भी मुश्किल हो जाएगा। आप हार बरामद करवाना चाहते हैं, है ना?'
'बिल्कुल।'
'तो ठीक है?'
'कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके बारे में मुझे यकीन नहीं है।'
'कौन?'
‘प्रसेनजीत।’
'आप क्यों कहते हो कि?'
‘वह बहुत बदल गया है। वह परिवार में किसी से भी ठीक से बात नहीं करता, मुझसे भी नहीं। शायद वह बुरी संगत में पड़ गया है। शायद वह नशे या जुए में पड़ गया है... या किसी और चीज़ में जिसके लिए उसे पैसों की ज़रूरत है। मुझे पता है कि उसके पास नौकरी नहीं है, और उसके पिता से मिलने वाला पैसा कभी भी पर्याप्त नहीं होता। कभी-कभी वह मुझसे पैसे उधार लेने आता है, वह इतना बेबस है। मैंने उससे बात करने की कोशिश की है, उसे समझाने की कोशिश की है, लेकिन मैं नाकाम रही हूँ।’
‘ठीक है। क्या आपने कल फिल्म दिखाए जाने के दौरान किसी को हिलते-डुलते या वहां से जाते हुए देखा?’
नहीं। मेरी नजरें स्क्रीन से हटी ही नहीं।
‘ठीक है, श्रीमान सोम। अभी के लिए बस इतना ही। बहुत-बहुत धन्यवाद, और क्या आप कृपया मैरी शीला को भेज सकते हैं?’
श्री सोम शीला की तलाश में निकल पड़े। कुछ ही मिनटों में वह आ गई। सलवार-कमीज पहने और बिना गहनों के, वह एक आदर्श आधुनिक युवती लग रही थी।
जब शीला बैठ गई तो फेलुदा ने उससे पूछा, 'शीला, तुम क्या कर रही थी?'
मैं एक लेख लिख रहा था।
‘किसी पत्रिका के लिए?’

'हां, कमरे को सजाने के तरीके पर।'
‘ओह? क्या आपको इंटीरियर डेकोरेशन में दिलचस्पी है?’
'हां। मैं एक दिन डेकोरेटर बनना चाहूंगी।'
क्या आपने कोई प्रशिक्षण लिया है?
'नहीं, कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं; लेकिन मैंने इस विषय पर काफी कुछ पढ़ा है।'
'क्या आप आकर्षित कर सकते हैं?'
'थोड़ा-बहुत। मैंने अंकल सुदर्शन से कुछ चीजें सीखीं। जब मैं बच्चा था तो वे मुझे बहुत प्रोत्साहित करते थे।'
‘तुम्हारे अपने भाई के साथ कैसे संबंध हैं?’
'मैं नहीं जानती। अब और नहीं। वह मुझसे शायद ही कभी बात करता है। फिर भी, एक समय था जब हम बहुत करीब थे।'
‘क्या आपको बुरा लग रहा है? क्या उसके इस बदलाव से आपको परेशानी हो रही है?’ 'पहले ऐसा होता था। अब मुझे इसकी आदत हो गई है।'
‘आपने हार को उसकी सामान्य जगह पर वापस रख दिया था, है ना?’
'जी हां, बिल्कुल! और मैंने चाबियां बदल दी हैं।'
‘क्या आपको पता है कि यह कैसे गायब हो गया?’
शीला मुस्कुराई, 'नहीं, मैं कैसे करूँ? आप तो जासूस हैं!'
'हां, लेकिन एक जासूस को सच्चाई तक पहुंचने के लिए सवाल पूछने पड़ते हैं। आप यह जानते हैं, है ना?'
'हाँ।'
फेलुदा के कुछ बोलने से पहले ही घंटी बज गई। सुलेमान ने दरवाजा खोला और प्रसेनजीत को अंदर आने दिया। हमें देखकर वह थोड़ा चौंक गया, लेकिन जल्दी ही संभल गया।
‘जांच जारी है?’ उसने ताना मारा।
मैं बस आपकी बहन से कुछ सवाल पूछ रहा था। मुझे खुशी है कि आप वापस आ गए हैं क्योंकि मैं भी आपसे यही पूछना चाहता हूँ। क्या आपको कोई आपत्ति है?
'हां, मुझे पता है। पुलिस ने मुझसे भी पूछताछ करने की कोशिश की। मैंने उनके किसी भी बेवकूफी भरे सवाल का जवाब नहीं दिया।'
लेकिन मैं पुलिस नहीं हूं।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं अपना मुंह नहीं खोलने वाला।
‘तब आप स्वतः ही संदिग्ध बन जाएंगे।’
मुझे परवाह नहीं। सिर्फ शक के आधार पर किसी को जेल नहीं भेजा जा सकता, है ना? सबूत कहां है? मेरे पास होने का दावा करने से पहले आपको हार ढूंढना होगा!
‘बहुत खूब, प्रसेनजीत। अगर आप सहयोग करने को तैयार नहीं हैं, तो हम कुछ नहीं कर सकते। हम आपको बात करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते।’
फेलुदा उठ खड़ा हुआ। लालमोहन बाबू और मैंने भी उसका अनुसरण किया।
‘जाने से पहले,’ उसने शीला से कहा, ‘क्या मैं आपके घर का लेआउट देख सकता हूँ?’
'निश्चित रूप से।'

शीला हमें अंदर ले गई। बैठक के पीछे भोजन कक्ष था। इसके बाद श्रीमान और श्रीमती बिस्वास का शयनकक्ष था, जिसमें एक संलग्न स्नानघर था। उनके शयनकक्ष में जुड़े हुए दरवाज़े दोनों ओर के कमरों में खुलते थे, जो शीला और प्रसेनजीत के थे। इनमें भी संलग्न स्नानघर थे। श्री सोम का कमरा प्रसेनजीत के कमरे के बगल में था।
हम लिविंग रूम में लौट आए।
‘मैं जल्द ही अपनी ऑटोग्राफ बुक लेकर आपसे मिलने आऊंगी,’ शीला ने कहा।
फेलुदा ने जवाब दिया, 'आपका हार्दिक स्वागत है। लेकिन कृपया आने से पहले मुझे फोन कर दीजिएगा। अगर आप सीधे होटल आ गए, तो शायद मैं वहां न मिलूं।
वैसे, क्या मैं आपके पिताजी से दोबारा मिल सकता हूँ?'
शीला ने जाकर अपने पिता को फोन किया।
‘क्या आपका काम पूरा हो गया?’ श्री बिस्वास ने पूछा।
'हां, लगभग ऐसा ही है। दुर्भाग्यवश, आपके बेटे ने किसी भी सवाल का जवाब नहीं देने दिया।'
श्री बिस्वास ने खेद से सिर हिलाया। 'मुझे खेद है, श्री मित्तर। प्रसेनजीत ऐसा ही है... मैंने तो लगभग उससे उम्मीद ही छोड़ दी है।'
'कोई बात नहीं। मैं आपसे किसी और काम से मिलना चाहता था। क्या आपको लगता है कि श्री सल्दान्हा अपनी दुकान पर होंगे?'
'हां, मुझे ऐसा ही लगता है। अभी तो सिर्फ साढ़े पांच बजे हैं।'
क्या आप कृपया मुझे उनका टेलीफोन नंबर दे सकते हैं और बता सकते हैं कि उनकी दुकान कहाँ है?
श्री बिस्वास ने टेलीफोन के बगल में पड़े एक छोटे से पैड से एक पन्ना फाड़ा और जल्दी से दुकान का पता और फोन नंबर लिख लिया।
‘क्या मैं यहीं से उसे फोन कर सकता हूँ?’ फेलुदा ने पूछा।
'हाँ बिल्कुल।'
श्री सल्दान्हा ने स्वयं फोन उठाया और फेलुदा को तुरंत वहां जाने के लिए कहा।
फेलुदा ने श्री बिस्वास से कहा, 'मुझे दो और लोगों से मिलना है। आपके बहनोई रतनलाल और श्री सुकियुस। मुझे लगता है कि मैं श्री सुकियुस से कल मिलूंगा।'
‘रतनलाल फ्रेजर रोड में रहता है। मैं आपको उसका पता भी दे देता हूँ। उससे मिलने का सबसे अच्छा समय शाम सात बजे के बाद है।’

छह
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि हजरतगंज स्थित सल्दान्हा एंड कंपनी इतनी पुरानी दुकान है। इसकी जर्जर हालत देखकर मैं चौंक गया।
श्री सल्दान्हा एक डेस्क के पीछे बैठे थे। दुकान पंद्रह मिनट में बंद होने वाली थी। वहाँ एक सहायक के अलावा कोई नहीं था। हमें आते देख श्री सल्दान्हा मुस्कुराए।
'स्वागत है, श्रीमान मिटर। कृपया बैठ जाइए।'
हमें तीन कुर्सियाँ दी गईं।
'मुझे उम्मीद है कि यहां आने से आपको कोई असुविधा नहीं हुई होगी?' फेलुदा ने पूछा।
'अरे नहीं, बिलकुल नहीं। वैसे भी हम अब बंद करने वाले हैं। आप जो चाहें पूछ सकते हैं; फिर जब यहाँ काम खत्म हो जाएगा, मैं आपको अपने घर ले चलूँगा। आप वहाँ एक कप कॉफ़ी पी सकते हैं और मेरी पत्नी से मिल सकते हैं।'
'यह बहुत अच्छा होगा, धन्यवाद। मैं आपकी पत्नी से भी कुछ सवाल पूछना चाहूंगा। दरअसल, मुझे पार्टी में मौजूद सभी लोगों से बात करनी है।'
कोई बात नहीं। मुझे नहीं लगता कि उसे बुरा लगेगा।
‘बहुत अच्छा। चलिए, आपसे शुरू करते हैं। यह दुकान कितनी पुरानी है?’
लगभग सत्तर साल हो गए। मेरे दादाजी ने इसकी शुरुआत की थी। यह लखनऊ की पहली संगीत की दुकान थी।
‘अब तो और भी संगीत की दुकानें होंगी ना?’
जी हां, दो और दुकानें हैं, दोनों गोवावासियों की हैं। एक डी मेलो की है, दूसरी नोरोन्हा की। उनमें से एक यहां से ज्यादा दूर नहीं है। अफसोस की बात है कि हम समय के साथ कदम नहीं मिला पाए हैं। आप इस दुकान की हालत देखकर यह समझ सकते हैं, है ना?
क्या आप यह कह रहे हैं कि आपका व्यवसाय उतना अच्छा नहीं चल रहा है?
‘मैं क्या कहूँ, श्रीमान मिटर? यह प्रतिस्पर्धा का युग है, है ना? अगर मेरा बेटा मेरे साथ जुड़ जाए, तो शायद उसके युवा विचार काम आ सकें। लेकिन उसने डॉक्टरी की पढ़ाई की, फिर अमेरिका चला गया। वह वहाँ खूब पैसा कमा रहा है, लेकिन उसके बूढ़े पिता को इस पुरानी दुकान की देखभाल करनी पड़ती है। मेरे कुछ वफादार ग्राहक हैं, इसलिए मेरा काम चल जाता है, लेकिन हालात बदल गए हैं। अब सादगी और ईमानदारी की कोई कदर नहीं करता। हर कोई चकाचौंध चाहता है।’
फेलुदा ने सहानुभूति जताते हुए कुछ शब्द कहे, फिर अपना अगला प्रश्न पूछा। 'क्या आप कल रात हुई त्रासदी के बारे में कुछ कहना चाहेंगे?'
मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ। जब वह हार मेरी साली मार्गरेट को मिला, तो वह पूरी तरह टूट गई। उसे वह हार बहुत पसंद था और उसे बहुत बुरा लगा कि वह

उसे नहीं मिला। और भला उसे दोष क्यों दिया जाए? वह इतना खूबसूरत था... बिलकुल अनमोल।
'क्या आपका मतलब यह है कि आप इस बात से सहमत हैं कि शकुंतला देवी द्वारा इसे अपनी छोटी बेटी को देना अनुचित था, यहां तक कि भगवान की दृष्टि में भी?' 'हां। आखिर पामेला को ऐसी त्रासदी का सामना क्यों करना पड़ा?'
लेकिन इसे किसने लिया होगा? क्या आपको कोई अंदाजा है?
'नहीं, श्रीमान मिटर, मैं इस मामले में आपकी बिल्कुल भी मदद नहीं कर सकता।' क्या आपको पता है कि आपकी भाभी का बेटा बुरी संगत में पड़ गया है?
'हां, मुझे ऐसा ही अंदाजा था।'
'संभवतः वह नशे का आदी है। उसे नियमित रूप से बहुत अधिक पैसों की जरूरत होती है।'
श्री सल्दान्हा ने खेदपूर्वक अपनी जीभ चटकाई। फिर उन्होंने कहा, 'ऐसा हो सकता है, श्री मिटर, लेकिन मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वह इतनी कीमती चीज चुराकर बेच देगा। नहीं, यह तो बिलकुल ही अविश्वसनीय लगता है।'
'क्या आपने फिल्म शो के दौरान किसी को कमरे से बाहर जाते देखा?'
'नहीं, लेकिन मैंने सुकियुस को अंदर आते देखा।'
'धन्यवाद।'
दुकान बंद करने का समय हो गया था। हम उठ खड़े हुए। जब हम श्री सल्दान्हा के घर उनकी कार से पहुँचे, तब तक सवा छह बज चुके थे और काफी अंधेरा हो चुका था। श्री बिस्वास के घर की तरह, यह भी एक बंगला था, लेकिन आकार में छोटा था। ड्राइंग रूम काफी खाली-खाली सा लग रहा था। जाहिर है, श्री सल्दान्हा अपने साले जितने अमीर नहीं थे, और उनकी पत्नी को भी इंटीरियर डेकोरेशन में ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी।
श्री सल्दान्हा ने पुकारा, ‘मार्गरेट, आपके यहाँ मेहमान आए हैं!’ मार्गरेट सुशीला कुछ देर बाद वहाँ पहुँचीं। ‘ओह, आप हैं!’ उन्होंने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा। लेकिन उनकी मुस्कान उनके चेहरे पर दिख रही थकावट को छुपा नहीं पाई।
'श्रीमती सल्दान्हा, कृपया बैठ जाइए,' फेलुदा ने कहा। 'शायद आपको पता नहीं है कि श्री बिस्वास ने मुझे चोरी हुए हार के इस मामले की जांच करने के लिए कहा था।'
मैंने अनुमान लगा लिया था।
‘क्या मैं इस संबंध में आपसे कुछ प्रश्न पूछ सकता हूँ?’
'हां बेशक।'
श्री सल्दान्हा उठे और बोले, 'श्री मिटर, मुझे कपड़े बदलने दीजिए; और मैं हमारे लिए कुछ कॉफी ले आता हूँ।'
वह अंदर चला गया। मार्गरेट सुशीला एक कुर्सी पर बैठ गई और फेलुदा की ओर देखने लगी।
‘आपकी शादी को कितने साल हो गए हैं?’ फेलुदा ने थोड़ी देर रुकने के बाद सवाल पूछना शुरू किया।
पैंतीस साल।
'मुझे लगता है कि आपका बेटा अमेरिका में है। क्या आपके कोई और बच्चे हैं?'

‘एक बेटी है। उसकी शादी हो चुकी है। उसके पति का कुलू में एक सेब का बाग है। वे वहीं रहते हैं।’
‘तुम्हारी और तुम्हारी बहन की उम्र में कितना अंतर है?’
‘सिर्फ दो साल।’
‘क्या तुम हमेशा से करीब रहे हो?’
'जब हम छोटे थे तो हम बहुत करीब थे। हम साथ खेलते थे, एक जैसे कपड़े पहनते थे, एक ही नर्सरी स्कूल में जाते थे।'
‘जब आप बड़े हुए तो क्या हुआ?’
जब मैं लगभग पंद्रह साल की थी, तब मुझे एहसास हुआ कि हमारी माँ मुझसे ज़्यादा पाम को पसंद करती थीं। इसके पीछे एक वजह थी। पामेला मुझसे ज़्यादा सुंदर और कहीं ज़्यादा प्रतिभाशाली थीं। वह अभिनय, भाषण कला और संगीत में माहिर थीं। पढ़ाई में भी उनका प्रदर्शन मुझसे बेहतर था। मैं महसूस कर सकती थी कि मेरी माँ का स्नेह मुझसे दूर होता जा रहा है। वह अपना सारा ध्यान पाम पर देती थीं। हमारे पिता मुझसे बहुत प्यार करते थे, लेकिन माँ के स्नेह की कमी उससे पूरी नहीं हो रही थी। मुझे पाम से बहुत जलन होती थी। और फिर... फिर वह हार उसे दे दिया गया। मुझे अपने जीवन में इतना बुरा कभी नहीं लगा। मैं बड़ी बेटी थी। वह हार मुझे मिलना चाहिए था। इस निराशा से उबरने में मुझे बहुत समय लगा।
‘अब क्या? क्या तुम अब भी उससे ईर्ष्या करते हो?’
नहीं। वो सब अब बीती बात हो गई है। हम एक-दूसरे को बहुत पसंद करते हैं। आपने हमें कल देखा था। क्या हम एक-दूसरे से दूर-दूर लग रहे थे?
'बिल्कुल नहीं।'
'मुझे अपनी बहन के लिए सिर्फ प्यार ही नहीं है। कभी-कभी तो मुझे उस पर दया भी आती है।'
‘दया? वो क्यों?’
मेरे जीजाजी का कारोबार अच्छा नहीं चल रहा है। वे मुश्किल में हैं। पैसों की बहुत दिक्कत है।
'वास्तव में?'
'जी हां। मैं यह बात आपसे पूरी गोपनीयता से कह रहा हूं। पाम के पति पर बहुत सारा कर्ज चढ़ गया है और वह बहुत ज्यादा शराब पीता है।'
लेकिन कल ही तो उन्होंने पार्टी दी थी!
मुझे पता है। मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि उन्होंने यह कैसे किया। मुझे और मेरे पति को निमंत्रण पाकर बहुत आश्चर्य हुआ।
'शायद अब हालात बेहतर हैं।'
'शायद। लेकिन दो महीने पहले तक भी मेरी बहन अक्सर मेरे पास आकर अपनी परेशानियाँ बताती थी। कभी-कभी तो वह रो भी देती थी। वैसे भी, उनका बेटा... मुझे लगता है कि आप उनके बेटे के बारे में जानती ही होंगी?'
'हाँ।'
मुझे बस यही उम्मीद है कि आप सही हों और उनके घर में हालात सुधर गए हों। ‘क्या आपको कोई अंदाजा है कि हार किसने चुराया होगा?’
'बिल्कुल भी नहीं। यह मेरे लिए एक बड़ा रहस्य है।'

क्या आपको प्रसेनजीत पर शक नहीं है?
‘Prasenjit? Pam’s son?’
श्रीमती सल्दान्हा कुछ देर सोचती रहीं। फिर धीरे से बोलीं, 'शायद मुझे यह बताना चाहिए। जब वह फिल्म दिखाई जा रही थी, तब प्रसेनजीत मेरे बगल में बैठे थे। शो के दौरान वे अपनी सीट से उठ गए। मुझे नहीं पता कि वे कहाँ गए।'
क्या आपने किसी और को हिलते-डुलते देखा?
नहीं। मैं फिल्म में पूरी तरह मग्न था। मैंने इसे बीस साल बाद देखा। 'धन्यवाद, श्रीमती सल्दान्हा। अब और कोई प्रश्न नहीं।'
इसके बाद हमने कॉफी पी और चले गए। बाहर निकलते ही फेलुदा ने कहा, 'अल्बर्ट रतनलाल। अब हम आज का काम यहीं खत्म कर सकते हैं।'
हम सल्दान्हा के घर से रतनलाल के फ्लैट पर गए। वहाँ की भव्यता देखकर मैं दंग रह गया, जो उस घर से बिलकुल अलग थी जिसे हम अभी-अभी छोड़कर आए थे। फ्लैट बहुत बड़ा था—दरअसल, एक व्यक्ति के लिए बहुत बड़ा। बैठक में महंगे फर्नीचर और तरह-तरह की कलाकृतियाँ सजी हुई थीं। रतनलाल सोफे पर आराम से बैठे हाई-फाई स्टीरियो पर ग़ज़लें सुन रहे थे। उन्होंने रेशमी गाउन पहना हुआ था और उनके मुँह में पाइप लटका हुआ था। पूरे कमरे में इत्र की महक फैली हुई थी।
जैसे ही उसने हमें अंदर आते देखा, उसने स्टीरियो बंद कर दिया और कहा, 'अरे, क्या बात है?'
'श्री बनर्जी, मुझे आपसे कुछ सवाल पूछने हैं,' फेलुदा ने समझाया। 'कल रात हुई चोरी के संबंध में। मुझे वहां मौजूद सभी लोगों से बात करनी है।'
'सब लोग?'
'हां। सुकिअस ही एकमात्र व्यक्ति बचा है। मैं कल उसके पास जाऊंगा।'
‘क्या आपको लगता है कि मैं चोर हो सकता हूँ?’
'नहीं। लेकिन मुझे लगता है कि आप मुझे उस व्यक्ति को पकड़ने में मदद कर सकते हैं जिसने यह किया था।'
'श्री मिटर, मुझे चोरी में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं है।'
‘आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? जो चोरी हुआ वह न केवल कीमती था, बल्कि एक अत्यंत सुंदर वस्तु थी। आप उसमें पूरी तरह से उदासीन कैसे हो सकते हैं?’
‘यह मैसूर के महाराजा का उपहार था, इसलिए जाहिर है यह महंगा था। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।’
लेकिन यह तुम्हारी मां के लिए बहुत कीमती था!
‘तो क्या हुआ? देखिए, न तो मेरी मां के गहने और न ही फिल्मों में उनका करियर मेरे लिए कोई मायने रखता है। मुझे तो सभी फिल्में घटिया लगती हैं, खासकर मूक फिल्में।’
‘क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप जीविका के लिए क्या करते हैं?’
'जी हां, आप कर सकते हैं। मैं एक व्यापारिक फर्म में सहायक प्रबंधक हूं।' ‘और आप हमारी किसी भी तरह से मदद नहीं कर सकते?’
'नहीं। मुझे बहुत खेद है, लेकिन मुझे आपसे कुछ नहीं कहना है।'
'एक आखिरी सवाल—क्या आपने फिल्म शो के दौरान किसी को हिलते-डुलते देखा?'

नहीं। मैं फिल्म नहीं देख रहा था। वह उबाऊ थी। मैंने सुकिअस को अंदर आते देखा।
'धन्यवाद। अलविदा, श्रीमान बनर्जी... मुझे लगता है कि आप अपने दादाजी की तरह भारतीय संगीत के शौकीन हैं।'
रतनलाल ने कोई टिप्पणी नहीं की। उन्होंने बस स्टीरियो दोबारा चालू कर दिया। हम वहां से चले गए।

सात
अगले दिन, फेलुदा ने कहा, 'तुम दोनों दिलखुशा के पास क्यों नहीं जाते? मुझे कुछ काम हैं। मुझे सुकियस से मिलने का समय तय करना है और इंस्पेक्टर पांडे से भी बात करनी है।'
लालमोहन बाबू और मैं नाश्ते के बाद निकल पड़े। इस बार हमने टैक्सी के बजाय तांगा लिया। यह उनका ही सुझाव था, क्योंकि उन्होंने सुना था कि पिछली बार जब हम आए थे तो फेलुदा और मैंने तांगे की सवारी की थी।
‘प्रिय तपेश, क्या आप मुझे इस जगह का इतिहास बता सकते हैं?’ उसने रास्ते में पूछा। मैंने उसे जो पता था, वह बताया: ‘उन्नीसवीं सदी के आरंभ में नवाब सदात अली ने यह इमारत बनवाई थी, हालाँकि वे यहाँ स्थायी रूप से नहीं रहते थे। वे कभी-कभी अपने दोस्तों को कुछ दिनों के लिए मौज-मस्ती करने के लिए यहाँ लाते थे। यहाँ का नज़ारा बेहद खूबसूरत था। उनके बगीचों में हिरण घूमते थे। दुख की बात है कि अब यह पूरी जगह खंडहर हो चुकी है, लेकिन इसके बगल में एक सुंदर पार्क है। दिलखुशा के उत्तर में प्रसिद्ध ला मार्टिनियर स्कूल है। अठारहवीं सदी में मेजर जनरल क्लाउड मार्टिन ने इस स्कूल का निर्माण करवाया था। आप इसे दिलखुशा से देख सकते हैं।’
खंडहरों का निरीक्षण करने में हमें ज्यादा समय नहीं लगा। लालमोहन बाबू ने उत्साह से कहा, 'ऐसा लग रहा है जैसे इतिहास को अपनी आँखों के सामने घटते हुए देख रहे हों!' फिर हम पार्क में टहलने निकल पड़े, हमें जरा भी अंदाजा नहीं था कि आगे चलकर हमारे साथ कितना अप्रिय अनुभव होने वाला है।
पहले तो पार्क खाली लग रहा था। शायद शाम के समय ही यहाँ सबसे ज़्यादा लोग आते थे। हम फूलों की क्यारियों से होते हुए आगे बढ़े। थोड़ी देर में एक पेड़ के पीछे एक बेंच का हिस्सा नज़र आया। तभी कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। पेड़ के पास से गुज़रते हुए जो नज़ारा हमने देखा, उससे मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
प्रसेनजीत और उसी उम्र के कुछ और लड़के बेंच पर बैठे सिगरेट पी रहे थे। उनके बाल बिखरे हुए थे, आँखें बेजान लग रही थीं। अब इसमें कोई शक नहीं था कि प्रसेनजीत नशे का आदी था। अगर जल्द ही कुछ नहीं किया गया, तो उसके लिए वापसी करना बहुत देर हो जाएगी। नशीले पदार्थों के सेवन से नशेड़ी सही-गलत की समझ खो देता है। कभी-कभी लोग जान से मारने में भी संकोच नहीं करते। प्रसेनजीत को हमें देखने में कुछ सेकंड लगे। जब उसने हमें देखा, तो उसके होंठों पर एक धीमी, क्रूर मुस्कान फैल गई।
‘मुझे जासूस के चमचे दिख रहे हैं। खुद महाजासूस कहाँ है?’ उसने पूछा। उसकी आवाज कर्कश थी, उसकी वाणी अस्पष्ट थी।
‘वह हमारे साथ नहीं आया,’ लालमोहन बाबू ने संक्षिप्त उत्तर दिया।
'नहीं? खैर, ये तो उनका नुकसान है। वो इस अद्भुत दृश्य को देखने से चूक गए!'

हम चुप रहे।
‘क्या चोर पकड़ा गया?’ प्रसेनजीत की आवाज में खुला तिरस्कार झलक रहा था। ‘नहीं, अभी तक नहीं।’
‘मैं ही मुख्य संदिग्ध हूँ, है ना? क्योंकि मुझे पैसों की ज़रूरत है। ये तो सब जानते हैं। मुझे हर समय उधार लेना पड़ता है... बस जन्नत की एक झलक पाने के लिए... एक-दो घंटे के लिए। सुनो—मैं तुम्हें बता सकता हूँ—मैं इतना बेवकूफ नहीं हूँगा कि वो हार चुरा लूँ। जानते हो क्यों? क्योंकि मुझे ज़रूरत ही नहीं है। मेरी किस्मत बदल गई है। आजकल मैं खूब पैसा कमा रहा हूँ। हाँ, हाँ... जुआ, और क्या? अगर मुझे कभी-कभी उधार लेना पड़ता है, तो सिर्फ़ इसलिए कि एक बार जन्नत का स्वाद चख लिया, तो रुक नहीं सकते। क्यों न तुम भी कोशिश करो, मिस्टर थ्रिलर राइटर? तुम्हारी लेखन शैली ज़रूर सुधरेगी... तुम्हें हज़ारों नए विचार मिलेंगे, मैं वादा करता हूँ। चलो, तैयार हो?’ फिर भी हमने कुछ नहीं कहा। आखिर हम कह भी क्या सकते थे?
‘तुम दोनों बस एक बात याद रखना!’ प्रसेनजीत अचानक उछल पड़ा। उसकी आवाज़ अभी भी कर्कश थी, लेकिन उसमें तीखापन था। इससे पहले कि हम दोनों उससे कुछ पूछ पाते, उसने अपनी जेब से एक फोल्डिंग चाकू निकाला और हमारी तरफ तान दिया। चाकू की धार इतनी तेज़ी से निकली कि हम दोनों चौंक गए।
अगर मुझे पता चला कि किसी को भी इस पार्क में मेरे घूमने के बारे में पता चल गया है, तो मैं जान जाऊंगा कि किसने भेद खोला है। और तब तुम्हें पता चलेगा कि यह चाकू कितना तेज है। अब यहाँ से निकल जाओ!
वहाँ रुकने का कोई कारण नहीं था। हम पहले ही बहुत कुछ देख और सुन चुके थे। लालमोहन बाबू और मैं वापस उसी रास्ते से लौटे, एक और तांगा ढूंढा और अपने होटल वापस आ गए। वापसी के रास्ते में हम दोनों में से किसी ने भी बात नहीं की।
हमें शीला हमारे कमरे में मिलीं, उनके हाथ में ऑटोग्राफ बुक थी। हमें देखकर वह खड़ी हो गईं।
‘अब मुझे जाना चाहिए,’ उसने फेलुदा की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘मैंने आपका काफी समय ले लिया है। ऑटोग्राफ के लिए धन्यवाद। आपकी खोज में शुभकामनाएँ!’ शीला के जाने के बाद, लालमोहन बाबू ने हमारे हाल के अनुभव के बारे में बताया। फेलुदा ने उदास होकर सिर हिलाया। उन्होंने कहा, “उसकी आँखों में कुछ अजीब सा भाव था। यह साफ़ था कि वह नशा करता था। मुझे उसके माता-पिता के लिए बहुत दुख हो रहा है। उसका भविष्य अंधकारमय ही है।”
‘लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि हार उसी ने चुराया था?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर रुकने के बाद, उसने अचानक कहा, 'ओह, वैसे, मुझे खेद है कि आपको फिर से बाहर जाना पड़ेगा।'
'क्यों?'
श्री सुकियस का टेलीफोन खराब लग रहा है। उनसे मिलने के लिए हमें उनके घर जाना पड़ेगा। मैं खुद चली जाती, लेकिन शीला आ गई। और अब मैं बाहर नहीं जाना चाहती। मुझे सोचना है। मेरे दिमाग में कुछ चल रहा है... मुझे चुपचाप बैठकर

इस बारे में सोचना होगा। अगर तुम अभी निकल जाओ, तो शायद तुम उन्हें घर पर पा सको। चलो, टॉपशे, टैक्सी बुलाओ।
लालमोहन बाबू इससे काफी प्रसन्न दिखे। टैक्सी में बैठते हुए उन्होंने स्वीकार किया, 'मैं उन सभी सवालों से थक गया था। अब हमारे पास कुछ अलग करने को है।'
हमें घर आसानी से मिल गया। हमने अपने ड्राइवर को पाँच मिनट रुकने को कहा और घंटी बजाई। घर बड़ा था। देखने में कम से कम पचास साल पुराना लग रहा था, लेकिन अच्छी तरह से रखा हुआ था। गेट पर लगी संगमरमर की नेमप्लेट पर सुकिअस का नाम लिखा था।
एक कर्मचारी ने दरवाजा खोला।
‘क्या श्री सुकिअस अंदर हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
जी हाँ। क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ?
‘उसे बता देना कि श्री मिटर ने अपने चचेरे भाई और दोस्त को उससे मिलने भेजा है। हमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।’
'कृपया यहां प्रतीक्षा करें।'
वह व्यक्ति गायब हो गया। एक मिनट से भी कम समय में जब वह लौटा, तो उसका पूरा व्यवहार बदल चुका था। वह ऐसा लग रहा था मानो उसने कोई भूत देख लिया हो। उसकी आँखें बाहर निकली हुई थीं, उसका शरीर काँप रहा था और वह मुश्किल से बोल पा रहा था।
‘क्या बात है? क्या हुआ?’ हमने एक साथ पूछा। ‘कृपा करके मेरे साथ आइए!’ उसने किसी तरह कहा और हमें अपने पीछे आने का इशारा किया।
हम ड्राइंग रूम से होते हुए एक स्टडी रूम में पहुँचे। वह कमरा काँच के अलमारियों से भरा हुआ था, कुछ किताबों से, कुछ कलाकृतियों से। कमरे के बीचोंबीच एक बड़ी मेज थी। उसके पीछे एक घूमने वाली कुर्सी थी। उस कुर्सी पर श्री सुकिअस मेज पर झुके बैठे थे। उनका सिर मेज पर टिका हुआ था। उनकी सफेद कमीज का पिछला हिस्सा खून से लथपथ था। हालाँकि उनकी आँखें खुली थीं, फिर भी मैं समझ गया कि उनकी मृत्यु हो चुकी है। मैंने शायद ही कभी इतना भयानक दृश्य देखा था।
मैंने लालमोहन बाबू को हांफते हुए सुना। मैं खुद काफी स्तब्ध रह गया। लालमोहन बाबू सबसे पहले संभले।
‘आपने उसे आखिरी बार जीवित कब देखा था?’ उसने शववाहक से पूछा।
उस बेचारे आदमी ने जो कुछ बुदबुदाया, उसका सार यह था: श्री सुकिअस नाश्ते के बाद हर सुबह इस कमरे में आकर आराम करते थे। उनका कोई सचिव नहीं था, इसलिए उन्हें अपने पत्र-व्यवहार और अन्य कागजी काम खुद ही निपटाने पड़ते थे। उनके सहायक को निर्देश दिया गया था कि इस समय उन्हें परेशान न करे, जब तक कि ऐसा करना आवश्यक न हो। आज सुबह, श्री सुकिअस ने हमेशा की तरह नाश्ता किया और फिर अपने अध्ययन कक्ष में चले गए। जब सहायक उन्हें हमारे आने की सूचना देने आया, तो उसने उन्हें इसी हालत में पाया।
‘क्या कोई और भी उनसे मिलने आया था?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
भारवाहक ने अपना सिर जोर से हिलाया।

सुकियुस की कुर्सी के पीछे एक खुली खिड़की थी। उसमें कोई जाली नहीं थी। हत्यारा निस्संदेह खिड़की से ही अंदर आया था। उसे सामने के दरवाजे से आने की कोई आवश्यकता नहीं थी।
‘आपका टेलीफोन काम नहीं कर रहा है, है ना?’
'नहीं, महोदय। यह दो दिनों से काम नहीं कर रहा है।'
'लेकिन-'
मैंने लालमोहन बाबू की बात काटते हुए कहा, 'पुलिस को बुलाने की कोई बात नहीं। चलो वापस चलते हैं और फेलुदा को बताते हैं। उसे फैसला करने दो कि क्या करना है।'
ठीक है। चलिए ऐसा करते हैं।

आठ
हम दस मिनट में होटल पहुँच गए। जब फेलुदा ने हमारी कहानी सुनी, तो उसने अपनी नीली नोटबुक एक तरफ रख दी और जैकेट पहन ली। फिर, बिना कुछ कहे, वह हम दोनों को साथ लेकर कमरे से बाहर चला गया। उसकी भौंहें गहरी सिकुड़ी हुई थीं।
सुकिअस के घर पहुँचकर उसने सामान ढोने वाले से पूछा: 'आपके पास ड्राइवर है ना?'
'जी श्रीमान।'
उसे मेरे पास भेज दो।
जब ड्राइवर पहुंचा, तो फेलुदा ने उसे हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए गाड़ी को निकटतम पुलिस स्टेशन ले जाने को कहा। ड्राइवर चला गया।
फिर हम अध्ययन कक्ष में गए।
'चाकू से वार किया गया था,' फेलुदा ने शव पर नज़र डालते हुए संक्षेप में कहा। 'लेकिन हथियार निकाल लिया गया है।' फिर वह मेज पर झुककर बोला, 'जब उसकी हत्या हुई, तब वह पत्र लिख रहा था।'
मैंने भी यही देखा था। लगभग पूरा पन्ना भरा हुआ था। तभी मैंने फेलुदा को कहते सुना, ‘अरे, ये तो मेरे लिए चिट्ठी थी! खैर, अगर ऐसा है तो... मुझे लगता है इस पर मेरा हक है, भले ही पुलिस के आने से पहले किसी चीज को छूना ठीक न हो।’ इतना कहकर उसने राइटिंग पैड का सबसे ऊपर वाला पन्ना फाड़ा, उसे मोड़ा और अपनी जेब में रख लिया। फिर वह खिड़की के पास गया और बाहर झुक गया। बाहर एक रास्ता था—लगभग चार फीट चौड़ा—जिसके आगे घर की चारदीवारी थी। कोई भी तंदुरुस्त आदमी उस दीवार को आसानी से फांद सकता था।
फेलुदा ने कहा, ‘यह स्पष्ट है कि हत्यारा कोई पढ़ा-लिखा सज्जन नहीं था। जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, यह किसी भाड़े के गुंडे का काम है। साधारण चोरी की संभावना को खारिज किया जा सकता है क्योंकि कमरे में कुछ भी अस्त-व्यस्त नहीं हुआ है। इस कमरे में जो सामान है उसकी कीमत कम से कम एक लाख रुपये होगी। एक चोर उसमें से कुछ न कुछ जरूर ले जाता। सवाल यह है कि सुकियुस की हत्या के लिए किसने किसी को काम पर रखा था?’
‘अच्छा, हमें सुकियू के इतिहास के बारे में कुछ तो जानना ही चाहिए, है ना?’ लालमोहन बाबू ने सुझाव दिया। ‘मेरा मतलब है, हम उसके बारे में कितना जानते हैं?’
ऐसा नहीं है कि हम कुछ नहीं जानते। कम से कम हम इतना तो जानते हैं कि वह कितना विचित्र व्यक्ति था। कितने साहूकार प्राचीन वस्तुओं और कला वस्तुओं का विशाल संग्रह बनाने में रुचि रखते हैं? यह काफी असामान्य है, है ना? मुझे लगता है कि मुझे लिखे उनके पत्र से भी उस व्यक्ति के बारे में कुछ बातें पता चलेंगी।

क्या तुम इसे नहीं पढ़ोगे?
'हां, सही समय पर, सही जगह पर। उस पर "गोपनीय" लिखा हुआ था, जो आपने स्पष्ट रूप से नहीं देखा। मुझे नहीं लगता कि सुकिअस ने अपने हत्यारे को देखा था। इसलिए पत्र में उसके हत्यारे का नाम होना संभव नहीं है।'
पुलिस दस मिनट में आ गई। हमारी मुलाकात इंस्पेक्टर पांडे से दोबारा हुई। उन्होंने फेलुदा से हाथ मिलाया। ‘लगता है आपने इस मामले में अहम सुराग पा लिया है, श्री मित्तर!’ उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।
‘ऐसा लग सकता है, लेकिन यह सब आपका मामला है, इंस्पेक्टर। मैं इसमें बिल्कुल भी दखल नहीं दूंगा क्योंकि मुझे पता है कि इससे कोई फायदा नहीं होगा। बस मुझे बता दीजिए अगर आप हत्यारे को पकड़ लें।’
‘क्या! तुम जा रहे हो?’
'हां। लेकिन हो सकता है कि एक-दो दिन में आपसे फिर मुलाकात हो जाए। मैंने गुमशुदा हार का मामला लगभग सुलझा लिया है।'
'सच में? मुझे तो उस नौजवान बिस्वास लड़के पर शक हो रहा है। क्या आपको लगता है कि यह सही है?'
मैं कुछ नहीं कह सकता। कृपया मुझे क्षमा करें।
'हमारे पास इस बात का पुख्ता सबूत है कि वह ड्रग्स ले रहा है। हम उस पर नजर रख रहे हैं।'
‘खैर, आपको शुभकामनाएँ। अब आपके हाथ में एक हत्या का मामला है। मुझे एक बात बताइए: मुझे पता है कि दुनिया के अधिकांश हिस्सों में हत्यारे को किराए पर लेना संभव है। मेरा मानना है कि लखनऊ भी इसका अपवाद नहीं है?’
'बिल्कुल नहीं। यहां ऐसा करना बिल्कुल संभव है।'
‘धन्यवाद। मुझे बस इतना ही जानना था। अलविदा।’

नौ
अगले दो दिनों तक फेलुदा ने लखनऊ के बाकी दर्शनीय स्थलों पर हमारे साथ घूमने के अलावा कुछ नहीं किया। मैंने उन्हें किसी मामले में व्यस्त रहते हुए इस तरह व्यवहार करते कभी नहीं देखा था। तीसरे दिन, मैं उनसे पूछे बिना नहीं रह सका, 'फेलुदा, क्या हुआ है? क्या तुमने हार मान ली है?'
'अरे नहीं। आधा रहस्य तो सुलझ गया, प्यारे लड़के। बाकी आधा सुलझाने के लिए मुझे पुलिस की मदद चाहिए। पांडे मुझे पहले ही दो बार फोन कर चुका है। मुझे लगता है कि मुझे दो दिनों में अंतिम खबर मिल जाएगी।'
‘आपको पुलिस की मदद की ज़रूरत क्यों है? क्या इसका संबंध श्री सुकिअस की मृत्यु से है?’
'हाँ।'
‘लापता हार का क्या हुआ?’
‘इस बारे में चिंता करने की कोई बात नहीं है। हार बिल्कुल ठीक है।’
'सच में? तो आपको बस कातिल को ढूंढना है? आपको जरूर कुछ अंदाजा होगा कि यह किसने किया होगा?'
'ओह, मेरे पास विचार तो हैं, लेकिन कोई सबूत नहीं। मुझे पूरा यकीन है कि जैसे ही पुलिस उस भाड़े के हत्यारे को पकड़ेगी, मुझे पर्याप्त सबूत मिल जाएंगे। मुझे इस बारे में पक्के विचार हैं कि उसे किसने काम पर रखा था।' एक और दिन बीत गया। इसी बीच हम लालमोहन बाबू को संग्रहालय दिखाने ले गए। उन्होंने लखनऊ का लगभग पूरा भ्रमण कर लिया था। हमें दो दिन में कलकत्ता लौटना था।
उस दोपहर, फेलुदा को आखिरकार वह फोन कॉल आ गया जिसका वह इंतजार कर रहा था।
उसने इंस्पेक्टर पांडे से बात की और फिर चुपचाप रिसीवर रख दिया।
‘फेलुदा, उसने क्या कहा?’ मैंने उत्सुकता से पूछा।
‘मामला खत्म हो गया है, टॉपशे। उन्होंने शंभू सिंह नाम के उस आदमी को पकड़ लिया है। उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया है और असली अपराधी का नाम बताने के लिए भी तैयार हो गया है। सुकियुस पर हमला करने के लिए इस्तेमाल किया गया चाकू भी बरामद कर लिया गया है।’
'तो अब आगे क्या?'
अब हम पर्दा उठाते हैं। आज शाम सात बजे, जयंत बिस्वास के घर में, सब कुछ सामने आ जाएगा।
इसके बाद फेलुदा को कई फोन करने पड़े। पहला फोन तो उसने स्वाभाविक रूप से श्री बिस्वास को किया। उसने कहा, 'बहुत खूब, श्री मित्तर, लेकिन क्या आप बाकी सभी को भी यहाँ आने के लिए कह देंगे? आपके पास उनके फोन नंबर तो होंगे ही, है ना?'

हम पौने सात बजे श्री बिस्वास के घर पहुँचे। मैं बहुत चिंतित और उत्सुक था। फेलुदा ने आखिरी फोन करने के बाद कुछ नहीं कहा था। इंस्पेक्टर पांडे पौने सात बजे दो कांस्टेबलों और हथकड़ी पहने एक व्यक्ति के साथ वहाँ पहुँचे। स्पष्ट रूप से वही भाड़े का हत्यारा था।
बाकी लोग दस मिनट के भीतर आ गए। इनमें बिस्वास परिवार के पांच सदस्य, साल्डनहा परिवार और रतनलाल बनर्जी शामिल थे। बड़ा ड्राइंग रूम सभी के लिए काफी आरामदायक था।
‘यह कैसा तमाशा है?’ रतनलाल ने बैठते हुए पूछा।
'आप इसे एक तमाशा कह सकते हैं, श्रीमान बनर्जी, लेकिन मुझे लगता है कि दूसरों के लिए यह एक गंभीर मामला है,' फेलुदा ने जवाब दिया।
'क्या आपको हार मिल गया?' श्रीमती बिस्वास ने घबराई हुई फुसफुसाहट में पूछा।
फेलुदा ने उससे कहा, ‘तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब समय आने पर मिल जाएगा। कृपया धैर्य रखें।’ फिर उसने उपस्थित लोगों पर नज़र डाली और घोषणा की, ‘रहस्य सुलझ गया है। कहने की ज़रूरत नहीं है कि पुलिस की मदद के बिना कुछ भी संभव नहीं था। अब मैं बस यह बताना चाहता हूँ कि क्या हुआ था। मुझे उम्मीद है कि आगे बढ़ने पर तुम्हारे सभी सवालों के जवाब मिल जाएँगे।’
‘आशा है आपको ज्यादा देर नहीं लगेगी। मुझे एक डिनर पार्टी में जाना है,’ रतनलाल ने बुदबुदाते हुए कहा।
‘मैं ज़रूरत से ज़्यादा समय नहीं लूँगा। क्या मैं शुरू करूँ?’ एक पल का सन्नाटा छा गया। फिर श्री बिस्वास ने कहा, ‘ज़रूर शुरू कीजिए।’ फेलुदा ने फिर बोलना शुरू किया, ‘सबसे ज़रूरी बात यह याद रखनी है कि हमारे सामने दो मामले थे: चोरी हुआ हार और श्री सुकियस की हत्या। मैंने आप सभी से पूछताछ की। आप में से कुछ ने मुझसे झूठ बोला, या बातें छिपाने की कोशिश की, या बस जवाब देने से इनकार कर दिया। हार के मामले में आप में से कई लोगों पर शक हो सकता है। यहाँ युवा प्रसेनजीत को नशे की बुरी लत लग गई है। उसे हर समय पैसों की ज़रूरत रहती है। कभी-कभी वह उधार ले लेता है, कभी-कभी ताश में उसकी किस्मत अच्छी होती है। दूसरा संदिग्ध श्री सुदर्शन सोम हो सकता था। उसने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा दान पर निर्भर रहकर बिताया है। हो सकता है उसने नए सिरे से जीवन शुरू करने की हताश कोशिश में हार चुराया हो। फिर श्री सल्दान्हा थे। उनकी दुकान बिल्कुल भी अच्छी नहीं चल रही है। उन्हें निश्चित रूप से पैसों की ज़रूरत है। केवल एक व्यक्ति शक से परे लग रहा था।’ यह श्री बिस्वास थे, क्योंकि उन्होंने कहा था कि उनका व्यवसाय फल-फूल रहा है, उनके पास पर्याप्त धन है। हालांकि, किसी और ने मुझे बताया कि ऐसा नहीं था। श्री बिस्वास आर्थिक रूप से कठिन दौर से गुजर रहे थे, जिसके कारण वे अत्यधिक शराब पीने लगे थे। बेशक, यह जानकारी सही थी या नहीं, यह एक अलग बात है।
अब मैं श्री सुकिअस की हत्या की ओर रुख करता हूँ। जब उनकी हत्या हुई, तब वे एक पत्र लिख रहे थे। यह पत्र मुझे संबोधित था और लगभग पूरा हो चुका था।
पत्र लिखने का कारण यह था कि वे उसी दिन कानपुर के लिए रवाना होने वाले थे।

वे जानते थे कि वे मुझसे मिल नहीं पाएंगे, इसलिए उन्होंने पत्र के माध्यम से मुझे वह सब कुछ बताने की कोशिश की जो उन्हें पता था।
‘मुझे उनके पत्र से दो बातें पता चलीं। पहली, जयंत बिस्वास आखिरकार शकुंतला का हार उन्हें दो लाख रुपये में बेचने के लिए सहमत हो गए थे। वे समझौते के तीन दिन बाद इसे श्री सुकिअस को सौंपने वाले थे। लेकिन सुकिअस की तीन दिन की अवधि पूरी होने से पहले ही हत्या कर दी गई।’
दूसरी बात, इस कमरे में एक व्यक्ति मौजूद है जिसने छह सप्ताह पहले श्री सुकियस से पचास हजार रुपये उधार लिए थे। उसने एक महीने में ब्याज सहित रकम लौटाने का वादा किया था, लेकिन कई बार याद दिलाने के बावजूद वह अपना वादा निभाने में नाकाम रहा। इसके बाद श्री सुकियस ने कानूनी कार्रवाई करने की धमकी दी। उसकी हत्या इसलिए की गई क्योंकि जिसने भी उससे पैसे उधार लिए थे, वह नहीं चाहता था कि वह मुझे यह सब बताए। दुर्भाग्य से, चीजें उसके मन मुताबिक नहीं हुईं। उसके साथी—एक भाड़े के गुंडे—ने अपना काम किया और अपने शिकार को मार डाला, लेकिन मृतक द्वारा लिखे जा रहे पत्र को नहीं हटाया। जाहिर है, उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि उस पत्र में क्या लिखा था। पुलिस ने अब इस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया है और उसने हमें यह बताने की पेशकश की है कि उसे किसने काम पर रखा था।
फेलुदा ने इंस्पेक्टर पांडे की ओर मुड़कर कहा, 'कृपया अपने आदमी को इधर बुलाइए।'
हथकड़ी पहने व्यक्ति और कांस्टेबल दूर छोर पर इंतजार कर रहे थे।
इंस्पेक्टर के इशारे पर, वे उस व्यक्ति को आगे ले आए।
‘बताओ, शंभू सिंह, क्या तुम उस आदमी को देख रहे हो जिसने तुम्हें श्री सुकियस की हत्या करने के लिए काम पर रखा था?’ फेलुदा ने धीरे से पूछा।
उस व्यक्ति ने समूह पर सरसरी नजर डाली।
“जी सर,” उसने उत्तर दिया।
क्या आप उसे दिखा सकते हैं?
‘आसानी से। वो रहा!’ शंभू सिंह ने हथकड़ी लगे हाथों को ऊपर उठाया और इशारा किया। रतनलाल के मुंह से निकली पाइप ज़ोरदार आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर गई।
‘यह क्या बकवास है?’ वह गरजते हुए बोला।
‘बकवास हो या नाटक, आपका खेल खत्म हो गया है, श्री बनर्जी,’ फेलुदा ने शांत भाव से कहा। एक क्षण बाद, उन्होंने बोलना जारी रखा जबकि सभी अपनी सीटों पर तनावग्रस्त और सजग बैठे थे।
'श्री बनर्जी, क्या आप हमें बताएंगे कि आपने इतनी बड़ी रकम क्यों उधार ली?' फेलुदा ने पूछा।
'मैं नहीं करूँगा!'
बहुत खूब। मुझे आपकी ओर से बोलने दीजिए। आप हमेशा अपनी आमदनी से ज़्यादा खर्च करते थे, है ना? सुकियस ने मुझे गायकों और नर्तकियों के यहाँ आपके आने-जाने और उन पर खर्च किए गए पैसों के बारे में लिखा था। जब हम आपके फ्लैट पर गए, तो हमें इत्र की खुशबू आई। शायद आप किसी गायक का मनोरंजन कर रहे थे, जिसे घंटी बजने पर जल्दी से अंदर भेज दिया गया था? आप खुद इत्र नहीं

लगाते, है ना? अगर आपको इत्र लगाने की आदत होती, तो आपने पार्टी वाले दिन ज़रूर लगाया होता। यह आदत शायद आपको अपने दादाजी से विरासत में मिली है। मुझे लगता है कि उन्हें भी जीवन की सभी अच्छी चीज़ों का शौक था। और आपकी तरह, बुढ़ापे में उनके लिए भी पैसा एक गंभीर समस्या बन गया था। उनकी बेटी ने उनकी मदद की थी। आपने सुकियस से सलाह ली।
‘हे भगवान!’ रतनलाल ने सिर झुकाकर फुसफुसाया। ‘मैं तो गया काम से।’ इंस्पेक्टर पांडे और एक कांस्टेबल उसके पास गए।
फेलुदा ने आगे कहा, 'मैंने अभी बात खत्म नहीं की है। हमें अभी भी पहले रहस्य को सुलझाना बाकी है। श्री बिस्वास हार लेकर सुकियूस को बेचना चाहते थे, लेकिन उनसे पहले किसी और ने उसे हासिल कर लिया।'
‘कौन?’ श्रीमती बिस्वास ने हांफते हुए पूछा।
‘मैं एक बात स्पष्ट कर दूं। पहले तो ज्यादातर लोगों ने यही सोचा कि फिल्म शो के दौरान कोई चुपके से कमरे से बाहर निकला और हार चुरा ले गया। लेकिन ऐसा नहीं था। मैं प्रोजेक्टर के पीछे खड़ा था। कमरा पूरी तरह से अंधेरा नहीं था और मैं बीच-बीच में स्क्रीन से नज़र हटाकर दूसरों को देख रहा था। अगर कोई कमरे से बाहर गया होता, तो मैं उसे ज़रूर देख लेता। लेकिन कोई नहीं गया। प्रसेनजीत बेचैन था। वह अपनी सीट से उठा और दूसरी कुर्सी पर चला गया, लेकिन वह कमरे में ही रहा। फिर श्री सुकिअस अंदर आए। बस इतना ही हुआ।’
‘तो कब... कैसे?...’ श्रीमती बिस्वास मुश्किल से बोल पा रही थीं।
फिल्म शुरू होने से पहले ही हार ले लिया गया था।
'जी हां, मुझे पता है,' श्रीमती बिस्वास की आवाज़ में अब थोड़ी अधीरता झलक रही थी। 'शीला गई और उसे बाहर ले आई। फिर वह उसे यहां ले आई, ताकि आप उसे देख सकें।'
‘हाँ, लेकिन क्या उसने उसे वापस रख दिया?’
'बेशक उसने किया।'
नहीं। शीला ने उसे वापस नहीं रखा, बल्कि अपने पास ही रख लिया। मुझे यह बात समझ आ गई थी, लेकिन मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि उसने ऐसा क्यों किया होगा। पहले तो वह उसके कमरे में था। फिर, काफी समय बाद, उसने एक गमला खोदकर उसमें छिपा दिया। यह बात मैंने शीला से ही सीखी है। देखो, ये रहा तुम्हारा हार। फेलुदा ने अपनी जेब से हार निकाला और उसे कॉफी टेबल पर रख दिया। सब लोग एक साथ चौंक गए।
‘लेकिन...लेकिन...उसने ऐसा क्यों किया?’ श्रीमती बिस्वास ने अपनी बेटी की ओर हैरानी भरी नजर डालते हुए पूछा।
क्योंकि पिछली रात उसने आपको और आपके पति को बात करते हुए सुन लिया था। उसका कमरा आपके कमरे के बगल में है, और दोनों तरफ एक साझा दरवाजा है। संयोग से वह दरवाजा खुला हुआ था। उसने आपको अपने पति से यह कहते हुए सुना कि आपने आखिरकार अपनी झिझक दूर कर ली है और सुकियुस को हार बेचने के लिए तैयार हैं। शीला नहीं चाहती थी कि इतनी कीमती खानदानी चीज़ खो जाए। इसलिए उसने वही किया जो वह कर सकती थी, और उसे नज़रों से दूर रख दिया। उसी की वजह से आप आज भी कह सकती हैं कि यह आपका है। मुझे उम्मीद है कि यह कभी इस घर से बाहर नहीं

जाएगा। आपको ऐसी चीज़ को जाने नहीं देना चाहिए। यह एक अपराध से कम नहीं होगा, श्रीमती बिस्वास!
होटल वापस आने पर लालमोहन बाबू ने पूछा, 'फेलू बाबू, लखनऊ का मतलब है इस समय सौभाग्य, है ना?'
‘अब किस्मत? हां, अगर आप इसे इस तरह कहना चाहें तो।’
तो, यहाँ असली भाग्यशाली कौन है?
‘अरे वाह! क्या आपको मेरी बुद्धिमत्ता की प्रतिभा को मुफ्त में देखने का मौका नहीं मिला?’
मैंने बीच में कहा, 'और बिस्वास परिवार के बारे में सोचो। क्या वे भाग्यशाली नहीं हैं कि उनके पास शीला जैसी होशियार लड़की है और उन्हें उनका हार वापस मिल गया है?'
‘बिल्कुल सही,’ लालमोहन बाबू ने सहमति जताते हुए कहा। ‘शीला जैसी लड़की लाखों में एक होती है। आपका क्या कहना है, फेलू बाबू?’
फेलुदा ने घोषणा की, 'अगर कोई शकुंतला के हार की असली कीमत समझता है, तो वह मैरी शीला बिस्वास हैं।'

लंदन में फेलुदा

एक
‘मैंने नया टेलीविजन खरीदा, लेकिन उससे मुझे कोई फायदा नहीं हुआ,’ लालमोहन बाबू ने शिकायत की। ‘इसमें देखने लायक कुछ भी नहीं है। मैंने महाभारत देखने की कोशिश की, लेकिन सिर्फ पांच मिनट बाद ही बंद करना पड़ा।’
फेलुदा ने कहा, 'यह अफसोस की बात है कि आपको खेलों में दिलचस्पी नहीं है। अगर होती, तो आप कुछ अच्छे कार्यक्रम देख सकते थे। टेनिस, क्रिकेट, फुटबॉल... सब कुछ दिखाया जाता है, खेल यहाँ और विदेश दोनों जगह खेले जाते हैं।'
'दूरदर्शन ने हाल ही में मुझे पत्र लिखकर कहा था कि वे मेरी एक कहानी पर आधारित टीवी सीरियल बनाना चाहते हैं।'
‘यह तो अच्छी खबर है, है ना?’
हां, मुझे लगता है ऐसा ही होगा, हालांकि मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि मेरे हीरो प्रखर रुद्र का किरदार कौन निभाएगा। क्या आप बंगाल में किसी ऐसे अभिनेता का नाम बता सकते हैं जो इस भूमिका के लिए उपयुक्त हो? मेरा मतलब है, यह अमेरिका जैसा तो नहीं है, है ना? उन्होंने तो सुपरमैन का किरदार निभाने के लिए भी किसी को ढूंढ लिया! वह तो मानो कॉमिक्स के पन्नों से निकलकर आया हो!
दुर्गा पूजा शुरू हो चुकी थी। लाउडस्पीकर पर एक हिंदी फिल्म का गाना बज रहा था। हमारे बैठक कक्ष से वह साफ सुनाई दे रहा था। दूरदर्शन की शिकायत खत्म करने के बाद लालमोहन बाबू ने वही गाना गाने की कोशिश की, लेकिन जल्द ही हार मान ली। उनके दादाजी शास्त्रीय गायक माने जाते थे, लेकिन वे खुद एक सुर भी बेसुरी आवाज़ में नहीं गा पाते थे।
हम चाय पी चुके थे, लेकिन सोच ही रहे थे कि दूसरी बार चाय लें या नहीं, तभी हमारे घर के बाहर एक कार रुकी। थोड़ी देर बाद दरवाजे की घंटी बजी।
मैंने दरवाजा खोला तो सामने एक लंबा और आकर्षक सज्जन खड़ा था। उसका रंग यूरोपियन लोगों की तरह गोरा था।
उन्होंने पूछा, 'क्या प्रदोष मित्र यहीं रहते हैं?'
जी हाँ, कृपया अंदर आइए।
मैंने उसे अपने बैठक कक्ष में ले गया। धोती और कुर्ते की पारंपरिक पोशाक में, उसका व्यक्तित्व बेहद परिष्कृत था।
‘कृपया बैठ जाइए,’ फेलुदा ने कहा। ‘मैं प्रदोष मित्तर हूँ।’
हमारे मेहमान सोफे पर बैठ गए और लालमोहन बाबू की ओर जिज्ञासा भरी नजरों से देखने लगे। फेलुदा ने बताया, 'ये मेरे दोस्त लालमोहन गांगुली हैं।' लालमोहन बाबू ने 'नमस्कार' कहा, लेकिन हमारे मेहमान ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वे कुछ व्याकुल से लग रहे थे। कुछ पल का सन्नाटा छा गया।

अंत में उन्होंने कहा, 'मैंने आपके बारे में आपके एक ग्राहक से सुना था। 'साधन चक्रवर्ती।'
'जी हां, मैंने पिछले साल उनके लिए काम किया था। मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूं? क्या कोई विशेष समस्या है?'
मुझे तो यह भी नहीं पता कि इसे समस्या कहना उचित है या नहीं। यह आपको तय करना होगा। लेकिन हां, कोई बात मुझे परेशान कर रही है।'
उसने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला। उसमें एक तस्वीर थी। उसने उसे सावधानी से बाहर निकाला और फेलुदा को दे दिया। मैंने फेलुदा के कंधे के ऊपर से झाँका और दो जवान लड़कों को देखा—लगभग सत्रह या अठारह साल के—जो एक साथ खड़े होकर कैमरे की ओर मुस्कुरा रहे थे। दोनों ने कमीज और पतलून पहनी हुई थी। यह एक पुरानी तस्वीर थी और इसका रंग काफी फीका पड़ चुका था।
‘क्या आप इनमें से किसी लड़के को पहचान सकते हैं?’ हमारे आगंतुक ने जानना चाहा।
'बाईं ओर वाला तुम हो,' फेलुदा ने उत्तर दिया।
'हां, मैं भी इसे पहचानता हूं।'
'दूसरा वाला तुम्हारा दोस्त होना चाहिए।'
“शायद, लेकिन मुझे पता नहीं कि वह कौन है। मुझे यह तस्वीर हाल ही में मिली, जब मैं दराज में रखे कुछ पुराने कागजात देख रहा था। मैं आपसे बस एक ही काम करवाना चाहता हूँ: पता लगाइए कि यह लड़का कौन है। मतलब, मुझे यह जानना है कि वह अभी कहाँ है, क्या काम करता है, हम दोनों की मुलाकात कैसे हुई, सब कुछ। मैं आपकी फीस और बाकी सभी खर्चे ज़रूर चुका दूँगा।”
क्या आपने स्वयं कोई पूछताछ नहीं की?
'हां, मैंने यह तस्वीर अपने कुछ पुराने सहपाठियों को दिखाई है जो अब मेरे ही क्लब में जाते हैं, लेकिन उनमें से कोई भी उस दूसरे लड़के को याद नहीं कर पाया। अगर आप तस्वीर को ध्यान से देखेंगे, तो आपको पता चलेगा कि यह बताना नामुमकिन है कि लड़का भारतीय है या नहीं।'
‘अच्छा, उसके बाल तो काले हैं, लेकिन उसकी आँखें हल्की लगती हैं। अरे, क्या तुम बचपन में बहुत सारे विदेशियों को जानते थे?’
‘मैंने बचपन में पाँच साल इंग्लैंड में बिताए। उनमें से चार साल मैंने स्कूल में बिताए, फिर एक साल कॉलेज में पढ़ाई की। मेरे पिता वहाँ डॉक्टर थे। फिर हम भारत लौट आए। दिक्कत यह है कि जाने से पहले मेरा एक गंभीर एक्सीडेंट हो गया था। मैं साइकिल से गिर गया और मेरी खोपड़ी में फ्रैक्चर हो गया। इसके परिणामस्वरूप, मेरी याददाश्त आंशिक रूप से चली गई। आज भी मुझे इंग्लैंड में बिताए उन सालों की कोई बात याद नहीं है।’
'आपको जरूर पता होगा कि आप किस स्कूल और कॉलेज में पढ़े हैं?'
मेरे पिता ने मुझे कई साल पहले बताया था। मैं कैम्ब्रिज के एक कॉलेज में गया था। मुझे उसका नाम याद नहीं है, और न ही मैं आपको उस स्कूल का नाम बता सकता हूँ।
क्या आपने इस खोई हुई याददाश्त को वापस लाने के लिए कोई इलाज कराया है? 'हां। पारंपरिक चिकित्सा से कोई फायदा नहीं हुआ। अब मैं आयुर्वेदिक उपचार आजमा रहा हूं।'

‘इंग्लैंड से लौटने के बाद क्या हुआ?’
‘मुझे कलकत्ता के सेंट जेवियर कॉलेज में दाखिला मिल गया था। मेरे पिता ने सारी व्यवस्था कर दी थी। मैं पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ था।’
‘वह कौन सा वर्ष था?’
1952 में मैंने माध्यमिक वर्ष में दाखिला लिया।
'अच्छा ऐसा है।'
फेलुदा ने कुछ क्षण तक तस्वीर को घूरकर देखा। फिर उसने कहा, 'क्या आपको लगता है कि यह दूसरा लड़का किसी विशेष घटना से जुड़ा है? आपके जीवन की किसी विशेष महत्वपूर्ण घटना से?'
हां, यह ख्याल मेरे मन में आया था। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे कुछ बातें धुंधली-धुंधली याद आ रही हैं। उस लड़के का चेहरा बार-बार मेरे दिमाग में आता है, लेकिन लाख कोशिश करने पर भी मुझे उसका नाम या उससे मुलाकात की जगह याद नहीं आ रही। यह बहुत ही अजीब स्थिति है। हम ज़रूर घनिष्ठ मित्र रहे होंगे। मुझे यह जानने में बहुत दिलचस्पी होगी कि क्या वह अभी भी कहीं आसपास है और क्या उसे मैं याद हूं। मुझे पता है कि उसे ढूंढना आसान काम नहीं होगा, लेकिन शायद आपको यह चुनौती स्वीकार करने में कोई आपत्ति न हो? ठीक है, मैं यह काम ले लूंगा। लेकिन जाहिर है, मैं आपको यह नहीं बता सकता कि इसे पूरा करने में कितना समय लगेगा। मान लीजिए कि मुझे पूछताछ के लिए इंग्लैंड जाना पड़े?
अगर आप ऐसा करते हैं, तो मैं आपके और आपके सहायक के वहां जाकर रहने का खर्च उठाऊंगा। मैं आपको वह विदेशी मुद्रा भी दिलवाऊंगा जिसे आप यहां से ले जा सकते हैं। इससे आपको अंदाजा लग जाएगा कि मैं इस रहस्य की तह तक पहुंचने के लिए कितना उत्सुक हूं।
क्या आपके पिता अभी भी जीवित हैं?
‘वह अब इस दुनिया में नहीं हैं। इंग्लैंड से लौटने के पांच साल बाद उनका निधन हो गया। मेरी मां का निधन दस साल पहले हो गया था। मेरी एक पत्नी और एक बेटी है। मेरी बेटी की शादी हो चुकी है। वह दिल्ली में रहती है। यह रहा मेरा कार्ड।’
मैंने उत्सुकता से कार्ड को देखा। उस पर रंजन के. मजूमदार लिखा था। पता 13 रोलैंड रोड था, जिसके बाद एक टेलीफोन नंबर दिया गया था।
'धन्यवाद, मैं आपसे संपर्क में रहूंगा। हो सकता है मुझे आपसे और भी प्रश्न पूछने की आवश्यकता पड़े।'
'मिस्टर मिटर, मैं आपके सवालों का जवाब देने की पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन मैंने मूल समस्या पहले ही समझा दी है। क्या मैं फोटो आपके पास छोड़ दूं?' जी हां, मैं इसकी एक प्रति बनवाकर मूल प्रति आपको लौटा दूंगा। वैसे, मुझे यह जानना जरूरी है कि आप कहां काम करते हैं। मेरा मतलब है, आप क्या काम करते हैं?
'माफ़ कीजिए, मुझे आपको खुद ही बता देना चाहिए था। मैं एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हूँ। मैंने सेंट ज़ेवियर्स से बी.कॉम किया है। मेरी फर्म का नाम ली एंड वाटकिंस है।'
'धन्यवाद।'

'धन्यवाद, श्रीमान मिटर। अलविदा।'
हमारी ओर सिर हिलाकर श्री मजूमदार चले गए।
'यह एक अनोखा मामला है,' लालमोहन बाबू ने उनके जाने के बाद टिप्पणी की। 'इसमें कोई शक नहीं। मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी इस तरह का मामला संभाला है।'
‘क्या मैं तस्वीर देख सकता हूँ?’
फेलुदा ने उसे दोनों लड़कों की तस्वीर थमा दी। लालमोहन बाबू ने भौंहें चढ़ाकर तस्वीर को गौर से देखा। फिर उसने सिर हिला दिया।
'श्री मजूमदार सही थे। यह बताना असंभव है कि वह लड़का अंग्रेज है या भारतीय। श्री मिटर, आप आगे कैसे बढ़ेंगे?'
‘मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगा। इसे मुझ पर छोड़ दीजिए, श्री गांगुली।’

दो
फेलुदा एक चार्टर्ड अकाउंटेंट धरानी मुखर्जी को जानते थे। उन्होंने उसी दिन उन्हें फोन किया। मुखर्जी ने बताया कि वे रंजन मजूमदार को अच्छी तरह जानते थे क्योंकि दोनों सैटरडे क्लब के सदस्य थे। जब मुखर्जी ने उनसे पूछा कि मजूमदार किस तरह के व्यक्ति थे, तो उन्होंने बताया कि वे शांत और अंतर्मुखी थे और ज्यादा लोगों से बात नहीं करते थे। आमतौर पर उन्हें अकेले बैठे देखा जाता था। वे कभी-कभार शराब पीते थे, लेकिन कभी भी ज्यादा नहीं। मुखर्जी को पता था कि मजूमदार ने अपने बचपन के कुछ साल इंग्लैंड में बिताए थे, लेकिन वे इसके अलावा और कुछ नहीं बता सके।
अगले दिन, फेलुदा को उन छात्रों की सूची मिली जिन्होंने 1952 में सेंट जेवियर्स में इंटरमीडिएट वर्ष में भाग लिया था। 'मुझे लगता है मैंने उनमें से एक का नाम सुना है। वह एक होम्योपैथ हैं,' फेलुदा ने सूची को जल्दी से देखते हुए कहा। 'टॉपशे, देखो क्या तुम मुझे डॉ. हिरेन बासक का टेलीफोन नंबर दिलवा सकते हो।'
मुझे दो मिनट में उसका नंबर मिल गया। फेलुदा ने फोन किया और अगली सुबह साढ़े ग्यारह बजे उससे मिलने का समय तय कर लिया।
अगले दिन लालमोहन बाबू यह जानने के लिए आए कि हमने कोई प्रगति की है या नहीं। हम उनकी कार से डॉक्टर बासक के क्लिनिक गए। भीड़ भरे प्रतीक्षालय से डॉक्टर की लोकप्रियता का अंदाजा लगाया जा सकता था। उनके सहायक ने हमारा स्वागत किया और हमें सीधे परामर्श कक्ष में ले गए।
डॉ. बासक हमें देखकर उठ खड़े हुए, उनके चेहरे पर मुस्कान थी।
‘आप यहाँ किसलिए आए हैं, श्रीमान मिटर? आप तो अक्सर बीमार नहीं पड़ते।’ 'नहीं, नहीं, डॉ. बासक, मैं आज बीमारी के कारण यहां नहीं आया हूं। मैं तो सिर्फ अपनी जांच के सिलसिले में आपसे कुछ सवाल पूछने आया हूं।'
'हाँ?'
‘क्या आप सेंट जेवियर्स के छात्र थे?’
'हां, मैं था।'
'क्या आप कृपया इस तस्वीर को देखकर बता सकते हैं कि क्या आप इन लड़कों को पहचानते हैं?'
फेलुदा ने फोटो को सेलोफेन रैपर से निकालकर डॉक्टर बासक को दे दिया। उन्होंने मूल फोटो श्री मजूमदार को पहले ही लौटा दी थी। यह उसकी एक कॉपी थी जो उन्होंने बनवाई थी। डॉक्टर ने फोटो को देखते हुए माथे पर शिकन डाली। कुछ देर बाद उन्होंने कहा, 'मुझे इनमें से एक जाना-पहचाना सा लग रहा है। वह मेरे बैच में था। मुझे लगता है उसका नाम रंजन था। जी हां, सही कहा। रंजन मजूमदार।'
और दूसरा वाला? मुझे उसमें ज्यादा दिलचस्पी है।

'नहीं, माफ कीजिए, श्रीमान मिटर। मैंने उस दूसरे लड़के को अपने जीवन में कभी नहीं देखा।'
‘क्या वह सेंट जेवियर्स में नहीं गया था? मेरा मतलब है, क्या वह आपके बैच में भी नहीं था?’
नहीं, मुझे इस बात का पूरा यकीन है।
फेलुदा ने तस्वीर को एक तरफ रख दिया।
क्या आपके अन्य बैचमेट्स से बात करने का कोई फायदा होगा?
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। यह तो केवल समय की बर्बादी होगी।
फिर भी, अगर आप मेरे लिए कुछ कर सकें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।
मैं अपनी क्षमता के अनुसार सब कुछ करने को तैयार हूं।
फेलुदा ने छात्रों की सूची निकाली। 'कृपया इसे देखें और मुझे बताएं कि क्या आप जानते हैं कि इनमें से किसी भी व्यक्ति से कैसे संपर्क किया जा सकता है।'
स्पष्ट था कि वह इतनी आसानी से हार मानने वाले नहीं थे। डॉ. बासक ने सूची पर सरसरी नज़र डाली और कहा, 'मैं उनमें से एक को जानता हूँ। वह भी डॉक्टर हैं; लेकिन वे पारंपरिक चिकित्सा करते हैं। डॉ. ज्योतिर्मोय सेन। वे हेस्टिंग्स में रहते हैं। आपको उनका पता टेलीफोन डायरेक्टरी से मिल जाएगा।'
'शुक्रिया, शुक्रिया हुजूरेआला।'
हम बाहर निकले और कार में बैठ गए। जैसे ही हम गाड़ी लेकर निकले, लालमोहन बाबू ने पूछा, ‘देखो, फेलू बाबू, तुम यह क्यों मान रहे हो कि दूसरा लड़का तुम्हारा सहपाठी था?’ ‘दोस्त तो कहीं भी बन जाते हैं, है ना? मेरे अभी के दोस्तों में से किसी ने भी मेरे साथ पढ़ाई नहीं की है।’
‘आप सही कह रहे हैं। मुझे लगता है कि अंत में हमें तस्वीर के साथ अखबार में विज्ञापन देना होगा, लेकिन इस बीच देखते हैं कि दूसरे डॉक्टर का क्या कहना है।’
डॉ. ज्योतिर्मोय सेन अगले तीन दिनों तक उपलब्ध नहीं थे। लेकिन चौथे दिन वे सुबह साढ़े नौ बजे अपने घर पर हमसे मिलने के लिए राज़ी हो गए। उन्होंने बताया कि वे आम तौर पर दस बजे अपने क्लिनिक के लिए निकल जाते हैं। उन्होंने फेलुदा के बारे में सुना था और वे उससे काफ़ी प्रभावित दिखे।
लालमोहन बाबू हमें अपनी कार में लेने आए और हम ठीक साढ़े नौ बजे डॉक्टर सेन के घर पहुँच गए। उनका घर बड़ा और सुव्यवस्थित था, इसलिए संभवतः यहाँ भी एक सफल डॉक्टर का क्लिनिक था। एक कर्मचारी हमें उनके ड्राइंग रूम में ले गया। उसने कहा, 'डॉक्टर साहब थोड़ी देर में आपके पास आएँगे,' और वह चला गया।
‘तुम उससे किसके बारे में पूछोगे? रंजन मजूमदार के बारे में या दूसरे लड़के के बारे में?’ लालमोहन बाबू ने अपनी आवाज धीमी करते हुए पूछा।
चलिए देखते हैं कि क्या हम रंजन मजूमदार के बारे में और कुछ जानकारी जुटा सकते हैं। हमें अपने मुवक्किल के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं है, है ना? जहाँ तक दूसरे लड़के की बात है, मुझे नहीं लगता कि डॉ. सेन मदद कर सकते हैं।
फेलुदा के बोलते ही डॉक्टर वहां पहुंच गए।

‘आप प्रदोष मित्र होंगे,’ उन्होंने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, ‘हालांकि आप फेलुदा के नाम से ज़्यादा जाने जाते हैं, है ना? और आप दोनों तपेश और जटायु होंगे। मेरे परिवार में सभी लोग तपेश की लिखी कहानियाँ बड़े चाव से पढ़ते हैं, इसलिए आप सभी मुझे अच्छी तरह से परिचित हैं। मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?’
‘इस तस्वीर को देखिए। क्या आप इन दोनों लड़कों में से किसी को पहचान सकते हैं?’
'हां, उनमें से एक रंजन मजूमदार हैं। मुझे वो अच्छी तरह याद हैं। दूसरे को मैं नहीं जानता।'
‘वह तुम्हारी कक्षा में नहीं था?’
नहीं। अगर वह होता तो मुझे याद रहता।
मैं आपसे रंजन मजूमदार के बारे में कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ।
‘ठीक है, कहो। हम कॉलेज में घनिष्ठ मित्र थे। हम साथ में लेक्चर अटेंड करते थे, साथ में फिल्में देखने जाते थे। अगर वह किसी क्लास में अनुपस्थित रहता था, तो मैं हाजिरी के समय उसकी जगह ले लेता था, और वह भी अक्सर मेरे लिए ऐसा ही करता था। लेकिन अब हमारा संपर्क टूट गया है।’
वह व्यक्ति के रूप में कैसा था?
डॉ. सेन ने थोड़ा सा माथा सिकोड़ा। 'थोड़ा सनकी था। लेकिन हमें इससे कोई खास आपत्ति नहीं थी।'
‘अजीबोगरीब? आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?’
“खैर, उनमें राष्ट्रवाद की भावनाएँ बहुत प्रबल थीं। मेरा मतलब है, उस उम्र का कोई भी नौजवान देश के बारे में इस तरह न तो बोलता था और न ही महसूस करता था। शायद यह भावना उन्हें अपने दादा रघुनाथ मजूमदार से विरासत में मिली थी, जो कभी आतंकवादी थे। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ़ ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी थी। रंजन के पिता इंग्लैंड गए थे, लेकिन एक अंग्रेज से हुए मतभेद के कारण वापस आ गए थे। पूरे परिवार में यह अजीब सी विशेषता थी।”
‘श्री मजूमदार ने इंग्लैंड में पढ़ाई की थी, है ना?’
'हां, लेकिन उन्होंने इसके बारे में कभी बात नहीं की। इंग्लैंड में उनका एक भयानक हादसा हो गया था। मुझे लगता है कि आपको इसके बारे में पता होगा?' 'हां, उन्होंने हमें बताया था।'
'नतीजतन, उनकी याददाश्त चली गई। उन्हें इंग्लैंड में बिताए अपने जीवन की कोई भी बात याद नहीं थी। पांच साल - या उससे भी अधिक - उनके दिमाग से पूरी तरह मिट गए थे।'
'मान लीजिए कि उसने वहां किसी से दोस्ती कर ली हो, या किसी खास व्यक्ति से मिला हो, तो क्या इसका पता लगाने का कोई तरीका है?'
‘मुझे नहीं लगता कि ऐसा हो सकता है, जब तक कि उसकी खोई हुई याददाश्त वापस न आ गई हो। ऐसा कई मामलों में हो चुका है। लेकिन मैं आपको बता दूं, रंजन कोई साधारण युवक नहीं था। मुझे नहीं पता कि वह इंग्लैंड में कैसे रहता था, या वहाँ एक छात्र के रूप में उसने क्या किया, लेकिन जब मैं उससे कॉलेज में मिला, तो मुझे पता चल गया कि वह बाकी सभी से अलग था। इतनी कम उम्र में भी उसका अपना एक अलग व्यक्तित्व था।’

हम अगले दिन श्री मजूमदार के घर गए।
उन्होंने पूछा, 'कोई प्रगति हुई?'
‘ठीक है, हमने यह स्थापित कर लिया है कि तस्वीर में दिख रहा आपका दोस्त कलकत्ता में आपके साथ कॉलेज में नहीं पढ़ता था। अब मैं एक ऐसा कदम उठाना चाहता हूँ जिसके लिए आपकी स्वीकृति आवश्यक है।’
'हाँ?'
मैं इस दूसरे लड़के की तस्वीर प्रकाशित करना चाहता हूँ और देखना चाहता हूँ कि क्या कोई उसे पहचान पाता है। अगर यह तस्वीर कलकत्ता और दिल्ली के अखबारों में छप जाए, तो मुझे लगता है कि इतना काफी होगा।
श्री मजूमदार ने एक मिनट सोचा।
क्या मेरा नाम कहीं लिया जाएगा?
नहीं, बिलकुल नहीं। नोटिस में मैं बस इतना ही लिखूंगा कि अगर कोई उस लड़के को पहचान ले तो मुझसे मेरे पते पर संपर्क करे।
'बहुत खूब। आपको अपनी जांच के लिए जो करना पड़े, वह करना ही होगा। मुझे कोई आपत्ति नहीं है, श्री मिटर।'

तीन
पांच दिन बाद, फेलुदा का छोटा सा विज्ञापन दिल्ली और कलकत्ता के स्टेट्समैन अखबार में छपा। पहले दिन कुछ नहीं हुआ। फेलुदा ने मुझसे कहा, 'मुझे लगता है कि यह कलकत्ता का कोई व्यक्ति नहीं हो सकता। अगर होता, तो हमें अब तक पता चल गया होता।'
बुधवार को फेलुदा को ग्रैंड होटल में ठहरे एक पर्यटक का फोन आया। उनका नाम जॉन डेक्सटर था। वे ऑस्ट्रेलिया के एक समूह के साथ यात्रा कर रहे थे और उन्होंने दिल्ली में संयोगवश वह तस्वीर देखी थी। इसी वजह से वे फेलुदा से बात करने के लिए कलकत्ता आए थे। उन्होंने बताया कि चूंकि वे शाम को काठमांडू के लिए रवाना हो रहे थे, इसलिए उन्हें दोपहर में हमसे मिलना होगा। उन्होंने पूछा, 'क्या मैं दोपहर एक बजे आपके घर आ सकता हूँ?'
'जी हां, बिल्कुल। इतनी मेहनत करने के लिए धन्यवाद।'
फेलुदा उत्साहित लग रहा था। उसे सच में उम्मीद नहीं थी कि इतने कम समय में काम बन जाएगा।
एक बजे से कुछ देर पहले एक टैक्सी हमारे घर के सामने आकर रुकी। फेलुदा ने दरवाजा खोला और एक अधेड़ उम्र के श्वेत सज्जन को अंदर आने दिया।
‘श्री मिटर?’ उसने हाथ बढ़ाते हुए कहा, ‘मैं जॉन डेक्सटर हूं।’
‘आपसे मिलकर खुशी हुई,’ फेलुदा ने हाथ मिलाते हुए कहा। ‘कृपया बैठ जाइए।’ श्री डेक्सटर हमारे सोफे पर बैठ गए। उनके चेहरे और बांहों पर गहरा रंग चढ़ा हुआ था। स्पष्ट था कि वे कुछ समय से भारत में यात्रा कर रहे थे। ‘क्या आपने स्टेट्समैन में वह तस्वीर देखी?’
'हां, इसीलिए मैं यहां हूं। मैंने आपको फोन पर बताया था। इतने लंबे समय बाद और एक विदेशी देश में अपने चचेरे भाई पीटर डेक्सटर की तस्वीर देखकर मैं दंग रह गया।'
‘क्या आपको यकीन है कि वह आपका चचेरा भाई था?’
बिल्कुल। पीटर और मैं चचेरे भाई हैं। लेकिन मैं काफी कम उम्र में ही इंग्लैंड छोड़कर ऑस्ट्रेलिया चला गया था। उसके बाद पीटर और उसके परिवार से मेरा संपर्क टूट गया। दरअसल, इंग्लैंड में अपने परिवार से भी मेरा अब कोई संपर्क नहीं है। इसलिए मैं आपको यह नहीं बता सकता कि पीटर इस समय कहां है या क्या करता है। मैं बस इतना ही बता सकता हूं कि पीटर के पिता, माइकल डेक्सटर, भारतीय सेना में थे। मुझे लगता है कि वे 1947 के बाद इंग्लैंड वापस चले गए थे।
क्या पीटर उनका इकलौता बेटा था?
'अरे नहीं। माइकल डेक्सटर के सात बच्चे थे। पीटर उनका छठा बच्चा था। उनका सबसे बड़ा बेटा, जॉर्ज, भी सेना में था।'
‘माइकल डेक्सटर इंग्लैंड में कहाँ रहता था?’

‘नॉरफ़ॉक में। मैं आपको पूरा पता नहीं दे सकता, कस्बे का नाम भी नहीं।
क्षमा करें।’
कोई बात नहीं। आपने बहुत मदद की है।
श्री डेक्सटर उठे। उनके साथी होटल में उनका इंतजार कर रहे थे। फेलुदा ने उन्हें फिर से धन्यवाद दिया और टैक्सी तक छोड़ने गए।
हम अगले दिन रंजन मजूमदार से मिलने गए।
‘क्या आपकी योजना सफल रही?’
'हां, मैं आपको यही बताने आया हूं। वह लड़का अंग्रेज था, जिसका नाम पीटर डेक्सटर था।'
'तुमने कैसे पता लगाया?'
फेलुदा ने उन्हें जॉन डेक्सटर के आगमन के बारे में बताया। श्री मजूमदार थोड़ा सोच में पड़ गए। 'डेक्सटर?' उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, 'डेक्सटर...डेक्सटर...'
‘क्या आपको कुछ याद है?’
'बस धुंधला-सा। मुझे लगता है कुछ अप्रिय घटना घटी थी... लेकिन नहीं, यह महज़ एक एहसास है। कोई पक्की यादें नहीं हैं।'
क्या आपकी याददाश्त कभी-कभी वापस आ जाती है?
हां, कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे कुछ घटनाएं याद आ रही हैं। लेकिन ऐसा कोई नहीं है जिससे मैं पूछ सकूं कि उनमें से कुछ सच है या नहीं। मेरे माता-पिता ही एकमात्र ऐसे लोग थे जिन्हें पता था कि इंग्लैंड में क्या हुआ था। अब दोनों की मृत्यु हो चुकी है।
‘खैर, एक बात तो बिल्कुल स्पष्ट हो गई है। कलकत्ता में कोई भी हमें पीटर डेक्सटर के बारे में और कुछ नहीं बता सकता।’
‘हां, मुझे यह एहसास है, लेकिन...’ श्री मजूमदार फिर से विचारों में खो गए। क्या आप चाहते हैं कि मैं मामला वापस ले लूं?
श्री मजूमदार ने अचानक खुद को संभाला। 'नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। मैं जानना चाहता हूँ कि वह कहाँ है, कहाँ काम करता है, क्या उसे मैं याद हूँ, सब कुछ। आप कब जा सकते हैं?'
‘जाना? कहाँ?’ फेलुदा अचंभित रह गया।
‘लंदन, और कहाँ? आपको लंदन ही जाना होगा!’
'हां, यही अगला तार्किक कदम होगा।'
क्या आप दोनों के पास वैध पासपोर्ट हैं?
'हां, बिल्कुल। हमें पहले भी विदेश यात्रा करनी पड़ी है। फिलहाल मेरे पास कोई और मामला नहीं है, इसलिए मैं कभी भी जा सकता हूं।'
'अच्छा। मैं आपके लिए टिकटों का इंतजाम कर दूंगा।'
'हमारा एक दोस्त हमारे साथ जाएगा - बेशक, अपने खर्चे पर।'
बहुत खूब। मेरे सचिव को उनका नाम बता दीजिए। वे आप सबके लिए आवश्यक व्यवस्था कर देंगे। हम एक अच्छे ट्रैवल एजेंट का इस्तेमाल करते हैं, जो आपके लिए लंदन में होटल बुक कर सकता है।
‘आप मुझे वहां कितने दिन रुकना चाहेंगे?’

श्री मजूमदार ने एक मिनट सोचा। फिर उन्होंने कहा, 'एक हफ्ता इंतजार कीजिए। अगर आपको लगे कि कोई प्रगति नहीं हो रही है, तो आप उसके बाद वापस आ सकते हैं। मैं अपने सचिव को आपकी वापसी की बुकिंग करने के लिए कह दूंगा।' 'धन्यवाद। यदि मैं आपके मित्र का पता लगाए बिना लौट आता हूँ, तो मैं आपसे कोई शुल्क स्वीकार नहीं करूँगा।'
'क्या आप कभी किसी मामले में असफल हुए हैं, श्री मिटर?'
अभी नहीं।
‘तो फिर तुम इसमें भी असफल नहीं होगे।’

चार
‘यूके!’ लालमोहन बाबू आश्चर्य से आँखें फाड़कर देखने लगे। फेलुदा ने अभी- अभी उन्हें ताज़ा घटनाक्रमों के बारे में बताया था। ज़ाहिर है, वे यूके की यात्रा के लिए तैयार नहीं थे।
‘लालमोहन बाबू, आपको अपने खर्चे खुद उठाने होंगे। श्री मजूमदार टॉपशे और मेरे खर्चे उठा रहे हैं।’
मुझे पता है। मैं यात्रा का खर्च उठा सकता हूँ, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ। आप भले ही व्यस्त और प्रसिद्ध जासूस हों, लेकिन यह मत भूलिए कि मैं आपसे कहीं अधिक कमाता हूँ। बस मुझे बता दीजिए कि मुझे क्या करना है।
‘एक हफ्ते के लिए पर्याप्त गर्म कपड़े ले जाइए। मुझे उम्मीद है कि आपने अपना पासपोर्ट नहीं खोया होगा?’
'नहीं, महोदय। इसे मेरी अलमारी में सावधानीपूर्वक रखा गया है।'
‘ऐसे में आपको श्री मजूमदार को भारतीय रुपये में जो भी राशि आवश्यक हो, उसका भुगतान करने के अलावा और कुछ नहीं करना होगा। वे आपकी बुकिंग करवा देंगे और विदेशी मुद्रा की व्यवस्था कर देंगे। उनका ट्रैवल एजेंट सभी व्यवस्थाओं को संभाल रहा है।’
हम लंदन में कहाँ ठहरेंगे?
'शायद किसी थ्री-स्टार होटल में।'
‘सिर्फ तीन स्टार क्यों?’
“क्योंकि अगर उन्होंने और ऊपर चढ़ने की कोशिश की, तो श्री मजूमदार दिवालिया हो सकते हैं। क्या आपको पता है कि लंदन के होटल कितने महंगे हैं?”
नहीं। सुनो, मुझे अभी एक विचार आया है। मेरा एक पड़ोसी व्यवसायी है। वह हर साल विदेश जाता है। शायद वह मुझे कुछ अतिरिक्त डॉलर दे सके। तुम्हारा क्या ख्याल है?
यह कानून के खिलाफ होगा।
‘प्लीज, फेलू बाबू, आपको हमेशा संत बनने की जरूरत नहीं है। हर कोई अतिरिक्त विदेशी मुद्रा लेने की कोशिश करता है। इसका मतलब यह नहीं है कि वे सभी अपराधी हैं, है ना?’
'बहुत खूब, श्री जटायु। मैं सहमत हूँ, हालांकि यह मेरी अंतरात्मा के विरुद्ध है।'
हमने मंगलवार को एयर इंडिया से यात्रा करने के लिए टिकट बुक किए थे। विमान कलकत्ता से आधी रात के कुछ ही समय बाद उड़ान भरेगा और बॉम्बे जाएगा, जहाँ से हमें लंदन के लिए कनेक्टिंग फ्लाइट लेनी होगी। हमने पिकाडिली सर्कस में रीजेंट पैलेस होटल में बुकिंग कराई थी। फेलुदा ने बताया कि शहर के बिल्कुल बीचोंबीच स्थित यह होटल रहने के लिए बहुत अच्छी जगह है। उन्होंने

लंदन के बारे में कई गाइडबुक पढ़ी थीं और अलग-अलग नक्शों का अध्ययन किया था।
हमारे जाने से एक दिन पहले उन्होंने श्री मजूमदार को फोन किया। मैंने उन्हें कुछ मिनट बात करते सुना, फिर उन्होंने अलविदा कहा और फोन काट दिया। मैंने उनसे पूछा कि क्या उनके पिता किसी अस्पताल से जुड़े थे, लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं पता; और न ही उन्हें याद है कि वे कहाँ रहते थे। कोई बात नहीं, मेरा एक दोस्त लंदन में डॉक्टर है। देखते हैं कि क्या वह मदद कर सकता है।
फेलुदा के काम की वजह से हम कई अलग-अलग जगहों पर गए थे, लेकिन मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि हम लंदन जाएंगे। जब लालमोहन बाबू हमें एयरपोर्ट जाते हुए लेने आए, तो उन्होंने कहा, 'मैं खुद को शांत रहने की कोशिश कर रहा था, आखिर आजकल तो हर कोई लंदन जाता है। लेकिन मैं उत्साहित होने से खुद को रोक नहीं पाया। क्या तुम्हें पता है आज सुबह मेरी पल्स रेट कितनी थी?' एक सौ दस। आम तौर पर यह अस्सी से ऊपर कभी नहीं जाती।'
सिर्फ लंदन जाने की सोचकर ही उसे खुशी नहीं हो रही थी। मुझे पता था कि उसने अपने पड़ोसी से कुछ अतिरिक्त डॉलर हासिल कर लिए थे।
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह ज़रूरी काम कर रहा था, लेकिन बहुत कम बोल रहा था। शायद उसने अभी तक यह तय नहीं किया था कि आगे क्या करना है। मुझे तो बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था। हमारे पास कोई ठोस सुराग नहीं था। लालमोहन बाबू ने उसकी चुप्पी पर ध्यान दिया और कहा, 'सच कहूँ तो, फेलु बाबू, मुझे समझ नहीं आ रहा कि आपने यह केस क्यों लिया। क्या आपने इससे पहले कभी इस तरह का कोई केस संभाला है, वो भी इतनी कम जानकारी के साथ?'
नहीं, लेकिन अगर मैंने यह केस नहीं लिया होता, तो आप लंदन कैसे जा सकते थे? 'हां, बिल्कुल ऐसा है।'
हमारा विमान समय पर रवाना हुआ और हम जल्द ही मुंबई पहुँच गए। जब घोषणा हुई कि हमारी कनेक्टिंग फ्लाइट उड़ान भरने के लिए तैयार है, तो मैंने अपनी घड़ी देखी। आम तौर पर इस समय मैं बिस्तर पर गहरी नींद में सो रहा होता। लेकिन आज मुझे बिल्कुल भी नींद नहीं आ रही थी।
‘मुझे भी पूरी तरह नींद नहीं आ रही,’ लालमोहन बाबू ने सीट बेल्ट बांधते हुए मुझसे कहा। ‘देखो, मैं आज दोपहर को दो घंटे सोया था। मुझे लगता है, क्या यह आपको पिनोचियो की कहानी की याद नहीं दिलाता? उसे तो व्हेल ने निगल लिया था, है ना? यह जंबो जेट मुझे व्हेल जैसा लग रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे मैं इसके पेट के अंदर बैठा हूँ! इतने सारे लोगों के साथ यह हवा में कैसे उड़ेगा? कमाल की बात है!’
कुछ ही देर में एक अद्भुत घटना घटी। जब विमान कान फाड़ देने वाले शोर के साथ रनवे पर तेज़ी से दौड़ने लगा, तब भी लालमोहन बाबू ने अपनी आँखें बंद रखीं। जैसे-जैसे मुंबई की चकाचौंध कम होती गई, मैंने लालमोहन बाबू के होंठ हिलते हुए देखे, शायद वे सुरक्षित यात्रा के लिए प्रार्थना कर रहे थे। फिर शोर कम हुआ और एयर होस्टेस ने घोषणा की कि हम अपनी सीट बेल्ट खोल सकते हैं। हम विमान के धूम्रपान निषेध वाले हिस्से में बैठे थे। फेलुदा आमतौर पर

सिगरेट पीते थे, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर कई घंटों तक बिना पिए भी रह सकते थे।
‘क्या वे कोई फिल्म नहीं दिखाने वाले हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
उन्होंने देखा तो था, लेकिन फिल्म इतनी उबाऊ थी कि मैंने अपने हेडफोन उतार दिए और सो गया।
जब मैं जागा, तो खिड़कियों से तेज धूप अंदर आ रही थी। फेलुदा ने कहा कि वह भी दो घंटे सोया था। केवल लालमोहन बाबू ही पूरी रात जागते रहे थे। उन्होंने कहा, 'होटल पहुँचते ही मैं इसकी भरपाई कर दूंगा।'
मैंने खिड़की से बाहर देखा, लेकिन बर्फ से ढके आल्प्स पर्वतों के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दिया। पर्वत श्रृंखला का नाम सुनकर लालमोहन बाबू ने पूछा, 'क्या हमें मोंट ब्लैंक देखने को मिलेगा?' उन्होंने 't' और 'c' का उच्चारण स्पष्ट रूप से किया।
‘जी हां,’ फेलुदा ने उत्तर दिया, ‘लेकिन अगर आप यूरोप घूमने जा रहे हैं, तो बेहतर होगा कि आप यूरोपीय नामों का सही उच्चारण सीख लें। यह “मौ ब्लीउ” है।’
‘आपका मतलब है कि कई अक्षर मौन हैं?’
'हां, फ्रेंच में यह काफी स्वाभाविक है।'
लालमोहन बाबू ने कुछ बार ‘माव ब्लीउ, माव ब्लीउ’ बुदबुदाया। आखिरकार, हम अपने निर्धारित आगमन समय से आधे घंटे देरी से हीथ्रो हवाई अड्डे पर उतरे। आव्रजन नियंत्रण से गुजरने और अपना सामान लेने के बाद, फेलुदा ने कहा, ‘सेंट्रल लंदन जाने के तीन तरीके हैं: बस, टैक्सी या मेट्रो। टैक्सी बहुत महंगी होगी, और बस में बहुत समय लगेगा। चलो मेट्रो से कोशिश करते हैं। मेरे नक्शे के अनुसार, यह पिकाडिली से होकर जाएगी।’
‘ट्यूब क्या है?’
‘यह हमारी मेट्रो रेल की तरह है, बस इसमें लाइनें बहुत ज़्यादा हैं। नक्शा किसी भूलभुलैया जैसा दिखता है, लेकिन एक बार समझ आ जाए कि यह कैसे काम करता है, तो लंदन में ट्यूब से यात्रा करना सबसे आसान काम है। मैं आपको कल नक्शा भेज दूँगा।’

पाँच
हमारा होटल बड़ा और आरामदायक था, लेकिन उतना महंगा नहीं था। लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की, 'श्री मजूमदार का ट्रैवल एजेंट वाकई समझदार है।' वह मेट्रो स्टेशनों से लेकर लाल रंग की डबल डेकर बसों तक, हर चीज से बेहद खुश लग रहे थे।
‘देखो ये बसें कितनी खूबसूरत हैं?’ उसने खिड़की से बाहर देखते हुए प्रशंसा से कहा। ‘हमारे पास डबल डेकर बसें भी हैं। तुम्हें क्या लगता है हमारी बसें ऐसी क्यों दिखती हैं जैसे उन्हें चबाकर थूक दिया गया हो?’
दोपहर के भोजन के बाद, फेलुदा ने कहा, 'अगर आपको थकान महसूस नहीं हो रही है, तो ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट पर टहलने जाइए। आपको लंदन अपने सबसे व्यस्त रूप में देखने को मिलेगा।'
‘आपका क्या? आप क्या करने वाले हैं?’
मैं अपने दोस्त बिकाश दत्ता को फोन करने जा रहा हूँ। क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि मेरा एक दोस्त यहाँ है? देखते हैं कि क्या वह हमें कोई जानकारी दे सकता है।
हमें ज़्यादा थकान नहीं थी, इसलिए हमने बाहर जाने का फैसला किया। फेलुदा ने लगभग तुरंत ही अपने दोस्त से बात कर ली। फोन रखने के बाद, वह मुस्कुरा रहा था। 'बिकाश यह सुनकर हैरान रह गया कि मेरी पूछताछ की वजह से मुझे लंदन आना पड़ा। लेकिन उसने मुझे एक काम की बात बताई।'
'क्या?'
‘यहाँ एक पुराने डॉक्टर हैं—एक भारतीय, जो द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद मेडिकल छात्र के रूप में लंदन आए थे, और फिर यहीं एक सामान्य चिकित्सक के रूप में काम करने लगे। उनका नाम निशांत सेन है। वे जाहिर तौर पर बहुत दयालु और मददगार इंसान हैं। हो सकता है कि वे श्री मजूमदार के पिता को जानते हों। बिकाश ने मुझे उनके क्लिनिक का पता दिया है। मुझे लगता है कि मैं उनसे मिलने की कोशिश करूँगा।’
फेलुदा उठ खड़ा हुआ। 'अगर हमें अंधेरे में तीर चलाना ही है, तो हम डॉ. सेन से ही शुरुआत क्यों न करें?'
हम सब एक साथ होटल से निकले। फेलुदा ने हमें ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट का रास्ता बता दिया था और वह ट्यूब स्टेशन की तरफ चल पड़ा। लालमोहन बाबू और मैंने ऊनी स्कार्फ निकाले और उन्हें अपने गले में लपेट लिया और चलना शुरू कर दिया। लंदन में अक्टूबर का महीना काफी ठंडा था।
सड़क पर काफी सारे भारतीय मौजूद थे, शायद इसीलिए लालमोहन बाबू ने कहा, 'मुझे तो यहां बिल्कुल घर जैसा महसूस हो रहा है, प्यारे तपेश। वैसे, यहां की सड़कें इतनी अच्छी हैं कि मुझे यह याद दिलाने के लिए काफी हैं कि मैं घर पर नहीं हूं!'

कुछ देर बाद, ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट पर उमड़ती भीड़ को हैरानी से देखते हुए, उन्होंने कहा, 'तपेश, यह तो इंसानों का सागर है! मानो एक विशाल महासागर हो!' सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि हर कोई कितनी तेज़ी से चल रहा था। आखिर हर कोई इतनी जल्दी में क्यों था? हमें भी अपनी चाल तेज़ करनी पड़ी, वरना हम भीड़ में कुचल जाते। सड़क के किनारे बड़े-बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर थे, जिनकी खिड़कियों में बेहद लुभावनी चीज़ें सजी थीं। अब मुझे वे मशहूर नाम दिखाई देने लगे जिनके बारे में मैंने सिर्फ सुना था: मार्क्स एंड स्पेंसर, बूट्स, डेबेनहैम्स, डी.एच. इवांस, जॉन लुईस। मुझे पता था कि ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट के एक छोर पर सेल्फ्रिजेस है। लेकिन मुझे यह बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि वह इतना बड़ा होगा।
‘चलो अंदर चलते हैं,’ मैंने कहा और लालमोहन बाबू को घूमते हुए दरवाजे से अंदर धकेल दिया। हम दोनों ने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था। वह लोगों से खचाखच भरा हुआ था। धक्का-मुक्की के बिना हम मुश्किल से एक कदम भी आगे बढ़ पा रहे थे। मैंने लालमोहन बाबू का हाथ कसकर पकड़ रखा था, कहीं वह खो न जाए। ऐसा लग रहा था कि इस दुकान में हर तरह का उपभोक्ता सामान उपलब्ध है।
जब हम आखिरकार अपेक्षाकृत कम भीड़भाड़ वाले स्टेशनरी विभाग में पहुंचे, तो लालमोहन बाबू ने कहा, 'मुझे कभी पता ही नहीं था कि यहाँ इंसानों की भीड़ भी लग सकती है। लेकिन, प्यारे बेटे, हम यहाँ से कुछ खरीदे बिना वापस कैसे जा सकते हैं?'
आप क्या खरीदना चाहेंगे?
‘देखो इनके पास कितने सारे पेन और लिखने का सामान है? अगर मैं एक पेन खरीद लूँ तो उतना ही काफी होगा। मतलब, मैं लंदन से खरीदे हुए पेन से अपना अगला उपन्यास लिख सकता हूँ, है ना?’
‘बिल्कुल। आप एक क्यों नहीं चुन लेते?’
उसे अपनी पसंद का सिक्का ढूंढने में पांच मिनट लगे। उसने पूछा, 'तीन पाउंड तीस पेंस। रुपये में ये कितने होंगे?'
मैंने उत्तर दिया, 'लगभग पचहत्तर।'
'अच्छा। कलकत्ता में इस तरह के पेन की कीमत कम से कम दो सौ डॉलर होगी।'
'सच में? तो फिर ले लो। भुगतान काउंटर उधर है।'
‘मुझे उन्हें क्या बताना होगा?’
‘कुछ नहीं। बस ये पेन उस महिला को दे दो, वो तुम्हें बता देगी कि तुम्हें कितना भुगतान करना है। फिर उसे पाँच पाउंड का नोट दे दो क्योंकि मुझे पता है तुम्हारे पास सिक्के नहीं हैं, वो तुम्हें बाकी पैसे वापस कर देगी और तुम्हारा पेन सेल्फ्रीजेस के पेपर बैग में रख देगी। बस इतना ही।’ ‘तुम्हें ये सब कैसे पता? आज तो तुम्हारा पहला दिन है!’
‘मैं दूसरे लोगों को देख रहा था। आप भी देख रहे थे, लेकिन आपने वास्तव में कुछ भी नहीं देखा।’
दो मिनट बाद, वह मुस्कुराते हुए लौटा, उसके हाथ में एक बैग में लिपटा हुआ पेन था।
मैंने पूछा, 'क्या आप एक कप चाय पीना चाहेंगे?'
'अच्छा विचार है, लेकिन हम कहाँ जा सकते हैं?'

'ऊपर की मंजिल पर एक कैफे है।'
‘बहुत अच्छा, चलिए चलते हैं।’
हम एस्केलेटर से सबसे ऊपरी मंजिल पर गए और कैफे ढूंढ लिया, और सौभाग्य से एक खाली मेज भी मिल गई। चाय खत्म करने में हमें ज्यादा समय नहीं लगा। ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट की भीड़ को पार करके जब हम अपने होटल पहुंचे, तब तक साढ़े चार बज चुके थे। फेलुदा पहले ही वापस आ चुका था।
उन्होंने मुस्कुराते हुए पूछा, 'क्या आपको इंग्लैंड के बारे में कुछ अंदाजा हुआ?'
‘ओह फेलू बाबू, मेरे पास अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं।’
‘क्यों? आपकी लिखी किताबें तो यही दर्शाती हैं कि आपके पास विशेषणों का अथाह भंडार है। अब शब्द आपका साथ क्यों नहीं दे रहे?’
‘मेरे दिमाग में सिर्फ एक ही शब्द आ रहा है: बेहद सनसनीखेज। मैं दुविधा में फंस गया हूँ, फेलू बाबू।’
‘एक दुविधा? ऐसा क्यों?’
'क्या मुझे सिर्फ लंदन के दर्शनीय स्थलों को देखना चाहिए, या मुझे यह देखना चाहिए कि आप अपनी जांच कैसे कर रहे हैं?'
‘मेरी खोजबीन अभी शुरू ही हुई है। देखने लायक कुछ खास नहीं है। मेरा सुझाव है कि आप लंदन को जितना हो सके उतना देखें। अगर मुझे कुछ भी दिलचस्प मिलता है, तो मैं आपको जरूर बताऊँगा।’
क्या आपको उस डॉक्टर से मिलने का मौका मिला?
'हां, लेकिन वह अपने मरीजों में इतना व्यस्त था कि बात करने का समय ही नहीं मिला। उसने मुझे कल सुबह उसके घर आने को कहा। वह रिचमंड में रहता है।'
'वह कहां है?'
‘हम पिकाडिली से ट्यूब ले सकते हैं और साउथ केंसिंग्टन में डिस्ट्रिक्ट लाइन बदल सकते हैं। इससे हम सीधे रिचमंड पहुँच जाएँगे। डॉ. सेन हमें स्टेशन पर मिलेंगे। बिकाश सही कह रहा था। वह बहुत मिलनसार और दयालु हैं। लेकिन आज वह मुझे बस इतना ही बता पाए कि वह रंजन मजूमदार के पिता को जानते हैं, इससे ज्यादा कुछ नहीं।’
हमने शाम अपने कमरे में टेलीविजन देखते हुए बिताई, फिर जल्दी खाना खा लिया। तकिए पर सिर रखते ही मुझे नींद आ गई।

छह
अगली सुबह जब मैं उठा तो आसमान में बादल छाए हुए थे और हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी। फेलुदा और लालमोहन बाबू ने अपने रेनकोट पहने और मैंने अपनी वाटरप्रूफ जैकेट पहनकर नाश्ते के तुरंत बाद होटल से प्रस्थान किया। फेलुदा ने कहा, 'श्री जटायु, इंग्लैंड में यही सामान्य मौसम है। कल आपने जो तेज धूप देखी थी, वह वास्तव में अपवाद थी, नियम नहीं।'
‘लेकिन मुझे यकीन है कि यहां की सड़कें जलमग्न नहीं होतीं!’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
नहीं; लेकिन फिर, कलकत्ता में आम तौर पर होने वाली भारी बारिश यहाँ एक दुर्लभ घटना है। अंग्रेज़ों को हल्की, धीमी बूंदा-बांदी की आदत है। अंडरग्राउंड ट्रेन में सवार यात्री भी ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट के लोगों की तरह ही जल्दबाजी में लग रहे थे।
‘यह रफ़्तार वाकई संक्रामक है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने पूरी तेज़ी से चलते हुए कहा। ‘देखो, हम भी घर की तुलना में कहीं ज़्यादा तेज़ी से चल रहे हैं।’ हम ग्यारह बजे रिचमंड पहुँचे। डॉ. सेन ने फेलुदा को बताया था कि पिकाडिली से वहाँ पहुँचने में कितना समय लगेगा। हमने उन्हें स्टेशन के बाहर इंतज़ार करते हुए पाया। वे साठ वर्ष की आयु के आसपास के एक आकर्षक व्यक्ति थे।
‘रिचमंड में आपका स्वागत है!’ उसने फेलुदा की ओर मुस्कुराते हुए कहा। बारिश रुक गई थी, लेकिन आसमान अभी भी धुंधला था।
फेलुदा ने अभिवादन का जवाब दिया और हमारा परिचय कराया। डॉ. सेन ने लालमोहन बाबू से पूछा, 'आप लेखक हैं?' लालमोहन बाबू ने जवाब दिया, 'मुझे याद नहीं कि मैंने आखिरी बार किसी भारतीय लेखक की रचना कब पढ़ी थी।'
‘क्यों न आप समय-समय पर घर वापस जाते हों?’
'मैं आखिरी बार 1973 में गया था। सच कहूं तो मेरे वापस जाने का कोई कारण नहीं है। मेरा पूरा परिवार ब्रिटेन में ही है। मेरे दो बेटे और दो बेटियां हैं जो बड़े हो गए हैं और घर छोड़कर चले गए हैं। उनकी शादी हो चुकी है और उनके बच्चे हैं और वे देश के अलग-अलग हिस्सों में रहते हैं। मैं और मेरी पत्नी रिचमंड में रहते हैं।'
उनकी कार थोड़ी दूर खड़ी थी। उन्होंने दरवाज़े खोलते हुए कहा, 'यहाँ तो इतनी बुरी हालत नहीं है, लेकिन लंदन में पार्किंग की समस्या काफ़ी गंभीर है। अगर आप मध्य लंदन में कहीं फ़िल्म देखने जाएँ, तो हो सकता है कि आपको सिनेमाघर से आधा मील दूर गाड़ी पार्क करनी पड़े।'
हम कार में बैठ गए। फेलुदा आगे की सीट पर बैठ गया और उसने सीट बेल्ट लगा ली। लालमोहन बाबू ने मेरी ओर सवालिया निगाहों से देखा। मैंने जल्दी से

समझाया, 'यह हमारे देश का कानून है। आगे की सीट पर बैठे यात्रियों और ड्राइवर, दोनों के लिए सीट बेल्ट लगाना अनिवार्य है।'
डॉ. सेन का घर अंडरग्राउंड स्टेशन से एक मील से थोड़ा अधिक दूरी पर था। वहाँ जाते समय मैंने ऑक्सफ़ोर्ड स्ट्रीट की कुछ दुकानों की शाखाएँ देखीं। इससे स्पष्ट था कि रिचमंड कोई छोटा इलाका नहीं था।
उनका घर एक शांत जगह पर था, जो पेड़ों से घिरा हुआ था। उनके बड़े-बड़े हरे पत्तों पर पीले और भूरे रंग के धब्बे थे। सामने एक छोटा, साफ-सुथरा बगीचा था, जिसके पीछे एक खूबसूरत दो मंजिला घर खड़ा था, मानो किसी पोस्टकार्ड की तस्वीर जैसा दिखता हो।
हमें बैठक कक्ष में ले जाया गया। चिमनी में आग जल रही थी, जिससे मुझे बहुत खुशी हुई क्योंकि बाहर ठंड और उमस थी। हमारे बैठते ही एक अधेड़ उम्र की अंग्रेज महिला कमरे में दाखिल हुई।
डॉ. सेन ने कहा, 'ये मेरी पत्नी एमिली हैं।' हमने अपना परिचय दिया। उन्होंने मुस्कुराते हुए पूछा, 'क्या आप एक कप कॉफी पीना चाहेंगे?'
'यह बहुत ही दयालुतापूर्ण होगा, धन्यवाद,' फेलुदा ने उत्तर दिया।
डॉक्टर सेन सोफे पर बैठ गए और फेलुदा की ओर मुड़ गए। श्रीमती सेन कमरे से बाहर चली गईं।
‘ठीक है। आप क्या जानना चाहते हैं, श्री मिटर?’ डॉ. सेन ने पूछा।
‘आपने कल मुझे बताया था कि आप रंजन मजूमदार के पिता को जानते हैं। मैं रंजन के बारे में जानकारी जुटा रहा हूं।’
‘मैं समझ गया। रंजन के पिता, रजनी मजूमदार और मैं 1948 में एक साथ इंग्लैंड आए थे। वे मुझसे लगभग सोलह साल बड़े थे। जब मैं उनसे मिला, तब तक मैं एडिनबर्ग में चिकित्सा की पढ़ाई पूरी कर चुका था और लंदन में काम कर रहा था। रजनी मजूमदार सेंट मैरी अस्पताल से जुड़े थे। संयोग से हम एक नाटक देखने के लिए अगल-बगल बैठ गए। मुझे वह नाटक का नाम भी याद है: मेजर बारबरा। मध्यांतर के दौरान हमारी बातचीत शुरू हुई और मुझे पता चला कि वे भी एक डॉक्टर थे। उनकी पत्नी उनके साथ थीं। वे गोल्डर्स ग्रीन में रहते थे और मैं हैम्पस्टेड में। उस समय मेरी शादी नहीं हुई थी।’
‘उसके बेटे का क्या हुआ?’
उनका बेटा स्कूल में था।
‘क्या आपको याद है कि वह किस स्कूल में पढ़ता था?’
'हां। यह एपिंग में वारेंडेल था। फिर वह कैम्ब्रिज चला गया।'
'कौन सा विद्यालय?'
'जहां तक मुझे याद है, वह ट्रिनिटी थी।'
‘डॉ. रजनी मजूमदार किस तरह के व्यक्ति थे?’
डॉ. सेन एक मिनट तक चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'अजीब।'
‘अजीब? आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?’
खैर, मुझे लगता है कि उनके परिवार में एक अजीब सी विशेषता थी। उनके पिता, रघुनाथ मजूमदार, जवानी में आतंकवादी थे। मेरा मतलब है, कहा जाता है कि उन्होंने किशोरावस्था में ही बम बनाए थे और ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया था। लेकिन बाद में, वे हृदय रोग विशेषज्ञ बन गए। जब उन्होंने सलाहकार

के रूप में काम करना शुरू किया, तब तक अंग्रेजों के प्रति उनकी सारी नफरत खत्म हो चुकी थी। उन्होंने ही रजनी को इंग्लैंड भेजा था। वे अपने बेटे को इंग्लैंड में काम करते और अपने पोते को वहाँ शिक्षा प्राप्त करते देखना चाहते थे। इस तरह का पूर्ण परिवर्तन बहुत कम देखने को मिलता है। लेकिन जब रजनी ने यहाँ काम करना शुरू किया, तो वे सोचते रहे कि अंग्रेज अभी भी भारतीयों को नीचा समझते हैं। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि नस्लवाद के कुछ छिटपुट मामलों का मतलब यह नहीं है कि हर अंग्रेज नस्लवादी है, लेकिन वे नहीं माने। अंत में, उन्होंने इंग्लैंड छोड़ दिया क्योंकि उनके एक मरीज ने उनसे कुछ कहा था—एक मामूली और महत्वहीन बात, जिसे उन्हें नजरअंदाज कर देना चाहिए था।
'तब तक, मेरा मानना है कि उसके बेटे का वह हादसा हो चुका होगा?'
'हां। उनका बेटा अब क्या कर रहा होगा? उसकी उम्र लगभग पचास के आसपास होगी।' 'जी हां। वह एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं।'
इसका मतलब है कि उसने कॉलेज में जो एक साल बिताया, वह पूरी तरह से व्यर्थ गया। वापस जाने पर उसे नए सिरे से शुरुआत करनी पड़ी होगी।
'जी हां। वैसे, क्या आप रंजन के किसी दोस्त को जानते हैं?'
नहीं। मैं उनमें से किसी से भी कभी नहीं मिला, और न ही किसी का नाम कभी मुझसे लिया गया।
'अच्छा ऐसा है।'
श्रीमती सेन कॉफी लेकर आईं। फेलुदा ने रंजन मजूमदार के बारे में और कुछ नहीं पूछा। हम थोड़ी देर बाद ही निकल गए। डॉक्टर सेन ने हमें स्टेशन तक छोड़ने की ज़िद की।

सात
अगले दिन हम ट्यूब ट्रेन से एपिंग गए और दोपहर साढ़े तीन बजे वारेंडेल स्कूल पहुँचे। मुख्य इमारत एक विशाल खेल के मैदान के पीछे थी। यह शायद दो सौ साल पुरानी थी। फेलुदा यह पता लगाना चाहता था कि क्या रंजन मजूमदार सचमुच वहाँ का छात्र था और क्या उसकी कक्षा में पीटर डेक्सटर नाम का कोई व्यक्ति था।
हॉल के एक सहायक ने हमें मुख्य द्वार पर ही मिल लिया।
‘मुझे आपके एक पूर्व छात्र के बारे में कुछ जानकारी चाहिए। उन्होंने कई साल पहले, चालीस के दशक के उत्तरार्ध में यहाँ पढ़ाई की थी,’ फेलुदा ने उनसे कहा। कुली हमें एक ऐसी जगह ले गया जो पुस्तकालय जैसी लग रही थी।
‘श्रीमान मैनिंग शायद आपकी मदद कर सकें,’ उसने कहा।
श्रीमान मैनिंग एक डेस्क के पीछे बैठे नोटबुक में व्यस्तता से कुछ लिख रहे थे। फेलुदा ने धीरे से गला साफ किया। उन्होंने ऊपर देखा।
'हाँ?'
फेलुदा ने अपनी इच्छा स्पष्ट कर दी।
‘ठीक है। आपने कौन सा वर्ष कहा था?’
‘1948.’
श्रीमान मैनिंग उठे और शेल्फ से एक मोटी बहीखाता पुस्तिका ले आए। फिर उन्होंने उसे अपनी मेज पर रखा और वापस बैठ गए।
‘तुमने कौन सा नाम लिया?’ उसने पन्ने पलटते हुए जल्दी से पूछा।
‘मैंने नहीं किया। मेरा नाम मजूमदार है। रंजन मजूमदार।’
‘ठीक है। मजूमदार… मजूमदार…’ उसने एक सूची पर उंगली फेरना शुरू किया और अचानक रुक गया। ‘जी हाँ, ये रहा। आर. मजूमदार।’
'धन्यवाद। क्या आप हमारे लिए एक और नाम की जाँच कर सकते हैं? डेक्सटर। पीटर डेक्सटर। क्या वह उसी बैच में था?'
‘डेक्सटर... नहीं, मुझे यहां कोई डेक्सटर नहीं दिख रहा है।’
‘ओह। क्या आप कृपया 1949 की सूची भी देख लेंगे? शायद डेक्सटर एक साल बाद आया हो?’
श्री मैनिंग अत्यंत सहृदय थे। हालांकि, दुख की बात यह है कि 1949 की सूची में भी पीटर डेक्सटर का कोई उल्लेख नहीं था। अब और समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं था।
फेलुदा ने श्री मैनिंग से कहा, 'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने बहुत मदद की है।'
पिकाडिली लौटते समय, फेलुदा ने कहा, 'अगर हम कैम्ब्रिज जाकर पूछताछ करें, तो मुझे पूरा यकीन है कि हम डेक्सटर के बारे में कुछ न कुछ पता लगा सकते

हैं। फिर भी, मुझे लगता है कि टाइम्स के व्यक्तिगत कॉलम में एक छोटा सा नोटिस देना बुरा विचार नहीं होगा।'
आप अपने इस्तीफे में क्या कहेंगे?
'अगर किसी को नॉरफोक के पीटर डेक्सटर के बारे में कुछ भी पता हो, तो उसे मेरे होटल में मुझसे संपर्क करना चाहिए।'
आपको क्या लगता है कि इससे आपको क्या हासिल होगा?
‘मुझे नहीं पता। देखिए, अगर हम सीधे कैम्ब्रिज चले जाएं, तो शायद हमें छात्रों की पुरानी सूची में उनका नाम मिल जाए। लेकिन इससे हमें उस व्यक्ति के बारे में कुछ पता नहीं चलेगा, है ना? अखबार में विज्ञापन देने से शायद बेहतर नतीजे मिलें, कौन जानता है?’
‘लेकिन इसमें तो तीन-चार दिन लगेंगे, है ना?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
नहीं, विज्ञापन दो दिन में प्रकाशित हो जाएगा। अगर हमें एक दिन का समय मिला, तो हम लंदन घूमेंगे। वहाँ देखने लायक बहुत कुछ है। क्या आपने मैडम तुसाद के बारे में सुना है?
‘जहां मशहूर लोगों की मोम की मूर्तियां हों?’
'हां, फिर वहां आर्ट गैलरी, संसद भवन, बिग बेन, सेंट पॉल कैथेड्रल हैं... चलते-चलते आपके पैरों में छाले पड़ सकते हैं, लेकिन आप एक दिन में सब कुछ नहीं देख पाएंगे।'
‘आप टाइम्स के कार्यालय कब जाएंगे?’
'आज। उम्मीद है कि नोटिस परसों जारी हो जाएगा।'
'ठीक है, तो हम कल पूरा दिन सिर्फ घूमने-फिरने में बिता सकते हैं, है ना?' 'निश्चित रूप से।'
मैडम तुसाद एक अद्भुत जगह थी। यहाँ तक कि कुछ कमरों के सामने खड़े कर्मचारी भी मोम के बने थे और बिल्कुल सजीव लगते थे। डरावना कक्ष देखकर तो मुझे रोंगटे खड़े हो गए।
मैडम तुसाद से बाहर निकलते ही फेलुदा बिना बताए चलने लगे कि हमें कहाँ जाना है। हम दोनों, लालमोहन बाबू, असमंजस में थे और चुपचाप उनके पीछे-पीछे चल दिए। अचानक मेरी नज़र एक इमारत की दीवार पर लगे एक ऊँचे बोर्ड पर पड़ी, जिस पर लिखा था 'बेकर स्ट्रीट'। शर्लक होम्स 221-बी बेकर स्ट्रीट में रहते थे। अब मुझे समझ आ गया कि फेलुदा क्या ढूंढ रहे थे। बाद में पता चला कि उस नंबर का कोई घर नहीं था, लेकिन हमें 220 नंबर का घर मिल गया। इतना काफी था। फेलुदा उस इमारत के सामने खड़े होकर धीरे से बोले, 'गुरुजी, आपने हमें रास्ता दिखाया। अगर आज मैं जासूस हूँ, तो सिर्फ़ आपकी वजह से। अब मैं कह सकता हूँ कि लंदन आना वाकई फ़ायदेमंद रहा।'
मैं जानता था कि फेलुदा होम्स और उनके तरीकों के कितने बड़े प्रशंसक थे। उन्होंने मुझे बताया था कि होम्स के रचयिता, कॉनन डॉयल ने एक बार उस मशहूर जासूस को मार डाला था। लेकिन उनके पाठकों ने इतना हंगामा किया कि उन्हें उसे वापस लाना पड़ा।
मुझे एहसास हुआ कि अगर हमने बेकर स्ट्रीट नहीं देखी होती तो लंदन के दर्शनीय स्थलों को देखना अधूरा रह जाता।

आठ
दो दिन बाद, टाइम्स में फेलुदा का विज्ञापन छपा। हैरानी की बात यह है कि अगले ही दिन सुबह 8 बजे किसी ने फेलुदा को फोन किया।
फेलुदा ने रिसीवर रखते हुए मुझसे कहा, 'आर्चीबाल्ड क्रिप्स नाम का एक आदमी है। उसकी आवाज़ में कुछ आक्रामक भाव थे। लेकिन उसने कहा कि वह मुझे पीटर डेक्सटर के बारे में कुछ बता सकता है। वह आधे घंटे में यहाँ आ जाएगा। जाओ और लालमोहन बाबू को बता दो। यह काफी दिलचस्प साबित हो सकता है।'
लालमोहन बाबू तैयार होकर हमारे कमरे में आए और बोले कि उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि एक छोटी सी सूचना से इतना जल्दी परिणाम मिल जाएगा। सवा नौ बजे किसी ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दी। अंदर आने वाला आदमी अपने तौर-तरीकों की तरह ही बदतमीज़ लग रहा था। उसने लालमोहन बाबू को घूरते हुए कहा, 'तो? कौन हो तुम? मित्तर?'
‘नहीं, नहीं। वो है,’ लालमोहन बाबू ने जल्दी से फेलुदा की ओर इशारा किया। ‘मैं क्रिप्स हूँ,’ हमारे आगंतुक ने तेवर चढ़ाते हुए कहा। ‘आप डेक्सटर के बारे में क्या जानना चाहते हैं?’
सबसे पहले तो, वह अभी कहां है?
वह स्वर्ग में है।
'ओह, यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। उनकी मृत्यु कब हुई?'
‘कई साल पहले, जब वह कैम्ब्रिज में थे।’
क्या वह वहां का छात्र था?
'हां। एक मूर्ख की तरह, उसने कैम नदी में नाव चलाने की कोशिश की।'
‘इससे वह मूर्ख कैसे हो जाता है?’
'क्योंकि उसे तैरना नहीं आता था, इसलिए नाव पलट गई। वह डूब गया।'
उसके कई भाई-बहन थे, है ना?
हाँ। पाँच भाई और दो बहनें। मुझे उनमें से सिर्फ़ दो के बारे में पता है— जॉर्ज, जो सबसे बड़ा था और रेजिनाल्ड, जो सबसे छोटा था। जॉर्ज भारतीय सेना में था। वह आपकी स्वतंत्रता के बाद वापस आया। वह कहा करता था कि भारत में सिर्फ़ सिख और गोरखा ही अच्छे हैं। बाकी या तो बदमाश हैं या फिर एकदम निकम्मे। डेक्सटर परिवार में किसी को भी भारतीय नीग्रो पसंद नहीं थे। ‘नीग्रो? भारत में नीग्रो नहीं होते, मिस्टर क्रिप्स। दरअसल, अमेरिका में भी अब अश्वेतों को नीग्रो नहीं कहा जाता।’
फेलुदा का चेहरा दृढ़ था। उन्होंने आगे कहा, 'ऐसा लगता है कि आप डेक्सटर परिवार से सहमत हैं, मिस्टर क्रिप्स।'
'बिल्कुल! वे सही थे, एकदम सही।'

‘तो फिर, मैं इस बातचीत को आगे नहीं बढ़ाना चाहता। आपके समय के लिए धन्यवाद।’ फेलुदा की आवाज़ में मौजूद ठंडक ने श्री क्रिप्स को कुछ हद तक नरम कर दिया।
‘देखिए,’ उसने थोड़ी और विनम्रता से कहा। ‘मेरा इरादा आपको ठेस पहुंचाने का नहीं था।’
'नहीं?'
नहीं। मैंने ये सब इसलिए कहा क्योंकि रेजिनाल्ड का नाम सामने आया था। वो उन सब में सबसे छोटा था। वो अभी भी भारत में एक चाय बागान में है। लेकिन वो वहाँ ज्यादा दिन नहीं रहेगा।
कुछ देर का सन्नाटा छा गया। फेलुदा बस मिस्टर क्रिप्स को देखता रहा, कुछ नहीं बोला।
“क्योंकि उसे कैंसर है,” क्रिप्स ने आगे कहा। “वह सिर्फ पैसे कमाने के लिए भारत गया था। उसे उस देश से कोई लगाव नहीं है।”
फेलुदा खड़ा हो गया। 'धन्यवाद, श्री क्रिप्स। मुझे अब और कुछ सीखने की जरूरत नहीं है।'
क्रिप्स थोड़ा अनिश्चित भाव से खड़ा हुआ। फिर उसने कहा, 'शुभ दिन!' और कमरे से बाहर निकल गया।
‘कितना बुरा आदमी था! लेकिन आपने उसे सबक सिखा दिया, फेलू बाबू। मुझे इस बात की बहुत खुशी है। मतलब, लंदन में किसी अंग्रेज को उसकी औकात दिखाना कोई आसान काम नहीं है, है ना?’
'कोई बात नहीं, अब वह चला गया। कम से कम हमने कुछ उपयोगी जानकारी तो हासिल कर ली। पीटर डेक्सटर कैम्ब्रिज में था और उसकी नौका दुर्घटना में मृत्यु हो गई।'
'तो अब हमें क्या करना चाहिए?'
‘हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। यह मत भूलिए कि हमें परसों वापस लौटना है। चलिए आज दोपहर के भोजन के तुरंत बाद कैम्ब्रिज चलते हैं।’
हम डेढ़ बजे लिवरपूल स्ट्रीट स्टेशन से ट्रेन पकड़कर निकले। कैम्ब्रिज पहुँचने में हमें एक घंटा लगा। ब्रिटेन में ट्रेनें तेज़ चलती हैं और बसों की तरह ही साफ़-सुथरी और अच्छी तरह से रखरखाव की हुई होती हैं।
कैम्ब्रिज एक खूबसूरत जगह थी। विश्वविद्यालय, अपनी प्राचीन शान के साथ, इसके केंद्र में स्थित था। वहाँ कई कॉलेज थे, लेकिन डॉ. सेन ने हमें बताया था कि रंजन मजूमदार ट्रिनिटी कॉलेज गए थे। इसलिए हम वहीं चले गए। हमें श्री टेलर के पास भेजा गया, जिनके पास पुराने अभिलेखों तक पहुँच थी।
‘जी हां,’ उन्होंने कुछ कागजात देखते हुए कहा। ‘1951 में रंजन मजूमदार नाम के एक लड़के को इस कॉलेज में दाखिला मिला था, और उनकी कक्षा में पीटर डेक्सटर नाम का एक लड़का था।’
'मुझे लगता है कि डेक्सटर नदी में डूब गया। क्या यह सही है?'
माफ़ कीजिए, मुझे नहीं पता। मैं यहाँ पिछले सात सालों से ही काम कर रहा हूँ। आप बूढ़े हूकिन्स से बात कर सकते हैं। वो हमारे माली हैं, चालीस साल से यहाँ काम कर रहे हैं। शायद आपको वो बगीचे में मिल जाएँ।
'धन्यवाद।'

हमें कुछ लोगों से पूछना पड़ा तब जाकर हमें हुकिन्स के बारे में पता चला। वह देखने में बहुत बूढ़ा नहीं लग रहा था, हालांकि उसके सारे बाल सफेद हो चुके थे। हमने उसे एक झाड़ी की छंटाई करते हुए पाया।
‘आप यहां काफी समय से हैं, है ना?’ फेलुदा ने पूछा। ‘हां,’ हुकिन्स ने जवाब दिया, ‘लेकिन मैं जल्द ही सेवानिवृत्त होने वाला हूं। मेरी उम्र तिरसठ वर्ष है, हालांकि मैं किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह मेहनत कर सकता हूं। चैटवर्थ स्ट्रीट में मेरा घर यहां से दो मील दूर है। मैं हर दिन पैदल चलकर आता हूं।’
‘आप छात्रों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? क्या आप उनमें से कई लोगों से मिलते हैं?’
'ओह, हर समय। वे मुझे बहुत पसंद करते हैं। उनमें से कई लोग बातचीत करने के लिए रुकते हैं, कुछ तो मुझे सिगरेट या बीयर भी ऑफर करते हैं। मेरा उनसे बहुत अच्छा तालमेल है।'
‘क्या आपको अतीत में घटी बातें याद हैं? आपकी याददाश्त कितनी अच्छी है?’ 'काफी अच्छा है, हालांकि कभी-कभी मैं हाल ही में घटी घटनाओं को भूल जाता हूँ। आप क्यों पूछ रहे हैं?'
क्या आपको चालीस साल पहले की बात याद है?
किसलिए?
‘यहाँ लड़के नदी में नाव लेकर जाते हैं, है ना?’
‘लड़कियां भी ऐसा ही करती हैं।’
'हां, लेकिन क्या आपको कोई ऐसा मामला याद है जिसमें नाव पलट गई हो और एक लड़के की मौत हो गई हो?'
हुकिंस कुछ क्षणों के लिए चुप रहे। उन्होंने मुस्कुराना बंद कर दिया था। 'हाँ,' उन्होंने धीरे से कहा। 'मुझे याद है। यह बहुत दुखद था। एक अंग्रेज लड़का—मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा। उसे तैरना नहीं आता था, इसलिए वह डूब गया।'
क्या उनका कोई भारतीय मित्र नहीं था?
'हां, मुझे लगता है उसने ऐसा किया।'
क्या वह भारतीय लड़का उसके साथ नाव में था?
‘शायद वह था... शायद...’
‘जब यह घटना हुई तब आप कहाँ थे?’
‘मैं ज्यादा दूर नहीं था, बस एक झाड़ी के पीछे बैठा हुआ था, थोड़ा आराम कर रहा था। मुझे लगता है मैं सिगरेट पी रहा था।’
‘क्या आपने सचमुच कुछ देखा?’
नहीं। मैं नदी की ओर तभी दौड़ी जब मैंने मदद के लिए चीखें सुनीं। लेकिन मैं उस लड़के को बचा नहीं सकी।
‘तो फिर आपको याद रखना होगा कि नाव में कोई और भी था या नहीं।’ हुकिन्स ने सोचते हुए माथे पर शिकन डाली। फिर उसने आह भरी और सिर हिलाया।
'नहीं, महोदय। मुझे इसके अलावा कुछ याद नहीं है। वह मेरी शादी का दिन भी था। जी हाँ, महोदय, इसीलिए मुझे वह दिन इतनी अच्छी तरह याद है। दोपहर बाद, मेरी शादी मैगी से हुई - जो किसी को भी मिल सकने वाली सबसे अच्छी पत्नी थी।'

नौ
हम लंदन लौट आए। हमें बहुत आश्चर्य हुआ जब अगली सुबह एक और भारतीय ने फेलुदा को फोन किया। वह सत्यनाथन नाम के एक दक्षिण भारतीय सज्जन थे। ‘मिस्टर मिटर, मैंने टाइम्स में आपका विज्ञापन देखा था, लेकिन मैं थोड़ा व्यस्त होने के कारण आपको पहले फोन नहीं कर सका। मैं आपको पीटर डेक्सटर के बारे में कुछ बातें बता सकता हूँ। क्या ग्यारह बजे आपके होटल में आना ठीक रहेगा?’
'ज़रूर।'
श्री सत्यनाथन समय पर पहुंचे। उनका रंग काफी सांवला था, लेकिन उनके बाल पूरी तरह सफेद थे।
‘मुझे खेद है कि मैं आपसे पहले संपर्क नहीं कर सका,’ उसने बैठते हुए कहा। ‘क्या आप लंदन में रहते हैं?’
'हां, उत्तरी लंदन में—किलबर्न में। मैं एक स्कूल में पढ़ाता हूं। पीटर डेक्सटर और मैं एक ही कॉलेज में पढ़े थे।'
‘सच में? क्या आपको रंजन मजूमदार याद हैं?’
'हां, बिल्कुल। वह और पीटर दोस्त थे, हालांकि वे अक्सर लड़ते रहते थे।' 'क्यों?'
‘इसका मुख्य कारण भारतीयों के प्रति पीटर का रवैया था। वह उनसे नफरत करता था। रंजन के साथ अलग व्यवहार करने का एकमात्र कारण रंजन की त्वचा का रंग था। वह इतना गोरा था कि उसे देखकर लगता था जैसे वह कोई यूरोपीय हो। पीटर उससे कहा करता था: मुझे लगता है कि तुम आधे अंग्रेज हो, तुम असली भारतीय नहीं हो सकते।’
‘पीटर ने तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया?’
‘क्या मुझे इसे विस्तार से बताने की ज़रूरत है? आप खुद देख सकते हैं कि मैं कितना काला हूँ। वह मुझे गंदा नीग्रो कहता था। मुझमें विरोध करने का साहस नहीं था।’
क्या आपको पीटर की मौत याद है?
'बिल्कुल। मुझे वह दिन भी याद है। यह व्हिट संडे से एक दिन पहले का दिन था। पीटर को नाव में कभी नहीं बैठना चाहिए था जब उसे तैरना नहीं आता था।'
उसके साथ और कौन था?
'रंजन।'
'क्या आपको यकीन है?'
बिल्कुल। रंजन को भीगे कपड़ों में खड़ा देखने का दृश्य आज भी मेरे दिमाग में ताजा हो जाता है। जब यह घटना हुई तब मैं अपने कमरे में था। मैं तभी बाहर भागा जब मैंने हमारे माली हुकिंस को चिल्लाते हुए सुना। रंजन अपने

दोस्त को बचाने के लिए नदी में कूद गया था, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। उसके बाद रेजिनाल्ड भी कूदा, लेकिन वह भी अपने भाई को नहीं बचा सका। ‘रेजिनाल्ड पीटर का छोटा भाई था, है ना?’
हां, उम्र में सिर्फ एक साल छोटा था। बिलकुल वैसा ही था। वह अक्सर भारतीय लड़कों से झगड़ा करता था, गंदी-गंदी बातें कहता था और उकसाने वाली हरकतें करता था। अधिकारियों ने उसे कई बार चेतावनी दी थी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। रेजिनाल्ड का मानना था कि रंजन आसानी से पीटर को बचा सकता था, लेकिन उसने नहीं बचाया। वह सबको यही बताता फिरता था: उसने जानबूझकर उसे डूबने दिया।
‘रंजन मजूमदार ने कैम्ब्रिज में एक साल से ज्यादा समय नहीं बिताया, है ना?’ नहीं। उनका भी एक गंभीर हादसा हुआ था। उसके बाद उनका परिवार उन्हें वापस भारत ले गया था।
श्री सत्यनाथन के पास देने के लिए और कोई जानकारी नहीं थी। वे उठे, अलविदा कहा और चले गए। जब फेलुदा उन्हें विदा करके कमरे में वापस आए, तो उनके चेहरे पर शिकन थी। बाद में, दोपहर के भोजन के दौरान, लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की, 'अरे, फेलु बाबू, आप असंतुष्ट लग रहे हैं। इसका क्या कारण हो सकता है?'
मुझे किसी बात पर संदेह हो रहा है।
'यह क्या है?'
'खैर, मुझे ऐसा लगता है कि हूकिन्स ने हमें वह सब कुछ नहीं बताया जो वह जानता था। किसी कारण से, उसने कुछ तथ्यों को अपने तक ही सीमित रखा।'
'इस बारे में आप क्या करने जा रहे हैं?'
‘हमारे पास बस एक ही रास्ता है। चलो कैम्ब्रिज वापस चलते हैं और उसका घर ढूंढते हैं। उसने हमें अपनी गली का नाम बताया था। क्या तुम्हें याद है वो क्या था, टॉपशे?’
‘चैटवर्थ स्ट्रीट।’
'अच्छा। मुझे लगता है कि हमें बस कैम्ब्रिज पुलिस से पूछना होगा। वे हमें बता देंगे कि इसे कैसे ढूंढना है। मेरा मानना है कि अंग्रेजी पुलिस बहुत मददगार होती है।'
दोपहर के भोजन के बाद, फेलुदा ने कहा कि उसे कुछ काम से थोड़ी देर के लिए बाहर जाना है। उसके लौटने पर हम कैम्ब्रिज चलेंगे। कैम्ब्रिज के लिए अक्सर ट्रेनें चलती हैं, इसलिए वहाँ पहुँचने में कोई समस्या नहीं होगी। हम आखिरकार साढ़े चार बजे रवाना हुए। जब हम कैम्ब्रिज पहुँचे तब तक अंधेरा हो चुका था। स्ट्रीटलाइटें जला दी गई थीं। हम स्टेशन से बाहर निकले और मुख्य सड़क पर चलने लगे। कुछ ही पलों में फेलुदा ने एक कांस्टेबल को देख लिया।
उन्होंने उससे कहा, 'हम चैटवर्थ स्ट्रीट ढूंढ रहे हैं। क्या आप कृपया हमें सही रास्ता बता सकते हैं?'
उस आदमी ने हमें इतने बढ़िया निर्देश दिए कि हमें उसे ढूंढने में कोई दिक्कत नहीं हुई। वहाँ पहुँचने में हमें लगभग आधा घंटा लगा। चैटवर्थ स्ट्रीट एक संकरी गली थी, जो साफ़ तौर पर कोई पॉश इलाका नहीं थी। वहाँ कोई

नहीं था, सिवाय एक आदमी के जो अपने घर से बाहर आया और अपने गेट के पास सो रही एक मोटी बिल्ली को उठा लाया। फेलुदा ने उसके गायब होने से पहले उससे बात करने के लिए अपनी गति तेज़ कर दी।
'माफ़ कीजिए, क्या आपको पता है कि मिस्टर हूकिन्स कहाँ रहते हैं?'
‘फ्रेड हूकिन्स? नंबर सोलह।’
हमने उस आदमी को धन्यवाद दिया और आसानी से घर ढूंढ लिया। हर घर पर उसका नंबर स्पष्ट रूप से लिखा हुआ था। जब हमने सोलहवें नंबर के घर का दरवाजा खटखटाया, तो खुद हुकिन्स ने दरवाजा खोला।
‘तुम! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’
‘क्या हम अंदर आ सकते हैं?’
'जी हां, बिल्कुल।' हुकिन्स हमें रास्ता देने के लिए एक तरफ हट गए। हम एक छोटे से लाउंज में दाखिल हुए।
एक सोफा और एक कुर्सी से पूरा कमरा भरा हुआ लग रहा था। हम बैठ गए। 'तो?' हुकिन्स ने फेलुदा की ओर जिज्ञासा भरी नजरों से देखा।
मैं आपसे कुछ और सवाल पूछना चाहूंगा।
‘क्या डूबने की घटना के बारे में?’
'हाँ।'
मैंने आपको वह सब कुछ बता दिया है जो मुझे पता है।
'अगर अनुमति हो तो मैं कुछ अलग सवाल पूछना चाहूंगा।'
'ठीक है।'
'श्री हूकिन्स, क्या आप सचमुच मानते हैं कि कोई व्यक्ति जो नदी में बहुत धीमी गति से चल रही नाव में बैठा है, पानी में गिरकर डूब सकता है?'
‘तूफान में कोई भी नाव पलट सकती है। उस दिन तेज हवा चल रही थी।’
‘आज मैं एक पुस्तकालय गया और मुझे दुर्घटना के अगले दिन प्रकाशित रिपोर्ट मिली। उसमें पीटर डेक्सटर की मृत्यु का उल्लेख है, लेकिन तूफान का कोई जिक्र नहीं है। मैंने उस दिन की मौसम रिपोर्ट देखी। हवा की गति 20-25 मील प्रति घंटा थी। क्या आप इसे बहुत तेज हवा कहेंगे?’
हूकिन्स ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके बाद जो सन्नाटा छाया रहा, उसमें मुझे सिर्फ मेज पर रखी घड़ी की टिक-टिक की आवाज सुनाई दे रही थी।
‘आप कुछ छिपा रहे हैं, मिस्टर हूकिन्स। क्या बात है?’
‘यह बहुत समय पहले हुआ था…’
'हां, लेकिन यह महत्वपूर्ण है। आप उन दोनों लड़कों में से एक के बहुत करीब थे, है ना?'
हूकिन्स ने फेलुदा की ओर हैरानी भरी नजरों से देखा। उसकी आँखों में आश्चर्य और संदेह दोनों थे।
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ उसने पूछा।
‘मैंने उस शेल्फ पर दो वस्तुएँ देखी हैं: एक गणेश जी की मूर्ति और एक हाथीदांत से बनी बुद्ध की मूर्ति। आपने उन्हें कहाँ से खरीदा?’
‘रॉन ने मुझे ये दिए थे।’
‘रॉन? तुम्हारा मतलब रंजन से है?’
'हां। मैं उसे रॉन कहता था, और कभी-कभी जॉन भी कहता था।'

‘मैं समझ गया। अब मुझे यह बताओ: पीटर की मदद के लिए पुकार सुनने से पहले क्या तुमने कुछ नहीं सुना था? याद रखो, भारतीय देवताओं के सामने झूठ मत बोलो, वरना तुम हमेशा के लिए नरक में सड़ोगे।’
‘मैं यह नहीं सुन पा रहा था कि वे वास्तव में क्या कह रहे थे। मुझे केवल उनकी आवाजें सुनाई दे रही थीं।’
‘इसका मतलब है कि वे जोर-जोर से बात कर रहे थे?’
‘शायद…शायद…’
‘क्या आप जानते हैं कि मैं क्या सोचता हूँ? मुझे लगता है कि वे लड़ रहे थे, उनके बीच तीखी बहस हो रही थी। पीटर गुस्से में खड़ा हो गया और फिर अपना संतुलन खो बैठा। नाव पलटी तो नहीं, लेकिन वह पानी में गिर गया।’
‘हाँ, हाँ, हाँ!’ हूकिन्स ने झट से कहा, ‘पीटर ने रॉन पर हमला करने की कोशिश की... वह उसे मार ही देता... लेकिन नाव अचानक हिल गई और वह... वह बस गिर गया।’ क्या इसका मतलब यह है कि पीटर अपनी मौत के लिए खुद जिम्मेदार था? 'बिल्कुल।'
लेकिन एक और बात पर गौर करें। आपकी कैम नदी कोई बड़ी नदी नहीं है। हमारे देश में हम इसे नहर कहते हैं। अब, ऐसी छोटी नदी में डूबना आसान नहीं हो सकता, खासकर तब जब कोई आपको बाहर निकालने की कोशिश कर रहा हो।
मैंने उसे अपनी आँखों से डूबते हुए देखा!
‘आप हमसे कुछ छिपा रहे हैं, है ना? श्रीमान हूकिन्स, मैं सच्चाई की तलाश में हज़ारों मील का सफर तय कर चुका हूँ। जब तक मुझे सच्चाई पता नहीं चल जाती, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। आपको मुझे बताना ही होगा कि वास्तव में क्या हुआ था। पीटर डेक्सटर इतनी आसानी से क्यों डूब गया?’
हुकिंस असहाय होकर चारों ओर देखने लगा, मानो कोई फंसा हुआ जानवर हो। फिर वह फूट-फूट कर रोने लगा।
‘ठीक है, ठीक है!’ वह चिल्लाया। ‘क्या तुम सच जानना चाहते हो? मैं तुम्हें बताता हूँ। जब पीटर पानी में गिरा, तो वह बेहोश था।’
‘बेहोश?’ फेलुदा ने हुकिन्स को तीखी नज़र से देखा। फिर उसने धीमी आवाज़ में कहा, ‘मैं समझ गया। रंजन नाव चला रहा था, है ना?’
'हाँ।'
‘इसका मतलब है कि उसके हाथ में चप्पू था?’
'हाँ।'
तो क्या उसने इसे हथियार के रूप में इस्तेमाल किया? उसने पीटर पर चप्पू से वार किया, पीटर बेहोश हो गया और नाव से गिर गया। रंजन उसके पीछे कूद गया, लेकिन उसने पीटर को बचाने के लिए कुछ नहीं किया। उसने केवल मदद करने का नाटक किया। दूसरे शब्दों में, पीटर की मौत के लिए रंजन ही जिम्मेदार था। हुकिंस ने अपने माथे पर हाथ मारा। ‘मैं तुम्हें कोई तकलीफ नहीं पहुँचाना चाहता था। इसीलिए मैं सच छिपाने की कोशिश कर रहा था। अगर मैं रंजन की जगह होता, तो मैं भी बिलकुल यही करता। पीटर उसे ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ दे रहा था। वह कह रहा था: “सिर्फ़ तुम्हारी चमड़ी सफ़ेद है। अगर मैं इसे खरोंचूँ, तो अंदर से काला है। तुम एक गंदे काले आदिवासी के सिवा कुछ नहीं हो।” अगर इसके बाद रंजन अपना आपा खो बैठा, तो भला कोई उसे कैसे दोष दे सकता है?’

क्या कोई अन्य गवाह था?
'हां, केवल एक।'
'कौन?'
‘रेजिनाल्ड।’
‘रेजिनाल्ड डेक्सटर?’
हां। हम दोनों नदी किनारे बैठे सिगरेट पी रहे थे। हम दोनों ने देखा कि क्या हुआ, हमने एक-एक शब्द सुना। लेकिन बाद में, मैंने कहा कि पीटर ने रॉन पर हमला करने की कोशिश की और पानी में गिर गया। मैंने रॉन को बचाने के लिए ऐसा कहा था। लेकिन रेजिनाल्ड ने सच सबको बता दिया। रॉन की किस्मत अच्छी थी कि सबको पता था कि वह भारतीयों के बारे में क्या सोचता है। इसलिए किसी ने उस पर विश्वास नहीं किया। भगवान का शुक्र है। रॉन बहुत अच्छा लड़का था, बहुत दयालु और उदार।
लेकिन क्या यह जांच नहीं हुई थी?
'बिल्कुल।'
'संभवतः आपको साक्ष्य देने के लिए कहा गया था?'
'हाँ।'
‘और तुमने भी वही झूठ बोले?’
'हां। मैं रॉन को बचाने के लिए दृढ़ संकल्पित था। हमने एक ही कहानी सुनाई और हम उस पर अड़े रहे।'
‘रेजिनाल्ड के बारे में क्या?’
उसे भी कोरोनर ने बुलाया था; और स्वाभाविक रूप से उसने वही बताया जो वास्तव में हुआ था। लेकिन वह इतना स्पष्ट रूप से नस्लवादी था कि किसी ने भी उसकी बात को गंभीरता से नहीं लिया। कोरोनर को लगा कि वह रंजन को मुसीबत में डालने के लिए मनगढ़ंत बातें बना रहा है। आधिकारिक फैसला दुर्घटना में मौत का था।
फेलुदा उठ खड़ी हुई। 'धन्यवाद, श्रीमान हुकिन्स। मेरे पास अब और कोई प्रश्न नहीं है।'
जब हम होटल वापस लौटे तब तक रात के खाने का समय हो चुका था। जब हम चाबियां ले रहे थे, तभी रिसेप्शनिस्ट में से एक ने फेलुदा की ओर देखकर कहा, 'श्री मिटर?'
'हाँ?'
‘आपके लिए एक टेलीग्राम है।’
फेलुदा ने झटपट उसे खोला। यह रंजन मजूमदार ने भेजा था। उसमें लिखा था: सब कुछ वापस मंगाया जा सकता है। तुरंत लौटा दें।
‘बिल्कुल सही समय,’ फेलुदा ने कहा। ‘हमने अपना काम खत्म कर लिया है, हम कल वापस जा रहे हैं और अब श्री मजूमदार की यादें ताजा हो रही हैं!’
घर लौटते समय फ्लाइट में फेलुदा ने कहा कि हमें एयरपोर्ट से सीधे श्री मजूमदार के घर जाना चाहिए। हमारी फ्लाइट को दोपहर 1 बजे कलकत्ता में उतरना था। मैं बहुत चिंतित था। अब जब श्री मजूमदार को पता चल गया था कि उन्होंने कभी किसी की हत्या की है, तो वे क्या करेंगे?

लालमोहन बाबू की कार हमें हवाई अड्डे पर लेने आई थी। ड्राइवर को हमें रोलैंड रोड ले जाने के लिए कहा गया था।
श्री मजूमदार का घर नज़र आते ही मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। आखिर उसके सामने पुलिस की वैन क्यों खड़ी थी?
हम जल्दी से बाहर निकले और अंदर चले गए। मुख्य द्वार पर इंस्पेक्टर मंडल की जानी-पहचानी आकृति ने हमारा स्वागत किया। उनका चेहरा गंभीर था। उन्होंने बिना किसी भूमिका के कहा, 'यह घटना आज सुबह लगभग आठ बजे घटी।' 'क्या हुआ?'
‘क्या आपको खबर नहीं मिली? श्री मजूमदार की हत्या कर दी गई है। बताया जा रहा है कि आज सुबह उनसे मिलने एक अंग्रेज आया था। कोई नहीं जानता कि वह कौन था। क्या आप इस मामले की जांच करना चाहेंगे, श्री मिटर?’
'नहीं।'
अगली सुबह साढ़े सात बजे लालमोहन बाबू हमारे घर आए। वे बहुत परेशान लग रहे थे। उन्होंने हांफते हुए पूछा, ‘क्या आपने आज का अखबार देखा है? स्टेट्समैन का पांचवा पन्ना?’
फेलुदा ने अखबार उठाया। हम दोनों को इसे देखने का मौका ही नहीं मिला था। पहले पन्ने पर श्री मजूमदार की मृत्यु की खबर थी।
‘पन्ना पाँच, पन्ना पाँच!’ लालमोहन बाबू ने बेसब्री से चिल्लाते हुए कहा। ‘तीसरा कॉलम देखो!’
फेलुदा ने इसे धीरे-धीरे पढ़ा:
होटल के कमरे में आत्महत्या
कल रात सदर स्ट्रीट स्थित एक होटल में कर्मचारियों और मेहमानों की आंखें गोली चलने की आवाज से चौंधिया गईं। जांच करने पर पता चला कि कमरा नंबर सात में ठहरे एक मेहमान ने खुद को गोली मार ली थी। वह फर्श पर पड़ा मिला, उसके हाथ में एक रिवॉल्वर थी। होटल रजिस्टर के अनुसार, उसका नाम रेजिनाल्ड डेक्सटर था। वह दार्जिलिंग के पास खोइराबारी नामक एक चाय बागान से आया था।

गुलाबी मोती का रहस्य

एक
‘सोनाहाटी में देखने लायक क्या है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘खैर, मैं जो किताब पढ़ रहा हूँ, जिसका नाम है ‘ट्रैवलिंग इन बंगाल’,’ फेलुदा ने जवाब दिया, ‘वहाँ एक पुराना शिव मंदिर और एक बड़ी झील होनी चाहिए। मुझे लगता है उसका नाम मंगल दीघी है। इसे वहाँ के किसी जमींदार ने बनवाया था। बीस साल पहले तक सोनाहाटी एक गाँव से ज्यादा कुछ नहीं था। अब वहाँ एक स्कूल, एक अस्पताल और एक होटल भी है।’
लालमोहन बाबू ने अपनी घड़ी देखी और कहा, 'मुझे लगता है, अभी दस मिनट और लगेंगे।' यह एक नई क्वार्ट्ज़ घड़ी थी जो उन्होंने हाल ही में खरीदी थी। उन्होंने हमें बताया था, 'जिस तरह से यह समय बताती है, वह वाकई बहुत बढ़िया है।'
हम सोनहाटी के रिक्रिएशन क्लब के निमंत्रण पर वहां जा रहे थे। हमारे साथ नवजीवन हलदर भी थे, जो इतिहास के एक प्रसिद्ध प्रोफेसर थे और कई पुस्तकें लिख चुके थे। क्लब ने प्रोफेसर हलदर और फेलुदा के लिए एक संयुक्त स्वागत समारोह आयोजित किया था। हम सोनहाटी में दो दिन बिताने वाले थे और वहां के सबसे धनी व्यक्ति पंचानन मल्लिक के घर पर ठहरने वाले थे। वे क्लब के अध्यक्ष भी थे। कहा जाता था कि वे प्राचीन वस्तुओं के संग्रहकर्ता थे। 'मुझे सच में नहीं लगा था कि आप यह निमंत्रण स्वीकार करेंगे,' लालमोहन बाबू ने फेलुदा की ओर देखते हुए कहा।
फेलुदा ने जवाब दिया, ‘मैं बस कुछ दिनों के लिए कलकत्ता से बाहर जाना चाहता था। कम से कम सोनाहाटी की हवा तो साफ होगी। इसके अलावा, मेरा एक दोस्त सोमेश्वर साहा वहीं रहता है। वह वकील है। हम सहपाठी थे। मैं उससे दोबारा मिलने के लिए उत्सुक हूं।’
हमारी ट्रेन लगभग समय पर सोनाहाटी पहुँच गई। उतरते ही एक छोटा समूह हमारी ओर आया। उनमें से दो लोगों के हाथों में मालाएँ थीं, जिन्हें उन्होंने तुरंत फेलुदा और प्रोफेसर हलदर के गले में डाल दिया। फेलुदा को माला पहनाने वाले व्यक्ति ने कहा, 'नमस्कार। मैं हमारे क्लब का सचिव हूँ। मेरा नाम नरेश सेन है। मैंने ही आपको पत्र लिखा था। और मैं पंचानन मल्लिक हूँ।' एक अधेड़ उम्र का आदमी मुस्कुराते हुए आगे बढ़ा। मैंने देखा कि उसके कुर्ते पर सोने के बटन लगे हुए थे।
उन्होंने कहा, 'हमें आपका यहां आना बेहद सम्मान की बात है। मुझे उम्मीद है कि आपको मेरे घर में रहने में कोई असुविधा नहीं होगी। मेरा मतलब है, हम आपको बड़े शहर की सभी सुविधाएं तो नहीं दे सकते।'
‘कृपया उस बारे में चिंता न करें। मुझे यकीन है कि हम सभी खूब आनंद लेंगे,’ फेलुदा ने कहा।

‘मैंने सुना है कि आप भी एक जाने-माने व्यक्ति हैं,’ श्री मल्लिक ने लालमोहन बाबू की ओर मुड़कर कहा।
‘अच्छा, मैं… मैं थोड़ा-बहुत लिखता हूँ,’ जटायु ने विनम्रता दिखाने की कोशिश की। श्री मल्लिक की नीली एम्बेसडर कार स्टेशन के बाहर खड़ी थी। हम उसमें बैठ गए।
गाड़ी से रवाना होते समय फेलुदा ने कहा, 'मैंने आपके संग्रह के बारे में सुना है। दरअसल, मुझे लगता है कि मैंने इसके बारे में कहीं कोई रिपोर्ट पढ़ी थी।'
जी हां, यह मेरा पुराना शौक है। मैंने काफी सारी चीजें इकट्ठा की हैं। प्रोफेसर हलदर को शायद इनमें विशेष रुचि होगी क्योंकि इनमें से कई वस्तुओं का ऐतिहासिक महत्व है। मेरी नवीनतम संग्रहणीय वस्तु महर्षि का जूता है।
‘महर्षि का जूता? इसका क्या मतलब है?’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से पूछा। ‘क्या आपको इसके बारे में पता नहीं है? मुझे पूरा यकीन है कि प्रोफेसर हलदार ने यह कहानी सुनी होगी।’
'चलो इसे सुनते हैं।'
जैसा कि आप सभी जानते हैं, महर्षि देबेंद्रनाथ, रवींद्रनाथ टैगोर के पिता, अत्यंत धनी व्यक्ति थे। एक बार उन्हें एक महाराजा का निमंत्रण मिला। वे जानते थे कि कई अन्य धनी लोगों को भी आमंत्रित किया गया था। इसलिए वे भी गए और देखा कि अन्य लोग अपने सबसे महंगे वस्त्रों में आए थे। जहाँ भी उन्होंने देखा, उन्हें रेशमी कुर्ते, जामवार शॉल, सोने की चेन और अनमोल गहने दिखाई दिए। लेकिन उन्होंने क्या पहना था? तंग सफेद पजामा, एक लंबा सफेद अचकन और एक सादा सफेद शॉल। लोग चकित रह गए। वे इतने साधारण वस्त्र क्यों पहने हुए थे? फिर उन्होंने उनके पैर देखे। महर्षि ने सफेद नागरा पहने हुए थे, जिन पर दो विशाल हीरे चमक रहे थे।
‘अरे वाह! और आपके पास वो जूते भी हैं?’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘मेरे पास उनमें से केवल एक ही है। हीरा अभी भी उस पर जड़ा हुआ है। मैं आपको दिखाऊंगा।’
श्री मल्लिक का घर विशाल था और उसके चारों ओर एक बड़ा बगीचा था। उनकी समृद्धि के बारे में कोई संदेह नहीं था। गाड़ी बरामदे के नीचे रुकी। दो भारवाहक और एक चौकीदार मुख्य द्वार के पास इंतजार कर रहे थे।
जैसे ही हम बाहर निकले, श्री मल्लिक ने एक भारवाहक से कहा, 'इन लोगों को उनके कमरों तक ले चलो। और यह सुनिश्चित करो कि दोपहर का भोजन एक बजे परोसा जाए।'
हमें संगमरमर की सीढ़ियों से ऊपर ले जाया गया। श्री मल्लिक ने हमसे कहा, 'आपका स्वागत समारोह शाम को है। उस समय काफी ठंड होने की संभावना है। मुझे उम्मीद है कि आप पर्याप्त गर्म कपड़े लाए होंगे?'
'हमने कर लिया है, धन्यवाद।'
गलियारे के अंत में तीन कमरे हमारे लिए तैयार किए गए थे। प्रोफ़ेसर हल्दार अपने कमरे में चले गए, और हम तीनों फ़ेलुदा और मेरे लिए बने कमरे में चले गए। यह एक विशाल कमरा था, और इसके फर्श पर चीनी मिट्टी के बर्तन जड़े हुए

थे। छत के पास दीवार में एक छोटा सा छेद हमें बताता था कि इस कमरे में कभी हाथ से चलने वाला पंखा हुआ करता था।
'इस पैटर्न को क्रेज़ी चाइना कहते हैं,' फेलुदा ने फर्श की ओर देखते हुए हमें बताया। फिर उन्होंने आगे कहा, 'श्री मल्लिक का पैसा तांबे की खानों से आया था। मेरे ग्राहकों में से एक उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता है।'
‘मैं समझ गया। अरे, क्या तुमने हवा में फर्क महसूस किया?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘यह साफ और शुद्ध है, है ना?’
बिल्कुल था। शोरगुल भी नहीं था। ट्रैफिक नाम की कोई चीज नहीं थी। हमारे आने के बाद से मैंने किसी कार या रिक्शा का एक भी हॉर्न नहीं सुना था। मैंने सोचा, यहाँ मेरे कानों को आराम मिलेगा।
एक वेटर ट्रे में शरबत के तीन गिलास लेकर आया। जैसे ही हमने शरबत पीना समाप्त किया, वह वापस आकर बोला कि दोपहर का भोजन परोसा जा चुका है।

दो
श्री मल्लिक निःसंदेह एक अत्यंत आतिथ्यवान व्यक्ति थे। मेज पर सजे व्यंजनों की संख्या इस बात का प्रमाण थी। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मछली करी के इतने अलग-अलग प्रकार हो सकते हैं। फेलुदा भोजन के दौरान कम ही खाते थे, लेकिन लालमोहन बाबू—जो खाने के शौकीन थे—ने बड़े चाव से अपना भोजन किया। लेकिन फिर, उनके पास खुश होने का एक और कारण था। श्री मल्लिक उनसे उनके लेखन के बारे में पूछते रहे, जिससे उन्हें अपनी प्रशंसा करने का मौका मिल गया।
दोपहर के भोजन के बाद श्री मल्लिक ने कहा, 'अब मैं आपको अपने संग्रह का एक हिस्सा दिखाना चाहता हूँ।' हम वापस पहली मंजिल पर गए, इस बार दाईं ओर मुड़ने के बजाय बाईं ओर। श्री मल्लिक का शयनकक्ष, अध्ययन कक्ष और संग्रहालय सभी इमारत के इसी तरफ थे।
हमें कई तरह की अनोखी चीज़ें दिखाई गईं। हमें बताया गया कि इनमें से हर एक चीज़ कभी इतिहास के किसी मशहूर व्यक्ति की रही थी। हीरे जड़ा नागरा सबसे पहली चीज़ थी जो हमने देखी, उसके बाद टीपू सुल्तान की नसवार की डिब्बी, रॉबर्ट क्लाइव की जेब घड़ी, सिराज-उद-दौला का रुमाल और रानी रश्मोनी की पान की डिब्बी। हम सबने तारीफ करते हुए वाह-वाह की, लेकिन मुझे थोड़ा शक भी हुआ। भला कोई कैसे यकीन कर सकता है कि हर चीज़ वाकई उन सभी मशहूर लोगों की थी? आखिर, ऐसा तो था नहीं कि उन पर उनके नाम लिखे हों। मेज़बान का शुक्रिया अदा करने के बाद जब हम अपने कमरों में लौट रहे थे, तो प्रोफ़ेसर हलदर ने धीरे से कहा: 'आपको ये सब कैसा लगा, मिस्टर मिटर?'
'यह बहुत विश्वसनीय नहीं था, है ना?'
‘विश्वसनीय? एक भी चीज़ असली नहीं थी। उस नागरा से नए चमड़े की तेज़ गंध आ रही थी!’
रिसेप्शन शुरू होने में करीब तीन घंटे बचे थे। पौने छह बजे एक नौकर हमें बुलाने आया। तब तक हम सब तैयार हो चुके थे। फेलुदा ने पारंपरिक धोती और कुर्ता पहना हुआ था (जिसमें वह काफी आकर्षक लग रहे थे, यह मुझे मानना पड़ेगा); और लालमोहन बाबू ने एक खूबसूरत कढ़ाई वाली कश्मीरी शॉल ओढ़ी हुई थी, जिसके बारे में उन्होंने बताया कि वह कभी उनके दादाजी की थी।
जब हम समारोह स्थल पर पहुँचे तब तक अंधेरा हो चुका था, लेकिन वहाँ हमें भरपूर रोशनी मिली, जिनमें शक्तिशाली स्पॉटलाइट से लेकर छोटे रंगीन बल्ब तक शामिल थे। प्रशस्ति पत्रों का वास्तविक पाठ बिल्कुल अंत में हुआ। इससे पहले गीत, नृत्य और कविता पाठ हुए। हर कलाकार फेलुदा को प्रभावित करने के लिए पूरी कोशिश कर रहा था। फेलुदा ने मंच से विदा होते समय बड़े उत्साह से ताली बजाकर इसका जवाब दिया।

अंततः प्रशस्ति पत्र पढ़कर सुनाए गए और फिर दोनों प्राप्तकर्ताओं को सौंप दिए गए। जिन्होंने भी इन्हें लिखा था, उनकी लिखावट बेहद खूबसूरत थी। इसके बाद कुछ पत्रकारों ने फेलुदा को घेर लिया। उनके सवालों के जवाब में फेलुदा ने कहा कि वह फिलहाल किसी मामले पर काम नहीं कर रहे हैं और अवकाश का आनंद ले रहे हैं।
कार्यक्रम समाप्त होने के बाद प्रो. हल्दार श्री मल्लिक के साथ घर लौट गए, लेकिन हम वहीं रुक गए क्योंकि फेलुदा के मित्र सोमेश्वर साहा ने हमें रात के खाने पर आमंत्रित किया था। जब भीड़ छंटने लगी तब वे वहाँ पहुँचे।
‘क्या आप मुझे पहचान सकते हैं?’ उसने मुस्कुराते हुए पूछा।
‘बिल्कुल,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘अब तुम्हारी मूंछें आ गई हैं, लेकिन बाकी सब कुछ वैसा ही है।’
‘और मैं आपके बारे में भी यही कह सकता हूँ, सिवाय इसके कि आपकी आँखें ज़्यादा तेज़ लगती हैं और आप ज़्यादा बुद्धिमान दिखते हैं। आपने अब तक कितने मामले संभाले हैं?’
‘मुझे कोई अंदाजा नहीं,’ फेलुदा हँसते हुए बोला। ‘मैं तो गिनती ही भूल गया हूँ।’
‘देखिए, आपसे मिलने के लिए एक बहुत उत्सुक व्यक्ति हैं,’ श्री साहा ने अपने पीछे खड़े एक सज्जन को धीरे से आगे बढ़ाते हुए कहा। ‘मिलिए जयचंद बोराल से। वे यहीं रहते हैं, और उन्होंने ही उस प्रशस्ति पत्र को डिजाइन किया था।’ 'सच में? आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई, महोदय। हम सभी आपकी लिखावट की प्रशंसा कर रहे थे।'
श्री बोराल ने शर्माते हुए मुस्कुराया। 'धन्यवाद, श्री मिटर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे आपसे प्रशंसा सुनने को मिलेगी। मैं आपका एक कट्टर प्रशंसक हूं।'
श्री साहा ने कहा, ‘श्री बोराल हमारे साथ रात के खाने पर आ रहे हैं। चलिए, चलते हैं। मेरा घर यहाँ से सिर्फ दस मिनट की दूरी पर है।’
श्री साहा का घर छोटा और तंग निकला। उनकी पत्नी और दस वर्षीय बेटे ने हमारा स्वागत किया। श्रीमती साहा ने हमें पेय पदार्थ देते हुए कहा, 'खाना जल्द ही तैयार हो जाएगा।'
जब हम सब बैठ गए, तो श्री साहा ने श्री बोराल की ओर इशारा करते हुए कहा, 'उन्हें आपसे कुछ कहना है। मुझे लगता है कि आपको यह दिलचस्प लगेगा।'
‘ओह? क्या बात है, श्री बोराल?’
श्री बोराल फिर मुस्कुराए। 'कुछ खास नहीं, श्री मिटर। बस मेरे परिवार से जुड़ी कोई बात है।'
‘अरे, हमें बताइए तो!’ लालमोहन बाबू अपनी कुर्सी पर आगे झुक गए। कहानी का जरा सा भी संकेत उन्हें हमेशा उत्साहित कर देता था।
श्री बोराल ने अपना गिलास मेज पर रख दिया।
उन्होंने कहना शुरू किया, “मैं अब यहाँ एक साधारण स्कूल शिक्षक के रूप में काम करता हूँ, लेकिन हम मूल रूप से जौहरी परिवार थे। वास्तव में, आज भी कलकत्ता में हमारी एक छोटी सी दुकान है। मेरे एक चाचा इसकी देखभाल करते हैं। मेरे परदादा ने इस व्यवसाय की शुरुआत की थी। वे कीमती रत्नों को

खरीदने और बेचने के लिए तट के आसपास नाव से यात्रा करते थे। उन्हें मद्रास के पास कुछ मिला, जो आज तक सुरक्षित है। मैं आपको वह दिखाना चाहता हूँ।” ‘क्या यह अभी आपके पास है?’
'हाँ।'
श्री बोराल ने अपनी जेब से एक भूरा रुमाल निकाला। वह एक छोटी सी वस्तु से बंधा हुआ था। जैसे ही उन्होंने उसे खोला, उसमें से एक छोटी सी लाल मखमली डिब्बी फिसलकर बाहर आ गई। उन्होंने उसे खोला और आगे बढ़ाया। उसमें एक मोती रखा था।
‘हे भगवान, यह तो गुलाबी मोती है!’ फेलुदा ने हैरानी से कहा।
'जी हां, महोदय। यह गुलाबी है, लेकिन मुझे नहीं पता कि इससे यह किसी भी तरह से खास बन जाता है या नहीं।'
‘क्या! आप जौहरियों के परिवार से आते हैं और आपको नहीं पता?’ फेलुदा असामान्य रूप से उत्तेजित लग रहा था। ‘भारत में मिलने वाले सभी मोतियों में से गुलाबी मोती सबसे दुर्लभ है और इसीलिए सबसे महंगा भी।’
‘अरे, मुझे तो पता ही नहीं था कि मोती सफेद के अलावा किसी और रंग का भी हो सकता है!’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
‘मोती कई रंगों में आते हैं—सफेद, लाल, काला, पीला, नीला, गुलाबी। देखिए, श्री बोराल, आपको इतनी कीमती वस्तु को अपनी जेब में लेकर नहीं घूमना चाहिए। अगर आपके घर में तिजोरी है, तो उसे वहीं रखें।’
जी हां, श्रीमान मिटर, यह हमेशा एक संदूक में ही रहता है। मैं इसे शायद ही कभी बाहर निकालता हूं। लेकिन आज रात, मैं चाहता था कि आप इसे देखें, इसलिए...
क्या आपने इसे किसी और को दिखाया है?
‘बस एक और आदमी। वो एक लेखक है। वो पिछले हफ्ते मेरे घर आया था और कहने लगा कि वो उन्नीसवीं सदी के बंगाल के व्यापारियों पर एक किताब लिख रहा है। मैंने उसे वो किताब दिखाई, लेकिन किसी और को नहीं।’
'बहुत खूब। लेकिन क्या यह बात आम तौर पर सबको पता है कि आपको यह बीमारी है?' ‘अह... जी हाँ। देखिए, इस लेखक ने जाकर एक रिपोर्टर को बता दिया। अगले दिन एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई।’
‘स्थानीय समाचार पत्रों में?’
'हां, तीन अलग-अलग अखबारों ने इस खबर को छापा है। यह कल ही प्रकाशित हुई थी।' क्या उसमें सचमुच लिखा था कि मोती गुलाबी रंग का है?
'हां दुर्भाग्य से।'
‘यह बुरी खबर है, श्री बोराल,’ फेलुदा ने गंभीर स्वर में कहा। ‘मैं एक बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ। कृपया इसे किसी और को न दिखाएँ। आपको इसकी कीमत का अंदाज़ा नहीं है। अगर आप इसे बेच देते हैं, तो इससे न केवल आपको, बल्कि आपके परिवार की अगली दो पीढ़ियों को भी आराम से जीवन जीने के लिए पर्याप्त धन मिलेगा।’
'सच में? मुझे यह बताने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, श्री मिटर। मैं आपका बहुत आभारी हूं।'

इसे रखने से पहले, हममें से प्रत्येक ने मोती को अपने हाथ में लेकर ध्यान से देखा। फेलुदा ने कहा कि इसकी खासियत सिर्फ इसका रंग ही नहीं, बल्कि इसकी आकृति भी है, जो निश्चित रूप से इसके मूल्य को बढ़ाती है।
‘बस एक ही बात दुर्भाग्यपूर्ण है, वो है प्रेस में छपी ये खबर,’ फेलुदा ने झुंझलाहट में अपनी जीभ चटकाते हुए कहा। ‘आशा है इससे आपको कोई परेशानी नहीं होगी।’
‘अगर ऐसा होता है, तो क्या मुझे आपसे संपर्क करना चाहिए?’
'जी हां, आपको जरूर लाना चाहिए। सोमेश्वर के पास मेरा पता और फोन नंबर है। मुझे फोन करने में संकोच न करें। जरूरत पड़ने पर आप वह मोती कलकत्ता ला सकते हैं।'

तीन
हम अगली सुबह कलकत्ता के लिए रवाना हो गए। प्रोफ़ेसर हलदार हमारे साथ गए, लेकिन फेलुदा ने उनकी मौजूदगी में गुलाबी मोती का ज़िक्र तक नहीं किया। घर पहुँचकर उन्होंने बस इतना कहा, 'काश प्रेस को यह खबर न मिली होती!'
दो दिन बिना किसी घटना के बीत गए। तीसरे दिन, हम दोनों अपने बैठक कक्ष में थे, मैं पढ़ रहा था और फेलुदा अपने नाखून काट रहा था, तभी टेलीफोन की घंटी बजी। फेलुदा ने फोन उठाया, संक्षेप में बात की और फिर रख दिया।
उन्होंने मुझे बताया, 'वह बोराल था।'
क्या वह कलकत्ता में है?
'हां। उन्होंने कहा कि उन्हें मुझसे तुरंत मिलना है। वे साढ़े पांच बजे आ रहे हैं। उनकी आवाज़ में उत्साह और घबराहट दोनों झलक रही थी। टॉपशे, जाओ और लालमोहन बाबू को बुलाओ।'
लालमोहन बाबू को बताना ज़रूरी था, क्योंकि अगर हम उन्हें छोड़ देते तो वे बहुत निराश हो जाते। उन्होंने एक बार शिकायत की थी, 'फेलू बाबू, अगर मैं शुरू से ही शामिल नहीं होता, तो मैं समझ नहीं पाता कि चीजें कैसे आगे बढ़ती हैं, और फिर मैं इतना सोच-समझकर काम नहीं कर पाता कि आपकी मदद कर सकूँ!' लालमोहन बाबू पांच बजे पहुंचे और ठीक आधे घंटे बाद, जयचंद बोराल भी आ गए, ठीक उसी समय जब श्रीनाथ चाय लेकर अंदर आए।
श्री बोराल थके हुए और उदास लग रहे थे। पिछले दो दिनों में दो राष्ट्रीय समाचार पत्रों में गुलाबी मोती की कहानी छपी थी, जिससे उनकी चिंताएँ और बढ़ गई थीं। उन्होंने श्रीनाथ द्वारा दिया गया पानी का गिलास जल्दी से खत्म किया और फिर खेद से सिर हिलाया।
‘किसने सोचा था कि अखबार में छपी एक छोटी सी खबर इतना हंगामा खड़ा कर देगी? मुझे आपको तीन बातें बतानी हैं। पहली बात, मेरे चचेरे भाई मोतीलाल बोराल ने मुझे पत्र लिखकर कहा है कि अगर मोती बिकता है, तो उसे भी उसमें हिस्सा चाहिए क्योंकि यह पारिवारिक धरोहर है, सिर्फ मेरी निजी संपत्ति नहीं। मोतीलाल बनारस में रहते हैं। उनका एक सिनेमाघर है। उनके पत्र से साफ संकेत मिलता है कि मैंने मोती के बारे में उन्हें न बताकर उन्हें धोखा देने की कोशिश की है।’
‘मैं समझ गया। दूसरी बात क्या है?’
मुझे उत्तर प्रदेश के धरमपुर में रहने वाले सूरज सिंह नाम के एक व्यक्ति का एक और पत्र मिला। धरमपुर कभी एक रियासत हुआ करती थी। सूरज सिंह धरमपुर के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति प्रतीत होते हैं क्योंकि उन्होंने धरमपुर महल से पत्र लिखा है। उनका कहना है कि उनके पास मोतियों का विशाल संग्रह है, लेकिन उनके पास एक भी गुलाबी मोती नहीं है। इसलिए वे मेरे पास मौजूद गुलाबी मोती खरीदना चाहते हैं और मुझसे कीमत बताने को कह रहे हैं।

‘ठीक है, तीसरी बात के बारे में क्या?’
“यही तो असल वजह है जिसके लिए मैं यहाँ हूँ। मुझे सच में चिंता हो रही है, श्री मित्तर। परसों कोई मेरे घर आया था। मुझे लगता है वो मारवाड़ी था। उसके कपड़ों और उसके कानों में पहनी अंगूठियों की संख्या देखकर—यहाँ तक कि उसके एक कान में हीरे की बाली भी थी—लगता है वो बहुत अमीर आदमी था। उसने कहा कि वो प्राचीन वस्तुएँ और कलाकृतियाँ इकट्ठा करता है। मुझे लगता है वो उन्हें विदेशों में ऊँची कीमतों पर बेचता है।”
और उसे तुम्हारा मोती चाहिए था?
'हाँ, बिल्कुल। उन्होंने इसके लिए मुझे पचास हज़ार रुपये देने की पेशकश की। मैंने कहा कि मुझे इस पर सोचने के लिए तीन दिन चाहिए। वे इस समय कलकत्ता में हैं। चित्तरंजन एवेन्यू में उनका एक घर है। तो उन्होंने मुझे अपना पता दिया और कहा कि उन्हें कल सुबह दस बजे तक मेरा जवाब चाहिए। वे मोती पाने के लिए पूरी तरह से दृढ़ संकल्पित लग रहे थे। अगर मैं मना कर दूं, तो वे शायद कुछ और ज़्यादा पेशकश करें... उसके बाद भी अगर मैं सहमत न होऊं, तो श्रीमान मित्तर, कौन जाने वे क्या कर सकते हैं?'
‘इस आदमी का नाम क्या है?’
‘Maganlal Meghraj.’
इस खुलासे से फेलुदा भी कुछ पलों के लिए स्तब्ध रह गया। मगनलाल! यह आदमी बार-बार हमारी जिंदगी में क्यों लौट आता है? अतीत में हमारे दुश्मनों में से कोई भी मगनलाल जितना खतरनाक नहीं था। हम उससे दो बार निपट चुके थे। वह श्री बोराल का मोती क्यों चाहता था?
‘देखिए, श्री बोराल,’ फेलुदा ने अंततः कहा, ‘आपको उसका प्रस्ताव ठुकराना होगा। वह मोती उसकी पेशकश से कम से कम पाँच गुना अधिक मूल्यवान है। वह उसे किसी विदेशी खरीदार को बेच देगा। यही उसका पेशा है... ज़्यादातर समय तो यही चलता है। हम उसे अच्छी तरह जानते हैं।’
लेकिन अगर वह मेरी बात नहीं मानता तो क्या होगा? उसने कहा था कि उसे इसे पाने से कोई नहीं रोक सकता।
'हां, वह यही कहेगा। सुनो, तुम अपना मोती मेरे पास क्यों नहीं छोड़ देते? अगर तुम इसे अपने साथ ले जाओगे, तो मगनलाल इसे ज़रूर छीन लेगा। ज़रूरत पड़ने पर वह तुम्हें मारने से भी नहीं हिचकेगा।'
‘हे भगवान! मैं उन्हें क्या बताऊँगा, श्री मिटर?’
बस इतना कह दीजिए कि आप इसे अपने साथ नहीं लाए क्योंकि आपने इसे बेचने का फैसला नहीं किया। आखिर, आपसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि आप इतनी कीमती चीज जेब में लेकर कलकत्ता की सड़कों पर घूमें।
‘ठीक है, मैं इसे आपके पास छोड़ देता हूँ। यह रहा।’
श्री बोराल ने वही रूमाल निकाला और लाल मखमली डिब्बा फेलुदा को सौंप दिया, जिसने उसे अपने शयनकक्ष में रखे गोदरेज के तिजोरी में बंद कर दिया। फिर वह बैठक में लौट आए और बोले, 'सूरज सिंह से क्या कहोगे? वह भी इतनी आसानी से हार नहीं मानेगा।'
फिर भी, मेरा जवाब ना ही होगा। वह अनमोल वस्तु हमारे पास डेढ़ सौ साल से है। मैं उसे खोना नहीं चाहता। ऐसा भी नहीं है कि मुझे पैसों की सख्त जरूरत

है। मैं अपनी आमदनी से अच्छी तरह गुजारा कर लेता हूँ—मेरे पास कुछ खेती की जमीन है और फिर मेरी तनख्वाह भी है।
ठीक है। देखते हैं कल क्या होता है। जाने से पहले तुम्हें मुझे सब कुछ बताना होगा।
श्री बोराल ने अपनी चाय खत्म की और चले गए।
‘मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा कि मगनलाल इसमें शामिल हो गया!’ लालमोहन बाबू ने उसके जाने के बाद हैरानी से कहा। ‘पता नहीं इस बार वो क्या करेगा।’ ‘लालमोहन बाबू ने हमें कई बार मुश्किल हालात में डाला, लेकिन हमने हर बार उन्हें मात दी, है ना? इस बार क्या होगा यह पूरी तरह से श्री बोराल और उनके द्वारा मगनलाल को बताई जाने वाली बातों पर निर्भर करता है। मुझे बस यही उम्मीद है कि मगनलाल को पता न चले कि बोराल मुझसे मिलने आए थे।’
‘फेलू बाबू, आपने बहुत बड़ा जोखिम उठाया। क्या आपको वाकई मोती को यहीं रखना जरूरी था?’
'हां, कोई और रास्ता नहीं था। अगर मैंने श्री बोराल को इसे अपने पास रखने दिया होता, तो यह कल सुबह निश्चित रूप से मगनलाल के पास चला जाता।'

Four

(Jaichand Boral’s Story)
श्री बोराल को मगनलाल का घर ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। घर का बाहरी हिस्सा देखने में बिल्कुल भी आकर्षक नहीं था; लेकिन अंदर कदम रखते ही श्री बोराल यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि वह जगह कितनी साफ-सुथरी थी।
एक देहवाहक नीचे आया और उसे मगनलाल के पास ले गया। गलियारे के आखिरी छोर पर एक कमरे के बाहर रुकते हुए उसने कहा, 'हुजूर, जयचंद बोराल यहाँ हैं।'
‘अंदर आओ!’ मगनलाल मेघराज की कर्कश आवाज सुनाई दी।
श्री बोराल कमरे में दाखिल हुए और एक सोफे पर बैठ गए। मगनलाल फर्श पर बिछे गद्दे पर बैठा था।
‘आपने क्या फैसला किया है?’ उसने पूछा।
मैं मोती नहीं बेचूंगा।
मगनलाल एक मिनट तक चुप रहे। फिर धीरे से बोले, 'आप गलती कर रहे हैं, श्री बोराल। कोई भी मेरे प्रस्ताव को ठुकराकर बच नहीं सकता। क्या आप इससे अधिक राशि पाने की उम्मीद कर रहे हैं?'
नहीं। मैं बस इसे परिवार में ही रखना चाहता हूँ। यह पाँच पीढ़ियों से हमारे पास है।
‘तुम्हारी जिंदगी कुछ खास अच्छी नहीं चल रही है, है ना? मैंने तुम्हारा सोनाहाटी वाला घर देखा। तुम कितना कमाते हो? दो हजार रुपये महीना? जरा सोचो। अगर तुम वो मोती मुझे बेच दो, तो तुम्हें पल भर में ढेर सारा पैसा मिल जाएगा। तुम इतनी बेवकूफी क्यों कर रहे हो?’
‘यह परिवार के गौरव का मामला है। मैं आपको समझा नहीं सकता।’
‘वह मोती कहाँ है?’
मुझे यह नहीं मिला है।
‘आपका मतलब है कि आप इसे अपने साथ यहां नहीं लाए?’
'नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया। ऐसा करने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि मैं इसे आपको बेचने वाला नहीं था।'
मगनलाल ने घंटी बजाई। जो व्यक्ति लगभग तुरंत प्रकट हुआ, वह लंबा और हट्टा- कट्टा था। उसने अपने स्वामी की ओर जिज्ञासा भरी निगाहों से देखा।
‘गंगा, इस आदमी की तलाशी लो,’ मगनलाल ने आदेश दिया।
गंगा ने श्री बोराल को उठाकर खड़ा किया। पूरी तलाशी लेने पर एक बटुआ, एक रुमाल और पान-मसाला का एक छोटा डिब्बा मिला।
‘ठीक है, उसे सामान वापस दे दो।’
गंगा ने हर वस्तु लौटा दी।
बैठ जाओ।
श्री बोराल दोबारा बैठ गए।

‘मुझे सोनाहाटी में पता चला कि आपके क्लब ने प्रदोष मित्र के लिए एक स्वागत समारोह आयोजित किया था।’
'हाँ यह सही है।'
क्या आप उनसे मिले थे?
‘मैं आपको क्यों बताऊं? मुझे आपके सभी सवालों के जवाब देने की जरूरत नहीं है।’
नहीं। मेरे सवाल का जवाब देने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि मुझे पहले से ही पता है कि क्या हुआ था। हावड़ा में ट्रेन से उतरते ही मेरे आदमियों ने आपकी हर गतिविधि पर नज़र रखी थी। आपने जोगमाया नाम के होटल में चेक-इन किया था, है ना?
'सही।'
‘आपने शाम पांच बजे अपने होटल से निकलकर टैक्सी ली। फिर आप फेलू मिटर के घर गए, सही कहा ना?’
‘अगर आपको सब कुछ पता है, तो आप अभी भी सवाल क्यों पूछ रहे हैं?’
‘वह मोती अब फेलू मिटर के पास है।’
श्री बोराल ने कुछ नहीं कहा। मगनलाल ने उन्हें टकटकी लगाकर देखा। ‘श्री बोराल, आपने बहुत बड़ी बेवकूफी की है। अगर आप मुझे अपना मोती दे देते, तो मैं आपको पचास हजार रुपये दे देता। अब मोती तो मुझे मिल ही जाएगा—देर-सवेर—लेकिन आपको एक पैसा भी नहीं मिलेगा।’
श्री बोराल उठे। 'क्या मैं अब जा सकता हूँ?'
'हां। मुझे और कुछ नहीं कहना है। लेकिन मुझे आपके लिए दुख हो रहा है।'

पाँच
श्री बोराल लगभग बारह बजे हमारे घर आए और उन्होंने हमें बताया कि मगनलाल ने क्या कहा था।
उसने पूछा, 'अब तुम इस मोती का क्या करोगे? क्या मैं इसे अपने साथ वापस ले जाऊं?'
‘मगनलाल जानता है कि मैंने इसे यहाँ रखा है। वह बहुत ही चालाक आदमी है। अगर वह खुद यहाँ आया हो तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। मुझे पता है कि आप मोती को अपने घर ले जाने के लिए उत्सुक हैं, लेकिन यकीन मानिए, यह यहाँ ज़्यादा सुरक्षित रहेगा। अगर आप इसे अपने पास रखेंगे, तो मगनलाल किसी भी तरह से इसे आपसे छीन लेगा। हम ऐसा नहीं होने दे सकते।’
‘बहुत अच्छा। चलिए मगनलाल के कलकत्ता से जाने तक इंतजार करते हैं। उसके चले जाने के बाद, मैं वापस आकर आपसे इसे ले लूंगा।’
'हां, यह कहीं बेहतर होगा। क्या आप आज सोनाहाटी वापस जा रहे हैं?'
'हां, शाम की ट्रेन से।'
ठीक है। अगर कुछ अप्रिय घटना घटित हो तो मुझे बताना मत भूलना।
अगली सुबह सोमेश्वर साहा ने हमें सोनाहाटी से फोन किया। उन्होंने बताया कि श्री बोराल पर कलकत्ता से लौटते समय हमला हुआ था। उनके सिर पर चोट लगी और वे बेहोश हो गए। जब उन्हें होश आया तो उन्होंने देखा कि उनका सारा सामान बिखरा पड़ा था। ऐसा लग रहा था कि किसी ने किसी खास चीज की तलाश में सब कुछ खंगाला था।
जब फेलुदा ने मुझे बताया कि श्री साहा ने क्या कहा था, तो मैंने हैरानी से कहा, 'मगनलाल ने यह किया!'
'बिल्कुल। जाहिर है उन्होंने जोखिम न लेने का फैसला किया। शुक्र है कि मोती श्री बोराल के पास नहीं था।'
लालमोहन बाबू शाम को आए और उन्हें नवीनतम घटनाक्रम के बारे में बताया गया। ‘इसका एक ही मतलब हो सकता है, फेलू बाबू,’ उसने घोषणा की। ‘मगनलाल अब आपसे बात करने की कोशिश करेगा। उसे यह पक्का पता होना चाहिए कि आपको बोराल का मोती मिल गया है।’
लगभग पाँच मिनट बाद, एक कार हमारे घर के बाहर रुकी और फिर दरवाज़े की घंटी बजी। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि जिसके बारे में हम बात कर रहे थे, वही वहाँ खड़ा था और मेरी तरफ मुस्कुरा रहा था।
‘क्या मैं अंदर आ सकता हूँ, तपेश बाबू?’ मगनलाल ने पूछा।
'निश्चित रूप से।'
मगनलाल अंदर आया। अभी भी काली शेरवानी और सफेद धोती पहने हुए, वह बिल्कुल भी बदला हुआ नहीं लग रहा था।

‘श्री मिटर, मैं अक्सर आपके घर आना चाहता था। आखिर हम कितने पुराने दोस्त हैं, है ना?’ उसने हंसते हुए कहा। ‘हैलो अंकल, आप कैसे हैं?’
लालमोहन बाबू अकड़ गए। मगनलाल ने दो मौकों पर उनके साथ इतना बुरा बर्ताव किया था कि उनकी मौजूदगी में लालमोहन बाबू को सहज महसूस करना मुश्किल हो रहा था।
कुछ देर बाद उसने धीमी और कर्कश आवाज में कहा, 'ठीक है, धन्यवाद।'
‘क्या आप एक कप चाय पीना चाहेंगे?’ फेलुदा ने विनम्रता से पूछा।
'नहीं, महोदय। मुझे ज्यादा समय नहीं लगेगा, श्रीमान मिटर। शायद आप समझ सकते हैं कि मैं यहाँ क्यों हूँ?'
'हां, शायद मैं कर सकता हूं।'
तो चलिए, सीधे मुद्दे पर आते हैं। वह मोती कहाँ है?
'श्री बोराल के पास वह नहीं है। कम से कम इतना तो आपको पता होना चाहिए, क्योंकि आपने उन पर हमला करने के लिए जो लोग भेजे थे, उन्हें वह नहीं मिला।' 'मेरा प्रेमी?'
‘हां, ऐसा काम और कौन करेगा?’
'कृपया इस तरह बात न करें, श्रीमान मिटर। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि वे लोग मेरे थे।'
‘मुझे सबूत ढूंढने की भी जरूरत नहीं है, मगनलालजी। आप जैसे बदमाश का अपना ही अंदाज होता है। मैं आपका अंदाज कहीं भी पहचान लूंगा।’
क्या ऐसा है? अच्छा, तो मैं आपसे फिर से पूछता हूँ: वह मोती कहाँ है?
‘मेरे साथ।’
'मुझे इसकी आवश्यकता है।'
'बहुत बुरा हुआ। आपको हमेशा वह नहीं मिल सकता जिसकी आपको जरूरत है, या जो आप चाहते हैं।'
‘मगनलाल को हमेशा वही मिलता है जो वह चाहता है। तुम बातें करके अपना समय क्यों बर्बाद कर रहे हो? मुझे वह गुलाबी मोती चाहिए। अगर तुम मुझे वह नहीं दोगे, तो तुम अच्छी तरह जानते हो कि मेरे पास उसे तुमसे छीनने के साधन हैं।’
‘तो फिर आपको उन्हीं तरीकों का सहारा लेना पड़ेगा, है ना? आपको मुझसे वो नहीं मिलेगा, मगनलाल जी।’
'नहीं?'
'नहीं।'
‘बहुत अच्छा,’ मगनलाल उठे। ‘अब मैं चलता हूँ। अलविदा, श्रीमान मित्तर। अलविदा, चाचा जी।’
‘अलविदा,’ लालमोहन बाबू ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया। मगनलाल दरवाजे पर रुका और पीछे मुड़ा। ‘मैं तुम्हें तीन दिन और देने को तैयार हूँ,’ उसने फेलुदा की ओर देखते हुए कहा। ‘आज सोमवार है। मंगलवार, बुधवार, गुरुवार। सोच लो। क्या तुम मुझे समझ रहे हो?’
'बिल्कुल सही।'
मगनलाल बाहर चला गया। लालमोहन बाबू उसे देखते हुए सिर हिलाते रहे। उन्होंने कहा, 'मुझे यह पसंद नहीं आया, फेलू बाबू। आप उसे मोती क्यों नहीं

दे देते और बात खत्म क्यों नहीं कर देते? वैसे भी आप इसे यहाँ कब तक रख सकते हैं? बोराल इसे देर-सवेर वापस ले ही लेगा, है ना?'
'हां, लेकिन तब नहीं जब इसके गलत हाथों में पड़ने की जरा सी भी संभावना हो। मैं मोती को उसके असली मालिक को तभी लौटाऊंगा जब मुझे पूरा यकीन हो जाएगा कि मगनलाल अब रास्ते से हट चुका है।'
‘उस महाराज के बारे में क्या जो उसी मोती में रुचि रखता है? हम उसके बारे में कुछ नहीं जानते, है ना?’
नहीं, लेकिन एक व्यक्ति है जो हमें उस आदमी के बारे में कुछ बता सकता है: अंकल सिद्धू। मैं उनसे बहुत समय से नहीं मिला हूँ। चलिए आज उनसे मिलने चलते हैं।
‘उस आदमी का नाम क्या है? क्या आपको उसका नाम याद है?’
‘Suraj Singh.’
और वह जगह?
‘Dharampur, in Uttar Pradesh.’
हम लालमोहन बाबू की कार में बैठे और पाँच मिनट में अंकल सिद्धू के घर पहुँच गए। हमने उन्हें उनके कमरे में एक प्राचीन पांडुलिपि का आवर्धक लेंस से निरीक्षण करते हुए पाया। उन्होंने हमें ठंडी निगाहों से देखा।
‘आप कौन हैं? मुझे नहीं लगता कि मैं आप में से किसी को जानता हूँ।’
फेलुदा हँसा। ‘चाचा जी, मुझे माफ़ कर दीजिएगा। मुझे पता है कि आपसे मिले हुए काफ़ी समय हो गया है, लेकिन मेरे पास इतने ज़्यादा काम थे कि मुझे लोगों से मिलने-जुलने का समय ही नहीं मिला। कम से कम इससे यह तो पता चलता है कि मैं अपने काम में अच्छा कर रहा हूँ। आपको खुश होना चाहिए।’
इस बार अंकल सिद्धू मुस्कुराए। उन्होंने कहा, ‘फेलू मित्तर, मैं तुम्हें आठ साल की उम्र से जानता हूँ। तुमने अपनी एयरगन से एक मैना को मार डाला था और मुझे दिखाने के लिए मरा हुआ पक्षी लाए थे। मैंने तुमसे कहा था, “किसी बेचारे बेसहारा जीव को मारना पाप है। मुझसे वादा करो कि तुम ऐसा फिर कभी नहीं करोगे।” तुम समझ गए और तुमने एयरगन चलाना छोड़ दिया। मुझे खुशी है कि तुम अच्छा कर रहे हो। लेकिन इस बारे में डींगें मत मारो। मैं भी जासूस बन सकता था। मुझमें वो सारी खूबियाँ थीं—और अभी भी हैं—जो इसके लिए चाहिए होती हैं। लेकिन इसका मतलब होता नौकरी से बंध जाना, इसलिए मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं। मैं शर्लक होम्स के भाई माइक्रॉफ्ट जैसा हूँ। उसका दिमाग शर्लक से भी तेज़ था, लेकिन वो कोई गंभीर काम करने में बहुत आलसी था। शर्लक कभी-कभी उससे सलाह लेता था। खैर, आज तुम यहाँ क्यों आए हो?’
मुझे एक आदमी के बारे में कुछ जानकारी चाहिए।
'कौन?'
क्या आपने धरमपुर नाम की जगह के बारे में सुना है?
'बिल्कुल। यह उत्तर प्रदेश में है, अलीगढ़ से 77 मील दक्षिण में। यह कभी एक रियासत हुआ करती थी। आज भी वहां रेल संपर्क नहीं है, वहां सड़क मार्ग से ही जाना पड़ता है।'
‘तो फिर आपको सूरज सिंह के बारे में जरूर पता होगा।’
‘हे भगवान, क्या वह अभी भी जीवित है?’

'हाँ।'
‘वह वाकई एक अनोखा व्यक्ति है। करोड़पति होने के साथ-साथ वह होटलों की एक श्रृंखला का मालिक है; और उसके पास गहनों का एक विशाल संग्रह है। भारत में सबसे बेहतरीन।’
‘वह व्यक्ति के रूप में कैसा है?’
मुझे कुछ पता नहीं। मैं उस आदमी से कभी मिला नहीं। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ: सूरज सिंह जैसे लोग किसी एक श्रेणी में नहीं आते। अगर आप उससे मिलने जाएँ, तो शायद आपको वह दयालु और मेहमाननवाज लगे। लेकिन वही आदमी अपनी इच्छा पूरी करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है—यहाँ तक कि हत्या भी। ज़ाहिर है, वह खुद ऐसा नहीं करेगा। उसके लिए बहुत से लोग काम करते होंगे। वह खुद कभी कानून नहीं तोड़ेगा, लेकिन उसका काम हो जाएगा।
फेलुदा ने अंकल सिद्धू को धन्यवाद कहा और हम चले गए। मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि हमें सूरज सिंह से क्यों और कैसे निपटना पड़ सकता है, लेकिन जब मैंने फेलुदा से इस बारे में बात की, तो उन्होंने जवाब दिया, 'चूंकि उन्होंने बोराल को पत्र लिखने की जहमत उठाई है, तो यह स्पष्ट है कि वे उस मोती को खरीदने के लिए काफी उत्सुक हैं। मुझे यह देखने में बहुत दिलचस्पी होगी कि उसे पाने के लिए वे कितनी हद तक जा सकते हैं। मुझे खुशी है कि हम आज अंकल सिद्धू से मिलने गए।'

छह
मगनलाल ने हमें जवाब देने के लिए तीन दिन का समय दिया था। फेलुदा ने इन तीन दिनों में उससे संपर्क करने की कोई कोशिश नहीं की। चौथे दिन जो हुआ, उससे हम सदमे से व्याकुल हो गए।
शुक्रवार का दिन था। मैं हमेशा की तरह उठी और योगाभ्यास पूरा किया, जो मैंने हाल ही में फेलुदा से प्रेरित होकर शुरू किया था। योगाभ्यास खत्म होते-होते साढ़े छह बज चुके थे। आम तौर पर फेलुदा इस समय मेरे साथ नहा-धोकर और कपड़े पहनकर आ जाते थे। आज उनका कोई अता-पता नहीं था।
मैं उसके कमरे में गया और देखा कि दरवाजा थोड़ा खुला हुआ है। हल्का सा धक्का देने पर वह पूरी तरह खुल गया। जो मैंने देखा वह बिल्कुल चौंकाने वाला था। फेलुदा अभी भी अपने बिस्तर पर गहरी नींद में सो रहा था। उसे तो एक घंटे पहले ही उठ जाना चाहिए था।
मैं जल्दी से उसके पास गया और उसे जगाने की कोशिश की। जब उसने ज़ोर से हिलाने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो मुझे समझ आ गया कि वह बेहोश है। मेरी नज़र अपने आप गोदरेज की तिजोरी पर पड़ी। वह खुली हुई थी और उसका सारा सामान ज़मीन पर बिखरा पड़ा था।
मैंने तुरंत उसकी नब्ज़ जाँची। शुक्र है! वो सामान्य थी। मैं दौड़कर बैठक में गई और हमारे पारिवारिक चिकित्सक डॉ. भौमिक को फोन किया। वे दस मिनट में आ गए। जैसे ही डॉक्टर ने उसकी जाँच शुरू की, फेलुदा हिलने-डुलने लगा। डॉक्टर ने कहा, 'मुझे लगता है किसी ने क्लोरोफॉर्म का इस्तेमाल किया। लेकिन वह अंदर कैसे आया?'
मुझे यह समझने में एक मिनट लगा। बाथरूम का वह साइड वाला दरवाजा, जिससे हमारी सफाईकर्मी हर दिन अंदर आती थी, खुला हुआ था।
लगभग पंद्रह मिनट बाद फेलुदा ने अपनी आँखें खोलीं। डॉ. भौमिक ने दिलासा देते हुए कहा, 'आप ठीक हो जाएँगे। कुछ ही मिनटों में आप पहले की तरह सामान्य महसूस करने लगेंगे। आपको बस यह जाँच करनी है कि कहीं कुछ चोरी तो नहीं हुआ है। आपकी तिजोरी अभी भी खुली हुई है।'
'टॉपशे, नीचे वाली दराज खोलो।'
मैंने कोशिश की, लेकिन मुझे वह लाल मखमली डिब्बा नहीं मिला जो श्री बोराल हमारे पास छोड़ गए थे। उनका गुलाबी मोती गायब हो गया था।
फेलुदा ने सिर हिलाया और आह भरी। 'मैं किसे दोष दूं, सिवाय खुद को? मुझे याद है मैंने कल रात दरवाजा बंद किया था। लेकिन कुंडी थोड़ी ढीली हो गई थी। मैंने इसे कुछ दिन पहले देखा था, लेकिन ठीक करवाने का समय नहीं मिला। ओह, मैं खुद को कोस रहा हूँ!'
डॉक्टर भौमिक चले गए। मैंने लालमोहन बाबू को फोन किया और उन्हें सारी बात बताई। वे जितनी जल्दी हो सके आ गए।

‘देखो, फेलू बाबू, मुझे पता था कि ऐसा कुछ होगा। मैंने तुम्हें चेतावनी देने की कोशिश की थी, है ना? अगर वे सीधे तुम्हारे कमरे में आकर तुम्हें क्लोरोफॉर्म दे सकते हैं, तो सोचो ये लोग कितने खतरनाक हैं! अब हम क्या करेंगे?’ उसने पूछा।
फेलुदा, होश में आने के बाद, चाय पी रहा था। 'मैं बोराल को इसके बारे में नहीं बताने वाला। कम से कम अभी तो नहीं। देखते हैं कि क्या मैं वह मोती वापस ला सकता हूँ।'
फोन की घंटी बजी। सोनहाटी से सोमेश्वर साहा का फोन था। फेलुदा ने करीब तीन मिनट बात की और फिर रिसीवर रख दिया।
बोराल को कुछ ताज़ा खबर मिली है। धरमपुर से फिर खबर आई है। सिंह अब भी मोती को अपने संग्रह में रखना चाहता है। उसने डेढ़ लाख की पेशकश की है। बोराल अब मोती बेचने की सोच रहा है—आखिरकार, यह कोई छोटी रकम नहीं है। इसके अलावा, हाल ही में उसे इतनी सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा है कि उसने सोमेश्वर से कहा है कि वह इससे छुटकारा पाकर बहुत खुश होगा। सूरज सिंह एक हफ्ते के लिए दिल्ली जा रहा है। उसके बाद वह सोनाहाटी जाएगा और बोराल से व्यक्तिगत रूप से मिलेगा।
‘तो फिर हमें मगनलाल से वह मोती वापस लाना होगा!’
‘बिल्कुल। टॉपशे, देखो कि मगनलाल का नाम टेलीफोन डायरेक्टरी में है या नहीं।’
मैंने निर्देशिका उठाई और झटपट सही पृष्ठ ढूंढ लिया। 'जी हां, वही हैं। 67, चित्तरंजन एवेन्यू।'
‘ठीक है। मुझे अपनी चाय खत्म करने दो, फिर हम चलेंगे।’
लेकिन क्या आप ठीक महसूस कर रहे हैं?
'जी हां। मैं सौ प्रतिशत फिट हूं।'
‘आप पुलिस को क्यों नहीं बताते?’
'पुलिस मुझे ऐसी कोई बात नहीं बता सकती जो मुझे पहले से पता न हो। मैं उनका समय बर्बाद नहीं करना चाहता।'
जब हम मगनलाल के घर पहुँचे तो नौ बजकर दस मिनट हो चुके थे। अंदर जाते ही लालमोहन बाबू ने बुदबुदाते हुए कहा, 'पता नहीं इस बार क्या करेगा।' लेकिन, जैसा कि बाद में पता चला, मगनलाल घर पर नहीं थे। वे उसी सुबह दिल्ली के लिए रवाना हो गए थे।
‘क्या वह हवाई जहाज से गया था?’ फेलुदा ने अपने संदेशवाहक से पूछा।
नहीं, महोदय। वह ट्रेन से गए थे।
हम चले गए। लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की, 'क्या यह अजीब नहीं है कि मोती में रुचि रखने वाले दोनों लोग दिल्ली चले गए हैं?'
'हां, लेकिन हमें इसकी पुष्टि करवा लेनी चाहिए।'
फेलुदा के हर जगह दोस्त थे, यहाँ तक कि रेलवे आरक्षण कार्यालय में भी। हम मगनलाल के घर से सीधे वहीं गए और फेलुदा को वहाँ अपारेश नाम का एक परिचित मिल गया।
आज सुबह दिल्ली के लिए कितनी ट्रेनें रवाना हुईं?

‘केवल एक ही है। यह हावड़ा से सुबह 9:15 बजे रवाना हुई और कल सुबह 10:40 बजे दिल्ली पहुंचेगी।’
'अब क्या आप अपनी सूची देखकर बता सकते हैं कि क्या श्री मेघराज उस ट्रेन से दिल्ली गए थे?'
अपारेश ने आरक्षण सूची देखी और जवाब दिया, 'जी हां, ये लीजिए। श्री एम. मेघराज, फर्स्ट क्लास एसी। लेकिन उनकी दिल्ली जाने की बुकिंग नहीं थी।' ‘नहीं? तो फिर वो कहाँ गया?’
'बनारस। वह आज रात साढ़े दस बजे वहाँ पहुँच जाएगा।'
‘Benaras?’
मुझे भी हैरानी हुई। लेकिन फिर, क्या मगनलाल का मुख्यालय बनारस में नहीं था?
‘कल सुबह बनारस पहुंचने वाली कितनी ट्रेनें हैं?’
‘दो ट्रेनें हैं जो उचित समय पर चलती हैं। एक है अमृतसर मेल। यह शाम 7.20 बजे निकलती है और सुबह 10.05 बजे बनारस पहुंचती है। दूसरी है दून एक्सप्रेस जो आज रात 8.05 बजे निकलेगी और कल सुबह 11.15 बजे बनारस पहुंचेगी।’
फेलुदा ने हमारे लिए अमृतसर मेल की टिकट बुक करवाई थी। अपारेश की मदद के बिना, हमें इतनी जल्दी तीन आरक्षित सीटें कभी नहीं मिल पातीं। दिक्कत बस इतनी थी कि हमारे पास पर्याप्त पैसे नहीं थे। इसलिए हमें घर वापस जाना पड़ा और बारह बजे तक रेलवे बुकिंग कार्यालय लौटना पड़ा।
लालमोहन बाबू सूटकेस पैक करने के लिए तुरंत रवाना हो गए।
‘एक हफ्ते के लिए पर्याप्त कपड़े ले जाओ। मुझे नहीं पता कि हमें वहां कितने दिन रुकना पड़ेगा। और यह मत भूलना कि वहां बहुत ठंड है,’ फेलुदा ने उसे चेतावनी दी।
हमारी ट्रेन समय पर चली। यात्रा शांतिपूर्ण रही, सिवाय इसके कि अगली सुबह फेलुदा ने एक अखबार खरीदा जिसमें हमने एक महत्वपूर्ण खबर पढ़ी। अमेरिकी व्यापारियों का एक समूह भारत आया हुआ था। सूरज सिंह उन भारतीयों में से एक थे जिनके साथ वे व्यापार कर रहे थे। इससे यह बात स्पष्ट हो गई कि सिंह दिल्ली क्यों गए थे।
हम निर्धारित समय से केवल पंद्रह मिनट देरी से बनारस पहुंचे।

सात
हालांकि यह मेरी दूसरी यात्रा थी, फिर भी बनारस के घाटों और गलियों को देखकर मैं अचंभित और विचित्र रूप से भावुक हो गया। हमने कलकत्ता लॉज में चेक-इन किया, जहाँ हम पहले भी ठहर चुके थे। निरंजन चक्रवर्ती अभी भी वहाँ के प्रबंधक थे।
जब फेलुदा ने उससे पूछा कि क्या उसके पास कोई खाली कमरा है, तो उसने कहा, 'महोदय, आपके लिए मैं हमेशा एक कमरा ढूंढ सकता हूँ। आपको कितने समय के लिए कमरा चाहिए?'
मुझे ठीक से पता नहीं। मान लीजिए एक सप्ताह।
पिछली बार की तरह हमें एक छोटा सा कमरा दिया गया। उसमें चार बिस्तर थे, लेकिन चौथा खाली था। चूंकि हमने ट्रेन में नाश्ता कर लिया था, इसलिए फेलुदा तुरंत काम शुरू करना चाहता था।
‘फेलू बाबू, आप आखिर क्या करने का सुझाव दे रहे हैं? क्या हम सीधे शेर की गुफा में चले जाएं?’ लालमोहन बाबू जानना चाहते थे।
'हां, लेकिन अगर आप यहीं रहना चाहें तो आपको हमारे साथ आने की जरूरत नहीं है।'
‘नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। हम तीन योद्धा हैं, याद है ना?’ मगनलाल के घर जाने के लिए हमें विश्वनाथ मंदिर से होकर गुजरना पड़ा। नज़ारे और गंधें बहुत जानी-पहचानी थीं। पिछले कुछ सालों में कुछ भी नहीं बदला था। शायद भविष्य में भी कुछ नहीं बदलेगा।
हम मंदिर को पीछे छोड़कर एक अपेक्षाकृत शांत स्थान पर पहुँचे। सब कुछ मुझे एकदम स्पष्ट रूप से याद आ गया। यहाँ से बाएँ मुड़ने पर हम मगनलाल के घर पहुँच जाएँगे।
‘क्या आपने तय कर लिया है कि आप क्या कहेंगे?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
नहीं। मैं हमेशा अपनी पंक्तियों की तैयारी और पूर्वाभ्यास नहीं करता। कभी-कभी स्थिति के अनुसार अभिनय करना ही सबसे अच्छा होता है।
क्या आप इस बार यही करना चाहते हैं?
'हाँ।'
यह मगनलाल का घर था, जिसके मुख्य द्वार पर दो सशस्त्र रक्षकों के चित्र लगे थे। वे पहले की तरह ही तलवारें उठाए खड़े थे, लेकिन उनका रंग थोड़ा फीका पड़ गया था। हम खुले दरवाजे से अंदर घुस गए और आंगन में खड़े हो गए।
‘कोई है?’ फेलुदा चिल्लाया। जब किसी ने जवाब नहीं दिया, तो उसने कहा, ‘ठीक है, चलो ऊपर चलते हैं। हमें उस आदमी से मिलना ही है, इसलिए यहाँ इंतजार करने का कोई फायदा नहीं है।’
मगनलाल का कमरा दूसरी मंज़िल पर था। मुझे याद है कि वहाँ पहुँचने के लिए हमें छियालीस सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ी थीं। रास्ते में किसी ने हमें नहीं

रोका। जैसे ही हम दूसरी मंज़िल पर पहुँचे और एक लंबे गलियारे के एक छोर पर निकले, हमने देखा कि एक आदमी सीढ़ियों के पास बैठा अपने हाथ में तंबाकू के पत्ते रगड़ रहा था। उसने हमें हैरानी भरी नज़रों से देखा।
‘आप किसे ढूंढ रहे हैं?’ उसने पूछा।
‘सेठ मगनलाल। क्या वह यहाँ है?’
'हां, लेकिन वो दोपहर का खाना खा रहे हैं। आप उनके ड्राइंग रूम में क्यों नहीं रुकते? मैं आपको दिखा देता हूं कि वो कहां है।'
हम उस आदमी के पीछे-पीछे एक कमरे में गए जिसे मैंने तुरंत पहचान लिया। यहीं पर मगनलाल ने एक चाकू फेंकने वाले से लालमोहन बाबू के चारों ओर बड़े-बड़े, खतरनाक दिखने वाले चाकू फेंकवाए थे, जो उस 'शो' के अंत में बेहोश हो गए थे। फिर, जब हम बाद में काठमांडू में उनसे मिले, तो उन्होंने लालमोहन बाबू की चाय में एलएसडी मिला दिया था। सौभाग्य से, हमारे जटायु को कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन इस पूरी घटना ने हमें बहुत चिंतित कर दिया था।
जैसे ही हम बैठे, जटायु ने कहा, 'फेलू बाबू, कृपया तय कर लीजिए कि आप क्या बोलने वाले हैं। मुझे तो कुछ सूझ ही नहीं रहा।'
‘इस बात की चिंता मत करो। तुम्हें बोलने की जरूरत नहीं है। मुझे बोलना है।’ ‘क्या तुम वो चीज़ अपने साथ लाए हो?’
'वह चीज' से स्पष्ट रूप से फेलुदा की रिवॉल्वर का तात्पर्य था।
'हां, मैंने किया। आप खुद को शांत करने की कोशिश करें। अगर मेरे साथियों में से कोई घबराहट दिखाने लगे तो इस तरह की मुश्किल स्थिति से निपटना बहुत कठिन हो जाता है।'
इसके बाद लालमोहन बाबू ने कुछ नहीं कहा। हम इंतज़ार करते रहे, मानो सदियां बीत गईं हों। दीवार घड़ी की टिक-टिक सुनाई दी, कहीं से ढोल की आवाज़ आई और मुझे खाना पकने की खुशबू आने लगी। मगनलाल कहाँ था?
‘उसे खाना खत्म करने में कितना समय लगता है?’ लालमोहन बाबू ने अधीरता से आह भरी। लगभग तुरंत ही एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ। उसके कद और उभरी हुई मांसपेशियों को देखकर लग रहा था कि वह पहलवान है। वह सीधे फेलुदा के पास गया और बोला, ‘खड़े हो जाओ।’
'मैं क्यों?'
मुझे तुम्हारी तलाशी लेनी होगी।
‘तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने कहा है?’
‘गुरु।’
‘मगलाल?’
'हाँ।'
फेलुदा ने उठने की कोई कोशिश नहीं की। उस आदमी ने उसे कंधों से पकड़कर खड़ा कर दिया। प्रतिरोध करने का कोई फायदा नहीं था, क्योंकि वह आदमी फेलुदा से कहीं ज्यादा ताकतवर था।
सबसे पहले उसे रिवॉल्वर मिली। इसके बाद फेलुदा का बटुआ और रुमाल मिला। फिर उसने लालमोहन बाबू और मेरी तरफ देखा। हमारी जेबों में कोई हथियार नहीं मिला। आखिर में उस आदमी ने रिवॉल्वर को छोड़कर बाकी सब कुछ हमें लौटा दिया,

रिवॉल्वर वह तुरंत ले गया। उसके जाने के बाद कमरे के बाहर किसी के खांसने की आवाज सुनाई दी। एक पल बाद मगनलाल अंदर आया।
‘आप मुझे इस तरह क्यों परेशान कर रहे हैं, श्रीमान मिटर?’ उसने गद्दे पर बैठते हुए पूछा। ‘क्या आपने सबक नहीं सीखा? इससे क्या फायदा होगा? आपको वह मोती कभी वापस नहीं मिलेगा।’
‘आप खुद को बहुत चतुर समझते हैं, है ना मगनलालजी?’
'बिल्कुल, और आप भी। अगर मुझमें बुद्धि न होती तो मैं अपना व्यवसाय इतनी सफलतापूर्वक नहीं चला पाती, है ना? अगर मैं चतुर न होती, श्रीमान मिटर, तो मैं वह मोती सीधे आपके शयनकक्ष से बाहर न ला पाती।'
‘ओह? और वह कौन सा मोती होगा?’
‘गुलाबी मोती!’ मगनलाल ने बेहद चिढ़ते हुए चिल्लाकर कहा। ‘क्या मुझे तुम्हें इसका वर्णन करना पड़ेगा? तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ।’
‘नहीं, मगनलाल जी,’ फेलुदा ने शांत भाव से धीरे-धीरे कहा। ‘एक बात है जो आप नहीं जानते। वह मोती सफेद मोती है—एक सस्ता, कृत्रिम सफेद मोती, जिसे आपको और आपके उन आदमियों को धोखा देने के लिए गुलाबी रंग से रंगा गया था जिन्होंने मेरे घर में सेंध लगाई थी। असली गुलाबी मोती अपने असली मालिक के पास वापस चला गया है। दरअसल, आप उतने चतुर नहीं हैं जितना आप समझते हैं।’ मैं फेलुदा की बातें सुनकर पूरी तरह से चकित रह गया। वह इतनी बेफिक्री से इतने झूठ कैसे बोल सकता था? उसे इतना साहस कहाँ से मिला? मैंने लालमोहन बाबू पर एक नज़र डाली। वह ज़मीन की ओर देख रहा था, उसका सिर झुका हुआ था। 'क्या यह सच है, श्रीमान मिटर?'
आप खुद ही इसकी जांच क्यों नहीं कर लेते?
गुस्से से भौंहें चढ़ाते हुए मगनलाल ने चांदी की घंटी बजाई। उसी विशालकाय और तगड़े आदमी ने घंटी का जवाब दिया।
‘सुंदरलाल को उसकी दुकान से बुलाओ। उसे बताओ कि मगनलाल उससे मिलना चाहता है। अभी।’
वह आदमी चला गया। कुछ पल खामोशी में बीत गए। मगनलाल ने पान का डिब्बा खोला और एक पान अपने मुंह में ठूंस लिया। फिर, डिब्बा बंद करके उसने एक अजीब सा सवाल पूछा:
क्या आपको टैगोर के कोई गीत पता हैं?
मैंने जल्दी से उसकी तरफ देखा। वह लालमोहन बाबू को देख रहा था। 'आप मुझे जवाब क्यों नहीं देते, चाचा? आप बंगाली होकर टैगोर का गीत कैसे नहीं जान सकते!'
लालमोहन बाबू ने चुपचाप अपना सिर हिलाया।
'नहीं? क्या सच में? क्या आप मुझसे यह उम्मीद करते हैं कि मैं इस पर विश्वास कर लूं?'
इस बार फेलुदा ने कहा: 'वह गाते नहीं हैं, मगनलालजी।'
तो क्या हुआ? वो अब मेरे लिए गाएगा। सुंदरलाल को यहाँ आने में कम से कम दस मिनट लगेंगे। इस बीच चाचाजी हमारा मनोरंजन करेंगे। आइए चाचाजी, उठिए और

मेरे पास गद्दे पर बैठ जाइए। यहाँ से गाना आपके लिए आसान होगा। उठिए, उठिए।
अगर नहीं उठे तो मुसीबत हो जाएगी।
‘तुम हमेशा उसका मजाक क्यों उड़ाते हो?’ फेलुदा ने गुस्से से पूछा। ‘उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?’
कुछ नहीं। इसीलिए तो मैं उन्हें इतना पसंद करता हूँ। चलो अंकल, जाइए।
इस बार लालमोहन बाबू को उठना पड़ा और आदेश का पालन करना पड़ा। वे गद्दे पर बैठ गए और गाने लगे, ‘जीवन के इस झरने में सब सराबोर हो जाएं’। बेचारे को गाना बिल्कुल नहीं आता था, फिर भी वे लगभग पाँच मिनट तक गाते रहे। उसके बाद वे अचानक रुक गए और बोले, ‘बाकी मुझे नहीं आता।’
मगनलाल गाने की धुन पर अपने कैश बॉक्स के ऊपर थपथपा रहा था। उसने सिर हिलाकर कहा, 'बस करो। आप बहुत अच्छे थे चाचा। अब वापस अपने सोफे पर जाइए।' लालमोहन बाबू वापस वहीं बैठ गए जहाँ वे पहले बैठे थे। जैसे ही वे सोफे पर गिरे, मगनलाल का गुर्गा मोटे चश्मे पहने एक बूढ़े आदमी के साथ वापस आ गया। ‘अंदर आइए, सुंदरलाल जी,’ मगनलाल ने अपना कैश बॉक्स खोला और श्री बोराल द्वारा हमारे पास छोड़ी गई छोटी लाल मखमली पेटी निकाली। उसमें से उन्होंने मोती निकाला और पूछा, ‘क्या आपको पता था कि मोती गुलाबी भी हो सकता है?’
'गुलाबी?'
'हाँ।'
'हाँ... मैंने गुलाबी मोतियों के बारे में सुना तो है, लेकिन जीवन में कभी देखा नहीं।'
‘आप पचास साल से ज्वैलरी की दुकान चला रहे हैं, और आपने इसे कभी नहीं देखा? बहुत अच्छा, बस इसे देखिए। मुझे बताइए कि क्या आपको लगता है कि यह असली है।’
सुंदरलाल ने मगनलाल से मोती लिया और उसे बड़े ध्यान से अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच पकड़कर गौर से देखने लगा। मैंने देखा कि उसके हाथ हल्के से कांप रहे थे। उसने लगभग एक मिनट तक मोती को निहारा और फिर बोला, 'जी हाँ, यह असली मोती है, और निश्चित रूप से गुलाबी है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे ऐसा कुछ देखने को मिलेगा।'
‘क्या आपको यकीन है कि यह नकली नहीं है?’
'मुझे ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं दिखता, महोदय।'
मगनलाल मोती वापस ले गया। ‘ठीक है, अब तुम जा सकते हो,’ उसने कहा। सुंदरलाल चला गया।
‘आपने उसकी बात सुनी, श्री मित्तर,’ मगनलाल ने फेलुदा को घूरते हुए कहा। ‘यह मोती असली है। आपने मुझसे झूठ बोला।’
‘क्या आप इसे सूरज सिंह को बेचने की कोशिश करेंगे?’
‘मैं तुम्हें क्यों बताऊं? यह तुम्हारा काम नहीं है।’
'अब आप दिल्ली जाएंगे, मुझे लगता है?'
‘अगर मैं ऐसा करूँ तो क्या होगा?’
‘सूरज सिंह इस समय दिल्ली में हैं।’
'मुझे उसके बारे में पता है।'

क्या आपका मतलब यह है कि आपका सूरज सिंह से कोई लेना-देना नहीं है?
‘मैं कुछ नहीं कह रहा हूँ, श्रीमान मिटर, एक शब्द भी नहीं। गुलाबी मोती से जुड़ा यह सारा मामला अब खत्म हो गया है, अध्याय बंद हो गया है।’
‘ठीक है। कृपया हमें जाने दीजिए क्योंकि आप बात नहीं करेंगे, और मेरी वह संपत्ति लौटा दीजिए जो आपके आदमी ने जब्त कर ली है।’
मगनलाल ने फिर घंटी बजाई। उसने चिढ़कर कहा, 'उसे उसका रिवॉल्वर वापस दे दो और उन्हें जाने दो।'
रिवाल्वर फेलुदा को विधिवत लौटा दी गई। हम तुरंत निकल गए। बरामदे में आते ही मैंने लालमोहन बाबू से पूछा, 'अब कैसा लग रहा है?'
‘बेहतर है, धन्यवाद। भगवान ही जाने वो इंसान की कमजोरी का अंदाजा कैसे लगा लेते हैं। मैंने अपनी पूरी जिंदगी में कभी टैगोर का कोई गाना पांच मिनट के लिए भी नहीं गाया!’
हम मुख्य द्वार तक पहुँच गए।
'मुझे उम्मीद है कि आपको एहसास होगा, लालमोहन बाबू,' फेलुदा ने बाहर निकलते हुए कहा, 'कि आज हमने कुछ बहुत महत्वपूर्ण जानकारी हासिल कर ली है।'
‘कुछ महत्वपूर्ण?’
जी हाँ, महोदय। अब हमें पता चल गया है कि वह मोती कहाँ रखा है।
'हां, लेकिन... क्या आप इसे उससे वापस लेने की योजना बना रहे हैं?' 'बिल्कुल।'

आठ
हम अपने होटल लौट आए। हमें देखकर मैनेजर निरंजन चक्रवर्ती ने अपने कमरे से आवाज़ दी: 'श्री मित्तर, आपसे मिलने कोई आया है। वह काफी समय से आपका इंतजार कर रहा है।'
हम मैनेजर के कमरे में गए और वहाँ हमने देखा कि लगभग पैंतालीस वर्ष का एक व्यक्ति उसके सामने बैठा है। हमारे प्रवेश करते ही वह उठ खड़ा हुआ। ‘नमस्कार। मेरा नाम मोतीलाल बोराल है।’
‘Namaskar. Are you Jaichand’s cousin?’
'जी हां, उसका चचेरा भाई। यहां मेरा एक सिनेमाघर है।'
'हां, उसने हमें बताया। हमारे कमरे में आ जाओ, हम वहां ज्यादा आराम से बात कर सकते हैं।'
हम चारों ऊपर अपने कमरे में चले गए।
'वह मोती अब कहाँ है? क्या वह अभी भी जयचंद के पास है?' मोतीलाल ने चौथे खाली पलंग पर बैठते हुए पूछा।
'नहीं।'
'नहीं?'
क्या आपने मगनलाल मेघराज के बारे में सुना है?
'ओह हाँ। बनारस में तेईस साल बिताने के बावजूद मैंने मगनलाल के बारे में जरूर सुना होगा।'
उसे मोती मिल गया है।
लेकिन क्यों? वह तो संग्राहक नहीं है। वह तो चीजों का निर्यात करता है, है ना? कम कीमत पर सामान खरीदता है और फिर उसे विदेश में बेचता है। या कम से कम मैंने तो यही सुना है।
'जी हां, बिल्कुल सही। बस इस बार वह इसे धरमपुर के सूरज सिंह को बेचने जा रहा है।'
‘सच में? क्या सूरज सिंह यहाँ आने वाला है?’
नहीं। वह दिल्ली में है, और मगनलाल बहुत जल्द वहां जाने वाला है।
'आप क्या करने जा रहे हैं?'
'अगर हमें वह मोती मिल जाए तो हम दिल्ली भी जाएंगे।'
'अगर मगनलाल इसे नहीं बेच पाता है, तो क्या मेरे चचेरे भाई को पैसे मिलेंगे?'
'बेशक, बशर्ते सूरज सिंह अपना वादा निभाए।'
‘अजीब बात तो ये है कि मुझे पता ही नहीं था कि हमारे परिवार के पास इतनी कीमती चीज है। दरअसल, मैं पंद्रह साल की उम्र में ही सोनाहाटी छोड़कर चली गई थी और फिर कभी वापस नहीं लौटी। जय को ये मोती मिला और उसने इतने सालों तक इसे किसी को बताए बिना अपने पास रखा। मैंने उसे तभी चिट्ठी लिखी जब

मैंने अखबार में खबर पढ़ी। उसकी पहली चिट्ठी में उसने कहा था कि वो इसे नहीं बेचेगा, लेकिन उससे मेरी बात कल ही हुई। अब लगता है उसने अपना मन बदल लिया है। ये रही उसकी चिट्ठी।’
उसने कागज का एक मुड़ा हुआ टुकड़ा निकाला और फेलुदा को दे दिया। फेलुदा ने उसे जल्दी से पढ़ा और वापस कर दिया।
‘उसने आपको तीस हजार रुपये देने की पेशकश की है। क्या आप इससे खुश हैं?’ 'सच में नहीं, लेकिन मैं बहस नहीं करने वाला। कुछ न होने से कुछ होना बेहतर है, है ना? लेकिन क्या आपको यकीन है कि मगनलाल को मोती मिल गया है?' 'बिल्कुल। हमने इसे अपनी आंखों से देखा।'
मोतीलाल ने कुछ देर सोचा। फिर उसने कहा, 'मुझे यह बात स्पष्ट करने दो। अगर तुम्हें मोती मिल जाता है, तो तुम खुद जाकर उसे सूरज सिंह को बेच दोगे। क्या यह सही है?'
‘ठीक है। तुम्हें तुम्हारा हिस्सा मिल जाएगा, और जो पैसा बचेगा वह जयचंद को जाएगा।’
इसलिए हमें किसी भी तरह उस मोती को वापस लाना होगा।
'जी हां। क्या आप इस मामले में मेरी मदद कर सकते हैं?'
'आप मुझसे क्या चाहते हैं?'
'मुझे कुछ ऐसे लोग ढूंढकर दिखाओ जिन्हें कुछ हद तक जोखिम भरा काम करने में कोई आपत्ति न हो।'
मोतीलाल ने माथे पर शिकन डाली और सोच में डूब गया। फिर उसने सीधे फेलुदा की ओर देखा। ‘देखिए, श्री मित्तर,’ उसने कहा, ‘आजकल सिनेमाघर चलाना काफी नहीं है। मेरा मतलब है, इससे मुझे पर्याप्त कमाई नहीं होती। ज्यादातर लोग घर पर वीडियो देखना पसंद करते हैं। इसलिए मुझे अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए दूसरे काम करने के बारे में सोचना पड़ा है।’
‘आपका मतलब है कि चीजें पूरी तरह से सीधी-सादी नहीं हैं?’
'हां, कुछ ऐसा ही; लेकिन वास्तव में कानून तोड़े बिना।'
'क्या इसका मतलब यह है कि आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो मेरे लिए काम करने को तैयार हो सकते हैं?'
जी हाँ। दरअसल, मनोहर—जो मगनलाल का दाहिना हाथ हुआ करता था—मेरे साथ जुड़ गया है। मैं उसके अलावा कुछ और लोगों का भी इंतजाम कर सकता हूँ।
‘यह तो शानदार है।’
मुझे बस यह बता दीजिए कि क्या करने की जरूरत है।
‘अपने आदमियों के साथ आधी रात को ज्ञान बापी मस्जिद आओ। हम तुमसे वहीं मिलेंगे।’
'ठीक है।'
‘फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने चिंता से कहा, ‘क्या आपने इस बारे में पूरी तरह सोच-विचार कर लिया है?’
फेलुदा ने उसकी बात अनसुनी कर दी। उसने मोतीलाल से कहा, 'मगनलाल का मौजूदा दाहिना हाथ बेहद ताकतवर है। उससे निपटना होगा।'
मोतीलाल मुस्कुराया। 'उसकी चिंता मत करो। मनोहर भी पहलवान है; साथ ही वह एक बुद्धिमान व्यक्ति भी है।'

‘बहुत अच्छा। आज रात ज्ञान बापी में मिलते हैं।’
मोतीलाल खड़ा हो गया। “वैसे,” वह दरवाजे पर रुकते हुए बोला, “क्या आपको पता है कि मगनलाल ने यह मोती कहाँ रखा है?”
'हां, हमने इसे देखा।'
'अच्छा।'
मोतीलाल बोराल चले गए। फेलुदा भी उठ खड़े हुए और बोले, 'मुझे श्री चक्रवर्ती से बात करनी है। बस एक मिनट लगेगा। उसके बाद हम कुछ खाने चलेंगे। मुझे बहुत भूख लगी है।'

नौ
बनारस में रात के सन्नाटे में एक अजीब सी खामोशी थी। शायद इसलिए क्योंकि दिन के समय हर गली लोगों, आवाजों, खुशबुओं और रंगों से भरी रहती थी। जब हम आधी रात को ज्ञान बापी पहुंचे, तो चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था और मुझे दूर से सिर्फ एक कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनाई दे रही थी।
हमें लगभग पाँच मिनट तक इंतजार करना पड़ा। जैसे ही फेलुदा ने अपनी सिगरेट खत्म की और उसके टुकड़े को अपने जूते से कुचल दिया, एक धीमी सी आवाज आई: 'श्री मिटर!'
एक गली से चार काले साये निकले। मोतीलाल की आवाज़ आई, ‘मैं तीन आदमियों को लाया हूँ। क्या तुम तैयार हो?’
‘ज़रूर,’ फेलुदा ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया। ‘हमें रास्ता पता है। चलो चलते हैं।’
हम चलने लगे। मोतीलाल और फेलुदा दोनों ही मगनलाल के घर का रास्ता अच्छी तरह जानते थे। वे अंधेरे में भी तेज़ी से चल रहे थे। एक कोने में सिर्फ़ एक स्ट्रीटलाइट जल रही थी। उसकी हल्की रोशनी में मैंने देखा कि मोतीलाल के साथियों में से एक मगनलाल के आदमी जितना ही लंबा और हट्टा-कट्टा था। ज़ाहिर है, वह मनोहर था।
हम मगनलाल के घर की ओर जाने वाली गली के मुहाने पर रुक गए। फेलुदा ने लालमोहन बाबू से कहा, 'कृपया यहीं रुकिए। मुझे लगता है कि हमें लगभग बीस मिनट लगेंगे।'
लालमोहन बाबू और मेरे कुछ बोलने से पहले ही बाकी लोग चले गए। वे जल्द ही नज़रों से ओझल हो गए। हम कुछ देर तक असमंजस में खड़े रहे, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। कुछ मिनट बाद लालमोहन बाबू ने चुप्पी तोड़ी।
मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हारे चचेरे भाई को उन गुंडों के साथ उलझने की क्या जरूरत थी।
मुझे पूरा यकीन है कि वह सब कुछ समझा देगा।
मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है।
‘चुप रहो। मुझे नहीं लगता कि हमें बात करनी चाहिए।’
लालमोहन बाबू फिर चुप हो गए। ध्यान से सुनने पर दूर से हारमोनियम और घुंघरू की आवाज़ सुनाई दी। मैंने आकाश की ओर देखा। लाखों तारे टिमटिमा रहे थे। मैंने इतने सारे तारे पहले कभी नहीं देखे थे। अब मुझे एहसास हुआ कि एक बहुत हल्की रोशनी थी, शायद उन सभी तारों की वजह से। चाँद नहीं था।
हमें यहाँ इंतज़ार करते हुए कितना समय हो गया था? दस मिनट? पंद्रह? ऐसा लग रहा था जैसे कई घंटे बीत गए हों। यह सोचना अजीब लग रहा था कि मगनलाल के घर में पचास गज से भी कम दूरी पर चोरी हो रही थी, लेकिन कोई आवाज़ नहीं थी, अंदर क्या हो रहा था, यह जानने का कोई तरीका नहीं था।

पांच मिनट बाद, मुझे वापस आते कदमों की आहट सुनाई दी। जी हाँ, ये फेलुदा और बाकी लोग थे।
जैसे ही वे करीब पहुंचे, उसने कहा, 'ठीक है, चलो वापस चलते हैं।'
‘मिशन—?’ लालमोहन बाबू हांफते हुए कहने लगे। ‘—पूरा हुआ!’ फेलुदा ने उनकी बात पूरी की। फिर वे मोतीलाल बोराल की ओर मुड़े।
'आपकी मदद के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, श्री बोराल। जब वह मोती बिकेगा तो मैं सुनिश्चित करूँगी कि आपको आपका हिस्सा मिल जाए।'
हम होटल की ओर वापस चलने लगे। बाकी लोग हाथ हिलाकर विदा हुए और अंधेरे में गायब हो गए। रास्ते में हममें से किसी ने कुछ नहीं कहा। जैसे ही हम अपने कमरे में वापस आए, लालमोहन बाबू फूट-फूट कर बोलने लगे, एक पल भी खुद को रोक नहीं पाए: 'बताओ, क्या हुआ!'
‘पहले इसे देखिए।’
फेलुदा ने अपनी जेब से लाल मखमली डिब्बा निकाला और उसे अपने बिस्तर पर रख दिया।
‘शाबाश!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘यह आपको कैसे मिला? उम्मीद है इसमें कोई हिंसा नहीं हुई होगी?’
'हां, ऐसा हुआ था, मुझे डर है। होना ही था। लेकिन सिर पर चोट लगने वाला एकमात्र व्यक्ति मगनलाल का गुर्गा था। मनोहर ने ऐसा किया था। बाकी किसी को चोट नहीं आई।'
‘आपने वह कैश बॉक्स कैसे खोला?’
‘लालमोहन बाबू, किसी बंद वस्तु को सामान्यतः कैसे खोला जाता है? मैंने चाबी का इस्तेमाल किया।’
‘क्या! ये तुम्हें कहाँ से मिला?’
‘मगनलाल की ओर से।’
‘कैसे? हे भगवान, आपने क्या इस्तेमाल किया? जादू?’
'नहीं, महोदय। यह जादू नहीं है, लेकिन आप इसे दवा कह सकते हैं। यह उस डॉक्टर द्वारा उपलब्ध कराई गई है जिसे हमारे प्रबंधक जानते हैं।'
‘फेलू बाबू, तुम क्या बकवास कर रहे हो? क्या सप्लाई किया गया था?’ ‘क्लोरोफॉर्म,’ फेलुदा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। ‘जैसे को तैसा। अब समझे?’
अगली शाम हमने दिल्ली एक्सप्रेस ली और अगले दिन सुबह 6 बजे दिल्ली पहुँचे। पिछली बार दिल्ली आने पर हम जनपथ होटल में रुके थे, इसलिए स्टेशन से सीधे वहीं गए। कमरे में पहुँचते ही फेलुदा ने कई होटलों में फोन करना शुरू कर दिया। सूरज सिंह कहाँ ठहरे हैं, यह पता लगाने में उन्हें दस मिनट लगे।
‘जी सर, श्री सिंह हमारे यहाँ ठहरे हुए हैं,’ ताज होटल से एक आवाज आई। ‘कमरा नंबर 347।’
क्या मैं उनसे बात कर सकता हूँ?
सौभाग्य से सूरज सिंह अपने कमरे में थे। फेलुदा ने उनसे कहा कि वह गुलाबी मोती के बारे में उनसे मिलना चाहते हैं। श्री सिंह तुरंत शाम छह बजे अपने कमरे में हमसे मिलने के लिए सहमत हो गए। हमने दोपहर का समय जनपथ में एक

चीनी रेस्तरां में खाना खाने और दुकानों को देखने में बिताया। फिर हम होटल लौट आए और पौने छह बजे दोबारा निकलने से पहले थोड़ा आराम किया।
फेलुदा ने ताज होटल की लॉबी से फोन करके श्री सिंह को हमारे आने की सूचना दी। हमें उनके कमरे में जाने के लिए कहा गया।
घंटी बजाने पर जिसने दरवाजा खोला, वह उनका सचिव निकला। उसने कहा, 'कृपया बैठ जाइए। श्री सिंह एक मिनट में आपके पास आएंगे।'
हम तीनों एक बड़े सोफे पर बैठे थे। यह सिर्फ एक कमरा नहीं, बल्कि पूरा सुइट था। हम बैठक कक्ष में थे। थोड़ी देर बाद सूरज सिंह आए। उन्हें देखते ही पता चल गया कि वे बेहद धनी हैं। उन्होंने एक महंगा सूट पहना हुआ था, उनकी सामने वाली जेब से एक सोने की टाई-पिन और एक सोने का पेन झाँक रहा था। उनकी उंगलियों में कीमती पत्थरों से जड़ी एक से अधिक सोने की अंगूठियाँ थीं। उनकी उम्र शायद पचास के आसपास थी, हालाँकि उनके कनपटी के कुछ बाल ही सफेद हुए थे: बाकी के बाल एकदम काले थे, और उनकी प्रभावशाली मूंछें भी काली थीं। उन्होंने पूछा, 'आपमें से मिस्टर मिटर कौन हैं?'
फेलुदा उठे और अपना परिचय दिया। श्री सिंह ने सिर हिलाया, लेकिन खड़े ही रहे।
‘गुलाबी मोती से आपका क्या संबंध है?’
‘मैं एक निजी जासूस हूं। जयचंद बोराल ने मोती को मेरे पास सुरक्षित रखने के लिए छोड़ा था।’
‘सच में? मुझे कैसे पता चलेगा कि तुमने इसे उससे चुराया नहीं है? मैं तुम पर विश्वास क्यों करूं?’
‘श्री सिंह, अगर आपका मतलब यही है तो मैं कुछ भी साबित नहीं कर सकता। आपको बस मेरी बात माननी होगी। मैंने श्री बोराल से मोती नहीं चुराया। उन्होंने ही मुझे मोती दिया था।’
'नहीं, मैं पर्याप्त सबूत के बिना इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हूं।' ‘बहुत अच्छा। तो फिर, श्रीमान सिंह, आप मोती नहीं खरीद सकते। यह बोराल को वापस चला जाएगा।’
'नहीं, आपको इसे मुझे देना ही होगा।'
‘मैं ऐसा कुछ भी करने के लिए बाध्य नहीं हूँ। कोई मुझे मजबूर नहीं कर सकता।’ पलक झपकते ही सूरज सिंह ने एक रिवॉल्वर निकाल ली। इसके बाद कान फाड़ देने वाली आवाज़ आई। मुझे यह समझने में एक पल लगा कि आवाज़ फेलुदा की कोल्ट रिवॉल्वर से आई थी, न कि सिंह की रिवॉल्वर से। फेलुदा को जैसे ही श्री सिंह ने हाथ हिलाया, समझ आ गया था कि वह क्या करने वाले हैं, इसलिए उन्होंने अपनी बंदूक निकाली और गोली चला दी।
श्री सिंह के हाथ से रिवॉल्वर गिर गई। वह धड़ाम से कालीन पर गिरी। मैंने देखा कि उन्होंने एक बार फिर फेलुदा की ओर देखा। लेकिन इस बार उनकी आँखों में सम्मान था, न कि घृणा।
‘मैंने एक बार चालीस गज की दूरी से एक बाघ को मार गिराया था, लेकिन तुम्हारा निशाना मुझसे कहीं बेहतर है,’ उसने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया। ‘ठीक है, तो मुझे वह मोती दे दो। मैं तुम्हें चेक लिख दूंगा।’

फेलुदा ने उन्हें मखमली डिब्बा थमा दिया। श्री सिंह ने उसमें से मोती निकाला और उसे धीरे से पकड़ लिया। उन्होंने उसे घुमाकर अलग-अलग कोणों से देखा। उनकी आँखों में आशा और उत्साह की चमक थी। अंत में उन्होंने कहा, 'मैं इसे किसी विशेषज्ञ से जांच करवाना चाहता हूँ। आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी? आखिर मैं इसके लिए बहुत बड़ी रकम चुकाने जा रहा हूँ।'
ठीक है, आगे बढ़ो।
‘शंकरप्रसाद!’ सूरज सिंह ने पुकारा। लगभग चालीस साल का एक छोटा, साफ-सुथरा आदमी बगल के कमरे से बाहर आया। उसने सोने के फ्रेम वाला चश्मा पहन रखा था। 'महोदय?'
‘इस मोती को ध्यान से देखो। क्या यह असली है?’
सुंदरलाल की तरह, शंकरप्रसाद ने भी उसे ध्यान से देखा और एकाग्रता से भौंहें चढ़ा लीं। एक मिनट बाद, उसने उसे श्री सिंह को वापस दे दिया।
‘जी नहीं, महोदय,’ उसने कहा।
'क्या? तुम्हारा क्या मतलब है?'
‘यह असली गुलाबी मोती नहीं है, महोदय। यह तो बस एक साधारण कृत्रिम सफेद मोती है। किसी ने इसे गुलाबी रंग से रंग दिया है, बस इतना ही।’
'क्या आपको यकीन है?'
'बिल्कुल।'
सूरज सिंह ने फेलुदा की ओर देखा। उसका चेहरा लाल हो गया था, वह बुरी तरह कांप रहा था।
‘तुम…’ उसने बुदबुदाते हुए कहा, स्पष्ट रूप से उसे बोलने में कठिनाई हो रही थी, ‘तुम… मुझे नकली सामान बेचने की कोशिश कर रहे थे? तुम बदमाश!’ फेलुदा पूरी तरह से अचंभित दिखाई दिया। 'मुझे समझ नहीं आ रहा!' उसने कहा। 'शायद जयचंद बोराल से कोई गलती हो गई हो। हो सकता है कि यह शुरू से ही नकली मोती था, लेकिन उसे पता नहीं था।'
'चुप रहो! उस बंदूक को दूर रखो।'
फेलुदा ने अपना हाथ नीचे कर लिया।
‘ये लो तुम्हारा बेवकूफ मोती!’ सूरज सिंह ने मोती और छोटी सी डिब्बी फेलुदा के हाथ में थमा दी।
‘अब निकल जाओ!’ वह चिल्लाया।
हम तीनों आज्ञाकारी बच्चों की तरह बाहर निकले। लिफ्ट में चढ़ते समय मैंने फेलूदा पर एक नज़र डाली। उसकी भौंहें गहरी frown से सिकुड़ी हुई थीं।
दो दिन बाद जब हम कलकत्ता स्थित अपने घर पहुँचे तब तक काफी रात हो चुकी थी।
फेलुदा ने यात्रा के दौरान लगभग कुछ भी नहीं बोला था।
लेकिन अगली सुबह मैंने उसे गुनगुनाते हुए सुना। यह वही गाना था जो लालमोहन बाबू को मगनलाल के लिए मजबूरी में गाना पड़ा था। जब मैं उसके कमरे में दाखिल हुआ तो उसने कुछ नहीं कहा, बल्कि बेचैनी से इधर-उधर घूमता रहा और गुनगुनाता रहा। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई क्योंकि मैं उसे उदास नहीं देखना चाहता।

लालमोहन बाबू पाँच मिनट में आ गए। बाहर उनकी कार का हॉर्न बजने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने दरवाज़ा खोला; लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, फेलुदा उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ गए।
‘सुप्रभात!’ उसने हाथ जोड़कर और झुककर कहा, ‘कृपया अंदर आइए, हे बुद्धिमान!’ बेहद अचंभित होकर लालमोहन बाबू दहलीज पर ही रुक गए और हकलाते हुए बोले, 'क्या इसका मतलब यह है कि आपके पास...?'
जी हाँ, श्रीमान। श्रीमान गांगुली, मुझे अंधेरे में रहना पसंद नहीं है, इसलिए मुझे वहाँ ज़्यादा देर तक रखना नामुमकिन है। मैंने सच्चाई का पता लगा लिया है: आप और मेरे प्यारे चचेरे भाई इसमें साथ थे, है ना? आपके अपने जौहरी ने ही नकली मोती बनाया था, है ना? लेकिन कैसे और कब—?
‘मैं आपको बताता हूँ, मैं आपको बताता हूँ। हे भगवान, मैं अपना गुनाह कबूल करने में खुशी महसूस करूँगा!’ लालमोहन बाबू अंदर आए और बैठ गए। ‘कृपया मुझे इसके लिए क्षमा कर दीजिए, श्री मित्तर, और अपने चचेरे भाई से भी नाराज़ मत होइए। उसने मेरी मदद तो की, पर यह उसका विचार नहीं था। देखिए, जब आपने मगनलाल की धमकी पर ध्यान नहीं दिया, तो मुझे बहुत चिंता होने लगी। उसने आपको फैसला करने के लिए तीन दिन का समय दिया था—मंगलवार, बुधवार, गुरुवार। मैं मंगलवार को वापस आया था, याद है? आप बाल कटवाने चले गए थे। आपकी अनुपस्थिति में तपेश को आपकी चाबियाँ मिल गईं और उसने आपकी तिजोरी खोल दी। फिर उसने मुझे बोराल का मोती दिया। मैं उसे तुरंत अपने जौहरी के पास ले गया, और उसने उसी दिन उसकी एक प्रति बना दी। मैं बुधवार को वापस आया और तपेश से उसे आपकी तिजोरी में वापस रखवा दिया। मैंने जो कुछ भी किया, वह पूरी तरह से आपकी भलाई के लिए किया था, मेरा विश्वास कीजिए।’
'हाँ, मुझे पता है। यह एक सराहनीय योजना थी। असली मोती कहाँ है?'
'मेरे साथ, एकदम सुरक्षित। जब तुमने मगनलाल को बताया कि यह नकली है, तो एक पल के लिए मुझे लगा कि तुमने सब कुछ समझ लिया है।'
नहीं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम इतनी चालाकी कर सकते हो। मैं मगनलाल के सामने झूठ बोल रहा था और उम्मीद कर रहा था कि उसका जौहरी बस इतना कह देगा कि वह मोती की असलियत नहीं बता सकता। मुझे कैसे पता चलता कि वह बूढ़ा आदमी गलती कर देगा और उसे असली घोषित कर देगा?
मुझे पूरा यकीन है कि जयचंद बोराल को बेहतर ऑफर मिलेगा।
‘उसे पहले ही एक अमेरिकी करोड़पति से प्रस्ताव मिल चुका है। मुझे सोमेश्वर का एक पत्र मिला है जो मेरा इंतजार कर रहा था। उसे तीन लाख रुपये की पेशकश की गई है।’
'ओह, अच्छा। मुझे उसके लिए खुशी है।'
अब फेलुदा मेरी ओर मुड़ा। मैंने खुद को सिर पर एक ज़ोरदार थपकी या कम से कम एक लंबे-चौड़े प्रवचन के लिए तैयार कर लिया था, लेकिन फेलुदा ने बस अपना हाथ बड़े ही कोमल भाव से मेरे कंधे पर रख दिया।
उन्होंने कहा, 'मैं आपको एक सलाह देना चाहता हूँ। जब आप इस मामले के बारे में लिखें, तो कहानी के अंत तक यह खुलासा न करें कि आप दोनों ने क्या किया था। इससे सस्पेंस बना रहेगा और आपके पाठक आपकी कहानी का और भी अधिक आनंद लेंगे!'

डॉ . मुंशी की डायरी

एक
आज हम चाय के साथ दालमुट की जगह समोसे खा रहे थे। लालमोहन बाबू इन्हें अपने पड़ोस में हाल ही में खुली एक दुकान से लाए थे।
कुछ दिन पहले उन्होंने हमसे कहा था, 'यह 'लेट्स ईट' नाम की एक दुकान है, और वे जो समोसे बनाते हैं वे सचमुच लाजवाब होते हैं!'
फेलुदा ने जो कुछ लाया था, उसे ध्वस्त करने के बाद, हम दोनों पूरी तरह से सहमत थे।
‘क्या तुमने अपनी अगली किताब की कहानी तय कर ली है?’ फेलुदा ने जटायु से पूछा।
जी हाँ, शीर्षक सहित: फ्लोरेंस में उलझन। इस पुस्तक में मेरा नायक, प्रखर रुद्र, प्रदोष मित्तर की तरह व्यवहार करता है।
‘सच में? वो तो पहले से कहीं ज्यादा तेज और बुद्धिमान है, है ना?’ फेलुदा हँस पड़ा। ‘बिल्कुल!’
‘उसके रचयिता के बारे में क्या? क्या वह उससे ज्यादा बुद्धिमान है?’
‘खैर, फेलू बाबू, इतने वर्षों तक आपके आसपास मंडराने का कुछ असर तो होना ही था।’
'हां, लेकिन मैं तभी आश्वस्त होऊंगा जब आप एक परीक्षा पास कर लेंगे।'
‘एक परीक्षा? किस तरह की परीक्षा?’
‘एक अवलोकन परीक्षण। मुझे बताइए, क्या आपको कल से मुझमें—या मेरी शक्ल-सूरत में—कोई बदलाव नज़र आ रहा है?’
लालमोहन बाबू उठे, पीछे हटे और फेलुदा को ध्यान से देखा। कुछ सेकंड तक गौर से देखने के बाद उन्होंने सिर हिलाया। 'नहीं, मुझे कोई अंतर नज़र नहीं आता।'
‘तो फिर तुम असफल हो गए, और प्रखर रुद्र भी। मैंने लगभग एक महीने बाद, तुम्हारे आने से कुछ ही मिनट पहले अपने नाखून काटे थे। अगर तुम फर्श पर देखोगे, तो तुम्हें वहाँ कुछ टुकड़े मिलेंगे, जो अर्धचंद्र के आकार के हैं।’
‘ओह। ओह, अब मैं समझ गया कि आपका क्या मतलब है।’
लालमोहन बाबू थोड़े निराश दिखे। फिर वे उत्साहित होकर बोले, 'बहुत खूब। अब आप बताइए कि क्या आपको मुझमें कोई बदलाव नजर आता है।'
‘क्या मैं करूँ?’
'हाँ करो।'
फेलुदा ने अपना खाली प्याला मेज पर रख दिया और चारमीनार का पैकेट उठाया। फिर उसने कहा, 'पहली बात तो ये है कि तुम कल तक लक्स इस्तेमाल करते थे। आज मुझे इसमें सिन्थॉल की गंध आ रही है। क्या ये टीवी पर आने वाले विज्ञापनों का नतीजा है?'

'जी हां, बिल्कुल सही। और कुछ?'
‘आपने नया कुर्ता पहना है। ऊपर का बटन खुला है, शायद इसलिए क्योंकि आपको उसे बटनहोल में डालने में कठिनाई हुई होगी। आमतौर पर आपके सारे बटन लगे रहते हैं।’
'सही!'
अभी और भी है।
'और क्या?'
‘आप हर सुबह लहसुन खाते हैं, है ना? जैसे ही आप आकर यहां बैठते हैं, मुझे उसकी गंध आने लगती है। आज नहीं आ रही।’
‘हाँ, मुझे पता है। मेरा नौकर मेरे लिए इसे तैयार करता है, लेकिन आज वह भूल गया। वह बहुत लापरवाह होता जा रहा है। मुझे उससे सख्ती से बात करनी पड़ी। लहसुन एक अद्भुत पदार्थ है, फेलू बाबू। मैं इसे 1986 से नियमित रूप से ले रहा हूँ। मेरा पूरा शरीर—’
लहसुन की प्रशंसा में वह अपना भाषण जारी रख पाता, तभी दरवाजे की घंटी बजी। मैंने दरवाजा खोला तो सामने फेलूदा की ही उम्र का एक युवक खड़ा था। फेलूदा खड़ा हो गया।
उन्होंने कहा, 'कृपया अंदर आइए।'
'क्या आप-?'
'जी हां, मैं प्रदोष मित्तर हूं।'
वह व्यक्ति सोफे पर बैठ गया और बोला, 'मेरा नाम शंकर मुंशी है। आपने शायद मेरे पिता, डॉ. राजेन मुंशी के बारे में सुना होगा।'
‘मनोचिकित्सक?’
'हाँ।'
‘मुझे लगता है मैंने हाल ही में उनके बारे में कुछ पढ़ा था। क्या उनकी तस्वीर के साथ कोई प्रेस रिपोर्ट नहीं थी?’
जी हां, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। देखिए, मेरे पिता चालीस साल से अधिक समय से डायरी लिख रहे हैं। अब पेंगुइन इसे किताब के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है। पिताजी एक प्रसिद्ध मनोचिकित्सक हैं, लेकिन एक और क्षेत्र है जिसमें उन्हें काफी अनुभव है: शिकार। उन्होंने पच्चीस साल पहले शिकार करना छोड़ दिया था, लेकिन उन्होंने अपने अनुभवों को डायरी में दर्ज किया है। पेंगुइन ने अभी तक उनकी डायरी का कोई अंश नहीं देखा है, लेकिन उन्होंने इसे प्रकाशित करने की पेशकश की है क्योंकि एक मनोचिकित्सक जो शिकारी भी है, उसकी डायरी निश्चित रूप से अनोखी होगी। हालांकि, वे यह जानते हैं कि मेरे पिता चिकित्सा पत्रिकाओं में रोचक लेख लिखते रहे हैं, इसलिए वे अपने तरीके से पहले से ही एक स्थापित लेखक हैं।
‘क्या उस रिपोर्ट को प्रेस में प्रकाशित करवाने का विचार आपका था?’
नहीं, यह तो प्रकाशकों ने किया था।
'अच्छा ऐसा है।'
खैर, अब मैं आपको बताता हूँ कि मैं यहाँ क्यों हूँ। मेरे पिता को हमेशा इस बात पर बहुत गर्व रहा है कि उन्होंने अपनी डायरी में केवल सच ही लिखा है। अपने कुछ मामलों के बारे में बात करते हुए, उन्होंने तीन लोगों का ज़िक्र

किया है, हालाँकि उन्होंने उनके नामों का केवल पहला अक्षर ही इस्तेमाल किया है। ये हैं ए, जी और आर। तीनों अब सफल हैं और समाज में जाने-माने हैं। कई साल पहले, इन तीनों ने कुछ बहुत ही गलत काम किया था, लेकिन वे कानून से बच निकले। उनमें से कोई भी पकड़ा नहीं गया। चूंकि मेरे पिता ने उनके पूरे नाम इस्तेमाल नहीं किए हैं, इसलिए वे सुरक्षित हैं और जानते हैं कि उन पर मुकदमा नहीं किया जा सकता। फिर भी, पेंगुइन के प्रस्ताव आते ही उन्होंने उन्हें फोन किया और बताया कि वे तीनों मामलों के बारे में लिखने जा रहे हैं। ए और जी शुरू में इससे खुश नहीं थे; लेकिन जब पिता ने समझाया कि उनकी असली पहचान उजागर नहीं की जाएगी, तो उन्होंने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ ही सही, अपनी सहमति दे दी। आर ने तो कोई आपत्ति ही नहीं जताई।
कल जब हम दोपहर का भोजन करने बैठे थे, तभी हमारे संदेशवाहक ने उन्हें एक पत्र लाकर दिया जो अभी-अभी पहुँचा था। उसे पढ़ते ही वे इतने गंभीर हो गए कि मुझे उनसे पूछना पड़ा कि क्या हुआ है। तभी उन्होंने मुझे इन तीन लोगों के बारे में बताया। तब तक मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी।
'क्यों नहीं?'
क्योंकि मेरे पिता कभी अपने मरीजों या अपनी डायरी के बारे में बात नहीं करते थे। वो... थोड़े अजीब हैं। उन्हें हमेशा सिर्फ अपने काम की ही फ़िक्र रहती है। मेरी माँ, मैं, हमारा परिवार... इनमें से किसी का भी उनके लिए कोई मतलब नहीं है। मेरी अपनी माँ का निधन तब हुआ जब मैं तीन साल की थी। फिर मेरे पिता ने दोबारा शादी कर ली, लेकिन वो और मेरी सौतेली माँ भी एक-दूसरे के बहुत करीब नहीं हैं। असल में, मेरी सौतेली माँ भी हमेशा मुझसे थोड़ी दूरी बनाए रखती थीं। बचपन में मेरी देखभाल एक बूढ़ी नौकरानी करती थी। इसलिए मैं अपने माता-पिता दोनों से काफ़ी दूर पली-बढ़ी। अच्छी बात ये थी कि अगर मुझे अपने पिता का प्यार नहीं मिला, तो उन्होंने मुझे कभी परेशान भी नहीं किया। मैं बिना किसी माता-पिता की निगरानी या नियंत्रण के अपनी मर्ज़ी से कुछ भी करने के लिए आज़ाद थी।
‘और आपने उनकी डायरी नहीं पढ़ी?’
नहीं। इसे किसी ने नहीं पढ़ा है।
‘मैं समझ गया। इस पत्र पर वापस आते हुए, क्या यह उन तीन लोगों में से किसी एक का था जिनसे आपके पिता ने बात की थी?’
‘जी हां, जी हां। देखो, यह रहा।’
शंकर मुंशी ने एक लिफाफा निकाला और फेलुदा को दे दिया। लालमोहन बाबू और मैं उनके पीछे खड़े थे और फेलुदा द्वारा पत्र निकालते ही हमने उसे पढ़ा। उस पर 'ए' के हस्ताक्षर थे। उसमें लिखा था, 'मैं अपना वचन वापस लेता हूँ। यदि आप अपनी डायरी प्रकाशित करवाते हैं, तो आपको उसमें से वे अंश हटाने होंगे जिनमें आपने मेरा ज़िक्र किया है। यह कोई अनुरोध नहीं, बल्कि एक आदेश है। यदि आप इसका पालन नहीं करते हैं, तो आपको इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।' 'मेरा आपसे एक सवाल है। आपके पिता को कैसे पता चला कि ये लोग क्या करते हैं?'
‘यह एक दिलचस्प कहानी है। तीनों अपने किए की सजा से बच निकले, लेकिन उनका अंतरात्मा उन्हें कचोटने लगा। अपने कृत्य के लिए गहरा पछतावा और कहीं कोई

गलती हो जाने और पकड़े जाने का डर उन्हें मानसिक रूप से बीमार कर बैठा। मेरे पिता ने काफी नाम कमा लिया था, इसलिए तीनों इलाज के लिए उनके पास गए। स्वाभाविक रूप से, उन्हें उन्हें ठीक-ठीक बताना पड़ा कि क्या हुआ था और उनके डर का कारण क्या था। इन विवरणों को जाने बिना, मेरे पिता उनका इलाज नहीं कर सकते थे। समय के साथ, वे ठीक हो गए और सामान्य जीवन जीने लगे।’ क्या 'ए' ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसने आपके पिता को धमकी दी है?
'हां, अभी तक तो ठीक है। लेकिन मेरे पिता जी के बारे में ज्यादा आश्वस्त नहीं हैं। हो सकता है कि वे भी ऐसा ही करें।'
क्या आपको पता है कि इन लोगों ने कौन से भयानक अपराध किए हैं?
नहीं; न ही मुझे उनके असली नाम पता हैं, न ही यह कि वे आजकल क्या कर रहे हैं। लेकिन मुझे यकीन है कि मेरे पिता आपको वह सब कुछ बताएंगे जो उन्होंने मुझे या किसी और को कभी नहीं बताया।
क्या उसने मुझसे मिलने की इच्छा जताई थी?
जी हां, बिल्कुल, इसीलिए तो मैं यहां हूं। उनके एक मरीज ने आपका नाम लिया था। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैंने आपके बारे में सुना है, तो मैंने कहा कि आप अपने पेशे में बहुत प्रसिद्ध हैं। इस पर पिताजी ने कहा, “एक अच्छे जासूस को मनोविज्ञान का अच्छा जानकार होना चाहिए। मैं श्री मिटर से बात करना चाहता हूं। इस तरह की धमकी से बहुत अशांति फैलेगी—मैं इस समय यही नहीं चाहता।” इसलिए मैं यहां हूं। क्या आप रविवार को दस बजे हमारे घर आ सकते हैं?
'जी हां, बिल्कुल। अगर मैं मदद कर सकता हूं तो मुझे खुशी होगी।'
'अच्छा। हम आपसे रविवार को मिलेंगे। हमारा पता 7 स्विनहो स्ट्रीट है, और घर का नाम मुंशी पैलेस है।'

दो
सेवन स्विनहो स्ट्रीट किसी डॉक्टर का घर बिल्कुल नहीं लगता था। सामने के दरवाजे के पास एक रॉयल बंगाल टाइगर खड़ा था, जिसके ऊपर दीवार पर एक बाइसन का सिर लगा हुआ था।
शंकर मुंशी ने नीचे हमसे मुलाकात की, फिर हमें पहली मंजिल पर स्थित अपने बैठक कक्ष में ले गए। इस कमरे की दीवारों पर भी डॉ. मुंशी के शिकारी के रूप में बिताए वर्षों के प्रमाण मौजूद थे। इतने व्यस्त डॉक्टर होने के बावजूद उन्हें इतने सारे जानवरों को मारने का समय कैसे मिलता था?
वह एक मिनट से भी कम समय में आ गया। मैंने देखा कि उसके सारे बाल सफेद हो चुके थे, लेकिन वह अब भी काफी मजबूत और फुर्तीला था। उसने फेलुदा से हाथ मिलाया और कहा, 'आप बहुत चुस्त-दुरुस्त दिखते हैं। आप हर दिन शारीरिक व्यायाम करते हैं, है ना? बहुत बढ़िया। मुझे बहुत खुशी है कि आपने अपने शरीर की उपेक्षा न करने का फैसला किया, भले ही आपको अपने काम में अपने दिमाग का इतना अधिक उपयोग करना पड़ता है।'
फिर उन्होंने हमारी ओर देखा। फेलुदा ने हमारा परिचय कराया।
‘क्या ये लोग भरोसेमंद हैं?’ डॉ. मुंशी ने पूछा। ‘बिल्कुल,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘तपेश मेरा चचेरा भाई है और श्री गांगुली मेरे बहुत करीबी दोस्त हैं।’
‘मैं समझ गई। मुझे यह सुनिश्चित करना होगा, क्योंकि आज मैं आपको बताने जा रही हूँ कि वे तीन आदमी कौन हैं, जिनके बारे में मैंने अपनी डायरी में लिखा है। मुझे पता है कि जब तक आपको सच्चाई नहीं पता होगी, आप मेरी मदद नहीं कर सकते, लेकिन मैं नहीं चाहती कि किसी और को इसके बारे में पता चले।’
‘कृपया चिंता न करें, महोदय,’ लालमोहन बाबू ने उन्हें आश्वस्त किया। ‘हमसे किसी को कुछ पता नहीं चलेगा।’
'अचे से।'
‘हमें लिखित धमकी के बारे में पहले ही पता चल चुका है,’ फेलुदा ने कहा। ‘कुछ और भी हुआ है, श्री मिटर। मुझे कल रात लगभग साढ़े ग्यारह बजे फोन पर मौखिक धमकी भी मिली। मुझे लगता है कि वह पूरी तरह नशे में था। वह हिगिंस था। जॉर्ज हिगिंस।’
‘आपकी डायरी में G?’
हां। उन्होंने कहा, “आपकी बात मानकर मैं मूर्ख था। मैं आज भी वही धंधा चला रहा हूं जो मैं आपके पास इलाज के लिए आने से पहले चलाता था। अपने क्षेत्र में, मैं लगभग अकेला ही ऐसा धंधा चलाने वाला हूं। इसलिए बहुत से लोग मुझे मेरे नाम के पहले अक्षर से ही पहचान लेंगे। मुझे अपनी सूची से बाहर रखिए।” मैं एक शराबी से तर्क-वितर्क नहीं कर सकता था। इसलिए मैंने फोन रख दिया। मुझे समझ आ रहा है कि इन लोगों से फोन पर बात करने से कुछ नहीं होगा। मुझे

वास्तव में उनसे मिलने जाना चाहिए और आमने-सामने बात करनी चाहिए। लेकिन मैं हर दिन अपने मरीजों के साथ इतना व्यस्त रहता हूं कि मुझे नहीं लगता कि मुझे कभी समय मिलेगा। इसीलिए मैं चाहता हूं कि आप मेरी तरफ से उनसे मिलें। आपको केवल ए और जी से मिलना होगा। मैंने आर से बात की है। उन्हें नहीं लगता कि कोई उन्हें उनके नाम के पहले अक्षर से पहचान लेगा।
‘मैं समझ गया। ये तीनों कौन हैं?’
क्या आपके पास कलम और कागज का टुकड़ा है?
फेलुदा ने अपनी नोटबुक और कलम निकाली।
डॉ. मुंशी ने आगे बताया, ‘ए का मतलब अरुण सेनगुप्ता है। वह मैकनील कंपनी के महाप्रबंधक और रोटरी क्लब के उपाध्यक्ष हैं। उनका निवास स्थान 11 रोलैंड रोड है। आपको उनका टेलीफोन नंबर डायरेक्टरी से मिल जाएगा।’
फेलुदा ने जल्दी से सब कुछ लिख लिया।
डॉ. मुंशी ने कहा, ‘जी जॉर्ज हिगिंस हैं। उनका धंधा जंगली जानवरों को पकड़ना और उन्हें विदेशी टेलीविजन के लिए विदेशों में निर्यात करना है। उनका पता 90 रिपन स्ट्रीट है। वे एंग्लो-इंडियन हैं। मैं आपको आर के बारे में तब तक नहीं बताऊंगा जब तक कि ऐसा करना बिलकुल जरूरी न हो जाए।’
‘ए और जी ने कौन सा अपराध किया?’
‘देखो, मैं तुम्हें अपनी पांडुलिपि पढ़ने देता हूँ। पूरी पढ़ो, और फिर मुझे बताओ कि क्या तुम्हें लगता है कि मैंने किसी के बारे में कुछ ऐसा लिखा है जो इतना नुकसानदेह हो कि वे मुझ पर मुकदमा कर सकें।’
‘बहुत खूब। उस स्थिति में—’ फेलुदा को रुकना पड़ा, क्योंकि तीन आदमी कमरे में दाखिल हुए थे। डॉ. मुंशी ने उनका परिचय कराया।
‘मेरी पत्नी और बेटे के अलावा ये लोग मेरे साथ रहते हैं। जब उन्हें पता चला कि आप आ रहे हैं, तो ये सभी आपसे मिलना चाहते थे। ये मेरे सचिव सुखामोय चक्रवर्ती हैं; और ये मेरे साले चंद्रनाथ हैं।’
सुखामॉय चक्रवर्ती की उम्र शायद चालीस से ज़्यादा नहीं थी। वे चश्मा पहनते थे। चंद्रनाथ उनसे काफ़ी बड़े थे, संभवतः पचास के आसपास। किसी कारणवश, वे ऐसे दिखते थे मानो उनके पास कोई नौकरी या आय का ज़रिया न हो और वे मुंशी परिवार के साथ ही रहते हों।
‘और ये मेरे मरीजों में से एक हैं, राधाकांत मल्लिक। इनका अभी भी इलाज चल रहा है। ये पूरी तरह ठीक होने तक यहीं रहेंगे।’
राधाकांत मल्लिक—लगभग तीस वर्ष की आयु के आसपास—अजीब तरह से बेचैन लग रहे थे, बार-बार पलकें झपका रहे थे और उंगलियों के जोड़ चटका रहे थे। वे इतने घबराए हुए क्यों थे? यदि यही उनकी समस्या थी, तो ऐसा लग रहा था कि उनके ठीक होने में अभी काफी समय लगेगा।
अभिवादन के बाद श्री मल्लिक और चंद्रनाथ चले गए, लेकिन सुखामॉय चक्रवर्ती कमरे में ही रुके रहे। डॉ. मुंशी ने अपने सचिव से कहा, 'कृपया मेरी पांडुलिपि लाकर श्री मित्तर को दे दीजिए।' श्री चक्रवर्ती बाहर गए और कुछ ही मिनटों में एक मोटा, भारी लिफाफा लेकर वापस आ गए।
डॉ. मुंशी ने हमें बताया, 'यह एकमात्र प्रति है। सुखामय इसे टाइप कर लेंगे, उसके बाद हम इसे प्रकाशकों को सौंप देंगे।'

‘चिंता मत करो, मैं इसे बहुत सावधानी से संभालूंगा। मुझे इसकी कीमत का पूरा ज्ञान है,’ फेलुदा ने जवाब दिया।
हम विदा लेने के लिए उठे। शंकर मुंशी ने हमें दरवाजे तक विदा किया। हम लालमोहन बाबू की हरी एम्बेसडर कार में बैठे और निकल पड़े। वापस लौटते समय, लालमोहन बाबू अचानक बोले: 'फेलू बाबू, मेरी एक विनती है!'
'यह क्या है?'
'मैं आपके बाद वह पांडुलिपि पढ़ना चाहता हूँ। आपको इसे मुझे कुछ दिनों के लिए उधार देना होगा, कृपया मना मत करना।'
‘आप इतने उत्सुक क्यों हैं?’
मुझे शिकार की कहानियां पढ़ना बहुत पसंद है। मुझे वे बेहद आकर्षक लगती हैं... कृपया, फेलू बाबू, मना मत कीजिएगा।'
ठीक है। आप इसे ले जा सकते हैं, लेकिन केवल एक दिन के लिए। डॉ. मुंशी ने 1965 के बाद शिकार पर जाना बंद कर दिया था। जानवरों और शिकार के बारे में लिखे गए अध्यायों को पढ़ने के लिए एक दिन काफी होगा। याद रखना, लालमोहन बाबू, आपको पांडुलिपि घर ले जाने के अगले दिन ही वापस करनी है।
‘ठीक है, ठीक है, मैं नहीं भूलूंगा। मैं वादा करता हूँ!’

तीन
डॉ. मुंशी की लिखावट भले ही स्पष्ट और सुपाठ्य थी, फिर भी फेलुदा को उनकी 375 पृष्ठों की पांडुलिपि को पढ़ने में तीन दिन लग गए। लेकिन देरी का एक कारण यह भी था कि फेलुदा को बीच-बीच में रुककर अपनी नोटबुक में नोट्स बनाने पड़ते थे।
चौथे दिन लालमोहन बाबू आ गए।
जैसे ही वह अंदर आया, उसने पूछा, 'क्या तुम्हारा काम खत्म हो गया?'
'हाँ।'
तो आपकी क्या राय है? क्या उस किताब को उसके मौजूदा स्वरूप में प्रकाशित करना सुरक्षित है?
'बिल्कुल। लेकिन मुझे लगता है कि इससे उन लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ेगा जिन्हें पूरा यकीन है कि उनकी पहचान हो जाएगी। मुझे नहीं लगता कि वे इसे प्रकाशित होने से रोकने के लिए कुछ भी करेंगे।'
‘क्या, हत्या भी?’
'बिल्कुल सही। उदाहरण के लिए, 'ए' को ही ले लीजिए। अरुण सेनगुप्ता। उनके पूर्वज धनी जमींदार थे। युवावस्था में सेनगुप्ता एक मध्यम श्रेणी के बैंक अधिकारी थे। लेकिन उन्हें अपने पूर्वजों से पैसे खर्च करने का शौक विरासत में मिला था। इसलिए उन्होंने भारी कर्ज ले लिया, यहां तक कि काबुलीवालों से भी उधार लिया।'
फेलुदा ने मुझे एक बार बताया था कि काबुलीवाले काबुल के लोग होते हैं, जो बहुत अधिक ब्याज दर पर पैसा उधार देकर अपना जीवन यापन करते हैं। वे अब देश छोड़कर चले गए हैं, लेकिन एक समय था जब सड़कों के कोनों पर भारी लाठियाँ लिए काबुलीवालों को देखना आम बात थी।
एक समय ऐसा आया जब सेनगुप्ता पर कर्ज इतना बढ़ गया कि वह पूरी तरह हताश हो गया। उसने अपने बैंक से चालीस हजार रुपये चुरा लिए। हालांकि, उसने यह काम बड़ी चालाकी से किया ताकि उस पर किसी को शक न हो। एक कनिष्ठ अधिकारी पर आरोप लगा, जिसे कुछ साल जेल में बिताने पड़े।
‘मैं समझ गया!’ जटायु चिल्लाया। ‘इसके बाद उन्हें अंतरात्मा की गहरी पीड़ा हुई, फिर यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या बन गई, और इसलिए उन्हें डॉ. मुंशी से मिलना पड़ा। लेकिन अब... अब यह सेनगुप्ता एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। इसका मतलब यही हो सकता है कि डॉ. मुंशी का इलाज बहुत कारगर रहा और सेनगुप्ता ठीक हो गए।’
'सही है। डॉ. मुंशी ने उनके इलाज की सफलता का जिक्र किया है, लेकिन इसके अलावा कुछ नहीं। फिर भी, यह कल्पना करना मुश्किल नहीं है कि सेनगुप्ता ने अपनी जीवनशैली में कितना बदलाव किया होगा और निरंतर प्रगति करते हुए आज जिस मुकाम पर हैं, वहां तक पहुंचे होंगे। इसलिए स्वाभाविक रूप से वे किसी

भी तरह की संभावना को, चाहे वह कितनी भी कम क्यों न हो, उजागर होने और उपहास का पात्र बनने से रोकने के लिए चिंतित हैं।'
‘मैं समझ गया। बाकी दो के बारे में क्या?’
मैं आपको यह नहीं बता सकता कि आर कौन है क्योंकि डॉ. मुंशी ने उसकी असली पहचान के बारे में कुछ नहीं कहा है। बताया जाता है कि उसने गाड़ी चलाते समय एक आदमी को टक्कर मार दी थी। उस आदमी की मौत हो गई, लेकिन आर ने कुछ लोगों को रिश्वत देकर आसानी से बच निकला। हालांकि, उसका ज़मीर उसे बख्श नहीं पाया और इसलिए वह डॉ. मुंशी के क्लिनिक में पहुँच गया। वैसे भी, उसका मामला इतना महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि उसने कोई आपत्ति नहीं जताई है। दिलचस्प तो जॉर्ज हिगिंस का मामला है।
‘ह iggins ने क्या किया?’
आप जानते हैं ना कि वह जंगली जानवरों का निर्यात करता है? खैर, 1960 में एक स्वीडिश फिल्म निर्देशक भारत में फिल्म बनाने के लिए कलकत्ता आया। उसे अपनी फिल्म के लिए एक तेंदुए की ज़रूरत थी। किसी ने उसे हिगिंस के बारे में बताया, इसलिए वह उससे उसके घर पर मिला। पता चला कि उसके पास एक तेंदुआ था, लेकिन वह निर्यात के लिए नहीं था। वह उसका अपना था, हिगिंस उसे पालतू जानवर की तरह पालता था। स्वीडिश निर्देशक ने जानवर को एक महीने के लिए किराए पर लेने के लिए बहुत सारा पैसा दिया। उसने वादा किया कि वह उसे एक महीने के भीतर सुरक्षित और सही सलामत लौटा देगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। फिल्म की पटकथा में बताए अनुसार, तेंदुए को कुछ ग्रामीणों ने मार डाला। जब निर्देशक ने आखिरकार हिगिंस से मुलाकात की और उसे सब कुछ बताया, तो हिगिंस इतना क्रोधित हुआ कि उसने अपना आपा खो दिया। पागलपन के आवेश में आकर उसने स्वीडिश निर्देशक का गला पकड़ लिया और उसे गला घोंटकर मार डाला। जब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ, तो क्रोध की जगह भय ने ले ली—लेकिन फिर भी, उसने खुद को बचाने की योजना बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सबसे पहले, उसने एक चाकू लिया और अपने शिकार के शरीर पर गहरे घाव कर दिए। फिर उसने अपने घर में रखे जानवरों के संग्रह में एक जंगली बिल्ली को पाया। उसने बिल्ली को पिंजरे से बाहर निकाला और उसे गोली मार दी। इसके बाद ऐसा लगा जैसे बिल्ली किसी तरह भाग निकली और फिल्म निर्देशक पर हमला कर दिया। हिगिंस ने बिल्ली को गोली मार दी, लेकिन निर्देशक पहले ही मर चुका था। यह चाल कारगर साबित हुई और पुलिस ने उसकी कहानी पर विश्वास कर लिया। हालांकि, हिगिंस को बुरे सपने आने लगे। रात-रात भर वह खुद को फांसी के तख्ते तक घसीटते और गर्दन से लटकाए जाते देखता। इन भयानक सपनों ने जल्द ही उसे डॉक्टर मुंशी से मदद लेने के लिए मजबूर कर दिया। मुंशी ने उसे ठीक होने में मदद की, और बाकी की कहानी तो आप जानते ही हैं।
‘हम्म, बहुत दिलचस्प। अब हमें क्या करना चाहिए?’
मुझे दो काम करने हैं। पहला, मुझे पांडुलिपि आपको सौंपनी होगी; और दूसरा, मुझे अरुण सेनगुप्ता को फोन करना होगा।'
लालमोहन बाबू ने मुस्कुराते हुए दिया गया पैकेट ले लिया। उन्होंने पूछा, 'क्या आप सेनगुप्ता से मिलने जा रहे हैं?'

'हां, अब और इंतजार करने का कोई फायदा नहीं है। टॉपशे, जाओ और उसका नंबर ढूंढो। अरुण सेनगुप्ता, 11 रोलैंड रोड।'
डायरेक्टरी उठाते ही फोन की घंटी बज उठी। डॉ. मुंशी का फोन था। अरुण सेनगुप्ता ने उन्हें एक और पत्र भेजा था। फेलुदा ने जल्दी-जल्दी बोलते हुए पत्र का विवरण लिख लिया। फिर उन्होंने फोन रख दिया और हमें पढ़कर सुनाया: मैं आपको सात दिन का समय देता हूँ। इस दौरान मैं चाहता हूँ कि कलकत्ता के हर अखबार में यह खबर छपे कि किसी अपरिहार्य कारण से आपकी डायरी प्रकाशित नहीं हो पाएगी। याद रखिए, सिर्फ सात दिन। अगर आपने मेरी बात नहीं मानी, तो ये चेतावनियाँ बंद हो जाएँगी और मैं सीधे कार्रवाई करूँगा। कहने की जरूरत नहीं है, परिणाम अच्छे नहीं होंगे—कम से कम आपके लिए तो बिल्कुल नहीं। मैंने सेनगुप्ता का नंबर ढूंढा और झटपट डायल किया। सौभाग्य से, तुरंत कॉल लग गई। फिर मैंने रिसीवर फेलुदा को दे दिया और उसकी तरफ से बातचीत सुनी: नमस्कार, क्या मैं श्री अरुण सेनगुप्ता से बात कर सकता हूँ? . . . मेरा नाम प्रदोश मित्तर है।. . जी हाँ। क्या मैं आपसे मिलने आ सकता हूँ? . . . सच में? कितना अजीब! क्या बात है? . . . ज़रूर। आप मुझे कब आने की उम्मीद करते हैं? . . . ठीक है। फिर मिलते हैं।
‘ज़रा सोचो!’ उसने रिसीवर वापस रखते हुए कहा। ‘उसने कहा कि वह खुद मुझे फोन करने वाला था।’
'क्यों?'
उन्होंने कहा, 'वह फोन पर इस बारे में बात नहीं करना चाहते थे। वह हमें आमने-सामने मिलकर सब कुछ बताएंगे।'
‘वह आपसे कब मिलना चाहता है?’
'आधे घंटे में।'

चार
ग्यारह रोलैंड रोड एक दो मंजिला मकान था, जिसका निर्माण ब्रिटिश काल में हुआ था। वर्दी पहने एक कर्मचारी ने दरवाजा खोला और हमें ऊपर ले गया। लकड़ी की सीढ़ियों पर कालीन बिछा हुआ था।
श्री सेनगुप्ता कुछ ही मिनटों में ड्रेसिंग गाउन और बेडरूम स्लिपर पहने हुए पहुंचे। उनके हाथ में एक सिगार था।
हमने जब अपना परिचय दे दिया, तो उन्होंने पूछा, 'क्या मैं आपको कुछ पीने के लिए दूं?'
‘नहीं, धन्यवाद। हम शराब नहीं पीते,’ फेलुदा ने जवाब दिया।
'मुझे उम्मीद है कि अगर मैं एक बियर पी लूं तो आपको कोई आपत्ति नहीं होगी?' 'नही बिल्कुल नही।'
श्री सेनगुप्ता ने अपने नौकर को बुलाया और उसे हमारे लिए चाय और अपने लिए एक गिलास बीयर लाने को कहा। फिर वे फेलुदा की ओर मुड़े।
‘अगर आपको कोई आपत्ति न हो, श्रीमान सेनगुप्ता,’ फेलुदा ने उनके बोलने से पहले ही कहा, ‘क्या आप पहले मुझे यह बता सकते हैं कि आप मुझसे मिलने के लिए इतने उत्सुक क्यों थे? उसके बाद मैं आपको यहां आने का कारण बताऊंगा।’ ‘बहुत खूब। क्या आपने जी.पी. चावला के बारे में सुना है?’
‘गुरु प्रसाद चावला? वही व्यापारी?’
'हाँ।'
‘उनके पोतों में से एक—?’
'हां, वह लापता है। संभवतः उसका अपहरण हो गया है।'
मैंने इसके बारे में अखबारों में पढ़ा।
‘मैं चावला को कई सालों से जानता हूं। पुलिस अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रही है, लेकिन मैंने चावला को आपका नाम सुझाया था।’
'मुझे खेद है, श्रीमान सेनगुप्ता, लेकिन मैं पहले से ही एक मामले पर काम कर रहा हूं। मैं दूसरा मामला नहीं ले सकता।'
'अच्छा ऐसा है।'
दरअसल, मैं यहां उस मामले के सिलसिले में आया हूं जिसे मैं अभी संभाल रहा हूं।
‘सच में? यह किस बारे में है?’
इसमें डॉ. मुंशी शामिल हैं।
'क्या!'
श्री सेनगुप्ता उछल पड़े। 'मुंशी ने मेरे बारे में आपको बताया? तो फिर कुछ ही हफ्तों में पूरी दुनिया को पता चल जाएगा कि 'ए' कौन है, जब वे उसकी किताब पढ़ेंगे।'

‘देखिए, श्रीमान सेनगुप्ता, मुझे राज़ रखना आता है। आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं। लेकिन डॉ. मुंशी को बार-बार धमकियाँ भेजने से कोई फायदा नहीं होगा।’
‘मैं उसे धमकी क्यों न दूं? क्या तुमने उसकी किताब पढ़ी है?’
'हाँ।'
'आपको क्या लगा?'
उन्होंने तीस साल पहले हुई एक घटना का जिक्र किया है। इन तीस सालों में कम से कम पांच सौ बैंकों में धन का गबन हुआ है। यह बहुत संभव है कि अन्य कई अपराधियों के नाम भी 'ए' से शुरू होते हों। आपको डरने की कोई जरूरत नहीं है। ‘क्या मुंशी ने मेरे बैंक का नाम लिया है?’
'नहीं।'
‘वहां दो अधिकारी मौजूद थे जिन्हें उस समय मुझ पर शक था। मैं उनसे कुछ पैसे उधार लेने गया था, लेकिन दोनों में से कोई भी सहमत नहीं हुआ।’
श्रीमान सेनगुप्ता, मैं आपको फिर से आश्वस्त करता हूँ—आपको चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसके अलावा, इन नोट्स को भेजकर आपको क्या लाभ होगा? डॉ. मुंशी ने कानून का उल्लंघन नहीं किया है। आप उनके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं कर सकते। निश्चित रूप से आप कुछ भी गैरकानूनी करने की सोच तो नहीं रहे हैं?
'अगर मैं किसी मुसीबत में फंस जाऊं, श्रीमान मिटर, तो मैं कानून की परवाह नहीं करूंगा। चूंकि आप मेरा इतिहास जानते हैं, तो आपको यह भी पता होना चाहिए कि मैं कड़े कदम उठाने में जरा भी संकोच नहीं करूंगा।'
‘श्रीमान सेनगुप्ता, आप तो बिल्कुल पागल हो गए हैं। तीस साल पहले आप जैसे थे, अब वैसे नहीं रहे। आप अब काफी मशहूर और सम्मानित व्यक्ति हैं। फिर ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकत करके समाज में अपनी प्रतिष्ठा खोने का जोखिम क्यों उठाना चाहते हैं?’
श्री सेनगुप्ता ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। वे चुपचाप बैठे अपनी बीयर की चुस्की लेते रहे। फिर उनके चेहरे पर थोड़ी नरमी आई। उन्होंने बची हुई बीयर एक ही घूंट में खत्म कर दी, गिलास को मेज पर रख दिया और बोले, 'ठीक है, छोड़ो! उसे जाने दो।'
‘क्या इसका मतलब यह है कि अब आपकी ओर से कोई धमकी नहीं आएगी?’
‘हां, हां, हां। मैं रुक जाऊंगा—लेकिन, मैं आपको याद दिला दूं, अगर मुझे जरा सी भी परेशानी का संकेत मिला तो...’
‘मुझे पता है, मुझे पता है। आपने अपनी बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी है, श्री सेनगुप्ता। मैं आपका संदेश डॉ. मुंशी तक पहुंचा दूंगा।’

पाँच
लालमोहन बाबू ने अपने वादे के मुताबिक अगले दिन पांडुलिपि लौटा दी। फेलुदा ने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा, 'मुझे खेद है कि हमारे पास चाय पीने का समय नहीं है। मैंने जी से बात की है; वह आधे घंटे में हमसे मिलना चाहते हैं।'
90 रिपन स्ट्रीट पर दरवाजा खोलने वाला व्यक्ति गंजा था, लेकिन उसके कानों के आसपास सफेद बाल थे। उसकी प्रभावशाली मूंछें भी पूरी तरह से सफेद थीं। ‘श्री मिटर? मैं जॉर्ज हिगिंस हूँ,’ उन्होंने कहा। उन्होंने हम सभी से हाथ मिलाया और फिर हमें अपने बैठक कक्ष में ले गए। यह एक बड़ा घर था जिसके चारों ओर एक विशाल परिसर था। मैंने दो बड़े पिंजरे देखे, जिनमें से एक में बाघ और दूसरे में लकड़बग्घा था। मुझे लगा जैसे मैं किसी चिड़ियाघर में आ गया हूँ।
जब हम सब बैठ गए, तब मिस्टर हिगिंस ने फेलुदा से पूछा, 'क्या आप जासूस हैं?' 'हां, एक निजी,' फेलुदा ने जवाब दिया।
‘मैं समझ गया। तो... आपने मुंशी से बात की है, है ना? मुझे मानना पड़ेगा कि जब मैं मुश्किल में था तो उसने मेरी बहुत मदद की।’
‘अगर ऐसा है तो आपने उसे धमकी क्यों दी?’
हिगिंस कुछ पल चुप रहे। फिर बोले, ‘खैर, इसका एक कारण यह था कि मैंने उस रात कुछ ज़्यादा ही पी ली थी। लेकिन बताइए, क्या मेरा चिंतित होना स्वाभाविक नहीं है? क्या आप जानते हैं कि मेरे पिता क्या थे? बस एक स्टेशन मास्टर। और मुझे देखिए! मैंने अपने दम पर, अपनी मेहनत और लगन से जीवन में इतनी तरक्की की है। इस व्यवसाय में मेरा एकाधिकार है। मैं जानवरों के निर्यात का काम करने वाला एकमात्र व्यक्ति हूँ। अगर मुंशी की किताब छप जाती है, और अगर उनके पाठक मुझे सिर्फ़ मेरे नाम के पहले अक्षर 'G' से पहचान लेते हैं, तो आप कल्पना कीजिए कि मेरे व्यवसाय पर कितना बुरा असर पड़ेगा?’
जवाब में, फेलुदा को वही बात दोहरानी पड़ी जो उसने अरुण सेनगुप्ता से कही थी। जॉर्ज हिगिंस कानूनी तौर पर कुछ नहीं कर सकता था; और अगर उसने अपनी प्रतिष्ठा बचाने की उम्मीद में कानून तोड़ने का फैसला किया, तो हालात और भी बदतर हो सकते थे।
‘क्या तुम सचमुच यही चाहते हो?’ फेलुदा ने थोड़ी ऊंची आवाज में उससे पूछा। ‘क्या तुम्हें लगता है कि गैरकानूनी काम करने से तुम्हारी प्रतिष्ठा बढ़ेगी?’
हिगिंस एक बार फिर चुप हो गया। फिर मैंने उसे बड़बड़ाते हुए सुना: 'मुझे उस स्वीडिश सूअर को मारने का कोई पछतावा नहीं है। अगर मुझे मौका मिले, तो मैं उसे फिर से मार डालूंगा। बहादुर... मेरा तेंदुआ... मैं उससे कितना प्यार करता था!... वह सिर्फ चार साल का था। और उस मूर्ख ने उसे बेवजह मरवा दिया!'

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। हिगिंस सोच में डूबे हुए लग रहे थे। आखिरकार, उन्होंने ऊपर देखा और अचानक अपनी कुर्सी के आर्मरेस्ट पर हाथ मारा। 'ठीक है,' उन्होंने स्पष्ट स्वर में कहा। 'जाओ और मुंशी को बता दो कि मुझे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं है कि वह अपनी डायरी के साथ क्या करता है। मुझे इस बात की भी परवाह नहीं है कि मुझे कोई पहचान ले। कोई भी चीज़ मेरे व्यवसाय को नुकसान नहीं पहुँचा सकती। मुझे यह पता है।'
'धन्यवाद, श्री हिगिंस। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'
फेलुदा ने पहले ही डॉ. मुंशी को फोन करके अरुण सेनगुप्ता के बारे में बता दिया था। अब हम जॉर्ज हिगिंस के बारे में रिपोर्ट देने उनके घर गए। इसके अलावा, पांडुलिपि भी वापस करनी थी।
डॉ. मुंशी ने हमें दिल से धन्यवाद दिया और फेलुदा से कहा, 'आपने बहुत ही शानदार काम किया है, श्री मिटर। अब आप घर जाकर आराम कर सकते हैं।'
‘क्या आपको यकीन है?’ ‘आर’ के बारे में क्या?’
‘वह ठीक है, वह कभी कोई आपत्ति नहीं उठाएगा। आर के बारे में चिंता मत कीजिए, श्रीमान मिटर। मुझे अपना बिल भेजिए और मैं तुरंत भुगतान कर दूंगा।’ 'धन्यवाद।'
हम वापस आ गए। घर पहुँचकर जटायु ने कहा, 'फेलू बाबू, क्या आप इसे वाकई मामला कह सकते हैं?'
आप इसे मिनी केस या केस-लेट कह सकते हैं।
'हां, मुझे लगता है कि यह काफी उपयुक्त है।'
'मुझे आश्चर्य इस बात का है कि इन सभी लोगों ने गंभीर अपराध किए, फिर भी वे सामान्य जीवन जीते रहे। किसी को भी पकड़ा नहीं गया और कानून द्वारा दंडित नहीं किया गया।'
‘बिल्कुल सही। मैं भी यही सोच रहा था। मैं याद करने की कोशिश कर रहा था कि तीस साल पहले मैं कितने लोगों को करीब से जानता था और अंततः उनका क्या हुआ। घंटों सोचने के बाद, मुझे सिर्फ एक आदमी याद आया। चटर्जी नाम का एक आदमी। मैं उसके साथ सिनेमा जाया करता था, फुटबॉल मैच देखता था, कॉफी हाउस में घंटों बिताता था।’
'जहां वह अब है?'
‘भगवान ही जाने। मुझे याद भी नहीं कि मेरा उससे संपर्क कैसे टूट गया। वह अचानक मेरी जिंदगी से गायब हो गया।’
अगले दिन लालमोहन बाबू बातचीत करने के लिए आए।
‘तुम थोड़े उदास क्यों लग रहे हो?’ उसने फेलुदा से पूछा। ‘क्या इसलिए कि तुम्हारी नौकरी चली गई है?’
नहीं, महोदय। मैं अवसादग्रस्त नहीं हूँ। बस मुझे आर के बारे में अभी भी बहुत जिज्ञासा है। काश मुझे पता होता कि वह कौन था। जब तक मुझे यह पता नहीं चल जाता, मुझे चैन नहीं मिलेगा। अगर आर ने भी धमकियाँ दी होतीं तो बात ज़्यादा सरल होती।
‘सड़ा हुआ, बकवास, हास्यास्पद!’ लालमोहन बाबू ने जोर देकर कहा। ‘आर नरक में जाए। तुम्हें पूरी तनख्वाह मिल रही है, है ना?’
'हाँ।'

‘तो फिर, फेलू बाबू, तुम्हें यह सब भूल जाना चाहिए।’
फोन की घंटी बजी। मैंने उठाया। शंकर मुंशी का फोन था। मैंने रिसीवर फेलुदा को थमा दिया।
‘हेलो?’ फेलुदा ने कहा और अगले कुछ सेकंड तक ध्यान से सुना। शंकर मुंशी के बोलते ही उनकी भौंहों पर गहरी शिकन आ गई। फिर उन्होंने बस दो-तीन बार ‘हम्म’ और ‘हां’ कहा और फोन रख दिया।
‘मुझे यकीन ही नहीं हो रहा कि मैंने अभी क्या सुना,’ उन्होंने हमारी ओर मुड़ते हुए कहा। ‘डॉ. मुंशी की हत्या कर दी गई है और उनकी पांडुलिपि गायब है।’
'हे भगवान!'
‘हमने सोचा था कि मामला खत्म हो गया है, है ना? यह तो बस शुरुआत है।’
हमने एक पल भी बर्बाद किए बिना तुरंत लालमोहन बाबू की कार में बैठकर प्रस्थान कर दिया।
पुलिस मुंशी महल पहुंच चुकी थी। प्रभारी इंस्पेक्टर शोम, फेलुदा को जानते थे। उन्होंने बताया, 'उसकी हत्या आधी रात को हुई थी। किसी भारी हथियार से उसके सिर के पिछले हिस्से पर वार किया गया था।'
'सबसे पहले शव किसने देखा?'
उनके सहायक ने उन्हें शाम छह बजे चाय पिलाई, जैसा कि वह हर रोज करते थे। तभी उन्होंने देखा कि क्या हुआ था। डॉ. मुंशी का बेटा घर पर नहीं था। हमें उनके सचिव ने सूचना दी।
‘क्या आपने सभी से बात कर ली है?’
जी हां, लेकिन आप अपनी खुद की जांच शुरू कर सकते हैं, श्री मिटर। मुझे पता है कि आपका काम हमारे काम में बाधा नहीं डालेगा। वैसे भी, पूछताछ के लिए केवल चार लोग ही हैं। लेकिन श्रीमती मुंशी भी हैं। हमने अभी तक उनसे कुछ नहीं पूछा है।
फेलुदा ने इंस्पेक्टर को धन्यवाद दिया और हम ऊपर बैठक कक्ष की ओर चल पड़े। शंकर मुंशी भी हमारे साथ आए। बैठक कक्ष में प्रवेश करते ही उन्होंने आह भरते हुए कहा, 'मुझे कई चीजों का डर था, लेकिन इसका नहीं!'
मुझे पता है कि यह आपके लिए आसान नहीं होगा, लेकिन मुझे सवाल पूछने होंगे और अगर मैं आपसे शुरुआत करूं तो शायद यह आसान हो जाए।
'बहुत अच्छा। आप मुझसे क्या जानना चाहेंगे?'
हम बैठ गए। दीवारों पर सजे जानवरों के सिरों को देखे बिना मैं नहीं रह सका। भला किसने सोचा होगा कि एक दिन ऐसा माहिर शिकारी खुद मारा जाएगा?
फेलुदा ने पूछा, 'क्या आपका कमरा पहली मंजिल पर है?'
'हां। मेरा कमरा उत्तरी तरफ है। पिताजी का कमरा दक्षिणी तरफ था।'
‘क्या तुम आज सुबह बाहर गए थे?’
'हाँ।'
'आप कहा चले गए थे?'
‘अपने डॉक्टर से संपर्क करने के लिए। उनका फोन खराब है। मुझे पता था कि वे हर दिन सुबह झील के पास लंबी सैर पर जाते हैं। इसलिए मैं उनसे रास्ते में

मिलने निकल गया। मुझे पिछले कुछ दिनों से सिरदर्द हो रहा है। शायद मेरा रक्तचाप बढ़ गया है।’
‘क्या आपके पिता घर पर ही आपका रक्तचाप नहीं जांच सकते थे?’
नहीं। यह मेरे पिता के विचित्र व्यवहार का एक और उदाहरण है। वे अपने ही परिवार के लोगों का मामूली बीमारियों के लिए भी इलाज करने से इनकार कर देते थे। हमें डॉक्टर प्रणव कर से सलाह लेने के लिए कहा गया था।
‘मैं समझ गया। श्री मुंशी, मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ। आपने कहा कि आपके पिता आपके प्रति उदासीन थे। यह सच नहीं है। वे अपनी डायरी में आपका अक्सर जिक्र करते हैं।’
'बहुत आश्चर्यजनक।'
क्या तुम इसे कभी पढ़ना नहीं चाहते थे?
नहीं। मेरे पास इतनी लंबी हस्तलिखित पांडुलिपि पढ़ने का धैर्य नहीं है। ‘मैं मान लेता हूँ कि उसने आपके बारे में जो लिखा है वह सच और सही है?’
‘यह सिर्फ मेरे पिता के नजरिए से ही सच हो सकता है। मेरा मतलब है, उन्होंने वही लिखा जो उन्हें सच और सही लगा। मेरा कहना यह है कि उन्हें यह जानने का मौका कब मिला कि मैं असल में कैसी थी? वे हर समय अपने मरीजों में इतने मग्न रहते थे कि वे मुझे बिल्कुल भी नहीं जानते थे।’
क्या आपको पता है कि उसकी मासिक आय कितनी थी?
नहीं। लेकिन उसके द्वारा खर्च की गई राशि को देखते हुए, उसकी आय तीस हजार के आसपास रही होगी।
क्या आपको पता था कि उसने वसीयत बनाई थी?
'नहीं।'
उन्होंने यह उपलब्धि पिछले साल 1 दिसंबर को हासिल की थी। उनकी बचत का एक हिस्सा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में जाएगा।
'अच्छा ऐसा है।'
उनकी वसीयत में आप भी शामिल हैं।
'अच्छा ऐसा है।'
क्या आप इस हत्या के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं?
'नहीं, बिलकुल नहीं। यह तो अचानक से आई मुसीबत की तरह है।'
और गुम हुई पांडुलिपि?
‘हो सकता है कि इसे उन तीन लोगों में से किसी एक ने चुराया हो जिनका ज़िक्र उन्होंने इसमें किया है। मेरा मतलब है, उनमें से किसी ने घर में सेंध लगाने और इसे चुराने के लिए किसी आदमी को काम पर रखा हो सकता है। वे सभी पहले भी इस घर में आ चुके थे। वे जानते थे कि उनका परामर्श कक्ष कौन सा है। वे यह भी जानते थे कि बगल वाला कमरा उनका कार्यालय था। पांडुलिपि वहीं रखी जाती थी।’
'मुझे लगता है कि आप रात में हमेशा अपने घर का दरवाजा बंद रखते हैं?'
'हां, लेकिन घर के पीछे एक घुमावदार सीढ़ी है जिसका इस्तेमाल सफाईकर्मी करते हैं। चोर उन सीढ़ियों का इस्तेमाल करके अंदर घुस सकता था।'
‘ठीक है। ठीक है, अभी के लिए इतना ही। क्या आप श्री चक्रवर्ती को अंदर भेज सकते हैं?’

डॉ. मुंशी के सचिव, सुखामॉय चक्रवर्ती, एक मिनट बाद कमरे में दाखिल हुए और थोड़ी दूरी पर एक कुर्सी पर बैठ गए। फेलुदा ने अपने प्रश्न पूछने शुरू किए।
'मुझे बताओ, यह पांडुलिपि जो चोरी हो गई... क्या यह हमेशा से ऐसे ही पड़ी रहती थी?'
‘नहीं। इसे एक दराज में रखा गया था, लेकिन दराज कभी बंद नहीं होती थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि न तो डॉ. मुंशी और न ही मैं कभी कल्पना कर सकते थे कि यह चोरी हो सकती है।’
‘आपको कब पता चला कि यह गायब है?’
‘आज सुबह। मैंने इसे आज ही टाइप करना शुरू करने की योजना बनाई थी। लेकिन जब मैंने इसे निकालने के लिए दराज खोला, तो यह वहाँ नहीं था!’
‘अच्छा। आप डॉ. मुंशी की सचिव के रूप में कितने समय से काम कर रही हैं?’
‘दस साल।’
'आपको यह जॉब कैसे मिला?'
डॉ. मुंशी ने विज्ञापन दिया था।
आपको किस तरह का काम करना पड़ता था?
‘उनकी नियुक्तियों और उनके पत्राचार का प्रबंधन करें।’
क्या उसे बहुत सारे पत्र मिले थे?
'हां, काफी सारे। विदेशों के विभिन्न समाज और संगठन उन्हें नियमित रूप से पत्र लिखते थे। वे हर दो साल में सम्मेलनों में भाग लेने के लिए विदेश यात्रा करते थे।'
'क्या आप शादीशुदा हैं?'
नहीं। मेरी विधवा मां और एक चाची के अलावा मेरा कोई परिवार नहीं है।
क्या आप उनके साथ रहते हैं?
नहीं। मैं यहीं रहती हूँ। डॉक्टर मुंशी ने मुझे भूतल पर एक कमरा दिया था। मैं शुरू से ही यहीं रह रही हूँ। मेरी माँ और मौसी बेल्टोला रोड, नंबर सैंतीस में रहती हैं। मैं कभी-कभी उनसे मिलने जाती हूँ।
क्या आप इस हत्या के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं?
'मुझे खेद है कि ऐसा नहीं है। मैं चोरी हुई पांडुलिपि के बारे में समझ सकता हूँ। आखिरकार, कई धमकियाँ मिली थीं, और कुछ लोग ऐसे भी थे जो इसे प्रकाशित नहीं देखना चाहते थे। लेकिन हत्या मुझे पूरी तरह से अर्थहीन लगती है।' ‘डॉ. मुंशी नियोक्ता के रूप में कैसे थे?’
'बहुत बढ़िया। वह हमेशा मेरे प्रति बहुत दयालु और स्नेही थे, मेरे काम की सराहना करते थे और मुझे अच्छा वेतन देते थे।'
‘क्या आपको पता था कि अगर उनकी किताब प्रकाशित हो जाती, तो उनकी मृत्यु के बाद कॉपीराइट आपको मिल जाता?’
'हां, उसने मुझे बताया था।'
‘क्या आपको लगता है कि किताब की अच्छी बिक्री होती?’
'हां, प्रकाशकों को तो ऐसा ही लगता था।'
‘इसका मतलब रॉयल्टी से मोटी कमाई होती, है ना?’

'क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि मैंने डॉ. मुंशी की हत्या सिर्फ उनकी किताबों की बिक्री से मिलने वाली रॉयल्टी के लिए की?'
‘यह एक मजबूत मकसद है, आप निश्चित रूप से इससे इनकार नहीं कर सकते?’
लेकिन मेरे पास बहुत पैसा है। मेरी अपनी जरूरतों के लिए काफी है। जब मुझे इसकी कोई सख्त जरूरत नहीं है तो मैं अपने मालिक को क्यों मारूं?
श्री चक्रवर्ती, मैं अभी उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। मुझे सच्चाई तक पहुँचने के लिए थोड़ा समय चाहिए। वैसे, मेरे पास आपसे पूछने के लिए और कोई प्रश्न नहीं है।
क्या आप किसी और से बात करना चाहेंगे?
जी हाँ, कृपया। क्या आप डॉ. मुंशी के बहनोई को भेज सकते हैं? धन्यवाद। श्री चक्रवर्ती के चले जाने के बाद लालमोहन बाबू ने फेलुदा की ओर रुख किया।
'फेलू बाबू, आपको क्या लगता है? क्या पांडुलिपि का गायब होना एक अलग मामला है, या यह हत्या से जुड़ा हुआ है?'
'पहले बंदूक ढूंढ लेते हैं, उसके बाद ही हम इस पर से कूद सकते हैं।'
'इसका मतबल क्या माना जाता है?'
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया।

छह
डॉक्टर मुंशी के बहनोई तुरंत ही आ गए। जिस तरह से वे बार-बार अपना चेहरा पोंछ रहे थे, उससे ऐसा लग रहा था मानो वे किसी कारण से घबराए हुए हों। ‘कृपया बैठ जाइए,’ फेलुदा ने आमंत्रित किया। उसने एक कुर्सी ले ली।
‘मुझे लगता है आपका नाम चंद्रनाथ है। आपका उपनाम क्या है?’
‘बासु।’
‘आप यहां करीब पंद्रह साल से रह रहे हैं, क्या यह सही है?’
‘हां, लेकिन आपने यह कैसे किया…?’
मैंने डॉ. मुंशी की डायरी पढ़ी है। मैं आपके बारे में कुछ बातें जानता हूँ, लेकिन अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं चाहूँगा कि आप सब कुछ पुष्टि कर दें।
श्री बासु ने अपना चेहरा फिर से पोंछा।
‘क्या डॉ. मुंशी ने सचमुच आपको यहां आकर रहने के लिए कहा था?’
नहीं। यह मेरी बहन का विचार था।
‘क्या डॉ. मुंशी तुरंत सहमत हो गए?’
'नहीं।'
तो कैसे...?
‘वह तभी राजी हुए... जब मेरी बहन ने उनसे बार-बार विनती की।’ ‘तुम्हारे पास नौकरी नहीं है, है ना?’
'नहीं।'
क्या आपको हर महीने भत्ता मिलता है?
'हाँ।'
'कितना?'
‘पांच सौ।’
क्या यह पर्याप्त है?
श्री बासु ने अपनी निगाहें फेर लीं और बिना कुछ कहे कालीन की ओर देखने लगे। यह स्पष्ट था कि उनके लिए पांच सौ रुपये प्रति माह अपर्याप्त थे।
‘तुम कॉलेज गए थे, है ना? मुझे लगता है तुमने इंटरमीडिएट तक पढ़ाई की थी?’ 'हाँ।'
‘आप छात्र के रूप में कैसे थे? औसत? या उससे भी बदतर?’
श्री बासु चुप रहे।
‘तुम कॉलेज के पहले साल में फेल हो गए थे, है ना? क्या यही कारण था कि तुम्हें कभी नौकरी नहीं मिली?’
श्री बासु ने सिर हिलाया, अभी भी फर्श की ओर देख रहे थे।
क्या आप इस घर में कोई काम करते हैं?

‘काम? हाँ, मैं खरीदारी में मदद करती हूँ... जरूरत पड़ने पर मैं दवा की दुकान पर भी जाती हूँ... इस तरह के काम।’
‘ठीक है। क्या आपका बेडरूम पहली मंजिल पर है?’
'हाँ।'
‘यह ठीक कहाँ है? डॉ. मुंशी के कमरे से कितनी दूर है?’
'बेहद करीब।'
'करीब? मतलब तुम्हारा कमरा उसके कमरे के ठीक बगल में है?' ‘Ye-es.’
'आप आम तौर पर कब सोने जाते हो?'
लगभग साढ़े दस बजे।
और आप कब उठते हैं?
'छ: बजे।'
‘क्या आप इस हत्या के बारे में कुछ कहना चाहेंगे?’
नहीं, नहीं। बिलकुल कुछ नहीं।
‘बहुत अच्छा। अब आप जा सकते हैं, लेकिन कृपया राधाकांत मल्लिक को भेज दीजिए। मुझे उनसे भी कुछ सवाल पूछने हैं।’
कुछ ही क्षणों में राधाकांत मल्लिक वहाँ पहुँचे, सोफे पर गिर पड़े और अपना सिर हिलाते हुए और हाथों को बड़े हिंसक ढंग से लहराते हुए बोले, 'मुझे इस हत्या के बारे में कुछ नहीं पता... बिलकुल कुछ नहीं... ज़रा भी नहीं!...' ‘शांत हो जाइए। क्या मैंने ऐसा कहा है कि आप पर कुछ जानने का संदेह है?’ फेलुदा ने पूछा।
नहीं, लेकिन आखिरकार तुम कह ही दोगे। मैं बेवकूफ नहीं हूँ। मैं तुम जासूसों को जानता हूँ। मुझे अंतहीन सवालों के जवाब देने का यह पूरा विचार ही पसंद नहीं है। मैं तुम्हें वह सब कुछ बताने जा रहा हूँ जो मुझे पता है। बस मेरी बात सुनो। जब मैं पहली बार यहाँ एक बीमारी के साथ आया था, तो मुझे नहीं पता था कि इसे क्या कहते हैं। डॉ. मुंशी ने मुझे बताया कि यह उत्पीड़न का उन्माद था। मैंने अपने आस-पास के हर व्यक्ति को अपना दुश्मन समझना शुरू कर दिया था, और मेरा मतलब है हर किसी को—परिवार के सभी सदस्यों, पड़ोसियों, सहकर्मियों, सभी को। ऐसा लग रहा था जैसे वे सब घात लगाकर बैठे हों। उनमें से हर कोई मुझ पर हमला कर देगा, बस उन्हें मौका मिल जाए। ऐसा अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था। मुझे यह भी याद नहीं कि यह कब शुरू हुआ। लेकिन मुझे इतना पता है कि यह उस हद तक पहुँच गया था कि मैं रात को सो नहीं पाता था। मैं अपनी आँखें बंद करने की हिम्मत भी नहीं करता था, कहीं नींद में ही मुझ पर हमला न हो जाए।
‘क्या डॉ. मुंशी का इलाज कारगर रहा?’
'हां, लेकिन प्रगति काफी धीमी थी। वह चाहते थे कि मैं यहां कुछ और हफ्तों तक रहूं। फिर उन्होंने कहा कि मैं घर जा सकता हूं। लेकिन अब... सब खत्म हो गया है।'
क्या तुम अभी घर जाओगे?
'हां, जैसे ही पुलिस ने मुझे जाने दिया।'
'शायद आपके पास नौकरी है?'

'हां, मैं पॉपुलर इंश्योरेंस के लिए काम करता हूं।'
‘ठीक है, अब आप जा सकते हैं।’
राधाकांत मल्लिक के जाने के बाद, फेलुदा अकेले शव और हत्या स्थल का मुआयना करने गए। हत्या का हथियार अभी तक नहीं मिला था। इसी बीच पुलिस सर्जन आ गए और उन्होंने बताया कि डॉ. मुंशी की हत्या सुबह चार से पांच बजे के बीच हुई थी। पांडुलिपि नहीं मिली थी, लेकिन पुलिस उसकी तलाश जारी रखे हुए थी। इंस्पेक्टर शोम ने फेलुदा को आश्वासन दिया था कि अगर पांडुलिपि मिल जाती है तो वे तुरंत उन्हें सूचित कर देंगे।
‘क्या श्रीमती मुंशी से बात करना संभव है?’ फेलुदा ने इंस्पेक्टर से पूछा। ‘हाँ, मुझे लगता है। उन्होंने इसे बहुत अच्छे से संभाला है, मुझे कहना पड़ेगा। एक बहादुर महिला!’ हम तीनों श्रीमती मुंशी के कमरे में गए। वह अपने बिस्तर पर दरवाजे की तरफ पीठ करके खिड़की की ओर मुंह करके बैठी थीं। जब फेलुदा ने खुले दरवाजे पर दस्तक दी, तो उन्होंने हमारी तरफ देखने के लिए अपना सिर घुमाया। मैं चौंक गया। श्रीमती मुंशी बिल्कुल अपने भाई जैसी दिखती थीं। क्या वे जुड़वाँ थे?
‘नमस्कार,’ फेलुदा ने कहा। ‘मेरा नाम प्रदोष मित्तर है। मैं एक निजी जासूस हूँ। मैं आपके पति की मृत्यु की जाँच करने आया हूँ। आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें, लेकिन—’
“—आप मुझसे कुछ सवाल पूछना चाहते हैं। क्या यही बात है?”
जी हां, अगर आपको कोई आपत्ति न हो।
श्रीमती मुंशी ने नज़रें फेर लीं। उन्होंने सपाट स्वर में कहा, 'आगे बढ़ो।' उनके चेहरे पर आँसुओं का कोई निशान नहीं था। उनकी आँखें भावहीन थीं। ‘क्या आप इस पूरे दुखद घटनाक्रम के बारे में कुछ कहना चाहेंगे?’
‘मैं क्या कहूँ? इसके लिए उसकी डायरी ही ज़िम्मेदार है, मुझे पूरा यकीन है। मैंने उसे कितनी बार कहा था कि इसे प्रकाशित न करवाए। हमारे समाज के लोग सच्चाई का सामना करना और सच के साथ जीना नहीं सीख पाए हैं। उनमें से कई लोग आहत, क्रोधित और परेशान होते। लेकिन उसने...’
'श्रीमती मुंशी, मैंने वह किताब पढ़ी है जो प्रकाशित होने वाली थी। मुझे नहीं लगता कि उसमें कुछ भी आपत्तिजनक था।'
मुझे यह सुनकर खुशी हुई।
‘क्या आप और श्री बासु जुड़वा हैं?’
'हाँ।'
जब आपने उन्हें यहां स्थायी रूप से आकर रहने का सुझाव दिया, तो आपके पति ने क्या कहा?
वह कुछ अनिच्छा से सहमत हो गया।
'ऐसा क्यों था?'
'वह इस बात को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे कि मेरे भाई के पास नौकरी नहीं है। वह खुद अपनी नौकरी के प्रति इतने समर्पित थे कि वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि कोई बिना नौकरी के कैसे रह सकता है।'
'धन्यवाद, श्रीमती मुंशी। मुझे बस इतना ही जानना था।'

सात
जब हम घर लौटे तब तक बारह बज चुके थे। हमने लालमोहन बाबू को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया और वे मान गए।
‘अद्भुत महिला!’ उन्होंने हमारे पंखे के रेगुलेटर को अधिकतम गति पर घुमाते हुए और अपने पसंदीदा सोफे पर आराम से लेटते हुए कहा। ‘ऐसे समय में भी कितनी शांत और संयमित हैं—और उनके भाई को देखिए! बिलकुल विपरीत हैं, है ना?’ ‘शायद इसीलिए वो अपने भाई से इतना प्यार करती है,’ फेलुदा सोचने लगा। ‘भावनाएँ और संवेदनाएँ एक जटिल मामला हैं, लालमोहन बाबू। मुझे लगता है कि श्रीमती मुंशी अपने भाई के लिए जो महसूस करती हैं, वो सिर्फ सहानुभूति और करुणा से कहीं बढ़कर है। वो एक माँ की तरह रक्षा करती हैं। यह मत भूलिए कि उनके अपने बच्चे नहीं हैं, और न ही वो अपने सौतेले बेटे के करीब हैं। उनका भाई शायद हमेशा से उनके लिए एक बच्चे जैसा रहा है।’
‘इसके अलावा, वे जुड़वा हैं। इसलिए स्वाभाविक रूप से वे एक-दूसरे के करीब हैं।’
'सही।'
‘क्या आपको लगता है कि उसके अपने पति के साथ संबंध बहुत अच्छे नहीं थे?’ ‘मुंशी परिवार से थोड़ी बहुत जान-पहचान के बिना मैं लालमोहन बाबू नहीं कह सकता। मेरे काम में मुझे सिर्फ वही निष्कर्ष निकालने पड़ते हैं जो मैं अपनी आंखों और कानों से सुनता और देखता हूं।’
‘इस मामले में आपके कानों ने आपको क्या बताया?’
मुझे कुछ अजीब लगा।
‘क्या किया?’
‘तुम्हें भी यह बात समझ आ जानी चाहिए थी। मुझे आश्चर्य है कि तुम्हें समझ नहीं आई।’ अब मुझे लगा कि मुझे उसे बताना ही होगा कि मुझे क्या परेशान कर रहा है।
‘क्या ऐसा हो सकता है कि उसने डॉ. मुंशी की डायरी पढ़ी हो? क्या तुम्हारा यही मतलब है, फेलुदा?’
‘शाबाश, टॉपशे! मुझे तो उसकी बातों से यही आभास हुआ।’
‘अरे, फेलू बाबू, डॉ. मुंशी तो उसे सीधे-सीधे बता सकते थे कि उन्होंने अपनी डायरी में क्या लिखा था। आपको कैसे पता कि उसने उसे पढ़ा था?’
'हो सकता है उसने न पढ़ा हो। लेकिन बात तो एक ही है, है ना? मुद्दा यह है कि उसे पता है कि उस डायरी में क्या लिखा था।'
'फेलू बाबू' की पांडुलिपि पढ़कर मुझे एक बात समझ में आई। डॉ. मुंशी को अपनी पत्नी से बहुत स्नेह था। पहले ही पन्ने से यह साबित हो जाता है। मेरा मतलब है, अगर उन्हें अपनी पत्नी से कोई लगाव नहीं था, तो उन्होंने अपनी किताब उन्हें समर्पित क्यों की?'

'हां, यह एक अच्छा मुद्दा है।'
‘मैंने एक और बात समझी। आप जानते हैं, मैं अपने कानों का भी इस्तेमाल करता हूँ। डॉ. मुंशी के बेटे को शायद लगता होगा कि उसके पिता ने उसे नज़रअंदाज़ किया और उसकी परवाह नहीं की। लेकिन वे अपने सचिव के प्रति दयालु और उदार थे। तो वे पूरी तरह से लापरवाह इंसान तो नहीं हो सकते थे, है ना?’
'अच्छा, अच्छा!' फेलुदा ने कुछ अनमने ढंग से कहा और इधर-उधर टहलने लगा।
एक मिनट बाद, लालमोहन बाबू ने पूछा, 'अब तुम्हें क्या परेशान कर रहा है?' बस इतना ही: इन तीनों में से सिर्फ एक नाम ऐसा है जिसे हम नहीं जानते। आर कौन है? जब तक मुझे पता नहीं चल जाता कि वह कौन है, मेरी जांच पूरी नहीं हो सकती। लेकिन मुझे लगता है कि मुझे पता लगाना ही होगा...
फेलुदा की बातचीत टेलीफोन की घंटी से बाधित हुई। यह एक नया फोन था। इसकी घंटी पुराने वाले से ज़्यादा तेज़ और तीखी थी। फेलुदा ने फोन उठाया।
यह एक अविश्वसनीय बातचीत थी, फेलुदा द्वारा वर्णित टेलीपैथी का एक सटीक उदाहरण। बातचीत कुछ इस प्रकार हुई:
'नमस्ते।'
‘श्री मिटर?’
'बोला जा रहा है।'
‘यह आर है। मुंशी की डायरी में मौजूद आर।’
'क्या!'
'हाँ।'
‘ओह। ओह, मैं समझ गया। लेकिन आप मुझे क्यों फोन कर रहे हैं? आपको डॉ. मुंशी के साथ मेरे संबंध के बारे में कैसे पता चला?’
‘तुम आज सुबह उसके घर गए थे, है ना?’
'हां, मैंने बिल्कुल किया। आज सुबह तड़के उसकी हत्या कर दी गई। इसीलिए मैं वहां था।'
‘आप तो काफी जाने-माने व्यक्ति हैं, श्री मिटर। मुंशी के एक पड़ोसी ने आपको घर में जाते देखा और पहचान लिया। संयोग से, यह पड़ोसी मेरा एक मरीज है। अरे, क्या आपको नहीं पता था कि मैं भी डॉक्टर हूँ? जी हाँ, मैं हूँ; और मैंने इस मरीज से लगभग एक घंटे पहले ही मुलाकात की थी। जब उसने आपको देखने की बात कही, तो मैंने अंदाज़ा लगा लिया कि आप मुंशी के यहाँ काम करते होंगे।’ ‘क्या आप कृपया मुझे अपना असली नाम बताएँगे?’
नहीं। यह बात गुप्त रहनी चाहिए। लेकिन मैं जानना चाहता हूँ कि मुंशी ने मेरे बारे में क्या कहा।
उन्होंने कहा कि वे आपको अच्छी तरह जानते हैं और उन्होंने आपको अपनी डायरी के प्रकाशन के बारे में बताया था। उन्होंने कहा कि आपको उनके द्वारा आपके मामले का उल्लेख करने और आपको आर कहकर संबोधित करने पर कोई आपत्ति नहीं थी।
‘बकवास! ये तो सरासर झूठ है। वो मुझसे बात कैसे कर सकते थे? मैं तो यहाँ था ही नहीं! मैं तो परसों ही लंबे समय बाद कलकत्ता लौटा हूँ। टेलीग्राफ के पुराने अंक देखते हुए मुझे एक खबर मिली जिसमें लिखा था कि पेंगुइन उनकी डायरी प्रकाशित करने जा रहा है। इससे मैं चिंतित हो गया। मैं जानता था कि

उन्हें अपने मरीजों की निजी बातों की कितनी गहरी जानकारी थी, जिनमें मेरी भी शामिल थी। इसलिए मैंने उन्हें फोन किया और सीधे-सीधे पूछा कि क्या उन्होंने मेरे मामले का जिक्र किया है। उन्होंने मुझे तसल्ली देने की कोशिश की और कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उन्होंने सिर्फ मेरे नाम का पहला अक्षर इस्तेमाल किया था। लेकिन ये काफी नहीं था। चौबीस साल पहले, जब मुझे मुंशी से सलाह लेनी पड़ी थी, तब मैं खुद एक डॉक्टर था। जिन मरीजों का मैं तब इलाज करता था, वे आज भी मेरे पास आते हैं। इसकी क्या गारंटी है कि मुंशी की किताब पढ़ने के बाद वे मुझे पहचान नहीं पाएंगे?’ ‘मैंने किताब पढ़ ली है,’ फेलुदा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘और मुझे नहीं लगता कि आपको किसी बात से डरने की जरूरत है।’
'मिस्टर मिटर, मैं किसी की बात पर भरोसा नहीं करता। मैंने मुंशी से कहा था कि मैं उसकी पांडुलिपि पढ़ना चाहता हूं और खुद तय करना चाहता हूं कि मैं किसी खतरे में हूं या नहीं। मैंने कहा था कि अगर वह मुझे पांडुलिपि नहीं सौंपता है, तो मैं उसके काले अतीत के बारे में सब कुछ उजागर कर दूंगा।' ‘क्या! तुम क्या बात कर रहे हो?’
जी हाँ, महोदय। मुंशी और मैं साथ में लंदन में चिकित्सा की पढ़ाई करने गए थे। हमारे विषय अलग-अलग थे, लेकिन हम अच्छे दोस्त थे। मैंने मुंशी के चरित्र का एक ऐसा पहलू देखा है जो यहाँ किसी ने नहीं देखा। वह शराब पीने लगा, बुरी संगत में पड़ गया और खुद को और अपने करियर दोनों को बर्बाद कर देता; लेकिन मैंने उसे सही राह दिखाई। आखिरकार, कलकत्ता वापस आकर और वकालत शुरू करने के बाद, वह सही रास्ते पर लौट आया।
‘आप पांडुलिपि लेने के लिए डॉ. मुंशी के घर गए थे?’
जी हाँ, महोदय। कल रात ग्यारह बजे। मैंने उनसे कहा था कि मैं इसे दो दिन में लौटा दूँगा। लेकिन अब मुझे लगता है कि इसकी आवश्यकता नहीं होगी। ‘क्यों नहीं? आपका क्या मतलब है? वह पांडुलिपि प्रकाशकों को सौंपते ही प्रकाशित हो जाएगी। क्या आपने मरणोपरांत प्रकाशनों के बारे में नहीं सुना है?’
'बिल्कुल मैंने पढ़ा है। लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं होगा। मैंने पूरी बात पढ़ ली है, श्री मिटर। मैं नहीं चाहता कि यह छपे, और यह मेरे पास ही रहेगी। अलविदा।'
फेलुदा ने धीरे से रिसीवर नीचे रख दिया। उसका चेहरा गंभीर दिख रहा था। 'यह... यह तो सरासर झटका था, है ना? मुझे विश्वास नहीं हो रहा! उस आदमी के पास पांडुलिपि है, और मैं कुछ नहीं कर सकता। इसके अलावा, यह इतनी अच्छी तरह से लिखी गई किताब थी। अब यह कभी प्रकाशित नहीं होगी।'
‘फेलू बाबू, किताब की चिंता छोड़ो,’ लालमोहन बाबू ने थोड़ा चिढ़कर कहा। ‘हत्या तो ज़्यादा ज़रूरी है ना?’
लेकिन आपने किताब पढ़ी है, आपको पता होना चाहिए...
'हां, हां, मुझे पता है कि आप सही हैं। लेकिन जहां हत्या हुई हो, वहां और कुछ मायने नहीं रखना चाहिए।'

श्रीनाथ ने आकर बताया कि दोपहर का भोजन परोसा जा चुका है। लालमोहन बाबू ने बड़े चाव से अपना भोजन किया। उन्होंने झींगा करी का दूसरा भाग लेते हुए कहा, 'आपका रसोइया तो कमाल का है!' फेलुदा पूरे भोजन के दौरान चुप रहे। उसके बाद हमने पान खाया और बैठक में लौट आए। फोन फिर बजने लगा। इंस्पेक्टर शोम का फोन था। मैंने रिसीवर फेलुदा को दे दिया। रिसीवर वापस रखने से पहले उन्होंने सिर्फ दो बातें कहीं: 'तो फिर, यह अंदरूनी साजिश लगती है!' और 'बहुत दिलचस्प, मैं थोड़ी देर में आ रहा हूँ।'
मैंने उससे पूछा, 'तुम कहाँ जा रहे हो?' उसने फोन नीचे रखा और सिगरेट का पैकेट और लाइटर उठाया।
उन्होंने उत्तर दिया, 'मुंशी महल।'
‘आपने इसे अंदरूनी साजिश क्यों कहा?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘क्योंकि एक नौकरानी ने पता लगाया है कि उनके हाथ से चलने वाले चक्की की भारी लोहे की छड़ गायब है। हत्या के लिए एक उत्तम हथियार।’
और इसमें इतना दिलचस्प क्या है?
पुलिस को एक और डायरी मिली है। यह इस साल 1 जनवरी से शुरू हुई थी, और आखिरी प्रविष्टि डॉ. मुंशी की मृत्यु से एक दिन पहले की गई थी। चलो, चलते हैं!

आठ
पेंगुइन पत्रिका द्वारा प्रकाशित की जाने वाली डायरी दिसंबर 1989 में समाप्त हुई थी। डॉ. मुंशी के शयनकक्ष में पुलिस को जो डायरी मिली, वह 1 जनवरी 1990 से 13 सितंबर तक की थी, जिसका अर्थ है कि उन्होंने अपनी हत्या से कुछ घंटे पहले ही अंतिम प्रविष्टि की थी। डायरी संभवतः बिस्तर के पास रखी मेज पर रखी थी और किसी तरह बिस्तर और मेज के बीच फिसल गई थी। एक कांस्टेबल को वह फर्श पर पड़ी मिली थी।
फेलुदा ने इंस्पेक्टर से वह डायरी ली, उसे खोला और पहले ही पन्ने पर कुछ ऐसा पाया जिसने उसे बेहद उत्सुक कर दिया। उसने पन्ने को घूरते हुए भौंहें चढ़ाईं, फिर उसे बंद किया और शंकर मुंशी की ओर मुड़ा। 'क्या आपको पता था कि आपके पिता डायरी लिखना जारी रखे हुए थे?'
नहीं, लेकिन इससे मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। आखिरकार, उन्होंने चालीस वर्षों तक प्रतिदिन अपनी डायरी में प्रविष्टियाँ की थीं। उनके रुकने का कोई कारण नहीं था।
क्या श्री चक्रवर्ती को इस डायरी के बारे में पता था?
मुझे नहीं पता। आप उनसे क्यों नहीं पूछते?
हम सब बैठक कक्ष में बैठे थे। श्री चक्रवर्ती एक मिनट बाद वहाँ पहुँचे। नई डायरी के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, 'डॉ. मुंशी सोने से ठीक पहले हर रात अपनी डायरी में लिखते थे। इसीलिए यह उनके शयनकक्ष में मिली। नहीं, मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा था।'
‘कृपया बैठ जाइए, श्री चक्रवर्ती।’
सुखामॉय चक्रवर्ती थोड़ा अचंभित होकर बैठ गए। जाहिर है, फेलुदा के पास उनसे पूछने के लिए और भी सवाल थे।
फेलुदा ने कहा, ‘श्री चक्रवर्ती, आप तो यही चाहते हैं कि डॉ. मुंशी के हत्यारे को पकड़ा जाए और उसे सज़ा दी जाए, है ना? मेरा कर्तव्य है उस अपराधी को ढूंढना। अब मेरे पास यह मानने का कारण है कि हत्यारा इसी घर में मौजूद है। मैं आप सभी से बात कर चुका हूँ। लेकिन उससे मुझे वह सब कुछ पता नहीं चला जो मुझे जानना ज़रूरी था। शायद मैंने सही सवाल नहीं पूछे, या शायद आप सभी ने मुझे सच नहीं बताया। मैंने आपसे पहले एक बात नहीं पूछी थी। मैं अब पूछना चाहता हूँ।’
'हाँ?'
'कुछ ऐसा है जो हम सभी को काफी अजीब लगा है।'
'क्या?'
शंकर मुंशी के अनुसार, उनके पिता को केवल अपने मरीज़ों और अपने लेखन की ही चिंता रहती थी। आप उनके मरीज़ नहीं हैं; लेकिन वे हमेशा आपके प्रति अत्यंत दयालु रहे हैं। मैंने उनकी पांडुलिपि में पढ़ा कि पाँच साल पहले आपको

अपेंडिक्स की समस्या हुई थी और आपकी सर्जरी हुई थी। फिर आप दस दिनों के लिए पुरी में आराम करने गए थे। डॉ. मुंशी ने आपके चिकित्सा बिलों के साथ-साथ पुरी में आपके रहने का खर्च भी उठाया था। ऐसा क्यों? आखिर वे आपके प्रति इतने पक्षपाती क्यों थे?
'मुझें नहीं पता।'
श्री चक्रवर्ती के उत्तर आने से पहले एक क्षण का विराम था। फेलुदा ने इसे गौर से देखा। 'श्री चक्रवर्ती, कृपया मुझे सच बता दें, या कम से कम मुझसे इसे छुपाना बंद कर दें, तो मेरा काम बहुत आसान हो जाएगा,' उसने दोहराया। इस बार श्री चक्रवर्ती ने तुरंत जवाब दिया। उन्होंने कहा, 'मैं आपको सच बता रहा हूं, श्री मित्तर।'
फेलुदा के पास अब कोई सवाल नहीं था। लालमोहन बाबू ने हमें घर तक छोड़ा और हाथ हिलाकर और संक्षेप में 'कल सुबह!' कहकर चले गए।
फेलुदा सीधे अपने कमरे में गए और दरवाजा बंद कर लिया। अब उन्हें नई डायरी पढ़नी थी और उन्हें कोई परेशान नहीं करना था। साढ़े तीन बज रहे थे। मैंने अगला एक घंटा बैठक में, पूरी रफ्तार से घूम रहे पंखे के नीचे लेटकर, नेशनल ज्योग्राफिक में अंटार्कटिका पर छपे एक बेहद दिलचस्प लेख को पढ़ते हुए बिताया। उसमें कुछ खूबसूरत तस्वीरें थीं।
साढ़े चार बजे श्रीनाथ दो कप चाय लेकर आए। उन्होंने एक कप मुझे दिया और दूसरा फेलुदा को दे दिया। लेकिन श्रीनाथ के दरवाजा खटखटाते ही फेलुदा बाहर आ गए और बोले, 'कोई बात नहीं श्रीनाथ, मैं अपनी चाय बैठक में पी लूंगा।' जाहिर है, उसने डायरी पढ़ना समाप्त कर लिया था। मैंने पूछा, 'क्या तुम्हें कुछ उपयोगी मिला?' फेलुदा सोफे पर बैठ गया, अपनी जेब से डायरी और सिगरेट का पैकेट निकाला और फिर अपने कप से एक घूंट पिया।
उन्होंने कहा, 'इन हिस्सों को सुनो। इससे तुम्हें सोचने के लिए कुछ सामग्री मिल सकती है।'
मैंने देखा कि उसने कुछ पन्नों पर निशान लगा रखे थे। धीरे-धीरे फेलुदा ने सिगरेट जलाई, गहरी सांस ली और डायरी खोली।
इसे सुनो। यह प्रविष्टि तीन सप्ताह पहले की गई थी:
आज एक नया मरीज़ आया। राधाकांत मल्लिक। मेरे कमरे में आते ही उसने सबसे पहले अपनी जेब से एक कागज़ निकाला, मेरी तरफ़ और उस कागज़ को कुछ देर तक घूरा, फिर उसे मसलकर कूड़ेदान में फेंक दिया। जब मैंने उससे पूछा कि यह क्या है, तो उसने बताया कि यह मेरे बारे में एक रिपोर्ट है, जिसमें मेरी तस्वीर भी है, जो टेलीग्राफ़ में छपी थी। मैंने कहा, "क्या आप यह पक्का करना चाहते थे कि आप सही व्यक्ति के पास आए हैं?" मल्लिक भड़क उठा। "मैं किसी पर भरोसा नहीं करता। बिल्कुल किसी पर नहीं। ज़ाहिर है मुझे यह पक्का करना ही था। मुझे हर बार, हर समय यह पक्का करना ही पड़ता है!" उसने कहा। मुझे लगता है यह उत्पीड़न का उन्माद है।
दूसरी प्रविष्टि चार दिन बाद की गई थी:
राधाकांत मल्लिक एक समस्या बन गया है। वह अपने ही घर में नहीं रह सकता। वह अपने पिता, भाई, पड़ोसियों, लगभग हर किसी से डरा हुआ है जिसे वह जानता है।
यह एक मुश्किल मामला है। मैंने उससे कहा है कि जब तक वह ठीक नहीं हो जाता,

नौ
फेलुदा अगले दिन सुबह आठ बजे रवाना हुआ और ढाई बजे लौटा। मैंने उससे यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि उसका मिशन सफल रहा या नहीं, लेकिन मैंने उसकी हरकतों में एक दबी हुई उत्तेजना देखी। क्या यह सफलता का संकेत था, या असफलता का?
मेरे सवाल के जवाब में उन्होंने कहा, ‘जी हां, मैंने दोपहर का खाना खा लिया है, और अब मुझे कुछ फोन करने हैं।’ उन्होंने पहले शंकर मुंशी को फोन किया, फिर इंस्पेक्टर शोम को। दोनों को एक ही संदेश दिया गया: इस मामले से जुड़े सभी लोग कल सुबह दस बजे डॉ. मुंशी के घर के बैठक कक्ष में इकट्ठा हों। फेलुदा ने घंटी बजाई, चारमीनार जलाई और पैर फैलाए। 'मुंशी की तरह, मेरा भी यही कहने का मन करता है: मैं कितना बड़ा भ्रम में था! रहस्य की हर कुंजी मेरे सामने थी, फिर भी मैं कुछ नहीं देख पा रहा था।'
‘क्या...क्या अपराधी कोई जाना-पहचाना व्यक्ति है?’ मैंने थोड़ी झिझक के साथ पूछा। ‘हाँ,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘चूँकि आप स्पष्ट रूप से बहुत उत्सुक हैं, तो चलिए मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछता हूँ। यदि आप उनका सही उत्तर दे सकते हैं, तो शायद आप स्वयं ही रहस्य सुलझा सकते हैं।’
'पहला सवाल: मैंने आपको जो प्रविष्टियाँ पढ़कर सुनाईं, उनके बारे में आपका क्या विचार था? क्या उनमें कुछ खास था?'
'खैर, मुझे यह थोड़ा अजीब लगा कि उसने अपनी डायरी में मरने से एक रात पहले तक लिखा, लेकिन उसमें आर के फोन कॉल या उसके आगमन का कोई जिक्र नहीं था।' 'उत्कृष्ट। दूसरा प्रश्न: 'निमज्जन' शब्द से आपके मन में क्या भाव आता है?' ‘पानी। क्या कोई चीज़ पानी में फेंकी गई है?’
‘अच्छा। तीसरा: प्रतिशोध क्या है?’
‘दुश्मन?’
'हां। यह एक ग्रीक शब्द है।'
मुझे ग्रीक भाषा कैसे सीखनी चाहिए?
‘आपको यह किसी भी अंग्रेजी शब्दकोश में मिल जाएगा। प्रतिशोध का अर्थ है कर्मों का फल। कोई व्यक्ति अपराध कर सकता है और किसी तरह कुछ समय के लिए, या कुछ वर्षों तक भी, सजा से बच सकता है... लेकिन एक दिन, अपराधी को उसके कर्मों का फल मिलता है। इसे ही कर्मों का फल कहते हैं। ए, जी और आर इसी कर्मों के फल से डरते थे।’
मुझे यह विचार बहुत दिलचस्प लगा, इसलिए जब फेलुदा ने आगे कुछ नहीं पूछा, तो मैंने उनसे पूछा: 'क्या कुछ और है?'
मैं आपको बस एक और बात बताऊंगा। अगर मैंने इससे ज्यादा कुछ कहा, तो आपको कल के लिए मैंने जो नाटक रचा है, उसका आनंद नहीं मिलेगा।
'ठीक है।'

क्या आपने यह कहावत सुनी है, "चिकित्सक, पहले अपना इलाज खुद करो"?
'हाँ।'
‘तो बस इतना ही जानना काफी है।’
यह बात समझ में नहीं आई, लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ पूछ पाता, जटायु आ गया। ‘हम किस स्तर पर पहुंच गए हैं, फेलू बाबू?’ उन्होंने पूछा।
‘अंतिम से पहले वाला।’
‘जुर्माना—क्या?’
'अरे, क्या यह शब्द आपके लिए बहुत बड़ा है? पेनल्टीमेट का मतलब होता है आखिरी से एक पहले वाला।'
‘ठीक है। हम अंतिम चरण तक कब पहुंचेंगे?’
‘कल सुबह। मुंशी महल में दस बजे पर्दा उठेगा।’
और यह कब गिरेगा?
'मान लीजिए, आधे घंटे बाद।'
‘हमारे पास चार संदिग्ध हैं, है ना?’
'हां—हां, शायद, शायद, और।'
'गंभीर रहो, फेलू बाबू। वहाँ शंकर, सुखमोय, राधा हैं-' फेलूदा ने हाथ उठाया। 'रुको, लालमोहन बाबू। कहें, और नहीं। इस विषय पर आगे की सभी चर्चा बंद है।' 'सच में? अच्छा, तो मैं बस इतना कहना चाहता हूँ, फेलू बाबू। कल नाटक का क्लाइमेक्स मैं ही देने वाला हूँ। यह आप नहीं दे सकते।'
'अब तो मेरी जिज्ञासा बढ़ गई है; थोड़ी सी चिंता भी हो रही है।'
नहीं, घबराने की कोई बात नहीं है। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि तालियों की गड़गड़ाहट सबसे ज़्यादा आपको ही मिलेगी। आप यकीनन सबकी नज़रें अपनी ओर खींच लेंगे। लेकिन मैं भी एक छोटा-सा स्टार बनकर अपने लिए थोड़ी-सी तालियाँ बटोरने वाला हूँ। ये मेरा वादा है!
सुबह हुई भारी बारिश से हमारी गली में आंशिक रूप से पानी भर गया था, लेकिन फिर भी लालमोहन बाबू सुबह साढ़े नौ बजे छाता बगल में दबाए, कंधे पर थैला लटकाए और चेहरे पर मुस्कान लिए आ गए। अंदर आते ही उन्होंने मुझसे कहा, 'तपेश भाई, अपने रसोइए से कहिए कि आज दोपहर खिचड़ी बना दे। मुझे लगता है कि आज सुबह का सारा ड्रामा खत्म होने के बाद मैं फिर आपके साथ खाना खाऊंगा।' ‘ज़रूर, आपका हार्दिक स्वागत होगा,’ मैंने कहा और श्रीनाथ को बताने के लिए चला गया।
हमने जल्दी से एक कप चाय पी और निकल पड़े, और पौने दस बजे स्विनहो स्ट्रीट पहुँचे। पुलिस पहले से ही वहाँ मौजूद थी। इंस्पेक्टर शोम ने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया। उन्होंने कहा, 'सुप्रभात!' 'मैं आपका अंदाज़ जानता हूँ, श्री मिटर। इसलिए मैंने सबको सीधे बैठक कक्ष में जाने को कहा। मुझे बस इस बात का संदेह था कि क्या आप श्रीमती मुंशी को भी अपने श्रोताओं में शामिल करना चाहेंगे।'
नहीं। वास्तव में, मैं तो यही चाहूँगा कि वह अनुपस्थित ही रहे।
भूतल पर लगी एक बड़ी दीवार घड़ी ने सबके बैठते ही दस बजने की सूचना दे दी। फेलुदा उठे, कमरे में चारों ओर नज़र घुमाई और आखिरी घंटी की आवाज़ थमने तक इंतज़ार किया। फिर उन्होंने बोलना शुरू किया।

सबसे पहले, मैं शंकर मुंशी से एक प्रश्न पूछना चाहूंगा।
श्री मुंशी कमरे के दूसरी तरफ बैठे थे। उन्होंने बिना कुछ कहे फेलुदा की ओर देखा।
फेलुदा ने आगे कहा, “उस दिन जब मैंने कहा कि आपके पिता ने अपनी डायरी में आपका ज़िक्र किया है, तो आप हैरान रह गए। और जब मैंने कहा कि उन्होंने आपके बारे में वही लिखा होगा जो उन्हें सच लगा होगा, तो आप चिढ़ गए और बोले, “मुझे समझ नहीं आता कि मेरे पिता मुझे कैसे जान पाए, जबकि वे तो हमेशा अपने मरीज़ों के बारे में ही सोचते थे!” अब बताइए, श्री मुंशी, आपने ऐसा क्यों मान लिया कि आपके पिता ने आपके बारे में सिर्फ़ बुरी बातें ही लिखी होंगी? मैंने कुछ नहीं कहा।”
'मेरे पिता ने मेरी उपस्थिति में कभी मेरी प्रशंसा नहीं की, न ही मेरे बारे में कोई अच्छी बात कही।'
‘क्या उसने खुलेआम आपकी आलोचना की? आपने जो कुछ भी किया, उसमें उसने खामियां निकालीं?’
नहीं। उन्होंने वह भी नहीं किया।
तो फिर आप इस बात को लेकर इतने निश्चित कैसे हो सकते हैं कि वह वास्तव में आपके बारे में क्या सोचता था?
क्योंकि एक बेटे के लिए यह समझना मुश्किल नहीं होता कि उसके पिता उसके बारे में कैसा महसूस करते हैं। मैं आसानी से अनुमान लगा सकता हूँ।
“बहुत खूब। अब मैं किसी और बात पर आता हूँ। मैं कल दोपहर यहाँ अकेला आया था और आपके कुछ नौकरों से बात की। उनमें आपका माली, गिरिधारी भी था। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने आपको डॉ. मुंशी का शव मिलने से पहले सुबह-सुबह घर से निकलते देखा था। गिरिधारी ने बताया कि उसने देखा था। फिर मैंने उससे पूछा कि क्या आपके हाथ खाली थे या क्या उसने आपको कुछ ले जाते हुए देखा था। गिरिधारी ने बताया कि आपके हाथ में एक ब्रीफकेस था। एक काले चमड़े का ब्रीफकेस। उसमें क्या था, श्री मुंशी?”
शंकर मुंशी ने कोई जवाब नहीं दिया। उनकी सांसें तेज चलने लगीं।
क्या मैं सबको बता दूं कि उसमें क्या था?
फिर भी श्री मुंशी ने कोई जवाब नहीं दिया। फेलुदा ने आगे कहा, 'यह तुम्हारे पिता की पांडुलिपि थी, है ना? यह सच है कि तुम झील के किनारे अपने डॉक्टर को ढूंढने जा रहे थे। लेकिन उनसे मिलने से पहले या बाद में, तुमने वह पांडुलिपि झील में फेंक दी। और ऐसा करने का कारण यह था कि तुम्हारे पिता ने तुम्हारी प्रशंसा में एक शब्द भी नहीं लिखा था। उन्होंने—'
इस बार शंकर मुंशी बोले। उनकी आवाज़ फेलुदा से भी ऊँची थी: ‘हाँ, हाँ!’ वे चिल्लाए। ‘अगर वह किताब छप जाती, तो मैं कभी कहीं अपना चेहरा नहीं दिखा पाता। इससे मेरी नौकरी, मेरा पूरा जीवन प्रभावित होता। उन्होंने मुझे मूर्ख, गैर-जिम्मेदार, उद्यमहीन, पहल और कल्पना से रहित कहा था…’
ठीक है। चूंकि आपने यह सब स्वीकार कर लिया है, तो कृपया इसकी पुष्टि करें: क्या आपने ही मुझे घर पर फोन किया था और आर होने का नाटक किया था? आपने अपनी आवाज बदल ली और मुझसे झूठ का पुलिंदा बोला, ताकि आप पर कभी कोई शक न हो। क्या यह सही है?

शंकर मुंशी उठ खड़े हुए। फेलुदा की बातों पर उनका चेहरा भावहीन हो गया और वे एक बार फिर अपनी कुर्सी पर बैठ गए। उनसे किसी उत्तर की अपेक्षा नहीं थी।
‘ठीक है। आर के विषय पर चर्चा करते हुए, आइए इस पर थोड़ी देर और विचार करें।’ फेलुदा ने सुखामॉय चक्रवर्ती की ओर रुख किया।
मेरा अगला सवाल आपसे है।
'हाँ?'
कल मुझे एक अजीब सी आशंका हुई और मैं 37 बेल्टोला रोड गया। आपने मुझे बताया था कि आपकी मां और आपकी मौसी इसी पते पर रहती हैं। मैं आपके परिवार से बात करना चाहता था क्योंकि मुझे लगा कि आप मुझसे कुछ छिपा रहे हैं। खैर, मैंने आपकी मां से बात की। उन्होंने मुझे बताया कि आपके पिता की मृत्यु चौबीस साल पहले हो गई थी। एक वाहन चालक ने उन्हें टक्कर मार दी थी। क्या डॉ. मुंशी को इस बात की जानकारी थी?
श्री चक्रवर्ती फर्श की ओर देख रहे थे। उन्होंने बिना आंखें उठाए जवाब दिया, 'हां, उन्होंने पूछा था। जब उन्होंने इस नौकरी के लिए मेरा इंटरव्यू लिया, तो उन्होंने मुझसे पूछा कि मैंने अपने पिता को कब और कैसे खोया। मैंने उन्हें बताया।'
बहुत खूब। अब मैं आपको एक और बात बताता हूँ। यह इस बात का उदाहरण है कि कैसे सबसे सतर्क और सावधान व्यक्ति भी कुछ बातों को नज़रअंदाज़ कर सकता है। जब शंकर मुंशी पहली बार मेरे घर आया, तो उसने मुझे बताया कि वह डॉ. राजेन मुंशी का बेटा है। अब, "राजेन" नाम मेरी स्मृति से पूरी तरह गायब हो गया। मैं मृतक को केवल डॉ. मुंशी के रूप में ही याद करता रहा। परसों, जब मैंने पुलिस द्वारा बरामद की गई उसकी नवीनतम डायरी पढ़ना शुरू किया, तो मैंने पहले पृष्ठ पर उसका पूरा नाम देखा। तभी अचानक मुझे यह बात समझ में आई कि उसकी पांडुलिपि में 'आर' शायद स्वयं राजेन मुंशी का ही नाम था। चौबीस साल पहले राजेन मुंशी ने एक आदमी को गाड़ी से कुचल दिया था, लेकिन वह पकड़ा नहीं गया था और उसे सज़ा नहीं मिली थी। इतने वर्षों बाद, उसी मृतक का बेटा नौकरी के लिए उसके पास आया था।
‘नहीं, नहीं, नहीं!’ श्री चक्रवर्ती चिल्लाए। ‘आप गलत हैं, सरासर गलत! मेरे पिता के हत्यारे को गिरफ्तार कर सजा दी गई थी। वह राजेन मुंशी नहीं था।’ ‘नहीं? क्या डॉ. मुंशी को यह पता था?’
नहीं। जब तक... जब तक उसकी मृत्यु से ठीक एक रात पहले तक नहीं। उस रात तक, वह मेरे पिता की मृत्यु के लिए खुद को जिम्मेदार मानता रहा था।
उन्हें सच्चाई का पता कैसे चला?
उन्होंने मुझे अपने दफ्तर में बुलाया और कहा कि उन्हें एक बात कबूल करनी है। वे अब अपने अपराधबोध का बोझ और नहीं सह सकते थे। ज़रा सोचिए, जब मैंने उन्हें बताया कि मेरे पिता का हत्यारा कोई और था, तो उन्हें कितना आश्चर्य हुआ होगा। डॉ. मुंशी का अनुमान बिल्कुल गलत था, और उन्होंने वर्षों तक बेवजह कष्ट सहा था। लेकिन इसी से यह बात समझ में आई कि वे मेरे प्रति इतने दयालु क्यों थे।
कमरे के दूसरे कोने से किसी की फीकी हंसी सुनाई दी। वह शंकर मुंशी थे।
‘क्या आप कुछ कहना चाहेंगे?’ फेलुदा ने पूछा।

'अगर मैं ऐसा नहीं करता, श्रीमान मिटर, तो आप गलत रास्ते पर चलते रहेंगे।' 'इसका क्या मतलब है?'
मेरे पिता ने अपने जीवन में कभी गाड़ी नहीं चलाई।
‘मुझे इसकी जानकारी है, श्री मुंशी। मैंने आपके ड्राइवर और आपके माली से भी बात की है।’
ड्राइवर ने क्या कहा?
‘वह तीस साल से आपके परिवार के लिए काम कर रहा है। इतने समय में, वह सिर्फ़ एक दुर्घटना में शामिल हुआ है। वह भी सिर्फ़ इसलिए हुई क्योंकि डॉ. मुंशी जल्दी में थे। इसलिए उन्होंने ड्राइवर को तेज़ गाड़ी चलाने को कहा, जबकि सड़क पर काफ़ी लोग थे। जब एक आदमी को गाड़ी ने कुचल दिया—ड्राइवर ने, आपके पिता ने नहीं—डॉ. मुंशी को लगा कि इसमें उनकी भी कुछ गलती है। इसलिए उन्होंने अपने ड्राइवर को बचाने के लिए हर संभव कोशिश की। हालाँकि, कानून ने उसे सज़ा नहीं दी, लेकिन बेचारे ड्राइवर का ज़मीर उसे इतना कचोट रहा था कि वह लगभग मानसिक रूप से टूट गया था। वह अपने किए पर लगातार पछतावा और खुद के लिए डर के साथ नहीं जी सकता था। डॉ. मुंशी ने उसका इलाज किया, और आखिरकार वह ठीक हो गया और अपनी पुरानी नौकरी पर लौट गया। आपके पिता ने अपनी डायरी में जो लिखा था, वह घटना का एकदम सटीक विवरण था। R का मतलब राजेन नहीं, बल्कि रघुनांदन था। क्या आपके ड्राइवर का नाम यही है? रघुनांदन तिवारी?’ ‘जी हाँ, लेकिन मेरे पिता को किसने मारा?’ श्री मुंशी ने अधीरता से चिल्लाकर कहा। ‘मैं उसी पर आ रहा हूँ, श्री मुंशी। एक बार में एक ही बात।’ अब फेलुदा की नज़र शंकर मुंशी से हटकर एक दूसरे व्यक्ति पर पड़ी। उन्होंने कहा, ‘इस कमरे में एक व्यक्ति है, जिसे मानसिक रोगी बताया जा रहा है। हम उससे पहले दो बार मिल चुके हैं; और हर बार उसने हमें यह समझाने की कोशिश की है कि वह बीमार है। लेकिन आज, मैं देख सकता हूँ कि उसके व्यवहार में कोई असामान्यता नहीं है। श्री मल्लिक, आपका उन्माद अचानक कैसे गायब हो गया?’
राधाकांत मल्लिक को ऐसा झटका लगा जैसे उन्हें बिजली का झटका लगा हो। 'क्या... आप क्या कहना चाह रहे हैं?'
'श्री मल्लिक, मेरा कहने का मतलब यह है कि मैंने जिन लोगों से पूछताछ की, उनमें से लगभग सभी ने या तो झूठ बोला, या फिर आधा सच बताया। इस मामले में तो आप हद ही पार कर चुके हैं।'
श्री मल्लिक फेलुदा को घूरते रहे, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। फेलुदा ने आगे कहा, 'आपने मुझे बताया था कि आप पॉपुलर इंश्योरेंस में काम करते हैं। मैं वहां जाकर पता करने गया, लेकिन उन्होंने कहा कि आपने चार महीने पहले नौकरी छोड़ दी थी। क्या आप कहीं और काम कर रहे थे? वहां किसी को पता नहीं था, लेकिन उन्होंने मुझे आपका पता दिया। सतीश मुखर्जी रोड, है ना?' श्री मल्लिक अभी भी चुप थे, सीधे आगे की ओर देख रहे थे।
फेलुदा ने आगे कहा, ‘यह मामला आश्चर्यों से भरा था। आपने डॉक्टर मुंशी को बताया था कि आप अपने पिता और भाई समेत सभी से डरते हैं। लेकिन जब मैं आपके घर गया, तो मुझे वहाँ सिर्फ आपकी माँ मिलीं। उन्होंने मुझे बताया कि आपके पिता की मृत्यु लगभग पच्चीस साल पहले हो गई थी और आपका कोई भाई नहीं था।

उन्हें लगता था कि आप थिएटर में शामिल हो गए हैं और फिलहाल अपने समूह के साथ दौरे पर हैं!’
अब श्री मल्लिक ने बोलना शुरू किया। ‘मैंने कभी यह दावा नहीं किया कि मैंने हमेशा सच बोला है। लेकिन आप क्या कहना चाह रहे हैं? क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि मैं हत्यारा हूँ?’
‘श्री मल्लिक, मैं धीरे-धीरे कदम बढ़ाना पसंद करता हूँ, छलांग लगाकर नहीं। आप हत्यारे हैं या नहीं, इस पर हम बाद में चर्चा कर सकते हैं। अभी हम जानते हैं कि आप धोखेबाज और झूठे हैं। आपने बीमारी का बहाना बनाकर डॉक्टर मुंशी से इलाज करवाया। आप—’
‘क्या आपको पता है कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ?’ श्री मल्लिक ने ऊँची आवाज़ में बीच में ही टोकते हुए कहा।
‘मैंने तुम्हारी माँ से कुछ सीखा। उन्होंने बताया कि तुम्हारे पिता की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। जिस व्यक्ति की कार के नीचे वे कुचल गए थे, वह बच निकला। उसने बस इतना किया कि उन्हें मुआवजे के तौर पर पाँच हज़ार रुपये दिए। उसे कभी गिरफ्तार नहीं किया गया।’
‘नहीं, वो नहीं था!’ राधाकांत मल्लिक चिल्लाए। ‘मैंने उसका चेहरा तब साफ-साफ देखा था, और लगभग पच्चीस साल बाद, मैंने उसे फिर से टेलीग्राफ में देखा। तभी मैंने तय किया कि उसे मरना ही होगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि मुझे क्या-क्या सहना पड़ा है? जब मेरे पिता की मृत्यु हुई तब मैं सिर्फ बारह साल का था। एक बारह साल का बच्चा अपने पिता के कुछ ही कदम पीछे ट्राम से उतरता है, और... और... उसकी आँखों के सामने, उसके पिता एक कार के पहियों के नीचे गायब हो जाते हैं। वह कितना भयानक दृश्य था! आज भी, जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं दिन-रात अपनी माँ से पूछता था, “माँ, उस आदमी का क्या होगा जिसने ये किया? क्या उसे सज़ा नहीं मिलेगी?” और मेरी माँ कहती थी, “नहीं बेटा, अमीरों को कभी सज़ा नहीं मिलती।”... फिर, इतने सालों बाद, वो वहाँ था। मुझे अपना मन बनाने में बस एक पल लगा।’ इस आदमी को वही मिलेगा जिसका वह हकदार है, और मैं उसे वही दूंगा।' क्या इसीलिए तुम यहाँ उत्पीड़न के उन्माद से पीड़ित होने का नाटक करते हुए आए हो?
हां, लेकिन किसे पता था कि किसी आदमी को मारना इतना मुश्किल हो सकता है? मुझे एहसास हुआ कि मुझे खुद को तैयार करना होगा, अपने दिल को मजबूत करना होगा। आखिरकार, कई हफ्तों के बाद, मुझे लगा कि मैं यह कर सकती हूं। मुझे सही हथियार भी मिल गया। यह एक तेज धार वाला पेपर नाइफ था जो मुंशी के दफ्तर में रखा था। मैंने अपने पिता का खून से लथपथ शरीर देखा था। मैं मुंशी को भी ठीक उसी हालत में देखना चाहती थी। वरना यह न्यायसंगत सजा नहीं होगी, मैंने सोचा। लेकिन...
लेकिन क्या, श्री मल्लिक?
‘यह अद्भुत था, बिल्कुल अविश्वसनीय! मैं चाकू पकड़े हुए चुपके से उसके कमरे में घुस गया। खुली खिड़की से चांदनी अंदर आ रही थी और उसके चेहरे पर पड़ रही थी। उसका मुंह खुला था, आंखें आधी बंद थीं। उसका शरीर स्थिर था।

मैं उसे कैसे मार सकता था? वह तो पहले ही मर चुका था, मर चुका था, मर चुका था!’
श्री मल्लिक के बोलने से पहले ही कुछ ज़ोर से गिरा। यह डॉ. मुंशी के बहनोई चंद्रनाथ बसु थे। वे बेहोश होकर कुर्सी से फिसलकर ज़मीन पर गिर पड़े थे। इंस्पेक्टर शोम उनकी सहायता के लिए तुरंत आगे बढ़े।
फेलुदा ने धीमी आवाज़ में कहा, 'श्री मुंशी, ज़मीन पर लेटे उस आदमी को ध्यान से देखिए। वही आपके पिता का हत्यारा है। जी हां, हत्यारा कोई और नहीं बल्कि आपकी सौतेली माँ की जुड़वां बहन है।'
इस टिप्पणी पर सन्नाटा छा गया। लालमोहन बाबू ने सन्नाटा तोड़ते हुए कहा, 'आपका क्या मतलब है? उसका मकसद क्या हो सकता था?'
फेलुदा ने शंकर मुंशी की ओर देखा। ‘क्या आप हमें बता नहीं सकते, श्रीमान मुंशी?’ उसने पूछा। ‘आपने डायरी पढ़ी है, है ना?’
शंकर मुंशी ने धीरे से सिर हिलाया।
‘किसी व्यक्ति को जानना आसान नहीं होता, श्री मुंशी,’ फेलुदा ने आगे कहा। ‘मनुष्य और पशु में असली अंतर यही है कि पशु अपनी भावनाओं को छिपाना या दिखावा करना नहीं जानता... डॉ. मुंशी आपकी सौतेली माँ के प्रति बिल्कुल भी उदासीन नहीं थे। अगर होते, तो वे उन्हें अपनी डायरी पढ़ने की अनुमति कभी नहीं देते, न ही अपनी किताब उन्हें समर्पित करते। सच्चाई तो इसके बिल्कुल विपरीत है। डॉ. मुंशी की पत्नी ही थीं जिन्हें उनकी परवाह नहीं थी। वास्तव में, उन्हें अपने निकम्मे, किसी काम के नहीं भाई के अलावा किसी की परवाह नहीं थी, जिस पर उन्होंने अपना सारा प्यार और स्नेह लुटाया। उनके विचार केवल उन्हीं के लिए थे, उनकी चिंता केवल उनके भविष्य के लिए थी... अब क्या आप हमें बता सकते हैं कि हत्या के पीछे क्या मकसद था?’
शंकर मुंशी की आवाज़ सपाट और बेजान लग रही थी। वह रोबोट की तरह बोल रहे थे, 'यह मेरे पिता की वसीयत थी। उन्होंने अपनी डायरी में इसके बारे में लिखा था। उनकी संपत्ति का एक चौथाई हिस्सा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में लगे संस्थानों को जाना था, एक चौथाई मुझे मिलना था, और... बाकी मेरी सौतेली माँ को मिलना था।'
इस बीच श्री बासु को होश आ गया था। फेलुदा ने सीधे उनकी ओर देखा।
उसने पूछा, 'क्या हत्या का विचार तुम्हारा ही था?'
श्री बासु ने सिर हिलाया और आह भरी। वे अपनी आँखें ऊपर नहीं उठा पा रहे थे। थोड़ी देर रुकने के बाद जब उन्होंने बोलना शुरू किया, तो उनकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि मुझे उनके शब्द सुनने के लिए कान लगाकर सुनना पड़ा।
‘नहीं,’ उसने कहा, ‘यह विचार डॉली का था। वह... वह मेरी बहन है। उसी ने वह लोहे की छड़ ली और मुझे सौंपी।’
'अच्छा ऐसा है।'
फेलुदा अंततः बैठ गया, अचानक थका हुआ सा लग रहा था। उसने लगभग खुद से कहा, 'इससे हत्या का मामला सुलझ गया। मुझे बस एक ही अफ़सोस है। बहुत गहरा अफ़सोस। अगर वह डायरी प्रकाशित हो जाती, तो डॉ. मुंशी का नाम साहित्यिक जगत में मशहूर हो जाता। उनकी लेखन शैली अद्भुत थी। लेकिन वह डायरी अब झील में डूबी हुई है, हमेशा के लिए खो गई है।'

‘ध्यान दें! स्पॉटलाइट!’
जटायु की आवाज गूंज उठी, जिससे सब चौंक गए। सबकी निगाहें खुद पर टिकी देखकर वह विजयी मुस्कान के साथ मुस्कुराया और अपने कंधे के बैग से एक फोल्डर निकाला। फिर उसने उसे ट्रॉफी की तरह अपने सिर के ऊपर लहराते हुए चिल्लाकर कहा, 'खोया नहीं है, साहब! डूबा भी नहीं है। ये रहा!'
‘डॉ. मुंशी की पांडुलिपि?’ फेलुदा ने खुले तौर पर हैरानी जताई। ‘ऐसा कैसे हो सकता है?’
जी हाँ, महोदय। आधुनिक तकनीक में हुई हालिया प्रगति के लिए धन्यवाद। मुझे पता था कि मैं इसे एक दिन में पूरा नहीं पढ़ पाऊँगा, इसलिए मैंने इसकी फोटोकॉपी करवा ली। जी हाँ, ज़ेरॉक्स! लीजिए, श्री चक्रवर्ती, आप इसे अभी टाइप करना शुरू कर सकते हैं और फिर इसे उत्तरी ध्रुव भेज सकते हैं।
यहां उसने जटायु जैसी ही एक गलती कर दी। लेकिन उसके प्रसन्न चेहरे को देखकर हममें से किसी की भी हिम्मत नहीं हुई कि उसे यह बताएं कि पेंगुइन तो उत्तरी ध्रुव पर नहीं, बल्कि दक्षिणी ध्रुव पर पाए जाते हैं।

नयन का रहस्य

एक
फेलुदा कई दिनों से शांत और गुमसुम था। खैर, मैं कहूँगी कि वह गुमसुम था। लालमोहन बाबू ने उसके लिए कम से कम दस विशेषणों का इस्तेमाल किया था, जिनमें व्यथित, उदास, निर्जीव, सुस्त, नीरस, दुखी और उदासीन शामिल थे। एक दिन तो उन्होंने उसे मरणासन्न तक कह दिया। कहने की जरूरत नहीं है कि उन्होंने फेलुदा से सीधे तौर पर ये बातें कहने की हिम्मत नहीं की। उन्होंने मुझसे अपनी परेशानी बताई, लेकिन उनकी तरह मुझे भी नहीं पता था कि फेलुदा इतना अजीब व्यवहार क्यों कर रहा था।
आज, और बर्दाश्त न कर पाने के कारण, लालमोहन बाबू ने सीधे फेलुदा की ओर देखा और पूछा, 'आप इतने परेशान क्यों लग रहे हैं, फेलु बाबू? क्या बात है?' फेलुदा सोफे से टेक लगाकर बैठा था, उसके पैर एक छोटी सी कॉफी टेबल पर टिके थे। वह फर्श को घूर रहा था, उसका चेहरा गंभीर था। उसने लालमोहन बाबू के सवाल का कोई जवाब नहीं दिया।
‘यह तो सरासर अन्याय है!’ लालमोहन बाबू ने थोड़ी ऊंची आवाज में शिकायत की। ‘मैं यहाँ सिर्फ आप दोनों से अच्छी बातें करने, हँसने और कुछ सुखद पल बिताने आता हूँ। अगर आप लोग ऐसे ही बर्ताव करते रहे, तो मुझे आना बंद करना पड़ेगा। कृपया हमें अपने मन की बात का थोड़ा सा संकेत तो दें। कौन जाने, शायद मैं कोई उपाय ढूंढने में आपकी मदद कर सकूँ? आप तो मुझे हर रोज देखकर खुश होते थे। अब तो जब भी मैं आपके घर में आता हूँ, आप बस नज़रें फेर लेते हैं।’
'माफ़ करना,' फेलुदा ने धीरे से कहा, अभी भी ज़मीन की ओर देखते हुए।
नहीं, नहीं, माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे आपकी चिंता है, बस इतना ही। मैं सच में जानना चाहता हूं कि आप इतने परेशान क्यों हैं। कृपया मुझे बताएं?
अंत में फेलुदा ने कहा, 'पत्र।'
‘पत्र?’
'हां, पत्र।'
‘कौन से पत्र? उनमें ऐसा क्या लिखा था जिससे आप इतने दुखी हो गए? उन्हें किसने लिखा था?’
‘पाठकों।’
‘किसके पाठक?’
‘टॉपशे की कहानियां। टॉपशे द्वारा लिखी गई कहानियां पढ़ने वाले पाठक, जो सभी मेरे द्वारा संभाले गए मामलों पर आधारित हैं। छप्पन पत्र थे। हर एक में कमोबेश एक ही बात लिखी थी।’
और वह क्या था?

उन्होंने कहा, ‘फेलुदा की कहानियां अब पहले जैसी रोचक नहीं लगतीं। जटायु अब लोगों को हंसा नहीं सकता। टॉपशे की कहानियों का आकर्षण खत्म हो गया है, इत्यादि।’
मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। फेलुदा को हर दिन कम से कम छह पत्र मिलते थे। लेकिन मैंने कभी यह जानने की जहमत नहीं उठाई कि उनमें क्या लिखा होता था। उनके शब्दों ने मुझे चौंका दिया। लालमोहन बाबू बेहद नाराज़ हो गए।
‘उनका मतलब क्या है? क्या मैं लोगों को हंसा नहीं सकता? अरे, क्या मैं कोई मसखरा हूँ या क्या?’
नहीं, नहीं। उनका मतलब वो नहीं है। किसी ने आपका अपमान करने की कोशिश नहीं की। उन्होंने बस...
लालमोहन बाबू शांत होने को तैयार नहीं थे। उन्होंने फेलुदा की ओर पीठ करके खड़े होते हुए कहा, ‘तुम्हें शर्म आनी चाहिए, फेलु बाबू! मैं सचमुच निराश हूँ। तुमने ये सारे बेतुके पत्र पढ़े, उन्हें संभाल कर रखा, और उनसे इतना परेशान हुए। क्यों? तुमने उन्हें फेंक क्यों नहीं दिया?’
‘क्योंकि,’ फेलुदा ने धीरे से उत्तर दिया, ‘इन पाठकों ने अतीत में हमारा समर्थन किया है। अब अगर वे मुझसे कहें कि तीनों योद्धा समय से बहुत पहले बूढ़े हो गए हैं, तो मैं उनकी बातों को अनदेखा नहीं कर सकता।’
‘बूढ़े हो गए?’ लालमोहन बाबू गुस्से और हैरानी से आँखें चौड़ी करते हुए घूमे। ‘तपेश तो अभी छोटा लड़का है, आप तो पहले की तरह ही चुस्त-दुरुस्त हैं। मुझे पता है आप दोनों नियमित रूप से योगाभ्यास करते हैं। और मैं... अरे, मैंने तो अभी कुछ दिन पहले ही अपने पड़ोसी को बांह-कुश्ती में हरा दिया! वो मुझसे सत्रह साल छोटा है। क्या ये बुढ़ापे की निशानी है? क्या समय के साथ हर कोई बूढ़ा नहीं होता? और क्या उम्र के साथ अनुभव नहीं बढ़ता, निर्णय लेने की क्षमता नहीं बढ़ती, बुद्धि तेज नहीं होती, और... और... ऐसी ही और भी चीजें?’
'जी हां, लालमोहन बाबू, लेकिन जाहिर है कि पाठकों को हाल की कहानियों में इन सब बातों का कोई सबूत नहीं मिला है।'
‘तो फिर यह अपने आप में एक रहस्य है, है ना? क्या आपको लगता है कि आप इसका कोई उत्तर ढूंढ सकते हैं?’
फेलुदा ने अपने पैर जमीन पर रखे और सीधा बैठ गया।
पाठकों के बीच लोकप्रिय होना एक अद्भुत बात है। लेकिन ऐसी लोकप्रियता और प्रसिद्धि की अक्सर एक कीमत चुकानी पड़ती है। आप यह जानते हैं, है ना? क्या आपके प्रकाशक आप पर दबाव नहीं डालते?
'ओह, हाँ। बहुत अधिक दबाव।'
‘तो फिर आपको समझ आ जाना चाहिए। लेकिन कम से कम आपकी कहानियां और आपके किरदार पूरी तरह काल्पनिक हैं। आप अपने पाठकों को संतुष्ट करने के लिए घटनाएं और पात्र गढ़ सकते हैं। टॉपशे ऐसा नहीं कर सकता। उसे किसी मामले में जो सचमुच घटित होता है, उसी पर निर्भर रहना पड़ता है। अब, हालांकि मैं मानता हूं कि सच्चाई कभी-कभी कल्पना से भी अजीब हो सकती है, लेकिन इसकी क्या गारंटी है कि मेरे सभी मामले अच्छी कहानियां बन जाएंगे? इसके अलावा,

आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि टॉपशे के पाठक मुख्य रूप से दस से पंद्रह वर्ष की आयु के बच्चे हैं। मैंने इतने सारे मामले संभाले हैं जिनमें एक मसालेदार उपन्यास के लिए आवश्यक तत्व मौजूद हो सकते थे, लेकिन वे उस उम्र के बच्चों के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं थे।’
‘आपका मतलब उस दोहरे हत्याकांड जैसी किसी घटना से है?’
'हां। वह इतना गंदा था कि मैंने टॉपशे को उसके पास भी नहीं जाने दिया, हालांकि वह अब छोटा बच्चा नहीं है और वास्तव में अपनी उम्र के हिसाब से काफी समझदार है।'
‘क्या इसका मतलब यह है कि तपेश ने लिखने के लिए सही और प्रासंगिक मामलों का चयन नहीं किया है?’
'शायद, लेकिन इसमें उसकी कोई गलती नहीं है। बेचारे को अधीर और अविवेकी प्रकाशकों से निपटना पड़ता है। उसे सोचने का समय ही नहीं मिलता। लेकिन असली समस्या यह नहीं है। असली समस्या यह है कि उसकी कहानियाँ सिर्फ बच्चे ही नहीं पढ़ते। वह जो कुछ भी लिखता है, उसे उसके परिवार के माता-पिता, चाचा- चाची, दादा-दादी और दर्जनों अन्य वयस्क पढ़ते हैं। हर किसी की अपनी पसंद और अपनी ज़रूरत होती है। भला उन सभी को कैसे संतुष्ट किया जा सकता है?'
तो फिर आप तपेश को थोड़ा मार्गदर्शन क्यों नहीं देते? उसे बताइए कि उसे किन मामलों पर लिखना चाहिए?
जी हां, मैं करूंगा। लेकिन इससे पहले मुझे प्रकाशकों से बात करनी होगी। उन्हें बताना होगा कि फेलुदा की कहानी प्रकाशन के लिए तभी तैयार होगी जब कोई उपयुक्त प्रस्ताव मेरे पास आएगा। अगर नहीं आया, तो कोई बात नहीं। उन्हें बस कुछ समय के लिए इसे छोड़ देना होगा और धैर्य रखना होगा। लालमोहन बाबू, वे पक्के व्यापारी हैं। उनकी चिंता सिर्फ बिक्री के आंकड़े हैं। उन्हें मेरी छवि और प्रतिष्ठा की चिंता क्यों करनी चाहिए? मुझे खुद ही इसका ख्याल रखना होगा।
और आपके पाठक? वे सभी जिन्होंने आपको वे भयानक पत्र लिखे? क्या आपको उनसे भी बात नहीं करनी चाहिए?
नहीं। वे मूर्ख नहीं हैं, लालमोहन बाबू। उन्होंने जो कहा है वह न तो अनुचित है और न ही गलत। अब, अगर टॉपशे उनकी अपेक्षाओं को पूरा कर सकता है, तो वे मुझसे निराश होना बंद कर देंगे।
‘अरे, मेरा क्या?’
और आप, मेरे प्रिय मित्र। हम एक दूसरे के पूरक हैं, है ना? जैसलमेर की हमारी यात्रा के बाद से आप हमेशा हमारे साथ रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि हमारे कोई भी पाठक मेरे बारे में सोचे बिना आपके बारे में सोच सकते हैं, और इसके विपरीत भी!
अंततः इससे लालमोहन बाबू का मन शांत हुआ। उन्होंने मेरी ओर मुड़कर गंभीरता से कहा, 'तपेश, अपनी कहानियाँ चुनते समय बहुत सावधान रहना।' फेलुदा ने मुझसे कहा, 'यह बहुत आसान होगा। जब तक मैं तुम्हें अनुमति न दूं, तब तक लिखना शुरू मत करना। ठीक है?'
‘ठीक है,’ मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

दो
मैंने यह लंबी भूमिका इसलिए लिखी ताकि पाठकों को यह पता चले कि मैं नयन के रहस्य के बारे में फेलुदा की पूर्ण सहमति से लिखने जा रहा हूँ। वास्तव में, लालमोहन बाबू भी पूरी तरह सहमत प्रतीत होते थे।
‘शानदार! शानदार!’ उन्होंने उत्साहपूर्वक ताली बजाते हुए कहा। ‘नयन के बारे में लिखना कितना अच्छा विचार है! उह... मुझे उम्मीद है कि इसमें मेरी भूमिका वही रहेगी? मेरा मतलब है, आपको सारी बातें याद हैं ना?’
“चिंता मत करो, लालमोहन बाबू। मैंने सब कुछ लिख लिया है।”
लेकिन मुझे शुरुआत कहां से करनी चाहिए?
‘तरफदार के शो से शुरुआत करो। असल में वही शुरुआत थी, है ना?’ फेलुदा ने कहा।
सुनील तरफदार एक जादूगर थे। उनके शो का नाम था 'चमकदार तरफदार'। आजकल जादूगरों की संख्या मशरूम की तरह बढ़ रही थी। उनमें से कुछ अपने हुनर को लेकर गंभीर थे, लेकिन कड़ी प्रतिस्पर्धा के चलते कई गुमनामी में खो गए। जो टिके रहे, उन्हें एक खास स्तर बनाए रखना पड़ता था। फेलूदा को कभी जादू में दिलचस्पी थी। दरअसल, यह बात मैंने ही बहुत पहले बताई थी। इसी वजह से कई उभरते हुए जादूगर फेलूदा को अपने शो में बुलाते थे। मैं भी फेलूदा के साथ कुछ शो में गया, और मुझे शायद ही कभी निराशा हुई।
सुनील तरफदार उभरते हुए युवा जादूगरों में से एक थे। उनका नाम एक साल पहले अखबारों और पत्रिकाओं में छपने लगा था। ज़्यादातर रिपोर्टों में उनकी तारीफ़ की गई थी। पिछले दिसंबर में, एक सुबह वे हमारे घर आए और फेलुदा के पैर छूकर उनका अभिवादन किया। फेलुदा को ऐसा करने पर बहुत शर्म आती है, इसलिए वे उछल पड़े और बोले, 'नहीं, नहीं, कृपया ऐसा मत कीजिए... इसकी कोई ज़रूरत नहीं है...' श्री तरफदार बस मुस्कुरा दिए। वे तीस साल के आस-पास के युवा थे, लंबे और पतले। उनकी पतली, करीने से कटी हुई मूंछें थीं।
‘सर,’ उसने सीधे खड़े होते हुए कहा, ‘मैं आपका बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ। मुझे पता है कि आपको जादू में रुचि है। मेरा अगला शो रविवार को महाजाति सदन में होने वाला है। मैंने आपके लिए पहली पंक्ति में तीन टिकट आरक्षित करवाए हैं। शो शाम 6.30 बजे शुरू होगा। अगर आप आएँ तो मुझे बहुत खुशी होगी।’ फेलुदा ने तुरंत कुछ नहीं कहा। श्री ताराफदार ने आगे कहा, 'मैं आपको आमंत्रित कर रहा हूँ, महोदय, क्योंकि मेरे शो का आखिरी आइटम बिल्कुल अनोखा होने वाला है। मुझे पूरा यकीन है कि इससे पहले मंच पर किसी ने भी ऐसा कुछ नहीं दिखाया है।'
फेलुदा जाने के लिए राज़ी हो गया। अगले रविवार को शाम 5:30 बजे लालमोहन बाबू अपनी हरी एम्बेसडर कार में पहुँचे। हमने चाय पीते हुए थोड़ी देर बातचीत की और फिर छह बजे महाजाति सदन के लिए निकल पड़े। हम शो शुरू होने से

ठीक पाँच मिनट पहले वहाँ पहुँचे। हॉल खचाखच भरा हुआ था। ज़ाहिर है, हाल ही में अख़बार में छपा बड़ा विज्ञापन असरदार साबित हुआ था। हमें पहली पंक्ति में अपनी सीटें मिल गईं। लालमोहन बाबू ने पूछा, 'क्या आपने अख़बार में विज्ञापन देखा था?'
‘हां,’ फेलुदा ने उत्तर दिया।
‘इसमें एक बिल्कुल नए आकर्षण के बारे में कुछ लिखा था... कुछ ऐसा जिसे “ज्योतिषका” कहा जाता है। यह क्या हो सकता है?’
‘मुझे नहीं पता, लालमोहन बाबू। बस धैर्य रखिए, जल्द ही सब कुछ पता चल जाएगा।’
शो ठीक साढ़े छह बजे शुरू हुआ। मैंने देखा कि पर्दा उठते ही फेलुदा ने अपनी घड़ी देखी, भौंहें उठाईं और मुस्कुराए। समय की पाबंदी उनके लिए बहुत मायने रखती थी। जाहिर है, उन्होंने श्री ताराफदार को समय पर शुरू करने के लिए एक अतिरिक्त अंक दे दिया था।
कार्यक्रम के पहले भाग में हमने जो कुछ चीज़ें देखीं, वे दुर्भाग्यवश असाधारण नहीं थीं। यह भी स्पष्ट हो गया कि जई से बनी पोशाक के अलावा, सुनील तरफदार अपने शो में ग्लैमर और चकाचौंध पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाए थे, जो कि आधुनिक जादूगरों के लिए असामान्य बात थी।
अंतराल के बाद कार्यक्रम ने एक नया मोड़ ले लिया। श्री ताराफदार मंच पर वापस आए और दर्शकों को सम्मोहित करने लगे। देखते ही देखते यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गई कि सम्मोहन वास्तव में उनकी विशेषज्ञता थी। मैंने निश्चित रूप से कभी किसी को इतनी कुशलता से सम्मोहन करते नहीं देखा था। उन्हें मिली तालियाँ इतनी ज़ोरदार थीं कि कान बहरे हो गए।
लेकिन तभी, श्री ताराफदार ने अचानक एक गलत कदम उठाया। वह फेलुदा की ओर मुड़े और बोले, 'मैं अब प्रसिद्ध जासूस श्री प्रदोष मित्तर से मंच पर मेरे साथ शामिल होने का अनुरोध करूंगा।'
फेलुदा उठे, लालमोहन बाबू की ओर इशारा किया और विनम्रता से बोले, 'श्री ताराफदार, मुझे लगता है कि मेरे बजाय मेरे मित्र का आपके साथ शामिल होना बेहतर होगा। मंच पर मेरे होने से दिक्कतें पैदा हो सकती हैं।'
लेकिन श्री ताराफदार ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से मुस्कुराते हुए फेलूदा को मंच पर जाने के लिए कहा। फेलूदा ने उनकी बात मान ली, और कुछ ही मिनटों में यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने मुश्किलों के बारे में चेतावनी क्यों दी थी। जादूगर ने फेलूदा को सम्मोहित करने और उसे अपने हाथों की कठपुतली बनाने की पूरी कोशिश की, लेकिन बुरी तरह असफल रहा। फेलूदा होश में था, सचेत था और अपनी इंद्रियों पर पूरा नियंत्रण बनाए हुए था। अंत में, श्री ताराफदार दर्शकों की ओर मुड़े और स्थिति को संभालने के लिए जो एकमात्र बात वह कह सकते थे, वही कही। उन्होंने घोषणा की, ‘देवियों और सज्जनों, आपने अभी-अभी श्री मिटर की अपार शक्तियों को देखा है। मुझे उनके समक्ष पराजय स्वीकार करने में जरा भी खेद नहीं है!’
दर्शक एक बार फिर तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठे। फेलुदा अपनी सीट पर लौट आए। लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की, 'फेलू बाबू, आपकी पूरी शारीरिक बनावट

बाकी पुरुषों से अलग है, है ना?' फेलुदा इस गहन टिप्पणी का जवाब दे पाते, इससे पहले ही श्री ताराफदार ने अपने अंतिम आइटम की घोषणा कर दी। अब तक अनसुना और अनसुना 'ज्योतिषक' एक आठ साल का सुंदर लड़का निकला। कुछ मिनट बाद उसने जो प्रदर्शन किया, उसे देखकर मैं दंग रह गया।
श्री ताराफदार ने मंच के बीचोंबीच एक कुर्सी रखी और लड़के को बैठने के लिए कहा। फिर उन्होंने माइक अपने हाथ में लिया। उन्होंने कहा, ‘देवियों और सज्जनों, इस बच्चे का नाम ज्योतिष्का है। इसमें भी एक असाधारण प्रतिभा है। मैं मानता हूँ कि इसकी शक्ति में मेरा कोई हाथ नहीं है, यह पूरी तरह इसकी अपनी है। लेकिन मुझे गर्व है कि मैं इसे आप सबके सामने प्रस्तुत कर पा रहा हूँ।’ फिर वे लड़के की ओर मुड़े। ‘ज्योतिश्का, कृपया दर्शकों की ओर देखो।’ ज्योतिष्का ने अपनी निगाहें सामने की ओर टिका दीं।
ठीक है। अब दाईं ओर बैठे उस सज्जन को देखिए... जो लाल स्वेटर और काली पतलून पहने हुए हैं। क्या आपको लगता है कि उनके बटुए में पैसे हैं?
'हां, उसने किया है,' लड़के ने मीठी, बचकानी आवाज में जवाब दिया।
'कितना?'
बीस रुपये और तीस पैसे।
उस सज्जन ने धीरे से अपना बटुआ निकाला और उसमें रखी चीजें बाहर निकाल लीं। ‘हे भगवान, वह बिल्कुल सही कह रहा है!’ उसने हैरानी से कहा।
‘अच्छा, ज्योतिष्का,’ श्री तारादफर ने आगे कहा, ‘उसके पास दो दस रुपये के नोट हैं। क्या तुम हमें उन पर छपे अंक बता सकते हो?’
‘11 E 111302; और दूसरा 14 C 286025 है।’
‘अरे वाह, वो फिर से सही निकला!’ ये सुनकर वो सज्जन अवाक रह गए। हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।
शोर थोड़ा कम होने पर श्री ताराफदार ने कहा, 'आपमें से कोई भी उनसे प्रश्न पूछ सकता है। आपको बस इतना याद रखना है कि आपके प्रश्न का उत्तर अंकों में होना चाहिए। लेकिन मैं आपको आगाह करना चाहता हूँ कि ज्योतिष को यह अभ्यास काफी कठिन लगता है, इसलिए मैं आज शाम केवल दो और प्रश्न पूछने की अनुमति दूंगा।'
एक युवक खड़ा हो गया। ‘मैं कार से यहाँ आया हूँ। क्या आप मुझे उसका नंबर बता सकते हैं?’
ज्योतिषका ने इसका सही उत्तर दिया और आगे कहा, 'लेकिन आपके पास एक और कार है। और उसका नंबर WMF 6232 है।'
श्री ताराफदार ने दर्शकों में से एक और लड़के को चुना।
उन्होंने पूछा, 'क्या आपने इस साल कोई परीक्षा दी थी?'
‘जी सर। कक्षा 10,’ लड़के ने उत्तर दिया।
‘ज्योतिषका, क्या आप हमें बंगाली में बता सकते हैं कि उसे कितने पैसे मिले?’
'हां। उसे इक्यासी अंक मिले। दरअसल, इस साल बंगाली में उसे सबसे ज्यादा अंक मिले हैं।'
‘जी हाँ, बिल्कुल सही! लेकिन आपने कैसे अनुमान लगाया? आपको किसने बताया—?’ लड़के के शेष शब्द जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट में डूब गए।

फेलुदा ने कहा, 'हमें मंच के पीछे जाकर ताराफदार को धन्यवाद देना चाहिए।' जब हमने श्री ताराफदार को देखा, तो वे एक दर्पण के सामने बैठकर अपना मेकअप हटा रहे थे। हमें देखते ही उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई।
'आपको मेरा शो कैसा लगा? कृपया खुलकर बताएं, महोदय।'
‘आपकी दो चीजें वाकई उल्लेखनीय थीं। एक तो आपका सम्मोहन था, और दूसरा यह बच्चा। आपने इसे कहाँ से पाया?’
‘वह कालीघाट के पास निकुंजाबिहारी लेन में रहता था। उसका असली नाम नयन है। मैंने उसका नाम ज्योतिषका रखा है। कृपया किसी और को मत बताना।’
‘नहीं, बिलकुल नहीं,’ फेलुदा ने कहा। ‘लेकिन आपको उसके बारे में ठीक-ठीक कैसे पता चला?’
‘उसके पिता उसे मेरे पास लाए थे, इस उम्मीद में कि नयन की गणित की अच्छी समझ उनके परिवार की आमदनी बढ़ाने में मदद कर सकती है। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है।’
‘ओह, मुझे पूरा यकीन है कि नयन को पैसे कमाने में कोई दिक्कत नहीं होगी। क्या वह अब अपने पिता के साथ नहीं रहता?’
नहीं। मैंने उसे अपने घर में ही रखा है। उसके लिए एक निजी ट्यूटर का इंतजाम किया गया है, और मैंने एक डॉक्टर से उसके आहार का निर्धारण करवाया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि उसकी अच्छी देखभाल की जाएगी।
'हां, लेकिन इसका मतलब होगा उस पर बहुत सारा पैसा खर्च करना, है ना?'
'हां, मुझे इस बात की जानकारी है। लेकिन मुझे यह भी एहसास है कि नयन एक सोने की खान है। अगर शुरुआत में मुझे पर्याप्त धनराशि जुटाने के लिए दोस्तों से उधार लेना पड़े, तो मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी क्योंकि मुझे पता है कि वे मुझे जो भी उधार देंगे, मैं उसे बहुत जल्दी वापस कर दूंगा।'
'हम्म... लेकिन आदर्श रूप से, आपको एक प्रायोजक की तलाश करनी चाहिए।'
‘आप सही कह रहे हैं। मैं उचित समय आने पर सही लोगों से संपर्क करूंगा... बस थोड़ा समय दीजिए।’
ठीक है। मुझे बस दो बातें कहनी हैं, और फिर हम आपको शांति से रहने देंगे। पहली बात—ध्यान रहे कि आप इस अनमोल खजाने को न खो दें। आपको उस लड़के पर हर समय नज़र रखनी होगी। और दूसरी बात, क्या मैंने आपके शो के दौरान दूसरी पंक्ति में पत्रकारों को बैठे देखा था?
जी हां। आज शाम ग्यारह पत्रकार और रिपोर्टर शो देखने आए थे। वे सभी अगले शुक्रवार को इसके बारे में लिखेंगे। मुझे नहीं लगता कि इसमें चिंता की कोई बात है, कम से कम तब तक तो नहीं जब तक पूरी कहानी छप नहीं जाती।
'बहुत अच्छा। लेकिन कृपया याद रखें कि अगर नयन के बारे में कोई पूछताछ की जाती है, या कोई उससे मिलना चाहता है, या कोई भी संदिग्ध घटना होती है, तो मैं आपकी मदद के लिए यहाँ हूँ।'
‘बहुत-बहुत धन्यवाद, महोदय। और... उह...’
'हाँ?'
‘कृपया मुझे सुनील कहिए, श्री मिटर।’

तीन
मुझे आश्चर्य हुआ जब सुनील तरफदार ने मंगलवार को हमें फोन किया। क्या सच में अगले कुछ दिनों तक प्रेस रिपोर्टर कुछ भी रिपोर्ट नहीं करने वाले थे? फेलुदा ने फोन पर संक्षेप में बात की, फिर मुझे बताया कि क्या हुआ था।
‘खबर फैल गई है, टॉपशे,’ उन्होंने कहा। ‘आखिरकार, रविवार को उनका शो आठ सौ लोगों ने देखा। उनमें से कई लोगों ने नयन के बारे में बात की होगी। खैर, नतीजा यह हुआ कि तरफदार को चार फोन आए। ये चारों लोग अमीर और प्रभावशाली हैं, और वे सभी नयन से बात करना चाहते हैं। तरफदार ने उनसे कल सुबह नौ बजे के बाद आने को कहा है। हर किसी को पंद्रह मिनट दिए जाएंगे, और उन्हें बताया गया है कि साक्षात्कार में तीन और लोग मौजूद रहेंगे—यानी आप, मैं और लालमोहन बाबू। उन्हें अभी फोन करके बता दीजिए।’
मैं करूँगा, लेकिन ये चार लोग कौन हैं?
‘एक अमेरिकी, उत्तर भारत का एक व्यवसायी, एक एंग्लो-इंडियन और एक बंगाली। अमेरिकी को एक प्रभावशाली व्यक्ति बताया जा रहा है। तरफदार चाहता है कि हम उसके आसपास रहें क्योंकि उसे यकीन नहीं है कि वह अकेले इस स्थिति को संभाल पाएगा।’
जब मैंने लालमोहन बाबू को फोन किया, तो उन्होंने तुरंत आने का फैसला किया। अंदर आते ही उन्होंने 'श्रीनाथ!' चिल्लाकर कहा और अपने पसंदीदा सोफे पर बैठ गए। श्रीनाथ हमारे रसोइया थे। कुछ ही मिनटों में वे ताज़ी चाय लेकर आ गए। ‘क्या पक रहा है, फेलू बाबू?’ लालमोहन बाबू ने मुस्कुराते हुए पूछा। ‘क्या मुझे कोई जानी-पहचानी सी खुशबू आ रही है?’
'तुम बेवजह बातें सोच रहे हो, मेरे दोस्त। अभी तक कुछ भी ऐसा नहीं हुआ है जिससे कुछ पकना शुरू हो सके।'
मैं उस लड़के के बारे में लगातार सोच रहा हूँ। उसके पास कितनी अद्भुत शक्ति है, है ना?
'हां। लेकिन ये बातें पूरी तरह से अप्रत्याशित हैं। एक दिन, बिना किसी स्पष्ट कारण के, वह अपनी यह शक्ति खो सकता है। अगर ऐसा हुआ, तो नयन और उसकी उम्र के अन्य साधारण लड़कों में कोई अंतर नहीं रह जाएगा।'
'हां, मुझे पता है। खैर, हम कल सुबह तरफदार के घर जा रहे हैं, है ना?'
'हां, लेकिन मैं आपको एक बात बता दूं। मैं अपनी पेशेवर क्षमता में नहीं जा रहा हूं।'
'नहीं?'
नहीं। मैं बस एक मूक दर्शक बना रहूंगा। अगर किसी को बोलना है, तो वह आप ही होंगे।
‘अरे, क्या तुम सचमुच ऐसा कह रहे हो?’
'बिल्कुल।'

‘बहुत खूब, फेलू बाबू। मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा।’
श्री ताराफदार एकदालिया रोड में रहते थे। उनका घर पचास साल से भी अधिक पुराना होगा। उसमें दो मंजिलें थीं और सामने के गेट के पास एक छोटा सा बगीचा था। गेट पर एक सशस्त्र गार्ड खड़ा था। श्री ताराफदार ने स्पष्ट रूप से फेलुदा की सलाह मान ली थी। फेलुदा का नाम बताते ही गार्ड ने गेट खोल दिया। जैसे ही हम मुख्य दरवाजे की ओर बढ़े, फेलुदा ने दबी आवाज़ में कहा, 'दो साल के भीतर ताराफदार यह घर छोड़कर कहीं और चला जाएगा, मेरी बात याद रखना।'
एक वेटर ने दरवाजा खोला और हमें अंदर आने के लिए कहा। हम उसके पीछे-पीछे ड्राइंग रूम में चले गए। कमरा बड़ा नहीं था, लेकिन सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ था। एक मिनट बाद सुनील तरफदार एक विशाल अल्सेशियन कुत्ते के साथ वहाँ पहुँचे। मुझे पता था कि फेलुदा को कुत्ते बहुत पसंद थे। कुत्ता चाहे कितना भी बड़ा या खूंखार क्यों न हो, फेलुदा उसकी पीठ सहलाने के लालच से खुद को रोक नहीं पाते थे। उन्होंने इस अल्सेशियन कुत्ते के साथ भी ऐसा ही किया। ‘इसका नाम बादशाह है,’ श्री तरफदार ने हमें बताया। ‘यह बारह साल का है और बहुत अच्छा चौकीदार कुत्ता है।’
'बहुत बढ़िया। आपका घर इतना सुरक्षित देखकर मुझे खुशी हुई। ठीक है, हम यहाँ बाकी लोगों से पंद्रह मिनट पहले आ गए हैं, जैसा कि आपने कहा था।'
'धन्यवाद, श्री मिटर। मुझे पता था कि आप समय के पाबंद होंगे।'
क्या आपने यह घर किराए पर लिया है?
'नहीं, महोदय। इसे मेरे पिता ने बनवाया था। वे एक जाने-माने वकील थे। मैं इसी घर में पला-बढ़ा हूँ।'
क्या आपकी शादी नहीं हुई है?
‘नहीं।’ श्री ताराफदार मुस्कुराए। ‘मुझे शादी करने की कोई जल्दी नहीं है। मुझे पहले अपना शो स्थापित करना होगा।’
वही वेटर चाय और समोसे लेकर आया। फेलुदा ने एक समोसा उठाया और कहा, 'आज मैं एक शब्द भी नहीं बोलूंगा। ये सज्जन ही सब कुछ कहेंगे। आप जानते ही हैं ना कि ये कौन हैं?'
‘बिल्कुल!’ श्री ताराफदार ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘अपराध कथाओं के प्रसिद्ध लेखक लालमोहन गांगुली को कौन नहीं जानता?’
लालमोहन बाबू ने एक छोटे से अभिवादन के साथ इस प्रशंसा को स्वीकार किया, जिससे उन्होंने खुले तौर पर यह संकेत दिया कि वे विनम्रता को समय की बर्बादी मानते थे।
फेलुदा ने अपना समोसा खत्म किया और चारमीनार जलाया।
‘सुनील, मैं तुमसे खुलकर कुछ कहना चाहता हूँ,’ उन्होंने शुरू किया। ‘मैंने तुम्हारे प्रदर्शन में दिखावे की कमी देखी। तुम जैसे आधुनिक जादूगर को इस पहलू को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। तुम्हारा सम्मोहन और नयन दोनों ही लाजवाब हैं, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन आज के दर्शक थोड़ी सी चकाचौंध की उम्मीद करते हैं।’
'जी हां, महोदय। मेरे शो में ग्लैमर जोड़ने के लिए मेरे पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे। लेकिन अब मुझे लगता है कि इस कमी को दूर कर लिया जाएगा।'

'कैसे?'
मुझे एक प्रायोजक मिल गया है।
‘क्या! अभी से?’
'हां। मैं खुद आपको बताने ही वाला था। मुझे नहीं लगता कि अब मुझे पैसों के बारे में और चिंता करने की जरूरत है—कम से कम फिलहाल तो नहीं।'
‘क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह प्रायोजक कौन है?’
'क्षमा कीजिए महोदय, लेकिन वह अपनी पहचान गुप्त रखना चाहता है।'
लेकिन यह सब कैसे हुआ? क्या आप मुझे यह बता सकते हैं?
जी हाँ, बिलकुल, महोदय। हुआ यूँ कि इस प्रायोजक के एक रिश्तेदार ने रविवार को नयन को मंच पर देखा और उन्हें इसके बारे में बताया। मेरे प्रायोजक ने उसी शाम मुझे फोन किया और कहा कि वे नयन से तुरंत मिलना चाहते हैं। मैंने उन्हें अगली सुबह 10 बजे आने को कहा। वे ठीक समय पर पहुँचे और नयन से मिले। फिर उन्होंने उनसे कुछ सवाल पूछे, जिनका नयन ने सही-सही जवाब दिया। वे सज्जन कुछ पल के लिए उन्हें हैरानी से देखते रहे, मानो अवाक रह गए हों। फिर उन्होंने खुद को संभाला और मुझे एक शानदार प्रस्ताव दिया।
'यह क्या था?'
उन्होंने कहा कि मेरे शो से जुड़े सारे खर्चे वो उठाएंगे। दरअसल, वो “मिरेकल्स अनलिमिटेड” नाम की एक कंपनी बनाने जा रहे हैं। मैं इस कंपनी की तरफ से परफॉर्म करूंगा, हालांकि इसके मालिक का नाम किसी को नहीं बताया जाएगा। अगर मेरे शो सफल होते हैं तो सारा श्रेय मुझे मिलेगा। मेरे स्पॉन्सर को मुनाफा मिलेगा। नयन और मुझे दोनों को मासिक वेतन मिलेगा। उन्होंने जो रकम बताई वो वाकई काफी उदार थी। मैंने ये सारी शर्तें इसलिए मान लीं क्योंकि इससे मेरी एक बड़ी चिंता तुरंत दूर हो गई—पैसा!
लेकिन क्या आपने उनसे यह नहीं पूछा कि उन्हें इतनी दिलचस्पी क्यों थी? “ओह हाँ। उन्होंने मुझे एक अजीब सी कहानी सुनाई। लगता है, इस आदमी को बचपन से ही जादू में बहुत दिलचस्पी थी। उन्होंने खुद ही कुछ तरकीबें सीख ली थीं और ज़रूरी सामान भी खरीद लिया था। लेकिन इससे पहले कि वह इसे गंभीरता से अपना पाते, उनके पिता को पता चल गया और वे बहुत गुस्सा हुए। मेरे प्रायोजक उनके पिता से डरते थे क्योंकि वे हमेशा उनके साथ बहुत सख्ती से पेश आते थे। इसलिए, अपने पिता को खुश करने के लिए, उन्होंने जादू छोड़ दिया और जीविका कमाने के लिए कुछ और काम शुरू कर दिया। समय के साथ, वे काफी अमीर हो गए, लेकिन वे अपने पुराने जुनून को नहीं भूल पाए। उन्होंने मुझसे कहा, “मैंने बहुत पैसा कमाया है, लेकिन इससे मेरी आत्मा को तृप्ति नहीं मिली है। मुझे लगता है कि यह छोटा बच्चा मुझे वह संतुष्टि देगा जिसकी मुझे जीवन भर चाह रही है।” बस इतना ही, श्री मिटर।
‘क्या आपने वास्तव में अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं?’
हां। अब मुझे बहुत राहत महसूस हो रही है। वह नयन के ट्यूटर, डॉक्टर, कपड़े और बाकी सब कुछ का खर्च उठा रहे हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने मुझे मद्रास में शो करने के लिए भेजने का भी वादा किया है!
'वास्तव में?'

जी हाँ। देखिए, मेरे स्पॉन्सर के आने से कुछ ही मिनट पहले मुझे मद्रास के श्री रेड्डी का फोन आया। कलकत्ता में रहने वाले एक दक्षिण भारतीय सज्जन ने रविवार को मेरा शो देखा था और उन्होंने श्री रेड्डी को फोन करके इसके बारे में बताया। श्री रेड्डी का अपना थिएटर है। उन्होंने मुझे मद्रास आकर अपने थिएटर में परफॉर्म करने का न्योता दिया। मैंने कहा कि मुझे सोचने के लिए समय चाहिए। लेकिन कुछ ही मिनटों में मेरे स्पॉन्सर आ गए। जब उन्हें श्री रेड्डी के न्योते के बारे में पता चला, तो उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे सोचने में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए और तुरंत श्री रेड्डी को फोन करके उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिए। सभी खर्चे वे उठाएंगे।
लेकिन आपको अपने खर्च का हिसाब तो देना ही होगा, है ना?
'बिल्कुल। मेरा एक करीबी दोस्त है जिसका नाम शंकर है और वह मेरे मैनेजर के तौर पर काम करता है। वह मेरे खातों का ध्यान रखेगा। वह बहुत ही कुशल व्यक्ति है।'
एक वेटर आया और उसने बताया कि एक विदेशी एक बंगाली सज्जन के साथ आया है। मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। सुबह के 9 बजकर कुछ ही सेकंड हुए थे। ‘उन्हें अंदर आने दो,’ श्री ताराफदार ने कहा।
लालमोहन बाबू ने गहरी सांस ली। फेलुदा चुप रहा।
कमरे में दाखिल हुए अमेरिकी व्यक्ति के बाल सफेद थे, लेकिन उनकी त्वचा की कोमलता से मुझे पता चला कि वे ज्यादा उम्रदराज नहीं थे। श्री ताराफदार उनका अभिवादन करने के लिए उठे और उन्हें बैठने के लिए आमंत्रित किया।
अमेरिकी ने कहा, 'मैं सैम केलरमैन हूं, और मेरे साथ हमारे भारतीय प्रतिनिधि श्री बासक हैं।' श्री बासक को भी एक सीट की पेशकश की गई।
लालमोहन बाबू ने अपना काम शुरू किया।
‘आप एक इंप्रेसोरिया हैं—मेरा मतलब है, इंप्रेसारियो?’
'जी हां, बिल्कुल सही। आजकल अमेरिका में लोग भारत में काफी दिलचस्पी ले रहे हैं। महाभारत का मंचन नाटक के रूप में हो चुका है और इस पर फिल्म भी बन चुकी है, जैसा कि आप जानते ही होंगे। इससे आपकी विरासत के लिए नए रास्ते खुल गए हैं।'
तो क्या आप हमारी संस्कृति में रुचि रखते हैं?
मुझे उस बच्चे में दिलचस्पी है।
‘क्या? आपको बकरियों के बच्चों में दिलचस्पी है?’
मुझे डर था कि ऐसा हो सकता है। जाहिर है, लालमोहन बाबू को यह नहीं पता था कि अमेरिकी लोग बच्चों को 'किड्स' कहते हैं।
श्री बासक ने स्थिति को संभाला। उन्होंने तुरंत समझाया, 'वह ज्योतिष्का की बात कर रहे हैं, जो श्री तरफदार के शो में दिखाई देता है।'
‘आप उनके बारे में ठीक-ठीक क्या जानना चाहते हैं?’ श्री ताराफदार ने पूछा। श्री केलरमैन ने धीरे-धीरे और स्पष्ट स्वर में कहा, 'मैं इस लड़के को अमेरिकी जनता के सामने पेश करना चाहता हूँ। भारत जैसे देश में ही कोई व्यक्ति इतनी अद्भुत शक्ति के साथ जन्म ले सकता है। लेकिन कोई भी अंतिम निर्णय लेने से पहले, मैं उसे देखना और स्वयं उसका परीक्षण करना चाहूँगा।'

श्री बासाक ने आगे कहा, “श्री केलरमैन दुनिया के तीन सबसे प्रसिद्ध आयोजकों में से एक हैं। वे बीस साल से अधिक समय से यह काम कर रहे हैं। वे इस युवा लड़के के लिए अच्छी खासी रकम देने को तैयार हैं। इसके अलावा, लड़के को हर शो की कमाई में से नियमित रूप से अपना हिस्सा मिलेगा। यह सब अनुबंध में लिखा होगा।”
श्री ताराफदार मुस्कुराए। उन्होंने नरमी से कहा, ‘श्री केलरमैन, वह विलक्षण बालक मेरे ही शो का हिस्सा है। उसके मुझे छोड़कर जाने का सवाल ही नहीं उठता। मैं जल्द ही दक्षिण भारत के दौरे पर निकल रहा हूँ, जिसकी शुरुआत मद्रास से होगी। वहाँ के लोगों ने ज्योतिष्का के बारे में सुना है और वे उसके आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं। मुझे खेद है, लेकिन श्री केलरमैन, मुझे आपका प्रस्ताव अस्वीकार करना होगा।’
केलरमैन का चेहरा लाल हो गया। कुछ देर रुकने के बाद, उन्होंने थोड़ी कर्कश आवाज़ में कहा, 'क्या बच्चे को देखना और उससे कुछ सवाल पूछना संभव है?' ‘इसमें कोई दिक्कत नहीं है,’ श्री तरफदार ने कहा और एक वेटर को नयन को लाने के लिए कहा।
कुछ ही सेकंड बाद नयन वहाँ पहुँचा और श्री ताराफदार की कुर्सी के पास जाकर खड़ा हो गया। वह अन्य साधारण लड़कों से अलग नहीं दिखता था, सिवाय इसके कि उसकी आँखों में एक शांत बुद्धिमत्ता झलकती थी। श्री केलरमैन कुछ क्षणों तक उसे बस देखते रहे।
फिर उसने लड़के से अपनी निगाहें हटाए बिना कहा, 'क्या वह मुझे मेरे बैंक खाते का नंबर बता सकता है?'
श्री ताराफदार ने उत्साह बढ़ाते हुए कहा, 'जाओ नयन, उसे बताओ।'
‘लेकिन वो किस खाते की बात कर रहा है?’ नयन ने हैरानी से पूछा। ‘उसके तीन अलग-अलग बैंकों में तीन खाते हैं!’
केलरमैन के चेहरे का रंग तुरंत उड़ गया। उसने मुश्किल से कुछ निगला और फिर उसी कर्कश आवाज में कहा, 'सिटी बैंक ऑफ न्यूयॉर्क।'
‘12128-74,’ नयन ने तुरंत कहा।
‘हे भगवान!’ केलरमैन की आँखें मानो किसी भी क्षण अपनी जगह से बाहर निकल जाएँगी। ‘मैं आपको अभी बीस हज़ार डॉलर दे रहा हूँ,’ उन्होंने श्री ताराफदार की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘वह आपके जादू के शो से इतना पैसा कभी नहीं कमा सकता, है ना?’
‘मैंने तो अभी शुरुआत ही की है, श्रीमान केलरमैन। मैं नयन के साथ अपने पूरे देश में यात्रा करूँगी। फिर तो बाकी दुनिया भी है जहाँ मुझे अपना हुनर दिखाना है। दुनिया भर के लोग जादू का शो देखना पसंद करेंगे, और आपने अभी- अभी देखा है कि नयन क्या कर सकता है। आप इतने आश्वस्त कैसे हो सकते हैं कि हम अपनी काबिलियत के दम पर कभी भी उतनी कमाई नहीं कर पाएंगे जितनी आप बात कर रहे हैं?’
क्या उसका कोई पिता है?
‘क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? नयन मेरी देखरेख में है, आधिकारिक तौर पर मैं उसका अभिभावक हूं।’

‘सर,’ लालमोहन बाबू ने अप्रत्याशित रूप से कहा, ‘हमारे दर्शन में, सर, संपत्ति अर्जित करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण बलिदान देना है!’
श्री बासक खड़े हो गए। उन्होंने कहा, 'श्री ताराफदार, आप एक सुनहरा अवसर अपने हाथों से फिसलने दे रहे हैं। कृपया बहुत सोच-समझकर निर्णय लें।' 'मेरे पास है।'
अब श्री केलरमैन को विदा लेनी पड़ी। उन्होंने श्री बासक की ओर एक नज़र डाली, जिन्होंने अपनी जेब से अपना विजिटिंग कार्ड निकालकर श्री ताराफदार को दे दिया। ‘इसमें मेरा पता और फ़ोन नंबर है। अगर आपका मन बदले तो मुझे बता देना।’
'धन्यवाद मैं करूंगा।'
श्री ताराफदार उन्हें विदा करने गए। नयन उसी व्यक्ति के साथ वापस आ गया। फेलुदा ने टिप्पणी की, ‘बासाक एक चतुर आदमी है, वरना वह किसी अमेरिकी इंप्रेसारियो का एजेंट न होता। और वह अमीर भी होगा। क्या आपने ध्यान दिया कि उसके शरीर से फ्रेंच आफ्टरशेव की तेज़ गंध आ रही थी? लेकिन उसकी ठुड्डी के नीचे शेविंग क्रीम के कुछ निशान थे। मुझे नहीं लगता कि वह सुबह जल्दी उठता है। शायद उसे आज सुबह हमसे मिलने के लिए जल्दी-जल्दी शेव करनी पड़ी होगी।’

चार
‘अच्छा, एक तो हो गया। देखते हैं दूसरे में कितना समय लगता है। वो अब किसी भी मिनट में आ जाएगा।’ श्री ताराफदार ने कहा। कुछ ही मिनटों में दरवाजे की घंटी बजी। गहरे रंग के सूट में एक आदमी अंदर आया। ‘सुप्रभात,’ श्री ताराफदार ने उठते हुए अभिवादन किया। ‘माफ़ कीजिए, मैंने फ़ोन पर आपका नाम ठीक से नहीं सुना। आप कौन हैं...?’
‘Tiwari. Devkinandan Tiwari.’
‘ठीक है। कृपया बैठ जाइए।’
'धन्यवाद। क्या आपने टी एच सिंडिकेट के बारे में सुना है?'
लालमोहन बाबू और श्री ताराफदार एक-दूसरे को चुपचाप देखते रहे। स्पष्टतः, वे एक-दूसरे को नहीं देख पाए थे। फेलुदा को अपना मुंह खोलना ही पड़ा। “आपका व्यवसाय आयात और निर्यात से संबंधित है, है ना? आपका कार्यालय पोलॉक स्ट्रीट में है।”
'जी हां, बिल्कुल सही,' श्री तिवारी ने फेलुदा की ओर थोड़ा संदेह भरी नजरों से देखते हुए कहा।
‘ये तीनों मेरे दोस्त हैं। मुझे उम्मीद है कि आपको इनकी मौजूदगी में मुझसे बात करने में कोई आपत्ति नहीं होगी?’ श्री ताराफदार ने पूछा।
'अरे नहीं, बिलकुल नहीं। श्रीमान तरफदार, मैं बस उस नौजवान से एक सवाल पूछना चाहता हूँ। अगर वह मुझे सही जवाब दे दे, तो मैं उसका सदा आभारी रहूँगा।'
नयन को वापस कमरे में लाया गया। श्री ताराफदार ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर विनम्रता से कहा, 'मुझे माफ करना नयन, लेकिन तुम्हें एक और सवाल का जवाब देना होगा। ठीक है?' नयन ने सिर हिलाया। श्री ताराफदार ने श्री तिवारी की ओर मुड़कर कहा, 'आगे बढ़िए, महोदय। लेकिन कृपया याद रखें कि आपके प्रश्न का उत्तर अंकों में होना चाहिए।'
‘जी हां, मुझे पता है। इसीलिए तो मैं आया हूं।’ श्री तिवारी ने नयन पर अपनी निगाहें गड़ा दीं। ‘क्या आप मुझे मेरे सीने का संयोजन बता सकते हैं?’
नयन ने गहरी हैरानी के साथ पलटकर देखा।
‘सुनो, ज्योतिष्का,’ फेलुदा ने किसी और के बोलने से पहले ही जल्दी से कहा, ‘शायद तुम श्री तिवारी के संयोजन का मतलब नहीं समझ पा रहे हो। मैं समझाता हूँ। देखो, कुछ संदूकों और अलमारियों में साधारण ताले और चाबियाँ नहीं होतीं। उनमें ढक्कन या दरवाजे पर एक डिस्क लगी होती है जिसे घुमाया जा सकता है। डिस्क पर एक तीर का निशान बना होता है और उसके चारों ओर एक से शून्य तक संख्याएँ लिखी होती हैं। संयोजन विशेष संख्याओं की एक श्रृंखला होती है जो किसी विशेष संदूक या अलमारी के लिए होती है। यदि तुम डिस्क को घुमाकर तीर को सही संख्याओं पर रोकते हो, तो संदूक अपने आप खुल जाता है।’

‘ओह, मैं समझ गया,’ नयन ने जोर से सिर हिलाते हुए कहा।
लालमोहन बाबू ने अचानक एक प्रासंगिक प्रश्न पूछा।
‘तुम्हें अपने सीने का कॉम्बिनेशन कैसे नहीं पता?’
‘मुझे पता था... दरअसल, मुझे यह बात पहले से ही पता थी और पिछले तेईस सालों में मैंने इसका इस्तेमाल करके लाखों बार अपना सीना खोला था। लेकिन,’ श्री तिवारी ने अफसोस से सिर हिलाते हुए कहा, ‘मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, श्री ताराफदार। मेरी याददाश्त अब पहले जैसी नहीं रही। लाख कोशिश करने पर भी मुझे उस संयोजन के सही अंक याद नहीं आ रहे। मैंने इसे एक पुरानी डायरी में लिख रखा था और पिछले चार दिनों से मैं इसे हर जगह ढूंढ रहा हूँ, लेकिन मुझे यह नहीं मिला। यह गायब हो गया है... कहीं खो गया है।’
‘क्या आपने कभी किसी और को यह नंबर नहीं बताया?’
‘मुझे याद आ रहा है कि मैंने अपने साथी को बहुत पहले बताया था, लेकिन वो इससे इनकार करता है। शायद मेरी याददाश्त फिर से धोखा दे रही है। आखिर, कोई भी लोगों को किसी चीज़ के संयोजन की जानकारी यूं ही तो नहीं देता, है ना? इसके अलावा, यह संदूक मेरी निजी संपत्ति है, हालांकि यह मेरे दफ्तर में रखा है। मैं इसमें अपने व्यवसाय से संबंधित कोई पैसा या कागजात नहीं रखता। इसमें सिर्फ मेरा निजी पैसा है, आप समझ रहे हैं ना, जो मैं अपने बैंक में नहीं रखता... मैं आपको बता दूं, श्रीमान तरफदार, मैं बिल्कुल हताश हो गया था। तभी मुझे इस विलक्षण लड़के के बारे में पता चला। तो मैंने सोचा कि यहीं अपनी किस्मत आजमाऊं!’ उसने अपनी नज़रें फिर से नयन पर टिका दीं।
‘यह 6438961 है,’ नयन ने शांत भाव से कहा।
‘सही! सही! सही!’ श्री तिवारी उत्साह से उछल पड़े और जल्दी से अपनी जेब से डायरी निकालकर संख्या नोट करने लगे।
‘क्या आपको पता है कि उस संदूक में कितना पैसा है?’ श्री ताराफदार ने पूछा।
'नहीं, मैं आपको सटीक आंकड़ा नहीं बता सकता, लेकिन मुझे लगता है कि मेरे पास पांच लाख से अधिक की रकम है,' श्री तिवारी ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। ‘यह छोटा लड़का आपको बता सकता है। क्या आप जानना चाहेंगे?’
‘जी हां! स्वाभाविक रूप से मुझे जिज्ञासा है। देखते हैं उसकी शक्ति कितनी दूर तक जा सकती है।’
श्री ताराफदार ने एक बार फिर नयन की ओर देखा। लेकिन इस बार नयन ने संख्याओं में जवाब नहीं दिया।
उन्होंने कहा, 'उस संदूक में पैसे नहीं हैं। बिलकुल भी नहीं।'
‘क्या!’ श्री तिवारी लगभग अपनी कुर्सी से गिर ही पड़े। लेकिन फिर वे झुंझलाहट दिखाने लगे। ‘ज़ाहिर है, श्री ताराफ़दार, यह प्रतिभाशाली लड़का भी किसी और की तरह गलतियाँ कर सकता है। फिर भी, मैं आभारी हूँ कि उसने मुझे वह नंबर दे दिया जिसकी मुझे वास्तव में ज़रूरत थी। ये लो, मेरे बेटे, ये तुम्हारे लिए है।’ श्री तिवारी ने नयन को एक पतला सा पैकेट दिया। “धन्यवाद, महोदय,” नयन ने शर्माते हुए कहा और उसे ले लिया।
श्री तिवारी चले गए।
फेलुदा ने नयन से कहा, 'इसे खोलो और देखो अंदर क्या है।' नयन ने रैपर हटाया तो अंदर एक छोटी सी घड़ी दिखाई दी।

‘अरे वाह, श्री तिवारी ने तो बड़ी मेहरबानी की!’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘इसे पहनो, नयन, इसे पहनो!’
नयन ने प्रसन्नता से उसे अपनी कलाई पर बांधा और कमरे से बाहर चला गया। नयन के जाने के बाद फेलुदा ने कहा, 'मुझे लगता है श्री तिवारी को एक बड़ा झटका लगने वाला है।'
‘मुझे यकीन है कि जब उसे पता चलेगा कि पैसे गायब हैं, तो उसे अपने साथी पर शक होगा—जब तक कि, ज़ाहिर है, इस बार नयन से वाकई कोई गलती न हो?’ लालमोहन बाबू ने कहा। कंधे उचकाते हुए, फेलुदा ने बात बदल दी।
‘आप मद्रास कैसे जा रहे हैं? ट्रेन से या हवाई जहाज से?’ उन्होंने सुनील तरफदार से पूछा।
'ट्रेन से ही जाना पड़ेगा। मेरे पास इतना ज़्यादा सामान है कि हवाई जहाज़ से जाना संभव नहीं है।'
‘नयन की सुरक्षा का क्या होगा?’
खैर, मैं पूरी यात्रा के दौरान उसके साथ रहूंगा, इसलिए मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई समस्या है। मद्रास पहुंचने पर मेरा दोस्त शंकर भी मेरे साथ आ जाएगा। हम दोनों नयन का ख्याल रखेंगे।
फेलुदा ने बोलना शुरू किया ही था कि तभी एक और सज्जन व्यक्ति, जो औपचारिक सूट और टाई पहने हुए थे, के आने से उनकी बात अधूरी रह गई।
'शुभ प्रभात। मैं हॉजसन हूँ। हेनरी हॉजसन। मैंने एक अपॉइंटमेंट लिया था—' ‘मैं, सुनील तरफदार। कृपया बैठ जाइए।’
श्री हॉजसन भौंहें चढ़ाकर बैठ गए और हम पर गंभीर संदेह भरी निगाहें डालने लगे। वे स्पष्ट रूप से ईसाई थे, लेकिन मैं यह नहीं समझ पाया कि वे भारत के किस हिस्से से आए थे। शायद वे लंबे समय से कलकत्ता में रह रहे थे।
‘क्या मैं पूछ सकता हूँ कि ये सभी लोग कौन हैं?’ उन्होंने चिढ़कर पूछा। ‘ये मेरे बहुत करीबी हैं। आप इनके सामने बेझिझक बोल सकते हैं। मैंने आपको बताया था कि ये लोग मौजूद रहेंगे,’ श्री ताराफदार ने आश्वस्त करते हुए कहा। ‘हम्म।’ श्री हॉजसन का चेहरा उतरा हुआ था। आखिर उनका मूड इतना खराब क्यों था?
अंत में उन्होंने कहा, “मेरे एक मित्र ने पिछले रविवार को आपका शो देखा था। उसने मुझे आपके उस अद्भुत लड़के के बारे में बताया। मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। मैं तो भगवान में भी विश्वास नहीं करता। इसलिए कुछ लोगों के पास होने का दावा करने वाली तथाकथित अलौकिक शक्तियों में भी मेरा कोई विश्वास नहीं है। लेकिन अगर आप उस लड़के को यहाँ लाते हैं, तो मैं उससे बात करना चाहूँगा।”
श्री ताराफदार ने कुछ क्षण संकोच किया, फिर अपने सहायक से नयन को एक बार फिर बुलाने को कहा। एक मिनट में नयन प्रकट हो गया।
‘तो ये है वो लड़का?’ श्री हॉजसन ने नयन की ओर टकटकी लगाकर देखा। फिर उन्होंने कहा, ‘हमारे यहाँ हर शनिवार को घुड़दौड़ होती है। क्या तुम्हें पता था?’
'हाँ।'

‘अच्छा, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि पिछले शनिवार को तीसरी दौड़ किस घोड़े ने जीती थी? उसका नंबर क्या था?’
‘पांच,’ नयन ने तुरंत जवाब दिया।
श्री हॉजसन का व्यवहार तुरंत बदल गया। वे खड़े हो गए और बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगे, उनके हाथ जेबों में थे।
‘कितना अजीब! ओह, कितना अजीब!’ वह बुदबुदाया। फिर अचानक रुक गया और श्री ताराफदार की ओर मुड़ा। ‘मुझे बस इतना चाहिए,’ उसने कहा, ‘मैं यहाँ सप्ताह में एक बार आऊँगा ताकि मुझे पता चल सके कि अगले शनिवार को कौन सा घोड़ा जीतेगा। मैं आपसे साफ-साफ कहूँगा, श्री ताराफदार। घुड़दौड़ मेरा जुनून है। मैं पहले ही बहुत कुछ हार चुका हूँ, लेकिन यह मुझे रोक नहीं सकता। हालाँकि, अगर मैं और हार गया, तो मेरे लेनदार मुझे जेल भेज देंगे। इसलिए मैं पूरी तरह से आश्वस्त होना चाहता हूँ कि मैं केवल जीतने वाले घोड़े पर ही दांव लगाऊँ। यह लड़का मेरी मदद करेगा।’
‘आपको इतना यकीन कैसे है? आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह ऐसा करेगा?’ श्री ताराफदार ने ठंडे लहजे में पूछा।
'उसे अवश्य ही करना होगा, उसे अवश्य ही करना होगा, उसे अवश्य ही करना होगा!' श्री हॉजसन चिल्लाए।
‘नहीं, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए!’ श्री ताराफदार ने दृढ़ता से उत्तर दिया। ‘इस लड़के की शक्तियों का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। श्री हॉजसन, मुझसे बहस करने का कोई फायदा नहीं है। मैं अपना निर्णय बदलने वाला नहीं हूँ।’ श्री हॉजसन का चेहरा मानो सिकुड़ गया। जब वे बोले तो उनकी आवाज कांप रही थी।
‘कृपा करके,’ उसने हाथ जोड़कर विनती की, ‘कम से कम मुझे अगली दौड़ के आंकड़े तो बता दो। बस एक बार।’
श्री हॉजसन के आगमन के बाद पहली बार बोलते हुए लालमोहन बाबू ने कहा, 'जुआरों के लिए कोई मदद नहीं, जुआरों के लिए कोई मदद नहीं!'
श्री हॉजसन जाने के लिए मुड़े। उनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। ‘मैंने कभी इतने मूर्ख और जिद्दी लोग नहीं देखे, धिक्कार है!’ उसने चिल्लाते हुए कहा और बाहर निकल गया।
‘कितना घिनौना आदमी है!’ लालमोहन बाबू ने नाक सिकोड़ी। ‘आज तो हमें कुछ अजीबोगरीब लोग मिल ही गए,’ फेलुदा ने कहा। ‘श्री हॉजसन से शराब की बदबू आ रही थी। मुझे शायद इसलिए बदबू आई क्योंकि मैं उनके पास ही बैठा था। उनकी आर्थिक स्थिति साफ़ तौर पर बहुत खराब है। मैंने उनकी जैकेट पर पैच देखे— खासकर आस्तीनों पर। और आज सुबह तो उन्होंने बस से सफर किया, टैक्सी या मेट्रो से नहीं।’
'आप यह कैसे जानते हैं?'
किसी ने उसके पैर पर पैर रख दिया और उसके जूते का आंशिक निशान उस पर रह गया। ऐसा केवल भीड़भाड़ वाली बस या ट्राम में ही हो सकता है।
मुझे ऐसा भी लगा कि फेलुदा की अवलोकन क्षमता अलौकिक स्तर की थी।
एक कार आई और मुख्य द्वार के बाहर रुक गई। हम सभी ने अनायास ही दरवाजे की ओर देखा।

'□□□□ □□□,' □□□□□□ □□ □□□□

पाँच
एक मिनट बाद, एक अजीब प्राणी अंदर आया: लगभग साठ वर्ष का एक छोटा कद का आदमी, ढीले और बेढंगे पीले सूट में लिपटा हुआ, गले में अजीब तरह से लिपटी हरी टाई, पुरानी झाड़ू के रेशों जैसी उभरी दाढ़ी और एक मोटे-ताज़े कैटरपिलर जैसी मूंछें। उसकी आँखें असामान्य रूप से चमकदार थीं, और वह एक मोटी छड़ी लिए हुए था।
कमरे में प्रवेश करते ही उसने चारों ओर देखा और कर्कश स्वर में पूछा, 'तरफदार? तुममें से कौन तरफदार है?'
‘जी हां। कृपया बैठ जाइए,’ श्री तरफदार ने आमंत्रित किया।
‘और ये तीनों?’ उस आदमी की निगाहें हम पर अकड़कर घूमीं। ‘तीनों बहुत करीबी दोस्त।’
‘नाम? नाम?’
‘ये प्रदोष मित्र हैं, और ये उनके चचेरे भाई तपेश हैं। और वहाँ लालमोहन गांगुली हैं।’
ठीक है। अब चलिए काम पर लगें, काम पर।
'कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?'
'क्या आप जानते हैं मैं कौन हूं?'
‘आपने फोन पर सिर्फ अपना उपनाम बताया था, श्री ठाकुर। मुझे बस इतना ही पता है।’
‘I am Tarak Nath Thakur. TNT. Trinitrotolvene—ha ha ha!’
श्री ठाकुर जोर से हँस पड़े, जिससे कमरे में मौजूद सभी लोग चौंक गए। मुझे पता था कि टीएनटी का इस्तेमाल शक्तिशाली विस्फोटक बनाने में होता है। लेकिन इसमें हंसी की क्या बात थी?
श्री ठाकुर ने हमें कोई जानकारी नहीं दी। इसके बजाय फेलुदा ने उनसे एक प्रश्न पूछ लिया।
क्या आपके घर में कोई असाधारण रूप से छोटा बौना रहता है?
‘किचोमो। एक कोरियाई। बयासी सेंटीमीटर। पूरी दुनिया का सबसे छोटा वयस्क।’ मैंने कुछ महीने पहले अखबारों में उनके बारे में पढ़ा था।
अब गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में उनका नाम शामिल होगा।
‘तुम्हें वह कहाँ मिला?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
मैं पूरी दुनिया घूमता हूँ। मेरे पास खूब पैसा है। यह सब मुझे मेरे पिता से मिला है, मैंने जीवन भर एक पैसा भी नहीं कमाया। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने पैसा कैसे कमाया? इत्र के कारोबार से, उनका इत्र का एक सफल व्यवसाय था। अब मेरा एक भतीजा इसे संभालता है। मैं इत्र संग्राहक हूँ। ‘अरे? आप क्या-क्या इकट्ठा करते हैं?’

‘लोग और जानवर। अलग-अलग देशों और अलग-अलग महाद्वीपों के लोग। ऐसे लोग जिनमें कोई अनोखी विशेषता है। मैंने अभी आपको किचोमो के बारे में बताया। उनके अलावा, मेरे पास एक माओरी सचिव हैं जो दोनों हाथों से एक साथ लिख सकते हैं। उनका नाम टोकोबाहानी है। मेरे पास एक काला तोता है जो तीन अलग-अलग भाषाएँ बोलता है, एक पोमेरेनियन कुत्ता है जिसके दो सिर हैं, लक्ष्मणझूला का एक साधु है जो हवा में बैठता है—सचमुच, ज़मीन से छह फीट ऊपर, और...’
‘एक मिनट रुकिए, महोदय,’ लालमोहन बाबू ने बीच में ही टोकते हुए कहा। तारक नाथ ठाकुर ने तुरंत प्रतिक्रिया दी। उन्होंने अपनी लाठी सिर के ऊपर उठाई और चिल्लाते हुए कहा, ‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे टोकने की? मुझे? अरे, मैं तो—’
‘माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए,’ लालमोहन बाबू ने बेहद क्षमा मांगी। ‘मैं यह जानना चाहता था कि क्या आपके संग्रह में शामिल ये सभी लोग पूरी तरह से स्वेच्छा से आपके घर में रहते हैं?’
‘क्यों नहीं? उन्हें अच्छा खाना मिलता है, अच्छी तनख्वाह मिलती है और आराम से रखा जाता है, इसलिए वे वहीं रहकर खुश हैं जहाँ मैं उन्हें रखता हूँ। हो सकता है आपने मेरे या मेरे संग्रह के बारे में न सुना हो, लेकिन दुनिया भर में सैकड़ों लोग जानते हैं। अभी कुछ ही दिन पहले, एक अमेरिकी पत्रकार ने मेरा इंटरव्यू लिया और न्यूयॉर्क टाइम्स में “द हाउस ऑफ तारक” नाम से एक लेख प्रकाशित किया।’
‘यह सब तो ठीक है, श्री ठाकुर,’ श्री ताराफदार ने बीच में कहा, ‘लेकिन आपने अभी तक मुझे यह नहीं बताया कि आप यहां क्यों आए हैं।’
‘क्या मतलब, मुझे इसे स्पष्ट-स्पष्ट बताना होगा? क्या यह स्पष्ट नहीं है? मुझे तुम्हारा वह लड़का अपने संग्रह के लिए चाहिए... उसका नाम क्या है? ज्योतिष्का? हाँ, मुझे ज्योतिष्का चाहिए।’
‘क्यों? यहाँ उसकी बहुत अच्छी देखभाल हो रही है, वह खुश और संतुष्ट है। वह मुझे छोड़कर तुम्हारे समलैंगिक परिवार में रहने क्यों जाएगा?’
श्री ठाकुर ने लगभग एक मिनट तक सुनील तरफदार को घूर कर देखा। फिर उन्होंने धीरे से कहा, 'अगर तुम गावंगी को देख लेते तो इतनी लापरवाही से बात नहीं करते।'
'गवांगी क्या है?' लालमोहन बाबू ने पूछा।
श्री ठाकुर ने उत्तर दिया, ‘क्या नहीं, बल्कि कौन।’ ‘वह कोई वस्तु नहीं, बल्कि एक इंसान है। वह युगांडा से आया है। लगभग आठ फीट लंबा, उसकी छाती चौवन इंच चौड़ी और वजन 350 किलो है। वह किसी भी दिन ओलंपिक के सर्वश्रेष्ठ हैवीवेट चैंपियन को भी आसानी से हरा सकता है। एक बार उसने तराई के जंगलों में एक बाघ देखा जिस पर धारियाँ और धब्बे दोनों थे। बिल्कुल अनोखा। उसने उसे बेहोश करने वाली दवा का इंजेक्शन लगाकर बेहोश कर दिया। फिर उसने उस विशाल जानवर को साढ़े तीन मील तक ढोया। वही गवांगी अब मेरा निजी साथी है।’ लालमोहन बाबू ने बड़ी हिम्मत से पूछा, 'क्या आपने गुलामी की पुरानी व्यवस्था को फिर से लागू कर दिया है?'
‘गुलामी?’ श्री ठाकुर ने लगभग थूकते हुए कहा। ‘नहीं, महोदय! जब मैंने पहली बार गवांगी को देखा, तो उसका भविष्य पूरी तरह अंधकारमय था। वह युगांडा की

राजधानी कंपाला के एक अच्छे परिवार से था। उसके पिता डॉक्टर थे। उन्होंने ही मुझे बताया था कि पंद्रह साल का होने से पहले ही गवांगी की लंबाई साढ़े सात फीट हो गई थी। वह कहीं बाहर नहीं जा पाता था क्योंकि छोटे बच्चे उस पर पत्थर फेंकते थे। उसे स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि उसके सहपाठी उसे लगातार चिढ़ाते और ताने मारते थे। उसकी लंबाई और कद उसके लिए हमेशा शर्मिंदगी का कारण थे। जब मैं उससे मिला, तो वह इक्कीस साल का था, घर पर चुपचाप दिन बिता रहा था, अपने भविष्य की चिंता में डूबा हुआ था। अगर मैंने उसे उस स्थिति से न बचाया होता और अपने साथ न लाया होता, तो वह उसी हालत में मर जाता। उसे मेरे साथ एक नया जीवन मिला। वह मेरा गुलाम क्यों बने? मैं उसे अपने बेटे की तरह मानता हूँ।’
‘ठीक है, श्री ठाकुर, हम आपकी बात मान लेते हैं। लेकिन फिर भी, मैं ज्योतिष्का को आपके चिड़ियाघर में जाने की अनुमति नहीं दे सकता।’
'गवांगी के बारे में बताए जाने के बाद भी आप ऐसा कह रहे हैं?'
'जी हां। आपके गवांगी का मेरे फैसले से कोई लेना-देना नहीं है।'
पहली बार श्री ठाकुर का आत्मविश्वास थोड़ा कम होता हुआ प्रतीत हुआ। मैंने उन्हें आह भरते सुना। उन्होंने कहा, 'ठीक है, लेकिन क्या मैं कम से कम उस लड़के को देख सकता हूँ?'
'जी हां, इसका आसानी से इंतजाम किया जा सकता है।'
नयन कमरे में वापस आया। श्री ठाकुर ने उसे घूरते हुए देखा।
उसने अचानक पूछा, 'मेरे घर में कितने कमरे हैं?' 'छियासठ।'
‘हम्म…’
श्री ठाकुर धीरे-धीरे उठे, उन्होंने अपने दाहिने हाथ से अपनी छड़ी के चांदी के हैंडल को मजबूती से पकड़ रखा था।
‘याद रखना, तरफदार, टीएनटी इतनी आसानी से हार नहीं मानता। अलविदा!’ उनके जाने के बाद हममें से कोई काफी देर तक चुप रहा। आखिर में लालमोहन बाबू ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, ‘फेलू बाबू, चार तो वाकई एक महत्वपूर्ण संख्या है, है ना? मतलब, चार ऋतुएँ होती हैं, चार दिशाएँ होती हैं, हमारे ज्यादातर देवी-देवताओं की चार भुजाएँ होती हैं, फिर चार वेद हैं... मुझे आश्चर्य है कि इन चारों को क्या कहा जाता होगा?’
‘इन्हें बस एफजीपी कहिए—चार लालची लोग। हर कोई दूसरे से कम लालची नहीं था। लेकिन उनमें से किसी को भी वो नहीं मिला जो वे चाहते थे। इसके लिए मैं सुनील की तारीफ करता हूँ।’
'जी नहीं, महोदय, प्रशंसा की कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने वही किया जो मुझे बहुत सरल लगा। नयन मेरी जिम्मेदारी है। वह मेरे घर में रहता है, वह मुझे जानता है और मैं उसे जानता हूं। उसे किसी और को सौंपने का तो सवाल ही नहीं उठता।'
'अच्छा। ठीक है, तो अब हमें चलना चाहिए।'
हम खड़े हो गए।
फेलुदा ने आगे कहा, 'जाने से पहले मैं आपको बस एक बात बताना चाहता हूं। अब अजनबी लोगों से कोई मुलाकात नहीं।'

'अरे नहीं, महोदय। मैंने सबक सीख लिया है! आज सुबह का अनुभव मेरे लिए काफी था।'
और कृपया याद रखें, अगर नयन को मेरी सुरक्षा की जरूरत हो, तो मैं हमेशा अपनी तरफ से हर संभव मदद करने के लिए मौजूद हूं। मुझे उस लड़के से पहले ही काफी लगाव हो गया है।
'धन्यवाद महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। अगर हमें आपकी मदद की जरूरत पड़ी तो मैं आपको जरूर बता दूंगा।'

छह
गुरुवार का दिन था। हमने पिछली सुबह चार लालची लोगों के साथ बिताई थी। अब चीजें रोमांचक होने लगी थीं, शायद इसीलिए लालमोहन बाबू आज सुबह 9 बजे के बजाय 8:30 बजे आ गए थे।
'क्या तुमने आज के अखबार देखे हैं?' फेलुदा ने अंदर आते ही उससे पूछा। 'मुझे खेद है कि नहीं। आज सुबह एक कश्मीरी शॉलवाला आया और उसने इतना समय लिया कि मुझे मौका ही नहीं मिला। वैसे, अखबारों में क्या छपा है?'
तिवारी ने उसका सीना खोला और पाया कि वह खाली था।
‘क्या! मतलब, युवा नयन आखिरकार सही था? पैसा कब चोरी हुआ था?’
“एक दोपहर ढाई से तीन बजे के बीच। कम से कम, श्री तिवारी को तो यही लगता है। उस समय वे अपने दंत चिकित्सक के क्लिनिक में थे। अब उनकी याददाश्त बिल्कुल ठीक है। जाहिर है, उन्होंने चोरी से दो दिन पहले संदूक खोला था और उसमें सब कुछ सही-सलामत पाया था। रकम वाकई पांच लाख से अधिक थी। तिवारी को स्वाभाविक रूप से अपने साथी पर शक है, क्योंकि किसी और को संदूक का संयोजन नहीं पता था।”
‘उसका साथी कौन है?’
'हिंगोरानी नामक एक व्यक्ति। टीएच सिंडिकेट में "एच" का मतलब हिंगोरानी है।'
‘मैं समझ गया। लेकिन सच कहूं तो, मुझे तिवारी या उसके साथी में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं है। मुझे जो बात हैरान करती है, वह है उस छोटे लड़के की ताकत।’
‘मैं भी इस बारे में सोच रही थी। मुझे यह जानने में बहुत दिलचस्पी है कि यह सब कैसे शुरू हुआ। टॉपशे, क्या तुम्हें याद है कि नयन के पिता कहाँ रहते हैं?’
'निकुंजबिहारी लेन. कालीघाट.'
'अच्छा।'
'क्या आप वहां जाना चाहेंगे? हम कोशिश कर सकते हैं—मेरा ड्राइवर कलकत्ता की ज्यादातर गलियों से अच्छी तरह वाकिफ है।'
पता चला कि लालमोहन बाबू के ड्राइवर को निकुंजाबिहारी लेन का पता था। हम दस मिनट में वहाँ पहुँच गए। एक स्थानीय पानवाले ने हमें नयन का घर दिखाया। एक दुबले-पतले सज्जन ने दरवाजा खोला। उनके हाथ में अभी भी पकड़े हुए तौलिए को देखकर लग रहा था कि उन्होंने अभी-अभी शेविंग पूरी की है।
‘माफ़ कीजिए, आपको इतनी सुबह परेशान करने के लिए,’ फेलुदा ने विनम्रता से कहा। ‘क्या आप अपने दफ्तर जाने वाले थे? क्या हम आपसे एक मिनट बात कर सकते हैं?’

'जी हां, बिल्कुल। मुझे अभी आधे घंटे तक कहीं नहीं जाना है। आप अंदर आ जाइए।'
हम एक ऐसे कमरे में दाखिल हुए जो बैठक और शयनकक्ष दोनों का काम करता था। उसमें दो कुर्सियों और एक संकरे पलंग के अलावा कोई फर्नीचर नहीं था। उस पर एक लुढ़का हुआ गद्दा पड़ा था।
‘मैं अपना परिचय देता हूँ। मेरा नाम प्रदोष मित्र है, और ये मेरे चचेरे भाई तपेश हैं, और ये मेरे दोस्त लालमोहन गांगुली हैं। हम नयन के बारे में और जानने आए हैं। दरअसल, हम उनसे और तरफदार से हाल ही में मिले हैं। आपके बच्चे को कितना अद्भुत उपहार मिला है!’
नयन के पिता ने फेलुदा को हैरानी भरी निगाहों से देखा, उनकी आँखों में विस्मय साफ झलक रहा था। 'क्या मतलब, तुम ही हो प्रदोष मित्तर, यानी जांचकर्ता? तुम्हारा उपनाम फेलू है?'
'हाँ।'
'ओह, आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई, महोदय! मैं आशीष सरकार हूं। आप नयन के बारे में क्या जानना चाहेंगे?'
मुझे एक बात जानने की उत्सुकता है। क्या नयन को ताराफदार के साथ रखने का विचार ताराफदार का था, या आपका?
'मैं आपसे सच कहूंगा, श्री मित्तर। यह सुझाव सबसे पहले श्री ताराफदार ने दिया था, लेकिन नयन से मिलने के बाद ही। मैं अपने बेटे को उससे मिलने ले गया था।'
'वह कब था?'
'मुझे उसकी संख्याओं की शक्ति के बारे में पता चलने के एक दिन बाद, यानी 2 दिसंबर को यह घटना हुई।'
‘आपने उसे सबसे पहले ताराफदार के पास ले जाने का फैसला क्यों किया?’
‘इसका सिर्फ एक ही कारण था, श्री मिटर। जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं अमीर आदमी नहीं हूँ। मेरे चार बच्चे हैं और डाकघर में मेरी छोटी-मोटी नौकरी है। मेरी तनख्वाह महीने के अंत से पहले ही खत्म हो जाती है। मेरे पास कोई बचत नहीं है। सच तो यह है कि मैं नयन को स्कूल में दाखिला भी नहीं दिला पाया हूँ। जब मैं अपने परिवार के भविष्य के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे डर लगता है। इसलिए जब मुझे पता चला कि नयन के पास एक विशेष शक्ति है, तो मैंने सोचा कि इसका सदुपयोग किया जा सकता है। यह सुनने में भयानक लग सकता है, लेकिन मेरी स्थिति में, कोई भी अतिरिक्त कमाई का मौका पाकर खुश होगा।’
'हां, मैं समझ गया। आपने जो किया उसमें कुछ भी गलत नहीं है। तो आप नयन को तरफदार से मिलने ले गए। उसके बाद क्या हुआ?'
श्री ताराफदार नयन की परीक्षा लेना चाहते थे। इसलिए मैंने उनसे कहा कि वे नयन से कोई भी ऐसा प्रश्न पूछें जिसका उत्तर अंकों में दिया जा सके। ताराफदार ने नयन से पूछा, “क्या तुम मुझे बता सकते हो कि मेरी उम्र कितनी है?” नयन ने कहा, “तैंतीस वर्ष, तीन महीने और तीन दिन।” ताराफदार ने दो और प्रश्न पूछे। फिर उन्होंने मुझे एक प्रस्ताव दिया। अगर मैं उन्हें नयन को अपने साथ मंच पर ले जाने की अनुमति देता, तो वे मुझे नियमित रूप से एक निश्चित राशि का भुगतान करते। मैं सहमत हो गया। फिर उन्होंने मुझसे पूछा

कि मैं कितना भुगतान चाहता/चाहती हूँ। बहुत हिचकिचाहट के साथ मैंने कहा, “एक हजार रुपये।” ताराफदार इस पर हँसे और बोले, “गलत, तुम बिल्कुल गलत हो। नयन, क्या तुम हमें वह आंकड़ा बता सकते हो जो मेरे दिमाग में है?” और नयन ने तुरंत कहा, “तीन शून्य शून्य शून्य।” श्री ताराफदार ने अपना वादा निभाया। उन्होंने मुझे पहले ही तीन हजार रुपये का अग्रिम भुगतान कर दिया है। इसलिए जब उन्होंने नयन को अपने घर में रहने का सुझाव दिया, तो मैं उन्हें मना नहीं कर सका।
'क्या नयन एक लगभग अजनबी के साथ रहने जाने से खुश था?'
'हां, आश्चर्यजनक रूप से। वह बड़ी खुशी से सहमत हो गया, और अब पूरी तरह से संतुष्ट प्रतीत होता है।'
'एक और सवाल, श्रीमान सरकार।'
'हाँ?'
‘आपको उनकी शक्ति के बारे में पहली बार कैसे पता चला?’
यह सब अचानक हुआ। एक दिन सुबह-सुबह वह उठा और मुझसे बोला, “बाबा, मुझे बहुत सी चीज़ें दिखाई दे रही हैं... वे इधर-उधर भाग रही हैं, और कुछ उछल-कूद कर रही हैं। क्या आपको भी दिखाई दे रही हैं?” मैंने कहा, “नहीं, मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा। ये चीज़ें आखिर हैं क्या?” उसने कहा, “संख्याएँ। ये सब संख्याएँ हैं, नौ से शून्य तक। मुझे ऐसा लग रहा है कि अगर आप मुझसे संख्याओं से संबंधित कुछ भी पूछेंगे, तो ये पागल लोग नाचना बंद कर देंगे।” ज़ाहिर है, मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ, लेकिन मैंने सोचा कि बच्चे को खुश करना चाहिए। इसलिए मैंने कहा, “ठीक है। उस कोने में पड़ी वह मोटी किताब क्या है?” नयन ने कहा, “वह महाभारत है।” मैंने कहा, “जी हाँ। अब क्या तुम बता सकते हो कि उसमें कितने पन्ने हैं?” यह सुनकर नयन मुस्कुराया और बोला, “मैं सही था, बाबा। सारी संख्याएँ गायब हो गई हैं। मुझे केवल तीन संख्याएँ दिखाई दे रही हैं, जो स्थिर खड़ी हैं। वे हैं नौ, तीन और चार।” मैंने महाभारत उठाई और आखिरी पन्ना देखा। उस पर 934 लिखा था।
‘ठीक है। बहुत-बहुत धन्यवाद, श्रीमान सरकार। मेरे पास अब और कोई प्रश्न नहीं है। हमें अपना समय देने के लिए हम सभी आपके बहुत आभारी हैं।’
हमने नमस्कार किया, घर से बाहर निकले और अपनी कार में बैठ गए। घर लौटकर देखा तो दो मेहमान हमारा इंतज़ार कर रहे थे। उनमें से एक सुनील तरफदार थे। दूसरे को मैं नहीं जानता था।
‘माफ़ कीजिए,’ फेलुदा ने जल्दी से कहा। ‘क्या आप बहुत देर से इंतज़ार कर रहे हैं?’
‘नहीं, सिर्फ पांच मिनट,’ श्री ताराफदार ने कहा। ‘ये मेरे मैनेजर शंकर हुबलीकर हैं।’
दूसरे सज्जन उठे और हमारा अभिवादन किया। वे अपने मित्र के समान ही उम्र के प्रतीत हो रहे थे। उनका पहनावा साफ-सुथरा और सलीकेदार था। फेलुदा ने अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा, 'नमस्कार। आप महाराष्ट्र से हैं, है ना?' 'जी हां, यह सही है। लेकिन मेरा जन्म और पालन-पोषण यहीं कलकत्ता में हुआ है।'

‘ठीक है। कृपया बैठ जाइए।’ हम सब बैठ गए। ‘आज सुबह आप यहाँ क्यों आए हैं?’ फेलुदा ने श्री ताराफदार से पूछा।
'मुझे डर है कि यह काफी गंभीर मामला है।'
'आपका क्या मतलब है?'
'कल रात हम पर एक विशालकाय जीव ने हमला किया था।'
मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। क्या वह गवांगी के बारे में बात कर रहा था? हमें बताओ क्या हुआ।
'आज सुबह मैं हमेशा की तरह 5:30 बजे अपने कुत्ते बादशाह को टहलने के लिए ले जाने के लिए उठा। मैं उसे लेने के लिए नीचे आया, लेकिन सीढ़ियों के नीचे पहुँचते ही मुझे रुकना पड़ा।'
'क्यों?'
'फर्श खून से सना हुआ था, और किसी के पैरों के निशान वहां से सीधे सामने के दरवाजे तक जा रहे थे। मैंने बाद में इन्हें नापा। हर एक निशान सोलह इंच लंबा था।'
'छठ. . .?' लालमोहन बाबू का गला रुँध गया।
'और तब?'
मेरे घर के सामने एक फोल्डिंग गेट है, जो रात में बंद रहता है। वह गेट आधा खुला था, ताला टूटा हुआ था, और उस गेट के बाहर मेरा चौकीदार भागीरथ पड़ा था। खून से सने पैरों के निशान उसके पास से होते हुए मुख्य कंपाउंड की दीवार तक जा रहे थे। मैंने भागीरथ का सिर ठंडे पानी से धोया और उसे होश में लाया। आँखें खोलते ही वह चीखने लगा, “राक्षस! राक्षस!” और लगभग बेहोश हो गया। खैर, उसने मुझे जो बताया वह यह था: आधी रात को, वह फोल्डिंग गेट के ठीक बाहर, रात भर जलने वाले कम रोशनी वाले बल्ब के नीचे खड़ा था। अचानक एक आवाज़ सुनकर भागीरथ ने ऊपर देखा और मंद अंधेरे में एक विशालकाय जीव को अपनी ओर आते देखा। वह स्पष्ट रूप से दीवार फांदकर आया था, क्योंकि मुख्य द्वार के बाहर मेरा सशस्त्र गार्ड था, जिसने उसे नहीं देखा था। भागीरथ ने मुझे बताया कि वह एक बार चिड़ियाघर गया था और वहाँ उसने एक जानवर देखा था जिसे “गोराइला” कहते हैं। उन्होंने कहा कि यह प्राणी देखने में बिल्कुल गोराइल जैसा था, बस फर्क इतना था कि यह उससे बड़ा और ज्यादा खतरनाक था। मैं भागीरथ से इसके बारे में और कुछ नहीं जान सका क्योंकि इस "राक्षस" को देखते ही वह बेहोश हो गया।
फेलुदा ने कहा, 'मैं समझ गया। फिर उस राक्षस ने शायद ढहने वाला फाटक तोड़कर अंदर प्रवेश किया होगा। उसके बाद तुम्हारे बादशाह ने उस पर हमला किया होगा और उसकी टांग काट ली होगी, जिससे वह भागने पर मजबूर हो गया।'
'हां, लेकिन उसने मेरे बादशाह को भी नहीं बख्शा। बादशाह का शव मुख्य द्वार से लगभग तीस फीट दूर मिला था। इस निर्दयी दरिंदे ने उसका गला घोंट दिया था।'
मुझे लगा कि इस पूरी भयावह कहानी में एकमात्र अच्छी बात यह थी कि टीएनटी अपने प्रयास में विफल रहा। भगवान का शुक्र है, नयन अभी भी सुरक्षित था। श्री ताराफदार की कहानी समाप्त होते ही फेलुदा चुप हो गया। वह बस खाली जगह को घूरता हुआ बैठा रहा और उसके चेहरे पर गहरी भौंहें चढ़ी हुई थीं।

‘क्या बात है, श्री मित्तर?’ श्री ताराफदार ने अधीरता से कहा। ‘कृपया कुछ बोलिए।’
सुनील, अब कार्रवाई करने का समय आ गया है। मैं अब सिर्फ बातें करते हुए नहीं बैठ सकता।
आप क्या करने की सोच रहे हैं?
‘मैंने फैसला किया है कि मैं आपके और नयन के साथ पूरे दक्षिण भारत में, जहाँ भी आप जाएँ, मद्रास से शुरू करके, आपके साथ चलूँगा। वह गंभीर खतरे में है, और न तो आप और न ही आपका यह दोस्त उसे वह सुरक्षा दे सकते हैं जिसकी उसे ज़रूरत है। मुझे अपना फर्ज निभाना ही होगा।’ श्री ताराफदार पहली बार मुस्कुराए।
'मिस्टर मिटर, मैं आपको बता नहीं सकती कि मुझे कितनी राहत महसूस हो रही है। अगर अब आप पेशेवर तौर पर काम शुरू करते हैं, तो मैं स्वाभाविक रूप से आपकी फीस और आप तीनों के एक साथ यात्रा करने के सभी खर्चों का भुगतान करूंगी। मतलब, मेरे प्रायोजक सभी खर्चों को वहन करेंगे।'
‘खर्चों के बारे में हम बाद में बात करेंगे। आप मद्रास जाने के लिए कौन सी ट्रेन ले रहे हैं?’
‘कोरोमंडल एक्सप्रेस, 19 दिसंबर को।’
और आपने किस होटल में बुकिंग कराई है?
‘ताज कोरोमंडल। आप फर्स्ट क्लास एसी में यात्रा करेंगे। बस मुझे अपना नाम और उम्र बता दीजिए। शंकर आरक्षण करवा देंगे।’
‘अच्छा,’ फेलुदा ने कहा। ‘अगर कोई समस्या हो तो मुझे बता देना। रेलवे बुकिंग ऑफिस में मैं बहुत से लोगों को जानता हूँ।’

सात
श्री ताराफदार और उनके दोस्त पौने दस बजे चले गए। उनके जाने के ठीक पाँच मिनट बाद, फेलुदा को एक फ़ोन कॉल आया जो हमारे लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित था। उन्होंने खुद ही फ़ोन उठाया, इसलिए पहले तो हमें पता ही नहीं चला कि किसका फ़ोन है। उन्होंने संक्षेप में बात की और चाय पीने के लिए हमारे साथ वापस आ गए।
‘मैंने निर्देशिका में जाँच की,’ उसने अपने होठों तक एक कप उठाते हुए कहा, ‘उसमें ऐसे केवल दो ही नाम सूचीबद्ध हैं।’
‘देखो, फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा, ‘मुझे बिल्कुल समझ नहीं आता कि तुम हर छोटी बात को रहस्य क्यों बना देते हो। अभी- अभी तुम्हें किसने फोन किया था? क्या तुम सीधे-सीधे बता सकते हो, बिना घुमा-फिराकर बात किए?’
‘हिंगोरानी।’
‘क्या ये वही हिंगोरानी हैं जिनके बारे में हमने आज सुबह पढ़ा था?’
जी हाँ, महोदय। तिवारी के साथी।
वह क्या चाहता था?
'जब हम उसके घर जाकर उससे मिलेंगे, तब हमें इसका पता चल जाएगा। वह अलीपुर पार्क रोड में रहता है।'
क्या आपने अपॉइंटमेंट लिया है?
'हां, जब मैं उससे बात कर रहा था तब आपको यह बात समझ जानी चाहिए थी। जाहिर है, आप पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहे थे।'
‘मैंने आपको कहते सुना, “आज शाम पाँच बजे”,’ मैं खुद को कहने से रोक नहीं पाया। इससे लालमोहन बाबू और भी चिढ़ गए। ‘मैं सिद्धांत के तौर पर दूसरों की टेलीफोन बातचीत नहीं सुनता,’ उन्होंने बड़े ही नेक इरादे से कहा। लेकिन बाद में जब फेलुदा ने उन्हें दोपहर के भोजन के लिए रुकने को कहा और फिर पूरी दोपहर उन्हें स्क्रैबल खेलना सिखाया, तो वे काफी शांत हो गए। यह इतना आसान नहीं था, क्योंकि पता चला कि लालमोहन बाबू ने अपने जीवन में कभी क्रॉसवर्ड पहेली हल नहीं की थी, जबकि फेलुदा शब्दों के सभी खेलों में माहिर थे और पहेलियों और कोड को सुलझाने में उस्ताद थे। लेकिन लालमोहन बाबू का मूड पूरी तरह से ठीक हो गया था; उन्हें इससे कोई आपत्ति नहीं थी। हम निर्धारित समय से पांच मिनट पहले श्री हिंगोरानी के घर पहुंच गए।
उनके परिसर के एक तरफ एक गैरेज था जिसमें एक बड़ी सफेद कार खड़ी थी। 'एक विदेशी कार?' लालमोहन बाबू ने पूछा।
'नहीं, यह भारतीय है। ए कोंटेसा,' फेलूदा ने उत्तर दिया।
एक संदेशवाहक मुख्य द्वार पर खड़ा था। उसने लालमोहन बाबू की ओर देखा और पूछा, 'मित्तर साहब?'

नहीं, नहीं, मैं नहीं। ये मिस्टर मिटर हैं।
'कृपया मेरे साथ आइए।'
हम उसके पीछे-पीछे ड्राइंग रूम तक गए। 'कृपया बैठ जाइए,' वेटर ने कहा और चला गया। लालमोहन बाबू और मैंने दो कुर्सियाँ देखीं। फेलुदा किताबों की अलमारी में रखी चीज़ों का निरीक्षण करने लगा।
बाहर सीढ़ियों पर एक बड़ी घड़ी रखी थी। जैसे ही घड़ी में पाँच बजे, श्री हिंगोरानी कमरे में दाखिल हुए, घड़ी से एक गहरी लेकिन मधुर ध्वनि निकली। श्री हिंगोरानी अधेड़ उम्र के, दुबले-पतले और शायद बीमार थे, क्योंकि उनकी आँखों के नीचे गहरे काले घेरे थे। उनके आते ही हम उठ खड़े हुए। उन्होंने जल्दी से कहा, 'कृपया बैठ जाइए।' हम फिर से बैठ गए।
श्री हिंगोरानी बोलने लगे। मैंने देखा कि उनकी घड़ी का पट्टा थोड़ा ढीला था, क्योंकि जब वे अपना हाथ हिलाते थे तो वह आगे की ओर खिसक जाता था। उन्होंने पूछा, 'क्या आपने टी एच सिंडिकेट के बारे में प्रेस में प्रकाशित खबरें पढ़ी हैं?'
'हाँ, वास्तव में।'
'मेरा साथी पूरी तरह से बुढ़ापे के कारण दिमागी तौर पर अस्थिर हो गया है। कम से कम, मुझे तो इसका कोई और कारण समझ नहीं आता। कोई भी समझदार व्यक्ति इस तरह का व्यवहार नहीं करेगा।'
हम आपके पार्टनर को जानते हैं।
'कैसे?'
फेलुदा ने ताराफदार और नयन के बारे में जल्दी से बताया। उन्होंने आगे कहा, 'श्री तिवारी ज्योतिष्का से मिलने सुनील ताराफदार के घर गए थे, और संयोग से हम भी वहीं मौजूद थे। उस नन्हे से लड़के ने उन्हें सही संख्याएँ बता दीं और कहा कि संदूक में पैसे नहीं हैं।'
'अच्छा ऐसा है । । ।'
‘आपने मुझे फोन पर बताया था कि आपको परेशान किया जा रहा है। असल में हुआ क्या है?’
दरअसल, एक साल से भी ज्यादा समय से तिवारी और मेरे बीच संबंध अच्छे नहीं थे, हालांकि एक समय हम अच्छे दोस्त थे। दरअसल, हम सेंट जेवियर कॉलेज में सहपाठी थे। हमने 1973 में टी एच सिंडिकेट का गठन किया और कुछ वर्षों तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। लेकिन फिर... हमारे रिश्ते में बदलाव आने लगा। 'क्यों?'
इसका मुख्य कारण तिवारी की याददाश्त थी। यह बहुत तेज़ी से कमज़ोर होने लगी। कई बार तो उन्हें सबसे सरल बातें भी याद नहीं रहती थीं, और ग्राहकों के साथ बैठकों में उनकी उपस्थिति बहुत मुश्किल हो गई थी। पिछले साल, मैंने उनसे कहा कि मैं एक बहुत अच्छे डॉक्टर को जानता हूँ जिनसे उन्हें मिलना चाहिए। लेकिन तिवारी को मेरा यह सुझाव बहुत बुरा लगा। यहीं से हमारी पुरानी दोस्ती टूटने लगी। मुझे साझेदारी खत्म करने का मन हुआ, लेकिन मैं रुका रहा क्योंकि अगर मैं नहीं रुकता, तो पूरी कंपनी बंद हो जाती। फिर भी, हालात सुधर सकते थे, लेकिन... तिवारी के हालिया व्यवहार ने मुझे सचमुच

झकझोर दिया। जब उन्हें पता चला कि उनका खजाना खाली है, तो वे सीधे मेरे पास आए और बोले, "मुझे मेरा पैसा अभी इसी वक्त वापस दो!"
'क्या यह सच है कि उसने एक बार आपको बताया था कि कौन से अंक मिलकर संयोजन बनाते हैं?'
नहीं, नहीं, ये सरासर झूठ है! उसने अपना पैसा और निजी कागजात उस संदूक में रखे थे। उसे मुझे संदूक का नंबर बताने की कोई ज़रूरत नहीं थी। इसके अलावा, उसे लगता है कि जब वो अपने डेंटिस्ट के पास था, तब मैंने उसका पैसा चुरा लिया। जबकि मैं साबित कर सकता हूँ कि उस समय मैं वहाँ से मीलों दूर था। दरअसल, मैं सुबह 11 बजे बेल व्यू क्लिनिक में अपने एक चचेरे भाई से मिलने गया था, जिसे दिल का दौरा पड़ा था, और मैं साढ़े तीन बजे लौटा था। लेकिन तिवारी को मेरी बात पर यकीन नहीं है और उसने धमकी भी दी है कि अगर मैंने उसका पैसा वापस नहीं किया तो वो मुझ पर गुंडे छोड़ देगा। उसका दिमाग पूरी तरह खराब हो गया है।
क्या आपको इस बात का कोई अंदाजा है कि पैसा किसने चुराया होगा?
‘सबसे पहले तो, श्री मित्तर, मुझे बिल्कुल भी नहीं लगता कि चोरी हुई है। तिवारी ने खुद ही इसे कहीं और रख दिया होगा या किसी ऐसी चीज पर खर्च कर दिया होगा जिसे वह अब भूल गए हैं। मुझे उनसे ऐसी उम्मीद नहीं है। क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सुना है जो बीस साल से अधिक समय तक इस्तेमाल करने के बाद भी अपने ही कॉम्बिनेशन लॉक के नंबर भूल जाए?’
‘मैं समझ गया आपका मतलब। चलिए अब मुद्दे पर आते हैं, श्री हिंगोरानी।’ 'हां, आप जानना चाहते हैं कि मैंने आपको यहां क्यों बुलाया है, है ना?'
'यह सही है।'
‘देखिए, श्रीमान मित्तर, मुझे सुरक्षा चाहिए। तिवारी खुद भले ही भुलक्कड़ हो, लेकिन मुझे यकीन है कि उसके किराए के गुंडे अपना काम कभी नहीं भूलेंगे। वे धूर्त, चालाक और निर्दयी होंगे। भला, किसी मुवक्किल को अपराधियों से बचाना एक निजी जासूस के काम का हिस्सा तो होता ही है, है ना?’
'जी हां, ऐसा ही है। लेकिन मुझे एक समस्या है। देखिए, मैं लगभग पांच सप्ताह के लिए बाहर जा रहा हूँ। इसलिए मैं तुरंत अपना काम शुरू नहीं कर सकता। क्या आप मेरे लौटने तक इंतजार कर सकते हैं?'
'आप कहां जा रहे हैं?'
‘दक्षिण भारत, मद्रास से शुरू करते हुए।’
हिंगोरानी की आँखें चमक उठीं। ‘बहुत बढ़िया!’ उन्होंने अपनी जांघ थपथपाते हुए कहा। ‘मैं वैसे भी मद्रास जाने वाला था। किसी ने मुझे वहाँ एक नए व्यापारिक अवसर के बारे में बताया था। आप जानते हैं, मैंने यहाँ के स्थानीय कार्यालय जाना बंद कर दिया है। तिवारी ने जिस तरह से मेरा अपमान किया, उसके बाद मैं वहाँ वापस जाने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहा था। लेकिन ज़ाहिर है, मैं पूरी ज़िंदगी घर पर तो नहीं रह सकता। इसलिए मैंने सोचा कि मद्रास में उस प्रस्ताव के बारे में और जानकारी जुटा लूँ। क्या आप हवाई जहाज़ से जा रहे हैं? हम सब एक साथ जा सकते हैं, है ना?’
‘हम ट्रेन से यात्रा कर रहे हैं, श्री हिंगोरानी। दरअसल, मैं किसी और की रक्षा के लिए जा रहा हूँ—एक आठ साल के छोटे लड़के की। वह ज्योतिष्का नाम

का बच्चा है जिसने तिवारी की मदद की थी। तीन अलग-अलग लोग उसका इस्तेमाल अपने स्वार्थ के लिए करना चाहते हैं। श्री ताराफदार और मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी उसके पास न पहुँचे और उसकी शक्ति का दुरुपयोग न करे।’ 'बिल्कुल। लेकिन क्यों न आप एक तीर से दो निशाने साध लें?'
‘आपका क्या मतलब है?’
‘अगर तुम मेरे लिए काम करना शुरू कर दोगे, तो मैं तुम्हें तुम्हारी फीस भी दे दूंगा। ताकि तुम मुझ पर और ज्योतिष्का दोनों पर नजर रख सको।’
फेलुदा ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। लेकिन उन्होंने श्री हिंगोरानी को एक चेतावनी दी। 'मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन कृपया ध्यान रखें कि यह पर्याप्त नहीं हो सकता। आपको अपने कार्यों और यात्राओं में बहुत सावधानी बरतनी होगी।'
'जी हां, बिल्कुल। आप मद्रास में कहां ठहरेंगे?'
‘होटल कोरोमंडल। हम 21 तारीख को वहाँ पहुँचेंगे।’
‘बहुत खूब। मद्रास में मिलते हैं।’
इसके तुरंत बाद हम वहां से निकल गए। वापस आते समय मैंने फेलुदा से कहा, 'मैंने ड्राइंग रूम की दीवार पर दो खाली जगहें देखीं, जो आयताकार थीं। ऐसा लग रहा था मानो वहां कभी दो पेंटिंग टंगी रही हों।'
'अच्छा अवलोकन। वे शायद तेल चित्र थे।'
‘और अब वे लापता हैं,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की। ‘क्या आपको लगता है कि इसका कोई विशेष महत्व हो सकता है?’
‘यह स्पष्ट है कि श्री हिंगोरानी ने उनसे छुटकारा पा लिया।’
'हां, लेकिन क्यों? इसका क्या तात्पर्य है?'
‘लालमोहन बाबू, इसके हज़ारो अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। क्या आप सूची चाहेंगे?’
‘मैं समझ गया। आप इस मामले को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं, है ना?’
मुझे ऐसा करने का कोई कारण नहीं दिखता। मैंने इस तथ्य को नोट कर लिया है और इसे अपनी स्मृति में सहेज लिया है। जरूरत पड़ने पर इसे याद कर लिया जाएगा। और आपने अभी-अभी जो दूसरा मामला अपने हाथ में लिया है, उसके बारे में क्या? क्या आप दोनों मामलों को संभाल पाएंगे?
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह हमारी कार की खिड़की से बाहर खाली निगाहों से देखता रहा और धीरे-धीरे कुछ बुदबुदाने लगा।
मैंने उसे कहते सुना, ‘संदेह...संदेह...’

आठ
अगले दिन सुबह कई प्रमुख समाचार पत्रों में ताराफदार की मद्रास यात्रा की खबरें छपीं। उन्होंने बताया कि उनका पहला शो 25 दिसंबर को होगा।
फेलुदा बाल कटवाने गया था। जब वह लौटा, तो मैंने उसे रिपोर्टें दिखाईं। ‘हाँ, मैंने उन्हें पहले ही देख लिया है,’ उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘साफ़ है, सुनील तरफदार को पब्लिसिटी का लालच नहीं रहा। मैंने जाने से पहले उसे फ़ोन करके खरी-खोटी सुनाई, लेकिन उसने मेरी बात पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। इसके बजाय उसने मुझे बताया कि उसके लिए यह कितना ज़रूरी है कि मीडिया उसके कामों पर ध्यान दे। जब मैंने बताया कि अब उन तीनों लोगों को नयन की गतिविधियों के बारे में पता चल जाएगा और यह बिल्कुल भी ठीक नहीं है, तो उसने बड़े ही बेपरवाही से कहा कि अब वे कुछ भी करने की हिम्मत नहीं करेंगे, खासकर उस दिन के बाद जिस तरह से उसने उनके साथ बर्ताव किया था। इसके बाद मैंने फ़ोन रख दिया क्योंकि ज़ाहिर था कि वह अपना इरादा बदलने वाला नहीं था। लेकिन इसका मतलब है कि मेरा काम बहुत ज़्यादा मुश्किल होने वाला है और मुझे दस गुना ज़्यादा सतर्क रहना होगा। आख़िरकार, मुझे पता है कि नयन अभी भी खतरे में है।’
बाहर एक कार रुकी और कुछ ही सेकंड बाद किसी ने दो बार घंटी बजाई। ये लालमोहन बाबू ही होंगे। आज उन्हें देर हो गई थी। लगभग साढ़े दस बज रहे थे। 'मेरे पास तुम्हारे लिए एक खुशखबरी है!' उसने अंदर आते हुए कहा, उसकी आंखें उत्साह से चौड़ी हो गई थीं।
‘रुको!’ फेलुदा ने थोड़ा मुस्कुराते हुए कहा। ‘मुझे अंदाज़ा लगाने दो। तुम आज सुबह न्यू मार्केट गए थे, है ना?’
'आपको कैसे मालूम?'
‘न्यू मार्केट स्थित आइडियल स्टोर्स का कैश मेमो आपकी जैकेट की सामने वाली जेब से झाँक रहा है। इसके अलावा, आपकी बगल वाली जेब में जो बड़ा सा उभार है, उससे साफ पता चलता है कि आपने अपने पसंदीदा टूथपेस्ट का एक बड़ा ट्यूब खरीदा है।’
‘ठीक है। अगला?’
‘तुम एक रेस्टोरेंट में गए थे और तुमने स्ट्रॉबेरी आइसक्रीम खाई थी— तुम्हारी शर्ट पर गुलाबी रंग की दो छोटी-छोटी बूंदें हैं।’
‘शाबाश! अगला?’
‘स्वाभाविक रूप से, आप अकेले रेस्तरां में नहीं गए होंगे। आप किसी परिचित से ज़रूर मिले होंगे। आपने उसे आइसक्रीम खाने के लिए आमंत्रित नहीं किया होगा। उसने किया होगा। मुझे पता है कि हमारे अलावा आपका कोई भी ऐसा करीबी दोस्त नहीं है जिसके साथ आप रेस्तरां जाना चाहें। तो संभवतः, यह व्यक्ति कोई ऐसा था जिससे आप हाल ही में मिले थे। अब, वह कौन हो सकता है? तरफदार तो

नहीं, क्योंकि वह बहुत व्यस्त है। क्या वह उन चार लालची लोगों में से कोई हो सकता है? खैर, मुझे नहीं लगता कि वह हॉजसन था। उसके पास फिजूलखर्ची करने के लिए पैसे नहीं हैं। टीएनटी? नहीं, वह अपनी खरीदारी करने के लिए न्यू मार्केट तक इतनी दूर नहीं जाएगा। तो हमारे पास यही विकल्प बचता है—’ 'शानदार, फेलू बाबू, बिल्कुल शानदार! लंबे समय बाद आज आपने मुझे दिखाया कि आपकी तर्कशक्ति अभी भी बरकरार है।'
‘क्या यह बासाक था?’
'ओह हाँ। नंदलाल बासक। उन्होंने आज मुझे अपना पूरा नाम बताया।'
‘उसने तुम्हें और क्या बताया?’
मुझे खेद है कि कुछ अप्रिय खबर मिली है। लगता है बासक ने उनके मूल प्रस्ताव में दस हजार डॉलर और जोड़ दिए थे। लेकिन फिर भी तरफदार ने मना कर दिया। इससे स्वाभाविक रूप से बासक बहुत नाराज हो गए। उन्होंने मुझसे कहा, "जाकर अपने जासूस दोस्त, श्री गांगुली को बता दो कि नंदलाल बासक अपने जीवन में कभी पराजित नहीं हुए हैं। अगर तरफदार मद्रास में शो करते हैं, तो उन्हें उस प्रतिभाशाली लड़के का विशेष आइटम छोड़ना ही पड़ेगा। हम इसका ध्यान रखेंगे!"
मेरे हाथ अचानक ठंडे पड़ गए, इसलिए नहीं कि बासाक के शब्दों का मतलब यह था कि उसने फेलुदा को पहचान लिया था, बल्कि इसलिए कि उसके शब्दों के पीछे एक छिपा हुआ खतरा था जो मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं आया।
फेलुदा ने शांत भाव से कहा, 'बसाक का मामला तो खत्म हो गया। तिवारी अब दौड़ से बाहर हो गया है। इसलिए अब हमें तारक नाथ ठाकुर और हॉजसन से सावधान रहना होगा।'
‘तारक नाथ अकेले कुछ नहीं कर सकते। हमें गावंगी से निपटना होगा।’
फेलुदा बोलने ही वाला था कि दरवाजे की घंटी बज उठी। दरवाजा खोलते ही मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। मैंने पहले कभी टेलीपैथी को इतनी तेज़ी से काम करते नहीं देखा था। खुद टीएनटी बाहर खड़ा था।
‘क्या श्री मिटर मौजूद हैं?’
‘अंदर आइए, श्री ठाकुर,’ फेलुदा ने पुकारा। ‘तो आपने पता लगा लिया कि मैं वास्तव में कौन हूँ?’
‘बिल्कुल। और मुझे यह भी पता है कि तुम्हारा यह सैटेलाइट कौन है,’ टीएनटी ने लालमोहन बाबू की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘तुम जटायु हो, है ना?’
हाँ।'
‘मैंने एक बार तुम्हें अपने चिड़ियाघर में रखने के बारे में सोचा था, क्या तुम्हें पता है? आखिरकार, एकदम घटिया लेखन के मामले में, मुझे लगता है कि तुम्हारा कोई सानी नहीं है। होनोलूलू में हंगामा... हा हा हा!’
उनकी ज़ोरदार हंसी की आवाज़ हमारे बैठक कक्ष में गूंज उठी। फिर उन्होंने फ़ेलुदा की ओर देखा। 'तो मुझे लगता है कि हम मद्रास में एक बार फिर मिल रहे हैं?'
क्या आपने वहां जाने का मन बना लिया है?

'ओह हाँ। और मैं अकेला नहीं रहूंगा। मेरा 'युगांडा का बदसूरत' भी मेरे साथ होगा, बिल्कुल। है ना कमाल की बात? बिल्कुल आपकी किसी किताब के शीर्षक जैसा लगता है, है ना, श्री जटायु?'
‘क्या आप ट्रेन से जा रहे हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
मुझे ऐसा करना ही होगा। गवांगी विमान में सीट के लिए फिट नहीं हो पाएगा। श्री ठाकुर एक बार फिर ठहाका लगाकर हँस पड़े। फिर उठे और सामने के दरवाजे की ओर चलने लगे। ‘श्री मित्तर, मैं आपसे बस एक बात कहना चाहता हूँ,’ उन्होंने पीछे मुड़कर कहा। ‘कुछ परिस्थितियों में, बुद्धि की शक्ति शारीरिक शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकती। आपकी बुद्धि गवानगी से हज़ार गुना ज़्यादा हो सकती है, लेकिन अगर शारीरिक लड़ाई की बात आई, तो वो दोनों हाथ पीछे बाँधकर भी जीत जाएगा। अलविदा!’
श्री ठाकुर जितनी अचानक प्रकट हुए थे, उतनी ही अचानक गायब भी हो गए। मैंने सोचा, काश मैं इस गवानगी को सामने से देख पाता।

नौ
ट्रेन में न तो गवानगी का नामोनिशान था और न ही टीएनटी का। मद्रास तक की हमारी यात्रा पूरी तरह से शांतिपूर्ण रही।
होटल जाते समय लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की, 'मुझे समझ नहीं आता कि मद्रास को दिल्ली, बॉम्बे और कलकत्ता जैसे शहरों के साथ क्यों रखा जाता है। अरे, बंगाल का कोई भी छोटा शहर इससे कहीं ज्यादा जीवंत है!'
एक तरह से, वह सही था। सड़कें कलकत्ता की गलियों से कहीं ज़्यादा शांत थीं। लेकिन वे चौड़ी, चिकनी और गड्ढों से रहित थीं। वहाँ ज़्यादा गगनचुंबी इमारतें भी नहीं थीं; न ही कोई ट्रैफिक जाम था। मुझे मद्रास शहर पसंद आने लगा। पता नहीं लालमोहन बाबू अब भी उदास क्यों दिख रहे थे। हालाँकि, जैसे ही हम अपने होटल की जगमगाती लॉबी में दाखिल हुए, उनका चेहरा खिल उठा। उन्होंने कुछ देर इधर-उधर देखा, फिर सहमति में सिर हिलाया और कहा, 'सुंदर। अरे वाह, यह तो वाकई कमाल है, है ना?'
हमने पहले ही तय कर लिया था कि हम पहले तीन दिन सिर्फ़ दर्शनीय स्थलों को देखने में बिताएंगे। नयन और श्री ताराफ़दार, ज़ाहिर है, हमारे साथ चलेंगे। फ़ेलुदा ने कहा, 'हमने एलिफ़ेंटा गुफाएँ, एलोरा और उड़ीसा के मंदिर देख लिए हैं। अब हमें महाबलीपुरम जाना चाहिए। इससे हमें भारत की वास्तुकला का एक अलग पहलू देखने को मिलेगा। गाइड बुक देख लो, टॉपशे। अगर तुम्हें कुछ खास जगहों के बारे में पहले से पता होगा तो तुम्हें घूमने में ज़्यादा मज़ा आएगा।'
अंधेरा हो चुका था, इसलिए हम शाम को बाहर नहीं निकले। दरअसल, हम सभी को जल्दी सोने की इच्छा हो रही थी, इसलिए हमने रात 9 बजे तक खाना खा लिया और उसके तुरंत बाद सो गए। अगली सुबह, जैसे ही हम तैयार हुए, फेलुदा ने कहा, 'चलो जाकर पता लगाते हैं कि सुनील और नयन क्या कर रहे हैं।'
दुर्भाग्यवश, हमें एक ही मंजिल पर कमरे नहीं मिल पाए। हमारा कमरा चौथी मंजिल पर था, जबकि नयन का कमरा तीसरी मंजिल पर। हम सीढ़ियाँ उतरकर कमरा नंबर 382 के बाहर लगी घंटी तक पहुँचे। श्री ताराफदार ने दरवाजा खोला। कमरे में शंकर हुबलीकर और एक अन्य सज्जन मौजूद थे। लेकिन नयन का कोई अता- पता नहीं था।
‘सुप्रभात, श्री मित्तर,’ तरफदार ने बड़ी मुस्कान के साथ कहा, ‘मिलिए श्री रेड्डी से। ये रोहिणी थिएटर के मालिक हैं, जहाँ मद्रास में मेरा पहला शो होने जा रहा है। उनका कहना है कि स्थानीय जनता में जबरदस्त दिलचस्पी है। बहुत सारी पूछताछ आ रही है और उन्हें लगता है कि टिकट धड़ाधड़ बिकेंगे…’ ‘नयन कहाँ है?’ फेलुदा ने थोड़ी असभ्यता से बीच में ही टोकते हुए पूछा। ‘मेरा इंटरव्यू हो रहा है। द हिंदू अखबार का एक रिपोर्टर थोड़ी देर पहले मेरा इंटरव्यू लेने आया था। इससे मेरे शो को और ज्यादा पब्लिसिटी मिलेगी।’

'हां, लेकिन यह साक्षात्कार कहां हो रहा है?'
‘मैनेजर ने खुद ही व्यवस्था की। भूतल पर एक कॉन्फ्रेंस रूम है...’ ताराफदार के बोलने से पहले ही फेलुदा कमरे से बाहर निकल गया, मैं भी जल्दी से फेलुदा के पीछे गया, ताराफदार के आखिरी शब्द मुश्किल से मेरे कानों तक पहुँचे, ‘...मैंने उससे कहा था कि कोई अंदर न जाए...’
हम लिफ्ट का इंतज़ार किए बिना सीढ़ियों से नीचे भागे। फेलुदा धीरे-धीरे कुछ बुदबुदा रहा था। मैंने उसके मुंह से निकले शब्द सुने, 'मूर्ख' और 'बेवकूफ', जो मुझे समझ में आया कि हमारे जादूगर के लिए थे।
एक गुजरते हुए वेटर ने हमें कॉन्फ्रेंस रूम का पता बताया। फेलुदा ने दरवाजा धक्का देकर खोला और अंदर चले गए। वहाँ एक लंबी मेज थी, जिसके चारों ओर कुर्सियों की कतारें लगी थीं। नयन उनमें से एक कुर्सी पर बैठे थे। उनके बगल में दाढ़ी वाला एक आदमी बैठा था, जो नोटबुक में कुछ लिख रहा था। फेलुदा ने यह देखा और तुरंत आगे बढ़कर रिपोर्टर को पकड़ लिया और उसकी दाढ़ी खींच ली। दाढ़ी बड़ी आसानी से निकल गई। हेनरी हॉजसन हमें घूरते हुए खड़े रहे। 'सुप्रभात,' उसने बिना किसी झिझक के मुस्कुराते हुए कहा।
‘वह तुमसे क्या पूछ रहा था?’ फेलुदा ने नयन से पूछा।
‘घोड़ों के बारे में।’
‘ठीक है, श्रीमान मिटर, मुझे बाहर निकलवा दीजिए,’ हॉजसन ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मेरे पास अगले तीन दिनों की हर दौड़ में जीतने वाले सभी घोड़ों के नंबर पहले से ही हैं। आने वाले कई सालों तक मुझे दुनिया की कोई चिंता नहीं रहेगी। आपका दिन शुभ हो, महोदय!’
श्री हॉजसन चुपके से निकल गए। फेलुदा कुर्सी पर बैठ गया और अपने हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। फिर उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया और सीधे नयन की ओर देखा। “देखो, नयन,” उसने कुछ अधीरता से कहा, “अगर अब से कोई और तुमसे बात करने की कोशिश करे, तो बस उनसे कह देना कि जब तक मैं मौजूद न रहूँ, तुम एक शब्द भी नहीं बोलोगे। समझे?”
नयन ने समझदारी से सिर हिलाया।
‘एक तसल्ली की बात है, फेलुदा,’ मैंने हिम्मत करके कहा। ‘कम से कम हॉजसन अब हमें परेशान नहीं करेगा। वह अब कलकत्ता वापस जाएगा और अपने बचे-खुचे पैसे घोड़ों पर लगाएगा।’
'हां, यह सच है, लेकिन मैं तरफदार के पूरी तरह से गैरजिम्मेदार व्यवहार से चिंतित हूं। एक जादूगर को वास्तव में बेहतर व्यवहार करना चाहिए।'
हम नयन को ताराफदार के कमरे में वापस ले गए। फेलुदा ने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'क्या तुम्हें पब्लिसिटी चाहिए थी, सुनील? तुम्हें भरपूर मिलेगी, लेकिन उस तरह से नहीं जैसा तुमने सोचा था। क्या तुम्हें पता है कि नयन का इंटरव्यू कौन ले रहा था?'
'कौन?'
श्री हेनरी हॉजसन।
‘क्या! वो दाढ़ी वाला—?’
हां, वही दाढ़ी वाला आदमी था। उसे जो चाहिए था वो मिल गया। क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि नयन अभी भी खतरे से बाहर नहीं है? अगर हॉजसन

हमारे साथ मद्रास तक आ सकता है, तो बाकी लोग क्यों नहीं? अब देखो, अगर तुम नयन को सुरक्षित रखना चाहते हो, तो तुम्हें मेरी बात माननी होगी। वरना मुझसे किसी भी तरह की मदद की उम्मीद मत रखना।
'जी-जी सर!' श्री ताराफदार ने अपनी गर्दन खुजाते हुए और कुछ शर्मिंदा दिखते हुए धीरे से कहा।
फेलुदा ने आगे कहा, ‘प्रचार का काम श्री रेड्डी पर छोड़ दो। न तो तुम और न ही तुम्हारा दोस्त शंकर प्रेस के पत्रकारों के पास जाओ। कई असली पत्रकार साक्षात्कार और जानकारी चाहेंगे। तुम्हें उनसे दूर रहना सीखना होगा। तुम्हारी सबसे बड़ी प्राथमिकता नयन की सुरक्षा होनी चाहिए क्योंकि याद रखो, अगर तुम्हारा शो सफल होता है, तो यह उसकी ताकत और मंच पर उसके प्रदर्शन की वजह से होगा, न कि तुम्हारे द्वारा किए गए किसी प्रचार की वजह से। क्या मेरी बात समझ में आ गई?’
जी हाँ, महोदय। मैं समझ गया।
नाश्ते के दौरान हमने लालमोहन बाबू को हॉजसन के दौरे के बारे में बताया। 'वाह, वाह!' उन्होंने खुशी से कहा और ऑमलेट पर टूट पड़े। 'मुझे डर था कि मद्रास में सन्नाटा छा जाएगा। मुझे खुशी है कि ऐसा कुछ हुआ है। इससे उत्साह और बढ़ गया है, है ना?'
हम बाहर जाने की तैयारी करने के लिए अपने कमरे में लौट आए। आज हमने तय किया था कि हम स्नेक पार्क जाएंगे। इसे व्हिटेकर नाम के एक अमेरिकी ने बनाया था और सभी के अनुसार, यह देखने लायक जगह थी। जैसे ही हम निकलने वाले थे, दरवाजे की घंटी बजी। लालमोहन बाबू पहले ही हमारे कमरे में आ चुके थे। कौन हो सकता है?
मैंने दरवाजा खोला तो सामने श्री हिंगोरानी खड़े थे। उन्होंने पूछा, 'क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?'
'बिल्कुल, कृपया करें,' फेलुदा ने आमंत्रित किया।
श्री हिंगोरानी अंदर आए और एक कुर्सी पर बैठ गए। राहत की सांस लेते हुए उन्होंने कहा, 'अभी तक तो सब ठीक है! मुझे नहीं लगता कि तिवारी को पता है कि मैं यहां हूं। मैं बिना किसी से कुछ कहे चला गया।'
‘अच्छा। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप सावधान होंगे। श्री हिंगोरानी, मुझे एक बात पर विशेष ज़ोर देना है। अगर कोई आपके घर की घंटी बजाए, तो हमेशा पूछें कि कौन है, और दरवाज़ा तभी खोलें जब सामने वाला व्यक्ति आपको जानता हो।’ श्री हिंगोरानी कुछ कह पाते, उससे पहले ही हमारे घर की घंटी फिर बजी। इस बार तरफदार और नयन थे।
फेलुदा ने कहा, 'अंदर आ जाओ।'
‘क्या यह वही मशहूर विलक्षण लड़का है?’ श्री हिंगोरानी ने पूछा।
फेलुदा मुस्कुराया। 'क्या आपको इन दोनों लोगों से परिचय कराने की कोई आवश्यकता है?'
'आपका क्या मतलब है?'
'श्री हिंगोरानी, आपने मुझे अपनी सुरक्षा के लिए नियुक्त किया है। आपको यह समझना चाहिए था कि यदि कोई ग्राहक अपने रक्षक के सामने सच नहीं बताता है, तो रक्षक का काम बहुत अधिक कठिन हो जाता है।'

'आप क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं?'
‘आप यह बात अच्छी तरह जानते हैं, लेकिन आप ऐसा दिखावा कर रहे हैं कि आप नहीं जानते। लेकिन फिर, आप अकेले नहीं हैं जिन्होंने मुझे पूरी सच्चाई नहीं बताई।’
फेलुदा ने श्री ताराफदार की ओर देखा, जो एकटक देख रहे थे। 'ठीक है, चूंकि आप दोनों में से कोई भी कुछ नहीं बोलेगा, तो मुझे बोलने दीजिए।' फेलुदा अभी भी श्री ताराफदार को देख रहे थे। 'सुनील, तुमने कहा था कि तुम्हें कहीं से कोई प्रायोजक मिला है। मेरा अनुमान है कि तुम्हारा प्रायोजक कोई और नहीं बल्कि यहीं श्री हिंगोरानी हैं।'
यह सुनकर श्री हिंगोरानी आश्चर्य से उछल पड़े। “लेकिन आपने कैसे अनुमान लगाया?” वे चिल्लाए। “क्या आप भी जादूगर हैं?”
'नहीं, मेरा अनुमान जादू से संबंधित नहीं था। यह तो बस मेरी चौकस निगाहों और कानों को खुला रखने का परिणाम था।'
'कैसे?'
‘जब हम सुनील का शो देखने गए थे, तब नयन ने दर्शकों में से किसी को अपनी कार का नंबर बताया था। वह नंबर WMF 6232 था। मैंने आपकी सफेद कॉन्टेसा पर भी वही नंबर देखा। यह अनुमान लगाना ज्यादा मुश्किल नहीं था कि दर्शकों में बैठा वह युवक आपके परिवार का ही कोई सदस्य था, और उसी ने आपको ज्योतिषका के बारे में बताया था।’
‘जी हां। वो मोहन था, मेरा भतीजा।’ श्री हिंगोरानी अब भी असमंजस में लग रहे थे।
‘इसके अलावा,’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘जब हम उस दिन आपके घर गए थे, तो मैंने आपकी किताबों की अलमारी में जादू पर काफी सारी किताबें देखीं। इसका मतलब तो बस यही हो सकता है—’
‘जी हाँ, जी हाँ, जी!’ श्री हिंगोरानी ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘जब मेरे पिता को जादू में मेरी रुचि के बारे में पता चला, तो उन्होंने मेरा सारा सामान नष्ट कर दिया, लेकिन मेरी किताबें नहीं। मैं उन्हें बचाने में कामयाब रहा, और वे अभी भी मेरे पास हैं।’
मैंने श्री ताराफदार की ओर देखा। वे बेहद असहज लग रहे थे। श्री हिंगोरानी ने कहा, 'सुनील को दोष मत दीजिए। मैंने ही उनसे मेरा नाम गुप्त रखने को कहा था।'
'लेकिन क्यों?'
‘इसका एक अहम कारण है। देखिए, मेरे पिता अभी जीवित हैं। उनकी उम्र बयासी वर्ष है, लेकिन वे अपनी उम्र के हिसाब से काफी चुस्त-दुरुस्त और फुर्तीले हैं। वे फैजाबाद में हमारे पुराने पुश्तैनी घर में रहते हैं। अगर उन्हें पता चला कि मैं जादू-टोने और जादूगरों के साथ जुड़ गया हूँ, तो इस उम्र में भी वे मुझे अपनी वसीयत से बेदखल कर सकते हैं।’
'अच्छा ऐसा है।'
जब मोहन ने मुझे ज्योतिष्का के बारे में बताया, तो मैंने लगभग तुरंत ही उनके शो को फाइनेंस करने का फैसला कर लिया। तब तक मुझे यह लगभग स्पष्ट हो चुका था कि तिवारी और मुझे जल्द ही अलग होना पड़ेगा, और मुझे आय का एक नया

स्रोत खोजना होगा। इसलिए मैं अगले दिन तरफदार से मिला और एक प्रस्ताव रखा, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। दो दिन बाद, तिवारी मेरे पास आए और मुझ पर चोरी का आरोप लगाया। मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सका। मैंने अगली सुबह तिवारी को पत्र लिखा और उन्हें बताया कि मैं अस्वस्थ हूँ, और मेरे डॉक्टर ने मुझे एक महीने आराम करने की सलाह दी है। मैंने अगले दिन से अपने कार्यालय जाना बंद कर दिया।
'इसका मतलब है कि आप किसी भी हालत में ताराफदार का शो देखने के लिए मद्रास जाने वाले थे?'
'जी हां, लेकिन मैंने आपको जो बताया था कि मेरी जान को खतरा है, वह बिल्कुल सच है, श्री मिटर। मुझे किसी भी हालत में आपकी मदद लेनी ही पड़ती।'
‘आपने मद्रास में जिस नए व्यावसायिक अवसर का जिक्र किया था, उसके बारे में क्या?’
नहीं, यह तो मैंने बस यूं ही बना दिया था। यह सच नहीं है।
‘ठीक है। तो मुझे तिवारी के गुंडों से आपकी रक्षा करने और नयन को तीन बेईमान आदमियों से बचाने के लिए नियुक्त किया गया है। हम यह व्यवस्था कर सकते हैं कि हममें से कोई एक हर समय नयन के साथ रहे। लेकिन आपको मुझे यह बताना होगा कि आप मेरा काम थोड़ा आसान बनाने के लिए क्या करने वाले हैं।’ ठीक है, मैं वादा करता हूँ कि जैसा कहा जाएगा वैसा ही करूँगा। मैं पहले भी कई बार मद्रास जा चुका हूँ। इसलिए मुझे घूमने-फिरने की ज़रूरत नहीं है। शो शुरू होने के बाद ताराफ़दार का मैनेजर मुझे बिक्री के आँकड़ों की जानकारी देता रहेगा। दूसरे शब्दों में, मुझे अपने कमरे से बाहर निकलने की कोई ज़रूरत नहीं है; और मैं किसी भी अनजान व्यक्ति के लिए दरवाज़ा तो बिल्कुल नहीं खोलूँगा।
'बहुत अच्छा। ठीक है, श्रीमान हिंगोरानी, मेरा सुझाव है कि आप अपने कमरे में वापस जाइए और वहीं रहिए। अब हमारे जाने का समय हो गया है।'
हम सब उठ खड़े हुए। जटायु ने हाथ बढ़ाते हुए कहा, 'चलिए, नयन बाबू।' नयन ने उत्सुकता से उसका हाथ थाम लिया। जटायु और नयन के बीच स्पष्ट रूप से गहरी दोस्ती हो गई थी।

दस
हमने सांपों के पार्क में ज़्यादा समय नहीं बिताया, लेकिन थोड़े समय के लिए ही सही, हमें पता चल गया कि यह कितनी अनोखी जगह है। यह अविश्वसनीय लग रहा था कि किसी एक व्यक्ति ने पूरी योजना बनाई होगी। मैंने उन सभी प्रजातियों के सांप देखे जिनके बारे में मैंने पढ़ा था, और कई ऐसी प्रजातियाँ भी देखीं जिनके अस्तित्व के बारे में मुझे पता ही नहीं था। पार्क का डिज़ाइन इतना सुंदर था कि उसमें घूमना बहुत सुखद अनुभव था।
पहले दिन की सैर के दौरान कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। मैंने बस इतना देखा कि लालमोहन बाबू दाढ़ी वाले किसी भी आदमी को देखते ही नयन का हाथ और कसकर पकड़ लेते थे। मैंने उनसे कहा, 'मुझे यकीन है कि हॉजसन कलकत्ता वापस चला गया है।' ‘तो क्या हुआ?’ उसने पलटकर जवाब दिया। ‘तुम्हें कैसे पता कि बासाक भेस बदलकर आने की कोशिश नहीं करेगा?’
हम एक खुले दलदली इलाके की ओर जाने वाले रास्ते पर टहल रहे थे। हमें आश्चर्य हुआ कि यह इलाका एक मजबूत लोहे की रेलिंग से घिरा हुआ था, जिसके पीछे धूप में पांच मगरमच्छ सो रहे थे। हम उन्हें ध्यान से देख रहे थे और लालमोहन बाबू ने नयन से कहना शुरू ही किया था, 'जब तुम थोड़े बड़े हो जाओगे, मेरे बेटे, मैं तुम्हें अपनी किताब 'द क्रोकोडाइल्स क्रंच' की एक प्रति दूंगा,' तभी बिना आस्तीन की बनियान और शॉर्ट्स पहने एक आदमी एक हाथ में बाल्टी लिए हुए आ गया। वह रेलिंग से लगभग बीस गज दूर खड़ा हो गया और बाल्टी से मेंढक निकालने लगा। उसने उन्हें एक-एक करके मगरमच्छों पर फेंका, जिन्हें उन्होंने बड़ी सफाई से अपने जबड़ों के बीच पकड़ लिया। मैं इस दृश्य को बड़े आश्चर्य से देख रहा था, क्योंकि मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था।
हम शाम को अपने होटल लौट आए, सब सुरक्षित थे। हममें से किसी को नहीं पता था कि अगले दिन क्या होने वाला है। अब भी, जब मैं इसके बारे में लिख रहा हूँ, तो आश्चर्य, भय और अविश्वास का एक अजीब मिश्रण मुझे रोंगटे खड़े कर देता है।
गाइडबुक में लिखा था कि महाबलीपुरम मद्रास से अस्सी मील दूर है। सड़कें अच्छी थीं, इसलिए हमें दो घंटे में वहाँ पहुँचने की उम्मीद थी। शंकर बाबू ने हमारे लिए दो टैक्सियाँ बुक कर रखी थीं। नयन ने श्री ताराफदार के बजाय हमारे साथ बैठने की ज़िद की क्योंकि जटायु ने उन्हें अपनी नई किताब 'द एस्टाउंडिंग अटलांटिक' की कहानी सुनाना शुरू कर दिया था। मैं कार की आगे वाली सीट पर बैठा, नयन पीछे जटायु और फेलुदा के बीच में बैठा।
जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि हम समुद्र की ओर बढ़ रहे थे। हालाँकि मद्रास शहर समुद्र के किनारे बसा था, फिर भी हमने उसे अभी तक नहीं देखा था। दो घंटे पंद्रह मिनट बाद, समुद्र नज़र आने लगा। हमारे सामने एक विशाल खाली

मैदान फैला हुआ था, और क्षितिज पर गहरा नीला महासागर चमक रहा था। रेत पर खड़ी ऊँची इमारतें मंदिर थीं।
हमारी टैक्सी एक विशाल वैन और एक लग्जरी बस के बगल में रुकी। बड़ी संख्या में पर्यटक—जिनमें से अधिकतर अमेरिकी थे—बस में चढ़ रहे थे। वे तरह-तरह के कपड़े पहने हुए थे, अलग-अलग तरह की टोपियाँ लगाए हुए थे, अलग-अलग डिज़ाइन के धूप के चश्मे लगाए हुए थे और हर आकार-प्रकार के बैग लिए हुए थे। हम रुक गए और एक मिनट तक उन्हें देखते रहे। लालमोहन बाबू ने कहा, 'पर्यटन एक बड़ा व्यवसाय है!' और नयन के साथ गाड़ी से बाहर निकल गए।
फेलुदा ने इससे पहले कभी महाबलीपुरम का दौरा नहीं किया था, लेकिन वह जानता था कि वहाँ क्या-क्या देखने लायक है। उसने मुझे पहले ही बताया था कि सब कुछ एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। 'हम एक दिन में सब कुछ नहीं देख सकते, कम से कम तब तो बिल्कुल नहीं जब हमारे साथ एक छोटा बच्चा हो। लेकिन तुम, टॉपशे, चार चीजें जरूर देखो—समुद्रतटीय मंदिर, गंगावतरण, महिषासुरमर्दिनी मंडप और पंच पांडव गुफाएँ। लालमोहन बाबू और नयन जहाँ चाहें जा सकते हैं। मुझे नहीं पता शंकर और सुनील क्या करना चाहते हैं। वे मंदिरों या मूर्तिकला में बिल्कुल भी रुचि नहीं रखते लगते।'
हम साथ-साथ चलने लगे।
‘यह सब बल्लभों ने बनवाया था, है ना?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
फेलुदा ने गंभीरता से उत्तर दिया, 'बल्लभ नहीं, मिस्टर गांगुली।' 'वे पल्लव थे।'
वह कौन सी सदी होगी?
अपने युवा मित्र से पूछो। वह तुम्हें बता देगा।
लालमोहन बाबू को इस पर थोड़ी झुंझलाहट हुई, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। मुझे पता था कि महाबलीपुरम का निर्माण सातवीं शताब्दी में हुआ था।
हम सबसे पहले तट पर स्थित मंदिर देखने गए। शोर मचाती लहरें उसकी पिछली दीवारों से टकरा रही थीं। लालमोहन बाबू ने अपनी आवाज़ ऊँची करते हुए कहा, 'इन्हें वाकई अच्छी जगह चुनने का हुनर आता है।' हमारे दाहिनी ओर एक हाथी और एक बैल की मूर्ति थी। इनके बगल में छोटे-छोटे मंदिर जैसे कुछ दिखाई दे रहे थे। फेलुदा ने कहा, 'ये पांडवों के रथ हैं। आपको एक ऐसा रथ भी मिलेगा जो बंगाल के किसी गाँव की झोपड़ी जैसा दिखता है। वह द्रौपदी का रथ है।' गंगावतरण को देखकर मेरा सिर चकरा गया। एक विशाल चट्टान पर उकेरी गई नक्काशी में हिमालय से गंगा के उद्भव की कहानी थी। उसमें जानवर और असंख्य मानव आकृतियाँ थीं, हर एक विवरण अत्यंत सुंदर था।
‘यह सब कुछ हाथों से, केवल छेनी और हथौड़े की मदद से किया गया था, है ना?’ लालमोहन बाबू ने आश्चर्य से पूछा।
जी हाँ। ज़रा सोचिए, लालमोहन बाबू। हमारे देश भर के मंदिरों में ऐसी लाखों नक्काशीदार मूर्तियाँ मिलेंगी। इन मंदिरों को बनाने में सैकड़ों साल लगे; दर्जनों कारीगरों ने इन पर काम किया। फिर भी, आपको कहीं भी हथौड़े की एक भी बेमेल चोट या छेनी का एक भी निशान नहीं मिलेगा। अगर मिट्टी की मूर्ति में कुछ गड़बड़ हो जाए, तो कलाकार उसे सुधार सकता है। लेकिन पत्थर पर बना एक निशान स्थायी, बिल्कुल अमिट होता है। इसीलिए जब मैं इन प्राचीन कलाकारों

Mr Tarafdar! And his friend, Shankar Hublikar.

‘□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□!’ □□□□ □□□□

ग्यारह
हम अपने होटल के मैसूर नामक भोजनालय में बड़े आनंद से दोपहर का भोजन कर रहे थे। यह भोजनालय मुगलई व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध था। लालमोहन बाबू ने श्री ताराफदार को उनकी जान बचाने के लिए धन्यवाद के रूप में भोजन का बिल चुकाने की पेशकश की थी। ताराफदार और शंकर बाबू होटल में हमसे मिल चुके थे।
‘लेकिन गावंगी को आप सबसे पहले मिले कैसे?’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू से पूछा।
‘मुझसे मत पूछो, फेलू बाबू! हुआ ये कि मैं अपनी कहानी सुनाने में इतना मग्न था कि नयन मेरी हर बात ध्यान से सुन रहा था। हम गुफाओं और मंडपों में आते- जाते रहे, बिना कुछ समझे। एक गुफा में अचानक मेरी नज़र महिषासुर की मूर्ति पर पड़ी। मैं बस एक नज़र डालकर बाहर आने ही वाला था कि मेरी नज़र एक और मूर्ति पर पड़ी, जो सिर से पैर तक काले रंग से रंगी थी, बस उसका धड़ लाल और सफेद धारियों से ढका हुआ था। वो बहुत विशाल और भयानक थी। मैं उसे घूर रहा था, परिसर की बाकी मूर्तियों से इस भिन्नता को देखकर मैं हैरान था और सोच रहा था कि कहीं ये घटोत्कच की मूर्ति तो नहीं है—अरे, वहाँ महाभारत के पात्र बिखरे पड़े थे, है ना?—तभी अचानक मूर्ति ने अपनी आँखें खोल दीं। सोचो ज़रा? राक्षस तो खड़े-खड़े सो रहा था! खैर, आँखें खोलते ही उसने हमें देख लिया। हम दोनों के सदमे से उबरने से पहले ही उसने हमें उठा लिया और आगे बढ़ गया।’ खैर, मुझे लगता है कि बाकी तो आप जानते ही हैं।
'हम्म। गावंगी शारीरिक रूप से असाधारण रूप से बलवान हो सकता है, लेकिन मुझे यकीन है कि वह असल में काफी सरल स्वभाव का है। भगवान का शुक्र है, वरना सुनील को उसे सम्मोहित करना बहुत मुश्किल हो जाता।'
‘जी हां, आप सही कह रहे हैं,’ श्री ताराफदार ने कहा। ‘हमें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि हमारा पीछा किया जा रहा है। दरअसल, शंकर आयुर्वेद में रुचि रखते हैं। उन्होंने कहीं सुना था कि महाबलीपुरम में सर्पगंधा नाम की एक जड़ी बूटी मिलती है। इसलिए हम उसे ढूंढने गए थे। दरअसल, हमें वह मिल भी गई थी और हम बड़े हर्षोल्लास से लौट रहे थे, तभी हमने गावंगी और ठाकुर को देखा।’
‘सर्पगंधा? क्या यह उच्च रक्तचाप वाले लोगों को नहीं दिया जाता?’ फेलुदा ने पूछा।
‘जी हां,’ शंकर बाबू ने जवाब दिया। ‘सुनील का ब्लड प्रेशर कभी-कभी बढ़ जाता है। मुझे उसके लिए जड़ी बूटी चाहिए थी।’
लालमोहन बाबू ने एक चिकन टिक्का मुंह में डाला। 'फेलू बाबू,' उन्होंने खुशी से चबाते हुए कहा, 'आज हमने आपकी मदद के बिना ही काम चला लिया। शायद अब आपकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी!'

फेलुदा ने उस ताने को नजरअंदाज करते हुए कहा, 'ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि गावंगी और ठाकुर के प्रयास विफल रहे।'
'हां। अब हमारे पास केवल बासक ही बचा है।'
श्री रेड्डी, जो दोपहर के भोजन से ठीक पहले आए थे और हमारे साथ शामिल होने के लिए राजी हो गए थे (हालाँकि वे केवल शाकाहारी भोजन करते थे), पहली बार बोले। उन्होंने नरमी से कहा, 'सुनो, श्री ताराफदार, मेरा सुझाव है कि आप आज कहीं और न जाएं। वास्तव में, आपको कल भी होटल में ही आराम करना चाहिए। आज की घटनाओं के बाद, मुझे सच में नहीं लगता कि आपको उस लड़के के साथ और कोई जोखिम लेना चाहिए। आखिर, आपका शो परसों से शुरू हो रहा है और पहले दो दिनों के लिए हमारे सारे टिकट बिक चुके हैं। अगर नयन को कुछ हुआ, तो हर कोई अपना पैसा वापस चाहेगा। तब हमारी क्या स्थिति होगी?'
‘शो के दौरान सुरक्षा का क्या होगा?’
मैंने पुलिस को सूचित कर दिया है। चिंता मत करो, मामला सुलझ गया है।
श्री रेड्डी ने शो के अच्छे प्रचार-प्रसार के लिए वाकई बहुत मेहनत की थी। महाबलीपुरम से लौटते समय हमने रास्ते में बड़े-बड़े पोस्टर और होर्डिंग्स देखे थे, जिनमें श्री ताराफदार को उनके सुनहरे परिधान में दिखाया गया था और नयन को 'ज्योतिषकम - वंडर बॉय' के रूप में पेश किया गया था।
फेलुदा ने कहा, ‘हम सभी को और अधिक सतर्क रहना होगा। श्री रेड्डी और सुनील, दोनों से मुझे नयन की बेहतर देखभाल न करने के लिए माफी मांगनी चाहिए। महाबलीपुरम की उन मूर्तियों और नक्काशी ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया, वरना मैं नयन को अपनी नजरों से ओझल नहीं होने देता।’
हमने अपना भोजन समाप्त किया और भोजन कक्ष से बाहर निकल गए। जटायु की कहानी समाप्त हो जाने के कारण नयन श्री ताराफदार के साथ वापस चला गया। फेलुदा, लालमोहन बाबू और मैं अपने कमरे में लौट आए, और लगभग पाँच मिनट बाद ही दिन का दूसरा आश्चर्य सामने आया।
फेलुदा जटायु से कह रहे थे, ‘अब मुझे सेवानिवृत्ति के बारे में सोचना चाहिए, है ना? मुझे लगता है कि मुझे तुम्हें ज़िम्मेदारी सौंप देनी चाहिए। मुझे पूरा यकीन है कि तुम एक बहुत ही योग्य उत्तराधिकारी बनोगे—’ और लालमोहन बाबू खिलखिलाकर मुस्कुरा रहे थे, उन्हें अपनी इस हरकत का खूब आनंद आ रहा था, तभी टेलीफोन की घंटी बजी। फेलुदा ने बात रोक दी, थोड़ी देर फोन पर बात की और फिर फोन रख दिया।
मुझे नहीं पता कि वह कौन है। लेकिन वह हमसे मिलने आना चाहता है। उसने लॉबी से फोन किया था। इसलिए मैंने उसे आने के लिए कहा। श्री जटायु, कृपया कार्यभार संभालिए।
‘क्या!’ लालमोहन बाबू चौंक गए। ‘आपका क्या मतलब है?’
‘आपने कहा था कि मेरे दिन खत्म हो गए हैं। देखते हैं आप अकेले कैसे संभाल पाते हैं।’ लालमोहन बाबू के कुछ और कहने से पहले ही घंटी बज गई। मैंने दरवाजा खोला तो सामने एक अधेड़ उम्र के सज्जन खड़े थे, जिनकी लंबाई मध्यम थी और घनी काली मूंछें थीं, हालांकि उनके बाल पतले और भूरे हो चुके थे। वे कमरे में दाखिल हुए, पहले फेलुदा को देखा और फिर लालमोहन बाबू को, और बोले, ‘अह... आप में से कौन हैं मिस्टर मिटर?’

फेलुदा ने लालमोहन बाबू की ओर इशारा करते हुए शांत भाव से कहा, 'वही है।' उस आदमी ने हाथ आगे बढ़ाते हुए लालमोहन बाबू की ओर मुड़ा। लालमोहन बाबू ने खुद को संभाला और पूरे आत्मविश्वास से उससे हाथ मिलाया। मुझे याद आया कि फेलूदा ने एक बार उनसे कहा था, 'हाथ मिलाना एक पश्चिमी अवधारणा है। इसलिए, अगर आपको किसी से हाथ मिलाना ही है, तो एक पश्चिमी व्यक्ति की तरह हाथ मिलाएँ—मज़बूती से पकड़ें और अच्छे से हिलाएँ।' शायद मेरी तरह उन्हें भी ये शब्द याद आ गए थे, क्योंकि मैंने देखा कि उन्होंने दूसरे सज्जन का हाथ कसकर पकड़ा और ज़ोर से हिलाया। फिर उन्होंने अपना हाथ पीछे खींच लिया और कहा, 'कृपया बैठ जाइए, श्रीमान—?'
वह आदमी सोफे पर बैठ गया। उसने कहा, ‘मैं आपको अपना नाम बता सकता हूँ, लेकिन इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मुझे श्री तिवारी ने यहाँ भेजा है। मैं उन्हें कई सालों से जानता हूँ। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। देखिए, मैं भी आपकी तरह एक निजी जासूस हूँ। जिस कंपनी, डिटेक्निक, के लिए मैं काम करता हूँ, वह बीस साल से भी पहले कलकत्ता से बॉम्बे आ गई थी। इसीलिए मैं आपसे पहले कभी नहीं मिल पाया, हालाँकि मैंने आपका नाम सुना था। मुझे माफ़ कीजिए, श्री मित्तर, लेकिन मुझे थोड़ी हैरानी हो रही है। मेरा मतलब है, आप जासूस जैसे नहीं लगते... असल में, ये सज्जन तो कुछ और ही हैं...’ उसने फेलुदा की तरफ देखा।
‘ये मेरे मित्र लालमोहन गांगुली हैं, जो एक बेहद उत्कृष्ट लेखक हैं,’ लालमोहन बाबू ने गंभीरतापूर्वक घोषणा की।
‘ठीक है। खैर, चलिए मैं आपको बताता हूँ कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ।’ उन्होंने अपनी जेब से एक तस्वीर निकाली। मैं जहाँ खड़ा था, वहाँ से देख सकता था कि यह श्री हिंगोरानी की तस्वीर थी।
‘आप इसी आदमी के लिए काम कर रहे हैं, है ना?’
फेलुदा के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। लालमोहन बाबू की भौंहें एक पल के लिए उठीं, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। हमें लगा था कि श्री हिंगोरानी और हमारे बारे में किसी को पता नहीं था। इस आदमी को कैसे पता चला?
‘अगर ऐसा है, श्री मित्तर,’ हमारे आगंतुक ने आगे कहा, ‘तो मैं आपका प्रतिद्वंदी हूँ, क्योंकि मैं तिवारी का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। मैंने अखबार में उनके मामले के बारे में पढ़कर उनसे संपर्क किया। वे बहुत खुश हुए और कहा कि उन्हें मेरी मदद की ज़रूरत है। मैं सहमत हो गया और तुरंत कलकत्ता के लिए रवाना हो गया। कलकत्ता पहुँचते ही मैंने सबसे पहले हिंगोरानी को फोन किया। उनके भतीजे ने फोन उठाया और कहा कि किसी को नहीं पता कि उनके चाचा कहाँ गए हैं। फिर मैंने इंडियन एयरलाइंस से संपर्क किया और कलकत्ता-मद्रास उड़ान की यात्री सूची में उनका नाम पाया। यह स्पष्ट हो गया कि तिवारी की धमकियों के बाद वे भाग गए थे। इसलिए मैं उनके घर गया और उनके संदेशवाहक से मिला। उन्होंने मुझे बताया कि तीन दिन पहले तीन लोग घर आए थे। उनमें से एक का नाम श्री मित्तर था। इससे मुझे शक हुआ और मैंने टेलीफोन डायरेक्टरी में आपका नंबर ढूंढा। जब मैंने आपको फोन किया, तो मुझे पता चला कि आप भी मद्रास चले गए हैं। मैंने सब कुछ जोड़कर यह पता लगाने का फैसला किया कि आप कहाँ रह रहे हैं। इसलिए मैं यहाँ आपको ताज़ा स्थिति

बताने आया हूँ।’ आप यह स्वीकार तो करते हैं ना कि हिंगोरानी ने आपको अपनी सुरक्षा के लिए नियुक्त किया था?
‘कोई आपत्ति है?’
'अनेक।'
कुछ सेकंड तक कोई नहीं बोला। फेलुदा सिगरेट पीता रहा, बीच-बीच में धुएं के छल्ले उड़ाता रहा, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
‘क्या आपको तिवारी के मामले में हुई प्रगति के बारे में जानकारी है?’ हमारे आगंतुक ने पूछा।
‘क्या प्रेस में इस बारे में कुछ खबर आई है?’
जी हाँ। कुछ नए तथ्य सामने आए हैं, जिनसे एक बिलकुल नया पहलू सामने आता है। क्या आपको पता है कि आप किस तरह के आदमी की रक्षा कर रहे हैं? वह चोर, झूठा और घिनौना बदमाश है।’ उस आदमी ने अपनी आवाज़ ऊँची की और आखिरी कुछ शब्द लगभग चिल्लाते हुए कहे। लालमोहन बाबू ने दो बार गहरी साँस ली और लाख कोशिश करने के बावजूद अपनी आवाज़ में घबराहट नहीं छिपा पाए।
‘तु-तुम्हें कैसे पता?’
तिवारी को अकाट्य सबूत मिल गए हैं। हिंगोरानी की अंगूठी—सोने में जड़ा लाल मूंगा—सीने के नीचे मिली। वह लुढ़क कर आखिरी छोर पर चली गई थी, इसीलिए पहले किसी ने उसे नहीं देखा। आखिरकार एक सफाईकर्मी ने उसे ढूंढ निकाला। दफ्तर में सभी ने अंगूठी को पहचान लिया। हिंगोरानी इसे सालों से पहने हुए थे। यही मेरा तुरुप का पत्ता है, श्री मिटर। इससे आपका मुवक्किल खत्म हो जाएगा।
लेकिन जब चोरी हुई, तब श्री हिंगोराज—नहीं, मेरा मतलब हिंगोरानी से है— अपने चचेरे भाई से मिलने अस्पताल गए हुए थे।
‘बकवास। वो सुबह दो बजे दफ्तर में घुसकर पैसे चुरा लाया। अंदर जाने के लिए उसे चौकीदार को रिश्वत देनी पड़ी। मुझे कैसे पता? क्योंकि चौकीदार ने पुलिस के सामने सब कबूल कर लिया। हिंगोरानी ने उसे पाँच सौ रुपये दिए थे। तिवारी ने मुझे बताया कि अब उसे ठीक से याद है कि उसने अपने साथी को कॉम्बिनेशन के बारे में कब और कैसे बताया था। करीब पंद्रह साल हो गए हैं। तिवारी को हेपेटाइटिस का गंभीर दौरा पड़ा था। उसे लगा कि वो मर जाएगा, इसलिए उसने हिंगोरानी को फोन करके नंबर दे दिया।’
लेकिन हिंगोरानी को अपने साथी के निजी पैसे क्यों चुराने चाहिए? ‘क्योंकि वह लगभग दिवालिया हो चुका था, इसीलिए!’ हमारे आगंतुक ने फिर से अपनी आवाज ऊंची की। ‘उसने बहुत ज्यादा जुआ खेलना शुरू कर दिया था। वह अक्सर काठमांडू जाता था और सभी कैसीनो में जाता था। उसने रूलेट में हजारों रुपये गंवा दिए, लेकिन इससे उसका जुआ खेलना बंद नहीं हुआ। तिवारी ने उसे चेतावनी देने की कोशिश की, लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया। अंत में, उसने अपना फर्नीचर और पेंटिंग बेचना शुरू कर दिया। जब उससे भी उसे पर्याप्त पैसा नहीं मिला, तो उसने तिवारी का पैसा चुराने की सोची।’
‘अच्छा, अब आप क्या करने का इरादा रखते हैं?’
मैं यहाँ से सीधे उसके कमरे में जाऊँगा। मुझे पूरा यकीन है कि वह चोरी का पैसा अपने साथ ले गया है। तिवारी इतने दयालु व्यक्ति हैं कि उन्होंने कहा

है कि अगर उन्हें उनका पैसा वापस मिल जाए तो वे हिंगोरानी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करेंगे। मैं उनका संदेश हिंगोरानी तक पहुँचाऊँगा और उम्मीद करता हूँ कि तब उन्हें अक्ल आएगी और वे पैसा लौटा देंगे।
‘अगर वह ऐसा नहीं करता तो क्या होगा?’
हमारे आगंतुक के होंठों पर धीरे-धीरे एक क्रूर मुस्कान फैल गई। उसने आनंद से कहा, 'अगर वह ऐसा नहीं करता है, तो हमें कोई दूसरा रास्ता सोचना पड़ेगा।' ‘क्या मतलब, तुम बल प्रयोग करोगे? लेकिन यह गलत है, यह गैरकानूनी है! अरे, तुम तो जासूस हो, है ना? तुम्हारा काम अपराधियों को बेनकाब करना है, न कि खुद कानून तोड़ना!’
जी हाँ, श्रीमान मित्तर। लेकिन जासूस भी कई तरह के होते हैं। मैं परिस्थितियों के अनुसार काम करने में विश्वास रखता हूँ। आप जानते ही होंगे कि अपराधी और कुशल जासूस के बीच का अंतर बहुत ही कम होता है।’ वह उठे। ‘आपसे मिलकर खुशी हुई, महोदय। आपका दिन शुभ हो!’ उन्होंने लालमोहन बाबू से दोबारा हाथ मिलाते हुए कहा। फिर वे तेज़ी से बाहर चले गए।
उसके जाने के बाद हम तीनों चुपचाप बैठे रहे। फिर फेलुदा बोला, ‘धन्यवाद, लालमोहन बाबू। चुप रहने का फायदा यह है कि सोचने के लिए ज़्यादा समय मिल जाता है। अब मुझे समझ आया कि श्री हिंगोरानी का वज़न हाल ही में काफ़ी कम हो गया है। वो कुछ समय से बीमार हैं, शायद मधुमेह से, मुझे नहीं पता। खैर, बात ये है कि इसी वजह से उनकी घड़ी का पट्टा और अंगूठी ढीली हो गई। जब वो उनकी उंगली से फिसलकर सीने के नीचे लुढ़क गई, तो उन्हें पता भी नहीं चला।’ ‘क्या! आपका मतलब है कि उस आदमी ने जो कहा वह सच था? आप उस पर विश्वास करने को तैयार हैं?’
'हां, मैं हूं। बहुत सी बातें जो पहले मेरे लिए अस्पष्ट थीं, अब बिल्कुल स्पष्ट हो गई हैं। लेकिन वह आदमी एक बात में गलत था। हिंगोरानी ने तिवारी का पैसा अपने जुए के कर्ज चुकाने के लिए नहीं चुराया था। नयन को देखते ही उसे पता चल गया था कि उसकी आर्थिक चिंताएं खत्म हो गई हैं। उसने पैसा सिर्फ मिरेकल्स अनलिमिटेड कंपनी बनाने और तरफदार का समर्थन करने के लिए लिया था।'
‘क्या तुम अब जाकर हिंगोरानी से बात नहीं करोगे?’
नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। डिटेक्निक का वो आदमी ही सारी बात कर लेगा। और हिंगोरानी तिवारी का पैसा लौटा देगा, कम से कम अपनी जान बचाने के लिए। ताराफदार के प्रायोजक के रूप में उसका कोई भविष्य नहीं बचा है।
लेकिन इसका मतलब क्या है—?
‘लालमोहन बाबू, यहीं रुक जाइए। मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है, या इसके भविष्य में क्या परिणाम होंगे। मुझे सोचने का समय दीजिए।’

बारह
लालमोहन बाबू और मैं शाम को समुद्र किनारे टहलने गए। पता नहीं श्री हिंगोरानी का क्या होगा, पर शायद फिलहाल नयन सुरक्षित था। दरअसल, मैंने सोचा, अगर हिंगोरानी तिवारी का कर्ज़ चुकाने के बाद अपने पहले शो के लिए ज़रूरी पैसे जुटा लेते हैं, तो सब ठीक हो जाएगा। एक बार लोग नयन की प्रतिभा देख लेंगे, तो पैसा अपने आप आने लगेगा और श्री हिंगोरानी का गुज़ारा अच्छे से हो जाएगा।
हालांकि, जब मैंने लालमोहन बाबू को अपना सिद्धांत बताया तो वे सबसे ज्यादा नाराज हुए। उन्होंने कड़े स्वर में कहा, 'तपेश, मैं हैरान हूँ! वह आदमी अपराधी है। उसने अपने साथी से बहुत सारा पैसा चुराया है। उसी आदमी द्वारा नयन का इस्तेमाल करने पर तुम कैसे खुश हो सकते हो?'
‘लालमोहन बाबू, मुझे इस बात से खुशी नहीं है। हिंगोरानी के खिलाफ इतने सबूत हैं कि उसे तुरंत जेल में डाला जा सकता है। लेकिन अगर तिवारी उसे माफ करने को तैयार हैं, तो आपको या मुझे क्या आपत्ति होनी चाहिए कि वह अपनी जिंदगी में आगे बढ़ जाए?’
मुझे बुरा लगता है क्योंकि वह आदमी जुआरी है। मुझे जुआरियों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है।
मैंने और कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर बाद, लालमोहन बाबू शांत हुए और उन्होंने सुझाव दिया कि हम कहीं रुककर जल्दी से एक कप कॉफी पी लें। मुझे भी प्यास लग रही थी; इसलिए हमने समुद्र तट के पास एक कैफे ढूंढा और अंदर चले गए। वहाँ काफी भीड़ थी, लेकिन हमें एक मेज मिल गई। मैंने वेटर से कहा, 'दो कोल्ड कॉफी, कृपया।' एक मिनट बाद, स्ट्रॉ वाले दो लंबे गिलास हमारे सामने आ गए। हम दोनों ने स्ट्रॉ से एक-एक घूंट पीने के लिए अपना सिर थोड़ा झुकाया।
‘क्या तुमने अपने उस ताक-झांक करने वाले दोस्त से बात की?’ एक आवाज़ ने पूछा। लालमोहन बाबू का गला भर आया। मैंने झट से नज़रें उठाईं तो देखा कि श्री नंदलाल बासक भड़कीली कमीज़ पहने हमारी मेज़ के पास खड़े थे। लालमोहन बाबू के हकलाना बंद करते ही उन्होंने आगे कहा, ‘अपने दोस्त और तरफदार को बता देना कि बासक कभी खाली नहीं बैठता। उसका शो 25 तारीख को हो सकता है, लेकिन उस प्रतिभाशाली लड़के को मंच पर आने का मौका कभी नहीं मिलेगा। मैं इसकी गारंटी दे सकता हूँ।’
जवाब का इंतज़ार किए बिना, श्री बासक कैफ़े से बाहर निकल गए और नज़रों से ओझल हो गए। बाहर अंधेरा हो चुका था, इसलिए मैं उन्हें देख नहीं पाया कि वे कहाँ गए। हमने कॉफ़ी का बिल चुकाया और टैक्सी लेकर होटल वापस आ गए। आधे घंटे में हम होटल पहुँचे और देखा कि लॉबी लोगों से खचाखच भरी हुई थी। लॉबी के ठीक बीच में सामान का एक बड़ा ढेर लगा हुआ था। ज़ाहिर है, कई बड़े पर्यटक समूह एक साथ आए थे।

हम जितनी जल्दी हो सके लिफ्ट की ओर बढ़े और नंबर 4 का बटन दबाया। जब हम अपने कमरे में पहुँचे, तो हमें एहसास हुआ कि कमरे में पहले से ही कोई और मौजूद था, क्योंकि फेलुदा उससे ऊँची आवाज़ में, बेहद गुस्से में बात कर रहा था।
घंटी बजाने के कुछ ही सेकंड बाद उसने दरवाजा खोला और हम पर चिल्लाने लगा, 'तुम दोनों कहाँ थे? जब भी तुम्हारी ज़रूरत होती है, मैं तुम्हें ढूंढ ही नहीं पाता, तो तुम्हें यहाँ रखने का क्या मतलब है?'
हम कुछ शर्मिंदा होकर कमरे में गए और पाया कि श्री ताराफदार सोफे पर बैठे थे, मानो उनका चेहरा उतर आया हो।
‘क्या...क्या हुआ?’ लालमोहन बाबू हकलाते हुए बोले।
अपने जादूगर से पूछो।
‘क्या बात है, सुनील?’
श्री ताराफदार ने कोई जवाब नहीं दिया।
'वह बोल नहीं पा रहा है,' फेलुदा ने ठंडी और कठोर आवाज में कहा, 'तो शायद मुझे ही आपको बताना चाहिए कि क्या हुआ था।'
उसने चारमीनार जलाई और गहरी साँस ली। ‘नयन चला गया। उसका अपहरण हो गया है। क्या तुम यकीन कर सकते हो? अब कोई मुझ पर दोबारा कैसे भरोसा कर पाएगा? क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि उसे तुम्हारे कमरे से बाहर नहीं निकलना चाहिए? क्या मैंने हज़ार बार नहीं कहा था? लेकिन नहीं, उसे शंकर के साथ होटल की किताबों की दुकान पर जाना ही था, जबकि पूरा होटल अजनबियों से भरा पड़ा है।’ ‘और फिर?’ मुझे अपने दिल की धड़कनें सुनाई दे रही थीं।
‘आगे बढ़ो, तरफदार, उन्हें बाकी की बात बताओ। या फिर मुझे अपना पूरा जीवन तुम्हारी ओर से बोलते हुए बिताना पड़ेगा?’ मैंने फेलुदा को इतने गुस्से में शायद ही कभी देखा था।
श्री ताराफदार ने आखिरकार अपना चेहरा ऊपर उठाया और फुसफुसाते हुए बोले, “नयन कमरे में बंद रहकर ऊब गया था। वह दिन भर शंकर को किताब खरीदने के लिए बाहर ले जाने के लिए परेशान करता रहा। इसलिए शंकर शाम को उसके साथ होटल के शॉपिंग आर्केड तक गया और वहाँ उसे किताबों की दुकान मिल गई। नयन ने दो किताबें चुनीं और उन्हें कैश काउंटर पर बैठी महिला को दे दिया। शंकर उसे बिल बनाते और किताबें लपेटते हुए देख रहा था, तभी अचानक उसने कहा, “वह लड़का... वह लड़का कहाँ है?” शंकर ने मुड़कर देखा तो नयन गायब था। उसने उसे हर जगह ढूंढा। लेकिन... लेकिन उसका कोई निशान नहीं था। वहाँ इतने सारे लोग थे, इतनी धक्का-मुक्की थी... भला आठ साल के छोटे लड़के पर किसी की नज़र कैसे पड़ती?”
'कब की बात है ये?'
‘यही तो इसकी खूबसूरती है!’ फेलुदा फिर चिल्लाया। ‘यह सब डेढ़ घंटे पहले हुआ था। लेकिन सुनील ने मुझे आपके आने से ठीक दस मिनट पहले ही सूचना दी।’ ‘बासक,’ लालमोहन बाबू ने दृढ़ता से कहा। ‘नंदलाल बासक ने यह किया है। इसमें कोई शक नहीं, फेलू बाबू। बिलकुल भी नहीं।’
'आप इतने निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं?'

मैंने श्री बासक के साथ हुई हमारी मुलाकात के बारे में बताया। फेलुदा के माथे पर शिकन और गहरी हो गई।
‘मैं समझ गया। मुझे इसी बात का डर था। नयन को इस होटल से निकलवाने के तुरंत बाद उसने तुम्हें उस कैफे में देख लिया होगा।’
‘शंकर कहाँ है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘वह पुलिस स्टेशन गया है,’ श्री ताराफदार ने जवाब दिया।
लेकिन सिर्फ पुलिस को सूचना देने से आपकी समस्या हल नहीं होगी, है ना? आपको अपने स्पॉन्सर और मिस्टर रेड्डी को भी बताना होगा। क्या आपको लगता है कि वे नयन के बिना भी आपका शो जारी रखने के लिए तैयार होंगे? मुझे तो शक है! ‘अच्छा, तो फिर... हिंगोरानी को कौन बताएगा?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
फेलुदा ने कहा, 'हमारा सम्मोहनकर्ता ऐसा नहीं करेगा। उसमें इतनी हिम्मत नहीं है। उसने पहले ही मुझसे ऐसा करने को कहा है, क्योंकि उसे डर है कि हिंगोरानी उसे मौके पर ही गला घोंटकर मार डालेगा।'
‘ठीक है,’ लालमोहन बाबू ने हाथ उठाते हुए कहा, ‘तुम दोनों में से किसी को भी हिंगोरानी को बताने की जरूरत नहीं है। हम बता देंगे। तपेश, क्या तुम तैयार हो?’
'हाँ बिल्कुल।'
‘बहुत अच्छा,’ फेलुदा ने धीरे से कहा, ‘तुम दोनों जाओ और उसे बुरी खबर सुना दो। तुरंत जाओ। वह कमरा नंबर 288 में है।’
हम सीढ़ियों से नीचे उनके कमरे में गए और घंटी बजाई। कुछ नहीं हुआ। लालमोहन बाबू ने मुझसे कहा, 'ये घंटियाँ कभी-कभी काम नहीं करतीं। इसे ज़ोर से दबाओ।' मैंने तीन बार ज़ोर से दबाया। किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला। इसलिए हम एक बार फिर लॉबी में गए और घर के टेलीफ़ोन से कमरा नंबर 288 की घंटी बजाई। फ़ोन कई बार बजा, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। परेशान होकर हम रिसेप्शन पर गए।
रिसेप्शनिस्ट ने कहा, 'श्री हिंगोरानी कमरे में ही होंगे क्योंकि उनकी चाबी यहां नहीं है।'
‘लेकिन…’ लालमोहन बाबू घबरा गए, ‘शायद वो सो रहे हों, है ना? हमें देखना होगा, समझे? उनसे मिलना हमारे लिए बहुत ज़रूरी है। अभी! डुप्लीकेट चाबी नहीं है?’ उनके बोलने के अंदाज़ से रिसेप्शनिस्ट ज़रूर प्रभावित हो गई। हमसे एक शब्द भी कहे बिना, उन्होंने एक बेल-बॉय को डुप्लीकेट चाबी लाने और हमारे साथ आने को कहा। इस बार हम लिफ्ट से दूसरी मंज़िल पर गए। बेल-बॉय ने दरवाज़ा खोला और हमें अंदर जाने का इशारा किया।
‘धन्यवाद,’ लालमोहन बाबू ने कहा और दरवाजा खोल दिया। फिर वह कुछ कदम आगे बढ़े, लेकिन तुरंत पीछे हट गए और सीधे मुझसे टकरा गए।
‘ह-ह-ह-ह-इंग!’ वह पीला पड़ते हुए चिल्लाया।
तब तक मैंने भी इसे देख लिया था। इसे देखकर मेरा दिल मुंह में आ गया और मेरे हाथ-पैर सुन्न पड़ने लगे।
श्री हिंगोरानी पीठ के बल लेटे हुए थे, हालांकि उनके पैर बिस्तर से बाहर निकलकर फर्श को छू रहे थे। उनकी जैकेट के बटन खुले हुए थे और उस खुले

हिस्से से उनकी सफेद कमीज पर एक लाल धब्बा दिखाई दे रहा था, जिसके बीचोंबीच से एक खंजर का हैंडल निकला हुआ था।
किसी ने टीवी चालू छोड़ दिया था, लेकिन आवाज़ बंद थी। स्क्रीन पर लोग बातें कर रहे थे, हंस रहे थे, रो रहे थे, हिल-डुल रहे थे और उछल-कूद कर रहे थे, बिलकुल सन्नाटे में। टीवी स्क्रीन से परावर्तित अजीब नीली परछाइयाँ श्री हिंगोरानी के मृत चेहरे पर लगातार नाच रही थीं।

तेरह
इसमें कोई शक नहीं था कि श्री हिंगोरानी की हत्या डिटेक्निक के आदमी ने की थी। पुलिस सर्जन ने मृत्यु का समय दोपहर 2:30 से 3:30 बजे के बीच बताया। हमारा मेहमान 2:45 बजे हमारे कमरे से निकला था और उसने हमें बताया था कि वह सीधे हिंगोरानी से मिलने जाएगा। यह स्पष्ट था कि श्री हिंगोरानी ने तिवारी का पैसा लौटाने से इनकार कर दिया था, इसलिए डिटेक्निक ने उनकी हत्या करने का फैसला किया था। पुलिस को दराज में केवल 65 रुपये और कुछ सिक्के मिले। कमरे में केवल एक सूटकेस था, जो आंशिक रूप से कपड़ों से भरा हुआ था। अगर वाकई श्री हिंगोरानी के पास लाखों रुपये होते, तो उन्होंने उन्हें ब्रीफकेस में रखा होता। ब्रीफकेस का कहीं कोई निशान नहीं था। फेलुदा ने पुलिस से बात की और उन्हें डिटेक्निक के उस आदमी का हुलिया बताया। उन्होंने कहा, 'मैं उसका नाम नहीं बता सकता, लेकिन अगर उसने पैसे लिए हैं, तो वह उन्हें कलकत्ता के टी एच सिंडिकेट के देवकीनंदन तिवारी को दे देगा। मुझे लगता है कि आपके सहयोगियों को इसकी सूचना दी जानी चाहिए।' श्री रेड्डी को इस दोहरी त्रासदी के बारे में पता चल गया था और वे अब हमारे कमरे में बैठे थे। मुझे उम्मीद थी कि वे या तो बहुत गुस्सा होंगे या उन्हें दिल का दौरा पड़ जाएगा। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि वे बिल्कुल शांत रहे और इस बात पर चर्चा करने लगे कि नयन के बिना भी जादू का शो कैसे हो सकता है। ‘मान लीजिए कि आप सम्मोहन पर अधिक ध्यान केंद्रित करें?’ उन्होंने ताराफदार से कहा। ‘मैं उद्घाटन की रात को प्रमुख हस्तियों—राजनेताओं, फिल्म सितारों, खिलाड़ियों—को बुलाऊंगा। आप उनमें से प्रत्येक को सम्मोहित कर सकते हैं। कैसा रहेगा?’
श्री ताराफदार ने उदास होकर सिर हिलाया। “आपकी मेहरबानी के लिए धन्यवाद, श्री रेड्डी। लेकिन मैं अपना पूरा जीवन आपके मंच पर प्रदर्शन करते हुए नहीं बिता सकता। मुझे आगे बढ़ना होगा, लेकिन दूसरे शहरों में कौन मेरे साथ इतना अच्छा व्यवहार करेगा? यह बात फैल चुकी है, हर कोई मेरे शो में नयन की उम्मीद करेगा। ज्यादातर थिएटर मैनेजर बेरहम व्यापारी होते हैं। वे मुझे मौका देने के बारे में सोच भी नहीं सकते। मेरा करियर खत्म हो चुका है, श्री रेड्डी।”
‘क्या हिंगोरानी ने तुम्हें कुछ भी दिया?’ फेलुदा ने पूछा।
“हां, कलकत्ता से निकलने से पहले उन्होंने मुझे कुछ रकम दी थी। वह हमारे यात्रा खर्च और यहां रहने के लिए काफी थी। कल उन्हें मुझे एक और किस्त देनी थी। दरअसल, वह ज्योतिष में विश्वास करते थे। उन्होंने मुझे बताया था कि कल का दिन शुभ है।”
श्री रेड्डी ने श्री ताराफदार की ओर सहानुभूति भरी नजरों से देखा।

मैं समझ सकता हूँ कि तुम किस दौर से गुजर रहे हो। तुम अपनी वर्तमान मानसिक स्थिति में प्रदर्शन नहीं कर सकते।
‘सिर्फ मैं ही नहीं, श्री रेड्डी। मेरे मैनेजर शंकर इतने परेशान हैं कि वे बिस्तर पर पड़े हैं। मैं उनके बिना भी काम नहीं चला सकता।’
पुलिस आधे घंटे पहले जा चुकी थी। हत्या की जांच शुरू कर दी गई थी। शहर के हर होटल और गेस्ट हाउस से पूछा जाएगा कि क्या हाल ही में उनके यहाँ कोई ऐसा मेहमान आया था जिसका हुलिया फेलुदा द्वारा दिए गए विवरण से मिलता हो। हिंगोरानी के भतीजे मोहन से संपर्क किया जा चुका था। उनके अगले दिन आने की उम्मीद थी। पुलिस शव को ले जा चुकी थी।
फेलुदा खुद नयन के बारे में पूछताछ करने और उसे ढूंढने जा रहा था। श्री रेड्डी उठते हुए बोले, 'श्री मित्तर, मैं पूरी तरह से आप पर निर्भर हूं। मैं शो को कुछ दिनों के लिए स्थगित कर सकता हूं। कृपया इन दो दिनों में हमारे ज्योतिष्कम को ढूंढ निकालें!'
श्री रेड्डी चले गए। एक मिनट बाद, श्री ताराफदार ने कहा, 'मुझे लगता है मैं अपने कमरे में वापस चला जाऊँगा। श्री रेड्डी के सुझाव के अनुसार मैं दो दिन और इंतज़ार करूँगा। अगर नयन नहीं मिला, तो मैं अपना सामान पैक करके कलकत्ता वापस चला जाऊँगा। मैं और क्या कर सकता हूँ? क्या आप मद्रास में ही रुकेंगे?'
‘खैर, जाहिर है मैं यहाँ अनिश्चित काल तक नहीं रह सकता। लेकिन इस मामले की तह तक पहुंचे बिना मैं वापस नहीं जाऊंगा। आखिर कोई हमें धोखा देकर बच निकलने की इजाजत क्यों दे?’
‘बहुत खूब,’ श्री ताराफदार ने कहा और बाहर चले गए। फेलुदा ने अपनी चारमीनार का एक लंबा कश लिया और फिर वही शब्द बुदबुदाया जो मैंने उसे पहले भी कहते सुना था: ‘संदेह...संदेह...संदेह...’
‘आपको किस बात पर संदेह है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘सबसे पहले तो, हिंगोरानी को किसी अजनबी के लिए दरवाजा न खोलने के लिए कहा गया था। श्री डिटेक्निक अंदर कैसे घुस गए? क्या हिंगोरानी उन्हें जानते थे?’
‘हो सकता है उसने किया हो। क्या इसमें कोई हैरानी की बात है?’
‘इसके अलावा, फेलुदा, तुम केवल हिंगोरानी की हत्या के बारे में ही क्यों सोच रहे हो? क्या नयन को ढूंढना ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है?’
'हां, टॉपशे। मैं हिंगोरानी और नयन दोनों के बारे में सोचने की कोशिश कर रही हूं... लेकिन किसी तरह वे दोनों मेरे दिमाग में एक दूसरे से उलझ रही हैं।'
‘लेकिन ये तो सरासर बकवास है, फेलू बाबू! ये दोनों बिल्कुल अलग-अलग घटनाएं हैं। आप एक को दूसरे से क्यों जोड़ रहे हैं?’
फेलुदा ने लालमोहन बाबू की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने दो-तीन बार सिर हिलाया और धीरे से कहा, 'संघर्ष का कोई संकेत नहीं... बिल्कुल भी संघर्ष का कोई संकेत नहीं...'
'हां, पुलिस ने यही कहा था, है ना?'
फिर भी, ऐसा नहीं था कि उस व्यक्ति की नींद में हत्या कर दी गई हो।

नहीं, बिलकुल नहीं। क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सुना है जो अपने मोज़े और जूते उतारे बिना, पूरे कपड़े पहने ही सो जाता हो?
'कभी-कभी लोग ऐसा कर लेते हैं, अगर वे पूरी तरह से नशे में हों।'
लेकिन इस आदमी ने शराब नहीं पी थी। कम से कम अपने कमरे में तो नहीं। हो सकता है वह बाहर गया हो और खूब नशे में धुत होकर लौटा हो।
'नहीं।'
'क्यों नहीं?'
“क्योंकि टीवी चालू रह गया था। और ऐशट्रे में आधी जली हुई सिगरेट पड़ी थी, जिसका मतलब है कि जब वह कमरे में सिगरेट पीते और टीवी देखते हुए था, तब किसी ने घंटी बजाई थी। उसने सिगरेट बुझाई, टीवी की आवाज़ बंद की और दरवाज़ा खोल दिया।”
लेकिन दरवाजा खोलने से पहले वह जरूर जानना चाहता होगा कि कौन है?
'हां, लेकिन अगर वह कोई परिचित होता, तो स्वाभाविक रूप से उसे अंदर आने देता।'
‘तो आपको यह मान लेना चाहिए कि वह इस आदमी को डिटेक्निक से जानता था। लेकिन शायद उसे यह नहीं पता था कि मिस्टर डिटेक्निक एक निर्दयी हत्यारा था।’
‘यह बात अब भी समझ में नहीं आती। जब हिंगोरानी ने एक बड़ा चाकू निकाला और उस पर हमला किया, तो उसने उसका विरोध क्यों नहीं किया?’
‘मुझे नहीं पता, फेलू बाबू! आपको कारण पता लगाना ही होगा, है ना? अगर आप नहीं कर पाए, तो हमें मानना पड़ेगा कि आपकी प्रतिभा फीकी पड़ गई है और तपेश के पाठकों को शिकायत करने का पूरा अधिकार है। आपकी वो पुरानी चमक कहाँ गई, महोदय? वो तीक्ष्ण बुद्धि कहाँ गई—?’
'शांत।'
लालमोहन बाबू को बीच वाक्य में ही रुकना पड़ा। फेलुदा अब हमारी ओर नहीं देख रहा था। उसकी निगाहें खाली दीवार पर टिकी थीं, उसकी भौंहें गहरी frown से सिकुड़ी हुई थीं। लालमोहन बाबू और मैं एक मिनट तक बिना एक शब्द बोले उसे घूरते रहे। फिर हमने उसे फुसफुसाते हुए सुना, 'हाँ... हाँ... मैं समझ गया... मैं समझ गया। लेकिन क्यों? क्यों? क्यों?'
‘फेलू बाबू, क्या आप कुछ मिनटों के लिए अकेले रहना चाहेंगे?’ लालमोहन बाबू ने विनम्रता से पूछा।
जी हाँ। धन्यवाद, श्री जटायु। आधा घंटा। मुझे आधे घंटे के लिए अकेला छोड़ दीजिए।
हम चुपचाप चले गए।

चौदह
मैंने हिचकिचाते हुए सुझाव दिया, 'क्या हम कॉफी शॉप चलें?'
‘अरे, मैं भी यही सुझाव देने वाला था,’ लालमोहन बाबू ने प्रसन्नता से जवाब दिया।
हमें कॉफी शॉप में एक खाली मेज मिल गई। लालमोहन बाबू ने कहा, 'हम चाय के साथ कुछ सैंडविच खा सकते हैं। इससे हमारा समय और कट जाएगा।'
‘दो चाय और दो प्लेट चिकन सैंडविच, कृपया,’ मैंने वेटर से कहा। मुझे भूख लगी थी, लेकिन इस समय खाना उतना ज़रूरी नहीं लग रहा था। फेलुदा को मानो ज्ञान प्राप्त हो गया था। चाहे वह सिर्फ़ एक झलक हो या उसने सारा रहस्य सुलझा लिया हो, मुझे नहीं पता था। लेकिन मैं खुशी से झूम उठा।
लालमोहन बाबू ने समय बिताने का एक और तरीका खोज लिया। उन्होंने मुझे अपनी अगली किताब की कहानी सुनाना शुरू कर दिया। हमेशा की तरह, उन्होंने नाम पहले ही तय कर लिया था। 'मैं इसे 'द मंचूरियन मेनेस' (मंचूर का खतरा) कहने जा रहा हूँ। इसका मतलब होगा चीन और चीनी जीवन शैली के बारे में पढ़ना, हालाँकि मेरी किताब का आधुनिक चीन से कोई लेना-देना नहीं होगा। इसकी कहानी मंदारिनों के शासनकाल में घटित होगी।'
जल्द ही हमने अपनी चाय और सैंडविच खत्म कर लिए। लालमोहन बाबू ने अपनी कहानी समाप्त कर दी, लेकिन फिर भी हमारे पास लगभग दस मिनट का समय बचा था। लॉबी में आते ही उसने पूछा, 'अब हमें क्या करना चाहिए?' मैंने कहा, 'चलो उस किताबों की दुकान पर चलते हैं। आखिर, वह एक तरह से ऐतिहासिक जगह बन गई है, है ना, क्योंकि नयन को आखिरी बार वहीं देखा गया था?'
'हां, आप सही कह रहे हैं। चलिए जाकर देखते हैं। क्या पता, उन्होंने मेरी किताबों की प्रतियां भी प्रदर्शित की हों!'
‘अह... मुझे ऐसा नहीं लगता, लालमोहन बाबू।’
‘खैर, पूछने में कोई हर्ज तो नहीं है, है ना?’
दुकान में केवल एक महिला थी, जो काउंटर के पीछे बैठी थी। वह युवा और आकर्षक दोनों थी।
‘माफ़ कीजिए,’ लालमोहन बाबू सीधे उसके पास जाते हुए बोले। ‘जी सर?’
‘क्या आपके पास… युवाओं के लिए अपराध उपन्यास हैं?’
‘किस भाषा में?’
‘बंगाली।’
'जी नहीं, महोदय, मुझे खेद है कि हमारे पास बंगाली में लिखी किताबें नहीं हैं। लेकिन हमारे पास बच्चों के लिए अंग्रेजी में बहुत सारी किताबें हैं।' मुझे पता है। आज—दरअसल, आज दोपहर—मेरे एक दोस्त ने इस दुकान से एक छोटे लड़के के लिए दो किताबें खरीदीं।'
उस महिला ने उसे हैरानी भरी नजरों से देखा। 'जी नहीं, महोदय,' उसने कहा।

‘अरे? तुम्हारा क्या मतलब है?’
‘सर, अगर आज किसी ने दो बच्चों की किताबें खरीदी होतीं तो मुझे याद रहता। पिछले चार दिनों में मैंने एक भी किताब नहीं बेची है।’
‘क्या! लेकिन उन्होंने कहा था... शायद कोई दूसरी महिला...?’
नहीं, महोदय। बिक्री का काम मैं अकेले ही संभालता हूँ।
लालमोहन बाबू और मैंने एक-दूसरे को देखा। मैंने अपनी घड़ी देखी और कहा, 'आधा घंटा हो गया!' लालमोहन बाबू ने मेरा हाथ पकड़ लिया। 'चलो चलते हैं,' कहते हुए वह मुझे अपने साथ बाहर खींच ले गए। दरवाजे पर एक पल के लिए रुके, अपना सिर घुमाया और महिला को 'धन्यवाद, महोदया!' कहा, फिर लिफ्ट पकड़ने के लिए दौड़ पड़े।
‘कितना अजीब है!’ उसने एक बटन दबाते हुए कहा। मैंने कुछ नहीं कहा, क्योंकि मुझे बात करने का मन ही नहीं था।
अपने कमरे तक पहुँचने में हमें जो कुछ सेकंड लगे, वे अनंत काल जैसे लग रहे थे। जैसे ही हम अंदर घुसे, मैंने कहा, 'फेलुदा!'
'फेलू बाबू!' जटायु ने साथ ही कहा।
'एक-एक करके,' फेलुदा ने सख्ती से जवाब दिया।
‘मुझे बोलने दो,’ मैंने हांफते हुए कहा। ‘शंकर बाबू किताबों की दुकान पर नहीं गए थे!’
‘ये तो पुरानी खबर है, मेरे लड़के। क्या तुम्हारे पास बताने के लिए कुछ नया है?’
‘तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें पता था?’
मैं यूं ही खाली नहीं बैठा था। मैं लगभग बीस मिनट पहले किताबों की दुकान पर गया था। मैंने वहां मिस स्वामिनाथन से बात की, और फिर आपको खबर देने के लिए आपके पास गया। लेकिन जब मैंने देखा कि आप सैंडविच खाने में व्यस्त हैं, तो मैं वापस आ गया।
‘लेकिन उस स्थिति में—?’ मैंने कहना शुरू किया। फेलुदा ने मुझे रोकने के लिए हाथ उठाया। ‘बाद में, टॉपशे,’ उसने कहा, ‘मैं तुम्हारी बात बाद में सुन लूंगा। ताराफदार ने अभी-अभी अपने कमरे से मुझे फोन किया था। वह काफी परेशान लग रहा था, इसलिए मैंने उसे सीधे यहाँ आने को कहा। देखते हैं उसे क्या कहना है।’
घंटी बजी। मैंने श्री ताराफदार को अंदर आने दिया।
‘श्री मिटर!’ उसने दर्द भरी चीख मारी। ‘मुझे बचाओ। हे भगवान, कृपया मुझे बचाओ!’
अब क्या हुआ है?
‘शंकर। अब शंकर! मैं कुछ मिनट पहले उसके कमरे में गया था, और उसे फर्श पर बेहोश पड़ा पाया। मुझे अब इस पर विश्वास नहीं हो रहा है... क्या मेरी समस्याओं का कोई अंत नहीं होने वाला?’
फेलुदा की ओर से आया जवाब बिल्कुल अप्रत्याशित था। उन्होंने सहज भाव से कहा, 'नहीं, सुनील, यह तो बस शुरुआत है।'
‘इसका क्या मतलब है?’ श्री ताराफदार ने कर्कश स्वर में पूछा।

‘मेरा मतलब काफी सीधा-सादा है। तुम अब भी पूरी तरह से निर्दोष होने का नाटक कर रहे हो। सुनील, अब यह नाटक बंद कर दो। तुम्हारा खेल खत्म हो गया है।’ ‘मिस्टर मिटर, मुझे आपकी बात बिल्कुल समझ नहीं आ रही है। आप मेरा अपमान कर रहे हैं!’
‘क्या मैं तुम्हारा अपमान कर रहा हूँ? नहीं, सुनील। मैं तो बस सच बोल रहा हूँ। पाँच मिनट में मैं तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूंगा। वे रास्ते में हैं।’
लेकिन मैंने क्या किया?
‘मैं तुम्हें खुशी-खुशी बता दूंगा। तुम एक हत्यारे और चोर हो। मैंने पुलिस को यही बताया था।’
‘तुम पागल हो गए हो। तुम्हें पता नहीं कि तुम क्या बोल रहे हो।’
‘मैं जो कह रहा हूँ, उसके प्रति पूरी तरह सचेत हूँ। श्री हिंगोरानी कभी किसी अजनबी के लिए अपना दरवाजा नहीं खोलते। वे डिटेक्निक के उस आदमी को नहीं जानते थे; और वह आदमी भी उन्हें नहीं जानता था, इसीलिए वह हिंगोरानी की तस्वीर अपने साथ लाया था, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह सही आदमी से बात कर रहा है। इसलिए हम यह मान सकते हैं कि हिंगोरानी ने उसे अपने कमरे में नहीं आने दिया। लेकिन तुम, सुनील? वे तुम्हें अच्छी तरह जानते थे। तुम्हें बाहर रखने का उनके पास कोई कारण नहीं था, था क्या?’
‘आप एक बात भूल रहे हैं, श्रीमान मिटर। याद कीजिए पुलिस ने क्या कहा था? संघर्ष के कोई निशान नहीं थे। अगर मैं चाकू निकालकर उसे मारने की कोशिश करता, तो क्या आपको लगता है कि वह बिना लड़ाई किए मुझे ऐसा करने देता?’ 'हां, वह विशेष परिस्थितियों में ऐसा करेगा।'
‘वह क्या हो सकता है?’
‘यह तो आपकी विशेषज्ञता का क्षेत्र है, सुनील तरफदार। सम्मोहन। आपने हिंगोरानी को मारने से पहले उसे सम्मोहित किया था।’
“श्री मिटर, बकवास करना बंद करो। हिंगोरानी मेरे प्रायोजक थे। मैं उस हाथ को क्यों काटूँ जिसने मुझे पाला-पोसा? मैं उस इकलौते आदमी को क्यों बर्बाद करूँ जो मेरा साथ देने को तैयार था? तुम... तुम मुझे हँसाते हो!”
‘ठीक है, श्रीमान तरफदार। जब तक हंस सकते हो हंस लो, क्योंकि फिर कभी हंसने का मौका नहीं मिलेगा।’
क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि नयन के अपहरण के बाद मैं अपना मानसिक संतुलन खो बैठा? कि पागलपन के अचानक दौरे ने मुझे ऐसा बना दिया—’
नहीं। आपकी अपनी कहानी के अनुसार, नयन शाम को लापता हो गया था। और हिंगोरानी की हत्या दोपहर 2.30 से 3.30 बजे के बीच हुई थी।
‘आप अभी भी सरासर बकवास कर रहे हैं। शांत हो जाइए, श्रीमान मिटर।’
‘मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ, सुनील तरफदार, मैंने शायद ही कभी इतना शांत महसूस किया हो। अब मुझे आपको एक खबर देने दीजिए। मैं होटल की किताबों की दुकान पर गया और वहाँ की महिला से बात की। उन्होंने मुझे बताया कि पिछले चार दिनों में किसी ने भी बच्चों की किताबें नहीं खरीदीं, और निश्चित रूप से आज दुकान में कोई छोटा लड़का नहीं देखा गया।’
‘उसने... उसने तुमसे झूठ बोला!’

नहीं, उसने तो नहीं बोला—लेकिन तुमने साफ-साफ बोला है। तुम दिनभर झूठ बोलते रहे हो, और तुम्हारा दोस्त शंकर हुबलीकर भी। भारी चीनी मिट्टी की ऐशट्रे से मार पड़ने पर शायद उसे अक्ल आ जाए, लेकिन तुम...
‘क्या! तुमने शंकर को ऐशट्रे से मारा? क्या उसी से वो बेहोश हो गया?’
'हाँ।'
'लेकिन क्यों?'
‘उसने तुम्हारे साथ साजिश रची। उसने हत्या के तुम्हारे मकसद को छिपाने में तुम्हारी मदद की।’
घंटी फिर बजी।
‘ये इंस्पेक्टर रामचंद्रन होंगे। इन्हें अंदर लाओ, टॉपशे।’ इंस्पेक्टर रामचंद्रन अंदर आए और फेलुदा को सवालिया निगाहों से देखने लगे। फेलुदा के कुछ बोलने से पहले ही श्री ताराफदार उनकी ओर मुड़े। श्री ताराफदार चिल्लाए, ‘ये आदमी कहता है कि मैंने हिंगोरानी को मारा है, लेकिन ये हत्या का मकसद नहीं बता सकता।’
फेलुदा ने ठंडे स्वर में कहा, 'यह सिर्फ हत्या का मामला नहीं है, तुम पर चोरी का भी आरोप है। हिंगोरानी जो पांच लाख रुपये अपने साथ लाया था, वह अब तुम्हारे पास है। तुम उसी पैसे से अपना गुजारा करने वाले थे, है ना?' ‘क्यों? मैं ऐसा क्यों करूंगा?’
‘क्योंकि,’ फेलुदा ने धीरे-धीरे कहा, ‘हिंगोरानी ने तुम्हें एक पैसा भी देने से इनकार कर दिया। उसके पास तुम्हारा समर्थन जारी रखने का कोई कारण नहीं था; खासकर नयन के साथ जो हुआ था, उसे जानने के बाद तो बिल्कुल नहीं।’ ‘नयन को क्या हुआ?’
फेलुदा मेरी तरफ मुड़ा। 'टॉपशे, बाथरूम का दरवाजा खोलो। कोई अंदर छिपा हुआ है।'
मैंने दरवाजा खोला और पूरी तरह से आश्चर्यचकित होकर देखा कि नयन वहाँ खड़ा था। वह धीरे-धीरे बाहर आया और फेलुदा की कुर्सी के पास खड़ा हो गया।
‘शंकर ने उसे अपने बाथरूम में बंद कर रखा था। उसका अपहरण बिल्कुल नहीं हुआ था। पूरी बात पता चलते ही मैं शंकर के कमरे में गया। उसने मेरे आरोपों से इनकार किया, इसलिए नयन को बचाने के लिए मुझे उसे बेहोश करना पड़ा। क्या आप अब भी हत्या के मकसद पर ही जोर देते रहेंगे, श्री ताराफदार? ठीक है, नयन आपको बता देगा।’
श्री ताराफदार ने मुंह खोला, लेकिन उनके मुंह से कोई शब्द नहीं निकला। उनके हाथ कांप रहे थे।
फेलुदा ने कहा, 'नयन, तुम्हें क्या लगता है कि श्री ताराफदार को जेल में कितने साल बिताने पड़ेंगे?'
'मुझें नहीं पता।'
‘क्यों नहीं? तुम क्यों नहीं बता सकते?’
मुझे अब संख्याएँ दिखाई नहीं देतीं।
'बिल्कुल नहीं?'

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

रॉबर्टसन की रूबी

एक
‘क्या “मामा-भागने” शब्दों का आपके लिए कोई अर्थ है?’ फेलुदा ने जटायु से पूछा।
मैं समझ गया था कि उसका क्या मतलब है, लेकिन मैंने उत्सुकता से लालमोहन बाबू की ओर देखा ताकि उनका जवाब सुन सकूं।
‘चाचा और भतीजा?’ उसने पूछा।
‘नहीं, सिर्फ शब्दों का अनुवाद करने से काम नहीं चलेगा। हम सब जानते हैं कि “मामा” का मतलब चाचा और “भागने” का मतलब भतीजा होता है। ये शब्द आपको किस बात की याद दिलाते हैं?’
सच कहूँ तो, फेलू बाबू, मुझे ज़रा भी समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं। आपके सवाल हमेशा मुझे चौंका देते हैं। आप मुझे साफ-साफ बताइए कि आपका मतलब क्या है।
क्या आपने फिल्म अभिजान देखी है?
‘हाँ, लेकिन वो तो सालों पहले की बात है। ऐसा क्यों—ओह, हाँ, हाँ!’ जटायु की आँखें चमक उठीं। ‘अब मुझे याद आ गया। पत्थर हैं ना? एक बड़ा पत्थर के ऊपर एक छोटा, चपटा पत्थर रखा है। ऐसा लगता है जैसे ज़रा सा धक्का देने पर छोटा पत्थर हिलने और नाचने लगेगा। चाचाजी अपने भतीजे को पीठ पर बिठाकर घुमा रहे हैं, है ना?’
‘हाँ। स्थानीय लोग तो यही कहते हैं। लेकिन क्या आपको याद है कि यह किस जिले में है?’
'नहीं।'
‘यह बीरभूम में है। मैं वहां कभी नहीं गया। क्या आप गए हैं?’
'नहीं, महोदय।'
'यह शर्मनाक है, है ना? आप एक लेखक हैं, लालमोहन बाबू। आप जो लिखते हैं या आपकी किताबें कौन पढ़ता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आपको उस क्षेत्र का दौरा करना चाहिए था जहां टैगोर ने अपने जीवन के कई वर्ष बिताए थे।'
‘असल बात तो ये है कि मैं अक्सर वहाँ जाना चाहता था, लेकिन किसी न किसी वजह से जा नहीं पाया। वैसे भी, टैगोर भला ‘द सहारा शिवर्स’ जैसी रचनाएँ लिखने वाले को प्रेरणा कैसे दे सकते हैं?’
'हां, लेकिन बीरभूम सिर्फ शांतिनिकेतन की वजह से ही मशहूर नहीं है। यहां बक्रेश्वर के गर्म पानी के झरने हैं, केंडुली है जहां कवि जयदेव का जन्म हुआ था, तारापीठ है जहां प्रसिद्ध तांत्रिक बामा खेपा रहते थे, दुबराजपुर है जहां वे अजीबोगरीब चट्टानें हैं जिनके बारे में हम अभी बात कर रहे थे, और इन सबके अलावा टेराकोटा से बने अनगिनत मंदिर भी हैं।'
‘टेराकोटा? वो क्या होता है?’

फेलुदा ने माथे पर शिकन डाली। लालमोहन बाबू की अज्ञानता अक्सर फेलुदा को एक शिक्षक की तरह व्यवहार करने पर मजबूर कर देती थी। उन्होंने कहा, 'यह लैटिन और इतालवी का मिश्रण है। टेराकोटा का अर्थ मिट्टी होता है, और कोट्टा का अर्थ है जला हुआ। यह मिट्टी और रेत से बनी मूर्तियों और आकृतियों को संदर्भित करता है, जिन्हें ईंटों की तरह आग में पकाया जाता है। बंगाल में कई मंदिर हैं जिनमें टेराकोटा का काम किया गया है, लेकिन सबसे अच्छे और सबसे सुंदर मंदिर बीरभूम में हैं। अगर आपको इनके बारे में नहीं पता, लालमोहन बाबू, तो मुझे खेद है कि आपने अपने राज्य के बारे में बहुत कम सीखा है।'
'हां, अब मुझे समझ आ गया। मुझे माफ कर दीजिए, फेलू बाबू। कृपया मेरी अज्ञानता को क्षमा करें।'
और फिर भी, एक यूरोपीय प्रोफेसर ने इस विषय पर इतना अधिक शोध किया है। यह वास्तव में बहुत प्रभावशाली है। मुझे लगता है कि आप अखबारों की सुर्खियों के अलावा कुछ नहीं पढ़ते, इसलिए जाहिर है कि आपने आज के स्टेट्समैन में प्रकाशित लेख नहीं पढ़ा होगा। इस लेख में इस प्रोफेसर का नाम आया है। उनका नाम डेविड मैककचियन था।
आप किस लेख की बात कर रहे हैं?
‘“रॉबर्टसन की रूबी”’
‘जी हां, जी हां! मैंने उसे देखा था, और माणिक की रंगीन तस्वीर भी। लेकिन जैसे ही मैंने उसे पढ़ना शुरू किया, तभी मेरा धोबी आ गया, और फिर मैं सब कुछ भूल गया।’
उस लेख के लेखक, पीटर रॉबर्टसन, इस समय भारत में हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें भारत और भारतीयों में बहुत रुचि है। मैककचियन के काम और बीरभूम के मंदिरों के बारे में उनके लेखन ने रॉबर्टसन को उन्हें देखने के लिए प्रेरित किया। वे शांतिनिकेतन भी जाना चाहते हैं।
‘मैं समझ गया। लेकिन यह रूबी के बारे में क्या है?’
इसके पीछे एक कहानी है। पीटर रॉबर्टसन के एक पूर्वज, पैट्रिक, ने सिपाहियों के खिलाफ विद्रोह में भाग लिया था। हालाँकि वे बंगाल रेजिमेंट में थे, लेकिन विद्रोह समाप्त होने और अंग्रेजों की जीत के समय वे लखनऊ में ही थे। उस समय उनकी उम्र केवल छब्बीस वर्ष थी। वे कुछ अन्य ब्रिटिश अधिकारियों के साथ नवाब के महल में घुस गए और जो कुछ भी उनके हाथ लगा, उसे लूट लिया। रॉबर्टसन को एक विशाल माणिक मिला जिसे वे अपने साथ इंग्लैंड ले आए। समय के साथ, यह रॉबर्टसन परिवार की धरोहर बन गया और लोग इसे "रॉबर्टसन का माणिक" कहने लगे। हाल ही में, किसी ने पैट्रिक रॉबर्टसन की वृद्धावस्था में लिखी एक डायरी खोजी। अब तक किसी को इसके अस्तित्व की जानकारी नहीं थी। इसमें उन्होंने अपने युवावस्था में किए गए कार्यों पर गहरा पश्चाताप व्यक्त किया है और कहा है कि उनकी आत्मा को तभी परम शांति मिलेगी जब उनके परिवार का कोई सदस्य भारत वापस जाकर उस माणिक को उसके मूल स्थान पर लौटा देगा। पीटर रॉबर्टसन इसे अपने साथ ले आए हैं। इंग्लैंड लौटने से पहले वह इसे किसी भारतीय संग्रहालय को दे देंगे।'

फेलुदा की कहानी खत्म होने के बाद लालमोहन बाबू कुछ मिनट तक चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'केंदुली में हर सर्दी में एक बड़ा मेला लगता है, है ना?' 'हां। इसमें बड़ी संख्या में माल ढुलाई शामिल होती है।'
‘यह कब शुरू होगा?’
दरअसल, यह इस साल पहले ही शुरू हो चुका है।
‘मैं समझ गया। जाने का सबसे अच्छा तरीका कौन सा है?’
क्या आप सचमुच बीरभूम जाना चाहते हैं?
'बहुत ज्यादा तो।'
ठीक है, तो मेरा सुझाव है कि आप अपने ड्राइवर से कहें कि वह आपकी कार सीधे बोलपुर ले जाए। हम उसी दिन शांतिनिकेतन एक्सप्रेस से जाएंगे। हमें तीन घंटे से भी कम समय में बोलपुर पहुंच जाना चाहिए। यह ट्रेन केवल बर्दवान में रुकती है। हमें पर्यटक लॉज में अपने लिए कमरे बुक करने होंगे।
हमें ट्रेन से क्यों जाना चाहिए?
क्योंकि यह ट्रेन बाकी सभी ट्रेनों से अलग है। इसमें एक फर्स्ट क्लास डिब्बा है जिसे लाउंज कार कहते हैं। यह बहुत बड़ा है, बिल्कुल वैसा ही जैसा सालों पहले हुआ करता था, सोफे, मेज और कुर्सियों से सुसज्जित। इसमें यात्रा करना एक ऐसा अनुभव होगा जिसे हममें से किसी को भी नहीं छोड़ना चाहिए।
'ओह, मैं बिल्कुल सहमत हूँ। शायद मुझे शतदल को सूचित कर देना चाहिए।' ‘शतादल कौन है?’
‘शतादल सेन। हम स्कूल में साथ पढ़ते थे। अब वे शांतिनिकेतन में रहते हैं और विश्व भारती विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर हैं। वे एक प्रतिभाशाली छात्र थे। मैं उन्हें कभी हरा नहीं सका।’
‘आपका मतलब है कि आप खुद एक प्रतिभाशाली छात्र थे?’
'क्या बंगाल के सबसे लोकप्रिय थ्रिलर लेखक के बारे में इस बात पर विश्वास करना इतना मुश्किल है?'
‘अच्छा, तुम्हारा वर्तमान आईक्यू—’ फेलुदा ने बात अधूरी छोड़ते हुए कहा, ‘हाँ, अपने दोस्त को जरूर बता देना।’
सारी व्यवस्था करने में हमें कुछ दिन लग गए। बोलपुर टूरिस्ट लॉज में एक डबल और एक सिंगल कमरा बुक किया गया। हमने अपने ऊनी कपड़े सावधानी से पैक किए, क्योंकि हम जानते थे कि शांतिनिकेतन कलकत्ता से काफी ठंडा होगा। मुझे डेविड मैककचियन की किताब मिली और निकलने से पहले मैंने उसे सरसरी तौर पर पढ़ा। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक विदेशी ने मेरे अपने देश में मौजूद किसी ऐसी चीज़ के बारे में इतनी विस्तृत जानकारी कैसे जुटा ली थी, जिसके बारे में मुझे लगभग कुछ भी पता नहीं था।
अगले शनिवार को लालमोहन बाबू का ड्राइवर अपनी हरी एम्बेसडर कार लेकर सुबह जल्दी निकल गया। हम सुबह 9:30 बजे हावड़ा पहुंचे।
‘पिछले दो दिनों से मेरी दाहिनी आंख फड़क रही है। क्या यह अच्छा संकेत है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘मुझे नहीं पता। तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं ऐसे अंधविश्वासों में विश्वास नहीं करता,’ फेलुदा ने पलटवार किया।

‘[redacted],’ [redacted], ‘[redacted] [redacted] [redacted]? [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]’

दो
लालमोहन बाबू ने बाद में दावा किया कि बाद में जो कुछ हुआ, उसका सीधा संबंध उनकी फड़कती हुई आंख से था। 'यह महज़ एक संयोग था, लालमोहन बाबू, बस इतना ही,' फेलुदा ने उनसे दृढ़ता से कहा।
शांतिनिकेतन एक्सप्रेस का लाउंज डिब्बा पच्चीस लोगों के बैठने के लिए काफी बड़ा था। लेकिन जब हम ट्रेन में चढ़े, तो हमने पाया कि वहाँ दो विदेशियों सहित केवल सात ही लोग थे। दोनों गोरे थे। एक की दाढ़ी साफ़ थी और बाल सुनहरे थे; दूसरे की घनी दाढ़ी थी। उसके लंबे, काले बाल कंधों तक लहरा रहे थे। मुझे लगा कि उनमें से एक पीटर रॉबर्टसन है। ट्रेन चलने के दस मिनट बाद, मेरी आशंका सही साबित हुई।
हम तीनों एक सोफे पर साथ बैठे थे। मैंने कभी इतनी आरामदायक गाड़ी में सफर नहीं किया था। फेलुदा पीछे झुककर एक चारमीनार सिगरेट जलाई। उसी क्षण, पास में बैठे सुनहरे बालों वाले व्यक्ति ने हाथ बढ़ाकर कहा, 'क्या मैं—?' फेलुदा ने उसे अपना लाइटर देते हुए पूछा, 'क्या आप बोलपुर जा रहे हैं?' उस व्यक्ति ने अपनी सिगरेट जलाई और लाइटर फेलुदा को लौटा दिया। फिर मुस्कुराते हुए और हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा, 'जी हां। मेरा नाम पीटर रॉबर्टसन है और यह मेरा दोस्त टॉम मैक्सवेल है।'
फेलुदा ने उनसे हाथ मिलाया और फिर हमारा परिचय कराया। उन्होंने पूछा, 'क्या वह आपका ही लेख था जो मैंने कुछ दिन पहले पढ़ा था?'
'हां। क्या आपको यह पसंद आया?'
'ओह हाँ। यह बहुत ही दिलचस्प लेख था। क्या आपने वह माणिक पहले ही किसी संग्रहालय को सौंप दिया है?'
नहीं, यह अभी भी हमारे पास है। लेकिन हमने कलकत्ता संग्रहालय के क्यूरेटर से बात की है। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें दिल्ली से अनुमति मिल जाती है तो वे इसे सहर्ष स्वीकार कर लेंगे। एक बार इसकी पुष्टि हो जाने पर, हम इसे आधिकारिक तौर पर उन्हें सौंप देंगे।
‘मुझे पता है कि आपका भारत से कोई संबंध है। क्या आपके दोस्त का भी है?’
जी हाँ। टॉम के परदादा बीरभूम में नील के कारखाने के मालिक थे। अंग्रेजों ने भारत में नील की खेती बंद कर दी जब जर्मनों ने इसे कृत्रिम रूप से पैदा करने का तरीका खोज लिया और इसे सस्ते दामों पर बेचना शुरू कर दिया। उसी समय टॉम के पूर्वज, रेजिनाल्ड मैक्सवेल, ब्रिटेन लौट आए। टॉम और मुझे दोनों को ही घूमने-फिरने का बहुत शौक है। हम अक्सर साथ में यात्रा करते हैं। वह एक पेशेवर फोटोग्राफर हैं और मैं एक स्कूल में पढ़ाती हूँ।
टॉम अपने पैरों के पास एक चमड़े का थैला रखे बैठा था। मैंने सोचा, उसमें उसका कैमरा और अन्य उपकरण होंगे।
आप बीरभूम में कितने दिन रहेंगे?

लगभग एक सप्ताह। हमारा मुख्य काम कलकत्ता में है, लेकिन हम बीरभूम में जितने हो सके उतने मंदिर देखना चाहेंगे।
'बीरभूम में मंदिरों के अलावा भी बहुत सी चीजें देखने लायक हैं। शायद हम उन्हें साथ में देख सकते हैं? खैर, आपके लेख पर वापस आते हुए, क्या आपके पाठकों से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है?'
‘हे भगवान, हाँ! कुछ ही दिनों में द स्टेट्समैन को दर्जनों पत्र मिलने लगे। उनमें से कुछ पुराने महाराजाओं के थे, कुछ धनी व्यापारियों के, या दुर्लभ रत्नों के संग्रहकर्ताओं के। लेकिन मैंने अपने लेख में साफ-साफ लिख दिया था कि मैं इसे बेचने को तैयार नहीं हूँ। आपको पता है, यहाँ आने से पहले मैंने इंग्लैंड में इसका मूल्यांकन करवाया था। अगर मैं चाहता तो इसे वहाँ बेच सकता था। मुझे बीस हजार पाउंड तक की पेशकश की गई थी।’
‘क्या पत्थर तुम्हारे पास यहीं है?’
‘टॉम के पास है। वह मुझसे कहीं ज्यादा सावधान है। इसके अलावा, जरूरत पड़ने पर उसके पास एक रिवॉल्वर भी है जिसका वह इस्तेमाल कर सकता है।’
'क्या हम रूबी देख सकते हैं?'
'बिल्कुल।'
पीटर ने टॉम की ओर देखा। टॉम ने अपना चमड़े का थैला उठाया और उसमें से एक छोटा सा नीले मखमल का डिब्बा निकाला। उसने उसे फेलुदा को दे दिया। फेलुदा ने उसे धीरे से खोला, और हम तीनों ने अनजाने में ही सांस रोक ली। पत्थर न केवल बड़ा और खूबसूरती से तराशा हुआ था, बल्कि उसका रंग इतना गहरा लाल था कि वह सचमुच अद्भुत था। फेलुदा ने कुछ सेकंड के लिए माणिक को अपने हाथ में पकड़े रखा, उसे घुमाया और ध्यान से देखा। फिर उसने उसे टॉम को लौटाते हुए कहा, 'यह तो कमाल है! लेकिन अगर अनुमति हो तो मैं कुछ और देखना चाहूंगा। क्या आप मुझे अपना रिवॉल्वर दिखाएंगे? देखिए, मुझे हथियारों के बारे में थोड़ी जानकारी है।' उसने अपना एक विजिटिंग कार्ड पीटर को दे दिया।
‘हे भगवान!’ पीटर ने हैरानी से कहा। ‘आप एक निजी जासूस हैं, है ना? आपसे मिलकर खुशी हुई। अगर हमें कोई समस्या हुई तो हमें आपकी मदद लेनी पड़ सकती है।’
'मुझे उम्मीद है कि ऐसी नौबत नहीं आएगी, लेकिन बहुत कुछ आप पर निर्भर करता है, मिस्टर मैक्सवेल, क्योंकि रूबी आपके पास सुरक्षित रखी हुई है।'
टॉम मैक्सवेल ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने बस अपनी रिवॉल्वर निकाली और फेलुदा को दिखाई। यह फेलुदा की रिवॉल्वर की तरह कोल्ट नहीं थी।
'वेब्ली स्कॉट,' फेलुदा ने उसे देखते हुए कहा। फिर उसने आगे कहा, 'क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?'
'बिल्कुल,' टॉम ने पहली बार बोलते हुए कहा।
‘आपको अपने साथ रिवॉल्वर रखने की क्या जरूरत है?’
‘मेरे काम के सिलसिले में मुझे कई तरह की जगहों पर जाना पड़ता है, जिनमें से कुछ दूरदराज और खतरनाक होती हैं। मैंने जंगलों में रहने वाले आदिवासी लोगों की तस्वीरें खींची हैं। मैं आपको बता सकता हूँ कि सभी जनजातियाँ मित्रवत नहीं होतीं। रिवॉल्वर होने से मेरा काम बहुत आसान हो जाता है। एक

बार मैंने इसी रिवॉल्वर से अफ्रीका में एक काले मांबा साँप को मार गिराया था।’
क्या आप पहले कभी भारत जा चुके हैं?
नहीं, यह मेरी पहली यात्रा है।
‘क्या आपने तस्वीरें लेना शुरू कर दिया है?’
'हां, मैंने कलकत्ता के एक गरीब और भीड़भाड़ वाले इलाके की कुछ तस्वीरें ली हैं।'
‘आपका मतलब झुग्गी बस्ती से है?’
'हां, बिल्कुल सही। मुझे ऐसे लोगों और जगहों की तस्वीरें लेना पसंद है जो मेरे जाने-पहचाने या परिचित किसी भी चीज़ से बिल्कुल अलग हों। विषय जितना विचित्र या अपरिचित होता है, मुझे उसकी तस्वीर खींचना उतना ही अच्छा लगता है। उदाहरण के लिए, मुझे लगता है कि गरीबी समृद्धि की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक तस्वीर पेश करती है।'
‘फोटो—क्या?’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा।
'फ़ोटो में अच्छा दिखने वाला। ऐसी चीज़ जो फ़ोटो खींचने पर अच्छी लगे,' फेलुदा ने समझाया।
लालमोहन बाबू ने मुझे तिरछी नज़र से देखा और धीरे से बुदबुदाया, 'क्या उसका मतलब यह है कि भूखा-प्यासा आदमी, पेट भरे हुए आदमी से ज़्यादा फ़ोटो खींचने लायक होता है?'
टॉम ने उसकी बात नहीं सुनी। उसने आगे कहा, ‘मैं भारत में भी इसी सोच के साथ तस्वीरें खींचूंगा।’ मुझे उसके शब्द और उसका रवैया कुछ अटपटा लगा। पीटर बेशक भारत प्रेमी था, लेकिन उसके दोस्त के विचारों में किसी भी तरह की भावना या सहानुभूति का अभाव दिखाई दे रहा था। मैंने सोचा कि ये दोनों दोस्त कब तक साथ रहेंगे?
ट्रेन बर्दवान में रुकी। हमने एक चायवाले को बुलाया और मिट्टी के छोटे बर्तनों में चाय पी। टॉम मैक्सवेल ने चायवाले की तस्वीरें लीं।
कुछ ही देर में ट्रेन बोलपुर स्टेशन पर आकर रुक गई। मुख्य द्वार के बाहर दर्जनों रिक्शा देखकर टॉम का मन हुआ कि वह फिर से तस्वीरें लेने के लिए रुक जाए, लेकिन इस बार पीटर दृढ़ था और उसने कहा कि उन्हें समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।
हमें अपने और अपने सामान के लिए चार रिक्शा किराए पर लेने पड़े। पीटर और टॉम ने भी टूरिस्ट लॉज में कमरा बुक कराया था। जब हम वहाँ पहुँचे, तब तक एक बजकर दस मिनट हो चुके थे।

तीन
लालमोहन बाबू के मित्र शतदल सेन हमसे मिलने स्टेशन आए थे। वे हमारे साथ लॉज तक वापस आए। लगभग लालमोहन बाबू की ही उम्र के शतदल सेन उन्हें अच्छी तरह जानते थे। काफी देर बाद, मैंने किसी को उन्हें 'लालू' कहते सुना।
हम अपने कमरों में जाने से पहले लॉबी में बैठकर बातें कर रहे थे।
श्री सेन ने पूछा, 'आपने कहा था कि आपकी कार तीन बजे तक आ जाएगी?' उन्होंने आगे कहा, 'जब आपकी कार आ जाए तो आप मेरे घर आ सकते हैं। पियर्सन पल्ली में कोई भी आपको मेरा घर दिखा देगा। मैं आपको उत्तरायण स्थित परिसर भी दिखा दूंगा।'
‘धन्यवाद। क्या हम अपने साथ दो विदेशी मेहमानों को ला सकते हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
'जी हां, बिल्कुल। उनका हार्दिक स्वागत होगा।'
श्रीमान सेन चले गए। हम अपने कमरों में चले गए। मुझे तुरंत ही अपने आस-पास की शांति और सुकून ने मंत्रमुग्ध कर दिया। इससे फेलुदा को बहुत फायदा होगा। उसने अभी-अभी हत्या और धोखाधड़ी के दो जटिल मामलों को सुलझाया था। उसे आराम की ज़रूरत थी।
थोड़ी देर बाद, हमें पीटर और टॉम भोजन कक्ष में मिले। फेलुदा ने उन्हें शाम की हमारी योजनाओं के बारे में बताया। पीटर बहुत खुश लग रहा था, लेकिन टॉम ने कुछ नहीं कहा। पीटर ने कहा, "वैसे, मुझे दुबराजपुर के एक व्यापारी का फोन आया था। मुझे लगता है कि वह यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। उसने अपने बेटे से मुझे फोन करवाया क्योंकि उसके बेटे ने बताया कि उसकी अंग्रेजी उतनी अच्छी नहीं है। खैर, उसने कहा कि उसने मेरे माणिक के बारे में सुना है और उसे खरीदना चाहता है। जब मैंने उसे बताया कि मैं इसे कभी नहीं बेचूंगा, तो उसने कहा कि कोई बात नहीं, लेकिन वह इसे एक बार देखना चाहेगा, तो क्या मैं कृपा करके उसके घर आ सकता हूँ? मैं मान गया।"
‘इस आदमी का नाम क्या है?’
जी.एल. डंडानिया।
‘ठीक है। आपको उनसे कब मिलना है?’
'कल सुबह दस बजे।'
‘क्या हम आपके साथ चल सकते हैं?’
'ज़रूर। दरअसल, मुझे आपका साथ पाकर बहुत खुशी होगी। आप दुभाषिया का काम कर सकते हैं, है ना? डंडानिया का काम खत्म करने के बाद, हम दुबराजपुर और हेतामपुर के टेराकोटा मंदिरों को देखने जा सकते हैं। मैककचियन ने उनके बारे में लिखा था।'
‘दुबराजपुर में देखने लायक और भी बहुत सी चीजें हैं। अगर हमारे पास समय हो तो हम उन्हें भी देख सकते हैं,’ फेलुदा ने उससे कहा।

लालमोहन बाबू का ड्राइवर दोपहर 3.45 बजे कार लेकर पहुंचा। उसने कहा, 'मैंने बर्दवान में दोपहर का खाना खाया था, और मुझे नहीं लगता कि मुझे आराम की जरूरत है। अगर आप बाहर जाना चाहें, महोदय, तो मैं आपको कभी भी ले जा सकता हूं।'
हम लगभग तुरंत ही श्री सेन के घर के लिए निकल पड़े। कुछ ही मिनटों में हम उत्तरायण पहुँच गए। पीटर ने कहा कि उसने ऐसी इमारत पहले कभी नहीं देखी थी। उसने कहा, 'यह किसी परीकथा के महल जैसी दिखती है!' फिर हम उदिची और श्यामली गए, जो उतनी ही खूबसूरत थीं। मैंने देखा कि टॉम ने एक बार भी अपना कैमरा नहीं निकाला, शायद इसलिए क्योंकि वहाँ कहीं भी गरीबी का कोई नामोनिशान नहीं था।
लालमोहन बाबू ने बड़ी दिलचस्पी से सब कुछ देखा। लेकिन अंत में, उन्होंने उदास होकर सिर हिलाया और कहा, 'नहीं महोदय, ऐसे शांत वातावरण में मैं किसी थ्रिलर की कहानी नहीं सोच सकता। इसके लिए मुझे कलकत्ता वापस जाना पड़ेगा।' वापस लौटते समय पीटर और टॉम एक रिक्शा में बैठ गए। पीटर ने कहा, 'किसी ने बताया है कि यहाँ पास में एक आदिवासी गाँव है। टॉम कुछ तस्वीरें लेना चाहता है।' ज़ाहिर है वे किसी संथाल गाँव जा रहे थे। हमने उन्हें हाथ हिलाकर विदा किया और लॉज लौट आए, जहाँ हमने बाकी शाम अंताक्षरी खेलते हुए बिताई।
‘देखो, मैं लगभग भूल ही गया था!’ श्री सेन ने विदा लेते हुए कहा। ‘लालू, मैं तुम्हारे लिए यह किताब लाया हूँ—बीरभूम में जीवन और कार्य। इसे सौ साल पहले एक पुजारी ने लिखा था। उनका नाम रेवरेंड प्रिचर्ड था। इसमें बहुत सारी रोचक जानकारियाँ हैं। तुम्हें इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।’
‘मैं जरूर करूंगा, भले ही आपका दोस्त न करे। धन्यवाद, श्रीमान सेन,’ फेलुदा ने कहा।
अगले दिन साढ़े आठ बजे तक हमने नाश्ता कर लिया। दुबराजपुर मात्र पच्चीस किलोमीटर दूर था। श्री डंडानिया के बेटे ने हमें बहुत अच्छे से रास्ता बताया था और कहा था कि उनका घर उस इलाके का सबसे बड़ा घर है।
हम सुबह दस बजे से कुछ पहले एक ऊँची चारदीवारी वाले बड़े घर पर पहुँचे। ऊँचे लोहे के गेट पर लगी नेमप्लेट पर 'जी एल डंडानिया' लिखा था। एक चौकीदार ने तुरंत हमारे लिए गेट खोल दिया। उसे हमारे आने की सूचना पहले ही मिल चुकी थी। हमारी कार गेट और लंबी ड्राइववे से गुज़रते हुए मुख्य द्वार पर आकर रुक गई।
लगभग पच्चीस साल का एक युवक दरवाजे के ठीक बाहर स्कूटर ठीक कर रहा था। जैसे ही हम कार से उतरे, उसने स्कूटर वहीं छोड़ दिया और हमारा अभिवादन करने के लिए आगे आया। पीटर ने हाथ मिलाते हुए कहा, 'मेरा नाम पीटर रॉबर्टसन है। आप किशोरीलाल होंगे।'
'जी हां, मैं किशोरीलाल डंडानिया हूं। मेरे पिताजी आपसे मिलना चाहते हैं। कृपया मेरे साथ आइए।'
क्या मेरे बाकी दोस्त भी आ सकते हैं?
'बिल्कुल।'

[illegible]
‘[illegible]?’ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
‘Namaste,’ he said. ‘Mr Dandania, I presume?’
‘[illegible],’ [illegible]
‘[illegible]’
[illegible] (
'[illegible]'
[illegible]
[illegible]?'
‘[illegible]’
‘[illegible]’
‘Theek hai.’
'[illegible],'
‘Lekin pehle woh cheez to dikhaiye.’
'[illegible]'

[illegible]
[illegible], '[illegible]?'
‘[illegible],’ [illegible]
‘[illegible]…’ [illegible]
'[illegible],' [illegible]
[illegible]? [illegible]
[illegible]
[illegible]?’ [illegible]
“[illegible], [illegible]
'[illegible], [illegible]
[illegible]?
‘[illegible]! [illegible]T [illegible]
‘Inko kahiye yehan ke paani ko shudh karne ki zaroorat nahin hai,’ said Mr Dandania, glaring. I looked at Feluda with interest, to see how he might tell Tom there was no need to purify the water; but Feluda only smiled and said nothing.
[illegible]
‘[illegible]?’ [illegible]
‘[illegible], [illegible],’ [illegible]
[illegible], ‘[illegible], [illegible],’ [illegible]

की है कि आपका दोस्त उस रूबी को अपने बैग में लेकर घूम रहा है। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है। अगर आप चाहें, तो मैं आपके साथ एक कांस्टेबल भेजने का इंतजाम कर सकता हूँ। वह सादे कपड़ों में होगा, आपको पता भी नहीं चलेगा कि वह आपके साथ है। लेकिन वह आपकी सुरक्षा सुनिश्चित कर सकेगा।’
‘नहीं,’ टॉम मैक्सवेल ने दृढ़ता से कहा। ‘मैं इसकी देखभाल करने में पूरी तरह सक्षम हूँ, धन्यवाद। अगर कोई इसे चुराने की कोशिश करता है, तो मुझे पता है कि उससे कैसे निपटना है। मैं खुद बंदूक चला सकता हूँ, और मुझे पुलिस की किसी भी मदद की ज़रूरत नहीं है।’
इंस्पेक्टर चौबे ने हार मान ली। 'ठीक है। अगर आपको खुद पर इतना पूरा भरोसा है, तो और कुछ कहने की जरूरत नहीं है।'
श्री डंडानिया ने पूछा, 'आप यहां कितने समय के लिए रहेंगे?'
'मुझे लगता है कि इसमें और पांच दिन लगेंगे।'
‘ठीक है। कृपया इस पर विचार करें, श्री रॉबर्टसन। ध्यान से सोचें और दो दिन बाद मुझसे फिर मिलें।’
‘ठीक है। सोचने में कोई बुराई नहीं है, है ना? मैं आपके प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार करूंगा और आपको अपने निर्णय के बारे में बताऊंगा।’
श्री डंडानिया ने गंभीर भाव से जवाब दिया, 'अच्छा। और अलविदा।'

चार
‘अविश्वसनीय! यह सचमुच अद्भुत है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा। मैं भी उनसे पूरी तरह सहमत था। हमारी आँखों के सामने चट्टानों का एक विशाल सागर फैला हुआ था। विभिन्न आकृतियों और आकारों के पत्थर और शिलाखंड ज़मीन पर बिखरे पड़े थे, जो कम से कम एक वर्ग मील के कुल क्षेत्रफल को घेरे हुए थे। कुछ सपाट पड़े थे, कुछ अपनी करवट पर। कुछ बहुत विशाल थे—तीन मंजिला इमारतों जितने ऊँचे—लेकिन कुछ अपेक्षाकृत छोटे थे। कुछ में आर-पार बड़ी-बड़ी दरारें थीं, जो संभवतः सैकड़ों साल पहले आए भूकंप का परिणाम थीं। यह प्रागैतिहासिक काल का दृश्य प्रतीत होता था। अगर किसी शिलाखंड के पीछे से कोई डायनासोर झाँकता, तो मुझे आश्चर्य नहीं होता।
दुबराजपुर की मशहूर जगहों में से यह एक थी। हम पहले ही 'मामा-भागने' नाम की मशहूर जोड़ी देख चुके थे। गणेश दंडानिया के घर से निकलने के तुरंत बाद, फेलुदा ने सुझाव दिया कि हम इन मशहूर चट्टानों को देखें। हमारे साथ आए इंस्पेक्टर चौबे ने भी इस बात से सहमति जताई। पीटर बेहद खुश था। 'शानदार! शानदार!' मैंने उसे कई बार बुदबुदाते सुना। टॉम भी बहुत खुश लग रहा था। मैंने उसे पहली बार मुस्कुराते देखा, शायद इसलिए कि उसे फोटोग्राफी के लिए एक नया विषय मिल गया था। इस समय वह एक विशाल चट्टान पर बैठा अपनी दाढ़ी में बारीक कंघी कर रहा था। वह वहां कैसे पहुंचा, यह मैं नहीं बता सकता।
पीटर ने कहा, 'मुझे बताओ, इस खास जगह पर इतने सारे पत्थर क्यों पड़े हैं, जबकि आसपास कोई पहाड़ या पहाड़ी नहीं है? क्या इसके पीछे कोई कहानी या किंवदंती नहीं है?'
फेलुदा के कुछ कहने से पहले ही, लालमोहन बाबू ने अप्रत्याशित रूप से पूछा, 'क्या आप भगवान हनुमान के बारे में जानते हैं?'
‘मैंने उसके बारे में सुना है,’ पीटर ने मुस्कुराते हुए कहा।
“जब हनुमान जी गंधमादन पर्वत को अपने सिर पर रखकर हवा में उड़ रहे थे, तब पर्वत से कुछ चट्टानें दुबराजपुर में गिरीं।”
‘कितना दिलचस्प!’ पीटर ने सिर हिलाया।
फेलुदा ने जटायु को तिरछी नजरों से देखा और धीमी आवाज में कहा, 'तुमने यह सब मनगढ़ंत कहानी बनाई है, है ना?'
‘नहीं, महोदय!’ जटायु ने जोर से विरोध किया। ‘मैंने यह कहानी आज सुबह लॉज के प्रबंधक से सुनी थी। इस क्षेत्र में हर कोई इस पर विश्वास करता है। मैं इसे कैसे गढ़ सकता हूँ?’
“क्योंकि, मेरे मित्र, मेरी मार्गदर्शिका में जो कहानी मैंने पढ़ी है, वह अलग है। उसके अनुसार, राम ने समुद्र पर पुल बनाने के लिए पत्थर इकट्ठा करते समय गलती से इन पत्थरों को यहाँ गिरा दिया था।”

‘फेलू बाबू, तुमने जो भी पढ़ा हो, मुझे परवाह नहीं! मुझे लगता है मेरी कहानी कहीं बेहतर है।’ लालमोहन बाबू गुस्से में वहां से चले गए।
तब तक टॉम अपनी चट्टान से नीचे उतरकर हमारे साथ आ चुका था।
अब वह थोड़ा ऊबा हुआ लग रहा था। शायद पत्थर और चट्टानें उसे फोटो खींचने के लिए पर्याप्त आकर्षक नहीं लग रही थीं। उसका असली मौका कुछ मिनट बाद आया जब हम एक पुराने और प्रसिद्ध काली मंदिर की ओर बढ़े। शायद यह पहली बार था जब वह किसी मंदिर में हिंदू भक्तों को पूजा करते देख रहा था। उसका कैमरा लगातार क्लिक करता रहा।
इससे इंस्पेक्टर चौबे परेशान हो गए। उन्होंने कहा, 'देखिए, मिस्टर मैक्सवेल, यहां के लोग धार्मिक अनुष्ठानों की तस्वीरें खिंचवाना पसंद नहीं करते। आपको थोड़ा और सावधानी बरतनी होगी।'
‘क्यों?’ टॉम ने गुस्से से पलटकर जवाब दिया। ‘मैं कुछ भी गैरकानूनी या अनैतिक नहीं कर रहा हूँ। मैं तो बस सबके सामने एक सार्वजनिक कार्यक्रम की तस्वीरें ले रहा हूँ।’
'हाँ, लेकिन लोग कभी-कभी बहुत संवेदनशील हो जाते हैं। एक विदेशी को हमारे रीति-रिवाज और परंपराएँ अजीब और स्वीकार करने में मुश्किल लग सकती हैं। कुछ लोग उसके द्वारा इन तस्वीरों को अपने घर ले जाने पर आपत्ति जता सकते हैं, क्योंकि इससे हमारे मूल्यों और विचारों का गलत चित्रण हो सकता है।' मैक्सवेल ने फिर से विरोध करना शुरू किया, लेकिन इस बार पीटर ने उसे सख्ती से देखा, जिससे वह चुप हो गया।
दुबराजपुर के सभी दर्शनीय स्थलों को देखने के बाद हम सभी को काफी प्यास लग गई थी। इसलिए हमने सड़क किनारे एक चाय की दुकान ढूंढी और बाहर रखी दो लंबी बेंचों पर बैठ गए।
इंस्पेक्टर चौबे फेलुदा और मेरे बीच बैठे थे। मैंने उन्हें फेलुदा से कहते सुना, 'तुम्हारा नाम सुनते ही मैं समझ गया था कि तुम कौन हो, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा क्योंकि मुझे लगा कि तुम अपना पेशा सबके सामने ज़ाहिर नहीं करना चाहोगे।'
‘आप बिलकुल सही थे।’
'क्या आप यहाँ छुट्टी पर हैं?'
'हां, बिलकुल।'
'अच्छा ऐसा है।'
‘आप बिहार से हैं, है ना?’
'हां। लेकिन मेरे परिवार की पिछली पांच पीढ़ियां बीरभूम में ही रहती आई हैं। वैसे, क्या मैक्सवेल नाम के उस लड़के का भारत से कोई संबंध है?'
'जी हां। उनके परदादा के परदादा यहां नील का कारखाना चलाते थे। मुझे लगता है उनका नाम रेजिनाल्ड मैक्सवेल था।'
‘मैं समझ गया। मेरे दादाजी अक्सर मिस्टर मैक्सवेल के बारे में बात करते थे, जो एक फैक्ट्री मालिक थे। हालांकि उनका निधन कई साल पहले हो गया था, लेकिन उनका नाम भुलाया नहीं गया था। टॉम मैक्सवेल के बारे में मैंने जितना भी देखा है, उससे यह स्पष्ट है कि यह दूसरे मैक्सवेल उनके पूर्वज थे।’
‘यह इतना स्पष्ट कैसे है?’

‘रेजिनाल्ड मैक्सवेल भारतीयों से नफरत करते थे। वे अपने कर्मचारियों के प्रति अविश्वसनीय रूप से क्रूर थे। टॉम मैक्सवेल को लगता है कि उन्हें उनका अहंकार विरासत में मिला है। लेकिन श्री रॉबर्टसन बिल्कुल विपरीत प्रतीत होते हैं। वे स्पष्ट रूप से इस देश के प्रति सच्चे दिल से स्नेह रखते हैं।’
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। हमारी चाय खत्म हो चुकी थी। पीटर और टॉम हमारे साथ आ गए और हम हेतामपुर के लिए निकल पड़े, जो अपने टेराकोटा मंदिरों के लिए प्रसिद्ध था। इन मंदिरों पर की गई नक्काशी ने पीटर को मंत्रमुग्ध कर दिया, खासकर मंदिर की दीवार पर बनी एक यूरोपीय महिला की मूर्ति ने। हमें बताया गया कि यह दो सौ साल पुरानी थी। टॉम को मंदिरों या नक्काशी में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने एक ट्यूबवेल पर अपनी माँ द्वारा नहलाए जा रहे बच्चे की तस्वीरें लेना शुरू कर दिया।
पर्यटक लॉज लौटने के लिए अपनी कार में बैठने से ठीक पहले, फेलुदा ने इंस्पेक्टर चौबे की ओर मुड़कर उन्हें अलविदा कहा। उन्होंने कहा, 'ऐसा लगता है कि आप डंडानिया को अच्छी तरह जानते हैं। वह किस तरह का आदमी है?'
‘बहुत चालाक है। मैं उसे जानता हूँ, लेकिन मैं उसे अपना दोस्त बिल्कुल नहीं मानता। वह मेरी नज़रों में अच्छा बने रहने की कोशिश करता है। वह कई संदिग्ध कामों में शामिल है, इसलिए उसे लगता है कि अगर वह पुलिस में किसी को जानता हो तो शायद उसे मदद मिल जाए। मैं कभी-कभार उसके घर जाता हूँ, लेकिन मैं सतर्क रहता हूँ। अगर मैंने उसे कुछ भी गलत करते हुए पकड़ा, तो मैं उसे नहीं छोडूंगा। लेकिन वह बेहद अमीर है। वह दस लाख में वह माणिक आसानी से खरीद सकता है।’
क्या उनका बेटा अपने पिता के कारोबार की देखभाल करता है?
‘किशोरी? नहीं, वह वास्तव में ऐसा नहीं चाहता। वह अपना कुछ शुरू करना चाहता है। गणेश अपने बेटे को बहुत प्यार करता है। मुझे लगता है कि अंत में वह मान जाएगा और किशोरी को अपने रास्ते पर चलने देगा।’
'अच्छा ऐसा है।'
“वैसे, कल के लिए आपकी क्या योजनाएँ हैं?”
हम केंडुली में मेला देखने जा सकते हैं।
‘क्या आप सब एक साथ जाने की योजना बना रहे हैं? मेरा मतलब है, क्या रॉबर्टसन और मैक्सवेल आपके साथ जाएंगे?’
‘हां, क्यों?’
'मिस्टर मिटर, मैं चाहूंगा कि आप मैक्सवेल पर नजर रखें। उसका व्यवहार मुझे चिंतित करता है।'
‘बहुत खूब, इंस्पेक्टर साहब। मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा।’
हम दोपहर 2 बजे से कुछ पहले बोलपुर स्थित लॉज लौट आए। हमारे लौटने के तुरंत बाद, दो लोग पीटर और टॉम से मिलने आए। उनमें से एक कलकत्ता के जाने- माने व्यवसायी अरधेंदु नास्कर थे। दूसरे का नाम जगन्नाथ चटर्जी था, जो बीरभूम के मंदिरों के विशेषज्ञ इतिहासकार थे। दोनों ने स्टेट्समैन में पीटर का लेख पढ़ा था और उनसे मिलने का फैसला किया था। पीटर ने श्री चटर्जी

की मदद के लिए आभार व्यक्त किया और उनसे संपर्क में रहने का अनुरोध किया।
श्री चटर्जी सहर्ष सहमत हो गए।
श्री नास्कर को काफी समय लग गया। पीटर ने विनम्रतापूर्वक उनसे हाथ मिलाते हुए पूछा, 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'
श्री नास्कर ने एक कुर्सी खींची और पीटर के सामने बैठ गए।
सबसे पहले, मैं चाहता हूं कि आप एक बात की पुष्टि करें।
'हाँ?'
क्या यह सचमुच सच है कि आप अपने पूर्वज की इच्छा पूरी करने के लिए यहां आए हैं? मेरा मतलब है, क्या आप इसलिए आए हैं क्योंकि उन्होंने सौ साल से भी पहले अपनी डायरी में कुछ लिखा था?
'बिल्कुल।'
'क्या आपका मतलब सचमुच यही है कि अगर आप वह माणिक भारत को लौटा देंगे तो उसकी आत्मा को परम शांति मिल जाएगी?'
पीटर ने रूखेपन से जवाब दिया, 'मुझे नहीं लगता कि मेरी राय का कोई महत्व है।' 'आपकी बातों से ऐसा लगता है जैसे आप माणिक खरीदना चाहते हैं। मैं इसे बेचने वाला नहीं हूँ, श्रीमान नास्कर।'
क्या आपने अपने देश में इसका मूल्यांकन करवाया है?
'हां, इसकी कीमत बीस हजार पाउंड है।'
‘मैं समझ गया। क्या मैं इसे देख सकता हूँ, कृपया?’
टॉम ने बिना कुछ कहे उसे अपने बैग से निकाला और श्री नास्कर को दे दिया। श्री नास्कर ने उसे अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच पकड़कर रोशनी में घुमाया। फिर वे पीटर की ओर मुड़े और अप्रत्याशित रूप से बोले, 'तुम दोनों में से कोई भी आर्थिक रूप से संपन्न नहीं लगता।'
‘हम लालची नहीं हैं, श्रीमान नास्कर; और न ही हम लोभी हैं।’
‘हालांकि,’ टॉम ने अचानक कहा, ‘हम हमेशा एक जैसा नहीं सोचते।’
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ श्री नास्कर ने अपनी भौंहें उठाईं। टॉम के कुछ कहने से पहले ही पीटर ने जवाब दिया। ‘उसका मतलब है कि इस मामले में हमारी राय अलग-अलग है। टॉम को माणिक बेचने में कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मुझे है। आखिर यह मेरी संपत्ति है, उसकी नहीं। इसलिए तुम्हें उसकी बातों पर बिल्कुल ध्यान देने की जरूरत नहीं है।’ मैंने टॉम की ओर देखा। वह चुपचाप गुस्से से घूर रहा था।
श्री नास्कर ने कहा, ‘खैर, मैं अगले तीन दिनों तक शांतिनिकेतन में ही रहूंगा। आपसे संपर्क में रहूंगा। श्री रॉबर्टसन, आप इतनी आसानी से मुझसे पीछा नहीं छुड़ा सकते। मैं आपको बारह लाख रुपये देने को तैयार हूं। कीमती पत्थरों का मेरा संग्रह पूरे देश में मशहूर है। मुझे समझ नहीं आता कि आप अच्छे पैसे कमाने के इतने शानदार मौके को क्यों ठुकरा रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि समय आने पर आपका मन बदल जाएगा।’
'शायद मुझे आपको कुछ बताना चाहिए, श्रीमान नास्कर। मुझे इस रूबी के लिए पहले ही एक प्रस्ताव मिल चुका है।'
इसे किसने बनाया?
दुबराजपुर का एक व्यापारी।

‘डंडानिया?’
'हाँ।'
‘उसने आपको कितने पैसे देने की पेशकश की?’
‘दस लाख। लेकिन कौन कह सकता है कि उसका प्रस्ताव नहीं बढ़ेगा?’
‘ठीक है। मैं डंडानिया को अच्छी तरह जानता हूँ। मैं उसे संभाल लूँगा।’ ‘बहुत खूब, श्रीमान नास्कर। अलविदा!’
'अलविदा!'
आखिरकार श्री नास्कर चले गए। हम उठे और भोजन कक्ष में चले गए। मुझे बहुत भूख लगी थी।

पाँच
केंडुली में मेला बर्दवान की महारानी द्वारा ढाई सौ साल पहले निर्मित एक मंदिर में आयोजित किया जा रहा था।
हम सब लालमोहन बाबू की कार में एक साथ आए थे। उनके ड्राइवर को उस दिन छुट्टी दी गई थी। फेलुदा गाड़ी चला रहे थे। लालमोहन बाबू और मैं उनके बगल में बैठे थे। पीटर, टॉम और जगन्नाथ चटर्जी पीछे बैठे थे।
एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे कई लोग इकट्ठा थे। उनमें से एक अपना एकतारा बजा रहा था और गा रहा था। श्री चटर्जी ने उस स्थान के इतिहास और नक्काशी के बारे में विस्तार से बताना शुरू किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि मंदिर की दीवारों और स्तंभों पर उकेरी गई कई आकृतियाँ रामायण और महाभारत के पात्रों की थीं। पीटर श्री चटर्जी की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था। टॉम गायब हो गया था। श्री चटर्जी थोड़ी देर बाद रुके और दूसरी दिशा में चले गए। फेलुदा ने इस अवसर का लाभ उठाकर पीटर से वह सवाल पूछा जो मुझे कल से परेशान कर रहा था। 'क्या टॉम और तुम्हारे बीच सब ठीक है? वह कुछ अजीब व्यवहार कर रहा है, है ना? मुझे यह पसंद नहीं है, पीटर। क्या तुम उस पर भरोसा कर सकते हो?'
'हां, मुझे ऐसा ही लगता है। मैं उसे बाईस साल से जानता हूं। हम एक ही स्कूल और कॉलेज में पढ़े हैं। अपने देश में तो वह ठीक था, लेकिन भारत आने के बाद से मैंने उसमें कुछ बदलाव देखे हैं। कभी-कभी वह ऐसे व्यवहार करता है जैसे यहां अभी भी अंग्रेज ही शासक हों। इसके अलावा, इंग्लैंड में तो उसे माणिक बेचने में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं थी। अब तो उसे अपनी जेबें भरने में कोई आपत्ति नहीं है।'
क्या उसे पैसों की जरूरत है?
'एक तरह से, हाँ। देखिए, वह पूरी दुनिया घूमना चाहता है, हर जगह तस्वीरें लेना चाहता है, खासकर उन जगहों की जहाँ उसे घोर गरीबी दिखाई देती है। इस समय हम दोनों के पास इतनी दूर-दूर तक यात्रा करने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं है। लेकिन अगर हम वह माणिक बेच दें, तो कोई समस्या नहीं रहेगी।'
‘क्या होगा अगर उसने आपको बिना बताए इसे बेच दिया?’
नहीं, मुझे पूरा यकीन है कि वह मेरे भरोसे को पूरी तरह से नहीं तोड़ेगा। मैं कल से उससे सख्ती और गंभीरता से बात कर रहा हूँ, उसे समझाने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि वह जल्द ही मान जाएगा।
फेलुदा ने टॉम को चारों ओर ढूंढा। लेकिन उसका कोई अता-पता नहीं था। 'क्या तुम्हें पता है वो कहाँ गया है?'
नहीं, मुझे अफसोस है कि ऐसा नहीं है। उन्होंने मुझे नहीं बताया।
मुझे एक बुरा संदेह होने लगा है।
'आपका क्या मतलब है?'

‘वहाँ देखो। क्या तुम्हें नदी किनारे से धुआँ उठता दिख रहा है? इसका मतलब है कि वहाँ श्मशान घाट है। क्या वह वहाँ तस्वीरें लेने गया होगा? हमें जाकर पता लगाना चाहिए।’
हम तुरंत निकल पड़े और बाऊलों के समूहों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े। नदी का किनारा बस थोड़ी ही दूर था, जो धीरे-धीरे ढलान बनाते हुए पानी की ओर जाता था।
यह श्मशान घाट था। एक जलती हुई चिता पर एक शव पड़ा था। 'देखो, वहाँ टॉम है!' पीटर चिल्लाया।
टॉम चिता से कुछ गज की दूरी पर खड़ा था और अपने बैग से अपना कैमरा और विभिन्न लेंस निकाल रहा था।
‘वह सरासर मूर्खतापूर्ण काम कर रहा है,’ फेलुदा ने कहा। लगभग तुरंत ही, उनकी बात सच साबित हो गई। चार युवक चिता के पास बैठे थे। उनमें से एक ने देखा कि टॉम क्या करने वाला है। वह दौड़कर आगे बढ़ा, टॉम के हाथों से कैमरा छीन लिया और उसे रेत पर फेंक दिया।
और टॉम? टॉम ने एक कदम आगे बढ़ाया और अपना दाहिना हाथ मुट्ठी में बंद कर लिया। एक पल बाद ही उसका हाथ उस युवक की नाक पर पड़ा। वह नाक पकड़कर ज़मीन पर गिर पड़ा। जब उसने हाथ हटाया, तो हम सब देख सकते थे कि वह खून से सना हुआ था।
फेलुदा ने एक पल भी बर्बाद नहीं किया। पहले युवक या उसके दोस्तों के हिलने से पहले ही, वह आगे बढ़ा और टॉम और बाकी लोगों के बीच खड़ा हो गया। उसने हाथ उठाकर विनम्रता से कहा, 'कृपा करके मेरे दोस्त को क्षमा कर दीजिए। वह हमारे देश में नया है और उसे अभी तक यह नहीं पता कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं। चिता की तस्वीर लेने की कोशिश करना उसकी बहुत बड़ी गलती थी। मैं उसे सब कुछ समझा दूंगा और वह यह गलती दोबारा नहीं दोहराएगा, मैं आपसे वादा करता हूं। लेकिन कृपया अब उसे जाने दीजिए।'
मुझे आश्चर्य हुआ जब एक युवक आगे आया और उसने तुरंत फेलुदा के पैर छुए। ‘तुम... तुम क्या कर रहे हो?’
‘आप फेलू मित्तर हैं, है ना? प्रदोष मित्तर? वही मशहूर—?’
‘जी हाँ,’ फेलुदा ने जल्दी से कहा। ‘मैं फेलु मित्तर हूँ, मैं एक जांचकर्ता हूँ और यह सज्जन मेरे मित्र हैं। क्या आप कृपया उन्हें क्षमा करके जाने देंगे?’
‘ठीक है महोदय, कोई बात नहीं। कोई समस्या नहीं,’ तीनों व्यक्तियों ने फेलुदा को विस्मय और प्रशंसा के मिले-जुले भाव से देखते हुए कहा। आख़िरकार, पहचाना जाना कोई बुरी बात नहीं थी।
लेकिन घायल व्यक्ति, जो अब तक उठ खड़ा हुआ था, इतनी आसानी से प्रभावित होने वाला नहीं था। उसने स्पष्ट स्वर में कहा, ‘मैं आपसे बदला लूंगा, साहब। आपके वापस जाने से पहले मैं आपसे हिसाब बराबर कर लूंगा। बस याद रखिएगा। चंदू मल्लिक पर हाथ उठाकर कोई बच नहीं सकता!’
हममें से किसी ने भी उससे कुछ नहीं कहा। हम वापस जाने के लिए मुड़ गए। टॉम का कैमरा बिल्कुल ठीक-ठाक लग रहा था। लेकिन वह खुद इस अचानक हुई घटना से

पूरी तरह हैरान था। शायद इससे उसे सावधान रहना सीख मिल जाए, मैंने मन ही मन सोचा।
हमने टूरिस्ट लॉज में दोपहर का भोजन किया और लाउंज में बैठे ही थे कि इंस्पेक्टर चौबे वहाँ आ गए। उन्होंने कहा, 'मैं यह पता लगाने आया हूँ कि आप कैसे हैं, और मुझे लग रहा है कि कुछ गड़बड़ है।'
‘आप बिलकुल सही कह रहे हैं, इंस्पेक्टर,’ फेलुदा ने जवाब दिया और संक्षेप में बताया कि क्या हुआ था। ‘क्या चंदू मल्लिक नाम आपके लिए कुछ मायने रखता है?’ उन्होंने पूछा।
'हाँ, बिल्कुल। वह एक कुख्यात गुंडा है। वह कम से कम तीन बार जेल जा चुका है। अगर उसने हिसाब बराबर करने की धमकी दी है, तो हम इसे हल्के में नहीं ले सकते।'
टॉम अपने कमरे में वापस चला गया था। पीटर हमारे साथ बैठा था।
इंस्पेक्टर ने कहा, 'मिस्टर रॉबर्टसन, केवल आप ही मदद कर सकते हैं।' 'कैसे?'
अपने दोस्त से बात करो। उसे बताओ कि उसे अपने गुस्से पर काबू रखना सीखना चाहिए। भारत को 45 साल पहले आजादी मिली थी। आज कोई भी भारतीय किसी अंग्रेज से श्री मैक्सवेल जैसा व्यवहार स्वीकार नहीं करेगा।
‘मेरा सुझाव है कि आप उसे यह बात बता दें,’ पीटर ने थोड़ी उदासी से कहा। ‘मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा हूँ। टॉम का व्यवहार इतना अजीब है कि मुझे लगता है मैं उसे जानता ही नहीं। वह मेरी बात बिल्कुल नहीं सुन रहा है। अगर आप उससे बात करें, तो शायद बात बन जाए?’
ठीक है, मैं आपकी बात मान लूंगी। लेकिन क्या आपको उसे अपना माणिक रखने देना ही है? आप उसे वापस क्यों नहीं ले लेतीं?
इंस्पेक्टर साहब, मुझे एक समस्या है। मैं बहुत भुलक्कड़ और लापरवाह हूँ। टॉम ऐसा नहीं है। माणिक वास्तव में उसकी हिरासत में ज़्यादा सुरक्षित है। इसके अलावा, सब कुछ होने के बावजूद, मुझे पूरा विश्वास है कि वह मुझे बताए बिना इसे नहीं बेचेगा।
हम उठे और टॉम को उसके कमरे में ढूंढने गए। पीटर हमारे साथ नहीं आया।
वह कुर्सी पर गहरे चिंतन में डूबे बैठे थे, उनके होठों से आधी जली सिगरेट लटक रही थी। दरवाजा खुला था। हमारे आने पर उन्होंने ऊपर देखा, लेकिन हमारा अभिवादन करने के लिए उठे नहीं। इंस्पेक्टर चौबे दूसरी कुर्सी पर बैठ गए।
फेलुदा, लालमोहन बाबू और मैं पलंग पर बैठ गए।
‘क्या आप मुझ पर दबाव डालने की कोशिश कर रहे हैं?’ टॉम ने पूछा।
'नहीं। हम आपसे विनती करने आए हैं,' इंस्पेक्टर ने बहुत ही विनम्रता से कहा।
किसलिए?
'श्री मैक्सवेल, आप जिस देश का दौरा कर रहे हैं और वहां के लोगों के बारे में जो चाहें सोचने के लिए स्वतंत्र हैं। लेकिन कृपया अपनी भावनाओं को इतनी खुलकर प्रदर्शित न करें।'
‘तुम कौन होते हो मुझे यह बताने वाले कि मुझे कैसा व्यवहार करना चाहिए? मैं वही करूँगा जो मुझे अच्छा लगेगा। पिछले कुछ दिनों में मैंने देखा है कि

तुम्हारा देश कितना पिछड़ा हुआ है। तुम पैंतालीस वर्षों में एक इंच भी नहीं हिले हो। तुम्हारे किसान आज भी ज़मीन जोतने के लिए जानवरों का इस्तेमाल करते हैं। मैंने कलकत्ता में दर्जनों पुरुषों को रिक्शा खींचते देखा है। लाखों लोग फुटपाथ पर सोते हैं। और तुम खुद को सभ्य कहते हो? मुझे पता है कि तुम इन शर्मनाक तथ्यों को दुनिया से छिपाना चाहते हो, लेकिन मैं तुम्हें ऐसा करने नहीं दूँगा। मैं असली भारत की तस्वीरें खींचूँगा और तुम्हारे पाखंड की गहराई को पूरी दुनिया के सामने उजागर करूँगा।’
‘आप एक गंभीर गलती कर रहे हैं, श्रीमान मैक्सवेल। आप सिर्फ भारत की गरीबी की बात करके हमारी कमियों को ही नहीं गिना सकते। क्या आपने हमारी प्रगति नहीं देखी? हमने अंतरिक्ष की खोज की है, हमने आराम से जीवन जीने के लिए आवश्यक हर चीज का उत्पादन शुरू कर दिया है, कपड़ों से लेकर कारों और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तक—बस नाम लीजिए! आप हमारी संस्कृति के सिर्फ एक नकारात्मक पहलू पर ही क्यों ध्यान केंद्रित कर रहे हैं? कोई भी इस बात से इनकार नहीं कर रहा है कि हमारे देश में गरीबी और शोषण है। लेकिन क्या आपके अपने देश में सब कुछ पूरी तरह से दोषरहित है, श्रीमान मैक्सवेल?’
‘श्री चौबे, अपने देश की तुलना मेरे देश से मत कीजिए! आप भारत की स्वतंत्रता की बात करते हैं? यह सब एक घिनौना नाटक है। मैं अपना कैमरा लाकर इसे साबित कर दूंगा। आपको भी किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो आप पर शासन करे, ठीक वैसे ही जैसे मेरे पूर्वजों ने इतने साल पहले किया था। आप इसी के लायक हैं। मेरे परदादा ने जो किया वह बिलकुल उचित था।’
'आपका क्या मतलब है?'
‘उसकी एक नील की फैक्ट्री थी। एक बार उसने अपने एक नौकर को पीट-पीटकर मार डाला था।’
'क्या!'
जी हाँ। वो उनका पंखा खींचने वाला था। मैंने सुना है कि गर्मियों में यहाँ कितनी भीषण गर्मी और उमस हो जाती है। खैर, एक गर्मी की रात, मेरे पूर्वज, रेजिनाल्ड मैक्सवेल, अपने बंगले में सो रहे थे। पंखा खींचने वाला अपना काम कर रहा था। लेकिन थोड़ी देर बाद उसे नींद आ गई। रेजिनाल्ड मैक्सवेल आधी रात को उठे, उन्हें बहुत गर्मी और चिपचिपाहट महसूस हो रही थी और पूरे शरीर पर मच्छरों के काटने के निशान थे। वे अपने कमरे से बाहर आए और पंखा खींचने वाले को गहरी नींद में सोते हुए पाया। गुस्से से आग बबूला होकर उन्होंने उसके पेट में ज़ोर से लात मारी। संयोग से, उन्होंने भारी जूते पहने हुए थे। उसके बाद पंखा खींचने वाला फिर कभी नहीं उठा। सुबह उसका शव निकाला गया। महोदय, यही सही सज़ा थी। आज मैं आपके शव जलाने की इस भयानक व्यवस्था की तस्वीरें लेना चाहता था। मैं अपने देश के लोगों को दिखाना चाहता था कि आप अपने मृतकों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। लेकिन एक स्थानीय गुंडा मुझे धमकाने आ गया। हाँ, मैंने उसकी नाक पर घूंसा मारा क्योंकि उसने ऐसा करने को कहा था। मुझे कोई पछतावा नहीं है। बिल्कुल भी नहीं।
कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद, इंस्पेक्टर चौबे ने धीरे से कहा, 'श्रीमान मैक्सवेल, मैं आपसे केवल एक ही बात कहना चाहता हूँ। आप जितनी जल्दी इस देश को छोड़ दें, उतना ही अच्छा है। आपका यहाँ रहना न केवल हमारे गरीब देश के

लिए, बल्कि आपके लिए भी और अधिक मुसीबतें खड़ी करेगा। आप यह बात समझते ही होंगे।'
मैं यहां तस्वीरें लेने आया हूं। जब तक मेरा काम पूरा नहीं हो जाता, मैं यहां से नहीं जाऊंगा।
लेकिन आप यहाँ जिस असली वजह से आए हैं, वो ये नहीं है, है ना? आप मुख्य रूप से भारत को माणिक लौटाने आए हैं, है ना?
नहीं। यह पीटर की इच्छा थी। मुझे लगता है कि वह इस पूरे मामले में बहुत बेवकूफी कर रहा है। अगर वह इसे बेच देता तो मुझे ज्यादा खुशी होती।

छह
रात के खाने के बाद हम अपने कमरे में वापस आ गए थे और यूं ही बातें कर रहे थे, तभी अचानक लालमोहन बाबू ने घोषणा की कि उन्हें अपने कमरे में वापस जाना होगा।
‘क्यों? इतनी जल्दी क्या है?’ फेलुदा ने पूछा।
‘ये वही किताब है जो शतदल ने मुझे दी थी। आपको पता है ना, रेवरेंड प्रिचर्ड द्वारा लिखी गई किताब जिसका नाम है 'बीरभूम में जीवन और कार्य'। ये बेहद दिलचस्प है। दरअसल, इसमें उस कहानी का जिक्र है जो हमने अभी मैक्सवेल से सुनी, जिसमें एक पंखा खींचने वाले को पीट-पीटकर मार डाला गया था।’
'वास्तव में?'
जी हाँ। यह घटना उन्नीसवीं सदी के अंत में घटी थी। रेजिनाल्ड मैक्सवेल ने अपने नौकर की हत्या कर दी थी, लेकिन उसे इसके लिए कोई सज़ा नहीं मिली... पंखा खींचने वाले नौकर का नाम हीरालाल था। उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी, लेकिन उसका एक छोटा बेटा था। जब रेवरेंड प्रिचर्ड को हत्या के बारे में पता चला, तो वे तुरंत मैक्सवेल के घर पहुँचे और वहाँ उन्हें वह अनाथ लड़का मिला। वे बच्चे को अपने साथ ले आए और उसकी देखभाल ऐसे करने लगे जैसे वह उनका अपना बेटा हो। बच्चे का नाम अनंत नारायण रखा गया। अंततः वह ईसाई बन गया और उसे एक मिशनरी स्कूल में दाखिला दिलाया गया। अब मैं यह जानने के लिए बेताब हूँ कि आगे क्या हुआ। तो अगर आप मुझे माफ़ करें...
किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। मैंने देखा कि पीटर बाहर खड़ा था। 'क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?'
'बिल्कुल।'
फेलुदा उठ खड़ा हुआ। लालमोहन बाबू, जो जाने ही वाले थे, उन्होंने अपना इरादा बदल लिया और वापस बैठ गए। पीटर बेहद दुखी लग रहा था। ज़रूर कोई गंभीर घटना घटी होगी।
‘क्या बात है, पीटर?’ फेलुदा ने पूछा।
मैंने माणिक बेचने का फैसला किया है।
‘क्या! क्यों? अरे, बैठ जाइए, पीटर। बताइए क्या हुआ।’ पीटर बैठ गया। ‘मैं अपने पुराने दोस्त को खोना नहीं चाहता। टॉम उस माणिक को बेचने के लिए पूरी तरह से जुनूनी है। उसका सपना है पूरी दुनिया घूमना, और अगर वह माणिक बिक जाए तो उसका यह सपना पूरा हो सकता है। मैंने इस बारे में सोचा, और मुझे लगा कि इसे किसी संग्रहालय को देने का कोई फायदा नहीं है। आखिर, सच में कितने लोग इसे देख पाएंगे, बताइए? इसलिए मैंने सोचा…’ उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई। फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं। थोड़ी देर रुकने के बाद उसने कहा, 'खैर, यह तुम्हारा फैसला है। मैं कौन होता हूँ कुछ कहने वाला? मुझे निराशा हुई है, लेकिन इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है, है ना?'

‘आप इसे कब बेचना चाहते हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
मैंने अभी-अभी डंडानिया से बात की है। उन्होंने ही पहला प्रस्ताव दिया था, इसलिए मुझे लगता है कि मुझे उनके पास वापस जाना चाहिए। उन्होंने मुझे परसों सुबह दस बजे मिलने के लिए कहा है।
फेलुदा ने उदास होकर कहा, 'मुझे लगा था कि भारत में आपकी वापसी एक ऐतिहासिक घटना को जन्म देगी, लेकिन अब जो देखने को मिलेगा वह एक साधारण व्यापारिक लेन-देन होगा।'
‘मुझे बहुत खेद है,’ पीटर ने कहा और चला गया।
हम चुपचाप बैठे रहे, बेहद निराश और हताश महसूस कर रहे थे।
हमने अगली सुबह बक्रेश्वर जाने की योजना बनाई थी। हमने नाश्ता खत्म कर लिया था और लाउंज में पहुँच ही रहे थे कि श्री नास्कर अपनी कार से वहाँ पहुँच गए।
‘सुप्रभात,’ उसने स्वागत कक्ष में आते हुए कहा। ‘सुप्रभात।’
क्या आप आज शाम संथाल नृत्य देखना चाहेंगे? फूलबेरी गांव में एक नृत्य का आयोजन किया गया है। यह देखने लायक होगा, खासकर इसलिए क्योंकि आज रात पूर्णिमा होगी।
‘इसका आयोजन किसने किया है?’
‘स्थानीय लोग, जापानी पर्यटकों के एक समूह के लिए। मैं आप सभी को आज शाम अपने घर पर रात्रिभोज के लिए आमंत्रित करने आया हूँ। यदि आप नृत्य देखना चाहते हैं, तो मैं रात्रिभोज के बाद आपको स्वयं वहाँ ले जा सकता हूँ। गाँव मेरे घर से केवल दो मील दूर है।’
‘क्या आपके निमंत्रण में पीटर और टॉम भी शामिल हैं?’ फेलुदा ने पूछा। ‘जी हां, बिल्कुल। आप पांचों को आमंत्रित किया गया है।’
'बहुत-बहुत धन्यवाद। आप हमें कब तक आने की उम्मीद करते हैं?'
'लगभग आठ, अगर ठीक हो तो। क्या मुझे अपनी कार भेजनी चाहिए?'
‘इसकी कोई जरूरत नहीं है। हम अपनी गाड़ी में आसानी से जा सकते हैं। कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।’
बहुत खूब। आपसे बाद में मिलने की उम्मीद है। आपका दिन शुभ हो!
बक्रेश्वर एक ऐसी जगह निकली जो प्राचीन काल से बाहर निकलने की जहमत ही नहीं उठाती थी। वहां पुराने मंदिरों की कतारें थीं जिनके पीछे कई बड़े- बड़े पेड़ खड़े थे। इनमें से अधिकतर बरगद के पेड़ थे। इनकी विशाल जड़ें नीचे लटकती हुई मंदिर की दीवारों से चिपकी हुई थीं। लगभग हर मंदिर में अपना एक तालाब था। जगन्नाथ चटर्जी, जो फिर से हमारे साथ आए थे, ने हमें हर तालाब का नाम बताया। पीटर 'सौभाग्य कुंड' नाम के एक तालाब के पास रुका और उसमें तैरने चला गया। किसी ने उसे 'सौभाग्य' का मतलब बताया था। इसलिए वह ऊपर आते हुए हँसा और बोला, 'इससे मुझे सौभाग्य मिलेगा!'
मंदिरों के पास दर्जनों भिखारी थे। टॉम ने अपना कैमरा निकाला और जल्द ही उसे कई ऐसे लोग मिले जिनकी शारीरिक बनावट फोटो खींचने के लिए विशेष रूप से आकर्षक थी।

पर्यटक लॉज में लौटने के आधे घंटे बाद, इंस्पेक्टर चौबे ने फेलुदा को फोन किया। उन्होंने पूछा, 'क्या आपको पता है कि आज बाद में संथाल नृत्य होने वाला है?'
जी हां, श्री नास्कर ने हमें बताया था। दरअसल, आज शाम हम उनके घर पर डिनर करने जा रहे हैं। उन्होंने हमें बाद में डांस पार्टी में ले जाने का भी प्रस्ताव दिया है। हमें रात 10 बजे तक वहां पहुंच जाना चाहिए।
'अच्छा। मुझे उम्मीद है कि मैं साढ़े दस बजे तक वहाँ पहुँच जाऊँगा, तो मुझे लगता है कि आज रात हम वहीं मिलेंगे।'
श्री नास्कर ने हमें बहुत अच्छे से रास्ता बताया था। हमें उनका घर ढूंढने में कोई परेशानी नहीं हुई। यह दो मंजिला, काफी बड़ा घर था और इसके साथ एक सुंदर बगीचा भी था। जैसे ही हम कार से उतरे, श्री नास्कर हमारा स्वागत करने के लिए बाहर आए और फिर हमें सीधे अपने ड्राइंग रूम में ले गए। थोड़ी ही देर में एक वेटर पेय पदार्थ लेकर अंदर आ गया।
‘तुम यहाँ अकेले रहते हो, है ना?’ फेलुदा ने ट्रे से एक कोल्ड ड्रिंक उठाते हुए पूछा।
‘जी हाँ, लेकिन मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। हम आम तौर पर समूह में यहाँ कुछ दिन बिताने आते हैं। इस बार मैं अकेला आया हूँ।’ श्री नास्कर अचानक लालमोहन बाबू की ओर मुड़े। ‘मैंने श्री मित्तर के बारे में सुना था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैंने आपका नाम सुना था—?’
फेलुदा ने जवाब दिया, 'ज्यादातर लोग उनका असली नाम नहीं जानते। वे छद्म नाम से क्राइम थ्रिलर लिखते हैं। लाखों लोग उन्हें जटायु के नाम से ही जानते हैं। उनकी किताबें बेहद लोकप्रिय हैं।'
जी हां, जी अब जब आपने जिक्र किया ही है... अरे, मैंने भी आपकी कुछ किताबें पढ़ी हैं! 'शेकन इन शंघाई' उनमें से एक थी, है ना?' लालमोहन बाबू ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा। श्री नास्कर ने आगे कहा, 'मुझे गंभीर किताबें बिल्कुल पसंद नहीं हैं। मैं तो सिर्फ थ्रिलर ही पढ़ता हूं। आप आजकल क्या लिख रहे हैं?'
‘अभी तो कुछ नहीं। मैं यहाँ बस छुट्टी मनाने आया हूँ। मेरी नवीनतम पुस्तक कुछ महीने पहले ही प्रकाशित हुई है। उसका नाम है 'डंबस्ट्रक इन दमिश्क'।’ ‘एक और बेस्ट-सेलर?’
‘अच्छा… चार हज़ार प्रतियाँ बिक चुकी हैं, हा हा।’ श्री नास्कर मुस्कुराए और पीटर की ओर मुड़े। ‘क्या तुमने मेरे प्रस्ताव के बारे में और सोचा है?’ उन्होंने सीधे मुद्दे पर आते हुए पूछा।
मैंने माणिक बेचने का फैसला किया है।
'यह बहुत बढ़िया है।'
लेकिन तुम्हारे लिए नहीं।
क्या आप इसे डंडानिया को बेच रहे हैं?
'हां, क्योंकि मुझे सबसे पहले उन्हीं का प्रस्ताव मिला था।'
'नहीं, मिस्टर रॉबर्टसन। आप अपना रूबी मुझे बेचेंगे।'
‘यह कैसे संभव है, श्रीमान नास्कर? मैंने डंडानिया को पहले ही बता दिया है। मैंने अपना मन बना लिया है।’

मैं आपको बताता हूँ कि यह कैसे संभव होगा। आपको मुझ पर विश्वास नहीं होगा, है ना? ठीक है, चलिए किसी निष्पक्ष व्यक्ति से बात समझाते हैं। श्री गांगुली!
‘जी-जी?’ लालमोहन बाबू चौंककर ऊपर देखने लगे।
क्या आपको आगे आकर इस कालीन पर खड़े होने में कोई आपत्ति है?
‘म-मैं?’
'हां। मैं तुम्हें चाहता हूं क्योंकि तुम्हें माणिक में कोई दिलचस्पी नहीं है, और तुम्हारा स्वभाव सुखद और सौम्य है।'
इसका इससे क्या लेना-देना है?
“डरिए मत, श्रीमान गांगुली। आपको कोई नुकसान नहीं होगा, मैं वादा करता हूँ। बात यह है कि मैंने अभी तक आपको अपनी उस विशेष क्षमता के बारे में नहीं बताया है जो मैंने वर्षों पहले हासिल की थी। मैं लोगों को सम्मोहित कर सकता हूँ और उनसे पेचीदा सवालों के सही जवाब निकलवा सकता हूँ। इसका कारण यह है कि सम्मोहन के बाद व्यक्ति अस्थायी रूप से मनगढ़ंत बातें बनाने और झूठ बोलने की क्षमता खो देता है। यह क्षमता, जो अधिकांश लोगों में स्वाभाविक रूप से होती है, एक असाधारण शक्ति से बदल जाती है। सम्मोहित व्यक्ति हमेशा सच बोलता है। मैं जल्द ही इसे आपको साबित कर दूंगा।” लालमोहन बाबू के विरोध करने से पहले ही, श्री नस्कर ने उन्हें कंधों से पकड़कर कमरे के बीचोंबीच बिछे कालीन पर खड़ा कर दिया। फिर उन्होंने सारी बत्तियाँ बंद कर दीं और अपनी जेब से एक छोटी लाल टॉर्च निकाली। मैंने फेलुदा की ओर देखा, लेकिन पाया कि वह भावहीन चेहरे से यह सब देख रहा था। मैं जानता था कि लालमोहन बाबू को किसी भी तरह की शरारत में शामिल करना उसे कभी-कभी काफी अच्छा लगता था।
श्री नस्कर ने टॉर्च जलाई और उसे धीरे-धीरे घुमाते हुए लालमोहन बाबू के चेहरे पर चमकाया। उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, 'श्री गांगुली, इसे ध्यान से देखिए और बाकी सब कुछ भूल जाइए। आप बिल्कुल एक अलग इंसान बनने वाले हैं... एक नया आदमी, जिसके पास सच बोलने की एक विशेष जादुई शक्ति होगी... जिसे आपके सिवा कोई नहीं जानता... सिर्फ आप... हां, हां, हां, हां...'
लालमोहन बाबू की आँखें जल्द ही बेजान सी दिखने लगीं। वह खालीपन में घूरने लगे। उनका मुँह खुला रह गया। श्री नास्कर ने टॉर्च चलाना बंद कर दिया, लेकिन उसे बुझाया नहीं। कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद, उन्होंने अपना पहला सवाल पूछा।
'आपका क्या नाम है?'
‘श्रीमान सर्वज्ञानी, उर्फ लालमोहन गांगुली, उर्फ जटायु।’ श्रीमान सर्वज्ञानी? मैंने तो कभी किसी को उन्हें इस नाम से पुकारते नहीं सुना! ‘इस कमरे में कितने लोग मौजूद हैं?’
'छह।'
क्या वे सभी भारतीय हैं?
नहीं, उनमें दो अंग्रेज हैं।
उनके नाम क्या हैं?
‘पीटर रॉबर्टसन और टॉम मैक्सवेल।’

‘वे इंग्लैंड में कहाँ से आते हैं?’
‘लैंकशायर।’
'वे कितने साल के हैं?'
‘पीटर की उम्र चौंतीस वर्ष और तीन महीने है। टॉम की उम्र तैंतीस वर्ष और नौ महीने है।’
वे भारत क्यों आ रहे हैं?
‘पीटर रॉबर्टसन की रूबी को भारत लौटाना चाहता है।’
‘असल में रूबी किसके पास है?’
‘टॉम मैक्सवेल।’
इस रूबी का भविष्य क्या है?
इसे बेचा जाएगा।
क्या वो गणेश दंडानिया हैं?
'नहीं।'
लेकिन उसने तो पहले ही प्रस्ताव दे दिया है, है ना?
'हां, लेकिन वह अपने वादे से मुकर जाएगा। अब वह इसके लिए केवल सात लाख रुपये ही देगा।'
और पीटर उसे अपना माणिक नहीं बेचेगा। क्या आप यही कहना चाह रहे हैं? 'हाँ।'
‘तो फिर वह इसे किसे बेचेगा?’
‘Ardhendu Naskar.’
'कितने में?'
बारह लाख।
'धन्यवाद महोदय।'
श्री नास्कर ने टॉर्च बंद की और लालमोहन बाबू को धीरे से हिलाया। मैंने देखा कि वह चौंक गया। जब श्री नास्कर बत्ती जलाकर अपनी कुर्सी पर वापस आए, तब तक लालमोहन बाबू फिर से पहले की तरह सामान्य हो चुके थे।
‘तो, श्री रॉबर्टसन?’ श्री नास्कर ने पूछा।
‘यह वाकई बहुत प्रभावशाली था,’ पीटर ने जवाब दिया।
अब क्या तुम मुझ पर विश्वास करते हो?
मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या सोचूं।
‘आपको बिल्कुल भी सोचने की जरूरत नहीं है। मुझे कोई जल्दी नहीं है। कल जाकर डंडानिया देख लीजिए। अगर आप चाहें तो अपना माणिक सात लाख में बेच सकते हैं। हालांकि, अगर आप अपना मन बदल लें, तो मेरा बारह लाख का प्रस्ताव अभी भी मान्य है।’
श्री नास्कर के रसोइए के आने से पीटर को जवाब देने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उसने घोषणा की, 'खाना परोसा जा चुका है।'
हम उठे और भोजन कक्ष की ओर चल दिए।

सात
एक शानदार भोजन के बाद हम फुलबेरी के लिए रवाना हुए। जब हम वहाँ पहुँचे, तब तक सवा दस बज चुके थे। एक बड़े खुले मैदान में भीड़ जमा थी। उनमें से ज़्यादातर संथाल नहीं थे; ज़ाहिर है, आस-पास के कस्बों से लोग नृत्य देखने आए थे। पूर्णिमा का चाँद और जगह-जगह जलती मशालें सब कुछ साफ़-साफ़ देखने में मददगार थीं।
इंस्पेक्टर चौबे भीड़ से बाहर निकले। उन्होंने हमें बताया, 'आपको यहां कई अन्य परिचित चेहरे भी मिलेंगे।'
‘अरे, और कौन-कौन आया है?’
मैंने किशोरीलाल और चंदू मल्लिक को देखा। और उस सज्जन को भी देखा जो बीरभूम के विशेषज्ञ हैं।
‘जगन्नाथ चटर्जी। वाह, यह तो अच्छी खबर है। नृत्य कब शुरू होगा?’
‘बस अब किसी भी पल। देखो, सभी नर्तक एक साथ खड़े हैं।’ फेलुदा ने पीटर को देखा। ‘पीटर, कहीं खो मत जाना,’ उसने पुकारा। ‘अगर हम एक-दूसरे के करीब नहीं रहे, तो साथ वापस जाना आसान नहीं होगा।’
मैंने देखा कि टॉम फ्लैश गन के साथ अपना कैमरा तैयार कर रहा था। श्री नास्कर के हाथ में भी एक छोटा कैमरा था। उन्होंने टॉम से पूछा, 'क्या आपका अपना स्टूडियो है?'
नहीं। मैं स्टूडियो फोटोग्राफर नहीं हूँ। मैं यात्रा के दौरान तस्वीरें लेता हूँ। मैं केवल फ्रीलांस काम करता हूँ। मेरी तस्वीरें कई पत्रिकाओं और जर्नलों में छप चुकी हैं। दरअसल, भारत में इस असाइनमेंट का खर्च नेशनल ज्योग्राफिक उठा रहा है।
ढोल बजने लगे। हम सब बेहतर नज़ारा पाने के लिए आगे बढ़े। लगभग तीस महिलाएं, पारंपरिक पोशाक और आभूषणों से सजी हुई, अर्धवृत्त में खड़ी थीं, एक-दूसरे का हाथ पकड़े संगीत की धुन पर धीरे-धीरे झूम रही थीं। दो पुरुष बांसुरी बजाते हुए ढोल बजाने वालों के साथ बैठे थे। ढोल बजाने वालों ने अपने टखनों में घंटियाँ बाँध रखी थीं।
लालमोहन बाबू आकर मेरे पास खड़े हो गए। उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, 'अब मेरी बाईं आंख फड़क रही है। भगवान ही जाने आगे क्या होगा।'
मैंने पूछा, 'उम्मीद है कि सम्मोहन का आप पर कोई बुरा असर नहीं पड़ा होगा?' नहीं, नहीं। यह एक अद्भुत अनुभव रहा है। मुझे याद नहीं कि मैंने एक भी शब्द बोला हो।
टॉर्च की रोशनी में मैंने चंदू मल्लिक को बीड़ी पीते हुए और नर्तकों की ओर धीरे-धीरे बढ़ते हुए देखा। लेकिन नहीं। उनकी रुचि नर्तकों में नहीं थी।
उन्होंने टॉम को देख लिया था और चुपके से उसके पास जा रहे थे।

‘हमें उस पर नजर रखनी चाहिए, लालमोहन बाबू,’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा। ‘हां, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं।’
लेकिन टॉम अपनी जगह से हटकर दूसरी जगह चला गया था, शायद बेहतर एंगल पाने के लिए। क्या सभी फोटोग्राफर उसकी तरह बेचैन होते हैं?
चंदू मल्लिक आकर हमारे सामने खड़े हो गए। उनके चेहरे पर शिकन थी। उनके हाथ जेब में थे। फिर वे दूसरी दिशा में चले गए। हमारा समूह धीरे-धीरे बिखर गया। लालमोहन बाबू और मैं साथ रहे, बाकी लोगों को ढूंढने की कोशिश करते रहे क्योंकि नृत्य समाप्त होने के बाद हम सबको फिर से इकट्ठा होना था। दूर फेलुदा दिखाई दे रहे थे। चौबे अभी कुछ देर पहले उनके बगल में खड़े थे, लेकिन अब वे मुझे दिखाई नहीं दे रहे थे। श्री नास्कर तस्वीरें खींचने में व्यस्त थे; मैंने उनके कैमरे की फ्लैश एक से अधिक बार देखी। नर्तक अभी भी धीमी और सहज लय में झूम रहे थे।
अचानक मैंने किशोरीलाल को पीटर की ओर आते देखा। वह उसे क्या बताने वाला था? उत्सुकतावश, मैं लालमोहन बाबू को छोड़कर उनकी बातचीत सुनने के लिए आगे बढ़ा।
‘शुभ संध्या,’ पीटर ने किशोरीलाल से कहा। ‘आशा है कल की हमारी मुलाकात तय समय पर ही होगी?’
'ओह हां।'
‘तुम्हारे पिता अपना मन बदलने वाले नहीं हैं, है ना?’
नहीं, महोदय। उन्होंने अपना मन बना लिया है।
'अच्छा।'
किशोरीलाल चले गए। उनकी जगह जगन्नाथ चटर्जी ने ले ली।
‘नमस्कार, श्री चटर्जी,’ पीटर ने अभिवादन किया। ‘आपसे मिलकर खुशी हुई। क्या आप कृपया मुझे इस नृत्य का उद्देश्य समझा सकते हैं? मेरा मतलब है, क्या इसका कोई विशेष अर्थ है?’
‘जी हां, जरूर,’ श्री चटर्जी पास आए और आदिवासी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को समझाने लगे। मैं लालमोहन बाबू के पास वापस चला गया।
फेलुदा अब जलती हुई मशाल के पास खड़ा था। मैंने उसे सिगरेट जलाते देखा। पहला नृत्य समाप्त हुआ और दूसरा शुरू हुआ। इसकी लय बहुत तेज़ थी और गायकों का एक समूह ढोल बजाने वालों के साथ शामिल हो गया। नर्तकों ने लय से ताल मिलाने के लिए अपनी गति बढ़ा दी, अपने शरीर को झुकाते और सीधा करते हुए, उनके पैर एकसमान पैटर्न में ऊपर-नीचे हो रहे थे।
‘बहुत ही रोमांचक,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
श्री नास्कर कैमरे के साथ हमारे पास से गुजरे। उन्होंने पूछा, 'आपको यह कैसा लगा?' लेकिन जवाब का इंतजार किए बिना ही आगे बढ़ गए।
फेलडुआ ने हमें देखा और हमारे साथ चल पड़ा।
‘फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने पूछा, ‘आप इतने खुशी के मौके पर भी क्यों मुंह फुलाए बैठे हैं? वो ढोल बजाने वाले तो वाकई बहुत अच्छा बजा रहे हैं, है ना?’ 'हां, लेकिन यहां कुछ ठीक नहीं लग रहा है। मुझे बहुत बेचैनी हो रही है। क्या आपने टॉम मैक्सवेल को देखा है?'
मैंने उसे कुछ मिनट पहले देखा था। लेकिन मुझे नहीं पता कि वह कहाँ गया।

'हमें उसे ढूंढना ही होगा,' फेलुदा ने कहा और बाईं ओर बढ़ गया।
‘मुझे लगता है तुम्हारे चचेरे भाई को हमारी मदद की ज़रूरत है,’ लालमोहन बाबू ने मुझसे कहा और फेलुदा के पीछे चलने के लिए उछल पड़े, मुझे भी अपने साथ खींचते हुए। कुछ ही पलों में हम नर्तकों के पीछे पहुँच गए। यहाँ भीड़ कम थी। मैं चंदू मल्लिक और किशोरीलाल को इधर-उधर घूमते हुए देख सकता था। टॉम कहाँ था?
वहाँ पीटर अकेला खड़ा था और चारों ओर देख रहा था। उसने फेलुदा से पूछा, 'क्या तुमने टॉम को देखा है?'
नहीं, हम भी उसे ढूंढ रहे हैं।
मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है।
पीटर टॉम को ढूंढने के लिए एक दिशा में चला गया। हम दूसरी तरफ चले गए। फेलूदा जल्द ही भीड़ में खो गया। संगीत और नृत्य हर मिनट तेज़ होते जा रहे थे, लेकिन रुककर उसका आनंद लेने का समय नहीं था। फेलूदा अचानक फिर प्रकट हुआ। 'चौबे? क्या तुमने उसे देखा है?' उसने घबराकर पूछा।
‘नहीं। क्यों, फेलुदा, क्या बात है—?’
लेकिन वह पहले ही हमसे कुछ कदम आगे निकल चुका था और पुकार रहा था, 'इंस्पेक्टर चौबे! इंस्पेक्टर चौबे!'
चौबे शायद कहीं आस-पास ही खड़े थे, क्योंकि एक मिनट बाद ही वे और फेलुदा भीड़ से बाहर निकले और जल्दी से वहां से जाने लगे।
‘क्या बात है?’ लालमोहन बाबू ने उनसे कदम मिलाकर चलने की कोशिश करते हुए पूछा।
'मैक्सवेल,' फेलुदा ने संक्षेप में उत्तर दिया।
हम दौड़ने लगे। फेलुदा एक पेड़ के पास अचानक रुक गया। करीब दस फीट दूर एक मशाल जल रही थी। उसकी रोशनी में हमने टॉम मैक्सवेल को जमीन पर लेटा हुआ देखा। उसका कैमरा और अन्य उपकरणों से भरा बैग उसके बगल में घास पर पड़ा था। ‘क्या वो... क्या वो मर गया है?’ चौबे ने हांफते हुए पूछा।
‘नहीं,’ फेलुदा ने टॉम की ओर झुकते हुए और उसकी एक कलाई को अपनी उंगलियों के बीच लेते हुए उत्तर दिया, ‘मैं उसकी नब्ज़ महसूस कर सकता हूँ। वह मरा नहीं है... कम से कम अभी तो नहीं।’
चौबे ने अपनी जेब से एक छोटी टॉर्च निकाली और उसे टॉम के चेहरे पर चमकाया। उसकी आँखें एक पल के लिए झपकती हुई प्रतीत हुईं। फेलुदा ने उसे कंधों से पकड़कर हिलाया।
‘टॉम! मैक्सवेल!’
इसी क्षण, भीड़ को चीरता हुआ एक और व्यक्ति हांफता हुआ आया। यह पीटर था। 'टॉम को क्या हुआ है? हे भगवान, क्या वह... वह... नहीं...?'
नहीं, वह बस बेहोश है। लेकिन मुझे लगता है कि उसे होश आ रहा है।
टॉम हिलने-डुलने लगा था। अब उसने आंखें खोलीं और दर्द से कराह उठा। 'कहां दर्द हो रहा है?' फेलुदा ने घबराकर पूछा। बड़ी मुश्किल से टॉम ने हाथ उठाकर अपने सिर के पिछले हिस्से में एक जगह की ओर इशारा किया।
इसी बीच पीटर ने अपना बैग उठाया और अंदर देखा। उसने ऊपर देखा, अर्ध-अंधेरे में भी उसके चेहरे की पीलापन साफ दिखाई दे रहा था।

‘माणिक गायब हो गया!’ उसने कर्कश स्वर में चिल्लाया।
हम टॉम के साथ श्री नास्कर के घर लौट आए। चोरी के बारे में सुनकर श्री नास्कर के चेहरे पर क्रोध और निराशा के भाव स्पष्ट हो गए।
‘तुम्हें खुश होना चाहिए!’ उसने झल्लाकर कहा। ‘तुम्हें जो चाहिए था वो मिल गया, है ना? रॉबर्टसन की रूबी तो भारत वापस आ गई, लेकिन अब तुम कभी उस विश्व दौरे पर नहीं जा पाओगे।’
पड़ोस के ही एक डॉक्टर सिन्हा को टॉम की जांच के लिए बुलाया गया।
डॉ. सिन्हा ने कहा, 'उसके सिर पर सूजन है, जहां उसे चोट लगी थी। किसी ने उस पर किसी भारी वस्तु से हमला किया था।'
‘क्या इस प्रहार से उसकी मौत हो सकती थी?’ पीटर यह जानना चाहता था।
हां, अगर हमलावर ने उसे और जोर से मारा होता, तो आपके दोस्त की जान भी जा सकती थी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, इसलिए इस बारे में ज्यादा मत सोचिए। उसे बर्फ की सिकाई दीजिए, इससे सूजन कम हो जाएगी। अगर दर्द बहुत बढ़ जाए, तो दर्द निवारक दवा ले लीजिए, मिस्टर मैक्सवेल। इस समय और कुछ नहीं किया जा सकता। चिंता मत कीजिए। आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।
डॉ. सिन्हा के जाने के बाद चौबे ने अपना मुंह खोला।
उन्होंने कहा, 'श्री मैक्सवेल, आपने वास्तव में यह नहीं देखा कि आप पर हमला किसने किया था, है ना?'
नहीं, मैंने नहीं किया।
मुझे आश्चर्य होता है कि उसका मकसद क्या था। माणिक चुराना? लेकिन बहुत कम लोगों को पता था कि माणिक पीटर रॉबर्टसन के पास नहीं बल्कि टॉम मैक्सवेल के पास था। वास्तव में, इस तथ्य को केवल श्री मिटर, श्री गांगुली, तपेश, किशोरीलाल, जगन्नाथ चटर्जी, श्री नास्कर और मुझे ही पता था।
‘आप क्या कह रहे हैं, इंस्पेक्टर?’ श्री नास्कर ने विरोध किया। ‘मैं वह पत्थर वैसे भी ले आता। मैं ऐसा बेवकूफी भरा काम क्यों करता? भगवान के लिए, टॉम की जान जा सकती थी! क्या मैं हत्या के आरोप में फंसने का जोखिम उठाता, जबकि मुझे बस एक और दिन इंतजार करना था?’
‘बहस करने का कोई फायदा नहीं, श्री नास्कर। आप मुख्य संदिग्ध हैं। श्री गांगुली ने कथित तौर पर सम्मोहन के दौरान जो कहा, उसका कोई महत्व नहीं है। आखिर, इस बात की कोई गारंटी तो नहीं थी कि उनके शब्द सच हो जाएंगे, थी क्या? उस माणिक के किसी और को बिकने की पूरी संभावना थी। हम सब जानते हैं कि वह कोई साधारण माणिक नहीं था, और आप कोई साधारण संग्राहक नहीं हैं। तो मैं यह क्यों न मान लूँ कि आपने बिना एक पैसा दिए उसे सबसे पहले पाने की कोशिश की होगी?’
‘बकवास! बकवास!’ श्री नास्कर ने थोड़ी कमजोर आवाज में कहा। ‘आपके अलावा, किशोरीलाल पर भी विचार करना होगा,’ चौबे ने आगे कहा। ‘उसके पिता इसे खरीदने वाले थे, लेकिन किशोरी के लिए इससे कोई फायदा नहीं होता। वह इसकी कीमत जानता था, और यह भी जानता था कि यह कहाँ मिलेगा। इसलिए अगर उसे मैक्सवेल अकेला मिल जाता, तो शायद वह लालच में आकर इसे खरीद लेता, कौन जाने?… तीसरा संदिग्ध चंदू मल्लिक है। उसने पहले ही टॉम से हिसाब बराबर करने की धमकी दी थी। लेकिन क्या उसे माणिक के बारे में पता था? मुझे नहीं लगता। अगर उसे यह

मिला भी, तो यह संयोग से ही हुआ होगा। टॉम को गिराने के बाद, हो सकता है उसने पैसे ढूंढने के लिए अपने बैग में हाथ डाला हो और माणिक मिल गया हो। इस संभावना को नकारा नहीं जा सकता… फिर जगन्नाथ चटर्जी हैं। उन्हें माणिक और उसके रखे होने की जगह के बारे में पता था। शायद सिर्फ लालच ने उन्हें इसे निकालने के लिए उकसाया हो।’
‘आपने एक महत्वपूर्ण संदिग्ध का नाम छोड़ दिया है, इंस्पेक्टर,’ फेलुदा ने कहा। ‘कौन?’
‘पीटर रॉबर्टसन।’
‘क्या!’ पीटर उछलकर खड़ा हो गया।
'हां, पीटर। तुम माणिक को कलकत्ता के संग्रहालय को सौंपना चाहते थे। तुम्हारे दोस्त ने इस विचार का विरोध किया। तुमने इसे बेचने पर सहमति जताई क्योंकि तुम अपने दोस्त को खोना नहीं चाहते थे। लेकिन कौन कह सकता है कि तुमने अपना मन नहीं बदला? क्या होगा अगर तुम अपने मूल निर्णय पर वापस चले जाओ और टॉम के साथ अपनी दोस्ती को खतरे में डाले बिना माणिक को वापस पाने का कोई रास्ता निकाल लो?'
पीटर फेलुदा को घूरता रहा, पल भर के लिए अवाक रह गया। फिर उसने अपने हाथ सिर के ऊपर उठाए और धीरे से बोला, 'यह पता लगाने का एक बहुत ही आसान तरीका है कि मैं ही दोषी हूँ या नहीं। अगर मैंने वाकई माणिक वापस लिया होता, तो वह अभी भी मेरे पास होता, है ना? मेरा मतलब है, जब से हमने टॉम को पाया है, मैं आप सबके साथ रहा हूँ। तो मेरी तलाशी लो, इंस्पेक्टर चौबे। आइए, मेरी तलाशी लीजिए!'
‘बहुत खूब,’ चौबे ने कहा और पीटर की अच्छी तरह तलाशी ली। उसे कुछ नहीं मिला। ‘ठीक है, इंस्पेक्टर,’ फेलुदा ने कहा। ‘चूंकि आपने पीटर की तलाशी लेने की जहमत उठाई है, तो मुझे लगता है कि आपको हम सबकी भी तलाशी लेनी चाहिए।’ चौबे हिचकिचाते हुए दिखे। ‘चलिए इंस्पेक्टर, हमें छोड़ने का कोई कारण नहीं है,’ फेलुदा ने फिर कहा। इस बार चौबे आगे बढ़े और कमरे में मौजूद हर किसी की तलाशी ली, जिसमें मैं भी शामिल था। फिर भी उन्हें माणिक नहीं मिला। उन्होंने पूछा, 'श्री रॉबर्टसन, क्या आप चाहेंगे कि मैं एक आधिकारिक जांच करूं?'
‘बिल्कुल!’ पीटर ने दृढ़ता से कहा। ‘मुझे वह माणिक किसी भी कीमत पर वापस चाहिए।’

आठ
सुबह टॉम की हालत काफी बेहतर लग रही थी। उसे अभी भी दर्द था, लेकिन सूजन कम हो गई थी और उम्मीद है कि कुछ दिनों में वह पूरी तरह से ठीक हो जाएगा। लेकिन कीमती माणिक खोने के सदमे से वह उबर नहीं पा रहा था। पीटर बार-बार कह रहा था, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे वह पत्थर यहाँ किसी अनजान अपराधी के पास छोड़ना पड़ेगा।'
‘ओह, हमने इसे पहले ही दिन डंडानिया को क्यों नहीं बेच दिया?’ टॉम बार-बार यही कहता रहा। यह कहना मुश्किल था कि नुकसान पर किसे ज़्यादा अफ़सोस था। इंस्पेक्टर चौबे सुबह करीब 11 बजे हमारे कमरे में आए।
उन्होंने कहा, 'मैं अभी-अभी टॉम से मिलकर आया हूं।'
‘टॉम ठीक है। क्या कोई प्रगति हुई है?’ फेलुदा ने पूछा। ‘मुझे संदिग्धों की सूची से एक को हटाना पड़ा है।’
'वाकई कौन?'
‘Kishorilal.’
'क्यों?'
खैर, मैं किशोरी को अच्छी तरह जानता हूँ। वह इस तरह की लापरवाही नहीं करेगा। इसके अलावा, उसके पिता ने हाल ही में उसे एक प्लास्टिक फैक्ट्री खरीद कर दी है। किशोरी वहाँ नियमित रूप से जाता रहा है। मुझे पता है कि डंडानिया अपने बेटे पर कड़ी नज़र रखता है। अगर किशोरी ने वह माणिक सिर्फ बेचने और खुद के लिए मोटी रकम कमाने के लिए चुराया है, तो उसके पिता को ज़रूर पता चल जाएगा, और फिर उसे भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। इसलिए किशोरी को छोड़ो।
‘मैं समझ गया। चंदू मलिक के बारे में क्या?’
जहां तक मुझे समझ आया है, मैक्सवेल पर कल रात करीब पौने ग्यारह बजे हमला हुआ था। चंदू उससे पहले ही डांस पार्टी से निकलकर एक छोटी सी दुकान में दोस्तों के साथ बैठकर शराब पी रहा था। कई गवाह हैं जो उसकी बात की पुष्टि करेंगे। मैंने उनमें से ज्यादातर से बात कर ली है। इससे चंदू का शक भी खत्म हो जाता है।
और बाकी लोग?
मैंने आज सुबह नस्कर के घर की तलाशी ली। मुझे माणिक तो नहीं मिला, लेकिन इसका कोई मतलब नहीं है। वह इसे कहीं और छिपा सकता था। लेकिन अब मुझे लगने लगा है कि जगन्नाथ चटर्जी ही हमारी सबसे बड़ी उम्मीद हैं।
'आप क्यों कहते हो कि?'
‘वह बीरभूम का विशेषज्ञ होने का दावा करता है। लेकिन वह यहाँ पिछले तीन साल से ही रह रहा है। मेरा अनुमान है कि वह बिल्कुल भी विशेषज्ञ नहीं है। उसकी सारी जानकारी शायद किसी पर्यटक गाइड बुक से आती है। इसके अलावा, मुझे पता

चला है कि उसे बर्दवान में धोखाधड़ी के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, जहाँ वह पहले रहता था। वह एक अपराधी है, श्री मिटर। मुझे पूरा यकीन है कि वही हमारा आदमी है। क्या आपको पता था कि वह अपनी सेवाओं के लिए शुल्क लेता था? जी हाँ, श्री रॉबर्टसन उससे हर बार मिलने पर सौ रुपये देते थे!’
नहीं, मुझे यह पता नहीं था। क्या आपने उसके घर की तलाशी ली है?
नहीं, लेकिन मैं आज दोपहर को ऐसा करूँगा, हालाँकि मुझे नहीं लगता कि तलाशी में कुछ मिलेगा। मुझे उससे सख्ती से बात करनी होगी और उसे ईश्वर का भय समझाना होगा। वैसे भी, क्या तुम कुछ नहीं करने वाले हो?
नहीं। मुझे लगता है कि पुलिस अधिकारी के तौर पर आप जो भी कार्रवाई करेंगे, उसका कहीं अधिक प्रभाव पड़ेगा। लेकिन मैं स्वाभाविक रूप से सतर्क रहूंगा और अगर मुझे कुछ भी संदिग्ध नज़र आएगा तो आपको बता दूंगा। वैसे, मैंने जिस पांचवें संदिग्ध का ज़िक्र किया था, उसके बारे में क्या?
‘आपका मतलब पीटर रॉबर्टसन से है?’
हां। मुझे लगता है कि जरूरत पड़ने पर पीटर अब एक पुरानी दोस्ती के टूटने को भी स्वीकार कर लेगा। उसके लिए महत्वपूर्ण यह है कि उसके पूर्वज की इच्छा पूरी हो। उसने उस माणिक को बेचने का इरादा बदल दिया है। मुझे पता है कि उसने बदल दिया है।
'जी हां, आपने कल रात यही कहा था, है ना? मुझे आपकी बातें याद हैं, श्री मिटर, और यहां आने से कुछ ही मिनट पहले मैंने पीटर रॉबर्टसन के कमरे की तलाशी ली थी। क्या मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत है कि वहां माणिक का कोई निशान नहीं था?'
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। इंस्पेक्टर चौबे उठे। उन्होंने कहा, 'मैं शाम को आपसे फिर मिलूंगा,' और चले गए।
‘यह तो बहुत ही पेचीदा मामला है,’ फेलुदा ने आह भरी। ‘पांच संदिग्ध... सभी पांच अलग-अलग जगहों पर बिखरे पड़े हैं। अब मैं क्या कर सकता हूँ? इस बार तो पुलिस का पलड़ा भारी है।’
‘अरे, फेलू बाबू, तुम तो कोशिश भी नहीं कर रहे हो। हमें बताओ कि तुम्हें वास्तव में किस पर शक है,’ लालमोहन बाबू ने कहा।
‘इन पांचों में से?’
'हाँ।'
‘मैंने किशोरीलाल को इस संभावना से इसलिए बाहर कर दिया था क्योंकि वह मुझे ऐसा व्यक्ति नहीं लगा जो अपनी इच्छा पूरी करने के लिए हिंसा का सहारा लेगा। उसमें किसी को पीटकर बेहोश करने, उसके बैग से कुछ चुराने और भाग जाने का साहस नहीं है, खासकर तब जब आसपास इतने सारे लोग मौजूद हों।’
'चंदू मलिक के बारे में क्या?'
‘चांडू ने मैक्सवेल को मारा होगा—वह ऐसा करने में पूरी तरह सक्षम था— लेकिन उसे कैसे पता चला होगा कि माणिक उसके बैग में था? नहीं, चंदू ने ऐसा नहीं किया। श्री नास्कर? यह कल्पना करना मुश्किल है कि वह इस तरह के गंदे धंधे में पड़ेंगे। उन्हें इतनी हद तक जाने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं थी; खासकर उनके पास मौजूद धन को देखते हुए।’

‘कुछ ऐसा है जो मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा,’ लालमोहन बाबू ने स्वीकार किया।
'यह क्या है?'
क्या सम्मोहन की अवस्था में लोग हमेशा सच बोलते हैं?
‘वह कौन सा सच है जिसे आपको बोलना चाहिए था?’
‘अरे, मैंने आप सबको बताया ही नहीं था कि पीटर और टॉम कितने साल के थे और वे लंकाशायर से आए थे? उन्होंने तो मुझे कभी बताया ही नहीं, तो मुझे कैसे पता चला? वैसे, मुझे याद नहीं कि मैंने ऐसा कहा था, लेकिन तपेश कहता है कि मैंने कहा था।’
‘ये दोनों बातें स्टेट्समैन अखबार के उस लेख में बताई गई थीं। लालमोहन बाबू, भले ही आपने पूरा लेख न पढ़ा हो, लेकिन आपकी याददाश्त में ये बातें कहीं न कहीं समा गई थीं, और जब आपसे एक खास सवाल पूछा गया तो ये बात सामने आ गई। आपने जो कुछ भी कहा है, वह पहले ही पूरी तरह गलत साबित हो चुका है। इसलिए कृपया ये मत सोचिए कि आपने कभी कोई असाधारण शक्तियां हासिल की थीं।’ ‘ठीक है, फेलू बाबू, आपकी बात समझ गया। लेकिन क्या आप इंस्पेक्टर चौबे से सहमत हैं? क्या यह जगन्नाथ चटर्जी थे?’
‘और कौन हो सकता है? यह कितना दुखद है कि सब कुछ इतनी शांति से समाप्त हो गया, लेकिन...’ फेलुदा अपना वाक्य पूरा नहीं कर सका। किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी।
पता चला कि वह टॉम मैक्सवेल थे, जो काफी गंभीर दिख रहे थे। फेलुदा ने उन्हें कुर्सी की पेशकश की, लेकिन उन्होंने सिर हिलाकर मना कर दिया। उन्होंने कहा, 'मैं आपसे बैठकर बातचीत करने नहीं आया हूं।'
'अच्छा ऐसा है।'
मैं आपके और आपके दोस्त के कमरे की तलाशी लेने आया हूँ।
लेकिन कल हम सबकी तलाशी ली गई थी। क्या यह आपके लिए काफी नहीं था?
नहीं। आपकी तलाशी एक भारतीय पुलिसकर्मी ने ली थी। मुझे उस पर भरोसा नहीं है।
‘क्या आपके पास वारंट है? आपको पता ही होगा कि बिना उचित वारंट के आप किसी के कमरे की तलाशी नहीं ले सकते?’
‘आपका मतलब है कि आप मुझे ऐसा करने नहीं देंगे—?’
नहीं, श्रीमान मैक्सवेल। न तो मेरा दोस्त और न ही मैं आपको हमारी चीजों की तलाशी लेने देंगे। इंस्पेक्टर चौबे ने कल आपकी उपस्थिति में हम सभी की तलाशी ली थी। आपको इसी से संतुष्ट रहना होगा।
टॉम ने बिना कुछ कहे अचानक मुड़कर कमरे से बाहर निकल गया।
‘ज़रा सोचो!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘मैंने तुम्हारे साथ कितने ही मामलों पर काम किया है, फेलू बाबू, लेकिन मैं कभी भी संदिग्धों में से एक नहीं बना!’
‘इसे अनुभव का नतीजा मान लीजिए, श्री गांगुली। हर तरह के अनुभव होना अच्छी बात है, है ना?’
'हां, यह सच है। लेकिन क्या आप अपना सारा समय घर के अंदर ही बिताने वाले हैं?'

'अगर मेरा मन करेगा तो मैं बाहर जाऊंगी। अभी तो मैं सिर्फ सोचना चाहती हूं, और मैं अपने कमरे से बाहर निकले बिना भी यह काम बखूबी कर सकती हूं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि तुम और टॉपशे बाहर न जाओ। अभी बहुत कुछ देखना बाकी है।'
बहुत खूब। चलिए शतदल से मिलते हैं। शायद वो कुछ उपयोगी सुझाव दे सकें। सुनिए, फेलू बाबू। वो किताब मैं आपके पास छोड़ रहा हूँ, जो शतदल ने मुझे उधार दी थी। उसे पढ़िए। आपको टॉम मैक्सवेल के पूर्वज के बारे में बहुत सारी जानकारी मिलेगी। और अगर आप यह जानना चाहते हैं कि नील की खेती कैसे होती थी और अंग्रेजों ने उसका क्या किया, तो यह किताब आपको वो भी बता देगी। ‘धन्यवाद, लालमोहन बाबू। मुझे आपकी किताब पढ़ने में बहुत खुशी होगी।’ इसके तुरंत बाद हम वहां से निकल गए और फेलुदा को रेवरेंड प्रिचर्ड की लिखी हुई बातें पढ़ने के लिए वहीं छोड़ दिया। संयोग से शतदल सेन खाली थे और उन्होंने हमें कोपाई नदी के किनारे बसे एक गांव को दिखाने का प्रस्ताव दिया, जिसे टैगोर अक्सर देखा और सराहते थे। मैंने पहले भी कई गांव और नदियां देखी थीं, लेकिन कोपाई और गोलपारा नामक गांव में कुछ ऐसा था जिसने मेरे दिल को छू लिया और मुझे तुरंत प्रसन्न कर दिया।
लालमोहन बाबू ने एक कदम आगे बढ़कर कविता सुनाना शुरू कर दिया। उन्होंने मुझसे कहा, “मेरे प्रिय कवि बैकुंठ मल्लिक शांतिकिनिकेतन गए थे और उन्होंने वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता पर कई कविताएँ लिखी थीं। सुनिए:
ओ कोपाई, तुम भले ही पतली हो, पर तुम बहुत तेज हो। तुम्हारी सुंदरता सदा बनी रहे, तुम्हें देखना एक आनंद है।
आपके आस-पास धान के खेत फैले हुए हैं, उनमें प्रकृति की अपार सुंदरता छिपी है, जो मेरी स्मृति में चित्र उकेरती है। कोपाई, आपको देखना एक सुखद अनुभव है।

नौ
इंस्पेक्टर चौबे शाम 5 बजे हमारे कमरे में वापस आए। उन्होंने जो घोषणा की वह पूरी तरह से अप्रत्याशित नहीं थी, लेकिन फिर भी हम सभी कुछ हद तक चौंक गए।
उन्होंने कहा, ‘रहस्य सुलझ गया। मैं सही था। जगन्नाथ चटर्जी ने ही पत्थर लिया था। जब मैंने उनके घर की तलाशी ली, तो मुझे वह पहले नहीं मिला; लेकिन पुलिस की कुछ धमकियाँ अक्सर चमत्कार कर देती हैं, जैसा कि इस मामले में हुआ। चटर्जी अंत में टूट गए और उन्होंने कबूल कर लिया। उन्होंने पत्थर मुझे लौटा भी दिया। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने उसे कहाँ छिपाया था? एक गमले में!’
‘क्या तुम इसे यहाँ लाए हो?’
'हां, बिल्कुल।'
चौबे ने उसे अपनी जेब से निकाला। वह उसकी हथेली पर पड़ा था और रोशनी में हल्की चमक रहा था। उसे देखना अजीब सा लग रहा था।
‘कितना अजीब है!’ फेलुदा ने हैरानी से कहा।
‘क्या अजीब है?’
‘चटर्जी चोर हो सकता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह कोई भारी वस्तु उठाकर किसी पर वार करेगा। इंस्पेक्टर साहब, उसमें इतनी हिम्मत नहीं होगी। वह उस तरह का व्यक्ति दिखता भी नहीं है।’
'किसी को उसके रूप-रंग से मत आंकिए, श्रीमान मिटर।'
‘हां, आप सही कह रहे हैं। मेरे अपने अनुभव ने मुझे यही सिखाया है। और फिर भी...’ फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए बात अधूरी छोड़ दी।
‘क्या अब हम जाकर इस पत्थर को इसके मालिक को लौटा दें?’ चौबे ने पूछा।
'हां, चलिए ऐसा करते हैं।'
हम अपने कमरे से निकले और पीटर के कमरे की ओर चल पड़े। पीटर ने खुद दरवाजा खोला। टॉम भी उसके साथ था।
‘अच्छा, श्रीमान रॉबर्टसन,’ चौबे ने कहा, ‘मेरे पास आपके लिए एक छोटा सा उपहार है।’
'एक उपहार?'
चौबे ने चुपचाप पीटर को माणिक वापस दे दिया। पीटर का मुंह खुला रह गया। मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा! कहाँ—कैसे—?
“छोड़िए ये सब बातें, मिस्टर रॉबर्टसन। बस खुश रहिए कि आपको यह वापस मिल गया है। मिस्टर मैक्सवेल, मुझे उम्मीद है कि अब आप मानेंगे कि भारतीय पुलिस पूरी तरह से मूर्ख और अक्षम नहीं है। खैर, अब आपको तय करना होगा कि आप इसके साथ क्या करना चाहते हैं।”

पीटर और टॉम दोनों उठ खड़े हुए थे। अब वे वापस अपनी कुर्सियों पर बैठ गए।
पीटर ने धीरे से कहा, 'शानदार प्रदर्शन, इंस्पेक्टर। बधाई हो!'
‘धन्यवाद। क्या अब मैं आपसे विदा ले सकता हूँ?’ चौबे ने पूछा।
‘मैं… मुझे नहीं पता कि आपका शुक्रिया कैसे अदा करूं!’ टॉम ने अचानक कहा। ‘आपको शुक्रिया अदा करने की ज़रूरत नहीं है। आपके मन में शुक्रिया अदा करने का ख्याल आया, यही मेरे लिए काफी है। अलविदा!’
अगले दिन नाश्ते के दौरान लालमोहन बाबू ने पूछा, 'फेलू बाबू, आप क्या सोच रहे हैं?'
‘कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है…’ फेलुदा ने अनमने ढंग से बुदबुदाया।
मैं आपको बताता हूँ कि क्या गलत है। पहली बार पुलिस ने आपसे पहले अपराधी को पकड़ा। इंस्पेक्टर, फेलू बाबू, जीत गया और आप हार गए। यही गलत है।
नहीं। बात यह है कि, आप देखिए, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि मामला खत्म हो गया है, और मेरे लिए करने को कुछ भी नहीं है।'
फेलुदा फिर से चिंतित हो गया। फिर उसने कहा, 'टॉपशे, तुम और लालमोहन बाबू टहलने क्यों नहीं चलते? मुझे अकेले रहने की ज़रूरत है। मुझे फिर से सोचने की ज़रूरत है।'
‘हम मेरे कमरे में बैठ सकते हैं। चलो, तपेश।’
‘मुझे ये अच्छा नहीं लग रहा, तपेश, मेरे बेटे,’ लालमोहन बाबू ने अपने कमरे में मुझे कुर्सी देते हुए कहा। ‘हमें एक रहस्य सुलझाने का इतना अच्छा मौका मिला था, और फिर भी वो हमारे हाथों से फिसल गया। शायद मेरी बाईं आंख फड़क रही थी? नहीं, मेरा मतलब है, सच में, क्या तुम्हारा चचेरा भाई ठीक है? वो थका हुआ लग रहा था, जैसे उसने ठीक से नींद नहीं ली हो।’
‘वह देर रात तक जागकर वह किताब पढ़ता रहा जो आपने उसे दी थी। मुझे नहीं पता कि वह कितने बजे सोया, लेकिन आज सुबह पांच बजे उठकर उसने योगाभ्यास किया।’ ‘टॉपशे!’ फेलुदा ने बाहर से आवाज़ दी। उसकी आवाज़ में घबराहट थी। वह हमारे पीछे क्यों आया था? क्या कुछ गड़बड़ थी?
मैंने झटपट दरवाजा खोला। फेलुदा अंदर भागा और बोला, 'हमें तुरंत चौबे से मिलने जाना होगा।'
'क्या हुआ?'
'मैं आपको बाद में बता दूंगा।'
'ठीक है।'
हम दोनों कुछ ही सेकंड में बाहर जाने के लिए तैयार थे।
फेलुदा ने ड्राइवर से कहा, 'दुबराजपुर चलते हैं। हमें वहां पुलिस स्टेशन ढूंढना है।'
यह मुश्किल नहीं था। हमारी कार सीधे पुलिस स्टेशन गई और मुख्य द्वार के सामने रुक गई। जैसे ही हम उतरे, ड्यूटी पर तैनात कांस्टेबल ने जिज्ञासा भरी नजरों से ऊपर देखा। फेलुदा ने पूछा, 'क्या हम इंस्पेक्टर चौबे से मिल सकते हैं?'
जी हाँ, कृपया इधर आइए।
चौबे अपने कमरे में कुछ फाइलों को देख रहे थे। उन्होंने खुशी और आश्चर्य के मिले-जुले भाव से ऊपर देखा।

‘अरे, आप यहाँ क्यों आए हैं?’
हमें किसी बात पर चर्चा करनी होगी।
बहुत खूब। कृपया बैठ जाइए। क्या आप चाय पीना चाहेंगे?
नहीं, धन्यवाद। हमने अभी-अभी नाश्ता किया है।
‘मैं समझ गया। तो मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?’
‘मैं आपसे बस एक बात जानना चाहता हूँ।’
'हाँ?'
'क्या आप एक ईसाई हैं?'
चौबे ने अपनी भौहें उठाईं। फिर मुस्कुराते हुए कहा, 'मिस्टर मिटर, आपको अचानक यह जानने की क्या जरूरत है?'
‘इसका एक कारण है। क्या आप भी हैं?’
'हां, मैं ईसाई हूं। लेकिन आपको कैसे पता चला?'
मैंने आपको कई बार बाएं हाथ से खाते देखा है। पहले तो मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन बाद में मुझे यह अजीब लगा क्योंकि हिंदू—बाएं हाथ से काम करने वालों को छोड़कर—खाने के लिए अपने दाहिने हाथ का इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। मुझे लगा कि आप ईसाई हैं, लेकिन मैंने उस समय पूछा नहीं क्योंकि मुझे एहसास नहीं था कि इसका कोई विशेष महत्व हो सकता है। मुझे लगता है कि अब मैं इसका मतलब समझ गया हूँ।
'सच में? तो इसका क्या मतलब है, श्रीमान मिटर? आप इतनी दूर सिर्फ मुझे यह बताने के लिए तो नहीं आए कि आपने मेरे धर्म का अनुमान लगा लिया था, है ना?' 'नहीं। मुझे आपसे एक और प्रश्न पूछने दीजिए।'
'आगे बढ़ो।'
आपके परिवार में सबसे पहले ईसाई कौन बना?
'मेरे दादा।'
'उसका क्या नाम था?'
‘Anant Narayan.’
‘उसके बेटे का नाम क्या था?’
‘चार्ल्स प्रेमचंद।’
और उसका बेटा?
‘Richard Shankar Prasad.’
‘ये तो तुम ही हो, है ना?’
'हाँ।'
क्या आपके परदादा का नाम हीरालाल था?
‘हां, लेकिन आपने यह कैसे किया—?’
चौबे ने मुस्कुराना बंद कर दिया था। वह बस अचंभित और स्तब्ध दिख रहा था। ‘ये वही हीरालाल थे जो रेजिनाल्ड मैक्सवेल के लिए पंखा खींचते थे। क्या मैं सही कह रहा हूँ?’
'हां, लेकिन आपको मुझे यह बताना होगा कि आपने यह सब कैसे सीखा।'
‘रेवरेंड प्रिचर्ड द्वारा लिखित एक पुस्तक से। हीरालाल की मृत्यु के बाद उन्होंने अनंत नारायण की जिम्मेदारी संभाली, उन्हें ईसाई बनाया और उन्हें एक नया जीवन बनाने और नई खुशी पाने में मदद की।’

मुझे तो पता ही नहीं था कि ऐसी कोई किताब भी है!
'जी हां, ऐसा है, हालांकि यह आसानी से उपलब्ध नहीं है।'
लेकिन अगर आप यह सब जानते हैं, तो आपके पास अवश्य ही होगा...
'क्या?'
'तुम्हें पता होना चाहिए । । ।'
‘क्या, इंस्पेक्टर? मुझे क्या पता होना चाहिए?’
‘आप खुद ही क्यों नहीं बता देते, श्रीमान मिटर? मुझे खुद कुछ कहना बेहद असहज लगेगा।’
‘ठीक है,’ फेलुदा ने धीरे से कहा, ‘मैं तुम्हें बताता हूँ कि क्या हुआ था। तुम रेजिनाल्ड मैक्सवेल की क्रूरता की कहानियाँ सुनते हुए बड़े हुए हो। तुम कभी नहीं भूल सकते कि तुम्हारे परदादा की मौत के लिए वही ज़िम्मेदार था। लेकिन तुम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते थे। हालाँकि, जब तुमने सुना कि रेजिनाल्ड का परपोता टॉम यहाँ है और देखा कि टॉम को रेजिनाल्ड का अहंकार और भारतीयों के प्रति घृणा पूरी तरह विरासत में मिली है, तो तुम...’ ‘बस करो, श्रीमान मिटर! कृपया और कुछ मत कहो।’
क्या इसका मतलब यह है कि मेरा यह सोचना सही है कि तुमने ही टॉम को डांस में मारा था, सिर्फ इसलिए कि तुम्हें पुराने हिसाब चुकता करने का मन था? और फिर तुमने पत्थर इसलिए उठाया ताकि शक दूसरों पर जाए?
जी हाँ, श्रीमान मिटर, आप बिल्कुल सही हैं। अब आपको तय करना होगा कि मुझे क्या सजा मिलनी चाहिए। यदि आप इस मामले की रिपोर्ट करना चाहते हैं—’ ‘इंस्पेक्टर चौबे,’ फेलुदा अचानक मुस्कुराया। ‘मैं ऐसा कुछ नहीं करना चाहता। मैं आपको यही बताने आया था।’
'क्या!'
जी हाँ, महोदय। मैंने पूरी बात पर विचार किया और महसूस किया कि अगर मैं आपकी जगह होता, तो मैं भी बिलकुल यही करता। वास्तव में, मुझे लगता है कि टॉम के व्यवहार के लिए आपने जो किया उससे कहीं अधिक कठोर दंड की आवश्यकता थी। चिंता न करें, इंस्पेक्टर साहब। कोई आपको दंडित नहीं करने वाला है। 'धन्यवाद, श्री मिटर, धन्यवाद!'
'श्रीमान सर्वज्ञानी गांगुली, आपकी कौन सी आंख अब फड़क रही है?'
‘दोनों, फेलू बाबू, दोनों। वे खुशी से नाच रहे हैं। लेकिन हमें एक बात नहीं भूलनी चाहिए।’
'मुझे पता है कि आपका क्या आशय है।'
मेरा मतलब क्या है?
हमें आपके मित्र शतदल सेन को धन्यवाद देना नहीं भूलना चाहिए।
‘सही है। अगर उसने हमें वह किताब उधार न दी होती तो—’
हम इस मामले को सुलझा नहीं सकते थे।
और जगन्नाथ चटर्जी एक अपराधी ही रह जाते।
'कम से कम हमारे मन में तो यही है।'
जी हाँ। कृपया हमें लॉज वापस ले जाने से पहले श्री सेन के घर ले चलें, ड्राइवर जी।

[illegible]

***** [illegible] *****

sjeet

लेखक का नोट
मैं लंबे समय से अपराध कथाओं का शौकीन पाठक रहा हूँ। मैंने स्कूल के दिनों में ही शर्लक होम्स की सभी कहानियाँ पढ़ डाली थीं। जब मैंने अपने दादाजी द्वारा पचहत्तर वर्ष पूर्व शुरू की गई बच्चों की पत्रिका 'संदेश' को पुनर्जीवित किया, तो मैंने उसके लिए कहानियाँ लिखना शुरू किया। पहली 'फेलुदा' कहानी - एक लघु कथा - 1965 में प्रकाशित हुई। फेलु, निजी जासूस प्रदोष मित्र का उपनाम है। कहानी फेलु के चचेरे भाई तपेश (वॉटसन) के दृष्टिकोण से सुनाई गई है। 'दा' प्रत्यय (जो 'दादा' का संक्षिप्त रूप है) का अर्थ है बड़ा भाई।
हालाँकि फेलुदा की कहानियाँ मुख्य रूप से संदेश के किशोर पाठकों के लिए लिखी गई थीं, लेकिन मैंने पाया कि उनके माता-पिता भी इन्हें पढ़ रहे थे। जल्द ही लंबी कहानियाँ - लघु उपन्यास - भी प्रकाशित होने लगीं, जिनकी पृष्ठभूमि विभिन्न सुरम्य स्थानों में घटित होती थी। कहानी की शुरुआत में ही एक तीसरे पात्र का परिचय कराया गया: लालमोहन गांगुली, जो सस्ते और लोकप्रिय थ्रिलर उपन्यासों के लेखक थे। वे फेलुदा के विपरीत एक पात्र के रूप में काम करते हैं और भरपूर हास्य का संचार करते हैं।
जब मैंने अपनी पहली फेलुदा कहानी लिखी थी, तब मैंने शायद ही कभी सोचा था कि वह इतनी लोकप्रिय हो जाएगी कि मुझे हर साल फेलुदा पर एक उपन्यास लिखना पड़ेगा। युवा पाठकों को ध्यान में रखते हुए जासूसी कहानी लिखना आसान काम नहीं है, क्योंकि कहानियों को 'साफ-सुथरा' रखना पड़ता है। कोई नाजायज प्रेम नहीं, कोई कामुक अपराध नहीं, और हिंसा भी बहुत कम। मुझे उम्मीद है कि वयस्क पाठक इन कहानियों को पढ़ते समय इस बात का ध्यान रखेंगे।
कलकत्ता
फरवरी 1988
सत्यजीत रे

शुरुआत
चलिए बातचीत शुरू करते हैं...
Penguin को Twitter.com@PenguinIndia पर फॉलो करें
हमारी सभी खबरों से अपडेट रहने के लिए Youtube.com/PenguinIndia पर जाएं। Facebook.com/PenguinIndia पर ‘PenguinBooks’ को लाइक करें
लेखक के बारे में और अधिक जानने के लिए और इस तरह की अन्य कहानियों के लिए Penguinbooksindia.com पर जाएं।

पेंगुइन बुक्स
पेंगुइन ग्रुप द्वारा प्रकाशित
पेंगुइन बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड। लिमिटेड, 7 वीं मंजिल, इन्फिनिटी टॉवर सी, डीएलएफ साइबर सिटी, गुड़गांव - 122 002, हरियाणा, भारत
पेंगुइन ग्रुप (यूएसए) इंक., 375 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क 10014, यूएसए
पेंगुइन ग्रुप (कनाडा), 90 एग्लिंटन एवेन्यू ईस्ट, सुइट 700, टोरंटो, ओंटारियो M4P 2Y3, कनाडा पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड
पेंगुइन आयरलैंड, 25 सेंट स्टीफंस ग्रीन, डबलिन 2, आयरलैंड (पेंगुइन बुक्स लिमिटेड का एक प्रभाग) पेंगुइन ग्रुप (ऑस्ट्रेलिया), 707 कॉलिन्स स्ट्रीट, मेलबर्न, विक्टोरिया 3008, ऑस्ट्रेलिया पेंगुइन ग्रुप (न्यूजीलैंड), 67 अपोलो ड्राइव, रोज़डेल, ऑकलैंड 0632, न्यूजीलैंड। पेंगुइन बुक्स (दक्षिण अफ्रीका) (प्राइवेट लिमिटेड), ब्लॉक डी, रोज़बैंक ऑफिस पार्क, 181 जान स्मट्स एवेन्यू, पार्कटाउन नॉर्थ, जोहान्सबर्ग 2193, दक्षिण अफ्रीका।
पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, पंजीकृत कार्यालय: 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड
पहली बार पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा 2000 में प्रकाशित। यह पुनर्प्रकाशित संस्करण 2015 में प्रकाशित हुआ।
www.penguinbooksindia.com
कॉपीराइट © सत्यजीत रे की संपत्ति 2000, 2004
इस अनुवाद का कॉपीराइट © पेंगुइन बुक्स इंडिया 2000, 2004 के पास सुरक्षित है
कवर चित्रण सुकांतो देबनाथ द्वारा
कवर डिज़ाइन अपराजिता निनान द्वारा
सर्वाधिकार सुरक्षित
ISBN: 978-0-143-42504-5
यह डिजिटल संस्करण 2015 में प्रकाशित हुआ।
ई-आईएसबीएन: 978-9-352-14116-6
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे प्रकाशक की पूर्व लिखित सहमति के बिना, व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है, और बाद के खरीदार पर भी इसी प्रकार की शर्त लागू होगी। ऊपर आरक्षित कॉपीराइट अधिकारों को सीमित किए बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग कॉपीराइट स्वामी और इस पुस्तक के उपरोक्त प्रकाशक दोनों की पूर्व लिखित अनुमति के बिना पुनरुत्पादित, संग्रहीत या पुनर्प्राप्ति प्रणाली में शामिल नहीं किया जा सकता है, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य) प्रसारित नहीं किया जा सकता है।